



आगम-साहित्यरत्नमालायाः पण्ठं रत्नम्

प्राचीनाचार्यकृतभाष्योपेतं, श्रीविसाहगणिमहत्तरप्रणीतम्

# निशीथ-सूत्रम्

आचार्यप्रवर श्री जिनदासमहत्तरविरचितया

विशेषचूर्ण्य समलंकृतम्

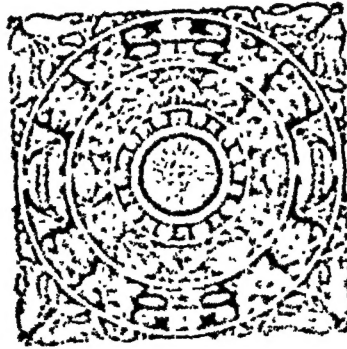
विंशतितमोद्देशकस्य सुबोधारूप्या संस्कृत-व्याख्यया सहितञ्च

चतुर्थो विभागः

उद्देशकाः १६-२०

सम्पादक :

उपाध्याय कवि अमर मुनि  
मुनि कन्हैयालाल 'कमल'



आगम - प्रतिष्ठान

ज्ञान - पीठ, आगरा



प्रकाशक :

सन्मति ज्ञान-पीठ.

लोहामंडी : आगरा

प्रथम संस्करण सन् १९६०

द्वितीय संस्करण २४८६

तृतीय संस्करण २०१६

मूल्य : चार भाग

राज-संस्करण १००)

साधारण संस्करण ६०)

मुद्रण :

प्रेस प्रिंटिंग प्रेस,

लोहामंडी, आगरा

आचार - शास्त्र  
के  
सर्व एवं सजग सभी अध्येताओं  
को



—उपाध्याय अक्षर भुनि

## प्रकाशकीय

निशीथचूर्णि का यह चतुर्थ खण्ड, पाठकों की सेवा में पहुँच रहा है। आशा की थी कि तीसरे खण्ड के अनन्तर शीघ्र ही चतुर्थ खण्ड का प्रकाशन किया जा सकेगा, किन्तु आशा के ठीक विपरीत इसके प्रकाशन में विलम्ब हो गया है।

वात यह हुई कि श्रद्धेय उपाध्याय श्री अमरमुनि जी महाराज को बीच में एक चातुर्मास के लिए अलवर जाना पड़ा और इस चातुर्मास के लिए आगरा में ठहरे भी, तथा सम्पादन के शेष कार्य की पूर्णाहुति के लिए सोत्साह उपक्रम भी किया; किन्तु दीर्घ काल तक अस्वस्थ रहने के कारण सम्पादन-कार्य में यथेष्ट प्रगति न हो सकी। उधर दूसरे सम्पादक मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' अपने श्रद्धेय गुरुदेव स्वविर श्री फतेहचन्द जी महाराज की अस्वस्थता के कारण सुदूर राजस्थान की ओर विहार कर गये। अस्तु, हम प्रतिज्ञात समयावधि के अन्दर पाठकों की उत्सुकता का यथोचित स्वागत करने में असमर्थ रहे।

आप जानते हैं, ज्ञानपीठ के साधन बहुत सीमित हैं। हमें यह स्वीकार करने में जरा भी आपत्ति नहीं कि ज्ञानपीठ इतने बड़े महान् ग्रन्थ को प्रकाशित करने की क्षमता नहीं रखता है; फिर भी कुछ साहित्य-प्रेमी सज्जनों का, जो अपने नामोल्लेख की भी अपेक्षा नहीं रखते, कुछ ऐसा उत्साहवर्धक सहयोग रहा है कि हम इस भगीरथ कार्य को आशातीत सफलता के साथ सम्पादित कर सके।

निशीथ-चूर्णि के प्रस्तुत प्रकाशन ने देश एवं विदेश के विद्वज्जगत् में काफी समादर का स्थान प्राप्त किया है, और इसके लिए हमें अनेक स्थानों से मुक्त हृदय से साधुवाद मिला है तथा हमें अन्य अनेक प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए भी प्रोत्साहित किया गया है। संभव है, हम प्रस्तुत ग्रन्थ के जैसे ही अन्य विराट् ग्रन्थों का यथावसर प्रकाशन कर सकें एवं भारतीय साहित्य की श्री-वृद्धि में अपना अभीष्ट योग दे सकें।

सोनाराम जैन

मन्त्री, सम्मति ज्ञानपीठ  
आगरा

## सम्पादकीय

यह निशीथचूर्णि का चतुर्थ खण्ड है, और अब निशीथचूर्णि अपने में पूर्ण है। इनने बड़े भीमकाय ग्रन्थ का सम्पादन एवं प्रकाशन इतनी जीध्रता के साथ पूर्ण होना, वस्तुतः एक आश्चर्य है। जिस गति से प्रारम्भ में सम्पादन एवं मुद्रण चल रहे थे, यदि वही गति अन्त तक बनी रहती, तो संभव था, इतना विलम्ब भी न होता। परन्तु कुछ ऐसी विघ्न-परम्परा उपस्थित होती रही कि हम चाहते हुए भी तदनुसार कुछ न कर सके।

निशीथचूर्णि अद्यावधि कहीं भी मुद्रित नहीं हुई है। यह पहला ही मुद्रण है। अतः सम्पादन से सम्बन्धित सभी प्रकार की सतर्कता रखते हुए भी, हम, और तो क्या, अपना कल्पना के अनुसार भी सफल नहीं हो सके। कारण यह था कि लिखित पुस्तक-प्रतिया अधिकतर अशुद्ध मिलीं, और ताडपत्र की प्रति तो उपलब्ध ही न हो सकी। अपने बड़ी बात यह भी थी कि इस प्रकार का सम्पादन-कार्य हमारे लिए पहला ही था, जिस लिए 'सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः' कहा गया है। अस्तु, सम्पादन में त्रुटियाँ रही हैं, जो हमारे भी ध्यान में हैं, परन्तु, एतदर्थ क्षमायाचना के अतिरिक्त, अब हम अन्य कुछ कर भी तो नहीं सकते।

प्रस्तुत सम्पादन का विद्वज्जगत् में बड़ा आदर हुआ है। विश्वविद्यालय तथा सरकारी अन्य सर्वोच्च शिक्षा-मंस्थाओं ने अपने पुस्तकालयों के लिए इस ग्रन्थ की प्रतियाँ मँगवाई हैं, अध्ययन के बाद मुक्त भाव से प्रशंसा-पत्र प्रेषित किये हैं। भुवनेश्वर (उड़ीसा) में, अक्टूबर में आयोजित 'अखिल भारतीय प्राच्य विद्या-परिषद्' (आन इंडिया ओरिएण्टल नवीनतम अधिवेशन के प्राकृत एवं जैन धर्म विभाग के अध्यक्ष डा० नाडेमरा ने भी अभिभाषण में प्रस्तुत सम्पादन को 'नांध-पात्र' गिना है। विद्वान् मुनियनों कोनकर इसे सराहा है। हमें प्रसन्नता है कि हमारा यह नगण्य कार्य, भारतीय विशिष्ट ज्ञान प्राप्त कर सका।

एक बात और भी है। कुछ लोग उक्त प्रकाशन में मात्र उत्तर हम क्या दें ! हमारा काम एक प्राचीन ग्रन्थ को, जो एक नेत्रों की सीमा में ही प्रायः काल-यापन कर रहा था, मात्र, हमने ला दिया। हमारी दृष्टि सु-विशुद्ध रूप में ज्ञानोत्पत्ति परम्परा के है ? उन्होंने क्या किया है ? यह बात के है

और उस युग में भी वह कहाँ तक औचित्य की सीमा में था ? हमारे अपने साम्प्रदायिक पक्षवद्ध मनोवृत्ति के व्यक्ति क्या कहेंगे और क्या नहीं ? उनसे प्रशंसा प्राप्त होगी अथवा निन्दा ? यह सब सोचना साहित्यकार का काम नहीं है । साहित्यकार का काम है, शुद्ध भाव से ज्ञान-साधना करना । और वह हमने 'यावद्वुद्धिबलोदयं' की है । वस, अपना कार्य पूरा हुआ ।

निशीथ-चूर्णि को हम जैन-साहित्य का, जैन-साहित्य का ही नहीं, भारतीय साहित्य का एक महान् ग्रन्थ मानते हैं । जैन-आचार का यह शेखर ग्रन्थ है । आचार-शास्त्र की गुत्तियों का रहस्योद्घाटन, जैसा इस ग्रन्थ में हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । भारतीय इतिहास तथा लोक-संस्कृति की प्रकट एवं अप्रकट विपुल सामग्री का तो एक प्रकार से यह विश्व-कोष ही है । इसके अध्ययन के बिना, निशीथ-सूत्र एवं अन्य छेद-सूत्र कथमपि बुद्धिगम्य नहीं हो सकते; यह हमारा अधिकार की भाषा में किया जाने वाला सुनिश्चित दावा है, जो किसी के भी मिथ्या प्रचार से झुठलाया नहीं जा सकता । निशीथ-चूर्णि क्या है, और उसमें ऐसा क्या कुछ है, जो वह पौराण्य एवं पाश्चात्य, तथैव जैन एवं जैनेतर सभी विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है ? इसके लिए पं० दलसुखभाई मालवणिया (प्राध्यापक—जैन-दर्शन, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) की विस्तृत प्रस्तावना 'निशीथः एक अध्ययन' का अवलोकन किया जा सकता है । परिणत जी ने गम्भीर अथवा तलस्पर्शी अध्ययन के साथ जो तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण किया है, वह विद्वज्जगत् को चकित कर देने वाला है । हम यहाँ इस सम्बन्ध में स्वयं और कुछ लिखकर पुनरुक्ति नहीं करना चाहते ।

यह ठीक है कि चूर्णि एक मध्यकालीन प्राचीन कृति है, एक विशेष संप्रदाय एवं परम्परा से सम्बन्धित है, वह उग्र साध्वी-आचार की अपक्रान्ति के एक विलक्षण मोड़ पर शब्दबद्ध हुई है, उस पर देश एवं काल की बदली हुई परिस्थितियों का भी अनेकविध प्रभाव पड़ा है । अस्तु, चूर्णि की कुछ बातें ऐसी हैं, जो अटपटी सी हैं, जैन धर्म की मूल परम्परा काफी दूर जा पड़ी हैं । परन्तु इस सबसे क्या ! पाठक को अपनी बुद्धि का उपयोग करना । हंस के नीर-क्षीर-विवेक से काम लेना है । किसी भी छद्मस्थ आचार्य की सभी बातें पूर्ण से ग्राह्य हों, एवं सर्वप्रकारेण सभी को मान्य हों; यह तो न कभी हुआ है, और न कभी "पञ्चासमिक्खए धम्मं" का उत्तराध्ययनसूत्रीय सन्देश आखिर किस काम आयेगा ! इस चूर्णि के निशीथ-चूर्णि के प्रथम भाग की प्रस्तावना (सन् १६५७) में पहले से ही पाठकों का स्थान प्रकट के लिए, वह भी काफी स्पष्टता के साथ, लिख चुके हैं । अस्तु हम समझते हैं, तथा हमें अन्य-चूर्णि की तद्युगीन कुछ अटपटी बातों को ही अग्रस्थान देकर अनर्गल है, हम प्रस्तुत ग्रन्थ के अपने कलुषित अहं का ही कुप्रदर्शन कर रहे हैं । यदि कोई गुलाब साहित्य की श्री-वृद्धि के पृष्ठ में केवल काँटे ही देखता है; यदि कोई निर्मल चन्द्र में मात्र कलंक यह उसके 'दोषदृष्टिपरं मनः' का ही दोष कहा जायगा, और क्या ?

भाव से निशीथ-चूर्णि का अध्ययन करना चाहिए । आचार्य गगत् की सूक्ष्मताओं का, उतार-चढ़ावों का बड़ी कुशलता के ओर, कठोरतर एवं कठोरतम चर्चा को अग्रस्थान देते हुए पाठक को, कथंचित् अपवाद-प्ररूपणा के द्वारा, सर्वथा

अपभ्रष्ट होने से संरक्षण भी दिया है। आखिर 'जीवन्नरो भद्रशतानि पश्येत्' के यथार्थवादी सिद्धान्त को कोई कैसे सहसा अपदस्थ कर सकता है? साधना और जीवन का प्रामाणिक विश्लेषण करने की दिशा में, तूष्णीं, एक महत्त्वपूर्ण उपादेय सामग्री प्रस्तुत करती है। कुछेक प्रतिकूल बातों को छोड़कर, शेष समस्त ग्रन्थ सूत्रार्थ की गंभीर एवं उच्चतर विपुल सामग्री से अटा पड़ा है। आखिर, २० x ३० अठपेजी १६७३ पृष्ठों के महाग्रन्थ की अमूल्य चिन्तन सामग्री में, कुछेक प्रतिकूल बातों की कल्पित भीति से वंचित रहना, विचारमूढ़ता नहीं तो और क्या है? 'अल्पस्य हेतोर्वहु हातुमिच्छन्, विचार-मूढ़ः प्रतिभासि मे त्वम्।' अस्तु, आशा है आज का चिन्तनशील तटस्थ साधक, अपनी तत्त्वसंग्राहिणी प्रतिभा के उज्ज्वल प्रकाश में, सारा-सार का ठीक मूल्यांकन करके, स्वपर की संयम-साधना को निरन्तर उज्ज्वल में उज्ज्वलतर बनायेगा।

मुनि श्री अखिलेशचन्द्र जी का, प्रस्तुत सम्पादन-कार्य में, प्रारंभ में ही उत्साहवर्द्धक सहयोग रहा है। उनकी व्यवस्था-बुद्धि के द्वारा, समय-समय पर काफी सुविधाएँ उपलब्ध हुई हैं। अस्तु, उनकी मधुर स्मृति का समुल्लेख, यहाँ हमारे लिए आनन्द की वस्तु है।

महावीर-दीक्षा-कल्याणक,  
मार्गशिर कृ० दशमी, वीरानन्द २४८६

—उपाध्याय अमरमुनि  
—मुनि कन्हैयालाल

# साधना का अनेकान्त

जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा ।

—जो आत्मा के हेतु हैं वे कभी संवर के हेतु हो जाते हैं, और जो संवर के हेतु हैं वे कभी आत्मा के हेतु भी बन जाते हैं ।

—आचार्य मूत्र ? । ४ । ?

जे जत्तिआ य हेऊ, भवस्स ते चेव तत्तिआ मुक्खे ।

गणणार्इया लोगा, दुण्हवि पुत्ता भवे तुल्ला ॥२४२॥

—अज्ञानी एवं रागद्वेषी जीवों के लिए जो संसार के हेतु हैं, वे ही समभावी एवं विवेकी आत्माओं के लिए मोक्ष के हेतु हो जाते हैं । ये भव तथा मोक्ष सम्बन्धी हेतु, संख्या की दृष्टि से, परस्पर तुल्य असंख्यात लोकाकाश परिमाण हैं ।

—आचार्य हेमचन्द्र, पुष्पमाला प्रकरण

कल्याकल्पविधिज्ञः संविग्नसहायको विनीतात्मा ।

दोषमलिनेऽपि लोके प्रविहरति मुनिर्निरुपलेपः ॥१३६॥

—जो कल्पनीय और अकल्पनीय की विधि को जानता है, संसार से भयभीत संयमी जन जिसके सहायक है, और जिसने अपनी आत्मा को ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य और उपचार-विनय से युक्त कर लिया है, वह साधु राग द्वेष से दूषित लोक में भी राग-द्वेष से अलूता रहकर विहार करता है ।

किञ्चिच्छुद्धं कल्प्यमकल्प्यं स्यात्स्यादकल्प्यमपि कल्प्यम् ।

पिण्डः शय्या वस्त्रं पात्रं वा भेषजाद्यं वा ॥१४५॥

—भोजन, शय्या, वस्त्र, पात्र अथवा औषध आदि कोई वस्तु कभी शुद्ध, अतएव कल्पनीय होने पर भी अकल्पनीय हो जाती है और कभी अकल्पनीय होने पर कल्पनीय हो जाती है ।

देशं कालं पुरुषमवस्यामुपघातशुद्ध परिणामान् ।

प्रसमीक्ष्य भवति कल्प्यं नैकान्तात्कल्प्यते कल्प्यम् ॥१४६॥

—देश, काल, क्षेत्र, पुरुष, अवस्था, उपघात और शुद्ध परिणामों की अपेक्षा से अकल्पनीय वस्तु कल्पनीय हो जाती है । और कोई कल्पनीय वस्तु भी सर्वथा कल्पनीय नहीं होती ।

—आचार्य उमास्वति, प्रश्नमरति प्रकरण

भोजन, वस्त्र, तथा मकान आदि जो कुछ पदार्थ साधु को दान देने के उद्देश्य से वे आधाकर्म कहलाते हैं । ऐसे आधाकर्म आहार आदि का उपभोग करने वाला होता ही है, ऐसा एकान्त वचन न कहना चाहिए; क्योंकि—आधाकर्मों की विधि के अनुसार अपवाद-मार्ग में कर्मबन्ध के कारण नहीं होते हैं । किन्तु उन करके आहार की शुद्धि से जो आधाकर्मों आहार लिया जाता है ना है ।

—आचार्य जवाहरलाल जी म० के तत्त्वावधान में सम्पादित सूत्रकृताङ्ग, द्वितीय श्रुतस्कंध, पृ० २६६







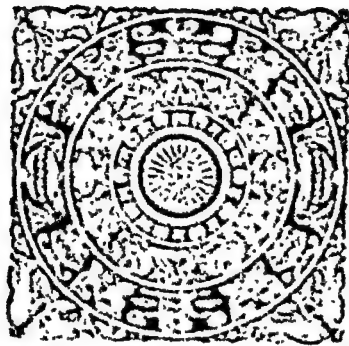
# निशीथ : एक अध्ययन

लेखक :

पं० दलसुख मालवणिया

प्राध्यापक — जैन दर्शन

हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी



आगम-प्रतिष्ठान

सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा

## षोडश उद्देशकः

उक्त पचदशमोद्देशक । इदानी षोडश प्रारभ्यते, तत्रायं सम्बन्ध -

देहविभूसा बंभस्स अगुत्ती उज्जलोवहितं च ।

सागारिते य (वि) वसतो, बंभस्स विराहणाजोगो ॥५०६५॥

पचदममुद्देशगे देहविभूसाकरण उज्जलोवधिधारण च णिसिद्ध, मा वभवयस्स अगुत्ती, पसगतो मा वभवयस्स विराहणा भविस्सति । इहावि सोलसमुद्देशगे मा अगुत्ती वभविराहणा वा, अतो सागारिय-वसहिण्णिसेहो कज्जति । एस सम्बन्धो ॥५०६५॥

एतेण सम्बन्धेणागयस्स सोलसमुद्देशगस्स इम पढम सुत्त -

जे भिक्खु सागारियसेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥१॥

सह आगारीहि सागारिया, जो त गेण्हति वसहिं तस्स आणादी दोसा, चउलहु च से पच्छित्त ॥

सन्नासुत्तं सागारियं ति जहि मेहुणुब्भवो होइ ।

जत्थित्थी पुरिसा वा, वसंति सुत्तं तु सट्ठाणे ॥५०६६॥

ज सुत्ते “सागारिय” ति एसा सामयिकीसज्जा । जत्थ वसहीए ठियाण मेहुणुब्भवो भवति सा सागारिगा, तत्थ चउगुराग ।

अथवा - जत्थ इत्थिपुरिसा वसति सा सागारिका, इत्थिसागारिगे चउगुराग सुत्तणिवातो । “सट्ठाणि” ति जा पुरिससागारिगा, णिग्गथीण पुरिससागारिगे चउगुराग । सेस तहेव ॥५०६६॥ एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्तिवित्थरो -

सागारिया उ सेज्जा, ओहे य विभागओ उ दुविहाओ ।

ठाण-पडिसेवणाए, दुविहा पुण ओहओ होति ॥५०६७॥

सागारिया सेज्जा दुविहा - ओहेण विभागओ य । ओहेण पुण दुविहा - ठाणातो पडिसेवणातो अ । एतेसु पच्छित्त भण्णिहिंति ॥५०६७॥

सागारियणिकखेवो, चउव्विहो होइ आणुपुव्वीए ।

णामं ठवणा दविण, भावे य चउव्विहो भेदो ॥५०६८॥

उच्यते -

को जानति "केरिसओ, कस्स व माहप्पता समत्थत्ते ।

धिइदुव्वला उ केई, डेवेति पुणो अगारिज्जणं ॥५१०३॥

छउमत्थो को जानड णाणादेसियाण कस्स केरिसो भावो, इत्थिपरिस्सहे उदिणो कस्स वा माहप्पता, महतो अप्पा माहप्पता । अहवा - माहप्पता प्रभावो । त च माहप्प पभाव वा समत्थता चित्तिज्जति । सामत्थ धित्ती, सारीरा सत्ती । इदियणिग्गह प्रति ब्रह्मव्रतपरिपालने वा कस्स किं माहात्म्यमिति । एयम्मि वि अपरिण्णाए सागारियवसधीए ठियाण तत्थ जे धित्तिदुव्वला ते रुवादीहि अक्खित्ता विगयसजमधुरा अगारिट्ठाण "डेवेति" - परिभुजतीत्यर्थ ॥५१०३॥

ते य सजया पुव्वावत्था इमेरिसा होज्जा -

केइत्थ भुत्तभोई, अभुत्तभोई य केइ निक्खंता ।

रमणिज्ज लोइयं ति य, अम्हं पेयारिसं आसी ॥५१०४॥

भुत्ताऽभुत्ता दो वि भणति - रमणिज्जो लोइओ धम्मो । जे भुत्तभोगी ते भणति - अम्हं पि गिहासमे ठियाण एरिस खाणपाणादिक आसि ॥५१०४॥

किं च -

एरिसओ उवभोगो, अम्हं वि आसि (त्ति) ण्ह एण्हि उज्जल्ला ।

दुक्कर करेमो भुत्ते, कोउगमितरस्स ते दट्ठुं ॥५१०५॥

"उवभोगो" ति ण्हाणवत्थाभरणगधमल्लानुलेवणवृणवासतवोलादियाण पुव्व आसी । इण्हि इदाणि, उज्जल्ला प्रावत्येन, मलिनसरीरा लद्धसुहासादा अम्हे सुदुक्कर सहामो, एव भुत्तभोगी चित्तयति । "इतर"ति अभुत्तभोगी, त त रुवादि दट्ठु कोउअ करेज्जा ॥५१०५॥

सति कोउएण दोण्ह वि, परिहेज्ज लएज्ज वा वि आभरणं ।

अण्णेसिं उवभोगं, करेज्ज वाएज्ज उड्डाहो ॥५१०६॥

"सति" ति पुव्वरयादियाण सरण भुत्तभोगिणो, इयरस्स कोउअ । एते दोणिं वि असुभभावुप्पणा वत्थे वा परिहेज्ज, आभरण वा "लएज्ज" ति अप्पणो आभरेज्ज, अण्णेसिं वा वत्थादियाण उवभोग करेज, वाएज वा आतोज्ज । असजतो वा सजत आयरियादि दट्ठु उड्डाह करेज ॥५१०६॥

किं च -

तच्चित्ता तल्लेसा, भिक्खा-सज्झायमुक्कतत्तीया ।

विकहा-विसुत्तियमणा, गमणुस्सुग उस्सुगवभूया ॥५१०७॥

त इत्थीमादी रूव दट्ठु तदगावयवसरूवचितण चित्त, तदगपरिभोगज्जक्कवासओ लेसा (भिक्खा) सज्झायादिसजमजोगकरणमुक्कतत्ती णिव्वावारादित्थे । वायिगजोगेण सजमारहणी कहा, तच्चिवक्खभूता विकहा । कुसलमणधारणोदीरणेण सजमसासविद्धि(?)करेत्ता सो वस्तमना ततो विगहाविसोत्तियमणा भवति । एवं

इदाणि भावसागारिय -

‘अट्टारसविहमवभं, भावउ ओरालियं च दिव्वं च ।

मणवयणकायगच्छण, भावम्मि य रुवसंजुत्तं ॥५११३॥

एय दव्वसागारिय भणतेण भावसागारियपि एत्थेव भणिय, तहावि वित्थरतो पुणो भणति - त भावसागारिय अट्टारसविहं अवभ । तस्स मूलभेदा दो - ओरालियं च दिव्वं च । तत्थ ओरालियं नवविह इम - ओरालियं कामभोगा मणसा गच्छति, गच्छावेति, गच्छत अणुजाणति । एव वायाए वि । काएण वि । एते तिणि तिया णव । एव दिव्वेण वि णव । एते दो णवगा अट्टारस । एय अट्टारसविह अवभ भावसागारिय ॥५११३॥

“भावम्मि य रुवसंजुत्त” ति अस्य व्याख्या -

अहव अवभं जतो, भावो रुवा सहगयातो वा ।

भूसण-जीवजुत्तं वा, सहगय तव्वज्जियं रुवं ॥५११४॥

अवभभावो जतो उप्पज्जइ त च रुव रुवसंजुत्तं वा, कारणे कज्जोवयाराओ, त चेव भावतो अवभ ।

अहवा - उदिण्णभावो ज पडिसेवति त च रुव वा होज्ज, रुवसहगतं वा । तत्थ ज इत्थीमरीर सचेयण भूसणसंजुत्तं त रुवसहगतं ।

अहवा - अणाभरणं पि जीवजुत्तं त रुवसहगतं भणति, “तव्वज्जियं रुवं” ति सचेयण इत्थीमरीर भूसणवज्जियं रुवं भणति, अचेयणं वा रुवं भणति ॥५११४॥

तं पुण रुवं तिविहं, दिव्वं माणुस्सगं च तेरिच्छं ।

तत्थ उ दिव्वं तिविहं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥५११५॥ कठा

दिव्वे इमे मूलभेदा -

पडिमेतरं तु दुविहं, सपरिग्गह एकमेक्कगं तिविहं ।

पायावच्च-कुडुविय-डंडियपरिग्गहं चेव ॥५११६॥

पडिमाजुयं त दुविहं - सणिगहितं असणिगहितं वा । “इतरं” ति - देहजुयं त पि मचेयणं अचेयणं । पुणो एक्केक्कं सपरिग्गहं अपरिग्गहं वा । ज सपरिग्गहं त तिविधेहि परिग्गहितं । पच्छद्दं कठं ॥५११६॥

दिव्वं जहण्णादिगं तिविधं इम -

वाणंतरियं जहण्णं, भवणवती जोइसं च मज्झिमगं ।

वेमाणियमुक्कोसं, पगयं पुण ताण पडिमासु ॥५११७॥

वाणमतरं जहण्णं, भवणवती जोइसियं च मज्झिमं, वेमाणियं उक्कोसं । इह पडिमाजुतेन रो जेगं वसहविसोही अधिकया ॥५११७॥

पट्टारसविहज्जवम इति बृहत्कल्पे गा० १४६५ । २ गा० ५११३ ।

डडियपरिगृहते एते चेव तिणि पच्छत्ता काललहुग्रा तवगुरुग्रा । जम्हा जहण्णादिविभागेण कत सणिहितासणिहितेण ण विमेषियव्व, तम्हा विभागे ओहो गओ ॥५१२१॥

इदाणि विभागपच्छत्त - तत्थ एयाणि चेव जहणमज्झिमुवकोसाणि असणिहियसणिहियभिण्णा छट्ठाणा भवति ।

ताहे भण्णति -

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्घाया ।

ततियम्मि य एमेवा, चउत्थे छम्मास उग्घाता ॥५१२२॥

जहण्णेण असणिहिय पढम ठाण, सणिहिय वितिय ठाण ।

मज्झिमे असणिहिय तइयट्ठाणं, सणिहिय चउत्थ ।

उवकोसेण असणिहिय पचम, सणिहिय छट्ठ ।

जहण्णए असणिहिणए पायावच्चपरिगृहते ठाति चउलहुय, सणिहिणए चउगुरु । मज्झिमए असणिहिणए “एमेव” त्ति - चउगुरुगा, सणिहिणए छल्लहुगा ॥५१२२॥

पंचमगम्मि वि एवं, छट्ठे छम्मास हांतऽणुग्घाया ।

असन्निहिते सन्निहिते, एस विही ठायमाणस्स ॥५१२३॥

उवकोसए असणिहिणए पायावच्चपरिगृहते ठाति एमेव त्ति छल्लहुगा, सणिहिणए छगुरु । एसो ठाणपच्छित्तस्स विधी भणितो ॥५१२३॥

पायावच्चपरिगृह, दोहि वि लहु हांति एते पच्छत्ता ।

कालगुरुं कोटुवे, डडियपारिगृहे तवसा ॥५१२४॥

पायावच्चे उभयलहु, कोटुविण कालगुरु, डडिए तवगुरु । सेस पूर्ववत् ॥५१२४॥

ठाणपच्छत्त चेव वितियादेसतो भण्णति -

अहवा भिक्खुस्सेयं, जहण्णगाइम्मि ठाणपच्छत्तं ।

गणिणो उवरिं छेदो, मूलायरिण हसति हेट्ठा ॥५१२५॥

ज एय जहण्णगादी असन्निहियसन्निहियभेदेण चउलहुगादि - छगुरुगावसाण एय भिक्खुस्स भणिय । “यणि” त्ति-उवज्झाओ, तस्स चउगुरुगादी छेदे ठायति । आयरियस्स छल्लहुगादी मूले ठायति । इह चारगाविकप्पे जहा उवरिपद वट्ठति तहा हेट्ठापद हस्सति । ॥५१२५॥

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा हांति तइयम्मि ॥५१२६॥

इह पढमिल्लुग पागतित ठाण, वितिय कोटुव, तत्तित डडिय । सेस पूर्ववत् ॥५१२६॥ एयं ठायतस्स पच्छत्त भणिय ।

इदाणि पडिसेवतस्स पच्छत्त भण्णति -

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छम्मासिय छेद लहुग गुरुगो तु ।

मूलं जहण्णगम्मी, सेवन्ते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१२७॥

“पडिमेवणाए” ति - पडिसेवतस्म अतियाराणुरुवा मूलाणवट्टपारचिया एव समवति ।

जति पुण ठितो ण चेव पडिसेवति तो कह एते भवतु ? ॥५१३२॥

जनि पुण सव्वो वि ठितो, सेवेज्जा होज्ज चरिमपच्छित्तं ।

तम्हा पसंगरहितं, जं सेवति तं ण सेसाइं ॥५१३३॥

जति गियमो होज्ज सव्वो ठायतो पडिसेवेज्जा तो जुज्जइ त तुम भणमि, जेण पुण ण सव्वो ठायतो पडिमेवति तेण कारणेण पसगग्गिय ज ठाण सेवति तत्थेव पायच्छित्त भवति ॥५१३३॥

“पसज्जणा तत्थ होति एक्केवक” ति एक्केवकातो पायच्छित्तठाणातो पसज्जणा भवति ।

कह ? उच्यते - त सावु तत्थ ठिय दट्ठु अविरयओ को वि तस्सेव सक करेज्जा - “णूणं पडिमेवणाणिमित्तेण एस एत्थ ठियो,” ताहे दिट्ठे सका भोतिगादो भेदा भवति ।

अह पसग इच्छसि तो डमो पसगो “चरिमपदे चरिमपदं” ति अस्य व्याख्या -

अदिट्ठातो दिट्ठं, चरिमं तहि संकमादि जा चरिमं ।

अहव ण चरिमाऽऽरोवण, ततो वि पुण पावती चरिमं ॥५१३४॥

चारणियाए कज्जमाणोए अदिट्ठदिट्ठेहि अदिट्ठपदातो ज दिट्ठपद त चरिमपद भणति, ततो चरिमपदातो सका भोतिगादिपदेहि विभासाए जाव चरिम पारचिय च पावति ।

स्यान् मति - “अथ दृष्ट कथ सका ?, ननु नि शकितमेव । उच्यते - दूरेण गच्छतो दिट्ठे वि अविभाविते सका, अहवा - आसण्णो वि ईसि अद्वऽच्छि णिरिवलणेण सका भवति ।

अहवा - “चरिमपदे चरिमपदं” भणति । असण्णितपदातो सण्णितपद चरिमपद ति । तत्थ सण्णहिया पडिमा खित्तमादी करेज्जा, परितावणमादिपदेहि चरिम पावेज्जा । अहव ण चरिमारोवण ति तृतीय प्रकार - जहणे चरिम मूल, मज्झिमे चरिम अणवट्ठो, उक्कोसे चरिम पारचिय । ततो एक्केवकतातो चरिमपदातो सकादिपदेहि चरिम पारचिय पावइ ॥५१३४॥

“अतं पि य आणादिनिष्फण” ति अस्य व्याख्या -

अहवा आणादिविराहणाओ एक्केक्कियाओ चरिमपदं ।

पावति तेण उ गियमा, पच्छित्तधरा अतिपसंगो ॥५१३५॥

अहवा - आणाणवत्थमिच्छतविराहणाण चउह पयाण विगहणापद चरिम, मा विराहणा दुविहा - आय-सज्जमेसु । तत्थ एक्केवकातो त चरिमपद णिष्फज्जइ ।

कह ?, उच्यते - तस्सामिणा दिट्ठे पताविए आयाए परितावणादि चरिम पावति, मज्जे भग्गे पुण सठवणे - छक्काय चउसु गाहा । एव चरिम पावति । जम्हा पसगओ बहुविह भवति तम्हा पसगग्गिय ज चेव आसेवित त चेव दायव्व । ठायमाणस्स ठाणपच्छित्त चेव, पडिमेवमाणम्म पडिमेवणापच्छित्त - न प्रसगमित्थर्थ । ॥५१३५॥

## सं के त

उ० = उद्देश

सू० = सूत्र

पृ० = पृष्ठ

भा० = भाष्य

नि० गा० = निशीथ भाष्य गाथा

नि० चू० = निशीथ-चूर्णि

व्यव० = व्यवहार सूत्र

आचा० नि० गा० = आचारांग नियुक्ति गाथा

आचा० चू० = आचारांग चूर्णि

आचा० नि० टी० = आचारांग नियुक्ति टीका

दशवै० = दशवैकालिक सूत्र

हि० के० = हिस्ट्री ओफ दी केनोनिकल लिटरेचर ओफ दी जैनाज

लेखक : प्रो० हीरालाल कापडिया



वृत्ति शीघ्र कार्ये" ति । तेहि य गामेयगेहिं दुल्लिहिय ति काउ वसे छेत्तु अवाण वती कता । गवेसाविया चाणक्केण - "कि कत ?" ति । आगतो, उवालद्धा, एते वसा रोवगादिसु उवउज्जति, कीस भे छिण्णा ? दसिय लेहचोरिय - "अण्ण सदिट्ठं अण्ण चेव करेहि" ति डडपत्ता । ततो तस्स गामस्स सवालवुद्धे हिं पुरिसेहिं अधोसिरेहिं वति काउ सो गामो सव्वो दद्धो । अण्णे भणति - सवालवुद्धा पुरिसा तीए वतीए छोढु दद्धा ॥५१३६॥

एगमरणं तु लोए, आणति वा उत्तरे अणंताइं ।

अवराहरक्खणद्धा, तेणाणा उत्तरे वलिया ॥५१४०॥

लोइयआणाइक्कमे (एगमरण) । लोमुत्तरे पुण आणाइक्कमे अणेगाति जम्ममरणाइ पावति । अण्ण च अतिचाररक्खणद्धा चेव आणा वलिया, आणाअणतिककमे य अइयाराइक्कमो रक्खितो चेव भवति ॥५१४०॥

"अणवत्थ" ति अस्य व्याख्या -

अणवत्थाए पसंगो, मिच्छत्ते संकमादिया दोसा ।

दुविहा विराहणा पुण, तहियं पुण संजमे इणमो ॥५१४१॥ कठा

अणद्धाडंडो विकहा, वक्खेव विसोत्तियाए सत्तिकरणं ।

आलिगणादिदोसा, असण्हिए ठायमाणस्स ॥५१४२॥

अकारणे डडो अण्णुडडो, सो - दव्वे भावे य । दव्वे अकारणे अवरद्ध रायकुल डडेति । भावडडो णाणादीण हाणी ॥५१४२॥

"विकहाए" वक्खाण -

सुट्ठु कया अह पडिमा, विणासिया ण वि य जाणसि तुमं ति ।

इति विकहादधिकरणं, आलिगणे भंग भदितरा ॥५१४३॥ कठा

अर्ल्लिगणे कजमाणे कयादि हत्थादियाण भगो हवेजा, तत्थ सपरिगहे भट्ठपताइ दोसा हवेज्जा, वक्खेवो त पेक्खतस्स, उल्लाव च करेतस्स सुत्तत्थपल्लिमयो ।

विसोत्तिया दव्वे भावे य । दव्वे सारणिपाणीय वहत तृणमादिणा रुद्ध, अण्णतो कासारादिसु गच्छति, ततो सस्सहाणी भवति । भावे णाणादीण, आगमस्स विसोत्तियाए चरित्तस्स विणासो भवति ।

सत्तिकरणं ति भुत्तभोगीण, अभुत्तभोगीण कोउअ ।

अथ कोइ मोहोदण्ण आलिगेज्ज, आलिगिता भज्जेज्जा, अण्हिए सपरिगहे भट्ठपताइ दोसा, पच्छाकम्मदोसा य, पतो तत्थ गेण्णानी करेज्ज । एते असण्हिते ठायमाणस्स दोसा ॥५१४३॥

इमे य सण्हिए -

वीमंमा पडिणीयट्ठया व भोगत्थिणी व सन्निहिया ।

काणच्छी उक्कंपण, आलाव णिमंतण पलोमे ॥५१४४॥

सण्हिया तिहिं कारणेहिं साधु पलोहेज्जा - वीमसट्ठया पडिणीयट्ठया व भोगत्थिणी वा ।

परविमयमोडणो एगम्स रणो अभिणिवेशेण अकारिणो वि गामणगरादि सन्वे विणामेड, एव एगेण कयमकज्ज सन्वे बालघुट्ठादी जो जत्थ दीमड मो तत्थ मारिज्जति । एम कडगमहो ।

अथवा - इमो कडगमहो, सह तेण कारिणा, मोत्तु वा त कारि (ण), जो आयरिओ गच्छो वा कुल गणो वा त वावादेति, तत्थ वा ठाणे जो सबो त वावादेति ॥५१४६॥

अथवा इम कुज्जा -

गेण्हणे गुरुगा छम्मास कडूणे छेदो होति ववहारे ।

पच्छाकडम्मि मूलं, उड्डहण-विरुंगणे णवमं ॥५१५०॥

पडिमेवते गहिते ङ्क । हत्थे वत्थे वा घेतु कट्ठिते णीते गयकुल फु । तेण परिकट्ठिते फा । ववहारे छेदो । पच्छाकडो ति जितो मूल । उड्डाहे कते विरु गिते वा अणवहो भवति ॥५१५०॥

उद्दावण णिव्विसए, एगमणेगे पदोस पारंची ।

अणवट्ठप्पो दोसु य, दोसु य पारंचीओ होति ॥५१५१॥

उद्विते णिव्विसए वा कते एगमणेगेमु वा पदोसे कते सो पडिमेवगो पारचिय पावति । उड्डहण विरु गण एतेसु दोसु अणवहो भवति, णिव्विमतोद्ववणेमु दोसु पदेमु पारचिय ॥५१५१॥

अथवा - पट्टटो इम कुज्जा -

एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खितदिक्खगस्स अह दोसो ।

इति पंतो णिव्विसए, उद्दवण विरुंगणं व करे ॥५१५२॥

एयस्स ति पडिमेवगस्स ण दोसो, जो अपरिक्खित दिक्खेति तस्म एस दोसो, इति एव चिनेउ पतो आयरिय णिव्विसय करेज्जा, उद्दवेज्ज वा, कण णाम-णयणुगवायण वा करेज्ज, एयं विरुवकरण विरुवण ॥५१५२॥

अथवा सण्हिते इमे दोसा -

तत्थेव य पडिवंधो, अदिट्ठ गमणादि वा अणेंतीए ।

एते अण्णे य तहिं, दोसाओ होंति सण्हिए ॥५१५३॥

तत्थेव पडिमाए पडिवध करेज्जा, अदिट्ठे ति - लेप्पगमामिणा अदिट्ठे वि इमे दोसा भवति ।

अथवा - सा वाणमतरी विगयकोउगा णागच्छति, तीए अणेंतीए सो पडिगमणादी करेज्ज ॥५१५३॥

ताओ पुण सण्हियपडिमाओ इमम्मि होज्जा -

कट्ठे पोत्ते चित्ते, दंतकम्मे य सेलकम्मे य ।

दिट्ठिप्पत्ते रूवे, खित्तचित्तस्स भंसणया ॥५१५४॥

पुण्य कठ । दिट्ठिणा पत्त रुव हट्ठमित्यर्थ । तेण रूवेण खित्त चित्त जस्स मो खित्तचित्तो, तस्म खित्तचित्तम्म पमत्तत्तणओ चारित्ताओ जीवियाओ वा भ्र मो भवति ॥५१५४॥

ततियभगे सुइयविज्जाओ भवति - ताओ य णिच्च सुइसमायारत्तणओ सव्वसुइद्वपडि-  
सेवणतो महिद्धियत्तणओ य दुहविण्णप्पाओ, तेसि उग्गत्तणतो णिच्च दुरणुचरत्तणओ य छेहे य  
सावायत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थभगे गोरि-गधारीओ मातगविज्जाओ साहणकाले लोगगरहियत्तणतो दुहविण्ण-  
वणाओ, जहिद्धकामसपायत्तणओ य दुहमोया ॥५१५८॥ एव चउत्थभगो वक्खाओ ।

इदार्णि तिविधपरिग्गहे गुरु लाघव भण्णति -

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागतिय कुडुवि डंडिए चेव ।

साहस अगमिक्ख भए, इतरे पडिपक्ख पभुराया ॥५१५९॥

सीसो पुच्छति - “पायावच्च-कुडविय-डडियपरिग्गहाण कत्थ गुरुतरो दोसो, कत्थ वा  
अप्पतरो ?” एत्थ य भयणा भण्णति - पागतिय गुरुतर, कोडुविय-डडिय लहुतर ।

कह ?, उच्यते - सो सुखत्तणेण साहसकारी असमिक्खियकारी य, अणीसरत्तणओ य भय ण  
भवति । एव सो पागतियो मारण पि ववसेज्जा ।

“इयरे” ति कोडुविय-डडिया, ते पागतितस्स पडिपक्खभूतो ।

कह ?, उच्यते - ते साहसकारी ण भवति, असमिक्खियकारी य ण भवति, पन्ना भवति, भय च  
तेसि भवति । ५१५९॥

इम -

ईसरियत्ता रज्जा, व भंसए मंतुपहरणा रिसओ ।

तेण समिक्खियकारी, अण्णा वि य सिं वहु अत्थि ॥५१६०॥

मन्तु कोवो । एते रिसओ कोवपहरणा भवति, रुद्धा य मा म रज्जाओ ईसरत्तणओ य भसेहिति,  
अतो ते समिक्खियकारी भवति । अण्ण च तेसि अण्णाओ वि वहु पडिमाओ अत्थि, अतो तेसु अणादरा ॥५१६०॥  
( अत्रोच्यते ) -

अह्वा - “पत्तरो” ति अस्य व्याख्या -

पत्थारदोसकारी, णिवावराओ य बहुजणे फुमइ ।

पागतियो पुण तस्स व निवस्म व भया ण पडिकुज्जा ॥५१६१॥

उडियकोडुवियो गुरुतरो, पागतितो लहुतरो । राया पहु, सो एगस्म अत्थस्स रुद्धो सवे पत्थार  
करेज्जा, रायावकारो य बहुजणे फुसति, तेण सो गुरुतरो । पागतिवावराहो पुण बहुजणे ण फुमइ, अण्ण च -  
पागतितो “तस्स” ति साहुस्स “भया” णिवस्स भया पच्चवकार ण करेति, एतेण कारणेण पागतितो  
लहुतरो ॥५१६१॥

कि च -

अवि य हु कम्मदण्णा, ण य गुत्ती तेसि णेव दारिद्धा ।

तेण कयं पि ण णज्जति, इतरत्थ धुवो भवे दोसो ॥५१६२॥

मिहुणकाले भगिणी गम्मा । सेसकाले भगिणी, धूया य सव्वकाल अप्पणो अगम्मा, अण्णस्म तातो देति त्ति अतो ताहि सह ज मेहुण त मज्झिम ।

खरिगादिसु सव्वजणसामण्णासु ण तिव्वाभिणिवेसो, अतो त जहण्ण । इह माणुस्सदेहजुएण अधिकारो, ण पडिमासु । त देह दुविध - सचेयणमचेयण वा ॥५१६७॥

सामण्णतो देहजुए ठायतस्स इम -

<sup>१</sup>पढमिल्लुगम्मि ठाणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाता ।

छम्मासा <sup>२</sup>उग्घाया, वितिए ततिए भवे छेदो ॥५१६८॥

पढमिल्लुग त्ति जहण्ण, पायावच्चपरिग्गहितो जहण्णे ठाति ङ्क ।

वितिए त्ति मज्झिमे पायावच्चपरिग्गहे ठाति फु ।

ततिय नि उक्कोस पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसे ठाति छेदो ॥५१६९॥

ण भणिय कोविव छेदो, अतस्तज्जापनार्थमिदमुच्यते -

पढमस्स ततियठाणे, छम्मासुग्घाइओ भवे छेदो ।

चउमासो छम्मासो, वितिए ततिए अणुग्घातो ॥५१६९॥

एत्थ पढनट्ठाण पायावच्चपरिग्गह, तस्स ततिय ठाण उक्कोसय, तत्थ जो सो छेदो सो छम्मामितो उग्घातितो णायवो । “चउमासो” पच्छद्द अनयोस्तृतीयस्थानानुवर्तनादिदमुच्यते ।

वितिए त्ति कोटुवे उक्कोसे कोटुवपरिग्गहे चउगुरुओ छेदो ।

ततिए त्ति डडियपरिग्गहे गुरुओ छम्मासिओ छेदो । अर्थादापन्न कोटुवे जहण्णए मज्झिमए य ज चेव पायावच्चे, एव चेव डडिए वि जहण्णमज्झिमे ॥५१६९॥

पढमिल्लुगम्मि तवारिह, दोहि वि लहु होंति एए पच्छित्ता ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होति ततियम्मि ॥५१७०॥

पढमिल्लुगं णाम पायावच्चपरिग्गहे दोण्णि आदिल्ला तवारिहा, ते दो वि लहुया ।

वितिए त्ति कोटुविए जे तवारिहा दोण्णि आदिल्ला ते कालगुरु तवलहु ।

ततिए त्ति डडियपरिग्गहिए जे आदिल्ला दोण्णि तवारिहा ते काललहु तवगुरु ॥५१७०॥

एयं ठाणपच्छित्त । मणुएसु गत ।

इदाणि पडिसेवणापच्छित्त -

चतुगुरुगा छगुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति ।

छगुरुग छेद मूलं, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥५१७१॥

१ प्रथम नाम जघन्य मानुष्यरूपा, तत्र प्राजापत्यपरिगृहीतादौ भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्चत्वारोऽनुद्वाता मासा. सुरव इत्यर्थः ।

द्वितीय - मध्यम, तत्रापि त्रिष्वपि भेदेषु पञ्चासा अनुद्वाता. ।

तृतीय - उत्कृष्ट, तत्र भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्छेदो भवेत्, बृहत्कल्पे गा० २५१८ । २ ऽणुग्घाया, इति बृहत्कल्पे गा० २५१८ ।

लेप्पग आलिंगतस्स जे हत्थादिभगे पच्छक्रम्मादिवा दोसा भवति ते इह देहजुते ण भवति । इमे देहजुए दोसा भवति—इत्थी कामातुरत्तणओ णहेहि ता छिदेज्ज, दत्तेहि वा छिदेज्ज, तेहि सो सूइज्जति सपक्षेण वा परपक्षेण वा जहा एस सेवगो त्ति ॥५१७६॥

माणसीसु वि इमे चउरो विकप्पा—

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य हांति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१७७॥

भगचउक्क कठ ।

चउसु वि भगेसु जहक्कम्म इमे उदाहरणा—

खरिया महिड्डिगणिया, अंतेपुरिया य रायमाया य ।

उभयं सुहविण्णवणे, सुमोय दोहिं पि य दुहाओ ॥५१७८॥

खरिया सव्वजणसामण त्ति सुहविण्णवणा, परिपेलवसुहलवासादत्तणतो सुहमोया पढमभगिल्ला ।

महिड्डिगणिया वि गणियत्तणतो चेव सुहविण्णप्पा जोव्वणरूवविब्भमरूवादिभावजुत्तत्तणतो य भाववक्खेवकारिणिं त्ति दुहमोया वितियभगिल्ली ।

ततियभगे अतेपुरिया । तत्थ दुप्पवेस भय च, अतो दुहविण्णवणा, अवायवहुलत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थे भगे रण्णो माता । सा सुरक्खिया भय च सव्वस्स य गुरुठणे पूयणिज्जति दुहविण्णवणा, सव्वसुहसपायकारिणी अवाए य रक्खति जम्हा तेण दुहमोया । पच्छद्वेण एते चेव जहक्कम्म चउरो भगा गहिया ॥५१७८॥

चोदगो पुच्छइ—

तिण्हं वि कतरो गुरुओ, पागतिं कुडुं वि डंडिए चेव ।

साहस असमिक्खभए, इतरे पडिपक्ख पभु राया ॥५१७९॥

कठा पूर्ववत् । गत माणुस्सग ।

इदाणि तेरिच्छ—

तेरिच्छं पि य तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।

पायावच्च कुडुं विं, दंडियपारिग्गहं चेव ॥५१८०॥

जहण्णगादिग तिविह, एककेवक पायावच्चादितिपरिग्गहिय भाणियव्व ।

अतिग अमिल्ला जहण्णा, खरि महिसी मज्झिमा वलवमादी ।

गोणि कणेरुक्कोसं, पगतं सजितेतेरे देहे ॥५१८१॥

इह दच्चावेक्खतो जहण्णमज्झिमुक्कोसगा ।

## निशीथ : एक अध्ययन

प्रस्तुत ग्रन्थ :

आचारांग सूत्र की अन्तिम चूला 'आयारपकप्प' नाम की थी। जैसाकि उसके 'चूला' नाम से प्रसिद्ध है, वह कभी आचारांग में परिशिष्ट रूप से जोड़ी गई थी। प्रतिपाद्य विषय की गोप्यता के कारण वह चूला 'निशीथ' नाम से प्रसिद्ध हुई, और आगे चलकर आचारांग से पृथक् एक स्वतंत्र शास्त्र बनकर 'निशीथ सूत्र' के नाम से प्रचलित होगई। प्रस्तुत ग्रन्थराज, उसी निशीथ सूत्र का संपादन तथा प्रकाशन है। प्रस्तुत प्रकाशन की विशेषता यह है कि इसमें मूल निशीथ सूत्र के अतिरिक्त उसकी प्राकृत पद्यमय 'भाष्य' नामक टीका है, जो अपने में 'निर्युक्ति' को भी संमिलित किए हुए है। साथ ही भाष्य की व्याख्यास्वरूप प्राकृत गद्यमय 'विशेष चूर्णि' नामक टीका और चूर्णि के २०वें उद्देश की संस्कृत व्याख्या भी है। इस प्रकार निशीथ सूत्र का प्रस्तुत सम्पादन मूलसूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, विशेष चूर्णि और चूर्णि-व्याख्या का एक साथ संपादन है।

इसके संपादक उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि तथा मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'—मुनिद्वय है। इसके तीन भाग प्रथम प्रकाशित हो चुके हैं। यह चौथा भाग है। इस प्रकार यह महान् ग्रन्थ विद्वानों के समक्ष प्रथम बार ही साङ्गोपाङ्ग रूप में उपस्थित हो रहा है। इसके लिये उक्त मुनिद्वय का विद्वद्गम चिरऋणी रहेगा। गोपनीयता के कारण हम लोगों के लिये इसकी उपलब्धि दुर्लभ ही थी। चिरकाल से प्रतीक्षा की जाती रही, फिर भी दर्शन दुर्लभ ! मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि प्रस्तुत ग्रन्थराज को इस भाँति विद्वानों के लिए सुलभ बनाकर उक्त मुनिद्वय ने तथा प्रकाशक संस्था—गन्गानि ज्ञान पीठ, आगरा ने प्रस्तुतः अपूर्व श्रेय अर्जित किया है।

प्रस्तुत में इतना कहना आवश्यक है कि छेद ग्रन्थों के भाष्यों और चूर्णियों का संपादन अपने में एक अत्यन्त कठिन कार्य है। यह ठीक है कि सद्भाग्य से संपादन की सामग्री विपुल मात्रा में उपलब्ध है, किन्तु यह सामग्री प्राचुर्य जहाँ एक ओर संपादक के कार्य को निश्चितता की सीमा तक पहुँचाने में सहायक हो सकता है, वहाँ दूसरी ओर संपादक के शैर्ष्य और कुशलता को भी परीक्षा की कसौटी पर चढ़ा देता है। प्रसिद्ध छेद सूत्र—'दशा', 'नल्प', 'अवधार' और निशीथ तथा पंचकल्प का परस्पर इतना निकट सम्बन्ध है कि कुशल संपादक

१. गिजयकुमुद सूरि द्वारा संपादित होकर प्रकाशित है।

२. 'ब्रह्मकुला' के नाम से मुनिराज श्री पद्म विद्वान जी ने इस भागों में संपादित करके प्रकाशित कर दिया है।

३. श्री मानिक मुनि ने प्रकाशित कर दिया है। किन्तु यह प्रकाशन प्रस्तुत है, अतः पुनः संपादन आवश्यक है।

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, वितिए अणवहु तइय पारंची ।  
तम्हा ठायंतम्हा, मूलं अणवहु पारंची ॥५१८६॥ कठा

आचार्याह -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा तत्थ होइ एककेके ।  
चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्फणं ॥५१८७॥ कठा  
ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुच्चिं ।  
आलवणादी मोत्तुं, तेरिच्छे सेवमाणस्स ॥५१८८॥

पूर्ववत् पुव्वद्ध कठ । माणुसित्थीसु जहा आलवणविब्भमा भवति तहा तिरिक्खीसु णत्थि । अतो ते आलवणादि तिरिक्खीसु मोत्तुं, सेमा आयसजमविराहणादिदोसा सव्वे सभवति ॥५१८९॥

जह हास-खेहु-आकार-विब्भमा होंति मणुयइत्थीसु ।  
आलावा य बहुविहा, ते णत्थि तिरिक्खइत्थीसु ॥५१९०॥ कठा

विण्णवणे इमो चउभगे -

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य, सुहविण्णप्पा य होंति दुहमोया ।  
दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१९०॥

चउभगरयणा कठा कायव्वा ॥५१९०॥

चउभगे जहसख इमे उदाहरणा -

अमिलादी उभयसुहा, अरहण्णगमादिमक्कडि दुमोया ।  
गोणादि ततियभंगे, उभयदुहा सीहि-वग्गीओ ॥५१९१॥

पढमभगे सुहग्गहणे निरपायत्वात् सुहविण्णवणा, लोगगरहिय अप्पत्वाच्च सुहमोया ।

वितियभंगे वाणरिमादी रिउकाले कामातुरत्तणतो सुहविण्णप्पा, ताओ चेव जदा अणुरत्ताओ तदा दुहमोया । एत्थ दिट्ठतो अरहण्णगो ।

ततियभगे गोणादियाओ सपक्खे वि दुक्ख समागम इच्छति, किमग पुण मणुए । अतो दुहविण्णवणा, लोगगरहियत्तणतो सुहमोया ।

चरिमभगे सीहिमादियाओ जीवियतकरीओ तेण दुहविण्णप्पाओ, ताओ चेव जया अणुरत्ताओ अणुवध ण मुयति ति दुहमोया ॥५१९१॥

चोदगो पुच्छति - “को एरिमो ग्रुभो भावो हुज्जा, जो तिरिक्खओगीओ लोगगरहियाओ आसेवेज्जा” ?

अतो गामादीण सुद्ववसहिं अलभता वाहिं गामस्स निवसति । इमेहिं कारणेहिं - वास वासति, ग्रह्वा - वाहिं सीहमादिमावयभय, सरीरावहितेणभय वा, ताहे अतो चेव भावसागारिए वसति । तत्थ तिविधा वि पडिमागो दिव्वा माणुसा तिरिया य वत्थमादिएहिं आवरेंति, अतरे वा कडगचिलिमिलि देंति । एव गीयत्था जयणाए वसता सुज्झति ॥५१६५॥

वहुधा दव्वभावसागारियसभवे इमं भण्णति -

जहि अप्पतरा दोसा, आभरणादीण दूरतो य मिगा ।

चिलिमिणि णिसि जागरणं, गीते सज्झाय-भाणादी ॥५१६६॥

अप्पतरदोसे गीयत्था ठायति, आभरणाउज्जभत्तादीण य अगीयत्था दूरतो ठविज्जति, त दिम ग्रप्पणा ठायति, अनरे वा कडगचिलिमिलि देति, रातो य जागरण करेंति, गीयत्था इत्थिमादिगीतादिसद्देसु य सज्झाय करेति, भाण वा भायति ॥५१६६॥

एसा खलु ओहेणं, वसही सागारिया समक्खाया ।

एत्तो उ विभागेणं, दोण्ह वि वग्गाण वोच्छामि ॥५१६७॥

ज पुरिसइत्थीण सामण्णतो अविभागेण ग्रक्खाय एस ओहो भण्णड । सेस कठ ।

इमो कप्पसुत्ते ( प्रथमोद्देशके सूत्र २६, २७, २८, २९ ) विभागो भणितो -

णो कप्पइ णिग्गथाण इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथाण पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

णो कप्पति णिग्गथीण पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथीण इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ॥५१६८॥

एसेव सुत्तककमो इमो भणितो -

समणाणं इत्थीसुं, ण कप्पति कप्पती य पुरिसेसुं ।

समणीणं पुरिसेसुं, ण कप्पति कप्पती थीसुं ॥५१६९॥ कठा

इत्थीसागारिए उवस्सयम्मि सव्वेव इत्थिगा होती ।

देवी मणुय तिरिक्खी, सच्चेव पसज्जणा तत्थ ॥५१७०॥

जाए इत्थीए सागारिए उवस्सए ण कप्पइ वसिउ मा इत्थी भाणियव्वा, अतो भण्णति - सच्चेव इत्थिया होइ जा हेट्ठा णतरसुत्ते भणिता, ता य देवो मणुस्सी तिरिच्छी । एतासु ठियम्स त चेव पच्छित्त, ते चेव आयमजमविराहणादोमा, सच्चेव पसज्जणापसज्जणपच्छित्त, त चेव ज पुव्वसुत्ते भणिय ॥५१७०॥

चोदगाह -

जति सव्वेव य इत्थी, सोही य पसज्जणा य सच्चेव ।

सुत्तं तु किमारद्धं, चोदग ! सुण कारणं एत्थं ॥५२००॥

जइ सव्व चेव त ज पुव्वसुत्ते भणिय, तो निमिह पुण इत्थसागारियनुत्तममारभो ?



तो एक का संशोधन और संपादन करते हुए दूसरे का संशोधन और संपादन भी सहज भाव से कर ले, तो कोई आश्चर्य नहीं। किन्तु इसके लिये अपार धैर्य की अपेक्षा रहती है, जो गति की शीघ्रता को साधने वाले इस युग में सुलभ नहीं है। ऐसी स्थिति में हमें इतने से भी संतोष करना चाहिए कि एक सुवाच्य रूप में संपादन हमारे समक्ष आया तो सही। जहाँ तक प्रस्तुत निशीथ का सम्बन्ध है, कहा जा सकता है कि इसमें और भी संशोधन अपेक्षित है। फिर भी विद्वान् लोग जिसकी वर्षों से राह देखते रहे हैं<sup>१</sup>, उसे सुलभ बनाकर, उक्त मुनि राजों ने जो श्रेय अर्जित किया है, वह किसी प्रकार भी कम प्रशंसनीय नहीं है।

निशीथसूत्र को छेद-सूत्र माना जाता है। आगमों के प्राचीन वर्गीकरण में छेद ग्रन्थों का पृथक् वर्ग नहीं था; किन्तु जैसे-जैसे श्रमण संघ के आचार की समस्या जटिल होती गई और प्रतिदिन साधकों के समक्ष अपने संयम का पालन और उसकी सुरक्षा के साथ-साथ जैन धर्म के प्रचार और प्रभाव का प्रश्न भी आने लगा, तैसे-तैसे आचरण के नियमों में अपवाद मार्ग बढ़ने लगे और संयम-शुद्धि के सदुपायस्वरूप प्रायश्चित्त-विधान में भी जटिलता आने लगी। परिणामस्वरूप आचारशास्त्र का नवनिर्माण होना आवश्यक हो गया। आचारशास्त्र की जटिलता के साथ-ही-साथ उसकी रहस्यमयता भी क्रमशः बढ़ने लगी। फलतः आगमों का एक स्वतन्त्र वर्ग, छेद ग्रन्थों के रूप में वृद्धिगत होने लगा। यह वर्ग अपनी टीकानुटीकाओं के विस्तार के कारण अंग ग्रन्थों के विस्तार को भी पार कर गया। इतना ही नहीं, उक्त वर्ग ने अंगों के महत्त्व को भी अमुक अंश में कम कर दिया। जो अपवाद, अंगों के अध्ययन के लिये भी आवश्यक नहीं थे, वे सब छेद ग्रन्थों के अध्ययन के लिये आवश्यक ही नहीं, अत्यावश्यक करार दिए गए; यही छेद-वर्ग के महत्त्व को सिद्ध करने के लिये पर्याप्त है। अन्ततोगत्वा आगमों का जो अन्तिम वर्गीकरण हुआ, उसमें, छेद ग्रन्थों के वर्ग को भी एक स्वतंत्र स्थान देना पड़ा। इस प्रकार छेद ग्रन्थों को जैन आगमों में एक महत्त्व का स्थान प्राप्त है—यह हम सबको सहज ही स्वीकार करना पड़ता है। और यह भी प्रायः सर्वसम्मत है कि उन छेद ग्रन्थों में भी निशीथ का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत महत्ता के मौलिक कारणों में निशीथ सूत्र की नियुक्ति, भाष्य, चूर्णि, विशेष चूर्णि आदि टीकाओं का भी कुछ कम योगदान नहीं है। अपितु, यों कहना चाहिए कि भाष्य और चूर्णि आदि के कारण प्रस्तुत ग्रन्थ का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। अतएव निशीथ के प्रस्तुत प्रकाशन से एक महत्त्वपूर्ण कार्य की संपूर्ति उपाध्याय श्री अमर मुनि और मुनिराज श्री कन्हैयालाल जी 'कमल' ने की है, इसमें सन्देह नहीं है।

इतः पूर्व निशीथ का प्रकाशन साइबलोस्टाईल रूप में आचार्य विजयप्रेमसूरि और पं० श्री जंबूविजय जी गणि द्वारा हुआ था। उस संस्करण में निशीथसूत्र, नियुक्ति-मिश्रित भाष्य और विशेष चूर्णि संमिलित थे। किन्तु परम्परा-पालन का पूर्वाग्रह होने के कारण, वह संस्करण, विक्री के लिये प्रस्तुत नहीं किया गया, केवल विशेषसंयमी आत्मार्यों आचार्यों को ही वह उपलब्ध था। निशीथ सूत्र का महत्त्व यदि एक मात्र संयमी के लिये

१. जब से डा० जगदीशचन्द्र जैन ने अपने निबन्ध में निशीथचूर्णि की सामग्री का उपयोग करके विद्वद् जगत् में इसकी बहुमूल्यता प्रकट की है, तब से तो चूर्णि की माँग बराबर बनी रही है।

ही होना, तब तो संपादक मुनिराजों का उक्त एकांगी मार्ग उचित भी माना जा सकता था, किन्तु निशीथ की टीकाओं में भारतीय इतिहास के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, दार्शनिक आदि विविध अंगों को स्पर्श करने वाली प्रचुर सामग्री होने के कारण, तत्-तत् क्षेत्रों में संशोधन करने वाले जिज्ञासुओं के लिये भी निशीथ एक महत्त्वपूर्ण उपयोगी ग्रन्थराज है, अतः उसकी ऐकान्तिक गोप्यता विद्वानों को कथमपि उचित प्रतीत नहीं होती। ऐसी स्थिति में भारतीय इतिहास के विविध क्षेत्रों में संशोधन कार्य करने वाले विद्वानों को सभाष्य एवं सचूणि निशीथ सूत्र उपलब्ध करा कर, उक्त मुनिराजद्वय ने विद्वानों को उपकृत किया है, इसमें संदेह नहीं। जिस नामग्री का उपयोग करके प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन हुआ है, वह सामग्री पर्याप्त है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। फिर भी संपादकों ने अपनी मर्यादा में जो कुछ किया है और विद्वानों के समक्ष सुवाच्य रूप में निशीथसूत्र, नियुक्तिमिश्रित भाष्य और विशेष चूणि प्रकाशित कर जो उपकार किया है, वह चिर स्मणीय रहेगा, यह कहने में जरा भी अतिशयोक्ति नहीं है। संपादकों का इस दिशा में यह प्रथम ही प्रयास है, फिर भी इसमें उन्हें जो सफलता मिली है, वह कार्य की महत्ता और गुरुता को देखते हुए—साथ ही समय की अल्पावधि को लक्ष्य में रखते हुए अभूतपूर्व है। अत्यन्त अल्प समय में ही इतने विराट् ग्रन्थ का संपादन और प्रकाशन हुआ है। समय और अर्थव्यय दोनों ही दृष्टियों से देखा जाए, तो वह नगण्य ही है। किन्तु जो कार्य मुनिराजों की निष्ठा ने किया है, वह भविष्य में होने वाले अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों के प्रति उनके अन्नमन को उत्साह-शील बनाएगा ही, तदुपरान्त विद्वान लोग भी अब उनसे इससे भी अधिक प्रभावोत्पादक ग्रन्थों के प्रकाशन-संपादन की अपेक्षा रखेंगे—यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं। हम आशा करने हैं कि उपाध्याय श्री अमर मुनि तथा मुनिराज श्री कन्दैयान्नान जी, प्रस्तुत क्षेत्र में जब प्रथम बार में ही इस उल्लेखनीय सफलता के साथ आगे आये हैं, तब ये दोनों अपने प्रस्तुत सुभग सहकार को भविष्य में भी बनाये रखेंगे और विद्वानों को अनेकानेक ग्रन्थों के मधुर फलों का रसास्वादन कराकर अपने को चिर यशस्वी बनाएंगे ! कहीं यह न हो कि प्रथम प्रयास के इस अभूत पूर्व परिश्रम के कारण आने वाली थकावट ने प्रस्तुत क्षेत्र ही छोड़ दें, फलस्वरूप हमें उनसे प्राप्त होने वाले सुषम साहित्यिक मिष्ट फलों के रसास्वादि में वंचित होना पड़े। हमारी और अन्य विद्वानों की उनसे यह विनम्र प्रार्थना है कि वे इस क्षेत्र में अधिकधिक प्रगति करें और यथावसर अपनी असूक्ष्म सेवाएं देने रहें।

## निशीथ का महत्त्व :

छेद सूत्र दो प्रकार के हैं—एक तो अंगान्तर्गत और दूसरे अंग-बाह्य। निशीथ को अंगान्तर्गत माना गया है, और दोष छेद सूत्रों को अंग-बाह्य। यह निशीथ सूत्र की महत्ता को सप्रमाण सूचित करता है। छेदसूत्र का स्वतंत्र वर्ग बना और निशीथ की गणना उसमें की जाने लगी, तब भी यह स्वयं अंगान्तर्गत ही माना जाता रहा—इस बात की गृहणा प्रस्तुत निशीथ सूत्र की चूणि के प्रारंभिक भाग के पञ्चोक्तियों में दिखी नहीं रहेगी। यद्यपि कई स्थान रूप में देखा जाय, तो इनके लिए निशीथ भाष्य की गा० ६१८० और उसकी मोक्षान्त चूणि की पढ़ना चाहिए। यहां निशीथ सूत्र रूप में प्रस्तुत करता है कि कानिच भूत यथावसंशयि ते और एकल=निशीथ उसी का एक अंग है। पञ्चवक्त्रतो यानि स्थिति के द्वारा चूणि की कार्यप्रणालि

जाने पर, चरणानुयोग के अन्तर्गत हो गया। किन्तु जो अन्य छेद अध्ययन अंग बाह्य हैं, उनका समावेश कहाँ होगा? उत्तर में कहा गया है कि वे छेद सूत्र भी चरणानुयोग में ही सम्मिलित समझने चाहिए। इससे स्पष्ट है कि समग्र छेदों में से केवल निशीथ ही अंगान्तर्गत है।

भाष्यकार के मत से छेदसूत्र उत्तम श्रुत<sup>१</sup> है। निशीथ भी छेद के अन्तर्गत है, अतः उक्त उल्लेख पर से उसकी भी उत्तमता सूचित होती है। कहा गया है कि प्रथम चरणानुयोग का अर्थात् आचारांग के नव अध्ययन का ज्ञान किये बिना ही जो उत्तमश्रुत का अध्ययन करता है, वह दंडभागी बनता है<sup>२</sup>। छेद सूत्रों को उत्तम श्रुत क्यों कहा गया? इसका उत्तर दिया गया है कि छेदों में प्रायश्चित्त-विधि बताई गई है, और उससे आचरण की विशुद्धि होती है। अतएव यह उत्तम श्रुत है<sup>३</sup>। उपाध्यायादि पदों की योग्यता के लिये भी निशीथ का ज्ञान आवश्यक माना गया है<sup>४</sup>। निशीथ के ज्ञाता को ही अपनी टोली लेकर पृथक् विहार करने की आज्ञा शास्त्र में दी गई है। इसके विपरीत यदि किसी को निशीथ का सम्यक् ज्ञान नहीं है, तो वह अपने गुरु से पृथक् होकर, स्वतंत्र विहार नहीं कर सकता<sup>५</sup>। आचारप्रकल्प=निशीथ का उच्छेद करने वालों के लिये विशेष रूप से दण्ड देने की व्यवस्था की गई है<sup>६</sup>। इतना ही नहीं, किन्तु निशीथ-धर के लिये विशेष अपवाद मार्ग की भी छूट दी गई है<sup>७</sup>। इन सब बातों से—लोकोत्तर दृष्टि से—भी निशीथ को महत्ता सिद्ध होती है।

छेद सूत्र को प्रवचन रहस्य<sup>८</sup> कहा गया है। उसे हर कोई नहीं पढ़ सकता, किन्तु विशेष योग्यतायुक्त व्यक्ति ही उसका अधिकारी होता है। अनधिकारी को<sup>९</sup> इसकी वाचना देने से, वाचक, प्रायश्चित्त का भागी होता है<sup>१०</sup>। इतना ही नहीं, किन्तु योग्य पात्र को न देने से भी प्रायश्चित्त का भागी होता है<sup>११</sup>। क्योंकि ऐसा करने पर सूत्र-विच्छेद आदि दोष होते हैं।<sup>१२</sup>

आचारप्रकल्प=निशीथ के अध्ययन के लिये कम-से-कम तीन वर्ष का दीक्षापर्याय विहित है। इससे पहले दीक्षित साधु भी इसे नहीं पढ़ सकता है<sup>१३</sup>। यह प्रस्तुत शास्त्र के गांभीर्य की

१. नि० गा० ६१८४

२. नि० सू० उ० १६ सू० १८, भाष्य गा० ६१८४

३. नि० गा० ६१८४ की चूर्णि

४. व्यवहार सूत्र उद्देश ३, सू० ३-५, १०

५. व्यवहार भाग-४, गा० २३०, ५६६

६. वही, उद्देश ५, सू० १५-१८।

७. वही, उद्देश ६, पृ० ५७-६०।

८. नि० चू० गा० ६२२७, व्यवहार भाष्य तृतीय विभाग, पृ० ५८।

९. अनधिकारी के लिये, देखो—नि० चू० भा० गा० ६१६८ से।

१०. नि० सू० उ० १६ सू० २१।

११. वही, सू० २२

१२. नि० गा० ६२३३।

१३. नि० चू० गा० ६२६५, व्यवहार भाष्य—उद्देश ७, गा० २०२-३

और महत्त्वपूर्ण संकेत है। साथ ही यह भी कहा गया है कि केवल दीक्षापर्याय ही अपेक्षित नहीं है, परिणत बुद्धि<sup>१</sup> का होना भी आवश्यक है।

दोषों की आलोचना, किसी अधिकारी गुरु के समक्ष करनी चाहिए। प्राचीन परंपरा के अनुसार कम-से-कम कल्प और प्रकल्प—निशीथ का ज्ञान जिसे हो, उन्ही के समक्ष आलोचना की जा सकती है<sup>२</sup>। जब तक कोई श्रुत साहित्य में निशीथ का ज्ञान न हुआ हो, तब तक वह आलोचना सुनने का अधिकारी नहीं होता—यह प्राचीन परंपरा रही है। आगे चलकर कल्प शब्द से दशा, कल्प और व्यवहार—ये तीनों शास्त्र विवक्षित माने गये हैं। और माध्यागत 'तु' शब्द से अन्य भी महाकल्प सूत्र, महा-निशीथ और निष्ठुक्ति पाठिका भी विवक्षित हैं, ऐसा माना जाने लगा<sup>३</sup>। किन्तु मूल में कल्प और प्रकल्प-निशीथ ही विवक्षित रहे, यह निशीथ की महत्ता मित्र करता है। आलोचनाएं ही नहीं, किन्तु उपाध्याय पद के योग्य भी वही व्यक्ति माना जाना था, जो कम-से-कम निशीथ को तो जानता ही हो<sup>४</sup>। श्रुत-ज्ञानियों में प्रायश्चित्त दान का अधिकारी भी वही है, जो कल्प और प्रकल्प-निशीथ का ज्ञाता हो। इससे भी शास्त्रों में निशीथ का क्या महत्त्व है, यह ज्ञात होता है<sup>५</sup>। इसका कारण यह है कि अनाचार के कारण जो प्रायश्चित्त आता है, उसका विधान निशीथ में विशेष रूप से मिलता है<sup>६</sup>। और उस प्रायश्चित्त विधि के पीछे बल यह है कि स्वयं निशीथ का आधार पूर्वगत श्रुत है, अतः उससे भी शुद्ध हो सकती है<sup>७</sup>। इसका फलितार्थ यह है कि केवली और चतुर्दश पूर्वधर को प्रायश्चित्त-दान का जैसा अधिकार है, प्रकल्प-निशीथ धर को भी वैसा ही अधिकार है<sup>८</sup>। निशीथ सूत्र के अधिकारी और अनधिकारी का विवेक करते हुए भाष्यकार ने अंत में कहा है कि जो रहस्य को संभाल न सकता हो, जो अपवाद पद का आश्रय लेकर अनाचार में प्रवृत्ति करने वाला हो, जो ज्ञानादि आचार में प्रवृत्त न हो, ऐसे व्यक्ति को निशीथ सूत्र का रहस्य बताने वाला संगार-भ्रमण का भागी होता है। किन्तु जो रहस्य को पचा सकता हो, यावज्जीवन पर्यन्त उसको धारण कर सकता हो, मायावी न हो, तुला के समान मध्यस्थ हो, समित हो, और जो कल्पों के अनुपालन में स्वयं संलग्न होकर दूसरों के लिये मार्ग दर्शक दीपक का काम करता हो, वह धर्ममार्ग का आचरण करके अपने संगार का उच्छेद कर लेता है। अर्थात् निशीथ के बताने मार्ग पर चलने का फल मोक्ष है<sup>९</sup>।

१. व्यव० उद्देश १०, सू० २०—२१; व्यवहार भा० भा० १०१—१०२। तथा नि० सू० सू० ३
२. नि० भा० ६३८५ और व्यवहार भाष्य, विभाग-२, भा० १३७;
३. निशीथ सू० भा० ६३८१ और व्यवहार टीका विभाग २, भा० १३७;
४. व्यवहार सूत्र उद्देश ३, सू० ३
५. नि० भा० ६४८८
६. नि० भा० ६४२७, ६४८६
७. यही, भा० ६४०० व्यवहार भाष्य द्वि० विभाग, भा० २४४; सू० विभाग, भा० १६३
८. यही, भा० ६६७४ तथा व्यवहार द्वितीय विभाग, भाष्य भा० २२१
९. नि० ६७०२—६७०३, व्यवहार उद्देश १०, सूत्र २०।

निशीथ सूत्र ही नहीं, किन्तु उसकी 'पीठिका' के लिये भी कहा गया है कि यदि कोई अवहुश्रुत, रहस्य को बता देने वाला, जिस किसी के समक्ष—यावत् श्रावकों के संमुख भी अपवाद की प्ररूपणा करने वाला, अपवाद का अवलंबन लेने वाला, असंविग्न और दुर्बलचरित्र व्यक्ति हो, तो उसे पढ़ने का अधिकार नहीं है। अतएव ऐसे अनधिकारी व्यक्ति को 'पीठिका' के अर्थ का ज्ञान नहीं कराना चाहिए। यदि कोई हठात् ऐसा करता है तो वह प्रवचन-घातक होता है और दुर्लभ-बोधि वनता है।<sup>१</sup>

लोकोत्तर दृष्टि से तो इस प्रकार निशीथ का महत्त्व स्वयं सिद्ध है ही, किन्तु लौकिक दृष्टि से भी निशीथ का महत्त्व कुछ कम नहीं है। ईसा की छठी सातवीं शती में भारत वर्ष के सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक संघों की क्या परिस्थिति थी, इसका तादृश चित्रण निशीथ-भाष्य और चूर्णि में मिलता है। तथा कई शब्द ऐसे भी हैं, जो अन्य शास्त्रों में यथास्थान प्रयुक्त मिलते तो हैं, किन्तु उनका मूल अर्थ क्या था, यह अभी विद्वानों को ज्ञात नहीं है। निशीथ-चूर्णि उन शब्दों का रहस्य स्पष्ट करने की दिशा में एक उत्कृष्ट साधन है, यह कहने में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।

### ‘निसीह’ शब्द और उसका अर्थ :

आचारांग नियुक्ति में पांचवीं चूला का नाम 'आचार पकप्प' तथा 'निसीह' दिया हुआ है<sup>२</sup>। अन्यत्र भी उक्त शास्त्र के ये दोनों नाम मिलते हैं। नन्दी में (सू० ४४) और पवित्रयसुत्त (पृ० ६६) में भी 'निसीह' शब्द प्रस्तुत शास्त्र के लिये प्रयुक्त है। धवला में इसका निर्देश 'णिसिहिय' शब्द से हुआ है। तथा जय धवला में 'णिसीहिय' का निर्देश है<sup>३</sup>। और अंगप्रज्ञप्ति चूलिका में (गा० ३४) 'णिसिहिय' रूप से उल्लेख है।

'निसीह' शब्द का संस्कृत रूप 'निशीथ', तत्त्वार्थ-भाष्य<sup>४</sup> जितना तो प्राचीन है ही। किन्तु दिगम्बर साहित्य में उपलब्ध 'णिसिहिय'—या 'णिसीहिय' शब्द का संस्कृत रूप 'निपिधक' हरिवंश पुराण में (१०, १३८) मिलता है, किन्तु गोम्मट सार टीका में 'निपिद्धिका' रूप निर्दिष्ट है, “निपेधनं प्रमाददोषनिराकरणं निपिद्धिः, संज्ञायाम् क प्रत्यये 'निपिद्धिका' प्रायश्चित्तशास्त्रमित्यर्थः।”

(जीव काण्ड, गा० ३६८)

वेबर ने 'निसीह' शब्द के विषय में लिखा है :

This name is explained strangely enough by Nishitha though the

१. नि० गा० ४६५—६

२. आचा० नि० गा० २६१, ३४७

३. पट्खण्डागम, भाग १ पृ० ६६, कसायपाहुड, भाग १ पृ० २५, १२१ टिप्पणों के साथ देखें।

४. तत्त्वार्थ भाष्य १, २०

character of the Contents would lead us to expect Nishedha (निषेध)<sup>१</sup>

अर्थात् उनके मतानुसार 'निशीह' शब्द का स्पष्टीकरण संस्कृत में 'निषेध' शब्द के साथ संबन्ध जोड़कर होना चाहिए, न कि 'निशीय' शब्द से। अपने इस मन की पुष्टि में उन्होंने दश सामाचारिगत द्वितीय 'नैषेधिकी' समाचारी के लिये प्रयुक्त<sup>२</sup> 'निशीहिया' शब्द को उपस्थित किया है। तथा स्वाध्याय-स्थान के लिये प्रयुक्त 'निशीहिया'<sup>३</sup> शब्द का भी उल्लेख किया है। और उन शब्दों की व्याख्याओं को देकर यह फलित किया है कि From this we may indubitably conclude that the explanation by Nishitha (निशीथ) is simply an error<sup>४</sup>—अर्थात् 'निशीह' शब्द को 'निशीथ' शब्द के द्वारा व्याख्या करना भ्रम है। गोम्मटसार की व्याख्या भी इसी ओर संकेत करती है। दिगम्बरपरंपरा में इस शाख के लिये प्रयुक्त शब्द 'णिसिहिय' या 'णिसीहिय' है। अतएव उक्त शब्द की व्याख्या, उस प्रकार के अन्य शब्द के आधार पर, 'निषिधक' या 'निषिद्धिका' होना अगमगत नहीं लगता।

दिगम्बरों के यहाँ प्राकृत शब्दों का जब संस्कृतीकरण हुआ, तब उनके समक्ष वे मूल शास्त्र तो थे नहीं। अतएव शब्दसादृश्य के कारण वैसा होना स्वाभाविक था। किन्तु देखना यह है कि जिनके यहाँ मूल शास्त्र विद्यमान था और वह पठन पाठन में भी प्रचलित था, तब यदि उन्होंने 'निशीह' की संस्कृत व्याख्या 'निशीथ' शब्द से की तो, क्या वह उचित था या नहीं। समग्र ग्रन्थ के देखने से, और नियुक्तिकार आदि ने जो व्याख्या की है, उसके आधार पर, क्या व्यास कर तत्त्वार्थ भाष्य को देखते हुए, यही कहना पड़ता है कि 'निशीह' शब्द का संबन्ध व्याख्याकारों ने जो 'निशीथ' के साथ जोड़ा है, वह अनुचित नहीं है। निशीथ सूत्र में प्रतिपाद्य निषेध नहीं है, किन्तु निषिद्धवस्तु के आचरण से जो प्रायश्चित्त होना है उनका विधान है<sup>५</sup>। अर्थात् जहाँ कल्प आदि सूत्रों में या आचारांग की प्रथम चार चूलाओं में निषेधों की गिनती है वहाँ निशीथ में उनके लिये प्रायश्चित्त का विधान है। स्पष्ट है कि निषिद्ध वस्तु का या निषेध का प्रतिपादन करना, यह इस ग्रन्थ का मुख्य प्रयोजन नहीं है। गोचर्य में उन निषिद्ध कृत्यों का प्रसंगवश उल्लेख मात्र है। क्योंकि उनका कथन किए बिना प्रायश्चित्त का विधान कैसे होगा? ध्यान देने की बात तो यह है कि इस ग्रन्थ में ऐसा एक भी सूत्र नहीं मिलता, जो निषेध-परक हो। ऐसी स्थिति में 'निषेध' के साथ इसका संबन्ध जोड़ना अनावश्यक है। वस्तु निश्चिन्त यह है कि वेबर ने और गोम्मट-टीकाकार ने, इस ग्रन्थ के नाम का जो अर्थ प्राचीन टीकाकारों ने

१. इन्डियन एन्टीक्वेरी, भा० २१, पृ० ६७

२. उत्तराध्यायन २६, २

३. द्वायते ४, २, २

४. इन्डियन एन्टीक्वेरी, भा० २१, पृ० ६७

५. इसका समर्थन श्रीगंगाधर ने भी किया है—“निषिद्धिं बहुविधतापविशुद्धिद्वारा-  
वगत्यां कुरु” —पद्मना, भाग १, पृ० ६८।

“साधनेद्विधत्तं पापव्युत्पत्तिद्वयं निषिद्धिं वक्तव्यं” —अमरनाथ, भा० १, पृ० १०१।



किया है, उस पर ध्यान नहीं दिया। अतएव उनको यह कल्पना करनी पड़ी कि मूल शब्द 'निशीह' का संस्कृत रूप 'निषेध' से सम्बन्ध रखता है। 'निशीथ' नाम के जो अन्य पर्यायवाचक शब्द दिये हैं<sup>१</sup>, उनमें भी कोई निषेधपरक नाम नहीं है। ऐसी स्थिति में इस ग्रन्थ का नाम निशीथ के स्थान में 'निषेध' करना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। टीकाकारों को 'निशीहिया' शब्द और उसका अर्थ अत्यन्त परिचित भी था। ऐसी स्थिति में यदि उसके साथ 'निशीह' शब्द का कुछ भी सम्बन्ध होता, तो वे अवश्य ही वैसी व्याख्या करते। परन्तु वैसी व्याख्या नहीं की, इससे भी सिद्ध होता है कि 'निशीह' का 'निशीथ' से सम्बन्ध है, न कि 'निषेध' से।

'निशीह'—निशीथ शब्द की व्याख्या, परम्परा के अनुसार निक्षेप पद्धति का आश्रय लेकर, निर्युक्तिभाष्य—चूर्णि में की गई है<sup>२</sup>। उसका सार यहाँ दिया जाता है, ताकि निशीथ शब्द का अर्थ स्पष्ट हो सके, और प्रस्तुत में क्या विवक्षित है—यह भी अच्छी तरह ध्यान में आ सके।

निशीथ शब्द का सामान्य अर्थ किया गया है—अप्रकाश।—'निशीहमप्रकाशम्'<sup>३</sup>। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की दृष्टि से जो निशीथ की विवेचना की गई है, उस पर से भी उसके वास्तविक अर्थ का संकेत मिलता है।

द्रव्य निशीथ मैल या कालुष्य है। गंदले पानी में कतक वृक्ष के फल का चूर्ण डालने पर उसका जो मैल नीचे बैठ जाता है वह द्रव्य निशीथ है, और उसका प्रतियोगी स्वच्छ जल अनिशीथ है। अर्थात् जो द्रव्य अस्वच्छ या कलुष है, वह निशीथ है।

क्षेत्र-दृष्टि से लोक में जो कलुष अर्थात् अंधकारमय प्रदेश हैं उन्हें भी निशीथ की संज्ञा दी गई है। देवलोक में अवस्थित कृष्ण राजियों को, तिर्यग्लोक में असंख्यात द्वीप समूहों के उस पार अवस्थित तमःकाय को, तथा सीमंतक आदि नरकों को अंधकारावृत होने से निशीथ कहा गया है। मैल जिस प्रकार स्वयं कलुष या अस्वच्छ है अर्थात् स्वच्छ जल की भांति प्रकाश-रूप नहीं है, वैसे ही ये प्रदेश भी कलुष ही हैं। वहाँ प्रकाश नहीं होता, केवल अंधकार ही अंधकार है। इस प्रकार क्षेत्र की दृष्टि से भी अप्रकाश, अप्रकट, या अस्वच्छ प्रदेश, अर्थात् अंधकारमय प्रदेश ही निशीथ है।

काल की दृष्टि से रात्रि को निशीथ कहा जाता है, क्योंकि उस समय भी प्रकाश नहीं होता, अपितु अंधकार का ही राज्य होता है। अतएव रात्रि या मध्यरात्रि भी काल-दृष्टि से निशीथ है।<sup>४</sup>

१. नि० गा० ३

२. नि० गा० ६७ से

३. नि० चू० गा० ६८, १४८३

४. रात में होने वाले स्वाध्याय को भी 'निशीथिका' कहा गया है। इसी पर से प्रस्तुत सूत्र, जो प्रायः अप्रकाश में पड़ा जाता है, निशीथ नाम से प्रसिद्ध हुआ है। घबला और जय-घबला में 'निशीथिका' का ही प्राकृतरूप 'निशीहिया' स्वीकृत है, ऐसा मानना उचित है।

वत्तम्मि जो गमो खलु, गणवच्छे सो गमो उ आयरिए ।  
णिक्खिखवणे तम्मि चत्ता, जमुदिसे तम्मि ते पच्छा ॥५५६०॥

जो वत्तस्स भिवखुस्स गमो सो गमो गणावच्छेइए आयरियाण । इम णाणत्त - जइ णाण-दसण-णिमित्त गच्छति अप्पणो य से आयरिओ सविग्गो तस्स पासे णिक्खिविउ गच्छ अप्पवितितो ततितो वा गच्छति ।

अह से अप्पणो आयरिओ असविग्गो तो ते साधू जति तस्स पासि णिक्खिविउ गच्छति तो तेण ते चत्ता भवति, तम्हा ण णिक्खियव्वा णेयव्वा । तेण ते जेण तेण पगारेण ते य धेतु जत्थ गतो तत्थ पढम अप्पाण णिक्खिवति, पच्छा भणति - “जहा भे अह, तहा भे इमे वि” । “तम्मि ते पच्छा” तस्स सिस्सा भवति ॥५५६०॥

णिक्खिखवणा अप्पाणो परे य संतेसु तस्स ते देति ।

संघाडगं असंते, सो वि ण वावारऽणापुच्छा ॥५५६१॥

जदा अप्पा परो य णिक्खित्तो तदा तस्स वि आयरियस्स किं वा जांया ?, जति से सति ति अप्पणो य सहाया पहुप्पति ताहे तेण तस्स चेव दायव्वा, असतेसु संघाडग एग देति, अवसेसा अप्पणा गेण्हति । अह सव्वहा असहातो सव्वे वि गेण्हति, तेण वि से कायव्व, तस्स गुरुस्स अणापुच्छाए सो ते ण वावारेति ॥५५६१॥

आयरिय गिहिभूय ओसण्ण वा जत्थ पेच्छति तत्थिम भणति -

ओहावित-उस्सण्णे, भण्णति अणाहओ विणा वयं तुब्भे ।

कमसीसमसागरिए, दुप्पडियरगं जतो तिण्हं ॥५५६२॥

पुव्वद्ध कठ । ओसण्णस्स पुव्वगुरुस्स कमा पादा सिरेण तेसु णिवडति असागरिए ।

सीसो भणति - “तस्स असजयस्स कह चलणेसु णिवडिज्जइ” ।

आयरिओ भणति - “दुप्पडियरय जतो तिण्हं” दुवख उवकारिस्स पच्चुवकारो किज्जति, त जहा - माता पिउणो, सामिस्स, धम्मायरियस्स । अतो तस्स पादेसु वि पडिज्जति, ण दोसो ॥५५६२॥

कि च -

जो जेण जम्मि ठाणम्मि, ठाविओ दंसणे व चरणे वा ।

सो तं तओ चुयं तम्मि चेव कातं भवे निरणो ॥५५६३॥

सो सीसो तेण आयरिएण णाणादिसु ठविओ, इदाणि सो आयरिओ ततो णाणादिभावाओ चुतो, तं चुय सो सीसो तेसु चेव णाणादिसु ठवेतो निरणो भवति ॥५५६३॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,

देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,

पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ,

देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१८॥



## निशीह शब्द और उसका अर्थ :

भाव की दृष्टि से जो अप्रकाशरूप हो वह निशीथ ~~कहा~~ <sup>जानिपद</sup> <sup>१</sup>। यद्यपि प्रस्तुत निशीथ सूत्र, इसीलिये निशीथ कहा गया कि यह सूत्ररूप में, अर्थ रूप में और उभय रूप में सर्वत्र प्रकाश-योग्य नहीं है, किन्तु एकान्त में ही पठनीय है। चर्चा का सार यह है कि जो अर्थकारमय है—अप्रकाश है, वह लोक में निशीथ नाम से प्रसिद्ध है। अतएव जो भी अप्रकाश धर्मक हो, वह सब निशीथ कहे जाने योग्य है।

‘जं ह्येति अप्पगासं, तं तु णिसीहं ति लोग-संसिद्धं ।

जं अप्पगासवम्मं, षण्णं पि तयं निशीथं ति ।’

—नि० सू० गा० ६६

भाव निशीथ का लौकिक उदाहरण रहस्य सूत्र है। हर किसी के लिये अप्रकाशनीय रहस्य-सूत्रों में विद्या, मंत्र और योग का परिगणन किया गया है। ये सूत्र अपरिणत बुद्धिवाले पुरुष के समक्ष प्रकाशनीय नहीं हैं, फलतः गुप्त रखे जाते हैं। उसी प्रकार प्रस्तुत निशीथ सूत्र भी गुप्त रखने योग्य होने से ‘निशीथ’ है।

चूर्णिकार ने निशीथ शब्द का उपयुक्त मूलानुसारी अर्थ करके दूसरे प्रकार में भी अर्थ देने का प्रयत्न किया है :

कतक फल को द्रव्य निशीह कह सकते हैं, क्योंकि उसके द्वारा जल का मूल बँट जाता है अर्थात् जल से मूल का अंश दूर हो जाता है—“ज्जहा तेण मल्लमुदप पक्खितेण मल्लो णिसीवति—उदगादयमप्युत्तीर्यथः ।” प्रस्तुत में प्राकृत शब्द ‘निशीह’ का सम्बन्ध संस्कृत शब्द नि + सद् से जोड़ा गया है ।<sup>१</sup>

क्षेत्र-णिशीह, द्वीप समुद्रों से बाहिरी लोक है, क्योंकि वहाँ जीव और पुद्गलों का प्रभाव जात होता है। “येतन्निशीहं यद्विहीयममुदादिहोमा म, ज्जहा ते षण्ण जीवपुग्गहाणं तदभावो अप-गच्छति ।” जिस प्रकार द्रव्य निशीथ में पानी से मूल का अपगम विवक्षित था, उसी प्रकार यहाँ भी अपगम ही विवक्षित है। अर्थात् ऐसा क्षेत्र, जिसके प्रभाव से जीव तथा पुद्गलों का अपगम होना है—अर्थात् वे दूर हो जाते हैं, क्षेत्र निशीथ कहा जाता है।

कालनिशीह दिन को कहा गया है; वह इसलिये कि रात्रि के अर्थकार का अपगम दिन होते ही हो जाता है। “कासल्लिसीहं सतो, तं षण्ण शान्तमस्य निशीयमं भवति ।” यहाँ भी निशीह शब्द का अपगम अर्थ ही अभिप्रेत है।

भावनिशीह को व्याख्या स्वयं भाष्य गार में की है :

अट्ठण्हि-कम्मपदो तिरीयो हेतु तं तिरीयं ।

नि० सू० गा० ३८

१. ‘जानिपद’ शब्द से भी ‘ज + नि + पद’ है। इसका अर्थ है—जिस पदार्थ के द्वारा पदार्थमय निर्माण होता है वह ‘जानिपद’ है। अथवा जो दृष्ट के मर्जीर ईदर में होता है वह ‘जानिपद’ है।

तेसि असणादिं देते पच्छित्त सव्वपदेसु चउलहुं, अत्थे चउगुह, आणादिया य दोसा, अणवत्थपसगा अण्णो वि दाहिति, सङ्गण वि मिच्छत्त जणेंति ॥५६२६॥

<sup>१</sup>दाण<sup>२</sup>गहणे<sup>३</sup> संवा<sup>४</sup>सओ य वायण पडिच्छणादी य ।

<sup>६</sup>सरिसं पभासमाणा, जुत्ति<sup>७</sup>सुवण्णेण ववहरंति ॥५६२७॥

“<sup>१</sup>दाणे” त्ति अस्य व्याख्या -

गव्वेण ते उदिण्णा, अण्णे वा देंते दट्ठु भासंति ।

नूणं एते पहाणा, विसादि संसग्गिए गच्छे ॥५६२८॥

अम्ह एते असणादि देति गव्व करेज्ज, तेण गव्वेण उदिण्णेण पलावा भवेज्ज । अण्णो वा दिज्जत दट्ठु भणेज्ज - “णूण एते चेव पहाणा” । तेसिं वा किं वि अहाभावेण गेलण्ण होज्ज, ते णेज्ज - “एतेहिं किं पि विसादि दिण्ण”, एत्थ गेण्हण-कड्डुणादिया दोसा । एव दाणसंसग्गीए अगीयसेहादिया चोदिता तेसु चेव वएज्जा ॥५६२८॥

“<sup>२</sup>गहणे त्ति अस्य व्याख्या -

तेसिं पडिच्छणे आणा, उग्गममविसुद्ध आभिओगं वा ।

पडिणीयया व देज्जा, बहुआगमियस्स विसमादी ॥५६२९॥

तेसिं हत्थातो भत्तादि पडिच्छनस्स तित्थकराणातिक्कमो, उग्गमादि अमुद्ध परिभुज्जति, वसीकरण वा देज्ज “अम्ह एते पडिवक्खो” त्ति पडिणीयत्तणे । अहवा - एस बहु आगमिउ त्ति विसादि देज्ज ।

एगवसहिंसवासेण सेहा णिद्धम्मा सीदति, तेसिं वा चरिय गेण्हति ।

सुय-वायण पडिच्छणादिसु वि समग्गिमादिदोसा ।

जुत्तिमुवण्णदिट्ठतेण वा सरिस चरणकरण कहेतो सेहादी हरेति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा णो किं च तेसिं देजा, पडिच्छेज्ज वा, ण वा सवसेजा । एव सक्करेतेण पुव्वभणिया दोसा परिहरिया भवति । ॥५६२९॥

भवे कारण -

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, अयाणमाणे वि चित्तिपदं ॥५६३०॥

असिवादिकारणेहिं तेसिं दिज्जति पडिच्छति वा ॥५६३०॥

इम गेलण्णे -

गेलण्णं मे कीरति, न कीरती एव तुव्व भणियम्मि ।

एस गिलाणो एत्थं, गवेसणा णिण्हओ सो य ॥५६३१॥

अर्थात् अष्टविध कर्ममल जिससे बैठ जाए<sup>१</sup>—दूर हो जाए, वह निशीथ है।

स्पष्ट है कि यहाँ भी णिसीह शब्द में मूल धातु नि × सद् ही माना गया है। 'उपनिषद्' शब्द में भी उप × नि × सद् धातु है। उसका तात्पर्य भी पास में बिठा कर गुरु द्वारा दी जाने वाली विद्या से है। अर्थात् उपनिषद् शब्द का भी 'रहस्य' 'गोप्य' एवं 'अप्रकाश्य' अर्थ की ओर ही संकेत है। निषेध शब्द में मूल धातु नि × सिध् है। अतः स्पष्ट ही है कि वह यहाँ विवक्षित नहीं है।

तात्पर्य यह है कि णिसीह—निशीथ शब्द का मुख्य अर्थ गोप्य है। अस्तु जो रात्रि की तरह अप्रकाशरूप हो, रहस्यमय हो, अप्रकाशनीय हो, गुप्त रखने योग्य हो, अर्थात् जो सर्व-साधारण न हो, वह निशीथ है। यह आचार-प्रकल्प शास्त्र भी वैसा ही है, अतः इसे निशीथ सूत्र कहा गया है। णिसीह=निशीथ शब्द का दूसरा अर्थ है—जो निसीदन करने में समर्थ हो। अर्थात् जो किसी का अपगम करने में समर्थ हो, वह 'णिसीह<sup>२</sup>=निशीथ है। आचारप्रकल्प शास्त्र भी कर्ममल का निसीदन—निराकरण करता है, अतएव वह भी निशीथ कहा जाता है। हाँ, तो उपर्युक्त दोनों अर्थों के आधार पर प्राकृत 'णिसीह' शब्द का सम्बन्ध 'निषेध' से नहीं जोड़ा जा सकता।

निशीथ चूर्णि में शिष्य की ओर से शंका की गई है कि<sup>३</sup> यदि कर्मविदारण के कारण आचारप्रकल्प शास्त्र को निशीथ कहा जाता है, तब तो सभी अध्ययनों को निशीथ कहना चाहिए; क्योंकि कर्मक्षय करने की शक्ति तो सभी अध्ययनों में है। गुरु की ओर से उत्तर दिया गया है कि अन्य सूत्रों के साथ समानता रखते हुए भी इसकी एक अपनी विशेषता है, जिसके कारण यह सूत्र 'निशीथ' कहा जाता है। वह विशेषता यह है कि यह शास्त्र, अन्यो को अर्थात् अधिकारी से भिन्न व्यक्तियों को, सुनने को भी नहीं मिलता<sup>४</sup>। अगीत, अति परिणामी और अपरिणामी अनधिकारी हैं, अतः वे उक्त अध्ययन को सुनने के भी अधिकार नहीं हैं, क्योंकि यह सूत्र अनेक अपवादों से परिपूर्ण है। और उपर्युक्त अनधिकारी अनेक दोषों से युक्त होने के कारण यत्र तत्र अर्थ का अनर्थ कर सकते हैं।

एक ओर भी शंका-समाधान दिया गया है। वह यह कि जिस प्रकार लौकिक आरण्यक आदि शास्त्र रहस्यमय होने से निशीथ हैं, उसी प्रकार प्रस्तुत लोकोत्तर शास्त्र भी निशीथ है। दोनों में रहस्यमयता की समानता होने पर भी प्रस्तुत आचारप्रकल्पशास्त्र-रूप निशीथ की यह विशेषता है कि वह कर्ममल को दूर करने में समर्थ है, जबकि अन्य लौकिक निशीथ—

१. यहाँ बैठने से कर्म का क्षय, क्षयोपशम और उपशम विवक्षित है।
२. गाथा में 'णिसीध' पाठ है। वह 'कथ' के 'कष' रूप की याद दिलाता है। मात्र शब्द-श्रुति के आधार पर 'णिसीध' का 'निषेध' से सम्बन्ध न जोड़िए, क्योंकि व्युत्पत्ति में 'णिसीयते जेण' लिखा हुआ है।
३. नि० गा० ७० की चूर्णि।
४. 'अविसेसे वि विसेसो सुहं पि जं णेइ अरण्णेति'—नि० गा० ७०

आरण्यकादि वैसे नहीं हैं। आरण्यकादि शास्त्र तो सब कोई सुन सकते हैं, जब कि प्रस्तुत निशीथ शास्त्र अन्य तीर्थिकों के श्रुतिगोचर भी नहीं होता। स्वतीर्थिकों में भी अगीतार्थ आदि इसके अधिकारी नहीं हैं। यही इसकी विशेषता है।<sup>१</sup>

यह चर्चा भी इस बात को सिद्ध करती है कि निशीह शब्द का सम्बन्ध निषेध से नहीं, किन्तु रहस्यमयता या गुप्तता से है। अर्थात् निशीह का जो अप्रकाश रूप निशीथ अर्थ किया गया है, वही मौलिक अर्थ है।

प्रस्तुत निशीथ सूत्र का तात्पर्य निषेध से नहीं है—इसकी पुष्टि नियुक्ति, भाष्य तथा चूणि ने, जो इस शास्त्र का प्रतिपाद्य विषय या अधिकार बताया है, उसने भी होती है। कहा गया है कि आचारांग सूत्र के प्रथम नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों और चार चूलाश्रमों में उपदेश दिया गया है, अर्थात् कर्तव्याकर्तव्य का विवेक बताया गया है। किन्तु पाँचवीं चूला निशीथ में विनयकर्ता के लिये प्रायश्चित्त का विधान है। अर्थात् निशीथ चूला का प्रतिपाद्य विषय प्रायश्चित्त है<sup>२</sup>। अतएव स्पष्ट है कि प्रस्तुत 'निशीह' शब्द का संस्कृत रूप 'निषेध' नहीं बन सकता।

## ‘निशीथ’ के पर्याय :

आचारांग की चूलाश्रमों के नाम नियुक्ति में जहाँ गिनाए हैं, वहाँ पाँचवीं चूला का नाम 'आयारपकण्य'<sup>३</sup>=‘आचार प्रकल्प’ बताया गया है। आगे चलकर स्वयं नियुक्तिकार ने पाँचवीं चूला का नाम 'निशीह'<sup>४</sup>=निशीथ भी दिया है। अतएव निशीथ अथवा आचार प्रकल्प, ये दोनों नाम इसके सिद्ध होते हैं<sup>५</sup>। टीकाकार भी इसका समर्थन करते हैं। देखिए,—टीकाकार ने 'आयारपकण्य' शब्द का पर्याय 'निशीथ' दिया है—“आचारप्रकल्पः—निशीथः” (आचारांग नि० टी० २६१)। टीका में अन्यत्र चूलाश्रमों के नाम की गणना करते हुए भी टीकाकार उसका नाम 'निशीथाध्ययन' देते हैं<sup>६</sup>। उक्त प्रमाणों पर से यह स्पष्ट हो जाना है कि ये दोनों नाम एक ही सूत्र की सूचना देते हैं।

निशीथ सूत्र के लिए पकण्य शब्द भी प्रयुक्त है। परन्तु, आयारपकण्य का ही मूलोपनाम 'पकण्य' हो गया है, ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि निशीथ-चूणि के प्रारंभ में—“एवं कल्पन्त्यासौ पकण्यनामस्य विवरणं कर्त्ते”—(नि० सू० पृ० १) ऐसा चूणिकार ने कहा है। आयार शब्द का अर्थ

१. नि० भा० ७० की चूणि

२. नि० भा० ७१

३. आचारांग नि० २६१। नि० भा० २

४. आचारांग नि० भा० २४७

५. निशीथ-पुष्टिकार भी इसे निशीह सूत्र कहा है—नि० सू० १

६. आचारांग नि० टी० भा० ११

रणा पडिसिद्ध मा एतेसि कोइ देज्ज । एव वत्थपादेसु अलब्धभाणेसु इमा जयणा - ज देवकुलादिसु कप्पडिएसु उच्छुद्ध त गिण्हति, विप्पइण्ण ज उक्कुण्डियादिसु ठित एसणादिसु वा जतति पूर्ववत् ॥५७२०॥

हितसेसगाण असती, तण अगणी सिक्कगा य वागा य ।

पेहुण-चम्मगहणे, भत्तं च पलास पाणिसु वा ॥५७२१॥

रणा रुहेण सधूण उवकरण हरित, सेम ति अण्ण णत्थि, ताहे सीताभिभूता तणाणि गेण्हेज्जा, अगणि गेण्हेज्ज, अगणि वा सेवेज्ज । पत्तगवधाभावे सिक्कगहियादे काउ हि (डे) ज्ज, सन्नादि प (व) वक्तया पाउरणा गेण्हेज्ज, पेहुण ति मोरगमया पिच्छया रयहरणट्टाणे करेज्ज, पत्थरण पाउरण वा जह बोडियाण, चम्मय वा पत्थरणपाउरण गेण्हेज्ज, पलासपत्तिमादिसु भत्त गेण्हेज्ज, अहवा - भत्त कूडगादिसु गेण्हेज्जा पलासपत्तेसु वा भुजेज्ज । पाणीसु वा गहण भुजण वा ॥५७२१॥

असती य लिंगकरणं, पण्णवण्डा सयं व गहण्डा ।

आगाढकारणम्मि, जहेव हंसादिणं गहणं ॥५७२२॥

असति रण्णोवसमस्स, उवकरणस्स वा असति, ताहे परलिंग करेति । ज रण्णो अणुमत तेण लिंगेण ठिता ससमय-परसमयविद्व वसभा रायाण पणवेति - उवसामेतीत्यर्थ । तेन वा परलिंगेन ठिता उवकरण स्वयमेव शुण्हन्ति, एय चेव आगाढ । अण्णम्मि वा आगाढे जहेव हसमादितेत्तलाण गहण विट्ठ तहा इह पि आगाढे कारणे वत्थ-पत्तादियाण गहण कायव्व । ओसोवण-तालुग्वाडमादिएहिं अन्थेन वाहि सप्रयोगेनेत्यर्थ ॥५७२२॥ उवकरणहडे त्ति गयं ।

इदाणि भेदे त्ति -

दुविहम्मि भेरवम्मि, विज्जणिमित्ते य चुण्ण देवीए ।

सेट्ठिम्मि अमच्चम्मि य, एसणमादीसु जइयव्वं ॥५७२३॥

भेरव भयानक, त दुविह जीवियाओ चारित्ताओ वा ववरोवेति त रायाण पटुट्ट विज्जादीहि वसीकरेज्जा, णिमित्तेण वा आउट्टिज्जति, चुण्णेहि वा आघसमादीहि वसीकज्जति । “देवी य” त्ति जा य तरस महादेवी इहा सा वा विज्जादीहिं आउट्टिज्जति, अहवा - खतगो खतिगा वा से जो वा रण्णो अबुक्कमणिज्जो, जइ तेहिं भण्णतो ठितो सुदर ।

अह ण ठाति ताहे सेट्ठि भण्णति, अमच्च वा, जइ ते उवसमेज्जा । अहवा - जाव उवसमइ ताव सेट्ठि-अमच्चान्ण अवगहे अच्छति, जो वा रण्णो अबुक्कमणिज्जो तस्स वा घरे अच्छति, एसणादिसु जयति पूर्ववत् । पासजण (पासडण) वा उवट्टावेज्जा, जइ णाम ते उवसामेज्ज अण्णज्जिहां अणुसासणादीहिं ॥५७२३॥

आगाढे अण्णलिंगं, कालम्बेवो वहिं निगमणं वा ।

कतकरणे करणं वा, पच्छायण थावरादीसु ॥५७२४॥

अणुवसमते एरिसे आगाढकारणे अण्णलिंग करेति, तेण परलिंगेण तथेव कालम्बेव करेति, अणज्जमाणा विसयतर वा गच्छति, जाहे सब्बहा उवसामेज्ज ण तीरइ ताहे “कयकरणे करणं व” त्ति सहस्स-जोही त सासेज्ज, अह त पि णत्थि ताहे “पच्छादनथावरादीसु” ति जाव पसादिज्जति ताव रुक्खगहणेसु

त्ति साधुणो अक्खा, समुणा जणवया सयरणिज्जा भवति । ते पुण गुणा आहारो उवही सेज्जा सयारगो, अण्णो य वहुविहो । उवधी सतत अवरुद्धो लवभति, उच्चारपासवणभूमोओ य सति, सज्जाओ सुज्झति । “विहारो”  
त्ति दप्पेण णो असिवादिकारणे, तस्स चउलहु आणादिया य दोसा ॥५७२८॥

इमो णिज्जुत्तिवित्थारो -

आरियमणारिएसुं, चउक्कभयणा तु संकमे होति ।

पढमतिए अणुण्णा, वित्तिचउत्थाऽणुण्णाया ॥५७२९॥

आरितातो जणवयाओ आरिय जणवय सकमइ, एव चउभगो कायव्वो, सेस कठ ॥५७२९॥

आरिय-आरियसंकम अद्वद्धवीसं हवंति सेसा तु ।

आरियमणारियसंकम, वोधिगमादी मुणेत्तव्वा ॥५७३०॥

अद्वद्धवीसाए जणवयाण अण्णतराओ अण्णतर चेव आरिय सकमति तस्स पढमभगो, आरियातो  
अण्णयरवोहिगविसय सकमतस्स वित्तिओ ॥५७३०॥

अणारियाारियसंकम, अंधादमिला य होंति णायव्वा ।

अणारियअणारियसंकम, सग-जवणादी मुणेत्तव्वा ॥५७३१॥

अधदमिलादिविसयाओ आरियविसय सकमतस्स तइओ, अणारियातो सगविसयाओ अणारिय चेव  
जवणविसय सकमतस्स चउत्थो । एस खित्त पडुच्च चउभगो भणितो ॥५७३१॥

इम लिग पडुच्च भणति -

भिकखुसरक्खे तावस, चरगे कावाल गारलिंगं च ।

एते अणारिया खलु, अज्जं आयारभंडेण ॥५७३२॥

भिकखुमादी अणारिया लिगा, “अज्ज” ति आरिय, त पुण आयारभण्डय रयोहरण-मुहपोत्तिया-  
चोलपट्टकप्पा य पडिगहो समत्तो य ।

आयारभण्डग एत्थ वि चउभगो कायव्वो ।

आरियलिगाओ आरियलिग एस पढमभगो । एत्थ येरकप्पातो जिणकप्पातिसु सकम करेति ।  
वित्तिओ कारिणओ, तत्तिए भिक्खुमादि उवसतो, चउत्थे भिक्खुमादी सरववादीसु ।

अहवा चउभगो - आयरिओ आरियलिग सकमति भावणा कायव्वा ।

अहवा चउभगो - आरिएण लिगेण आरियविसय सकमति, भावणा कायव्वा । जो आरिएण  
वि लिगेण अणारियविसय सकमति, एत्थ सुत्तणिवातो । सेस विक्कोवणट्ठा भणिय ॥५७३२॥

को पुण आरिओ, को वा अणारिओ ?

अतो भणति -

मगहा कोसंवीया, धूणाविसओ कुणालविसओ य ।

एसां विहारभूमी, पत्ता वा आरियं खेत्तं ॥५७३३॥

इह सोलसमुद्देशगे चउलहुगाऽविकारो - तुम च अणारियविमयसकमे चउगुरु देमि, अतो मुत्तविसवातो ।

आयरिओ भणइ - तुम मुत्तणिवात ण याणसि । इह मुत्तणिवातो मणसकप्पे चउलहु, पदभेदे चउगुरु, पथमोइण्णोसु छल्लहु, अणारियविसयपत्तेसु छग्गुरु, सजमायविराहणाए सट्ठाण । तत्थ सजमविराहणाए “छक्काय चउसु लहु” गाहा भावणिज्जा । आयविराहणाए चउगुरुग परितावणाई वा ॥५७३६॥

**आणादिणो य दोसा, विराहणा खंदएण दिट्ठतो !**

**एवं ततियविरोहो, पडुच्चकालं तु पणवणा ॥५७४०॥**

आयविराहणाए खदगो दिट्ठतो -

**दोच्चेण आगतो खंदएण वाए पराजिओ कुवितो ।**

**खंदगदिक्खा पुच्छा णिवारणाऽऽराध तव्वज्जा ॥५७४१॥**

चपा णाम णगरी, तत्थ खदगो राया । तस्स भगिणी पुरदरजसा उत्तरापथे 'कु भा-  
कारकडे णगरे डडगिस्स रणो दिण्णा ।

तस्स पुरोहिओ मरुगो पालगो, सो य अक्रियदिट्ठो । अणया सो दूओ आगतो चप ।  
खदगस्स पुरतो जिणसाहुअवण करेति । खदगेण वादे जिओ, कुविओ, गओ स-णगर । खंदगस्स वह  
चितेतो यच्छइ ।

खदगो वि पुत्त रज्जे ठवित्ता मुणिसुव्वयसामिअत्तए पचसयपरिवारो पव्वतितो अवीय-  
सुयस्म गच्छो अणुणाओ ।

अणया भगिणी दिच्छामि त्ति जिण पुच्छति । सोवस्सग्ग से कहिय ।

पुणो पुच्छति - “आराहगो ण व ?” त्ति ।

कहिय जिणेण - तुमं मोत्तुं आराहगा सेसा । गतो णिवारिज्जतोऽवि ॥५७४१॥

सुतो पालगेण आगच्छमाणो -

**उज्जाणाऽऽउह णूमेण, णिवक्कहणं कोव जंतयं पुवं ।**

**बंध चिरिक्क णिदाणे, कंबलदाणे रजोहरणं ॥५७४२॥**

पालगेण अग्गुज्जाणे पचसया आयुहाण ठविया । साहवो आगया तत्थ ठिता । पुरदरजमा  
दिट्ठा, खदगो कवलरयणेण पडिलाभितो । तत्थ णिसिज्जाओ कयाओ ।

पालगेण राया वुग्गाहितो । एस परिसहपराजिओ आगओ तुम मारेउ रज्ज अहिट्ठेहेति ।

कह णज्जति ?, आयुधा दसिया ।

कुविओ राया, पालगो भणितो - मारेहि त्ति । तेण इक्खुजत कय ।

खदगेण भणिय - ‘म पुव्व मारेहि ।’ जतसमीवे खमे वधिउ ठविओ, साहुं पीलिउ  
रुहिरचिरिक्काहि खदगो भरितो । खुडुगो आयरिय विलवतो, सो वि आराहगो । खदगेण णियाण  
कत ॥५७४२॥

देकर जिस प्रकार 'पकप्प' नाम हुआ, उसी प्रकार 'पकप्प' शब्द का छेद देकर केवल 'आयार' भी इसका नाम हो गया है—ऐसा गुणनिष्पन्न नामों की सूचि के देखने से पता चलता है।

“आयारपकप्पस्स उ इमाहं गोण्णाहं णामधिज्जाहं आयारमाइयाहं”—नि० गा० २।

निशीथ के जो अन्य गुणनिष्पन्न नाम हैं, वे ये हैं=अग्न=अग्र, चूलिया=चूलिका<sup>१</sup>। यह सब, नाम के एक देश को नाम मानने की प्रवृत्ति का फल है। साथ ही, इस पर से यह भी ध्वनित होता है कि आचारांग का यह अध्ययन सबसे ऊपर है, या अंतिम है।

अन्यत्र भी निशीथ सूत्र के निशीथ<sup>२</sup>, 'पकप्प'<sup>३</sup>=प्रकल्प और 'आयारपकप्प'<sup>४</sup>=आचार प्रकल्प ये नाम मिलते हैं।

दिगम्बर परम्परा में, जैसा कि हम पूर्व बता आए हैं, इसके नाम 'निसिहिय', 'निसीहिय' 'निपिचक', और 'निपिद्धिका' प्रसिद्ध हैं।

### निशीथ का आचारांग में संयोजन और पृथक्करण :

आचारांग-निर्युक्ति की निम्न गाथा से स्पष्ट है कि प्रारंभ में मूल आचारांग केवल प्रथम स्कंध के नव ब्रह्मचर्य अध्ययन तक ही सीमित था। पश्चात् यथासमय उसमें वृद्धि होती गई। और वह प्रथम 'बहु' हुआ और तदनन्तर—'बहुतर' अर्थात् आचारांग के परिमाण में क्रमशः वृद्धि होती गई, यह निम्न गाथा पर से स्पष्टतः प्रतिलक्षित होता है :

एववंभचेरमहओ अट्टारसपयसहस्सिओ वेओ।

हवइ य सपंचचूलो बहु-बहुतरओ पयभोण।

—आचा० नि० ११

निर्युक्ति में प्रयुक्त 'बहु' और 'बहुतर' शब्दों का रहस्य जानना आवश्यक है। आचारांग के ही आधार पर प्रथम की चार चूलाएँ बनीं और जब वे आचारांग में जोड़ी गईं, तब वह 'बहु' हुआ। प्रारंभ की चार चूलाएँ 'निशीथ' के पहले बनीं, अतएव वे प्रथम जोड़ी गईं। इसका प्रमाण यह है कि समवाय<sup>५</sup> और नंदी<sup>६</sup>—दोनों में आचारांग का जो परिचय उपलब्ध है, उसमें मात्र २१ ही अध्ययन कहे गये हैं। तथा अन्यत्र समवाय, में जहाँ आचार, सूयगड, स्थानांग के अध्ययनों की संख्या का जोड़ ५७ बताया गया है, वहाँ भी निशीथ का वर्जन करके आचारांग के मात्र २५ अध्ययन गिनने पर ही वह जोड़ ५७ बनता है<sup>७</sup>। अतएव स्पष्ट है कि प्राचीन

१. नि० गा० ३

२. व्यव० विभाग २, गा० १६८;

३. व्यव० विभाग २ गा० १३७, २२१, २५०, २५४; व्यव० उद्देश ३; गा० १६६

४. व्यवहार सूत्र उद्देश ३, सू० ३, पृ० २७

५. समवाय सूत्र १३६

६. नंदी सू० ४५

७. समवाय सू० ५७



अणुयाणे अणुयाती, पुष्कारुहणाइ उक्खिरणगाइं ।

पूयं च चेतियाणं, ते वि सरज्जेसु कारेंति ॥५७५४॥

अणुजाणं रहजत्ता, तेसु सो राया अणुजाणति, भडचडगसहितो रहेण सह हिडति, रहेसु पुष्कारुहण करेति, रहग्गतो य विविधफले खज्जगे य कवहुगवत्थमादी य उक्खिरणे करेति, अन्नेसि च चेइयघरट्टियाण चेइया पूय करेति, ते वि रायाणो एव चैव सरज्जेसु कारावेति ॥५७४७॥

इम च ते पच्चंतियरायाणो भणति -

जति मं जाणह सार्मिं, समणाणं पणमथा सुविहियाणं ।

दब्बेण मे ण कज्जं, एयं खु पियं कुणह मज्झं ॥५७५५॥

गच्छह सरज्जेसु, एव करेह ति ॥५७५५॥

वीसज्जिता य तेणं, गमणं घोसावणं सरज्जेसु ।

साहूण सुहविहारा, जाया पच्चंतिया देसा ॥५७५६॥

तेण सपइणा रण्णा विसज्जिता, सरज्जाणि गतु अमाघात घोसति, चेइयवरे य करति, रहजाणे य । अवदमिलकुडकमरहट्टता एते पच्चतिया, सपतिकालातो आरव्व सुहविहारा जाता ।

सपतिणा साधू भणिया - गच्छह एते पच्चतियविसए, विवोहेता हिडह ।

ततो साधूहि भणिय - एते ण किचि साधूण कप्पाकप्प एसण वा जाणति, कह विहरामो ? ॥५७५६॥

ताहे तेण सपतिणा -

समणभडभावितेसुं, तेसुं रज्जेसु एसणादीहिं ।

साहू सुह पविहरिता, तेणं चिय भद्गा ते उ ॥५७५७॥

समणवेसधारी भडा विसज्जिया बहू, ते जहा साधूण कप्पाकप्प तहा त दरिसतेहि एसणमुद्ध च भिक्खग्गहण करेतेहि जाहे सो जणो भावितो ताहे साधू पविट्ठा, तेसि सुहविहारं जात, ते य भद्गा तप्पभिई जाया ॥५७५७॥

उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो, स पत्थिवो णिज्जितसत्तुसेणो ।

समंततो साहुसुहप्पयारे, अकासि अंधे दमिले य घोरे ॥५७५८॥

उदिण्णा सजायवला, के ते ?, जोहा, तेहि आउलो-बहवस्ते इत्यर्थ । तेण उदिण्णाउलत्तेण सिद्धा सेणा जस्स सो उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो । उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणत्तणतो चैव विपक्खभूता सत्तुसेणा ते निज्जिया जेण स पत्थिवो णिज्जियसत्तुसेणो सो अघडविडाईसु अकासि कृतवान् सुहविहारमित्यर्थ ॥५७५८॥

जे भिक्खू दुगुंछियकुलेसु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,

पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जाहे चउलहु पत्तो ताहे इमाए जयणाए गेण्हति -

अण्णत्थ ठवावेउं, लिंगविवेगं च काउ पविसेज्जा ।

काऊण व उवयोगं, अदिट्ठे मत्ताति संवरितो ॥५७६४॥

सो दुगुच्छितो असणवत्त्यादी अप्पसागारिय अण्णत्थ सुण्णघरादिसु ठवाविज्जति, तम्मि गते पच्छा गेण्हति । अह्वा - रओहरणादिउवकरण अण्णत्थ ठवेतु सरवखादिपरलिग काउ जहा अयसादिदोसा ण भवति तहा पविसिउ गेण्हति । अह्वा - मज्झादी विअणकाले दिगावलोयण काउ अण्णेण अदिस्सतो मत्तय पत्त वा वासकप्पमादिणा सुट्ठु आवरेत्ता पविसति गेण्हइ य, वत्थादिय पि जहा अविमुट्ठ तहा गेण्हति, वसहि अण्णत्थ अलभतो बाहि सावयतेणभएसु वसहि गेण्हेज्ज, जहा ण णज्जति तहा वसति । सज्झाय ण करेति । रायदुट्ठा-दिसु अभिगमो अप्पसागारिए सज्झायभाणधम्मकहादी वि करेज्ज ॥५७६४॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढवीए णिक्खिवइ,  
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३३॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा संथारए णिक्खिवइ,  
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३४॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वेहासे णिक्खिवइ  
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३५॥

पुढवि-तण-वत्थमातिसु, संथारे तह य होइ वेहासे ।

जे भिक्खू णिक्खिवती, सो पावति आणमादीणि ॥५७६५॥

पुढविग्गहातो उव्वट्ठगादिभेदा दट्ठवा, दढभादितणसथारए वा, वत्थे, वत्थसथारए वा, कवलादिफलहसथारए वा, वेहासे वा दोरगेण उल्लवेइ, एवमादिपगाराण अण्णथरेण जो णिक्खिवइ तस्स चउलहु, तस्स आणादिया य दोसा, सज्झायविराहणा य ॥५७६५॥

तत्थ सज्जे -

तक्कंतपरोप्परओ, पलोड्डुछिण्णे य भेद कायवहो ।

अहि-मूसलाल-विच्छुय, संचयदोसा पसंगो वा ॥५७६६॥

सुणे भत्तपाणे चउरिदियाओ घरकोइलातो तक्कंति, त पि मज्जारा, एव तक्कंतपरप्परओ डेप्पत वातादिवसेण वा पलोड्डेति छक्कायविराहणा, आयपरिहाणी य वेहासट्ठित मूसगादिछिण्णे भायभेदो छक्कायवहो वा आयपरिहाणी य । एसा सज्जमविराहणा ।

इमा आयविराहणा -

अहिस्स मूसगस्स वा उस्सिघमाणस्स लाला पडेज्ज, णीससतो वा विस मुचेज्ज, विच्छुगाइ वा पडेज्ज, विस वा मुचेज्ज, जे वा सण्णिहिसचए दोसा तत्थ वि णिक्खिते ते चेव दोसा, पसगतो सण्णिहि पि टुवेज्जा ॥५७६६॥

अण्णउत्थिएहि सम भुजति अण्णउत्थियाण वा मज्जे ठितो परिवेद्धितो भुजति, आणादिया दोसा, ओहसो चउलहु पच्छित्त ॥५७७१॥

विभागतो इम -

पुच्चं पच्छा संथुय, असोयवाई य सोयवादी य ।

लहुगा चउ जमलपदे, चरिमपदे दोहि वी गुरुगा ॥५७७२॥

पुव्वसथुया असोय-सोयवाति य, पच्छासथुया असोय-सोय त्ति । एतेसु चउमु पदेसु लहुगा चउगे त्ति, जमलपद वि कालतवेहि विसेसिज्ज त्ति जाव चरिमपद । पच्छासथुतो सोयवादी तत्थ चउलहुग त कालतवेहि दोहि वि गुरुग भवति ॥५७७२॥

थीसुं ते चिय गुरुगा, छल्लहुगा होंति अण्णत्तिथीसु ।

परउत्थिणि छग्गुरुगा, पुव्वावरसमणि सत्तऽट्ठ ॥५७७३॥

एयासु चेव इत्थीसु पुरपच्छग्रसोयसोयासु चउगुरुगा कालतवेहि विसेसिता । एतेसु चेव अण्णत्तिथियपुरिमेसु चउसु छल्लहुगा कालतवविसिद्धा । एयासु चेव परत्तिथिणीसु छग्गुरुगा । पुव्वमथुयासु ममणीसु छेदो, अवर त्ति पच्छसथुयासु ममणीसु अट्ठम त्ति मूल ॥५७७३॥

अयमपर कल्प -

अहवा वि णालवद्धे, अणुव्वओवासए व चउलहुगा ।

एयासुं चिय थीसुं, णालसम्मं य चउगुरुगा ॥५७७४॥

णालवद्धेण पुरिसेण अणालवद्धेण य गहिताणुव्वतो वा सावणेण, एतेसु दोसु वि चउलहुगा । एयासु चिय दोसु इत्थीसु णालवद्धे य अविरयसम्महिट्ठिम्मि एतेसु वि चउगुरुगा ॥५७७४॥

अण्णालदंसणित्थिसु, छल्लहु पुरिसे य दिट्ठआमट्ठे ।

दिट्ठित्थि पुम अदिट्ठे, मेहुणि भोती य छग्गुरुगा ॥५७७५॥

इत्थीसु अणालवद्धासु अविरयसम्महिट्ठीसु दिट्ठाभट्ठेसु पुरिसेसु एतेसु दोसु वि छल्लहुगा, इत्थीसु दिट्ठाभट्ठासु पुरिसेसु अ अदिट्ठाभट्ठेसु 'मेहुणि त्ति माउलपिउास्सयधाता, भोइय त्ति पुव्वभज्जा, एतेसु चउसु वि छग्गुरुगा ॥५७७५॥

अदिट्ठाभट्ठासु थीसुं संभोगसंजती छेदो ।

अमण्णणसंजतीए मूलं थीफाससंवंधो ॥५७७६॥

इत्थीसु अदिट्ठाभट्ठासु सभोइय-सजतीसु य एयासु दोसु वि छेओ, अमण्णण त्ति अमभोइय-सजतीसु मूल, इत्थीहि सह भुजतस्स फासे सबवो, आयापरोभयदोसा, दिट्ठे सकातिया य दोसा, जति सजतिसतिती समुहेसो तो चउलहु अधिकरण वा ॥५७७६॥

पुच्चं पच्छाक्रमे, एगतरदुगुंछ उड्डमुड्डाहो ।

अण्णोणामयगहणं खद्धग्गहणे य अचियत्तं ॥५७७७॥

जे भिक्खू आयरिय-उवज्झायाणं सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता हत्थेणं  
अणुण्णवेत्ता धारयमाणो गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्जइ॥सू०॥३८॥

आचार्य एव उपाध्याय आयरिय-उवज्झाओ भणति, केसिचि आयरिओ केसिचि आयरिअ-  
उवज्झातो । अहवा - जहा आयरियस्स तहा उवज्झायस्स वि न सघट्टेज्जति । पातो सव्वाऽफरिसि त्ति  
अविणतो । हत्थेण अणुण्णवति - न हस्तेन स्पृष्ट्वा नमस्कारयति मिथ्यादुष्कृतं च न भाषते, तस्स चउलहु ।  
सेज्जासथारगहणातो इमे वि गहिया -

आहार उवहि देहं, गुरुणो संघट्टियाण पादेहि ।

जे भिक्खु ण खामेति, सो पावति आणमादीणि ॥५७८१॥

आहारे त्ति - जत्थ मत्तये भत्त धारित, उवहि त्ति - कप्पादी, सेस कठ ॥५७८१॥

कहं पुण संघट्टेति ?, भणति -

पविसंते णिक्खमंते, य चंक्रमंते व वावरंते वा ।

चेट्ठणिवण्णाऽऽउंटण, पसारयंते व संघट्टे ॥५७८२॥

पथे वा चक्रमतो विस्सामणादिवावार करेतो, सेस कठ ॥५७८२॥

चोदगाह - “जुत्त आहारउवविदेहस्स य अघट्टण । सथारगभूमि किं ण सघट्टिज्जति ? को वा उव-  
करणातिसघट्टिएसु दोसो ?,

आचार्य ग्राह -

कमरेणु अवहुमाणो, अविणय परितावणा य हत्थादी ।

संथारगहणमआ, उच्छुवणस्सेव वति रक्खा ॥५७८३॥

कमेसु त्ति-पदेसु जा रेणू सा सथारगभूमि ए परिसडति, उवकरणे वा लगति, अवहुमाणो अविणओ  
य सघट्टिए कओ, अण्ण च उच्छुवणे रक्खिवव्वे वति रक्खति - ण भजण देति, तस्स रक्खणे उच्छुवण  
रक्खित चेव, एव सथारगस्स असघट्टणे गुरुस्स देहातिया दूरातो चेव परिहरिता । सजमायविराहणा य,  
आयारिय च अवमण्णतेण सजमो विराहिओ ।

कह ? जेण तम्मि चेव पाणदसणचरित्ताणि अधीणाणि -

“जे यावि मदे त्ति गुहं” वृत्त ।

आयविराहणा - जाए देवयाए आयरिया परिगहिता सा विराहेज्ज, अण्णो वा कोइ आयरिय  
पक्खित्तो साधु उट्टेज्जा, तत्थ असखडादी दोसा ॥५७८३॥

चित्थियपदमणप्पज्झे, ण खमे अविकोविते व अप्पज्झे ।

खित्तादोसण्णं वा, खामे आउट्टिया वा वि ॥५७८४॥

अणप्पज्झो सेहो वा अजाणतो ण खामेति, आयरिय वा खितादिचित्त सारवेतो दित्तचित्त वा  
उवेच्च सघट्टेज्जा, ओसण्ण वा “म एए ओसण्णमिति परिभवति” त्ति उज्जमेज्जा, एव आउट्टियाए वि सघट्टेज्जा  
पच्छा खमावेइ ॥५७८४॥

मज्झिं ति - मुहताओ मुहाओ जहा दो वि अना चउरगुल कमति एय रयताणप्पमाण ॥५७६१॥

अहवा - जिणकप्पियस्स कप्पप्पमाण इम -

अवरो वि य आएसो, संडासो सोत्थिए निवण्णे य ।

जं खंडियं दहं तं, छम्मासे दुव्वलं इयरं ॥५७६२॥

आदेसो ति - प्रकार । सडासो ति कप्पाण दीहप्पमाण, एय जाणुसडासगातो आढत्त पुत्ते पडिच्छादेतो जाव वध एय दीहत्तण । सोत्थिए ति - दो वि बोधव्वकण्णे दोहि वि हत्थेहि घेतु दो वि वाहुसीसे पावति ।

कह ? उच्यते - दाहिणेग वाम वाहुसीस, एव दोह वि कलादीण हृदयपदेसे सोत्थियागारो भवति । एय कप्पाण बोधव्व ॥५७६२॥

एत्थ आएसेण इम कारण -

संडासखिड्डेण हिमाइ एति, गुत्ता अगुत्ता वि य तस्स सेज्जा ।

हत्थेहि तो गेण्हिय दो वि कण्णे, काऊण खंधे सुवई व भाई ॥५७६३॥

जिणकप्पियाण गुत्ता अगुत्ता वा सेज्जा होज्जा, ताए सेज्जाए उक्कुडुअणिविट्ठस्स सडासखिड्डेसु अही हिमवातो वा आगच्छेज्ज, तस्स रक्खणट्ठाते, तेण कारणेण एस पाउरणविही, कप्पाण एय पमाण भणिय - “दो वि कण्णे” ति दो वि वत्थस्म कण्णे वेत्तुं निवण्णो णिसण्णो वा सुवति भायति वा । सो पुण उक्कुडुतो चेव अच्छड प्रायो जग्गति य ।

केई भणति - उक्कुडुओ चेव णिडाइओ सुवड ईमिमेत्त ततियजामे ।

सो पुण केरिस वत्थ गेण्हति ? ज “खंडिय” ति छिण्ण ज एक्कातो पासाउ, त च ज छम्मास भरति जहणेण त वढ गेण्हति, “इयर” ति ज छम्मास ण घरति त दुव्वल ण गेण्हति ॥५७६३॥ एयं गच्छणिगयाण पमाण गत ।

इदाणि गच्छवासीण प्रमाण प्रमाण-प्रमाण च भणन्ति -

कप्पा आतपमाणा, अड्ढाज्जा उ वित्थडा हत्थे ।

एवं मज्झिम माणं, उक्कोसं होंति चत्तारि ॥५७६४॥

उक्कोसेण चत्तारि हत्था दीहत्तणेण एय पमाण अणुगहत्थ येराण भवति, पुट्ठे वि छ अगुला समाधिया कज्जति ॥५७६४॥

मज्झिमुक्कोसएसु दोसु वि पमाणेसु इम कारण -

संकुचित तरुण आतप्पमाण सुवणे ण सीतसंफासो ।

दुहतो पेल्लण थेरे, अणुचिय पाणादिरक्खा य ॥५७६५॥

तरुणभिकखू वलवतो, सो सकुचियपाओ सुवति, जेण कारणेण तस्स ण सीतस्पर्शो भवति तेण तस्स कप्पा आतप्पमाणा । जो पुण थेरो सो खीणवलो ण सक्केति सकुचियपादो सुविउ तेण तस्स अहियपमाणा

आगम-संकलन काल में एक काल ऐसा रहा है, जब चार चूलिकाएँ तो आचारांग में जोड़ी जा चुकी थीं, किन्तु निशीथ नहीं जोड़ा गया था। एक समय आया कि जब निशीथ भी जोड़ा गया, और तभी वह 'बहु' से 'बहुतर' हो गया। और उसके २६ अध्ययन हुए।

नंदी सूत्र और पविष्यमुत्त - दोनों में आगमों की जो सूची दी गई है, उसे देखने पर स्पष्ट हो जाता है कि उस काल तक आगमों के वर्गीकरण में छेद-जैसा कोई वर्ग नहीं था। नंदी और पविष्यमुत्त में अंग बाह्य ग्रन्थों की गणना के समय, कालिक ध्रुव में<sup>१</sup>, निशीथ को स्थान मिला है। इससे स्पष्ट है कि एक ओर नंदी के अनुसार ही आचारांग के २५ अध्ययन है, तथा दूसरी ओर नंदी में ही अंग बाह्य ग्रन्थों की सूची में निशीथ को स्थान प्राप्त है। अस्तु यही कहना पड़ता है कि उक्त नंदी सूची के निर्माण के समय निशीथ आचारांग से पृथक् था। किन्तु आचारांग-नियुक्ति के अनुसार निशीथ आचारांग की ही पाँचवीं चूना अर्थात् २६ वां अध्ययन है। इसका फलितार्थ यह होता है कि नन्दीगत आगम-सूची का निर्माण-काल और आचारांग-नियुक्ति की रचना का काल, इन दोनों के बीच में ही कहीं निशीथ आचारांग में जोड़ा गया है।

और यदि नंदी की नियुक्ति<sup>२</sup> के बाद की रचना माना जाए, तब तो यह कहना अधिक ठीक होगा कि इस बीच वह (निशीथ) 'आचारांग' से पृथक् किया गया था।

अब प्रश्न यह है कि निशीथ को आचारांग में ही क्यों जोड़ा गया? पूर्वगत ध्रुव के आचार नामक वस्तु के आधार पर निशीथ का निर्माण हुआ था और उसका साम्प्रतिक एवं प्राचीन नाम आचार-प्रकल्प था। अतएव कल्पना होनी है कि संभवतः विषय-साम्य की दृष्टि से ही वह आचारांग में जोड़ा गया हो। और ऐसा करने का कारण यह प्रतीत होता है कि आचार-प्रकल्प में प्रायश्चित्त का विधान होने से यह आवश्यक था कि वह प्राप्ताप्यता की दृष्टि से स्वयं तीर्थंकर के उपदेश से कम न हो! अंग ग्रन्थों का प्रणयन तीर्थंकर के उपदेश के आधार पर गणधर करते हैं, ऐसी मान्यता होने से अंगों का ही लोहोत्तर साममरूप प्राप्ताप्य गर्वीरक है। अस्तु प्राप्ताप्य की प्रस्तुत उत्तम कौटिक के निम्न ही आचार-प्रकल्प-निशीथ को आचारांग का एक अंश या चूना माना गया, हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

प्रथम की चार चूना तो आचारांग के आधारपर ही बनी थीं।<sup>३</sup> भाव्य उनका समावेश तो आचारांग की चूना-रूप में सहज था ही। किन्तु पाँचवीं चूना निशीथ का आधार आचारांग न होने पर भी उसे आचारांग में ही समाविष्ट करने में इन निम्ने प्राप्ति नहीं हो सकी थी कि समय संग ग्रन्थों के सूत्राधार पूर्वपक्ष माने जाते थे। अस्तु चूना का निर्माण पूर्वगत आचार वस्तु नामक प्रकरण से हुआ था। और निमित्त भी आचारांग में मकर था। निशीथ का एक नाम 'आचार' भी है। यह भी इसी ओर संकेत करता है।

१. नि. पा. २०. २४-२५

२. नियुक्ति की कि ध्रुव में स्पष्ट उल्लेख है; और उपर्युक्त स्थिति स्पष्ट है। किन्तु न. का निर्माण तो उस से ५० वर्षों के बाद हुआ। अतः नंदी के लिये यह स्पष्ट था।

३. आचारः नि. पा. २००-२१०

४. आचारः नि. पा. २११

५. नि. पा. १

संथारुत्तरपट्टो, अड्डाइज्जा य आयया हत्था ।

दोण्हं पि य वित्थारो, हत्थो चउरंगुलं चेव ॥५८०३॥

उण्णिओ सथारपट्टो, खोमिओ तप्पमाणो उत्तरपट्टो, सेस कट्ठ ॥५८०३॥

इमो चोलपट्टो -

दुगुणो चउग्गुणो वा, हत्थो चउरंस चोलपट्टो य ।

थेरजुवाणाणट्ठा, सण्हे थूलंमि य विभासा ॥५८०४॥

दढो जो सो दीहत्तणेण दो हत्था वित्थारेण हत्थो सो दुगुणो कतो समचउरसो भवति, जो दढ-  
दुब्बलो सो दीहत्तणेण चउरो हत्था, सो वि चउग्गुणो कत्थो हत्थमेत्तो चउरसो भवति, एग्गुण ति गणणप्पमाणे,  
उण्णिया एगा णिसिज्जा पमाणप्पमाणेन हस्तप्रमाणा तप्पमाणा चेव तस्स अतो पच्छादणा खोमिया णिसिज्जा  
॥५८०४॥

चउरंगुलं वितत्थी, एयं मुहणंतगस्स उ पमाणं ।

वीओवि य आएसो, मुहप्पमाणेण निप्फन्नं ॥५८०५॥

वित्तिप्पमाण विकण्णकोणगह्य णासिग्गुह पच्छादेति जहा किकाडियाए गठी भवति ॥५८०५॥

गोच्छयपादट्टवणं, पडिलेहणिया य होइ गायव्वा ।

तिण्हं पि उ पमाणं, वितत्थि चउरंगुलं चेव ॥५८०६॥ कट्ठा

जो वि दुवत्थ तिवत्थो, एगेण अचेलतो व संथरती ।

ण हू ते खिसंति परं, सव्वेण वि तिण्णि घेत्तव्वा ॥५८०७॥

जिणकप्पियाण गहण, येरकप्पियाण परिभोग प्रति, जो एगेणं सथरति सो एग गेण्हति परिभुजति वा ।  
जो दोहि सथरति सो दो गेण्हति परिभुजति वा, एव तत्तिओ वि ।

जिणकप्पिओ वा अचेलो जो सथरति सो अचेलो चेव अञ्जति, एस अभिग्गह्विसेसो भणिओ ।  
एतेण अभिग्गह्विसेसट्ठिएण अधिकतरवत्थो ण हीलियव्वो ।

किं कारण ? जम्हा जिणाण एसा आणा, सव्वेण वि तिण्णि कप्पा घेत्तव्वा ।

थेरकप्पियाण जइ अपाउएण सथरति तहावि तिण्णि कप्पा णियमा घेत्तव्वा ॥५८०७॥

कप्पाण इमो गुणो -

अप्पा असंथरंतो, निवारिओ होति तिहि उ वत्थेहिं ।

गिण्हति गुरू विदिण्णे पगासपडिलेहणे सत्त ॥५८०८॥

सीतादिणा असथरतस्स त असथरण वत्थपरिभोगेण निवारित भवति । ते य वत्थे गुरुणा आयरिएण  
दिण्णे गेण्हति, पगासपडिलेहण ति अचोरहरणिज्जे, उक्कोसेण सत्त गेण्हति ॥५८०८॥

इम उस्सग्गतो, अववादियं च प्रमाण -

तिण्णि कसिणे जहण्णे, पंच य दढदुब्बला य गेण्हेज्जा ।

सत्त य परिजुण्णाइं, एयं उक्कोसयं गहणं ॥५८०९॥

दोहिं वि गुरु । परिकम्मणति वा सिव्वणति वा एगट्ठ । एगसरा डडी उव्वट्ठणि घग्गरसिव्वणि य एसा अविही,  
भसकटगदुसरिगा य विही ॥५८१५॥

इदाणि “विभूस” ति -

उदाहडा जे हरियाहडीए, परेहि धोतादिपदा उ वत्थे ।

भूसाणिमित्तं खलु ते करेते, उग्घातिता वत्थ सवित्थरा उ ॥५८१६॥

“उदाहड” ति भगिया “हरिया हडिया” सुत्ते । परेहिं ति तेणगेहिं जे धोताती पदा कता ते जति  
अप्पणा विभूसावडियाए करेति त जहा धोवति वा, रयति वा, घट्टेति वा, मट्ठ वा करेति, <sup>३</sup>विवरित्तरगेहिं  
वा रयति तस्म चउलहु । सवित्थरग्गहणातो धोतादिपदे करेतस्स जा आयविराहणा तामु ज पच्छित्त त च  
भवति ॥५८१६॥

विभूस करेतस्स इमो अभिप्पाओ -

मलेण वत्थं बहुणा उ वत्थं, उज्झाड्यो हं चिमिणा भवामि ।

हं तस्स धोवम्मि करेमि तत्तिं, वरं ण जोगो मलिणाण जोगो ॥५८१७॥

मलिन वस्त्र तेन वाऽह विरूपो दृश्ये, यस्माद्विरूपोऽह दृश्ये तस्मात्तस्य वस्त्रस्य धोतव्ये “तत्ति”  
त्ति - जेण त धोव्वति. गोमुत्तातिणा त उदाहरामि, “वर ण जोगो” ति - वर मे अवत्थमस्स कप्पति  
अच्छिउ, ण य मलिणेहिं वत्थेहिं सह सजोगो ॥५८१७॥ कारणे पुणो धोवतो सुट्ठो ।

चोदगो भणाति - णणु धोवतस्स । “विभूसा इत्थीससग्गी” सिलोगो ।

आयरिओ भणइ -

कामं विभूसा खलु लोभदोसो, तहावि तं पाह्णतो ण दोसो ।

मा हीलणिज्जो इमिणा भविस्सं, पुव्विड्ढिमादी इय संजती वि ॥५८१८॥

काम चोदगाभिप्पायस्स अणुमयत्थे, खलु अवधारणे, जा एपा विभूसा - एस लोभ एवेत्यर्थ, तहावि  
त वत्थ “मुविभूसित कारणे काऊण पाउरणे ण दोसो भवति ।

रायाइड्डिम जो इड्ढि विहाय पव्वइओ सो चित्तेति - “मा इमस्स अणुहजणस्स इहलोकापडि-  
बद्धस्स इमेहिं मलिणवत्थेहिं हीलणिज्जो भविस्सामि ति । एस सावसत्तो जेग त तारिस विभूतिं परिचज्ज  
इम अवत्थ पत्तो “किमण तवेण पाविहिति” ति, एव सजती वि हिड्ड अच्छति वा णिच्च पडरपडपाउआ  
॥५८१८॥

ण तस्स वत्थादिसु कोइ संगो, रज्जं तणं चेव जहाय तेणं ।

जो सो उवज्झाइय वत्थसंगो, तं गारवा सो ण चएइ मोत्तुं ॥५८१९॥

जो सो इड्ढिम पव्वतितो ण तस्स वत्थादिसु कोइ सगो ति वा वषण ति वा एगट्ठ । कह णज्जति  
जहा सगो णत्थि ?, उच्यते - जतो तेण रज्ज वहुण तणमिव जट्ठ । सेस कठ ॥५८१९॥ विभूसत्ति गय ।

१ गा० ५७८६ । २ बृहत्कल्पे सू० ४५ । ३ विचित्त इत्यपि पाठ । ४ दशवै० अ० ८ गा० ५७ ।  
५ सूईभूय इत्यपि पाठ । ६ किमणेण इत्यपि पाठ ।



अब इस प्रश्न पर विचार करें कि केवल इसी चूला को पृथक् क्यों किया गया ? और कब किया गया ? नाम से सूचित होता है कि यह ग्रन्थ रहस्यरूप है—गुप्त रखने योग्य है। और यह भी कहा गया है कि यह ग्रन्थ अपवाद मार्ग से परिपूर्ण है। अतः उक्त विशेषताओं के कारण यह आवश्यक हो गया कि हर कोई व्यक्ति इसे न पढ़े। उक्त मान्यता के मूल में यह डर भी था कि कहीं अनधिकारी व्यक्ति इसे पढ़कर अपने दुराचरण के समर्थन में इसका उपयोग न करने लगे। अतएव इसके अध्ययन को मर्यादित करना आवश्यक था।<sup>१</sup>

प्राचीन काल में जब तक दशवंकालिक की रचना नहीं हुई थी, तब तक यह व्यवस्था थी कि दीक्षार्थी को सर्वप्रथम आचारांग का प्रथम अध्ययन शस्त्रपरिज्ञा पढ़ाया जाता था। और दीक्षा देने के बाद भी आचारांग के पिंडैषणा संबन्धी प्रमुख अंश पढ़ने के बाद ही वह स्वतन्त्र भाव से पिंडैषणा के लिये जा सकता था। इससे पता चलता है कि दीक्षा के पहले ही आचारांग की पढ़ाई शुरू हो जाती थी<sup>२</sup>। किन्तु निशीथ की अपनी विशेषता के कारण यह आवश्यक हो गया था कि उसे परिपक्व बुद्धि वाले ही पढ़ें, और इसीलिये यह नियम बनाना पड़ा कि कम-से-कम तीन वर्ष का दीक्षा-पर्याय होने पर ही<sup>३</sup> निशीथ का अध्ययन कराया जाए। संभव है, ऐसी स्थिति में निशीथ को शेष आचारांग से पृथक् करना अनिवार्य हो गया हो ?

दूसरी बात यह भी है कि निशीथ सूत्र मूल में ही अपवाद-बहुल ग्रन्थ है। और जैसे-जैसे उस पर नियुक्ति, —भाष्य-चूर्णि-विशेष चूर्णि आदि टीका ग्रन्थ बनते गये, वैसे-वैसे उसमें उत्तरोत्तर अपवाद बढ़ते ही गये। ऐसी स्थिति में वह उत्तरोत्तर अधिकाधिक गोपनीय होता जाए, यह स्वाभाविक है। फलस्वरूप शेष ग्रन्थ से उसका पार्थक्य अनिवार्य हो जाए, यह भी सहज है। इस प्रकार जब आचारांग के शेषांश से निशीथ का पार्थक्य अनिवार्य हो गया, तब उसे सर्वथा आचारांग से पृथक् कर दिया गया।

अब प्रश्न यह है कि नंदी और अनुयोगद्वार की तरह नवीन वर्गीकरण में उक्त सूत्र को चूलिका सूत्र-रूप से पृथक् ही क्यों न रखा गया, छेद में ही शामिल क्यों किया गया ? इसका उत्तर सहज है कि जब दशा, कल्प, और व्यवहार, जिनका कि मूलाधार प्रत्याख्यान पूर्व था, छेद ग्रन्थों में संमिलित किये गये, तो निशीथ भी उसी प्रत्याख्यान पूर्व के आधार से निर्मित होने के कारण छेद ग्रन्थों में शामिल कर लिया जाए, यह स्वाभाविक है। इतना ही नहीं, किन्तु निशीथ का भी वैसा ही विषय है, जैसा कि अन्य छेद ग्रन्थों का। यह भी एक प्रमाण है, जो निशीथ सूत्र को छेद सूत्रों की शृंखला में जोड़े जाने की ओर महत्त्व पूर्ण संकेत है।

१. नि० गा० ६६, ७० की चूर्णि

२. व्यवहार उद्देश ३. विभाग ४, गा० १७४-१७६

३. व्यवहार उद्देश १०, सू० २१ पृ० १०७।

## निशीथ सूत्र अंग या अंगवाह्य ?

समग्र आगम ग्रन्थों का प्राचीन वर्गीकरण है—अंग और अंगवाह्य । निशीथ सूत्र के नाम से जो ग्रन्थ हमारे समक्ष है, उसे आचारांग की पांचवीं चूला<sup>१</sup> कहा गया है और अध्ययन की दृष्टि से वह आचारांग का छद्मीसर्वा अध्ययन घोषित किया गया है<sup>२</sup> । इन पर से स्पष्ट है कि वह कभी अंगान्तर्गत रहा है । किन्तु एक समय ऐसा आया कि उपलब्ध आचारांग सूत्र से इस अध्ययन को पृथक् कर दिया गया; और इसका छेद सूत्रों में परिगणन किया जाने लगा । तदनुसार यह निशीथ सूत्र, अंग ग्रन्थ-आचारांग का अंग होने के कारण अंगान्तर्गत होते हुए भी, अंग बाह्य हो गया<sup>३</sup> है ।

वस्तुतः देखा जाए तो अंग और अंगवाह्य जैसा विभाग उत्तरकालीन ग्रन्थों में नहीं होता है, किन्तु अंग, उपांग, छेद, मूल, प्रकीर्णक और चूलिका—इन रूप में आगम ग्रन्थों का विभाग होता है । और तदनुसार निशीथ छेद<sup>४</sup> में संमिलित किया जाता है ।

एक बात की ओर यहाँ विशेष ध्यान देना आवश्यक है कि स्वयं आचारांग में भी 'निशीथ' एक अंतिम चूला रूप है । इसका अर्थ यह है कि वह कभी-न-कभी मूल आचारांग से जोड़ा गया था । और विशेष कारण उपस्थित होने पर उसे पुनः आचारांग में पृथक् कर दिया गया ।

उपयुक्त विवेचन पर से यह कहा जा सकता है कि निशीथ मौलिक रूप में आचारांग का भाग था ही नहीं, किन्तु उसका एक परिशिष्ट भाग था । इस दृष्टि से छेद में, जो कि अंगवाह्य या अंगेतर वर्ग था, निशीथ को संमिलित करने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी ।

अंगवर्ग के अन्तर्गत न होने मात्र से निशीथ का महत्त्व अन्य अंग ग्रन्थों में कुछ कम हो गया है—यह तात्पर्य नहीं है; क्योंकि निशीथ का प्रपञ्च जो महत्त्व है, यही तो उसे छेद के अन्तर्गत करने में कारण है । निशीथ को आचारांग का अंग केवल श्रुतिस्मर आम्नाय में माना जाता है, यह भी ध्यान देने की बात है । श्रुतिस्मर आम्नाय में निशीथ को अंगवाह्य अंग ही माना गया है । अंगों में इसका स्थान नहीं है । वस्तुतः अंग की व्याख्या के अनुसार निशीथ अंग वाह्य ही होना चाहिए । क्योंकि यह गणधरकृत तो है नहीं । स्वयं या आचार्य याचार्यकृत है । यतएव जैसा कि श्रुतिस्मर आम्नाय में उसे केवल अंगवाह्य कहा गया है, वस्तुतः यह अंगवाह्य ही होना चाहिए । और श्रुतिस्मरों के यहाँ भी संन्यासस्था छेद वर्ग के अंगवर्ग होना यह प्रपञ्च ठीक स्थान पर पहुँच गया है ।

१. नि० पू० २

२. गी० पू० ४

३. छेदवर्ग में अंगवर्ग होने पर भी आचारांग की प्रामुख्यता को ध्यान में रखते हुए अंगों को—देवी, नि० पू० ११२० और इसका उपांग तथा निशीथ पृ० का परिशिष्ट अंग

४. नि० पू० पू० ११—१४

५. देवी, पृ० गणधरकृत अंग ४ पू० ११, तथा अंगवाह्य अंग १ पू० ११, १११

दिगम्बरों के यहाँ केवल १४ ग्रन्थों को ही अंगवाह्य बताया गया है, और उन चौदह में छः तो आवश्यक के छः अध्ययन ही हैं। ऐसी स्थिति में निशीथ की प्राचीनता स्वतः सिद्ध हो जाती है। और इस पर से यह भी संभवित है कि वह श्वेताम्बर-दिगम्बर के भेद के बाद ही कभी आचारांग का अंश माना जाने लगा हो।

### निशीथ के कर्ता :

आचारांग की नियुक्ति में तो आचारांग की चूलिकाओं के विषय में स्पष्टरूप से कहा गया है कि—

“थेरेहिणु गहट्टा सीसहिअं होउ पागदत्थं च ।

आयाराओ अत्थो आयारगोसु पविभत्तो ॥”

—आचा० नि० २८७

अर्थात् आचारांग=आचारचूलिकाओं के विषय को स्थविरों ने आचार में से ही लेकर शिष्यों के हितार्थ चूलिकाओं में प्रविभक्त किया है।

स्पष्ट है कि गणघरकृत<sup>१</sup> आचार के विषय को स्थविरों ने आचारांग की चूलाओं में संकलित किया है। प्रस्तुत में ‘आचार’ शब्द के दो अर्थ किये जा सकते हैं। प्रथम की चार चूला तो आचार अंग में से संकलित की गई हैं, किन्तु पांचवीं चूला आयारपकप्प—निशीथ, प्रत्याख्यान नामक पूर्व की आचारवस्तु नामक वृत्ताय वस्तु के बीसवें प्राभृत में से संकलित है। अर्थात् आचार शब्द से आचारांग और आचारवस्तु—ये दोनों अर्थ अभिप्रेत हों, यह संभव है। ये दोनों अर्थ इसलिये संभव हैं कि नियुक्तिकार प्रथम चार चूलाओं के आधारभूत आचारांग के तत्तत् अध्ययनों का<sup>२</sup> उल्लेख करने के अनन्तर लिखते हैं कि—

“आयारपकप्पो पुण पच्चक्खाणस्स तइयवत्थूओ ।

आयारनामधिज्जा वीसइमा पाहुडच्चेया ॥<sup>३</sup>

—आचा० नि० गा० २८१

पूर्वोक्त आचारांग-नियुक्ति की ‘थेरेहि’ (गा० २८७) इत्यादि गाथा के ‘स्थविर’ शब्द की व्याख्या शोलांक ने निम्न प्रकार से की है—“तत्र इदानीं वाच्यं—केनैतानि निर्यूढानि, किमथ, कुतो वेति ? अत आह—‘स्थविरैः’ श्रुतवृद्धैश्चतुर्दशपूर्वविद्धि निर्यूढानि—इति”। उक्त कथन पर से हम कह सकते हैं कि शोलांक के कथनानुसार आचार चूला=निशीथ के कर्ता स्थविर थे, और वे चतुर्दश पूर्वविद् थे। किन्तु आचारांग-चूर्ण के कर्ता ने प्रस्तुत गाथा में आए ‘स्थविर’ शब्द का अर्थ ‘गणघर’ लिया है—“एषाणि पुण आयारगाणि आयारा चैव निज्जूढाणि । केण णिज्जूढाणि ? थेरेहि (२८७) थेरा—गणधरा ।” —आचा० चू० पृ० ३२६

१. आचा० नि० चू० और टी० ८

२. आचा० नि० गा० २८८—२९० ।

३. इसी का समर्थन व्यवहार भाष्य से भी होता है—अव० विभाग २, गा० २५४

इससे स्पष्ट है कि चूर्णिकार के मत में निशीथ गणधरकृत है ।

आचारांग-चूर्ण और निशीथ-चूर्ण के कर्ता भी एक ही प्रतीत होते हैं, क्योंकि निशीथ-चूर्ण के प्रारंभ में 'प्रस्तुत चूर्ण कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ है'—ऐसा न कह करके यह कहा गया है कि :

'भगिषा विमुक्तिचूला गुरुणावसरो णिसीढचूलाप ।'

—नि० पृ० १

अर्थात् "आचारांग की चौथी चूला विमुक्ति-चूला की व्याख्या हो गई । अब हम निशीथ की व्याख्या करते हैं ।" इससे स्पष्ट है कि निशीथचूर्ण के नाम से सुप्रसिद्ध ग्रन्थ भी आचारांग-चूर्ण का ही अंतिम अंश है । केवल, जिस प्रकार आचारांग का अध्ययन होने पर भी आचारांग से निशीथ को पृथक् कर दिया गया है उसी प्रकार निशीथ चूर्ण को भी आचारांग की ओर चूर्ण से पृथक् कर दिया गया है । यही कारण है कि निशीथ-चूर्ण के प्रारंभ में अलग से नमस्काररूप मंगल किया गया है ।

निशीथ चूर्ण में निशीथ के कर्ता के विषय में निम्न उल्लेख है :

'निशीढचूलऽभयगमस्य तिर्यगराणं अथस्य अचारागमे, गणाहराणं सुतस्य अचारागमे, गणास्य अथस्य अणंतरागमे । गणाहरमिस्सणां सुतस्य अणंतरागमे, अथस्य परंपरागमे । नेण परं संयातां सुतस्य वि अथस्य वि गो अचारागमे, गो गणान्तरागमे, परंपरागमे ।'

—नि० पृ० ४

इसमें भी स्पष्ट है कि निशीथ सूत्र के कर्ता अर्थ-दृष्टि से तीर्थंकर है, और मध्य अर्थात् सूत्र-दृष्टि से गणधर है । अर्थात् स्पष्ट है कि चूर्णिकार के मत से निशीथ सूत्र के कर्ता गणधर है । चूर्णिकार के मत का मूलाधार निशीथ की अंगान्तर्गत होने की मान्यता है । मगर यह है कि स्वविर मध्य के अर्थ में मतभेद है । मीलांक मुनि, स्वविर मध्य के विशेषण रूप में अनुबंध पूर्व-धारी ऐसा अर्थ तो करते हैं, किन्तु उन्हें गणधर नहीं कहते । जबकि चूर्णिकार स्वविर पद का अर्थ गणधर लेते हैं । चूर्णिकार ने स्वविर पद का अर्थ, गणधर, इतना ही किया कि निशीथ आचारांग का अंग है, और अंगों की सूत्र-रचना गणधरकृत होती है । यद्यपि निशीथ भी गणधरकृत हो होना चाहिए ।

निर्मुक्तिकार जब स्वयं निशीथ को स्वविरकृत करते हैं, तो चूर्णिकार ने इसे गणधरकृत क्यों कहा ? इन प्रश्न पर भी संक्षेप में विचार करना आवश्यक है । यह भी उक्त कहा ही जा चुका है कि निशीथ सूत्र का मभाष्य संग में किया गया है । यद्यपि एक कारण भी यह है कि निशीथ की रचना गणधरकृत होने से उसे भी गणधरकृत माना जाए । किन्तु यह तर्कनिर्वाह की निर्मुक्तिकार के समझ भी थी । फिर क्या कारण है कि उन्होंने निशीथ को गणधरकृत न करके, स्वविरकृत कहा ? जबकि वे स्वयं आवश्यक सूत्र की निर्मुक्ति में (पा० २३) गणधरों का सूत्रकार के रूप में उल्लेख करते हैं । आचारांग-निर्मुक्ति के पूर्व ही वे गणधरकृत-निशीथ की रचना कर चुके थे, और गणधरकृत के सामाविकर्ता स्वविरों के कर्ता गणधर हैं, ऐसा भी यह चुके थे । अब आचारांग के द्वितीयभाग की उल्लेख ही स्वयं स्वविरकृत करने आता है यह प्रश्न

१. आचारांग निर्मुक्ति पा० २१-२२, और पा० १३२ । अनुवाद पा० १३२ ।

२. 'गणधरकृत' की व्याख्या पृ० १० ।

है। इसका समाधान यही है कि आचारांग का द्वितीय स्कंध वस्तुतः स्थविरकृत था, गणधरकृत नहीं। तब पुनः प्रश्न होता है कि ऐसी स्थिति में चूर्णिकार क्यों ऐसा कहते हैं कि वह गणधरकृत है? आवश्यक सूत्र के विषय में भी ऐसी ही दो परंपराएँ प्रचलित हो गई हैं। इसकी चर्चा मैंने अन्यत्र की है<sup>१</sup>। उसका सार यही है कि प्रामाणिकता की दृष्टि से गणधरकृत का ही महत्त्व अधिक होने से, आगे चलकर, आचार्यों की यह प्रवृत्ति बलवती हो चली कि अपने ग्रन्थ का सम्बन्ध गणधरों से जोड़े। अतएव केवल अंग ही नहीं, किन्तु अंग बाह्य आगम और पुराण ग्रन्थों को भी गणधरप्रणीत कहने की परंपरा बुरू हो गई। इसी का यह फल है कि प्रस्तुत में निशीथ स्थविरकृत होते हुए भी गणधरकृत माना जाने लगा।

इस परंपरा के मूल की खोज की जाए, तो अनुयोग द्वार से, जो कि आवश्यक सूत्र की व्याख्यारूप है, वस्तु स्थिति का कुछ आभास मिल जाता है। अनुयोगद्वार के प्रारंभ में ही आवश्यक सूत्र का संबन्ध बताते हुए कहा है कि श्रुत दो प्रकार का है—अंग प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंगबाह्य भी दो प्रकार का है—कालिक और उत्कालिक। उत्कालिक के दो भेद हैं—आवश्यक और आवश्यक—व्यतिरिक्त। इस प्रकार श्रुत के मुख्य भेदों में अंग और अंग बाह्य, और अंग बाह्य में आवश्यक और तदतिरिक्त की गणना है<sup>२</sup>। इससे इतना तो फलित होता है कि जब अनुयोग द्वार की रचना हुई, तब अंग के अतिरिक्त भी पर्याप्त मात्रा में आगम ग्रन्थ वन चुके थे। केवल द्वादशांगरूप गणिपिटक ही श्रुत था, ऐसी बात नहीं है। फिर भी इतना विवेक अवश्य था कि आचार्य, अंग और अंगबाह्य की मर्यादा को भली भाँति समझे हुए थे और उनका उचित पार्थक्य भी मानते रहे थे। इस पार्थक्य की मर्यादा यही हो सकती थी कि जो सीधा तीर्थकर का उपदेश है वह अंगान्तर्गत हो जाय, और जो तदतिरिक्त हो वह अंग-बाह्य रहे। शास्त्रों के प्राचीन अंशों में जहाँ भी जिनप्रणीत श्रुत की चर्चा है वहाँ द्वादशांगी का ही उल्लेख है—यह भी इसी की ओर संकेत करता है। जिनप्रणीत का अर्थ भी यही था कि जितना अर्थ तीर्थकरों द्वारा उपदिष्ट था, उतना जिनप्रणीत कहा गया, फिर भले ही उन अर्थों को ग्रहण करके शाब्दिक रचना गणधरों ने की हो। अर्थात् अर्थागम की दृष्टि से द्वादशांगी जिनप्रणीत है और सूत्रागम की दृष्टि से वह गणधरकृत है। इसीलिये हम देखते हैं कि समवायांग, भगवती, अनुयोग द्वार, नंदी, पट्खंडागम-टीका, कपायपाहुड-टीका आदि में तीर्थकरप्रणीत रूप से केवल द्वादशांगी का निर्देश है।<sup>३</sup> तीर्थकरद्वारा अर्थतः उपदिष्ट वस्तु के आधार पर गणधरकृत शाब्दिक रचना के अतिरिक्त, जो भी हो वह सब, अंगबाह्य है; इस पर से यह भी फलित होता है कि अंग बाह्य की शाब्दिक रचना गणधरकृत नहीं है।

इस प्रकार अनुयोग के प्रारंभिक वक्तव्य से इतना सिद्ध होता है कि श्रुत में अंग और अंगबाह्य-दो प्रकार थे। अनुयोगद्वार में आगे चलकर जहाँ आगम प्रमाण की चर्चा की गई है, यदि उस ओर ध्यान देते हैं, तब यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि मूल आगम केवल

१. 'गणधरवाद' की प्रस्तावना पृ० ८—१२

२. अनुयोगद्वार सू० ३—५

३. गणधरवाद की प्रस्तावना पृ० ६।

द्वादशांग ही थे। और वही प्रारंभिक काल में प्रमाण-पदवी को प्राप्त हुए थे। आवश्यक का श्रुत से क्या संबन्ध है—यह दिखाना अनुयोग के प्रारंभिक प्रकरण का उद्देश्य रहा है। किन्तु कौत्त आगम लोकोत्तर आगम प्रमाण है—यह दिखाना, आगे आने वाली आगमप्रमाण चर्चा का उद्देश्य है। उसी आगमप्रमाण की चर्चा में आगम की व्याख्या अनेक प्रकार से की गई है। और प्रतीत होता है कि उन व्याख्याओं का आश्रय लेकर ही अंगेतर=अंगवाह्य ग्रन्थों को भी आगमग्रन्थों के व्याख्याताओं ने गणधरप्रणीत कहना शुरू कर दिया।

अनुयोग द्वार के आगमप्रमाण वाले प्रकरण<sup>१</sup> में आगम के दो भेद किये गये हैं—लौकिक और लोकोत्तर। सर्वज्ञ-तीर्थकर द्वारा प्रणीत द्वादशांग रूप गणिपिटक—आचार से लेकर दृष्टि-वाद पर्यन्त—लोकोत्तर आगम प्रमाण है। इस प्रकार आगम की यह एक व्याख्या हुई। यह व्याख्या मौलिक है और प्राचीनतम आगमप्रमाण की मर्यादा को भी सूचित करती है। किन्तु इस व्याख्या में आगम ग्रन्थों की नामतः एक सूची भी दी गई है, अतएव उससे बाह्य के लिए आगम प्रमाण-संज्ञा वर्जित हो जाती है।

आगम प्रमाण की एक अन्य भी व्याख्या<sup>२</sup> या गणना दी गई है, जो इस प्रकार है : आगम तीन प्रकार का है—सूत्रागम, अर्थागम और तदुभयागम। आगम की एक अन्य व्याख्या भी है कि आगम तीन प्रकार का है—आत्मागम, अनंतरागम और परंपरागम। व्याख्याओं की दृष्टान्त द्वारा इस प्रकार समझाया गया है : तीर्थकर के लिये अर्थ आत्मागम है, गणधर के लिये अर्थ अनंतरागम और सूत्र आत्मागम है, तथा गणधर-शिष्यों के लिये सूत्र अनंतरागम और अर्थ परंपरागम है। गणधर-शिष्यों के शिष्यों के लिये और उनके बाद होने वाली शिष्य-परंपरा के लिये अर्थ और सूत्र दोनों ही प्रकार के आगम परंपरागम ही हैं। इन दोनों व्याख्याओं में सूत्र पद से कौन से सूत्र गृहीत करने चाहिए, यह नहीं बताया गया। परिणामतः तत्तत् अंगवाह्य आगमों के टीकाकारों को अंगवाह्य आगमों को भी गणधरकृत कहने का अवसर मिल गया। निशीथ-चूणिकार ने अनुयोगद्वार की प्रक्रिया के आधार पर ही प्रयाण का विवेचन करते हुए यह कह दिया कि निशीथ अध्ययन तीर्थकर के लिये अर्थ की दृष्टि से आत्मागम है। गणधर के लिए इस अध्ययन का अर्थ अनंतरागम है किन्तु इसके सूत्र आत्मागम हैं—अर्थात् निशीथ सूत्र की रचना गणधर ने की है। और गणधर-शिष्यों के लिये अर्थ परंपरागम है और सूत्र अनंतरागम है। शेष के लिये अर्थ और सूत्र दोनों ही परंपरागम हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनुयोगद्वार की इस वैकल्पिक व्याख्या ने व्याख्याताओं को अवसर दिया कि वे अंगवाह्य को भी गणधरकृत कह दें, इसलिए कि वह भी तो सूत्र है।

आचार्यों ने कुछ भी कहा हो, किन्तु कोई भी ऐतिहासिक इस बात को नहीं स्वीकार कर सकता कि ये सब अंग-वाह्य ग्रन्थ गणधरप्रणीत हैं फलतः प्रस्तुत निशीथ भी गणधर कृत है; जबकि वह मूलतः अंग नहीं, अंग का परिशिष्ट मात्र है। अस्तु नियुक्ति के कथनानुसार यह ही तर्क संगत है कि निशीथ स्थविरकृत ही हो सकता है, गणधरकृत नहीं।

१. अनुयोगद्वार सू० १४७,

२. पूरे भेद गिना देने से भी व्याख्या हो जाती है, ऐसी आगमिक परिपाटी देखी जाती है।



अब प्रश्न यह है कि निशीथ सूत्र के रचयिता कौन स्यविर थे ? इस विषय में भी दो मत दिखाई देते हैं । एक मत पंचकल्प भाष्य चूर्णि का है, जिसके अनुसार कहा जाता है कि आचार प्रकल्प—निशीथ को आचार्य भद्रबाहु ने 'निज्जूढ' किया था—“तेण भगवता आचारपकप्प-दसा-कप्प-ववहारा य नवम पुत्तनीसंदभूता निज्जूढा ।”<sup>१</sup> किन्तु यह मत उचित है या नहीं, इसकी परीक्षा आवश्यक है । दशा श्रुत-स्कन्ध की नियुक्ति में तो उन्हें मात्र दशा, कल्प, और व्यवहार का ही सूत्रकार कहा गया है :

“वंदामि भद्दबाहुं पाईणं चरिमसगलसुयनारिणं ।

सुत्तस्स कारगमिस्सि दसासु कप्पे य ववहारे ॥”

—दशा० नि० गा० १

इसी गाथा का पञ्चकल्प भाष्य में व्याख्यान किया गया है<sup>२</sup> । वहाँ अंत में कहा है—

तत्तो च्चिय णिज्जूढं अणुगहट्ठाए सपय-जतीणं ।

तो सुत्तकारतो खलु स भवति दस-कप्प-ववहारे ॥

इससे स्पष्ट है कि पंचकल्प-भाष्यकार तक यही मान्यता रही है कि भद्रबाहु ने दशा, कल्प और व्यवहार—इन तीन छेद ग्रन्थों की रचना की है । किन्तु उसी की चूर्णि में यह कहा गया कि निशीथ की रचना भी भद्रबाहु ने की है । अतएव हम इतना ही कह सकते हैं कि पंचकल्प भाष्य-चूर्णि की रचना के समय यह मान्यता प्रचलित हो गई थी कि निशीथ की रचना भी भद्रबाहु ने की थी । किन्तु इस मान्यता में तनिक भी तथ्य होता तो स्वयं निशीथ भाष्य की चूर्णि में आचार्य भद्रबाहु को सूत्रकार न कहकर, गणघर को सूत्रकार क्यों कहा जाता ? अतएव यह सिद्ध होता है कि पंचकल्प भाष्य-चूर्णि का कथन निमूल है ।

दूसरा मत प्रस्तुत निशीथ सूत्र भाग ४, (पृ० ३६५) के अंत में दी गई प्रशस्ति के आधार पर बनता है कि निशीथ के रचयिता विशाखाचार्य थे । प्रशस्ति इस प्रकार है :

दंसणचरितजुओ जुत्तो गुत्तीसु सज्जणहिण्णु ।

नामेण विसाहगणी महत्तरओ गुणाय मंजूसा ॥

कित्तीकंतिपिण्णदो जसपत्तो पडहो तिसागरनिरुद्धो ।

पुणरुत्तं भमइ महिं ससिन्धु गगणं गुणं तस्स ॥

तस्स लिहियं निसीहं धम्मधुराधरणपवरपुज्जस्स ।

आरोगं धारणिज्जं सिस्सपसिस्सोव भोज्जं च ॥

यहाँ पर विशाखाचार्य को महत्तर कहा गया है और ‘लिहियं’ शब्द का प्रयोग है । ‘लिहियं’ शब्द से रचयिता और लेखक—ग्रन्थस्थ करने वाले—दोनों ही अर्थ निकल सकते हैं । प्रश्न यह है कि निशीथ सूत्र के लेखक ये विशाखगणी कब हुए ?

१. बृहत्कल्प भाष्य भाग ६, प्रस्तावना पृ० ३

२. पूरे व्याख्यान के लिये, देखो—बृहत्कल्प भाष्य भाग ६, प्रस्तावना पृ० २

पटखंडागम की धवला टीका<sup>१</sup> और कसाय पाहुड की जय धवला टीका में<sup>२</sup> श्रुतावतार<sup>३</sup> की परंपरा का जो वर्णन है, उसमें भ० महावीर के बाद तीन केवली और पाँच श्रुत केवली—इस प्रकार आठ आचार्यों के बाद आने वाले नवम आचार्य का नाम, जो कि ग्यारह दश पूर्वी में से प्रथम आचार्य थे, विशाखाचार्य दिया हुआ है ! जय धवला में केवली और श्रुत-केवली का समय, सब मिलाकर १६२ वर्ष हैं । अर्थात् वीर निर्वाण के १६२ वर्ष के बाद विशाखाचार्य को आचार्य भद्रबाहु से श्रुत मिला । किन्तु वे सम्पूर्ण श्रुत को धारण न कर सके, केवल ग्यारह अंग और दश पूर्व संपूर्ण, तथा शेष चार पूर्व के अंश को धारण करने वाले हुए ।

अन्य किसी प्राचीन विशाखाचार्य का पता नहीं चलता, अतएव यह माना जा सकता है कि निशीथ की प्रशस्ति में जिन विशाखाचार्य का उल्लेख है, वे यही थे । अब प्रश्न यह है कि प्रशस्ति में निशीथ के लेखक रूप से विशाखाचार्य के नाम का उल्लेख रहते हुए भी चूर्णिकार ने निशीथ को गणधरकृत क्यों कहा ? तथा विशाखाचार्य तो दशपूर्वी थे, फिर शीलांक ने निशीथ के रचयिता स्थविर को चतुर्दशपूर्वविद् क्यों कहा ? इसके उत्तर में अभी निश्चयपूर्वक कुछ कहना तो संभव नहीं है । चूर्णिकार और नियुक्ति या भाष्यकार के समक्ष ये प्रशस्तिगाथाएँ रही होंगी या नहीं, प्रथम तो यही विचारणीय है । नियुक्ति में केवल स्थविर शब्द का प्रयोग है । और मुख्य प्रश्न तो यह भी है कि यदि निशीथ के लेखक विशाखाचार्य थे, तो क्या इन प्रशस्ति गाथाओं का निर्माण उन्होंने स्वयं किया या अन्य किसी ने ? स्वयं विशाखाचार्य ने अपने विषय में प्रशस्ति-निर्दिष्ट परिचय दिया हो, यह तो कहना संभव नहीं । और यदि स्वयं विशाखाचार्य ने ही यह प्रशस्ति मूलग्रन्थ के अन्त में दी होती, तो नियुक्तिकार विशाखाचार्य का उल्लेख न करके केवल 'स्थविर' शब्द से ही उनका उल्लेख क्यों करते ? यहाँ एक यह भी समाधान हो सकता है कि नियुक्ति की वह गाथा, जिसमें चूलाओं को स्थविरकृत कहा गया है, केवल चार चूलाओं के संबन्ध में ही है । और वह पाँचवीं चूला के निर्माण के पहले की नियुक्ति गाथा हो सकती है । क्योंकि उसमें स्पष्ट रूप से चूलाओं का निर्माण 'आचार' से ही होने की बात कही गई है । और 'आचार' से तो चार ही चूला का निर्माण हुआ है । पाँचवीं चूला का निर्माण तो प्रत्याख्यान पूर्व के आचार नामक वस्तु से हुआ है । अतएव 'आचार' शब्द से केवल आचारांग ही लिया जाए और 'आचार' नामक पूर्वगत 'वस्तु' न लिया जाए । प्रथम चार ही चूलाएँ आचारांग में जोड़ी गईं और बाद में कभी पाँचवीं निशीथ चूला जोड़ी गई, यह भी स्वीकृत हो है । ऐसी स्थिति में हो सकता है कि नियुक्ति गत 'स्थविर' शब्द केवल प्रथम चार चूलाओं के ग्रन्थन से ही संबन्ध रखता हो, अंतिम निशीथ चूला से नहीं । किन्तु यदि यही विचार सही माना जाए, तब भी नियुक्तिकार ने पाँचवीं चूला के निर्माता के विषय में कुछ नहीं कहा—यह तो स्वीकृत करना ही पड़ेगा । ऐसी स्थिति में पुनः प्रश्न यह है कि वे पाँचवीं चूला निशीथ के कर्ता का निर्देश क्यों नहीं करते ? अतएव यह कल्पना की जा सकती है कि नियुक्तिकार के समक्ष ये गाथाएँ नहीं थीं । अथवा यों कहना चाहिए कि ये गाथाएँ स्वयं विशाखा

१. धवला खंड १, पृ० ६६

२. जयधवला भाग १, पृ० ८५

३. अन्यत्र दी गई श्रुतावतार की परंपरा के लिये, देखो, जय धवला की प्रस्तावना, भाग १, पृ० ४६ ।



चार्य ने नहीं लिखीं। यदि ये गाथाएँ स्वयं विशाखाचार्य की होतीं, तो चूणिकार इन गाथाओं की कुछ-न-कुछ चूणि अवश्य करते और बीसवें उद्देश की संस्कृत व्याख्या में भी इसका निर्देश होता। अतएव इस कल्पना के आधार पर यह मानना होगा कि ये गाथाएँ स्वयं विशाखाचार्य की तो नहीं हैं। और यदि ये गाथाएँ स्वयं विशाखाचार्य की ही हैं—ऐसी कल्पना की जाए, तब तो यह भी कल्पना की जा सकती है कि यहाँ 'लिहियं' शब्द का अर्थ 'रचना' नहीं, किन्तु 'पुस्तक लेखन' है। यह हो सकता है कि विशाखाचार्य ने श्रुति-परम्परा से चलते आये निशीथ को प्रथम बार पुस्तकस्थ किया हो। 'पुस्तकस्थ' करने की यह परंपरा, संभव है; स्वयं उन्होंने श्लोकबद्ध करके प्रशस्तिरूप में दी हो, या उनके अन्य किसी शिष्य ने।

यह भी कहा जा सकता है कि यदि भद्रबाहु के अनंतर होने वाले विशाखाचार्य ने ही निशीथ को ग्रन्थस्थ किया हो, तब तो निशीथ का रचना-काल और भी प्राचीन होना चाहिए। इसका प्रमाण यह भी है कि दिगम्बरों के द्वारा मान्य केवल चौदह अंगवाह्य ग्रन्थों की सूची में भी निशीथ का नाम है। अर्थात् यह सिद्ध होता है कि भद्रबाहु के बाद दोनों परंपराएँ जब पृथक् हुईं, उसके पहले ही निशीथ बन चुका था और वह दोनों को समान भाव से मान्य था। और यदि प्रशस्ति गाथाओं के 'लिहियं' शब्द को रचना के अर्थ में माना जाए, तब एक कल्पना यह भी की जा सकती है कि विशाखाचार्य ने ही इसकी रचना की थी। किन्तु संभव है वे श्वेताम्बर आम्नाय से पृथक् परंपरा के आचार्य रहे हों। अतएव आगे चलकर निशीथ के प्रामाण्य के विषय में संदेह खड़ा हुआ हो, या होने की संभावना रही हो, फलतः यही उचित समझा जाने लगा हो कि प्रामाण्य की दृष्टि से उसका संबंध गणवर से ही जोड़ा जाए। इस दृष्टि से निशीथ-चूणिकार ने उसका सम्बन्ध गणवर से जोड़ा, और पंचकल्प चूणिकार ने भद्रबाहु के साथ, क्योंकि वे भी चतुर्दशपूर्वी थे। अतएव प्रामाण्य की दृष्टि से गणवर से कम तो थे नहीं। इस सब चर्चा का सार इतना तो अवश्य है कि निशीथ के कर्तृत्व के विषय में प्राचीन आचार्यों में भी मतभेद था। तब आज उसके विषय में किसी एक पक्षविशेष के प्रति निर्णय-पूर्वक कुछ कह सकना संभव नहीं है। हाँ, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वह भद्रबाहु की तो कृति नहीं थी। यदि ऐसा होता तो निशीथ चूणिकार के लिए उसको लोप कर देने का कोई कारण नहीं था। निशीथ-चूणि और पंचकल्प भाष्य चूणि, प्रायः एक ही शताब्दी की कृतियाँ होने का संभव है। ऐसी स्थिति में कर्तृत्व के विषय में जो दो मत हैं, वे संकेत करते हैं कि कुछ ऐसी बात अवश्य थी, जो मतभेद का कारण रही हो। वह बात यह भी हो सकती है कि विशाखाचार्य अन्य परंपरा के रहे हों, तो प्रायश्चित्त जैसे महत्त्व के विषय में उन्हें कैसे प्रमाण माना जाए? अतएव अन्य छेद ग्रन्थों के रचयिता होने के कारण प्रायश्चित्त में प्रमाणभूत भद्रबाहु के साथ पंचकल्प चूणिकार ने, निशीथ का संबंध जोड़ दिया हो। यह एक कल्पना ही है। अतएव इसका महत्त्व अभी कल्पना से अधिक न माना जाए। विद्वानों से निवेदन है कि वे इस विषय में विशेष शोध करके नये प्रमाण उपस्थित करें, ताकि निशीथ सूत्र के कर्ता की सही स्थिति का पता लग सके।

### निशीथ का समय :

अब तक जो चर्चा हुई है उसके आधार पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि निशीथ की रचना श्वेताम्बर-दिगम्बर मतभेद से या दोनों शाखाओं के पार्यव्य से पहले ही हो चुकी

थी। पट्टावलियों का अध्ययन इस बात की तो साक्षी देता है कि दोनों परंपरा की पट्टावलियाँ आचार्य भद्रबाहु तक तो समान रूप से चलती आती हैं, किन्तु उनके बाद से पृथक् हो जाती हैं। अतएव अधिक संभव यही है कि आचार्य भद्रबाहु के बाद ही दोनों परम्पराओं में पार्थक्य हुआ है। ऐसी स्थिति में निशीथ का, जो कि दोनों परम्परा में मान्य हुआ है, निर्माण संघ-भेद के पहले ही हो चुका होगा, ऐसा माना जा सकता है। आचार्य भद्रबाहुकृत माने जाने वाले व्यवहार<sup>१</sup> सूत्र में तो आचार-प्रकल्प का कई बार उल्लेख भी है<sup>२</sup>। अतएव स्पष्ट है कि आचार्य भद्रबाहु के समक्ष किसी-न-किसी रूप में आचारप्रकल्प-निशीथ रहा ही होगा। यह संभव है कि निशीथ का जो अंतिम रूप आज विद्यमान है उस रूप में वह, भद्रबाहु के समक्ष न भी हो, किन्तु उनके समक्ष वह किसी न किसी रूप में उपस्थित था अवश्य, यह तो मानना ही पड़ेगा। ऐसी स्थिति में निशीथ को आचार्य भद्रबाहु के समय की रचना तो माना ही जा सकता है। इस दृष्टि से वीर-निर्वाण के १५० वर्ष के भीतर ही निशीथ का निर्माण हो चुका था; इसे हम असंदिग्ध होकर स्वीकृत कर सकते हैं। एक परंपरा यह भी है कि आचार्य भद्र बाहु ने निशीथ की रचना की है।<sup>३</sup> तब भी इसका समय वीर नि० १५० के बाद तो हो ही नहीं सकता। और एक पृथक् परंपरा यह भी है कि विशाखाचार्य ने इसकी रचना की। यदि उसे भी मान लिया जाय, तब भी विशाखाचार्य, भद्रबाहु के अनन्तर ही हुए हैं, अस्तु यह कहा जा सकता है कि यह ग्रन्थ वीर निर्वाण के १७५ वर्ष के आस पास तो बन ही चुका होगा।

### निशीथनियुक्ति और उसके कर्ता :

प्रस्तुत निशीथ सूत्र की सर्व प्रथम सूत्र-स्पर्शिक नियुक्ति-व्याख्या बनी है। उसमें सूत्र का सम्बन्ध और प्रयोजन प्रायः बताया गया है, तथा सूत्रगत शब्दों की व्याख्या निक्षेप-पद्धति का आश्रय लेकर की गई है। चूर्णिकार ने सब कहीं भाष्य और नियुक्ति का पृथक्करण नहीं किया है, अतः संपूर्णभावेन भाष्य से पृथक् करके नियुक्ति गाथाओं का निर्देश कर देना, आज संभव नहीं रहा है। किन्तु स्वयं चूर्णिकारने यत्रतत्र कुछ गाथाओं को नियुक्तगाथा रूप से निर्दिष्ट किया है। अतः उस पर से यह तो फलित किया ही जा सकता है कि निशीथ भाष्य से नियुक्ति की गाथाएँ कभी पृथक् रही हैं, जिन पर भाष्यकार ने विस्तृत भाष्य की रचना की। और सब मिलाकर नियुक्ति गाथाएँ कितनी थीं, यह जानना भी आज कठिन हो गया है। क्योंकि बृहत्कल्प के नियुक्ति भाष्य<sup>४</sup> की तरह प्रस्तुत में निशीथ के नियुक्ति और भाष्य भी एक ग्रन्थ

१. दशाश्रुतनियुक्ति गा० १; व्यवहार भाष्य उद्देश १०, गा० ६०३।

२. व्यव० उद्देश ३, सूत्र ३, १०; उद्देश ५, सू० १५; उद्देश ६, सू० ४-५ इत्यादि।

३. “तेण भगवता आचारपकप्प-दसा-कप्प-ववहरा य नवमपुव्वनीसंदभूता निज्जुडा।”

—पंचकल्प चूर्णि, पत्र १;

यह पाठ बृहत्कल्प भाग ६ की प्रस्तावना में उद्धृत है।

४. ‘तच्च सूत्रस्पर्शिकनियुक्त्यनुगतमिति सूत्रस्पर्शिकनियुक्ति भाष्यं चैको ग्रन्थो जातः’।

—बृहत्कल्प टीका पृ० २

रूप हो गए हैं। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि भाष्यकार ने नियुक्ति गाथाओं को भाष्य का हो अंग बना लिया है और नियुक्ति तथा भाष्य दोनों परस्पर मिलकर एक ग्रन्थ बन गया है। नियुक्ति ने अपनी पृथक् सत्ता खो दी है।

निशीथ, आचारांग का ही एक अध्ययन है। अतएव आचारांग की नियुक्ति के कर्ता ही निशीथ की नियुक्ति के भी कर्ता हैं। आचारांगादि दश नियुक्तियों के कर्ता द्वितीय भद्रवाहु हैं। अतएव निशीथ नियुक्ति के कर्ता भी भद्रवाहु को ही मानना चाहिए। उनका समय मुनिराज श्री पुण्य विजय जो ने आन्तर तथा बाह्य प्रमाणों के आवार पर विक्रम की छठी शती स्थिर किया है, और उन्हें चतुर्दश पूर्वविद् भद्रवाहु से पृथक् भी सिद्ध किया है। उनकी यह विचारणा प्रमाणपूत है,<sup>१</sup> अतएव विद्वानों को ग्राह्य हुई है।

जब हम यह कहते हैं कि नियुक्तियों के कर्ता द्वितीय भद्रवाहु हैं, तब एकान्त रूप से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि नियुक्ति के नाम से जितनी भी गाथाएँ उपलब्ध होती हैं—निशीथ में या अन्यत्र—वे सभी आचार्य भद्रवाहु द्वितीय की ही कृति हैं। क्योंकि आचार्य भद्रवाहु द्वितीय ही एकमात्र नियुक्तिकार हुए हैं, यह बात नहीं है। उनसे भी पहले प्रथम भद्रवाहु और गोविन्दवाचक हो चुके हैं, जो नियुक्तिकार के नाम से प्रसिद्ध हैं। और वस्तुतः प्राचीनकाल से ही यह परम्परा रही है कि जो भी मूल सूत्र का अनुयोग=अर्थ कथन करता था, वह, संक्षिप्त-शैली से नियुक्ति पद्धति का आश्रय लेकर ही करता था। यही कारण है कि प्राचीनतम संक्षिप्त व्याख्या का नाम नियुक्ति दिया गया है। व्याख्याता अपने शिष्यों के समक्ष गाथावद्ध करके संक्षिप्त व्याख्या करता था और शिष्य उसे याद कर लेते थे। ये ही नियुक्ति गाथाएँ शिष्य-परंपरा से उत्तरोत्तर चली आती रहीं। प्रथम भद्रवाहु, गोविन्द वाचक,<sup>२</sup> अथवा द्वितीय भद्रवाहु ने उन्हीं परंपरा प्राप्त नियुक्तियों को संकलित तथा व्यवस्थित किया। साथ ही आगमों की व्याख्या करते समय जहाँ आवश्यकता प्रतीत हुई, अपनी ओर से कितनी ही स्वनिर्मित नई गाथाएँ भी, जोड़ दी गई है। इसी दृष्टि से ये तत्तत् नियुक्ति ग्रन्थों के रचयिता कहे जाते हैं। प्राचीनकाल के लेखकों का आग्रह मौलिक रचयिता बनने में उतना नहीं था, जितना कि नई सजावट में था। फलतः वे जहाँ से जो भी उपयुक्त मिलता, उसे अपने ग्रन्थ का अंग बना लेने में संकोच नहीं करते थे। मौलिक की अपेक्षा परंपरा प्राप्त की अधिक महत्ता थी। अतएव अपने पूर्वगामी लेखकों का ऋणस्वीकारोक्ति के रूप में नामोल्लेख किये बिना अथवा उद्धरण आदि की सूचना दिए बिना भी, अपने ग्रन्थ में पूर्व का अधिकांश ले लेते थे—इसमें संकोच की कोई बात न थी। ग्रन्थ-रचनाकार के रूप में अपने को यशस्वी बनाने की उतनी आकांक्षा न थी, जितनी कि इस बात की तमन्ना थी कि व्याख्येय अंश, किसी भी तरह हो, अध्येता के लिये स्पष्ट हो जाना चाहिए। अतएव आधुनिक अर्थ में उनका यह कार्य साहित्यिक चोरी नहीं कहा जा सकता; क्योंकि उन्हें मौलिकता का आग्रह भी तो नहीं था।

१. बृहत्कल्पभाष्य, भाग छठा, प्रस्तावना पृ० १-१७

२. बृहत्कल्प प्रस्तावना, भाग ६, पृ० १८—२०; तथा निशीथ, गा० ३६५६।

प्रस्तुत निशीथभाष्य में नियुक्ति संमिलित हो गई है—इसका प्रमाण यह है कि कई गाथाओं के सम्बन्ध में चूर्णिकार ने नियुक्ति गाथा होने का उल्लेख किया है, जैसे कि :

५६२, ६०१, ६१४, ६१६, ६३०, ६३६, ६८५, ७५६, ८१६, ८६५, ८४८, ८७८, ८८६, १०१०, १०२५, १०५४, ११०४, १२८७, १३००, १३१०, १४६५, १४८३, १४६१, १५१४, १५४४, १५६२, १६६६, १८६५, २०६६, २१८१, २१६६, २४३१, २५३३, २६०७, २८८८, २६३४, ३१२३, ३१३८, ३४७२, ३४७६, ३७८८, ४२१०, ४२३०, ४२७५, ४२७६, ४२७८, ४३४०, ४३४५, ४३४६, ४३५३, ४५००, ४५२७, ४८६८, ५००१, ५०६७, ५४२०, ५६३४, ५७२६ ।

निशीथनियुक्ति आचार्य भद्रबाहुकृत है, इसका स्पष्ट उल्लेख चूर्णिकारने निम्न रूप में किया है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि निशीथ-नियुक्तिकार भद्रबाहु ही थे :

‘इदानीं उद्देशकस्स उद्देशकेन सह संबंधं वक्तुकामो आचार्यः भद्रबाहुस्वामी नियुक्तिगाथा-  
माह—गा० १८६५ ।

यह सम्बन्ध-वाक्य पांचवें उद्देश के प्रारंभ में है ।

कुछ गाथाओं को स्पष्ट रूप से आचार्य भद्रबाहुकृत नियुक्ति-गाथा कहा है, तो कुछ गाथाओं के लिये केवल इतना ही कहा है कि यह गाथा भद्रबाहुकृत है । इससे भी स्पष्ट होता है कि निशीथनियुक्ति भद्रबाहुकृत है । इस प्रकार की कुछ गाथाएँ ये हैं :

७७, २०७, २०८, २६२, ३२५, ४४३, ५४३, ५४५, ७६२, ४३६२, ४४०५, ४४६४, ४७८४, ४८८६, ५०१०, ५६७२, ६१३८, ६४६८, ६५४०, इत्यादि ।

बृहत्कल्प की नियुक्ति भी भद्रबाहुकृत है । और बृहत्कल्प-नियुक्ति की कई गाथाएँ, प्रस्तुत निशीथ में, प्रायः ज्यों की त्यों ले ली गई हैं । यहाँ नीचे उन कुछ गाथाओं का निर्देश किया जाता है, जिनके विषय में निशीथचूर्णिकारने तो कुछ परिचय नहीं दिया है, किन्तु बृहत्कल्प के टीकाकारों ने उन्हें नियुक्तिगाथा कहा है ।

निशीथ-गा०	वृहत्कल्प-गा०
१८८३	५५६६
१६६६	२८७६
३३५१	५२५४
२५०६	६३६३
३०५५	१६५४
३०७४	१६७३
३३६७	२८४६
४००४	३८२७
४०६८-६६	१८५४-५५
४१४२-४३	५२६४-६५
४१०७	१८६५
४२११	५६२०
४८७३	१०१२
५००८	६०६

आचार्यभद्र बाहु ने अपने से पूर्व की कितनी ही प्राचीन नियुक्ति गाथाओं का समावेश प्रस्तुत निशीथ नियुक्ति में किया था, इस बात का पता, निशीथ चूर्ण के निम्न उद्धरण से चलता है। गाथा ३२४ के लिये लिखा है—

‘ऐसा चिरंतणगाहा । एयाए चिरंतणगाहाए  
इमा भद्रबाहुसामिकया चेव वक्खणगाहा’

— नि० गा० ३२५

उक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि कुछ गाथाएँ भद्रबाहु से भी प्राचीन थीं, जिनका समावेश—साथ ही व्याख्या भी, भद्रबाहु ने निशीथ-नियुक्ति में की है। चिरंतन या पुरातन गाथाओं के नाम से काफी गाथाएँ निशीथ नियुक्ति में संमिलित की गई हैं, ऐसा प्रस्तुत चूर्णिकार के उल्लेख से सिद्ध होता है। उदाहरणार्थ कुछ निशीथ-गाथाएँ इस प्रकार हैं : २४६, ३२४, ३८२, ११८७, १२५१ इत्यादि।

कुछ गाथाएँ ऐसी भी हैं, जिनके विषय में चूर्णिकार ने पुरातन या चिरंतन जैसा कुछ नहीं कहा है। किन्तु वे गाथाएँ वृहत्कल्प भाष्य में उपलब्ध हैं और वहाँ टीकाकारों ने उन्हें ‘पुरातन’ या ‘चिरंतन’ कहा है।

निशीथ गा० १६६१ वृहत्कल्प में भी है। एतदर्थ, देखिए, वृहत्कल्प गा० ३७१४। इस गाथा को मलय गिरि ने पुरातन गाथा कहा है—देखो, वृ० गा० ३७१५ की टीका।

नि० गा० १३६८=बृहत्० गा० ४६३२ । इसे मलय गिरि ने पुरातन गाथा कहा है ।

कभी-कभी ऐसा भी हुआ है कि निशीथ चूर्णि जिसे भद्रबाहुकृत कहती है, उसे मलय गिरि मात्र 'पुरातन' कहते हैं । देखो, निशीथ गा० ७६२=बृ० गा० ३६६४ । किन्तु यहाँ चूर्णिकार को ही प्रामाणिक माना जायगा, क्योंकि वे मलयगिरि से प्राचीन हैं ।

कुछ गाथाएँ ऐसी भी हैं, जो चूर्णिकार के मत से अन्य आचार्यद्वारा रचित हैं, जैसे—निशीथ गा० १५२, ५००६ आदि ।

उक्त चर्चा के फलस्वरूप हम निम्न परिणामों पर आसानी से पहुँच सकते हैं :

(१) आचार्य भद्र बाहु ने निशीथ सूत्र की नियुक्ति का संकलन किया ।

(२) निशीथ नियुक्ति में जहाँ स्वयं भद्रबाहु-रचित गाथाएँ हैं, वहाँ अन्य प्राचीन आचार्यों की गाथाएँ भी हैं ।

(३) बृहत्कल्प और निशीथ की नियुक्ति की कई गाथाएँ समान हैं ।

(४) प्राचीन गृहीत तथा संकलित गाथाओं की आवश्यकतानुसार यथाप्रसंग भद्रबाहु ने व्याख्या भी की है ।

## निशीथ भाष्य और उसके कर्ता :

निशीथ सूत्र की नियुक्ति नामक प्राकृत पद्यमयी व्याख्या के विषय में विचार किया जा चुका है । अब नियुक्ति की व्याख्या के विषय में विचार प्रस्तुत है । चूर्णिकार के अभिप्राय से नियुक्ति की प्राकृत पद्यमयी व्याख्या का नाम 'भाष्य' है । अनेक स्थानों पर नियुक्ति की उक्त व्याख्या को चूर्णिकार ने स्पष्ट रूप से 'भाष्य' कहा है, जैसे—'भाष्यं यथा प्रथमोद्देशके'—निशीथ चूर्णि भाग २, पृ० ६८, 'सभाष्यं पूर्ववत्' यह प्रयोग भी कितनी ही बार हुआ है—वही पृ० ७३, ७४, आदि ।

चूर्णिकार ने व्याख्याता को कई बार 'भाष्यकार' कहा है, इस पर से भी नियुक्ति की टीका का नाम 'भाष्य' सिद्ध होता है । जैसे—निशीथ गा० ३८३, ३६०, ४३५, ११००, ४७८५ आदि की चूर्णि । इससे यह तो स्पष्ट ही है कि नियुक्ति की व्याख्या 'भाष्य' नाम से प्रसिद्ध रही है ।

प्रस्तुत भाष्य की, जिसमें नियुक्तिगाथाएँ भी शामिल हैं, समग्र गाथाओं की संख्या ६७०३ है । निशीथ नियुक्ति के समान भाष्य के विषय में भी कहा जा सकता है कि इन समग्र गाथाओं की रचना किसी एक आचार्य ने नहीं की । परंपरा से प्राप्त प्राचीन गाथाओं का भी यथास्थान भाष्यकार ने उपयोग किया है, और अपनी ओर से भी नवीनगाथाएँ बनाकर

जोड़ी हैं। बृहत्कल्प भाष्य, और व्यवहार भाष्य, यदि इन दो में उपलब्ध गाथाएँ ही निशीथ भाष्य में से पृथक् कर दी जायँ, तो इतने बड़े ग्रन्थ का चतुर्थांश भी शेष नहीं रहेगा, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं; किन्तु वास्तविक तथ्य है। इसकी स्पष्ट प्रतीति निम्न तुलना से वाचकों को हो सकेगी। इससे इतना तो सिद्ध होता ही है कि जैन शास्त्रगत विषयों की सुसंवद्ध व्याख्या करने की परंपरा भाष्यों के समय में सुनिश्चित हो चुकी थी; जिसका आश्रय लेना व्याख्याता के लिये अनहोनी बात नहीं थी।

निशीथ भाष्य और व्यवहार भाष्य की गाथाओं की अकारादि क्रम से वनी सूची मेरे समक्ष न थी, केवल बृहत्कल्प भाष्य की अकारादि क्रम सूची ही मेरे समक्ष रही है। फिर भी जिन गाथाओं की उक्त तीनों भाष्यों में एकता प्रतीत हुई, उन की सूची नमूने के रूप में यहाँ दी जाती है। इस सूची को अंतिम न माना जाय। इसमें वृद्धि की गुंजाइश है। इससे अभी केवल इतना ही सिद्ध करना अभीष्ट है कि निशीथभाष्य में केवल चतुर्थांश, अथवा उससे भी कुछ कम ही नया अंश है, शेष पूर्वपरंपरा का पुनरावर्तन है। और प्रस्तुत तुलना पर से यह भी सिद्ध हो जायगा कि परंपरा में कुछ विषयों की व्याख्या अमुक प्रकार से ही हुआ करती थी। अतएव जहाँ भी वह विषय आया, वहीं पूर्व परंपरा में उपलब्ध प्रायः समस्त व्याख्या-सामग्री ज्यों की त्यों रख दी जाती थी।

प्रस्तुत तुलना में जहाँ तु० शब्द दिया है वहाँ शब्दशः साम्य नहीं; किन्तु थोड़ा पाठ-भेद समझना चाहिए।

अन्य संकेत इस प्रकार हैं—नि० भा०=निशीथ भाष्य।

बृ० भा०=बृहत्कल्प भाष्य।

पू०=पूर्वार्ध।

उ०=उत्तरार्ध।

भ० आ०=भगवती आराधना।

कल्पवृहद् भाष्य का तात्पर्य बृहत्कल्प भाष्य में उद्धृत कल्पसूत्र के ही वृहद्भाष्य से है।

व्य० भा०=व्यवहार भाष्य।



## निशीथ पीठिका

नि० भा०	बृ० भा०
१३३, ५३२६	२४००
१३५	५०१७ तु०
१३७	५०१६
१३८	५०२०
१३६-१४२	५०२१-२४
१५२, ५३८५	३४४०, ३४६६
२०८	३४३४, ३४६२
२०६-१२	३४३६-३६
२०१४ पू०	३४४०, ३४६६
२२२-२३	३४५१-५२
२२५	३४५३ (भ०आ० ७६८)
२२७-२६	३४५६-५८
२६८-३०६	६०६६-६०७७
३१०	६०७८ तु०
३११	६०८०
३१२	६०८१
३१३-१६	६०८४-८७
३५२	४६४१ तु०
३६०	४६४१ तु०
३६३-६७	४६४३-४७
३६८	४६४६
३७६	४६१२ तु०

## निशीथ सूत्र का भाष्य

नि० भा०	बृ० भा०
४६६	४८६५ तु०
५००	४८६७ तु०
५०१	४८६८ तु०
५०२	४८६६
५०३	४६०२
५०४	४६००
५०५	४६०३

## नि० भा०

## बृ० भा०

५०६	४६०१
५०७	४६०४
५०८-५१३	४६०५-४६१०
५१८	२५८४ तु०
५१६-५४४	२५८५-२६०६
४४५-४६	२६११-१५
५५३	४६२३ तु०
५५८-५६	४६२३, ४६२५
५६०	४६२६ तु०
५६१-२	४६२७-८
५६३	४६१८
५६४	४६१६ तु०
५६५	४६२६ तु०
५७७-८७	४६३०-४०
७५६	३६६१ तु०
७६२	३६६४
७६३	३६६८
७६४	३६६६
७६६	३६६७
८६६-६	६१०५-८
८७१	६११०
८७२	६१११
८८२-३	६०६६-७
६२४-६	३८५६-६१
६३१-४०	३८६३-७२
६४२-७	३८७३-८
६४६-६५	३८८२-६८
६६८	३८६६
६७०, ३२८०	३६००
६७१	३६०१ तु०
१०१३	२०२४
११३८-६	३५१६-२०
११४०-४२	३५२१-२
११४२	३५२४
१३४३	३५२३



नि० भा०	वृ० भा०	नि० भा०	वृ० भा०
११४४-६१	३५२५-७२	१६४६	१६०४
११६२	यह गाथा टीका	१६४७	१६०६
	पर से वृ० में	१६४८	१६०४
	फलित होती है।	१६४९	१६०७
	देखो, गा० ३५७२	१६५०-६४	१६०८-२२
	की टीका।	१६६६-८६	३६६०-३७१३
११६३-१२०४	३५७३-३५८५	१६६०	क० वृद्ध भाष्य
१३०७-६	४६०७-६	१६६१	३७१४
१३११-१२	४६१२-१३	१६६३	३७१६
१३१३	४६१४ तु०	१६६४	३७१५
१३१४	५४२ तु०, ४६१६	१६६५-१७३०	३७१७-५२
१३१५	५४३, ४६१७	१७३१	३७५४
१३१६-७	५४४, ४६१८, ५४५	१७३२	३७५३
१३१८	५४६	१७३३-४०	३७५५-६२
१३१९-२५	५४७-५५३	१७४१-५४	३७६४-७७
१३२६	५५४, ४६१९	१७५५	३७७६
१३२८-३३	५५५-६०	१७५६	३७७८
१३३५-५३	५६१-५७६	१७५७-६३	३७८०-८६
१३५४	४६२०	१७६७-८१	३७८७-३८००
१३५५	४६२१ तु०	१७८२	३८०३
१३५७	४६२२ तु०	१७८३	३८०४
१३५९-८५	४६२३-४६	१७८४	३८०१
१३६३-५	३६६२-६४	१८८३	५५६६
१३६६-६	४०८०-३	१८८६-८८	५५६७-६६
१४०१-८	४०८५-६२	१८९०	५६००२
१४०६	३६६५	१८९१-२	५६०४-५
१४१०-१६	४०६३-६६	१८९३	५६०७
१४७२-७७	३१८४-८६	१८९४	५६१०
१६२७-८	१५८३, १५७३	१९४२	१०२६ तु०
१६३१	१५८१	१९६८, ३४२६	२८७८, २९७२
१६३२	१५८४	१९६९	२८७९, २९७३
१६३३, ४१	१५८५-६३	१९७०-६४	२९७४-२९८८
१६४२-४	१६०१-३	१९६५	२९६६ तु०
१६४५	१६०५	२०२५-३०	१६७४-७६

नि० भा०	वृ० भा०	नि० भा०	वृ० भा०
२०३१	१६८१	२७२८	४७३८
२०३२	१६८२	२७३७-५१	५४७५-८६
२०३३	१६८०	२७५५-६	५४६०-६१
२०३४-४२	१६८३-६१	२७७४	५७२७, २६६३
२०६७	उपदेशमाला ३६२	२७७६	५७२६, २६६५
२२४२	४६४८	२७७७	५७३०, २६६६
२२४३	४६५०	२७७८	५७३१, २६६७
२२४४	४६५२, ४६६५	२७७९	५७३३, २६६८
२२४६	४६५५	२७८०	५७३४, २६६९
२२४७	४६५७	२७८१	५७३७, २७०१
२२४८	४६५८	२७८२	५७३८, २७०२
२३५१-३	५२५४-६	२७८३	५७३५, २७०४
२३५४	५२५८	२७८४	५७३६, २७०५
२३५६	५२५६	२७८५	५७३६, २७०६
२३५७-६	४१६६-८	२७८६	५७४०, २७०७
२३६१-७०	४७६६-४८०८	२७८७	५७४१, २७०८
२३७२, २४०२	४८०६४८३	२७८८	५७४२, २७०९
२४४८	२०४८-७०	२७८९	५७४३, २७१०
२४४६-५४	२०५०-५५	२७९०	५७४४, २७११
२४४६	२०६०	२७९१	५७४५, २७१३
२४५८	२०६१	२७९२	५७४६, २७१४
२४५६-६६	२०६४-७१	२७९३	५७४७, २७१५
२४६८-२५०६	६३८२-६०	२७९४	५७४८, २७१६
२५०८-१२	६३६२-६	२७९५	५७४६, २७१७
२५२६	३५८८	२७९६-२८१६	५७६२, ८२
२५३१	३५८६	२८१७-२६	५७५०-५६
२६१८	६०६०	२८३३	५७६१
२६६५	५३४१	२८३४	५५६७
२६६२-८२	५३४२-५८	२८३५-४८	५५६६-८२
२६८५	५३५६	२८५०-६०	५५८३-६३
२७००-२७०५	५०७३-७८	२८६४	६४२२
२७०७-८	५०८१-२	२८८०, १८८६	५५६७
२७०६	५०८४	२८८१, १८८७	५५६८
२७११	५०८३	२८८२, १८८८	५५६६
२७१८-२१	४७२६-३२	२८८६	५७८५
२७२२-२५	४७३४-३७		

नि० भा०

२८६६

२८६०

२८६१-३

२८६४-२६३१

२८६४-४५

२८६६

२८६८-६५

२८६६

२८६६-६६

२८६७-३००७

३००८

३००९

३०१०-१२

३०१३

३०१४

३०१५

३०१६-२६

३०२७

३०२८

३०२९

३०३२

३०३३-४६

३०४६-८७

३०८६-३१०४

३१२४-२७

३१२८-३४

३१३५

३१३६

३१४६-५४

३१५६-७

३१८२

३२२४-५३

३२५४-५५

३२५६

३२५७-६२

वृ० भा०

५७६०

५७८६

५७८६, ८

५७६१, ५८२८

५८३०-४१

५८४२ तु०

५८४३-६०

१८७०

१८११-६८

१८००-१८१०

१८१२ तु०

१८११

१८१३-१५

१८१७

१८१६

१८१८

१८१९-२६

१८३१

१८३२

१८३०

१८३३

१८३४-४७

१८४८-८६

१८८७-२००२

२७३५-३८

२७४०-४६

२७५७

२७४७

४२८०-८५

४२८६-७

५२२५

४२४६-६८

४२६७-६८

४२७६

४२८७-६२

नि० भा०

३२६३

३२६४-७०

३२७१-७५

३२८०

३२८२

३३५६

३३६०-१

३३६२-६०

३३६७-३४०४

३४०५

३४०६

३४०७-४०

३४४१-५७

३४५६-६२

३४६३-४

३४६५

३४६६

३४६७

२४६८

३४६९-७१

३५६१-२

३५६३-७६

३५७७

३५७८-६

३५८१-६

३५८१-३६००

३६०१-१६

३६२०

३६२१

३६२२-४

३६८१-८७

३६८४-६६

वृ० भा०

४२६४

४२६५-४३०१

४३०३-७

३६००

३६६६ तु०

२७६२

२७६०-१

२७६३-६१

२८४६-५६

२८५८

२८५७

२८५८-६२

२८६४-२६१०

२८६१-१४

२८६६-७

२८६५

२८२०

२८६८

२८६९

२८२१-२३

५१६६-७

५१४०-५४

५१५२

५१५५-६

५१५७-६५

वृ०में ये गाथाएँ

छूट गई हैं, जो

वहाँ आवश्यक

हैं।

५१६८-८६

२८२

२७७, २८५

५१८७-८६

४६८३-६२

५२१४-६६

नि० भा०	वृ० भा०	नि० भा०	वृ० भा०
३७००	५२२४	४१८२-४	५३०२-४
३७०२	५२३०	४१८५	५३०१
३७५२	४११ तु०	४१८६-६५	५३०५-१४
३७८८-६७	५६६८-६००७	४२१०	५६२१
३७६८-३८००	६०१०-१२	४२११	५६२०
३८१२	३२३ (जीतभाष्य)	४२१२	५६२२
३८१३	११३२	४२१३-४६	५६२३-४६
३८१४-३६७५	जीतभाष्य (३२६ से) और व्यव- हार भाष्य (उ० १०, गा० ४०० से) ये गाथाएँ हैं।	४२५१-५	५६६०-४
४००४-१५	३८२७-३८	४३६६-७२	४५४२-५
४०१६	३८४१	४३७३	४५५०
४०१७	३८३६	४३७४	४५४६
४०१८-२०	३८४०-३	४५२७	४००१
४०५६-६४	१८१६-२१	४७०२	८५२
४०६५	१८२५	४७०३	८५१
४०६६	१८२२	४७०४-६	८५३-५
४०६७	१८२६	४७०८-११	८३६-४२
४०६८	१८२३	४७१४-६	८४४-६
४०६९	१८२४	४७१६-२६	८५८-६८
४०७०-६३	१८२७-५०	४७३०-४	८७०-४
४०६४	१८५३	४७३५-५७	४७७-८६६
४०६५	१८५१	४७५८-६	८०१-२
४०६६	१७५२	४७६०	८००
४०६७	१८५६	४७६१-४	८०३-६
४०६८-६	१८५४-५	४७६६	८०६
४१००-४१०३	१८५७, ६०	४७६७	८०७
४१०४-६	१८६२-६७	४७६८	८०८
४११६-७	१८६८-६	४५६६	८१०
४१४२-६१	५२६४-८३	४७७०-८८	८११-२६
४१६२	५२८५	४७६०-४	८३०-४
४१६३	५२८४	४७६५-४८२४	८३६-६५
४१६८-८१	५२८७-५३००	४८२५	वृ० भा० में टीका की गिनी गई है।
		४८२६-६२	८६६-१०३०
		४८६३	कल्पवृद्धभाष्य की है।

नि० भा०	वृ० भा०	नि० भा०	वृ० भा०
४८६४	१०३१	५२२३-७	२५७८ न२
४८६५-६६	१०३२-३	५२३१-४८	३३१३-३३३०
४८६८-४८००	१०३४-६	५२४६	कलत्रवृद्धभाष्य
४८०१-३	१०३८-४०	५२५०-६०	३३३१-४१
४८०४	१०३७	५२६१	३३४२ तु०
४८०५-७	१०४१-३	५२६४.	३३४३
४८०८-४८	१०४५-८५	५२६५-६	३३४४-५ तु०
५००१	२७६४ तु०	५२६७-७६	३३४६-५५
५००२-८	६०३-६	५२७८	३३५६
५०१०-२२	६१०-२२	५२७९	३३५७ तु०
५०२४-४३	६२३-४८	५२८०-५	३३५८-६३
५०५०-५२	२७६५-६७	५२८६-८८	३३६५-६७
५०५३	२७६६	५२८६-९२	३३६८-९२ तु०
५०५४	२७६८	५२८३-८	३३७२-७
५०५५-६०	२८००-२८०५	५२८६	३३७८ तु०
५०६१	२८१०	५३००	३३७९
५०६२-५	२८०६-६	५३०१	३३८० तु०
५०६६-६०	२८११-३५	५३०२	३३८१
५०६८-५११४	२४५०-२४६६	५३०३	३३८२ तु०
५११५ तु० ६ उ०	२४६७	५३०४	३३८४
५११७-२३	२४६८-२४७४	५३०५	३३८७
५१२५	२४७६	५३०६	३३८८
५१२६	२४७५	५३०७	३३८९
५१२७-६२	२४७७-२४१२	५३०८	३३९०
५१६३-४	२४१४-५	५३१०-३२	३३९१
५१६५-	२४१३	५३३३	३३९२ तु०
५१६६-७६	२४१६-२६	५३३४-५१	३३९४
५१८०-६४	२४३४-४८	५३४४-७६	३३९७
५१६५	२४५०	५३७८, ५१५८	३३९८
५१६६	२४४६	५३७९, ५१६४	३३९९
५१६८	२४५२	५३८०, २०८	३४००
५२००-१३	१५५३-६६	५३८१, २०६	३४०१
५२१५-६	२५६७-८	५३८२, २१०	३४०२
५२१७-२१	२५७२-७६	५३८३, २११	३४०३
५२२२	२५६६, २५७७	५३८४, २१२	३४०४

नि० भा०	वृ० भा०	नि० भा०	वृ० भा०
५३८५-६	३४४०-१	५५७४	५४७४
५३८७	३४४०	५५७५-८६	५४७५-८६
५३८८	३४४२	= २७३७-५१	
५३८९-६५	३४४४-५०	५५६०, २७५४	५४६४
५३९६, २२२	३४५१	५५६२, २७५५	५४६०
५३९७, २२३	३४५२	५५६३, २७५६	५४६१
५३९८	३४५४	५५६६-५६२६	आवश्यक नियुक्ति
५३९९, २२५	३४५३		उत्तराध्ययन नियुक्ति
५४००	३४५५	५६३५, ४६	३०४१-५२
५४०१, २२७	३४५६	५६४७-६५	३०५५-७३
५४०२, २२८	३४५७	५६६६-८६	३०७५-६५
५४०३, २२९	३४५८	५६८७-६२	३०९७-३१०२
५४०४	३४६१	५६९४-५	३१०३-४
५४०५	३४६६	५६९६-६६	३१११-१४
५४०६	३४७०	५७००-१	३११५
५४०७	३४७१	५७०२-३	३११६
५४०८	३४७२	५७०४-५	३११७
५४०९	३४७३	५७०६	३११८
५४१४	५७१४	५७०७-२६	३११९-३८
५४१७	५७१३	५७३३	३२६२
५४१८	२८७६५० ५३६३३७	५७३४	३२६६
५४१९-६१	५३६३-६५	५७३५-३७	३२६६-६८
५४६२	५६६७	५७३८	३२७०
५४६३-६५	५३६८-५४००	५५४०-२	३२७१-३
५४६७-५५०३	५४०१-७	५७४३-५८	३२७४-८६
५५०५-१६	५४०८-२२	५७८६-८८	३६६१-३
५५२०	५४२४	५७८६	३६६६
५५२१	५४२३	५७९०-१	३६७१-२
५५२३-२७	५४२५-२६	५७९२-५	३६६७-७०
५५२६-४८	५४३०-४६	५७९६-५८३०	३६१३-४००७
५५५०	५४५० वृ०	५८३१, ५८२८	४००५
५५५१-२	५४५१-२	५८३२	४००८
५५५४-७०	५४५३-६६	५८३३-८७	४००९-६२
५५७२	५४७२	५८८८-५६००	४०६४-७६
५५७३	५४७३	५६३३	६३६५

## निशीथ : एक अव्ययन

नि० भा०	वृ० भा०	नि० भा०	व्य० भा० ३
५६४३	४८५१	६५८०-१	३४५-६
६१६८	७६२	६५८२	३५१
६२८३	११२७	६५८३	३५५
६२८४-८६	११२८-३० तु०	६५८४	३५६-४०३
६४६८७-८	व्य० वि० २,	६५८५	४०४-५
६४६८८-६५३५	गा० २२१-२,	६५८६	३५१
	व्य० वि० २,	६५८७	३५४
	गा० २२३-२६०	६५८८-६६३१	३५६-४०३
	व्य० भा० ३	६६३३-४	४०४-५
नि० भा०	गा० २६१	६६३६-७	४०६-७
६५३६	व्य० २६४-५	६६३६	४०८
६५३७-८	व्य० २६६	६६४०	४०६
६५४०	३०३	६६४१	४११
६५४२	३०४-७	६६४२-४७	४१२-७
६५४३-४६	३०८	६६४६-५२	४१८-२१
६५४८	३११-६	६६४५	४२२
६५४९-७६	३१६-३६	६६४७	४२३
६५५८	३४१	६६४८	४२८
६५७६	३४४	६६६१	४२६

उक्त तुलना से यह तो सिद्ध होता ही है कि निशीथ भाष्य का अविकांश वृहत्कल्प भाष्य और व्यवहार भाष्य से उद्धृत है। उक्त दोनों में निशीथ से उद्धरण नहीं लिया गया, इसका कारण यह है कि स्वयं निशीथ भाष्य में ही 'कल्प' शब्द से कल्पभाष्य का उल्लेख है। अतएव वही मानना संगत है कि कल्प और व्यवहार से ही निशीथ में गाथाएं ली गई हैं। निशीथ भाष्य गा० ६३५१ में 'सास्थं जहा कपे' कह कर कल्पभाष्य की गा० १२६६ आदि की ओर संकेत किया है। इससे यह भी सूचित होता है कि कल्प और व्यवहार के वाद ही निशीथ भाष्य की रचना हुई है। निशीथ भाष्य गा० ४३४ में वृहत्कल्पभाष्यगत प्रथम प्रलंब-सूत्रीय भाष्य की ओर संकेत है। इससे भी कल्प भाष्य का पूर्ववर्तित्व सिद्ध है।

अब निशीथ भाष्य के रचयिता कौन थे, इस प्रश्न पर विचार किया जाता है। भाष्यकार ने स्वयं अपना परिचय, और तो क्या नाम भी, भाष्य के प्रारंभ में या अंत में कहीं नहीं दिया है। चूर्णिकार ने भी आदि या अंत में भाष्यकार के विषय में स्पष्ट निर्देश नहीं किया।

१. कल्प और व्यवहार भाष्य के कर्ता एक ही हैं। देखो, वृहत्कल्प भाष्य गा० १—'कल्पव्यवहाराणं चक्षणा विहिं पद्वत्तामि ।' और व्यवहारभाष्य की उपसंहारात्मक गाथा—'कल्पव्यवहाराणं भास'—

गा० १४१ उद्देश १०।

है। ऐसी स्थिति में भाष्यकार के विषय में मात्र संभावना ही की जा सकती है। मुनिराज श्री पुण्य विजयजी ने बृहत्कल्प भाष्य की प्रस्तावना (भाग ६, पृ०-२२) में लिखा है कि “यद्यपि मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है, फिर भी ऐसा लगता है कि कल्प (अर्थात् बृहत्कल्प), व्यवहार और निशीथ लघुभाष्य के प्रणेता श्री संघदास गणि हैं। कल्प-लघुभाष्य और निशीथ लघुभाष्य इन दोनों की गाथाओं के अति साम्य से<sup>१</sup> हम इन दोनों के कर्ता को एक मानने की ओर ही प्रेरित होते हैं।”

मुनिराज श्री पुण्य विजय जी ने बृहत्कल्प लघुभाष्य की गाथा ३२८६,—जो निशीथ में भी उपलब्ध है ( गा० ५७५८ ),—‘उदिश्यजोहाउलसिद्धसेणो म पत्थिवो णिज्जियसत्तुसेणो’ में आने वाले ‘सिद्धसेन’ शब्द के साथ संघदास गणि के नामान्तर का तो कोई सम्बन्ध नहीं? ऐसी शंका भी की है। उन्होंने विद्वानों को इस प्रश्न के विषय में विचार करने का आमंत्रण भी दिया है और साथ ही यह भी सूचना दी है कि निशीथ चूर्णि, पंचकल्पचूर्णि, और आवश्यक हारिभद्री वृत्ति आदि में सिद्धसेनक्षमाश्रमण की साक्षी भी दी गई है। तो क्या सिद्धसेन के साथ भाष्यकार का नामान्तर सम्बन्ध है, या शिष्य प्रशिष्यादिरूप सम्बन्ध है—यह सब विद्वानों को विचारणीय है।

इस प्रकार मुनिराज श्री पुण्य विजयजी के अनुसार बृहत्कल्प आदि के भाष्यकार का प्रश्न भी विचारणीय ही है। अतएव यहाँ इस विषय में यत्किंचित् विचार किया जाए तो अनुचित न होगा।

यह सच है कि चूर्णिकार या स्वयं भाष्य कार ने अपने अपने ग्रन्थों के आदि या अन्त में कहीं भी कुछ भी निर्देश नहीं किया है। तथा यह भी सत्य है कि आचार्य मलयगिरि ने भी भाष्यकार के नाम का निर्देश नहीं किया है। किन्तु बृहत्कल्प भाष्य के टीकाकार क्षेम कीर्ति सूरि ने निम्न शब्दों में स्पष्ट रूप से संघदास को भाष्यकार कहा है। संभव है इस सम्बन्ध में उनके पास किसी परंपरा का कोई सूचना सूत्र रहा हो ?

“कल्पेऽनन्त्यमनर्धं प्रतिपदमर्पयति योऽर्थनिकुलम्बम् ।

श्रीसंघदास-गणये चिन्तामणये नमस्तस्मै ॥”

“अस्य च स्वल्पग्रन्थमहार्थतया दुःखबोधतया च सकलत्रिलोकीसुभगद्वरण क्षमाश्रमण नामधेया-  
भिधेयैः श्रीसंघदासगणिपूज्यैः ।”

प्रतिपदप्रकटितसंज्ञाज्ञाविराधनासमुद्भूतप्रभूतप्रत्यपायजालं निपुणचरणकरणपरिपालनोपायगोचर-  
विचारवाचालं सर्वथा दूषणकरणेनाप्यदूष्यं भाष्यं विरचयांचक्रे ।”

उपर्युक्त उल्लेख पर से हम कह सकते हैं कि बृहत्कल्प भाष्यटीकाकार क्षेमकीर्ति ने बृहत्कल्प भाष्य के कर्ता रूप से संघदास गणि का स्पष्ट निर्देश किया है। बृहत्कल्प भाष्य और व्यवहार भाष्य के कर्ता तो निश्चित रूप से एक ही हैं, यह तो कल्प भाष्य के उत्थान और



इमं ओहेण णवविह पच्छित्त भण्णति—

चउगुरुं मासो या, मासो छल्लहुग चउगुरु मासो ।

छगुरु छल्लहु चउगुरु, वित्तियादेसे भवे सोही ॥६६४०॥

सीहाणुगो होउ सीहाणुगस्स आलोएति चउगुरु, सीहाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति मासलहु, सीहाणुगस्स कोल्लुगाणुओ होउ मासलहु वसभाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छल्लहु, वसभाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति चउगुरु, वसभाणुगस्स कोल्लुगाणुगो मासलहु, कोल्लुगाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छगुरु, कोल्लुगाणुगस्स वसभाणुगो छल्लहु, कोल्लुगाणुगस्स कोल्लुगाणुगो चउगुरु, एस वित्तियादेसे सोही भणिया ॥६६४०॥

तेण आलोयणेण अपलिउच्चिय अपलिउच्चिय आलोइय, वीप्सा कृता, निरवशेप सर्वमालोचित, “सर्वमेत” ति । अहवा — “सव्वमेय” ति ज अवराहावण ज च पण्डित्थणाणिप्फण अण्ण च किं वि आलोयणकाले असमायारणिप्फण सव्वमेत स्वकृत । “सगड” “साहणिय” ति एवकतो काउ से मासादि पटुविज्जति जाव छम्मासा । अहवा — “साहणिय” ति ज छम्मासातिरित्त त परिसाडेण भोसेत्ता छम्मासादित्यर्थ । “जे” ति य साधू, “एयाए” ति या उक्ता [ विधि ] प्राक्कृतस्य अपराधस्य स्थापना “पटुवणा”, अहवा — प्रकर्षेण कृतस्य स्थापना । अहवा — अविशुद्धचारित्र्यात् आत्मा अमायावित्वेन आलोचनाविधानेन उद्धृत्य विसुद्धे चारित्र्ये प्रकर्षेण स्थापित । अहवा — “पटुवणाए” ति प्रारभ, य एष आलोचनाविधि प्रायश्चित्त-दानविधिश्च अनेन प्रस्थापित प्रवर्तित इत्यर्थ । “पटुविय” ति तदेव यथाह प्रायश्चित्तकरणत्वेनारोपित, य एव प्रायश्चित्तकरणत्वेन स्थापित । “णिव्वसमाणो” त पच्छित्त वहतो कुव्वमाणेत्यर्थ । त वहतो प्रमादतो विसयकसाएहि जइ अण्ण “पडिसेवति” ति ततो पडिसेवणाओ “से वि” ति ज से पच्छित्त त “कसिण” ति सव्व । अहवा — अणुमाहकसिणेण वा “तत्थेव” ति पुव्वपटुविए पच्छित्ते आरोवेयव्व चडावेयव्व ति वुत्त भवति । “सिय” ति अवधारणे दटुवो । एस सुत्तथो ।

इमा णिज्जुत्ती—

मासादी पटुविते, जं अण्णं सेवती तगं सव्वं ।

साहणिऊणं मासा, छदिज्जंतेतरे भोसो ॥६६४१॥

ज छम्मासातिरित्त त एगतर तस्स भोससेस इमाए गाहाए सुत्ते गतत्थ । “पटुविए” ति ज पद तस्सिमे भेदा —

दुविहा पटुवणा खलु, एगमणेगा य होतऽणेगा य ।

तवतिग परियत्ततिगं, तेरस उ जाणि त पताई ॥६६४२॥

—प्रकृतं समाप्तम् ।

सा पायच्छित्तपटुवणा दुविधा — एगा अणेगा वा, तत्थ जा सच्चइया सा णियमा छम्मासिया एग-विधा । सा य दुविधा — उग्घाताणुग्घाता वा । अहवा — केसि चि मएण एगविधा मासियादीणं अण्णतरठाण-पटुवणा । तत्थ जा अणेगविहा सा इमा — “तवतिग” पच्छद्ध । तत्थ पणमादिभिण्णमासतेसु परिहारतवो ण भवति, मासादिसु भवतीत्यर्थ । मासिय एवक तवठाण, दुमासादि जाव चाउम्मासिय वित्तिय तवट्टाण, पणमासछम्मासिय इय तवट्टाण ति, एते वि उग्घाताणुग्घाता वा, ‘परियत्ततिग’ नाम पव्वज्जा परियागस्स जत्थ परावत्ती भवति त परियत्ततिग त च छेदतिग, छेदो वि उग्घाताणुग्घाता वा, मूलतिग, अणवट्टतिग, एवक

व्यवहार भाष्य के उपसंहार को देखने पर अत्यन्त स्पष्ट हो जाता है<sup>१</sup>। अतएव बृहत्कल्प और व्यवहार भाष्य के कर्ता रूप से संघदास क्षमाश्रमण का स्पष्ट नाम-निर्देश क्षेम कीर्ति ने हमारे समक्ष उपस्थित किया है, यह मानना चाहिए।

अब प्रश्न यह है कि क्या निशीथ भाष्य के कर्ता भी वे ही हैं, जो बृहत्कल्प और व्यवहार भाष्य के कर्ता हैं? मुनिराज श्री पुण्यविजयजीने तो यही संभावना की है कि उक्त तीनों भाष्य के कर्ता एक ही होने चाहिए<sup>२</sup>। पूर्वसूचित तुलना को देखते हुए, हमारे मतसे भी इन तीनों के कर्ता एक ही हैं, ऐसा कहना अनुचित नहीं है। अर्थात् यह माना जा सकता है कि कल्प, व्यवहार और निशीथ-इन तीनों के भाष्यकार एक ही हैं।

अब मुनिराज श्री पुण्यविजयजी ने संघदास और सिद्धसेनकी एकता या उन दोनों के सम्बन्ध की जो संभावना की है, उस पर भी विचार किया जाता है। जिस गाथा का उद्धरण देकर संभावना की गई है, वहां 'सिद्धसेन' शब्द मात्र श्लेषसे ही नाम की सूचना दे सकता है। क्योंकि सिद्ध सेन शब्द वस्तुतः वहां सम्प्रति राजा के विशेषण रूप से आया है, नाम रूप से नहीं। बृहत्कल्प में उक्त गाथा प्रथम उद्देशक के अंत में (३२८६) आई है, अतएव श्लेष की संभावना के लिए अवसर हो सकता है। किन्तु निशीथ में यह गाथा किसी उद्देश के अन्त में नहीं, किन्तु १६ वें उद्देशक के २६ वें सूत्र की व्याख्या की अंतिम भाष्य गाथा के रूप में (५७५८) है। अतएव वहां श्लेषकी संभावना कठिन ही है। अधिक संभव तो यही है कि आचार्य को अपने नाम का श्लेष करना इष्ट नहीं है, अन्यथा वे भाष्य के अंत में भी इसी प्रकार का कोई श्लेष अवश्य करते।

हां, तो उक्त गाथा में आचार्य ने अपने नामकी कोई सूचना नहीं दी है, ऐसा माना जा सकता है। फिर भी यह तो विचारणीय है ही कि सिद्धसेन क्षमाश्रमण का निशीथ भाष्य की रचना के साथ कोई संबंध है या नहीं? मुनिराज श्री पुण्यविजयजीने सिद्धसेन क्षमाश्रमण के नामका अनेकवार उल्लेख होने की सूचना की है। उनकी प्रस्तुत सूचना को समक्ष रखकर मैंने निशीथ के उन स्थलों को देखा, जहाँ सिद्धसेन क्षमाश्रमण का नाम आता है, और मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि बृहत्कल्प, व्यवहार और निशीथ भाष्य के कर्ता निशीथ चूर्णिकारके मतसे सिद्धसेन ही हो सकते हैं। क्षेम कीर्ति-निर्दिष्ट संघदास का क्षेमकीर्ति के पूर्ववर्ती भाष्य या चूर्णि में कहीं भी उल्लेख नहीं है, किन्तु सिद्धसेन का उल्लेख तो चूर्णिकार ने बारबार किया है। यद्यपि मैं यह भी कह ही चुका हूँ कि चूर्णिकार ने आदि या अंत में भाष्य कारके नाम का उल्लेख नहीं किया है तथापि चूर्णि के मध्य में यत्र तत्र जो अनेक उल्लेख हैं, वे इस बात को सिद्ध कर रहे हैं कि चूर्णिकारने भाष्य कार के रूप से सिद्धसेन को ही माना है। अब हम उन उल्लेखों की जांच करेंगे और अपने मतकी पुष्टि किस प्रकार होती है, यह देखेंगे।

(१) चूर्णिकारने निशीथ गा० २०५ को द्वार गाथा लिखा है। यह गाथा नियुक्त-गाथा होनी चाहिए। उक्त गाथागत प्रथम द्वार के विषय में चूर्णि का उल्लेख है—'सांगण्डि ति द्वारं। अस्य सिद्धसेनाचार्यो व्याख्यां करोति'—भाष्य गा० २०६ का उत्थान। गा० २०७ के

१. वस्तुतः ये दोनों भाष्य एक अन्य ही है।

तेमासियं परिहारद्वानं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं  
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा  
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं  
दिवड्डो मासो ॥सू०॥३५॥

दोमासियं परिहारद्वानं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं  
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा  
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं  
दिवड्डो मासो ॥सू०॥३६॥

मासियं परिहारद्वानं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारद्वानं  
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा  
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं  
दिवड्डो मासो ॥सू०॥३७॥

छम्मासिय पचमासिय चाउम्मासिय तेमासिय दोमासिय मासिय सव्वा लक्खणाओ पत्ताओ ।  
लक्खण पुण मज्जे गहिण् आदिमा अतिमा य सजोगा ते भाणियव्वा, जहा छम्मासियादिपट्टवणा पट्टवित्ते  
दोमासियस्स सजोगो भणितो तहा एतेसि पि सव्वासि सजोगो भाणियव्वो ।

तेण इम अत्थसुत्त - “छम्मासिय परिहारद्वानं पट्टविण् अणगारे अतरा छम्मासिय चेव परि-  
हारद्वानं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा चत्तालीसइराइया आरोवणा आदी जाव तेण पर सचत्तालीस-  
तिराया छम्मासा”, अत्थो पूर्ववत् ।

एव पचमासित परिहारद्वानं पट्टवित्ते छम्मासिय पडिसेवति ।

एव चाउम्मासिय पट्टविण् पडिसेवति, तेमासिय पट्टविण् पडिसेवति, दोमासिय पट्टविण् पडिसेवति,  
मासिय पट्टविण् पडिसेवति । एए छ पडिसेवति । छ वि सुत्ता इह णत्थि । कि कारण जेण छम्मासाण परेण  
ण दिज्जति ? ठविया य सचत्ताला छम्मासा, तेण ठविता सुत्ता नत्थि । इदाणि छम्मासिए पट्टविण् अतरा  
पचमासित पडिसेवति । अहावरा दीसतिरातिया आरोवणा आदि मज्झावसाणे जाव तेण पर सपचराया छम्मासा,  
एव पचमासे पट्टवित्ते पचमास पडिसेवइ । चाउम्मासिए वि पचमासा, तेमासिए वि पचमासा, दोमासिए वि  
पचमासा, मासिते वि पचमासा, एत्थ वि ठविया सुत्ता णत्थि, जेण सपचराया छम्मासे ति । छम्मासिए पट्टविण्  
अतरा चाउम्मासित पडिसेवेजा, अहावरा तीसति जाव तेण पर पचमासा, एव पचमासित चउमासित तेमासिय  
दोमासिय मासिए वि पट्टविण् चउमासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा ती (वी) सतिरातिता आरोवणा  
जाव तेण पर पचमासा ठविता ।

सुत्त एत्थ अत्थि - पचमासिय परिहारद्वानं पट्टवित्ते चाउमासित परिहारद्वानं पडिसेवित्ता  
आलोएज्जा अहावरा ती (वी) सतिरातिता आरोवणा जाव तेण पर छम्मासो । अत्थो पूर्ववत् । सुत्ता छम्मासिय  
परिहारद्वानं पडिसेवित्ते अणगारे अतरा तेमासित परिहारद्वानं आलोएज्जा, अहावरा पण्डीसतिराइदिया  
आरोवणा आदी जाव तेण पर पचूणा चत्तारि मासा पचमासिते पट्टविण्, चउमासिते पट्टविण्, तेमासिते

उत्थान में निम्न उल्लेख है—‘इमा पुण सागणिय-णिकित्तदाराणं दोयद्वि भद्दवाहुसामिकता प्राय-श्चित्त व्याख्यान गाथा ।’ गा० २०८ के उत्थान में चूर्णि है—‘इयाणि संवट्टणे त्ति दारं । एयस्स भद्द-वाहुसामिकता वक्खाण गाथा ।’ उक्त २०८ वीं गाथा में भद्रवाहु ने नौ अवान्तर द्वार बताए हैं। उन्हीं नव अवान्तर द्वारों की व्याख्या क्रमशः सिद्धसेन ने गा० २०९ से २११ तक की है—इस बात को चूर्णिकारने इन शब्दों में कहा है—एतेषां (अवान्तर-नवद्वाराणां) सिद्धसेनाचार्यो व्याख्यां करोति—गा० २०९ का उत्थान । गा० २०५ से गा० २०९ तक के उत्थान सम्बन्धी उक्त उल्लेखों के आधार पर हम निम्न परिणामों पर पहुँच सकते हैं—

(अ) स्वयं भद्रवाहु ने भी नियुक्ति में कहीं-कहीं द्वारों का स्पष्टीकरण किया है । अथवा मूलद्वार गाथा २०५ को यदि प्राचीन नियुक्त गाथा मानी जाए तो उसका स्पष्टीकरण भद्रवाहु ने किया है ।

(ब) भद्रवाहु कृत व्याख्या का स्पष्टीकरण सिद्धसेनाचार्य ने किया है । इसपर से स्पष्ट है कि भद्रवाहु के भी टीकाकार अर्थात् भाष्यकार सिद्धसेनाचार्य हैं ।

(क) निशीथ गा० २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१४ इसी क्रम से बृहत्कल्प भाष्य में भी हैं । देखिए, गाथा ३४३४, ३४३६-९, और ३४४० । अतएव वहाँ भी नियुक्तिकार और भाष्यकार क्रमशः भद्रवाहु और सिद्धसेन को ही माना जा सकता है ।

प्रसंगवश एक बात और भी यहां कह देना आवश्यक है कि आचार्य हरिभद्र ने आवश्यक-नियुक्ति के व्याख्या-प्रसंग में कुछ गाथाओं को ‘मूल भाष्य’ की संज्ञा दी है । प्रस्तुत उल्लेख का तात्पर्य यह लगता है कि हरिभद्र ने आवश्यक के ही जिनभद्रकृत विशेष भाष्य की गाथाओं से भद्रवाहुकृत व्याख्या-गाथाओं का पार्थक्य निर्दिष्ट करने के लिये ‘मूलभाष्य’ शब्द का प्रयोग किया है । यह तात्पर्य ठीक है या नहीं, यह अभी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता; किन्तु प्रस्तुत में गाथागत एक ही द्वार की स्वयं भद्रवाहुकृत व्याख्या और सिद्धसेन-कृत व्याख्या उपलब्ध हो रही है । अतएव अन्यत्र भी ऐसे प्रसंग में यदि मूलकारकी व्याख्या और अन्यदीय व्याख्या का पार्थक्य निर्दिष्ट करने के लिये ‘मूल भाष्य’ शब्द का प्रयोग किया जाए तो इसमें अनीचित्य नहीं है । इतना तो कहा ही जा सकता है कि जब कि जिनभद्र से पूर्व भद्रवाहु से भिन्न अन्य किसी आवश्यक के भाष्यकार का पता नहीं लगता, तब मूल भाष्यकार भद्रवाहु ही हों तो कुछ असंभव नहीं ।

(२) गा० २६२ में मृपावाद की चर्चा है । इस गाथा को चूर्णि में भद्रवाहु-कृत व्याख्यान गाथा कहा है—‘भावसुसावातस्स भद्दवाहुसामिकता वक्खाणगाथा ।’

इस गाथा के पूर्वार्ध की व्याख्या को सिद्धसेन आचार्य कृत कहा है—‘पुच्चदस्स पुण सिद्धसेणायरिओ वक्खाणं करेति’—गा० २६३ का उत्थान । इससे सिद्ध होता है कि भाष्यकार सिद्धसेन थे ।

(३) गा० २६८ और २६९-ये दोनों गाथाएँ द्वार-गाथाएँ हैं, ऐसा चूर्णिकार ने कहा है । अर्थात् ये नियुक्ति गाथाएँ हैं । इन्हीं दो गाथागत द्वारों की व्याख्या गा० ३०० से ३१६ तक

है। ये सभी गाथाएँ बृहत्कल्प में भी हैं—गा० ६०६६—८७। निशीथ-चूर्णि में इन गाथाओं के व्याख्या-प्रसंग में कहा गया है कि व्याख्याकार सिद्धसेन हैं—‘अस्थैवार्थस्य स्पष्टतरं व्याख्यानं सिद्धसेनाचार्यः करोति’—गा० ३०३ का उत्थान। और ३०४ का उत्थान भी ऐसा ही है। इससे फलित होता है कि बृहत्कल्प और निशीथ के भाष्यकार सिद्धसेन हैं।

(४) गा० २४६ को चूर्णि कारने ‘चिरंतन’ गाथा कहा है और उसकी व्याख्या करने वाले स्पष्ट रूप से सिद्धसेनाचार्य निर्दिष्ट हैं—देखो गा० २५० की चूर्णि—‘एतस्स चिरंतनगाहापायस्स सिद्धसेनाचार्यः स्पष्टेनाभिधानेनार्थमभिधत्ते’। यह उल्लेख इस बात की ओर संकेत करता है कि निर्युक्तिकार भद्रबाहुने प्राचीन गाथाओं का भी निर्युक्ति में संग्रह किया था, और भाष्यकार सिद्धसेन हैं।

(५) गा० ४६६ से शुरू होने वाला प्रकरण बृहत्कल्पभाष्य से (गा० ४८६५) ही लिया गया है। उक्त प्रकरण की ५०४ वीं गाथा के उत्थान में लिखा है—‘इममेवार्थं सिद्धसेनाचार्यो वक्तुकाम आह।’ इससे भी सिद्ध होता है कि बृहत्कल्प और निशीथ भाष्य के कर्ता सिद्धसेन हैं।

(६) गा० ५१८ से शुरू होने वाला प्रकरण भी बृहत्कल्प से लिया गया है। देखिए—निशीथ गाथा ५१८ से ५४६ और बृहत्कल्प भाष्य गा० २५८४ से २६१५। इस प्रकरण की ५४० से ५४४ तक की गाथाओं को चूर्णिकारने सिद्धसेनाचार्यकृत बताया है—देखिए, गा० ५४५ की उत्थान चूर्णि। चूर्णिकार और मलयगिरि दोनों का मत है कि इन गाथाओं में जो विस्तार से कहा गया है वही संक्षेप में भद्रबाहुने कहा है—देखिए, नि० गा० ५४५ की चूर्णि और बृह० गा० २६११ की टीका का उत्थान। स्पष्ट है कि निशीथ और बृहत्कल्प के भाष्यकार सिद्धसेन हैं।

(७) गा० ४०६६—६७ की चूर्णि में भद्रबाहुकृत माना है और उन्हीं गाथाओं के अर्थ को सिद्धसेन स्फुट करते हैं, ऐसा निर्देश भी चूर्णि में किया है—‘भद्रबाहुकया गाथा’ और ‘भद्रबाहुकृत-गाथया ग्रहणं निर्दिश्यते’—निशीथ चूर्णि गा० ४०६६ और ४०६७। तदनंतर लिखा है—‘एसेवज्जथो सिद्धसेणखमासमणेषेण सुडत्तरो भन्ति’—गा० ४०६८ की निशीथ चूर्णि। जिस प्रकरण में ये गाथाएँ हैं वह समग्र प्रकरण बृहत्कल्प से ही निशीथ में लिया गया है—देखो, निशीथ गा० ४०५६ से ४१०६ और बृह० गा० १८१६—१८६७। मलयगिरि ने बृह० गा० १८२६—नि० गा० ४०६७ को निर्युक्ति कहा है और निशीथ चूर्णि में उसे भद्रबाहु कृत माना गया है। उक्त गाथा की व्याख्या-गाथा को अर्थात् बृ० गा० १८२७—निशीथ गा० ४०७० को भाष्यकारीय कहा गया है, जब कि चूर्णिकार के मत से वह व्याख्या सिद्धसेनकृत है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भद्रबाहुकृत निर्युक्ति (बृहत्कल्प और निशीथ निर्युक्ति) की व्याख्या भाष्यकार सिद्धसेनने की है।

(८) निशीथ गा० १६६१, बृहत्कल्प में भी है—बृ० गाथा ३७१५। गा० १६६१ की व्याख्यारूप नि० गाथा १६६४—बृ० गा० ३७१५ को चूर्णिकार स्पष्ट रूप से सिद्धसेन कृत बताते हैं। ये गाथाएँ जिस प्रकरण में हैं, वह समग्र प्रकरण निशीथ में बृहत्कल्प भाष्य से लिया गया है। देखिए, निशीथ भाष्य गा० १६६६—१७८४ और बृ० भा० गा० ३६६०—३८०४। उक्त प्रकरण पर से यही फलित होता है कि भाष्यकार सिद्धसेन हैं।

(९) निशीथ गा० ५४५९ के उत्तरार्ध को और साथ ही गा० ५४६० को बृहत्कल्प भाष्य में (गा० ५३६३-५३६४) नियुक्ति कहा गया है। और उक्त नियुक्ति गाथाओं की भाष्य सम्बन्धी व्याख्या गाथाओं के विषय में निशीथचूर्ण के शब्द इस प्रकार हैं—‘सिद्धसेण-खमासमणो वक्खाणेति’ गा० ५४६३ का उत्थान। यह व्याख्यान-गाथा बृहत्कल्प भाष्य में भी है—गा० ५३६८। इस प्रकार स्पष्ट है कि सिद्ध सेन क्षमाश्रमण भाष्यकार हैं।

(१०) गा० ५७१४ की चूर्णमें गाथा ५७११ को भद्रवाहुकृत कहा है और सिद्धसेन खमासमणने इसी की व्याख्या को फुडतर करने के लिये उक्त गाथाएँ बनाई हैं, ऐसा उल्लेख है—‘जे भणिया भद्दवाहुकयाए गाहाए सच्चन्दगमणाद्वाया तिखिण पगारा ते चेव सिद्धसेणखमासमणेहि फुडतरा करेंतेहि इमे भणित्ता’—गा० ५७१४ की उत्थान-सम्बन्धी निशीथ चूर्ण। यह समग्र प्रकरण बृहत्कल्प से लिया गया है, और प्रस्तुत गाथा को ‘नियुक्ति गाथा’ कहा है। देखिए, निशीथ गा० ५६२५-५७२६ और बृह० गा० ३०४१-३१३८। स्पष्ट है कि भाष्यकार सिद्धसेन हैं।

(११) गा० ६१३८, चूर्ण के अनुसार भद्रवाहुकृत नियुक्ति गाथा है। उक्त गाथा में निर्दिष्ट अतिदेश का भाष्य सिद्धसेन करते हैं, ऐसा उल्लेख चूर्ण में है—

‘एइए अतिदेसे कए वि सिद्धसेणखमासमणो पुव्वद्धस्स भणियं अतिदेसं वक्खाणेति ।’

—निशीथ चूर्ण, गा० ६१३९

उपर्युक्त सभी उल्लेखों के आधार पर यह निश्चय किया जा सकता है कि निशीथ भाष्य तो निर्विवाद रूप से सिद्धसेन क्षमाश्रमणकृत है। और क्योंकि बृहत्कल्प और व्यवहार के कर्ता भी वे ही हैं, जिन्होंने निशीथ भाष्य की संकलना की है, अतएव कल्प, व्यवहार और निशीथ इन तीनों के भाष्यकर्ता सिद्धसेन हैं—ऐसा माना जा सकता है।

अब तक की भाष्यकार-सम्बन्धी समग्र चर्चा पर एक प्रश्न खड़ा हुआ है। वह यह कि क्षेम कीर्ति ने भाष्यकार के रूप में सिद्धसेन का नाम न देकर संघदास का नाम क्यों दिया ? इसका उचित स्पष्टीकरण अभी तो लक्ष्य में नहीं है। संभव है, भविष्य में कुछ सूत्र मिल सकें और उक्त प्रश्न का समाधान हो सके।

अब प्रश्न यह है कि ये सिद्धसेन क्षमाश्रमण कौन हैं और कब हुए हैं ? सन्मति-तर्क के कर्ता सुप्रसिद्ध सिद्धसेन दिवाकर से तो ये क्षमाश्रमण सिद्धसेन भिन्न ही हैं। उक्त निर्णय निम्न प्रमाणों पर आधारित है।

(१) दोनों की पदवी भिन्न है। एक दिवाकर हैं, तो दूसरे क्षमाश्रमण।

(२) सन्मति तर्क सिद्धसेन दिवाकर का ग्रन्थ है, और उसके उद्धरण नय चक्र में हैं। और नयचक्र-कर्ता मल्लवादी का समय विक्रम ४१४ के आसपास है। जब कि प्रस्तुत भाष्य के कर्ता सिद्धसेन क्षमा श्रमण इतने प्राचीन नहीं हैं।

(३) निशीथ भाष्य की चूर्ण, यदि भाष्य के सही अभिप्राय को व्यक्त करती है, तो यह भी माना जा सकता है कि भाष्यकार के समक्ष सन्मति तर्क था और वे अश्वकर्ता सिद्धसेन से भी परिचित थे—देखिए, निशीथ गा० ४८६, १८०४।



(४) भाष्यकार के समक्ष आचारांग-निर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, पिंडनिर्युक्ति, आवश्यक-निर्युक्ति आदि ग्रन्थ थे, जो द्वितीय भद्रबाहु के द्वारा ग्रथित हैं—अतएव सिद्धसेन दिवाकर से, जो द्वितीय भद्रबाहु के पूर्वभावी हैं, भाष्यकार सिद्धसेन भिन्न होने चाहिए।

आचारांग-निर्युक्ति, जो द्वितीय भद्रबाहु की कृति है, उस पर तो निशीथ भाष्य लिखा ही गया है; अतएव इसके विषय में कुछ संदेह नहीं है। आवश्यक निर्युक्ति भी भाष्यकार के समक्ष थी, इसका प्रमाण निशीथ भाष्य गा० ४० है, जिसमें 'उदाहरणा जहा हेष्टा' कहकर आवश्यक-निर्युक्ति का निर्देश किया गया है—देखो, निशीथ चूर्ण गा० ४०—'जहा हेष्टा आवसगे तहा' दृष्ट्वा ।' पिंडनिर्युक्ति का तो शब्दतः निर्देश गा० ४५६ में भाष्यकार ने स्वयं किया है, और चूर्णिकारने भी पिंडनिर्युक्ति पर से विवरण जान लेने को कहा है—नि० चू० गा० ४५७ । चूर्णिकारने गा० २४५४ के 'जो वल्लिणतो पुच्चि' अंश की व्याख्या में ओघनिर्युक्ति का उल्लेख किया है—'पुव्वत्ति ओहनिज्जुत्तीए' । इसी प्रकार गा० ४५७६ में भी 'पुव्वभणिते' का तात्पर्य चूर्णिकारने 'पुव्वं भणितो ओहनिज्जुत्तीए' लिखा है। ऐसा ही उल्लेख गा० ४६३० में भी है।

(५) निशीथ चूर्ण में कही सिद्धसेन आचार्य तो कहीं सिद्धसेन क्षमाश्रमण इस प्रकार दोनों रूप से नाम आते हैं। किन्तु कहीं भी सिद्धसेन के साथ 'दिवाकर' पदका उल्लेख नहीं किया गया है, अतएव भाष्यकार सिद्धसेन, दिवाकर सिद्धसेन से भिन्न हैं।

अब इस प्रश्न पर विचार करें कि सिद्धसेन क्षमाश्रमण कब हुए ?

जीत कल्प भाष्य की रचना जिनभद्र क्षमाश्रमण ने की है। और उसकी चूर्ण के कर्ता सिद्धसेन हैं। मेरे विचार से ये सिद्धसेन ही प्रस्तुत सिद्धसेन क्षमाश्रमण हैं। चूर्णिकार सिद्धसेन आचार्य जिनभद्र के साक्षात् शिष्य हैं, ऐसा इस लिये प्रतीत होता है कि उन्होंने चूर्ण के प्रारंभ में जिनभद्र की स्तुति की है, और स्तुति-वर्णन की शैली पर से भल्लक रहा है कि वे स्तुति के समय विद्यमान थे। प्रारंभिक मंगल में सर्वप्रथम भगवान् महावीर को नमस्कार किया है, तदनंतर एकादश गणघर और जंबू प्रभवादि को, जो समस्त श्रुतघर थे। तदनंतर दश-नव पूर्वघर और अतिशयशील शेष श्रुतज्ञानियों को नमस्कार किया है। इसके अनंतर प्रथम प्रवचन को नमस्कार करके पश्चात् जिनभद्र क्षमाश्रमण को नमस्कार किया है। क्षमा श्रमण जी की प्रशस्ति में ६ गाथाओं की रचना की है और वर्तमान कालका प्रयोग किया है; यह खास तौर पर ध्यान देने जैसी बात है। 'मुखिवरा सेवन्ति सया' गा० ६। 'दससु वि दिससु जस्स य अणुओगो भमई'—गा० ७। इससे प्रतीत होता है कि सिद्धसेन आचार्य, जिनभद्र क्षमा श्रमण के साक्षात् शिष्य हों, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

जीत कल्प पर की अपनी चूर्ण में उन्होंने निशीथ की गाथाएँ 'तं जहा' कह करके दी हैं—नि० गा० ४६३ ४८४ और ४८५, जो पृ० ३ में उद्धृत हैं।

मुनिराज श्री पुण्य विजयजी ने जिनभद्र को व्यवहार-भाष्यकार के वाद का माना है। और प्रमाणस्वरूप विशेषणवती की गाथा ३४ गत 'व्यवहार' शब्द को उपस्थित करते हुए कहा है कि स्वयं जिनभद्र, प्रस्तुत में, 'व्यवहार' शब्द से व्यवहार भाष्यगत गाथा १६२ (उद्देश ६)

की ओर संकेत करते हैं<sup>१</sup>। यदि सिद्धसेन व्यवहार-भाष्य के कर्ता माने जायें तो इस प्रमाण के आधार से उन्हें जिनभद्र से पूर्व माना जा सकता है, पश्चात्कालीन या उनके शिष्य रूप तो नहीं माना जा सकता। अस्तु सिद्धसेन जिनभद्र के शिष्य कैसे हुए? यह प्रश्न यहां सहज ही उपस्थित हो सकता है। किन्तु इसका स्पष्टीकरण यह किया जा सकता है कि स्वयं बृहत्कल्प और निशीथ भाष्य में विशेषावश्यक भाष्य की अनेक गाथाएँ उद्धृत हैं। देखिए, निशीथ गा० ४८२३, ४८२४, ४८२५ विशेषावश्यक की क्रमशः गा० १४१, १४२, १४३ हैं। विशेषावश्यक की गा० १४१—१४२ बृहत्कल्प में भी है—गा० ९६४, ९६५। हां तो जीतकल्प चूर्ण की प्रशस्ति के आधार पर यदि सिद्धसेन को जिन भद्र का शिष्य माना जाए तब तो जिनभद्र के उक्त गाथागत 'व्यवहार' शब्द का अर्थ 'व्यवहारभाष्य' न लेकर 'व्यवहार नियुक्ति' लेना होगा। जिनभद्र ने केवल 'व्यवहार' शब्द का ही प्रयोग किया है, 'भाष्य' का नहीं। और बृहत्कल्प आदि के समान व्यवहार भाष्य में भी व्यवहार नियुक्ति और भाष्य दोनों एक ग्रन्थरूपेण संमिलित हो गए हैं, अतएव चर्चास्पद गाथा को एकान्त भाष्य की ही मानने में कोई प्रमाण नहीं है। अथवा कुछ देर के लिए यदि यही मान लिया जाए कि जिनभद्र को भाष्य ही अभिप्रेत है, नियुक्ति नहीं; तब भी प्रस्तुत असंगति का निवारण यों हो सकता है कि सिद्धसेन को जिनभद्र का साक्षात् शिष्य न मानकर उनका समकालीन ही माना जाय। ऐसी स्थिति में सिद्धसेन के व्यवहार भाष्य को जिनभद्र देख सकें, तो यह असंभव नहीं।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि मैंने ऊपर में विशेषावश्यक भाष्य की जिन गाथाओं को निशीथ भाष्य में उद्धृत होने की बात कही है, उन गाथाओं के पूर्व में आने वाली विशेषावश्यक भाष्य की गा० १४० के अन्त में 'जत्रो सुण्डभिदियं' ये शब्द हैं। इसका अर्थ कोई यह कर सकता है कि गा० १४१ को विशेषावश्यक के कर्ता उद्धृत कर रहे हैं। किन्तु 'गा० १४१ का वक्तव्यांश श्रुत में कहा गया है, न कि स्वयं वह गाथा'—ऐसा मान कर ही मैंने प्रस्तुत में १४१, १४२, १४३ गाथाओं को विशेषावश्यक से निशीथ में उद्धृत माना है।

ऐसी स्थिति में जिनभद्र और भाष्यकार सिद्धसेन का पौर्वापर्य अंतिम रूप में निश्चित हो गया है, यह नहीं कहा जा सकता। मात्र संभावना ही की जा सकती है। उक्त प्रश्न को अभी विचार-कोटि में ही रखा जाना, इसलिये भी आवश्यक है कि जिनभद्र के जीत कल्प भाष्य और सिद्ध सेन के निशीथभाष्य तथा व्यवहार भाष्य की संल्लेखना-विषयक अधिकांश गाथाएँ एक जैसी ही हैं। तुलना के लिये, देखिए—निशीथ गा० ३८१४ से, व्यवहार भाष्य उ० १०, गा० ४०० से और जीत कल्प भाष्य की गा० ३२९ से। ये गाथाएँ किसी एकने अपने ग्रन्थ में दूसरे से ली हैं या दोनों ने ही किसी तीसरे से? यह प्रश्न विचारणीय है।

भाष्य कार ने किस देश में रहकर भाष्य लिखा? इस प्रश्न का उत्तर हमें गा० २६२७ से मिल सकता है। उसमें 'चक्के धुमाइया' शब्द है। चूर्णकार ने स्पष्टीकरण किया है कि उत्तरापथ में धर्मचक्र है, मथुरा में देवनिर्मित स्तूप है, कोसल में जीवंत प्रतिमा हैं, अथवा तीर्थकारों की जन्म-भूमि है, इत्यादि मान कर उन देशों में यात्रा न करे। इस पर से ध्वनित



होता है कि उक्त प्रदेशों में भाष्य नहीं लिखा गया। संभवतः वह पश्चिम भारत में लिखा गया हो। यदि पश्चिम भारत का भी संकोच करें तो कहना होगा कि प्रस्तुत भाष्य की रचना सौराष्ट्र में हुई होगी। क्योंकि बाहर से आने वाले साधु को पूछे जाने वाले देश-सम्बन्धी प्रश्न में मालव और मगध का प्रश्न है<sup>१</sup>। मालव या मगध में बैठकर कोई यह नहीं पूछना कि आप मालव से आ रहे हैं या मगध से? अतएव अधिक संभव तो यही है कि निशीथ भाष्य की रचना सौराष्ट्र में हुई होगी।

और यह भी एक प्रमाण है कि जो मुद्राओं की चर्चा (गा० ६५७ से) भाष्यकार ने की है, उससे भी यह सिद्ध होता कि वे संभवतः सौराष्ट्र में बैठकर भाष्य लिख रहे थे।

### निशीथ विशेष-चूर्णि और उसके कर्ता :

प्रस्तुत ग्रन्थ में निशीथ भाष्य की जो प्राकृत गद्यमयी व्याख्या मुद्रित है, उसका नाम विशेष चूर्णि है। यह चूर्णिकार की निम्न प्रतिज्ञा से फलित होता है :—

“पुन्नायरियकयं चिय ग्रहपि तं चेव उ विसेसा ॥३॥”

—नि० चू०, पृ० १.

और अंत में तो और भी स्पष्ट रूप से इस बात को कहा है—

“तेण कपसा चुण्णी विसेसनामा निसीहस्स ।”

—नि० चू० भा० ४ पृ० ११.

प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम और अष्टम, दशम, द्वादश, १३, १४, १५, १७, १८, १९, २० उद्देशक के अंत में ‘विसेस-निसीह चुण्णीए’ तथा ६. ११, १६, उद्देशक के अन्त में ‘निसीह विसेस चुण्णीए’ लिखा है। इससे भी प्रस्तुत चूर्णि का नाम विशेष-चूर्णि सिद्ध होता है।

जिस प्रकार आचार्य जिनभद्र का भाष्य आवश्यक की विशेष बातों का विवरण करता है, फलतः वह विशेषावश्यक भाष्य है, उसी प्रकार निशीथ भाष्य की विशेष बातों का विवरण करने वाली प्रस्तुत चूर्णि भी विशेष चूर्णि है। अर्थात् यह भी फलित होता है कि प्रस्तुत चूर्णि से पूर्व भी अन्य विवरण लिखे जा चुके थे; किन्तु जिन बातों का समावेश उन विवरणों में नहीं किया गया था उनका समावेश प्रस्तुत चूर्णि में किया गया है—यही इसकी विशेषता है। अन्याचार्य-कृत विवरण की सूचना तो स्वयं चूर्णिकार ने भी दी है कि—‘पुन्नायरियकयं चिय’ ‘यद्यपि पूर्वाचार्यों ने विवरण किया है, तथापि मैं करता हूँ’।

चूर्णि को मैंने प्राकृतमयी गद्य व्याख्या कहा है, इसका अर्थ इतना ही है कि अधिकांश इसमें प्राकृत ही है। कहीं-कहीं संस्कृत के शब्दरूप ज्यों के त्यों उपलब्ध होते हैं, फिर भी लेखक का भुकाव प्राकृत लिखने की ओर ही रहा है। कहीं-कहीं अभ्यासवश, अथवा जो विषय अन्यत्र से लिया गया उसकी मूल भाषा संस्कृत होने से ज्यों के त्यों संस्कृत शब्द रह गये हैं,

किन्तु लेखक प्राकृत लिखने के लिये प्रवृत्त है—यह स्पष्ट है। इसकी भाषा का अध्ययन एक स्वतन्त्र विषय हो सकता है, जो भाषाशास्त्रियों के लिये एक नई वस्तु होगा। प्रसंगाभावात् यहाँ इस विषय में कुछ नहीं लिखना है।

निशीथ चूर्णि एक विशालकाय ग्रन्थ है। प्रायः सभी गाथाओं का विवरण विस्तार से देने का प्रयत्न है। स्वयं भाष्य ही विषयवैविध्य की दृष्टि से एक बहुत बड़ा भंडार है। और भाष्य का विवरण होने के नाते चूर्णि तो और भी अधिक महत्वपूर्ण विषयों से खचित है—यह असंदिग्ध है। चूर्णिगत महत्त्व के विषयों का परिचय यथास्थान आगे कराया जाएगा। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि चूर्णिकार ने अपने समय के युग का प्रतिविम्ब शब्द-बद्ध कर दिया है। उस काल में मानव-बुद्धि-जिन विषयों का विचार करती थी और उस काल का मानव जिस परिस्थिति से गुजर रहा था, उसका तादृश चित्र प्रस्तुत ग्रन्थ में उपस्थित हुआ है, यह करना अतिशयोक्ति नहीं।

निशीथ चूर्णि के कर्ता के विषय में निम्न बातें चूर्णि से प्राप्त होती हैं :—

(१) निशीथ विशेष चूर्णि के कर्ता ने पीठिका के प्रारंभ में 'पञ्जुण खमासमण' को नमस्कार किया है और उन्हें 'अत्थदायि' अर्थात् निशीथ शास्त्र के अर्थ का बताने वाला कहा है, किन्तु अपना नाम नहीं दिया। पट्टावली में कहीं भी 'पञ्जुण खमासमण' का पता नहीं लगता। हाँ इतना निश्चित है कि ये प्रद्युम्नक्षमाश्रमण, सन्मति टीकाकार अभय देव के गुरु प्रद्युम्न से तो भिन्न ही हैं। क्योंकि दोनों के समय में पर्याप्त व्यवधान है। फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि चूर्णिकार के उपाध्याय प्रद्युम्न क्षमा श्रमण थे।

(२) १३ वें उद्देश के अंत में निम्न गाथा चूर्णिकारने दी है :—

संकरजडमउडविभूषणस्स तयणामसरिसणामस्स ।

तस्स सुतेणस्स कता विसेसचुण्णी णिणीहस्स ॥

प्रस्तुत गाथा में अपने पिता का नाम सूचित किया है। 'शंकर-जटारूप मुकुट के विभूषण रूप' और 'उसके सदृश नाम को धारण करने वाले' इन दो पदों में चूर्णिकार के पिता का नाम छिपा हुआ है। प्रस्तुत में शंकर के मुकुट का भूषण यदि 'सर्प' लिया जाए तो 'नाग'; यदि 'चन्द्र' लिया जाय तो 'शशी' या 'चन्द्र' फलित होता है। स्पष्ट निर्णय नहीं होता।

(३) १५ वें उद्देश के अंत में निम्न गाथा है :—

रविकरमभिभाणऽक्खरसत्तम वगांत-अक्खरजुणं ।

णामं जस्सिस्थिऽ सुतेण तस्से कया चुण्णी ॥

इसमें चूर्णिकार ने अपनी माता का नाम सूचित किया है।

(४) १६ वें उद्देश के अंत में निम्न गाथा चूर्णिकारने दी है :

देहडो सीह थोरा य ततो जेट्टा सहोयरा ।

कण्णिट्ठा देडलो णण्णो सत्तमो य तिहज्जगो ।

एतेसि मज्झिमो जो उ मंदे बी तेण वित्तिता ॥

इस गाथा में चूर्णिकारने अपने भ्राताओं का नाम दिया है। वे सब मिलकर सात भाई थे। देहड़, सीह और थोर-ये तीन उनसे बड़े थे और देउल, गण्ण, और तिइज्जग-ये तीन उनसे छोटे थे। अर्थात् वे अपने माता-पिता की सात संतानों में चौथे थे—तीचके थे।

इसके अलावा वे अपने को 'मंद' भी कहते हैं। यह तो केवल नम्रता-प्रदर्शन है। उनके ज्ञान की गंभीरता और उसके विस्तार का पता, चूर्ण के पाठकों से कथमपि अज्ञात नहीं रह सकता।

(५) चूर्ण के अंत में वीसवें उद्देश की समाप्ति पर अपने परिचय के सम्बन्ध में चूर्णिकार ने दो गाथाएँ दी हैं।

प्रथम गाथा है :

ति चड पण अट्टमवगो ति पण्ण ति तिग अफखरा व तेसि ।  
पढमततिपहि तिदुसरजुएहि णामं कयं जस्स ।

सुवोधा व्याख्या के अनुसार आठ वर्ग ये हैं—१ अ, २ क, ३ च, ४ ट, ५ त, ६ प, ७ य, ८ श। इन आठ वर्गों में से तृतीय 'च' वर्ग, चतुर्थ 'ट' वर्ग, पंचम 'त' वर्ग और अष्टम 'श' वर्ग के अक्षर इनके नाम में हैं। 'च' वर्ग का तृतीय—'ज'; 'ट' वर्ग का पंचम—'ण'; 'त' वर्ग का तृतीय—'द'; और 'श' वर्ग का तृतीय—'स'। इन व्यंजनाक्षरों में जो स्वर मिलाने हैं उनका उल्लेख गाथा के उत्तरार्ध में किया गया है। वे स्वर इस प्रकार हैं—प्रथम और तृतीयाक्षर में तृतीय = 'इ' और द्वितीय = 'आ'। अस्तु क्रमशः मिलाकर 'जिणदास' यह नाम फलित होता है।

द्वितीय गाथा है :

गुरुद्विणं च गणितं महत्तरत्तं च तस्स गुट्ठेहि ।  
तेण कयेसा जुण्णी विसेसनामा निसीहस्स ।

अर्थात् गुरु ने जिसे 'गणि' पद दिया है, तथा उनसे संतुष्ट लोगों ने जिसे 'महत्तर' पदवी दी है; उसने यह निशीथ की विशेष चूर्ण निर्माण की है।

सारांश यह है कि जिनदास गणि महत्तर ने निशीथ विशेष चूर्ण की रचना की है।

नन्दी सूत्र की चूर्ण भी जिनदास कृत है। और उसके अंत में उसका निर्माण-काल शक संवत् ५६८ उल्लिखित है<sup>१</sup>। अर्थात् वि० सं० ७३३ में वह पूर्ण हुई। अतएव जिनदास का काल विक्रम की आठवीं शताब्दी का पूर्वार्ध निश्चित है।

चूर्णिकार जिनदास किस देश के थे, यह उन्होंने स्वयं स्पष्ट रूप से तो कहा नहीं है; किन्तु क्षेत्र-संस्तव के प्रसंग में उन्होंने कुरुक्षेत्र का उल्लेख किया है। अतः उससे अनुमान किया जा सकता है कि वे संभवतः कुरुक्षेत्र के होंगे<sup>२</sup>।

१. विशेष चर्चा के लिये, देखो—अकलंक ग्रन्थत्रय का आचार्य श्री जिनविजयजी का प्रास्ताविक पृ० ४।

२. नि० गा० १०२६ चूर्ण। गा० १०३७ चूर्ण।

## विषय-प्रवेश :

प्रस्तुत विषय-प्रवेश निशीथ सूत्र, भाष्य और चूर्ण को एक अखण्ड ग्रन्थ मान कर ही लिखा जा रहा है, जिससे कि एक ही विषय-वस्तु की बार-बार पुनरावृत्ति न करनी पड़े। आवश्यकता होने पर भाष्य-चूर्णिका पृथक् निर्देश भी किया जायगा ; अन्यथा केवल 'निशीथ' शब्द का ही प्रयोग होता रहेगा। निशीथ २० उद्देश में विभक्त है और उसमें चर्चित विषयों का विस्तृत विषयानुक्रम चारों भागों के प्रारम्भ में दिया ही गया है। अतएव उसकी पुनरावृत्ति भी यहाँ नहीं करनी है। केवल कुछ विचारणीय बातों का निर्देश करना ही प्रस्तुत में अभीष्ट है। तथा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और भाषाकीय सामग्री की ओर, जो इस ग्रन्थ में सर्वत्र बिखरी पड़ी है, विद्वानों का ध्यान आकर्षित करने की दिशा में ही प्रस्तुत प्रयास है। ग्रन्थ की महत्ता एवं गम्भीरता को देखते हुए, तथा समय की अल्पता एवं अपनी बहुविध कार्यव्यग्रता को ध्यान में रखते हुए यद्यपि सफलता संदिग्ध है, तथापि इस दिशामें यत्किंचित् दिग्दर्शन मात्र भी हो सका, तो मेरा यह तुच्छ प्रयास सफल समझा जाएगा।

आचारांग में निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थी संघ के कर्तव्य और अकर्तव्य के मौलिक उपदेशों का संकलन हो गया था। किन्तु जैसे-जैसे संघ का विस्तार होता गया और देश, काल, अवस्था आदि परिवर्तित होते गये, उत्सर्ग मार्ग पर चलना कठिन होता गया। अस्तु ऐसी स्थिति में आचारांग की ही निशीथ नामक चूला में, उन आचार नियमों के विषय में जो वितथकारी के लिये प्रायश्चित्त बताये गये थे<sup>१</sup>, क्या उन प्रायश्चित्तों को केवल सूत्रों का शब्दार्थ करके ही दिया-लिया जाय, या उसमें कुछ नवीन विचारणा को भी अवकाश है? इस प्रश्न का उत्तर हमें मूल निशीथ सूत्र से तो नहीं मिलता; किन्तु दीर्घकाल के विस्तार में यथाप्रसंग जो अनेकानेक विचारणा और निश्चय होते रहे हैं उन सब का दर्शन हमें नियुक्ति, भाष्य और चूर्ण में होता है। स्पष्ट है कि जिन अपवादों का मूल में कोई निर्देश नहीं, उन अपवादों को भी नियुक्ति आदि में स्थान मिला है—यह वस्तु पद-पद पर स्पष्ट होती है। प्रतिसेवना के दो भेद दर्प और कल्प के मूल में भी मानवीय दुर्बलता ने उतना काम नहीं किया, जितना कि साधकों के दीर्घ कालीन अनुभव ने। साधक अपने साध्य की सिद्धि के हेतु आज्ञा का शब्दशः पालन करने को उद्यत था, किन्तु तथानुरूप शब्दशः पालन करने पर जब केवल अपना ही नहीं, जैन शासन का भी अहित होने की संभावनाएँ देखने में आईं तो शब्दों से ऊपर उठकर तात्पर्यार्थ पर जाना पड़ा और फलस्वरूप नाना प्रकार के अपवादों की सृष्टि हुई। कई बार उन अपवादों के प्रकार, उनका समर्थन और अवलम्बन की प्रक्रिया का वर्णन पढ़कर ऐसा लगने लगता है कि आदर्श मार्ग से किस सीमा तक संघ का पतन हो सकता है? किन्तु जब हम उन प्रक्रियाओं का अवलम्बन करने वालों की मनः स्थिति की ओर देखते हैं, तो इतना ही कहना पड़ता है कि वे अपने ही द्वारा स्वीकृत नियमोपनियमों के बंधनों से अभिभूत थे। एक ओर उन बन्धनों को किसी प्रकार भी शिथिल न करने की निष्ठा थी, तो दूसरी ओर संघ की

१. गा० ७१

२. गा० ७४

प्रतिष्ठा तथा रक्षा का प्रश्न भी कुछ कम महत्त्व का नहीं था—इन दो सीमा-रेखाओं के बीच तत्कालीन मनः स्थिति दोलायमान थी। टीकोपटीकाओं का तटस्थ अध्ययन इस बात की स्पष्ट साक्षी देता है कि बन्धनों को शिथिल किया गया और संघ की प्रतिष्ठा की चेष्टा की गई। यह चेष्टा सर्वथा सफल हुई, यह नहीं कहा जा सकता। कुछ साधुओं ने अपने शिथिलाचार का पोषण संघ प्रतिष्ठा के नाम से भा करना शुरू किया, जिसके फल स्वरूप अन्ततः चैत्यवास, यति-समाज आदि के रूप में समय-समय-पर शिथिलाचार को प्रश्रय मिलता चला गया। संघहित की दृष्टि से स्वीकृत किया गया शिथिलाचार, यदि साधक में व्यक्तिगत विवेक की मात्रा तीव्र हो और आचरण के नियमों के प्रति बलवती निष्ठा हो, तब तो जीवन की उन्नति में बाधक नहीं बनता। किन्तु इसके विपरीत ज्योंही कुछ हुआ कि चारित्र्य का केवल बाह्य रूप ही रह जाता है, आत्मा लुप्त हो जाती है। धीरे-धीरे आचरण में उत्सर्ग का स्थान अपवाद ही ले लेता है और आचरण की मूल भावना शिथिल हो जाती है। जैन संघ के आचार-सम्बन्धी कितने ही औत्सर्गिक नियमों का स्थान आधुनिक काल में अपवादों ने ले लिया है और यदि कहीं अपवादों का आश्रय नहीं भी लिया गया, तो भी यह तो देखा ही जाता है कि उत्सर्ग की आत्मा प्रायः लुप्त हो गई है। उदाहरण के तौर पर हम कह सकते हैं कि श्वेताम्बर संप्रदाय में वस्त्र स्त्रीकार का अपवाद मार्ग ही उत्सर्ग हो गया है; तो दूसरी ओर दिगम्बरों में अचेलता का उत्सर्ग तात्पर्य-शून्य केवल परंपरा का पालन मात्र रह गया है। मयूरपिच्छ, जो गच्छवासियों के लिये आपवादिक है ( नि० गा० ५७२१ ); वह आज दिगम्बरों में औत्सर्गिक है। वस्तुतः सूत्र और टीकाओं में प्रति-पादित यह उत्सर्ग और अपवाद मार्ग जिस ध्येय को सिद्ध करने के लिये था, वह ध्येय तो साधक के विवेक से ही सिद्ध हो सकता है। विवेकशून्य आचरण या तो शिथिलाचार होता है, या केवल अर्थशून्य आडंबर। प्राचीन आचार्य उक्त दोनों से वचने के, देश कालानुरूप मार्ग दिखा रहे हैं। किन्तु फिर भी यह स्पष्टोक्ति स्वीकार करनी ही पड़ती है कि प्राचीन ग्रन्थों में इस बात के भी स्पष्ट प्रमाण मौजूद हैं, जो यह सिद्ध कर रहे हैं कि वे प्राचीन आचार्य भी सही राह दिखाने में सर्वथा समर्थ नहीं हो सके। संघ-हित को यहाँ तक बढ़ावा दिया गया कि व्यक्तिगत आचरण का कोई महत्त्व न हो, ऐसी धारणा लोगों में बद्धमूल हो गई। यह ठीक है कि संघ का महत्त्व बहुत बड़ा है, किन्तु उसकी भी एक मर्यादा होनी ही चाहिए। अन्यथा एक बार आचरण का बाँध शिथिल हुआ नहीं कि वह मनुष्य को दुराचरण के गड्ढे में फिर कहाँ तक और कितनी दूर तक ढकेल देगा, यह नहीं कहा जा सकता। निशीथ के चूर्णि-पर्यंत साहित्य का अध्ययन करने पर बार-बार यह विचार उठता है कि संघ-प्रतिष्ठा की झूठी धुन में कभी-कभी सर्वथा अनुचित मार्ग का अवलम्बन लेने की आज्ञा भी दी गई है, जिसका समर्थन आजका प्रबुद्ध मानव किसी भी प्रकार से नहीं कर सकता। यह कह कर भी नहीं कि उस काल में वही उचित था। कुछ बातें तो ऐसी हैं, जो सदा सर्वत्र अनुचित ही कही जायेंगी। ऐसी बातों का आचरण भले ही किसी पुस्तक-विशेष में विहित भी कर दिया हो, तथापि वे सदैव त्याज्य ही हैं। वस्तुतः इस प्रकार के विधान कर्ताओं का विवेक कितना जागृत था, यह भी एक प्रश्न है। अतएव इन टीकाकारों ने जो कुछ लिखा है वह सब उचित ही है, यह कहने का साहस नहीं होता। मेरी उक्त विचारणा के समर्थन में यहाँ कुछ उदाहरण दिये जायेंगे; जिन पर विद्वद्गण को ध्यान देना चाहिये और साधकों को भी।

तथाकथित उदाहरणों की चर्चा करने से पहले, उत्सर्ग और अपवाद के विषय में, प्रस्तुत ग्रन्थ में जो चर्चाएँ की गई हैं, उनके सारांश को लेकर यहाँ तद्विषयक थोड़ा विचार प्रस्तुत है। सिद्धान्ततः उत्सर्ग-अपवाद का रहस्य समझने के बाद ही औचित्य-अनौचित्य का विचार सहज बोधगम्य हो सकेगा।

## मूल सूत्रों की विचारणा आवश्यक :

सर्व प्रथम यह विचारणीय है कि क्या सब कुछ सूत्र के मूल शब्दों में कहा गया है, या कहा जा सकता है? यदि सब कुछ कह देने की संभावना होती, तब तो प्रारंभ में ही नियमोपनियमों की एक लंबी सूची बना दी जाती और फिर उसमें व्याख्या करने की आवश्यकता ही नहीं रहती। द्रव्य-क्षेत्र-काल भाव की आवश्यकता ने सर्व प्रथम व्याख्याताओं को इसी प्रश्न पर विचार करने को बाध्य किया कि क्या विधि सूत्र अर्थात् आचारांग और तदनन्तर दशवैकालिक आदि में शब्दतः सम्पूर्ण विधि-निषेध का उपदेश हो गया है—ऐसा माना जाए या नहीं?

जिस प्रकार द्रव्यानुयोग के विषय में यह समाधान देना आवश्यक प्रतीत हुआ कि तीर्थंकर केवल त्रिपदी—‘उत्पाद-व्यय-धौव्य’-का उपदेश करते हैं, तदनन्तर उसका विवरण करना या उस त्रिपदी के आधार पर द्वादशांग रूप वाङ्मय की रचना करना गणधर का कार्य है, उसी प्रकार चरणानुयोग की विचारणा में भी आचार्यों को विवश होकर अंत में यह कह देना पड़ा कि—‘तीर्थंकरों ने किसी विषय की अनुज्ञा या प्रतिषेध नहीं किया है; केवल इतनी ही आज्ञा दी है कि कार्य उपस्थित होने पर केवल सत्य का आश्रय लिया जाय अर्थात् अपनी आत्मा या दूसरों की आत्मा को धोखा न दिया जाय<sup>१</sup>।’ “संयमी पुरुष का ध्येय मोक्ष है। अतएव वह अपने प्रत्येक कार्य के विषय में सोचे कि मैं उससे—मोक्ष से दूर जा रहा हूँ या निकट? जब सिद्धान्त में एकान्त विधि या एकान्त निषेध नहीं मिलता, तब अपने लाभालाभ की चिन्ता करने वाले बनिये के समान साधक अपने आय-व्यय की तुलना करे,<sup>२</sup>” यही उचित है। “उत्सर्ग और अपवाद अति विस्तृत हैं। अतएव संयमवृद्धि और निर्जरा को देखकर ही कर्तव्य का निश्चय किया जाय”—यह उचित है<sup>३</sup>। स्पष्ट है कि आचार्यों ने अपनी उक्त विचारणा में यह तो निश्चित किया ही कि विधि सूत्रों के शब्दों में जो कुछ ग्रथित है, उतना ही और उसे ही अंतिम सत्य मानकर चलने से काम नहीं चलेगा। अतएव आचार-सूत्रों की व्याख्या द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की दृष्टि से करना नितान्त आवश्यक है। केवल ‘शब्द’ ही नहीं, किन्तु ‘अर्थ’ भी प्रमाण है; अर्थात् आचार्यों द्वारा की गई व्याख्या भी उतनी ही प्रमाण है, जितना कि मूल शब्द। अर्थात् आचार-वस्तु में केवल शब्दों को लेकर चलने से अनर्थ की संभावना है, अतः तात्पर्यार्थ तक जाना पड़ता है। ऐसा होने पर ही संयम की साधना उचित मार्ग से चल सकती है और साध्य-मोक्ष की प्राप्ति भी हो सकती है। अतएव यह भी कहना पड़ा कि ‘यदि सूत्र में जैसा

१. नि० गा० ५२४८; वृ० गा० ३३३०।

२. नि० २०६७, उपदेशमाला गा० ३६२।

३. व्य० भाग ३, पृ० ७६, नि० चू० ६०२३।



लिखा है वैसा ही आचरण किया जाए—अर्थात् केवल सूत्रों के मूल शब्दों को आधार मान कर ही आचरण किया जाए और उसमें विचारणा के लिए कुछ अवकाश ही न हो, तो दृष्टि प्रधान पुरुषों द्वारा कालिक सूत्र अर्थात् द्वादशांग की व्याख्या क्यों की गई ?<sup>१</sup> यही सूचित करता है कि केवल शब्दों से काम नहीं चल सकता। उचित मार्ग यही है कि उसकी परिस्थित्यनुसार व्याख्या की जाय। 'सूत्र में अनेक अर्थों की सूचना रहती है। आचार्य उन विविध अर्थों का निर्देश व्याख्या में कर देते हैं<sup>२</sup>।' सिद्ध है कि विचारणा के बिना यह संभव नहीं। अतएव सूत्र के केवल शब्दों को पकड़ कर चलने से काम नहीं चल सकता। उसकी व्याख्या तक जाना होगा—तभी उचित आचरण कहा जायगा, अन्यथा नहीं। यह आचार्यों का निश्चित अभिप्राय है। 'जिस प्रकार एक ही मिट्टी के पिंड में से कुम्भकार अनेक प्रकार की आकृति वाले वर्तनों की सृष्टि करता है, उसी प्रकार आचार्य भी एक ही सूत्र-शब्द में से नाना अर्थों की उत्प्रेक्षा करता है। जिस प्रकार गृह में जब तक अंधकार है तब तक वहाँ स्थित भी अनेक पदार्थ दृष्टि-गोचर नहीं होते हैं, उसी प्रकार उत्प्रेक्षा के अभाव में शब्द के अनेकानेक विशिष्ट अर्थ अप्रकाशित हो रह जाते हैं<sup>३</sup>।' अतएव सूत्रार्थ की विचारणा के लिए अवकाश है ही। यह आचार्यों की विचारणा का ही फल है कि विविध सूत्रों की विचारणा करके उन्होंने निश्चय किया कि किस सूत्र को उत्सर्ग कहा जाय और किस को अपवाद सूत्र? और किस को तदुभय कहा जाय<sup>४</sup>। तदुभय सूत्र के चार प्रकार हैं—उत्सर्गपवादिक, अपवादोत्सर्गिक, उत्सर्गोत्सर्गिक और अपवादापवादिक। इस प्रकार कुल छः प्रकार के सूत्र होते हैं<sup>५</sup>। इतना ही नहीं, किन्तु ऐसा भी होता है कि 'अनेक में से केवल एक का ही शब्दतः सूत्र में ग्रहण करके शेष की सूचना की जाती है, कोई सूत्र केवल निग्रन्थ के लिये होता है, कोई केवल निग्रन्थी के लिये होता है तो कोई सूत्र दोनों के लिये होता है<sup>६</sup>।' सूत्रों के ये सब प्रकार भी विचारणा की अपेक्षा रखते हैं। इनके उदाहरणों के लिये, वाचक, प्रस्तुत ग्रन्थ की गा० ५२३४ से आगे देख लें—यही उचित है।

जैन आचार्यों ने 'शब्द' के उपरान्त 'अर्थ' को भी महत्त्व दिया है। इसके मूल की खोज की जाए तो पता लगता है कि जैन मान्यता के अनुसार तीर्थंकर तो केवल 'अर्थ' का उपदेश करते हैं। 'शब्द' गणवर के होते हैं<sup>७</sup>। अर्थात् मूलभूत 'अर्थ' है, न कि 'शब्द'। वैदिकों में तो मूलभूत 'शब्द' है, उसके बाद उसके अर्थ की मीमांसा होती है<sup>८</sup>। किन्तु जैन मत के अनुसार मूलभूत 'अर्थ' है, शब्द तो उसके बाद आता है। यही कारण है कि सूत्रों के शब्दों का उतना महत्त्व नहीं है, जितना उनके अर्थों का है, और यही कारण है कि आचार्यों ने शब्दों को

१. नि० गा० ५२३३, वृ० गा० ३३१५।

२. नि० गा० ५२३३ की चूर्णि।

३. नि० गा० ५२३२ की चूर्णि।

४. नि० गा० ५२३४, वृ० गा० ३३१६।

५. वही चूर्णि।

६. नि० गा० ५१३५, वृ० गा० ३३१७।

७. वृ० भा० गा० १६३।

८. वृ० भा० गा० १६१।

उतना महत्त्व नहीं दिया, जितना कि अर्थों को दिया और फलस्वरूप शब्दों को छोड़ कर वे तात्पर्यार्थ की ओर आगे बढ़ने में समर्थ हुए। तात्पर्यार्थ को पकड़ने में सदैव समर्थ हुए या नहीं—यह दूसरा प्रश्न है, किन्तु शब्द को छोड़ कर तात्पर्य की ओर जाने की छूट उन्हें थी, यही यहाँ पर महत्त्व की बात है। इसी दृष्टि से शब्दों के अर्थ के लिये 'भाषा', 'विभाषा', और 'वार्तिक'—ये भेद किये गये। 'शब्द' का केवल एक प्रसिद्ध अर्थ करना 'भाषा' है, एक से अधिक अर्थ कर देना 'विभाषा' है, और यावत् अर्थ कर देना 'वार्तिक' है। जो श्रुतकेवली पूर्वधर है, वही 'वार्तिक' कर सकता है<sup>१</sup>।

एक प्रश्न उपस्थित किया गया है कि जिन अर्थों का उपदेश ऋषभादि तीर्थंकरों ने किया, क्या उन्हीं अर्थों का उपदेश, वर्धमान—जो आयु में तथा शरीर की ऊँचाई में उनसे हीन थे—कर सकते हैं? उत्तर दिया गया है कि शरीर छोटा हो या बड़ा, किन्तु शरीर की रचना तो एक जैसी ही थी, धृति समान थी, केवलज्ञान एक जैसा ही था, प्रतिपाद्य विषय भी वही था, तब वर्धमान उनही अर्थों का प्रतिपादन क्यों नहीं कर सकते? हाँ, कुछ तात्कालिक बातें ऐसी हो सकती हैं, जो वर्धमान के उपदेश की मौलिक विशेषता कही जा सकती हैं। इसी लिये श्रुत के दो भेद होते हैं—'नियत', जो सभी तीर्थंकरों का समान है, और 'अनियत', जो समान नहीं होता<sup>२</sup>।

उपयुक्त विचारणा से स्पष्ट है कि आचार्यों के समक्ष यह वैदिक विचारणा थी कि शब्द नित्य हैं, उनके अर्थ नित्य हैं और शब्द तथा अर्थ के संबंध भी नित्य हैं। इसी वैदिक विचार को नियत श्रुत के रूप में अपनाया गया है। साथ ही अनेकान्तवाद के आश्रय से अनियत श्रुत की भी कल्पना की गई है। आचार्य अपनी ओर से व्याख्या करते हैं, किन्तु उस व्याख्या का तीर्थंकरों की किसी भी आज्ञा से विरोध नहीं होना चाहिए। अतएव सूत्रों में शब्दतः कोई बात नहीं भी कही गई हो, किन्तु अर्थतः वह तीर्थंकरों को अभिप्रेत थी, इतना ही कहने का अधिकार आचार्य को है। तीर्थंकर की आज्ञा के विरोध में अपनी आज्ञा देने का अधिकार आचार्य को नहीं है। क्योंकि तीर्थंकर और आचार्य की आज्ञा में बलावली की दृष्टि से तीर्थंकर की आज्ञा ही बलवती मानी जाती है, आचार्य की नहीं। अतएव तीर्थंकर की आज्ञा की अवहेलना करने वाला व्यक्ति अविनय एवं गर्व के दोष से दूषित माना गया है<sup>३</sup>। जिस प्रकार श्रुति और स्मृति में विरोध होने पर श्रुति ही बलवान मानी जाती है, उसी प्रकार तीर्थंकर की आज्ञा आचार्य की आज्ञा से बलवती है।

### उत्सर्ग और अपवाद\* :

एक बार जब यह स्वीकार कर लिया गया कि विचारणा को अवकाश है, तब परिस्थिति को देखकर मूल सूत्रों के अपवादों की सृष्टि करना, आचार्यों के लिये सहज हो गया।

१. वृ० भा० गा० १९६-६।

२. वृ० भा० गा० २०२-४।

३. नि० गा० ५४७२।

\* इसका विशेष विवेचन उपाध्याय श्री अमरमुनिजी लिखित निशीथ के तृतीय भाग की प्रस्तावना में द्रष्टव्य है। तथा मुनिराज श्री पुण्यविजयजी की बृहत्कल्प के छठे भाग की प्रस्तावना भी द्रष्टव्य है।



यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक है कि यह अपवाद मार्ग केवल स्थविरकल्प में ही उचित समझा गया है<sup>१</sup>। जिनकल्प में तो साधक केवल औत्सर्गिक मार्ग पर ही चलते हैं<sup>२</sup>। यह भी एक कारण है कि प्रस्तुत निशीथ सूत्र को 'कल्प' न कहकर 'प्रकल्प' कहा गया है ; क्योंकि उसमें उत्सर्ग-कल्प का नहीं ; किन्तु स्थविर-कल्पका वर्णन है। स्थविर-कल्प का ही दूसरा नाम 'प्रकल्प' है। और 'कल्प' जिनकल्प को<sup>३</sup> कहते हैं। प्रतिषेध के लिये उत्सर्ग शब्द का प्रयोग है और 'अनुज्ञा' के लिए अपवाद का<sup>४</sup>। इससे फलित है कि उत्सर्ग प्रतिषेध है, और अपवाद विधि है।

संयमी पुरुष के लिये जितने भी निषिद्ध कार्य न करने योग्य कहे गये हैं, वे, सभी 'प्रतिषेध' के अन्तर्गत आते हैं। और जब परिस्थिति-विशेष में उन्हीं निषिद्ध कार्यों को करने की 'अनुज्ञा' दी जाती है, तब वे ही निषिद्ध कर्म 'विधि' बन जाते हैं<sup>५</sup>। परिस्थिति-विशेष में अकर्तव्य भी कर्तव्य बन जाता है ; किन्तु प्रतिषेध को विधि में परिणत कर देने वाली परिस्थिति का औचित्य और परीक्षण करना, साधारण साधक के लिये संभव नहीं है। अतएव ये 'अपवाद' 'अनुज्ञा' या 'विधि' सब किसी को नहीं बताये जाते। यही कारण है कि 'अपवाद' का दूसरा नाम 'रहस्य' (नि० चू० गा० ४६५) पड़ा है। इससे यह भी फलित हो जाता है कि जिस प्रकार 'प्रतिषेध' का पालन करने से आचरण विशुद्ध माना जाता है, उसी प्रकार अनुज्ञा के अनुसार अर्थात् अपवाद मार्ग पर चलने पर भी आचरण को विशुद्ध ही माना जाना चाहिए<sup>६</sup>। यदि ऐसा न माना जाता तब तो एक मात्र उत्सर्ग मार्ग पर ही चलना अनिवार्य हो जाता ; फल-स्वरूप अपवाद मार्ग का अवलंबन करने के लिए कोई भी किसी भी परिस्थिति में तैयार ही न होता। परिणाम यह होता कि साधना मार्ग में केवल जिनकल्प को ही मानकर चलना पड़ता। किन्तु जब से साधकों के संघ एवं गच्छ बनने लगे, तब से केवल औत्सर्गिक मार्ग अर्थात् जिनकल्प संभव नहीं रहा। अतएव स्थविरकल्प में यह अनिवार्य हो गया कि जितना 'प्रतिषेध' का पालन आवश्यक है, उतना ही आवश्यक 'अनुज्ञा' का आचरण भी है। वल्कि परिस्थिति-विशेष में 'अनुज्ञा' के अनुसार आचरण नहीं करने पर प्रायश्चित्त का भी विधान करना पड़ा है। जिस प्रकार 'प्रतिषेध' का भंग करने पर प्रायश्चित्त है उसी प्रकार अपवाद का आचरण नहीं करने पर भी प्रायश्चित्त है<sup>७</sup>। अर्थात् 'प्रतिषेध' और 'अनुज्ञा' उत्सर्ग और अपवाद—दोनों ही समवल माने गये। दोनों में ही विशुद्धि है। किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि उत्सर्ग राजमार्ग है, जिसका अवलंबन साधक के लिये सहज है ; किन्तु अपवाद, यद्यपि आचरण में सरल है, तथापि सहज नहीं है।

१. स्थविरकल्प में स्त्री-पुरुष दोनों होते हैं। जिनकल्प में केवल पुरुष। नि० गा० ८७।

२. नि० गा० ६६६ की उत्पान चूर्णि।

३. नि० चू० पृ० ३८ गा० ७७ के उत्तरार्ध की चूर्णि। और गा० ८१, ८२ की चूर्णि।

४. नि० चू० गा० ३६४।

५. नि० गा० ५२४५।

६. नि० चू० पृ० ३; गा० २८७, १०२२, १०६८, ४१०३।

७. नि० गा० २३१।

अपवाद का अवलंबन करने से पहले कई शर्तों को पूरा करना पड़ता है ; अन्यथा अपवादमार्ग पतन का मार्ग बन जाता है । यही कारण है कि स्पष्ट रूप से प्रतिसेवना के दो भेद बताये गये हैं—अकारण अपवाद का सेवन 'दर्प' प्रति सेवना है और सकारण प्रति सेवना 'कल्प' है । संयमी पुरुष के लिये मोक्ष मार्ग पर चलना, यह मुख्य है । मोक्ष मार्ग में ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र्य की साधना होती है । आचार का पालन करना चारित्र्य है ; किन्तु उक्त चारित्र्य के कारण यदि दर्शन और ज्ञान की हानि होती हो, तो वह चारित्र्य, चारित्र्य नहीं रहता । अतएव ज्ञान-दर्शन की पुष्टि में बाधक होने वाला आचरण चारित्र्य की कोटी में नहीं आता । यही कारण है कि ज्ञान और दर्शन के कारण आचरण के नियमों में अर्थात् चारित्र्य में अपवाद करना पड़ता है । उक्त अपवादों का सेवन 'कल्पप्रतिसेवना' के अन्तर्गत इसलिये हो जाता है कि साधक अपने ध्येय से च्युत नहीं होता । अर्थात् अपवाद सेवन के कारणों में 'ज्ञान' और 'दर्शन' ये दो मुख्य हैं । यदि अपवाद सेवन की स्थिति में इन दोनों में से कोई भी कारण उपस्थित न हो, तो वह प्रतिसेवना अकारण होने से 'दर्प' के अन्तर्गत होती है । दर्प का परित्याग करके 'कल्प' का आश्रय लेना ही साधक को उचित है । अतएव दर्प को निषिद्ध माना गया है<sup>१</sup> । ज्ञान और दर्शन इन दो कारणों से प्रतिसेवना हो तो कल्प है—ऐसा मानने पर प्रश्न होता है कि तब दुर्भिक्ष आदि अन्य अनेक प्रकार के कारणों की जो चर्चा आती है<sup>२</sup> ; उसका समाधान क्या है ? मुख्य कारण तो ज्ञान-दर्शन ही हैं, किन्तु उनके अतिरिक्त जो अन्य कारणों की चर्चा आती है, उसका अर्थ यह है कि साक्षात् ज्ञान दर्शन की हानि होने पर जिस प्रकार अपवाद मार्ग का आश्रय लिया जाता है, उसी प्रकार यदि परंपरा से भी ज्ञान-दर्शन की हानि होती हो तब भी अपवाद का आश्रय लेना आवश्यक हो जाता है । दुर्भिक्ष में उत्सर्ग नियमों का पालन करते हुए आहारादि आवश्यक सामग्री जुटाना संभव नहीं रहता । और आहार के बिना शरीर का स्वस्थ रहना संभव नहीं । शरीर के अस्वस्थ होने पर अवश्य ही स्वाध्याय की हानि होगी, और इस प्रकार अन्ततः ज्ञान-दर्शन की हानि होगी ही । यह ठीक है कि दुर्भिक्ष से साक्षात् ज्ञान-हानि नहीं होती, किन्तु परंपरा से तो होती है । अतएव उसे भी अपवाद मार्ग के कारणों में स्वीकार किया गया है । इसी प्रकार अन्य कारणों का भी ज्ञान-दर्शन के साथ परंपरा सम्बन्ध है ।

अथवा प्रतिसेवना का विभाजन एक अन्य प्रकार से भी किया गया है—(१) दर्प प्रति-सेवना, (२) कल्पप्रति सेवना, (३) प्रमादप्रति सेवना और (४) अप्रमादप्रति सेवना<sup>३</sup> । किन्तु उक्त चारों को पुनः दो में ही समाविष्ट कर दिया गया है, क्योंकि प्रमाद दर्प है और अप्रमाद

१. नि० गा० ८८ । और उसकी चूर्णि । गा० १४४, ३६३, ४६३ ।

२. नि० गा० १७५, १८८, १६२, २२०, २२१, ४८४-५, २४४, २५३, ३२१, ३४२, ४१६, ३६१, ३६४, ४२५, ४५३, ४५८, ४८८ इत्यादि ।

३. नि० गा० ६० ।

कल्प । अर्थात् जो आचरण प्रमाद-पूर्वक किया जाता है, वह दर्प प्रतिसेवना है और जो अप्रमाद-पूर्वक किया जाता है, वह कल्प प्रति सेवना है<sup>१</sup> ।

जैन आचार<sup>२</sup>के मूल में अहिंसा है । एक प्रकार से अहिंसा का ही विस्तार सत्य आदि हैं । अतएव आचरण का सम्यक्त्व इसी में है कि वह अहिंसक हो । और वह आचरण दुश्चरित कहा जाएगा, जो हिंसक हो । हिंसा-अहिंसा की सूक्ष्म चर्चा का सार यही है कि प्रमाद ही हिंसा है और अप्रमाद ही अहिंसा<sup>३</sup> अतएव प्रस्तुत में प्रमाद प्रति सेवना को 'दर्प' कहा गया और अप्रमाद प्रति सेवना को 'कल्प' । संयमी साधक को अप्रमादी रह कर आचरण करना चाहिए, कभी भी प्रमादी जीवन नहीं बिताना चाहिए ; क्योंकि उसमें हिंसा है और साधक की प्रतिज्ञा अहिंसक जीवन व्यतीत करने की होती है ।

अप्रमाद प्रति सेवना के भी दो भेद किये गये हैं—अनाभोग और सहसाकार<sup>४</sup> । अप्रमादी होकर भी यदि कभी ईर्ष्या आदि समिति में विस्मृति आदि किसी कारण से अल्पकाल के लिये उपयोग न रहे, तो वह अनाभोग कहा जाता है<sup>५</sup> । इसमें, यद्यपि प्राणातिपात नहीं है, मात्र विस्मृति है ; तथापि यह प्रतिसेवना के अन्तर्गत तो है ही<sup>६</sup> । वृत्ति हो जाने के बाद यदि पता चल जाए कि हिंसा की संभावना है, किन्तु परिस्थितिबश इच्छा रहते हुए भी प्राणवध से वचना संभव न हो, तो उस प्रतिसेवना को सहसाकार कहते हैं<sup>७</sup> । कल्पना कीजिए कि संयमी उपयोगपूर्वक चल रहा है । मार्ग में कहीं सूक्ष्मता आदि के कारण पहले तो जीव दीखा नहीं, किन्तु ज्योंही चलने के लिये पैर उठाया कि सहसा जीव दिखाई दिया और वचाने का प्रयत्न भी किया, तथापि न संभल सकने के कारण जीव के ऊपर पैर पड़ ही गया और वह मर भी गया, तो यह प्रतिसेवना सहसाकार प्रतिसेवना है<sup>८</sup> ।

अनाभोग और सहसाकार प्रतिसेवना में प्राणिवध होते हुए भी बंध=कर्म बंध नहीं माना गया है । क्योंकि प्रतिसेवक समित है, अप्रमादी है, और यतनाशील है (नि० गा० १०३) । यतनाशील पुरुष की कल्पिका सेवना, न कर्मोदयजन्य है और न कर्मजनक ; प्रत्युत कर्मक्षयकारी है । इसके विपरीत दर्प प्रतिसेवना कर्मबन्धजनक है ( नि० गा० ६३०३-८ ) । यतना की यह भी व्याख्या है कि अशठ पुरुष का जो भी रागद्वेष रहित व्यापार है, वह सब यतना है । इसके विपरीत रागद्वेषानुगत व्यापार अयतना है । (नि० गा० ६६६६)

१. नि० गा० ६१ ।

२. नि० गा० ६२ ।

३. नि० गा० ६०, ६५ ।

४. नि० गा० ६६ ।

५. नि० चू० गा० ६६ ।

६. नि० गा० ६७ ।

७. नि० गा० ६८ से ।

## अहिंसा के उत्सर्ग-अपवाद :

संयमी जीवन का सर्वस्व अहिंसा है<sup>१</sup>—ऐसा मानकर सर्व प्रथम संयमी जीवन के जो भी नियमोपनियम बने, उन सब में यही ध्यान रखा गया कि साधक का जीवन ऐसा होना चाहिए कि जिसमें हिंसा का आश्रय न लेना पड़े। इसी दृष्टि से यह भी आवश्यक समझा गया कि संयमी के पास अपना कहने जैसा कुछ भी न हो। क्योंकि समग्र हिंसा के मूल में परिग्रह का पाप है। अतएव यदि सब प्रकार के परिग्रह से मुक्ति ली जाए, तो हिंसा का संभव कम से कम रह जाए। इस दृष्टि से सर्व प्रथम यह आवश्यक माना गया कि संयमी अपना परिवार और निवास-स्थान छोड़ दे। अपनी समस्त संपत्ति का परित्याग करे, यहाँ तक कि शरीराच्छादन के लिए आवश्यक वस्त्र तक का परित्याग कर दे<sup>२</sup>। अन्ततः साधना का अर्थ यही हुआ कि सब कुछ त्याग देने पर भी आत्मा का जो शरीर रूप परिग्रह शेष रह जाता है, उसका भी परित्याग करने की प्रक्रियामात्र है। अर्थात् दीक्षित होने के बाद लंबे काल तक की मारणांतिक आराधना का कार्यक्रम ही जीवन में शेष रह जाता है। इस आराधना में राग द्वेष के परित्याग-पूर्वक शरीर के ममत्व का परित्याग करने का ही अभ्यास करना पड़ता है। ज्ञान, ध्यान, जप, तप आदि जो भी साधना के अंग हैं, उन सबका यही फल होता है कि आत्मा से शरीर का संबंध सर्वथा छूट जाए!

साधना, आत्मा को शरीर से मुक्त करने की एक प्रक्रिया है। किन्तु, आत्मा और शरीर का सांसारिक अवस्था में ऐसा तादात्म्य हो गया होता है कि शरीर की हठात् सर्वथा उपेक्षा करने पर आत्म-लाभ के स्थान पर हानि होने की ही अधिक संभावना है। इस दृष्टि से दीर्घकाल तक जो साधना करनी है, उसका एक साधन शरीर भी है, (दशवै० ५, ६२) ऐसा माना गया। अतएव उतनी ही हद तक शरीर की रक्षा करना अनिवार्य है, जितनी हद तक वह साधना का साधन बना रहता है। जहाँ वह साधना में बाधक हो, वहाँ उसकी रक्षा त्याज्य है; किन्तु साधन का सर्वथा परित्याग कर देने पर साधना संभव नहीं—यह भी एक ध्रुव सत्य है। अतएव आत्म-शुद्धि के साथ-साथ शरीर-शुद्धि की प्रक्रिया भी अनिवार्य है। ऐसा नहीं हो सकता कि साधना-स्वीकृति के प्रथम क्षण में ही शरीर की सर्वथा उपेक्षा कर दी जाए। निष्कर्ष यही निकला कि सर्वस्व-त्यागी संयमी जीवन-यापन की दृष्टि से ही अहार ग्रहण करेगा, न कि शरीर की या रसास्वादन की पुष्टि के लिए। आहार जुटाने के लिए जो कार्य या व्यापार एक गृहस्थ को करने पड़ते हैं, यदि साधक भी, वे ही सब कुछ करने लगे, तब तो वह पुनः सांसारिक प्रपंच में ही उलझ जाएगा। इस दृष्टि से यह उचित माना गया कि संयमी अपने आहार का प्रबंध माधुकरी वृत्ति से करे (दशवै० १. २-५)। इस वृत्ति के कारण जैसा भी मिले, या कभी नहीं भी मिले, तब भी उसे समभाव पूर्वक ही जीवन यापन करना चाहिए, यही

१. 'अहिंसा निजणा दिट्ठा सब्बभूएसु संजमो' ६.१०।

सब्बे जीवा वि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं।

तम्हा पाणिवहं घोरं निगंथा वज्जयन्ति णं ॥ ६.११ ॥ दशवै०

२. दशवै० ४.१७-१८।

साधक की आहार-विषयक साधना है। उक्त साधना के मुख्य नियम यही बने कि वह अपने लिये बनी कोई भी वस्तु भिक्षा में स्वीकार न करे, और न अपने लिये आहार की कोई वस्तु स्वयं ही तैयार करे। दी जाने वाली वस्तु भी ऐसी होनी चाहिए जो शरीर की पुष्टि में नहीं; किन्तु जीवन-यापन में सहायक हो अर्थात् रूखा-सूखा भोजन ही ग्राह्य है। और खास बात यह है कि वह ऐसी कोई भी वस्तु आहार में नहीं ले सकता, जो सजीव हो या सजीव से सम्बन्धित हो। इतना ही नहीं, किन्तु भिक्षाटन करते समय यदि संयमी से या देते समय दाता से, किसी को किसी प्रकार का कष्ट हो, जीव-हिंसा की संभावना हो तो वह भिक्षा भी स्वीकरणीय नहीं है। इतना ही नहीं, दाता के द्वारा पहले या पीछे किसी भी समय यदि भिक्षु के निमित्त हिंसा की संभावना हो तो वह इस प्रकार की भिक्षा भी स्वीकार नहीं करेगा। इत्यादि मुख्य नियमों को लक्ष्य में रखकर जो उपनियम बने, उनकी लम्बी सूचियाँ शास्त्रों में हैं ( दशवै० अ० ५ ); जिन्हें देखने से यह निश्चय होता है कि उन सभी नियमोपनियमों के पीछे अहिंसा का सूक्ष्मतम दृष्टिकोण रहा हुआ है। अस्तु जहाँ तक संभव हो, हिंसा को टालने का पूरा प्रयत्न है।

आहार-विषयक नियमोपनियमों का अथवा उत्सर्ग अपवाद-विधि का विस्तार आचारंग, दशवैकालिक, बृहत्कल्प, कल्प आदि में है; किन्तु वहाँ प्रायश्चित्त की चर्चा नहीं है। प्रायश्चित्त की प्राप्ति अर्थतः फलित होती है। किन्तु क्या प्रायश्चित्त हो, यह नहीं बताया गया। निशीथ मूल सूत्र में ही तत्तत् नियमोपनियमों की क्षति के लिये प्रायश्चित्त बताया गया है<sup>१</sup>। साथ ही नियुक्ति, भाष्य तथा चूर्णिकारों के लिये यह भी आवश्यक हो गया कि प्रत्येक सूत्र की व्याख्या के समय और प्रायश्चित्त का विवरण देते समय यह भी बता दिया जाए कि नियम के भंग होने पर भी, किस विशेष परिस्थिति में साधक प्रायश्चित्त से मुक्त रहता है—अर्थात् बिना प्रायश्चित्त ही शुद्ध होता है।

आहार-विषयक उक्त नियमों का सर्जन औत्सर्गिक अहिंसा के आधार पर किया गया है। अतएव अहिंसा के अपवादों को लक्ष्य में रखते हुए आहार के भी अपवाद बनाये जाएँ—यह स्वाभाविक है। स्वयं अहिंसा के विषय में भी अनेक अपवाद हैं। किन्तु हम यहाँ कुछ की ही चर्चा करेंगे, जिससे प्रतीत होगा कि जीवन में अहिंसा का पालन करना कितना कठिन है और मनुष्य ने अहिंसा के पालन का दावा करके भी क्या-क्या नहीं किया ?

अहिंसा की चर्चा करते हुए कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति अपने विरोधी का पुतला बनाकर उसे मर्माहत करे तो वह दर्पप्रतिसेवना है<sup>२</sup>—अर्थात् हिंसा है। किन्तु धर्म-रक्षा के

१. नि०सू० २. ३२-३६, ३८-४६; ३. १-१५; ४. १६-२१, ३८-३९, ११२; ५. १३-१४, ३४-३५; ८. १४-१८; ९. १-२, ६; ११. ३, ६, ७२-८१; १२. ४, १४-१५, ३०-३१, ४१; १३. ६४-७८; १५. ५-१२, ७५-८६; १६. ४-१३, १६-१७, २७, ३३-३७; १७. १२४-१३२; १८. २०-२३; १९. १-७।

२. नि० गा० १५५।

निमित्त अर्थात् साधु-संघ या चैत्य का कोई विरोधी हो तो, उसका मिट्टी का पुतला<sup>१</sup> बनाकर मर्माहत करना धर्म-कार्य है; फलतः वह कल्प प्रतिसेवना के अन्तर्गत हो जाता है<sup>२</sup>। अर्थात् ऐसी हिंसा करने वाला पापभागी नहीं बनता। हिंसा का यह अहिंसक तरीका आज भले ही हास्यास्पद लगे; किन्तु जिस समय लोगों का मन्त्रों में विश्वास था, उस समय उन्होंने यही ठीक समझा होगा कि हम प्रत्यक्षतः अपने शत्रु की हिंसा नहीं करते, केवल उसके पुतले की हत्या करते हैं और तद्द्वारा शत्रु की हिंसा होती है, अस्तु इस पद्धति के द्वारा हम कम से कम साक्षात् हिंसा से तो बच ही जाते हैं। वस्तुतः विचार किया जाए, तो तत्कालीन साधकों के समक्ष अहिंसा के बल पर शत्रु पर किस प्रकार विजय प्राप्त की जाए, इसकी कोई स्पष्ट प्रक्रिया नहीं थी—ऐसा लगता है। अतएव शत्रु के हृदय को परिवर्तित करने जितना धैर्य न हो, तो यह भी एक अहिंसक मार्ग है। यह मान लिया गया।

धर्म-शत्रु परोक्ष हो तो मंत्र का आश्रय लिया जाय, किन्तु वह यदि समक्ष ही आ जाय और आचार्य आदि के वध के लिये तैयार हो जाय, तो इस परिस्थिति में क्या किया जाए? यह प्रश्न भी अहिंसक संघ के समक्ष था। उक्त प्रश्न का अपवाद मार्ग में जो समाधान दिया गया है वह आज के समाज की दृष्टि में, जो सत्याग्रह का पाठ भी जानता है, भले ही अहिंसक न माना जाए, किन्तु निशीथ भाष्य और चूर्णिकार ने तो उसमें भी विशुद्ध अहिंसा का पालन ही माना है। निशीथ चूर्ण में कहा है कि<sup>३</sup> यदि ऐसा शत्रु आचार्य या गच्छ के वध के लिये उद्यत है, अथवा किसी साध्वी का बलत्कार पूर्वक अपहरण करना चाहता है, अथवा चैत्यों या चैत्यों के द्रव्य का विनाश करने पर तुला हुआ है, और आपके उपदेश को मानता ही नहीं; तब उसकी हत्या करके आचार्य आदि की रक्षा करनी चाहिए। ऐसी हत्या करता हुआ संयमी मूलतः विशुद्ध ही माना गया है 'एवं करेंतो विशुद्धो'।

एक बार ऐसा हुआ कि एक आचार्य बहुशिष्य परिवार के साथ विहार कर रहे थे। संध्या का समय था और वे एक स्वापदाकुल भयंकर अटवी में पहुँच गए। संघ में एक दृढ़ शरीर वाला कोंकणदेशीय साधु था। रात में संघ की रक्षा का भार उसे सौंपा गया। शिष्य ने आचार्य से पूछा कि हिंस्र पशु का प्रतिकार उसे कष्ट पहुँचाकर किया जाय या विना कष्ट के? आचार्य ने कहा कि यथा संभव कष्ट पहुँचाए विना ही प्रतिकार करना चाहिए, किन्तु यदि कोई अन्य उपाय संभव न हो तो कष्ट भी दिया जा सकता है। रात में जब शेष साधु सो गए, तो वह कोंकणी साधु रक्षा के लिए जागता रहा और उसने इस प्रसंग में तीन सिंहों की हत्या करदी। प्रातःकाल उसने आचार्य के पास आलोचना की और वह शुद्ध माना गया। इस प्रकार जो भी संघ-रक्षा के निमित्त किसी की हत्या करता है, वह शुद्ध ही माना जाता है<sup>४</sup>।

१. मिट्टी का पुतला बनाकर, उसे अभिमंत्रित कर, पुतले में जहाँ-जहाँ मर्म भाग हों वहाँ खंडित करने पर, जिसका पुतला होता उसके मर्म का घात किया जाता था।

२. नि० गा० १६७,

३. नि० चू० गा० २८६।

४. 'एवं आययिदि कारयेसु वायादितो शुद्धो'—नि० चू० गा० २८६, पृ० १०१ भाग १।



भगवान् महावीर के द्वारा आचरित अहिंसा में और इन टीकाकारों की अहिंसा-सम्बन्धी कल्पना में आकाश-पाताल जैसा स्पष्ट अन्तर दीखना है। भ० महावीर तो शत्रु के द्वारा होने वाले सभी प्रकार के कष्टों को सहन कर लेने में ही श्रेय समझते थे। और अपनी रक्षा के लिये मनुष्य की तो क्या, देव की सहायता लेना भी उचित नहीं समझते थे। किन्तु समय का फेर है कि उन्हीं के अनुयायी उस उत्कट अहिंसा पर चलने में समर्थ नहीं हुए, और गीतानिर्दिष्ट—‘आततायिनमायान्तम्’ की व्यावहारिक अहिंसा-नीति का अनुसरण करने लग गए। विवश होकर पारमार्थिक अहिंसा का पालन छोड़ दिया गया। अथवा यह कहना उचित होगा कि तत्कालीन साधक के समक्ष, अपने व्यक्तित्व की अपेक्षा, संघ और प्रवचन—अर्थात् जैन शासन का व्यक्तित्व अत्यधिक महत्त्वशाली हो गया था। अतएव व्यक्ति, जो कार्य अपने लिये करना ठीक नहीं समझता था, वह सब संघ के हित में करने को तैयार हो जाता था। और तात्कालिक संघ की रक्षा करने में आनन्द मनाता था। ऐसा करने पर समग्ररूप से अहिंसा की साधना को बल मिला, यह तो नहीं कहा जा सकता। किन्तु ऐसा करना इसलिये उचित माना गया कि यदि संघ का ही उच्छेद हो जाएगा तो संसार से सन्मार्ग का ही उच्छेद हो जाएगा। अतएव सन्मार्ग की रक्षा के निमित्त कभी कभाक असन्मार्ग का भी अवलंबन लेना आवश्यक है। प्रस्तुत विचारणा इसलिये दोष पूर्ण है कि इसमें ‘सन्मार्ग पर दृढ़ रहने से ही सन्मार्ग टिक सकता है’—इस तथ्य के प्रति अविश्वास किया गया है और ‘हिंसा से भी अहिंसा की रक्षा करना आवश्यक है’—इस विश्वास को सुदृढ़ बनाया गया है। साधन और साध्य की एक रूपता के प्रति अविश्वास फलित होता है, और उचित या अनुचित किसी भी प्रकार से अपने साध्य को सिद्ध करने की एक मात्र तत्परता ही दीखती है। और यह भी एक अभिमान है कि हमारा ही धर्म सर्व-हितकर है, दूसरे धर्म तो लोगों को कु-मार्ग में ले जाने वाले हैं। तभी तो उन्होंने सोचा कि हमें अपने मार्ग की रक्षा किसी भी उपाय से हो, करनी ही चाहिए। एक बार एक राजा ने जैन साधुओं से कहा कि ब्राह्मणों के चरणों में पड़ो, अन्यथा मेरे देश से सभी जैन साधु निकल जाएँ! आचार्य ने अपने साधुओं को एकत्र करके कहा कि जिस-किसी साधु में अपने शासन का प्रभाव बढ़ाने की शक्ति हो, वह सावध या निरवध जैसे भी हो, आगत कष्ट का निवारण करे। इस पर राजसभा में जाकर एक साधु ने कहा कि जितने एकत्र हुए, तो उसने कणेर की लता को अभिमंत्रित करके सभी ब्राह्मणों का शिरच्छेद कर दिया; किसी आचार्य के मत से तो राजा का भी मस्तक काट दिया। इस प्रकार प्रवचन की रक्षा और उन्नति की गई। इस कार्य को भी प्रवचन के हितार्थ होने के कारण विशुद्ध माना गया है<sup>१</sup>।

मनुष्य-हत्या जैसे अपराध को भी, जब प्रवचन के कारण विशुद्ध कोटी में माना गया, तब अन्य हिंसा की तो बात ही क्या? अतएव अहिंसा के अन्य अपवादों की चर्चा न करके प्रस्तुत में आहार-सम्बन्धी कुछ अपवादों की चर्चा की जाएगी। इससे पहले यहाँ इस बात की ओर पुनः ध्यान दिला देना आवश्यक है कि यह सब गच्छ-वासियों की ही चर्चा है। किन्तु

१. ‘एवं पवयन्त्ये पद्मिसेवंतो विसुद्धो’—नि० चू० गा० ४८७।

जिन्होंने गच्छ छोड़ कर जिनकल्प स्वीकार कर लिया हो, वे एकाकी निष्ठावान् श्रमण, ऐसा नहीं कर सकते। उन्हें तो उक्त प्रसंगों पर अपनी मृत्यु ही स्वीकार होती थी, किन्तु किसी को कुछ भी अपनी ओर से कष्ट पहुँचाना स्वीकार नहीं था और न वह शास्त्र-विहित ही था। इस प्रकार अहिंसा में पूर्ण निष्ठा रखने वाले श्रमणों की भी कमी नहीं थी। किन्तु जब यह देख लिया जाता कि अन्य समर्थ श्रमण-संघ की रक्षा करने के योग्य हो गये हैं, तभी ऐसे निष्ठावान् श्रमण को संघ से पृथक् होकर विचरण करने की आज्ञा मिल सकती थी, और वह भी जीवन के अन्तिम वर्षों में<sup>१</sup>। तात्पर्य यह है कि जब तक संघ में रहे, संयमी के लिए शासन और संघ की रक्षा करना—आवश्यक कर्तव्य है, और एतदर्थ यथाप्रसंग व्यक्तिगत साधना को गौण भी करना होता है। जब संघ से पूर्णतया पृथक् हो जाए, तभी व्यक्तिगत साधना का चरमविकास किया जा सकता है। अर्थात् फलितार्थ रूप में यह मान लिया गया कि व्यक्तिगत विकास की चरम पराकाष्ठा संघ में रहकर नहीं हो सकती। संघ में तो व्यक्तिगत विकास की एक अमुक मर्यादा है।

यहाँ पर यह भी ध्यान देने की बात है कि व्याख्याकार ने जिन अपवादों का उल्लेख किया है, जिनके आचरण करने पर भी प्रायश्चित्त न लेने की प्रेरणा की है, यदि उन अपवादों को हम सूत्रों के मूल शब्दों में खोजें तो नहीं मिलेंगे। फिर भी शब्द की अपेक्षा अर्थ को ही अधिक महत्त्व देने की मान्यता के आधार पर, व्याख्याकारों ने शब्दों से ऊपर उठकर अपवादों की सृष्टि की है। अपवादों की आज्ञा देते समय कितनी ही बार औचित्य का सीमातीत भंग किया गया है, ऐसा आज के वाचक को अवश्य लगेगा। किन्तु उक्त अपवादों की पृष्ठभूमि में तत्कालीन संघ की मनःस्थिति का ही चित्रण हमें मिलता है; अतः उन अपवादों का आज के अहिंसक समाज की दृष्टि से नहीं, अपितु तत्कालीन समाज की दृष्टि से ही मूल्यांकन करना चाहिए। संभव है आज के समाज की अहिंसा तत्कालापेक्षया कुछ अधिक सूक्ष्म और सहज हो गई हो; किन्तु उस समय के आचार्यों के लिये वही सब कुछ करना उचित रहा हो। मात्र इसमें आज तक की अहिंसा की प्रगति का ही दर्शन करना चाहिए, न कि यह मान लेना चाहिए कि जीवन में उस समय अहिंसा अधिक थी और आज कम है; अथवा यह भी नहीं समझ लेना चाहिए कि संपूर्ण अहिंसा का परिपालन आज के युग में नहीं हो सकता है, जोकि पूर्व युग में हुआ है। और यह भी नहीं मान लेना चाहिए कि हम आज अहिंसा का चरम विकास जितना सिद्ध कर सके हैं, उस काल में वह विकास उतना नहीं था। भेद वस्तुतः यह है कि आज समुदाय की दृष्टि से भी अहिंसा किस प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ सकती है, यह अधिक सोचा जाता है। व्यक्तिगत दृष्टि से तो पूर्वकाल में भी संपूर्ण अहिंसक व्यक्ति का मिलना संभव था, और आज भी मिलना संभव है। किन्तु अहिंसक समाज की रचना किस प्रकार हो सकती है—इस समस्या पर गांधी जी द्वारा उपदिष्ट सत्याग्रह के वाद अधिक विचार होने लगा है—यही नई बात है। समग्र मानव समाज में, युद्ध-शक्ति का निराकरण करके आत्म-शक्ति का साम्राज्य किस प्रकार स्थापित हो—यह आज की समस्या है। और आज के मानव ने अपना केन्द्र बिन्दु,

१. वृ० भा० गा० १३५८ से। संघ की उचित व्यवस्था किये बिना जिनकल्पी होने पर प्रायश्चित्त लेना पड़ता था—नि० गा० ४६२६; वृ० गा० १०६३।



व्यक्तिगत अहिंसा से हटाकर प्रस्तुत सामूहिक अहिंसा में स्थिर किया है—यही आज के अहिंसा-विचार की विशेषता है।

### आहार और औषध के अपवाद :

अब कुछ आहार-विषयक अपवादों की चर्चा की जाती है। यह विशेषतः इसलिये आवश्यक है कि जैन समाज में आहार के प्रश्न को लेकर बारबार चर्चा उठती है और वह सदैव आज के जैन-समाज के आहार-सम्बन्धी प्रक्रिया को समझ रखकर होती है। जैन-समाज ने आहार के विषय में दीर्घकालीन अहिंसा की प्रगति के फलस्वरूप जो पाया है वह उसे प्रारंभकाल में ही प्राप्त था, उक्त मान्यता के आधार पर ही प्रायः प्रस्तुत चर्चा का सूत्रपात होता है। अतएव यह आवश्यक है कि उक्त मान्यता का निराकरण किया जाए और आहार-विषयक सही मान्यता उपस्थित की जाए और आज के समाज की दृष्टि से पूर्वकालीन समाज आहार के विषय में अहिंसा की दृष्टि से कितना पश्चात्पद था—यह भी दिखा दिया जाए। आज का जैन साधु अपवाद की स्थिति में भी मांसाहार ग्रहण करने की कल्पना तक को असह्य समझता है, तो लेने की बात तो दूर ही है। अतएव आज का भिक्षु 'प्राचीनकाल में कभी जैन भिक्षु भी आपवादिक स्थिति में मांस ग्रहण करते थे'—इस तथ्य को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।

आहार का विचार करते समय दो बातों का विचार करना आवश्यक है। एक तो यह कि कौनसी वस्तु साधु को आहार में लेने योग्य है? अर्थात् शाकाहार या मांसाहार दो में से साधु किसे प्रथम स्थान दे? दूसरी बात यह है कि वह गोचरी या पिण्डैपणा के आवाकर्म वर्जन आदि नियमों को अधिक महत्त्व के समझे या वस्तु को? अर्थात् अहिंसा के पालन की दृष्टि से "साधु अपने लिये वनी कोई भी चीज, चाहे वह शाकाहार-सम्बन्धी वस्तु हो या मांसाहार-सम्बन्धी, न लें" इत्यादि नियमों को महत्त्व दे अथवा आहार की वस्तु को?

वस्तु-विचार में यह स्पष्ट है कि साधु के लिये यह उत्सर्ग मार्ग है कि वह मद्य-मांस आदि वस्तुओं को आहार में न ले। अर्थात् उक्त दोषपूर्ण वस्तुओं की गवेषणा न करे और कभी कोई देता हो तो कह दे कि ये वस्तुएँ मेरे लिये अकल्प्य हैं<sup>१</sup>। और यह भी स्पष्ट है कि भिक्षु का उत्सर्ग मार्ग तो यही है कि वह पिण्डैपणा के नियमों का यथावत् पालन करे। अर्थात् अपने लिये वनी कोई भी चीज न ग्रहण करे। तारतम्य का प्रश्न तो अपवाद मार्ग में उपस्थित होता है कि जब अपवाद मार्ग का अवलम्बन करना हो, तब क्या करे? क्या वह वस्तु को महत्त्व दे या नियमों को? निशीथ में रात्रि भोजन सम्बन्धी अपवादों के वर्णन प्रसंग में जो कहा गया है, वह प्रस्तुत में निर्णायक हो सकता है। अतएव यहाँ उसकी चर्चा की जाती है। कहा गया है कि द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक का मांस हो तो अल्पेन्द्रिय जीवों का मांस लेने में कम दोष है और उत्तरोत्तर अधिकेन्द्रिय जीवों का मांस ग्रहण करने में उत्तरोत्तर अधिक दोष है। जहाँ के लोगों को यह पता हो कि 'जैन श्रमण मांस नहीं लेते' वहाँ आधाकर्म-दूषित अन्य आहार लेने

१. दश वै० ५.७३, ७४; गा० ७३ के 'पुगल' शब्द का अर्थ 'मांस' है। इसका समर्थन निशीथ-चूर्ण से भी होता है—गा० २३८, २८८, ६१००।

में कम दोष है और मांस लेने में अधिक दोष; क्योंकि परिचित जनों के यहाँ से मांस लेने पर निन्दा होती है। किन्तु जहाँ के लोगों को यह ज्ञान नहीं कि 'जैन श्रमण मांस नहीं खाते', वहाँ मांस का ग्रहण करना अच्छा है और आधाकर्म-दूषित आहार लेना अधिक दोषावह है; क्योंकि आधाकर्मिक आहार लेने में जीवघात है। अतएव ऐसे प्रसंग में सर्वप्रथम द्वीन्द्रिय जीवों का मांस ले; उसके अभाव में क्रमशः त्रीन्द्रिय आदि का। इस विषय में स्वीकृत साधुवेश में ही लेना या वेप बदलकर, इसकी भी चर्चा है<sup>१</sup>। उक्त समग्र चर्चा का सार यह है कि जहाँ अपनी आत्मसाक्षी से ही निर्णय करना है और लोकापवाद का कुछ भी डर नहीं है, वहाँ गोचरी-सम्बन्धी नियमों के पालन का ही अधिक महत्व है। अर्थात् औद्देशिक फलाहार की अपेक्षा मांस लेना, न्यून दोषावह, समझा जाता है—ऐसी स्थिति में साधक की अहिंसा कम दूषित होती है। यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि जबकि फासुग-अचित्त वस्तु मांसादि का सेवन भी अपने बलवोय की वृद्धि निमित्त करना अप्रशस्त है, तो जो आधाकर्मादि दोष से दूषित अविशुद्ध भोजन करता है, उसका तो कहना ही क्या? अर्थात् वह तो अप्रशस्त है ही। इससे यह भी सिद्ध होता है कि मांस को भी फासुग-अचित्त माना गया है।

इस प्रसंग में निशीथगत विकृति की चर्चा भी उपयोगी सिद्ध होगी। निशीथ सूत्र में कहा गया है कि जो भिक्षु आचार्य तथा उपाध्याय की आज्ञा के बिना विकृत-विगय का सेवन करता है, वह प्रायश्चित्त-भागी होता है (उ० ४.सू० २१)।

निशीथ नियुक्ति में विकृति की गणना इस प्रकार है—

तेल, घृत, नवनीत—मक्खन, दधि, फाणिय—गुड, मद्य, दूध, मधु, पुगल—मांस और चलचल ओगाहिम<sup>३</sup> ( गा० १५६२—६३ )

योगवाही भिक्षु के लिये अर्थात् शास्त्र पठन के हेतु तपस्या करने वाले के लिये कहा गया है कि जो कठिन शास्त्र न पढ़ता हो, उसे आचार्य की आज्ञा पूर्वक दशों प्रकार की विकृति के सेवन की भजना है। अर्थात् आचार्य जिसकी भी आज्ञा दे, सेवन कर सकता है। किन्तु अपवाद मार्ग में तो कोई भी स्वाध्याय करने वाला किसी भी विकृति का सेवन कर सकता है ( नि० गा० १५६६ )।

विकृति के विषय में निशीथ में अन्यत्र भी चर्चा है। कहा गया है कि विकृति दो प्रकार की है—(१) संचतिया और (२) असंचतिया। दूध, दधि, मांस और मक्खन—ये असंचतिया विकृति हैं। और किसी के मत से ओगाहिम भी तदन्तर्गत है। शेष विकृति, संचतिया कही गई हैं। और उनमें मधु, मांस और मद्य को अप्रशस्त विकृति भी कहा गया है ( नि० चू० गा० ३१६७ )। यह भी स्पष्ट किया गया है कि विकृति का सेवन साधक की आत्मा को विकृत बना

१. नि० गा० ४३६-३६, ४४३-४४७।

२. नि० चू० गा० ४६६।

३. पकाने के लिये तब पर प्रथमवार रखा गया तप्त घृत। जिसमें तीन बार कोई वस्तु तली न जाय, तब तक वह विकृत है।

देना है। अतएव उसका वर्जन करना चाहिए (नि० गा० ३१६८)। किन्तु चूर्णिकार ने स्पष्टरूप से अपवादपद में विकृति ग्रहण करने की अनुज्ञा का निर्देश किया है और कहा है कि बाल, वृद्ध, आचार्य तथा दुर्बल संयमी रोग आदि में विकृति का सेवन कर सकते हैं (नि० सू० ३१६८)। भाष्यकार ने कहा है कि मांस आदि गर्हित विषय लेते समय, साधु, सर्वप्रथम इस बात की गहरी करे कि "यह अकार्य है, क्या करें, इसके बिना रोगी के रोग का शमन नहीं होता।" और उतना ही लिया जाए जितने से कि रोगी का काम चल सके। तथा दातार को भी यह विश्वास हो जाए कि सचमुच रोगी के लिये ही लेते हैं, रस-लोलुपता से नहीं। (नि० गा० ३१७० चूर्ण के साथ)।

सामान्यतः निषिद्ध देश में विहार करने की अनुज्ञा नहीं है, किन्तु यदि कभी अपवाद में विहार करना ही पड़े, तो भिक्षु, घेप बदल कर अपने लिये भोजन बना सकते हैं, दूसरों के यहाँ से पक फल ले सकते हैं, और मांस भी ग्रहण कर सकते हैं (नि० सू० गा० ३४३६)। और इसके लिये प्रायश्चित्त-विधि भी बताई गई है (नि० गा० ३४५६-७)।

निशीथ सूत्र (११ ८०) में, यदि भिक्षु मांस-भोजन की लालसा से उपाश्रय बदलता है, तो उसके लिए प्रायश्चित्त का विधान है। किन्तु अपवाद में गीतार्थ साधु संखंडी आदि में जाकर मांस का ग्रहण कर सकते हैं (नि० गा० ३४८७)। रोगी के लिये चोरी से या मन्त्र प्रयोग करके वशीकरण से भी अभीप्सित औषधि प्राप्त करना अपवाद मार्ग में उचित माना गया है। (नि० गा० ३४७)। औषधि में हंसतेल जैसी वस्तु लेना भी, जो मांस से भी अधिक पाप जनक है, और वह भी आवश्यकता पड़ने पर चोरी या वशीकरण के द्वारा, अपवाद मार्ग में शामिल है।<sup>१</sup> चूर्णिकार ने हंसतेल बनाने की विधि का जो उल्लेख किया है, उसे पढ़कर तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं। हंस को चोर कर, मलमूत्र निकाल कर, अनन्तर उसके पेट को कुछ वस्तुएं भर कर सी लिया जाता है और फिर पकाकर जो तेल तैयार किया जाता है, वह हंसतेल है (नि० गा० ३४८ की चूर्ण)।

भगवान् महावीर की मूल आज्ञा से संयमी के लिए किसी प्रकार की भी चिकित्सा न करने की थी<sup>२</sup>, किन्तु एक बार साधु-संघ में चिकित्सा प्रविष्ट हुई कि उसका अपवाद मार्ग में किस सीमा तक प्रचलन होता गया, यह उक्त दृष्टान्त से स्पष्टतया जाना जा सकता है। साधक मृत्युभय से कितना अधिक त्रस्त था—यह तो इससे सिद्ध ही है; किन्तु अपवाद मार्ग की भी जो अमुक मर्यादा रहनी चाहिए थी, वह भी भग्न हो गई—ऐसा स्पष्ट ही लगता है। एक ओर भिक्षुओं को अपनी अहिंसा और आचरण के उत्कृष्टत्व की धाक जमाये रखनी थी, किन्तु दूसरी ओर उत्कट सहनशील संयमी जीवन रह नहीं गया था। अतएव उक्त अपवादों का आश्रय लिया गया। किन्तु पद पद पर यह डर भी था कि कहीं अनुयायी वर्ग ऐसी असंयम मूलक प्रवृत्तियाँ देखकर श्रद्धाभ्रष्ट न हो जाए और साथ ही यह भी भय रहता था कि विरोधियों के समक्ष जैन साधु-समाज का जो आचरण की उत्कटता का वाहरी आवरण है, वह हटकर अंदर का यथार्थ चित्र न खड़ा हो जाए, ताकि उन्हें जैन शासन की अवहेलना का एक साधन

१. नि० गा० ३४८; ५७२२ सू० ।

२. दश वै० ३.४; नि० सू० ३.२८-४०; १३.४२-४५ इत्यादि ।

मिल जाए। अतएव अपवाद मार्ग का जो भी अवलंबन लिया जाता था, उसे गुप्त ही रखने का प्रयत्न किया जाता था (नि० चू० गा० ३४५-३४७)। जहाँ सब प्रकार के कष्टों को सहन करने की बात थी, वहाँ सब प्रकार की चिकित्सा करने-कराने की अनुज्ञा मिल गई। यह किसी भी परिस्थितियों में हुआ हो, किन्तु एक बात स्पष्ट है कि 'मनुष्य के लिये अपने जीवन की रक्षा का प्रश्न उपेक्षणीय नहीं है'—यह तथ्य कुछ काल के लिये उत्साह-वश भले ही उपेक्षित रह सकता है, किन्तु गंभीर विचारणा के अनन्तर, अन्ततः मनुष्य को बाध्य होकर उक्त तथ्य को स्वीकार करना ही पड़ता है और कालिदास का 'शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्' वाला कथन व्यावहारिक ही नहीं; किन्तु ध्रुव सत्य सिद्ध होता है। अतएव जिस साधु-संघ का यह उत्सर्ग मार्ग हो कि किसी भी प्रकार की चिकित्सा न करना ('तेगिच्छं नाभिनन्देज्जा'—उत्तरा २. २३); उसे भी रोगावस्था में क्या-क्या साधन जुटाने पड़े और जुटाने में कितनी सावधानी रखनी पड़ी—इसका जो तादृश चित्रण प्रस्तुत ग्रन्थ में है,<sup>१</sup> वह तत्कालीन साधु-संघ की अपने धर्म के प्रति निष्ठा ही नहीं; किन्तु विवश व्यक्ति की व्यग्रता, भय, तथा प्रतिष्ठारक्षार्थ किये जानेवाले प्रयत्न आदि का यथार्थ स्वरूप भी उपस्थित करता है। आज की दृष्टि से देखा जाए, तो यह सब माया जाल सा लगता है और एक प्रकार का दबूपन भी दीखता है; किन्तु जिस समय धार्मिक साधकों के समक्ष केवल अपने जीवन मरण का प्रश्न ही नहीं, किन्तु संघ—उच्छेद की विकट समस्या भी थी, उस समय वे अपनी जीवन—भूमिका के अनुसार ही अपना मार्ग तलाश कर सकते थे। अन्य प्रकार से कुछ भी सोचना, संभव है, तब उनके लिये संभव ही नहीं रह गया हो। जीवन में अहिंसा और सत्य की प्रतिष्ठा क्रमशः किस प्रकार की गई, और उसके लिए साधकों को किस-किस प्रकार के गले बुरे मार्ग लेने पड़े—इस तथ्य के अभ्यासियों के लिये प्रस्तुत प्रकरण अत्यन्त महत्व का है। सार यही निकलता है कि रोग को प्रारंभ से ही दवाना चाहिए। उसकी उपेक्षा हानिकारक होती है<sup>२</sup>। शरीर यदि मोक्ष का साधन है, तो आहार शरीर का साधन है। अतएव आहार की उपेक्षा नहीं की जा सकती<sup>३</sup>।

## ब्रह्मचर्य की साधना में कठिनाई :

जैन-संघ में भिक्षु और भिक्षुणी—दोनों के लिये स्थान है; किन्तु जिन कल्प में, जो साधना का उत्कट मार्ग है, भिक्षुणियों को स्थान नहीं दिया गया। इसका यह कारण नहीं कि भिक्षुणी, व्यक्तिगतरूप से, उत्कट मार्ग का पालन करने में असमर्थ हैं। किन्तु सामाजिक परिस्थिति से बाध्य होकर ही आचार्यों ने यह निर्णय किया कि साध्वी स्त्री एकान्त में अकेली रहकर साधना नहीं कर सकती। जैनों के जिस सम्प्रदाय ने मात्र जिन कल्प के आचार को ही साध्वाचार माना और स्थविर कल्प के गच्छवास तथा सचेल आचार को नहीं माना; उनके लिये एक ही मार्ग रह गया कि वे स्त्रियों के मोक्ष का भी निषेध करें। अतएव हम देखते हैं कि ईसा की प्रथम शताब्दी के बाद के दिगम्बर ग्रन्थों में स्त्रियों के लिये निर्वाण का निषेध किया गया है। और

१. नि० गा० २६७०—३१०४; वृ० भा० गा० १८७१—२००२।

२. नि० गा० ४८०६-७; वृ० गा० ६४७-८।

३. नि० गा० ४१५७-४१६६।

प्राचीन ग्रन्थों की व्याख्याओं में प्रस्तुत निषेध को मूल में से खोजने का असफल प्रयत्न किया गया है।

समुदाय में जहाँ साधु और साध्वी दोनों ही हों, वहाँ ब्रह्मचर्य की साधना कठिनतर हो जाती है, अस्तु साधना में, जहाँ कि निवृत्ति की दृष्टि हो, आचार में विवि की अपेक्षा निषेध की ही अधिक स्थान मिलता है<sup>१</sup>। मानव-स्वभाव का और खास कर मानव की कामवृत्ति का गहरा ज्ञान, गीतार्थ आचार्यों को प्रारंभ से ही था—यह तो नहीं कहा जा सकता। किन्तु जैसे-जैसे संघ बढ़ता गया होगा वैसे-वैसे समस्याएँ उपस्थित होती गई होंगी, और देशकालानुरूप उनका समाधान भी खोजा गया होगा—यही मानना उचित है। अतएव कामवृत्ति के विषय में, जो गहरा चिंतन, प्रस्तुत निशीथ से फलित होता है; उसे दीर्घकालीन अनुभवों का ही निचोड़ मानना चाहिए (नि० उद्देश १. सू० १-२)। सार यही है कि स्त्री और पुरुष परस्पर के प्रतिपरिचय में नहीं, किन्तु एक दूसरे से अधिकाधिक दूर रहकर ही अपनी ब्रह्मचर्य-साधना में सफल हो सकते हैं। ऐसा होने पर भी यदा कदा सामाजिक और राजकीय परिस्थितिवश साधु और साध्वी-समुदाय को निकट रहने के अवसर भी आ सकते हैं, और एक दूसरे की सहायता करने के प्रसंग भी<sup>२</sup>। ऐसी स्थिति में किस प्रकार की सावधानी बरती जाय—यह एक समस्या थी, जो तत्कालीन गीतार्थों के सामने थी। उक्त समस्या के समाधान की शोच में से ही मनुष्य की कामवृत्ति का गहरा चिंतन करना पड़ा है, और उसके फलस्वरूप संयम-स्वीकार के वाद भी सावक किस प्रकार कामवृत्ति में फँसता है और फिसल जाता है, तथा उसके वचाव के लिये क्या करना उचित है—इन सब बातों का मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत निशीथ में मिलता है। मनुष्य की कामवृत्ति के विविध रूपान्तरों का ज्ञान गीतार्थ आचार्यों को हो गया था, तभी तो वे उनसे वचने के उपाय ढूँढ़ निकालने की दिशा में सजग भाव से प्रयत्नशील थे। कामवृत्ति को वे स्वाभाविक नहीं, किन्तु आगन्तुक मानते थे। अतएव उन्हें कामवृत्ति का सर्वथा क्षय असम्भव नहीं, किन्तु सम्भव लगता था। फलतः वे उसके क्षय के लिये प्रयत्नशील भी थे।

तरुणी और रूपवती स्त्रियाँ भी दीक्षित होती थीं। मनचले युवक उनका पीछा करते थे और उनका शील भंग करने को उद्यत रहते थे<sup>३</sup>। संघ के समक्ष, यह एक विकट समस्या थी। सामान्य तौर से भिक्षुणी के साथ किसी भिक्षु को रहने की मनाई थी। किन्तु जहाँ तरुणी साध्वी के शील की सुरक्षा का प्रश्न होता वहाँ आचार्य भिक्षुओं को स्पष्ट आज्ञा देते थे कि वे भिक्षुणी के साथ रहकर उसके शील की रक्षा करें। रक्षा करते हुए भिक्षु कितनी ही बार उद्दण्ड तरुणों को मार भी डालते थे; इस प्रसंग का वर्णन सुकुमालिका के कथानक द्वारा

१. नि० उद्देश ६; नि० गा० २ ६६ से; नि० उद्देश १७, सू० १५-१२०; नि० उद्देश ४, सू० २३, २४; नि० उद्देश. ७, सू० १-६१; नि० उद्देश ८, सू० १-११। निशीथ के इन सभी सूत्रों में ब्रह्मचर्य भंग-सम्बन्धी, प्रायश्चित्त की चर्चा है।

२. नि० उद्देश ४, सू० २३, २४; नि० गा० १६६६ से; वृ० गा० ३७२१ से नि० गा० १७४५ से; वृ० ३७६८ से। नि० गा० ३७७६ से।

३. राजा गर्दमिल्ल और कालकाचार्य की कथा के लिये, देखो—नि० गा० २८६० चू०।



निशीथ में किया गया है। किन्तु साथ ही इस तथ्य का भी निर्देश कर दिया है कि मरणासन्न स्थिति में भी तरुणी पुरुष-स्पर्श पाते ही किस प्रकार कामविह्वल बन जाती है, और चाहे पुरुष भाई ही क्यों न हो—वह पुरुष-स्पर्श के सुख का किस प्रकार आस्वादन कर लेती है ? (नि० गा० २३५१-५६; वृ० गा० ५२५४-५२५६)। यह कथा ब्रह्मचर्य का पालन कितना कठिन है, इस ओर संकेत करती है।

मैथुन सेवन के कारणों में क्रोध, मात्सर्य, मान, माया, द्वेष, लोभ, राग आदि अनेक कारण होते हैं। और संयमी व्यक्ति किस प्रकार इन कारणों से मैथुन सेवन के लिये प्रेरित होता है—यह उदाहरणों के साथ निशीथ में निर्दिष्ट है<sup>१</sup>। किन्तु एक बात की ओर विशेष ध्यान दिलाया है कि यद्यपि अब्रह्म सेवन की प्रेरणा उपर्युक्त विविध कारणों से होती है ; तथापि यह सार्वत्रिक नियम है कि जब तक लोभ-राग-आसक्ति नहीं होती, तब तक अब्रह्मसेवन संभव नहीं। अतएव मैथुन में व्यापक कारण राग है (नि० गा० ३५६)।

भाववेद के साथ में द्रव्यवेद का परिवर्तन होता है या नहीं, यह एक चर्चा का विषय है। इस विषय पर निशीथ के एक प्रसंग से पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। किस्सा यह है कि—किसी भिक्षु की रति, जिसके यहाँ वह ठहरा हुआ था, उसकी कन्या में हो गई। प्रसंग पा भिक्षु ने कन्या का शीलभंग किया। मालुम होने पर कन्या के पिता ने, क्रुद्ध होकर, साधु का लिंगछेद कर दिया। अनन्तर उक्त साधु को एक बूढ़ी वेश्या ने अपने यहाँ रखा और उससे वेश्या का कार्य लिया। उक्त घटना के प्रकाश में, आचार्य ने अपना स्पष्ट अभिप्राय व्यक्त किया है कि उस साधु को पुरुष, नपुंसक और स्त्री तीनों ही वेद का उदय हुआ। (नि० गा० ३५६)।

मैथुन सेवन में तारतम्य कई कारणों से होता है। इस दिशा में देव, मनुष्य, तिर्यञ्च के<sup>२</sup> पारस्परिक सम्बन्धजन्य अनेक विकल्पों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त प्रतिसेव्य स्वयं हो या उसकी प्रतिमा—अर्थात् चेतन-अचेतन सम्बन्धी विकल्पजाल का वर्णन है। उक्त विकल्पों में जब प्रतिसेवक की मनोवृत्ति के विकल्प भी जुड़ जाते हैं, तब तो विकल्पों का एक जटिल जाल ही बन जाता है। शीलभंग के लिये एक जैसा प्रायश्चित्त नहीं है, किन्तु यथा संभव उक्त विकल्पों से सम्बन्धित तारतम्य के आधार पर ही प्रायश्चित्त का तारतम्य निर्दिष्ट है।<sup>३</sup>

जिस प्रकार अहिंसा, सत्य आदि व्रतों में उत्सर्ग और अपवाद मार्ग है, और इनके अपवादों का सेवन करके प्रायश्चित्त के बिना भी विशुद्धि मानी जाती है ; क्या ब्रह्मचर्य के विषय में भी उसी प्रकार उत्सर्ग—अपवाद मार्ग है ? इस प्रश्न का उत्तर आचार्य ने यह दिया है कि अन्य हिंसा आदि बातों में तो दर्प और कल्प अर्थात् रागद्वेषपूर्वक और रागद्वेषरहित

१. नि० गा० ३५५ से। साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण भिक्षुणियों के ब्रह्मचर्य का रोकना—यह घृणित प्रकार भी निर्दिष्ट है—नि० गा० ३५७।

२. सिंहिनी और पुरुष के संपर्क का भी दृष्टान्त दिया गया है—नि० गा० ५१६२ चू०।

३. नि० गा० ३६०-३६२ ; गा० २१६६ से। गा० ५११३ से; वृ० गा० २४६५ ने।

प्रतिसेवना संभव है। किन्तु ब्रह्मचर्य की सेवना रागद्वेष के अभाव में होती ही नहीं। अतएव ब्रह्मचर्य के विषय में अपवाद मार्ग है ही नहीं। अर्थात् ब्रह्मचर्य भंग के लिये यथोचित प्रायश्चित्त ग्रहण किए बिना शुद्धि संभव ही नहीं। कभी-कभी ऐसे प्रसंग भी आ जाते हैं, जबकि संयम जीवन की रक्षा के लिये भी ब्रह्मचर्य भंग करना पड़ता है। तब भी प्रायश्चित्त तो आवश्यक ही है। चाहे वह स्वल्प ही हो, किन्तु बिना प्रायश्चित्त के शुद्धि नहीं; यह ध्रुव सिद्धान्त है। हिंसा आदि दोषों का सेवन, संयमजीवन के हेतु किया जाए, तो प्रायश्चित्त नहीं होता; किन्तु ब्रह्मचर्य का भंग संयम के लिये भी किया जाए तब भी प्रायश्चित्त आवश्यक है (नि० गा० ३६३-३६५, वृ० ४६४३-४५)।

शीलभंग के विषय में भी किसी विशेष परिस्थिति में यतनापूर्वक कल्पिका प्रतिसेवना का होना संभव माना गया है। किन्तु प्रतिसेवक गीतार्थ, यतनाशील तथा कृतयोगी होना चाहिए, और साथ ही जानादि विशिष्ट कारण भी होने चाहिए, तभी वह शीलभंग कर सकता है और निर्दोष भी माना जा सकता है। अन्य आचार्य के मत से यह शर्त भी रखी गई है कि वह रागद्वेष शून्य भी होना चाहिए। किन्तु मूलतत्त्व यही है कि मैथुन की कल्पिका प्रतिसेवना भी बिना रागद्वेष के संभव नहीं है। अतएव कोई कितनी ही यतनापूर्वक प्रतिसेवना करे, फिर भी शुद्धि के लिए अल्प प्रायश्चित्त तो लेना ही पड़ता है (नि० गा० ३६६-७ वृ० गा० ४६४६-४६४७)।

कभी-कभी ऐसा प्रसंग आ जाता है कि संयमों मनुष्य को या तो मरण स्वीकार करना चाहिए या शीलभंग। ऐसे प्रसंग में जो साधक शीलभंग न करके मरण को स्वीकार करता है, वह शुद्ध है। किन्तु जो संयम के हेतु अपने जीवन की रक्षा करना चाहे, और तदर्थ शीलभंग करे, तो ऐसे व्यक्ति के शीलभंग का तारतम्य विविध प्रकार से होता है। इसका एक निदर्शन निशीथ में दिया है कि राजा के अन्तःपुर में पुत्रेच्छा से किसी मायु को पकड़ कर बंद कर दिया जाए तो कोई मरण स्वीकार कर लेता है, और कोई शीलभंग की ओर प्रवृत्त होता है। किन्तु प्रवृत्त होनेवाले के विविध मनोभावों को लक्ष्य में रखकर प्रायश्चित्त का तारतम्य होता है। यह समग्र प्रकरण सूक्ष्म मनोभावों के विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण नमूना बन गया है<sup>१</sup>।

शीलभंग करने की इच्छा नहीं है, उधर वासना पर विजय भी संभव नहीं<sup>२</sup>—ऐसी स्थिति में श्रमण या श्रमणी की क्या चिकित्सा की जाए; यह वर्णन भी निशीथ में है। उक्त प्रसंग में संयमरक्षा का ध्येय किस प्रकार कम से कम हानि उठाकर सिद्ध हो सकता है—इसी की ओर दृष्टि रखी गई है। प्रस्तुत समग्र वर्णन को पढ़ने पर अच्छी तरह पता लग जाता है कि ब्रह्मचर्य के जीवन में काम-विजय की साधना करते हुए क्या-क्या कठिनाईयाँ आती थीं

१. नि० गा० ३६८ से; वृ० गा० ४६४६।

२. नि० ५७६-७; वृ० ४६२६-३०; कामवासना चालक में भी संभव है, अतः बालक पुत्र और माता में भी रति की संभावना मानो गयी है। दृष्टान्त के लिये, देखो—गा० ३६६६-३७००। वृ० गा० ५२१६-५२२४।

और उनका निवारण भिक्षु लोग किस तरह करते थे<sup>१</sup> । आज यह चिकित्सा हमें कुछ अटपटी-सी मलूम देती है, किन्तु साधक के समक्ष सदा से ही 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धे' त्यजति पंडितः' की नीति का अधिक मूल्य रहा है ।

दीक्षालेनेवाले सभी स्त्री-पुरुष ब्रह्मचर्य की साधना का ध्येय लेकर ही दीक्षित होते हैं—यह पूर्ण तथ्य नहीं । कुछ ऐसे भी होते हैं, जो गृहक्लेश या परस्पर असंतोष आदि के कारण से दीक्षित होते हैं । यदि ऐसे असन्तुष्ट दीक्षित स्त्री-पुरुष कहीं एकान्त पा जाएँ, तो उनमें परस्पर कैसी वातचीत होती है और किस प्रकार उनका पतन होता है—इसका तादृश चित्रण भो निशीथ में है<sup>२</sup> । उसे पढ़कर लेखक की मानस-शास्त्र में कुशलता ज्ञात होती है, और सहसा वौद्ध थेर-थेरी गाथा स्मृतिपट पर आ जाती है । इस तरह के दुर्बल साधकों को ऐसा अवसर ही न मिले, इसकी व्यवस्था भो की गई है ।

नपुंसक को दीक्षा देने का निषेध है ( नि० गा० ३५०५ ) । अतएव, आचार्य इस विषय की विविध परीक्षा करते रहे, ( नि० गा० ३५६४ से वृ० गा० ५१४० से ), किन्तु सावधानी रखने पर भी नपुंसक व्यक्ति संघ में दीक्षित होते ही रहे । ऐसे व्यक्तियों द्वारा संघ और समाज में जो संयम-विराधना होती थी, भाष्यकार और चूर्णिकार ने उसका तादृश चित्रण उपस्थित किया है । वह ऐसा है कि आज पढ़ा भी नहीं जा सकता, तो फिर उसके वर्णन का अवसर तो यहाँ है ही कहाँ । साथ में इतना अवश्य कहना चाहिए कि गीतार्थ आचार्यों ने संघ में अवांछनीय व्यक्ति प्रविष्ट न हो जाएँ, इस ओर पूरा ध्यान दिया है । आधुनिक काल की तरह जिस-किसी को मूँड लेने की प्रवृत्ति नहीं थी—यह भी स्पष्ट होता है ।

स्त्री और पुरुष के शारीरिक रचना-भेद के कारण, ब्रह्मचर्य की रक्षा की दृष्टि से, दोनों के नियमों में कहीं-कहीं भेद करना पड़ता है<sup>३</sup> । जिस वस्तु की अनुज्ञा भिक्षु के लिये है, भिक्षुणी के लिये उसका निषेध है । ऐसा तभी हो सकता है, जब कि मार्ग-दर्शक एक-एक वस्तु के विषय में सूक्ष्म निरीक्षण करे और स्वयं सतत जागरूक रहे । निशीथ में ऐसे सूक्ष्म निरीक्षण की कमी नहीं है । सामान्य सी मालूम देने वाली वस्तु में भी ब्रह्मचर्यभंग की संभावना किस प्रकार हो सकती है—इस बात को जाने बिना, निशीथ में जो फलविषयक विधि-निषेध बताये गये हैं, वे कथमपि संभव नहीं थे ( नि० गा० ४६०८ से वृ० गा० १०४५ से ) ।

सार इतना ही है कि ब्रह्मचर्य की साधना, संघ में रहकर, अत्यंत कठिन है । और उक्त कठिनता का ज्ञान स्वयं महावीर को भी था<sup>४</sup> । आगे चलकर परंपरा से इसकी उत्तरोत्तर

१. नि० गा० ३७६; ५१६ से; ५८४ से; वृ० ४६३७ से; नि० ६१० से; नि० गा० १७४५ से; वृ० गा० ३७६८ से । नि० गा० २२३० से ।

२. नि० गा० १६८३-१६८५; ५६२१; वृ० गा० ३७०७-३७१७ । नि० गा० १७८८ से । गुमलिपि में किस प्रकार पत्र लिखे जाते थे, उदाहरण के लिये, देखो गा० २२६३-५ ।

३. साध्वी स्त्री किस प्रकार वस्त्र आदि देकर आकृष्ट की जाती थी, तथा स्त्री-प्रकृति किस प्रकार शीघ्र फिसलने वाली होती है — इसके लिये, देखो—नि० गा० ५०७३-८२ ।

४. सूत्रकृतांग प्रथम श्रुत स्कंध का चतुर्थ अध्यायन—'द्वितीपरिण्या' विधेयतः द्रष्टव्य है ।



पुष्टि होती गई है। अवश्य ही ब्रह्मचर्य साधना कठिन है, तथापि इस दिशा में मार्ग ढूँढ निकालने के प्रयत्न भी सतत होते रहे हैं। मन जब तक कार्य-शून्य रहता है, तभी तक कामसंकल्प सताते हैं; किन्तु मन को यदि अन्यत्र किसी कार्य में लगा दिया जाय तो काम-विजय सरल हो जाता है—इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को एक गांव की लड़की के दृष्टान्त से बहुत सुन्दर रीति से निरूपित किया है। वह लड़की निठल्ली थी, तो अपने रूप के शृंगार में रत रहती थी। फलतः उसे काम ने सताया। समझदार वृद्धा ने यही किया कि घर के कोठार को संभालने का सारा काम उसके सुपुर्द कर दिया। दिन भर कार्य-व्यस्त रहने के कारण वह रात में भी थकावट अनुभव करने लगी, और उसका वह काम संकल्प कहाँ चला गया, उसे पता ही नहीं लगा। इसी प्रकार, गीतार्थ साधु भी, यदि दिनभर अध्ययन अध्यापन में लगा रहे, तो उसके लिये काम पर विजय पाना अत्यन्त सरल हो जाता है ( नि० गा० ५७४ चूर्णि )।

### मन्त्र प्रयोग के अपवाद :

मूल निशीथ में मंत्र, तंत्र, ज्योतिष आदि के प्रयोग करने पर प्रायश्चित्त का विधान है<sup>१</sup>। यह इसलिये आवश्यक था कि उक्त मंत्र आदि आजीविका के साधन रूप से प्रयुक्त होते रहे हैं। एक मात्र भिक्षा-चर्या से ही जीवन यापन का व्रत करने वालों के लिये किसी भी प्रकार के आजीविका-सम्बन्धी साधनों का निषेध होने से मंत्रादि का प्रयोग भी निषिद्ध माना जाय—यह स्वाभाविक है।

किन्तु संघवद्ध साधकों के लिए उक्त निषेध का पालन कठिन हो गया। मंत्र की शक्ति है या नहीं, यह प्रश्न गौण है। उक्त चर्चा का यहाँ केवल इतना ही तात्पर्य है कि जिस साधु-समुदाय में मन्त्र-प्रयोग निषिद्ध माना गया था, उसी समुदाय में उसका प्रयोग परिस्थिति-वश करना पड़ा।

अहिंसा-हिंसा की चर्चा करते समय, इस बात का निर्देश कर आए हैं कि मन्त्रप्रयोग से साधुओं द्वारा मनुष्य-हत्या भी की जाती थी। यहाँ उसके अलावा कुछ अन्य बातों का निर्देश करना है।

विद्या-साधना श्मशान में होती थी, और उसमें हिंसा को स्थान था। जैनों के विषय में तो यह प्रसिद्धि रही है कि साधु तो क्या, एक गृहस्थ भी छोटी-सी चींटी तक की हिंसा करने में डरता है। अतएव विद्या-साधन में जैनों की प्रवृत्ति कम ही रही होगी—ऐसा स्पष्ट होता है। फिर भी कुछ लोग विद्या-साधन करते थे, यह निश्चित है।

विद्यासाधना में साधक को असंदिग्ध रहना चाहिए, अन्यथा वह सिद्ध नहीं होती। यह बात भी निशीथ में एक जैन श्रावक के उदाहरण से स्पष्ट की गई है (नि० गा० २४ चूर्णि)।

निशीथ में तालुग्वाढणी = ताला खोल देना, ऊसोवणी = नींद ला देना, अंजनविज्ञा = आँख में अंजन लगाकर अदृश्य हो जाना ( नि० गा० ३४७ चूर्णि ), थंभणीविज्ञा = किसी को

१. निशीथ में देखो, ११. ६६-६७, गा० ३३३६ से। उ० १३. १७-२७; उ० १३. ६६; १३. ७४-७८।

स्तब्ध कर देना (नि० गा० ४६२ चू०); आभोगणी = भविष्य जान लेना (नि० गा० २५७२ चू०); ओणामणी = वृक्षादि को नीचा कर देना, उणामणी = किसी वस्तु को ऊँचा कर देना ( नि० गा० १३ ); माणसी = मनोवांछित प्राप्त करना, ( नि० गा० ४०६ चू० ), आदि विद्याओं का उल्लेख मिलता है । इन विद्याओं की साधना और प्रयोग का उद्देश्य विरोधी को परास्त करके भक्तपान, ग्रीषधि, वसति आदि प्राप्त करना तथा राजा आदि को अनुकूल करना, आदि हैं । मन्त्रों का प्रयोग वशीकरण, उच्चाटन, अभिचार और अपहृत वस्तु की पुनः प्राप्ति आदि के लिये होता था (नि० गा० ३४७, ४६०, १५७६, १६७,) । ग्रीषधि आदि के लिये धातुवायुप्रयोग = चाँदी-सोना आदि धातुओं का निर्माण करने के प्रयोग (नि० गा० ३६८, १५७६) किये जाते थे । निमित्त ( निमित्त सम्बन्धी प्रायश्चित्त के लिये देखो, नि० सू० १.७-८ ) का प्रयोग करके राजा आदि को वश किया जाता था तथा किस आकृति के पात्र रखना—इसका निर्णय भी निमित्त से किया जाता था ( नि० गा० ४६०, १५७६, ७५३ ) । अंगुष्ठ प्रश्न, स्वप्न प्रश्न आदि प्रश्नविद्या के प्रयोग भी साधु करने लग गये थे ( नि० गा० १३६६ ) ।

चोरी गई वस्तु की प्राप्ति तथा आहार और निवास पाने के लिए भी विद्या, मंत्र, चूर्ण, निमित्त आदि का प्रयोग होता था ( नि० गा० ८६४, १३५८, १३६६, २३६३ ) । जोषीपाहुड-नामक शास्त्र के आधार पर अश्व आदि के निर्माण करने का भी उल्लेख है (नि० गा० १८०४) । यदि किसी राजकुमार को साधु बना लेने पर राज-भय उपस्थित हो जाए, तो राजकुमार को अन्तर्धान करने के लिये मंत्र, अंजन आदि के उपयोग का विधान है । और यदि ऐसा संभव न हो तो राजकुमार को साध्वी के उपाश्रय में भी छिपाया जा सकता है—(नि० गा० १७८३ चू०) ।

अपनी बहन को छुड़ाने के लिये कालक आचार्य शकों को लाये और गर्दभीविद्या का प्रयोग करके शकों द्वारा गर्दभिल्ल को हराया—यह कथा भी, जो अब काफी प्रसिद्ध है, निशीथ में दी गई है (नि० गा० २८६० चू०) । संयमी पुरुषों के लिये भ्रष्ट साधुओं तथा गृहस्थों की सेवा निषिद्ध है; किन्तु मन्त्र तन्त्र आदि सीखने के लिये अपवाद मार्ग है कि साधु, पासत्या और गृहस्थ की भी सेवा कर सकता है ( नि० गा० ३१० चू० )

कभी-कभी निमित्त प्रयोग करने वालों की परीक्षा भी ली जाती थी । कुछ अच्छे निमित्त-शास्त्री उसमें उत्तीर्ण होते थे । चूर्णि में इसकी एक रोचक कथा है । किन्तु यह स्वीकार किया गया है कि छप्पस्थ सदैव सच्चा निमित्त नहीं बता सकता और उसके दुष्परिणाम होने की सभावना भी है । ( नि० गा० ४४०५-८ ) अतएव साधु निमित्त विद्या का प्रयोग न करे ।

## सांस्कृतिक सामग्री :

निशीथ सूत्र और उसकी टीकानुटीकाओं में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विविध विषयों की बहुमूल्य सामग्री बिखरी हुई मिलती है<sup>१</sup> । उसका समग्र भाव से निरूपण करना, तो यहाँ इष्ट नहीं है । केवल कुछ ही विषयों का निर्देश करना है, जिससे कि विद्वानों का ध्यान इस ग्रन्थ की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हो सके ।

१. प्रस्तुत सामग्री का संकलन निशीथ के परिशिष्ट बनने के पहले ही किया गया है । केवल प्रथम भाग का परिशिष्ट मेरे समक्ष है । अतएव यहाँ कुछ ही बातों का निर्देश संभव है ।

राजाओं द्वारा किये जाने वाले विविध उत्सव (नि० सू० न. १४), राजाओं की विविध शालाएँ (न. १५-१६; ६. ७), उनका भोजन<sup>१</sup> और दानपिंड (न. १७-१८), राजा के तीन प्रकार के अन्तःपुर (गा० २५१४), अन्तःपुर के अधिकारी (गा० २५१६), राजा के विविध भक्तपिंड (नि० सू० ६.६), चंपा आदि दश राजधानियाँ (६.१६), राजाओं के आमोद प्रमोद (६.२१), उनके विविध पशु और पशुपालक (६.२२), अश्वदि के दमक, मिठ और आरोह (६. २३-२५), राजा के अनुचर (६.२६) और दास दासी<sup>२</sup> (६.२८) की रोचक गणना निशीथ में उपलब्ध है। टीकाओं में उन शब्दों की व्याख्या की गई है, जो राजनैतिक विषय में संशोधन करने वालों के लिये बहुत उपयोगी सिद्ध होंगी।

राजा की सवारी का आँखों देखा रोचक वर्णन है (नि० गा० १२६ चू०)। ग्राममहत्तर, राष्ट्रमहत्तर, भोजिक आदि ग्रामादि के प्रमुख अधिकारी और राजा रक्षक आदि राज्य के अन्य विविध अधिकारियों की व्याख्या की गई है<sup>३</sup>। भाष्य के अनुसार राजा, अमात्य, पुरोहित, श्रेष्ठ और सेनापति—यह प्राधान्य का क्रम है। किन्तु चूर्णि में—राजा, युवराज, अमात्य, श्रेष्ठ और पुरोहित हैं (नि० गा० ६२६६)।

ग्राम, नगर, खेड, कव्वड, मडव, दोणमुह, जलपट्टण, थलपट्टण, आसम, णिवेसण, णिगम, संवाह और राजधानी—इन सन्निवेशों की स्पष्ट व्याख्या निशीथ में की गई है (नि० सू० ५. ३४ की चूर्णि)।

चक्रवर्ती के 'सीयवर' का वर्णन है कि वर्षा ऋतु में उसमें वायु और पानी नहीं आता, शीतकाल में वह उष्ण रहता है और ग्रीष्म में शीतल (नि० गा० २७६४ चू०)।

राजा श्रेणिक और अभय मंत्री की कई रोचक कथाएँ निशीथ में उपलब्ध हैं—उनसे पता चलता है कि श्रेणिक अपने युग का एक विद्यानुरागी राजा था और वह विद्या के लिये नीच जाति के लोगों का भी विनय करता था। अभय उनका पुत्र भी था और मंत्री भी। वह प्रत्युत्पन्न मति था, और विषम से विषम परिस्थिति में भी अपनी कार्यकुशलता के लिये विख्यात था। ये पिता-पुत्र दोनों ही जिनमतानुयायी थे<sup>४</sup>।

वीतिभय नगर—जो उज्जयिनी से ८० योजन दूर बताया गया है—के राजा उदयन और रानी प्रभावती की कथा रोचक ढंग से कही गई है। उसमें की कुछ घटनाएँ बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं, जैसे कि राणी के द्वारा उदयन को जैनधर्म में अनुरक्त बनाना, भगवान् वर्धमान की प्रतिमा का उज्जयिनी के राजा प्रद्योत के द्वारा अपहरण, उदयन का आक्रमण, मरुदेश में जला भाव के कारण उनके सैन्य की हानि, 'युष्कर' तीर्थ की उत्पत्ति, उदयन द्वारा स्वयं प्रद्योत को युद्ध के लिये आह्वान और प्रद्योत का पराजय तथा वंशधन, अंत में दोनों में पारस्परिक क्षमा,

१. राजा के विशेष आहार का नाम 'कल्लाणम' था—नि० गा० ५७२।

२. परदेशी जातियों के अनेक नाम इस सूची में हैं।

३. नि० ६८६, १३६५, १५६८; नि० सू० ४. ४०, ४३. ४६; गा० २८५२।

४. नि. गा० १३ चू०; २५ चू०; ३२ चू०।

आदि । (नि० गा० ३१८२-८६ चू० ) । उक्त कथा में भगवान महावीर की उनके जीवनकाल में ही सर्वात्मिकरूपित प्रतिमा बन गई थी और वह जीवन्तसामी प्रतिमा कही जाती थी, यह तथ्य ऐतिहासिक महत्त्व का है । तथा अहिंसा की दृष्टि से उदयन का प्रद्योत से यह कहना कि पूरे जनपद की हत्या न करके, हम दोनों ही परस्पर व्यक्तिगत युद्ध कर, क्यों न जय-पराजय का निर्णय कर लें—यह काफी ध्यान देने योग्य बात है ।

चन्द्रगुप्त से लेकर सम्प्रति तक के मौर्यवंश का इतिहास भी, निशीथ भाष्य और चूर्णि से, स्पष्टतः ज्ञात होता है । इसमें कई तथ्य महत्त्व के हैं । और सम्प्रति ने किस प्रकार आंध्र-द्रविड-कुडक्क-महाराष्ट्र आदि दक्षिण देशों में जैन धर्म का प्रचार किया, इसका ऐतिहासिक वर्णन मिलता है । साथ ही जैन आचार के विषय में तत्कालीन आचार्यों की क्या धारणा थी, इसका भी आभास मिलता है । आचार्यों में स्पष्ट रूप से दो दल थे—एक दल कठोर नियम पालन के प्रति तीव्र आग्रही था, जबकि दूसरा दल आचार को कुछ शिथिल करके भी शासन की प्रभावना के लिये उद्यत था<sup>१</sup> । चन्द्रगुप्त का मंत्री चाणक्य श्रावक था और वह जैन श्रमणों की शक्ति करता था । एक बार उसने सुबुद्धि मन्त्री के वध के लिये पुष्पों को विष-मिश्रित भी किया था । (नि० गा० ४४६३-५; ६१६) । चन्द्रगुप्त के वंश के विषय में जिन क्षत्रिय राजाओं को ज्ञान था कि मौर्यवंश तो मयूर-पोषकों का वंश है ( अतएव नीच है ), वे चन्द्रगुप्त की आज्ञा का पालन नहीं करते थे । चाणक्य ने मौर्यवंश की आज्ञा की धाक जमाने के उद्देश्य से आज्ञा-भंग के कारण एक समग्र गाम को जला दिया था—ऐसा भी उल्लेख है<sup>२</sup> ।

शालवाहण (शालिवाहन) राजा की स्तुति, भाष्यकार के समय, इस रूप में प्रचलित थी कि पृथ्वी के एक छोर पर हिमवन्त पर्वत है और दूसरी ओर राजा शालवाहण है—इसी कारण पृथ्वी स्थिर है (नि० गा० १५७१) । कालकाचार्य ने 'पतिट्टाण' नगर के 'सायवाहण' राजा के अनुरोध पर पञ्जोसवणा का दिन पंचमी के स्थान में चतुर्थी किया; यह ऐतिहासिक तथ्य भी निशीथ में उल्लिखित है । इसी प्रसंग में उज्जैणी के बलमित्र भानुमित्र का भी वर्णन है (नि० गा० ३१५३) ।

एक मुरुण्डराज का उल्लेख, निशीथ में, कितनी ही बार आया है । वह पादलित सूरि का समकालीन है (नि० गा० ४२१५, ४४६०) ।

महिद्धित नामक राजा की उपेक्षा के कारण उसकी कन्याएँ किस प्रकार शीलभ्रष्ट की गई—इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त दिया गया है (नि० गा० ४८५१) । यह कोई दुर्बल राजा होना चाहिए ।

युवराज के लिये अनुप्रभु शब्द का प्रयोग होता था (नि० गा० १३४८, ३३६२) । और हेम नामक एक राजकुमार के विषय में कहा गया है कि उसने इन्द्रमह के लिए एकत्र हुई नगर की रूपवती कन्याओं को अपने अन्तःपुर में रोक लिया था । नगरजनों के द्वारा राजा के पास

१. नि० गा० २१५४, ४४६३-६५; ५७४४-५८; वृ० गा० ३२७५-३२८६ ।

२. नि० गा० ५१३८-३९ । वृ० गा० ५४८८-८९ ।

शिकायत की जाने पर, राजा ने, पुत्र को दण्ड न देकर उलटा यह कहा कि क्या मेरा पुत्र तुम्हारा दामाद बनने योग्य नहीं ? (नि० गा० ३५७५)। एक प्रसंग में इस प्रथा का भी उल्लेख है कि यदि राजा राजनीति से अनभिज्ञ हो, व्यसनी हो, अन्तःपुर में ही पड़ा रहता हो, तो उसे गद्दी से उतार कर दूसरा राजा स्थापित कर देना चाहिए। (नि० गा० ४७६८) कालकाचार्य ने शकराजा को बुलाकर एक ऐसे ही अत्याचारी राजा गर्दभिल्ल को गद्दी से उतार दिया था (नि० गा० २८६०)। उक्त कथा में कालक आचार्य की बहन को उठा ले जाने की बात है। एक ऐसा भी उल्लेख है कि यदि कोई विरोधी राजा किसी राजा के आदरणीय प्रिय आचार्य को उठा ले जाए तो ऐसी दशा में शिष्य का क्या कर्तव्य है ? इससे पता चलता है कि जैन संघ ने जब राज्याश्रय लिया, तब इस प्रकार के प्रसंग भी उपस्थित होने लगे थे<sup>१</sup>। राजा आदि महर्षिद्विकों का महत्व साधुसंघ में भी माना गया है। अतएव साध्वीसंघ के ऊपर आपत्ति आने पर यदि कोई राजा दीक्षित साधू हुआ हो तो वह रक्षा करने के लिए साध्वी के उपाश्रय में जाकर ठहर सकता था (नि० गा० १७३५), जबकि दूसरों के लिये ऐसा करना निषिद्ध है।

मथुरा में यवनों के अस्तित्व का उल्लेख है (नि० गा० ३६८६)।

जब परचक्र का भय उपस्थित होने वाला हो, तब श्रमण को अपना स्थान परिवर्तित कर लेना चाहिए; अन्यथा प्रायश्चित्त करना पड़ता है। यह इसलिये आवश्यक था कि अव्यवस्था में धर्मपालन संभव नहीं माना गया (नि० गा० २३५७)। वैराज्य शब्द के अनेक अर्थों के लिए गा० ३३६०-६३ देखनी चाहिए। प्राचीनकाल में भी हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, भारत, एक देश माना जाता था; किन्तु साथ ही 'देश' शब्द की संकुचित व्याख्या भी थी। यही कारण था कि सिन्धु को भी देश कहा और कोंकण को भी देश कहा (नि० गा० ४२८)। जन्म के प्रदेश को देश और उससे बाह्य को परदेश कहा गया है। तथा भारत के विभिन्न जनपदों के आचार्यों को देशकथा के अन्तर्गत माना गया है (नि० गा० १२५)

देशों में कच्छ (गा० ३८६), सिन्धु (गा० ३८६, ४२८, १२२५, ३३३७, ५०००), सौराष्ट्र (गा० ६०, ३८६, २७७८, ४८०२)<sup>२</sup>, कोसल (गा० १२६, २००), लाट (गा० १२६, २७७८), मालव (गा० ८७४, १०३०, ३३४७), कोंकण (गा० १२६, २८६, ४२८), कुत्सेत्र (१०२६), मगध (गा० ३३४७, ५७३३), महाराष्ट्र (१२६, ३३३७), उत्तरापथ (१२६, २४७, ४५५), दक्षिणपथ (२७७८, ५०२८), रिणकंठ (सिंधदेश की ऊसरभूमि) (गा० १२२५), टक्क (८७४), दमिल (३३३७, ५७३१) गोखल्य (३३३७), कुडुक्क (३३३७), कीरडुक (३३ ७) ब्रह्मद्वीप, (४४७०), आभीर विषय (४४७०), तोसली (४६२३, ४६२४), सगविसय (५७३१), थूणा (५७३३) कुणाल (५७३३) इत्यादि का उल्लेख विविध प्रसंगों में है।

नगरियों में आनंदपुर का नाम आया है। आनंदपुर का दूसरा नाम अक्कल्यली भी था—ऐसा प्रतीत होता है (गा० ३३४४ चू०)। अयोध्या का दूसरा नाम साकेत भी है (गा० ३३४७)। मथुरानगरी में जैन साधुओं का विहार प्राचीन काल से होता आ रहा था। (गा० १२, १११६,

१. नि० गा० ३३८८-८९; वृ० गा० २७८६-८८।

२. कोहय (पाठांतर—कोउय) मंडलं छन्नउईं सुरट्टा (गा० ४८०२)। वृ० गा० ६४३।



३६८६, ५६६३)। आर्यमंगू—जैसे आचार्य का उल्लेख है कि वे जब मथुरा में आये, तब श्रावकों ने उनकी हर प्रकार से सेवा की थी। यह भी उल्लेख है कि स्तेनभय होने पर एक साधु ने सिंहनाद किया था। अवन्ती जनपद और उज्जैणी का उल्लेख भी ध्यान देने योग्य है (गा० १६, ३२, २६४-६, ५६६३, चू०)। आपादभूति, धूर्ताख्यान आदि कथानकों का स्थान उज्जैणी नगरी है। कोसंबी नगरी (गा० ५७४४, ५७३३) तथा चन्द्रगुप्त की राजधानी पाटलिपुत्र का भी उल्लेख है। पाटलिपुत्र का दूसरा नाम कुसुम्पुर भी है (गा० ४४६३)। सोपारक वंदरगाह का भी उल्लेख है (५१५६)। वहाँ णिगम अर्थात् वणिक् जनों के लिये कर नहीं था। एक बार राजा ने नया कर लगाना चाहा, तो वणिकों ने मर जाना पसंद किया; किन्तु कर देना स्वीकार नहीं किया (गा० ५१५६-७)। दशपुर नगर में आर्यरक्षितने वर्षावास किया था (४५३६) और वहीं मात्रक की अनुज्ञा दी थी। क्षितिप्रतिष्ठित (६०७६) नगर के जितशत्रुराजा ने घोषणा की कि म्लेच्छों का आक्रमण हो रहा है, अतः प्रजा दुर्ग का आश्रय ले ले। दंतपुर (गा० ६५७५), गिरिफुल्लिगा (गा० ४४६६), आदि नगरियों का उल्लेख है।

जनपदों के जीवन-वैविध्य की ओर लेखक ने इसलिये ध्यान दिलाया है कि कभी-कभी इस प्रकार के वैविध्य को लेकर लोग आपस में लड़ने लग जाते हैं, जो उचित नहीं है। अतएव देश-कथा का परित्याग करना चाहिए (नि० गा० १२७)।

जनपदों के जीवन-वैविध्य का निर्देश करते हुए जिन बातों का उल्लेख किया है, उनमें से कुछ का यहाँ निर्देश किया जाता है :—लाटदेश में मामा की पुत्री के साथ विवाह हो सकता है, किन्तु मौसी की पुत्री के साथ नहीं। कोसल देश में आहारभूमि को सर्व-प्रथम पानी से लित करते हैं, उस पर पद्मपत्र बिछाते हैं फिर पुष्पपूजा करते हैं, तदनन्तर करोडग, कटोरग, मंकुय, सिप्पी—आदि पात्र रखते हैं। भोजन की विधि में कोंकण में प्रथम पेया होता है, और उत्तरापथ में प्रथम सत्तु। लाट में जिसे 'कच्छ' कहा जाता है, महाराष्ट्र में उसे 'भोयड़ा' कहते हैं। भोयड़ा को स्त्रियाँ वचपन से ही वाँधती हैं और गर्भधारण करने के बाद उसे वर्जित करती हैं। वर्जन भी तब होता है, जबकि स्वजनों के संमिलन के बाद उसे पट दिया जाता है (गा० १२६ चूर्णि)। कोसल में शाल्योदन को नष्ट हो जाने के भय से शीतजल में छोड़ दिया जाता था (गा० २००)। उत्तरापथ में गर्मी अत्यन्त अधिक होती है, अतएव किवाड खुले रखने पड़ते हैं—(गा० २४७)। उत्तरापथ में वर्षा भी सतत होती है (८६०)। सिंधु देश का पुरुष तपस्या करने में समर्थ नहीं होता, किन्तु कोंकण देश का पुरुष तपस्या करने में अधिक सशक्त होता है (४२८)। टक्क मालव और सिन्धु देश के लोग स्वभाव से ही पुरुष वचन (कठोर) बोलने वाले होते हैं। (गा० ८७४) महाराष्ट्र में मद्य की दूकानों पर ध्वज बाँध दिया जाता था, ताकि भिक्षु लोग दूर से ही समझ जाएँ कि यहाँ भिक्षार्य नहीं जाना है (११५८)। शिल्लेव जाति अन्यत्र घृणित मानी है, किन्तु सिंध में नहीं (१६१६)। महाराष्ट्र में स्त्री के लिये माउगाम=मावृग्राम शब्द प्रयुक्त होता है (निशोथ उ० ६, सू० १ चू०) महाराष्ट्र में पुरुष के चिह्न को बाँधा जाता है (गा० ५२१)। लाट में 'इक्कुड' नामक वनस्पति प्रसिद्ध है। संभवतः यह सेमर (गुजराती-आकडा) है (गा० ८८७)। पूर्व देश से विक्रय के लिये लाया हुआ वस्त्र लाट में बहुमूल्य हो जाता है (गा० ६५१)। सौराष्ट्र में 'कांग' नामक धान्य मुलभ है (१२०४)।

लाट और सौराष्ट्र या दक्षिणापथ में कौन प्रचलित है ; इस विषय को लेकर लोग विवाद करते थे (गा० २७७८)। महाराष्ट्र में 'श्रमणपूजा' नामक एक विशेष उत्सव प्रचलित था (३१५३)। मगध में प्रस्थ को कुडव कहते हैं (गा० ५८१)। दक्षिणापथ में आठ कुडव-प्रमाण एक मण्डक पकाया जाता है (३४०३)<sup>१</sup>। दक्षिण पथ में लोहकार, कलाल जुगित कुल हैं जब कि अन्यत्र नहीं। लाट में खड, वरुड, चम्मकार आदि जुगित हैं (५७६०)। इत्यादि।

वस्त्र के मूल्य की चर्चा में कहा गया है कि जवन्य मूल्य १८ 'रूपक' और उत्कृष्ट मूल्य शतसहस्र 'रूपक' है—(नि० गा० ६५७; वृ० गा० ३८६०)। उस समय रूपक अर्थात् चांदी की कितने हो प्रकार की मुद्राएँ प्रचलित थीं, अतएव उनका तारतम्य दिखाना आवश्यक हो गया था। प्रस्तुत में, ये मुद्राएँ किस प्रदेश में प्रचलित थीं—यह अनुमान से जाना जा सकता है। मेरा अनुमान है कि ये मुद्राएँ उस समय सौराष्ट्र-गुजरात में प्रचलित रही होंगी; क्योंकि उत्तरापथ और दक्षिणापथ की मुद्राएँ अपने स्वयं के प्रदेश में उत्तरापथक या दक्षिणापथक या पाटिल-पुत्रक आदि नाम से नहीं पहचानी जा सकती। ये नाम अन्यत्र जाकर ही प्राप्त हो सकते हैं। उन सभी प्रचलित 'रूपक' मुद्राओं का तारतम्य निम्नानुसार दिखाया गया है :

१ रुवग (रूपक) = १ साभरक<sup>२</sup> (साहरक) अथवा दीविच्चग या दीविच्चिक (दीवत्यक)

१ उत्तरापथक = २ साभरक या २ दीविच्चग

१ पालिपुत्रक (कुसुमपुरग) = २ उत्तरापथक

= ४ साभरक

= २ नेलओ<sup>३</sup>

= ४ दक्षिणापथक<sup>४</sup>

वैद्य को दी जाने वाली फीस की चर्चा के प्रसंग में भी मुद्राओं के विषय में विशेष जानकारी प्राप्त होती है। वह इस प्रकार है—

'कौड़ी' (कपर्दक) जो उस समय मुद्रा के रूप में प्रचलित थी। उसे 'कवडुग' या 'कवडुग' कहते थे। ताँवे की वनी मुद्रा या 'नाणक' के विषय में कहा गया है कि वह दक्षिणापथ में 'काकिणी' नाम से प्रसिद्ध है। चाँदी के 'नाणक' को भिल्लमाल (?) कहते हैं; बृहद् भाष्य की टीका में इसे 'द्रम्म' कहा है। सुवर्ण 'नाणक' को पूर्व देश में 'दीणार' कहते हैं। पूर्व देश में एक अन्य प्रकार का नाणक भी प्रचलित था, जो 'कैवडिय' कहलाता था। यह किस

१. वृ० गा० २८५५ में व्याख्या-सम्बन्धी थोड़ा भेद है।

२. सौराष्ट्र के दक्षिण समुद्र में एक योजन दूर 'दीव' (द्वीप) था, वहाँ की मुद्रा — (गा० ६५८ चू०)  
आज भी यह प्रदेश इसी नाम से प्रसिद्ध है।

३. कांचीपुरी में प्रचलित मुद्रा।

४. नि० गा० ६५८-५६; वृ० ३८६१-६२।

धातु से बनता था—यह स्पष्ट नहीं है; किन्तु इसे सुवर्णमुद्रा से भिन्न रखा है और कहा गया है कि यह 'केवडिय' नाणक पूर्व देश में 'केतरात' (वृ० टी० 'केतरा') कहा जाता है<sup>१</sup>।

'दीणार' के विषय में यह भी सूचना मिलती है कि एक 'मयूरंक' नामक राजा था। उसने अपने चित्र को अंकित कर दीणार का प्रचलन किया था 'मयूरंको ग्राम राया। तेण मयूरंकेण अंकित्ता दीणारा आहणाविवा।'—नि० गा० ४३१६ चू०। भाष्य में उसे 'मोरखिब' कहा गया है।

राजा और धनिकों के यहाँ वस्त्रों को पालने के लिये धातुर्या रखी जाती थीं। भिक्षु लोग किस प्रकार विभिन्न धातुओं की निन्दा या प्रशंसा करके अपना काम बनाते थे—इसका रोचक वर्णन निम्नीय भाष्य में है। विभिन्न कार्यों के लिये नियुक्त पाँच प्रकार की धातुमाताओं का वर्णन भी कम रोचक नहीं है। यह प्रकरण मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है (नि० गा० ४३७५-८३)।

प्रातः काल होते ही लोग अपने-अपने काम में लगते हैं—इसका वर्णन करते हुए लिखा है :—लोग पानी के लिये जाते हैं, गायाँ और शकटों का गमनागमन शुरू हो जाता है, वणिक् कच्छ लगाकर व्यापार शुरू कर देता है, लुहार अग्नि जलाने लग जाता है, कुटुम्बी लोग खेत में जाते हैं, मच्छीमार मत्स्य पकड़ने के लिये चल देते हैं, खट्टिक भेंसे को लकड़ी से कूटने लग जाता है, कुछ कुत्तों को भगाते हैं, चोर धीरे से सरकने लग जाते हैं, माली टोकरी लेकर बगोचे में जाता है, पारदारिक चुपके से चल देता है, पथिक अपना रास्ता नापने लग जाते हैं और यांत्रिक अपने यंत्र चला देते हैं—(नि० गा० ५२२ चू०)।

शृंगार-सामग्री में नानाप्रकार की मालाओं का (उ० ७, सू० १ से उ० १७, सू० ३-५) तथा विविध अलंकारों का (उ० ७, सू० ७; उ० १७, सू० ६) परिगणन निम्नीय मूल में ही किया गया है। तांबूल में संखचुन्न, पुगफल, खदिर, कप्पूर, जाइपत्तिया—ये पाँच चीजें डालकर उसे सुस्वादु बनाया जाता था (गा० ३६६३ चू०)।

नाना प्रकार के वस्त्रों की सूची भी निम्नीय (उ० १७, सू० १३५-८) में है। देशी और परदेशी वस्त्रों की सूची, तथा चर्मवस्त्रों की केवल सूची ही नहीं, अपितु वस्त्रों के मूल्य की चर्चा भी विस्तार से की गई है (नि० उ० २, सू० २३; उ० १७, सू० १२; गा० ७५६ से; उ० ७, सू० ७ से)।

वस्त्रों को विविध प्रकार से सीया जाता था, इसका वर्णन भी दिया गया है—(नि० गा० ७८२)।

नाना प्रकार के जूतों का रोचक वर्णन भी निम्नीय में उपलब्ध होता है। उसे देखकर ऐसा लगता है—मानो लेखक की दृष्टि से जो भी वस्तु गुजरी, उसका यथार्थ चित्र खड़ा कर देने में वह पूर्णतः समर्थ है (नि० गा० ६१४ से)।

सेमर की रुई से भरे हुए तकिये को 'नूली' कहते हैं। रुई से भरा हुआ, जो मस्तक के नीचे रखा जाता है, वह 'उपधान' कहा जाता है। उपधान के ऊपर गंडप्रदेश में रखने के



लिये 'उपधानिका', घुटनों के लिये 'आलिङ्गणी', तथा चर्म वस्त्रकृत और रुई से पूर्ण उपधान-विशेष को 'मसूरक' कहा जाता है (नि० गा० ४००१) ।

कुम्भकार की पाँच प्रकार की शालाओं का वर्णन है—जहाँ भांड वेचे जाएँ वह पण्यशाला, जहाँ भांड सुरक्षित रखे जाएँ वह भंडशाला, जहाँ कुम्भकार भांड बनाता है वह कम्मशाला, जहाँ पकाये जाते हैं वह पण्यशाला (पचनशाला), और जहाँ वह अपना इन्धन एकत्र रखता है वह इंधनशाला है (नि० गा० ५३६१) ।

इसी प्रकार बहुत से अन्य शब्दों की व्याख्या भी दी गई है। जैसे—जहाँ लोग उजाणी के लिये जाते हैं, या जो शहर के नजदीक का स्थान है वह उजाण-उद्यान कहलाता है। जो राजा के निर्गमन का स्थान हो वह णिजाणिया, जो नगर से बाहर निकलने का स्थान हो वह 'णिजाण' होता है। उजाण और णिजाण में बने हुए गृह क्रमशः उजाणगिह और णिजाणगिह कहलाते हैं। नगर के प्राकार में 'अट्टालग' होता है। प्राकार के नीचे आधे हाथ में बने रथमार्ग को 'चरिया' और बलानक को 'द्वार' कहते हैं। प्राकार के दो द्वारों के बीच एक 'गोपुर' होता है। नीचे से विशाल किन्तु ऊपर-ऊपर संवर्धित जो हो, वह 'कूडागार' है। धान्य रखने का स्थान 'कोट्टागार' (कोठा) कहा जाता है। दर्भ आदि वृण रखने का स्थान, जो नीचे की ओर खुला रहता है, 'तण्यशाला' है। बीच में दीवालें न हों तो 'साला' और दीवालें हों तो 'गिह' होता है। अश्वदि के लिये 'शाला' और 'गिह', दोनों का प्रबन्ध होता था। इस प्रकार निवास-सम्बन्धी अनेक तथ्य निशीथ से ज्ञात होते हैं ( नि० ३० ८. सू० २ से तथा चूर्णि )। 'मडग गिह'—'मृतकगृह' का भी उल्लेख है। म्लेच्छ लोग मृतक को जलाते नहीं, किन्तु घर के भीतर रखते हैं। उस घर का नाम 'मडगगिह' है। मृतक को जलाने के बाद जब तक उसकी राख का पुंज नहीं बनाया जाता, तब तक वह 'मडगद्वार' है। मृतक के ऊपर ईंटों की चिता बनाना, यह 'मडगधूम' या 'विचग' है। श्मशान में जहाँ मृतक लाकर रखा जाता है वह 'मडासय'—मृताश्रय है। मृतक के ऊपर बनाया गया देवकुल 'लेण' है (नि० ३० ३ सू० ७२; गा० १५३५, १५३६) ।

धार्मिक विश्वासों के कारण नाना प्रकार के गिरिपतन आदि के रूप में किए जाने वाले बालमरणों का भी विस्तृत वर्णन मिलता है—गा० ३८०२ से ।

निवासस्थान को कई प्रकार से संस्कृत किया जाता था—जैसे कि संस्थापन = गृह के किसी एक देश को गिरने से रोकना, लिपन = गोबर आदि से लीपना, परिक्रमं = गृह-भूमि का समीकरण, शीतकाल में द्वार को सँकड़े कर देना, गरमी के दिनों में चौड़े कर देना, वर्षा ऋतु में पानी जाने का रस्ता बनाना, इत्यादि विविध प्रक्रियाओं का वर्णन अतिविस्तृत रूप से दिया हुआ है—गा० २०५२ से ।

विविध उत्सवों में—तीर्थकरों की प्रतिमा की स्नानपूजा तथा रथयात्रा का ( गा० ११६४) निर्देश है। ये उत्सव वैशाख मास में होते थे (गा० २०२६)। भाद्र शुक्ला पंचमी के दिन जैनों का 'पयुषण' और सर्वसाधारणका 'इन्दमह' दोनों उत्सव एक साथ ही होने के कारण,

राजा के अनुरोध से कालकाचार्य ने चतुर्थी को पर्युपण किया। तथा महाराष्ट्र में उसी दिन को 'समणपूया' का उत्सव शुरू हुआ—यह ऐतिहासिक तथ्य बड़े महत्व का है (गा० ३१५३ चू०)। गिरिफुल्लिगा नगरी में इट्टगाछण = इट्टगा उत्सव होता था<sup>१</sup>। इट्टगा एक खाद्य पदार्थ है। उत्सव वाले दिन वह विशेष रूप से बनता था। एक श्रमण ने किस प्रकार तरकीब से इट्टगा प्राप्त की, इस सम्बन्ध में एक मनोवैज्ञानिक-साथ ही रोचक कथा निशीथ में दी हुई है (गा० ४४४६-५४)।

वाद्य, नृत्य तथा नाट्य के विविध प्रकारों का भी निर्देश है (५१००-१)।

भगवान् महावीर के समय में जैन धर्म में जातिवाद को प्रश्रय नहीं मिला था। हरिकेश जैसे चांडाल भी साधु होकर बहुमान प्राप्त करते थे। किन्तु निशीथ मूल तथा टीकोपटीकाओं के पढ़ने से प्रतीत होता है कि जैन श्रमणों ने जातिवाद को पुनः अपना लिया है। निशीथ सूत्र में ठवणाकुल अथवा अभोज्यकुल में भिक्षा लेने के लिये जाने का निषेध है (नि० सू० ४. २२)। इसी प्रकार दुग्धित कुल से संपर्क का भी निषेध है (नि० सू० १६. २७-३२)। कर्म, शिल्प और जाति से ठवणाकुल तीन प्रकार के हैं (१) कर्म के कारण—गृहाणिया (नापित), सोहका = शोधका (धोबी ?), मोरपोसक (मयूरपोपक); (२) शिल्प के कारण—हेट्टगहावित्ता, तेरिमा, पयकर, गिल्लेवा; (३) जाति के कारण—पोण (चांडाल), डोम (डोम), मोगत्तिय। ये सभी जुंगित-दुग्धित-जुगुप्सित कहे गये हैं (नि० गा० १६१८)।

लोकानुसरण के कारण ही लोक में हीन समझे जाने वाले कुलों में भिक्षा त्याज्य समझी गई है। अन्यथा लोक में जैन शासन की निन्दा होती है और जैन श्रमण भी कापालिक की तरह जुगुप्सित समझे जाते हैं<sup>२</sup>। परन्तु, इसका यह अर्थ नहीं कि जैन श्रमणों में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही दीक्षित होते थे। ऐसे भी उदाहरण हैं, जिनमें कुम्भकार, कुटुम्बरी और आभीर को भी दीक्षा दी गई है (नि० गा० १५, १३६, १३८)। धर्म के क्षेत्र में जाति का नहीं, किन्तु भाव का अधिक महत्व है—इस तथ्य को शिवभक्त पुलिंद और एक ब्राह्मण की कथा के द्वारा प्रकट किया गया है (नि० गा० १४)।

भाष्य में शवर और पुलिंद, जो प्रायः नग्न रहते थे और निर्लज्ज थे, उनका आचार्यो को देखकर कुतूहल और तल्लन्य दोषों की ओर संकेत है (नि० गा० ५३१६)।

जुंगितकुल के व्यक्ति को दीक्षा देने का भी निषेध है। इस प्रसंग में जुंगित के चार प्रकार बताये गये हैं। पूर्वोक्त तीन जुंगितों के अतिरिक्त शरीर-जुंगित भी गिना गया है<sup>३</sup>।

१. छण और उत्सव में यह भेद है कि जिसमें मुख्य रूप से विविध भोजन सामग्री बनती है वह छण है<sup>१</sup> तथा जिसमें भोजन के उपरांत लोग प्रलंघित होकर, उद्यान आदि में जाकर, मित्रों के साथ फी<sup>१</sup> आदि करते हैं, वह उत्सव है (गा० ५२७६ चू०)।

२. नि० गा० १६२२-२८, अस्वाध्याय की मान्यता में भी लोकानुसरण की ही दृष्टि मुख्य रही<sup>१</sup> गा० ६१७१-७६।

३. नि० गा० ३७०६, हस्त पादादि की विकलता आदि के कारण शरीर-जुंगित होत<sup>१</sup> गा० ३७०६।



( ४ ) 'श्रौदरिक' वह सार्थ होता था, जो अपने रुपये लेकर चलता था, और जहाँ आवश्यकता होती, पास के सुरक्षित धन से ही खा-पी लेता था । अथवा 'भोजन-सामग्री' अपने साथ रखने वाले को भी श्रौदरिक कहा गया है । ये व्यापारार्थ यात्रा करने वालों के सार्थ हैं ।

( ५ ) 'कप्यडिय' अर्थात् भिक्षुकों का सार्थ । यह भिक्षाचर्या करके अपनी आजीविका किया करता था ।

सार्थ में मोदकादि पक्कान्न तथा घी, तेल, गुड, चावल, गेहूँ आदि नानाविध धान्य का संग्रह रखा जाता था । और विक्रय के लिये कुंकुम, कस्तूरी, तगर, पत्तचोय, हिंगु, शंखलोय आदि वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में रहती थीं । (नि० गा० ५६६४; वृ० गा० ३०७२) । निशीथ में सार्थ से सम्बन्धित नाना प्रकार की रोचक सामग्री विस्तार से वर्णित है, जिसका संबंध सार्थ के साथ विहार-यात्रा करने वाले श्रमणों से है ।

अनेक प्रकार की नौकाओं का विवरण भी निशीथ की अपनी एक विशेषता है । एक स्थान पर लिखा है कि तेयालग (आधुनिक वेरावल) पट्टण से वारवई (द्वारका) पर्यन्त समुद्र में नौकाएँ चलती थीं । ये नौकाएँ, अन्यत्र नदी आदि के जल में चलने वाली नौकाओं से भिन्न प्रकार की थीं । नदी आदि के जल में चलने वाली नौकाएँ तीन प्रकार की थीं :—

( १ ) श्रोयाण—जो अनुस्रोतगामिनी होती थीं ।

( २ ) उज्जाण—जो प्रतिस्रोतगामिनी होती थीं ।

( ३ ) तिरिच्छसंताण्णी—जो एक किनारे से दूसरे किनारे को जाती थीं ।

—( नि० गा० १८३ )

जल-संतरण के लिये नौका के अतिरिक्त अन्य प्रकार के साधन भी थे; जैसे—कुम्भ = लकड़ी का चौखटा बनाकर उसके चारों कोनों में घड़े बाँध दिए जाते थे; दत्ति = दृष्टिक, वायु से भरी हुई मशकें; तुम्ब = मछली पकड़ने के जाल के समान जाल बनाकर उसमें कुछ तुम्बे भर दिए जाते थे और इस तुम्बों की गठरी पर संतरण किया जाता था; उडुप अथवा कोट्टिम्य = जो लकड़ियों को बाँधकर बनाया जाता है; पण्णि = पण्णि नामक लताओं से बने हुए दो बड़े टोकरो को परस्पर बाँधकर उस पर बैठकर संतरण होता था—(नि० गा० १८५, १६१, २३७, ४२०६) । नौकामें छेद हो जाने पर उसे किस प्रकार बंद किया जाता था, इसका वर्णन भी महत्वपूर्ण है । इस प्रसंग में बताया गया है कि मुंज को या दर्भ को अथवा पीपल आदि वृक्ष की छाल को मिट्टी के साथ कूट कर जो पिंड बनाया जाता था, वह 'कुट्टविंद' कहा जाता था और उससे नौका का छेद बंद किया जाता था । अथवा वृक्ष के टुकड़ों के साथ मिट्टी को कूट कर जो पिंड बनाया जाता था, उसे 'चेलमट्टिया' कहते थे । वह भी नौका के छेद को बंद करने के काम में आता था ( गा० ६०१७ ) । नौका-संबंधी अन्य जानकारी भी दी गई है ( नि० गा० ६० १२-२३ )

भगवान् महावीरने तो अनार्य देश में भी विहार किया था; किन्तु निशीथ सूत्र में विरूप, दस्यु, अनार्य, म्लेच्छ और प्रात्यंतिक देश में विहार का निषेध है ( नि० सू० १६, २६ ) । उक्त सूत्र की व्याख्या में तत्कालीन समाज में प्रचलित आर्य-अनार्य-सम्बन्धी मान्यता की सूचना मिलती है ।

शक-यवनादि विरूप हैं; क्योंकि वे आर्यों से वेश, भाषा और दृष्टि में भिन्न हैं। मगधादि माढ़े पच्चीस<sup>१</sup> देशों की सीमा के बाहर रहने वाले अनार्य प्रात्यंतिक हैं। दांत से काटने वाले दस्यु हैं और हिंसादि अकार्य करने वाले अनार्य हैं ( नि० गा० ५७२७ )। और जो अव्यक्त तथा अस्पष्ट भाषा बोलते हैं, वे मिलवल्—म्लेच्छ हैं ( गा० ५७२८ )। आंध्र और द्रविड देश को स्पष्ट रूप से अनार्य कहा गया है। तथा शकों और यवनों के देश को भी अनार्य देश कहा है (५७३१)।

पूर्व में मगध, दक्षिण में कोसंबी, पश्चिम में थूणाविसय और उत्तर में कुणालाविसय—यह आर्य देश की मर्यादा थी। उससे बाहर अनार्य देश माना जाता था ( गा० ५७३३ )।

निम्नस्तर के लोग आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त गरीब मालूम होते हैं; परिणामस्वरूप उन्हें धनिकों की नौकरी ही नहीं, कभी-कभी दासता भी स्वीकार करनी पड़ती थी। शिल्पादि सीखने के लिये गुरु को द्रव्य दिया जाता था। जो ऐसा करने में असमर्थ होते, वे शिक्षण-काल पर्यन्त, अथवा उससे अधिक काल तक के लिये भी गुरु से अपने को अवबद्ध कर लेते थे ( ओवद्ध ) ( नि० गा० ३७१२ )। अर्थात् उतने समय तक वे गुरु का ही कार्य कर सकते थे, अन्य का नहीं। गुरु की कमाई में से ओवद्ध (अवबद्ध) को कुछ भी नहीं मिलता था। किन्तु भृतक=नौकर को अपनी नौकरी के लिये भृति-वेतन मिलता था ( नि० गा० ३७१४ और ३७१७ की चूर्णि )।

भृतक-नौकर चार प्रकार के होते थे :

( १ ) दिवसभयग—दिवस भृतक—प्रतिदिन की मजदूरी पर काम करने वाले।

( २ ) यात्राभृतक—यात्रापर्यंत साथ देकर नियत द्रव्य पाने वाले। ये यात्रा में केवल साथ देते थे, या काम भी करते थे। और इनकी भृति तदनुसार नियत होती थी, जो यात्रा समाप्त होने पर ही मिलती थी।

( ३ ) कच्चाभृतक—ये जमीन खोदने का ठेका लेते थे। इन्हें उड्ड ( गुजराती-ओड<sup>२</sup> ) कहा जाता था।

( ४ ) उच्चतभयग—कोई निश्चित कार्य-विशेष नहीं, किन्तु नियत समय तक, मालिक, जो भी काम बताता, वह सब करना होता था। गुजराती में इसे 'उचक' काम करने वाला कहा जाता है ( नि० गा० ३७१८-२० )।

गार्यों की रक्षा के निमित्त गोपाल को दूध में से चतुर्थांश, या जितना भी आपस में निश्चित=तय हो जाता, मिलता था। यह प्रतिदिन भी ले लिया जाता था, या कई दिनों का मिलाकर एक साथ एक ही दिन भी ( नि० गा० ४५०१-२ चू० )।

दासों के भी कई भेद होते थे। जो गर्भ से ही दास बना लिया जाता था, वह ओगालित दास कहलाता था। खरीद कर बनाये जाने वाले दास को क्रीत दास कहते थे। ऋण

१. साढ़े पच्चीस देश की गणना के लिये, देखो-वृ० गा० ३२६३ की टीका।

२. सौराष्ट्र में आज भी इस नाम की एक जाति है, जो भूमि-खनन के कार्य में कुशल है।

से मुक्त न हो सकने पर जिसे दास कर्म करना पड़ता था, उसे 'अणण' कहते थे। दुर्भिक्ष के कारण भी लोग दासकर्म करने को तैयार हो जाते थे। राजा का अपराध करने पर दंडस्वरूप दास भी बनाये जाते थे ( नि० गा० ३६७६ )। कोसल के एक गीतार्थ आचार्य की वहन ने किसी से उछीना (उधार) तेल लिया था, किन्तु गरीबी के कारण, वह समय पर न लौटा सकी, परिणामस्वरूप वेचारी को तैलदाता की दासता स्वीकार करनी पड़ी। अन्ततः गीतार्थ आचार्य ने कुशलतापूर्वक मालिक से उक्त दासी की दीक्षा के लिये अनुज्ञा प्राप्त की और इस प्रकार वह दासता से मुक्त हो सकी। यह रोमांचक कथा भाष्य में दी गई है ( नि० गा० ४४८७—८९ )।

### श्रमण-ब्राह्मण :

श्रमण और ब्राह्मण का परस्पर वैर प्राचीनकाल से ही चला आता था<sup>१</sup>। वह निशीथ की टीकोपटीकाओं के काल में भी विद्यमान था ( नि० गा० १०८७ चू० ) अहिंसा के अपवादों की चर्चा करते समय, श्रमण द्वारा, ब्राह्मणों की राजसभा में की गई हिंसा का उल्लेख किया जा चुका है। ब्राह्मणों के लिये चूर्णि में प्रायः सर्वत्र 'धिज्जातीय' ( नि० गा० १९, ३२२, ४८७, ४४४१ ) शब्द का प्रयोग किया गया है। जहाँ ब्राह्मणों का प्रभुत्व हो, वहाँ श्रमण अपवादस्वरूप यह झूठ भी बोलते थे कि हम कमंडल (कमढग) में भोजन करते हैं—ऐसी अनुज्ञा है ( नि० गा० ३२२ )। श्रमणों में भी पारस्परिक सद्भाव नहीं था ( नि० सू० २.४० )। बौद्धभिक्षुओं को दान देने से लाभ नहीं होता है, ऐसी मान्यता थी। किन्तु ऐसा कहने से यदि कहीं यह भय होता कि बौद्ध लोग त्रास देंगे, तो अपवाद से यह भी कह दिया जाता था कि दिया हुआ दान व्यर्थ नहीं जाता है ( नि० गा० ३२३ )।

आज के श्वेताम्बर, संभवतः, उन दिनों 'सेयपड' या 'सेयमिक्खु' ( नि० गा० २५७३ चू० ) के नाम से प्रसिद्ध रहे होंगे ( नि० गा० २१४, १४७३ चू० )। श्रमणवर्ग के अन्दर पासत्या अर्थात् शिथिलाचारी साधुओं का भी वर्ग-विशेष था। इसके अतिरिक्त सारूवी और सिद्धपुत्र—विद्वपुत्रियों के वर्ग भी थे। साधुओं की तरह वस्त्र और दंड धारण करने वाले, किन्तु कच्छ नहीं बाँधने वाले सारूवी होते थे। ये लोग भार्या नहीं रखते थे ( नि० गा० ४५८७; ५५४८, ६२६६ )। इनमें चारित्र्य नहीं होता था, मात्र साधुवेश था ( नि० गा० ४६०२ चू० )। सिद्धपुत्र गृहस्थ होते थे और वे दो प्रकार के थे—सभार्यक और अभार्यक<sup>२</sup>। ये सिद्धपुत्र नियमतः शुक्लांबरधर होते थे। उस्तरे से मुण्डन कराते थे, कुच्छ शिखा रखते, और कुच्छ नहीं रखते थे<sup>३</sup>। ये शुक्लांबरधर सिद्धपुत्र, संभवतः 'सेयवड' वर्ग से पतित, या उससे निम्न श्रेणी के लोग थे, परन्तु उनकी बाह्यवेशभूषा प्रायः साधु की तरह होती थी—( नि० गा० ५८६ )। आज जो श्वेताम्बरों में नाधु और यति वर्ग है, संभवतः ये दोनों, उक्त वर्ग द्वय के पुरोगामी रहे हों तो आश्चर्य नहीं। सिद्धपुत्रों के वर्ग से निम्न श्रेणी

१. उल्लेखनीय को उत्पत्ति के मूल में श्रमण-ब्राह्मण का पारस्परिक वैर ही कारण है—गा० ५७४०-३।

२. अभार्यक को मुँठ भी कहते थे—५५४८ चू०।

३. नि० गा० ३४६ चू०। गा० ५३८ चू०। गा० ५५४८ चू०। गा० ६२६६। चू० गा० २६०३। गा० ४५८७ में निता का विकल्प नहीं है।



में 'सावग' वर्ग था। ये 'सावग' = श्रावक दो प्रकार के थे—अगुव्रती और अनगुव्रती—जिन्होंने अगुव्रतों का स्वीकार नहीं किया है ( नि० गा० ३४६ चू० )। अगुव्रती को 'देशसावग' और अनगुव्रती को 'दंशणसावग' कहा जाता था ( नि० गा० १४२ चू० )।

मुण्डित मस्तक का दर्शन अमंगल है—ऐसी भावना भी ( नि० गा० २००५ चूर्णि ) सर्वसाधारण में घर कर गई थी। इसे भी श्रमण-द्वेष का ही कुफल समझना चाहिये।

श्रमण परम्परा में निर्ग्रन्थ, शाक्य, तापस, गेरु, और आजीवकों का समावेश होता था ( नि० गा० ४४२०; २०२० चू० )। निशीथ भाष्य और चूर्णि में अनेक मतों का उल्लेख है, जो उस युग में प्रचलित थे और जिनके साथ प्रायः जैन भिक्षुओं की टक्कर होती थी। इनमें वीद्ध, आजीवक और ब्राह्मण परिव्राजक मुख्य थे। वीद्धों के नाम विविध रूप से मिलते हैं—भिक्षुग, रत्तपड, तच्चणिय, सक्क आदि। ब्राह्मण परिव्राजकों में उलूक, कपिल, चरक, भागवत तापस, पंचगि-तावस, पंचगव्वासणिया, सुईवादी, दिसापोक्खिय, गोव्वया, ससरवख आदि मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त कापालिक, वैतुलिक, तडिय कप्पडिया आदि का भी उल्लेख है—देखो, नि० गा० १, २४, २६, ३२३, ३६७, ४६८, १४०४, १४४०, १४७३, १४७५, २३४३, ३३१०, ३३५४, ३३५८, ३७००, ४०२३, ४११२ चूर्णि के साथ। परिव्राजकों के उपकरणों का भी उल्लेख है—मत्त, दगवारग, गडुअग्र, आयमणी, लोट्टिया, उल्लंकग्र, वारग्र, चडुयं, कव्वय—गा० ४११३।

यक्षपूजा ( गा० ३४८६ ), रुद्रघर ( ६३८२ ) तथा भल्लीतीर्थ ( गा० २३४३ ) का भी उल्लेख है। भृगु कच्छ के एक साधु ने दक्षिणापथ में जाकर, जब एक भागवत के समक्ष, भल्ली तीर्थ के सम्बन्ध में यह कथा कही कि वासुदेव को किस प्रकार भाला लगा और वे मर गये, अनन्तर उनकी स्मृति में भल्लीतीर्थ की रचना हुई, तो भागवत सहसा रुष्ट हो गया और श्रमण को मारने के लिए तैयार हो गया। अन्ततः वह तभी शांत हुआ और क्षमा याचना की, जब स्वयं भल्लीतीर्थ देख आया।

जैनों ने उक्त मतांतरों को लौकिक धर्म कहा है। मूलतः वे अपने मत को ही लोकोत्तर धर्म मानते थे। महाभारत, रामायण आदि लौकिक शास्त्रों की असंगत बातों का मजाक भी उड़ाया है। इस सम्बन्ध में चूर्णिकार ने पाँच धूर्तों की एक रोचक कथा का उल्लेख किया है ( नि० गा० २६४-६ )। इतना ही नहीं, विरोधी मत को अनार्य भी कह दिया है ( ५७३२ )

जैन धर्म में भी पारस्परिक मतभेदों के कारण जो अनेक सम्प्रदाय-भेद उत्पन्न हुए, उन्हें 'निहह' कहा गया है, और उनका क्रमशः इतिहास भी दिया हुआ है ( गा० ५५६६-५६२६ )।

'पासंड' शब्द निशीथ भाष्य तक धार्मिक सम्प्रदाय के अर्थ में ही प्रचलित था। इसमें जैन और जैनैतर सभी मतों का समावेश होता था।

निशीथ में कई जैनाचार्यों के विषय में भी ज्ञातव्य सामग्री मिलती है। आर्यमंगु और ससुद्र के दृष्टान्त आहार-विषयक गृद्धि और विरक्ति के लिये दिये गये हैं ( गा० १११६ )। स्थूलभद्र के समय तक सभी जैन श्रमणों का आहार-विहार साथ था; अर्थात् सभी श्रमण परस्पर सांभोगिक

थे। स्थूलभद्र के दो शिष्य थे—आर्यमहागिरि और आर्य सुहृत्वी। आर्यमहागिरि ज्येष्ठ थे, किन्तु स्थूलभद्र ने आर्य सुहृत्वी को पट्टधर बनाया। फिर भी ये दोनों प्रीतिवश साथ ही विचरण करते रहे। सम्प्रति राजा ने, अपने पूर्वभव के गुरु जानकर भक्तिवश सुहृत्वी के लिये आहारादि का प्रबंध किया। इस प्रकार कुछ दिन तक सुहृत्वी और उनके शिष्य राजपिंड लेते रहे। आर्य महागिरि ने उन्हें सचेत भी किया, किन्तु सुहृत्वी न माने, फलतः उन्होंने सुहृत्वी के साथ आहार-विहार करना छोड़ दिया, अर्थात् वे असांभोगिक बना दिये गए। तत्पश्चात् सुहृत्वी ने जब मिथ्या दुष्कृत दिया, तभी दोनों का पूर्ववत् व्यवहार शुरू हो सका। तब से ही श्रमणों में सांभोगिक और विसंभोगिक, ऐसे दो वर्ग होने लगे (नि० गा० २१५३-२१५४ की चूर्णि)। यही भेद आगे चलकर श्वेताम्बर और दिगम्बर रूप से दृढ़ हुआ, ऐसा विद्वानों का अभिमत है।

आर्य रक्षित ने श्रमणों को, उपधि में मात्रक (पात्र) की अनुज्ञा दी। इसको लेकर भी संघ में काफी विवाद उठ खड़ा हुआ होगा; ऐसा निशीथ भाष्य को देखने पर लगता है। कुछ तो यहाँ तक कहने लगे थे कि यह तो स्पष्ट ही तीर्थंकर की आज्ञा का भंग है। किन्तु निशीथ भाष्य, जो स्थविर कल्प का अनुसरण करने वाला है, ऐसा कहने वालों को ही प्रायश्चित्त का भागी बताता है। आर्यरक्षित ने देशकाल को देखते हुए जो किया, उचित ही किया। इसमें तीर्थंकर की आज्ञाभंग जैसी कोई बात नहीं है। जिस पात्र में खाना, उसी का शीघ्र में भी उपयोग करना; यह लोक-विरुद्ध था। अतएव गच्छवासियों के लिये लोकाचार की दृष्टि से दो पृथक् पात्र रखने आवश्यक हो गये थे—ऐसा प्रतीत होता है; और उसी आवश्यकता की पूर्ति आचार्य आर्यरक्षित ने की ( नि० गा० ४५२८ से )।

**आचार्य :**

लाटाचार्य (११५०), आर्यखण्ड (२५८७), विष्णु (२५८७), पादलिप्त (४४६०), चंद्रसूत्र (६६१३) गोविंदवाचक (२७६६, ३४२७, ३५५६) आदि का उल्लेख भी निशीथ-भाष्य-चूर्णि में मिलता है।

**पुस्तक :**

पाँच प्रकार के पोत्थ्य—पुस्तकों का उल्लेख है। वे ये हैं—गंडी, कच्छमी, मुट्ठी, संपुट तथा छिन्नादी<sup>१</sup>। इनका विशेष परिचय मुनिराज श्री पुण्यविजयजी ने अपने 'भारतीय जैन श्रमण संस्कृति और लेखन कला' नामक निबन्ध में ( पृ० २२-२४ ) दिया है।

उपर्युक्त पाँचों ही प्रकार के पुस्तकों का रखना, श्रमणों के लिए, निषिद्ध था; क्योंकि उनके भीतर जीवों के प्रवेश की संभावना होने से प्राणातिपात की संभावना थी ( नि० गा० ४००० ) किन्तु जब यह देखा गया कि ऐसा करने में श्रुत का ही ह्रास होने लगा है, तब यह अपवाद करना पड़ा कि कालिक श्रुत = अंग ग्रन्थ<sup>२</sup> तथा नियुक्ति के संग्रह की दृष्टि से पाँचों प्रकार के पुस्तक रखे जा सकते हैं—( नि० गा० ४०२० )।

१. नि० गा० १४१६; ४००० सू० वृ० गा० ३८२२ टी०; ४०६६ ।

२. 'कालियसुयं' आधारादि पत्रकारस संग्रह—नि० गा० ६१८६ सू० ।



## कुछ शब्द :

भाषाशास्त्रियों के लिये कुछ विशिष्ट शब्दों के नमूने नीचे दिये जाते हैं, जो उनको प्रस्तुत ग्रन्थ के विशेष अध्ययन की ओर प्रेरित करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

वच्चगिह = पाखाना।

छाणहारिग = गोवर एकत्र करने वाला। 'छाण' शब्द आज भी गुजरात में इसी रूप में प्रचलित है।

छुरघरयं = छुरे का घर, हजाम के उस्तरे का घर।

खडखडेंत = गु० 'खडखडाट'।

चेल्लग = चेलो (गु०), शिष्य।

पुलिया = पूली (गु०) वृण की गठरी।

चुक्कति = चूक जाता है। गुजराती—चूक = भूल।

उड्हाह = वदनामी।

ढाली = शाखा।

लोटो = लोटो (गु०), लोटा।

वाडल्लग = पुतला।

रेल्लिया = पानी की बाढ़ का आ जाना; (गु० रेल)

मक्कोडग = (गु० मकोडा) बड़ी काली चींटी।

जूआ = जू (गु०);

उद्देहिया = (गु० उवई) दीमक।

कणिकका = (गु० कणिक) आटे का पिंड।

लंच = (गु० लांच) घूस।

उवैउ' = (गु० उंघ) निद्रा लेना।

मप्पक = (गु० माप) नाप।

कुहाड = (गु० कुहाडो) फरसा।

खड्हा = गड्हा (गु० खाडो) इत्यादि।

ये शब्द प्रथम भाग में आये हैं, और इन पर से यह सिद्ध होता है कि चूर्णिकार, सौराष्ट्र-गुजराती भाषा से परिचित थे।

इस प्रकार, प्रस्तुत में, दिग्दर्शन मात्र कराया गया है। इससे विद्वानों का ध्यान, प्रस्तुत ग्रन्थ की बहुमूल्य सामग्री की ओर गया, तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा।

आभार : .

प्रस्तुत निबन्ध की समाप्ति पर, मैं, संपादक मुनिद्वय तथा प्रकाशकों का आभार मानना भी अपना कर्तव्य समझता हूँ ; जिन्होंने प्रस्तुत परिचय के लेखन का अवसर देकर, मुझे निशीथ के स्वाध्याय का सु-अवसर प्रदान किया है। साथ ही, उन्हें लंबे काल तक प्रस्तुत परिचय की प्रतीक्षा करनी पड़ी, एतदर्थ क्षमा प्रार्थी भी हूँ।

वाराणसी—५ }  
ता० १३-३-५६ }

—दलसुख मालवणिया



# विषयानुक्रम

## षोडश उद्देशक

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१	पन्द्रहवें तथा सोलहवें उद्देशक का सम्बन्ध	५०६५	१
	सागारिक शय्या का निषेध		१-२६
	सागारिक शय्या की व्याख्या	५०६६	१
	सागारिक शय्या के भेद	५०६७	१
	सागारिक पद के निक्षेप	५०६८	१
	द्रव्य-निक्षेप	५०६६-५११२	२-४
	द्रव्य सागारिक के रूप, आभरण-विधि, वस्त्र, अलङ्कार, भोजन, गन्ध, आतोद्य, नाट्य, नाटक, गीत आदि प्रकार; उनका स्वरूप तथा तत्संबन्धी प्रायश्चित्त	५०६६-५१०२	२
	द्रव्यसागारिक वाले उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोषों का वर्णन	५१०३-५११२	३-४
	भाव निक्षेप	५११३-५२२७	५-२६
	भाव सागारिक का स्वरूप	५११३-५११४	५
	जनसाधारण, कौटुम्बिक और दण्डिक के स्वामित्व वाले भाव सागारिक अर्थात् दिव्य, मनुष्य और तिर्यञ्च सम्बन्धी रूप = प्रतिमा तथा रूप-सहगत का स्वरूप और उसके प्रकार	५११५	५
	दिव्य प्रतिमा का स्वरूप	५११६-५१६५	५-१६
	दिव्य प्रतिमा के प्रकार	५११७-५११८	५-६
	दिव्य प्रतिमा वाले उपाश्रय में निवास करने से स्थान और प्रतिसेवना-निमित्तक लगने वाले प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी प्रश्नोत्तर	५११९-५१३६	६-१०
	दिव्य प्रतिमा-युक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले आज्ञाभङ्ग आदि दोष और उनकी व्याख्या । आज्ञाभङ्ग पर सुस्तर दण्ड देने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का हटाना	५१३७-५१४३	६-११

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	देवतादि के सान्निध्यवाली दिव्य प्रतिमाओं से युक्त उपाश्रय में रहने से देवता की ओर से की जाने वाली परीक्षा, प्रत्यनीकता तथा भोगेच्छा के निमित्त से होने वाली चेष्टाएँ और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५१४४-५१४३	११-१३
	देवता के सान्निध्यवाली प्रतिमाओं के प्रकार	५१४४	१३
	प्रतिमाओं के सान्निध्यकारी देवता के सुखविजय, सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी अकरनैगम, रत्नदेवता आदि के उदाहरण	५१४५-५१५८	१३-१४
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्व वाली दिव्य स्त्री-प्रतिमाओं, प्रतिमा ही नहीं उनकी स्त्रियों, और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्तों की गुरुता, लघुता और उसके कारण	५१५६-५१६५	१५-१६
	मनुष्य-प्रतिमा का स्वरूप	५१६६-५१७६	१६-१६
	जनसाधारण आदि के स्वामित्ववाली मनुष्य-प्रतिमाओं के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमाओं वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५१६६-५१७६	१६-१८
	मनुष्य-स्त्री के सुखविजय-सुखमोच्य आदि चार प्रकार, उनके उदाहरण, दोष, प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी गुरुता-लघुता आदि	५१७७-५१७६	१६
	तिर्यञ्च प्रतिमा का स्वरूप	५१८०-५१६२	१६-२२
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्ववाली तिर्यञ्च प्रतिमाओं के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमा वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष एवं उनके प्रायश्चित्त	५१८०-५१८६	१६-२१
	तिर्यञ्च स्त्री के सुखविजय-सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी उदाहरण	५१६०-५१६२	२१-२२
	निर्ग्रन्थियों के लिए दिव्यादि स्त्री-प्रतिमा के स्थान में पुरुष-प्रतिमा की सूचना और कुक्कुरसेवी स्त्री का दृष्टान्त	५१६३	२२
	सागारिक शय्या-सम्बन्धी अपवाद और तद्विषयक चिलिमिलिका, निशिजागरण आदि यतना	५१६४-५१६६	२२-२३
	सागारिक शय्या का सामान्य वर्णन करने के अनन्तर श्रमण-श्रमणी के विभाग से विशेष वर्णन की प्रतिज्ञा	५१६७	२३
	श्रमणों को स्त्री-उपाश्रय में तथा श्रमणियों को पुरुष-उपाश्रय में रहने का निषेध एवं सजातीय उपाश्रय में रहने का विधान	५१६८	२३
	सूत्र-रचना-विषयक शङ्का और उसका समाधान	५१६६-५२०२	२३-२४
	निर्ग्रन्थ-विषयक सागारिक सूत्र की विस्तृत व्याख्या	५२०३-५२२२	२४-२८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सविकार पुरुष तथा नपुंसक का स्वरूप, उसके मध्यस्थ आदि चार प्रकार; तत्सम्बन्धित उपाश्रय में रहने से संयम-विराघनादि दोष और उनका प्रायश्चित्त । यदि कारणवश तथाकथित सागारिक उपाश्रय में रहना ही पड़े तो तत्सम्बन्धी यतना और अपवाद निर्ग्रन्थियों के लिए भी सागारिक शय्या सूत्र-सम्बन्धी निर्ग्रन्थपरक व्याख्या को ही यत्किंचित् परिवर्तन के साथ जान लेने की सूचना	५२०३-५२२२ ५२२३-५२२७	२४-२८ २८-२९
२	सोदक (जलसंयुक्त शय्या का निषेध सोदक शय्या की व्याख्या जल के शीत, उष्ण और प्रासुक-अप्रासुक विषयक चार भङ्ग और तत्सम्बन्धित उपाश्रय में रहने से अगीतार्थ को प्रायश्चित्त द्रव्य, क्षेत्र आदि के भेद से प्रासुक की व्याख्या उत्सर्ग तथा अपवाद-सम्बन्धी विस्तृत चर्चा अगीतार्थ-विषयक शङ्का-समाधान, उत्सर्ग-सूत्र, अपवादसूत्र आदि छह प्रकार के सूत्रों तथा देश-सूत्र आदि चार प्रकार के सूत्रों का सोदाहरण स्वरूप अतीसर्गिक तथा आपवादिक सूत्रों के विषय और उनके स्वस्थान प्रश्नोत्तरी के द्वारा उत्सर्ग और अपवाद का रहस्योद्घाटन अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना का स्वरूप त्रिविध यतना-विषयक अगीतार्थ की अज्ञानता अगीतार्थ-विषयक अनुज्ञापना-अयतना का स्वरूप अगीतार्थ-विषयक स्वपक्ष अयतना का स्वरूप अगीतार्थ-विषयक परपक्ष-अयतना का स्वरूप गीतार्थ-विषयक अनुज्ञापना-यतना का स्वरूप गीतार्थ-विषयक स्वपक्ष-यतना का स्वरूप गीतार्थ-विषयक परपक्ष-यतना का स्वरूप [जागरिका पर वत्स-नरेय की भगिनी जयन्ती आविका का उदाहरण, गाथा ५३०६] दकतीर की विस्तृत व्याख्या दकतीर पर स्थानादि, दूषकवान और आतापना करने से प्रायश्चित्त दकतीर की गीमा के सम्बन्ध में प्रचलित सात आदेशों (नतीं) का उल्लेख और उनमें से प्रायोगिक आदेशों का निर्णय जलाशय के किनारे राड़े होने, बंरने, सोने और स्नायनादि करने में लगने वाले धूमिलरज आदि दोष एवं उनका स्वर्ण	५२२८ ५२२९ ५२३० ५२३१-५२४० ५२३१-५२४३ ५२४४-५२४५ ५२४६-५२४७ ५२४८-५२४९ ५२५०-५२५१ ५२५२-५२५६ ५२५७-५२६१ ५२६२-५२६२ ५२६३-५२६७ ५२६८-५२६९ ५२७०-५२७१ ५२७२-५२८२ ५२८३-५२८७ ५२८८-५२९६ ५२९७-५३०८ ५३०९-५३४१ ५३४२-५३४८ ५३४९-५३५२ ५३५३-५३५४	२९-४७ २९ ३० ३०-३४ ३०-३४ ३४ ३४-३५ ३५-४६ ३५ ३५-३७ ३७-३८ ३८-४१ ४१-४२ ४२-४४ ४४-४६ ४६-४७ ४७-४८ ४८-४९ ४९-५० ५०-५१ ५१-५३ ५३-५४ ५४-५५ ५५-५६ ५६-५७ ५७-५८ ५८-५९ ५९-६० ६०-६१ ६१-६२ ६२-६३ ६३-६४ ६४-६५ ६५-६६ ६६-६७ ६७-६८ ६८-६९ ६९-७० ७०-७१ ७१-७२ ७२-७३ ७३-७४ ७४-७५ ७५-७६ ७६-७७ ७७-७८ ७८-७९ ७९-८० ८०-८१ ८१-८२ ८२-८३ ८३-८४ ८४-८५ ८५-८६ ८६-८७ ८७-८८ ८८-८९ ८९-९० ९०-९१ ९१-९२ ९२-९३ ९३-९४ ९४-९५ ९५-९६ ९६-९७ ९७-९८ ९८-९९ ९९-१००

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जलाशय के निकट स्थान, निपीदन आदि दस स्थानों के सम्बन्ध में सामान्य प्रायश्चित्त	५३२५	५०
	निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला का स्वरूप	५३२६	५१
	दकतीर के संपातिम तथा असंपातिम नामक दो भेद, उक्त दकतीर-द्वय पर स्थान एवं निपीदन आदि दस स्थानों को सेवन करने वाले आचार्य, उपाध्याय आदि पाँच निर्ग्रन्थों, तथैव प्रवर्तिनी, अभिषेका आदि पाँच निर्ग्रन्थियों के लिए प्रायश्चित्त-विषयक विभिन्न आदेश	५३२७-५३३७	५१-५३
	ग्रूपक-स्वरूप और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५३३८-५३४१	५४
	दकतीर पर आतापना लेने से लगने वाले दोष	५३४२-५३४५	५५
	दकतीर, ग्रूपक तथा आतापना-विषयक अपवाद एवं यतना	५३४६-५३५१	५६-५७
३	साग्नि (अग्नि-सहित) शय्या का निषेध		५७-६५
	साग्नि शय्या के भेद-प्रभेद	५३५२-५३५३	५७
	उत्सर्ग और अपवाद-विषयक विस्तृत चर्चा	५३५४-५३७३	५७-५८
	अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना	५३७४	५९
	ज्योतिष्युक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोषों का अप्रतिलेखनादि पतनान्त पदों द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद एवं तत्सम्बन्धी यतना	५३७५-५४०३	५९-६४
	[प्रसङ्गवश पणितशाला आदि छह शालाओं का निरूपण, गाथा ५३६०-६१]		६१
	दोषक के प्रकार, तद्व्युक्त उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोषों का प्रतिमादहनादि पदों द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद और यतना	५४०४-५४०६	६४-६५
४-७	सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित इक्षु के भोजन एवं विदशन का निषेध	५४१०	६५
८-११	इक्षु के सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित विभिन्न विभागों के भोजन एवं विदशन का निषेध		६५
	इक्षु के अन्तरिक्ष आदि विभिन्न विभागों की व्याख्या	५४११-५४१२	६५-६६
१२-१३	अरण्य आदि में जाते-आते लोगों से अशनादि लेने का निषेध		६६
	वन-यात्रा के हेतु जाते-आते यात्रियों से अशनादि लेने से दोष तथा अशिवादि अपवाद	५४१३-५४१६	६६-६७
१४	वसुरातिक (संयमी) को अवसुरातिक (असंयमी) कहने का निषेध		६७-७२

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मूलसूत्रगत वसुराति या वुसिराति शब्द की विभिन्न नियुक्तियाँ, वसुराति के प्रति असदगुणोद्भावन के कारण, संविगनों की असंविगनों द्वारा की जाने वाली अवहेलना और उसका प्रतिवाद, तथा प्रस्तुत निषेध का अपवाद	५४२०-५४४१	६७-७२
१५	अवसुरातिक को वसुरातिक कहने का निषेध	५४४२-५४४६	७२-७३
१६	वसुरातिक गण से अवसुरातिक गण में संक्रमण का निषेध		७३-१००
	काल की दृष्टि से उपसम्पदा के तीन प्रकार	५४४१-५४४३	७३
	गच्छवास के गुण और उनकी व्याख्या	५४४४-५४४७	७४
	ज्ञान-दर्शनादि की अभिवृद्धि के लिए गणान्तरोपसम्पदा की स्वीकृति	५४४८	७४
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा	५४४९-५४२२	७५-८७
	सूत्र, अर्थ आदि के ज्ञानार्थ की जाने वाली उपसम्पदा और उसके भीत आदि आठ अतिचार, उनका स्वरूप एवं तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५४४९-५४७२	७५-७७
	निष्कारण प्रतिषेधक आदि के निकट उपसम्पदा स्वीकार करने की विधि	५४७३-५४७४	७७
	अप्रतिषेधक आदि से सम्बन्धित अपवाद	५४७५-५४८०	७७-७८
	व्यक्त तथा अव्यक्त शिष्यों का स्वरूप, उन्हें उपसम्पदा लेने के लिए साथ में अन्य साधु को भेजने के सम्बन्ध में प्रतीच्छनीय आचार्य एवं मूलाचार्य-सम्बन्धी आभाव्य एवं अनाभाव्य का विभाग	५४८१-५४८६	७८-८०
	आचार्य-उपाध्याय आदि की आज्ञा के बिना उपसम्पदा स्वीकार करने वाले शिष्य एवं प्रतीच्छक आचार्य को प्रायश्चित्त और आज्ञा न देने के कारण	५४८७-५४९१	८०-८१
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा की विधि	५४९२-५४९२	८१-८७
	दर्शनार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४९३-५४९८	८७-८८
	चारित्र्यार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४९९-५४५०	८८-८९
	निर्ग्रन्थी-विषयक ज्ञानादि उपसम्पदा	५४५१-५४५२	८९
	संभोगार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४५३-५४५७	८९-९६
	आचार्य-उपाध्यायार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४५९-५४६३	९६-१००
१७-२५	कलह के कारण मंत्र में निष्क्रान्त भिक्षुओं के नाथ अशनादि, वस्त्रादि, वसति एवं स्वाध्याय के दाना-दान का निषेध		१००-१०४



सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अपक्रमण के प्रकार, वहुर्तादि सात निह्वों का परिचय, निह्वों के साथ अशनादि-दानादान सम्बन्धी प्रायश्चित्त और अपवाद	५५६४-५६३३	१०१-१०५
२६	आहारादि की दृष्टि से सुलभ जनपदों के रहते अनेक दिन-गमनीय अर्ध्वा के विहार का निषेध		१०५-१२४
	मूलसूत्रगत 'विह' शब्द का अर्थ और अर्ध्वा के प्रकार	५६३४-५६३५	१०५
	दिन अथवा रात्रि में गमन और रात्रि-विषयक मान्यता के सम्बन्ध में दो आदेश	५६३६	१०६
	रात्रि में मार्गरूप अर्ध्वगमन से होने वाले दोषों का वर्णन और तत्सम्बन्धी अपवाद	५६३७-५६४४	१०६-१०७
	पन्थ के छिन्नादि दो प्रकार और तद्गमन की विधि	५६४५-५६४६	१०७
	रात्रि में पंथरूप अर्ध्वगमन से लगने वाले आत्मविराधना आदि दोषों का स्वरूप तथा अर्ध्वोपयोगी उपकरण न रखने से होने वाले दोष	५६४७-५६५२	१०८-१०९
	अर्ध्वगमन-सम्बन्धी अपवाद के कारण, अर्ध्वोपयोगी उपकरणों का संग्रह तथा योग्य सार्थवाह की शोध	५६५३-५६५७	१०९-११०
	भण्डी, वहिलक आदि पाँच प्रकार के सार्थ और उनके साथ जाने की विधि	५६५८-५६६०	११०
	सार्थ और सार्थवाह आदि कैसे हैं ? सार्थ की खाद्य-सामग्री और पढाव डालने आदि की क्या व्यवस्था है ? इत्यादि बातों के सम्बन्ध में उचित जानकारी प्राप्त करने की विधि	५६६१-५६७०	११०-११२
	आठ प्रकार के सार्थवाह और आठ ही प्रकार के अति आत्रिक=सार्थ-व्यवस्थापक	५६७१	११२
	अर्ध्वगमन-विषयक ५१२० भङ्ग	५६७२-५६७६	११२-११३
	सार्थवाह से सहयात्रा की आज्ञा प्राप्त करने की विधि, और भिक्षा आदि से सम्बन्धित यतना	५६७७-५६८२	११३-११५
	अर्ध्वगमनोपयोगी अर्ध्व-कल्प का स्वरूप	५६८३-५६८८	११५-११६
	अर्ध्वकल्प और आधार्कर्मिक की सदोपता-निर्दोषता के सम्बन्ध में शंका-समाधानादि	५६८९-५६९४	११६-११७
	अर्ध्वगमन-विषयक श्वापद, स्तेन, अशिव, दुर्भिक्ष आदि व्याघात और तत्सम्बन्धी यतनाओं की सविस्तर विवेचना	५६९५-५७२६	११७-१२४
२७	सुलभ जनपदों के रहते विरूप, दस्यु और अनार्य आदि प्रदेशों में विहार करने का निषेध		१२४-१३१
	विरूप, प्रत्यंत, अनार्य आदि की व्याख्या	५७२७-५७२८	१२४
	आर्य-आर्यसंक्रम आदि संक्रमण-सम्बन्धी चतुर्भङ्गी	५७२९-५७३१	१२५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	निष्क-सम्बन्धी आर्य-अनार्य व्यवहार और तद्विषयक चतुर्भङ्गी	५७३२	१२५
	आर्य-क्षेत्र की सीमा	५७३३	१२५
	आर्य क्षेत्र में विहार करने के हेतु	५७३४-५७३८	१२५-१२६
	अनार्यदेश-गमनविषयक चतुर्गुण प्रायश्चित्त के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान	५७३६	१२६
	आर्य-क्षेत्र से बाहर विहार करने से लगने वाले दोष और इस सम्बन्ध में स्कन्दकाचार्य का दृष्टान्त	५७४०-५७४३	१२७-१२८
	ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य आदि की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि के लिए आर्य-क्षेत्र की सीमा (गा० ५७३३) से बाहर विहार करने की अनुज्ञा और इस सम्बन्ध में सम्प्रति राजा के द्वारा प्रत्यंत देशों में किये गये धर्म-प्रचार का उल्लेख	५७४४-५७४८	१२८-१३१
२८-३३	जुगुप्सित कुलों में अशनादि, वस्त्रादि, वसति तथा स्वाध्याय का निषेध		१३१-१३३
	जुगुप्सा के प्रकार, जुगुप्सित कुलों में अशन-वस्त्रादिग्रहण एवं स्वाध्याय से होने वाले दोष, अपवाद और तत्सम्बन्धी यतना	५७५६-५७६४	१३२-१३३
३४-३६	पृथ्वी, संस्तारक और आकाश (ऊँचाई) पर अशनादि रखने का निषेध		१३३-१३४
	पृथ्वी, संस्तारक आदि पर अशनादि-निक्षेप से होने वाले दोष, अपवाद और यतना	५७६५-५७७०	१३३-१३४
३७-३८	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थों के साथ एक पात्र तथा एक पक्ति में भोजन करने का निषेध		१३४-१३६
	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थों के भेदानुभेद, उनके साथ भोजन करने से दोष, प्रायश्चित्त और अपवाद	५७७१-५७८०	१३४-१३६
३९	आचार्य तथा उपाध्याय के शय्या-संस्तारक को पैर में संघट्टित कर देने पर बिना क्षमा मांगे चले जाने का निषेध	५७८१-५७८४	१३७
४०	प्रमाणातिरिक्त और गणनातिरिक्त उपधि रखने का निषेध		१३८-१६०
	उपधि के भेद-प्रभेद	५७८५	१३८
	उपधि के प्रमाणादि की सूचक द्वार-गाथा	५७८६	१३८
	१. प्रमाण-द्वार	५७८७-५७९३	१३८-१४२
	जिन-कल्पिक और स्मरित-कल्पिक की पाप-सम्बन्धित उपधि की संख्या	५७९५	१४२

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जिन-कल्पिक की शरीर-सम्बन्धित उपधि की संख्या	५७८८	१३८
	जिन-कल्पिक की जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट उपधि की संख्या और उसका प्रमाण (कल्प, पात्रक-बन्ध और रजस्त्राण का नाप)	५७८९-५७९३	१३८-१३९
	गच्छवासियों के कल्प का प्रमाण और उसका कारण	५७९४-५७९५	१३९
	ग्रीष्म, शिशिर तथा वर्षा ऋतु-आश्रित पटलकों की संख्या और उसका प्रमाण	५७९६-५७९८	१४०
	रजोहरण का स्वरूप और उसका प्रमाण	५८००-५८०२	१४०
	संस्तारक, उत्तरपट्ट, चोलपट्ट, मुखवस्त्रिका, गोच्छग, पात्र-प्रत्युपेक्षणिका और पात्रस्थापन का प्रमाण	५८०३-५८०६	१४०-१४१
	हीनाधिक वस्त्र को लेकर एक-दूसरे की निन्दा न करने का आदेश	५८०७	१४१
	कल्प के गुण और उसका उत्सर्ग एवं अपवाद की दृष्टि से प्रमाण	५८०८-५८१२	१४१-१४२
२.	हीनातिरिक्त द्वार	५८१३	१४२
	कम या अधिक उपधि रखने से होने वाले दोष		
३.	परिकर्म-द्वार	५८१४-५८१५	१४२
	वस्त्र-परिकर्म-विषयक सकारण-अकारण पद के साथ विधि-अविधि पद की चतुर्भङ्गी, तथा विधि-परिकर्म और अविधि-परिकर्म का स्वरूप		
४.	विभूषा-द्वार	५८१६-५८१९	१४३
	विभूषा-निमित्तक उपधि-प्रक्षालन करने वाले को प्रायश्चित्त और उसके कारण		
५	सूच्छा-द्वार	५८२०-५८२१	१४४
	सूच्छा से उपधि रखने वाले को दोष और प्रायश्चित्त		
	पात्र विषयक विधि	५८२२-५८२५	१४४-१४७
	पात्र के प्रमाण आदि की सूचक द्वार-गाथा	५८२२-५८२३	१४४
१.	प्रमाणातिरेक-हीनदोष द्वार	५८२४-५८३६	१४४-१४७
	शास्त्रोक्त दो पात्र से अधिक तथा विहित प्रमाण से बड़े पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२४-५८२७	१४४-१४५
	शास्त्रोक्त संख्या से कम तथा विहित प्रमाण से छोटे पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२८-५८३६	१४५-१४७
	पात्र का प्रमाण (नाप)	५८३७-५८३९	१४७
२.	अपवाद-द्वार	५८४०-५८४५	१४७-१४८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	संख्या से अधिक या कम, और प्रमाण से बड़े या छोटे पात्र रखने का अपवाद		
३.	लक्षणाञ्जलक्षण द्वार पात्र के सुलक्षण तथा अपलक्षण, तद्विषयक गुण-दोष एवं प्रायश्चित्त	५८४६-५८५१	१४८-१४९
४.	त्रिविधोपधि द्वार पात्र के तुम्बा आदि तथा यथाकृत आदि तीन प्रकार और उनके लेने का क्रम	५८५२	१४९
५.	विपर्यस्त द्वार पात्र-ग्रहण के क्रम को भंग करने से होने वाले दोष एवं प्रायश्चित्त	५८५३	१४९
६.	कः द्वार पात्र की याचना करने वाले अधिकारी निर्ग्रन्थ का स्वरूप	५८५४	१५०
७.	पौरुषी द्वार पात्र की याचना का समय	५८५५	१५०
८.	काल-द्वार कितने दिनों तक पात्र की याचना करनी चाहिए ?	५८५६-५८५७	१५०
९.	आकर द्वार पात्र-प्राप्ति के योग्य स्थान और तत्सम्बन्धी विधि	५८५८-५८६१	१५०-१५१
१०.	चाउल द्वार तन्दुल-धावन, तथा उष्णोदक आदि से भावित कल्पनीय पात्र, और उसके ग्रहण की विधि	५८६२-५८६७	१५१-१५३
११.	जघन्य यतना द्वार पात्र-ग्रहण विषयक जघन्य यतना	५८६८-५८७४	१५३-१५४
१२-१३.	चौदक तथा असति अशिव द्वार जघन्य यतना-विषयक शंका-ननाधान	५८७५-५८७७	१५४-१५५
१४.	प्रमाण-उपयोग-छेदन द्वार प्रमाण-युक्त पात्र के न मिलने पर उपलब्ध पात्र के छेदन का विधान	५८७८-५८८३	१५५-१५६
१५.	भुज प्रमाण द्वार पात्र-भुज के तीन भेद और उनका प्रमाण मापक-विषयक विधि	५८८४-५८८५ ५८८६-५९०१	१५६-१५७ १५७-१६०

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मात्रक के ग्रहण का विधान	५८८६-५८८७	१५७
	मात्रक न लेने से होने वाले दोषों की द्वार-गाथा	५८८८	१५७
	१. अग्रहणो वारत्रक द्वार	५८८९-५८९०	१५८
	मात्रक न रखने से लगने वाले दोष और वारत्रक का दृष्टान्त		
	२. प्रमाण-द्वार	५८९१-५८९३	१५८-१५९
	मात्रक का प्रमाण और इस सम्बन्ध में तीन आदेश		
	३-४ हीनद्वार-अधिकद्वार	५८९४-५८९६	१५९
	शास्त्र-विहित प्रमाण से छोटा या बड़ा मात्रक रखने से दोष		
	५-६ शोधि, अपवाद, परिभोग, ग्रहण तथा		
	द्वितीय पद द्वार	५८९७-५८९९	१५९-१६०
	आचार्य, बाल, वृद्ध, तपस्वी एवं रोगी आदि के लिए मात्रक		
	का ग्रहण, तथा निष्कारण स्वयं मात्रक का उपयोग करने पर		
	प्रायश्चित्त आदि ।		
	मात्रक के लेप की विधि	५९००	१६०
	पाणि-प्रतिग्रही आदि जिन कल्पिक, परिहार-विशुद्धि,		
	आहालन्दिक, स्थविर कल्पिक तथा निग्रन्थियों का उपधि-विभाग	५९०१	१६१
४१-४५	सचित्त, सस्निग्ध तथा जीव-प्रतिष्ठित आदि पृथ्वी पर		
	उच्चार-प्रस्रवण करने का निषेध		१६१-१६२
४६-४८	जीव-प्रतिष्ठित शिला आदि पर उच्चार-प्रस्रवण करने		
	का निषेध		१६२
४९-५१	धूणा आदि, कुण्ड आदि, प्राकार आदि पर उच्चार-		
	प्रस्रवण करने का निषेध		१६२
	सूत्रोक्त-विशेषण-विशिष्ट पृथ्वी आदि पर उच्चार-प्रस्रवण		
	करने के दोष और अपवाद	५९०२-५९०३	१६२-१६३
	छोटे-बड़े आतामों के उल्लेख के साथ चूर्णिकार का अपना परिचय		१६३
<b>सप्तदश उद्देशक</b>			
	षोडश और सप्तदश उद्देशक का सम्बन्ध	५९०४	१६५
१-२	कौतूहल से त्रस प्राणियों को बाँधने तथा छोड़ने		
	का निषेध		
३-५	कौतूहल से तृणमाला, मुंजमाला आदि मालाओं के	५९०५-५९०६	१६५-१६६
	निर्माण, एवं धारण आदि का निषेध		
६-८	कौतूहल से लौह आदि धातुओं के निर्माण एवं धारण	५९१०-५९११	१६६
	आदि का निषेध	५९१२-५९१३	१६६-१६७

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
६-११	कौतूहल से हार, अर्धहार आदि के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	५६१४-५६१५	१६७
१२-१४	कौतूहल से अजिन, कम्बल आदि के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	५६१६-५६१७	१६८
१५-६७	निर्ग्रन्थी को निर्ग्रन्थ के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्धर्तन एवं प्रक्षालन आदि करने का निषेध	५६१८-५६३०	१६९-१७६
६८-१२०	निर्ग्रन्थ को निर्ग्रन्थी के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्धर्तन तथा प्रक्षालन आदि कराने का निषेध	५६३१	१७६-१८७
१२१	सदृश निर्ग्रन्थ को उपाश्रय में विद्यमान स्थान न देने वाले निर्ग्रन्थ को प्रायश्चित्त		१८७-१९०
	सदृशता की व्याख्या	५६३२	१८७
	दशविध स्थित कल्प	५६३३	१८७
	स्थापना-कल्प के दो प्रकार और उत्तरगुण-कल्प	५६३४-५६३५	१८८
	सदृश का आदेशान्तर, स्थान न देने पर प्रायश्चित्त, तथा निर्ग्रन्थ के आगमन के कारण	५६३६-५६३८	१८८
	वसति से बाहर रहने में दोष तथा वसति-दान के अपवाद, यतना आदि	५६३९-५६४७	१८९-१९०
१२२	सदृश निर्ग्रन्थी को उपाश्रय में विद्यमान स्थान न देने वाली निर्ग्रन्थी को प्रायश्चित्त	५६४८	१९१
१२३	माला-हृत अशनादि लेने का निषेध		१९१
	मालाहृत के ऋष्यं, अग्नः आदि भेद-प्रभेद; दोष, प्रायश्चित्त तथा अपवाद	५६४९-५६५३	१९१
१२४	कुशूल आदि में रखे हुए, फलतः कठिन्ता से ऊँचे-नीचे होकर दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५४	१९१-१९२
१२५	मृत्तिका से लित, फलतः भेदन कल्के दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५५-५६५७	१९२
१२६-१२८	पुष्पी, जल, अग्नि और वनस्पति पर रखे हुए अशनादि का निषेध		१९२-१९३
	पुष्पी आदि और निक्षिप्त के प्रकार, दोष, माला-समाधान, अपवाद और नक्षिप्त यतना	५६५८-५६६४	१९३-१९४

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१३०-१३१	सूर्प आदि से शीतल करके दिये जाने वाले अत्यन्त ऊष्ण तथा उष्णोष्ण (गरमागरम) अशनादि का निषेध	५६६५-५६६८	१६४
१३२	पूर्ण रूप से शस्त्र-परिणत होकर अचित्त न हुए, इस प्रकार के उत्त्वेदिम आदि जल का निषेध		१६५-१६६
	उत्त्वेदिम आदि की व्याख्या, जल की अचित्ता के परिज्ञान के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान, अपवाद आदि	५६६६-५६७६	१६५-१६६
१३३	अपने आचार्य-योग्य लक्षणों के कथन का निषेध		१६७-१६८
	आचार्य के लक्षण, लक्षण-कथन से होने वाले दोष आदि	५६७७-५६८६	१६७-१६८
१३४	गायन-वादन-नृत्य आदि करने का निषेध	५६८७-५६९३	१६९-२००
१३५-१५०	मेरी आदि, वीणा आदि, ताल आदि, वप्र आदि के शब्द सुनने की अभिलाषा का निषेध	५६९४-५६९६	२००-२०३
१५१	लौकिक तथा पारलौकिक आदि विविध रूपों में आसक्ति रखने का निषेध		२०३

## अष्टादश उद्देशक

सप्तदश और अष्टादश उद्देशक का सम्बन्ध	५६९७	२०५
१ विना प्रयोजन नाव पर चढ़ने का निषेध	५६९८-६०००	२०५
२-५ नाव के खरीदने आदि का निषेध	६००१-६००६	२०६-२०७
६-७ स्थल से जल में और जल से स्थल में नाव के खींचने का निषेध		२०७
८-९ नाव में से जल को उलीचने और कीचड़ में से फँसी नाव को बाहर निकालने का निषेध	६०१०	२०८
१० नाव में पानी भरता देख छिद्र को हस्तादि से बन्द करने का निषेध		२०८
११ दूरस्थ नाव को अभीष्ट स्थान पर मँगाने का निषेध		२०८
१२-१३ ऊर्ध्वगामिनी आदि तथा योजनगामिनी आदि नाव में बैठने का निषेध	६०११	२०८
१४-१६ नाव को खींचने, खेने, निकालने और जलरिक्त करने आदि का निषेध		२०८-२११
उत्तिङ्ग आदि की व्याख्या तथा अपवाद, आचार्य आदि एवं निर्यन्वी को पूर्वापर रूप से नौका द्वारा पार उतारने का क्रम	६०१२-६०२३	२०८-२११



सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
२०-२३	नौका-स्थित लोगों से अन्ननादि ग्रहण करने का निषेध	६०२४-६०२६	२१२-२१३
२४-७४	वस्त्र खरीदने आदि का निषेध (चतुर्दश उद्देशक के पात्र-प्रकरण के समान)	६०२७	२१३-२१८

## एकोनविंशतितम उद्देशक

	अष्टादश और एकोनविंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६०२८-६०२९	२१९
१-७	विकट के खरीदने आदि का निषेध और ग्लानापवाद	६०३०-६०४३	२१९-२२४
८	चार संध्याओं में स्वाध्याय का निषेध	६०४४-६०४८	२२४-२२४
९-१०	संध्या आदि में कालिक श्रुत एवं दृष्टिवाद के क्रम से ३ तथा ७ से अधिक प्रश्न पूछने का निषेध	६०४९-६०६३	२२४-२२६
११-१२	इन्द्र महोत्सवादि चार महामहोत्सवों और ग्रीष्म-कालीन आदि महाप्रतिपदाओं में स्वाध्याय का निषेध	६०६४-६०६८	२२६-२२७
१३	पौष्णी-स्वाध्याय के अनिप्रमण का निषेध		२२७
१४	स्वाध्याय-काल में स्वाध्याय न करने पर प्रायश्चित्त	६०७०-६०७३	२२७-२२८
१५	अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने का निषेध		२२८-२४६
	अस्वाध्याय के भेद-प्रभेद	६०७४	२२८
	अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने पर दण्ड और इन सम्बन्ध में राजा का दृष्टान्त	६०७५-६०७८	२२९
	मंथमघातो अस्वाध्याय	६०७९-६०८४	२२९-२३१
	श्रीत्यागिक अस्वाध्याय	६०८५-६०८७	२३१-२३२
	दिष्यकृत अस्वाध्याय	६०८८-६०९३	२३२-२३३
	विग्रह-सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९४-६०९८	२३३-२३४
	शरीर-सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९९-६११७	२३४-२३६
	कान-प्रतिवेगना-सम्बन्धी दण्डा-समाधान तथा अपवाद आदि	६११८-६१६४	२३६-२४६
१६	स्वशरीर-समुत्थ अस्वाध्याय में स्वयं स्वाध्याय करने का निषेध	६१६५-६१७६	२४६-२४९
१७	पहले के समवसरणों का वाचन किये बिना अग्रिम समवसरणों के वाचन का निषेध	६१८०-६१८८	२४९
१८	नव ब्रह्मचर्य (सान्नायग) का वाचन किये बिना उत्तर या उत्तरम श्रुत (हिंद-सूत्र आदि) के वाचन का निषेध		२४९-२४९
	उत्तरम श्रुत की व्याख्या, आश्विनशुक्ल के प्रातः पुनर्वसुवार अनुबोधों का अनुबोध, अनुबोधों का क्रम, योग तथा अन्तः	६१८९-६१९७	२४९-२४९

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१६	अपात्र (अयोग्य) को वाचना देने का निषेध		२५५
२०	पात्र को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२५५
२१	क्रम से अध्ययन न करने वाले को वाचना देने का निषेध		२५५
२२	क्रमवाः अध्ययन करने वाले को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२५५-२६२
	तिन्तिणिक आदि अपात्र तथा अदृष्टभाव आदि अव्यक्त की विस्तृत व्याख्या, दोष एवं अपवाद	६१६८-६२३६	२५५-२६२
२३-२६	अव्यक्त तथा अप्राप्त को वाचना देने का निषेध और व्यक्त तथा प्राप्त को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२६२-२६३
	व्यक्त और अव्यक्त की परिभाषा, अप्राप्त-सम्बन्धी चतुर्भङ्गी, दोष तथा अपवाद	६२३७-६२४३	२६२-२६३
२७	दो समान गुणवाले अध्येताओं में से एक को अध्ययन कराने और दूसरे को अव्ययन न कराने की भेद-बुद्धि का निषेध	६२४४-६२४६	२६३-२६४
२८	आचार्य तथा उपाध्याय द्वारा अदत्त वाणी के ग्रहण का निषेध		२६५-२६६
	वाणी के भेद, अदत्त वाणी-ग्रहण के कारण, तपःस्तेन आदि, भावस्तेन के सम्बन्ध में गोविन्द वाचक का उदाहरण, दोष तथा अपवाद	६२५०-६२५७	२६५-२६६
२९-४०	अन्यतीर्थी, गृहस्थ, पार्वस्थ तथा कुशील आदि के साथ वाचना के दानाऽऽदान व्यवहार का निषेध		२६६-२६६
	अन्यतीर्थी आदि को वाचना देने-लेने पर प्रायश्चित्त, वाचना के देने-लेने से दोष, स्वपापण्डी और अन्यपापण्डी की व्याख्या, अपवाद और तद्विषयक यतना	६२५८-६२७१	२६७-२६६

## विंशतितम उद्देशक

एकोनविंशतितम और विंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६२७२	२७१
१ मासिक परिहार-स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		२७१-३०४
भिक्षु-पद के निक्षेप और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६२७३-६२८१	२७२-२७४
मास पद के निक्षेप और नक्षत्रादि भासों का प्रमाण	६२८२-६२९१	२७४-२७६
परिहार-पद के निक्षेप	६२९२-६२९५	२७६-२८०
स्थान-पद के निक्षेप	६२९६-६३०२	२८०-२८२

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रतिसेवना के भेद-प्रभेद और तद्विषयक शङ्का-समाधान	६३०३-६३०८	२८२-२८३
	शल्योद्धरण के लिए आलोचना और उसके तीन प्रकार	६३०९-६३११	२८३-२८४
	विहारालोचना	६३१२-६३२२	२८४-२८६
	उपसम्पदालोचना	६३२३-६३७६	२८६-३००
	अपराधालोचना	६३७७-६३९०	३००-३०२
	माया-मद मुक्त आलोचना के गुण	६३९१-६३९२	३०३
	आलोचनार्ह के दो प्रकार-आगम व्यवहारी और धृत-व्यवहारी	६३९३-६३९४	३०३-३०४
	मायावी आलोचक को अस्व और दण्डिक के दृष्टान्तों द्वारा उद्बोधनादि	६३९६-६३९८	३०४-३०४
२-६	द्विमासिक आदि परिहार-स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०४-३०७
	द्विमासादि परिकुञ्चित आलोचना के विषय में यथाक्रम कुञ्चित तापस, शल्य, मालाकार आदि के उदाहरण तथा छः मास से अधिक तपः प्रायश्चित्त न देने का हेतु	६३९९	३०४-३०७
७-१२	अनेक बार मासिक आदि परिहार-स्थान सेवन करने वाले को परिकुञ्चित एवं अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०८-३१३
	एक बार और अनेक बार के दोषी को समान प्रायश्चित्त देने के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान तथा रासभ-मूल्य, कोशगार एवं खलवाट के उदाहरण	६४००-६४१७	३०८-३१३
१३	मासिक आदि परिहार स्थानों के प्रायश्चित्त का संयोगसूत्र		३१३-३१४
	संयोग-सूत्र के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान	६४१८-६४१९	३१३-३१४
१४	बहुयः मासिक आदि परिहार-स्थानों के प्रायश्चित्त का संयोग-सूत्र		३१४-३१६
	संयोग-सूत्रों के अन्य प्रकार, उनकी रचना-विधि, और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६४२०-६४२६	३१४-३१८
	१. स्थापना-संज्ञा द्वारा	६४२७-६४६२	३१८-३३०
	स्थापना तथा आरोपना की व्याख्या और उनके प्रकार आदि		
	२. राशि द्वारा	६४६३-६४६४	३३०
	प्रायश्चित्त-राशि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में मतान		
	३. मान द्वारा	६४६६	३३०-३३१
	विभिन्न तीर्थक्षेत्रों की स्तोत्र में प्रायश्चित्त के मान (प्रमाण) की विधिपता		
	४. अनु द्वारा	६४६७-६४६८	३३१

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रायश्चित्त-दान के योग्य अधिकारी		
	५. कियान् द्वार	६४६६-६४६६	३३१-३३८
	प्रायश्चित्तों की गणना तथा कृत्स्न और अकृत्स्न आरोपणा		
	अतिज्रमादि के सम्बन्ध में विचार-चर्चा	६४६७-६४६६	३३८-३३९
	नवम पूर्व से निशीथ का उद्धार	६४८०	३३९
	अनेक दोषों की शुद्धि के लिए एक प्रायश्चित्त देने का हेतु, इस सम्बन्ध में घृत-कुट आदि के उदाहरण तथा अन्य आवश्यक शङ्का-समाधान	६४०१-६४२६	३३९-३४६
	मूल व्रतातिचार तथा उत्तर गुणातिचार-सम्बन्धी चर्चा	६४२७-६४३५	३४६-३४८
	प्रायश्चित्त वहन करने वालों के भेद-प्रभेद	६४३६-६४७४	३४९-३६०
१५-१६	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आलो- चना-सूत्र		३६०-३६७
	आलोचक के गुण एवं दोष तथा आलोचना-विधि	६४७५-६४८३	३६१-३६७
१७-२०	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आरोपणा-सूत्र परिहार तप और शुद्ध तप की विवेचना		३६७-३८६
	वैयावृत्य के तीन प्रकार तथा आचार्य के गुण	६४८४-६६०४	३६९-३७५
	आरोपणा के भेद-प्रभेद तथा आलोचना की चतुर्भङ्गी	६६०५-६६१५	३७५-३७७
		६६१६-६६४७	३७७-३८७
२१-५३	प्रायश्चित्त-स्वरूप तप वहन करते हुए वीच में लगे दोषों का प्रायश्चित्त		
	निशीथ के निर्माता विशाखागणी की प्रशस्ति		३८७-४११
	प्रायश्चित्त वहन करने वालों के कृत करणादि भेद-प्रभेद		३८५
	निशीथ-कल्प के श्रद्धान कल्प आदि चार प्रकार	६६४८-६६६५	३८६-४०१
	प्रायश्चित्त-प्रदान के हेतु	६६६६-६६७६	४०१-४०४
	दशविध प्रायश्चित्तों का ऐतिहासिक काल-क्रम	६६७७-६६७९	४०४
	ओषनिष्पन्न तथा विस्तार निष्पन्न के भेद से प्रायश्चित्त के दो प्रकार	६६८०	४०४
	उत्सर्ग और अपवाद के आचरण की विधि, अथवा छेद-सूत्रों में प्रतिसूत्र-प्रतिषेध, अपवाद आदि चतुर्विध अनुयोग-विधि	६६८१-६६८२	४०५
	अनुयोगघर की ओर से स्वगौरव का परिहार	६६८३-६६९८	४०५-४०६
	निशीथ-सूत्र के अनेकविध अर्थोधिकार	६६९९	४०६
	निशीथ-सूत्र के अधिकारी और अनधिकारी	६७००-६७०१	४०६-४१०
	निशीथ-वृणिकार की स्वनामोल्लेखपूर्वक प्रशस्ति	६७०२-६७०३	४१०
	निशीथ-वृणिकार के विनाशितम उद्देशक की संस्कृत में सुबोधा व्याख्या		४११
			४१३-४४३

## परिशिष्ट

१. प्रथम परिशिष्ट	४४७-५३५
भाष्यगाथा-सूची	
२. द्वितीय परिशिष्ट	५३६-५४१
उद्धृत गाथादि के प्रमाण	
३. तृतीय परिशिष्ट	५४२-५४४
प्रमाणत्वेन निर्दिष्ट ग्रन्थ	
४. चतुर्थ परिशिष्ट	५४५-५५१
भाष्य-चूर्ण्यन्तर्गत दृष्टान्त	
५. पञ्चम परिशिष्ट	
विशेष नामों की विभागशः अनुक्रमणिका	५५२-५७०
६. षष्ठ परिशिष्ट	
सुभाषित-सुधासार	५७१-५७२

---

“अपक्षपातेन यदर्थनिर्णयस्,  
तदेव धर्मः परमो मनीषिणाम् ।”

— बिना किसी पक्ष-पात के यथार्थ  
सत्य का निर्णय करना ही,  
विद्वानों का परम धर्म है ।



# निशीथ-सूत्रम्

[ भाष्य-सहितम् ]

आचार्यप्रवर श्री जिनदासमहत्तर-विरचितया

विशेषचूर्ण्य समलंकृतम्

विंशतितमोद्देशकस्य सुबोधायया संस्कृत-व्याख्यया सहितञ्च

चतुर्थो विभागः

अथ मा

उद्देशकाः १६-२०

मुद्रितयातो ।

क्रि. ॥५०६६॥

श्री ।

०६७॥

- अथतो वदितवन्तातो य ।

रीए ।

दो ॥५०६॥

ण वि किंचि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहि ।

एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥ ५२४८ ॥

दोसा जेण निरुंभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।

सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥ ५२५० ॥

—भाष्यकार ।



## षोडश उद्देशकः

उक्तः पंचदशमोद्देशकः । इदानीं षोडशः प्रारभ्यते, तत्रायं सम्बन्धः -

देहविभूसा बंभस्स अगुत्ती उज्जलोवहित्तं च ।

सागारित्ते य (वि) वसतो, बंभस्स विराहणाजोगो ॥५०६५॥

पंचदशमुद्देशगे देहविभूसाकरणं उज्जलोवधिधारणं च निमित्तं, मा बंभवयस्स अगुत्ती, पयंगतो मा बंभवयस्स विराहणा भविस्सति । इहापि सोलसमुद्देशगे मा अगुत्ती बंभविराहणा या, अतो सागारिय-यसहिणिसोहो कज्जति । एस सम्बन्धो ॥५०६५॥

एतेण सम्बन्धेणागयस्स सोलसमुद्देशगस्स इमं पदमं सुत्तं -

जे भिक्खु सागारियसेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसंतं वा सातिज्जति ॥१॥

सह आगारीह सागारिया, जो तं गेण्हति वसहि तस्स आणादी दोसा, चउमहुं य मे पच्चित्तं ॥

सन्नासुत्तं सागारियं ति जहि मेहुणुब्भयो होइ ।

जत्थित्थी पुरिसा वा, वसंति सुत्तं तु सट्ठाणे ॥५०६६॥

जं मुने "सागारियं" ति एसा नामयिकीसंज्ञा । जत्थ वसहीण टिपायं मेहुणुब्भयो भवति सा सागारिया, तत्प चउमुग्गा ।

अथवा - जत्थ इतिपुरिसा वसंति सा सागारिया, इतिमागारियो चउमुग्गा मुत्तियातो । "सट्ठाणि" ति जा पुरिससागारिया, निगंभीयं पुरिससागारियो चउमुग्गा । मेमं सहैय ॥५०६६॥ एस मुत्तयो ।

इमो निज्जुत्तिवित्थरो -

सागारिया उ सेज्जा, ओहे य विभागयो उ दुविहायो ।

ठाण-पडिसेवणाए, दुविहा पुण ओहयो होति ॥५०६७॥

सागारिया सेज्जा दुविहा - सोहेन विभागयो य । सोहेन पुण दुविहा - ठाणयो पडिसेवणयो य । एतेन विधानं भवित्ति ॥५०६७॥

सागारियणिकसेवो, चउच्चित्तो होइ शाणुपुब्बाए ।

णामं ठवणा दुविण, भावे य चउच्चित्तो भेदो ॥५०६८॥

सागारिगणिक्लेवो णामठवणादिगो चउव्विघो कायव्वो । स पद्वार्धेन कृतश्चतुर्विधः । दव्वे ।  
आगमओ, णो आगमओ य ॥५०६८॥

णो आगमओ जाणग-भविध्वइरित्तं दव्वसागारियं इमं -

रूवं आभरणविही, वत्थालंकारभोयणे गंधे ।

आओज्ज णट्ट णाडग, गीए सयणे य दव्वम्मि ॥५०६९॥

“रूव”त्ति अस्य व्याख्या -

जं कट्टकम्ममादिसु, रूवं सट्ठाणे तं भवे दव्वं ।

जं वा जीवविमुक्कं, विसरिसरूवं तु भावम्मि ॥५१००॥

रूवं णाम जं कट्टचित्तलेप्पकम्मे वा पुरिसरूवं कयं, अहवा - जीवविप्पमुक्कं पुरिससरीरं तं  
“सट्ठाणे” त्ति णिगंथाणं पुरिसरूवं दव्वसागारियं, जे इत्थीसरीरा तं भावसागारियं । एतेसु चेव कट्टकम्मादिसु  
जं इत्थीरूवं तं निगंथीणं दव्वसागारियं, जे पुण पुरिसरूवा तं तासि भावसागारियं । आभरणा कडगादी ज  
पुरिसजोग्गा ते णिगंथाण दव्वे, जे पुण इत्थिजोग्गा ते भावे । इत्थीणं इत्थिजोग्गा दव्वे, पुरिसजोग्गा  
भावे ॥५१००॥

‘वत्थादि अलंकारं चउव्विहं । भोयणं असणादियं चउव्विहं । कोट्टगपुडगादी गंधा अणेगविहा ।  
आउज्जं चउव्विहं - तत्तं विततं घणं भुसिरं । नट्टं चउव्विहं - अंचियं रिभियं आरभडं भसोलं त्ति ।

अहवा इमं ‘णट्टं’ -

णट्टं होति अगीयं, गीयजुयं णाडयं तु तं होइ ।

आहरणादी पुरिसोवभोग दव्वं तु सट्ठाणे ॥५१०१॥

गीतेण विरहितं णट्टं, गीतेण जुत्तं णाडयं । गीयं चउव्विहं-तंतिसमं तालसमं अहसमं लयसमं च ।  
सयणिज्जं पल्लंकादि बहुप्पगारं । “४दव्वे” त्ति दव्वसागारियमेवमुद्धिदं, भोयण-गंधव्व-आओज्ज-सयणाणि ।  
उभयपक्खे वि सरिसत्तणतो णियमा दव्वसागारियं चेव, सेसाणि दव्वभावेसु भाणियव्वाणि । सरिसे दव्वसागारियं,  
विसरिसे भावसागारियं ॥५१०१॥

एतेसु इमं पच्छित्तं -

एक्केक्कम्मि य ठाणे, भोयणवज्जाण चउलहू होति ।

चउगुरुग भोयणम्मी, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५१०२॥

रूवादिदव्वसागारियप्पगारेसु एक्केक्कम्मि ठाणे ठायमाणस्स भोयणं वज्जेत्ता सेसेसु चउलहुगा,  
भोयणं चउगुरुं । केसि च आयरियाणं - अलंकारवत्थेसु वि चउगुरुगा, आणादिया य दोसा भवंति ।  
चोदक आह - सव्वे ते साहू, कहं ते दोसे करेज्ज ?



इत्थिमादिख्वसमागमतो उदिणामोहाण ह्यीपरिभोगुस्सुयभूताणं गमणे ओत्सुक्यं भवति । अभिप्रेतायं त्वरित-  
सम्प्रापणं ओत्सुक्यमित्यर्थः ॥५१०७॥

सुट्ठु कयं आभरणं, विणासियं ण वि य जाणसि तुमं पि ।  
मुच्छुद्धाहो गंधे, विसोत्तिया गीयसदेसु ॥५१०८॥

रूवं आभरणं वा दट्ठुं एगो भणाति - “सुट्ठु” त्ति लट्ठं कयं ।

वित्तिओ तं भणाति - “एतं विणासियं, अविसेसणू तुमं, ण जाणसि किं चि” ।

एवं उत्तरोत्तरेण अधिकरणं भवति, प्रशंसतो वा रागो, इतरस्स दोसो । “मुच्छ” त्ति मुच्छं वा  
करेज्ज । मुच्छाओ वा सपरिगहो होजा ।

गंधे त्ति चंदणादिणा विलिते धूविते वा अप्पाणे उद्धाहो भवति । आतोज्ज-गीयसदादिएसु विसोत्तिया  
भवति ॥५१०८॥

किं च -

णिच्चं पि दव्वकरणं, अवहितहिययस्स गीयसदेसु ।

पडिलेहण सज्झाए, आवासग भुंज वेरत्ती ॥५१०९॥

णिच्चमिति तीए वसहीए सव्वकालगीतादिसर्देहि अवधियमणस्स पडिलेहणादिकरणं सव्वेसि  
संजमजोगाणं दव्वकरणं भवति ॥५१०९॥

ते सीदिउमारद्धा, संजमजोगेहि वसहिदोसेणं ।

गलति जतुं तप्पंतं, एव चरित्तं मुणेयव्वं ॥५११०॥

तेसि एवं वसहिदोसेणं सीअंताणं चरित्तहाणी ।

कहं ?, उच्यते । इमो दिट्ठतो -

जहा जउ अग्गिणा तप्पंतं गलति एवं जहुत्तसंजमंजोगस्स अकरणतातो चरित्तं गलति,  
॥५११०॥

वसहिदोसेण जो इत्थिमादीविसयोवभोगभावो असुभो उप्पण्णो -

‘तण्णिकखंता केई, पुणो वि सम्मेलणाइदोसेणं ।

वच्चंति संभरंता, भेत्तूण चरित्तपागारं ॥५१११॥

तस्मान्निकखंता तं वा परित्यज्य निःक्रान्ता तण्णिकखंता केचिन्न सर्वे । सेसं कंठं ।

एगम्मि दोसु तीसु व, ओहावंतेसु तत्थ आयरिओ ।

मूलं अणवट्ठप्पो, पावति पारंचियं ठाणं ॥५११२॥

वसहिकएण दोसेण नइ एक्को उण्णिकखमति तो आयरियस्स मूलं, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारंचियं ।  
जस्स वा वसेण तत्थ ठिता तस्स वा एयं पच्छित्तं ॥५११२॥ दव्वसागारियं गतं ।

१ उण्णि, इति बृहत्कल्पे गा० २४६३ ।

इदानीं भावसागारियं -

‘अट्टारसविहम्बं, भावउ ओरालियं च दिव्यं च ।

मणवयणकायगच्छण, भावम्मि य रूवसंजुत्तं ॥५११३॥

एवं दृष्टसागारियं भगतेण भावसागारियं एत्येव भगियं, तदावि वित्थरतो पुणे भण्णति - तं भावसागारियं अट्टारसविहं अवंभं । तस्स मूलभेदा दो - ओरालियं च दिव्यं च । तस्य ओरालियं नयविहं इमं - ओरालियं कामभोगा मणसा गच्छति, गच्छावेनि, गच्छंतं अणुजाणति । एवं वायाए वि । काएणं वि । एते तिणिा तिया णव । एवं दिव्वेण वि णव । एते दो णवगा अट्टारस । एवं अट्टारसविहं अवंभं भावसागारियं ॥५११३॥

“भावम्मि य रूवसंजुत्तं” ति अस्य व्याख्या -

अह्व अवंभं जत्तो, भावो रूवा सहगयातो वा ।

भूसण-जीवजुत्तं वा, सहगय तच्चज्जियं रूवं ॥५११४॥

अवंभभावो जतो उप्पज्जद तं च रूवं रूवसंजुत्तं वा, कारणे कज्जोवपाराधो, तं येव भावतो अवंभं ।

अह्वा - उदिग्गभावो जं पटिसेवति तं च रूवं वा होज्ज, रूवसहगतं वा । तस्य जं इत्थोमरीरं सचेमणं भूसणसंजुत्तं तं रूवसहगतं ।

अह्वा - अणभरणं पि जीवजुत्तं तं रूवसहगतं भण्णति, “तच्चज्जियं रूवं” ति सचेमणं इत्थोमरीरं भूसणवज्जियं रूवं भण्णति, अचेमणं वा रूवं भण्णति ॥५११४॥

तं पुण रूवं तिविहं, दिव्यं माणुस्सगं च तेरिच्छं ।

तस्य उ दिव्यं तिविहं, जहण्णयं मज्झिमुक्कसं ॥५११५॥ मंड

दिव्ये इमे मूलभेदा -

पडिमेतरं तु द्रुविहं, सपरिग्गह एक्कमेक्कगं तिविहं ।

पायावच्च-कुटुंबिय-उड्डियपरिग्गहं चेव ॥५११६॥

पडिमाहुयं तं द्रुविहं - मज्झिमं समज्झितं वा । “इतरं” वि - इतरं तं वि मयेवमं सचेमणं वा । पुणे एवमेवमं सपरिग्गहं सपरिग्गहं वा । जं सपरिग्गहं तं तिविहोत्तरं परिग्गहितं । तस्स मंड ॥५११५॥

दिव्यं जहण्णादिगं तिवियं इमं -

चाणंतरिय जहणं, भवणवती जाइसं च मज्झिमं ।

वेमाणियमुक्कसं, पणयं पुण ताण पटिमाणु ॥५११७॥

भाष्यभाषा उद्देशः, भाष्यभाषा उद्देशः च मज्झिमं, वेमाणियं उक्कसं । १७ पडिमाहुयं मे वेव सचेमणमोती मज्झिमः ॥५११६॥

अट्टारसविहम्बं इति कृत्यार्थे ५११३ । २ मंड ५११३ ।

अहवा - पडिमाजुएण जहण्णादिया इमे भेदा -

कट्ठे पोत्थे चित्ते, जहण्णयं मज्झिमं च दंतम्मि ।

सेलम्मि य उक्कोसं, जं वा रुवातो णिप्फण्णं ॥५११८॥

जा दिव्वपडिमा कट्ठे पोत्थे लेप्पगे चित्तकम्मे वा जा कीरइ एयं जहण्णयं, अनिपटस्पर्शत्वात् । जा पुण हत्थिदंते कीरति सा मज्झिमा, जेण सुमतरफरिसा, अत्रापि हीरसंभवः । मणिसीलादिनु जा कीरइ सा उक्कोसा, सुकुमालफरिसत्तणतो अहीरत्तणतो य ।

अहवा - जं विरुवं कयं तं जहण्णं । जं मज्झिमरुवं तं मज्झिमं । जं पुण मुरुवं कयं तं उक्कोसयं ॥५११८॥ सव्वोहतो पडिमाजुए ठायमाणस्स चउलहुं ।

ओहविभागे इमं -

ठाण-पडिसेवणाए, तिविहे दुविहं तु होइ पच्छित्तं ।

लहुगा तिणिण विसिट्ठा, अपरिग्गहे ठायमाणस्स ॥५११९॥

“तिविधे” ति - दिव्वमाणुसतेरिच्छे दुविधं पच्छित्तं - ठाणपच्छित्तं पडिसेवणापच्छित्तं च । एवं अत्यनिरुवणं काउं । एयं चेव पुव्वदं । अण्णाहा भाणियव्वं - “तिविधे” ति जहण्णमज्झिमुक्कोसे दुविहं पच्छित्तं - ठाणयो पडिसेवणाओ य । तत्य पडिसेवणाओ ताव ठप्पं । ठायंतस्स इमं - “लहुगा तिणिण विसिट्ठा”, दिव्वे पडिमाजुए असण्णिहिं जहन्ने चउलहुया उभयलहु, मज्झिमे लहुगा चेव कालगुरु, उक्कोसे लहुगा चेव तवगुरु ।

अहवा - “तिविधे दुविधं तु” - तिविधं जहण्णगादी, तं सण्णिहियासण्णिहितेण दुविहं ।

अहवा - पडिसेवणाए तं चेव जहण्णादिकं तिविधं । दिट्ठादिट्ठेण दुविधं ॥५११९॥

विभागे ओहपच्छित्तं इमं -

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्घाता ।

छम्मासा उग्घाता, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१२०॥

पढमे ति जहण्णे, तत्य उग्घाय ति चउलहु । वितियं मज्झिमं तत्य अणुग्घाय ति चउगुरु । उक्कोसे छम्मासा, उग्घाय ति छल्लहु । एयं ठायमाणस्स एयस्स इमा उच्चारणविधी - जहण्णे पायावच्चपरिग्गहिते ठाति च्छ । मज्झिमए पातावच्चपरिग्गहिते ठाति च्छा । उक्कोसे पातावच्चपरिग्गहिते ठाति क्कू ॥५१२०॥

इदाणि एते पच्छित्ता विसेसिज्जंति -

पायावच्चपरिग्गहे, दोहि वि लहु हंति एते पच्छित्ता ।

कालगुरु कोडुंवे, उड्डियपरिग्गहे तवसा ॥५१२१॥

जे एते पायावच्चपरिग्गहिते जहण्णए मज्झिमए उक्कोसए य ठायमाणस्स चउलहु च्छल्लहुआ पच्छित्ता भण्तिता । एते कालेण वि तवेण वि लहुगा णायव्वा ।

कोटुवियपरिग्गहिते एते चेव तिणिण पच्छित्ता कालगुरु तवलहुआ ।

दंडियपरिग्रहिते एते चेव त्रिणि पच्छिता काननहुमा तवगुमा । जग्हा जहणादिविभागेन  
यत् सणिहितासणिहितेण ण विसेनियच्चं, तम्हा विभागे ओहो गघो ॥५१२१॥

इदाणि विभागपच्छित्तं - तस्य एयाणि चेव जहणमज्जिमुक्कोनाणि असणिहियसणिहियमिण्णा  
छट्टाणा भवन्ति ।

ताहे भण्णति -

चत्तारि य उग्वाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्वाया ।

ततियम्मि य एमेवा, चउत्थे छम्मास उग्वाता ॥५१२२॥

जहणेण असणिहियं पढमं ठाणं, सणिहियं वितियं ठाणं ।

मज्जिमे असणिहियं तइयट्ठाणं, सणिहियं चउत्थं ।

उक्कोत्तेण असणिहियं पंचमं, सणिहियं छट्ठं ।

जहणाए असणिहिण पायावच्चपरिग्रहिते ठाति चउत्थुयं, सणिहिण चउत्थुयं । मज्जिमाए  
असणिहिण "एमेव" ति - चउत्थुगा, सणिहिण छल्लहुगा ॥५१२३॥

पंचमगम्मि वि एवं, छट्ठे छम्मास होतऽणुग्वाया ।

असन्निहिते सन्निहिते, एस विही ठायमाणस्स ॥५१२३॥

तवकोसाए असणिहिण पायावच्चपरिग्रहिते ठाति एमेव ति छल्लहुगा, सणिहिण एउत्थुयं । एमो  
ठाणपच्छित्तस विधो भणितो ॥५१२३॥

पायावच्चपरिग्रह, दोहि वि लहु होति एते पच्छित्ता ।

कालगुरुं कोडुंवे, डंडियपरिग्रहं तवसा ॥५१२४॥

पायावच्चे उभयलहुं, कोटुविण कालगुरुं, डंडिण तवगुरुं । सेमं प्रवंचय ॥५१२४॥

ठाणपच्छित्तं चेव विनियादेनतो भण्णति -

अहवा भिक्खुस्सेयं, जहणगाइम्मि ठाणपच्छित्तं ।

गणिणो उवरिं छंदो, मूलायरिण हसति हेट्ठा ॥५१२५॥

जे एयं जहणगादी असनिहियमसनिहियभेदेण चउत्थुगादि - एउत्थुगावमानं एयं भिक्खुस्स  
भणियं । "मणि" ति-उपज्जतापो, तस्स चउत्थुगादी पेदे ठायति । पापरित्तस एउत्थुगादी मूले ठायति । इ  
पारमाविकल्पो जहा उवरियदं मट्ठति तस्सा हेट्ठापदं हसति । ॥५१२५॥

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तयेण कालेणं ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होति नइयम्मि ॥५१२६॥

इह पढमिल्लुगं पारमियं ठाणं, वितियं कोटुजं, सणियं उट्ठियं । सेमं प्रवंचय ॥५१२६॥ एयं  
ठायेनरस पच्छित्तं भणियं ।

इमाणि पडिनेववरस पच्छित्तं भण्णति -

चत्तारि छव लहु गुरु, छम्मानिय छंद लहुग गुरुगो तु ।

मूलं जहणगम्मी, सेवने पणज्जणं मोनुं ॥५१२७॥

पायावच्चपरिगहे जहण्णे असण्हिए अदिट्ठे ङ्का । दिट्ठे ङ्का । सण्हिहते अदिट्ठे ङ्का । दिट्ठे फुं ।  
कोटुंवियपरिगहे जहण्णए असण्हिए - अदिट्ठे फुं । दिट्ठे फां । सण्हिहते अदिट्ठे फां । दिट्ठे  
छम्मासितो लहुतो छेदो ।

डंडियपरिगहते जहण्णए असण्हिहते अदिट्ठे छम्मासिओ लहुच्छेदो । दिट्ठे छम्मासिओ गुरु छेदो ।  
सण्हिए अदिट्ठे छम्मासितो गुरु छेदो । दिट्ठे मूलं ।

एयं जहण्णपदं अमुयंतेण उदिण्णमोहत्तणतो पडिमं पडिसेवंतस्स पच्छित्तं भणियं पसज्जणं मोत्तुं  
पसज्जणा णाम दिट्ठे संका भोइगादी, अघवा - गेण्हण कड्डुगादी ॥५१२७॥

चउगुरुग छच्च लहु गुरु, छम्मासियछेदो लहुग गुरुगो य ।

मूलं अणवट्ठप्पो, मज्झिमए पसज्जणं मोत्तुं ॥५१२८॥

मज्झिमे वि एवं चेव चारणविधी, णवरं - चउगुरुगाओ आढत्ते - अणवट्ठे ठाति ॥५१२८॥

तवछेदो लहु गुरुगो, छम्मासिओ मूल सेवमाणस्स ।

अणवट्ठप्पो पारंचिओ य उक्कोस विण्णवणे ॥५१२९॥

उक्कोसे वि एवं चेव चारणविधी, णवरं - चउगुरुगाओ ( छल्लहुगातो ) आढत्तं पारंचिते  
ठाति । विण्णवणति पडिसेवणा पत्थणा वा, ॥५१२९॥

इमेण कमेण चारणं करतेण आलावो कायव्वो -

पायावच्चपरिगह, जहण्ण सन्निहित तह असन्निहिते ।

अदिट्ठ दिट्ठ सेवति, आलावो एस सव्वत्थ ॥५१३०॥कंठा

अण्णे चारणियं एवं करेति - जहण्णे पायावच्चपरिगहे असण्हिहते सण्हिहते अदिट्ठ दिट्ठ  
त्ति, एयं पायावच्चपरिगहं अचयंतेण मज्झिमुक्कोसा वि चारियव्वा । पच्छित्तं चउलहुगादि मूलावसाणं ते चेव ।  
एयं कोटुंवियं पि चउगुरुगादि अणवट्ठप्पावसाणं । डंडियं पि छल्लहुगादि पारंचियावसाणं । एत्थ पायावच्चं  
जहण्णं कोटुवं मज्झिमं डंडियं उक्कोसं भाणियव्वं, उभयहा वि चारिज्जंतं अविखट्ठं ॥५१३०॥

चोदगो भणति -

जम्हा पढमे मूलं, वितिए अणवट्ठ ततिय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥५१३१॥

“पढमे” ति - जहण्णे चउलहुगातो आढत्तं मूले ठाति, मज्झिमे चउगुरुगातो आढत्तं अणवट्ठे ठाति,  
उक्कोसे छल्लहुगातो आढत्तं पारंचिए ठाति । जइ एवं पडिसेवमाणस्स पायच्छित्तं भवति तम्हा ठायंतस्सेव  
पारंचियं भवतु । अघवा - ठाणपच्छित्तं वि मूलाणवट्ठपारंचिया भवतु । किं कारणं ? अवश्यमेव प्रसज्जनां  
प्रतीत्य मूलानवस्थाप्यपारंचिकान् प्राप्स्यन्ति ॥५१३१॥

आयरिओ भणइ -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्पणं ॥५१३२॥



“पडिमेवणाए” ति - पडिमेवंतरस्य अतिपारागुह्यया मूलाणवट्टपारंजिया एवं संभवति ।

जति पुण ठितो ण चेव पडिसेवति तो कहं एते भवतुं ? ॥५१३२॥

जनि पुण सच्चो वि ठितो, सेवेज्जा होज्ज चरिमपच्छित्तं ।

तम्हा पसंगरहितं, जं सेवति तं ण सेसाइं ॥५१३३॥

जति णियमो होज्ज सच्चो ठायंतो पडिमेवेज्जा तो जुज्जट तं तुमं भणसि, जेण पुण ण सच्चो ठायंतो पडिसेवति तेण कारणेण पसंगरहितं जं ठायं सेवति तत्त्वेव पायच्छित्तं भवति ॥५१३३॥

“पराज्जणा पत्थ होति एमकेवक” ति एमकेवकातो पायच्छित्तदागातो पराज्जणा भवति ।

कहं ?, उच्यते - तं साधुं तत्थ टियं दट्ठुं अविरयओ को वि तरसेव संकं करेज्जा - “सूतं पडिमेवणाणिमित्तेणं एस एत्थ टिप्पो,” ताहे दिट्ठे संका भोतिगादो भेदा भवति ।

अह पसंगं इच्छसि तो इमो पसंगो “अचरिमपदे चरिमपदं” ति अस्य व्याख्या -

अदिट्ठातो दिट्ठं, चरिमं तहि संकमादि जा चरिमं ।

अहव ण चरिमाऽऽरोवण, ततो वि पुण पावती चरिमं ॥५१३४॥

चारणियाए कज्जमाणीए अदिट्ठदिट्ठेहि अदिट्ठवदातो जं दिट्ठपदं तं चरिमपदं भणसि, ततो चरिमपदातो भका भोतिगादिपदेहि विभासाए जाव चरिमं पारंजियं च पावति ।

स्यान् मतिः - “अथ दृष्टं कथं संका ?, ननु निः संकितमेव । उच्यते - दूरेण भण्यतो दिट्ठे वि अविभाविते संका, अहवा - आसन्नगो वि ईमि अज्जउच्छि तिरियणणेण संका भवति ।

अहवा - “चरिमपदे चरिमपदं” भणसि । अमच्छिहितपदातो मच्छिहितपदं चरिमपदं ति । मच्छिहितपदातो पडिमा गित्तमादी करेज्जा, परितायणमादिपदेहि चरिमं पावेज्जा । अथ ण चरिमागेवदं वि तृतीयः प्रकारः - जहणे चरिमं मूलं, मज्झिमे चरिमं धमवट्ठो, उवत्तोमे चरिमं पारंजियं । ततो एवेवदकातो चरिमपदातो संकादिपदेहि चरिमं पारंजियं पावट ॥५१३५॥

“अतं पि गंआणादिनिष्कण्ण” ति अस्य व्याख्या -

अहवा आणादिविराहणाओ एककंकियाओ चरिमपदं ।

पावति तेण उ णियमा, पच्छिचधरा अनिपसंगो ॥५१३५॥

अहवा - आणादिविराहणाओ एककंकियाओ चरिमपदं, ता विराहणा दूहिता - आनन्दमेव । तस्य एवेवदकातो तं चरिमपदं निष्कण्ण ।

कहं ?, उच्यते - मय्यामिना दिट्ठे पंथाणि एतथाए परितायणदि अस्मि पावति, संकमे भावे पुन संकमे - दूरेताय वाउनु गाहा । एव चरिमं पावति । उवत्ता पसंगमो कट्ठिहं भवति उवत्ता पसंगमस्य जं पेव अमेमिने तं पेव उवत्ता । उवत्तापस्य उवत्तादिपदं भेद, पडिमेवणापस्य पडिमेवणापदि पदं - तं पसंगमिपदं । ॥५१३५॥

णत्थि खलु अपच्छित्ती, एवं ण य दाणि कोइ मुंचेज्जा ।  
कारि-अकारी समता, एवं सति राग-दोसा य ॥५१३६॥

एवं नास्ति कश्चिदप्रायश्चित्ती, न वा कश्चिदसेवमानोऽपि कर्मद्वन्द्वान्मुच्यते, जो वि पडिसेवति तस्स वि तं, जो वि ण पडिसेवति तस्स वि तं । एवं कारि अकारिसमभावता भवति । एवं प्रायश्चित्तसंभवे सति राग दोससंभवो य भवति ॥५१३६॥

“तं पि य आणादिणिफण्णं” पुनरप्यस्यैव पदस्य व्याख्या -

मुरियादी आणाए, अणवत्थ परंपराए थिरकरणं ।  
मिच्छत्तं संकादी, पसज्जणा जाव चरिमपदं ॥५१३७॥

सर्वमेयं पच्छित्तं आणादिपदेहि णिप्फज्जति, अवराहपदे पवत्तं तो तित्यकराणांभंगं करेति तत्थ से चउगुरुं, आणाभंगे मुरियदिट्ठं तो कज्जति ।

तम्मि चैव काले अणवत्थपदे वट्ठति तत्थ से द्धु । अणवत्थतो य परंपरेणं संजमवोच्छेदो भवति ।

तम्मि चैव काले देसेण मिच्छत्तमासेवति, परस्स वा मिच्छत्तं जणेति, थिरं वा करेति, तत्थ से द्धु ।

अवराहपदे पुण वट्ठं तो विराहणापदे वट्ठति चैव तत्थ परस्स संकं जणेति जहेयं मोसं तहऽणं पि ।  
अहव संकाभोइगादी पसज्जणा चउलहुगादी जाव चरिमं पदं पावति ॥५१३७॥

एत्थ चोदक आह -

अवराहे लहुगतरो, किं णु हु आणाए गुरुतरो दंडो ।  
आणाए च्चिय चरणं, तवभंगे किं न भगं तु ॥५१३८॥

चोदगो भणति - “अवराहपदे चउलहुं पच्छित्तं आणाभंगे चउगुरुं दिट्ठं । एवं कहं भवति, णणु अवराहपदे गुरुतरेण भवियव्वं” ?

आयरियो आह - “आणाए च्चिय” पच्छद्वं । परमत्थओ आणाए च्चिय चरणं ठियं, आणा दुवालसंगं गणिपिडगं ति काउं, तव्वतिककमे तवभंगे किं ण भगं भवति ?, किं च लोइया वि आणाए भंगे गुरुतरं डंडं करेति (पवत्तेति) ।

एत्थ दिट्ठं तो मुरियादि । मुरिय त्ति मोरपोसगवंसो चंदगुत्तो । आदिग्गहणातो अण्णे-  
रायाणो । ते आणाभंगे गुरुतरं डंडं पवत्तेति । एवं अम्ह वि आणा वलिया ॥५१३८॥

इमं णिदरिसणं -

भत्तमदाणमडंते, आणद्ववणंव छेत्तु वंसवती ।  
गविसण पत्त दरिसिते, पुरिसवति सवालडहणं च ॥५१३९॥

चंदगुत्तो मोरपोसगो त्ति जे अभिजाणंति खत्तिया ते तस्स आणं परिभवन्ति ।

चाणक्कस्स चिता-आणाहीणो केरिसो राया ? कहं आणातिक्खो होज्ज ? त्ति । तस्सं य चाणक्कस्स कप्पडियत्ते अडंतस्स एगम्मि गामे भत्तं न लद्धं । तत्थ य गामे बहू अंबा वंसा य । तस्स य गामस्स पडिणिविट्ठेणं आणद्ववणणिमित्तं लिहियं पेसियं इमेरिसं “आम्हान् छित्त्वा वंशानां

वृत्तिः शीघ्रं कार्ये" ति । तेहि य गामेयगेहि दुल्लिहियं ति काउं वंसे छेतुं अंचाण वनी कवा । गवेसाविया चाणक्केण - "किं कत्तं ?" ति । आगतो, उवालद्धा, एते वंसा रोधगादिमु उवउज्जंति, कीस भे छिण्णा ?, दंसियं लेहचौरियं - "अण्णं संदिट्ठं अण्णं चेव करेहि" ति उटपत्ता । ततो नस्स गामस्स गवालवुट्ठे हि पुरिसेहि अयोसिरेहि वति काउं सो गामो सव्वो दट्ठो । अण्णे भणंति - गवालवुट्ठा पुरिसा तीए वतीए छोडुं दट्ठा ॥५१३६॥

एगमरणं तु लोए, आणति वा उत्तरं अणंताइं ।

अवराहरक्खणट्ठा, तेणाणा उत्तरं वलिया ॥५१४०॥

लोएयआणाइयकमे (एगमरणं) । लोमुत्तरे पुण आणाएवकमे अणेगति जम्ममरणादं पचति । एणं च अतिचारवखणट्ठा चेव आणा वलिया, आणापणतिवकमे य अदयाराएवकमो रत्तिगतो चेव भवति ॥५१४०॥

"अणवत्थ" ति अस्य व्याख्या -

अणवत्थाए पसंगो, मिच्छत्ते संकमादिया दोसा ।

दुविहा विराहणा पुण, तहियं पुण संजमे इणसो ॥५१४१॥ कंठा

अणट्ठाडंडो विकहा, वक्खेव विसोत्तियाए सत्तिकरणं ।

आलिंणणादिदोसा, असण्णिहिए ठायमाणस्स ॥५१४२॥

प्रकारणे उंठो अणट्ठाडंडो, सो - दप्पे भावे य । दप्पे प्रकारणे अवरत्तं रायकुलं टंठेति । नावटंडो आणादीनं हायी ॥५१४२॥

"विकहाए" वयव्याणं -

मुट्ठ कया अह पडिमा, विणासिया ण वि य जाणमि तुमं ति ।

इति विकहादधिकरणं, आलिंणणे भंग भदितरा ॥५१४३॥ कंठा

धम्मिगणे कज्जमाणे कयादि हत्तादियाम भंगो ह्येवञ्च, सत्थ मपरिणते भट्ठेवाट दोसा ह्येवञ्च, वक्खोवो ते पेवमंत्तम, उल्लसवं च करेत्तमत्त मुत्तमपरिविषयो ।

विमोनिमा दप्पे भावे य । दप्पे नागमित्तदीपं गतं मुत्तमादिमा पडं, पणसो पासासदिमु मपरिणति, गतो मत्तहायी भवति । भावे नागादीनं, पासासस्य विमोनिमत्तं वरित्तम्य विमोने भवति ।

सत्तिकरणं नि भुत्तभोगीय, समुत्तभोगीय कोउणं ।

सद्य कोट मोहोदयण धम्मिमेवञ्च, धम्मिणिमा भट्ठेवञ्च, धम्मिणिमा मपरिणते भट्ठेवञ्च, धम्मिणिमादोसा य, पयो मत्त मेवञ्चारी करेत्त । एते धम्मिणिमे हावमात्तम्य दोसा ॥५१४३॥

इमे य मणिमहिण -

व्रीमंवा पडिणीयट्ठया व भोगन्धिणी व मन्निहिमा ।

काणच्छी उक्कंयण, आलाव णिमंतण पत्तोने ॥५१४४॥

मणिमहिणः चित्तं काण्ठेति स एव पयोवञ्च - व्रीमेवञ्च पडिणीयट्ठया, भोगन्धिणी य ।

तत्थ वीमंसाए—“किं एस सक्केति खोभेजं ण व” त्ति पडिमाए अणुपविसित्ता काणऽच्छी करेज्ज, थणुक्कंपं (उक्कंपणं) वा करेज्ज, आलावं वा करेज्ज—हे अमुग गाम ! कुसलं ते, निमंतणं वा करेज्ज—मए समं सामि ! भोगा भुंजसु. एवमादिएहि पलोभेजा । अहवा - पलोभेति थणकवखोरुअद्वण-दंसिएहि, कडक्खच्छिविकारणिरिक्खितेहि ॥५१४४॥

काणच्छिमाइएहिं, खोभियद्वाति तम्मि भदा तु ।

णासति इतरो मोहं, 'सुवण्णकारेण दिट्ठंतो ॥५१४५॥

जाहे काणच्छिमादिएहिं आगारेहिं खोभितो ताहे गिण्हामि त्ति उद्वातितो, ताहे सा देवता भदा णासेति, इतरो गाम सो खोभियसाधूतीए अहंसणं गताए सम्मोहं गतो पडितो तं दट्ठुमिच्छति । कत्तो गयासि ?, विलवति, पणविज्जंतो वि पणवणं ण गेण्हति । जहा अणंगसेणसुवण्णगारो ॥५१४५॥ एसा भद्विमंसा ।

इदार्णि “अपडिणीयट्ठताए” त्ति -

वीमंसा पडिणीता, विदरिसणऽखित्तमाइणो दोसा ।

असंपत्ती संपत्ती, लग्गस्स य कड्डणादीणि ॥५१४६॥

पडिणीया वि काणच्छिमातिएहिं वीमंसेउं, एत्थ वीमंसा गाम केवला, जाहे खुमिओ घातितो गिण्हामि त्ति ताहे सा पडिणीया “असंपत्ति” त्ति जाव ण चेव गेण्हति हत्थादिणा ताव विदरिसणं विकृतरूपं दर्शयति ।

अहवा—विदरिसणं अलगमेव लोगो लगं पासति, खित्तमादि वा करेज्ज, मारेज्ज वा ।

अधवा—सा पडिणीया पडिभोगसंपत्ति काउं तत्थेव लाएज्ज स्वानादिवत्, पडिणीयदेवतापमोगओ चेव लेप्पगसामिणा अण्णेण वा दिट्ठे गेण्हणकड्डणादिया दोसा करेज्ज ॥५१४६॥

पंता उ असंपत्ती, तहेव मारेज्ज खित्तमादी वा ।

संपत्तीइ वि लाएतु, कड्डणमादीणि कारेज्ज ॥५१४७॥ गतार्था

इदार्णि भोगत्थिणी -

भोगत्थिणी विगते, कोउयम्मि खित्तादि दित्तचित्तं वा ।

दट्ठूण व सेवंतं, देउलसामी करेज्ज इमं ॥५१४८॥

भोगत्थिणी देवता काणच्छिमादिएहिं उवल्लोभेत्ता खुमिण सह भोगे भुंजिता विगयभोगकोतुका मा अण्णाए सह भोगे भुंजउ त्ति खित्तादित्तं करेज्जा । अहवा—तीए सह सेवणं करेत्तं दट्ठूणं देउलसामी अहाभावेण इमं करेज्ज ॥५१४८॥

तं चेव णिड्डिवेत्ती, वंधण णिच्छुभण कडगमदो य ।

आयरिए गच्छंमि य, कुल गण संघे य पत्थारो ॥५१४९॥

तं सेवंतं दट्ठुं कुदो णिड्डिवेत्ति त्ति - मारेज्जा, पसू वा सयं वंधिज्जा, अप्पसू वि पसुणा वंधाविज्जा । अधवा - वसधी गाम नगर देस रज्जाओ वा णिच्छुभेज्जा । ‘कडगो’ त्ति खंधावारो । जहा सो

१ अणंगसेणेण, इत्यपि पाठः । २ गा० ५१४४ ।

परधिसयमोडणो एगम्स रणो अनिजिवेमेण अकारिणो वि गामगमसादि मध्ये विगामेड, एवं एगेम नयमरज्ज  
मद्यो वागधुद्रादी जो जत्य दीमड मो तद्वय मारिज्जनि । एम कडगमदो ।

अथवा - एमो कडगमदो, मह तेण कारिणा, मोत्तु वा तं कारि (जं), जो घायरिणो गच्छो वा  
कुलं गणो वा तं वावादेति, तद्वय वा टाणे जो मद्यो तं वावादेति ॥५.१४६॥

अथवा इमं कुज्जा -

गेण्हणे गुरुगा छम्मास कड्डणे छेदो होति व्यवहारं ।

पच्छाकडम्मि मूलं, उट्ठहण-विरुग्गणे णवमं ॥५.१४७॥

पट्टिवेवन्ते गहिते क्क । हत्थे गत्थे वा धेनुं कट्टिते पीते रायकुलं फुं । मेम परिकट्टिते फां । वयद्दारे  
छेदो । पच्छाकडो ति जितो मूलं । उट्ठाहे कते विरुग्गिते वा अणवट्टो भवति ॥५.१४८॥

उद्दवण णिव्विसण, एगमणेमे पदोस पारंची ।

अणवट्टप्पो दोसु य, दोसु य पारंचियो होति ॥५.१४९॥

उट्ठयिते णिव्विसण वा कते एगमणेमेनु वा पदोमे कते मो पट्टिवेवणो पारंचियं पावति ।  
उट्ठहण विरुग्गण एतेनु दोसु अणवट्टो भवति, णिव्विसणोद्दवणेनु दोसु पदेनु पारंचिय ॥५.१४९॥

अथवा - पट्टट्टो इमं कुज्जा -

एगम्स णन्थि दांसो, अपरिक्खितदिक्खगम्स अह दांसो ।

इति पंतो णिव्विसण, उद्दवण विरुग्गणं व करं ॥५.१५०॥

एगम्स णि पट्टिवेवणम्स ज दोसो, जो अपरिक्खितं दिक्खेति तस्म एम दोसो, इति एवं विवेकं  
पंतो घायरियं णिव्विसणं करेज्जा, उट्ठवेज्ज वा, कण्ण जाम-जयणुम्मायमं वा करेज्ज, एवं विक्खितत्तं विक्खितं  
॥५.१५०॥

अथवा सण्णिहिते इमे दोसा -

तन्थेव य पट्टिवंधो, अट्टिट्टु गमणादि वा अणंतीण ।

एते अण्णे य तट्ठि, दांसायो होति सण्णिहिण ॥५.१५१॥

तन्थेव पट्टिवण्ण पट्टिवंधं करेज्जा, अट्टिट्टु णि - वेणुगमणियं अट्टिट्टु णि इमे दोसा भवति ।

सन्ध्या - या वागमंथी विमयवोडणा वागज्जति, पीण्ण पणंणीण मो पट्टिवण्णोडो करेज्ज

॥५.१५१॥

नामो पुण सण्णिहिणपट्टिमामो इमस्मि होज्जा -

कट्टे पाणे चित्ते, दंतकम्मे य मेलकम्मे य ।

दिट्ठिण्णत्ते कूले, गित्तचित्तान्न भंगणया ॥५.१५२॥

पुणत्ते य - । दिट्ठिणा पण कण्ण पट्टिमामो । मेम कट्टेण चित्तं विक्खितं ज्ञानं मो विक्खितवन्तो, ज्ञानं  
गित्तचित्तान्नं भंगणया मो विक्खितो मो विक्खितो वा अणो भवति ॥५.१५२॥

तासि पुण सण्णिहियाणं देवयाणं विण्णवणं पडुच्च इमो पगारो भावो होज्जा -

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१५५॥

एतीए गाहाए चउभंगो गहितो ॥५१५५॥

तत्थ पढमभंगे इमं उदाहरणं -

सोपारयम्मि णयरे, रण्णा किर मग्गिओ य णिगमकरो ।

अकरो त्ति मरणधम्मो, बालतवे धुत्तसंजोगो ॥५१५६॥

सोपारयम्मि णगरे णेगमो त्ति वाणियजणो वसति । ताण य पंच कुडुवियसयाणि वसति ।

तत्थ य राया मंतिणा वुग्गाहितो - “एते रूवगकरं मग्गिज्जंति ।”

रण्णा मग्गिता । ते य ‘अकरे’ त्ति पुत्ताणुपुत्तिओ करो भविस्सई, ण देमो ।

रण्णा भणिया - “जति ण देह, तो इमम्मि गिहे अग्गिपवेसं करेह” । ततो तेहि मरण-धम्मो ववसितो । “ण य णाम करपवत्ति करेमो”, सव्वे अग्गिं पविट्ठा । ॥५१५६॥

पंचसयभोगि अगणी, अपरिग्गह सालभंजि सिंदूरे ।

तुह मज्झं धुत्तपुत्ताइ अवण्णे विज्जखीलणता ॥५१५७॥

तेसिं पंच महिलसताइ, ताणि वि अग्गिं पविट्ठाणि । ताओ य बालतवेण पंच वि सयाइ अपरिग्गहिया जाता । तेहिं य णिगमेहिं तम्मि चैव णगरे सिंदूरं सभाघरं कारियं । तत्थ पंच सालिभंजिता सता । ते तेहिं देवतेहिं य परिग्गहिता ।

ताओ य देवताओ ण कोइ देवो इच्छइ, ताहे धुत्तेहिं सह संपलग्गाओ । ते धुत्ता तस्संवंधे भंडणं काउमाढत्ता, एसा ण तुहं मज्झं, इतरो वि भणाति - मज्झं ण तुहं । जा य जेण धुत्तेण सह अच्छइ सा तस्स सव्वं पुव्वभवं साहति ।

ततो ते भणंति - हरे ! अमुगणामधेया एस तुज्झं माता भगिणि वा इदाणि अमुगेण सह संपलग्गा, ता य एगम्मि पीति ण वंधंति, जो जो पडिहाति तेण सह अच्छंति । तं च सोउं अयसो त्ति काउं विज्जावातिएणं खीलावियातो ॥५१५७॥ गतो पढम भंगो ।

इदाणि तिण्णि वि भंगा एगगाहाए वक्खाणेति -

वित्थियम्मि रयणदेवय, तइए भंगम्मि सुइयविज्जातो ।

‘गोरी-गंधारीया, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१५८॥

वित्थियभंगे रयणदेवता उदाहरणं । अप्पड्डियत्तणतो कामाउरत्तणओ यं सा सुहविण्णवणा, सव्वसुहसंपायत्तणओ य सा दुहमोया ।

ननियभंगे मुड्यविज्ञाश्रो भवन्ति - ताश्रो य णिच्चं मुड्यमाधारत्तणश्रो गव्यमुद्वयपटि-  
सेवणतो महिद्वियत्तणश्रो य दुह्विण्णप्पाश्रो, तेति उग्गत्तणतो णिच्चं दुरणुचत्तणश्रो य छेहे य  
मावायत्तणश्रो मुह्मोया ।

चउत्थभंगे गोरि-मंधारीश्रो मातंगविज्ञाश्रो माहणकाले लोगगरहियत्तणतो दुह्विण्ण-  
वणाश्रो, जह्दुक्कामनंपायत्तणश्रो य दुह्मोया ॥५१५८॥ एवं चउत्थभंगो वक्खाश्रो ।

इशाणि तिविधपरिग्गहे गुग्गु लाघवं भण्णति -

तिण्ह वि कतरो गुरुश्रो, पागतिय कुडुंवि उंडिए चेव ।

माहस अरुमिक्ख भण्ण, इतरे पडिपक्ख पभुराया ॥५१५९॥

सीगो पुच्छति - "पायावच्च-कुटुंबिय-उडियपरिग्गहाण कस्य गुग्गरो सीगो, कस्य मा  
अपगतरो ?" एत्थ य भयणा भण्णति - पागतियं गुग्गरं, कोटुंबिय-उडियं गुरुवरं ।

कहं ?, उच्यते - गो गुग्गुत्तणंग माहमकारी अरुमिक्खियकारी य, पडोमरुत्तणश्रो य भय न  
भवति । एव गो पागतियो मारणं पि ववनेज्जा ।

"उयरे" नि कोटुंबिय-उडिया, ते पागतित्तम पडिपक्खभूतो ।

कहं ?, उच्यते - ते माहमकारी न भवन्ति, अरुमिक्खियकारी य न भवति, पडो भवन्ति, भयं न  
तेति भवति । ५१५९॥

इम -

ईसरियत्ता रज्जा, व भंसाण मंतुपहरणा रिमश्रो ।

तेण समिक्खियकारी, अण्णा वि य मिं बहु अनिय ॥५१६०॥

मन्तु कोरो । एते रिमश्रो कोवपहरणा भवन्ति, रज्जा य मा मं रज्जाश्रो ईसरियत्ताश्रो य भंसाणि,  
पतो ते समिक्खियकारी भवन्ति । अण्णं च तेति अण्णाश्रो विक्कं पडिमाश्रो पडि, एतो तेमं अण्णाश्रो ॥५१६०॥  
( यतोच्यते ) -

यह्वा - "ईसरिये" नि अण्णं अण्णाश्रो -

पन्थारदोसकारी, णिवायराश्रो य वल्लुजणे फुमद ।

पागतियो पुण तस्स व निवस्स व भया ण पटिकुज्जा ॥५१६१॥

उडिपक्खोडिपक्खो गुग्गरो, पागतियो गुरुवरं । एतावत्तु, गो एतस्स व अण्णं एतो को वल्लुजं  
करेज्जा, एव वल्लुजो य गुरुवरं फुमदि, तेण गो गुग्गरो । पागतियकारी एव उडिपक्खो य फुमद, अण्णं च -  
पागतियो "निवस्स" नि एतस्स "भया" निवस्स भया वल्लुजकारं न करेति, एतेन अण्णाश्रो पागतियो  
गुरुवरं ॥५१६१॥

इति च -

अयि य इ कम्मएप्पा, ण य गुर्गी तेमि पेव दाग्गि ।

तेण कसं पि ण गज्जनि, इतरन्ध धुवो भंसे दीगो ॥५१६२॥

ते पागतिता खेत्ते खलादिसु कम्मवखणिया पडिमाण उदंतं ण वहंति, तेण तत्थ कत्तो वि अवराहो ण णज्जति, ण य तेसि संतियासु देवद्वोणोसु रक्खवालो भवति, ण वा दारपालो भवति । इतरत्थ त्ति राय-कुडुंविएसु धुवो दोसो भवइ ॥५१६२॥

तुल्ले मेहुणभावे, णाणत्ताऽऽरोवणा य एमेव ।

जेण णिवे पत्थारो, रागो वि य वत्थुमासज्ज ॥५१६३॥

पागतिय-कुडुंविय-डंडिएसु तुल्ले मेहुणभावे अवराहणाणत्तणो चेव पायच्छित्ते णाणत्तं । पायावच्च-परिगहातो कोडुंवियपरिगहे कालगुरुगा, डंडियपरिगहे तवगुरुगा भणिता । अण्णं च कोडुंविय-डंडिएसु पत्थारदोसतो अधिकतरं पच्छित्तं ।

अह्वा - वत्थुविसेसओ रागविसेसो, रागविसेसओ पच्छित्तविसेसो भवइ ॥५१६३॥

जतो भण्णति -

जतिभागगया मत्ता, रागादीणं तहा चयो कम्मे ।

रागादिविधुरता वि हु, पायं वत्थूण विहुरत्ता ॥५१६४॥

जारिसी रागभागमात्रा मंदा मध्या तीव्रा वा तारिसी मात्रा कर्मबन्धो भवति ।

अह्वा - जावतिया रागविसेसा तावतिया कम्मानुभागविसेसा भवति - तुल्या इत्यर्थः ।

तेण भण्णति - जतियं भागं गता रागमात्रा । मात्राशब्दः परिमाणवाचकः । तन्मात्रः कर्मबन्धो भवतीत्यर्थः । "रागाइ विहुरया वि हु" - रागादिविधुरता नाम रिपमत्वं । हु शब्दो यस्मादर्थः । यत्समुत्थो रागः प्रतिमादिके तस्य यस्मात् प्रतिमादिवस्तुविधुरता तस्माद्रागादिविधुरत्वं भवति ॥५१६४॥

अयमन्यप्रकारः विधुरत्वप्रदर्शने -

रणो य इत्थिया खल्लु, संपत्तीकारणम्मि पारंची ।

अमच्छी अणवट्ठप्पो, मूलं पुण पागयजणम्मि ॥५१६५॥

रणो जा इत्थी तीए सह मेहुणसंपत्ती, एतेण मेहुणसंपत्तिकारणेण पारंचियं पायच्छित्तं । अमच्छिए अणवट्ठो । पागतिए मूलं । एयं पच्छित्ते णाणत्तं वत्थुणाणत्ताओ चेव भणियं ॥५१६५॥ दिव्वं गयं ।

इदाणि माणुस्सं भण्णइ -

माणुस्सगं पि तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।

पायावच्च कुडुंविय, दंडिगपारिग्गहं चेव ॥५१६६॥

जहण्णादिगं तिविधं पुणो एक्केक्कं पायावच्चातिपरिगहे भाणियव्वं ।

उक्कोस माउ-भज्जा, मज्झं पुण भइणि-धूयमादीओ ।

खरियादी य जहण्णा, पगयं सचि (जि) तेतरे देहे ॥५१६७॥

माता अण्णो अगम्मा, अण्णस्स य तं ण देति, अतो तीए सह जं मेहुणे तिव्वरागज्झवसाणं उप्पज्जति तं उक्कोसं ।

भज्जं अण्णस्स ण देति अतो तम्मि मुच्छित्तो उक्कोसं ।



मिहृगकाले भगिगी गम्मा । मेगकाले भगिनो, धूवा व मय्यकालं पयतो सगम्मा, पयस्य नातो  
देति ति पयतो ताहि मह जं मेहुगं तं मज्झिमं ।

सर्गादिषु मन्त्रजगमामणानु ज त्रिवामिजिनेतो, प्रतो नं ज्ञानं । इह मादुग्गदेहदुग्ग  
अधिकानो, ज पट्टिमानु । तं देहं दुग्गिधं - मनेग्गमनेयं वा ॥५१६॥

सामण्णतो वेहजुए ठायंतस्स इमं -

'पद्मिन्लुगमि ठाणे, चडरो मासा हवंतऽणुग्धाता ।

छम्माया ३ उग्घाया, वित्तिण, तत्तिण भवे च्छेदो ॥५१६८॥

पट्टमिल्लुग ति जहणं, पायावच्चपरिगृहीतो जहणो ठाति न् ।

चित्तिः नि मज्झिमे पायावन्वपरिगहे ठत्ति षु ।

तत्तियं नि उक्तेनं पायावन्नपरिणतं उक्तेनं ताति देरी ॥५१६॥

ण भणियं कोविद्य छेदो, यतस्तज्जापनायमिदमुच्यते —

पद्मस्य ततियठाणे, छम्मासुग्घाइओ भवे ल्हो ।

चउमासो ह्यम्मासो, वित्तिण तत्तिण अणुग्धानो ॥५१६६॥

एतत् पञ्चदशार्थं पायावच्छास्त्रिणम्, तदनन्तरं त्रितयं भागं उपकोषम्, तस्य चो नो द्वेष्टी यो दृग्भाविनो  
दृग्भाविनो नापद्यते । “अत्रमासी” पञ्चदशं अनयोस्तृतीयस्यानानुवर्तनादिमुच्यते ।

धितिः तत् कोटये उक्तोऽसि कोट्यवस्थितिः भट्टगुरुयो रंशः ।

नतिष् ति दृष्टियन्त्रिणो सुखो दृष्ट्यानिषो द्वेने । पद्मादप्य नोदये नान्यम् नान्यम् न  
अं येन पापान्त्रो, एनं येन दृष्टिम् वि ज्ञानमज्जिते ॥१६८॥

पदमिल्लुगम्मि तवारिह, दांहि वि लह, हांनि एए पन्डिना ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होनि तनियम्मि ॥२१७०॥

पञ्चगव्यं नाम पापघ्नमपिचकरो द्योति स्यादित्या नवविधा, ये द्यो वि मन्त्रा ।

विनिष्पत्तिं विना नोद्विष्यति नैव समाधिना मोक्षं प्राप्तव्यं नैव साधकस्य मयः ।

नमिन् नि कटिपान्निगदित्ति से पतिःपु। सोमि ममसिपि मे ममसिपि ममसिपि ममसिपि  
पुपं ठागति-पुपं । ममसिपि मम ।

इति चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः -

चतुर्गुणा ऋगुणा, अंशं मूलं जहत्या, शानि ।

नृगुरुरगं नन्दं मूलं, अणनदृष्यां न मज्जिमन्त्र ॥२१३१॥

[illegible][illegible][illegible]

छेदो मूलं च तहा, अणवद्वृप्पो य होति पारंची ।  
एवं दिट्ठमदिट्ठे, सेवते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१७२॥

पायावच्चपरिगहे जहण्णे अदिट्ठे ० ० । दिट्ठे ० ० ० ।

कोट्ठविण परिगहे जहण्णे अदिट्ठे ० ० ० । दिट्ठे छेदो ।

डंडियपरिगहे जहण्णे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

पायावच्चपरिगहे मज्झिमे अदिट्ठे छग्गुरुगा । दिट्ठे छेदो ।

कोट्ठविणपरिगहे मज्झिमे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

डंडियपरिगहे मज्झिमे अदिट्ठे मूलं । दिट्ठे अणवद्वो ।

पायावच्चपरिगहे उक्कोसए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

कुट्ठविणपरिगहे उक्कोसए अदिट्ठे मूलं । दिट्ठे अणवद्वो ।

डंडियपरिगहे उक्कोसए अदिट्ठे अणवद्वो । दिट्ठे पारंचीयं ।

अहवा - पायावच्चे जहण्णमज्झिमुक्कोसे अदिट्ठदिट्ठेसु चउगुरुगादि मूले ठायति ।

कोट्ठविण जहण्णादिगे छग्गुरुगादि अणवद्वे ठायति ।

डंडियपरिगहे जहण्णादिगे छेदादि पारंचीए ठाति ॥५१७२॥

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, धितिए अणवद्व ततिय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवद्व पारंची ॥५१७३॥ पूर्ववत्

आचार्य आह -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं चिय आणादिणिप्फणं ॥५१७४॥ पूर्ववत्

ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुच्चिं ।

आलिङ्गणादि मोत्तुं, माणुस्से सेवमाणस्स ॥५१७५॥

ते चेव पुव्वभणिता अणवत्थादिगा दोसा भवन्ति । “तत्थ” ति माणुस्से ।

चोदगेण चोदितं - “कीस आणाए गुरुतरो डंडो ?” आयरिएण मोरियआणाए दिट्ठंत काउं  
तित्थकराणा गुरुतरी कता । एवं जहा पुव्वं भणियं तहा भाणियव्वं ।

दिव्वे लेप्पेण आलिङ्गणभंगदोसा ते मोत्तुं सेसा दोसा माणुसं सेवमाणस्स सव्वे ते चेव भाणियव्वा

॥५१७५॥

इदमेव फुडतरमाह -

आलिङ्गंते हत्थादिभंजणे जे तु पच्छक्कम्मादी ।

ते इह णत्थि इमे पुण, णक्खादिविच्छेयणे सूया ॥५१७६॥

लेप्पगं आनिगंतस्स जे हत्थादिभंगे पच्छक्कम्मारिया दोसा भवन्ति ते एह देहजुते न भवन्ति । इमे देहजुए दोसा भवन्ति—इत्थी कामानुरत्तगमो णहेहि ता छिदेज्ज, दंतैहि वा छिदेज्ज, नेहि सो मूच्छन्ति नपक्षेण वा परपक्षेण वा जहा एस सेवगो ति ॥५१७६॥

माणसीसु वि इमे चउरो विकप्पा—

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होंति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१७७॥

मंगचउककं कंठं ।

चउसु वि भंगेसु जह्वकम्मं इमे उदाहरणा—

खरिया महिड्डिगणिया, अंतैपुरिया य रायमाया य ।

उभयं सुहविण्णवणे, सुमोय दोहिं पि य दुहाओ ॥५१७८॥

खरिया सव्वजणसामण्णं ति सुहविण्णवणा, परिपेनवमुहलवासादत्तणतो मुहमोया पढमभंगिल्ला ।

महिड्डिगणिया वि गणियत्तणतो चेव मुहविण्णप्पा जोव्वणरुवविभमरुयादिभावजुत्तणतो य भाववक्खेवकारिणि ति दुहमोया त्रितियभंगिल्ली ।

ततियभंगे अंतैपुरिया । तस्य दुप्पवेसं भयं च, अतो दुहविण्णवणा, अवायवमुहलवासादो मुहमोया ।

चउत्थे भंगे रण्णो माता । सा नुरक्किता भयं च नव्वरत्त य मुक्काले पूवणिज्जनि दुहविण्णवणा, सव्वमुत्तुसंपायकारिणी अयाए य रत्तति जम्हा तेण दुहमोया । पच्छद्वेण एते सेव जह्वकम्मं चउरो भंगा गहिया ॥५१७९॥

चोदगो पुच्छइ—

निण्ह वि कतरो गुरुओ, पागनिय कुडुवि डंडिण, चेव ।

साहस असमिक्खमाण, इतरं पडिपक्ख पभु राया ॥५१८०॥

कंठः पूरय्य । गनं नाचुरसग ।

इत्थणि नेत्तिअ—

तेरिच्छं पि य निविहं, जहणयं मज्झिमं च उक्कसं ।

पायावच्च कुडुविय, दंडियपारिग्गहं चेव ॥५१८१॥

अहणयानिं विविधं, एक्केक्कं पायावक्खारिणमिक्खिय भविमस्य ।

असिग अमिल्ला जहण्णा, गरि महिन्ना मज्झिमा वनवमादी ।

गोणि क्कण्णक्कसं, पगनं मज्झितेनं देहे ॥५१८२॥

इह इत्थानेद्वयतो जहणयमिक्खिक्कण्णोपमा ।

अथवा - अइयअमिलासु णिरपायत्तणतो सुहपावणियासु ण तिव्वज्जक्कवसाओ अतो जहणं ।  
 खरि-महिसिमादियासु सावयासु जो परिभोगज्जक्कवसाओ स तिव्वतरो अतो मज्झिमं ।  
 गोणि-कणेरुसु, कणेरु त्ति हत्थिणी, लोगगरहियसावयासु जो अज्जक्कवसाओ तिव्वतमो अतो उक्कोसं ।  
 फरिसओ वा विसेसो भाणियव्वो । तिरियाण वि पडिमासु णाधिकारो, देहेण अधिकारो । तं  
 देहं दुविधं - सचेयणं अचेयणं वा ॥५१८१॥

सामण्णतो देहजुए इमं पच्छित्तं ठायमाणस्स -

चत्तारि य उग्घाया, जहणिए मज्झिमे अणुग्घाया ।

छम्मासा उग्घाया, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१८२॥

पायावच्चपरिगहे जहणिए ठाति ० ० । मज्झिमए ० ० । उक्कोसए फुं । एवं चेव  
 कोडुविए डंडिए य ॥५१८२॥

इमो विसेसो -

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेण ।

वितियम्मि य कालगुरु, तयगुरुगा हांति तइयम्मि ॥५१८३॥

पढमिल्लुगं ठाणं पागतितं, वितिय ठाणं कोडुवियं, ततियं डंडियं, सेसं कंठं । ठाणपच्छित्तं गतं  
 तिरिएसु ।

इदार्णि तिरिएसु पडिसेवणापच्छित्तं -

चउरो लहुगा गुरुगा, छेदो मूलं जहणिए होति ।

चउगुरुग छेद मूलं, अणवट्टप्पो य मज्झिमए ॥५१८४॥

छेदो मूलं च तहा, अणवट्टप्पो य होइ पारंची ।

एवं दिट्ठमदिट्ठे, सेवन्ते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१८५॥

पायावच्चपरिगहे जहणिए अदिट्ठे पडिसेवन्तस्स ड्का । दिट्ठे ड्का ।

कोडुवियपरिगहे जहणिए पडिसेवन्तस्स अदिट्ठे चउगुरु । दिट्ठे सेवन्तस्स छेदो ।

डंडिए जहणिए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

पायावच्चपरिगहे मज्झिमए अदिट्ठे ण्का । दिट्ठे छेदो ।

कोडुविए मज्झिमए य अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

डंडियपरिगहे मज्झिमपरिगहे अदिट्ठे मूलं । दिट्ठे अणवट्टो ।

पायावच्चपरिगहे उक्कोसे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूलं ।

कोडुविए उक्कोसे अदिट्ठे मूलं । दिट्ठे अणवट्टो ।

डंडिए उक्कोसे अदिट्ठे अणवट्टो । दिट्ठे पारंचीयं । एयं पच्छित्तं पसंगविरहियं भणियं ॥५१८५॥

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, वितिण् अणवट्ट तइय पारंची ।  
तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ट पारंची ॥५१८६॥ कंठा

आचार्याह -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा तन्थ होइ एककेकं ।  
चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिक्कणं ॥५१८७॥ कंठा  
ते चंव तन्थ दांसा, मोरियआणाए जे भणित पुचिं ।  
आलवणादी मोचुं, तेरिच्छे मेवमाणस्स ॥५१८८॥

पूर्ववत् पुष्पदं कंठं । मातृसिन्धीसु जहा प्रात्ययनिबन्धमा भवति तदा त्रिविधसु दिति । यतो ते प्रात्ययानि त्रिविधसु मोचुं, तेना आयमंजमविराहणादिदोषा मध्ये न भवति ॥५१८८॥

जह हास-खेडु-आकार-विन्धमा होति मणुयदर्थीसु ।  
आलावा य बहुविहा, ते णत्थि तिरिक्कइर्थीसु ॥५१८९॥ कंठा

विष्णवणे इमो चउभंगो -

मुहविण्णप्पा मुहमोइया य, मुहविण्णप्पा य होति दुहमोया ।  
दुहविण्णप्पा य मुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१९०॥

चउभंगव्यया मंठा जामया ॥५१९०॥

चउभंगे जहमगं इमे उवाहण्णा -

अमिलादी उभयमुहा, अरहण्णगमादिमक्कटि दुमोया ।  
सोणादि तनियमंगे, उभयदुहा मीहि-वन्धीसो ॥५१९१॥

चउभंगे मुहमगं निग्वागव्यान् मुहविण्णप्पा, सोमगर्हिण्णप्पा ॥५१९१॥

तनियमंगे नात्तियादी विडवावे कामानुत्तयादी मुहविण्णप्पा, यतो येन उभय मणुगतायो मया दुहमोया । एवम् सिद्धौ समस्तयो ।

तनियमंगे मोत्तारियायो मययो वि दुहम ममागम इत्यर्थः । यिमेन पुन मणुग । यतो दुर्लभत्वात् । सोमगर्हिण्णप्पायो मुहमोया ।

चउभंगे मीहिमादिनायो जीविमंजरीयो येन दुर्लभत्वात्, यतो येन उभय मणुग । यतो मययो वि दुहमोया ॥५१९१॥

चोदनी पुनर्द्वि - यतो मुहमो अहमो मयो दुहम, यो मीहिमंजरीयो कामानुत्तयायो मययो मयः ।

आयरिओ आह -

जति ता सणप्फतीसु, मेहुणसन्नं तु पावती पुरिसो ।

जीवितदोच्चा जहियं, किं पुण सेसासु जातीसु ॥५१६२॥

सव्वे जे ण्हारा ते सणप्फया भण्णंति, इह सीही घेतन्वा । जइ ताव सीहीसु जीवितंतकरीसु पुरिसो मेहुणं पावति. किं पुण सेसासु अमिलादिजातिसु त्ति ।

एत्थ दिट्ठंतो - एक्का सीही खुडुलिया चेव गहितां, सा वंघणत्था चेव जोव्वणं पत्ता । रित्तुकाले मेहुणत्थी, सजातिपुरिसं अलभंती अहावत्तीतो एक्केण पुरिसेणं सागारियठाणे छिक्का, सा य चाडुं काउमाढत्ता, सा य तेण अप्पसागारिए पडिसेविता । तत्थ तेसि दोण्ह वि संसाराणु-भावतो अणुरागो जातो । तेण सा वंघणा मुक्का । सा तं पुरिसं घेतुं पलाता अडवि पविट्ठा । तं पुरिसं गुहाए छोडुं आणेउं पोग्गले देति । सो वि तं पडिसेवति ॥५१६२॥ एयं पुरिसाणं भणियं ।

इदार्णि संजतीणं भण्णइ -

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होति नायव्वो ।

पुरिसपडिमाओ तासिं, साणम्मि य जं च अणुरागो ॥५१६३॥

संजतीण वि एमेव सव्वं दट्ठव्वं, णवरं - लेप्पगे दिव्वपुरिसपडिमाओ । माणुसे मणुयपुरिसा । तेरिच्छे तिरियपुरिसा य दट्ठव्वा ।

तेरिच्छे साणदिट्ठंतो य कायव्वो -

एक्का अगारी अवाउडा काइयं वोसिरंती विरहे साणेण दिट्ठा । सो य साणो पुच्छं 'लोलंतो चाडुं करंतो उच्चासणाए अल्लीणो । सा अगारी चित्तेइ - "पेच्छामि एस किं करेति" त्ति । सा तस्स पुरतो सागारियं अभिमुहं काउं हत्थेहि जाणुएहि य अघोमुही ठिता । तेण सा पडिसेविता । तीए अगारीए तत्थेव साणे अणुरागो जातो । एवं मिग्ग-छगल-वाणरादी वि अगारि अभिलसंति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा सागारिए ण वसियव्वं ॥५१६३॥

इमं वितियपदं -

अद्धाणणिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, वसंति तो दव्वसागरिए ॥५१६४॥

अद्धाणणिग्गय त्ति अद्धाणप्रतिपन्नाः तिक्खुत्तो तिन्नि वारा अणं सुद्धं वसहि मग्गियं । "असति त्ति अलभंता ताहे दव्वसागारियवसवीए जयणाए वसंति ।

का य जयणा ?, गीयसद्दाइसु उच्चेण सद्देण सज्झायं करंति, भाणलद्धी वा भाणं भायति ॥५१६४॥

इमो भावसागारियस्स अववातो -

अद्धाणणिग्गयादी, वासे सावयमए व तेणमए ।

आवरिया तिविहे वी, वसंति जत्तणाए गीयत्था ॥५१६५॥

अतो गामादीण सुद्वयसहि अलभन्ता चाहि गामस्य निवसन्ति । इमेहि कारयेहि — यामं यामनि,  
अहवा — चाहि सीहमादिमाययभयं, सरीरोवद्विनेगभयं वा, ताहे अतो येव भावमागामिण् वमनि । तस्य  
तिविधा वि पडिमाप्रो दिव्वा माण्मा तिरिया य यत्तमादिण्हि आयरेति, अंतरे वा कटगचिनिमिनि इति ।  
एवं गीयत्या जयणाए वसन्ता मुज्जंति ॥५१६५॥

बहुधा दव्यभावसागारियनंभवे इमं भण्णति —

जहि अप्पतरा दोसा, आभरणादीण दूरतो य मिगा ।

चिल्लिमिणि णिमि जागरणं, गीति सज्जाय-भाणादी ॥५१६६॥

अप्यतरदोषे गीयत्या ठायंति, आभरणादज्जभत्तादीण य पगीयत्या दूरतो दविज्जंति, यं रिग  
अप्यगा ठायंति, अंतरे वा कटगचिनिमिनि इति, रातो य जागरणं करेति, गीयत्या इत्थिमादिगोवादिगरेणु य  
सज्जायं करेति, भाणं वा भायंति ॥५१६६॥

एसा खलु ओहेणं, वसही सागारिया समक्खाया ।

एत्तो उ विभागेणं, दोण्ह वि वग्गाण वोच्छामि ॥५१६७॥

जं पुग्गिइरणीण गामण्णतो अविभागेण पक्कमायं एत ओहो भण्णत् । मेमं कंठं ।

इमो कप्पमुत्ते ( प्रथमोद्देशके सूत्र २६, २७, २८, २९ ) विभागो भणितो —

णो कप्पइ णिरगयाणं इत्थिसागारिण् उवस्सण् वत्थण् ।

कप्पइ णिग्गंभीणं पुत्तिगगागारिण् उवस्सण् वत्थण् ।

णो कप्पति णिग्गंभीणं पुत्तिगगागारिण् उवस्सण् वत्थण् ।

कप्पइ णिग्गंभीणं इत्थिसागारिण् उवस्सण् वत्थण् ॥५१६८॥

एतेन मुत्तवक्कमो इमो भणितो —

समणाणं इत्थीमुं, ण कप्पति कप्पती य पुत्तिमेमुं ।

समणीणं पुत्तिमेमुं, ण कप्पति कप्पती धीमुं ॥५१६९॥ ५५

इत्थीसागारिण् उवस्सयस्मि सन्धेव इत्थिगा होती ।

देवी मणुय तिरिक्खवी, मन्धेव पमज्जणा नन्थ ॥५१७०॥

एतत् इत्थीण् समणाणि उवस्सन् । ण कप्पइ भणितं एत इत्थी भाषितवत्, एतौ भणति — मन्धेव  
इत्थिगा होत एत इत्थी पोररमुने भणित्ता, या य एते मणुमी विम्वरि । एतस्मि विम्वर यं वेद भणित्ता, ये  
येन साधमंभमविसाहयसेता, मन्धेव पमज्जणापमज्जणविसाह, य वेद न दूरमुने भणित्ता ॥५१७०॥

चोदमात्त —

जति मन्धेव य इत्थी, मोही य पमज्जणा य मन्धेव ।

मुत्तं तु किमाण्डं, चोदमा ! मुत्तं कारणं एतत् ॥५१७१॥

जन्म एतत् वेद य जन्म एतत् वेद इति, मो विम्वर मुत्तं इत्थीण् विम्वरमुत्तं जन्म ।

आचार्य आह - हे चोदग ! एतत् कारणं सुणसु -

पुव्वभणितं तु जं एत्थ, भण्णती तत्थ कारणं अत्थि ।

पडिसेहे अणुण्णा, कारणविसेसोवल्लंभो वा ॥५२०१॥

पुव्वद्धं कंठं । जे पुव्वं अणुजाणतेण अत्था भणिता ते चेवऽत्थे पडिसेवन्तो भणइ, ण दोसो ।

अहवा - जे पुव्वं पडिसेवन्तो अत्था भणिता, ते चेव अणुण्णं करेत्तो दंसेति, ण दोसो ।

अहवा - "कारणं" ति हेउं दरिसंते भणाति, ण दोसो ।

अहवा - विसेसोवल्लंभं वा दरिसन्तो पुव्वभणियं भणाति, ण दोसो ॥५२०१॥

किं च -

ओहे सच्चणिसेहो, सरिसाणुण्णा विभागसुत्तेसु ।

जयणाहेतुं भेदो, तह मज्झत्थादयो वा वि ॥५२०२॥

ओहमुत्ते सामण्णतो सच्चं चेव णिसिद्धं, विभागसुत्ते पुण सपवत्ते अणुण्णा, जहा पूरिसाण पुरिससागारिए कप्पति, इत्थीणं इत्थीसु कप्पइ ।

अहवा - जयणा जहा पुरिसेसु इत्थीसु वा कत्ता तं दरिसन्तेण विभागसुत्ते भेदो कतो ।

अहवा - पुरिसेसु इत्थीसु य मज्झत्थादयो विसेसा दंसेहामि त्ति विभागसुत्तसमारंभो ।

अहवा - अणन्तरसुत्ते सागारियं अत्थमो भणियं । इह पुण त चेव नुत्तेण णियमेति, विसे - सोवल्लंभो वा इमो पुरिस-नपुंसग-इत्थीसु ॥५२०२॥

तत्थ पुरिसेसु इमं -

पुरिससागारिए उवस्सयम्मि 'चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

ते वि य पुरिसा दुविहा, सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

जइ पुरिससागारिए उवस्सए ठाति तो चउलहुअं । ते य पुरिसा दुविधा - सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

तत्थ सविकारा इमे -

रुवं आभरणविहिं, वत्था-ऽलंकार-भोगे गंधे ।

आओज्ज णट्टु णाडग, गीए य मणोरमे सुणिया ॥५२०४॥

तत्थ रुवं उद्धर्तनस्तानजंघास्वेदकरणहृदंतवालसंठावणादियं, आभरणवत्थाणि वा णाणादेसियाणि विविहाणि परिद्वेति, आभरणमल्लादिणा वा अलंकरणेण अलकरेति, भोगं वा विभवेण विसिट्ठं भुजंति, मज्जादि वा पिबंति, चंदणकुंकुमकोट्टपुडादीहि वा गर्वेहि अप्पाणं आलिपेति, वासेति वा, धुवेति वा, तथादि वा चउल्लव्वहमाउज्जं वादंति, णच्चंति वा, णाडगं णाडंति, मणोहारि वा मणोरमं गेयं करेति, रुवादि वा दट्ठुं गंधे य मणोहरे अघाएत्ता गीयादिए य सद्दे सुणित्ता जत्थ गंधो तत्थ रसो वि । एवमादिएहि इदियऽत्थेहि भुत्तभोगिणो सतिकरणं, अमुत्तभोगिणो कोतुअं, पडिगमणादयो दोसा ॥५२०४॥

१ चउरो लहुगा य दोस आणादी, इति वृहत्कल्पे गा० २५५६ ।



एतेसु ठायमाणस्स इमं पच्छित्तं -

एक्केक्कम्मि य ठाणे, चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

आणाइणो य दोसा, विराहणा संजमाऽऽताए ॥५२०५॥

एतेसु ख्वंआभरणादिसु एक्केक्के ठायमाणस्स चउलहुया ॥५२०५॥

एवं ता सविगारे, णिव्वीगारे इमे भवे दोसा ।

संसद्देण विवुद्धे, अहिगरणं सुत्तपरिहाणी ॥५२०६॥

पुव्वद्धं कंठं । साधूणं सज्ज यसद्देणं आवस्सियणिसीहियसद्देण वा रातो सुत्तादि वुज्जेज्झा ततो अधिकरणं भवति । अहं अधिकरणभया सुत्तत्थपोरिसीओ ण करेत्ति तो सुत्तत्थपरिहाणी भवति ।

अहवा - “अधिकरणे” ति -- साधू काइयादि णिप्पिडंता पविसंता वा आवडेज् वा पवडेज्ज वा. णिसीहियादिसद्देण वा गिहत्था विवुद्धा रोसं करेज्जा, ततो अधिकरण उत्तरुत्तरतो भवेज्ज । अधिकरणेण वा पिट्ठापिट्ठि करेज्ज । ततो आयविराहणा सुत्तादिपरिहाणी य भवति ॥५२०६॥

अधवा - “अधिकरणे” ति पदस्य इमा व्याख्या -

आउज्जोवण वणिए, अगणि कुडुंवि कुकम्म कुम्मरिए ।

तेणे मालागारे, उब्भामग पंथिए जंते ॥५२०७॥

जम्हा एते दोसा तम्हा एएसु पुरिसेसु वि ण ठायव्वं ॥५२०७॥

चोदगो भणति -

एवं सुत्तं अफलं सुत्तणिवातो उ असति वसहीए ।

गीयत्था जयणाए, वसन्ति तो पुरिससागरिए ॥५२०८॥

आयरिओ भणति - सुत्तणिवाओ विसुद्धवसहीए असइ पुरिसाण जं पुरिससागारियं तं दव्वसागारियं, तत्थ गीयत्था जयणाए वसन्ति ॥५२०८॥

ते वि य पुरिसा दुविहा, सन्नी य असन्निणो य बोधव्वा ।

मज्झत्थाऽऽभरणपिया, कंदप्पा काहिया चेव ॥५२०९॥

ते पुरिसा दुविधा - असण्णिणो सण्णिणो य । जे सण्णिणो ते चउव्विहा - मज्झत्था आभरणपिया काहिया य । ॥५२०९॥

इमे आभरणपिया -

आभरणपिए जाणसु, अलंकरेते उ केसमादीणि ।

सइरहसिय-प्पललिया, सरीरकुइणो उ कंदप्पा ॥५२१०॥

पुव्वद्धं कंठं । इमे कदप्पिया - “सइर” पच्छद्धं । सइरं ति गुरुभिरनिवार्यमाणाः स्वेच्छया हुसन्ति, ङासु अंदोलकादिदप्पललिया घेइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करेत्तो कंदप्पा भवन्ति ॥५२१०॥

इमे य काहिया -

अक्खातिगा उ अक्खाणगाणि गीयाणि छलियकव्वाणि ।

कहयंता उ कहाओ, तिसमुत्था काहिया होंति ॥५२११॥

तरंगवतीमादिअक्खातियाओ अक्खाणगा घुत्तक्खाणगा, पदाणि ध्रुवगादियाणि कहिति । जे तेसि वण्णा सेतुमादिया छलियकव्वा, वसुदेवचरियचेडगादिकहाओ, धम्मत्थकामेसु य अण्णाओ वि कहाओ कहेंता काहिया भवन्ति ॥५२११॥

एएसिं तिण्हं पी, जे उ विगाराण बाहिरा पुरिसा ।

वेरगगरुई णिहुया, णिसग्गहिरिमं तु मज्झत्था ॥५२१२॥

वेरगं रुच्चति जेसि ते वेर (र) गरुई, करचरणिदिएसु जे सत्या अच्छंति ते णिहुया, निसग्गो नाम स्वभावः, हिरिमं जे सलज्जा इत्यर्थः । एवंविहा मज्झत्था ॥५२१२॥

पुणो एतेसि इमो भेदो -

एक्केक्का ते तिविहा, थेरा तह मज्झिमा य तरुणा य ।

एवं सन्नी वारस, वारस अस्सण्णिणो होंति ॥५२१३॥

मज्झत्था तिविधा - थेरा मज्झिमा तरुणा । एवं आभरणप्पिया वि कंदप्पिया वि क हिया वि तिविधा । एवं एते वारसविधा सण्णिणो । एवं असण्णिो वि वारसविधा कायव्वा ॥५२१३॥

पुरिससागारियस्स अलंभे, कदाति णपुंसगसागारिओ उवस्सओ लभेज्जा, तत्थ वि इमो भेदो -

एमेव वारसविहो, पुरिस-णपुंसाण सण्णिणं भेदो ।

अस्सण्णीण वि एवं, पडिसेवग अपडिसेवीणं ॥५२१४॥

एमेवज्वधारणे, जहा पुरिसाणं भेदो वारसविहो तहा सण्णीणं असण्णीणं च णपुंसगाणं वारसभेदा कायव्वा ।

ते सव्वे वि सम्पसतो दुविधा बट्ठव्वा - इत्थिणेवत्थिगा पुरिसणेवत्थिगा य ।

जे पुरिसणेवत्था ते दुविधा - पडिसेवी य अपडिसेवी य ।

जे इत्थिणेवत्थिया ते णियमा पडिसेवी ॥५२१४॥

एवं विभागेसु विभत्तेसु इमं पच्छित्तं भण्णति -

काहीया तरुणैसुं, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणाणं ।

सेसेसु वि चउल्लहृगा, समणाणं पुरिसवग्गम्मि ॥५२१५॥

सण्णीणं एक्को काहियतरुणो, असण्णीण वि एक्को, एते दोण्णि । जे पुरिसणपुंसा पुरिसणेवत्थं-अपडिसेवगा तेसु वि सण्णिभेदे एक्को काहियतरुणो तेसु चे । असण्णिभेदे वि एक्को, एते वि दो । एते दो दुआ चउरो । एतेसु चउसु काहियतरुणसु ठायमाणाणं पत्तेयं चउगुरुगा, सेसेसु चोयालीसाए भेदेसु ठायमाणाण पत्तेयं चउल्लहृगं । एयं पच्छित्तं पुरिसवग्गे भणियं णिकारणओ ठायमाणाणं ।

कारणे पुण इयाए विधीए ठायमाणा सुज्झन्ति - "असति वसहीए" त्ति ॥५२१५॥

सण्णीसु पढमवग्गे, असति असण्णीसु पढमवग्गम्मि ।

तेण परं सण्णीसुं, कमेण अस्सन्निसु चेव ॥५२१६॥

सण्णीणं पढमवग्गे मज्झत्था ते तिविधा, तत्थ पढमं थेरेसु ठाति, थेरासति मज्झमेसु, तेसऽसति तरुणेषु ठाइ ।

सण्णीणं पढमवग्गासति ताहे असण्णीणं पढमवग्गे थेर-मज्झम-तरुणेषु कमेण ठाति ।

तेसि असतीए सण्णीणं वित्तियवग्गे थेर-मज्झम-तरुणेषु ठायन्ति । तेसि असइ सण्णीसु चेव तइयवग्गे थेर-मज्झम-तरुणेषु ठायन्ति ।

तेसि असइ सण्णीसु चेव काहिएसु थेर-मज्झमेसु ठायन्ति ।

ताहे असति सण्णीणं असण्णीसु वित्तियवग्गाओ कमेण एवं चेव जान काहिय-मज्झमाणं असतीए ताहे सन्नीसु काहिय-तरुणेषु ठायन्ति, ते पणविज्जन्ति जेण कहाओ ण कहन्ति ।

तेसि असति असण्णीसु वि काहिय-तरुणेषु ठायन्ति, ते वि पणविज्जन्ति ॥५२१६॥ पुरिसेसु एयं पच्छित्तं ठायव्वं, जयणा य भणिया ।

इदाणि णपुंसगेसु भणन्ति-

जह चेव य पुरिसेसु, सोही तह चेव पुरिसवेसेसु ।

तेरासिएसु सुविहित, पडिसेवगअपडिसेवीसु ॥५२१७॥

जह चेव पुरिसेसु सोधी भणित्ता तह चेव णपुंसेसु पुरिसवेसणवत्थेसु अपडिसेवगेसु पडिसेवगेसु वा भाणियव्वा । ठायव्वे वि जयणाविधी तह चेव भाणियव्वा ॥५२१७॥

जह कारणम्मि पुरिसे, तह कारणे इत्थियासु वि वसन्ति ।

अद्धान-वास-सावय-तेणेसु वि कारणे वसन्ति ॥५२१८॥

जह पुरिसागारिगे कारणेण ठाइ तहेव कारणं अवलंविऊण इत्थिसागारिए वि जयणाए ठायन्ति वसन्तीत्यर्थः । अद्धानादिणिग्गया सुद्धवसहि अप्पतरदोसवसहि वा तिवखुत्तो मग्गिउं अलभन्ता इत्थिसागारिए वसन्ति । इमेहि कारणेहि पडिन्नद्धं वासं पडइ, वाहि वा सावयभयं, उवघिसरीरतेणभयं वा । इत्थिसागारिए वि वारस भेदा जहा पुरिसेसु । असण्णित्थीसु वि वारस, इत्थिवेसणपुंसेसु सण्णीसु वि वारस, तेसु चेव असण्णीसु वि वारस ॥५२१८॥

इमं पच्छित्तं -

काहीता तरुणीसुं, चउसु वि मूलं ठायमाणानं ।

सेसासु वि चउगुरुगा, समणानं इत्थिवग्गम्मि ॥५२१९॥

सण्णिकाहिकतरुणी, असण्णिकाहिकतरुणी, इत्थिवेसणपुंससण्णिकाहिकतरुणी, सा चेव असण्णिकाहिकतरुणी, एयासु चउसु वि जइ ठायन्ति तो मूलं । सेसासु सण्णि-असण्णिसु वा वीसाए इत्थीसु चउगुरुगा । एयं समणानं इत्थिवग्गे ठायन्ताणं पच्छित्तं ॥५२१९॥

जह चेव य इत्थीसु, सोही तह चेव इत्थिवेसेसु ।

तेरासिएसु सुविहिय, ते पुण णियमा उ पडिसेवी ॥५२२०॥

जहा समणाणं इत्थीसु ठायमाणाणं सोधी भणिया तह चेव इत्थिवेसेसु णपुसगेसु ठायंताण सोधी भाणियन्वा, जेण ते णियमा पडिसेवी । ५२२०॥

इमा तासु ठायवे जयणाविधी -

एमेव होइ इत्थी, वारस सणी तहेव अस्सणी ।

सणीसु पढमवग्गे, असति असणीसु पढमंमि ॥५२२१॥

जहा पुरिसेसु भेदा एवं इत्थीसु वि सणीसु वारस भेदा, असणीसु वि वारस । एयासु ठायवे जयणा "सणीसु पढमवग्गे" त्ति, मज्झिम्मासु घेरमज्झिमतरुणीसु, अमति तेसि असणीसु । पढमवग्गे असति तेसि सणीसु त्तितियवग्गे । असति तेसि असणीसु त्तितियवग्गे ॥५२२१॥

एवं एककेवक तिगं, वोच्चत्थगमेण होइ विण्णेयं ।

मोत्तूण चरिम सणीं, एमेव नपुंसएहिं पि ॥५२२२॥

आहरणप्पियाणं असणीण असति सणीसु कंदप्पियासु त्तितियवग्गे ठाति ।

तेसि असति असणीसु कंदप्पियासु, तेसि असति सणीसु काहियासु घेरमज्झिमासु ।

तेसि असति असणीसु काहियासु घेरमज्झिमासु । ततो सणीसु तरुणीसु । ततो असणीसु तरुणीसु । एवमेव इत्थियपुंसेसु वि ठायवे जयणा भाणियन्वा ॥५२२२॥ एस पुरिसाण पुरिसेसु इत्थीसु य सोधी ठायवे जयणा भणिता ।

इदाणि इत्थीणं पुरिसेसु य सोधी ठायवे जयणा भणति -

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ णायव्वो ।

जइ तेसि इत्थियाओ, तह तासि पुमा मुणेयव्वा ॥५२२३॥

पुव्वद्वं कंठं । जहा तेसि पुरिसाणं इत्थीओ गुरुगाओ तहा तेसि इत्थियाणं पुरिसा गुरुगा मुणेयव्वा ॥५२२३॥

इत्थियाणं इमं सपक्खे पच्छित्तं -

काहीतातरुणीसुं, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणीणं ।

सेसासु वि चउल्लहुगा, समणीणं इत्थिवग्गम्मि ॥५२२४॥

पूर्ववत् कंठा । णवरं - इत्थियाओ भाणियन्वाओ ॥५२२४॥

इमं पुरिसेसु ठायमाणीणं पच्छित्तं -

काहीगातरुणेसुं, चउसु वि मूलं तु ठायमाणीणं ।

सेसेसु वि चउगुरुगा, समणीणं पुरिसवग्गम्मि ॥५२२५॥

पूर्ववत् कंठा । णवरं - इत्थियाओ पुरिसेसु वत्तव्वा ॥५२२५॥

अथवा - इमो अण्णो पायच्छित्तादेसो, सण्णीसु वारससु असण्णीसु य वारससु -

थेरातितिविह अथवा पंचग पण्णरस मासलहुओ य ।

छेदो मज्झत्थादिसु, काहिगतुरुणेसु चउलहुगा ॥५२२६॥

मज्झत्थे थेरे पंच राइंदिया छेदो ।

मज्झत्थे मज्झिमे पण्णरस राइंदिया छेदो ।

मज्झत्थे तरुणे मासलहू छेदो । एवं आभरणकंदप्पेसु वि, काहिएसु वि थेरमज्झिमेसु एवं चेव,  
णवरं - काहिगतुरुणेसु चउलहुछेदो । असण्णीण वि वारस-विकप्पे एवं चेव ॥५२२६॥

सण्णीसु असण्णीसुं, पुरिस-णपुंसेसु एव साहूणं ।

एयासुं चिय थीसुं, गुरुगो समणीण विवरीओ ॥५२२७॥

सण्णिअसण्णीण विकप्पेसु चउवीसा पुरिसणपुंसेसु, एवं चेव इत्थीसु वि, एयासु चेव चउवीसभेदासु  
इत्थिवेसघारीसु य णपुंसगेसु चउवीसविकप्पेसु एस चेव छेदो एवं चेव दायव्वो, णवरं - गुरुओ कायव्वो ।  
“समणीण विवरीओ” त्ति समणीण समणीपक्खे जहा पुरिसाणं पुरिसपक्खे, तासि पुरिसपक्खे जहा पुरिसाणं  
इत्थिपक्खे ॥५२२७॥

जे भिक्खू सउदगं सेज्जं उवागच्छइ, उवागच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

सह उदएण सउदया, उपेत्य गच्छति उपागच्छति, साइज्जणा दुविहा - अणुमोयणा कारावणा य,  
तिसु वि ङ्क ० ० ।

अह सउदगा उ सेज्जा, जत्थ दगं जा य दगसमीवम्मि ।

एयासिं पत्तेयं, दोण्हं पि परूवणं वोच्छं ॥५२२८॥

अधेत्ययं निपातः, सागारिय अणंतरभेदप्रदर्शने वा निपतति । “जत्थ दगं” त्ति पाणियघरं  
प्रपादि, जाए वा सेज्जाए उदगं समीवे वप्णाति । जा उदगसमीवे सा चिट्ठउ ताव जत्थ उदगं तं ताव परूवेमि  
॥५२२८॥

जत्थ णाणाविहा उदया अच्छंति इमे -

सीतोदे उसिणोदे, फासुमप्फासुगे य चउभंगो ।

ठायंते लहु लहुगा, कीस अगीयत्थसुत्तं तु ॥५२२९॥

सीतोदगं फासुयं, सीतोदगं अफासुयं ।

उसिणोदगं फासुयं, उसिणोदगं अफासुयं ।

पढमभंगे उसिणोदग सीतोभूतं चाउलोदगादि वा, वितियभंगे सच्चित्तोदगं चेव ।

ततियभंगे उसिणोदगं उव्वत्तडंडं, चउत्थभंगे तावोदगादि ।

पढमततियभंगे ठायंतरस मासलहुं । वितिपचउत्थेसु चउलहुं ।

एयं कस्स पच्छित्तं ?

आर्यारिओ भणइ - एयं अगीयस्स पच्छित्तं ॥५२२९॥

फासुगस्स इमं वक्खाणं -

सीतितरफासु चउहा, दब्बे संसङ्गमीसगं खेत्ते ।

कालतो पोरिसि परतो, वण्णादी परिणतं भावे ॥५२३०॥

जं सीतोदगं फासुयं, “इयर” ति जं च उण्होदगं फासुयं, तं चउव्विहं - दब्बओ खेत्तओ कालओ भावओ य ।

दब्बओ जं गोरससंसद्वे भायणे छूढं, सीतोदगं तं तेण गोरसेण परिणामितं दब्बतो फासुयं ।

खेत्तओ जं कूवतलागाइसु ठियं मधुरं लवणेण मीसिज्जति लवणं वा मधुरेण ।

कालतो जं इंधणे छूढे पहरमेत्तेण फासुगं भवति ।

जं वण्णगंवसरसफरिसविप्परिणयं भावतो जं (तं) फासुयं वुत्तं ॥५२३०॥

“जो ‘अगीयत्थो भिक्खू ठाति तस्स एयं पच्छित्तं’ ।

एत्थ चोदगो चोएति -

णत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ व कोइ णिदिट्ठो ।

जा पुण एगाणुणा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५२३१॥

“गीतो अगीतो वा सुत्ते ण भणितो । जं पुण एगस्स गीयत्थपक्खस्स अणुणं करेह, अगीयपक्खस्स पडिसेहं करेह, एस (एत्थ) तुज्झं चेव स्वेच्छा, ण तित्थगरभणियं ।

अथवा - किं वा कारणं, जं गीयस्स अणुणा, अगीयस्स पडिसेहो ॥५२३१॥

आयरिओ भणति -

एतारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिदिट्ठो ।

अव्वोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५२३२॥

पुव्वदं कठं । जम्हा य अगीतो कारणं अकारणं वा जयणं अजयणं वा ण याणति तेण अगीते पच्छित्तं । अण्यं च सुत्ते अत्थो अव्वोकडो भणितो ति, अव्विमेसितो, तं अव्विमिट्ठं अत्थं आयरिओ “उवेहति” उत्प्रेक्षते विशेषयतीत्यर्थः । जहा एगातो पिडाओ कुलानो अणगे घडादिरूवे घडेति एवं आयरिओ एगाओ सुत्ताओ अणगे अत्यविगप्पे दंसेति ।

अथवा - जहा अव्वगारे अप्पगासिते संता वि घडादिया ण दिसंति एवं सुत्ते अत्यविसेसा, ते य आयरियपदीवेण जदि पगासिता भवंति तदा उवल्लभंति ॥५२३२॥

किं च -

जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति वियारणा णत्थि ।

किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं ॥५२३३॥

जति सुत्ताभिहिते विचारणा ण कज्जति तो कालियसुत्तस्स अणुओगपोरिसीकरणं किं दिट्ठं दिट्ठिप्पहाणेहिं ?, दिट्ठिप्पहाणा जिणा गणहरा वा । अतो अणुओगकरणओ णज्जति - जहा सुत्ते वहे अत्यपदा, ते य आयरिएण निगदिता ति ॥५२३३॥

किं च -

उस्सग्गसुयं किंची, किंची अववाइयं मुण्येयव्वं ।

तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुण्येयव्वा ॥५२३४॥

किं चि उस्सग्गसुत्तं । किं चि अववादसुत्तं । किं चि तदुभयसुत्तं । तं दुविहं, तं जहा - उस्सग्गव-  
वादियं, अववादुस्सग्गियं । एते सुत्तगमा - सूत्रप्रकारा इत्यर्थः ।

अथवा - सुत्तगमा द्विरभिहितो गमः, तं जहा - उस्सग्गुस्सग्गियं अववादाववादियं चेति ।

एते वि छ सुत्तप्पगारा आयरिएण बोधिता णज्जन्ति ॥५२३४॥

इमो वा सुत्ते अत्थपडिवंधो भवति -

‘ण्येसु एगगहणं, सलोम णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।

विहिभिण्णस्स य गहणे, अववादुस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३५॥

इमो अणाणुपुव्वीए एतेसि सुत्ताणं अत्थो दंसिज्जन्ति - “विधिभिण्णस्स य” पच्छद्वं । “कप्पति  
णिग्गंथीणं पक्के तालपलंबे भिण्णे पडिग्गाहित्तए, से वि य विधिभिण्णे, णो चेव णं अविधिभिण्णे,”  
अववादेण गहणे पत्ते जं अविधिभिण्णस्स पडिसेहं करेइ, एस अववादे उस्सग्गो ॥५२३५॥

अववादाणुण्णायं कहं पुणो पडिसिज्जन्ति ?

अतो भण्णति -

उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जयं लहइ ।

ण य तं होइ विरुद्धं, एमेव इमं पि पासामो ॥५२३६॥

ठाणं ठिती, उस्सग्गस्स ठिई उस्सग्गठिई - उत्सर्गस्थानमित्यर्थः । उस्सग्गठाणेषु जं चेव दव्वं  
कप्पति तं चेव दव्वं असंथरणे जम्हा विवज्जयं लभति । “विवज्जतो” विवरीयता - असुद्धमित्यर्थः । तं  
असुद्धं गुणकरेति वेप्पतं ण विरुद्धं भवति । “एमेव इमं पि पासामो” त्ति अववातअणुणाए अविधिभिण्णे  
दोसदंसणं जतो भवति, तेण पुणो पडिसेहो कज्जइ - ण दोष इत्यर्थः ॥५२३६॥

उस्सग्गे गोयरम्मी, णिसिज्जकप्पाज्जवायओ तिण्हं ।

मंसं दल मा अड्ढिं, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३७॥

इमं उस्सग्गसूत्रं - “णो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा अंतरगिहंसि आसइत्तए वा  
जाव काउस्सग्गं वा ठाणं ठात्तित्तए वा” ।

अहवा - “गोयरग्गपविट्ठो उ, ण णिसीएज्ज कत्थति ।

कहं च ण पवधज्जा, चिट्ठित्ता ण व संजए” ।

इमं अववादिकं - “अथ पुण एवं जाणेज्जा - जुण्णे वाहिए तवस्सि दुब्बले किलंते  
मुच्छेज्ज वा पवडेज्जवा एव ण्हं कप्पति अंतरगिहंसि आसइत्तए वा जाव उस्सग्गठाणं ठात्तित्तए” ।

अहवा - "तिण्हमण्णतरागस्स, णिसेज्जा जस्स कप्पति ।

जराए अभिभूयस्स, वाहिगस्स तवस्सिणो ॥६०॥

इमं अववाहुस्सगियं - "वहुअद्वियं पोग्गलं अणिमिसं वा वहुकंटयं ।" एवं अववादतो गिण्हंतो मणाति - "मंसं दल मा अद्वियं" ति ॥५२३७॥

अववा -

णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।

कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सगं ॥५२३८॥

"णो कप्पति णिगंथाण वा णिगंथीण वा आमे तालपलंवे अभिण्णे पडिग्गाहित्ते" (बृह० उ० १ सू० १) एयं उस्सगियं । "कप्पति णिगंथाण वा णिगंथीण वा आमे तालपलंवे भिण्णे पडिग्गाहित्ते", (बृह० उ० १ सू० २) एयं अववादियं । पच्छद्वं कंठं ।

२ पूर्वोक्तं इमं उस्सगाववाइयं - "णो कप्पति णिगंथाण वा णिगंथीण वा रातो वा वियाले वा सेज्जासंथारए पडिग्गाहित्ते, ॥ णऽण्णत्येणेणं पुव्वपडिलेहिणं सेज्जासंथारएणं" । (बृह० उ० ३ सू० ४२, ४३)

इमं उस्सगुस्सगियं । "जे भिक्खू असणं वा पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा (ङ्क) पढमाए पोरिसोए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसि उवातिणावेति, उवातिणावेत वा सातिज्जति; से य आहच्च उवातिणावित्ते सिया जो तं भुंजति भुंजंतं वा सातिज्जति ।" (बृह० उ० ४ सू० १६)

इमं अववादाववादियं । जेसु अववादो सुत्तेसु निवद्धो तेसु चैव सुत्तेसु अत्यतो पुणो अगुण्णा पवत्तति, ते अववायाववातिय । सुत्ता, जतो सा वित्तियाणुणा सुत्तत्थाणुगता इति ।

इदाणि वित्तियागाहाए पुव्वद्वस्स इमं वक्खाणं -

अण्णेसु मुत्तत्येसु घेतव्वेसु एगस्स अत्यस्स गहणं करेति, जहा जत्य मुत्ते पाणातिवातविरत्तिगहणं तत्य सेसा महव्ववया अत्यतो दट्ठ्वा । एवं कसायईदियआसवेसु वि भागियव्वं ।

इमे पत्तेयसुत्ता -

णो कप्पति णिगंथाणं अलोमाइं चम्माइं धारित्ते वा परिहरित्ते वा । ( )

कप्पइ णिगंथाणं सलोमाइं चम्माइं धारित्ते वा परिहृत्ते वा । (बृह० उ० ३ सू० ४)

णो कप्पति णिगंथीणं सलोमाइं चम्माइं धारित्ते वा परिहरित्ते वा । (बृह० उ० ३ सू० ३)

कप्पति णिगंथीणं अलोमाइं चम्माइं धारित्ते वा परिहरित्ते वा । ( )

इमं सामण्यसुत्तं ।

णो कप्पति णिगंथाण वा णिगंथीण वा कसिणाइं चम्माइं धारित्ते वा परिहृत्ते वा ।

कप्पति णिगंथाण वा णिगंथीण वा अकसिणाइं चम्माइं धारित्ते वा परिहृत्ते वा ।

(बृह० उ० ३ सू० ५-६) ॥५२३८॥

किं चान्यत् -

कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं ।

उक्कम-कमजुत्ताइं, कारणवसतो निउत्ताइं ॥५२३९॥



अस्य व्याख्या -

देसगहणे बीएहि सूइया मूलमाइणो होंति ।

कोहाति अणिगहिया, सिंचंति भवं निरवसेसं ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्रे देशग्रहणं करेति, जहा कप्पस्स पढमसुत्ते पलंबगहणातो सेसवणस्सइभेदा मूल-कंद-  
खंघ-तया-साह-प्पसाह-पत्त-पुप्फ-बीया य गहिया । बीयगहणातो वा सेसा दट्ठवा ।

इमं निरवसेसगहणं -

“कोहो य माणो य अणिगहिया, माया य लोभो य विवड्डमाणा ।

चत्तारि एते कसिणा कसाया, सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ।” (दश० ८, ४०) ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्राणि उत्क्रमेण कृतानि क्वचित् क्रमेण जहा -

सत्थपरिण्णा उक्कमो, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।

जं पि य उक्कमकरणं, तं पऽहिणवधम्ममायट्ठा ॥५२४१॥

सत्थपरिण्णऽज्झयणे - तेउक्कायस्स उवरि वाउक्कायो भवति, सो य न तत्थ भणितो,  
तसाणुवरि भणितो, दुःश्रद्धेयत्वात् । जं तं उक्कमकरणं तं अहिणवस्स सेहस्स धम्मप्रतिपत्तिकारणा वाउकातिग-  
जीवत्वप्रतिपत्तिकारणा वा इत्यर्थः ।

“गोयरपिंडेसणा कमेणं” ति तत्थ गोयरातिमे अभिगगहविसेसतो जाणियव्वा भवन्ति, तंजहा - पेला,  
अद्धपेला, गोमुत्तिया, पयंगवीहिया, अंतोसंबुक्का वट्ठा, बाहिं संबुक्का वट्ठा, गंतुपच्चागया, उक्खित्तचरगा,  
उक्खित्तणिक्खित्तचरगा ।

इमाओ सत्त पिंडेसणाओ - असंसट्ठा, संसट्ठा, उद्धडा, अप्पलेवा, उवगहिया, पग्गहिया,  
उज्झियधम्मिया य ।

दायगो असंसट्ठेहि हत्थमत्तेहि देति त्ति असंसट्ठदायगो ।

संसट्ठेहि हत्थमत्तेहि देति त्ति संसट्ठा ।

जत्थ उवक्खडियं भायणे तातो उद्धरियं छप्पगादिसु, एस उद्धडा ।

जरस्स दिज्जमाणस्स दव्वस्स णिप्फाव-चणगादिगस्स लेवो ण भवति, सा अप्पलेवा ।

जं परिवेसणेण परिवेसणाए परस्स कडुच्छुतादिणा उवगहियं - आणियंति वुत्तं भवति, तेण य  
तं पडिसिद्धं तं तहुक्खित्तं चैव साधुस्स देइ । एसा उवगहिया ।

जं असणादिगं भोत्तुकामेण कंसादिभायणे गहियं भुंजामि त्ति असंसट्ठिते चैव साधु आगतो तं चैव  
देति, एस पग्गहिया ।

जं असणादिगं गिही उज्झिउकामो साहू य उवट्ठितो तं तस्स देति, ण य तं कोइ अण्णो दुपदादी  
अभिलसति, एसा उज्झियधम्मिया ॥५२४१॥

बीएहि कंदमादी, वि सूइया तेहि सव्ववणकायो ।

भोमातिक्रा वणेण तु, सभेदमारोवणा भणिता ॥५२४२॥

कम्हिवि सुत्ते वीयग्गहणं कतं, तेण वीयग्गहणेण मूलकंदादिया सूइता, तेहिं सव्वो परित्तानंतो सभेदो वणस्सइकाओ सूतितो, तेण वणस्सतिणा भोमादिया पंच काया सूतिता, एवं सप्रमेदा आरोवणा केसुइ सुत्तेसु भाणियव्वा ॥५२४२॥

किं च -

जत्थ तु देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि सूइयवसेणं ।

मोत्तूण अहीकारं, अणुओगधरा पभासंति ॥५२४३॥

पुव्वद्धं गतार्थं । कम्हिवि सुत्ते अणुओगधरा अधिगतं अत्थं मोत्तूणं सुत्ताणुपायिप्पसंगायमत्थं ताव भणंति । एवं विचित्ता सुत्ता, विचित्तो य सुत्तत्थो, ण णज्जति जाव सूरिणा ण पागडिओ ॥५२४३॥

उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववायओ य जाणि भवे ।

कारणजाएण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५२४४॥

उस्सग्गेण भणिताणि जाणि सुत्ताणि अववादेण य जाणि सुत्ताणि भणिताणि, “कारणजातेण मुणि” त्ति पडिसिद्धस्स आयरणहेऊ कारणं, “जाय” त्ति उप्पणं, “मुणि” त्ति आमंतणे, सव्वाणि वि जाणियव्वाणीति ।

कहं ?, उच्यते - अववायसुत्तेसुस्सग्गो अत्थतो भणितो अववादकारणे सुत्तनिबंधो, उस्सग्गसुत्तस्स उस्सग्गसुत्ते निबंधो, अत्थतो कारणजाते अणुण्णा अतो सव्वसुत्तेसु उस्सग्गो अववादो य दिट्ठो ।

अतो भणति - “कारणजातेण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि “सूत्राणीत्यर्थः । ते य उस्सग्गसव्वादा गुरुणा बोधिता णज्जंति । ते य जाणिऊण अप्पप्पणो ठाणे समायरति । अजाणिए पुण ते कहं समायरंति ?, ॥५२४४॥

अववाददुट्ठाणे पत्ते -

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।

कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५२४५॥

जाणि संथरमाणस्स उस्सग्गेण दव्वाणि णिसिद्धाणि ताणि चेव दव्वाणि अववायकारणजाते, “जाय” सहो प्रकारवाची. वित्तिओ “जाय” सहो उप्पणवाची, अन्यतमे कारणप्रकारे उत्पन्ने इत्यर्थः । जाणि उस्सग्गे पडिसिद्धाणि उप्पणो कारणे सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ण दोसो ॥५२४५॥

चोदगाह -

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।

एवं होयऽणवत्था, ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५२४६॥

सुत्तत्थस्स अणवत्था भवति, चरणकरणस्स वा अणवत्थओ य तित्थं ण भवति, पडिसिद्धमणुजाणं-तस्स सच्चं ण भवति ॥५२४६॥

उम्मत्तवायसरिसं, खु दंसणं न वि य कप्पऽकप्पं तु ।

अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५२४७॥

“पुव्वावरविरुद्धं सुत्तं पावइ उम्मत्तवचनवत्”, “इमं कप्पं, इमं अकप्पं” एयं अण्णहा पावति जतो अकप्पं पि कप्पं भवति । जइ एवं तुज्झं अभिप्पेयत्थसिद्धी भवति तो चरगादियाण वि अप्पण्णो अभिप्पेयत्थसिद्धी भवेज्ज ॥५२४७॥

आचार्य आह - सुणेहि एत्थ णिच्छियत्थं -

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहि ।

एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५२४८॥

णिवकारणे अकप्पणिज्जं ण किं चि अणुण्णायं, अववायकारणे अप्पण्णे अकप्पणिज्जं ण किं चि पडिसिद्धं, णिच्छियववहारतो एस तित्थकराणा, “कज्जे सच्चेण भवियव्वं” कज्जं ति अववादकारणं, तेण जति अकप्पं पडिसेवति तहावि सच्चो भवति, सच्चो ति संजमो ॥५२४८॥

अहवा -

कज्जं णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।

तं तह समायरंतो, तं सफलं होइ सव्वं पि ॥५२४९॥

कज्जं ति णाण-दंसण-चरणा । ते जहा जहा उस्सप्पंति तहा तहा समायरंतस्स संजमो भवति स्यात् ॥५२४९॥

कथं संजमो भवति -

दोसा जेण निरुंभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइ ।

सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥५२५०॥

उस्सग्गे उस्सग्गं, अववादे अववादं करंतस्स रागादिया दोसा निरुंभंति, पुव्वोवचियकम्मा य खिज्जंति, एवं जो जो साधुस्स दोसनिरोधकम्मखवणो किरियाजोगो सो 'सो सव्वो मोक्खोवातो ।

इमो दिट्ठतो - “रोगावत्थासु समणं व”, रोगावत्था रोगप्रकारा, तेसिं रोगाणं प्रशमनं अपत्थं पडिसिज्झति, जेण य प्रशमंति तं तस्स दिज्जति ।

अधवा - कस्स ति रोगिस्स णिसेहो कज्जति, कस्स वि पुणो तमेव अणुण्णवति ।

एवं कम्मरोगखवणे वि समत्थस्स अकप्पपडिसेहो कज्जति । असंथरस्स पुण तमेव अणुण्णवति ।

हे चोदक ! जं तं तुब्भे भणियं - सुत्ते अगीतो गीतो वा नत्थि कोइ भणितो तं, एयं सुत्ते गीयादीया पवयणातो विण्णेया ॥५२५०॥

अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो न जाणाति ।

अणुण्णवणाइ जयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५२५१॥

चोदको भणति - “अगीयस्स किं कारणं ण कप्पति ?

आयरिओ भणइ - “तिविधं जयणं” ति जेण सो न याणइ ।

पुणो चोदगो भणति - “कयरा मा तिविधा जयणा” ?

आयरिओ भणइ - अणुण्णावणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ।

चोदको भणति - “सुत्ते पडिए अगीतो कहं जयणं न जाणति ?”

आयरिओ भणति - हे चोदक ! आयरिसहाया सन्वागमा भवन्ति जेण पडिज्जति ॥५२५१॥

णिउणो खलु सुत्तथो, न ह्नु सक्को अपडिबोहितो नाउं ।

ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसिं तहिं वसन्ताणं ॥५२५२॥

णिउणो त्ति सुहुमो सुत्तथो, सो य आयरिएण पडिबोहितो णज्जति, अण्णह ण णज्जति, जे अगीयत्याणं तहिं वसन्ताणं दोसा ते भणमाणे सुणसु ॥५२५२॥

अगीया खलु साहू, णवरं दोसा गुणे अजाणन्ता ।

रमणिज्जभिक्ख गामे, ठायन्ती उदगसालाए ॥५२५३॥

अगीयसाधू साधुकिरियाए जुत्ता णवरं - सदोसणिदोस-वसहिअणुणवणे दोसगुणे ण याणन्ति, अजयणाए अणुणवणे दोसा, जयणाणुणवणाए य गुणा । सदोसाए य कारणे ठिया जयणं काउं ण याणन्ति जे य तत्थ दोसा उप्पज्जन्ति ॥५२५३॥

“रमणिज्ज” पच्छद्वं अस्य व्याख्या -

रमणिज्जभिक्ख गामो, ठायामो इहेव वसहि भोसेह ।

उदगघराणुणवणा, जति रक्खह देमि तो भन्ते ! ॥५२५४॥

अगीयत्यगच्छो द्दुइज्जन्तो एगत्य गामे वाहिं ठितो, भिक्खा हिडिया पभूता इट्ठा य लद्धा, ताहे भणन्ति - “एस रमणिज्जो गामो, भिक्खा य अत्थि, अत्थेव मासकप्पविहारेणऽच्छिद्दहामो, वसहिं भोसेह वम्मकहि” त्ति । तेहिं उदगसाला दिट्ठा, तं अणुणवेत्ता उदगघरसामिणा भणिता - “जति उदगं घरं वा रक्खिस्सह तो भे देमि” त्ति ॥५२५४॥

किं च ते गिहत्था भणन्ति -

वसहीरक्खणवग्गा, कम्मं ण करेमो णेव पवसामो ।

णिच्चिता होह तुमं, अम्हे रत्तिं पि जग्गामो ॥५२५५॥

“उदगघरादिरक्खवावडा अम्हे किसिमादि कम्मं पि ण करेमो, ण य आमन्तणादिसु गामन्तरं पि पवसामो” । ताहे अगीयत्या भणन्ति - “णिच्चित्तो होहि तुमं, अम्हे रत्तिं पि जग्गिस्सामो” ॥५२५५॥

इमा वि अणुणवणे अविधी चेवं -

जोत्तिस निमित्तमादी, छंदं गणियं च अम्ह साहित्या ।

अक्खरमादि व डिंभे, गाहेस्सह अजतणा सुणणे ॥५२५६॥

जति अणुणविज्जन्ते वसहिसामी भणन्ति - “जति जोइसं निमित्तं छंदं गणियं वा अम्हं कहेस्सह, “डिंभं” त्ति डिंभरूवं तं अक्खरे गाहिस्सह, आदिसद्दातो अण्णं वा किं चि पावसुत्तं वागरणादि ।”

एत्थ साधू जति पडिसुणेति - “कहेस्सामो सिक्खावेस्सामो वा” तो अणुणवणे अजयणा कया भवति ॥५२५६॥

अजयणाऽणुणवणाएं ठियाणं इमे दोसा -

अणुणवण अजयणाए, पउत्थसागारिए घरे चेव ।

तेसिं पि य चीयत्तं, सागारियवज्जियं जातं ॥५२५७॥

अस्य पूर्वार्धस्य व्याख्या -

तेसु ठितेसु पउत्थो, अच्छंतो वा वि ण वहती तत्तिं ।

जइ वि य पविसितुकामो, तह वि य ण चएति अतिगंतु ॥५२५८॥

“तेसु” त्ति - अगीयत्थेसु अजयणाणुणवणाए ठियाणं “उदगादिघरं संजता रक्खंति” त्ति सागारिगो णिच्चित्तो पवसइ, घरे वा अच्छंतो उदगादिभायणाणं वावारं ण वहति, “तेसिं पि” - संजयाणं “चियत्तं” - जं अमहं तेण सागारिणो णागच्छंति ।

अहवा - जे संजता उदगरसकोउप्रा तेसिं चियत्तं, अघवा - सो पविसितुकामो तह वि न सक्केइ तत्थ पविसिउं ॥५२५८॥

केण कारणेण ? अतो भण्णति -

संथारएहि य तहिं, समंततो आतिकिण्ण वितिकिण्णं ।

सागारिओ ण इंती, दोसे य तहिं ण जाणाति ॥५२५९॥

अतिकिण्णं आकीर्णं परिवाडीए, वितिकिण्णं विप्रकीर्णं अणाणुपुव्वीए, अहुवियहु त्ति वुत्तं भवति, एतेण कारणेण सो सेज्जातरो ण पविसति । तेसु उदगभायणेषु जे सेवणादिदोसा ते ण याणंति ॥५२५९॥ अणुणवण त्ति गता ।

इदार्णि सपक्खे जयणा -

ते तत्थ सण्णिविड्ढा, गहिता संथारगा जहिच्छाए ।

णाणादेसी साहू, कस्संति चिंता समुप्पण्णा ॥५२६०॥

“सण्णिविड्ढ” त्ति ठिता ‘जहिच्छ’ त्ति जहा इच्छंति, णो गणावच्छेदएणं दिण्णा अहारातिणियाए । ॥५२६०॥

तत्थ कस्स त्ति साधुस्स इमा चिंता उप्पण्णा -

अणुभूता उदगरसा, णवरं मोत्तूणिमेषिं उदगाणं ।

काहामि कोउहल्लं, पासुत्तेसुं समारद्धो ॥५२६१॥

“केरिसो उदगरसो” त्ति कोतुअं, तं कोउआणुकूलं काहामो त्ति सो सुत्तेसु साधुसु समारद्धो पाउं ॥५२६१॥

इमे उदगे -

धारोदए महासलिलजले संभारिते च दव्वेहिं ।

तण्हाइयस्स व सती, दिया व राओ व उप्पज्जे ॥५२६२॥

धारोदगं जहा सत्तधारादिसु, मङ्गासलिलोदगं गंगासिधुमादीहि दर्वेहि वा संभारियं,  
कप्पूरादिपाणियवासेण वासियं, एवमादिउदगेसु तण्हाइयस्स अभिलासो भवति, पुब्बाणुभूतेण वा सती संभरणा  
भवति, अण्णुभूतेण वा कोउएणं सनी भवति ॥५२६२॥

ताहे सतीए उप्पण्णाए अप्पणो हिययपच्चक्खं भण्णति -

इहरा कहासु सुणिमो, इमं खु तं विमलसीतलं तोयं ।

विगतस्स वि णत्थि रसो, इति सेवति धारतोयादी ॥५२६३॥

“इहरे” ति - अपच्चक्खं सुतिमेत्तोवलद्धं, “इमं” ति पच्चक्खं, जं पि अम्हे उण्होदगादि  
विगतजीवं पिबामो तस्स वि सत्योवहयस्स अण्णहाभूतस्स रसो णत्थि, इति एवं चित्तेउं धानेदगादि सेवइ  
॥५२६३॥

तम्मि पडिसेविते इमे दोसा -

विगयम्मि कोउहल्ले, छट्ठवयविराहणं ति पडिगमणं ।

वेधाणस ओधाणे, गिलाण-सेहेण वा दिट्ठो ॥५२६४॥

तम्मि उदगे आसेविए विगते उदगरसकोउए छट्ठं रातीभोयणविरति वयं भग्गं, तम्मि भग्गे  
सेसवयाण वि भग्गो, ताहे “भग्गव्वतो मि” ति स गिहे पडिगमणं करेज्ज, वेधाणसं वा करेज्ज, विहारामो वा  
ओहाणं करेज्ज, गिलाणेण सेहेण वा अभिणवधम्मणे दिट्ठो तं पडिसेवंतो ॥५२६४॥

ताहे गिलाणो इमं कुज्जा -

तण्हातिओ गिलाणो, तं दिस्स पिएज्ज जा विराहणया ।

एमेव सेहमादी, पियंति अप्पच्चओ वा सिं ॥५२६५॥

तं दट्ठं पिवंतं गिलाणो वि तिसितो पिवेज्ज, अतिसितो वा कोउएण पिवेज्जा । तेण पीएण  
अपत्येण जा अणागाढादिविराहणा तण्णिप्फणं पच्छित्तं तस्स साधुस्स भवति । अह उद्दाति तो चरिमं । एवं  
सेहेण वि दिट्ठे सेहो वि पिवेज्जा, सेहस्स वा अपच्चओ भवेज्ज, जहेयं मोसं तहज्जं पि ॥५२६५॥

अहवा -

उड्डाहं च करेज्जा, विप्परिणामो व होज्ज सेहस्स ।

गेण्हंतेण व तेणं, खंडित भिण्णे व विट्ठे वा ॥५२६६॥

सो वा सेहो अण्णमण्णस्स अवखंतो उड्डाहं करेज्जा ।

अहवा - सेहो अयाणंतो भजेज्ज - “एस तेणो आहरेइ” ति उड्डाहं करेज्जा, तं वा दट्ठं सेहो  
विपरिणमेज्ज, विपरिणतो सम्मतं चरणं लिंगं वा छड्ढेज्ज । अगिलाणसाधुणा गिलाणेण वा सेहेण वा एतेसि  
अण्णत्तरेण उदगं गेण्हंतेण तं उदगभायणं खंडियं भिण्णं वा वेहो से वा कतो ॥५२६६॥

अधवा -

फेडितमुद्दा तेणं, कज्जे सागारियस्स अतिगमणं ।

केण इमं तेणेहि, तेणाणं आगमो कत्तो ॥५२६७॥

मुद्दियस्स वा मुद्दा फेडिया, अप्पणो य कज्जेण सागारितो “अइगतो” त्ति पविट्ठो तेण दिट्ठं ।  
दिट्ठे भणाति — केण इमं खंडियं ? भिण्णं वा ?

साहू भणंति — तेणेहि ।

ताहे सागारितो भणइ — “तेणाणं आगमो कहं जातो ? जो अम्हेहि ण णातो” ॥५२६७॥

ताहे सागारिणेण चित्तेण अवधारितं — “एतेहि चेव उदगं पीतं भायणं वा खंडियं भिण्णं वा ।”  
तत्थ सो भद्दो हवेज्ज पंतो वा ।

भद्दो इमं भणेज्जा —

इहरह वि ताव अम्हं, भिक्खं च बलं च गेण्हह ण किंचि ।

एण्हि खु तारिओ मि, गेण्हह छंदेण जेणऽट्ठो ॥५२६८॥

एयं उदगग्गहणं मोत्तुं “इहरह वि” त्ति चरगादिसामणं भिक्खग्गहणकाले जं <sup>१</sup>कुटुंबप्पगतं ततो  
भिक्खं अम्हं घरे ण हिडह, जं वा देवताणं वलीकयं ततो उव्वरियं पि ण गेण्हह, इण्हं पुण उदगग्गहणेन  
अणुग्गहो कतो, संसारातो य तारिता । एत्थ जेण भे अण्णेण वि अट्ठो तं पि तुम्भे छंदेण अप्पणो इच्छाए  
पज्जत्तियं गेण्हह ॥५२६८॥

इमं भद्दपंतोसु पच्छित्तं —

लहुगा अणुग्गहम्मी, अप्पत्तिय धम्मकंचुगे गुरुगा ।

कटुग फरुसं भणंते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२६९॥

जति भद्दो “अणुग्गहं” त्ति भणेज्ज तो चउलहुं । पंतो अप्पत्तियं करेज्जा ।

अपत्तिओ वा इमं भणेज्ज — “एते धम्मकंचुगपविट्ठा एगलेस्सा लोगं मुसंति”, एत्थ से चउगुरुं ।  
कटुगवयणं फरुसवयणं वा भणंति छग्गुरुगा । रायकरभरेहि भग्गाणं समणकरो वोढव्वो त्ति भणंते छेओ  
भवति ॥५२६९॥

मूलं सएज्झएसुं, अणवडुप्पो तिण चउक्केसु ।

रच्छा महापहेसु य, पावति पारंचियं ठाणं ॥५२७०॥

<sup>२</sup>सइज्झा समोसियगा, तेहि उदगं तेणियं ति एत्थ मूलं, तिगे चउक्के वा पसरिते ‘तेणगा वा  
एते’ अणवट्ठो, महापहेसु सेसरत्थासु य तेणियं ति य सुए पारंचियं ॥५२७०॥

“<sup>३</sup>कटुगफरुसं” पच्छद्वस्स इमं वक्खाणं —

चोरो त्ति कडुं दुव्वोडिओ त्ति फरुसं हतो सि पव्वावी ।

समणकरो वोढव्वो, जाते मे करभरहताणं ॥५२७१॥

कंठा । सपक्खजयणा एसा गता ।

<sup>४</sup>परपक्खजयणा इमा —

परपक्खम्मि य जयणा, दारे पिहितम्मि चउलहू होंति ।

पिहिणे वि होंति लहुगा, जं ते तसपाणघातो य ॥५२७२॥

मणुयगोणादी असंजतो सव्वो परपक्खो भाणियव्वो, आवत्तणपेढियाए जीवववरोवणमया जति दारं न पिहंति तो चउलहुं । अह पिहंति तहावि आवत्तणपेढियाजते संचारयलूयाउद्देहिगमादीण य तसाणं घातो भवति, एत्थ वि चउलहुं तसणिप्फणं च ॥५२७२॥

अपिहिते इमे दोसा -

गोणे य साणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।

खरए य तेणए या, गुरुगा य पदोसतो जं च ॥५२७३॥

द्वारे अपिहिते गोणादी पविसेज्जा, ते जति वारेति तो चउलहुं । सो य वारितो वच्चंतो अहिकरणं जेण हरितादि भलेहिति, तणिप्फणं अंतरायं च से कयं ।

अहवा - 'खरए' ति तस्सेव संतिओ दासो दासी वा तेणगा वा पविसेज्जा, ते जति वारेति तो चउगुरुगा, ते वारिया समाणाः पटुहा जं छोभग-परितावणादि काहिति तणिप्फणं पावति ॥५२७३॥

तेसि अव्वारणे लहुगा, गोसे सागारियस्स सिट्ठम्मि ।

लहुगा य जं च जत्तो, असिट्ठे संकापदं जं च ॥५२७४॥

गोण साण-खर-खरिय-तेणगा य जति ण वारेति तो पत्तेयं च्छु । ते य अव्वारिता उदगं पिएज्जा, हरेज्जा वा, भायणादि वा विणासेज्जा । गोसे ति पच्चूसे जइ सागारियस्स साहेति "अमुणेण अमुणीए वा अमुणेण वा तेणेण राओ उदगं पीतं" ति चउलहुगा । कहिते सो रुट्ठो दुवक्खरियादीण जं परितावणादि काहीति, "जतो" ति वंघणघायण विसेसा, तो तणिप्फणं सव्वं पावइ । अह ण कहिति तो वि चउलहुगा । साधू य णट्ठे संकेज्जा, संकाए चउलहुं । निस्संकिने चउगुरु । अणुगहादि वा भदपंतदोसा हवेज्ज, 'जं च' पटुट्ठो णिच्छुमणादि करेज्ज ॥५२७४॥

गोणादियाण सव्वेसि वारणे इमे दोसा -

तिरियनिवारण अभिहण मारणं जीवघातो नासंते ।

खरिया छोभ विसाग्गणि, खरए पंतावणादीया ॥५२७५॥

सव्वे वि गोणादी तिरिया णिवारिज्जंता सिगादिणा आहणेज्ज, तत्थ परितावणादि जाव मरणं भवे, सो वा णिवारितो जीवघातं करंतो वच्चेज्जा । खरिया य णिवारिता छोभगं देज्ज - "एस मे समणो पत्थेति", विसगरादि वां देज्ज, वसहि वा अगणिगा भाभेज्ज । खरगो वि पटुट्ठो पंतावणादि करेज्ज, भायणाणि वा विणासेज्ज, सेज्जातरं वा पंतावेज्ज ॥५२७५॥

तेणगा इमेहि कारणेहि उदगं हरेज्जा-

आसण्णो य छणूसवो, कज्जं पि य तारिसेण उदएण ।

तेणाण य आगमणं, अच्छह तुण्हक्कगा तेण ॥५२७६॥

आसण्णे छणे ऊसवे वा, छणो जत्थ विसिट्ठं मत्तपाणं उवसाहिज्जति, ऊसवो जत्थ तं च उवसा-विज्जति, जणो य अलंकिय विभूसितो उज्जाणादिसु मित्तादिजणपरिवुडो खज्जादिणा उवललति । तम्मि छणे ऊसवे वा तारिसेण उदगेण अवस्सं कज्जं ।



तस्मि य अप्पणो गिहे अविज्जमाणे उदगतेणणट्ठाए आगता तेणा । ताहे अगीता भणंति - “तेणा आगता, अच्छह भंते ! तुण्हक्का, ण कप्पति कहेतुं अयं तेणो, अयं उवचरए” त्ति । अधवा - तेणा आगता संजतेहि दिट्ठा । ते तेणगा भणंति - “तुण्हक्का अच्छह, मा भे उह्विस्सामो” ॥५२७६॥

उच्छवच्छणेषु संभारितं दगं ति सितरोगितट्ठा वा ।

दोहल-कुतूहलेण व, हरंति पडिसेवियादीया ॥५२७७॥

तेसु छणूसवेसु तिसिया पीयणट्ठाए उदगं वासवासियं कप्पूरपाडलावासियं वा चउपंचमूलसंभारकयं वा रोगियस्सट्ठाए अवहरंति, गुब्बिणीए वा डोहलट्ठाए, कोउगेण वा केरिसो एयस्स सागो ? त्ति, पडिसेविता अण्णे वा अवहरंति ॥५२७७॥

गहितं च तेहि उदगं, घेत्तूण गता जतो सि गंतव्वं ।

सागारितो उ भणती, सउणो वि य रक्खती नेडुं ॥५२७८॥

तेणगा घेत्तुं उदगं गता जत्थ गंतव्वं । अप्पणो य कज्जेण सागारिओ पभाए आगतो । मुद्दाभेदं दट्ठुं भणाति - “अज्जो ! सउणो वि, “नेडुं” ति गिहं, सो वि ताव अप्पणो गिहं रक्खति, तुब्भेहिं इमं ण रक्खियं” ॥५२७८॥

दगभाणूणे दट्ठुं, सजलं व हितं दगं च परिसडितं ।

केण हियं ? तेणेहिं, असिट्ठ भदेतर इमे तू ॥५२७९॥

अहवा - जलेण भरियं भायणं दगं च परिसडियं । तत्थ दट्ठुं सागारिओ पुच्छति - केण हियं ।

साहू भणंति - तेणेहिंति । तत्थ जति तेणगं वण्णरूवेण कहेति तो वंधणादिया दोसा, “असिट्ठि” त्ति अकहिते भद्दोसा, “इतरे” त्ति पंतदोसा य इमे ॥५२७९॥

लहुगा अणुग्गहम्मी, अप्पत्तियधम्मकंचुगे गुरुगा ।

कडुग-फरुसं भणंते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२८०॥ पूर्ववत्

मूलं सएज्झएसुं, अणवट्ठप्पो ति ए चउक्केसु ।

रच्छ-महापहेसु य, पावति पारंचियं ठाणं ॥५२८१॥ पूर्ववत्

एगमणेगे छेदो, दिय रातो विणास-गरहमादीया ।

जं पाविहिंति विहणिग्गतादि वसहिं अलभमाणा ॥५२८२॥

पूर्ववत् । एगस्स साधुस्स अणेगाण वा वोच्छेदं करेज्जा । अहवा - तद्दव्वस्स अणेगाण वा ।

जति दिवसतो णिच्छुभेज्जा ० ०, रातो वा ० ० । अणं वा वसहिं अलभंता तेणसावयादि एहि विणासं पाविज्जंति, लोणेण वा गरहिज्जंति । एते तेणग त्ति । ततो य णिच्छूढा विहं पडिवण्णा जं सीउण्हुप्पिवासपरीसहमादी तेणसावयादीहिं वा वसहिं अलभंता जं पावेंति तण्णिप्फणं पावेंति ।

अधवा - तस्स दोसेण अण्णे विह-णिग्गतादिया वसहिं अलभंता जं पाविहिंति तण्णिप्फणं पावति । एवं अकहिज्जंते तेणे दोसा । अध तेणं कहेज्ज - जं ते तेणगाण काहिंति तेणगा वा तस्स साधुस्स वा जं काहिंति ॥५२८२॥ एते अगीयत्थस्स दोसा ।

इदानीं गीयत्थस्स विधी भण्णइ -

गीयत्थस्स वि एवं, णिक्कारण कारणे अजतणाए ।

कारणे कडजोगिस्स उ, कप्पति वि तिप्पिहाए जयणाए ॥५२८३॥

गीयत्थो वि जो निक्कारणे उदगसालाए ठाति, कारणे वा ठितो जयणं ण करेति । कडजोगी गीयत्थो ।

तिप्पिहा जयणा - अणुणवणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ॥५२८३॥

निक्कारणम्मि दोसा, पडिवंधे कारणम्मि णिदोसा ।

ते चेव अजयणाए, पुणो वि सो पावती दोसे ॥५२८४॥

जइ निक्कारणे उदगपडिवद्धाए वसहीए ठाति तो ते चेव पुव्वभणित्ता दोसा भवन्ति । कारणे पुण ते चेव दोसे पावति जे अजयणद्विताणं ॥५२८४॥

किं पुण तं कारणं ?, इमं -

अद्धाणणिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिरुण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, वसन्ति तो उदगसालाए ॥५२८५॥

विसुद्धवसहीए असति सेसं कंठं ॥५२८५॥

तत्थ य अणुणवणाए जति वसहिसामी भगेज्ज - "जति अम्हं किं चि जोतिसाति कहेस्सह तो मे वसहिं देमो ।"

तत्थ साधूहिं वत्तव्वं -

न वि जोतिसं न गणियं, न चऽक्खरे न वि य किं चि रक्खामो ।

अप्पस्सगा असुणगा, भायणखंभोवमा वसिमो ॥५२८६॥

जोतिसाति ण सिक्खवेमो, ण वा जाणामो त्ति वत्तव्वं, जहां भायणखंभ-कुड्ढादिया तुज्झं सुत्थदुत्थेसु वावारं ण वहन्ति एवं अम्हे विसामो । जति ते किंचि कज्जविर्वत्ति पेच्छामो तं पेच्छन्ता वि अपस्सगा इह अच्छामो । जइ वा कोइ भणेज्जा - इमं सेज्जातरस्स कहेज्जह, असुणत्तं वा सुणावेह, तत्थ वि अम्हे असुणगा ॥५२८६॥

णिक्कारणम्मि एवं, कारणदुल्लभे भणन्तिमं वसभा ।

अम्हे ठियल्लग च्चिय, अहापवत्तं वहह तुब्भे ॥५२८७॥

उत्सग्गेणं एवं ठायन्ति । असिबोमादिदुब्बिक्खकारणेसु अण्णतो अगच्छन्ता तत्थ य सुद्धवसही दुल्लभा ताहे उदगसालाए ठायन्ता इमं भणन्ति साधारणवयणं वसभा "अम्हे ता ठियचित्ता, तुम्हे पुण जं अहापवत्तं वावारवहणं दिवसदेवसियं तं वहहे चेव ॥५२८७॥ गया अणुणवणजयणा ।

इमा सपक्खजयणा -

आमं ति अब्भुवगाए, भिक्ख-वियारादि णिग्गय मिएसुं ।

भणन्ति गुरू सागरियं, कत्थुदगं जाणणट्ठाए ॥५२८८॥

सागारिगेण अब्भुवगयं - “णिरुवगारी. होउं अच्चह त्ति, अहापवत्तं वावारं वहिस्सामो” त्ति, ताहे तत्थ ठिया, इहरा. ण ठायति । तत्थ ठियाणं इमा विही - जाहे सव्वे मिगा भिक्खादिणिग्गता भवन्ति ताहे गुरु उदयजाणणट्ठा अण्णावदेसेण सागारियस्स पुरतो ॥५२८८॥

इमं भणति -

चउमूल पंचमूला, तालोदाणं च तावतोयाणं ।

दिट्ठमए सन्निचिया, अण्णादेसे कुडुवीणं ॥५२८९॥

चउहि पंचहि वा. अण्णतमेहि सुरहिमूलेहि पाणट्ठा संभारकडं तालोदं तोसलीए, तावोदगं रायगिहे ॥५२८९॥

एवं च भणितमेत्तम्मि कारणे सो भणाति आयरिए ।

अत्थि ममं सन्निचिया, पेच्छह णाणाविहे उदए ॥५२९०॥

जाहे एवं भणितो गुरुणा ताहे कमपत्ते कहणकारणे सेज्जातरो पच्छद्वेण भणति - “पत्थभोयणे तावोदगं, एत्थ तालोदगं”, एवं तेण सव्वे कहिता ॥५२९०॥

ते य गुरुणा -

उवलक्खिया य उदगा, संथाराणं जहाविही गहणं ।

जो जस्स उ पाओग्गो, सो तस्स तहिं तु दायव्वो ॥५२९१॥

ताहे संथारगाणं अहाराइणियाए विहिगहणे पत्ते वि तं सामायारि मेत्तुं गुरवो अप्पत्तियं तत्थ करेत्ति, जो जस्स जम्मि ठाणे जोगो संथारगो तस्स तहिं ठाणं देत्ति ॥५२९१॥

तत्थिमो विही -

निक्खम-पवेसवज्जण, दूरे य अभाविता उ उदगस्स ।

उदयंतेण परिणता, चिलिमिणि राइंदिय असुण्णं ॥५२९२॥

सागारियस्स उदगादिगहणट्ठा पविसमाणस्स निक्खमण-पवेसो वज्जेयव्वो । उदगभायणाण य अभाविया अगीया अतिपरिणामगा मंदघम्मा य दूरतो ठविज्जन्ति । जे पुणं घम्मसद्धिया थिरचित्ता ते उदगभायणाण ठाणे य अंतरे कडगो चिलिमिली वा दिज्जन्ति । गीयत्थपरिणामगेहि य दियारातो य असुण्णं कज्जन्ति ॥५२९२॥

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संथारगा विधीपुव्वं ।

जागरमाण वसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५२९३॥

जहा तत्थ दोसो ण भवति तहा संथारगा घेतव्वा, एसेव तत्थ विधी । सपक्खं रक्खंता तत्थ गीयत्था सदा सजागरा सुवन्ति ॥५२९३॥

अधवा -

ठाणं वा ठायंती, णिसेज्ज अहवा सजागरे सुवति ।

बहुसो अभिदवन्ते, वयणमिणं वायणं देमि ॥५२९४॥

जो वा ददसंघयणो अत्यचित्तगो सो ठाणं ठाति, णिसण्णो वा भायमाणो चिट्ठइ ।

अथवा - गीयत्यो कृतकेन सव्वेसि पुरतो भणति - "संदिसह भंते ! सव्वराडयं उस्सगं करेस्सामि ।" पच्छा सुत्तेसु सुवति, अण्णदिणं अण्णो संदिसावेति । एवं रक्खंति । वसमा वा सजागरा सुवंति, जति तत्थ दगाभिलासी दगभायणंतेण आगच्छति तत्थ तहा गुरवो वसमा वा संजीहारं करेति, जहा सो पडिणीयत्तत्ति ।

अथ सो पुणो पुणो अभिट्ठवति ताहे गुरु सामण्णतो वयणं भणाति - "उट्ठेह भंते ! वायणं देमि ।" तं वा भणाइ "अज्जो ! वायणं वा ते देमि" ॥५२६४॥

फिडितं च दग्घं वा, जतणा वारंति ण तु फुडं वेति ।

मा तं सोच्छित्ति अण्णो, णित्थक्कोऽकज्ज गमणं वा ॥५२६५॥

फुडं रुक्खं ण भणंति, मा तं अण्णो सोउं अण्णेसि कहेस्सति ।

पच्छा सव्वेहि णाते गुरुणा वा फुडं भणितं णित्थक्को णिल्लज्जो भवति ।

पच्छा णिल्लज्जीभूतो अकज्जं पि करेति, णातो मि त्ति लज्जितो वा पडिगमणादीणि करेज्जा

॥५२६५॥

"जयणाए वारंति" त्ति अस्य व्याख्या -

दारं न होति एत्तो, निदामत्ताणि पुच्छ अच्छीणि ।

भण जं च संक्रितं ते, गेण्हह वेरत्तियं भंते ! ॥५२६६॥

कंठा । सपक्खजयणा गता ।

इमा परपक्खजयणा -

परपक्खस्मि वि दारं, ठयंति जयणाए दो वि वारंति ।

तहवि य अठायमाणे, उवेह पुट्ठा वं साहंति ॥५२६७॥

परपक्खेसु दारं ठयंति इमाए जयणाए -

पेहपमज्जणसणियं, उवओगं काउं दारे वट्ठंति ।

तिरिय णर दोणि एते, खर-खरि त्थि-पुं णिसिद्धितरे ॥५२६८॥

चक्खुणा पेहिउं रयोहरणेण पमज्जंति, अचक्खुविसए वा उवओगं काउं ।

अथवा - सचक्खुविसए वि उवओगकरणं ण विरुज्झति । एवं च सणियं जहा जीवविराघणा ण भवति तहा जयणाए दारं ठयंति ।

अहवा - "जयणाए दो वि वारंति" तिरिया णरा य एते दोणि ।

अहवा - दोणि - दासो दासी य, अहवा - दोणि - इत्थी पुरिसो य ।

अहवा - दोणि "निसिद्धितर" त्ति जेसि पवेसोऽणुणात्तो ते निसिद्धा, णाणुणात्तो पवेसो जेसि ते इतर त्ति ।

अहवा - अक्कन्तियतेणा णिसट्ठा इतरे अणिसट्ठा, उवरि वक्खाणिज्जमाणा, जयणाए । तथा य अट्ठायमाणेसु “उवेह” त्ति तुण्हिक्को अच्छति । सागारिणा वा पुट्ठो - “केणुदगं णीयं?” त्ति ताहे साहेत्ति “अमुगेण अमुगीए वा” ॥५२६८॥

गेण्हंतेसु य दोसु वि, वयणमिणं तत्थ वेत्ति गीयत्था ।

बहुगं च णेसि उदगं, किं पगयं होहिती कल्लं ॥५२६९॥

इत्थिपुरिसादिसु दोसु वि गेण्हंतेसु गुरुमादी गीयत्था इमं वयणं (भणंति) पच्छद्वं कंठं ॥५२६९॥  
तेणगेसु इमा विही -

नीसट्ठेसु उवेहं, सत्थेणं तासिता तु तुसिणीया ।

बहुसो य भणत्ति महिलं, जह तं वयणं सुणत्ति अन्नो ॥५३००॥

तेणा दुविधा - णिसट्ठतेणा अणिसट्ठतेणा य । णिसट्ठा अक्कन्तिया वला अवहरंति जहा पभवो ।  
तेसु आगतेसु उवेहं करेइ, तुण्हिक्को अच्छइ ।

अहवा - खग्गादिणा सत्थेण तासिता - तुण्हिक्का अच्छह मा भे मारेमं ।

अह महिला उदगं णेत्ति तत्थ इमं वयणं - “बहुसो य पच्छद्वं” ॥५३००॥

अस्य व्याख्या -

साहूणं वसहीए, रत्तिं महिला ण कप्पती एंती ।

बहुगं च नेसि उदगं, किं पाहुणगा वियाले य ॥५३०१॥

तेणेसु णिसट्ठेसु पुच्चा-उवररत्तिमल्लियंतेसु ।

तेणुदयरक्खणट्ठा, वयणमिमं वेत्ति गीयत्था ॥५३०२॥

“तेणे” त्ति उदगं जे तेणेत्ति, तेत्ति रक्खणट्ठा गीयत्था उच्चसहेण इमं भणंति ॥५३०२॥

जागरह णरा ! णिच्चं, जागरमाणस्स वड्ढती बुद्धी ।

जो सुवत्ति ण सो सुहितो, जो जग्गति सो सया सुहितो ॥५३०३॥ कंठा

सुवत्ति सुवंतस्स सुयं, संकियखलियं भवे पमत्तस्स ।

जागरमाणस्स सुयं, थिरपरिचियप्पमत्तस्स ॥५३०४॥

“सुवत्ति” त्ति नश्यतीत्यर्थः । अहवा - निद्राप्रमत्तस्य सुत्तत्था संकिता भवंति खलंति वा, णो दरदरस्स आगच्छंति, संभरणेण आगच्छंति, नागच्छंति वेत्यर्थः । विगहादीहिं वा पमत्तस्स सुयं अथिरं भवति ॥५३०४॥

सुवइ य अजगरभूतो, सुयं पि से णासती अमयभूयं ।

होहिति गोणब्भूयो, सुयं पि णट्ठे अमयभूये ॥५३०५॥

अजगरस्स किल महंती निद्रा भवति, जेण जहा निच्चित्तो सुवइ ।

किं चान्यत् -

जागरिता धम्मीणं, आधम्मीणं च सुत्तगा सेया ।

वच्छाहिवभगिणीए, अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥५३०६॥

वच्छजणवए कोसंबी णगरी, तस्स अहिवो संताणितो राया, तस्स भणिणी जयंती ।  
तीए भगवं वद्धमाणो पुच्छिओ । 'धम्मियाणं किं सुत्तया, सेया ? जागरिया सेया ?  
भगवया वागरियं - "धम्मियाणं जागरिया सेया, णो सुत्तया । अधम्मियाणं सुत्तया सेया,  
णो जागरिया ।"

"अकहिंसु" त्ति अतीते एवं कहियवान् ॥५३०६॥

किं चान्यत् -

णालस्सेण समं सोदखं, ण विज्जा सह णिदया ।

ण वेरगं ममत्तेणं, णारंभेण दयालुया ॥५३०७॥ कंठा

तासेत्तूण अवहिते, अवैइएहि व गोसे साहेति ।

जाणंते वि य तेणं, साहंति न वण्ण-रूवेहि ॥५३०८॥

अवकंतियतेणेहि सत्येणं तासेउं, अणवकंतिएहि वा अवैइएहि य, एवं अणायरप्पगारेण हरिते,  
"गोसि" त्ति पच्चसे सेज्जातरस्स कहेंति, जति वि ते णामगोएणं जाणंति तहावि तं ण कहेंति, अकहिज्जंते  
वा जति पच्चंगिरा भवति तो कहेंति ॥५३०८॥ "स उदग" त्ति सेज्जा गता ।

इदार्णि उदगसमीवे सा भणइ -

इति सउदगा तु एसा, उदगसमीवम्मि तिण्णिमे भेदा ।

एक्केक्क चिट्ठणादी, आहारुच्चार-भाणादी ॥५३०९॥

जा सा उदगसमीवे तस्स तिण्णि भेदा, तेषु तिसु भेदेसु एक्केक्के चिट्ठणादिया किरियविसेसा  
करेज्ज ॥५३०९॥

ते य इमे तिण्णि भेदा -

दगतीरचिट्ठणादी, जूवग आतावणा य बोधव्वा ।

लहुगो लहुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५३१०॥

चिट्ठणादिया दस वि पदा एवकं पदं । जूवगं ति वित्थियं । आयावणं ति तत्थियं । चिट्ठणादि दस  
वि उदगसमीवं करेत्तस्स पत्तेयं मासलहुं । जूवगे वसहि गेण्हति ड्हु । आतावेत्ति ड्हु । जूवगं वा संकमेण  
गच्छति ड्हु । तिसु वि ठाणेषु पत्तेयं आणादिया दोसा भवंति ॥५३१०॥

दगतीरं दगासणं दगवभासं ति वा एगट्ठं । तस्स पमाणे इमे आएसा -

१ २ ३ ४ ५ ६ ७  
णयणे पूरे दिट्ठे, तडि सिंचण वीइमेव पुट्ठे य ।

आगच्छंते आरण्ण, गाम पसु मणुय इत्थीओ ॥५३११॥

चोदगो भणइ - "अहं दगतीरं भणामि, उदगागरातो जत्थ णिज्जति उदगं तं उदगतीरं" ?

आयरिओ भणति - इरं पि णज्जति उदगं, तम्हा ण होइ तं उदगतीरं ।

तो जत्तियं णदीपूरेण अक्कमइ तं उदगतीरं ।

अधवा - जहिं ठिहिं जलं दीसइ, अधवा - णदीए तढी उदगतीरं ।

अधवा - जहिं ठितो जलट्टिएण सिचिज्जइ सिंगगादिणा तं जलतीरं ।

अधवा - जावत्तियं वीति (चि) ओ फुसति, अधवा - जावत्तियं जलेण पुटुं तं दगतीरं" ।

आयरिओ भणइ - ' ण होइ एयं दकतीरं ।'

दगतीरलक्खणं इमं भणति - आरणा गामेयगा वा दगट्टिणो आगच्छमाणा पसु मणुस्सा इत्थिगाओ वा साधुं दगतीरट्टियं दट्ठुं थक्कंति - णियत्तंति वा जत्तो तं उदगतीरं ॥५३११॥

पुणरवि आयरिओ भणति -

सिंचण-वीयी-पुट्टा, दगतीरं होइ ण पुण तम्मत्तं ।

ओयरिउत्तरितुमणा, जहि दिस्स तसंति तं तीरं ॥५३१२॥

णयणादियाणं सत्तण्ह आदेसाणं चरिमा तिणिण सिंचण, वीति, पुट्टो य, एते णियमा दगतीरं । सेसा भयणिज्जा । इमं अव्वभिचारि दगतीरं - आरणा गामेयगा वा तिरिया वा मणुस्सा वा दगट्टिणो ओयरिउमणा पाउं वा उत्तरिउमणा जलचरा वा जहिं ठियं साधुं दट्ठूणं चिट्ठंति, असंति वा तं दगतीरं भवति ॥५३१२॥

दगतीरे चिट्ठणादिसु इमे दोसा -

अधिकरणमंतराए, छेदण उस्सास अणहियासे य ।

आणा सिंचण जल-थल-खहचरपाणाण वित्तासो ॥५३१३॥

दगतीरे चिट्ठंतस्स अधिकरणं भवति, बहूण य अंतरायं करेति । "छेदणं" ति - साधुस्स चलणा जो उट्ठिय-रओ सो जले णिवडति । "उस्सासे" ति - उस्सासविमुक्कपोगला जले निवडंति । जलं वा खोभेंति । दगतीरे ठिनो वा तिसितो धितिदुब्बलो अणधियासो जलं पिवेज्जा । तित्थकराणाभंगो य । दगतीरे ठियं वा अणुकंप-पडिणीययाए कोति सिंचेज्जा । दगतीरट्टिओ य जल-थल-खहचराणं वित्तासं करेति ॥५३१३॥

"अधिकरणं" ति अस्य व्याख्या -

दट्ठूण वा णियत्तण, अभिहणणं वा धि अणत्तूहेण ।

गामा-SSरणपसूणं, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५३१४॥

"दट्ठूणं वा नियत्तण" ति अस्य व्याख्या -

पडिपहणियत्तमाणम्मि अंतरागं (यं) च तिमरणे चरिमं ।

सिग्घगति तन्निमित्तं, अभिघातो काय-आताए ॥५३१५॥

गामेयगा अरणवासिणो वा, गामेयगा ताव ठप्पा । आरणा तिसिया तित्थाहिमुहा एंता दगतीरे तं साधुं दट्ठूण पडिपहेण गच्छंतेसु अधिकरणं, छक्काए य वहेति, उदगं च अपाउं जति ते पडिपहेणं

गच्छन्ति तो अंतरायं भवति, चसदातो परितावणादी दोसा, एगम्मि परिताविते छेदो, दोसु मूलं, तिसु अणवट्ठो ।<sup>१</sup>

अह एवकं तिसाए मरइ तो मूलं, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारंचियं ।

“अभिहणं वा वि” अस्य व्याख्या - “सिग्गति” पच्छदं, “तण्णिमित्तं” ति - तं साधुं दट्ठुं नीता सिग्गती अण्णं अणोण्णं वा अभिघायति, छक्काए वा घाएति, साहुस्स वा दित्ता वाघातं, करेज्जा, तिसिया वा अणधियासत्तणतो साहुं णोल्लेउं अभिहणेउं गच्छेज्जा ॥५३१५॥

“अणतूहेण” ति अस्य व्याख्या -

अतड-पयातो सो च्चेव य मग्गो अपरिभुत्त हरितादी ।

ओवड कूडे मगरा, जदि घोडे तसा य दुहतो वि ॥५३१६॥

तत्थ ठितं साधुं दट्ठुं ‘अतड’ ति अतित्यं अणोतारं तेण ओयेरज्जा । तत्थ छिण्णटंके प्रपाते आयविराहणा से हवेज्ज ।

अहवा - सो चैव अहिणवो मग्गो पयट्टेज्ज, तत्थ अपरिभुत्ते अणाणुपुव्वीए छक्काया विराहिज्जेज्ज । “ओवड” ति - खड्गातीते पडेज्ज, अतित्ये वा कूडेण घेपेज्ज, अतित्ये वा जलमोइणो मगरातिणा सावयेण खज्जेज्ज । साधुनिमित्तं “तित्येण अतित्येण वा ओयरित्ता अतसे आउक्काए जति सो घोटे करेइ ततिया चउलहुगा, अचित्ते आउक्काए जइ वेदिye ग्रसति तो छल्लहुगं, तेइदिए छग्गुगं, चउरिदिए छेदो, पंचेदिए एक्कम्मि मूलं, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारंचियं । ‘दुहतो वि’ ति - जत्थ आउक्काओ सचित्तो सतसो य तत्थ दो वि पच्छित्ता भवन्ति, चउरिदिएसु चउसु पारंचिय, तेइदिएसु पंचसु पारंचियं, वेदिएसु छसु पारंचियं ॥५३१६॥ एते ताव आरणगाणं दोसा भणिता ।

इदाणि गामेयगाणं दोसा भणन्ति -

गामेय कुच्छियमकुच्छिते य एक्केक्क दुड्डुदुड्डा य ।

दुड्डा जह आरणा, दुगुंछित<sup>२</sup> दुगुंछिता णेया ॥५३१७॥

ते गामेयगा तिरिया दुविधा - दुगुंछिता अदुगुंछिता य । दुगुंछिता गद्भाती, अदुगुंछिता गवादी । दुगुंछिता दुड्डा अदुड्डा य । अदुगुंछिया वि एवं । जे दुगुंछिता अदुगुंछिता वा दुड्डा ते दोवि जहा आरणा भणिता तहा भाणियव्वा ॥५३१७॥

जे अदुगुंछिता अदुड्डा तेसु नत्थि दोसा जहासंभवं भाणियव्वा,

जे ते दुगुंछिया अदुड्डा तेसु इमे दोसा -

भुत्तेयरदोस कुच्छिते, पडिणीए छोभ गेण्हादीया ।

आरणमणुय-थीसु वि, ते चैव णियत्तणादीया ॥५३१८॥

तिरियंची महासहिता दुगुंछिताले, जेण गिहिका भुत्ता तस्स तं दट्ठुं सत्तिकरणं, “इतरे” ति - जेण ण भुत्ता तस्स तं दट्ठुं कोउअं अवति, कुच्छियासु वा आसण्णठियासु पडिणीतो कोइ छोभं देज्ज - “मए

१ चतुर्पुं परितापितेषु पारांचिकं, इति वृ० वृ० गा० २३८६ । २ गा० ५३१४ । ३ गा० ५३१४ । ४ उवग, इति पूनासत्कताडपत्रप्रती । ५ अन्नतित्येण, इत्यपि पाठः । ६ गा० ५३१४ । ७ दुगुंछिता इत्यपि पाठः ।



एस समणगो महासद्दियं पडिसेवंतो दिट्ठो", तत्थ वि गेण्हाणदिया दोसा । एवं गामारण्णतिरिएसु दोसा भणिता । जा य जत्थ काए आरौवणा भणिता सा सव्वा उवउंजितूण भाणियव्वा ॥ एते तिरियाणं दोसा भणिता ।

इदार्णि मणुस्साणं "आरण्णमणुय" पच्छद्धं ।

मणुया दुविधा - आरण्णगा गामेयगां य । तत्थ आरण्णयाणं पुरिसाण य इत्थियाण य ते चेव णियत्तणादिया दोसा जे तिरियाणं भणिया ॥५३१८॥

इमे य अण्णे दोसा -

पावं अवाउडातो, सबरादीतो तहेव णित्थक्का ।

आरियपुरिस कुतूहल, आतुभयपुलिंद आसुवधो ॥५३१९॥

पुव्वद्धं कंठं । णित्थक्का णिल्लजा । तातो साधुं दट्ठूणं आरियपुरिसो त्ति काउं पुलिदियादिअणा-  
रिया कोउएणं साधुसमीवं एज्जंताओ दट्ठुं आयपरठभयसमुत्था दोसा भवेज्ज । मेहुणपुलिंदो वा तं इत्थियं  
साधुसगासमागतं दट्ठुं ईसायंतो रुट्ठो "आसु" सिग्घं मारेज्ज ॥५३१९॥

थी-पुरिसअणायारे, खोभो सागारियं ति वा पहणे ।

गामित्थी-पुरिसेसु वि, ते विय दोसा इमे चण्णे ॥५३२०॥

अधवा - सो पुलिंदपुरिसो पुलिंदयाए सह अणायारं आयरेज्ज, तत्थ भुत्ताभुत्ताण सत्तिकरणकोउएहि  
चित्तखोहो हवेज्ज । खुभिए य चित्ते पडिगमणादिया दोसा ।

अहवा - सो पुलिंदतो अणायारमायरिउकामो सागारियं ति काउं साधुं पहणेजा मारेज्ज वा ।  
एते आरण्णयाण दोसा । गामेयकपुरिसइत्थीण वि एते चेव दोसा, इमे य अण्णे दोसा ॥५३२०॥

चंकमणं णिल्लेवण, चिट्ठित्ता चेव तम्मि तूहम्मि ।

अच्छंते संकापद, मज्जण दट्ठुं सत्तीकरणं ॥५३२१॥

"चंकमणे" ति अस्य व्याख्या -

अण्णत्थ व चंकमती, <sup>१</sup>मज्जण अण्णत्थ वा वि वोसिरती ।

कोनाली चंकमणे, परकूलातो वि तत्थेति ॥५३२२॥

कोइ अण्णत्थ चंकमंतो साधुं दगतीरे दट्ठुं तत्थेति एत्थ साधुसमीवे चेव चंकमणं करेस्सामि,  
किं चि पुच्छिस्सामि वा वोल्लालाव-संकहाए अच्छिस्सामि, साधुं वा दगतीरे चंकमंतं दट्ठुं गिही अण्णथाणाओ  
तत्थेइ अहं पि एत्थेव चंकमिस्सं, सो य अयगोलसमो विभासा ।

अहवा - तत्थ <sup>३</sup>दगतीरे चंकमणं करेस्सामीति आगतो तत्थ साधुं दट्ठूणं चित्तेति - "जामि  
इतो ठाणातो अण्णत्थ चंकमणं करेस्सामी" ति गच्छति, गच्छंते अधिकरणं । "<sup>४</sup>णिल्लेवणं" ति अस्य  
व्याख्या - "<sup>५</sup>मज्जण अण्णत्थ वा वि वोसिरति" । सण्णं वोसिरितुं अण्णत्थ णिल्लेवेउकामो साधुं दट्ठुं  
साधुसमीवे एउं निल्लेवेइ । एवं मज्जणं, मज्जणं ति ण्हाणं ।

अहवा - तत्थ निल्लेविउं कामो साधुं दट्ठुं अण्णत्थ गंतुं णिल्लेवेति एवं मज्जण सण्णवोसिरणं पि ।

१ गा० ५३२१ । २ आयमणं...इत्यपि पाठः । ३ ....समीवे, इत्यपि पाठः । ४ गा० ५३२१ ।

५ आयमणं...इत्यपि पाठः । ६ गा० ५३२२ ।

“चिद्विता चेव तम्मि तूहम्मि” अस्य व्याख्या - “कोनाली” पच्छद्वं । गंतुकामो सागारिगो साधुं दगतीरे दट्ठं तम्मि चेव “तूहम्मि” ति तित्थे चिट्ठति ।

अहवा - परकूलातो वि साधुसमीधं एति । “कोनालि” ति गोठ्ठी । गोठ्ठीए सधुणा सह दोल्लालाव-संकहेण चंकमणं करेत्तो अच्छिस्सं, तत्थ साधुसंलावणिमित्तं अच्छंतो छक्काए ववति ॥५३२२॥

“अच्छंतं संकापद” ति अस्य व्याख्या -

दग-मेहुणसंकाए, लहुगा गुरुगा य मूल णीसंके ।

दगतूर कुंचवीरग, पघंस केसादलंकारे ॥५३२३॥

दगतीरे साधुं अच्छंतं दट्ठं कोइ संकेज्जा - किं उदगट्ठा अच्छति । अह किं संगारदिण्णतो ? तत्थ दगसंकाए चउलहुं, णिस्संके चउगुरुं । मेहुणसंकाए चउगुरुं, णिस्संकिते मूलं ।

“मज्जण दट्ठं सतीकरणं” ति अस्य व्याख्या - “दगतूरं” पच्छद्वं । कोति सविगारं मज्जति, दगतूरं करेत्तो एरिसं जलं अफालेति जेण मुरवसंद्दो भवति । एवं पडह-पणव-भेरिमादिया सद्दा करेत्ति ।

अधवा - कुंचवीरगेण जलं आहिडति । कुंचवीरगो सगडपवखसारिच्छं जलजाणं कज्जति । सुगंध-दव्वेहि य आघंसमाणं केसवत्थमल्लआभरणालंकारेण य आभरेत्ति दट्ठं भुत्तभोगिसतिकरणं, इयराण कोउयं भवइ । पडिगमणादी दोसा ॥५३२३॥ एते पुरिसेसु दोसा ।

इमे इत्थीसु-

मज्जण-प्हाणट्ठाणेसु अच्छती इत्थिणं ति गहणादी ।

एमेव कुच्छित्तेतर-इत्थीसविसेसं मिहुणेसु ॥५३२४॥

इत्थीओ दुविहा - अदुगुच्छिता दुगुच्छिता य । तत्थ अदुगुच्छिता वंभणी खत्तिया वेसि सुदी य । दुगुच्छिता संभोइयदुअक्खरियाओ, अहवा णडवरुडादियाओ असंभोइयइत्थिआओ । एताओ वि दुविधाओ - सपरिग्गहा अपरिग्गहाओ य । एत्थ सपरिग्गहित्थियाणं वसंताइसु अण्णत्थ ऊसवे विभवेण जा जलक्रीडा संमज्जणं, मलडाहोवसमकरणमेत्तं प्हाणं, जलवहणपहेसु वा अण्णेसु वा णिल्लेवणट्ठाणेसु इत्थीणं अच्छंतस्स आयपरोभय-समुत्था दोसा ।

अधवा - तसि णाययो पासित्ता जत्थम्ह इत्थीओ मज्जणादी करेत्ति तत्थ सो समणो परिभवं - कामेमाणो अच्छति, दुट्ठो ति काउ गेण्हादयो दोसा । जाओ पुण अपरिग्गहाओ कुच्छिया इयर ति अकुच्छिया वा इत्थीओ तासु वि एवं चेव आयपरोभयसमुत्था दोसा । “मिहुणं” ति जे सइत्थिया पुरिसा तेसु मिहुणक्रीडासु क्रीडतेसु सविसेसतरा दोसा भवन्ति ॥५३२४॥

जम्हा दगसमीवे एवमादिया दोसा तम्हा चिट्ठणादिया पदा इमे तत्थ णो कुज्जा -

चिट्ठण<sup>१</sup> णिसिय<sup>२</sup> तुयट्ठे<sup>३</sup>, निदा<sup>४</sup> पयला<sup>५</sup> तहेव<sup>६</sup> सज्झाए ।

भाणाऽऽहारवियारे, काउस्सग्गे य मासलहुं ॥५३२५॥

उद्वट्ठितो चिट्ठइ, णिसीयणं उवविट्ठो चिट्ठइ, तुयट्ठो णिव्वणो अच्छति ॥५३२५॥

પયલણિદાણં હમં વક્ષાણં -

સુહપડિબોહો ણિદા, દુહપડિબોહો ય ણિદ-ણિદા ય ।

પયલા હોતિ ઠિયસ્સા, પયલાપયલા ઉ ચંકમતો ॥૫૩૨૬॥

વાયનાદિ પંચવિહો સજ્ઞાઓ । “આણિ” તિ ધમ્મસુક્કે ભાયતિ, આહારં વા આહારેતિ, “વિયારે” તિ-ઉચ્ચારપાસવળં કરેતિ, અભિભવસ્સ કાઉસ્સગં વા કરેતિ । એતેસુ તાવ દસસુ પદેસુ અવિસિદ્ધં અસામાયારિ-ણિપ્પક્કં માસલહું ॥૫૩૨૬॥

હિદાણિં વિભાગઓ પચ્છિત્તં વળ્લેઉકામો અણાણુપુવ્વીચારણિયપદસંગહં ચારણિયવિકપ્પેસુ ચ જં પચ્છિત્તં તં ભણામિ -

સંપાઇમે અસંપાઇમે ય અદિદ્ધે તહેવ દિદ્ધે ય ।

પળગં લહુ ગુરુ લહુગા ગુરુગં અહાલંદ પોરિસી અધિકા ॥૫૩૨૭॥

તં દગતીરં દુવિહં સંપાતિમમસંપાતિમં વા ।

એતેસિં હમા વિભાસા -

જલજાઓ અસંપાતિમ, સંપાઇમ સેસગા ઉ પંચેદી ।

અહવા વિહંગવજ્જા, હોતિ અસંપાઇમા સેસા ॥૫૩૨૮॥

અણ્ણઠાણાતો આગતું જે જલે જલચરા વા થલચરા વા પંચેદિયા સંપતંતિ તે સંપાઇમા, જે પુણ જલચરા વા તત્રસ્થા એવ તે અસંપાતિમા ।

અહવા - જલચરા આગત્ય જલે સંપતંતિ સંપાઇમા । સેસા વિહંગવજ્જા થલચરા સચ્ચે અસંપાઇમા । એતેહિ સંપાઇમઽસંપાતિમેહિ જુત્તં દુવિધં દગતીરં । એયમ્મિ દુવિધે દગતીરે તેહિ સંપાતિમેહિ દિદ્ધો અચ્છતિ અદિદ્ધો વા । જં તં અચ્છતિ કાલં તસ્સિમે વિભાગા - અધાલંદં પોરિસિં ।

અધિગં ચ પોરિસિં લંદમિતિ કાલસ્તસ્ય વ્યાખ્યા - તરુણિત્થીએ ઉદઉલ્લો કરો જાવતિણ કાલેણ સુક્કતિ જહ્ણો લંદકાલો । ઉક્કોસેણ પુવ્વકોડી । સેસો મજ્ઞો ।

અહવા - જહ્ણો સો ચેવ, ઉક્કોસો “અહાલંદ” તિ જહાલંદં, જહા જસ્સ જુત્તં; જહા - પડિમા-પડિવળ્ણાણં અહાલંદિયાણં ય પંચરાહંદિયા, પરિહારવિસુદ્ધિયાણં જિણકપ્પિયાણં ણિક્કારણઓ ય ગચ્છવાસીણ વા ઉદુબ્બદ્ધે માસં, વાસાસુ ચઉમાસં, અજ્જાણં ઉદુબ્બદ્ધે દુમાસં, મજ્ઞિમાણં પુવ્વકોડી, । એત્ય જહ્ણેણ અહાલંદ-કાલેણ અધિકારો ॥૫૩૨૮॥

હિદાણિં સંપાતિ-અસંપાતિ-અધાલંદિયાદિસુ અદિદ્ધ-દિદ્ધેસુ ય પચ્છિત્તં ભણંતિ -

અસંપાતિ અહાલંદે, અદિદ્ધે પંચ દિદ્ધ માસો ઉ ।

પોરિસિ અદિદ્ધ દિદ્ધે, લહુ ગુરુ અહિ ગુરુગા લહુગા ય ॥૫૩૨૯॥

અસંપાતિમે અહાલંદં અદિદ્ધે અચ્છતિ પંચ રાહંદિયા । દિદ્ધે અચ્છહ માસલહું ।

અસંપાઇમેસુ પોરિસિ અદિદ્ધે અચ્છહ માસલહું । દિદ્ધે માસગુરુ ।

अधियं पोरिसि अदिट्टे अच्छति मासगुरुं । दिट्टे चउलहुगं ।

संपाइमेसु अहालंदं अदिट्टे मासलहुं । दिट्टे मासगुरुं ।

पोरिसि अदिट्टे मासगुरुं । दिट्टे चउलहुगं ।

अधियं पोरिसि अदिट्टे चउलहुं । दिट्टे चउगुरुं ॥५३२६॥

संपातिमे वि एवं, मासादी णवरि ठाति चउगुरुए ।

भिक्षु वसहाभिसेगे, आयरिए विसेसिता अहवा ॥५३३०॥

पुव्वदं गतार्थं । एवं ओहियं गयं ।

अधवा - एवं चेव भिक्षुस्स वसभस्स अभिसेगस्स आयरियस्स य विसेसियं दिज्जति । भिक्षुस्स उभयलहुं, वसभस्स कालगुरुं, अभिसेगस्स तवगुरुं आयरियस्स, उभयगुरुं । एस वित्तिओ आदेसो ॥५३३०॥

अहवा भिक्षुस्सेवं, वसभे लहुगाति ठाति छल्लहुगे ।

अभिसेगे गुरुगादी, छगुरु लहुगादि छेदंतं ॥५३३१॥

भिक्षुस्स एयं जं वुत्तं । वसभस्स असंपाइम-संपाइम-प्रवालंदपोरिसि-प्रधिय-अदिट्टदिट्टेसु पुव्व चारणियविहीते मासलहुगाओ आढत्तं छल्लहुए ठायति ।

उवज्जायस्स असंपाइमेसु मासगुरुगाओ आढत्तं छल्लहुए ठायति, संपातिमेसु चउलहुगातो आढत्तं छगुरुए ठायति ।

आयरियस्स चउलहुगाओ आढत्तं छेदे ठायति । एस तत्तिओ पगारो ॥५३३१॥

अहवा पंचण्हं संजतीण समणाण चेव पंचण्हं ।

पणगादी आरद्धा, णेयच्चा जाव चरिमं तु ॥५३३२॥

पंच संजतीओ इमा - खुट्ठी, थेरी, भिक्खुणी, अभिसेगि, पवत्तिणी चेव । समणाण वि एते चेव पंच भेदा । “पणगादि जाव चरिमं” ति ॥५३३२॥

इमे पच्छित्तठाणा -

पण दस पण्णर वीसा, पणवीसा मास चउर छच्चेव ।

लहुगुरुगा सव्वेते, लंदादि असंप-संपदिसुं ॥५३३३॥

पणगादि जाव छम्मासो, सव्वे एते लहुगुरुभेदभिण्णा सोलस भवन्ति । छेदो मूलं अणवट्ठो पारंचियं च एते चउरो, सव्वे वीसं ठाणा । अहालंदादिया तिण्णि पदा, असंपाइमा दो पदा, अदिट्टदिट्टा य दो पदा, चिट्ठणादिया य दसपदा ॥५३३३॥

इदार्णि चारणिया कज्जति -

पणगादि असंपादिमं, संपातिमदिट्टमेव दिट्टे य ।

चउगुरुगे ठाति खुट्ठी, सेसाणं वुट्ठि एक्केक्कं ॥५३३४॥

खुट्ठी चिट्ठति असंपाइमे अहालंदं कालं अदिट्टे पंचराइंदिया लहुया । दिट्टे पंच राइंदिया गुरुया ।

खुट्ठी चिट्ठति असंपातिमे पोरिसि अदिट्टे पंच राइंदिया गुरुया । दिट्टे दस राइंदिया लहुया ।

खुड्डी चिट्ठइ असंपाइमे अधियं पोरिसि अदिट्ठे दसराइंदिया लहुया । दिट्ठे दस राइंदिया गुरुया ।  
एयं असंपातिमे भणियं ।

संपाइमे पुण पंचराइंदिएहि गुरुएहि आढत्तं पण्णरसराइंदिएहि लहुए ठाति ।

एयं चिट्ठंतीए भणियं णिसीयंतीए पंचराइंदिएहि गुरुएहि आढत्तं पण्णरसहि गुरुहि ठाति ।

तुअट्ठंतीए असंपातिम-संपातिमेहि दससु राइंदिएसु लहुएसु आढत्तं वीसाए राइंदिएहि लहुएहि ठाति ।  
णिद्दायंतीए वीसाए गुरुहि ठाति ।

<sup>१</sup>पयलायंतीए पणुवीसाए लहुएहि ठाति ।

सज्झायं करंतीए पणुवीसाए राइंदिएहि गुरुएहि ठाति ।

भाणं भायंतीए मासलहुए ठाति ।

आहारं आहारंतीए मासगुरुए ठाति ।

वियारं करंतीए चउलहुए ठाति ।

काउस्सगं करंतीए चउगुरुए ठाति ।

एयं खुड्डीए भणियं । थेरमादियाण हेट्ठा एक्कं पदं हुसेज्जा उवरि एक्कं वड्ढेज्जा ॥५३३४॥

**छल्लहुगे ठाति थेरी, भिक्खुणि छग्गुरुग छेदो गणिणीए ।**

**मूलं पवित्तिणी पुण, जहभिक्खुणि खुड्ढए एवं ॥५३३५॥**

थेरीए गुरुपण्णातो आढत्तं छल्लहुगे ठाति ।

भिक्खुणीए दसण्हं राइंदियाण लहुयाण आढत्तं छग्गुरुए ठाति ।

अभिसेयाए दसण्हं इंदियाण गुरुआण आढत्तं छेदे ठाति ।

पवित्तिणीए पण्णरस लहुगा आढत्तं मूले ठायति । एवं संजतीण भणियं ।

इदाणि संजयाणं भण्णति - तत्थ अतिदेसो कीरति ।

जहा भिक्खुणी भणिता तहा खुड्ढो भाणियव्वो ।

जहा गणिणी भणिया तहा भिक्खू भाणियव्वो ।

उवज्झायस्स गुरुएहि पण्णरसहि आढत्तं अणवट्ठे ठाति ।

आयरिओ वीसाए लहुएहि राइंदिएहि आढत्तं पारंचिए ठाति ॥५३३५॥-

**गणिणिसरिसो उ थेरो, पवत्तिणीसरिसओ भवे भिक्खू ।**

**अट्ठोक्कंती एवं, सपदं सपदं गणि-गुरुणं ॥५३३६॥**

गतार्था । गणिस्स सपदं अणवट्ठं, गुरुस्स सपदं पारंचियं ॥५३३६॥

**एमेव चिट्ठणादिसु, सव्वेसु पदेसु जाव उस्सगो ।**

**पच्छित्ते आएसा, एक्केक्कपदम्मि चत्तारि ॥५३३७॥**

चिट्टणादिपदे असंपातिमसंपातिमे य अविट्ट-विट्टेसु चउरो पच्छित्ता भवन्ति । एवं गिषीयणादिसु वि एक्केक्के चउरो पच्छित्ता भवन्ति ।

अहुवा - चिट्टणादिसु एक्केक्के चउरो आदेसा इमे - एकं ओहियं, वितियं तं चेव कालविसेसितं, ततियं छेदंतं पच्छित्तं, चउत्थं <sup>१</sup>महत्तलं पच्छित्तं ॥५३३७॥ सम्मत्तं दगतीरं ति दारं ।

अधुना <sup>२</sup>ज्वकस्यावसरः प्राप्तः । तत्थ गाहा -

संकम जूवे अचले, चले य लहुगो य होति लहुगा य ।

तम्मि वि सो चेव गमो, नवरि गिलाणे इमं होति ॥५३३८॥

ज्वयं णाम विट्टं (वीडं) पाणियपरिक्खित्तं । तत्थ पुण देउलिया घरं वा होज्ज, तत्थ वसति गेण्हति चउलहुगा, एयं वसहिगहणणिप्फणं । तं ज्वयं संकमेण जलेण वा गम्मइ ।

संकमो दुविहो - चलो अचलो य । अचलेण जाति भासलहु ।

चलो दुविहो - सपच्चवाओ अपच्चवाओ य । णिप्पच्चवाएणं जइ जाति तो चउलहुं सपच्चवाएण जाति चउगुरु । जलेण वि सपच्चवाएण गच्छति चउगुरु । णिप्पच्चवाए चउलहुं । “तम्मि वि सच्चेव” पच्छद्धं - तम्मि वि जूवते सच्चेव वत्तव्वया जा उदगतीरए भणिता । “<sup>३</sup>अधिकरणं अंतराए” ति एत्तओ आढत्तं जाव “<sup>४</sup>एक्केक्कपदम्मि चत्तारि” ति, णवरि - इमे दोसा अब्भहिता गिलाणं पडुच्च ॥५३३९॥

दट्ठुण व सत्तिकरणं, ओभासण विरहिते व आतियणं ।

परितावण चउगुरुगा, अकप्प पडिसेव मूलदुगं ॥५३३९॥

गिलाणस्स उदगं दट्ठुं “सत्तिकरणं” ति एरिसी मती उप्पज्जति पियामि ति । ताहे ओभासइ । जइ दिज्जति तो संजमविराहणा । अहं ण दिज्जति तो गिलाणो परिच्छतो, विरहियं साहूहिं अण्णेहि य ताहे आदिएज्ज । जति सल्लिगेण आदियति तो चउलहुं । अहाऽकप्पं पडिसेवति “दुग” पि गिहिल्लिगेण अण्णातिट्ठिय-लिगेण वा तो मूलं ।

अहुवा - आदिए आउक्कायणिप्फणं चउलहुअं । तसेसु य तसणिप्फणं भणियव्वं । पच्चिदिएसु तिसु चरिमं, तेण वा अपत्थेणं परितावणादिणिप्फणं ।

अह ओभासंतस्स ण दंति असंजमो ति काउं, तत्थ अणागाढादिणिप्फणं ।

अह उदातितो चरिमं, जणो य भणइ - “अहो ! णिरणुकंपा मग्गंतस्स वि ण दंति” ।

अहुवा - अकप्पं पडिसेवतो ओहावेज - एगो मूलं, दोसु अणवट्ठं, तिसु चरिमं ॥५३३९॥

आउक्काए लहुगा, पूतरगादीतसेसु जा चरिमं ।

जे गेल्लणे दोसा, धित्तिदुव्वल-सेहे ते चेव ॥५३४०॥

एत्थ कायणिप्फणं पच्छित्तं भाणियव्वं ।

छक्काय चउसु लहुगा, परित्त लहुगा य गुरुगसाहरणे ।

संघट्ठण परितावण, लहुगुरुगऽतिवायतो मूलं ॥५३४१॥

कंठा । जे गिलाणदोसा भणिता ते धितिदुव्वले वि दोसा, सेहे वि तच्चेव दोसा ॥५३४१॥  
जुवगेत्ति गयं ।

इदाणि आयावणा -

आतावण तह चेव उ, णवरि इमं तत्थ होति नाणत्तं ।

मज्जण-सिचण-परिणाम-वित्ति तह देवता पंता ॥५३४२॥

जदि दगंसमीवे आयावेति तत्थं तह चेव अधिकरणादि दोसा । जे उदगतीरे भणिया जे जुवगे भणिया संभवन्ति ते सव्वे अविसेसेण भाणियव्वा । दगसमीवे आयावेंतस्स चउलहुं । आयावणाए इमे अब्भहिया 'मज्जण-सिचण-परिणाम-वित्तिदेवतापंत' ति ॥५३४२॥ मज्जण-सिचणपरिणामा एते तिणि पदा जुगवं एवकगाहाए वक्खानेति ।

मज्जन्ति व सिचन्ति व, पडिणीयऽणुकंपया व णं कोई ।

तण्हणपरिणतस्स व, परिणामो ण्हाण-पियणेषु ॥५३४३॥

तं उदगतीरातावणं मज्जन्ति ण्वन्ति पडिणीयत्तणतो, घम्मितो पयावणेणं सिचन्ति तं सिगच्छडाहि अंजलीहि वा, तं पि अणुकंपया पडिणीयतया वा कश्चित् अहमद्रः प्रत्यनीको वा एवं करेति ।

अहवा - तस्स दगतीरातावणस्स "तण्हपरिणतोमि" ति तिसिओ उण्हपरिणतो घम्मितो, एयावत्थ-भूयस्स घम्मियस्स ण्हाणपरिणामो उप्पज्जति, तिसियस्स पियणपरिणामो ति ॥५३४३॥ दारा तिन्नि गता ।

"अवित्ति" अस्य व्याख्या -

आउट्टजणे मरुगाण अदाणे खरि-तिरिक्खिछोभादी ।

पच्चक्ख देवपूयण, खरियाचरणं च खित्तादी ॥५३४४॥

पुव्वद्वस्स इमा विभासा -

आतावण साहुस्सा, अणुकंपंतस्स कुणति गामो तु ।

मरुगाणं च पदोसा, पडिणीयाणं च संका उ ॥५३४५॥

तस्स साहुस्स दगतीरे आयावेंतस्स आउट्टो सो गामजणो अणुकंपतो य पारणगदिणे भत्तादियं सविसेसं देति, - "इमो पच्चक्खदेवो ति किं अहं अन्नेसि मरुगादीणं दिन्नेणं होहिति, एयस्स दिण्णं महफलं" ति । ताहे मरुगादि अदिज्जन्ते पदोसं गता । "खरि" ति दुवक्खरिता, "तिरिक्खी" महासदियादि, एयासु "छोभगो" ति अयसं देति, - "एस संजतो दुवक्खरियं परिभुंजति, तिरिक्खियं वा" ।

अहवा - दुवक्खरियं दाणसंगहियं काउं महाजणमज्जे बोत्तावेति, महासदियं वा तत्थ संजतसमीवे नेउं संजयवेसेण गिण्हन्ति, संजयं च अप्पसांगारियं ठवेति, अन्ने य वोलं करेति - "एस संजतो एरिसो" ति । तत्थ जे पडिणीया तेसि संका भवति ड्ढ । निरसकिए मूलं । अधवा - जे पडिणीया ते संकन्ति कोस एसो तित्थठाणे आयावेति, किं तेणट्टेण, किं ताव मेहुणट्टेण । "वित्ति" गतं ।

इदाणि "तह देवता पंता" अस्य व्याख्या - "पच्चक्खदेव" पच्छद्वं । जत्थ आयावेति तस्स समीवे देवता जत्थ जणो पुव्वं पूयापरो आसीत्, साहुं आयावेंतं दट्ठं इमो पच्चक्खदेवो ति साहुस्स



पूयं काठमारद्धो न देवताए, सा देवया जहा मरुगा पदुङ्गा तहा दुवक्खरिग-तिरिक्खिसु करेज्ज, अहवा - सा देवता साहुक्खं आवरेत्ता अन्न च तस्स पडिक्खं करेत्ता दुवक्खरिगं तिरिक्खीं वा परिभुजंतं लोगस्स दंसेति । अहवा - खित्तचित्तादिगं करेज्ज । अन्नाओ वा अकप्पपडिसेवणा अकिरियाओ दरिसेज्ज । जम्हा तत्थ एत्तिया दोसा तम्हा तत्थ दगतीरे न ठाएज्जा ॥५३४५॥

वीयपए ठाएज्ज वि दगतीरे -

पढमे गिलाणकारण, वित्तिए वसही य असति ठाएज्जा ।

रातिणियकज्जकारण, तत्तिए वित्तियपयजयणाए ॥५३४६॥

“पढमं” ति दगतीरं, तत्थ गिलाणकारणेण ठाएज्जा । “वित्तिय” ति जुवयं तत्थ ठायज्जा वसविनिमित्तं । “तत्तियं” ति - आयावणा, “राइणिउ” ति कुलगणसंघकज्जं तेण राइणो कज्जं हवेज्ज, एते-तिन्निवि वित्तियपदा ॥५३४६॥

कहं पुण गिलाणट्ठा दगतीराए ठाएज्जा ? -

विज्ज-दधियट्ठाए, णिज्जंतो गिलाणो असति वसतीए ।

जोग्गाए वा असती, चिट्ठे दगतीरणोत्तारे ॥५३४७॥

वेज्जस्स सगासं निज्जंतो, ओसहट्ठा वा [“असति”] अन्नत्थ निज्जंतो, अन्नत्थ नत्थि वसधी दगतीरे य अत्थि ताहे तत्थ ठाएज्ज, गिलाणजोगा वा वसन्ती अन्नत्थ नत्थि । अहवा - वीसमणट्ठा दगतीरेण मुहुत्तमेतं ओयारिज्जइ तत्थ वि मण्युतिरियाण ओयरणमगे नोत्तारिज्जति ॥५३४७॥

तत्थ ठियाणं इमा जयणा -

उदगंतेण चिलिमिणी, पडिचरए मोत्तु सेस अणत्थ ।

पडिचर पडिसंलीणा, करेज्ज सव्वाणि वि पदाणि ॥५३४८॥

उदगंतेण चिलिमिणी कडगो वा दिज्जइ, जे गिलाणपडियरगा ते परं तत्थ अच्छंति सेसा अन्नत्थ अच्छंति । पडियरगा वि पडिसंलीणा अच्छंति जहा असंपातिसंपातिमाणं सत्ताणं संत्रासो न भवति । एवं ठिया सव्वाणि वि चिट्ठणादिपदाणि करेज्ज ॥५३४८॥ पढमे त्ति गतं ।

इदार्णि १वित्तिय त्ति -

अट्ठाणणिग्गयादी, संकम अप्पावहुं असुण्णं तु ।

गेलण्ण-सेहभावे संसट्ठुसिणं व (सु) निव्ववियं ॥५३४९॥

अट्ठाणणिग्गयादी दोसा साहुणो अन्नाए वसहिए सति जूवगे ठायंति । तत्थ जति संकमेण गमणं, तेसु संकमेसु अप्पावहुअं, जो एगंगिओ अचलो अपरिसाडी णिप्पच्चवातो य तेण गंतव्वं, अण्णेसु वि जो बहुगुणो तेण गंतव्वं । दिया राओ य वसही असुण्णा कायव्वा । तत्थ य ठियाण जति गिलाणस्स सेहस्स वा पाणियं पियामो त्ति असुमो भावो उप्पज्जति ताहे तं पणविज्जंति, तहावि अट्ठिते भावे ताहे संसट्ठपाणं उप्पिणोदवं वा “सुणिव्ववित्तं” ति सुसीयलं काउं दिज्जति, अण्णं वा फासुगं ॥५३४९॥ जूवगजयणा गता ।



इदानीं 'रातिणियकज्जंति -

उल्लोयण णिग्गमणे, ससहातो दगसमीव आतावे ।

उभयदहो जोगज्जे, कज्जे आउट्ट पुच्छणया ॥५३५०॥

चेतियाण वा तद्भवविणासे वा संजतिकारणे वा अण्णम्मि वा कम्हि य कज्जे रायाहीणे, सो य राया तं कज्जं ण करेति, सयं वुग्गाहितो वा, तस्साउट्टणाणिमित्तं दगतीरे आतावेज्ज । तं च दगतीरं रण्णो ओलोयणठियं णिग्गमणपहे वा । तस्य य आतावेतो ससहाओ आतावेति उभयदहो धितिसंघयणेहि । तिरियाणं जो अवतरणपहो मणुयाण य ण्हाणादिमोगट्टाणं तं च वज्जेउं आतावेइ । कज्जे तं महातवज्जुत्तं दट्ठुं अल्लिएज्ज, राया आउट्टो य पुच्छेज्जा - "किं कज्जं आयावेसि ? अहं ते कज्जं करेमि, भोगे वा पयच्छामि, वरेहि वा वरं जेण ते अट्टो" । ताहे भणाति साहू - "ण मे कज्जं वरेहि, इयं संघकज्जं करेहि" ॥५३५०॥

इमेरिसो सो य सहाओ -

भावित करण सहाओ, उत्तर-सिंचणपहे य मोत्तूण ।

मज्जणगाइणिवारण, ण हिंडति पुप्फ वारेति ॥५३५१॥

वम्मं प्रति भावितो, ईसत्ये धणुवेदादि ए कयकरणे संजमकरणे वा कयकरणे, ससमयपरसमयगहियऽत्यत्तणओ उत्तरसमत्यो, अप्पणो वि एरिसो चेव । सो य सहाओ जति कोइ अणुकूलपडिणीयत्तणेणं सिंचति वा मज्जति वा पुप्फाणि वा आलएति तो तं वारेति । तम्मि गामे णगरे वा सो आयावगो भिक्खं ण हिंडइ, मा मरुगादि पट्टुडा विसगरादि देज्ज ॥५३५१॥

जे भिक्खू सागणियसेज्जं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

सह अगणिणा सागणिया ।

सागणिया तू सेज्जा, होति सजोती य सप्पदीवा य ।

एतेसिं दोण्हं पी, पत्तेय-परुवणं वोच्छं ॥५३५२॥

सागणियसेज्जा दुविधा - जोती दीवो वा । पुणो एक्केक्का दुविधा - असव्वराती सव्वराती य । असव्वरातीए दीवे मासलहं । सेसेमु तिसु विकप्पेमु चउलहुगा पत्तेयं ॥५३५२॥

दुविहा य होति जोई, असव्वराई य सव्वरादी य ।

ठायंतगाण लहुगा, कीस अगीयत्थ सुत्तं तु ॥५३५३॥

"जोई" ति उद्दिश्यंतं । सेसं कटं ।

चोदगाह-

अणत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ य कोति णिदिट्ठो ।

जा पुण एगाणुण्णा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५३५४॥

आयरियाह -

एयारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिदिट्ठो ।  
 अव्वोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५३५५॥  
 जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति विचारणा णत्थि ।  
 किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठि प्पहाणेहिं ॥५३५६॥  
 उस्सग्गसुत्तं किंची, किंची अववाइयं मुणेयव्वं ।  
 तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥५३५७॥  
 णेगेसु एगगहणं, सलोम-णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।  
 विहिभिण्णस्स य गहणे, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५३५८॥  
 उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जयं लहइ ।  
 न य तं होइ विरुद्धं, एमेव इमं पि पासामो ॥५३५९॥  
 उस्सग्गे गोयरम्मी, णिसिज्जऽकप्पाववायओ तिण्हं ।  
 मंसं दल मा अट्ठिं, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५३६०॥  
 णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।  
 कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सग्गं ॥५३६१॥  
 कत्थति देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं ।  
 उक्कमकमजुत्ताइं, कारणवसतो णिउत्ताइं ॥५३६२॥  
 देसग्गहणे वीए, हि सइया मूलमाइणो होंति ।  
 कोहाति अणिग्गहिया, सिंचंति भवं निरवसेसं ॥५३६३॥  
 सत्थपरिणा उक्कमे, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।  
 जं पि य उक्कमकरणं, तं पिऽभिनवधम्ममातट्ठा ॥५३६४॥  
 वीएहि कंदमादी, विस्सइया तेहि सव्ववणकायो ।  
 भोमातिका वणेण तु, सभेदमारोवणा भणिता ॥५३६५॥  
 जत्थ उ देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि सइयवसेणं ।  
 मोत्तूण अहीकारं, अणुओगधरा पभासेंति ॥५३६६॥  
 उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववादओ य जाणि भवे ।  
 कारणजाएण मुणी !, सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५३६७॥

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।  
कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५३६८॥

चोदगाह -

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।  
एवं होयऽणवत्था, ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५३६९॥  
उम्मत्तवायसरिसं, खु दंसणं न वि य कप्पऽकप्पं तु ।  
अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५३७०॥

आयरिओ -

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं ।  
एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५३७१॥  
कज्जं णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।  
तं तह समायरंतो, तं सफलं होइ सव्वं पि ॥५३७२॥  
दोसा जेण णिरुंभंति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।  
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥५३७३॥  
अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो ण जाणाति ।  
अणुणवणाइजयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५३७४॥  
णिउणो खलु सुत्तथो, न हु सक्को अपडिवोहितो नाउं ।  
ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसिं तहिं वसंताणं ॥५३७५॥  
अग्गीया खलु साहू, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।  
रमणिज्ज भिक्ख गामे, ठायंती जोइसालाए ॥५३७६॥

एत्ततो (५३५४) आढतं जाव 'अग्गीया' गाह (५३७६) ।

एयाओ सव्वाओ गाहाओ जहा उदगसालाए भणिता तहा भाणियव्वा ।

सजोइवसधीए ठियाणं इमे दोसा -

पडिमाए भामियाए, उड्ढाहो तणाणि वा तहिं होज्जा ।

साणादि वालणा लाली, भूसए खंभतणाइं पलिप्पेज्जा ॥५३७७॥

तेण जोतिणा पडिमा भामिज्जेज्जा, तत्थ उड्ढाहो एतेहिं पडिणीयताए णारायणादिपडिमा  
भामिता, तत्थ गेण्हादी दोसा ।

संथारगादिकया वा तणा पलिवेज्ज ।

साणेण वा उम्मुए चालिए पलीवणं होज्ज ।

जत्थ पदीवो तत्थ मूसगो “लाल” त्ति वट्ठी तं कट्ठति, तत्थ खंभो पलिप्पइ णिवेसणाणि वा पलिप्पन्ति ॥५३७७॥ वित्थिय० गाहा (५१५८) अट्ठाणनिग्गया०...गाहा (५१६४) ॥५३७८॥ ॥५३७९॥ कंठ्या पूर्ववत् ।

सजोत्तिवसहीए दव्वतो ठायंतस्स इमे दोसा पच्छित्तं च -

उवकरणेऽपडिलेहा, पमज्जणावास पोरिसि मणे य ।

णिक्खमणे य पवेसो, आवडणे चेव पडणे य ॥५३८०॥

चउण्हं दाराणं इमं वक्खाणं -

पेह पमज्जण वासए, अंगी ताणि अकुव्वतो जा परिहाणी ।

पोरिसिभंगे अभंगे, सजोती होति मणे तु रति अरति वा ॥५३८१॥

जति उवगरणं ण पडिलेहेइ, “मा छेदणेहि अगणिसंघट्ठो भविस्सइ” त्ति तो मासलहुं उवधिणिप्फणं वा । ते य अपडिलेहंतस्स संजमपरिहाणो भवति । अह पडिलेहेति तो छेदणेहि अगणिकायसंघट्ठो भवति, तत्थ चउलहुं । सुत्तपोरिसि ण करेति मासलहुं, अत्थपोरिसि ण करेति मासगुरुं, सुत्तं णासेइ चउलहुं, अत्थं णासेति चउगुरुं । मणेण य जइ जोइसालाए रती भवति “सजोतीए सुहं अच्छिजइ” तो चउगुरुं, अह अरती उप्पजइ, जोतीए दोसं भणइ तो चउलहुं ॥५३८१॥

१आवासए त्ति अस्य व्याख्या -

जति उस्सग्गे ण कुणति, ततिमासा सव्वअकरणे लहुगा ।

वंदण-थुती अकरणे, मासो संडासगादिसु य ॥५३८२॥

“जोति” त्ति काउं जत्तिया काउस्सग्गा ण करेति तत्तिया मासलहुं । सव्वं आवस्सयं ण करेति चउलहुगा । अह सजोइयाए आवस्सयं करेति तहावि जत्तिया उस्सग्गा करेति अगणिविराहण त्ति काउं तत्तिया चउलहुया । सव्वम्मि चउलहुगं चेव । अगणि त्ति काउं वंदणयं न देति, थुतीतो ण देति, संडासयं ण पमज्जंति उवसंता, तिसु वि पत्तेयं मासलहुं । अह करेति तह वि मासलहुं । छेदणगेहि य अगणिविराहणाए चउलहुं ॥५३८२॥

२णिक्खमणे य पच्छद्धं अस्य व्याख्या -

आवस्सिया णिसीहिय, पमज्ज आसज्ज अकरणे इमं तु ।

पणगं पणगं लहु लहु, आवडणे लहुगं जं चउण्णं ॥५३८३॥

णिक्खमंता आवासियं ण करेति तो पणगं, पविसंता णिसीहियं ण करेति तो पणगं चेव । अधवा-पविसंता णिता वा ण पमज्जंति, वसहि वा ण पमज्जंति तो मासलहुं, अह पमज्जंति तो मासलहुं, पमज्जंतस्स य छेदणेहि अगणिविराहणे चउलहुं । आसज्जं ण करेति मासलहुं । ३आवडण त्ति उम्मुआदिसु पखलणा तत्थ चउलहुं । “जं चउ-नं” त्ति अणागाढपरितावणाणिप्फणं ॥५३८३॥

अधवा - “४जं चउण्णं” त्ति -

सेहस्स विसीयणता, ओसक्कऽहिसक्क अण्णहिं नयणं ।

विज्जविउण तुयट्ठण, अहवा वि भवे पलीवणता ॥५३८४॥

मेहो कोइ सीयतो विसीएज तेण वा उज्जालिते जइ अणो तप्पइ तो चउलहुं । जत्तिया वारा हत्था परावत्तेइ तावेइ वा अण्णं वा गायं तत्तिया चउलहुगा । “ओसक्केइ” त्ति उस्सारेइ उम्मुयं “अहिसक्केइ” त्ति अगणि तेण उत्तुअत्ति, सुयंतो जग्गतो वा तं अगणि अण्णत्थ नेति, सुयंतो वा जत्ति विज्झावत्ति-एएसु सव्वेसु पत्तियं चउलहुआ, पयावमाणस्म पमादेण पलिप्पेज्जा ॥५३८४॥

तत्थिमं पच्छित्तं -

गाउय दुगुणादुगुणं, वत्तीसं जोयणाइ चरिमपदं ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८५॥

जइ गाउयं ढज्झति तो ० ० । अद्धजोयणं ढज्झति ० ० । जोयणं ० ० ० । दोहि जोयणेहि ० ० ० । चउहि जोयणेहि छेदो । अद्धहि मूलं । सोलसहि अणवट्ठो । वत्तीसाए चरिमं ॥५३८५॥

गोणे य साणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।

लहुगा अवारणम्मि, खंभतणाइं पलीवेज्जा ॥५३८६॥

अह गोणसाणे वारेति मा पलीवणं करेहि त्ति तो चउलहुगा । वारिया य हरितादी विराहेत्ता वच्चंति, अधिकरणं तत्थ वि चउलहुं, कायणिष्कणं वा । अह ण वारेति तत्थ खंभं तणादि वा पलीवेज्जा ॥५३८६॥

तत्थ वि -

गाउय दुगुणादुगुणं, वत्तीसं जोयणाइ चरिमपदं ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८७॥ पूर्ववत्

जम्हा एते दोसा तम्हा णो जोतिसालाए ठाएज्जा, कारणे ठायंति -

अद्धानिग्गतादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, वसंति तो जोतिसालाए ॥५३८८॥

पुव्वभणितो अववातो गाममज्जे जा जोतिसाला देवकुलं वा । इमो कुंभकारसालाए अववादो, जेण कुंभकारस्स पंचसालाओ भणिया,

इमाओ -

पणिया य भंडसाला, कम्मे पयणे य वग्घरणसाला ।

इंधणसाला गुरुगा, सेसासु वि होंति चउलहुगा ॥५३८९॥

एतेसि इमा विभासा -

कोलालियावणा खलु, पणिसाला भंडसाल जहिं भंडं ।

कुंभारसाल कम्मे, पयणे वासासु आवातो ॥५३९०॥

तोसलिए वग्घरणा, अग्गीकुंडं तहिं जलति णिच्चं ।

तत्थ सयंवरहेउं, चेडा चेडी य छुब्भंति ॥५३९१॥

पणियसाला जत्य भायणाणि विक्केति, वाणिय कुंभकारो वा एसा पणियसाला ।

भंडसाला जहि भायणाणि संगोवियाणि अच्छंति ।

कम्मसाला जत्य कम्मं करेति कुंभकारो ।

पयणसाला जहि पच्चंति भायणाणि ।

इंधणसाला जत्य तण-करिसमारा अच्छंति ।

वग्घारणसाला तोसलिविसए गाममज्जे साला कीरइ । तत्य अगणिकुंडं णिच्चमेव अच्छंति सयंवरणिमित्तं । तत्य य वह्वे चेडा एक्का य सयंवरा चेडी पविसिज्जति, जो से चेडीए भावति तं वरेति । एयासु सत्त्वासु इमं पच्छित्तं ह्म । ॥५३६१॥

णवरं -

इंधणसाला गुरुगा, आलित्ते तत्थ णासिउं दुक्खं ।

दुविहविराहणा भुसिरे, सेसा अगणी उ सागरियं ॥५३६२॥

पुव्वद्वं कंठं । अणं च इंधणसालाए भुसिरं, तत्य दुविवा विरावणा - आयविराहणाए चउगुरुगा, संजमविरावणाए तत्य संघट्टादिकं जं आवज्जति तं पावति । सेसासु पणियसालादिसु सागारियं पयणसालाए पुण अगणिदोसो ॥५३६२॥

एयासु अववादेण ठायंतस्स इमो कमो -

पढमं तु भंडसाला, तहिं सागारि णत्थि उभयकाले वि ।

कम्माऽऽपणि णिसि णत्थी, सेसकमेणिंधणं जाव ॥५३६३॥

अण्णाए वसहीए असति पढमं भंडसालाए ठाति, तत्य उभयकाले वि सागारियं नत्थि । उभय-कालो - दिया रातो य । ततो पच्छा कम्मसालाए । ततो पच्छा पणियसालाए ।

अह्वा - कम्मपणियसालाण कमो णत्थि, तुल्लदोसत्तणतो, । सेसेसु पयण-वग्घरण-इंधणाइसु असति कमेण ठाएज्जा ॥५३६३॥

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संथारगा विही पुव्वं ।

जागरमाणवसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५३६४॥ कंठ्या

तत्य वसंताण इमा जयणा -

पासे तणाण सोहण, ओसक्कऽहिसक्क अन्नहिं नयणं ।

संवरणा लिपणया, छुक्कार णिवारणोकड्डी ॥५३६५॥

पुरातना गाथा । अगणिकायस्स पासे तणाणि विसोहिज्जति, अक्कंतियतेगेसु वा ओसक्किज्जति, पलीवणभएण वा अक्कंतियतेगेसु वा उत्सक्किज्जति, गिलाणट्ठा सावयभएण वा अट्ठाणे वा विवित्तासीयं च तेण अइसक्कावेज्जा वि, अण्णहिं वा सोउमणो नेज्जा, बाहिं वा ठवेज्जा, कते वा कज्जे छारेण संवरिज्जति, अक्कमइ ति वुत्तं भवति मल्लगेण वा, अहाउअं पालेत्ता विज्झाहिति । खंभो छगणादिणा वा लिप्पति । पीलवणमया साणो गोणो तेणो वा तत्य छुत्ति हडि ति वा भन्नइ, तह वि अटंता वारिज्जंति, सहसा वा पलित्ते तत्यतो उक्कट्टिज्जति पेव्वं । तणाणि वा, कडगो वा उदग-धूलीहिं वा विज्झविज्जति, पालं वा कज्जति ॥५३६५॥

सजोतिवसहीए उवकरण-पडिलेहणादिदारेसु इमं जयणं करेति—

कडओ व चिलिमिली वा, असती सभए व वाहि जं अंतं ।

ठागासति सभयम्मि व, विज्झायऽगणिम्मि पेहंति ॥५३६६॥

जोतीए अंतरे कडओ कज्जति, चिलिमिली वा । असति कडगचिलिमिलीए वा जति य उवहितेणग-भयं अत्थि ताहे अंतोवही वाहि पडिलेहिज्जति, अहवा — वाहि पि तेणगभयं ठागो वा णत्थि ताहे विज्झाए अगणिम्मि पेहिति ॥५३६६॥

णिता ण पमज्जंति, मूगा वा संतु वंदणगहीणं ।

पोरिसि वाहि मणेण व, सेहाण व देंति अणुसट्ठि ॥५३६७॥

णिता पविसंता वा ण पमज्जंति, आवासगं वाइयजोग-विरहियं मूगं करेति, वारसावत्तवंदणं ण दिति, पोरिसि सुत्तयाणं वाहि करिति । अह वाहि ठागो णत्थि ताहे “मणे” ति मणसा अणुपेहिति । जत्थ सेहो अणो वा उदिते रागं गच्छति तत्थ अणुसट्ठि देंति गीयत्था ॥५३६७॥

आवास वाहि असती, ठित वंदण विगड जतण थुतिहीण ।

सुत्तत्थ वाहियंतो, चिलिमिणि काऊण व सरंति ॥५३६८॥

गतार्था । वाहि असति ठागस्म जो जहि ठिओ सो तहि चेव ठिओ पडिक्कमति वंदणहीणं । विगडणा आलोयणा, तं जयणाते करेति । थूईतो मणसा कढंति । सुत्तत्थं वहि गयत्थं जोतिअंतरेवि चिलिमिलि काउं अंतो चेव सुत्तत्थे सरंति ॥५३६८॥

इमा अणुसट्ठी सेहादीणं —

नाणुज्जोया साहू, दब्बुज्जोयम्मि मा हु सज्जित्था ।

जस्स वि न एति निदा, स पाउया णिमीलियं गिम्हे ॥५३६९॥

सज्जति ति रज्जते । जस्स वि सजोतिए णिदा ण एइ सोवि पाउओ सुवति । अह गिम्हे घम्मो सो अच्छीणि णिमिल्लेति जाव सुवति ॥५३६९॥

मूगा विसंति णिति व, उम्मुगमादी कताइ अछिवंता ।

सेहा य जोइ दूरे, जग्गंती जा धरति जोती ॥५४००॥

मूगा विसंति प्रविशंति । मूअत्ति णिमीहियं ण करेति. णितो आवस्सियं ण करेति, आवट्टणादिभया अगणिसंवट्टणभया उम्मुगमादि ण च्छिवेति, सेहे अगीता अपरिणता णिद्धम्मा य जोतीए दूरे ठविज्जति, जे य गीता वसभा ते जग्गंति जाव सो जोति धरति ॥५४००॥

अहवा —

विहिणिग्गतादि अतिनिदपेल्लितो गीओ सक्किउं सुवति ।

सावयभय उस्सक्कण, तेणभए होति भयणा उ ॥५४०१॥

अट्ठाणविवित्ता वा, परकड असती सयं तु जालंति ।

सल्लादी व तवेउं, कयकज्जे छारअक्कमणं ॥५४०२॥

विहिण्णगतो श्रान्तः अतीवनिद्रात्तितो वा ताहे ओसक्किउं सुवति, गीयत्यो सीहसावयादिभए वा ओसक्कति, तेणभए य भयणा, अक्कंतिएसु विज्झावेति, इयरेमु ण विज्झावेति ।

अद्धाने विविता मुसिता सीतेण वा अभिभूता ताहे ओ परकडो अगणी तत्थ विसीतंति, परकडस्स अस्सति सयं जालेति, मूलादिसु कज्जं काउं छारेण अक्कमंति णिच्चवेति वा ॥५४०२॥

सावयभए आणिति व, सोउमणा वा वि वाहि णोणंति ।

वाहिं पलीवणभया, छारे तस्सासति णिच्चवे ॥५४०३॥

अणगतो वि आणेति, वसहातो वाहिं गेति । सेसं कठं ॥५४०३॥ जोति त्ति गतं ।

इदार्णि दीवो -

दुविहो य होति दीवो, असच्चराती य सच्चराती य ।

ठायंते लहु लहुगा, करीस अगीतत्थसुत्तं तु ॥५४०४॥

एत्ततो आढत्तं सच्च भाणियच्चं ।

“अणित्य अगीतत्यो वा” गाहा (५३५४) “एयारिसम्मि” गाहा (५३५५) “जं जह गाहा (५३५६) “उत्सग्गसुय” गाहा (५३५७) जाव ते “तत्थ सन्निविट्ठा” गाहा (५३६४) ।

पडिमाभामण ओरुभणं, लिपणा दीवगस्स ओरुभणं ।

उच्चत्तण परियत्तण, छुक्कारण वारणोकड्डी ॥५४०५॥

जत्थ पडिमाभामणभयं होना तत्थ तथो ओगासाओ पडिमा फेडिज्जति, जति सक्कति फेडेतुं । अह ण सक्केति तो दीवतो फेडिज्जति, खंमकडणकुट्टःणि य लिपंति । अहवा - संकलदीवगो ण सक्कति उत्तारेउं ताहे वत्ती उवत्तिज्जति, णिपीलिज्जति वा, साणगोणादि वा छुक्कारिज्जति, पविसंता वा साणगोणादी वारिज्जति, वही वा ओकडिज्जति, तेणगेषु वा उत्सक्किज्जति, सप्पादिभए वा ॥५४०५॥

संकलदीवे वत्ती, उच्चत्ते पीलए य मा डज्जे ।

रूतेण व तं तेन्लं, वेत्तूण दिया विगिंचंति ॥५४०६॥ कंठा

पासे तणाण सोहण, अहिसक्कोसक्क अण्णहिं णयणं ।

आगाढकारणम्मि, ओसक्कऽहिसक्कणं कुज्जा ॥५४०७॥

दीवगस्स जे पासे तणा, दीवगं वा अहिसक्केति । “ओसक्कति” त्ति उत्सक्केति वा अण्णहिं वा गेति । जं तं उत्सक्कण ओसक्कणं करेति त आगाढे करेति, णो अणागाढे ॥५४०७॥

मज्जे व देउलादी, वाहिं व ठियाण होति अतिगमणं ।

जे तत्थ सेहदोसा, ते इह आगाढजतणाए ॥५४०८॥

अथवा - ते साधू वियाले आगता देउले ठातेज्ज, मज्जे वा गामदेउलं तद्विसतो सागारियाउलं पएवि आगता तत्थ दिवसतो ण ठायंति, वाहिं अच्छंति, विसरिएसु सागारिएसु संक्काए पविसंति,

१ गा० ५३५२ । २ भाष्ये गृहीत्वात् । ३ अत्र सर्वासु यत्र यत्रोदगसालादि तत्र जोइसालादि उपयुज्य वक्तव्यं भाष्यवचनात् ।



वाहिं वासे तेणमावयादिभयं जाणिऊण तत्थ सजोतियाए सालाए सदीवए वा जे सेहादिदोसा पुच्छुत्ता ते इह कारणे आगाढे जयणाए कायव्वा ॥५४०८॥

तत्थ जति कहिं वि पलिवेज्जा तो इमा जयणा -

अण्णाते तुसिणीया, णाते दट्ठण करण सविउलं ।

वाहिं च देउलादी, संसदा आगय खरंटो ॥५४०९॥

जति केणइ ण णाता 'एत्थ संजया ठिय' ति तो तुसिणीया णासंति । अथ गाया लोणेण तो पलितं वट्ठं महता सद्देण सविउलं वोलं करेति तां जाव जत्थ बहुजणो मिलिओ, ताहे बहुजणस्स पुरओ भणंति- "केणति पावेण पलीवणं कतं, तुव्मेहि चेव पलीवितं 'समणा दुड्ढंतु' ति, 'अग्रहं च सब्बं उवकरणं एत्थ दट्ठं', एवं ते खरंटिया ण किञ्चि उल्लवेति "अ (तु) म्हेहि पलीवितं" ति । जत्थ वि वाहिं गामस्स देउलं तत्थ वि एवं चेव, अथवा - देउलातो वाहिं णिगंतु ससद्दं कज्जति ॥५४०९॥

जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं उच्छुं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं उच्छुं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥७॥

"भुंजति जं भुक्खत्तो, लीला पुण विडसण ति णायव्वा ।

जीवजुतं सच्चित्तं, अच्चित्तं सचेयण-पटिट्ठं ।"

एतेसिं चेव चउण्हं सुत्ताणं इमो अतिदेसो -

सच्चित्तं वफलेहिं, पण्णरसे जो गमो समक्खातो ।

सो चेव णिरवसेसो, सोलसमे होति इक्खुम्मि ॥५४१०॥ कंठा

आणादिया दोसा चउलहुं पच्छित्तं ।

इमे उच्छुविभागसुत्ता -

जे भिक्खू सचित्तं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा  
उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सचित्तं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा  
उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा  
उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा  
उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥११॥

पञ्चसहितं तु खंडं, तच्चज्जिय अंतरुच्छ्रयं होइ ।

डगलं चक्कलिछेदो, मोयं पुण छल्लिपरिहीणं ॥५४११॥

पेरु उभयो पञ्चदेससहितखंडं पच्चं, उभयो पेरुरहियं अंतरुच्छ्रयं, चक्कलिछेदद्विण्णं डगलं भण्णति,  
मोयं अब्भंतरो गीरो ॥५४११॥

चोयं तु होति हीरो, सगलं पुण तस्स बाहिरा छल्ली ।

काणं घुण मुक्कं वा, इतरजुतं तप्पइडं तु ॥५४१२॥

वंसहीरसहितो चोयं भण्णति, सगलं बाहिरी छल्ली भण्णति, घुणकाणियं अंगारइयं वा वुत्तयं,  
सियालादीहिं वा खइयं, उवरि मुक्कं, इयरं ति सचित्तं तम्मि सचित्तविभागे पतिट्ठियं सचित्तपतिट्ठितं  
भण्णति ॥५४१२॥

जे भिक्खू आरण्णगाणं वण्णंधाणं अडविजत्तासंपइ<sup>१</sup>द्विताणं  
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू आरण्णगाणं वण्णंधाणं अडविजत्ताओ पडिनियत्ताणं  
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा साइज्जति ॥सू०॥१३॥

अरण्णं गच्छंतीति आरण्णगा, वणं धावंतीति वण्णंधा, आरण्यं वणार्थाय धावंतीत्यर्थः । तेसि  
जत्तापट्ठियाणं जो असणादी गेण्हति जत्तापडिनियत्ताणं असणादिसेसं खउरादि वा जो गेण्हति तस्स आगादी  
दोसा, चउलहुं च पच्छित्तं ।

तणकट्टहारगादी, आरण्ण वणंधगा उ विण्णेया ।

अडविं पविसंताणं, णियत्तमाणाण तत्तो य ॥५४१३॥

आदिसद्दातो पुप्फफलमूलकंदादीणं, तेसि वण्णंधाणं अडविं पविसंताणं जं संबलं पकत्तं, तत्तो  
णियत्ताणं जं किंचि<sup>३</sup> चुण्णादि । सेसं कंठं ॥५४१३॥

तण-कट्ट-पुप्फ-फल-मूल-कंद-पत्तादिहारगा चेव ।

पत्थयणं वच्चंता, करेति पविसंति तस्सेसं ॥५४१४॥

तणादिहारगा अडविं पविसंता अप्पणो पत्थयणं करेति, सेसं उच्चरियं सिद्धं ।

अडवी पविसंताणं, अहवा तत्तो य पडिनियत्ताणं ।

जे भिक्खू असणादी, पडिच्छते आणमादीणि ॥५४१५॥ कंठा

इमे दोसा -

पच्छाकम्ममत्तिते, णियड्डमाणे वि बंधवा तेसिं ।

अच्छिज्जा णु तदा सा, तद्द्वे अण्णद्वे य ॥५४१६॥

अडविपविसंतेणं जं संबलं कयं तं साधूण दातुं पच्छा अप्पणो अण्णं करेति । सण्णियट्ठाण वि ण घेतव्वं, तेसिं बंधवा तद्द्वे अण्णद्वे वा कतासा अच्छेज्जा । तद्द्वं चैव जं घरातो णीतं, अण्णद्वं जं अडविए कंदच्चुणादि उप्पज्जति ॥५४१६॥

पत्थयणं दाउं इमं करेति -

कम्मं कीतं पामिच्चियं च अच्छेज्ज अगहण दिगिंछा ।

कंदादीण व घातं, करेति पंचिंदियाणं च ॥५४१७॥

अप्पणो “कम्म” ति अण्णं करेति, अप्पो वा किणाति, “पामिच्चं” ति उच्छिज्जं गेण्हति, अण्णेसिं वा अच्छिंइति, अह ण गेण्हति पत्थयणं तो दिगिंचति, छुहाए जं अणागाढादि परिताविज्जति, अहवा - भुक्खितो कंदादि गेण्हति, अत्थ परित्ताणंतण्णिप्फण्णं ।

अधवा - भुक्खितो जं लावगतित्तिरादि घातिस्सति, परितावणादिणिप्फण्णं तिसु चरिमं ॥५४१७॥

अरणातो णिग्गच्छमाणो जो गेण्हति तस्स इमे दोसा -

चुण्णखउरादि दाउं, कप्पड्डग देह कोव जह गोवो ।

चड्डण अण्णे व वए, खउरादि वऽसंखडे भोयी ॥५४१८॥

चुण्णो बदरादियाण, खोरखदिरमादियाण खउरो, भत्तसेसं वा साधूण दाउं कप्पट्ठिएहि पुत्तणत्तुभत्ति-जगादिएहि अण्णेहिं य तदासाए अच्छमाणेहिं जातिज्जमाणा-“देह णे कंदे मूले चुण्णखउरभत्तसेसं वा”, ते भणंति - “दिण्णा अम्हेहिं साधूणं”, एवं भणंते ते परुण्णा रुण्णं करेताणि ताणि दट्ठूणं पदोसं गच्छेज्ज, जहा गोवो पिंड-णिज्जु तीए । एतेसु वा चड्डंतेसु अडवीसु अण्णं वा आणेति खउरादि “भोइ” ति भारिया तीए सह असंखडं भवति, अंतरायदोसा य । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा वणं पविसंताणं णित्ताण वा ण घेतव्वं ॥५४१८॥

भवे कारणं -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥५४१९॥

जयण ति पणगपरिहाणीए जाहे चउलहुं पत्तो ताहे सावसेसं गेण्हति ॥५४१९॥

जे भिक्खू वसुराइयं अवसुराइयं वयइ, वयंतं वा साहिज्जति ॥सू०॥१३॥

वसूणि रयणाणि, तेसु रातो वसुराती, अधवा - राती दीप्तिमाभ्राजते वा शोभत इत्यर्थः, तं विवरीयं जो भणति तस्स चउलहुं ।

इमा णिज्जुत्ती -

वसुमं ति व वसिमं ति व, वसति व वुसिमं व पज्जया चरणे ।

तेसु रतो वुसिराती, अवुसिम्मि रतो अवुसिराती ॥५४२०॥



जति वा णिरतीचारा, हवेज्ज तव्वज्जिया य सुज्जेज्जा ।

ण य हांति णिरतिचारा, संघयणधितीण दोव्वल्ला ॥५४२६॥

संघयकालं जति णिरतिचारा हवेज्ज, अहवा - तव्वज्जिया णाम ओहिणाणादीहि वजिते जइ चरित्तमुद्धी हवेज्ज तो जुत्तं वत्तुं - इमे विसुद्धचरणा, इमे अविमुद्धचरणा । संघयणधितीण दुव्वलत्तणतो 'य - पच्छित्तं करेति ॥५४२६॥

संघयण-धित्तदुव्वलत्तणतो चेव इमं च ओसण्णा भणंति -

को वा तहा समत्थो, जह तेहि कयं तु धीरपुरिसेहिं ।

जहसत्ती पुण कीरति, [जहा] ३पइण्णा हवइ एवं ॥५४२७॥

धीरपुरिसा तित्थकरादी जहासत्ति ए कीरति एवं भणमाणे दढा पइण्णा भवति, अनलियं च भवति जो एवं भणति । जो पुण अण्णहा वदति अण्णहा य करेति, तस्स सच्चपइण्णा ण भवति ॥५४२७॥

आयरिओ भणति -

सव्वेसि एगचरणं, सरणं मोयावगं दुहसयाणं ।

मा रागदोसवसगा, अप्पणो सरणं पलीवेह ॥५४२८॥

सव्वेसि भवसिद्धियाणं चरणं च सरीरमाणसाणं दुक्खाण विमोक्खणकरं, तं तुव्वे सयं सीयमाणा अप्पणो चरित्तेण रागाणुगता उज्जयचरणाणं चरणदोसमावण्णा मा भणह - "चरणं णत्थि, मा जत्थेव वसह तं चेव सरणं पलीवेह णासहेत्यर्थः" ॥५४२८॥

किं च -

संतगुणणासणा खलु, परपरिवाओ य होति अलियं च ।

धम्मो य अवहुमाणो, साहुपदोसे य संसारो ॥५४२९॥

चरणं णत्थि त्ति एवं भणतेहि ३साधूहि संतगुणणासो कतो भवति, पवयणस्स परिभवो कतो भवति, अलियवयणं च भवति, चरणधम्मे पलोविज्जंते चरणधम्मे य अवहुमाणो कतो भवति, साधुण य पदोसो कतो भवति, साधुपदोसे य णियमा संसारो बुद्धितो भवति ॥५४२९॥

किं च -

खय उवसम मीसं पि य, जिणकाले वि तिविहं भवे चरणं ।

मिस्सातो च्चिय पावति, खयउवसमं च णणत्तो ॥५४३०॥

तित्थकरकाले वि तिविहं चारित्तं - खतियं उवसमियं खओवसमियं च । तम्मि वि तित्थकरकाले मिस्सातो चेव चरित्तातो खतियं उवसमियं वा चरित्तं पावति, नान्यस्मात् । बहुतरा य चरित्तविसेसा खओवसमभावे भवति ॥५४३०॥

किं च तीर्थकाले वि -

अइयारो वि हु चरणे, ठितस्स मिस्से ण दोसु इतरेसु ।

वत्थातुरदिट्ठंता, पच्छित्तेणं स तु विसुज्झो ॥५४३१॥

“इयरेसु” ति खतिए उवसमिए य । जहा वत्थं खारादीहिं सुज्झति, आतुरस्स वा रोगो विरेयणओसहपओगेहिं सोहिज्जति, तथा साधुस्स मिस्सचरणादिअइयारो पच्छित्तेणं सुज्झति ॥५४३१॥

जं च भणियं – “अतिसयरहिंएहिं सुद्धासुद्धचरणं ण णज्जति भावो” ।

तत्थ भण्णति –

दुविहं चेव पमाणं, पच्चक्खं चेव तह परोक्खं च ।

ओधाति तिहा पढमं, अणुमाणोवम्मसुत्तितरं ॥५४३२॥

ओहि मणपज्जव केवलं च एयं तिविधं पच्चक्खं । धूमादग्निज्ञानमनुमानं । यथा गोस्तथा गवय ओपम्यं । सुत्तमिति आगमः । इयरंति एयं तिविधं परोक्खं ॥५४३२॥

सुद्धमसुद्धं चरणं, जहा उ जाणंति ओहिणाणादी ।

आगारेहि मणं पि च, जाणंति तहेतरा भावं ॥५४३३॥

पुव्वद्धं कंठं । जहा परस्स भमुहणेत्ति (भमुहाणण) वाहिरागारेहिं अंतरगतो मणो णज्जति तहा “इयर” ति परोक्खणाणी आलोयणाविहाणं सोउं पुव्वावरवाहियाहिं गिराहिं आचरणेहिं य जाणंति चरित्तं सुद्धासुद्धं भावं च सुद्धेतरं ॥५४३३॥

चोदगाह – “जइ आगारेण भावो णज्जति तो उदातिमारदिणं किं ण णातो ?”

आचार्याह –

कामं जिणपच्चक्खो, गूढाचाराण दुम्मणो भावो ।

तहउवि य परोक्खसुद्धी, जुत्तस्स व पण्णवीसाए ॥५४३४॥

काममिति अनुमितार्थे । जइ वि जे उदायिमारगादि गूढायाया तेसिं छउमत्थेणं दुक्खं उवलब्भति भावो, सो जिणाणं पुण पच्चक्खो, तहावि परोक्खणाणी आगमाणुसारेण चरित्तसुद्धिं करंति चेव ।

कहं ?, उच्यते – “जुत्तस्स व” ति जहा सुतोवउत्तो “मीसजायज्झोयरो एगो” ति पण्णरस उगमदोसा, दस एसणादोसा, एते पण्णवीसं जहासुयाणुसारेण सोहंतो चरणं सोहेति, तहा सुत्ताणुसारेण पच्छित्तं देंतो करंती य चरित्तं सोधेति ॥५४३४॥

अणुज्जतचरणो इमेहिं कज्जेहिं होज्ज –

होज्ज हु वसणप्पत्तो, सरीरदोव्वल्लताए असमत्थो ।

चरण-करणे असुद्धे, सुद्धं मगं परूवेज्जा ॥५४३५॥

वसणं आवती मज्जगीतादितं वा, १तम्मि ण उज्जमति, अहवा – सरीरदुव्वलत्तणतो असमत्थो सज्झायपडिलेहणादिकिरियं काउं अकप्पियादिपडिलेहणं च । अघवा – सरीरदोव्वला असमत्था अदढधम्मा एवमादिकारणेहिं चरणकरणं से अविसुद्धं, तहावि अप्पाणं गरिहंतो सुद्धं साहुमगं परूवेतो आराधणो भवति ॥५४३५॥

इमो चेव अत्थो भण्णति -

ओसण्णो वि विहारे, कम्मं सिद्धिलेति सुलभवोही य ।

चरणकरणं विसुद्धं, उववूहेतो परूवेतो ॥५४३६॥

कंठ्या । जो पुण ओसण्णो होउं ओसण्णमग्गं उववूहइ, सुद्धं चरणकरणमग्गं गूहति इमेहिं कारणेहि ।

इमं च से दुल्लभवोहिअत्तं फलं -

परियायपूयहेतुं, ओसण्णाणं च आणुवत्तीए ।

चरणकरणं णिगूहति, तं दुल्लभवोहियं जाणे ॥५४३७॥ कंठ्या ।

अहवा -

गुणसयसहस्सकलियं, गुणुत्तरतरं च अभिलसंताणं ।

चरणकरणाभिलासी, गुणुत्तरतरं तु सो लहति ॥५४३८॥

गुणाणं सत्तं गुणसत्तं, गुणसयाणं सहस्सा गुणसयसहस्सा, छंदोभंगभया सकारस्स दुस्सता कता, ते य अट्टारससीलंगसहस्सा, तेहिं कलियं जुत्तं संखियं वा । किं तं ?, चारित्तं जो तं पसंसति । किं च गुणश्चासी उत्तरं च गुणोत्तरं, अथवा - अन्येऽपि गुणाः सन्ति क्षमादयस्तेषां उत्तरं तं च गुणोत्तरं सरागचारित्तं, गुणुत्तरतरं पुण अहक्खायं चारित्तं भण्णति, तं च जे अभिलसंति, ते उज्जयचरणा इत्यर्थः । ते य उववूहते जो ओसण्णो अप्पणा य उज्जयचरणो होहति चरणकरणाभिलापी भण्णति स एवंवादी गुणुत्तरतरं लभति अहक्खाय-चारित्रमित्यर्थः । अहवा - गुणुत्तरं भवत्थकेवलिसुहं, गुणुत्तरतरं पुण मोक्खसुहं भण्णति, तं लभति ॥५४३८॥

जो पुणोसण्णो -

जिणवयणभासितेणं, गुणुत्तरतरं तु सो वियाणित्ता ।

चरणकरणाभिधाती, गुणुत्तरतरं तु सो हणति ॥५४३९॥

गुणुत्तरतरं चारित्रं साधु वा अप्पणा य चरणकरणोवधाते वट्टति । अहवा - चरणकरणस्स जत्ताण वा निदापरोवघायं करेइ, स एवंवादी गुणुत्तरं वा चारित्रं मोक्खसुहं वा हणति ण लवमइ त्ति, जेण सो दीहसंसारित्तणं णिव्वत्तेति ॥५४३९॥

जो ओसण्णं ओसण्णमग्गं वा उववूहति -

सो होती पडिणीतो, पंच्हं अप्पणो अहित्तिओ य ।

सुहसीलवियत्ताणं, नाणे चरणे य मोक्खे य ॥५४४०॥

पंच पासत्यादि सुहसीला विहारलिगा ओघाविउकामा अवियत्ता अगीयत्या णाणचरणमोक्खरस य एतेसि सध्वेसि पडिणीतो भवति ॥५४४०॥

इमेहिं पुण कारणेहिं ओसण्णं ओसण्णमग्गं वा उववूहेज्जा -

वित्तिपदमणप्पज्जे, वएज्ज अविकोविए वि अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, भयसा तव्वाति गच्छट्ठा ॥५४४१॥



राया सिय ओसण्णाणुवत्तियो भया भणेज्जा । तच्चादि त्ति कश्चिद्वादी ब्रूयात् - “तपस्विनं अतपस्विनं ब्रुवतः पापं भवतीति नः प्रतिज्ञा”, तत्प्रतिघातकरणे वुसिरातियं अबुसिरातियं भणेज्ज, दुब्भक्खादिसु वा ओसण्णभाविएसु खेतिसु अच्छंतो ओसण्णाणुवत्तियो गच्छपरिपालणद्वा भणेज्ज ॥५४४१॥

जे भिक्खू अबुसिराइयं वुसिराइयं वयइ, वयंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१४॥

एमेव वितियमुत्ते, अबुसीरातिं वएज्ज वुसिरातिं ।

कह पुण वएज्ज सोऊण अबुसिरातिं तु वुसिरातिं ॥५४४२॥कंठा

एगचरिं मन्नंता, सयं च तेसु य पदेसु वट्ठंता ।

सगदोसद्धायणद्वा, केइ पसंसंति णिद्धस्मे ॥५४४३॥

कोइ पासत्यादीणं एगचारियं भणति - “एस सुंदरो, एयस्स एगाणिणो ण केणइ सह रागदोसा उप्पज्जति”, सो वि अप्पणा गच्छपंजरभगो तम्मि चेव ठाणे वट्ठति, सो य अप्पणिज्जदोसे द्याएउकामो तं पासत्यादि एगचारिं णिद्धम्मं पसंसति ॥५४४३॥

इमं च भणति -

दुक्करयं खु जहुत्तं, जहुत्तवादुड्डियावि सीदंति ।

एस नितिओ हु भग्गो, जहसत्तीए चरणमुद्धी ॥५४४४॥कंठा

एवं भणति इमे दोसा -

अव्वमक्खाणं णिस्संकया य अस्संजमंमि य थिरत्तं ।

अप्पा सो अवि चत्तो, अवण्णवातो य तित्थस्स ॥५४४५॥

असंतभावुवमावणं अव्वमक्खाणं, अबुसिरातियं वुसिरातियं भणति, सो य सीतंतो पसंसिज्जमाणे णिस्संको भवति, मंदधम्माण वि असंजमे थिरीकरणं करेति, अण्णं च उम्मगपसंसणाते अप्पणो य उम्मगपट्ठितो चत्तो, तित्थस्स य अन्यपदार्थेन अवर्णवादः कृतो भवति ॥५४४५॥

किं च -

जो जत्थ होइ भग्गो, ओवासं सो परस्स अविदंतो ।

गंतुं तत्थउचएंतो, इमं पहाणं ति घोसेति ॥५४४६॥

अद्धाणगविट्ठेण ओसण्णो उवसंधारेयव्वो, सेसं कंठं ॥५४४६॥

किं च -

पुव्वगयकालियसुए, संतासंतंहेहिं केइ खोभेति ।

ओसण्णचरणकरणा, इमं पहाणं ति घोसेति ॥५४४७॥

पुव्वगयकालियसुयनिबंघपच्चयत्तो सीदंति,

तत्थ कालियसुते इमेरिसो आलावगो -

“बहुमोहो वि य णं पुव्वं विहरेत्ता पच्छा संवुडे कालं करेज्जा, किं आराहए विराहए ? गोयमा ! आराहए, णो विराहए” । (.....)



एवं पुष्पगए वि जे के वि आंलावगा ते उच्चरिता । परं खोभंति, अप्पणा खोभंति - सीदंतीत्यर्थः ।  
ते य ओसण्णचरणकरणा “इमं” ति अप्पणो चरियं पहाणं घोसेंति ॥५४४७॥

इमेसि पुरतो -

अवहुस्सुए अगीयत्थे, तरुणे मंदधम्मिए ।

परियारपूयहेउ, सम्मोहेउं निरुंभंति ॥५४४८॥

जेणं आयापगप्पो ण भातितो एस अवहुस्सुतो, जेण आवस्सगादियाणं अत्थो ण सुतो सो  
अगीयत्थो, सोलसवरिसाण आढवेत्तु जाव न चत्तालीसवरिसो एस तरुणो, असंविग्गो मंदधम्मो, एते पुरिते  
विपरिणामेति, अप्पणो परिवारहेउ, एतेहि य परिवारितो लोयस्स पूयणिज्जो होहं, कालियदिट्ठिवाए  
भणितेहि, अहवा - अभणिएहि वा सम्मोहेउं अप्पणो पासे निरुंभंति - धरतीत्यर्थः । अहवा - जो एवं  
पण्णवेति सो चेव अवहुस्सुओ अगीयत्थो वा तरुणो मंदधम्मो वा । सेसं कंठं ॥५४४८॥

जत्तो चुतो विहारा, तं चेव पसंसए सुलभवोही ।

ओसण्णविहारं पुण, पसंसए दीहसंसारी ॥५४४९॥

जत्तो चुतो विहारा, संविग्गविहारातो चुओ तं पसंसति जो सो सुलभवोधी । जो पुण ओसण्ण-  
विहारं पसंसति सो दीहसंसारी भवति ॥५४४९॥

वितियपदमणप्पज्जे, वएज्ज अविकोविए व अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, भयसा तच्चादिगच्छट्ठा ॥५४५०॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू वुसिरातियगणातो अवुसिराइयं गणं संकमइ, संकमंतं वा साइज्जइ ॥५४५१॥

वुसिरातियागणातो, जे भिक्खू संकमे अवुसिरातिं ।

वुसिरातिया वुसिं वा, सो पावति आणमादीणि ॥५४५२॥

वुसिरातियातो वुसिराइयं चउभंगो कायव्वो । चउत्यभंगो अवत्थु । ततियभंगे अणुण्णा ।  
पढम-वितिएसु संकमो पडिसेहो । पढमे संकमंतस्स मासलहुं । वितिए चउलहुं ।

चोदगाह - “जुत्तं वितिए पडिसेहो, पढमभंगे किं पडिसेहो” ?

आचार्याह - तत्थ णिक्कारणे पडिसेहो, कारणे पुणो पढमभंगे उवसंपदं करेति ॥५४५१॥

सा य उवसंपया कालं पडुच्च तिविहा इमा -

छम्मासे उवसंपद, जहण्ण वारससमा उ मज्झिमिया ।

आवकहा उक्कोसे, पडिच्छसीसे तु जाजीवं ॥५४५२॥

उवसंपदा तिविहा - जहण्णा मज्झिमा उक्कोसा । जहण्णा छम्मासे, मज्झिमा वारसवरिसे,  
उक्कोसा जावज्जीवं । एवं पडिच्छगस्स सीसस्स एगविहो चेव जावज्जीवं आयरिओ ण मोत्तव्वो ॥५४५२॥

छम्मासे अपूरंतो, गुरुगा वारससमा चउलहुगा ।

तेण परं मासियं तू, भणित्तं पुण आरतो कज्जे ॥५४५३॥

जेण पडिच्छगेणं छम्मासिया उवसंपया कया सो जति छम्मासे अपूरिता जाति तस्स चउगुरुगा ।

जेण वारसवरिसा कया ते अपूरित्ता जाइ चउलहुं । जेण जावज्जीवं उवसंपदा कता सो जाइ तस्स मासलहुं । छण्हं मासाणं परेण णिवकारणे गच्छंतस्स मासलहुं ।

जेण वारससमा उवसंपदा कया तस्स वि छम्मासे अपूरंतस्स चउगुणा चेव । वारससमातो परेण णिवकारणे मासलहुं ।

जेण जावज्जीवोवसंपदा कया तस्स छम्मासे अपूरंतस्स चउगुणा चेव, तस्सेव वारससमाओ चउलहुणा ॥५४५३॥ एस सोही गच्छतो णितस्स भणितो ।

गच्छे पुण वसंतस्स इमे गुणा -

भीतावासो रतीधम्म<sup>१</sup>मे, अणायतणवज्जणं ।

णिग्गहो य कसायाणं, एयं धीराण सासनं ॥५४५४॥

“भीतावासो” त्ति अस्य व्याख्या -

आयरियादीण भया, पच्छित्तभया ण सेवति अकज्जं ।

वेयावच्चज्जम्भयणेसु सज्जते तदुवयोगेणं ॥५४५५॥ कंठा

पुव्वद्धं कंठं । रतीधम्म<sup>२</sup>मे अस्य व्याख्या -

“वेयावच्च” पच्छद्धं । आयरियादीण वेयावच्चं करेति । अज्जम्भयणं ति सज्जम्भयं करेति । तदुवयोगो सुत्तत्थोवओगो, तेण सुत्तत्थोवओगेण वेयावच्चज्जम्भयणेसु रज्जति - रति करेइ त्ति वुत्तं भवइ ।

अहवा - तदुवओगो अप्पणो आयरियादीहिं य भणमाणो वेयावच्चज्जम्भयणादिसु रज्जति ॥५४५५॥

“अणायतणवज्जण” त्ति अस्य व्याख्या -

एगो इत्थीगम्मो, तेणादिभया य अल्लियपगारे ।

कोहादी व उदिण्णे, परिणिव्वावेति से अण्णे ॥५४५६॥ कंठा

“कसायणिग्गहो” अस्य व्याख्या - कोहादी पच्छद्धं । गच्छवासे वसंतस्स अण्णे य आयरियादी परिणिव्वावेति सकसाए । गच्छवासे वसंतेण एयं वीरसासणे धीर-सासणे वा जं भणियं तं आराहियं भवति ॥५४५६॥

इमे य अण्णे गच्छवासे वसंतस्स गुणा -

णाणस्स होइ भागी, थिरयरतो दंसणे चरित्ते य ।

धण्णा आवकहाए, गुरुकुलवासं न मुंचति ॥५४५७॥

जम्हा गच्छवासे वसंतस्स एवमादी गुणा तम्हा णिवकारणे संविग्गेण संविग्गेसु वि संकमो ण कायव्वो ॥५४५७॥

कारणे पुण करेज्ज ते य इमे कारणा -

णाणद्ध दंसणद्धा, चरितद्धा एवमाइसंकमणं ।

संभोगद्धा व पुणो, आयरियद्धा व णातव्वं ॥५४५८॥

५ गा० ५४५४ । २ गा० ५४५४ । ३ गा० ५४५४ । ४ अल्लियागारे, इत्यपि पाठः । ५ गा० ५४५४ ।

णाणट्टु त्ति अस्य व्याख्या -

सुत्तस्स व अत्थस्स व, उभयस्स व कारणा तु संकमणं ।

वीसज्जियस्स गमणं, भीओ य णियत्तई कोई ॥५४५६॥

पुव्वद्धं कंठं । तेण अप्पणो आयरियाणं जं सुत्तं अत्थि तं गहियं, अत्थि य से सत्ती अण्णं पि धेत्तुं, ताहे जत्थ अत्थि अधिगसुत्तं संविग्गेसु तत्थ संकमइ विसज्जितो आयरिएणं, अविसज्जिएण ण गंतव्वं । अहं गच्छति तो चउलहुगा । विसज्जितो य इमे पदे आयरेज्जा-जइ तेसि आयरियाणं कक्खड्ढचरियं सोउं कोत्ति भीओ णियत्तेज्ज तो पणगं ॥५४५६॥

चित्तंतो वइगादी, गामे वा संखडी अपडिसेहो ।

सीसपडिच्छग परिसा, पिसुगादायरियपेसविओ ॥५४६०॥

पणगं च भिण्णमासो, मासो लहुगो य सेसए इमं तु ।

संखडि सेह गुरुगा, पेसविओमि त्ति मासगुरु ॥५४६१॥

पडिसेहगस्स लहुगा, परिसिल्ले छ तु चरिमओ सुद्धो ।

तेसि पि होति लहुगा, जं वाऽऽभव्वं तु ण लभंति ॥५४६२॥

एतेसि तिण्ह वि गाहाणं अत्थो सह पच्छित्तेण भण्णति -

चित्तेति-किं वच्चामि ण वच्चामि तत्थ अण्णत्थ वा चित्तेति भिण्णमासो (पणगं) । वच्चंतो वा वइयादिसु 'पडिवज्जति, दधिलीरट्ठा उव्वत्तति वा मासलहुं । आदिसद्दातो सण्णीसु वा दाणसद्धेसु भद्देसु वा दीहं वा गोयरं करेज्ज, अप्पत्तं वा देसकालं पडिच्छेज्ज, खट्ठादाणियगामे वा पडिवज्जति सव्वेसेतेसु पत्तेयं मासलहुं ।

संखडीए वा पडिवज्जति चउगुरुगा, पडिसेवगस्स वा पासे अंतरा चिट्ठेज्ज तत्थ य तेसि पविसंताणं चउलहुगा, सेहेण सह चउगुरुगा, गहिओवकरणउवधिणिप्फणं ।

पडिसेहगस्स पडिसेहत्तणं करंतस्स चउलहुं, सेहट्ठा करंतस्स चउगुरुगा ।

“सीसपडिच्छए” त्ति सो पडिसेहगो सीसपडिच्छए वावारेति तम्मि आगते णिउणं ३सुत्तं पुच्छेज्ज, परिसिल्लस्स वा पासे अंतरा पविसेज्जा तेसि तत्थ चउलहुगा, सह सेहेण चउगुरुगा, उवकरणे उवहिणिप्फणं । परिसिल्लत्तणं करंतस्स अप्पणो छल्लहुगा । पिसुया मंकुणाण वा भया णियत्तति, अण्णतो वा गच्छति मासलहुं ।

अहवा - तत्थ संपत्तो भणाइ “आयरिएणाहं तुज्झ समीवं अमुगसुत्तत्थणिमित्तं पेसविओ”, एवं भणंतस्स चउगुरुं । “चरिमो” त्ति जो भणति - “अहं आयरियविसज्जितो तुज्झ समीवमागतो” सो सुद्धो । “तेसि पि होति लहुगो” त्ति अण्णं अभिधारेउं अण्णं वदंतस्स चउलहुं, पडिच्छंतस्स वि चउलहुं, जं च सचित्ताचित्तं किं चि तं तेण लभंति, जत्थ पट्ठवित्तो जो ३पुव्वधारिउं तस्स तं आभव्वं ॥५४६२॥

एयं चेव अत्थं सिद्धसेणखमासमणो वक्खणाणेति ।

“१भीओ णियत्तइ” त्ति अस्य व्याख्या -

संसाहगस्स सोतुं, पडिपंथियमाइयस्स वा भीओ !

आचरणा तत्थ खरा, सयं च नाउं पडिनियत्तो ॥५४६३॥

संसाहग अणुवच्चगो । सेसं कंठ्यं ।

“२चित्तैतो” त्ति अस्य व्याख्या -

पुव्वं चित्तेयव्वं, णिग्गतो चित्तेति किं णु हु करेमि ।

वच्चामि णियत्तामि व, तहिं व अण्णत्थ वा गच्छे ॥५४६४॥

जाव ण णिग्गच्छंति आयरियं वा ण पुच्छंति ताव सुचित्तियं कायव्वं, सेसं कंठं ॥५४६४॥

“३वड्यगामसंखडिमादिसु” इमा व्याख्या -

उव्वत्तणमप्पत्ते, लहुगो खद्धे भुत्तम्मि होंति चउलहुगा ।

निसद्ध सुवण्ण लहुगो, संखडि गुरुगा य जं चऽण्णं ॥५४६५॥

पंथातो वड्यमादिओ उव्वत्तति । अप्पत्तं वा वेलं पडिक्खति । “जं चऽण्णं” त्ति संखडोए हत्थेण हत्थे संघट्टियपुव्वे, पाएणं वा पाए अक्कंतपुव्वे, सीसेण वा सीसे आउडियपुव्वे संजमविराहणा वा भायणभंगो वा भवति । सेसं गतार्थं कंठ्यं ॥५४६५॥

इदार्णि “४पडिसेह सीसपडिच्छग” अस्य व्याख्या -

अमुगत्यऽमुओ वच्चति, मेहावी तस्स कड्डणट्ठाए ।

अण्णगामे पंथे, उवस्सए वा वि वावारे ॥५४६६॥

अभिलावसुद्धपुच्छा, रोलेणं मा हु ते विणासेज्जा ।

इति कड्डंते लहुगा, जति सेहट्ठाए तो गुरुगा ॥५४६७॥

अक्खर-वंजणसुद्धं, मं पुच्छह तम्मि आगए संते ।

घोसेहि य परिसुद्धं, पुच्छह णिउणे य सुत्तत्थे ॥५४६८॥

को ति आयरिओ विउदुत्तत्थो फुडवियडवंजणाभिलावी अपडिसेवितो वि पडिसेहगो चेव भावतो लब्धति, तेण य सुयं जहा अमुगत्य अमुगो साहू मेहावी, अमुगसुत्तणिमित्तं गच्छति, तेणवि चित्तियं मा मं अतिक्कमेउं, तस्स कड्डणट्ठाए “उड्डावणकं” करेति, उवरिएण अण्णगामेण गच्छंत्तस्स पंथे वा अप्पणो वा उवस्सए सीसे पडिच्छए य वावारेति, जणिमित्तं सी वच्चति तम्मि आगते - “तं तुव्वे परियट्ठेह, अभिलाव-सुद्धं अत्थं च गुणेज्जह, अत्थं च से पुच्छिज्जह, ते एवं णिक्काएति, पुणो पुणो मा ते रोलेणं विणासेज्जह त्ति, अण्णं पि सुयं अक्खरवंजणघोससुद्धं पढेज्जह, तम्मि आगते अण्णं पि णिउणे सुत्तत्थे पुच्छेज्जह” एवं कड्डिए चउलहुं, सेहट्ठा कड्डिए चउपुव्वं ॥५४६८॥ पविसंतस्स वि एवं चेव ।

इदार्णि 'परिसिल्लस्स व्याख्या -

पाउतमपाउता घट्ट मट्ट लोय खुर विविहवेसधरा ।

परिसिल्लस्स तु परिसा, थलिए व ण किंचि वारेति ॥५४६६॥

तत्थ पवेसे लहुगा, सच्चित्ते चउगुरुं च नायव्वं ।

उवहिणिप्फण्णं पि य, अचित्त देंते य गिण्हंते ॥५४७०॥

परिसिल्लो सव्वस्स संविग्गासंविग्गस्स परिसणिमित्तं संगहं करेति । घट्टा फेणादिणा जंधाओ, तेल्लेण केसे सरीरं वा मट्ठेति, थलि त्ति देवद्रोणी । सेसं कंठं ॥५४७०॥

इदार्णि "अपिसुत गुरुहि पेसितो मि" त्ति एतेसि व्याख्या -

ढिक्कुण-पिसुगादि तहिं, सोउं नातुं व सन्नियत्तंते ।

अमुग सुतत्थनिमित्ते, तुज्झंति गुरुहि पेसवितो ॥५४७१॥ कंठया

चोदगाह - "गुरुहि पेसिओ मि त्ति भणंतस्स को दोसो" ?

आचार्याह -

आणाए जिणवराणं, न हु वलियतरा उ आयरियआणा ।

जिणआणाए परिभवो, एवं गव्वो अविणओ य ॥५४७२॥

जिणिदेहि चेव भणियं णिद्वोसो विधिमागतो पडिच्छियव्वो त्ति, णो आयरियाणुवत्तीए पडिच्छियव्वो, जिणाणा य पराभवित्ता भवति, पेसंतस्स उवसंगज्जंतस्स पडिच्छित्तस्स वि तिण्हि वि गव्वो भवति, तित्त्यकराणं सुयस्स य अविणओ कओ भवति ॥५४७२॥

जो जं अभिधारेउं पट्ठितो तत्थ जो अच्चासंगेण गतो सो सुद्धो -

अण्णं अभिधारेतुं, पडिसेह परिसिल्ल अण्णं वा ।

पविसेते कुलातिगुरु, सच्चित्तादिं च से हातुं ॥५४७३॥

जो पुण अण्णं अभिधारेउं अपडिसेहगस्स पडिसेहगस्स परिसिल्लस्स अण्णस्स वा पासे पविसति पच्छा कुलगणसंघथेरेह णातो तो जं देण सच्चित्ताचित्तादि उवणीयं तं से हरंति ॥५४७३॥

ते दोवुवालभित्ता, अभिधारिज्जंति देंति तं थेरा ।

घट्टण वियारणं ति य, पुच्छा विप्फालणेगट्टा ॥५४७४॥

कीस तुमं अण्णं अभिधारेत्ता एत्थ ठितो जेण य पडिच्छित्तो ? सो वि भणति - "किं ते एस पडिच्छित्तो ?" तं सच्चित्तादिगं थेरा जो पुव्वअभिधारितो तस्स विसज्जंति । सेसं कंठं ॥५४७४॥

घट्टेउं सच्चित्तं, एसा आरोवणा य अविहीए ।

वितियपदमसंविग्गे, जयणाए कयम्मि तो सुद्धो ॥५४७५॥

“घट्टण” त्ति पुच्छा, जइ निक्कारणे तत्थ ठितो तो सच्चित्तादीं हरेज्ज, पच्छित्तं च से अविधिपदे दिज्जति, णिक्कारणे त्ति वुत्तं भवति ।

पडिसेहगस्स अववाओ भण्णति - “वित्तिपद” पच्छदं । जं सो अभिघारेति सो असंविग्गे ताहे जयणाए पडिसेहं करंति ।

का जयणा ?, पढमं सव्वेहि भणावेति, मा तत्थ वच्चाहि, पच्छा अप्पणो वि भणावेज्ज, पुव्वुत्तेण वा सीसपडिच्छगवावारणपयोगेण धरेज्जा, ण दोसो । एवं करंतो कारणे सुज्झति, णवरं - जं तत्थ सच्चित्ताचित्तं सव्वं पुव्वाभिघारियस्स पयट्ठेयव्वं ॥५४७५॥

इदमेवत्थं भण्णति -

अभिघारंते पासत्थमादिणो तं च जइ सुतं अत्थि ।

जे अ पडिसेहदोसा, ते कुव्वंता हि णिदोसो ॥५४७६॥

जं सो सुतं अभिलसति, जइ सुतं अत्थि तो पडिसेहत्तणं करंतस्स वि जे दोसा भणिया ते ण भवन्ति ॥५४७६॥

जं पुण सच्चित्तादी, तं तेसिं देंति ण वि सयं गेण्हे ।

वित्तिं वित्तूण पेसे, जावत्तिं वा असंथरणे ॥५४७७॥

पुव्वदं कंठं । जं वत्थादिगं अचित्तं तं कारणे अप्पणा विसूरंतो असिवादिकारणेहि अण्णं अलभंतो ण पेसेत्ति जावत्तिं उवउज्जति, जेण असंथरणं वा तावत्तिं गेण्हति, सेसं विसज्जेति, अहवा - सव्वं पि ण विसज्जेति ॥५४७७॥

कारणे इमो सच्चित्तस्स अववातो -

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वंगए कालियाणुओगे य ।

सयमेव दिसावंधं, करेज्ज तेसिं ण पेसेज्जा ॥५४७८॥

जो तेण सेहो आणितो सो परममेहावी, अप्पणो गच्छे णत्थि को वि आयरियपदजोगो, जं च से पुव्वगतं कालियसुयं च तस्स गाहगो णत्थि, ताहे तेसिं वोच्छेदं जाणिऊणं तं सेहं अप्पणो सीसं णिवंधइ, ण पुव्वाभिघारियस्स पट्ठेइ ॥५४७८॥

इदार्णि परिसिल्ले अववादो भण्णति -

असहाओ परिसिल्लत्तणं पि कुज्जा उ मंदधम्मेषु ।

पप्प व काल-ऽद्वाणे, सच्चित्तादी वि गिण्हेज्जा ॥५४७९॥

असहायो आयरियो परिसिल्लत्तणं पि करेइ, तं संविग्गं असंविग्गं वा सहायं गेण्हति ।

सिस्सा वा मंदधम्मा गुरुस्स वावारं ण वहंति, ताहे अण्णं सहायं गेण्हति ।

सद्धा वा मंदधम्मा गुरुणो जोगं ण देंति ताहे लद्धिसंपण्णं परिगेण्हति ।

दुग्धिवत्तादिकाले वा अद्धाणं वा पविसंतो - एवमादिकारणेहि परिसिल्लत्तणं करंतो सुद्धो ।  
सचित्ताचित्तं पुण पेसेति ण पेसेति वा, पुव्वभणियकारणेहि ॥५४७६॥

जो सो अभिधारंतो वच्चति तस्स अववादो भणति -

असिवादिकारणेहि, कालगतं वा वि सो व्व इतरो तु ।

पडिसेहे परिसिल्ले, अण्णं व विसिज्ज वितियपदे ॥५४८०॥

जत्थ गंतुकामो तत्थ असिवं अंतरा वा, अहवा - जो अभिधारितो आयरियो सो कालगतो,  
“इयरो” त्ति जो सो पहावितो साधू पडिसेहगपरिसिल्ले अण्णस्स वा आयरियस्स पासं पविसेज्ज, वितियपदेण  
ण दोसो ॥५४८०॥ एयं अविसेसित्तं भणियं ।

इमं ‘आभव्वाणाभव्वं विसेसियं भणति -

वच्चंतो वि य दुविहो, वत्तमवत्तस्स मग्गणा होति ।

वत्तम्मि खेत्तवज्जं, अव्वत्तेणं पि तं जाव ॥५४८१॥

पुव्वद्धस्स इमा विभासा -

सुअ अव्वत्तो अगीओ, वएण जो सोलसण्ह आरेणं ।

तव्विवरीतो वत्तो, वत्तमवत्ते च चउभंगो ॥५४८२॥

सुएण वि अव्वत्तो वएण वि अव्वत्तो चउभंगो कायव्वो । सुएण अगीयो अव्वत्तो । वएण जो सोलसण्हं  
वासाणं आरतो । तव्विवरीतो वत्तो जाणियव्वो । सो पुण वच्चंतो ससहाओ वच्चति असहाओ वा ॥५४८२॥

वत्तस्स वि दायव्वो, पहुप्पमाणे सहाओ किमु इतरे ।

खेत्तविवज्जं अव्वंतिएसु जं लव्वमति पुरिल्ले ॥५४८३॥

आयरिएण पहुप्पमाणेसु साहुसु वत्तस्स वि सहाओ दायव्वो अव्वस्सं, किमंग पुण अवत्ते ।

“वत्तम्मि खेत्तवज्जम्मि” अस्य व्याख्या - “खेत्तविवज्जं” पच्छद्धं । वत्तो अव्वत्तो वा  
अव्वंतिया से सहाया तेणेव सह गंतुकामो परखेत्तं मोत्तुं जं सो य लव्वमति तं सव्वं पुरिमस्स अभिधारंतस्स  
आभवति, परखेत्ते जं पुण लद्धं तं खेत्तियस्स आभवति ॥५४८३॥

जति नेतु एतुमाणा, जं ते मग्गिल्ल वत्तपुरिमस्स ।

नियमऽव्वत्तसहाओ, नेउ णियत्तति जं सो य ॥५४८४॥

अह ते सहाया तं नेउं पराणेत्ता पडियागंतुकामा जं ते सहाया लव्वमति तं मग्गिल्लस्स अप्पणिज  
आयरियस्स आभवति । सो पुण वच्चंतो अप्पणा जति वत्तो तो जं सो लव्वमति तं पुरिमस्स अभिधारिज्जंतस्स  
देति । “अव्वत्तेणं पि जाव” त्ति अस्य व्याख्या - अव्वत्तो पुण नियमा ससहायो भवति, तस्स सहाया  
जे ते य नेतुं णियत्तिउकामो जं सो ते य लव्वमति तं सव्वं पुव्विल्लायरियस्स आभवति ॥५४८४॥

वितियं अपहृप्पंते, ण देज्ज वत्तस्स सो सहाओ तु ।

वड्याइ अपडिवज्जं तंगस्स उवही विसुद्धो उ ॥५४८५॥



वित्तिय त्ति अश्ववादतो, आयरियो अपहुप्पंतिसु सहायं न देज्जा, सो य अप्पणा सुय-वएसु वत्तो, तस्स वइगादिसु अप्पडिवज्जंतस्स उवहीए वाधातो ण भवति, अह वइयादिसु पडिवज्जइ तो तण्णिप्फणं, उवकरणोवघायट्ठाणेषु व वट्ठंतस्स उवही उवहम्मति ॥५४८५॥

एगो तू वच्चंतं, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

वच्चंतो उ गिलाणो, अंतरा उवहिमग्गणा होति ॥५४८६॥

जो वत्तो एगागी गच्छति सो जति अणस्स आयरियस्स जो उग्गहो तं वज्जेउं अणोगहखेत्ते किञ्चि लभति तं सव्वं अभिधारिज्जंते देति । अहवा - एगागी वच्चंतो दो तिण्णि वा आयरिए अभिधारेज्ज, तस्स य अंतरा गेलणं होज्ज, जे अभिधारिता तेहिं आयरिएहिं सुयं जहा अम्हे धारंतो साधू यंतो गिलाणो जाओ ॥५४८६॥

आयरिय दोण्णि आगत, एक्के एक्के व गागए गुरुगा ।

न य लभती सच्चित्तं, कालगए विप्परिणए य ॥५४८७॥

जे ते अभिधारिता ते जति सव्वे आगता तो तेणं जं अंतराले लद्धं तं तेमि सव्वेसि साधारणं ।

अह तत्थ एगो आगतो अवसेसा गागता । जे नागया तेसि चलगुरुं, तं सचित्ताचित्तं ण लभंति । जो गतो गवेसगो तस्स तं सव्वं आभवति । कालगते वि एवं चेव ।

अह गिलाणो वि विप्परिणओ जस्स सो ण लभति, जं पुण अभिधारिज्जंते लद्धं पच्छा विपरिणतो जं अविपरिणते भावे लद्धं तं लभंति, विप्परिणए भावे जं लद्धं तं ण लभति ॥५४८७॥ एसा सुअभिधारणे आभवंतमग्गणा भणिया ।

इमा अण्णा वाताहडमग्गणा भण्णति -

पंथसहायमसड्ढो, धम्मं सोऊण पव्वयामि त्ति ।

खेत्ते य वाहि परिणत, सहियं पुण मग्गणा इणमो ॥५४८८॥

एक्को कारणितो विहरति, तस्स पंथे असडो वाताहडो सहाओ मिलितो, सो य तस्स साहुस्स पासे धम्मं सुणेत्ता असुणेत्ता वा पव्वयामि त्ति परिणामो जातो - "दिव्खेह भ" ति । सो परिणामो जति साधुपरिगहियखेत्तस्स अंतो जातो तो सो सेहो खेत्तियस्स आभवति, अह वाहि खेत्तस्स अपरिगहे खेत्ते परिणामो होज्ज तो तस्सेव साहुस्स आभवो ॥५४८८॥

खित्तम्मि खेत्तियस्सा, खेत्तवहिं परिणते पुरिल्लस्स ।

अंतरपरिणयविप्परिणए य कायव्व मग्गणता ॥५४८९॥

पुव्वदं गतार्थं । णवरं - "पुरिल्लस्स" ति साधोः पूर्वाचार्यस्येत्यर्थः । एवं अंतरा पव्वज्जापरिणामो पुण विपरिणामो, एवं जत्थ अवट्ठितो परिणामो जाओ सो पमाणं - खेत्ते खित्तियस्स, अखेत्ते तस्सेव । जो पुण सम्महिट्ठो तस्स जइ दंसणपज्जातो णत्थि तो इच्छा, दंसणपज्जायअच्छिण्णे जेण सम्मतं गाहितो तस्स भवति । ॥५४८९॥

एस विही तु विसज्जिते, अविसज्जि लहुगमासणापुच्छा ।

तेसिं पि होंति लहुगा, जं वाऽऽभव्वं च ण लभंति ॥५४९०॥



अविसज्जितो जइ सीसो गच्छइ ङ्क, पडिच्छगो जइ जाइ तो चउलहुगा ।

अह विसज्जितो दोच्चं वारं अणापुच्छाए गच्छइ, सीसो पडिच्छगो वा तो मासलहुं, तेसि पि पडिच्छंताणं चउलहुगा, जं च सच्चित्तादिगं तं ते पडिच्छंतगा ण लभंति ॥५४९०॥

आयरिओ पुण इमेहिं कारणेहिं ण विसज्जेति -

परिवार-पूयहेउं, अविसज्जंते ममत्तदोसा वा ।

अणुलोमेण गमेज्जा, दुक्खं खु विसज्जितं गुरुणो ॥५४९१॥

अप्पणो परिवारणिमित्तं, बहूहिं वा परिवारितो पूयणिज्जो भविस्सं, मम सीसो अणस्स पासं गच्छति त्ति णेहममत्तेण वा ण विसज्जेति । पच्छद्वं कंठं । जम्हा अविसज्जिते सोही ण भवति, ण य सो गुरु पडिच्छइ तम्हा पुच्छियव्वं ॥५४९१॥

सा य आपुच्छा दुविहा - अविधी विधी य । अविधिआपुच्छणे तं चेव पच्छित्तं जं अपुच्छिए । विधिपुच्छाए पुण सुद्धो ।

सा इमा विधी -

नाणम्मि तिणिण पक्खा, आयरिय-उवज्झाय-सेसगाणं तु ।

एक्केक्के पंच दिवसो, अहवा पक्खेण एक्केक्कं ॥५४९२॥

नाणणिमित्तेण जंतो तिणिण पक्खे आनुच्छं करेति, तस्य आयरियं आपुच्छति पंच दिणा, जति ण विसज्जेति तो उवज्झायं पंचदिणे, जति सो वि ण विसज्जेति तो गच्छं पंचदिणे. पुणो आयरियउवज्झायगच्छं च पंचपंचदिणे, पुणो एते चेव पंचपंचदिणे, एवं एक्केक्के पक्खो भवति, एवं तिणिण पक्खा । अहवा - अणुवद्वं आयरियपक्खं, पच्छा उवज्झायं, पच्छा गच्छपक्खं, एवं वा तिणिण पक्खा । एवं जति ण विसज्जितो तो अविसज्जितो चेव गच्छति ॥५४९२॥

एतविहिमागतं तू, पडिच्छ अपडिच्छणंमि भवे लहुगा ।

अहवा इमेहिं आगत, एगादि पडिच्छए गुरुगा ॥५४९३॥ कंठं

अह एगादिकारणेहिं आगतं पडिच्छति तो चउगुरुगा ॥५४९३॥

एगे अपरिणए या, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥५४९४॥

एगाणि आयरियं छट्ठेत्ता आगतो । अपरिणता वा सेहा, आहारवत्थपादादियाण अकप्पिया तेसि सहियं आयरियं छट्ठेत्ता आगतो । अप्पाहारो आयरितो तं चेव पुच्छिता सुत्तत्वे वायणं देवि, तं मोत्तुमागतो । थेरं गिलाणं आयरियं छट्ठेत्ता आगतो । बहुरोगी णाम जो चिरकालं बहूहिं वा रोगेहिं अभिभूतो तं छट्ठेत्ता आगतो । अहवा - सीसो गुरु वा मंदधम्मा, तस्स गुणे ण सामायारी पडिपूरेति तं "छट्ठेत्ता" आगतो । "पाहुडे" त्ति आयरिएण सह कलहेत्ता आगतो ॥५४९४॥

एतारिसं विउसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।

सीस-पडिच्छा-अयरिए, पायच्छित्तं विहिज्जति ॥५४९५॥ कंठं

सिस्सस्स पडिच्छगस्स आयरियस्स य तिण्ह वि पच्छित्तं भण्णति -

एगे गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुगा तु सीसमादीणं ।

सेसे सीसे गुरुगा, लहुगपडिच्छे य गुरुसरिसं ॥५४६६॥

एगे गिलाणे पाहुडे य तिसु वि दारेसु तिण्ह वि सीसपडिच्छगायरियाणं पत्तेयं गुरुगा भवन्ति, सेसा जे अपरिणयादी दारा तेसु सीसस्स चउगुरुगा, तेसु चेवं पडिच्छयस्स चउलहुगा, गुरुसरिसं ति जइ सीसं पडिच्छइ तो चउगुरुगा, अह पडिच्छगं तो चउलहुगा ॥५४६६॥

१णाणट्ठा तिण्णि पक्खे आपुच्छियव्वं तस्स इमो अववातो -

वित्तिपदमसंविग्गे, संविग्गे वा वि कारणाऽऽगाढे ।

नाउण तस्स भावं, कप्पति गमणं चऽणापुच्छा ॥५४६७॥

आयरियादीसु असंविग्गीभूतेसु णापुच्छज्जा वि । अहवा - संविग्गेषु आयरियादिसु अण्णो से किंचि इत्थिमादियं चरित्तविणासकारणं आगाढं उप्पणं ताहे अणापुच्छि ए वि गच्छति । १मा एस गच्छति (त्ति) गुरुमादियाण वा भावे णाते अणाते अणापुच्छा ए वि गच्छति ॥५४६७॥

अविसज्जिएण ण गंतव्वं ति एयस्स अववादो -

अज्झयणं वोच्छिज्जति, तस्स य गहणम्मि अत्थि सामत्थं ।

ण य वितरन्ति चिरेण वि, णातुं अविसज्जितो गच्छे ॥५४६८॥ कंठ्या

एवं अविसज्जिओ गच्छति, ण दोसो । अविधिमागतो आयरिएण ण पडिच्छियव्वो त्ति ।

एयस्स अववादो -

णाउण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

सुत्तत्थजाणतो खलु, अविहीय वि आगतं वाए ॥५४६९॥

अणापुच्छविसज्जियं वइयादिपडिवज्जंतं वा अविधिमागतं वोच्छेदादिकारणे अवलंविऊण पडिच्छति चोदेति वा ण दोसो ॥५४६९॥

“जो तेण आगंतुगेण सेहो आणितो तस्स अभिधारियस्स अणाभव्वो, सो तेण ण गेण्हियव्वो” त्ति एयस्स अववादो इमो -

णाउण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

सुत्तत्थजाणगस्स तु, कारणजाते दिसावंधो ॥५५००॥

चोदक आह - “अणिवद्धो कि ण वाइज्जति” ?

आचार्य आह - अणिवद्धो गच्छइ स गुरुह वातिज्जइ, कालसभावदोसेण वा ममत्तीकत्तं वाएति, मतो दिसावंधो अणुणातो ।

जो य सो णिवज्जइ सो इमं

ससहायअवत्तेण, ।

दलयंतु नानुवंधति

अव्वत्तेण ससहायेण वत्तेण वा असहाएण परखेत्ते उवट्ठितो सच्चित्तो सो खेत्तियाण आभव्वो तहावि तं दलयंति परममेहाविणं गुरुपदजोग्गं च, अप्पणो य सो गच्छे आयरियजोग्गो णत्थि त्ति ताहे तस्स अप्पणो विसावंधं करेति । “उभयं” त्ति संजता संजतीओ य । अहवा - तस्स सगच्छिल्लगाण य परोप्परं ममीकारकरणं भवति, अहं सज्जंतिउ त्ति, “तं व” त्ति जो पडिच्छगो आगतो तं वा णिवंधइ । जो सो सेहो पडिच्छगो आगतो तं वा णिवंधइ ॥५५०१॥

जो सो सेहो पडिच्छगो वा णिवद्धो सो तत्थ णिम्मातो -

आयरिए कालगते, परियट्ठति सो गणं सयं चेव ।

चोदेति व अपढंते, इमा तु तहि मग्गणा होति ॥५५०२॥

आयरिए कालगए सो तं गच्छं ण मुयइ, एत्थ गच्छस्स णिवद्धायरियस्स ववहारो भण्णति, सो तं सयमेव गणं परियट्ठेइ, सो य गच्छो ण पढति, अपढतो य तेण चोदेयव्वो, जति चोदिया वि ण पढंति तो इमो आभवंतमग्गणा ॥५५०२॥

साहारणं तु पढमे, वितिए खेत्तम्मि ततिए सुहदुक्खं ।

अणहिज्जंते सेसे, हवंति एक्कारस विभागा ॥५५०३॥

कालगयस्स जाव पढमवरिसं ताव गच्छस्स जो सो ठितो आयरिओ एतेसि दोण्ह वि साधारणं सच्चित्तादि सामान्यमित्यर्थः ।

वितिए वरिसे - जं खेत्तोवसंपण्णतो लभति तं ते अपढंता लभंति ।

ततिए वरिसे - जं सुहदुक्खोवसंपण्णतो लभति तं ते लभंति ।

चउत्थे वरिसे - कालगतायरियसीसा अणहिज्जंता ण किं चि लभंति, सव्वं पडिच्छगायरियस्स भवति ॥५५०३॥

सीसो पुच्छइ - “किं खेत्तोवसंपण्णओ सुहदुक्खिओ वा लभइ ?” त्ति ।

उच्यते -

णातीवग्गं दुविहं, मित्ता य वयंसगा य खेत्तम्मि ।

पुरपच्छसंथुता वा, सुहदुक्ख चउत्थए सव्वं ॥५५०४॥

दुविधं णातीवग्गं - पुव्वसंथुता पच्छासंथुता य । सहजायगादि मित्ता, पुव्वुप्पणा वयंसगा, एते सव्वे खेत्तोवसंपण्णतो लभति, सुहदुक्खीतो पुण पुरपच्छसंथुता एव केवला भवंति । जे पुण अहिज्जंति तेसि एक्कारस विभागा । तस्स य कालगयायरियस्स चउत्थो गणो - पडिच्छया सिस्सा सिस्सिणोओ पडिच्छिणीओ य । एतेसि जं तेण आयरिएण जीवतेण उट्ठितं तं पुव्वुट्ठितं भण्णति, जं पुण तेण पडिच्छगायरिएण उट्ठितं तं पच्छुट्ठितं भण्णति ॥५५०४॥

खेत्तोवसंपयाए, वावीसं संथुया य मित्ता य ।

सुहदुक्खमित्तवज्जा, चउत्थए णालवद्धा य ॥५५०५॥

पुव्वुद्धिदं तस्स उ, पच्छुद्धिदं पवाततंतस्स ।

संवच्छरम्मि पढमे, पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ॥५५०६॥

जं जीवन्तेण आयरिएण पडिच्छगस्स उद्धिदं तं चेव पढंतस्स पढमवरिमे जं सच्चित्ताचित्तं लब्धमिति तं सव्वं “तस्स” ति जेण उद्धिदं तस्स आभव्वं । एस एवको विभागो । अह इमेण उद्धिदं पडिच्छगस्स पढमवरिसे तो जं सच्चित्ताचित्तं लब्धमिति तं सव्वं वा देतस्स । एस वित्तियो विभागो ॥५५०६॥

वित्तियवरिसे -

पुव्वं पच्छुद्धिदं, पडिच्छए जं तु होइ सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि वित्तिए, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५०७॥

पडिच्छगो वित्तियवरिसे पुव्वुद्धिदं वा पच्छुद्धिदं वा पढजं तस्स सच्चित्ताचित्तं सव्वं वाएतस्स । एम तत्तिओ विभागो ॥५५०७॥

इदाणि सीसस्स भण्णति -

पुव्वं पच्छुद्धिदं, सीसम्मी जं तु होइ सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि पढमे, तं सव्वं गुरुस्स आभवति ॥५५०८॥

सीसस्स पढमवरिसे कालगतायरिएण च उद्धिदं इमेण वा पडिच्छगारिएण उद्धिदं पढंतस्स जं सच्चित्ताचित्तं तं सव्वं कालगतस्स गुरुस्स आभवति । एस चउत्थो विभागो ॥५५०८॥

सीसस्स वित्तिए वरिसे -

पुव्वुद्धिदंतस्स उ, पच्छुद्धिदं पवाययंतस्स ।

संवच्छरम्मि वित्तिए, सीसम्मी जं तु सच्चित्तं ॥५५०९॥

जहा पडिच्छगस्स पढमवरिसे दो आदेसा तहा सीसस्स वित्तियवरिसे दो आदेसा भाणियव्वा । एत्थ पंच-छट्ठ विभागा सीसस्स वित्तियवरिसे ॥५५०९॥

पुव्वं पच्छुद्धिदं, सीसम्मी जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि तइए, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५१०॥ (ङ्क)

जहा पडिच्छास्स वित्तियवरिसे तहा सीसस्स तत्तियवरिसे । एस सत्तमो विभागो ॥५५१०॥

इदाणि सिस्सिणी पढम-वित्तियसंवच्छरेसु भाणियव्वा पडिच्छगतुल्ला -

पुव्वुद्धिदंतस्सा, पच्छुद्धिदं पवाययंतस्स ।

संवच्छरम्मि पढमे, सिस्सिणिए जं तु सच्चित्तं ॥५५११॥

पुव्वं पच्छुद्धिदं, सीसिणिए जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि वित्तिए, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५१२॥

तत्थ तिणि विभागा पुव्विल्लेसु जुत्ता दस विभागा ।

इदार्णि पडिच्छगा -

पुव्वं पच्छुद्धिद्वं, पडिच्छए जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि पढमे, तं सव्वं पवाययंतस्स ॥५५१३॥

पडिच्छगाए पढमे चेव संवच्छरे आयरिएण वा उद्धिद्वं इमेण वा उद्धिद्वं पढउ जं से सच्चित्तादि तं सव्वं वाएंतो गेण्हति, एते एक्कारस विभागा ॥५५१३॥ एसो विभागे ओहो, इमो विभागेण पुण अण्णो आदेसो भण्णइ, अहवा - एसो विधि जो सो सेहो अप्पणो णिवद्धो तस्स भणितो ।

जो पुण सो पाडिच्छगो णिवद्धो तस्सिमो विधी -

सो तिविहो होज - कुलिच्चो, गणिच्चो, संधिच्चो वा होज ।

संवच्छराणि तिणिण उ, सीसम्मि पडिच्छए उ तद्विसं ।

एवं कुले गणे या, संवच्छर संघे छम्मासा ॥५५१४॥

जइ सो एगकुलिच्चो तो तिणिण वरिसे सच्चित्तादि सिस्साण ण गेण्हति, पडिच्छगाण पुण जद्विसं चेव आयरिओ कालगओ तद्विसं चेव गेण्हति, एवं कुलिच्चए भणियं ।

अह सो एगगणिच्चो तो संवत्सरं सिस्साण सच्चित्तादि ण गेण्हति । जो य कुलगणिच्चो [ण] भवति सो णियमा संधिच्चो । सो संधिच्चो छम्मासे सिस्साण सच्चित्तादि ण गेण्हति, ते पडिच्छगायरिएण तत्थ गच्छे तिणिण वरिसा अवस्सं अच्छियव्वं, परेण इच्छा ॥५५१४॥

तत्थेव य निम्माए, अणिग्गते णिग्गते इमा मेरा ।

सकुले तिणिण तिगाइं, गणे दुगं वच्छरं संघे ॥५५१५॥

तत्थेव पडिच्छगायरियस्स समीवे तम्मि अणिग्गए जति कोति तम्मि गच्छे णिम्मातो तो सुंदरं ।

अह ण णिम्माओ सो य तिण्ह वरिसाण परतो णिग्गतो, अहवा - एस अम्ह सच्चित्तादि हरति त्ति ते वा णिग्गता तेसि इमा मेरा -

सकुले समवायं काउं कुले थेरेसु वा उवट्ठायंति ताहे तेसि कुलं वायणायरियं देति, वारएण वा वाएति कुलं, तिणिण तिया णववरिसे वाएति ण य सच्चित्तादि गेण्हति, जइ णिम्मातो विहरइ ततो सुंदरं ।

अह एक्को वि ण णिम्मातो ततो परं सच्चित्तादि गेण्हति, ताहे सगणे उवट्ठाति गणो वायणायरियं देति, सो वि दोणिण वरिसे वातेति, ण य सच्चित्तादि गेण्हति; जति णिम्मातो एक्को वि तो विहरंतु, अणि-म्माते संघे उवट्ठायंति, संघो वायणायरियं देति, सो य वरिसं वाएति, ण य सच्चित्तादि गेण्हति, णिम्माए विहरंतु । एते वारस वरिसा ॥५५१५॥

अह एतेसि एक्को वि णिम्मातो, कहं पुण एवतिएण कालेण णिम्माति ?

उच्यते -

ओमादिकारणेहि व, दुम्मेहत्तेण वा ण णिम्माओ ।

काऊण कुलसमायं, कुल थेरे वा उवट्ठाति ॥५५१६॥

ओमसिवदुब्भिवसमाइहि अढंतो न निम्मातो दुम्मेहत्तेण वा, ताहे पुणो कुलादिमु कुलादियेरेण वा उवट्ठायंति तेणेव कमेण, एते वि वारस वरिसे । दो वारस चउव्वीसं । जति एक्को वि णिम्मातो

विहरंतु, अह न निम्मातो तो पुणो कुलादिसु तेणेव कमेण उवट्ठायंति, एते वि वारस वरिसे, सव्वे छत्तीसं जाता । एवं जति छत्तीसाए वरिसेहि निम्मातो तो सुंदरं, अह न निम्मातो ताहे अण्णं परममेहाविणं पत्तं उवादाय पव्वावेत्ता उवसंपज्जति ॥५५१६॥

सा य उवसंपदा एतारिसे ठाणे -

पव्वज्जएगपक्खिय, उवसंपद पंचहा सए ठाणे ।

छत्तीसाऽतिक्कंते, उवसंपद पत्तुवादाय ॥५५१७॥

पच्छद्वं गतार्थं ।

पुव्वद्वस्स इमा विभासा, "पव्वज्ज एगपक्खी" इमे -

गुरुसज्जिक्खिए सज्जंति ए य गुरुगुरु गुरुस्स वा नत्तू ।

अहवा कुलिच्चओ ऊ पव्वज्जा एगपक्खी उ ॥५५१८॥

पितृव्यः, भ्राता, पितामहः, प्रौत्रकः - भ्रातृव्य इत्यर्थः । अहवा - एगकुलिच्चए तेसि एवका सव्वा सामाचारी, सुतेण एगपक्खितो जस्स एगवांयणियं सुत्तं ॥

पव्वज्जाए सुएण य, चउमंगुवसंपया कमेणं तु ।

पुव्वाहियविस्सरिए, पढमासति तइयमंगो उ ॥५५१९॥

पुव्वद्वभणियक्कमेण उवसंपदा पढमततियमंगेसु त्ति, जम्हा तेसु पुव्वाहितं विस्सरियं पुणो उज्जुयारे ओसक्कइ ।

चोदकाह - "साहम्मियवच्छल्लयाए सव्वस्सेव कायव्वं, कि कुलातिविभागेण उवट्ठवणं कत्तं" ? उच्यते -

सव्वस्स वि कातव्वं, निच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा ।

कालसभावममत्ते, गारवलज्जाए काहिति ॥५५२०॥कंठ

"उवसंपदं पंचविध" त्ति अस्य व्याख्या -

सुतसुहदुक्खे खेत्ते, मग्गे विणए य होति बोधव्वे ।

उवसंपया उ एसा, पंचविहा देसिता सुत्ते ॥५५२१॥

उवसंपदासु इमो आभवंतववहारो -

सुत्तम्मि णालवद्धा, णातीवद्धा व दुविहमित्तादी ।

खेत्ते सुहदुक्खे पुण, पुव्वसंथुय मग्गादिद्वादी ॥५५२२॥

सुतोवसंपदा दुविधा - पढते अभिघारंते य । दुविधाए वि सुतोवसंपदाए छ णालवद्धा इमे - माता पिता भ्राता भगिणी पुत्तो धृता ।

एतेसि परावि सोलस इमे -

माउम्माता पिता भ्राता भगिणी, एवं पिउणो वि चउरो, भाउपुत्तो घूया य, एवं भगिणी पुत्त-  
घूयाण वि दो दो, एते सोलस, छ सोलस य बावीसं, एते णालवद्धा, सुत्तोवसंपण्णो लभति । खेतोवसंपण्णो  
बावीसं पुव्वपच्छसंधुया य मित्ता य लभति । सुहदुक्खी पुण बावीसं पुव्वपच्छसंधुया य लभति । मग्गोवसं-  
पण्णतो एते सव्वे लभन्ति दिट्ठा भट्ठा य लभति । विणयोवसंपदाते सव्वं लभति, णवरं - विणयाणरिहस्स ण  
वंदणाविणयं पउजति ।

“सगे ठाण” ति - पव्वज्जाए मुत्तेण य जो एगपक्खी पढमं तत्थ य उवसंपज्जति, पच्छा कुलेण  
मुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण गणेण य जो एगपक्खी, तस्स वि  
पच्छा वित्तिभोगेसु, पच्छा चउत्थभोगे, एवं उवसंपदाते ठायंति ।

अहवा - “सट्ठाण” ति - सुत्तत्थिस्स जस्स सुयं अत्थि तं सट्ठाणं एवं मुहदुक्खियस्स जत्थ  
वेयावच्चकरा अत्थि, खेतोवसंपदत्थिस्स जस्स वत्थभत्तादियं अत्थि, मग्गोवसंपदत्थिस्स जत्थ मग्गं अत्थि,  
विणयोवसंपदत्थिस्स जत्थ विणयकरणं जुज्जति । एते सट्ठाणा एतेसु उवसंपदा ॥५५२२॥ गाणट्ठोवसंपदा गता ।

इदार्णि दंसणट्ठा भण्णति ।

कहं वा दंसणट्ठा गम्मति ?, उच्यते -

कालियपुव्वगते वा, णिम्माओ जदि य अत्थि से सत्ती ।

दंसणदीवगहेउं, गच्छइ अहवा इमेहिं तू ॥५५२३॥

कालियसुते पुव्वगयसुते वा जं वा जम्मि काले पतरति सुत्तं तम्मि सुत्तत्थिदुमएसु णिम्मातो ताहे  
जइ से दंसणदीवगेसु गहणधारणसत्ती अत्थि ताहे अप्पणो परस्स य दरिसणं दीवगति दीप्तां करोति हेतुः  
कारणं तानि दशंनविओघनानीत्यर्थः । अहवा - इमेहिं कारणेहिं गच्छति ॥५५२३॥

भिक्खुगा जहि देसे, वोडिय-थलि निण्हएहि संसग्गी ।

तेसिं पण्णवणं असहमाणे वीसज्जिते गमणं ॥५५२४॥

जत्थ गामे णगरे देसे वा भिक्खुग-वोडिय-निण्हगाण वा थली तत्थ ते आयरिया ठिता, तेहिं सद्धि  
आयरियसंसग्गी - प्रीतिरित्यर्थः । ते य भिक्खुमादी अप्पणो सिद्धंतं पण्णवन्ति, सो य आयरियो तेसिं दक्खिण्णेण  
तुण्हक्को अच्छति ॥५५२४॥

लोगे वि य परिवाओ, भिक्खुयमादी य गाढ चमहेति ।

विप्परिणमन्ति सेहा, ओभामिज्जन्ति सट्ठा य ॥५५२५॥

एते भिक्खुमादी जाणगा, इमे पुण ओदणमुंडा, ते य भिक्खुमादी अम्हं पक्खं गाढं चमहेति,  
सेह सट्ठा य विपरिणमन्ति, भणंति य - एते सेयभिक्खु घम्मवादिणो, जइ सामत्थं अत्थि णं तो अम्हं  
उत्तरं देवु, एवं सपक्खेसु सट्ठा ओहाविज्जन्ति, ॥५५२५॥

अह तेहिं भिक्खुगमाइहि थलीए वट्ठो गो णिवट्ठो -

रसगिट्ठो य थलीए, परत्तिथियतज्जणं असहमाणो ।

गमणं बहुस्सुयत्तं, आगमणं वादिपरिसाओ ॥५५२६॥



सो य आयरियो रसगिद्धो गोउलपिढहतो, सति वि सामत्ये भण्णमाणो वि ण किं चि उत्तरं देति, एवमादि तेसि परतित्थियाणं पण्णवणतज्जणं असहमाणो सिस्सो आयरिए विधीए पुच्छति, जाहे विसज्जितो ताहे विहिणा गमो, सो य सुणेत्ता बहुस्सुओ जाओ, आगमणं, आगतेण य पुव्वं आयरिया दट्ठ्वा, अणवसहीए सो ठाड, जे तत्थ पंडिया वादिपरिसं च गेण्हति, ते परिजियायत्ते करेति, ते रणो महाजणस्स वा पुरतो णिरुत्तरे करेति ॥५५२६॥

वादपरायणकुविया, जति पडिसेहेति साहु लट्ठं च ।

अह चिरणुगतो अम्हं, मा से पवत्तं परिहवेह ॥५५२७॥

वादकरणे जिता कुविया जइ ते तं आयरियस्स निवधं पडिसेहेति तो सुंदरं, अहवा - तत्थ कोइ तुट्ठो भणिज्ज - “एयस्स को दोसो ? एस अम्हं चिरणुगतो, पुव्ववत्तं वट्ठयं मा परिहवेह” ॥५५२७॥

ओहे वत्त अवत्ते, आभव्वे जो गमो तु णाणट्ठा ।

सो चेव दंसणट्ठा, पच्चागते हो इमो वऽण्णो ॥५५२८॥

ओहविभागे नाणट्ठा संजयस्स वत्तस्स अवत्तस्स य जो सचित्तादियाण आभव्व्वाणाभव्वगमो भणिओ सो चेव असेसो दंसणट्ठा गच्छंतस्स भवति, पच्चागते कते वादे जितेसु भिक्खुगादिसु आयरिए भणति-णीह एतत्तो तुम्मे ॥५५२८॥

जइ एवं भण्णमाणो णीति तो इमा विधी -

कातूण य पणामं, छेदसुत्तस्स ददाहि पडिपुच्छं ।

अण्णत्थ वसहि जग्गण, तेसिं च निवेयणं काउं ॥५५२९॥

आयरियस्स पादे पणमित्ता भणति - “छेदसुयस्स ददाहि पडिपुच्छं” ति, अस्य व्याख्या -

सहं च हेउसत्थं, चऽहिज्जिओ छेदसुत्त णट्ठं मे ।

एत्थ य मा असुयत्था, सुणेज्ज तो अण्णहिं वसिमो ॥५५३०॥

सदे ति व्याकरणं, हेतुसत्थं अक्खपादादि, एवमादि अहिज्जतो छेदसुत्तं णिसीहादि णट्ठं सुत्तओ अत्थओ तट्ठभओ वा, तस्स मे पडिपुच्छं देह ।

“अण्णत्थ वसहि” ति अस्य व्याख्या - “एत्थ य” पच्छद्वं । “एत्थ बहुवसहीए असुयत्था सेहा अगीता अपरिणामगा य, मा ते सुणेज्जा तो अणवसहीए ठामो, एवं ववएसेण णीणेति, ॥५५३०॥

अहवा - वसहीओ खेत्तओ वा णो इच्छइ णिगंतुं ।

“जग्गण तेसिं णिवेदण” ति अस्य व्याख्या -

खेत्तारक्खिनिवेयण, इतरे पुव्वं तु गाहिता समणा ।

जग्गविओ सो य चिरं, जह णिज्जंतो ण चेत्तेति ॥५५३१॥

आरक्खिणो ति दंडवासिणो, तस्स णिवेदिज्जति - “अम्हं मंदो पभू अत्थि, तं अम्हे रयणीए वेज्जमूलं नेहामो ति तुम्मे मा किं चि भणेज्जह”, इतरे य अगीता समणा ते गमिया - “अम्हे आयरियं एवं



गेहामो तुम्हे मा बोलं करेजह ।” “जग्गण” ति सो य आयरिओ राओ किचि अक्खाइगादि कहाविज्जति सुचिरं जेण गिसहुसुत्तो गिज्जंतो ण किचि वेदति, ताहे संथारगे छोहूणं गेति, अह चेतेति विलवति वा ताहे “खित्तचित्तो” ति लोगस्स कहेय्वं ॥५५३१॥

णिण्हयसंसग्गीए, बहुसो भणंतुवेह सो भणति ।

तुह किं ति वत्ति वच्चसु, गता-SSगते णीणितो विहिणा ॥५५३२॥

अह बोडियाणं णिण्हयाणं वा संसग्गी तेण ण गच्छति, बहुसो वि भणंतो उवेहति - तुण्हवको अच्छति । अहवा भणेज्ज - “जति हं णिण्हवगसंसग्गीए अच्छामि तो तुव्भं किं दुक्खति?, वच्चह तुव्भे जतो भे गतव्वं, अहं ण गच्छामि”, एत्थ वि सिस्सेण सिक्खणगतागतेण णिण्हगादि जेउं आयरिओ विहिणा णीणियव्वो ॥५५३२॥

एसा विही विसज्जिते, अविसज्जिए लहुग गुरुगमासो य ।

लहुगुरुग पडिच्छंते, आगतमविही इमो तु विही ॥५५३३॥

पडिच्छगस्स चउलहुअं, सीसस्स चउगुरुगा, दोच्चं आपुच्छणे मासो, अणापुच्छे आगयं जइ पडिच्छगं पडिच्छइ तो चउलहुं, अह सीसं तो चउगुरुगा, एवं अविहिमागयस्स पच्छित्तं ।

इमा विही भणति ॥५५३३॥

दंसणपक्खे आयरिओवज्झाए चेव सेसगाणं च ।

एक्केक्के पंचदिणे, अहवा पक्खेण सव्वे वि ॥५५३४॥

दंसणभावगाण सत्थाण सिक्खगस्स गच्छंतस्स पक्खं आपुच्छणकालो, तत्थ आयरियं पंचदिणे, सेसा पंचदिणा । “अहवा - “पक्खेण सव्वे” ति वितियादेसो, दिणे दिणे सव्वे पुच्छति जाव पक्खो पुण्णो ॥५५३४॥

एतविहिमागतं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा ।

अहवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छए गुरुगा ॥५५३५॥

एगे अपरिणए या, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥५५३६॥

एतारिसे विओसेज्ज, विप्पवासो न कप्पती ।

सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५३७॥

वितियपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागाढे ।

णाऊण तस्स भावं, होति तु गमणं अणापुच्छा ॥५५३८॥ गतायाः

दंसणट्ठा गयं ।

इदाणि चरित्तट्ठा -

चरित्तट्ठ देस दुविहा, एसणदोसा य इत्थिदोसा य ।

गच्छम्मि विसीयंते, आतसमुत्थेहि दोसेहि ॥५५३९॥

चरित्तदुगमणं दुविहं - देसदोसेहि आयसमुत्थदोसेहि य । देस-दोसा दुविधा - एसणदोसा, इत्थिदोसा य । आयसमुत्था दुविहा - गुरुदोसा, गच्छदोसा य ।

तत्थ गच्छे जति आयसमुत्थेहि चक्कवालसमारिवितहकरणेहि सीएज तत्थ पक्खं आपुच्छंतो अच्छति, परतो गच्छइ ॥५५३६॥

इमे संजमोवधायदोसा, एतेसु उवदेसो - न गंतव्वं -

जहियं एसणदोसा, पुरकम्मादी ण तत्थ गंतव्वं ।

उदयपउरो व देसो, जहि तं चरियादिसंकिण्णो ॥५५४०॥

उदयप्रचुरः सिधुविपयवत्, परिव्राजिका कापालिका तच्चण्णगी भगवी च एवमादिचरगादीहि जो आइण्णो विसओ तं पि ण गंतव्वं ॥५५४०॥

अह संजमविसए असिवादी कारणा होज ताहे असंजमखेत्तं पविट्ठा -

असिवादीहि गया पुण, तक्कज्जसमाणिया ततो णिति ।

आयरिए अणिते पुण, आपुच्छितु अप्पणा नेति ॥५५४१॥

आदिसद्दातो दुग्भिवस्परचक्कादिया । “तक्कज्जसमाणिय” ति तम्मि संजमखेत्ते जया ते असिवादिया फिट्ठा ताहे तो असंजमखित्ताओ णिगंतव्वं । जइ आयरिओ केणइ पडिबंघेण सीयंतो वा णणिग्गच्छति तो जो एगो दो बहू वा असीदंता ते आयरियं विधीए पुच्छित्ता अप्पणा णिग्गच्छति ॥५५४१॥

णिग्गच्छणे इमा विधी -

दो मासे एसणाए, इत्थिं वज्जेज्ज अट्ठ दिवसाणि ।

आतसमुत्थे दोसे, आगाढे एगदिवसं तु ॥५५४२॥

जत्थ एसणादोसा तत्थ जयणाए अणेसणिज्जं गिण्हंतो वि दो मासे, आयरियं आपुच्छंते वि उदिव्वत्ति सहसा ण परिच्चयति,

अह १ इत्थिसयजिम्मादि उवसग्गेति, अप्पणो य दढं चित्तं, तो अट्ठदिवसे आपुच्छति । तप्परतो अणितेसु अप्पणा णिग्गच्छति ।

अह - इत्थीए अप्पणा अज्झोववण्णो तो एरिसे आयसमुत्थे आगाढे दोसे एगदिवसं पुच्छित्ता अणितेसु वितियदिवसे अप्पणा णीणेति ॥५५४२॥

सेज्जायरमादि सएज्जिम्मा व अउत्थदोस उभए वा ।

आपुच्छति सण्णिहितं, सण्णातिगतो व तत्तो उ ॥५५४३॥

अह अप्पणा सेज्जातरीए सएज्जिम्माए वा अतीव अज्झोववण्णो । “उभयए” वत्ति परोप्परओ तो जति सो आयरितो सण्णिहितो आपुच्छति, असण्णिहिते पडिस्सयगओ सण्णादिभूमिगओ वा अहा - सण्णिहितं साधुं पुच्छित्ता तत्तो चेव गच्छति ॥५५४३॥

एयविहिमागयं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा ।

अहवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छणे गुरुगा ॥५५४४॥ पूर्ववत्

एगे अपरिणते या, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे वहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥५५४५॥ पूर्ववत्

एतारिसं विओसज्ज, विप्पवासो ण कप्पति ।

सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५४६॥ पूर्ववत्

भवे कारणं ण पुच्छिज्जा वि -

वितियपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागाढे ।

नाऊण तस्स भावं, अप्पणो भावं चऽणापुच्छा ॥५५४७॥

आयरियादी असंविग्गा होज्ज, संविग्गा वा कारणं आगाढं अहिडक्कादि अवलंविता ण पुच्छेज्ज, तस्स वा भावं जाणेति, सुचिरेण वि ण विसज्जेति, अप्पणो वा भावं जाणति - “अम्हं अच्छंतो अवस्सं सि (सी) दामि”, एवमादिकारणेहि अणापुच्छिता वच्चेज्जा चरित्तद्वा ५५४७॥

अह गुरु इत्थिदोसेहि सीएज्जा -

सेज्जायरकप्पट्ठी, चरित्तठवणाए अभिगया खरिया ।

सारुविओ गिहत्यो, सो वि उवाएण हरियव्वे ॥५५४८॥

सेज्जायरस्स भूणिगा जोव्वणकप्पे ठिया, कप्पट्ठियं पडुच्च आयरिएण चरित्तं ठवियं - तं पडिसेवतीत्यर्थः । अहवा - दुववसरिगा अभिगता सम्महिट्ठी तं वा पडिसेवेति, अहवा - अभिगते ति - आसक्ता, सो पुण आयरिमो चरित्तवज्जितो वेसधारी वा बाहिकरणजुत्तो होज्जा । लिंगी वा सारुविगो वा सिद्धपुत्तो वा गिहत्यो वा होज्ज ।

लिंगधारी लिंगी ।

बाहिरव्भंतकरणवज्जितो सारुवी ।

मुंडो सुविकलवासधारी कच्छं ण वंधति अवंभवारी अभज्जगो भिक्खं हिट्ठि ।

जो पुण मुंडी ससिहो सुक्कंवरधरो सभज्जगो सो सिद्धपुत्तो, एयणयरविकप्पे ठितो ।

“उवाएण हरियव्वो” पुव्वं गुरुं अणुकूलं भणति - इमाओ खेत्ताओ वच्चामो, जदा णेच्छति ताहे जत्थ सो पडिवद्धो सा पणविज्जति “एसो बहूणं आहारो, एवं विसज्जेहि, तुमं किंच मा महामोहकम्मं पगरेहि” । जति सा ठिया तो सुंदरं, अह ण ठाति तो सा विज्जमंतगिमित्तेहि पाउट्टिज्जति वसीकज्जति या, भसति विज्जादियाण अत्थं दाउं मोएति, गुरु य एगंते य भणमाणो सव्वहा अणिच्छंतो पुव्वकमेगं रामो हरियव्वो ॥५५४८॥

सव्वहा आयरिए अणिते अप्पणा ततो णेति अणेगा एगो वा ।

जा एगस्स विधी सा अणेगाण वि दट्ठ्वा -

एगे तू वच्चंते, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

चरित्तद्धं जो तु णेति सच्चित्तं णऽप्पिणे जाव ॥५५४६॥

जो साहू वत्तो एगाणितो वच्चति सो परोवग्गहवज्जं सच्चित्तादि जं लभति तं अप्पणो <sup>१</sup>समग्गिल्लस्स वा गुरुस्स, चरित्तस्स वा <sup>२</sup>स्वपीरूपलक्षणचरित्तद्वा पुण जो सहाओ णेति तत्थ सच्चित्तादि णेतस्स जं सच्चित्तादि तं जाव ण समप्पेति ताव पूर्वाचार्यस्य अव्वत्तसहाए वि ण लभति पुरिल्लो, जदा पुण उवसंपणो समप्पितो वा तदा लभति, तक्कालाओ वा चरित्तपरिचालणा ॥५५४६॥

एमेव गणावच्छे, तिविहो उ गमो उ होति गाणादी ।

आयरिय-उवज्झाए, एसेव य णवरि ते वत्ता ॥५५५०॥

जहा साधुस्स भणियं तहा गणावच्छेइयस्स तिविधो गमो गाणदंसणचरित्तद्वा गच्छंतस्स, एवं आयरिउवज्झायाण वि । णवरं - ते णियमा वत्ता भवंति ॥५५५०॥

एसेव गमो नियमा, निग्गंथीणं पि होइ नायव्वो ।

गाणद्धं जो तु णेती, सच्चित्तं नऽप्पणिज्जा वा ॥५५५१॥

णवरं - ताओ णियमा ससहायाओ जो पुण तातो णेति सच्चित्तादी तस्स, समप्पियासु वाएंत्तस्स ॥५५५१॥

को पुण तातो णेति ?

पंचण्हं एगतरे, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

आपुच्छ अट्ठ पक्खे, इत्थीवग्गेण संविग्गे ॥५५५२॥

संजतीतो गाणद्वा णेति आयरिय उवज्झायो वा पवित्ती गणी वा धेरो वा, एएसि पंचण्हं अण्णतरो णितो उग्गहवज्जं सच्चित्तादि लभति । इत्थी पुण गाणद्वा वच्चंती अट्ठपक्खे आपुच्छति आयरियं उवज्झायं वसभं गच्छं वा । एवं संजतिवग्गे वि चउरो इत्थीओ सत्थेण णेयव्वाओ, संविग्गो गीयत्थो परिणयवयो णेति । चरित्तद्वा गयं ॥५५५२॥

तिण्हद्वा संकमणं, एयं संभोइएसु जं भणितं ।

तेसऽसति अण्णसंभोइए वि वच्चेज्ज तिण्हद्वा ॥५५५३॥

गाणातिगिगस्सद्वा एयं संकमणं संभोइएसु भणियं, संभोइयाण असती अण्णसंभोइएसु वि गाणातिगिगस्सद्वा संकमति ॥५५५३॥

अहवा - संभोगद्वा संकमति -

संभोगा अवि हु तिहिं, कारणेहिं तत्थ चरणे इमो भेदो ।

संकमचउक्कभंगो, पढमे गच्छम्मि सीदंते ॥५५५४॥

१ सेससिस्सस्स, इत्यपि पाठः । २ लक्षणस्स अट्ठा चरित्तं द्वा, इत्यपि पाठः ।

संभोगो वि तिष्ठद्वा इच्छिज्जइ, तं तहा णाणस्स दंसणस्स चरित्तस्स । णाणदंसणद्वा जस्स उवसंपण्णो तम्मि सीयते ततो णिग्गमो भाणियच्चो, जहा अप्पणो गच्छाओ । चरित्तद्वा पुण जस्स उवसंपण्णो तस्स चरणं प्रति सीदंतेसु इमो चउव्विहो विगप्पो ।

कहं पुण संकमति ?, चउभंगे ।

इमो चउभंगो -

गच्छो सीदति, णो आयरिओ । णो गच्छो, आयरिओ ।

गच्छो वि, आयरिओ वि । णो गच्छो, णो आयरिओ ।

पढमे गच्छो सीदति ॥५.५५४॥

सो पुण इमेहि सीदति -

पडिलेह दियतुयट्ठण, णिक्खवणाऽऽयाण विणय सज्झाते ।

आलोय-ठवण-भत्तट्ठ-भास-पडल्लग-सेज्जातरादीसु ॥५.५५५॥

पडिलेहणा काले ण पडिलेहेत्ति, ण] पडिलेहेति वा विवच्चासेण, [वा] ऊणात्तिरित्तमादिदोसेहि वा पडिलेहेति । गुरुपरिणगिलाणसेहाण वा न पडिलेहेत्ति । निक्कारणे वा दिया तुयट्ठंति । णिक्खवणे आदाणे वा ण पडिलेहेत्ति, ण पमज्जंति, सत्तभंगा । विणयं अहारिहं ण पयुंजति । सज्झाए मुत्तत्यपोरिसीओ अ ण करेत्ति, अकाले असज्झाए वा करेत्ति । पविस्सयादिसु आलोयणं ण पउंजति, भत्तादि वा ण आलोएत्ति, दोसेहि वा आलोएत्ति, संखडिए वा भत्तं आलोएत्ति-णिरवखंतीत्यर्थः । ठवणकुलाणि वा ण ठवंति, ठविएसु अणापुच्छाए विसंति भत्तट्ठं । मंडलीए ण भुंजति, वीसुं भुंजति, दोसेहि वा भुंजति, गुरुणो वा अणालोगेण भुंजति । अणारभासादिहि भासंति, सावज्जं भासंति । पडलेहि आणियं अभिहडं भुंजति । सेज्जायरपिडं वा भुंजति । आदिग्गहणेण उग्गमउप्पादणेसणादोसेहि य गेण्हंति ॥५.५५५॥

एवमादिएहि गच्छं सीदंतं -

चोदावेति गुरुण व, सीदंतं गणं सयं व चोदेति ।

आयरियं सीदंतं, सयं गणेणं व चोदावे ॥५.५५६॥

गच्छो सीयंतो गुरुणा चोइज्जति, अप्पणा वा चोएति, जे वा तहि ण सीदति ते वा चोएति । वीयभंगे आयरियं सीदंतं संतं वा चोएति, गणो वा तं आयरियं चोएति ततियभंगे ॥५.५५६॥

दोणि वि विसीयमाणे, सयं च जे वा तहि ण सीदंति ।

ठाणं ठाणासज्जतु, अणुलोमादीहि चोदावे ॥५.५५७॥

दोणि वि जत्थ गच्छो आयरिओ य सीदंति तत्थ य सयं चोएति । जे वा तहि ण सीयंति तेहि चोदावेति । "ठाणं ठाणासज्जं" ति आयरिय-उवज्झाय-पवत्ति-घेर-गणावच्छ-भिवसु-मुद्दा य अहवा गर-मज्झ-मउय-कूराकूरा वा जस्स जारिसी अरहा चोदणा जो वा जहा चोदणं गेण्हंति सो तहा चोदेयच्चो ॥५.५५७॥

भणमाण भाणवंतो, अयाणमाणस्स पक्ख उक्कोसो ।

लज्जाए पंच तिणि वि, तुह किं ति व परिणते विवेगो ॥५.५५८॥

गच्छं सीदंतं, आयरियं वा उभयं वा सीदंतं सयं चोदंतो अण्णेहि वा चोयावंतो अच्छति । जत्थ ण जाणति जहा एते भण्णमाणा वि णो उज्जमिउकामा तत्थ उक्कोसेण पक्खं अच्छति गुहं पुण सीदंतं लज्जाए गारवेण वा जाणंतो वि पंच तिण्णि वा दिवसे अमणंतोवि सुद्धो ।

अह चोदिज्जंतो गच्छो गुरु वा उभयं वा भणेज्जा — “तुम्हं किं दुक्खति ? जइ अम्हे सीदामो, अम्हे चेव दोग्गति जाईहामो”, एवंभावपरिणए विवेगो गच्छस्स गुरुस्स उभयस्स व कज्जति । अन्नं गणं गच्छइ । सो पुण एगो अणेगा वा असंविग्गगणातो संविग्गगुणं संकमेति । एवं चउभंगो ॥५५५८॥

गीयत्थविहारातो, संविग्गा दोण्णि एज्ज अण्णतरे ।

आलोइयम्मि सुद्धा, तिविहुवधीमग्गणा णवरिं ॥५५५९॥

गीयत्थगहणातो उज्जयविहारी गहितो, ततो उज्जयविहारातो सविग्गा, दोण्णि एज्ज ॥५५५९॥

“अण्णतरे” त्ति अस्य व्याख्या —

गीयमगीतागीते, अप्पडिवंधे ण होति उवघातो ।

अग्गीयस्स वि एवं, जेण सुया ओहणिज्जुत्ती ॥५५६०॥

जइ एगो सो गीओ अगीओ वा, अह दुगादी होज्ज ते गीता अगीता वा मिस्सा वा, जति एगो गीतो वइयादिसु अप्पडिवज्जंतो वच्चति तो उवधिवघातो ण भवति, जो वि अगीतो जहण्णेण जेण सुता ओहणिज्जुत्ती तस्स वि अप्पडिवज्जंतस्स उवही ण उवहम्मति ॥५५६०॥

गीयाण व मीसाण व, दोण्ह वयंताण वइगमादीसु ।

पडिवज्जंतानं पि हु, उवहि ण हम्मे ण वा-SSरुवणा ॥५५६१॥

दोण्हं गीताणं विमिस्साणं वा दोण्हं जइ वि वतियादिसु पडिवज्जंति सेससामायारिं करंति तेसि उवही ण उवहम्मति, ण वा पच्छित्तं भवति । भणियविवज्जते उवधिवघातो चित्तिज्जो । एवं संविग्गविहारातो एगो अणेगा वा विहीए आगता, जप्पभित्ति गणातो फिडिया ततो आढवेत्तु आलोयणा दायव्वा, ततो सुद्धा ॥५५६१॥

“तिविधउवहीमग्गणा णवरिं” त्ति अस्य व्याख्या —

आगंतु अहाकडयं, वत्थन्व अहाकडस्स असती य ।

मेलेंति मज्झिमेहिं, मा गारवकारणमगीए ॥५५६२॥

“तिविहो” त्ति अहाकडो अप्पपरिकम्मो बहुपरिकम्मो य । एवं वत्थव्वाण वि तिविधो, अहाकडं अहाकडेहिं मेलिज्जति, इतरे वि दो एवं । वत्थव्वाण अहाकडा णत्थि ताहे आगंतुगा अघाकडा वत्थव्वग-मज्झिमेहिं मेलिज्जंति, मा सो आगंतु अगीयत्थो गारवं करेस्सति “ममेव उवधी उक्कोसतरो” त्ति ॥५५६२॥

गीयत्थे ण मेलिज्जति, जो पुण गीओ वि गारवं कुणइ ।

तस्सुवही मेलिज्जइ, अहिगरण अपच्चेओ इहरा ॥५५६३॥

गीयत्यो जइ अगारवी वत्यव्वअहाकडअसतीते तहावि अहाकडपरिभोगेण भुंजति, अह सेघाणं अण्णाण वा पुरयो भणति ।

“ममोवही उक्कोसो, तुदभ उवही असुद्धो” एवं भणंतो वारिज्जति । जइ ठितो तो सुंदरं, अह ण ठाति, ताहे अण्णोवहिसमो कज्जति ।

“इहरे” त्ति अमेलिज्जंतो अगीयसेहाण अप्पचयो किं अमहेहिंतो एस उज्जमंततरो जेण उवधि उक्कोसपरिभोगेण भुंजति । “ममोवही उक्कोसो” त्ति इतरे असहमाणा अधिकरणं करेज्जा, तम्हा मेलिज्जति ॥५५६३॥

एवं खलु संविग्गे, संविग्गे संकमं करेमाणे ।

संविग्गमसंविग्गे, -ऽसंविग्गे या वि संविग्गे ॥५५६४॥

पुव्वद्धे पढमभंगो गतो, पच्छद्धे वितिय ततियभंगा ।

तत्थ वितियभंगसंकमे इमे दोसा -

सीहगुहं वण्णगुहं, उदहिं व पलित्तगं व जो पविसे ।

असिवं ओमोयरियं, धुवं से अप्पा परिच्चत्तो ॥५५६५॥

जो संविग्गे असंविग्गेसु संकमति तस्स द्धु, आणादिया य दोसा, सेसं कंठं ॥५५६५॥

चरण-करणपरिहीणे, पासत्थे जो उ पविसए समणो ।

जयमाणए य जहितुं, जो ठाणे परिच्चए तिणिण ॥५५६६॥

ओसण्णादी सीहगुहादिसंठाणा, सीहगुहादिपवेसे एगमवि य मरणं पावति । जो पुण पासत्थादी अतीति सो अणेगाइं जाइव्व-मरियव्वाइं पावति ॥५५६६॥

एमेव अहाछंदे, कुसील ओसण्णमेव संसत्ते ।

जं तिणिण परिच्चयती, णाणं तह दंसण चरित्तं ॥५५६७॥

कंठया । गतो वितियभंगो ।

पंचण्हं एगतरे, संविग्गे संकमं करेमाणे ।

आलोइए विवेगो, दोसु असंविग्गे सच्छंदो ॥५५६८॥

पंचविहो असंविग्गे - पासत्थो ओसण्णो कुसीलो संमतो अहाछंदो । एतेमि अण्णयरो मविग्गेसु संकमेज्जा, सो संविग्गमज्झगतो संतो आलोयणं देति, अविमुद्धोवधिस्स विवेगं करेति, अण्णो मे विमुद्धोवधी दिज्जति । “दोसु” त्ति असंविग्गे असंविग्गेसु संकमं करेति, एस चउत्थभंगो । एस “सच्छंदो” इच्छा से “अविधि” त्ति काउं अवत्थु चेव ॥५५६८॥

पंचेगत्तरे गीए, आरुभिय वदे जतंत एमाणे ।

जं उवहिं उप्पाए, संभोइय सेसमुज्झंति ॥५५६९॥

पंचण्हं पासत्थादियाण एगतरो एतो जइ गीयत्यो आयरियं अभिधारंउं तद्दि चेव महव्वयउच्चत्तरं काउं प्रागंतव्वं । विधीए अपडिबज्झंतो प्रागच्छमाणो पंचे जं उवकरणं उप्पाएतो एति त सच्चं गंभीरित्तं ।

“सेसो” त्ति जो पासत्थोवधी अविमुद्धो तं परिट्ठवेंति, जो पुण अगीयत्थो तस्स वत्ते आयरितो देति, उवधी से पुराणो अहिण्वुप्पातितो वा से सव्वो परिठविज्जति, आलोइए जं आवण्णो तं से पच्छित्तं देज्जति ॥५५६९॥

पासत्थादिसु इमं आलोयणाविधानं -

पासत्थादीमुंडिते, आलोयण होति दिक्खपभितिं तु ।

संविग्ग पुराणे पुण, जप्पिभितिं चेव ओसण्णो ॥५५७०॥

अच्चंतपासत्थो जो तस्स पव्वज्जादी आलोयणा । जो पुण पच्छा पासत्थो जातो सो जतो पासत्थो जातो ततो कालतो आढवेत्तु आलोयणं देति । एयं अहाछंदवज्जाण । अहाछंदो जाहे पडिक्कमति ताहे तस्स च्छं । अवसेसं तहेव ॥५५७०॥ एवं संभोगट्ठा गयं ।

इमो आयरियट्ठा णियमो भण्णति -

आयरिओ वि हु तिहि कारणेहि णाणड्ढ दंसणचरित्ते ।

णाणे महाकप्पसुतं, दंसणजुत्ता इमं चरणे ॥५५७१॥

आयरियादि णाणनिमित्तं उवसंपज्जति । अहवा - “णाणे महाकप्पसुयं” ति -

नाणे महाकप्पसुयं, सीसत्ता केइ उवगते देइ ।

तस्सऽड्ढ उद्दिसिज्जा, सेच्छा खलु सा ण जिणआणा ॥५५७२॥

केसिं चि आयरियाणं कुले गणे वा महाकप्पसुयं अत्थि । तेहि गणसंठितो कया - “जो अम्मं आवकहियसीसत्ताए उवट्ठाइ तस्स महाकप्पसुयं दायव्वं, णो अण्णस्स” । अण्णतो गणे विज्जमाणे अविज्जमाणे वा महाकप्पसुतं उद्दिट्ठे आयरिए तम्मि गहिए सो पुरिल्लाणं चेव, ण वाएंतस्स, जेण तेसिं सा सेच्छा । ण जिणगणहरेहि भणियं - “आवकहियसीसत्ताए उवगयस्सेव सुयं देयमिति” ॥५५७२॥

दंसणट्ठा -

विज्जा-मंत-णिमित्ते, हेतूसत्थड्ढ दंसणट्ठाए ।

चरित्तट्ठा पुव्वगमो, अहव इमे होंति आएसा ॥५५७३॥

हेतुसत्थ-गोविदणिज्जुत्तादियट्ठा उवसंपज्जति ।

चरित्तट्ठा इमो आदेसो -

आयरिय-उवज्झाए, ओसण्णोहाविते व कालंगते ।

ओसण्ण छव्विहे खलु, वत्तमवत्तस्स भग्गणतां ॥५५७४॥

आयरिओ ओसण्णो जातो, ओघातितो वा गिहत्थो जातो, कालगतो वा । जत्ति ओसण्णो तो छण्हं अण्णतरो - पासत्थो, ओसण्णो, कुसीलो, संसत्तो, णीतितो, अहाछंदो य । जो य तस्स सीसो आयरियपदे जोग्गो सो वत्तो अवत्तो वा ॥५५७४॥



वत्तो खलु गीयत्थे, अव्वत्तवएण अहवऽगीयत्थे ।

वत्तिच्छ सार पेसण, अहवा सण्णे सयं गमणं ॥५५७५॥

वत्तो वएण, सुएण वत्तो गीयत्थो । एस पढमभंगो ।

वत्तो वएण, सुएण अवत्तो । एस अत्थतो वितियभंगो ।

अव्वत्तो वएण, सुएण वत्तो । एस अत्थतो ततियभंगो ।

अव्वत्तो वएण अहवा अगीयत्थ त्ति । एस चउत्थो भंगो ।

पढमभंगिल्लो जो वत्तो तस्स इच्छा गणं सारेति वा ण वा । अहवा - तस्स इच्छा अणं आयरियं उद्दिस्सि वा ण वा, जाव ण उद्दिमति ताव गणं सारवेति । अहवा - तं आयरियं हूरत्थं "सारेति" त्ति - चोदेति साधुसंघाडगपेसणेण । अह आसण्णे सो य आयरितो तो सयमेव गतुं चोदेति ॥५५७५॥

चोदणे इमं कालपरिमाणं -

एगाह पणग पक्खे, चउमासे वरिस जत्थ वा मिलती ।

चोयति चोयावेति य, अणिच्छे वट्टावए सयं तू ॥५५७६॥

अप्पणा चोदेति, सगच्छ-गरगच्छिच्चेहि वा चोतावेति, सब्बहा अणिच्छे समत्थो सयमेव गणं वट्टावेति ॥५५७६॥

अहवा -

अण्णं च उद्दिसावे, पंतावणट्टा ण संगहट्टाए ।

जति णाम गारवेण वि, मुएज्जऽणिच्छे सयं ठाति ॥५५७७॥

ण गच्छस्स संगहोवग्गहणिमित्तं आयरियं उद्दिस्सति, आतावणट्टा उद्दिस्सति ।

तत्थ गतो भणति - "अहं अण्णं वा आयरियं उद्दिस्सावेमि, जइ तुम्हे एत्ततो ठाणातो ण उवरमह" ।

सो चित्तेति "मए जीवंते अण्णं आयरियं पडिवज्जति, मुयामि पासत्यत्तणं", जइउवरतो तो सुंदरं । सब्बहा तम्मि अणिच्छे जइ समत्थो तो अप्पणा गच्छाधियो ठाति ॥५५७७॥ गतो पढमभंगो ।

इमो वितियभंगो -

सुतवत्तो वयवत्तो, भणति गणं ते ण सारिउं सत्तो ।

सगणं सारेहे तं, अण्णं व वयामो आयरियं ॥५५७८॥

असमत्थो अप्पणो गच्छं वट्टावेउं सो तं आयरियं ताव भजति - "अहं असमत्थो गच्छं वट्टावेउं तुम्हे चेव इमे सीसा, अहं च अण्णेसि सिस्सो होहामि", अहवा - "एते य अहं च अण्णं आयरियं वयामो उद्दिस्सामो" इत्यर्थः ॥५५७८॥

आयरिय उवज्झाए, अणिच्छंते अप्पणा य असमत्थो ।

तियसंवच्छरमद्धं, कुल्लगणसंधे दिसावंधो ॥५५७९॥

एवं पि भणिग्रो आयरिग्रो उवज्झाग्रो वा जाहे ण इच्छति संजमे ठाउं, गणाहिक्खे वा अप्पणो य असमत्थो य, ताहे कुलिच्चं आयरियं उद्दिंसति तिणिण वासे । ताहे तद्दिं ठितो तं परिसारेति चोदेति य । तिण्हं वरिसाणं परग्रो जं सच्चित्ताचित्तं सो कुलिच्चायरिग्रो हरति ताहे गणिच्चं उद्दिंसावेति वरिसं, ततो संचिच्चं छग्मासे उद्दिंसावेति ॥५५७६॥

कुलातो गणं, गणातो वा संघं संकमंतो आयरियं इमं भणाति -

सच्चित्तादि हरति णे, कुलं पि णेच्छामो जं कुलं तुज्झं ।

वच्चाग्रो अप्पणगणं, संघं च तुमं जति ण ठासि ॥५५८०॥

एवं भणति जति अभुद्धितो तो सुंदरं ॥५५८०॥

एवं पि अठायंते, तावेतुं अट्ठपंचमे वरिसे ।

सयमेव धरेति गणं, अणुलोमेणं व णं सारे ॥५५८१॥

अट्ठपंचमवरिसोवरि वएण वत्तीभूतो समत्थो सयमेव गणं वारेति, ठिग्रो वि तं आयरियं अणुलोमेहिं सारेति ॥५५८१॥

अहवा - वितियभंगिल्लो कुलगणसंघेसु नो उवसंपज्जति ।

कहं ?, उच्यते -

अहव जदि अत्थि थेरा, सत्ता परिउट्ठिउण तं गच्छं ।

दुहग्रो वत्तसरिसग्रो, तस्स उ गमग्रो मुणेयव्वो ॥५५८२॥

मुयवत्तो अप्पणा सुत्तयपोरिसीतो देति, गीयत्था थेरा गच्छंति परियट्ठंति, एस्स पढमभंगतुल्लो चेव भवति । “गमो” ति पढमभंगप्रकार एव, एसो वि आयरियं सारेति तावेति य ॥५५८२॥ गतो वितियभंगो ।

इमो ततियभंगो -

वत्तवग्रो उ अगीग्रो, जति थेरा तत्थ केति गीयत्था ।

तेसंतिए पढंतो, चोदे तेससति अण्णत्थ ॥५५८३॥

वत्तवयत्तणेण गणं रक्खेति चोदयति, असति थेराणं गीयत्थाणं अण्णमायरियं पव्वज्जसुएणं एगपक्खियं सह गणेण उवसंपज्जति ।

अहवा - ततियभंगिल्लो जइ अगीयत्तवत्तणग्रो गणं परियट्ठिउं असमत्थो थेरा य से गीयत्था तेसंतिए पढंति, अण्णे य थेरा गच्छयारियट्ठे कुसला ते गणं परियट्ठंति, एरिसो वि णो अण्णस्स उवसंपज्जति, असति थेराण उवसंपज्जति ॥५५८३॥ गतो ततियभंगो ।

इमो चउत्थभंगो -

जो पुण उभयावत्तो, वट्ठावग असति तो उ उद्दिंसति ।

सव्वे वि उद्दिंसंता, मोत्तूणमिमे तु उद्दिंसती ॥५५८४॥

जति थेरा पाढेंतया अत्थि गणं च वट्टावेंतया तो एसो वि ण उद्दिसति, अण्णं च वट्टावगयेराणं पुण असति उद्दिसति ॥५५८४॥

सव्वे वि आयरियं उद्दिसंता इमेरिसे आयरियं मोत्तुं उद्दिसंति -

संविग्गमगीतत्थं, असंविग्गं खलु तहेव गीयत्थं ।

असंविग्गमगीयत्थं, उद्दिसमाणस्स चउगुरुगा ॥५५८५॥

तिविथं पि उद्दिसंतस्स चउगुरुगा, अहवा - काल-तव-उभएहि गुरुगा कायव्वा ॥५५८५॥

एतेसु उद्दिट्ठेसु य अणाउट्ठंतस्स इमं कालगतं पच्छित्तं -

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेतो पहावती ।

छेदेण छिण्णपरिभाए, ततो मूलं तओ दुगं ॥५५८६॥

सत्तदिवसे चउगुरुगं । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहुं । अण्णे सत्तदिणे छग्गुरुं । अण्णे सत्तदिणे छेदो । मूलं एकं दिणं, अणवट्ठं एकदिणं । एककतीसइमे दिणे पारंचियं ।

अहवा - वितितो इमो आदेसो-एकवीसं दिवसे तवो पूर्ववत् । तवोवरि सत्तदिवसे चउगुरु छेदो । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहुछेदो । अण्णे सत्तदिवसे छग्गुरुछेदो, ततो मूलऽणवट्ठपारंचिया पणयालीसइमे दिवसे ।

अहवा - छेदे ततितो आदेसो - पणगादि सत्त सत्त दिणेहि णेयव्वो, एत्थ छत्तीमुत्तरसत्तदिवसे पारंचियं च पावति । जम्हा एते दोसा तम्हा संविग्गो गीयत्थो उद्दिसियव्वो ॥५५८६॥

छट्ठाणविरहियं वा, संविग्गं वा वि वयति गीयत्थं ।

चउरो वि अणुग्घाया, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५५८७॥

एयं पि संविग्गगीयत्थं छट्ठाणविरहयं । जति मामकं काहियं पासणियं संपसारियं उद्दिसावेति तो चउगुरुगा आणादिया दोसा ॥५५८७॥

छट्ठाणा जा णितिओ तच्चिरहियकाहिगादिया चउरो ।

ते वि य उद्दिसमाणो, छट्ठाणगताण जे दोसा ॥५५८८॥

गतार्थ । एत्थ वि सत्तरत्तादितवच्छेदविसेसा य सव्वे भाणियव्वा ।

एतस्स इमो अववातो - गीयत्थस्स संविग्गस्स असति गीयत्थं असंविग्गं पव्वज्जमुत्तेण एगपनिक्खयं उद्दिसति, एवं कुलगणसंधिच्चयं पि, एवंपि ता ओसण्णो गतो ॥५५८८॥

ओहावित-कालगते, जाविच्छा ता तह उद्दिसावेंति ।

अव्यत्ते तिविहे वी, नियमा पुण संगहट्ठाए ॥५५८९॥

जो ओहावितो सो सारुवितो लिंगत्थो गिहत्यो वा, नो विऽण्णेणं गवेमियव्वो, अण्णसागारियं च विण्णवियव्वो, जाहे णेच्छति अण्णा य अण्णं आयरियं इच्छति ताहे उद्दिसावेति । “अव्वत्तो तिविहो” पढमभंगवज्जा ततो भंगा, अहवा - तिविहो अव्वत्तो तिविहे वि कुत्ते गग मये य उद्दिसावेति । एतेति दोसह वि पगाराणं उद्दिसावेंतो नियमा संगहणिमित्तं उद्दिसावेति । कालगए वि एग चेव विही, णवरं - चोदण-तावना णदिथ ॥५५८९॥

वत्तस्मि जो गमो खलु, गणवच्छे सो गमो उ आयरिए ।

णिक्खिखणो तस्मि चत्ता, जमुद्धिसे तस्मि ते पच्छा ॥५५६०॥

जो वत्तस्म निदुत्तस्म गमो सो गमो गणवच्छेइए आयरियानं । इमं जाणानं - जइ जाग-द्वंजग-  
गिमित्तं गच्छति अयनो य से आयरिओ अंदिगो तस्स पासे निक्खिखिउं गच्छं अप्पविनितो तत्तिनो वा गच्छति ।

अहं से अप्पनो आयरिओ अंदिगो नो ते माहू जति तस्स पासे निक्खिखिउं गच्छति तो तेण ते  
चत्ता भवति, तन्हा ण निक्खिखिवा देववा । तेण ते जेण तेण पणारेण ते य धेनुं जत्थ गतो तत्थ पदमं  
अयानं निक्खिखति, पच्छा भगति - "जहा ने अहं, तहा ने इमे वि" । "तस्मि ते पच्छा" तस्स विस्ता  
भवति ॥५५६०॥

णिक्खिखणा अप्पाणो परं य संतमु तस्स ते देति ।

संवाडगं असंते, सो वि ण वावार्जणापुच्छा ॥५५६१॥

जहा अप्पा परो य निक्खितो तदा तस्स वि आयरियस्स कि वा जाया ?, जति ते संति ति  
अयनो य सहाया पहुँति ताहं तेण तस्स जेव दायवा, असंतेनु संवाडगं एणं देति, अवमेमा अयना गेहति । अह  
सज्जहा असहातो सज्जे वि गेहति, तेण वि ने कायज्जं, तस्स पुत्तस्स अणापुच्छाए सो ते ण वावारेति ॥५५६१॥

आयरियं निद्विहयं ओसणं वा जत्थ पच्छति तत्थियमं भणति -

ओद्वाधित-उस्सण्णे, भणति अणाहओ विणा वयं तुवमे ।

कमसीसमसागरिए, दुप्पडियरगं जतो तिण्हं ॥५५६२॥

पुव्वदं कंठं । ओसणस्स पुव्वपुत्तस्स कमा पादा सिरेण तेनु निवडति अणागरिए ।

सीसो भणति - "तस्स असंजयस्स कहं चलनेनु निवडिज्जइ" ।

आयरिओ भणति - "दुप्पडियरयं जतो तिण्हं" दुक्खं उवकारिस्स पच्चुवकारो किज्जति,  
तं ब्रह्म - नात्ता विट्ठो, सानिस्स, अन्मायरियस्स । अतो तस्स पावेनु वि पडिज्जति, य दोसो ॥५५६२॥

किं च -

जो जेण जस्मि ठाणस्मि, ठाविओ दंसणे व चरणे वा ।

सो तं तओ जुयं तस्मि जेव कानं मवे निरिणो ॥५५६३॥

सो सीसो तेण आयरिएण जाणाविनु ठविओ, इवाणि सो आयरिओ ततो जाणादिमावाओ जुतो,  
तं जुयं सो सीसो तेनु जेव जाणाविनु ठवेतो निरिणो भवति ॥५५६३॥

जे भिक्खु बुग्गाहवक्कंनाणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,

देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खु बुग्गाहवक्कंनाणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,

पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खु बुग्गाहवक्कंनाणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा देइ,

देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा  
पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं पडिच्छइ,  
पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं अणुपदिसइ,  
अणुपविसंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू॥२४॥

सव्वे सुत्ता भाणियव्वा -

वुग्गहवक्कंताणं, जे भिक्खू असणमादि देज्जाहि ।

चउलहुंग अट्ठहा पुण, णियमा हि इमं अवक्कमणं ॥५५६४॥

वुग्गहो कलहो, तं काउं अवक्कमति । एकग्गहणा तज्जातीयग्गहणमिति वचनात् अट्ठहि ठाणेहि  
गणाओ अवक्कमणे पणत्ते -

अब्भुज्जत ओहाणे, एक्केक्क-दुभेद होज्जऽवक्कमणं ।

णाणादिकारणं वा, वुग्गहो वा इहं पगतं ॥५५६५॥

अब्भुज्जयं दुविधं - अब्भुज्जतमरणेण अब्भुज्जयविहारेण वा । ओहाणं दुविधं - विहारोधावणेण  
लिङ्गोधावणेण वा, णाणट्ठा आदिग्गहणातो दंसणचरित्तट्ठा य, वुग्गहेण वा । एते उच्चारितसरिस ति काउं इह  
वुग्गहेण पगतं, वुग्गहेण वक्कंता । वुग्गहो ति कलहो ति वा भंडणं ति वा विवादो ति वा एगट्ठं ॥५५६५॥

के पुण ते वुग्गहवक्कंता ?, इमे सत्त -

बहुरयपदेस अव्वत्त समुच्छा दुग तिग अवद्विया चेव ।

सत्तेते णिण्हगा खलु, वुग्गहो होंत वक्कंता ॥५५६६॥

जेट्ठा सुदंसण जमालिऽणोज्ज सावत्थि-तिंदुगुज्जाणे ।

पंचसया य सहस्सं, ढंकेण जमालि मोत्तूणं ॥५५६७॥

रायगिहे गुणसिलए, वसु चोदसपुब्बि तीसगुत्ताओ ।

आमलकप्पा णगरी, मित्तसिरी कूर पिडडाई ॥५५६८॥

सेयविपोलासाढे, जोगे तद्विवसहिययव्वले य ।

सोधम्म-णलिणिगुम्मे, रायगिहे मुरियवलभदे ॥५५६९॥

मिहिलाए लच्छिवरे, महगिरि कोडिण आसमिते य ।  
 नेउणियणुप्पवाए, रायगिहे खंडरकखा य ॥५६००॥  
 नदिखेडजणवउल्लुग, महगिरि धणगुत्त अज्जगंगे य ।  
 किरिया दो रायगिहे, महातयो तीरमणिणाए ॥५६०१॥  
 पुग्गिमतंरंजि भूयगिह, वल्लमिरि सिरिगुत्त रोहगुत्ते य ।  
 परिवायपोडुसाले बोसणपडिसेहणा वादे ॥५६०२॥  
 विच्छु य सप्पे मूसम, मिगी वराही य काग पोयाई ।  
 एयाहिं विज्जाहिं, सो य परिच्चायगो कुसलो ॥५६०३॥  
 मोरी नउली विराली, वग्गी सिही य उल्लुगि ओवाइ ।  
 एयाओ विज्जाओ, गिण्ह परिच्चाय महणीओ ॥५६०४॥  
 सिरिगुत्तेणं छल्लुगो दम्मस विकड्डिउण वाए जिओ ।  
 आहरण कुत्तिआवण, चोयाल्लसएण पुच्छाणं ॥५६०५॥  
 वाए पराजिओ सो, निच्चिसओ कारिओ नरिंदेण ।  
 बोसावियं च नयरं, जयइ जिणो वद्धमाणो त्ति ॥५६०६॥  
 दसउर-नगरुच्छुवरे, अज्जरक्खिय पूसमित्तितियगं च ।  
 गोडा माहिल नवमडुमेसु, पुच्छाय विंक्कस्स ॥५६०७॥  
 पुडो जहा अवद्धो, कंचुडणं कंचुओ समन्नेइ ।  
 एवं पुडुमवद्धं, जीवं कम्मं समन्नेइ ॥५६०८॥  
 रहवीरपुरं नगरं, दीवगमुज्जाणमज्जकण्हे य ।  
 सिवभूइस्सुवहिम्मि, पुच्छा थेराण कहणा य ॥५६०९॥  
 उहाए पण्णत्तं, वोडिय-सिवभूइ उत्तराहि इमं ।  
 मिच्छादंसणमिणमो, रहवीरपुरे समुप्पण्णं ॥५६१०॥  
 चोदस वासाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्स नाणस्स ।  
 तो बहुरयाण दिट्ठी, सावत्यीए समुप्पन्ना ॥५६११॥  
 सोल्लस वासाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्स नाणस्स ।  
 जिवपएमियदिट्ठी, तो उसमपूरे समुप्पण्णा ॥५६१२॥  
 चोदा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।  
 तो अच्चत्तय दिट्ठी, सेयविआए समुप्पण्णा ॥५६१३॥

वीसा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।  
 सामुच्छेइयदिट्ठी, मिहिलपुरीए समुप्पन्ना ॥५६१४॥  
 अट्ठावीसा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।  
 दो किरियाणं दिट्ठी, उल्लुगतीरे समुप्पन्ना ॥५६१५॥  
 पंचसया चोयाला, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।  
 पुरिमंतरजियाए, तेरासियदिट्ठि उप्पन्ना ॥५६१६॥  
 छव्वाससयाइं नवुत्तराइं, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।  
 तो वोडियाण दिट्ठी, रहवीरपुरे समुप्पन्ना ॥५६१७॥  
 चोदस सोलस वासा, चोदावीसुत्तरा य दोन्नि सया ।  
 अट्ठावीसा य दुवे, पंचेव सया य चोयाला ॥५६१८॥  
 पंचसया चुलसीया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।  
 तो अवद्वियादिट्ठी, दसउरणयरे समुप्पन्ना ॥५६१९॥  
 वोडियसिवभूइओ, वोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती ।  
 कोडिन्न कोट्ट वीरा, परंपरा फासमुप्पन्ना ॥५६२०॥  
 पंचसया चुलसीओ, छच्चेव सया नवुत्तरा हुंति ।  
 नाणुप्पत्तीए दुवे, उप्पन्ना निव्वुए सेसा ॥५६२१॥  
 सावत्थी उसभपुर, सेअम्बिआ मिहिल उल्लुगातीरं ।  
 पुरिमंतरंजि दसपुर रहवीरपुरं च नयराइं ॥५६२२॥  
 सत्तेया दिट्ठीओ, जाइ-जरा-मरण-गम्भ-वसहीणं ।  
 मूलं संसारस्स उ, हवंति निग्गंथरूवेणं ॥५६२३॥  
 मोत्तूण एत्थ एक्कं, सेसाणं जावजीविया दिट्ठी ।  
 एक्केक्कस्स य एत्तो, दो दो दोसा मुणेयव्वा ॥५६२४॥

बहुरयादी जाव वोडिया -

एएसिं तु परूवण, पुच्चिं जा वन्निया उ विहिसुत्ते ।

स च्चेव णिरवसेसा, इहमुद्देसम्मि नायव्वा ॥५६२५॥

एनेमि परूवणा कायव्वा "विधिसुत्ते" त्ति जहा आवस्सणे सामाइय-णिज्जुत्तीण ॥५६२५॥

एतेसिं असणादी, वत्थादी वसहि-वायणादीणि ।

जे देज्ज पडिच्छेज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥५६२६॥

तेषां अत्रगादिं देते पडिच्छत्तं सव्वपदेसु चउत्तहं, अत्थे चउत्तुद, आणादिया य दोसा, अगवत्थपसंगा  
अण्णो वि दाहिति, सङ्गाग वि मिच्छत्तं जगेति ॥५६२६॥

दाणगहणे संवासओ य वायण पडिच्छणादी य ।

सरिसं पमासमाणा, जुत्तिमुवण्णेण ववहरंति ॥५६२७॥

“दाणे” ति अस्य व्याख्या -

गच्छेण ते उद्दिग्गा, अण्णे वा देते ददुं भासंति ।

नृणं एते पहाणा, विसादि संसग्गिए गच्छे ॥५६२८॥

अहं एते अत्रगादि देते गच्छं करेज्ज, तेग गच्छेण उद्दिग्गेण पलावा भवेज्ज । अण्णो वा दिज्जंतं  
ददुं भवेज्ज - “नृणं एते चैव पहाणा” । तेषां वा किं चि अहमावेग गेल्लणं होज्ज, ते भवेज्ज - “एतेहि  
किं वि विसादि दिग्ग”, एत्थ गेह्ग-कट्टुगादिया दोसा । एवं दाणसंसग्गीए अणीयसेहादिया चोदिता नेसु चैव  
वएज्जा ॥५६२८॥

“अहणे” ति अस्य व्याख्या -

तेषां पडिच्छणे आणा, उग्गममविमुद्ध आभिओगं वा ।

पडिणीयया व देज्जा, बहुआगमियस्स विसमादी ॥५६२९॥

तेषां हत्थातो भत्तादि पडिच्छत्तस्स तित्थकरागादिक्कमो, उग्गमादि असुद्धं परिमुज्जति, वसीकरणं  
वा देज्ज “अहं एते पडिक्कओ” ति पडिगोयतणे । अहवा - एस बहु आगमित ति विसादि देज्ज ।

एगवसहिंसंवासेग सेहा मिद्धन्मा सीदंति, तेषां वा चरियं गेहंति ।

नुय-व-यग-पडिच्छणादिनु वि संसग्गिमादिदोसा ।

जुत्तिमुवण्णदिट्ठिगे वा सरिसं चरगकरणं कहंते सेहादी हरंति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा  
गे किं चि तेषां देज्जा, पडिच्छेज्ज वा, य वा संवसेज्जा । एवं संकरेणेग पुव्वमगिया दोसा परिहरिया भवति ।  
॥५६२९॥

भवे कारणं -

असिंवे ओमोयरिए रायदुडे भए व गेल्लणे ।

अट्ठाण रोहए वा, अयाणमाणे वि वितियपदं ॥५६३०॥

असिवादिक्कारणेहि तेषां दिज्जति पडिच्छति वा ॥५६३०॥

इमं गेल्लणे -

गेल्लणं मे कीरति, न कीरती एव तुत्थम भाणियम्मि ।

एस गिल्लाणा एत्थं, गवसणा णिहओ सो य ॥५६३१॥



एतत्थ गामे साधू गच्छंता भणिता - "तुव्भं गिलाणस्स किं वेयावच्चं कीरइ, न कीरइ वा" ।

साधू भणति - "किं वा ते" ।

गिही भणइ - "एस गिलाणो तुव्भसंतिओ ।"

एत्थ गामे साहुणा पविसिउं गविट्ठो जाव णिण्हतो सो ॥५६३१॥

जणपुरतो फासुएणं, अप्फासुयमग्गणे असमणो उ ।

पण्णवणपडिक्कामण, अविसेसित णिण्हए वा वि ॥५६३२॥

जणसमवखं उग्गमुप्पादणेसणामुद्धं च्छेण करेति, जाहे सुद्धं ण लभति सो य असुद्धं भगति ताहे लोगस्स पुरओ उस्सरगं पण्णवेति भणति य - "एस असमणो" ।

तं पि भणति - "जति तुमं णिण्हगदिट्ठिओ पडिक्कमसि पासत्थादित्तणओ वा तो ते सव्वहा करेमो ।" तहा य पण्णवेति जहा सो तहाणाओ पडिक्कमति । अहवा - जत्थ साधूणं णिण्हगाण य विसेसो ण णजइ किंचि ॥५६३२॥

दुक्खं खु निरणुकंपा, लोए अदेते य होति उट्ठाहो ।

सारूवम्मि य दिस्सति, दिज्जति तेणेवमादीसु ॥५६३३॥

जइ वि सो ओसणो णिण्हओ वा तहावि अकज्जंते निरणुकंपया भवति, सा य दुक्खं कज्जइ, लोगो य तत्थ उट्ठाहं करेति - "जइ वि पव्वजाए एरिसं अणाहत्तणं ण परोप्परं कतोवकारियाओ भलं पव्वजाए," सारूपं सरिसं लिगं दीसति, एवमादि कारणेहि करेतो सुद्धो ॥५६३३॥

जे भिक्खू विहं अणेगाहगमणिज्जं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२५॥

"जे" ति - णिदेसे, भिक्खू पुव्ववणिज्जतो । विहं णाम अट्ठाणं, अणेगेहि अहेहि जं गम्मति तं अणेगाहगमणिज्जं, अहो णाम दिवसो । अहवा - अणेगेहि अहेहि गमणिज्ज अणेगाहगमणिज्जं ।

अकारणेण गमणं पडिसिद्धं ।

किं कारणं गमणं पडिसेहेति ?, जम्हा एत्थ गम्ममाणे अणेगा संजमाताए दोसा पसज्जंति । जम्मि विसए गुणा तवणियमसंजमसज्जायमादिया तं विसय, "लाढे" ति - साहू, जम्हा उग्गमुप्पादणेसणामुद्धेण आहारोवधिणा संजमभारवहणट्ठयाए अप्पणो सरीरगं लाढेतीति लाढो, विहारायेति । दप्पेण देसदंसणाए विहरति । "संथरमाणेसु जणवएसु" ति आहारोवहिवसहिमादिएहि सुलभेहि जणवए, तं जणवयं विहाय पव्वज्जए तस्स पव्वज्जतो सुद्धं सुद्धेण वि गच्छमाणस्स चउलहुं । एस सुत्तयो ।

इमो णिज्जुत्ति-वित्थरो -

विहमद्धानं भणितं, णेगा य अहा अणेगदिवसा तु ।

सति पुण विज्जंतम्मी, लाढे पुण साहुणो अक्खा ॥५६३४॥

गयत्था । विहं णाम अट्ठा ।

अट्ठाणं पि य दुविहं, पंथो मग्गो य होइ नायव्यो ।

पंथम्मि णत्थि किंची, मग्ग सगामो तु गुरु आणा ॥५६३५॥

तं दुविधं - पंथो मगो य । पुणो पंथो दुविहो - छिण्णो अछिण्णो य । छिण्णे णत्थि किञ्चि,  
सुणं सव्वं । अछिण्णे पल्लिवड्ढता वा अत्थि । गामाणुगामि मगो । पंथे चउगुग्गा, मगो चउलहुं. आणादिया  
य दोसा ॥५६३५॥

तं पुण गमेज्ज दिवा, रत्तिं वा पंथं गमणमगो वा ।

रत्तिं आदेसदुगं, दोसु वि गुरुगा य आणादी ॥५६३६॥

तं पंथं मगं वा दिवसओ वा राओ गच्छति । राइसद्दे आदेसदुगं - संभाराती, संभावगमो वा राती ।

कहं ?, उच्यते - संभा जेण रायति सोभति दिप्पति तेण संभाराती । संभावगमो वियालो ।  
अहवा - संभावगमो राती ।

कहं ?, उच्यते - जम्हा संभावगमे चोर-पारहारिया रमंति तेण संभावगमो राती । संभाए  
जम्हा एते विरमंति तेण संभा विकालो । पंथं मगं वा जइ रातीए विगाले वा गच्छइ तो चउगुग्गा  
॥५६३६॥

तत्थ मगो ताव इमे दोसा -

मिच्छत्ते उड्डाहो, विराहणं होति संजमाताए ।

इरियाति संजमम्मी, छक्काय अचक्खुविसयम्मी ॥५६३७॥

“मिच्छत्ते उड्डाहो” दोहं विभासा -

किं मण्णे णिसिगमणं, जाती ण सोहंति वा कहं इरियं ।

जतिवेसेण व तेणा, अडंति गहणादि उड्डाहो ॥५६३८॥

इहलोकचत्तकज्जाणं परलोकज्जुज्जताणं किं रातो गमणं ? किं मण्णे दुट्ठचित्ता एते होज्जा ? कहं वा  
इरियं सोहंति, इरिउवत्ता वा जंति ?, जहा एयं असच्चं तहा अणं पि मिच्छत्तं जणेज्जा, जइवेसेण वा तेण  
त्ति काउं रातो अडंता गहिया कट्ठणववहारादिसु पदेसु उड्डाहो ॥५६३८॥

“विराहण संजमाताए” एसा विभासा -

संजमविराहणाए, महव्वया तत्थ पढमे छक्काया ।

वित्तिए अतेण तेणे, तइए अदिन्नं तु कंदादी ॥५६३९॥

संजमविराधणा दुविधा - मूलगुणे उत्तरगुणे य । मूलगुणे पंचमहव्वया, पढमे य महव्वए छक्काय-  
विराहणं करेति, वित्तिए महव्वए अतेणं तेणमिति भासेज्जा, तत्तिए महव्वए कंदादि अदिण्णा गेण्हेज्ज ॥५६३९॥

अहवा -

दियदिन्ने वि सचित्ते, जिणत्तेणं किमुत सव्वरीविसए ।

जेसिं च ते सरीरा, अविदिण्णा तेहि जीवेहिं ॥५६४०॥

सचित्तं जिणेहिं. णाणुण्णायं तेण दिवसतो वि तेणं, रात्री रातो-वा अदिण्णं, अहवा - जेसिं ते  
कंदादिया सरीरा जीवाणं तेहिं वा अदिण्णं ति तेणं ॥५६४०॥

पंचमे अणसणादी, छट्टे कप्पो व पढम वितिया वा ।

भग्गवओ त्ति मि जाओ, अपरिणओ मेहुणं पि वए ॥५६४१॥

पंचमे त्ति वते अणसणिज्जं मेहुंतस्स परिणहो भवति, छट्टे त्ति रातीभोयणे अट्ठाणं कप्पं भुजंतस्स रातीभोयणभंगो भवति । पढमो त्ति-खुहापरीसहो वितिओ पिवासापरीसहो तेहि आतुरो राति भुजेज्ज वा पिएज्ज वा, एगव्रतभंगे सव्ववयभंगो त्ति कावं मेधुणं पि सेवेज्जा । अहवा - अपरिणतो अबुद्धघम्मत्तणओ दिया रातो सत्ये वच्चमाणे काइयानिमित्तं उसवको, अगारी त्ति काइ उसवका, अप्पसागारिए तं पडिसेवेज्ज ॥५६४१॥

इरिया इति अस्य व्याख्या -

रीयादसोधि रत्ति, भासाए उच्चसद्वाहरणं ।

ण य आदाणुस्सग्गे, सोहए काया य ठाणादि ॥५६४२॥

राओ इरियासमिद्धं न सोहेइ । भासासमिद्धे वि असमिओ पंथाइविप्पणट्टे उच्चसद्देण वाहरेज्जा । एसणासमिति ण संभवति, रातो दिवसतो वा अट्ठाणं पढमवितियपरीसहाउरो एसणं पेलेज्जा । आदाणणिवखेव-समितीए ठाणणिसीदणाणि वा करंतो रातो ण मोहेति । काइयादिरिट्ठवणं पि करंतो थंडिल्लं पि ण सोहेति ॥५६४२॥ एसा सव्वा संजमविराहणा ।

इमा आयविराहणा -

वाले तेणे तंह सावए य विसमे य खाणु कंटे य ।

अकम्हा भय आतसमुत्थं रत्ति मग्गे भवे दोसा ॥५६४३॥

सप्पादी वाला तेसु ठसिज्जति, उवकरणसरीरतेणा ते उवकरणं संजतं वा हरेज्जा, सीहादितावएण खज्जति, विसमे पडियस्स अण्णतरगा य विराहणा हवेज्जा, खाणुकंटे वा पि सप्पो हवेज्जा, अकम्माद भयं अहेतुकं भवति, राओ मग्गे वि एते दोसा, किमुत पंथे ॥५६४३॥

इमं वितियपदं -

कप्पति तु गिलाणट्ठा, रत्ति मग्गो तहेव संभाए ।

पंथो य पुव्वदिट्ठो, आरक्खिओ पुव्वभणितो य ॥५६४४॥

आरक्खिओ त्ति दंढवासिगो, पुव्वामेवं भणति अम्हे गिलाणादिकारणेण रातो गमिस्सामो, मा किञ्चि छलं काहिसि । अणुणाते गच्छति, सेसं कंठं ॥५६४४॥ मग्ग त्ति गतं ।

इदानीं पंथो भणति -

दुविहो य होइ पंथो, छिण्णद्धानंतरं अछिण्णं च ।

छिण्णे ण होइ किंची, अछिण्णे पल्लोहि वड्ढाहि ॥५६४५॥

इमो विधी -

छिण्णेण अछिण्णेण च, रत्ति गुरूगा तु दिवसतो लहूगा ।

उद्धरे पवज्जण, सुद्धपदे सेवती जं च ॥५६४६॥

उद्धरे जइ अद्धानं पञ्चजति तस्य सुदंसुद्धेण वि गच्छमाणस्स एयं पच्छित्तं, जं च अकप्पादि किं नि संवति तं सच्चं पावति ॥५६४६॥

इमा आयविराहणा -

वात खलु वात कंटग, आवडणं विसम-खाणु-कंटेसु ।

वाले सावय तेणे, एमाइ होति आयाए ॥५६४७॥

खलुगा जाणुगादिसंवाणा वातेण धेप्पंति, चम्मकंटगो वातकंटगो अहवा 'गृद्धिसी हह्वागृद्धिसी वा कायकंटगो वा । सेसं कंठ्यं ॥५६४७॥ एसा आयविराहणा ।

इमा सजमविराहणा -

छक्कायाण विराहण, उवगरणं वालवुद्धसेहा य ।

पढमण व धितिएण व, सावय तेणे य मेच्छे य ॥५६४८॥

अयंढिलेसु पुढविमादिच्छहं कायाणं संवट्टणादिविराहणं करंति, वालवुद्धसेहा पढमवितियपरीसहेहिं पग्गिताविज्जति, साधू उज्झिअं सावओ सावएण वा खज्जेज्जा । तेणेहिं मेच्छेहिं वा उवकरणं खुट्टुगादि वा द्वीरेज्जा ॥५६४८॥

२ उवकरणं त्ति एयस्स इमं वक्खाणं -

उवगरण-गेण्हणे भार-वेदणे तेणगम्म अधिकरणं ।

रीयादि अणुवओगो, गोम्मिय भरवाह उट्टाहो ॥५६४९॥

नंदिपडिगह-अद्धानकप्प दुल्लिगमादिपंथोवकरणं च जइ गिण्हंति तो भारेण वेयणा भवति, ३ विहट्टप्फडा य तेणगगम्मा भवति, तेणेहिं वा उवकरणे गहिंए अधिकरणं, भारवकंता य इरियोवउत्ता ण भवति, बहूवकरणा वा गोमिएहिं धेप्पंति, गोमिया य चित्तेति उल्लावेंति य - "अहो ! बहुलोभा भारवहा य" एवं उट्टाहो भवे । अहवा - एतद्दोसभया उवकरणं उज्झंति तो जं तेण उवकरणेण विणा विराहणं पावेंति तमावज्जंति ॥५६४९॥

इमं पंथोवकरणं -

चम्मकरग सत्थादी, दुल्लिगकप्पे य चिलिमिलिग्गहणे ।

तस विपरिणमुट्टाहो, कंदादिवहो य कुच्छा य ॥५६५०॥

जइ चम्मकरगो ण धेप्पति सत्थकोसगं वा, "दुल्लिगं" वा गिहत्थलिगोवकरणं अण्णपासंडिय-लिगोवकरणं वा, "कप्प" त्ति-अद्धानकप्पं, चिलिमिणि त्ति, एतेसि अग्गहणे इमे दोसा जहासंखं पच्छद्धं भणिया । चम्मकरग अग्गहणे तसविराहणा, पिप्पलगुलिया गोरस-पोत्तगादि अग्गहणे सेहमादियाण विपरिणामो भवति, पिप्पलगदिसत्थेण पुण पलंवे विकरणे काउं आणिज्जंति, दुल्लिगेण विणा रातो गेण्हंताण पिसियादि वा उट्टाहो भवति । अद्धानकप्पेण विणा कंदादियाण छ्ह वा कायाण विराहणा भवति, चिलिमिलियं विणा मंडलीए भुंजंताणं जणो दुगंछति ॥५६५०॥

पंथजोग्गोवकरण अग्गहणे अजयकरणे य इमे दोसा -

अपरिणामगमरणं, अतिपरिणामा य होंति पित्थक्का ।

णिग्गत गहणे चोदित, भणंति तदया कहं कप्पे ॥५६५१॥

“अकप्पियं” ति णाउं अपरिणामगो ण गेण्हति, अगेण्हणे मरति । अद्धाने अकप्पियगहणं दट्ठं प्रतिपरिणामा’ णित्यक्का” णिल्लज्जा भवंति, अद्धानातो णिग्गया अकप्पं गेण्हता चोदिता — “मा गेण्हहि त्ति, ण वट्ठति” ते पडिभणंति — “तत्तिया अद्धाने कहं कप्पे” ॥५६५१॥

काउडीए विणा इमे दोसा —

तेणभयोदककज्जे, रत्तिं सिग्घगति दूरगमणे य ।

वहणावहणे दोसा, वालादी सल्लविद्धे य ॥५६५२॥

तेणमया रातो सिग्घं गंतव्वं, उदगणिमित्तं जहा मरुविसए रातो सिग्घं दूरं च गंतव्वं । तत्थ कावोडीए वालवुद्धा असह सल्लविद्धा उवकरणं च वोढव्वं, अह ण वहंति तो एते परिवत्ता भवंति । उवकरणं पि छड्डेयव्वं । अह्वा — “तेण” त्ति-तेणभए डंडचिलिमिली घेप्पति । अकप्पणिज्जकज्जे परतत्तियउवकरणं । उदगकज्जे चम्मकरगो, उदगकज्जे चेव गुलिगगहणं, उदगगहणद्वया दत्तिगहणं । रातो सिग्घगतिगमणे तलियगहणं । दूरं गंतुं सत्थो ठाड्ढस्सति तत्थ वालादिसल्लविद्धवहणद्वया कावोडी । सल्लुद्धरणादिणिमित्तं सत्थकोसो घेप्पाइ । एवमादिउवकरणं वहतो भारमादिया दोसा, अवहंतस्स आयसंजमविराघणादिया दोसा, तम्हा णिक्कारणे अद्धाने णो पवज्जेज्ज ॥५६५२॥

कारणे पवज्जति तत्थ इमो कमो —

वित्तियपदं गम्ममाणे, मग्गे असतीए पंथजयणाए ।

पडिपुच्छिऊण गमणं, अछिण्णपल्लीहि वत्तियाहिं ॥५६५३॥

पढमं मग्गेण गंतव्वं । असति मग्गस्स जणवयं पुच्छिऊण अछिण्णपंथेण पल्लिवत्तिगादीहिं गंतव्वं, ततो छिण्णेण ॥५६५३॥

इमेहिं कारणेहिं पंथेण गम्मति —

असिंवे ओमोयरिए, रायदुड्डे भए व आगाढे ।

गेलण्ण उत्तिमड्डे, णाणे तह दंसण चरित्ते ॥५६५४॥

अण्णतरे वा आगाढे, जहा — सुवम्मसामिगणहरस्स मासकप्पे असंपुण्णे रायगिहे णगरे तणकट्ठधारगो दमगो पव्वइतो । तं भिक्खं हिडंतं लोगो भणति—“तणकट्ठधारगो” त्ति । तस्स असहणं, सुवम्मस्स अभयाऽऽपुच्छणं ।

अभयस्स पुच्छा, कहणं “सेहस्स सागारियं” ति, तिकोडिपरिच्चागो विभामा —

एएहि कारणेहिं, आगाढेहिं तु गम्ममाणेहिं ।

उवगरण पुव्वपडिलेहिण सत्थेण गंतव्वं ॥५६५५॥

पंथजोगोवकरणपडिलेहा गहणं, अह पुव्वं सत्थं पडिलेहेउं मुद्धे ण तेण मह गमणं ॥५६५५॥

असिंवे अगम्ममाणे, गुरुगा दुविहा विराहणा नियमा ।

तम्हा खलु गंतव्वं, विहिणा जो वणिण्यो हेट्ठा ॥५६५६॥

दुविहा विराहणा — आय-संजमेनु । अह्वा — अप्पगो परस्स य । हेट्ठा ओहणिज्जुत्तीए जो गमो भणितो, सेसा वि घोमोदरियादमो जहेय ओहणिज्जुत्तीए तहा भाजियरा ॥५६५६॥

उवगरण पुव्वभणितं, अप्पडिलेहेंते चउगुरु आणा ।

ओमाण पंथ सत्थिय, अतियत्ति अप्पपत्थयणे ॥५६५७॥

उवकरणं चम्मकरादी, जं वा वक्खमाणं तं अणेण्णमाणस्स सत्थं वाऽपडिलेहंतस्स चउगुराणा । अपडिलेहीए दोसा भवंति - ओमाण पेल्लिओ व होज्जा, सत्थवाहो अतियत्ती पासत्थो वा पंतो होज्ज, सत्थो वा अप्पपत्थयणो अप्पसवलो होज्ज, अणो वा पंथिया तत्थ पंता होज्ज । तम्हा एयदोसवरिहणत्थं पडिलेहियव्वो सत्थो ॥५६५७॥

सो केरिसो सत्थपडिलेहगो -

रागदोसविमुक्को, सत्थं पडिलेहे सो उ पंचविहो ।

भंडी वहिलग भरवह, ओदरिय कप्पडिय सत्थो ५६५८॥

सो सत्थो पंचविहो - भंडि त्ति गंडी, वहिलगा उट्टवलिदादी, भारवहा पोट्टलिया वाहगा, उदरिया णाम जहिं गता तहिं जेव रुवगादी छोटुं समुद्दिंसंति पच्छा गम्मति, अहवा - गहियसंबला उदरिया, कप्पडिया भिवल्लायरा ॥५६५८॥

रागदोसिए इमे दोसा -

गंतव्वेदसरागी, असत्थ सत्थं करेति जे दोसा ।

इयरो सत्थमसत्थं, करेति अच्छंति जे दोसा ॥५५५९॥

जस्स गंतव्वे रागो सो जत्ति सत्थपडिलेहगो सो असत्थं पि सत्थं करेज्जा, तेण कुसत्थेण गच्छंताण जे दोसा तमावज्जति । “इयरे” त्ति जो गंतव्वो दोसी सो सुउक्कमाणमत्थं पि असत्थं करेति, तत्थ असिवादिसु अच्छंताण जे दोसा ते पावति ॥५६५९॥

उप्परिवाडी गुरुगा, तिसु कंजिमादि संभवो होज्जा ।

परिवहणं दोसु भवे, बालादी सल्ल-गेलण्णे ॥५६६०॥

भंडीसु विज्जमाणानु जइ वहिलगेसु गच्छति तो चउगुराणा, एवं सेसेसु वि । आदिल्लेसु तिसु कंजियमादिपाणगसंभवो होज्ज, दोसु भंडिवहिलगेसु परिवहणं होज्ज ।

केसि परिवहणं ?, उच्यते - बालादीणं, आदिसद्गहणं वुट्ठाणं दुव्वलाणं खयकियाण य सल्ल-विद्धाण गिलाणाण य ॥५६६०॥ सत्थं पडिलेहंति तम्हा सत्थो पडिलेहियव्वो ।

सत्थे इमं पडिलेहियव्वं -

सत्थं च सत्थवाहं, सत्थविहाणं च आदियत्तं च ।

दव्वं खेत्तं कालं, भावोमाणं च पडिलेहे ॥५६६१॥

पुव्वद्धस्स इमा वक्खा -

सत्थे त्ति पंचभेदा, सत्थाहा अट्ठ आतियत्तीया ।

सत्थस्स विहाणं पुण, गणिमाति चउव्विहेक्केक्कं ॥५६६२॥

सत्यस्स पंच भेदा - भंडीमादि । सत्यवाहो अद्विहो । घ्राइयत्तिया वि अद्विहा उरि भणिहिति । सत्यविहाणं पण गणिमादि चउव्विधं, गणिमं पूगफलादि, घरिमं जं तुलाए दिज्जति खंडसक्करादि, भेज्जं घृततंदुलादि, पारिच्छं रयणमोत्तियादि । “एक्केक्के” ति वहिल्लगेसु वि एयं चउव्विहं । भारवहेसु वि एवं चउव्विहं । उदरियकप्पडिण्णमु तं भंडं चउव्विहं भाणियव्वं ॥५६६२॥

दव्वादि चउक्कं च पडिलेहेज्ज, तत्थ दव्वे -

अणुरंगादी जाणे, गुंठादी वाहणे अणुणवणे ।

धम्मो ति व भत्ती य व, बालादि अणिच्छे पडिक्कुट्टं ॥५६६३॥

अणुरंगा णाम धंसिओ । जाणा सगडिगातो वा वाहणा । गुंठादी - गुंठो घोडगो, आदिसदातो प्रसो उट्टो हत्थी वा । ते अणुणविज्जंति - जइ अहं कोइ बालो आदिसदाओ बुड्ढो दुव्वलो गिलाणो वा गंतुं ण सक्केज्जा सो तुव्वेहि चडावेयव्वो, जइ अणुजाणंति धम्मेण तो तेहि समं सुद्धं गमणं । अह मुल्लेण विणा णेच्छंति तो तं पि अब्भुवगच्छिज्जति । अह मुल्लेण वि णेच्छति तो तेहि समं पडिक्कुट्टं गमणं, ण तेहि समं गम्मति ॥५६६३॥

किं च इमेरिसभंडभरितो इच्छिज्जति सत्यो -

दंतिक-गोर-तेल्ले, गुल-सप्पिएमातिभंडभरितासु ।

अंतरवाघातम्मि उ, दैतेतिधरा उ किं देउ ॥५६६४॥

मोदग-साग-वट्टिमादी दंतखज्जयं बहुविहं दंतिकं ।

अहवा -- तंदुला दंतिका, सव्वं वा दंतखज्जयं दंतिकं । गोर ति गोधूमा । तहा तेल्लगुलगणि-णाणाविघाण य धण्णाण भंडीओ जइ भरियातो तो सो दव्वतो सुद्धो ।

किं कारणं ?, अंतरा वाघाए उप्पणो तं अप्पणा खंति अम्हाणं वि दंति । “इहरह” ति जइ कुंकुम-कत्थूरिय - तगर पत्तचोय-हिगु-संखलोयमादी अल्लज्जदव्वभरिए अंतरा वाघाते संवले गिट्ठिए किं दिनु, तम्हा एरिसभरिएण ण गंतव्वं ॥५६६४॥

अंतरा वाघातो इमो -

वासेण णदीपूरेण वा वि तेणभय हत्थि रोहे वा ।

खोभो जत्थ व गम्मति, असिवं एमादि वाघातो ॥५६६५॥

अंतरा गाढं वासमारद्धं, चउमानवाहिणी वा महानदी पूरेण घागता, घगता वा चोरभणं, दुद्धहत्थिणा वा पंचो रद्धो, जत्थ वा सत्तो गंतुकामो तत्थ रोहो, रज्जमोभो वा नत्थ, अगियं वा तत्थ, एवमादिकज्जेनु अंतरा सणिवेसं काउं सत्यो प्रच्छति ॥५६६५॥ एवं दव्वतो पडिलेहा ।

इमा खेत्त-काल-भावेसु -

खेत्तं जं बालादी, अपरिस्संता वतंति अद्धानं ।

काले जो पुव्वण्हे, भावे सपक्ख-परपक्खणादिणो ॥५६६६॥



जत्तियं खेतं बालवुद्धादिगच्छो अपरिथांतो गच्छति तत्तियं जति सत्यो जाति तो खेतप्रो सुद्धो ।  
कालो जो उदयवेलाए पत्थिते पुत्रप्पे ठाति सो कालतो सुद्धो । भावे जो सपक्ख-परपक्खभिवत्तायरेहि  
आणाइणो सो भावप्रो सुद्धो ॥५६६६॥

एक्केक्को सो दुविहो, सुद्धो ओमाणपेल्लितो चव ।

मिच्छत्तपरिग्गहितो, गमणाऽऽदियणे य ठाणे य ॥५६६७॥

“एक्केक्को” त्ति मंडिवहिलगादिसत्यो दुविहो — सुद्धो असुद्धो य । सुद्धो अणोमाणो, ओमाणपेल्लिओ  
असुद्धो । सत्यवाहो आतियत्ती वा जे वा तत्थ अक्खहाणा एते मिच्छद्दिट्ठी । एतेहि सो सत्यो परिग्गहितो  
होज्ज ॥५६६७॥

ओमाणपेल्लिओ इमेहि होज्ज —

समणा समणि सपक्खो, परपक्खो लिंगिणो गिहत्था य ।

आता संजमदोसा, असती य सपक्खवज्जेणं ॥५६६८॥

पुव्वद्धं कंठं । बहून् सपक्ख-परपक्खभिवत्तायरेसु अप्पञ्चंताणं आयविराहणा, कंदादिग्गहणे वा  
संजमविराहणा । अणोमाणस्स असतीते सपक्खोमाणं वज्जिता परपक्खोमाणं गंतव्वं, तत्थ जणो भिवत्तग्गहणे  
विद्येसं जाणति ॥५६६८॥

“समणे” त्ति अस्य व्याख्या —

गमणे जो जुत्तगती, वड्ढाप्पल्लीहि वा अल्लिण्णेणं ।

थंडिल्लं तत्थ भवे, भिवत्तग्गहणे य वसही य ॥५६६९॥

जुत्तगती गाम मिदुगती — न शीघ्रं गच्छतीत्यर्थः । अल्लिण्णपदेण वड्ढपल्लीमादीहि वा गच्छति,  
तत्थ थंडिल्लं भवति, वड्ढपल्लीहि य भिवत्त लमइ, वसही य लब्धमति ॥५६६९॥

“आदियणे” त्ति अस्य व्याख्या —

आतियणे भोत्तूणं, ण चलति अवरण्हे तेण गंतव्वं ।

तेण परं भयणा उ, ठाणे थंडिल्लठायीसु ॥५६७०॥

आतियणे त्ति जो भुंजणवेलाए ठाति, भोत्तूण य अवरण्हे जो ण चलति तेण गंतव्वं । तेणं परं भयणे  
त्ति भयणा गाम जइ अवरण्हे भोत्तुं चले तत्थ जइ सव्वे समत्था गंतुं तो सुद्धो, अह ण सक्कंति तो असुद्धो,  
ण तेण गंतव्वं । ठाणे त्ति जो सत्यो सण्णिवेसथडिल्लेसु ठाति सो सुद्धो, अथडिल्ले ठाति असुद्धो ॥५६७०॥

जं वुत्तं सत्यहा अट्ठ आयियत्ती य अस्य व्याख्या —

पुराणसावग सम्मदिट्ठि अहामद् दाणसद्धे य ।

अणमिग्गहिते मिच्छे, अमिग्गहिते अण्णतित्थी य ॥५६७१॥

पुराणो, गहिताणुव्वतो सावगो, अविरयसम्मदिट्ठी, अहामद्गो, दाणसद्धो, अणमिग्गहितमिच्छो  
अमिग्गहितमिच्छद्दिट्ठी, अण्णतित्थिओ य, एते सत्याहिवा अट्ठ । आतियत्तिया वि एते चव अट्ठ ॥५६७१॥



अद्वाणं पडुच्च भंगदंसणत्थं भण्णति -

सत्थपणए य सुद्धे, य पेळ्ळिते कालऽकालगम-भोजी ।

कालमकालट्ठाई, सत्थाहऽट्ठाऽऽदियत्ती वा ॥५६७२॥

सत्थपणगं ति पंच सत्था, एयं गुणकारपयं, ते य सत्था सुद्धा ।

कहं ?, उच्यते - सपक्व-परपक्वतोमाणग्रपेल्लिय त्ति, कालग्रकाले गमणं, कालग्रकाले भोयणं, कालग्रकालणिवेशी, ठाई त्ति थंडिलग्रयंडिलठाई । एते चउरो सपडिपक्वा सोलसभंगकरणपया । अट्ठु सत्थवाहा अतियत्ति ते दो वि गुणकारपया - एत्थ काले गच्छइ, काले भुंजइ, काले निवेशइ, थंडिले ठाई-एए सुद्धपया, पडिपक्वे असुद्धा । सत्थवाहादिपया पढमा चउरो नियमा भट्ठा, पच्छिमा चउरो भयणिजा भवन्ति, अइयत्ती वि ॥५६७२॥ एसा भट्ठाहुकया गाहा, एईए अत्थग्रो सोलस भंगा उत्तरभंगा, उत्तरभंगविगप्पा य सव्वे सूत्तिया ।

जतो भण्णति -

एतेसिं च पयाणं, भयणाए सयाइ एगपणं तु ।

वीसं च गमा णेया, एत्तो य सयग्गसो जतणा ॥५६७३॥

सत्थपणगपदं, चउरो य सोलसभंगपदा, अट्ठु सत्थवाहा, आदियत्ति अट्ठु पदा य, एतेसिं पदाणं संजोगे भयण त्ति भंगा, एतेसिं एक्कावणसया भवन्ति वीसं च भंगा । एत्थ सत्थेसु सुद्धानुद्धेसु सत्थवाहाइयत्तेसु य भट्ठपत्तेसु अण्ववहुचिताए सयग्गेहि जयणा भवति ॥५६७३॥

एसेवत्थो फुडो कज्जति -

कालुट्ठाई कालनिवेशी, ठाणट्ठाई कालभोई य ।

उग्गयऽणत्थमियथंडिल मज्झण्ह धरंत मूरे वा ॥५६७४॥

कालुट्ठाती उग्गए आइच्चे दिवसतो जो गच्छति, कालनिवेशी जे अणत्थमिए आदिच्चे धवकति, ठाणट्ठाती थंडिल्ले यक्कइ, कालभोती जो मज्झण्हे भुजइ, अणत्थमिए वा ॥५६७४॥

एतेसिं तु पयाणं, भयणा सोलसविहा तु कायच्चा ।

सत्थपणएण गुणिता, असीति भंगा उ नायच्चा ॥५६७५॥

एतेसिं चउण्ह पयाणं इमेग विहिगा सोलस भंगा कायच्चा - कालुट्ठाती कालनिवेशी ठाणट्ठाती कालभोती (१), एवं सपडिपक्वेसु सोलस भंगा नायच्चा । एते सोलस भंगा सत्थपणएण गुणिता समीति भंगा भवन्ति ॥५६७५॥

सत्थाहऽट्ठगगुणिता, असीति चत्ताल छस्सया होति ।

ते आइयत्तिगुणिता, सत एक्कावण वीसऽहिया ॥५६७६॥

समीति अट्ठेहि सत्थाहिवेहि गुणिता छस्सया चत्ताला भवन्ति । ते अट्ठेहि पयिअमिअत्ति गुणिता एक्कावणं सता योसा (५१२०) भवन्ति । एत्थ सत्थपणे मय्ये भंगविगप्पे वा मूरे पयाणं पयिअमिअत्ति मत्तपट्ठिहेगा ॥५६७६॥

इन्द्राणि अणुणवणा भण्णति -

दोण्ह वि चियत्ते गमणं, एगस्सऽचियत्ते होति भयणा उ ।

अप्पत्ताण णिमित्तं, पत्ते सत्थम्मि परिसाओ ॥५६७७॥

जत्य एगो सत्यवाहो तत्य तं अणुणव्वेति, जे य अहप्पवाणा पुरिमा ते वि अणुणव्वेति, जत्य दो सत्याहिवा तत्य दोऽवि अणुणव्वेति, दोण्ह वि चियत्ते गमणं । अह एगस्स अचियत्तं तो भयणा, जति पेल्लगस्स चियत्तं तो गम्मति, अह पेल्लगस्स अचियत्तं तो ण गम्मति । पंथिता वा जाव ण मिलंति सत्ये ताव सडणादि-णिमित्तं नेण्हति, सत्ये पुण पत्ता सत्यस्स चैव सडणेण गच्छंति । अण्णं च सत्यपत्ता तिग्णि परिसा करेति - पुरतो मिगपरिसा, मज्जे सीहपरिसा, पिट्ठतो वसन्नपरिसा ॥५६७७॥

दोण्ह वि त्ति अस्य व्याख्या -

दोण्ह वि समागता सत्थिओ व जस्स व वसेण गम्मति ऊ ।

अणुणवणो गुरुणा, एमेव य एगतरपत्ते ॥५६७८॥

“दोण्ह” वि सत्यो सत्यवाहो य, एते दो वि समागए गमणं अणुणव्वेति । अहवा - सत्यवाहं जस्स य वसेण गम्मइ एते दो वि समागते गमणं अणुणव्वेति । अहवा - सत्याहिवं चैव एककं अणुणव्वेति । एवं जइ णो अणुणव्वेति तो चउगुरुणा, जति दोणि अहिवा ते दो वि पेल्लगा तत्य एककं अणुणव्वेति, एत्य वि चउ-गुरुणा । एगतरे वा पत्ते पेल्लगे जइ गच्छंति तत्य एमेव चउगुरुणं ॥५६७८॥

जो वा वि पेल्लिओ तं, भणंति तुह वाहुच्छायसंगहिया ।

वच्चासणुगगहो त्ति य, गमणं इहरा गुरु आणा ॥५६७९॥

सत्याहिवं सत्यं वा जो वा तम्मि सत्ये पेल्लगे तं भण्णति - जति अणुजाणह अम्हं तो तुम्मेहि समं तुह वाहुच्छायहिता समं वच्चासो ।

जइ सो भगेज - ‘अणुगहो’ ततो गम्मति । अह तुहिको अच्छति भगइ वा - ‘मा गच्छह्.’ जइ गच्छंति तो चउगुरुणं, आणादिया य दोसा ॥५६७९॥

जति सत्यस्स अचियत्ते सत्याहिवस्स वा अन्नस्स वा पेल्लगस्स अचियत्ते गम्मति तो इमे दोसा -

पडिसेहण णिच्छुभणं, उवकरणं वालमाति वा हारे ।

अतियत्ति गोम्मएहि व, उड्डुज्जंते (उद्धुज्जंते) ण वारंति ॥५६८०॥

अडविमज्जे गयाणं भत्तपाणं पडिसेहेज, सत्यातो वा णिच्छुमेज्ज, उवकरणं वा वालं वा अण्णेण हरावेज्ज, अतियत्तिएहि “गोमिय” त्ति-गो (या) ण्डल्लया तेहि उद्धुज्जंते न वारंति ॥५६८०॥

ते पंता भद्दगा वा -

भद्दगवयणे गमणं, भिक्खे भत्तड्डणाए वसहीए ।

थंङिल्लासति मत्तग, वसभा य पदेस वोसिरणं ॥५६८१॥

अणुणविण भद्गवयणे गम्मति, इमं भद्गवयणं - जं तुब्भेहिं संदिसह तं मे सव्वं पडिपावेस्सं  
सिद्धत्थपुप्फाविव सिरट्ठिना मे पीडं ण करेह । एवं भणंते गंतव्वं ॥५६८१॥

पुव्वभणितो व जयणा, भिक्खे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।

सच्चेव य होति इहं, णाणत्तं णवरि कप्पम्मि ॥५६८२॥

पुव्वं भणिता संवट्ठसुत्ते थंडिल्लस्स असति मत्तगेसु वोसिरित्तु व्हंति जाव थंडिलं, एवं वसभा  
जयंति । थंडिलमत्तगासति धम्माधम्मागासण्णदेसेसु वोसिरंति । इह कप्पे णाणत्तं ॥५६८२॥

तस्सिमो विही -

अग्गहणे कप्पस्स उ, गुरुगा दुविहा विराहणा नियमा ।

पुरिसऽद्धानं सत्थं, णाउण ण वा वि गिण्हेज्जा ॥५६८३॥

जति छिण्णे अच्चिण्णे वा पंथे अद्धानकप्पं ण गेण्हंति तो चउगुरुगा, भत्तादिअलंभे खुहियस्सा  
आयविराहणा, खुहत्तो वा कंदादी गेण्हेज्ज संजमविराहणा । अह्वा - सव्वे जइ संघयण-घिति-वलिया पुरिसा  
अद्धानं वा जति एगदेवसियं दो देवसियं वा, सत्थं ति - जति सत्थे अरिय भिक्खं पभूयं धुवलंमो भद्गो  
सत्थगो कालभोईय कालट्ठाती य एवमादिणा णातुं छिण्णद्धाने वि ण गेण्हेज्ज ॥५६८३॥

सो पुण अद्धानकप्पो केरिसो घेत्तव्वो -

सक्कर-घय-गुलमीसा, खज्जूर अगंथिमा य तम्मीसा ।

सत्तुअ पिण्णाओ वा, घय-गुलमिस्से खरेणं वा ॥५६८४॥

सक्कराए घएण य, सक्कराभावे गुलेण वा घएण वा, एतेहि मिस्सिया अगंथिमा घेणंति । अगंथिमा  
णाम कयलया ।

अण्णे भणंति - मरहट्ठविसए फलाण कयलकप्पमाणाओ पेंडीओ एकम्मि डाले बहुविकप्यो  
भवन्ति. ताणि फलाणि खंडाखंडीण कयाणि घेणंति, तेसि अमति खज्जुरा घयगुलमिस्सा घिण्णति, एतेमि  
असतीए सत्तुआ घयगुलमिस्सा घेणंति, असति घयस्स खरसण्हगुलमिस्सो पिण्णाओ घेत्तव्वो ॥५६८४॥

एतेसि इमो गुणो -

थोवा वि हणंति खुहं, ण य तण्ह करेति एते खज्जंता ।

सुक्खोदणोवऽलंभे, समितिम दंतिकक चुण्णं वा ॥५६८५॥

पुव्वदं कंठं । एरिमअद्धानकप्पस्स अलंभे "सुक्खोदणो" - सुक्खकूरो, "समितिमं" सुक्खमंथगा,  
"दंतिककं" - अग्गेणागारं खज्ज । अह्वा - दंतिककं चुण्णो तंतुवलोट्टो दंतिककगह्वरेण तंतुवचुण्णो, पुण्यगह-  
णातो खज्जगुरू, एस दंतिककचुण्णो खज्जगुरू वा घयगुलेण मिस्सिज्जति, मा मंअज्जति । जति मुद्धं  
लभंति तो अद्धानकप्पं ण भुंजति, जनिएण वा ऊयं मुद्धं तत्तियं अद्धानकप्पं भुंजति, अणुवट्ठावियान वा  
दिज्जति अद्धानकप्पो ॥५६८५॥

इमं च गिण्हंति -

तिविहाऽऽमयभेसज्जे, वणभेसज्जे य सप्पि-महु-पट्टे ।

मुद्धाऽसति तिपरिरण, जा कम्मं णाउमद्धानं ॥५६८६॥

वात-पित्त-सिम्भवसद्वातो सण्णिवातियाण वा रोगातंकाणं भेसजा ओसहा व्रण-ओसहाणि य  
गेण्हन्ति, वणभंगट्ठा य घतमहु, व्रणवंधट्ठा य खीरपट्टं गेण्हन्ति । सव्वं पेयं सुद्धं मग्गियव्वं, असति सुद्धस्स  
तिपरित्यजयणाए पणनपरिहाणीए जाव अहाकम्मं वि गेण्हन्ति, पमाणतो अट्ठाणकप्पं थोवं वहुं वा अट्ठाणं  
णाउं गेण्हन्ति, गच्छप्रमाणं वा नाउं ॥५६८६॥

समए सरभेदादी, लिंगविवेगं च क्रातु गीतत्था ।

खरकम्मिया व होउं, करेति गुत्ति उभयवग्गे ॥५६८७॥

जत्य समयं तत्य वसभा सरभेयवणभेयकारिगुलियाहिं अप्पणो अण्णारिसं सरवणभेदं काउं, अहवा-  
रयोहरणादि दव्वलिंगं मोत्तुं गिहिंलिंगं काउं जहा ण गज्जन्ति एते संजय ति खरकम्मिया व सत्तद्वपरियरा  
जहासंभवगहियाउवा होउं साहुसाहुणीउभयवग्गे गुत्तिरक्खं करेति ॥५६८७॥

किं च —

जे पुव्वं उवगरणा, गहिता अट्ठाण पविसमाणेहिं ।

जं जं जोगं जत्य उ, अट्ठाणे तस्स परिभोगो ॥५६८८॥

पुव्वद्वं कंठं । जं जोगं — जत्य उदगगलणकाले चम्मकरगो, वहणकाले कावोडी उट्ठा, भिक्खाय-  
रियकाले सिक्का, विकरणकाले पिप्पलगो, एवमादि ॥५६८८॥

सुक्खोदणो समितिमा, कंजुसिणोदेहि उण्हविय भुंजे ।

मूलुत्तरे विभासा, जतितूणं णिग्गते विवेगो ॥५६८९॥

जो सुक्खोदणो गहितो, जे य समितिमादी खरा, एते उण्होदणेणं कंजिएण वा उण्हे गाहेत्ता  
सुईकरेत्ता भोत्तवा । “मूलुत्तरे विभास” ति अट्ठाणकप्पो मूलगुणोवधातो, अहाकम्मं उत्तरगुणोवधाओ ।

किं अट्ठाणकप्पं भुंजउ ? अह अहाकम्मं लवभमाणं भुंजउ ?, अत्रोच्यते—“एत्य दो आदेसा,  
जम्हा कप्पो मूलगुणधाती, अहाकम्मं उत्तरगुणधाती, तम्हा कम्मं लहुतरं भोत्तव्वं । जम्हा आहाकम्मे छण्हवधातो,  
कप्पो पुण फानुओ । एत्य वरं कप्पो, ण कम्मं” ॥५६८९॥

चोदगाह — “जो कप्पो आहाकम्मिओ तत्य कहुं दुदोसदुट्ठो” ?

आचार्य आह —

क्रामं कम्मं पि सो कप्पो, णिसिं च परिवासितो ।

तहावि खलु सो सेयो, ण य कम्मं दिणे दिणे ॥५६९०॥

सर्वथा वरं अट्ठाणकप्प एव, न चाहाकम्मं, दिने दिने बहुसत्त्वोपधातित्वात् ॥५६९०॥

आहाकम्मं सइं धातो, सयं पुव्वहते सिया ।

जे ते तु कम्ममिच्छन्ति, निग्घीणा ते ण मे मत्ता ॥५६९१॥

अट्ठाणकप्पे जं आहाकम्मं तत्र पूर्वहते सक्खदेव जीवोवधातः ( जे पुण ) अट्ठाणकप्पं मूलगुणा ण  
भज्जति । “उत्तरगुणो ति” जे पुण आहाकम्मं भुंजति दिने दिने ते अत्यंतनिष्ठुणा सत्त्वेषु, न ते मम सम्मत्ता  
मयमायतनं प्रति ।

“जतिऊणं णिग्गए विवेगो” त्ति एवं अद्धाने जतित्ता जाहे अद्धानातो णिग्गता ताहे अभुत्तं  
भुत्तुद्धरियं वा अद्धानकप्पं विवेगो त्ति पण्डित्वेति ॥५६९१॥ भद्गवयणे त्ति गयं ।

इदार्णि “भिक्षित्ति” दारस्स कोति विसेसो भण्णति -

कालुट्ठादीमादिसु, भंगेसु जतन्ति वित्तियभंगादी ।

लिंगविवेगोऽवकन्ते, चुडलीओ मग्गओ अभए ॥५६९२॥

कालुट्ठाती कालनिवेसी, ठाणठाती कालभोती ।

एत्थ पढमभंगो सुद्धो । एत्थ भंगजयणा णत्थि ।

वित्तियभंगादिसु जयन्ति-तत्थ वित्तियभंगे अकालभोती, तत्थ सल्लिगविवेगं काउं राओ परल्लिगेण  
णिहन्ति ।

तत्तिय-चउत्थभंगेसु अ ठाणट्ठाती तत्थ जयन्ति, जं गोणादीहि अवकन्तट्ठाणं आसि तहि ठायन्ति ।  
चउत्थभंगे लिंगविवेगेण भत्तादि गेहन्ति, गोणादिअवकन्ते य ठायन्ति ।

पंचमादिभंगेसु चउसु “चुडली” संथारभूमादिसु विलादि जोइउं ठायन्ति ।

णवमादिसोलसत्तेसु अट्ठभंगेसु अकालट्ठातीसु रातो गमणमग्गतो “अभए” त्ति जति वच्चन्ताणं  
‘मग्गतो’ त्ति पच्छतो अभयं तो पच्छतो ठिता जयन्ति । एसा भंगजयणा ॥५६९२॥

पुच्चं भणिता जतणा, भिक्खे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।

सच्चेव य होति इहं, जयणा तत्तियम्मि भंगम्मि ॥५६९३॥

संवट्ठमुत्तमादिसु बहुसो भणिया जयणा ।

अहवा - णयगणिवेरो जहा भिक्खग्गहणं तहा कायच्चं भत्तट्ठाणं, अस्सालठात्तिस्स निव्वभए पुरतो  
गंतुं समुद्दिंसन्ति, जेण समुद्दिहे सत्थो अच्चेति, वसहिमज्जे सत्थस्स णिहन्ति, अयंउल्ले मत्तएणु जयन्ति, मत्तगामवि  
पदेशेसु वि । अहवा - तत्तियभंगे अयंउल्लाहम्मि सच्चेव जयणा जा संवट्ठमुत्ते सवित्थरा भणिया ॥५६९३॥

सावय अण्णट्ठकडे, अट्ठा सयमेव जोति जतणाए ।

गोउलविउच्चणाए, आसासपरंपरा सुद्धो ॥५६९४॥

सावय त्ति अद्धाने जति सावयभयं होज्ज तो अण्णेहि सत्थिस्सएहि जा सावयट्ठा सय्या अगगी  
तमल्लियन्ति, तस्स य असति अण्णत्थकउं अगणि पेत्तूण फामुयदारएहि जालन्ति, अट्ठे त्ति जा सत्थिस्सएहि  
संजयट्ठाए कडा तं नेवन्ति, परकट्ठअसति त्ति सयमेव अगणि अहुरत्तरेण जयन्ति जोउज्जएणाए वि - को कः  
जोउज्जालभणियजयणाए विज्जयेतीत्यर्थः ॥५६९४॥

“गोउल” पश्चाद्यं, अस्य व्याख्या -

सावय-तेण-परद्धे, सत्थे फिडिता ततो जति हवेज्जा ।

अंतिमवड्या वेंदिय, नियट्ठणय गोउलं कहणा ॥५६९५॥

अंतरा महाद्वीए सिवादि सावयतेणेहि वा सत्थो पग्गो, सत्थो दिसोदिमि णट्ठो, साधू वि एकत्तो णट्ठा, सत्थाओ फिडिया ण कि वि सत्थिल्लयं पस्संति, पयं च अजाणमाणा भीमाद्वि पवज्जेज्जा । तस्य वसभा गणिपुरोगा मेसा सच्चत्थामेण गच्छत्तवत्तं करंति जयणाए ताहे दिसाभागमपुणंता सवाल्लुङ्गच्छस्स रक्खणट्ठा वणदेवताए उस्सगं करंति, सा आगंपिया दिसिभागं पयं वा कहेज्ज, मम्मद्दिट्ठिदेवता वा अण्णोवदेसतो वड्ढ्याओ विउव्वति, ते साधू तं वड्ढं पासित्ता आससिया, ने साधू ताए देवताए गोउलपरंपरण ताव नीया जाव जणवयं पत्ता ताहे सा देवता अतिमवड्ढ्याए जाव उवगरणवेट्ठियं विस्सरावेड, तीए अट्ठा साट्ठणो गियत्ता गोउलं न पेच्छंति, वेट्ठियं वेत्तुं पडिगया । गुरुणो कहंति - नत्थि सा वड्ढयत्ति, नायं जहा देवताए कय ति, एत्थ सुद्धा चेव । नत्थि पच्छित्तं ॥५६६५॥

भंडी-बहिलग-भरवाहिएसु एसा च वणिण्या जतणा ।

ओदरिय विचित्तेसुं, जयणा इमा तत्थ नायव्वा ॥५६६६॥

वित्तिता कण्डिया, अहवा-वित्तिता-गुमिता, सेसं कंठं ।

ओदरिए पत्थयणा, ऽसति पत्थयणं तेसि कंदमूलफला ।

अग्गहणम्मि य रज्ज, वलंति गहणं तु जयणाए ॥५६६७॥

भंडिवहिलगभरवाहणं असति आगहे रायदुट्ठादिकज्जे उदरिगादिनु वि सह गम्मेज्ज । तस्य ओदरिगेहि सह गम्ममाणे अट्ठाणकप्पादि ओदरिगादीण वि पत्थयणामति जाहे ते ओदरिया पत्थयण-खाणा, ताहे तेसि पत्थयणं कंदमूलफलादि, साट्ठणं ते चेव होज्ज ॥५६६७॥

“अग्गहणम्मि” पच्छदं, अस्य व्याख्या -

कंदादि अभुजंते, अपरिणते सत्थियाण कहयंति ।

पुच्छा वेहासे पुण, दुक्खिहरा खाइतुं पुरतो ॥५६६८॥

तस्य जे अपरिणया ने पेच्छंति कंदादि भुजिउं, ताहे वसभा तेसि सत्थइल्लानं कहंति ।

ते वसभा सत्थिल्लए भणंति - एते तहा बीहावेह, जहा खायंति ।

ताहे ते सत्थिल्लया रज्जओ वलंति, अपरिणता पुच्छंति । अपरिणयाण वा पुरतो साट्ठ पुच्छंति - कि एयाहि रज्जुहि ?,

ताहे ते सत्थिल्लया भणंति - अम्हे एककणावाल्हा । अम्हे कंदादि ण खाइतं, अम्हे एताहि वेहाणसे उल्लंवेहामो, इह्रा तेसि पुरओ दुक्खं खायामो ॥५६६८॥

इह्रा वि मरति एसो, अम्हे खायामो सो वि तु भएणं ।

कंदादि कज्जगहणे, इमा उ जतणा तहिं होति ॥५६६९॥

सो कंदादि अखायंतो इह अद्वीए अवस्स चेव मरइ तह्हा तं मारत्ता अम्हे सुहं चेव खायामो । सो य अपरिणओ एयं सोच्चा मया खायति, एवमादिकज्जे कंदादिगहणे इमा जयणा ॥५६६९॥

फासुगजोणि.....गाहा	॥५७००॥
बद्धट्टिए वि एवं.....गाहा	॥५७०१॥
एमेव होइ.....गाहा	॥५७०२॥
साहारण.....गाहा	॥५७०३॥
तुवरे.....गाहा	॥५७०४॥
पासंदण.....गाहा	॥५७०५॥

‘एवं छ गाहाओ भाणियव्वो ।

एयाओ जहा पलंवसूत्रे, पूर्ववत् । असिचे त्ति गतं ।

इदाणि ओमे त्ति -

ओमे एसण सोही, पजहति परितावितो दिग्गिछाए ।

अलभंते वि य मरणं, असमाही तित्थवोच्छेदो ॥५७०६॥

ओमे अद्धानं पवज्जियच्चं ओमे अच्छंनो दिग्गिछाए परिताविओ एसणं पजहति । अहवा — असभंतो भत्तपाणं मरति, असमाही वा भवति, असमाहिमरणेण वा गाराधइ, अण्णोणमरंतं तु य तित्थवोच्छेदो भवति, एते अगमणे दोसा ॥५७००॥

गमणे इमा पंथजयणा -

ओमोयरियागमणे, मग्गे असती य पंथजयणाए ।

परिपुच्छिऊण गमणं चतुच्चिहं रायदुद्धं तु ॥५७०७॥

जया ओमे गम्पति तदा पुच्चं मग्गेण गंतव्वं, असति मग्गस्स पंथेण, तत्थ वि पुच्चं अन्निद्रो, पच्छा च्छिण्णेण । गमणे विही सत्तेय जो असिचे । ओमे त्ति गतं ।

इदाणि “रायदुद्धे”, तं च उच्चिहं वक्खमाणं ॥५७०७॥

१ पूनासत्कमूलभाष्यपुस्तकादर्शे, टाइपप्रकृतपुस्तकादर्शे च “फासुग जोणि गाहा” तः आरभ्य “एवं छ गाहाओ भाणियव्वो” इत्यन्तः पाठः उपरिनिर्दिष्टरूपेण भाष्ये समुपलभ्यते । किन्तु पूर्णिकारेण “एयाओ जहा पलंवसूत्रे पूर्ववत्” इति सूचना विहिता, तदनुसारेण प्रत्यक्षमृदाधिकारे तु गाथाप्रयोगे, न तु गाथा पदकम् । ताः गन्तु तिस्रो गाथास्तथेता :—

फासुग जोणि परित्ते, एगट्टि अबद्ध भिण्णअभिन्ने य ।

बद्धट्टिए वि एवं, एमेव य होनि बह्वीए ॥३४६७॥

एमेव होनि उवरि, बद्धट्टिय नह होति बह्वीए ।

साहारणस्स भावा, आदीए बह्वीणं जं च ॥३४६८॥

तुवरे क्खे य पत्ते, ग्खत्त-मिन्ना-नुप्प-महणादीणु ।

पासंदणे पवाते, आयवत्तसे वहे अवहे ॥३४६९॥

गाथाऽऽनोक्तनेन स्पष्टं प्रतिभाति — यत् “बद्धट्टिए वि एवं” ५७०१, साहारण ५७०३, पासंदण ५७०५, चट्ठमिता गाथाः “फासुगजोणि” ५७००, “एमेवोइ” ५७०२, “तुवरे” ५७०४, चट्ठमिता गाथानामुपरान्तमया एव ।

सो पुण राया कहं पदुडो ?, अत उच्यते -

ओरोहधरिसणाए, अन्मरहियसेहदिक्खणाए य ।

अहिमर अणिट्टुदरिसण, बुग्गाहण वा अणायारे ॥५७०८॥

ओरोहधो अंतपुरं, तं लिगत्यमादिगा केणइ आधरिसियं ।

अहवा - तस्स रण्णो अन्मरहियो ति आसण्णो कोइ सेहो दिक्खितो । अहवा - साधुवेमए  
अहिमरा पविट्ठा ।

अहवा - स्वभावेण कोइ साधु अणिट्ठो, अणिट्ठं वा साधुदंसणं मण्णति, मंतिमादीण वा बुग्गा-  
हितां, वाए वा जित्तो, संजओ वा अगारीए समं अणायारं पडिसेवंतो दिट्ठो ॥५७०८॥

एवमादिकारणेहि पदुडो इमं कुज्जा -

णिव्विसओत्ति य पढमो, वित्तियो मा देह भत्त-पाणं से ।

तत्तिओ उवकरणहरो, जीविय-चरित्तस्स वा भेदो ॥५७०९॥

जेण रण्णा णिव्विसया आणत्ता तत्थ जत्ति ण गच्छति तो चउगुणं, अण्णं च आणाइवकमे कम्ममाणं  
राया गाहयरं हस्सति । एते पढमभेदे दोसा ॥५७०९॥

गुरूणा आणालोचं, वलियतरं कुप्पे पढमए दोसा ।

गेण्हंत-दंतदोसा, वित्तिए चरिमे दुविधमेतो ॥५७१०॥

जेण रण्णा रुट्ठेणं गाम-गगरादिमुं भत्तपाणं वारितं तत्थ दंतान गेण्हंतान वि दोसा, एते वित्ति  
दोसा । तत्तिए उवकरणहरो तत्थ वि एते चेव । चरिमां ति चउत्थो तत्थ दुविधमेदोसो जीवियमेदं वा  
करेज्ज, चरणमेयं वा । जम्हा अच्हंताण एवमादी दोसा तम्हा गंतव्वं ॥५७१०॥

णिव्विसयाण ताण तिव्विहं गमणं इमं -

सच्छंदेण य गमणं, भिक्खे भत्तडुणा य वसहीए ।

दारे व ठिओ रुंभति, एगत्थ ठिओ व आणावे ॥५७११॥

“सच्छंदेण य गमणं भिक्खे” अस्य व्याख्या -

सच्छंदेण सयं वा, गमणं सत्थेण वा वि पुव्वुत्तं ।

तत्थुग्गमात्तिमुद्धं, असंयरे वा पणगहाणी ॥५७१२॥

सच्छंदगमणं अण्णो इच्छाए, सयं ति विणा सत्थेण वा गच्छति, तं च गमणं पुव्वुत्तं इहेव  
असिंहारं ओहिणिज्जुत्तीए वा । तत्थ सच्छंदगमणे उग्गमादिमुद्धं भत्तपाणं गेण्हंतो अच्हंतु, सुद्धासति वा  
असंयरे पणगपरिहाणीए जयंता गेण्हति ।

“दारे व ठिउ” त्तिरेयस्स विभासा - णिव्विसयमाणत्तेसु मा एत्थेव जणवदे णिलक्का  
अच्छिंहति, ताहं पुरिमे साहज्जे देति ।



ते पुरिसा भिक्खुगहणकाले भणंति - "तुम्हे पविसह गामं गगरं वा भिक्खं हिट्ठिता ततो चेव भोत्तुं भागच्छह, इह चेव दारट्ठिता उट्ठिक्खामो ।" ते तत्थ ठिया जो जो साधू एति त तं च गिरंभति जाव सव्वे मिलिया ।

अहवा - ते रायपुरिसा एगत्थ सभाए देउले वा ठिता भणंति - तुम्हे भिक्खं हिट्ठिता इहं भाणेह, अम्ह समीवे भुंजह ति ॥५७१२॥

तिण्हेगतरं गमणं, एसणमादीसु होइ जइत्तव्वं ।

भत्तट्ठ ण थंडिल्ले, असति सोही व जा जत्थ ॥५७१३॥

"तिण्हेगयर" ति - सच्छंदगमणं एक्को, दारे रंभति वित्तिओ, इह भाणेह ति तत्तिओ, एयणायरप्पगारेण गच्छमाणा एसणा । आदिसहातो उग्गमुप्पायणा य । तेनु विमुद्धं भत्तपाणं गेण्हति, भत्तट्ठं दोगु विहिणा करंति । रायपुरिससमीवट्ठितेसु भयणा । थंडिल्लसामायारीं ण हावेंति, रायपुरिससमीवट्ठितेहि वा कुल्लुयं करंति । सच्छंदं वसमाणा वसहिंसामायारि न परिहावेंति ।

अह रायपुरिसा भणेज - "अम्हं समीवे वसियव्वं ।" तत्थ वि जहा विरोहत्तो ण हावेंति । भत्तादिमुद्धस्स असति पणगपरिहाणीए विसोधि अविसोधीए जयतस्स जा जत्थ अप्पतरदोमकोटी तं गेण्हति ॥५७१३॥

जे भणिया भद्वाहुकयाए गाहाए सच्छंदगमणाइया तिण्णि पगारा, ते चेव सिद्धसेणव्वमा-समणेहि फुडतरा करंतेहि इमे भणिता -

सच्छंदेण उ एक्कं, वित्तिं अण्णत्थ भोत्तिहं मिलह ।

तत्तिओ घेत्तुं भिक्खं, इह भुंजह तीसु वी जतणा ॥५७१४॥

तिसु वि पगारेसु गच्छता तिसु वि उग्गमुप्पायणेतणामु जतंति, ससति ण हावेंति । दोषं गतार्थम् ॥५७१४॥

अहवा - कोइ कम्मघणक्कयडो स्वगित्तनिकुतिवंचनानुमानपरमविजृम्भादिद कुर्यात् -

सवित्तिज्जए व मुंचति, आणावेत्तुं च चोल्लाए देंनि ।

अम्हद्दगमाइसुद्धं, अणुसट्ठि अणिच्छ जं अंतं ॥५७१५॥

साधूग भिक्खं हिट्ठिताण रायपुरिसवित्तिज्जते जइ उत्तमंता अणेनगिज्जं वि गिण्हल्लेनि तत्थ ते पणवेयव्वा - अम्हं उग्गमातिसुद्धं पेत्तति । अहवा - एगत्थ गिरंभितं चोल्लए आणावेत्तुं देनि "एयं भुजह" ति ।

ताहं सो रायपुरिसो भणति - "अम्हो उग्गमाइ सुद्धं भुंजेमो, ण कप्पइ एयं ।" एवं भणित्थो जइ उत्तमंक्कइ ताहो भित्तं हिट्ठति, अणिच्छे प्रमुग्गट्ठो, पम्मसहानदी सो पम्मं क्कलेनि, गिग्गिनेण वा पण्डिट्ठिणि, गंतजोएण वा वसीक्कज्जति, पणति अणिच्छे य तं चोल्लवेसु पानीयं तत्थ जं पंचयंवं तं भुजति ॥५७१५॥

अहवा -

पुत्थं व उवक्कडियं, खीरादी वा अणिच्छ जं देनि ।

कमट्ठग भुत्ते सन्ना, कुल्लुयदुविहेण वि दवणं ॥५७१६॥

सो रायपुरिसो भण्णति - "जं पुव्वरद्धं तं ग्रम्ह चोल्लगेसु आणिज्जड, दहिस्सीरादि वा आणाविज्जड ।"

अहवा - चोल्लगेसु जं पुव्वरद्धं दहिस्सीरादि व भंजति, जड पुव्वरद्धं दहिस्सीरादि वा नेच्छते आणावेत्तुं ताहे सुद्धमसुद्धं वा जं सो देति तं भंजति ।

इमा भत्तट्टजयणा - कमट्टगेसु संतरं भंजति, गिहिमायगेसु वा । मणं च वोसिरित्ता फानुयमट्टिया, बहुदवेग य कुक्कुयं करेति, दुविघेग वि दवेगं अचित्तेग य सचित्तेग वि, पुव्वं मीमेग पच्छा ववहारसचित्तेग ।

"असति सोधी य जा जत्य" ति एयं पदं अण्णहा भण्णति - जति जयणा संनवे अजयणं ग करति, विसुद्धाहारे वा लब्धंते असुद्धं भत्तट्टं, थंडिल्लविहिं वा ग करेति, तो जा जत्य सोही तमावज्जति । णिव्विसय त्ति गयं ।

इदार्णि वित्तिओ "मा देह भत्तपाण" त्ति अत्रोच्यते -

वित्तिए वि होति जयणा, भत्ते पाणे अलब्धभाणे वि ।

दोसीण तक्क पिंडी, एसणमादीसु जइयव्वं ॥५७१७॥

पुव्वरद्धं कंठं । जाव जणो ग संवरति ताव सायुवेलाए दोसीणं तक्कं वा गेह्णति. भिक्खवेलाए वा वायसपिंडीओ गेह्णति, ततो एसणाए जे अप्पतरा दोसा ततो उप्पायणाए ततो उग्गमेग अप्पतरदोसेसु जयंति ॥५७१७॥

अहवा - इमा जयणा -

पुराणादि पण्णवेउं, णिसिं पि गीयत्ये होइ गहणं तु ।

अग्गीते दिवा गहणं, सुण्णवरे ओमरादीसु ॥५७१८॥

पुराणो सावणो वा गहिपाणुव्वतो खेयणो पण्णविज्जति । सो पण्णविओ देवकुले बलिलक्खेग ठावेइ, तं दिवा धेय्पइ, तारिस्स असइ गीयत्येसु रातो वि धेय्पति । अगोएसु दिवा गहणं, देवकुले सुण्णवरे वसंतघरे वा अच्चगलक्खेग ओमराईसु ठवियं ॥५७१८॥

उम्मर कोट्टिंवेसु य, देवकुले वा णिवेदणं रण्णो ।

कयकरणे करणं वा, असती णंदी दुविघदव्वे ॥५७१९॥

"कोट्टिंवे" ति - जत्य गोभत्तं दिज्जति तत्य गोभन्नलक्खेग ठवियं गेह्णति, जाव उवसामिज्जति राया ताव एवं जयगज्जता अच्छंति । जति सव्वहा उवसामिज्जंतो णोवसमति ताहे जो संजतो कयकरणो ईसत्ये सोतं बंधेउं सासेति, विज्जावलेण वा सासेति, विट्ठिविणिहिंसंपण्णो वा सासेति । जाहं कयकरणादियाण असति ताहे "नंदि" ति णंदी हरिसो, एसो तुट्ठी, जेग दुविघदव्वेग भवति तं गेह्णति । दुविघदव्वं फासुगमफासुगं वा, परित्तमणंतं वा, असणिहिं सणिहिं वा, एसणिज्जं अणेसणिज्जं वा । एवमादिभत्तपाणं पडिसेव त्ति ॥५७१९॥ मा देह भत्तपाणंति गयं ।

इदार्णि उवकरणहरे त्ति -

तत्तिए वि होति जयणा, वत्थे पादे अलब्धभाणम्मि ।

उच्छुद्ध विप्पइण्णे, एसणमादीसु जतियव्वं ॥५७२०॥

रणा पडिसिद्धं मा एतेसि कोइ देज्ज । एवं वत्थपादेसु भल्लभमाणेसु इमा जयणा — जं देवकुलादिगु कण्ठिण्णु उच्छुद्धं तं गिण्हंति, विष्णुणं जं उक्कुल्लंइयादिनु ठितं एसणादिमु वा जतंति पूर्ववत् ॥५७२०॥

हितसेसगाण असती, तण अगणी सिक्कगा य वागा य ।

पेहुण-चम्मग्गहणे, भत्तं च पलास पाणिसु वा ॥५७२१॥

रणा रुद्धेण साधूण उवकरणं हरितं, सेसं ति अण्णं गत्थि, ताहे सीताभिभूता तणाणि गेण्हेज्जा, अगणि गेण्हेज्ज, अगणि वा सेवेज्ज । पत्तगवंधाभावे सिक्कगद्विषादे काउं हि (डे) ज्ज, तप्पादि प (व) यक्तया पाउरणा गेण्हेज्ज, पेहुणं ति मोरंगमया पिच्छया रयहरणट्टाणे करेज्ज, पत्थरण पाउरणं वा जह् वोटियाण, चम्मयं वा पत्थरणपाउरणं गेण्हेज्ज, पलासपत्तिमादिमु भत्तं गेण्हेज्ज, अहवा — भत्तं कुंडगादिमु गेण्हेज्जा पलासपत्तेसु वा भुंजेज्ज । पाणीसु वा गहणं भुंजणं वा ॥५७२१॥

असती य लिंगकरणं, पण्णवण्डा सयं व गहण्डा ।

आगाढकारणम्मि, जहेव हंसादिणं गहणं ॥५७२२॥

असति रणोवगमम्स, उवकरणम्स वा असति, ताहे परलिंगं करेति । जं रणो अगुमतं तेग निणेण ठिता ससमय-परसमयविदू वसभा रायाणं पण्वेति — उवसामेतीत्यर्थः । तेन वा परलिंगेन ठिता उवकरणं स्वयमेव गृह्णन्ति, एयं चेव आगाढं । अण्णम्मि वा आगाढे जहेव हंसमादितेत्तानां गहणं दिट्ठं तहा इहं पि आगाढे कारणे वत्थ-पत्तादियाण गहणं कायव्वं । ओसोवण-तानुवाटमादिएहि अन्येन वाहि संप्रयोगेनेत्यर्थः ॥५७२२॥ उवकरणहडे त्ति गयं ।

इदाणि भेदे त्ति —

दुविहम्मि भेरवम्मि, विज्जणिमित्ते य चुण्ण देवीए ।

सेट्ठिम्मि अमच्चम्मि य, एसणमादीसु जइयव्वं ॥५७२३॥

भेरवं भयानकं, तं दुविहं जीविगाप्पो चारित्ताप्पो वा ववरोवेति तं रायाणं पवुट्ठं विज्जादीहि वगीकरेज्जा, णिमित्तेण वा आउट्टिज्जति, चुण्णोहि वा आपंसमादीहि यत्तीकज्जति । “देवी य” त्ति जा य तरग महादेयी इहा सा वा विज्जादीहि आउट्टिज्जति, अहवा — गंतगो गतिगा वा मे जो वा रणो अगुवत्तमणिज्जो, जइ तेहि भण्णंतो ठितो सुंदरं ।

पह्ण ण ठाति ताहे सेट्ठिं भण्णति, अमच्च वा, जइ ते उवगमेज्जा । अहवा — जाय उवगमइ नाय सेट्ठि-अमच्चानं अगग्गहे अच्यति, जो वा रणो अगुवत्तमणिज्जो तम्म वा घरे अच्यति, एसणादिमु जयणि पूर्ववत् । पासंजणं (पामंदगणं) वा उवट्ठावेज्जा, जइ नाम ते उवगामेज्ज अण्णज्जिहाहि अगुमानादीहि ॥५७२३॥

आगाढे अण्णलिंगं, कालक्खेवो वहिं निगमणं वा ।

कतकरणे करणं वा, पच्छायण थावरादीसु ॥५७२४॥

अगुवत्तमंते एरिमे आगाढकारणे अण्णविण करेति, तेन परविमेन कप्पेय कालक्खेवे करेति, अगुवत्तमना विमयतरं वा गन्तंति, जहाते मत्थहा उवगामेज्ज न नीरइ ताहे “कतकरणे करणं व” ति गहण-जोही मं गामेज्ज, अत तं ति गत्थि ताहे “अण्णज्जिहाहि” ति जार एसणादिज्जति नात अण्णज्जिहाहि

अप्पाणं पच्छादेति, पउमसरादिसु वा लिक्किया अच्छति, अहवा - दिया एतेसु निलुक्कया अच्छंति, राओ वच्चंति । एवं रायदुट्टे जयंति ॥५७२४॥

इदाणि भयादिदारा -

वोहिग-मेच्छादिभए, एमेव य गम्ममाण जयणाए ।

दोण्हड्डा य गिलाणे, णाणादड्डा व गम्मंते ॥५७२५॥

“भयं” ति वोहियमयं, वोहिगा मालवादिमेच्छा, ते पव्वयमालेसु ठिया माणुसाणि हरंति । तेसि भया गम्ममाणे एवं चेव गमणं, जयणा य जहा असिवादिसु । भयमेवागाढं । अहवा - किंचि उपत्तियमागाढं, जहा मातापितिसण्णायगेणं संदिट्ठं - “इमं कुलं पव्वज्जमव्भुवगच्छति जति तुमं आगच्छसि” अहवा - “णागच्छसि तो विप्परिणमंति अण्णम्मि वा सासणे पव्वयंति” एरिसे वा गंतव्वं । गेलणवेज्जस्स वा ओसहाण य । उत्तिमट्टे य पडियरगो विसोहिकामो वा ।

णाणदंसणेसु मुत्तणिमित्तं । अहवा - अत्यस्स । अहवा - उभयस्स । चरित्तट्टा पुव्वभणिय । एवमादिकारणेसु पुव्वं मग्गेण, पच्छा अच्छिण्णपयेण, ततो छिण्णपयेण ॥५७२५॥

एत्थ एक्केक्के असिवादिकारणे -

एगापण्णं व सतावीसं च ठाण णिग्गमा णेया ।

एतो एक्केक्कम्मिं, सयग्गसो होइ जयणा उ ॥५७२६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू विरूवरूवाइं दसुयायणाइं अणारियाइं मिलक्खूइं पच्चंतियाइं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेइ, अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥२६॥

इमो सुत्तथो -

सग-जवणादिविरूवा, छवीसद्धंतवासि पच्चंता ।

कम्माणज्जमणारिय, दसणेहि दंसंति तेण दसू ॥५७२७॥

सग-जवणादिअण्णण्वेसमासादिट्ठिता विविधरूवा विरूवा मग्गादियाणं अट्ठच्छवीसाए आरिय-जणवयाणं, तेसि अण्णतरं ठियां जे अणारिया ते पच्चंतिया, आरुट्टा दंतेहि दंसंति तेण दसू, तेसि आरयतणा विसओ पल्लिमादी वा । हिंसादिअक्कज्जकम्मकारिणो अणायरिया ॥५७२७॥

मिल्लक्खूऽव्वत्तभासी, संथरणिज्जा उ जणवया सगुणा ।

आहारोवहिसेज्जा, संथारुच्चारसज्जाए ॥५७२८॥

मिलक्खू जे अव्वत्तं अफुडं मासंति ते मिलक्खू । जदा रुट्टा तदा दुक्खं सण्णविज्जंति दुस्सण्णप्पा । दुक्खं चरणकरणजातमाताउत्ति ए धम्मे पण्णविज्जंति दुप्पण्णवणिजा, रातो सव्वादरेण भुंजंति अकालपरिमोणिणो, रातो चेव पडिबुज्जंति अकालपडिबोही, सट्ठम्मे दुक्खं बुज्जंति ति दुप्पडिबोहीणि । सति विज्जमाणे “लाढे”

ति साधुणो अयथा, सगुणा जणवया संयरणिजा भवन्ति । ते पुण गुणा आहारो उवही सेज्जा संयारणो, अण्णो य बह्विहो । उवधी सततं अविद्वो लव्वमि, उच्चारपासवणभूमो य सन्ति, सज्झायो मुड्भति । "विहाराए" ति दप्पेणं णो अस्सिवादिकारणे, तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ॥५७२८॥

इमो णिज्जुत्तिवित्थारो -

आरियमणारिएसुं, चउक्कभयणा तु संकमे होति ।

पढमतिए अणुण्णा, वित्थियचउत्थाऽणुण्णाया ॥५७२९॥

आरितातो जणवयाओ आरियं जणवयं संकमइ, एवं चउभंगो कायव्वो, सेमं कंठ ॥५७२९॥

आरिय-आरियसंकम अद्धछवीसं हवन्ति सेसा तु ।

आरियमणारियसंकम, वोधिगमादी मुणेत्तच्चा ॥५७३०॥

अद्धछवीसाए जणवयाणं अण्णतराओ अण्णतरं चेव आरियं संकमति तस्स पढमभंगो, आरियातो अण्णयरवोहिगविसयं संकमन्तस्स वित्थिओ ॥५७३०॥

अणारियारियसंकम, अंधादमिला य होंति णायच्चा ।

अणारियअणारियसंकम, सग-जवणादी मुणेत्तच्चा ॥५७३१॥

अंधदमिलादिविसयाओ आरियविसयं संकमन्तस्स तइओ, अणारियातो मगविसयाओ अणारियं चेव जवणविसयं संकमन्तस्स चउत्थो । एस्स खित्तं पट्टय चउभंगो भणितो ॥५७३१॥

इमं लिंगं पट्टुच्च भणति -

भिकखुसरक्खे तावस, चरगे कावाल् गारलिंगं च ।

एत्ते अणारिया खलु, अज्जं आयारभंडेणं ॥५७३२॥

भिकगूमादी अणारिया लिंगा, "प्रज्जं" ति आरियं, तं पुण आयारभंडय रमोहरन-मुत्तपोत्तिया-चोत्तपट्टकप्पा य पट्टिगहो समत्तो य ।

आयारभंडय एत्थं वि चउभंगो कायव्वो ।

आरियलिंगाओ आरियलिंगं एस्स पढमभंगो । एत्थं धेरकप्पातो जिज्जकप्पाविमु संकमं कंमि ।

वित्थिओ कारणिओ, सतिए भिक्खुमादि उवसंतो, चउत्थे भिक्खुमादी सरगपादीनु ।

अहवा चउभंगो - आरिओ प्राग्गिनिगं संकमति भावना कायव्वो ।

अहवा चउभंगो - आरिएणं निगेणं प्राग्गिविसयं संकमति, भावना कायव्वो । ओ प्राग्गिणं वि निगेणं अणारियविसयं संकमति, एत्थं मुत्तज्जिवानो । मेमं विक्खोवन्हा भणियं ॥५७३२॥

को पुण आरिओ, को वा अणारिओ ?

अतो भणति -

मगहा कोसंवीया, धूणाविसओ कुणालविसओ य ।

एस्सा विहारभूमी, पत्ता वा आरियं खेत्तं ॥५७३३॥

पुच्छेण मगहविसयो, दक्षिणेण कोसंबी, भवरेण यूगाविसयो, उत्तरेण कुणालाविसयो । एतेसि मज्जं  
आरियं, परतो अणारियं ॥५७३३॥

आरियविसयं विहरंताणं के गुणा, अतो भण्णाति -

समणगुणविदुऽत्य जणो, सुलभो उवही सतंत अविद्वो ।

आयरियविसयम्मि गुणा, णाण-चरण-गच्छवुद्धी य ॥५७३४॥

समणां गुणा समणगुणा । के गुणा ?, मूलगुण-उत्तरगुणा । पंचमहव्या मूलगुणा, उगमुपादेयणा  
अट्टारससीलंगसहस्राणि य उत्तरगुणा । “विद-जाने” अमणगुणविदुः ।

कदचासी ?, उच्यते - जनसुलभो उवही ओहिओ उवगहिओ य ।

अस्मिन् तत्रे - अविद्वो एसगिजो लब्धमति, एवमादि गुणा आरिएसु । किं च णाणदंमण-  
चरित्ताण विद्धी, नास्ति व्याघातः, गच्छवुद्धी य तस्य पव्वज्जंति सिक्खापदाणि य गिप्हंति ॥५७३५॥

इमं च आरिए जणे भवति -

जम्मण-णिक्खमणेसु य, तित्थकराणं करंति महिमाओ ।

भवणवति-वाणमंतर- जोतिस-वेमाणिया देवा ॥५७३५॥

तं दट्ठं भव्वा विवुज्जंति शुच्चयंति य, चिरपव्वइया वि विरतरा भवति ॥५७३५॥

तित्थकरा इमं धर्मोपदेशादिकं आरिए जणे करंति -

उप्पणो णाणवरे, तम्मि अणंते पहीणकम्माणो ।

तो उवदिसंति धम्मं, जगजीवहियाय तित्थगरा ॥५७३६॥

इमो समोसरणातिसओ -

लोगच्छेरयभूयं, उप्पयणं निवयणं च देवाणं ।

संसयवागरणाणि य, पुच्छंति तहिं जिणवरिंदे ॥५७३७॥

सण्णी बहु जुगवं संसए पुच्छंति, तेसि चैव जिणो जुगवं चैव वागरणं करंति, तेहि आरियजणवए  
जिणवरिंदे पुच्छंति ॥५७३७॥

एत्थ किर सन्नि सावग, जाणंति अभिग्गहे सुविहिताणं ।

एएहिं कारणेहिं, बहि गमणे होतऽणुग्वाता ॥५७३८॥

एत्थ किर आरियजणवए, “किर” त्ति परोक्खवयणं, अविरयसम्महिद्धी सण्णी गहियाणुव्वतो  
सावगो एते जाणंति “अभिग्गहे” त्ति आहारोवधिसेज्जागहनविहाणं, तं जाणंता तहा देंति । अह्वा -  
अभिग्गहो दव्वखेतकालभावेहिं तं जाणंता तहेव पडिपूरंति । जम्हा एते गुणा आरियजणवए तम्हा “बहि”  
त्ति अणारियविसयं गच्छंताण चउगुणा ॥५७३८॥

चोदगाह -

सुत्तस्स विसंवादो, सुत्तनिवातो इहं त संकप्पे ।

चत्तारि छच्च लङ्गुरु,

इह सोलसमुद्दे सगे चउलहुगाऽधिकारो - तुमं च अणारियविसयसंकमे चउगुमं देमि, अनो मुत्तविमंवातो ।

आयरिओ भणइ - तुमं मुत्तणिवातं ण यागसि । इह मुत्तणिवातो मजसंकप्पे चउलहुं, पदभेदे चउगुमं, पंचमोइणोसु छल्लहुं, अणारियविसयपत्तेसु छगुमं, संजमायविराहणाए सट्ठाणं । तत्थ संजमविराहणाए "छक्काय चउमु लहु" गाहा भावणिज्जा । आयविराहणाए चउगुमं परित्तावणाई वा ॥५७३६॥

आणादिणो य दोसा, विराहणा खंदएण दिट्ठंतो !

एवं ततियविरोहो, पडुच्चकालं तु पणवणा ॥५७४०॥

आयविराहणाए खंदगो दिट्ठंतो -

दोच्चेण आगतो खंदएण वाए पराजिओ कुवितो ।

खंदगदिक्खा पुच्छा णिवारणाऽऽराध तव्वज्जा ॥५७४१॥

चंपा णाम णगरी, तत्थ खंदगो राया । तस्म भगिणी पुरंदरजसा उत्तरापथे 'कु'भा-  
कारकडे णगरे डंडगिस्स रणो दिण्णा ।

तस्स पुरोहिओ मरुगो पालगो, सो य अकिरियदिट्ठो । अणया सो दूओ आगतो चणं ।  
खंदगस्स पुरतो जिणसाहुअवण्णं करेति । खंदगेण वादे जिओ, कुविओ, गओ स-णगरं । खंदगस्स वहुं  
चित्तंतो अच्छइ ।

खंदगो वि पुत्तं रज्जे ठवित्ता मुणिसुव्वयसामिअंतिए पंचसयपरिवारो पव्वनितो अधीय-  
मुयस्स गच्छो अणुणाओ ।

अणया भगिणीं दिच्छामि त्ति जिणं पुच्छति । सोवस्तगं मे कहियं ।

पुणो पुच्छति - "आराहगो ण व ?" त्ति ।

कहियं जिणेणं - तुमं मोत्तुं आराहगा सेसा । गतो णिवारिज्जंतोऽवि ॥५७४१॥

मुतो पालगेण आगच्छमाणो -

उज्जाणाऽऽउह णूमेण, णिवक्कहणं कोव जंतयं पुव्वं ।

बंध चिरिक्क णिदाणे, कंवलदाणे रजोहरणं ॥५७४२॥

पालगेण अणुजाणे पंचसया आगुहाण ठविया । साहसो आगया नत्थ श्रिता । पुरंदरजसा  
दिट्ठा, खंदगो कंवलरयणेन पट्ठिभाभितो । तत्थ णिनिज्जाओ कयाओ ।

पालगेण राया कुणाहितो । एसा परित्ताहपराजियो आगयो तुमं मानेई राजं प्रदिट्ठेहि ।  
कहं णज्जनि ?, आगुया इति ।

कुवियो राया, पालगो भणितो - मारेहि त्ति । नेण इवगुज्जेनं कयं ।

खंदगेण भणियं - 'मं पुव्वं मारेहि ।' जंजसमीये यमे अंधिउ ठवियो, माहं योमि उ  
महरनिक्कहि खंदगो भरितो । मुत्तुगो आययिं विवदंतो, सो वि आगहगो । खंदगेण णिवार  
कन ॥५७४२॥



अग्निकुमारवधातो, चिन्ता देवीए चिन्ह रयहरणं ।

ग्विज्जण सपरिसदिक्खा, जिण साहर वात डाहो य ॥५७४३॥

अग्निकुमारेसु उववण्णो ।

पुरंदरजसाए देवीए चिन्ता उववण्णा वट्टति “सावुणो पाणगपढमालियाणिमित्तं णागच्छंति किं होल्ल” ? एत्थंतरे खंदगेण “सण्ण” त्ति — सकुलिकारुवं काउं रयहरणं रहिरालित्तं पुरंदरजसा-पुरतो पाडियं, दिट्ठं, सहसा अक्कदं करेत्ती उट्ठिया, भणिओ राया — पाव ! विणट्ठो सि विणट्ठो सि ।

सा तेण खंदगेण सपरिवारा मुणिसुव्वयस्स समीवं णीया दिक्खिया । खंदगेण संव्वट्ठ-गवायं विउव्वित्ता रायाणं सबलवाहणं पुरं च स कोहाविट्ठो वारसजोयणं खेत्तं णिडुहति । अज्ज वि डंडगारणं त्ति भण्णति ॥५७४३॥

जम्हा एवमादी दोसा तम्हा आरियातो अणारियं ण गंतव्वं ।

चोदगाह — “एवं ततियविरोहो त्ति — एवं वक्खाणिज्जंते जं गाहानुत्ते ततियभंगो अणुणाओ, तं विरुग्गति ।

जइ अणारिएसु गमो णत्थि घम्मो वा, तो भिक्खुस्स अणारियाओ आरिएसु आगमो कहं ?,

आयरिओ भणइ — “नुत्ते पणीयणकालं पट्टच्च पढमभंगो । ततियभंगो पुण अणागओ मासियनुत्तत्थेण संपइरायकुलं पट्टच्च पणविज्जति ।

एत्थ संपइस्स उप्पत्ती —

कोसंवाऽऽहारकए, अज्जसुहत्थीण दमगपव्वज्जा ।

अव्वत्तेणं सामाइएण रण्णो घरे जातो ॥५७४४॥

कोसंवीए णगरीए अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य दोवि समोसढा । तथा य अवीयकाले सावूजणो य हिडमाणो फव्वंति ।

तत्थ एगेण दमएण ते दिट्ठा । ताहे सो भत्तं जायति ।

तेहि भणियं — अम्हं आयरिया जाणंति ।

ताहे सो आगओ आयरियसगासं । आयरिया उवउत्ता, तेहि णातं — “एस पवयणउवग्गहे वट्ठिहति” त्ति । ताहे भणिओ — जत्ति पव्वयसि तो दिल्ल भत्तं ।

सो भणइ — पव्वयामि त्ति । ताहे आहारकत्ते सो दमगो पव्वावितो । सामाइयं से कयं, ते अतिसमुट्ठिओ । सो य तेण कालगओ । सो य तस्स अव्वत्तसामाइयस्स भावेण कुणालकुमारस्स अंबस्स रण्णो पुत्तो जातो ।

को कुणालो ? कहं वा अंबो ? त्ति —

पाडलिपुत्ते असोगसिरी राया, तस्स पुत्तो कुणालो । तस्स कुमारस्स भुत्ती उज्जेणी दिण्णा । सो य अट्ठवरिसो, रण्णा लेहो विसज्जितो — शीघ्रमवीयतां कुमारः । असंवत्तिथेहे रण्णो उट्ठितस्स माइस्वत्तीए कत्तं “अवीयतां कुमारः” । सयमेव तत्तसलागाए अच्छी अंजिया । सुत्तं रण्णा । गामो

१ गा० ५७४० । २ “रयणा” इत्यपि पाठः । ३ अंचियकालो इति बृहत्कल्प भाष्य चूर्णो गा० ३२७५ ।



से दिण्णो । गंधव्वकलासिक्खणं । पुत्तस्स रज्जत्थी आगग्रो पाडलिपुत्तं । असोगसिरिणो जवणियं-  
रितो गंधव्वं करेति, आउट्टो राया, मग्गसु जं ते अभिच्छित्तं ॥५७४४॥

तेण भणियं -

चंदगुत्तपपुत्तो य, विंदुसारस्स णत्तुओ ।

असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणिं ॥५७४५॥

उवउत्तो राया, णातो किं ते अंधस्स कागिणीए ? कागिणी=रज्जं ।

तेण भणियं - पुत्तस्स मे कज्जं । संपत्ति पुत्तो वि त्ति । आणेहि तं पेच्छामो, आणिओ,  
संवट्ठिओ, दिण्णं रज्जं । सव्वे पच्चंता विसया तेण उयविया विक्कंतो रज्जं भुंजइ ॥५७४५॥

अण्णया -

अज्जसुहत्थाऽऽगमणं, दट्ठुं सरणं च पुच्छणा कहणं ।

पावयणम्मि य भत्ती, तो जाया संपत्तीरण्णो ॥५७४६॥

उज्जेणीए समोसरणे अणूजाणे रहपुरतो रायंगणे बहुसिस्सपरिवारो आलोवणठित्तेण  
रण्णा अज्जसुहत्थी आलोइओ, तं दट्ठुण जातो संभरिया, आगतो गुरुसमीवं ।

धम्मं सोउं पुच्छति - अहं मे कहिं चिं दिट्ठपुव्वो ?, पुच्छति य - इमस्स धम्मस्स किं  
फलं ?, गुरुणाऽभिहितं सग्गो मोक्खो वा ।

पुणो पुच्छइ - इमस्स सामाइयस्स किं फलं ?,

गुरु भणइ - अव्वत्तस्स सामाइयस्स रज्जं फलं । सो संभंतो भणति सच्चं ।

ताहे सुहत्थी उवउज्जिऊण भणति - "दिट्ठिल्लओ त्ति ।" मव्वं से परिकहियं । ताहे सो  
पवयणभत्तो परमसावगो जातो ॥५७४६॥

जवमज्झ मुरियवंसो, दारं वणि-विण्णि दाणसंभोगो ।

तसपाणपडिक्कमओ, पभावओ समणसंवस्स ॥५७४७॥

चंदगुत्तातो विंदुसारो महंततरो, ततो असोगसिरी महंततरो, ततो संपत्ती मव्वमहंतो,  
ततो हाणी, एवं मुरियवंसो जवागारो, मज्जे संवइ - आत्ती ।

"दारे" त्ति अस्य व्याख्या -

उदरियमओ चउसुवि, दारंसु महाणसे न कारंति ।

णिताऽऽणितं भोयण, पुच्छा सेसे अभुत्ते य ॥५७४८॥

पुव्वभवे ओदरिओ त्ति पिण्डोन्नयो भाति, न संभन्ति णगरस्स चउसु वि दारेनु मत्ता-  
कारमाणासे कारवेति, णितो पविसंतो वा जो इच्छइ मो मव्वो भुंजति, जं मेमं उयविया न  
महाणसिपाण आभवति ।

ताहे राया ते महाणसिए पुच्छति - जं सेसं तेण तुव्मे किं करेह?,  
ते भणंति - घरे उवउज्जति ॥५७४६॥

ताहे राया भणति - जं सेसं - अमुत्तं तं तुव्मे -

साहूण देह एयं, अहं मे दाहेमि तत्तियं मोल्लं ।

णेच्छंति घरे वेत्तुं, समणा मम रायपिंडो त्ति ॥५७४६॥

एवं महाणसिता भणिता देति सावूणं ।

“वणि-विवणि-दाणि” त्ति अस्य व्याख्या -

एमेव तेल्ल-गोलिय, -पूवीय-मोरंड दूसिए चेव ।

जं देह तस्स मोल्लं, दलामि पुच्छा य महागिरिणो ॥५७५०॥

वणिति - जे णिच्चट्टिता ववहरंति, “विवणी” त्ति - जे विणा आवणेण उवमट्टिता वाणिज्जं करंति ।

अहवा - विवणि त्ति अवाणियगा ।

रणा भणिया - तेल्लविवक्कणा सावूणं तेल्लं देज्जह, अहं मे मोल्लं दाहामि । एवं  
“गो(कु)लिय त्ति” महियविवक्कया, पूवलिकादि पूविगा, तिलमोदगा मोरंडविवक्कया, वत्याणि य  
दोसिया । पच्छद्वं कंठं ।

“संभोगो” त्ति एवं पभूते किमिच्छए लवममाणे महागिरी अज्जसुहृत्थीं पुच्छति -  
अज्जो ! जाणमु, मा अणेसणा होज्जा ॥५७५०॥

ताहे -

अज्जसुहृत्थि समत्ते, अणुरायाधम्मतो जणो देति ।

संभोग वीसुकरणं, तक्खण आउंटण-णियत्ती ॥५७५१॥

अज्जसुहृत्थी जाणंतो वि अणेसणं अप्पणो सीसममत्तेणं भणइ - अणुराया धम्माओ जणो  
देति त्ति - रायाणमणुवत्तए जणो, जहा राया भद्दओ तहा जणो वि, राजानुवर्तितो धर्मश्च  
भविष्यतीत्यतो जनो ददाति” । एवं भणंतो महागिरिणा अज्जसुहृत्थीण सह संभोगो वीसुं कओ,  
विसंभोगकरणमित्यर्थः ।

ताहे अज्जसुहृत्थी चित्तेइ - “मए अणेसणा भुत्त” त्ति, तक्खणमेव आउट्टो संभुत्तो,  
अकप्पसेवणाओ य णियत्ती ॥५७५१॥

सो रायाऽवन्तिवती, समणाणं सावओ सुविहियाणं ।

पच्चंतियरायाणो, सव्वे सदाविता तेणं ॥५७५२॥ कंठ

अवंतीजणवए उव्जेणीणगरी -

कहितो तंमिं थम्मो, वित्थरतो गाहिता च सम्मत्तं ।

अप्याहियाय बहुसो, समणाणं सावगा होइ ॥५७५३॥ कंठ

अणुयाणे अणुयाती, पुष्कारुहणाइ उक्खिरणगाइं ।

पूयं च चेतियाणं, ते वि सरज्जेसु कारेंति ॥५७५४॥

अणूजाणं रहजत्ता, तेसु सो राया अणूजाणति, भडचडगसहितो रहेण सह हिउति, रहेसु पुष्कारुहणं करेति, रहगतो य विविधफले गज्जगे य कवहुगवत्यमादी य उक्खिरणे करेति, अन्नेसि च चेइयघरट्टियाणं चेइया पूयं करेंति, ते वि रायाणो एवं चैव सरज्जेसु कारावेंति ॥५७५४॥

इमं च ते पच्चंतियरायाणो भणंति -

जति मं जाणह सामिं, समणाणं पणमथा सुविहियाणं ।

दब्बेण मे ण कज्जं, एयं खु पियं कुणह मज्झं ॥५७५५॥

गच्छह सरज्जेसु, एवं करेह ति ॥५७५५॥

वीसज्जिता य तेणं, गमणं घोसावणं सरज्जेसु ।

साहूण सुहविहारा, जाया पच्चंतिया देसा ॥५७५६॥

तेण संपइणा रण्णा विसज्जिता, सरज्जाणि गंतुं अमाघातं घोसंति, चेइयघरे य करंति, रहजाणे य । अंधदमिलकुडकमरहट्टता एते पच्चंतिया, संपतिकालातो आरब्ध सुहविहारा जाता ।

संपतिणा साधू भणिया - गच्छह एते पच्चंतियविसए, वियोहेंता हिउह ।

नतो साधूहि भणियं - एते ण किंचि साधूण कप्पाकप्पं एसणं वा जाणंति, कहं विहरामो ? ॥५७५६॥

ताहे तेण संपतिणा -

समणभडभावितेसुं, तेसुं रज्जेसु एसणादीहिं ।

साहू सुह पविहरिता, तेणं चिय भद्दगा ते उ ॥५७५७॥

समणवेसधारी भडा विसज्जिया बहू, ते जहा साधूण कप्पाकप्पं तहा नं दरिसंतंहि एसणमुद्धं च भिक्खुगहणं करेंतेहि जाहे सो जणो भावितो ताहे साधू पविट्ठा, तेनि सुहविहारं जान, ते य भद्दगा नप्पभिई जाया ॥५७५७॥

उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो, स पन्थिवो णिज्जितसत्तुसेणो ।

समंततो साहुसुहप्पयारं, अकासि अंधे दमिले य घोरे ॥५७५८॥

उदिण्णा नजाययत्ता, के ते ? जोहा, तेहि आउत्तो-बहवस्ते दमयं । तेण उदिण्णाउलसेण मिद्धा सेणा जस्स सो उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो । उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणनत्तो चैव विपक्कभूता नत्तुसेणा ते निज्जिया सेण स पन्थिवो णिज्जितसत्तुसेणो सो पंचविशईसु पत्तासि कुलवान सुहविहारमिद्धयं ॥५७५८॥

जे भिक्खु दुगुल्लियकुत्तेसु अमणं वा पाणं वा स्वाइमं वा माइमं वा पडिग्गाहेड,

पडिग्गाहेनं वा सानिज्जनि ॥५८॥२७॥

जे भिक्खु दुगुल्लियकुलेसु वत्थं वा पडिग्गाहं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा  
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खु दुगुल्लियकुलेसु वसहिं पडिग्गाहेइ. पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू॥२९॥

जे भिक्खु दुगुल्लियकुलेसु सज्झायं उद्दिंसइ, उद्दिंसंतं वा सातिज्जति ॥सू॥३०॥

जे भिक्खु दुगुल्लियकुलेसु सज्झायं चाएइ, चाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खु दुगुल्लियकुलेसु सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू॥३२॥

चउलहुं, तेसि इमो मेदो सत्तवं च -

दुविहा दुगुल्लिया खलु, इत्तरिया होंति आवकहिया य ।

एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुञ्जीए ॥५७५६॥

“इत्तरिय” ति -

सुयगमतगकुलाइं, इत्तरिया जे य होंति निज्जूढा ।

जे जत्थ जुंगिता खलु, ते होंति य आवकहिया तु ॥५७६०॥

इत्तरियति सुतणिज्जूढा - जे ठप्पा कप्पा । सन्नागपडिय ति आवकहिया, जे जत्थविसए जात्यादि-  
जुंगिता जहा दक्खिणावहे लोहकारकल्लाला, लाडेसु णडवरं डन्नम्मकारादि । एते आवकहिया ॥५७६०॥

इमे य दोसा -

तेसु असणवत्थादी, वसही वा अहव वायणादीणि ।

जे भिक्खु गेणहेज्जा, विसेज्ज कुज्जा व आणादी ॥५७६१॥

असणवत्थादियानं गहणं, वसहीए वा विसेज्ज पविसति, वायणादिसज्झायं कुज्जा, तस्स आणादिया  
दोसा ॥५७६१॥

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तद्देव कुच्छा य ।

तेसिं वि होति संका, सच्चे एयारिसा मण्णे ॥५७६२॥

सर्वसाधवो नीचेत्यादि अयसः, अभोज्यसंपक्कं न कश्चित् प्रव्रजतीति एवं परिहाणी, अभोज्येसु  
भक्तादिगहणं दृष्ट्वा धर्माभिमुखा पूर्वप्रतिपन्नगा वा विपरिणमते, श्रवणाकादिसमाना इति जुगुप्सा, जेसु वि  
गेणहेइ तेसिं वि संका - सच्चे एयलिंगघारिणो एते “एतारिस” ति अम्हे सरिसा ॥५७६२॥

इमो अववादो -

असिवे ओमोयरिए, रायदुङ्गे भए व गेलण्णे ।

अद्दाण रोहए वा, अयाणमाणे वि वित्तियपदं ॥५७६३॥

एतेहिं असिवादिएहिं कारणेहिं जया धेप्पति तदा पणगपरिहाणीए ॥५७६३॥

जाहे चउलहुं पत्तो ताहे इमाए जयणाए गेण्हति -

अण्णत्थ ठवावेउं, लिंगविवेगं च काउ पविसेज्जा ।

काउण व उवयोगं, अदिट्ठे मत्ताति संवरितो ॥५७६४॥

सो दुग्धितो असणवत्यादी अप्पसागारियं अण्णत्थ सुण्णघरादिसु ठवादिज्जति, तस्मि गते पञ्चा गेण्हति । अह्वा - रओहरणादिउवकरणं अण्णत्थ ठवेतुं सरवखादिपरलिंगं काउं जहा अयमादियोत्ता ण भवन्ति तहा पविसिउं गेण्हति । अह्वा - मउभण्हादी विअणकाले दिगावलोयणं काउं अण्णेण अदिस्मतो मत्तयं पत्तं वा वासकप्पमादिणा सुट्ठु आवरेत्ता पविसति गेण्हइ य, वत्यादियं पि जहा अविनुद्धं तहा गेण्हति, चसहि अण्णत्थ अलभंतो वाहि सावयतेणभएसु वसहि गेण्हेज्ज, जहा ण णज्जति तहा वसति । सउभायं ण करेति । गयदुद्धा-दिसु अभिगमो अप्पसागारिए सउभायभाणधम्मकहादी वि करेज्ज ॥५७६४॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढवीए णिक्खिवइ,  
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३३॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा संथारए णिक्खिवइ,  
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३४॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वेहासे णिक्खिवइ  
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३५॥

पुढवि-तण-वत्थमातिसु, संथारे तह य होइ वेहासे ।

जे भिक्खु णिक्खिवती, सो पावति आणमादीणि ॥५७६५॥

पुढविग्गहातो उवट्ठमादिभेदा दट्ठया, दब्बादिनणसंधारए या, वस्ये, वससंधारए या, कंबलादिफलहसंधारए या, वेहासे वा दोरगेण उल्लवेइ, एवमादिपगाराण दण्णवरेण जो णिविगवइ तस्म चउलहुं, तस्त घाणादिया य दोसा, मज्जमावविराहणा य ॥५७६५॥

तत्थ संजमे -

तक्कंतपरोप्परओ, पलोद्वल्लिण्णे य भेद कायवहो ।

अहि-भूसलाल-विच्छुय, संचयदोसा पयंगो वा ॥५७६६॥

सुण्णे भत्ताया चउरिदियाओ अक्कोइमातो तक्कोति, यं पि मउजारा, एउं मउवेवपपारो देणव नानादियसेण वा पलोद्वेति एउरायविराहणा, घायपरिहाणी य वेहामट्ठिनं भूसलादिलिणे भावभेदो एउरायवहो वा घायपरिहाणी य । एसा मज्जमविराहणा ।

इमा आवविराहणा -

पहिम्मा भूतदग्ग वा उग्गियमत्तस्स सान्ना पदेज, लीममंती वा यिमं सुवेज, विष्णुमाइ वा पदेज, यिमं वा सुवेज, जे वा मज्जित्तियए दोसा तस्म पि णिविगमे जे वेउ दोसा, मज्जमवो मज्जित्ति पि दूतेज्ज ॥५७६६॥

किं च जो भक्तपाणं णिक्खवइ -

सो समणपुविहियाणं, कप्पाओ अविचितो ति णायव्वो ।

दसरातस्मि य पुण्णे, सो उवही उवहतो होति ॥५७६७॥

समणकप्पो तस्मि अन्नगग्रो अपगतः समणकप्पातो वा अवचितो, एवं णिक्खेवंतस्स दसराते गते जस्मि पादे जं भज्जादि णिक्खवइ तं उवहतं होइ, जो य उवही णिक्खत्तां अच्छइ दसराइं अण्डिलेहिइं सोवि उवहतो भवति ॥५७६७॥

ओचद्वपीढफलयं, तु संजयं ठविय भक्तपाणं तु ।

सुविहियकप्पावचितं, सेयत्थि विवज्जए साहू । ५७६८॥

संयारणादियाणं वंधे जो पक्खस्स ग मुंचति सो दट्ठो णिक्खत्तभक्तपाणा य जो सो सुविहियकप्पातो अवगतो, जो सेयत्थो साहू तेग वज्जेयव्वो, ग तेग सह संभोगो कायव्वो ॥५७६८॥

इमो अववाओ -

वितियपयं भेलण्णे, रोहग अट्ठाण उत्तिमट्ठे वा ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए णिक्खवे भिक्खू ॥५७६९॥

गिलागकज्जवावडो णिक्खवति, रोहगे वा संकृडवसहीए वेहासे करेति, अट्ठाणे वा सागारिए भुंजमाणो उत्तिमट्ठपवणस्स वा करणज्जं करेत्तो णिक्खवति ॥५७६९॥

एवमादिकारणेहिं णिक्खवतो इमाए जयणाए णिक्खवति -

दूरगमणे णिसिं वा, वेहासे इहरहा तु संवारं ।

भूमीए ठवेज्ज व णं, वणवंध अमिक्ख उवओगो ॥५७७०॥

दूरं गंतुकामो णिसिं वा जं परिवानिज्जति तं वेहासे दारणेग णिक्खवति, “इहरहा” ति आसण्णे गंतुकामो आसण्णे वा किंचि लोयमादिकाटकामो तस्य संवारे भूमीए वा ठवेति, वकारो विगप्पे, गकारो पादपूरण । तं पि ठवेत्तो वणं चोरेण वंधइ, पिपीलिनमया छगणादीहिं वा लिपइ, अमिक्खणं च उदयोगं करेति ॥५७७०॥

जे भिक्खू अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥३६॥

जे भिक्खू अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं आवेदिय परिवेदिय भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

अण्णतित्थिया तच्चन्धियादि वंमणा, क्षतिया गारत्था, तेहिं सद्धिं एगमायगे भायणं एगदु-तिदिसि-द्वित्तु आवेदित्तं, सच्चदिसिद्वित्तु परिवेदित्तं, अहवा - आइ मयादया वेष्टितः । दिसिविदिसातु विच्छिद्यण-द्वित्तु परिवेष्टितः । अहवा - एगपंतीए समंता ठिण्णु आवेष्टितः, दुगातिसु पंतीसु समंता परिवेष्टितः ।

गिहि-अण्णतित्थिएहिं व, सद्धिं परिवेदीए व तस्मज्जे

जे भिक्खू असणादी, भुंजेज्जा आणमादीणि ॥५७७१॥

अणउत्थिगहिं समं भुंजति अणउत्थियाण वा मज्जे ठितो परिवेदितो भुंजति, आणादिया दोमा,  
ओह्मो चउलहुं पच्छित्तं ॥५७७१॥

विभागतो इमं -

पुच्यं पच्छा संशुय, असोयवाई य सोयवादी य ।

लहुगा चउ जमलपदे, चरिमपदे दोहि वी गुरुगा ॥५७७२॥

पुच्यसंशुया असोय-सोयवाति य, पच्छासंशुया असोय-सोय ति । एतेसु पठेसु पदेसु लहुगा चउगे ति,  
जमलपदं वि कालतवेहिं विसेमिज्जं ति जाव चरिमपदं । पच्छासंशुतो सोयवादी तत्थ चउलहुगं तं कालतवेहिं  
दोहिं वि गुरुगं भवति ॥५७७२॥

थीसुं ते चिय गुरुगा, छल्लहुगा होंति अण्णतित्थीसु ।

परउत्थिणि छगुरुगा, पुब्बावरसमणि सत्तऽट्ठ ॥५७७३॥

एयासु चेव इत्थीसु पुरपच्छप्रसोयसोयासु चउगुरुगा कालतवेहिं विसेमिता । एतेसु चेव  
अण्णतित्थियपुरिसेसु चउसु छल्लहुगा कालतवविसिद्धा । एयासु चेव परतित्थिणीसु छगुरुगा । पुब्बसंशुयासु  
गमणीसु छेदो, अवर ति पच्छसंशुयासु समणीसु अट्ठमं ति मूल ॥५७७३॥

अथमपरः कल्पः -

अहवा वि णालवद्धे, अणुच्यओवासए व चउलहुगा ।

एयासुं चिय थीसुं, णालसम्मे य चउगुरुगा ॥५७७४॥

णालवद्धेण पुरिसेण अणालवद्धेण य गहिताणुत्ततो वा सावगेण, एतेसु दोसु वि चउलहुगा । एयासुं  
चिय दोसु इत्थीसुं णालवद्धे य अवरसमणमहिट्ठिमि एतेसु वि चउगुरुगा ॥५७७४॥

अण्णालदंसणित्थिसु, छल्लहु पुरिसे य दिट्ठआभट्ठे ।

दिट्ठित्थि पुम अदिट्ठे, मेह्णि भोती य छगुरुगा ॥५७७५॥

इत्थीसु अणालवद्धासु अवरसमणमहिट्ठीसु दिट्ठाभट्ठेसु पुरिसेसु एतेसु दोसु वि अणलहुगा, इत्थीसु  
दिट्ठाभट्ठासु पुरिसेसु य अदिट्ठाभट्ठेसु मेह्णि वि माउपविउत्तयपाना, भोदय वि पुब्बभट्ठा, एतेसु चउसु  
वि अणुगुरुगा ॥५७७५॥

अदिट्ठाभट्ठासुं थीसुं संभोगसंजती छेदो ।

अमणुणसंजतीए मूलं थीफाससंवंधो ॥५७७६॥

इत्थीसु अदिट्ठाभट्ठासु संभोगसंजतीसु य एयासु दोसु वि ऐलो, समणए वि समभेदसमणयोसु  
मूलं, इत्थीति मात्तं संवेदय फामे संवेदो, पावपरीभवदोण, दिट्ठे संकायिदा य ऐला, उणि मयत्तिमिणो  
गण्ठेयो तो पठेसु पठितारणं वा ॥५७७६॥

पुच्यं पच्छाकम्मे, एगतरदुगं उट्ठमहातो ।

अण्णोण्णामयगहणं स्वदग्गहणे य अनियत्तं ॥५७७७॥

पुरेकम्म-संजतेण सह भोज्यं हृत्यपादादिसुइं करेइ, संजतो भुंजिस्सइ त्ति अधिकतरं रंघावेति । पच्छाकम्मं “कोवि एसो” त्ति सनेलण्हणं करेज्ज, पच्छित्तं वा पडिवज्जेज्ज, संजतेण वा भुत्ते अपहृप्पंते अण्णं पि रंघिज्जा, संजतो गिही वा एगतरो जुगुंथं करेज्ज, विलिगभावेण वा उड्डं करेज्जा, अण्णेण दिट्ठे उड्डाहो भवति, कासादिरोगो वा संकमेज्ज, अधिकतरखट्ठेण वा अचियत्तं भवेज्ज ॥५७७७॥

एवं तु भुंजमाणं, तेहिं सद्धिं तु वणिता दोसा ।

परिवारितमज्झगते, भुजंते लहुग दोस इमे ॥५७७८॥

परिवारितो जति भुजइ तो चउलहुं ॥५७७८॥

इमे य दोसा -

परिवारियमज्झगते, भुजंते सव्व होंति चउलहुगा ।

गिहिमत्तचड्डगादिसु, कुरुकुयदोसा य उड्डाहो ॥५७७९॥

मज्झे ठितो जणस्स परिवारिओ जइ भुंजइ, अहवा - समंता परिवारिओ दोप्पं तिप्पं वा जइ मज्झगओ भुंजइ, सव्वप्पगारेहिं चउलहुं, गिहिमायगे य ण भुंजियव्वं तत्थ भुंजंतो आयाराओ मस्सइ ।

“कंसेसु कंसपाएसु” - सिलोगो ।

मत्तगचड्डगादिसु य भुंजंतस्स उड्डाहो भवति, कंजियदवेण य उड्डाहो, इयरेण आउक्कायविराहणा, बहुदवेण य कुरुकुयकरणेण उप्पिलावणादि दोसा, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा एतेहिं सद्धिं परिवेदिएण वा ण भुंजियव्वं ॥५७७९॥

वित्तियपद सेहसाहारणे य गेल्लण्ण रायदुट्ठे य ।

आहार तेण अट्ठाण रोहए भयलंभे तत्थेव ॥५७८०॥

पुव्वसंयुतो पच्छासंयुतो वा पुव्वं एगमायणो आसी, से तस्स णेहेण आगतो जति ण भुंजति तो विपरिणमति, अतो सेहेण समं भुंजति, परिवेदितोवि तेसागएसु मा एतेसि संका भविस्सति - “कि एस अप्पसागारियं समुद्दिस्सति त्ति अम्हे बाहिं करेत्ति” बाहिमावं गच्छे अतो परिवेदितो भुंजति । साहारणं वा लद्धं तं ण चेव भुंजियव्वं, अह कक्खडं ओमं ताहे धेतुं वीसुं भुंजति, अह दाया न देइ, ते वा न देंति, ताहे तेहिं चेव सद्धिं परिवुडो वा भुंजति ।

गिलाणो वा वेज्जस्स पुरतो समुद्दिसेज्जा, जयणाए कुरुकुयं करेज्जा ।

रायदुट्ठे रायपुरिसेहिं गिज्जंतो तेहिं परिवेदितो भुंजेज्जा ।

आहारतेणगेसु तेसि पुरओ भुंजेज्ज ।

अट्ठाणतेणसावयमया सत्थस्स मज्जे चेव भुंजति ।

रोहगे सव्वेसि एक्का वसही होज्जा, बोहिगादिभए जगेण सह कंदराइसु अच्छति, तत्थ तेसि पुरतो समुद्दिसेज्ज ।

ओमे कहिंवि सत्तागारे तत्थेव भुंजंताण लब्भति, भायणेसु ण लब्भति तत्थेव भुंजेज्जा ।

सागारिए एक्को परिवेसणं करे चड्डगाइसु संतरं संभुंजति, णाउं दुविहदवेण कुरुकुयं करेइ सव्वेसु जहासंभवं । एसा जयणा ॥५७८०॥



जे भिक्षु आयरिय-उवज्झायाणं सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता हत्थेणं

अणणुणवेत्ता धारयमाणो गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्जइ॥५०॥३॥

आचार्य एव उपाध्याय आयरिय-उवज्झायाओ भणति, केनिचि आयरियो केनिचि आयरिय-उवज्झातो । अह्वा - जहा आयरियस्स तहा उवज्झायस्स वि न संघट्टेज्जति । पातो सत्थाज्जरिसि ति अविणतो । हत्थेण अणणुणवति - न हत्थेन स्पृष्ट्वा नमस्कारयति मिथ्यादुष्कृतं च न भाषते, तस्स चउत्तहं ।

सेज्जासंथारगहणातो इमे वि गहिया -

आहार उवहि देहं, गुरुणो संघट्टियाण पादेहि ।

जे भिक्षु ण खामेति, सो पावति आणमादीणि ॥५७८॥१॥

आहारे ति - जत्थ मत्तगे भत्तं धारितं, उवहि ति - कप्पादी, सेमं कंठं ॥५७८॥१॥

कहं पुण संघट्टेति ?, भणति -

पविसंते णिक्खमंते, य चंक्रमंते व वावरंते वा ।

चेट्ठणिवण्णाऽऽउंटण, पसारयंते व संघट्टे ॥५७८॥२॥

पये वा चंक्रमंतो विस्सामगादिवाधारं करंतो, सेमं कंठं ॥५७८॥२॥

चोदगाह - "खुत्तां आहारउवधिदेहस्स य अघट्टणं । संथारगभूमी कि ण संघट्टिज्जति ? को वा उव-करणातिशंसघट्टिएसु दोतो ?,

आचार्य आह -

कमेरेणु अवहुमाणो, अविणय परितावणा य हत्थादी ।

संथारगहणमत्था, उच्छुवणस्सेव वति रक्खत्ता ॥५७८॥३॥

कमेसु ति-पदेसु जा रेसू सा संथारगभूमीए परिमहति, उवकरणे वा लग्गति, अवहुमाणो पविनयो ण संघट्टिए कम्मो, अण्णं च उच्छुवाणे रविणयस्से वति रक्खति - ण भज्जणं देवि, तस्स रक्खणे उच्छुवाणे रविणयं वेव, एवं संथारगस्स अंसंघट्टणे गुरुस्स देहातिपा दूरातो वेव पविहरित्ता । मंजमापविगहणा य, आयारियं च अयमण्णंतेण मंजमो विराहिमो ।

कहं ? जेय तस्मि वेव आनदंमनवरित्तानि अधीजानि -

"जे यावि मंदे ति गुरुं०" वृत्तं ।

आयविराहणा - जण्ण देवयाए आयरिया परिमहतिवा या विगहंज्ज, अण्णं वा कोट आयरिय-पविणयो माणु उट्टेज्जा, नत्थ पसंमहादी दोतो ॥५७८॥३॥

चित्थियपदमणणज्जे, ण खमे अविकोवित्तं व अप्पज्जे ।

विज्जादोसण्णं वा, खामे आउट्टिया वा वि ॥५७८॥४॥

अप्यज्जमो मेसो वा अज्जमो वा पामेति, आउट्टियं वा विज्जादिवित्तं माग्गेतो विज्जियं वा उट्टेय संघट्टेज्जा, पामेति वा 'मं एए पामेज्जमि पविमवति' ति उज्जमंज्जा, एव आउट्टियं वि संघट्टेज्जा पत्ता ममावेद ॥५७८॥४॥

जे भिक्खु पमाणाइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेइ,  
धरेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥३६॥

गणणाए पमाणेण य, हीणतिरित्तं व जो धरेज्जाहि ।

ओहोवग्गह उवही, सो पावति आणमादीणि ॥५७८५॥

उवधी दुविहो — ओहोवही उवगहितो य । एक्केक्को तिविहो — जहणो मज्झिमो उक्कोसो य ।  
तत्थ एक्केक्के गणणापमाणं पमाणपमाणं च, तं हीणं अधिकं वा जो धरेति । तत्थ ओहोओ — सुत्तभगियं  
चउलहं । विभागतो — अण्णग्रत्येण उवधिणिप्फणं भारभयपरितावणादी दोसा, जम्हा एते दोसा तम्हा ण हीणा-  
तिरित्तं धरेयव्वं ॥५७८५॥

जिणधेराणं गणणातिपमाणेण जाणणत्थं भण्णति —

दव्वप्पमाणगणणाइरेण परिकम्म विभूसणा य मुच्छा य ।

उवहिस्स य पमाणं, जिणधेर अधक्कमं वोच्छं ॥५७८६॥

जिणधेराणं इमं पायणिज्जोगपमाणं —

पत्तं पत्तावंधो पायडुवणं च पायक्केसरिया ।

पडलाइ रयत्ताणं, च गुच्छओ पायनिज्जोगो ॥५७८७॥ कंठ्या

इमं जिणकप्पियाणं सरीरोवहिप्पमाणं —

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती ।

एसो दुवालस विहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥५७८८॥ कंठ्या

इमं जहणमज्झिमुक्कोसाण कप्पाण य पमाणं —

चत्तारि उ उक्कोसा, मज्झिमगा जहणगा वि चत्तारि ।

कप्पाणं तु पमाणं, संडासो दो य रयणीओ ॥५७८९॥

संडासो त्ति कुडंडो, रयणि त्ति दो हत्था, एयं दीहत्तणेण, वित्थरेण दिवडुं रयणि । अहवा —  
जिणकप्पियाणं कप्पपरिमाणं दीहत्तणेण संडासो वित्थारेण दोणि रयणीओ, एस आदेसो वक्खमाणो ॥५७८९॥

इमं पत्तगवंधस्स पमाणप्पमाणं —

पत्तावंधपमाणं, भाणपमाणेण होइ कायव्वं ।

जह गंठिम्मि कयम्मी, कोणा चउरंगुला होंति ॥५७९०॥

जं च समचउरंस्स तस्स जा बाहिरतो परिही तेण भायणप्पमाणेण पत्तगवंधो कायव्वो, जं पुण  
वित्तमं तस्स जा परिही महंततरी तेणप्पमाणेण पत्तगवंधो कायव्वो, अहवा — गंठीए कयाए जहा पत्तगवंध-  
कणा चउरंगुला भवति — गंठीए अतिरित्ता भवतीत्यर्थः ॥५७९०॥

इमं रयताणस्स पमाणप्पमाणं —

रयताणपमाणं भाणपमाणेण होइ निप्फणं ।

पायाहिणं करंतं, मज्जे चउरंगुलं कमइ ॥५७९१॥

मज्झिं त्ति - मुहंतापो मुह्यो जहा दो वि ग्रंथा नउरंणुलं कमंति एयं त्यताणपमाणं ॥१७८१॥

अहवा - जिणकप्पियस्स कप्पणमाणां इमं -

अवरो वि य आएसो, संडासो सोत्थिए निवण्णे य ।

जं खंडियं दढं तं, छम्मासे दुच्चलं इयरं ॥१७८२॥

आदेमो त्ति - प्रकारः । संडासो त्ति कप्पाण दीहणमाणं, एयं जाणुमंडासगातो घाटनं पुत्ते पटिच्छादेतो जाय वयं एयं दीहणं । सोत्थिए त्ति - दो वि बोधणकणो दोहि वि हत्थेहि धेनुं दो वि बाहुमीमे पावति ।

कहं ? उच्यते - दाहिणेगं वामं बाहुमीसं, एवं दोष्ट वि कणादीग हृदयपदेने सोत्थियागारो भवति । एयं कप्पाण बोधय्यं ॥१७८३॥

एत्थ आएसेण इमं कारणं -

संडासल्लिङ्गेण हिमाइ एत्ति, गुत्ता अगुत्ता वि य तस्स सेज्जा ।

हत्थेहि तो गेण्हिय दो वि कण्णे, काऊण खंधे सुवई व भाई ॥१७८३॥

जिणकणियाण गुत्ता अगुत्ता वा सेज्जा होज्जा, ताए सेज्जाए उगुत्तुपमिणिट्टस्य मंडामल्लिङ्गेमु अही हिमयातो वा आगच्छेज्ज, तस्स रगतगुहाते, तेग कारणेण एत्त पाउरणविही, कप्पाण एयं पमाणं भवितं - "दो वि कण्णे" त्ति दो वि वत्थरम कण्णे धेनुं गिवण्णे गितण्णे वा सुवति भायनि या । सो पुन उगुत्तुतो वेव अच्छद्द प्रायो जगति य ।

केई भणंति - उगुत्तुपो वेव गिराइपो सुवड ईमिमेतं ततिवज्जामे ।

सो पुन केमिं वत्थं गेण्हति ? जं "अत्थियं" त्ति छिण्णं जं एवतातो पासाउ, तं न जं छम्मां भरति जहण्णेण तं दढं गेण्हति, "इयरं" त्ति जं छम्मानं न परति तं दुच्चलं न गेण्हति ॥१७८३॥ एयं गच्छणिगयाणं पमाणं गत ।

इत्थाणि गच्छवासीण प्रमाणं प्रमाण-प्रमाणं न भण्णत्ति -

कप्पा आतपमाणा, अट्टाइज्जा उ विन्थडा हत्थे ।

एवं मज्झिम माणं, उक्कोसं होति नत्तारि ॥१७८४॥

उपरोक्तेन पत्तादि हत्या दीहणनेने एयं पमाणं अनुगत्यं पेशय भवति, दुहणे वि य अगुत्ता नमाधिया कयंति ॥१७८४॥

मज्झिमसुत्तोमणु दोनु वि पमाणेनु इमं कारणं -

संकुचिन तरुण आतप्यमाण सुवणे ण गीतसंतासो ।

दुहन्तो पेन्त्तण धेरे, अणुचिय पाणादिरकया य ॥१७८५॥

मज्झिमसुत्तुमणो, सो संकुचितापो सुवति, जेन कारणेने तस्स न सीतयणो भायनि तेन तस्स वत्थं पावतामाणा । जो पुन धेरो सो सीतयणो न सुवति मज्झिमसुत्तोमणो सुवति तेन तस्स वत्थं पावतामाणा ।

कप्पा कप्पंति । “पेल्लणं” ति अक्कमणं “दुह्मो” ति — सिरपादांतेसु दोसु अ पासेसु एवं तस्स सीतं ण भवति । सेहस्स वि अणुच्चिए सुवणविहिम्मि एवं चेव कप्पाण पमाणं कज्जति । अवि य पाणदया कया भवति, न मंहुकप्पुत्ता कीडाती पविसंतीति ॥५७६५॥

इमं पडलाण गणणप्पमाणं —

तिविधम्मि कालछेदे, तिविधा पडलाओ होंति पादस्स । .

गिम्ह-सिसिर-वासासुं, उक्कोसा मज्झिम जहण्णा ॥५७६६॥

जे दडा ते उक्कोसा, दढदुव्वला मज्झिमा, दुव्वला जहण्णा, सेसं कंठं ।

गिम्हासु तिणिण पडला, चउरो हेमंति पंच वासासु ।

उक्कोसगा उ एए, एत्तो पुण मज्झिमे वोच्छं ॥५७६७॥

गिम्हासु चउ पडला, पंच य हेमंति छच्च वासासु ।

एए खलु मज्झिमा य, एत्तो उ जहन्नओ वुच्छं ॥५७६८॥

गिम्हासु पंच पडला, छप्पुण हेमंति सत्त वासासु ।

तिविहंमि कालछेए, पायावरणा भवे पडला ॥५७६९॥

तिन्नि वि गाहाओ कंठाओ कायव्वाओ ।

इमं रयोहरणं —

घणं मूले थिरं मज्झे, अग्गे मद्वजुत्तयं ।

एगंगियं अम्भुसिरं, पोरायामं तिपासियं ॥५८००॥

हत्थग्गहपदेसे मूल भण्णति, तत्थ घणं वेदिज्जति, मज्झंति रयहरणपट्टगो सो य दढो, गव्वगो वा मज्झंसो दढो, अग्गा दसाओ ताओ मद्ववाओ कायव्वाओ, एगंगियं दुगादिखंडं न भवति, अम्भुसिरं ति रोमवहुलं न भवति, वेढियं अणुहुपव्वमेत्तं तिभागे तज्जायदोरेण वद्धं तिपासियं ॥५८००॥

भण्णति —

अप्पोल्लं मिउपम्हं, पडिपुणं हत्थपूरिमं ।

तिपरियल्लमणिसिद्धं, रयहरणं धारए एगं ॥५८०१॥

अप्पोल्लं-अम्भुसिरमित्यर्थः, मृदुदां, पडिपुणं प्रमाणतः वत्तीसंगुलं सह णिसेज्जाए, हत्थपूरिम-णिसेज्जाए तिपरियलं वेदिज्जति, “अणिसहं” ति उग्गहा अफिट्ठं धरिज्जति ॥५८०१॥

उण्णियं उट्ठियं वाचि, कंवलं पायपुच्छणं ।

रयणिप्पमाणमित्तं, कुज्जा पोरपरिग्गहं ॥५८०२॥

उण्णिय-कंवलं उट्ठियकंवलं वा पायपुच्छणं भवति । रयणि ति हत्थो, तप्पमाणो पट्टगो ॥५८०२॥

संथारुत्तरपट्टो, अट्टाहज्जा य आयया हत्था ।

दोहंपि य वित्थारो, हत्थो चउरंगुलं चैव ॥५८०३॥

उणिघो संथारपट्टो, सोमिघो तप्पम णो उत्तरपट्टो, मेमं कंठं ॥५८०३॥

इमो चोलपट्टो -

दुगुणो चउगुणो वा, हत्थो चउरंस चोलपट्टो य ।

थेरजुवाणाणट्टा, सण्हे थूलंमि य विभासा ॥५८०४॥

दढो जो सो दीहत्तणेग दो हत्था वित्थारेण हत्थो सो दुगुणो कतो ममचउरंगो भवति, जो थद-  
दुव्वलो सो दीहत्तणेण चउरो हत्था, सो वि चउगुणो कयो हत्थमेत्तो चउरंसो भवति, एगुणं ति ममचउरमाणे,  
उणिघा एगा निमिज्जा पमाणप्पमाणेन हत्तप्रमाणा तप्पमाणा चैव तप्पमं अंघो पच्छादणा सोमिया निमिज्जा  
॥५८०४॥

चउरंगुलं वित्थी, एयं मुहणंतगम्स उ पमाणं ।

वीओवि य आएसो, मुहप्पमाणेण निष्फन्नं ॥५८०५॥

वित्थिप्पमाणं विकण्णकोगणहयं णामिगमुहं पच्छादेति जहा किकाडियाए मंथो भवति ॥५८०५॥

गोच्छयपादद्वयणं, पडिलंहणिया य होइ णायच्चा ।

तिहं पि उ प्पमाणं, वितत्थि चउरंगुलं चैव ॥५८०६॥ कंठ

जो वि दुवत्थ तिक्थो, एगेण अचेलतो व संथरती ।

ण ह्नु ते विंसंति परं, सच्चवेण वि तिणिण वेत्तच्चा ॥५८०७॥

जिगकप्पियाण गहणं, थेरकप्पियाण परिभोगं प्रति, जो एगेयं संथरति सो एयं मेवहति परिभुवति वा ।  
जो दोहि संथरति सो दो मेवहति परिभुवति वा, एयं तत्तिघो वि ।

जिगकप्पिघो वा घवेतो जो संथरति सो घवेतो थेर सत्तत्ति, एयं सजिगहविमेमो भवतिघो ।  
एगेण सभिगहविमेमद्विपुण सपिक्कत्तत्तत्तो ण हीनिवत्तो ।

कि क्कारणं ? जह्वा जिगह एमा घावा, मंथेर वि तिणि कप्पा वेत्तच्चा ।

थेरकप्पियाणं जह घवाउएयं संथरति तह्वावि तिणि कप्पा निममा वेत्तच्चा ॥५८०७॥

कप्पाण इमो गुणो -

अप्पा अमंथरंतो, निवारिओ होति तिहि उ वन्थेहि ।

गिहति गुरु विदिण्णे पमाणपडिलेहणे मत्त ॥५८०८॥

सोवादिता अमंथरत्तमं मं अमंथरंतं अमंथरतिमेति निवारितं भवति । ते क कपो दृष्ट्या अमंथरित्त  
दिगे मेवहति, पमाणपडिलेहणे वि कपोरत्तत्तिमेति, उवन्थेति मत्त मेवहति ॥५८०८॥

इमं उद्देश्यमात्रो, ममवादिमं व प्रमाणं -

तिणि क्कामिणे जहणो, पंन य ददद्वयत्ता य मंथेज्जा ।

मत्त य परिजुप्पाइ, एयं उक्कोगयं गहणं ॥५८०९॥

कस्मिन् त्ति वण्णातो दुत्तप्पमाणा घणमसिणा, जेहि सविया अंतरितो न दीसइ तारिसा, जहण्णेण त्तिणि गेण्हति । पंच दइदुव्वले, परिजुणो सत्ता गेण्हइ ॥५८०६॥

भिण्णं गणणाजुत्तं, पमाण-इंगाल-धूमपरिसुद्धं ।

उवहिं धारए भिक्खू, जो गणचित्तं न चित्तेइ ॥५८१०॥

भिण्णं त्ति अदसं सगलं न भवति, गणप्यमाणेण पमाणप्यमाणेण य जुत्तं गेण्हइ । इंगालो त्ति रागो, धूमो त्ति दोसो, तेहि परिसुद्धं - न तेहि परिभुज्जतीत्यर्थः ॥५८१०॥ जो सामण्णभिक्षू तस्सेयं वत्थप्पमाणं भणिय ।

जो पुण गणचित्तगो गणावच्छेदगादि तस्सिमं पमाणं -

गणचित्तगस्स एत्तो, उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य ।

सव्वो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महा (ज) णस्स ॥५८११॥

गणचित्तगो गणावच्छेदगो तस्स जहण्णमज्झिमुक्कोसो सव्वो वि ओहितो उवग्गहितो वा, महाजणो गच्छो ॥५८११॥

आलंबणे विसुद्धे, दुग्गुणो तिग्गुणो चउग्गुणो वा वि ।

सव्वो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महाणस्स ॥५८१२॥

आलंबति जं तं आलंबणं, 'त' दुविधं - दव्वे रज्जुमादो, भावे गागादी । इह पुण भावे दुल्लभ-वत्त्वादिदं तत्थ जो गणचित्तगो सो दुग्गुणं पडोयारं तिग्गुणं वा चउग्गुणं वा, अहवा - जो अतिरित्तो ओहितो उवग्गहितो सव्वो गणचित्तगस्स परिग्गहो भवति, महाजणो त्ति गच्छो तस्स आवतिकाले उवग्गहकरो भविस्सइ ॥५८१२॥ गणप्यमाणेत्ति गयं ।

इदार्णि अइरेगहीणे त्ति -

पेहा-अपेहकता दोसा, भारो अहिकरणमेव अतिरित्ते ।

एते हवन्ति दोसा, कज्जविवत्ती य हीणम्मि ॥५८१३॥

अतिरेगं पडिलेहंतस्स नुत्तादिपल्लिमयो, अपेहंतस्स उवहिणिप्फणं, अपरिभोगे अनुपभोगत्वात् अहिकरणं भवति, हीणे पुण कज्जविवत्ति विणासो भवति ॥५८१३॥ हीणाइरित्ते त्ति गयं ।

इदार्णि परिकम्मणे त्ति -

परिकम्मणे चउभंगो, कारण विही वित्तिओ कारणे अविही ।

णिक्कारणम्मि य विही, चउत्थो निक्कारणे अविही ॥५८१४॥

कारण अणुण्ण विहिणा, सुद्धो सेसेसु मासिया तिणि ।

तव-कालेहि विसिद्धा, अंते गुरुणा य दोहिं पि ॥५८१५॥

सुद्धो कारणे विहीए एस पढमभंगो, एत्थ अणुण्णे त्ति परिकम्मे त्ति सुद्धो त्ति ण पच्छित्तं । सेसेसु त्तिमु भोगेसु पत्तेयं मासलहं । वित्तिभंगे कालगुहं । तत्तियभंगे तवगुहं । अंतिल्लो चउत्थभंगो तत्थ तवकालेहि

दोहं वि गुरुं । परिकम्मगंति वा निव्वगंति वा एगट्ठं । एगमरा ढंडी उव्वट्ठं पम्मरनिव्वणि य एमा पविही,  
भसकंठगदुनरिगा य विही ॥५=१५॥

इदाणि "विभूष" ति -

उदाहडा जे हरियाहडीए, परेहि थोतादिपदा उ वत्थे ।

भूसाणिमित्तं खलु ते करंते, उग्घानिता वत्थ सविन्थरा उ ॥५=१६॥

"उदाहट" ति भगिया "हेरिया हटिया" मुत्ते । परेहि ति तेणगेहि जे थोतावी पदा वत्ता ते वत्ति  
अणगा विभूसावडियाए करेति तं जहा घोवति वा, रयति वा, घट्टेति वा, मट्टं वा करेति, 'विचस्तिरगेहि'  
वा रयति तस्म चव्वलहुं । सविन्थरगह्यातो थोतादिपदे करेत्तस्म जा घावविराहया तानु जं पन्निहं मं च  
भवति ॥५=१६॥

विभूषं करंतस्म इमो अभिणायो -

मलेण घत्थं बहुणा उ वत्थं, उज्झाड्यो हं चिमिणा भवामि ।

हं तस्म थोवम्मि करंमि नत्तिं, वरं ण जोगो मलिणाण जोगो ॥५=१७॥

मत्तिनं नग्घं तेन वाड्ढं विस्सो हस्ये, यग्घाहिस्सोड्ढं हस्ये यग्घानस्य यग्घस्य थोवत्थे "वत्ति"  
ति - जेण तं थोवति, गोमुत्तातिगा तं उदाहरामि, "वरं ण जोगो" ति - वरं मे प्यग्घस्यस्य वत्ति  
अन्निद्धं, ण य मत्तिगेहि वत्थेहि तट्ठ मंजोगो ॥५=१७॥ कान्णे पुणो थोवन्तो मुद्धो ।

चोदगो भणानि - णग्घ थोवन्तस्म । "विभूषा इथीनगग्गी" गित्तोगो ।

आयरियो भणइ -

कामं विभूसा खलु लोभदोगो, तहावि तं पाट्टणतो ण दोगो ।

मा हीलणिज्जो इमिणा भविस्सं, पुच्चिद्धिमादी इय मंजती वि ॥५=१८॥

कामं चोदगामिनायस्म पट्टमुपयो, गत्तु पयभासो, जा एमा विट्ठया - एम लोभ पट्टिपत्ते, तहावि  
तं तत्थ "गुविभूषितं" कावसे काज्ज पाउस्ये ण दोगो भवति ।

रागादट्ठिंमं डो हट्ठिं पित्तम पयसो मो विवेवि - "मा इमस्म पट्टपट्टस्म इत्थोपपत्ति-  
मत्तस्म हमेहि मत्तिपयसोहि हीमत्तिज्जो भविस्सामि ति । एम मावसो जेण य पत्तिम विट्ठं पत्तिपट्ट  
इम पयसं पत्तो 'विमत्तं मत्तेन पत्तिविमि' ति, एतं मत्तो वि विट्ट पत्तिम जा विम पट्टपट्टपट्ट  
॥५=१८॥

ण तस्म वत्थादिनु कोइ मंगो, रज्जं तणं चव जहाय नेणं ।

जो सो उव्वज्झाड्य वत्थमंगो, तं गारवा मो ण चण्ह मोचुं ॥५=१९॥

जो सो इत्थिण गारवसो य तस्म गारविन् कोइ मंगो वि तं वत्थम ति तं गारवा । तं गारवा  
जहाय मोचो पट्टि । उव्वज्झा - जो सो उव्वज्झाड्य वत्थमंगो । तं गारवा मो ण चण्ह मोचुं ।

१. गारवा १.३८६ । २. उव्वज्झाड्य १.३८६ । ३. विट्ठया १.३८६ । ४. उव्वज्झाड्य १.३८६ । ५. उव्वज्झाड्य १.३८६ । ६. उव्वज्झाड्य १.३८६ । ७. उव्वज्झाड्य १.३८६ । ८. उव्वज्झाड्य १.३८६ । ९. उव्वज्झाड्य १.३८६ । १०. उव्वज्झाड्य १.३८६ ।

इदानीं <sup>१</sup>मुच्छ त्ति -

महद्वणे अप्पधणे व वत्थे, मुच्छिज्जती जो अविवित्तभावो ।

सइं पि नो भुंजइ मा हु भिज्जे, वारेति वण्णं कसिणा दुगा दो ॥५८२०॥

बहुमुल्लं अप्पमोल्लं वा अविवित्तभावो त्ति अविमुदभावो, अविवित्तो - लोहिलमित्यर्थः । तं पहाणवत्थं ण सयं भुंजति, जो अण्णं वारेइ परिभुंजतं तस्स पच्छित्तं, “कसिणा दुगा दो” त्ति, कसिण त्ति संपुण्णा, दुगा दो चउरो - चउगुरुमित्यर्थः ॥५८२०॥

वत्थे इमाणि मुच्छाकारणाणि -

देसिल्लगं पम्हजयं मणुण्णं, चिरायणं दाइ सिणेहतो वा ।

लब्भं च अण्णं पि इमप्पभावा, मुच्छिज्जती एव भिसं कुसत्तो ॥५८२१॥

देसिल्लगं जहा पोंडवधनकं, पम्हजुगं जहा पूरवुदपावारगो, सप्हं थूलं सदेस-परदेसं वा, मणस्स जं रुच्चइ तं मणुण्णं, चिरायणं आयरियपरंपरागयं, दाइति विकारायं जेण वा तं दिण्णं तस्स सिणेहतो ण परिभुंजति, इमेण वा अच्यंतेण एयप्पभावाओ अण्णं पि लब्भामो एवं मुच्छाए ण परिभुंजति, एवं त्ति एवं “भिसं” अत्यर्थं कुत्तितं सत्त्वं यस्य भवति स कुसत्वो अल्पसत्त्व इत्यर्थः, एवं भिसं कुसत्वो लोभं करोतीत्यर्थः ॥५८२१॥ वत्थे त्ति गतं ।

इदानीं पायं भणामि ; तस्स इमाणि दाराणि -

<sup>१</sup>दच्चप्पमाण<sup>२</sup>अतिरेग<sup>३</sup> हीणदोसा तदेव<sup>४</sup> अववादे ।

<sup>५</sup>लक्खणमलक्खणं<sup>६</sup> तिथिह<sup>७</sup> उवहि वोच्चत्थ आणादी ॥५८२२॥

<sup>८</sup>को<sup>९</sup> पोरिसीए<sup>१०</sup> काले, आकर<sup>११</sup> चाउल<sup>१२</sup> जहण<sup>१३</sup> जयणाए ।

<sup>१४</sup>चोदग<sup>१५</sup> असती असिव, प्पमाणउवओग<sup>१६</sup> छेदण<sup>१७</sup> मुहे य ॥५८२३॥

पमाणाइरंगधरणे, चउरो मासा हवन्ति उग्वाया ।

आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमा-SSयाए ॥५८२४॥

द्रव्यपात्रं, तस्य दुविधं प्रमाणं - गणणप्पमाणं पमाणप्पमाणं च । दुविहस्स वि पमाणस्स अतिरेगधरणे चउलहुगा । सेसं कंठयं ।

गणणाते पमाणेण व, गणणाते समत्तओ पडिग्गहओ ।

पालिमंथ भरुडुडुगा, अतिप्पमाणे इमे दोसा ॥५८२५॥

दुविहं पमाणं, तस्य गणणप्पमाणेण दो पादा - पडिग्गहो मत्तगो य । अह एत्तो तिगादिअतिरित्तं धरेति तो परिक्कम्मण-रंगण-पडिलेहुणादिनु सुत्तत्थपालिमंथो अट्ठाणे वहतो भारो उट्ठंडकश्च जनहास्यो भवति - ‘अहो ! भारवाहिता इमे’ ॥५८२५॥



‘दुष्पमाणादरिते वि इमे दोषा -

भारेण वेयणाते, अभिहणमादी ण पेहा दोसा ।

रीयादि संजमम्मि य, छक्काया भाणभेदम्मि ॥५८२६॥

भारो भवति, भारकतस्तस्य य वेयणा भवति, वेयणाए न अदिनो गोमहत्विमाए ण परमति, ने अभिहणेज्जा, चट्तालकपाणुमाए वा न पेहा, इरिवत्ततो वा न भवइ, समुत्ततो वा छाताए विराहेज्ज, अणुवत्ततो वा भायणभेयं करेज्जा । ॥५८२६॥

इमे ‘अइरेगदोसा । “अइरेगं” ति पमाणप्पमाणातो -

भाणऽप्पमाणगहणे, भुंजण गेलणऽभुंज उज्झिमिता ।

एसणपेल्लण भेदो, हाणि अडंते दुविश्र दोसा ॥५८२७॥

भाजनं प्रमाणं - भाणज्जमाणंति तं, अतिवृद्धं गेहति । तस्मिं भरिए जइ सव्वं भुंजति तो हा(तो)देज्ज वा मारेज्ज वा गेलणं वा गुज्जा, अह ण भुंजति तो उज्झिमिता अतिकरणादी दोसा । भायणं भेदं ति अन्नदभमाणं एसणं पेत्तिता भवेति, भरिए अतिभारेण पचुत्तिट्ठिता भवति, भायणेज्ज विना सण्णो कज्जपरिहाणी, भायणट्ठा अडंतस्त भायणभूमोजंतस्त दुविह ति - भायणसंजमविराहणा दोसा भवति ॥५८२७॥

हीणदोमति अस्य व्याख्या -

हीणप्पमाणवरणे, चउरो मासा हवंति उग्धाता ।

आणादिया य दोसा, विराहणा संजमा-ऽऽयाए ॥५८२८॥

जं पदिग्गहमत्तगणमाणं भगियं ततो जति हीनं परेति ततो पदिग्गहणे नउक्कं, मनगे मागनहं ॥५८२८॥

किं चान्यत् -

उणेण ण पूरिस्सं, आकंठा तेण गेहन्ती उभयं ।

मा लेयकडं ति ततो, तत्थुवओगं न भूमिण ॥५८२९॥

उणेणं ति प्रमाणतो एतेन भरिणं ति न पूरेस्संति न संयस्सिस्संति ताहे जणायपि भवेति, उभयं ति कूरे वुत्तं य, अत्तया - भयं पायं वा । तस्मिं अतिभरिणं मा त्तयस्सो वेवादिस्सति ति - नदवसोपेत भूमिण उवओगं न परेति ॥५८२९॥

अणुवत्तस्तस्य य इमे दोषा -

खाण् कंटग विसमं, अभिहणमादी ण पेहन्ती दोसा ।

रीया पगलित नेणग, भायणभेदे य छक्काया ॥५८३०॥

अणुवत्ततो खाण्णं कट्ठाविराजति, न एतेन मा विज्जति, विज्जते मा पवति, पगलितो वा पवि-  
रजति । एता भावविमत्ता । रीयादी मत्तमविराहणा वत्ता ॥५८३०॥

अहवा इमे दोसा -

‘हीणप्पमाणवरणे, चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

आणादिया य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥५८३१॥ कंठ्या

गुरुमाइयाण अदाणे इमं पच्छित्तं -

गुरु पाहुणए दुव्वल, वाले बुद्धे गिलाण सेहे य ।

लाभा-ऽऽलाभऽद्वाणे, अणुकंपा लाभवोच्छेदो ॥५८३२॥

गुरुगा य गुरु-गिलाणे, पाहुण-खमए य चउलल्लू होंति ।

सेहम्मि य मासगुरु, दुव्वल जुव (य) ले य मासल्लू ॥५८३३॥ कंठ्या

गुरुमादियाण इमा विभासा -

अप्य-परपरिच्छाओ, गुरुमादीण तु अदंत-दंतस्स ।

अपरिच्छित्ते य दोसा, वोच्छेदो णिज्जराऽलामो ॥५८३४॥

इहरमायणभरियं गुरुमादियाण जति देति तो अप्पा चत्तो, अह ण देति तो गुरुमातिया परिचत्ता ।  
दुव्वलो सभावतो रोगतो वा न तरति हिडिउं तस्स दायव्वं ।

“अलाभाऽऽलोम” ति अस्य व्याख्या - “अपरिच्छित्ते य दोसा”, जस्स हीणप्पमाणं मायणं सो  
खेत्तपडिलेहगो पयट्ठितो, स तेण खुडुलगेण भाणेण किह लामं परिकखउ, ताहे जे अपरिक्खित्ते खेत्ते दोसा, ते  
मंदपरिक्खिए वि गच्छस्स य आगयस्स अलभन्ते जं असंयरणं जा य परिहाणी सा सव्वा खुडुलमाणग्गाहिणी  
भवति, अद्वाणे वा पवण्णाण संखडी होज्जा तत्थ पज्जत्तियलाभे लब्भमाणे किहि गेण्हउ ? तं मायणं धेवेणं  
चेव भरियं ।

अहवा - “अणुकंपालाभवोच्छेदो” ति - छिद्यद्वाणे वा कोइ अणुकंपाए वा जं जं अडिज्जति  
तं मायणं भरेत्ति, तत्थ गच्छसाधारणकरं मायणं उड्डेयव्वं, हीणमायणे पुण अडिज्जन्ते लाभस्स वोच्छेदो  
णिज्जराए य अलामो भवति ।

अहवा - सद्वाणेऽपि यथादिदव्वं लब्भमाणे खुडुलमायणेण लाभवोच्छेदं करेज्ज निज्जराए वा  
अलामं पावेज्ज ॥५८३४॥

इमे य इहरमायणे दोसा -

लेवकडे वोसद्धे, सुक्के लग्गेज्ज कोडिए सिहरे ।

एते हवन्ति दोसा, इहरे भाणे य उड्डाहो ॥५८३५॥

तेण अतीव पाहुडियं ताहे तेण वोसद्धं, तेण अतिपलोदमाणेण लेवाडिज्जति । अहवा - मा धेवं  
भतं देहीति, ताहे सुक्कस्स चप्पाचप्पं भरेड, तं च सुक्कं भतं लग्गेज्ज अजिणं हवेज्ज । कोडियं ति चप्पियं  
चपिज्जन्तं वा भजेज्ज, सुक्कभत्तस्स वा सिहरं करेत्तो भरेज्ज, तं जणो ददुं भणति - अहो ! असंतुट्ठा । पच्छद्धं  
कंठं ॥५८३५॥

ध्रुवणाऽध्रुवणे दोसा, वोसट्टंते य काय आतुमिणे ।

मुक्खे लम्माऽजीरम कोडित सिह भेद उट्ठाहो ॥५८३६॥

वोसट्टंतेण जं मेवाट्ठितं तं जमि थोवतितां उम्मायमादी दोसा, पद्द न थोवतितां रातोभोवमभंती ।  
अह्वा - वोसट्टे पगनंते पृथ्वादी छत्रकायविनापया ।

अह्वा - वोसट्टंते उमिगेण दट्टे प्रायविगह्या, पन्ददं गमार्थं । पयित्ठंते उमिहृदमग्निमे  
य वहि फोड ति उट्ठाहो, जम्हा एवमादी दोसा तम्हा जुत्तपमाणं पार्द धेत्तव्यं ॥५८३६॥

केरिसं पुण तं जुत्तपमाणं ?, अत उच्यते -

तिण्णि विहत्थी चउरंगुलं च भाण मज्झिमण्यमाणं ।

एतो हीण जहण्णं, अतिरेगतरं तु उक्कोसं ॥५८३७॥

उक्कोसतिसामासे, दृगाउअद्वाणमागयो साह ।

चउरंगुलज्जणं भायणं तु पज्जत्तियं हेट्ठा ॥५८३८॥

एयं चव पमाणं, सविसेसतरं अणुगहपवत्तं ।

कंतरं दुच्चिक्खे, रोहगमादीसु भतियच्चं ॥५८३९॥

एवाप्पो जहा पद्दमुद्देशमे वीरे ॥५८३९॥

"अववाय" ति अस्य व्याख्या -

अण्णाणे गारवं लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।

लहुओ लहुया गुरुगा, चउत्थ मुद्धे उ जाणओ ॥५८४०॥

पयसा धवयार्थं भवीहामि, उद इमेहि परेति तां इमं पयसां पयसुत्तमहिं जाणं - एवमारंण  
मागमहं, गारवेण चउत्तहं, लुद्धाण चउत्तया । धवयार्थं जाणो दो वि मुला ॥५८४०॥

नत्थ एवमाणस्य चउत्तार्थं -

हीणा-उतिरेगदोने, अयाणमाणो उ धरति हीण-उट्ठियं ।

पगतीए थोवभोई, नति लामे वा करेत्तोमं ॥५८४१॥

पुत्तलं वटं । इमं गारवस्य चउत्तार्थं - पगतीए पयसट्ठं, पगती पयसादी प, पयसादी पय  
लोवभोई । लहुया - लहुओ वि लोमं वटोई, वटं मे थोवति वि लहुयादी पयसट्ठ ॥५८४१॥

इत्थमनिकुवन्तां वा, शायरिसो वा वि एम उट्ठेणं ।

अतिगारवेण लोमं, एनिण्यमाणं इमेहि तु ॥५८४२॥

इमो दो वि एम वेद इमेण गारवेण विदम विदम, शायरिसो वा शायरेण वा शायरेण  
मेदमि ॥५८४२॥

अतिप्पमाणं इमेण गारवेण धरेइ -

अणिगूहियवलविरिओ, वेयावच्चं करेइ अह समणो ।

वाहुवलं च अती से, पसंसकामी महल्लेण ॥५८४३॥

महल्लभायणेण वेयावच्च करेइ - एवं मे साव पसंसिस्संति, अहवा - साहुजणो वा भणिस्सइ -  
“एयस्स विसिट्ठं वाहुवलं जेण महल्लेण भायणेण भिवलं हिइइ” ॥५८४३॥

‘लुट्ठस्स व्याख्या -

अंतं न होइ देयं, थोवासी एस देह से सुद्धं ।

उक्कोसस्स व लभे, कहि घेच्छ महल्ल लोभेण ॥५८४४॥

सुडुलगभायणे गहिए धरंगणे वि ठितं दट्ठं धरसामी भणति - “एयस्स अंतपंतभत्तं ण देयं” ।

अहवा भणेज्ज - “एस थोवासी, जेण एस सुडुलएणं गेण्हति” ।

अहवा भणेज्ज - “एयस्स सुद्धं देह” । “सुद्धं” ति उक्कोसं, आल्योदनपढमदोच्चंगादी सुद्धो चेव ।

महल्लं इमेण कारणेण गेण्हति - “उक्कोसं लवममाणं पभूतं सामणं वा समुदाणियं लवममाणं कत्थ गेण्हिस्सामि” ति एवं लुट्ठत्तणेण महल्लं गेण्हति ॥५८४४॥

“असंपत्ति” दारं चउत्थं, तस्स इमं वक्खणं -

जुत्तपमाणस्सऽसती, हिण-ऽतिरित्तं चउत्थो धारेति ।

लक्खणजुतहीण-ऽहियं, नंदी गच्छइता चरिमो ॥५८४५॥

पुच्चदं कंठं । “जाणगे” ति अस्य व्याख्या - लक्खणपच्छदं, जं लक्खणजुत्तं तं जाणगे हीणं वा अहियं वा धरेति, जाणादिगच्छद्वृद्धिनिमित्तं ।

अहवा - गच्छस्स उवगहकरं गंदीभायणं, “चरिमो” ति जाणगे सो वरेति न दोसो ॥५८४५॥  
अववाए ति गयं ।

इदाणि “लक्खणमलक्खणे” ति दारं -

वट्ठं समचउरंसं, होति थिरं थावरं च वण्णं च ।

हुंडं वायाइद्धं, भिन्नं च अथारणिज्जाइ ॥५८४६॥

वृत्ताकृति उच्छिन्नकुक्षिपरिवितुल्यं चतुरसं दृढं स्थिरं स्थावरं अप्रतिहारिकं एतेहि गुणेहि जुत्तं वण्णं । अहवा - अणोहि वि वण्णादिगुणेहि जं जुत्तं तं वण्णं, एयं लक्खणजुत्तं ।

इमं अलक्खणं - विसमसंठियं हुंडं अणिप्फणं तुप्पडयं वाताइद्धं जं च मिण्णं, एते अलक्खणा ॥५८४६॥

संठियम्मि भवे लामो, पतिट्ठा सुपतिट्ठिते ।

निव्वणे कित्तिमारोग्गं, वण्णट्ठे णाणसंपया ॥५८४७॥



वितियद्वारगाहा आदिद्वारे 'कोत्ति अस्य व्याख्या -

को गेण्हति गीयत्यो, असतीए पादकप्पिओ जो उ ।

उस्सग्ग-ऽववातेहिं, कहिज्जती पादगहणं से ॥५८५४॥

को पादं गेण्हति ? जो गीयत्यो सां गेण्हति । गीयत्यस्स असति जेण पादेसणा सुत्तत्यो गहिओ सो पायकप्पिओ गेण्हति । तस्स वि असति जो मेहावी तस्स पादेसणा उस्सग्गववाएहिं कहिज्जति, सो वा गेण्हति ॥५८५४॥

इदार्णि "अपोरिसि" त्ति -

हुंडादि एगवंधे, सुत्तत्ये करंतो मग्गणं कुज्जा ।

दुग-तिगवंधे सुत्तं, तिण्हुवरिं दो वि वज्जेज्जा ॥५८५५॥

जं हुंडं आदिमद्वातो दुष्पुतं खीलसंठियं सवलं एगवंधं च, एताणि परिभुजंतो सुत्तत्यं करंतो अहाकडादि मग्गेज्ज । जइ पुण दुगवंधं तिगवंधं वा पादं से, तो सुत्तपोरिसि काठं अत्यपोरिसि वज्जेत्ता मग्गति ।

अह पादं से तिगवंधगाओ उवरि चउनु ठाणु वद्धं, एरिसे पादे दो वि सुत्तत्यपोरिसीओ वज्जेत्ता आदिचुदयाओ चैव आढवेत्ता मग्गति ॥५८५५॥ पोरिसि त्ति गयं ।

इदार्णि "काले" त्ति दारं ।

अहाकडादियाणं कं केत्तियं मग्गियव्वं ?

चत्तारि अहाकडए, दो मासा हुंति अप्पपरिकम्मं ।

तेण परिमग्गिऊणं, असती गहणं सपरिकम्मं ॥५८५६॥

चत्तारि मासा अहाकडं मग्गियव्वं, चउहिं मासेहिं पुण्णेहिं तस्स अलामे अण्णे दो मासा अप्पपरिकम्मं मग्गति, तेण परिमग्गिऊणं ति अहाकडकालाओ परंतः अप्पपरिकम्मं एत्तियं कालं मग्गति, एते छम्मासे वितियस्स वि अलामे ताहे सपरिकम्मं मग्गियव्वं ॥५८५६॥

केच्चिरं कालं ?, अत उच्यते -

पणयालीसं दिवसे, मग्गित्ता जा ण लब्धते तत्तियं ।

तेण परेण ण गेण्हति, मा पक्खेणं रज्जेज्जा ॥५८५७॥

पणयालीसं दिवसे बहुपरिम्मं गेण्हति, ततो परं न गेण्हति, जेण पण्यरसेहिं दिवसेहिं वरिसाकालो भविस्सति । मा तेण पक्खकालेण परिकम्मणं रंगं रोहवणं च न परिवारिज्जति ॥५८५७॥ काले त्ति गतं ।

इदार्णि "आकरे" त्ति । अहाकडं कहिं मग्गियव्वं ?, अत उच्यते -

कुत्तीय-सिद्ध-णिण्हग, पवज्जुवासादिस्स अहाकडयं ।

कुत्तियवज्जं वितियं, आगरमादीसु वा दो वि ॥५८५८॥

कुत्तियावणे मगति, मिद त्ति मिदपुत्तो जो पयनिट्कामो क्ते उक्कण्णे वाचापो उक्कण्णे वाते  
तं पडिग्गहादि साधूणं देवजा, णिण्हयस्स वा, एवं च ममज्जम वा वामे लब्धन्ति ।

समणोवात्तमो वा पटिमं करेडं घरं पक्कागमो पटिगत्तमं माधूणं देवज, पक्कागत्त एतेषु स्थानेषु  
प्राप्यन्ते ।

अणपरिकम्मं कत्तरेषु प्राप्यन्ते ?, प्रतीच्यते "कुत्तियवज्जं वित्तिवं" - कुत्तियवज्जं यस्मैडं मिदपुत्ता-  
दिषु अणपरिकम्मं लब्धन्ति । अहंवा - "आगरमाथेणु वा थो वि" नि अणपरिकम्मं ॥५८५८॥

कानि च तानि आगरमाथीनि स्थानानि ? अतस्तेषां प्रदर्शनार्थं उच्यते -

आगर णदी कुडंगे, वाहे तेणे य भिक्ख जंत विही ।

कत कारितं व कीनं, जनि कप्पति तु विप्पति अज्जो ! ॥५८५९॥

आगराइताण इमं वक्कमाणं -

आगर पल्लीसादी, णिच्चुदग-णदी कुडंग ओसरणं ।

वाहे तेणे भिक्खे, जंत परिभोगऽसंसत्तं ॥५८६०॥

आगरो भिक्खपल्ली भिक्खकोट्टं वा, "नदि" नि जेणु वाममगरंतेणु नदीपो माउण्णि मंगिउत्तमेव  
णिउदगानो, तानि चैव अशीणं पूत्तेणु जे पक्ककुडंगा तेणु वा विज्जंति तुवीपो, वाहेतेणपल्लीणु वा, अत्तया -  
वाहेतेया अउवि मक्कंण माउण् उदगं पेणु मक्कंति, भिक्खट्ठा भिक्खगरो ताउमं मेहेउज्ज, पुत्तजवमापादिषु वा  
उदिमंनमट्ठा भत्ततेल्लादिक्कावट्ठा वा नाउमं मेहेउज्जा । एतेषु आगरादिषु जं मत्तन्ति नं विपीण् मेउरदि,  
अप्य न जं एतेषु चैव पण्डित्तमार्गं तं मेहेउज्जि, जेउ न अममत्तं भवति ॥५८६०॥

आगरादिषु धोभट्टं पुच्छियं च "कस्सेयं, कस्सट्ठा वा कयं" नि ।

न पुच्छितो भणानि - "कय कारियच्छद" अस्व व्याख्या -

तुक्कट्ठाण कतमिणं, अन्नम्मट्ठाण अहव सट्ठाण ।

जो घेच्छति व तदट्ठा, एमं व कीय-पामिन्ने ॥५८६१॥

तुक्कट्ठाण कयं वा, तुक्कट्ठाण वा कयिणं, अन्नम्म वा मट्ठाण भिक्खगमम वा मट्ठाण कय ।

वाह्या - मट्ठाण नि अणपो मट्ठाण, वाह्या - जो पेउ मेउरदि मक्कट्ठाण कय अउविउदिमिणं ।  
अउविउदिमिणं एवं जीउमहममिक्कादिषु नि भाविता । अउवे नि उउमहमिणं अउविउदिमिणं  
एउमहमिणं वा । जं मट्ठा तं मेउरदि, अट्ठा व अउविउदिमिणं ॥५८६१॥ आगद नि मय ।

इति "आगदो" नि -

चाउल उक्कोदग तुवर कुर पुत्तणे नोव नक्के य ।

जं होति भाविणं कयर्त्ता तु भट्ठयत्त नं मेमं ॥५८६२॥

आगदमेव उक्कोदगं पुत्तमेव उक्कोदगो भट्ठयत्त ॥५८६२॥

‘संसंति अस्य व्याख्या -

सीतोदगभावितं अविगते तु सीतोदगण गेहंति ।

मज्ज-वस-नेल्ल-सणी, -महुमातीभावियं भइतं ॥५८६३॥

परिणए पुण सीतोदगे गेहंति, मज्जादिणसु जति निवत्तारेउं सक्कति तो घेप्पइ, इयरहा न घेप्पइ ।

एस भयणा ।

अहवा - विषयभावितं जत्य दुगुच्छियं तत्य न घेप्पइ, अदुगुच्छियं घेप्पति ॥५८६३॥

ओभासणा य पुच्छा, दिट्ठे रिक्के सुहे वहंतं य ।

संसट्ठे णिक्खित्तं, सुक्खे य पगास दट्ठणं ॥५८६४॥

ओभासण ति जहा वत्यस्स “कस्सेयं, किं वासी, किं वा भवस्सति, कत्य वा आसी” - एवं पुच्छा ।

सुहे गहणं ।

पुणो सीसो पुच्छइ - “दिट्ठादिपदे” ।

आयरिओ आह - अदिट्ठातो दिट्ठं खेमतरं ।

कहं?, उच्यते - अदिट्ठे देये किं काए संघट्ठेत्तो गेहंति ग वा? अहवा - कायाणं उवरि ठवियल्लयं होज्जा, अहवा - बीजाती छूटा होज्ज, दिट्ठे पुण सच्चं दीसइ, एएण कारणेण दिट्ठं वरं, णो अदिट्ठं ।

“किं रिक्कं, अणरिक्कं तं घेप्पतु?” जं दहिस्सीरादीहि अणरिक्कं तं घेप्पइ ।

इयरं आउक्कायादीहि अणरिक्कं तत्य कायवही होज्ज, रिक्के वि कुंयुमाती भवति ।

“किं कयमुहं घेप्पइ अकयमुहं?” कय मुहं घेप्पइ ।

“वहंतयं, अवहंतयं?”

जं तक्कमादि फासुएणं वहंतयं तं घेप्पति, णावि जं आउक्कायादीहि ।

“किं संसट्ठं, असंसट्ठं गेहंउ?” जं फासुदब्बेणं संसट्ठं तं घेप्पइ ।

“उक्खित्तं, णिक्खित्तं”? एतय उक्खित्तं कप्पति ।

“सुक्कं, उल्लं”? फासुएण उल्लं पत्तयं ।

“पगासमुहं, अपगासमुहं”? पगासमुहं कप्पति ।

अहवा - “पगासट्ठियं अपगासट्ठियं”? पगासट्ठियं कप्पति । “दट्ठणं” ति जहा सुद्धं तदा षक्कुणा पडिसेहेति, जदि न पडिसेहेइ ताहे तसवीयादी होज्ज ॥५८६४॥

जइ तसवीयादी होज्ज, ताहे इमं पुणो जयणं करेइ -

ओमंथ पाणमादी, पुच्छा मूलगुण-उत्तरगुणसुं ।

तिट्ठाणे तिक्खुत्तो, सुद्धो ससणिद्धमादीसु ॥५८६५॥

“ओमत्य” ति पयस्स विभासा -

दाहिणकरेण कण्णे, वेत्तुत्ताणे य वाममणिबंधे ।

वड्ढेति तिणिण वारा, तिणिण तले तिणिण भूमीए ॥५८६६॥



कण्यं तस्मै मुहं । कण्ये पेनं हर्षं उत्तामयं काउं, तं पायं कण्यमनियं वामवाङ्मनिर्येषां तदेव  
मंचट्टेति ति तिणि चारा आह्वयति । जस्य जडं वीर्यं तमा वा दिष्टा नो न कण्यति, एतं दिष्टा ताहं इत्यनेन  
ततो वारा आह्वयति । तस्य वि तस-वीर्यं दिष्टे न कण्यति, एतद्विष्टं पुनो ओमंयं भूमौ तिणि चारा  
कण्योतेति ॥५८६६॥

‘पागमादी, एवस्व विभागा तिष्ठाने तिर्युक्तो गोष्ठिर् नमाने -

तस वीर्यमि वि दिष्टे, ण गेणहती गेणहती उ अदिष्टे ।

गहणम्मि उ परिसुद्धे, कण्यति दिष्टेहि वि बहुहिं ॥५८६७॥

गहणकाले परिसुद्धे जड पदार्थ तसवीर्यं वा पायति, सतन्निस्तानि वा पायति, एतावि तं मुहं पेनं,  
न परिदृष्टेति ।

अग्रे पुन भणंति - जड नञ्चाए धीए जीव सत्त कुलमा ताव न परिदृष्टे । एतं गहणरे वामह  
तञ्चाए तो गहणकाले मुद्धवि सरट्ठिगहमातावे परिदृष्टेति । अतञ्चाएसु वहुसु वि दिष्टेसु न परिदृष्टे, ते सनञ्चाए  
मडियं जयणाए फट्ठेति ॥५८६७॥

‘‘पुच्छा मूलगुणउत्तरगुणेनु’’ ति सीमो पुच्छति - तस्म के मूलगुणा, के वा उत्तरगुणा ?  
गुहकरणं मूलगुणा, मोयकरणं उत्तरगुणा ।

एवम मूलगुणउत्तरगुणेहि चउभंगो पायन्थो ।

परममंगे पडगुहं तसकायगुहं, वितियमंगे पडगुहं येन तसगुहं ।

नमियमंगे पडगुहं पडगुहं । पडगुहो मुद्धो । ‘‘चाउल’’ ति गयं ।

इत्याणि ‘‘जहण्णजयण’’ ति यारं -

पच्छित्त पण जहण्णे ते णेउ तज्जुट्ठिण उ जयणाए ।

जहण्णा उ सरिसवादी, तेहि तु जयणेतर कलादी ॥५८६८॥

पच्छित्तं पणम जहणं जयणं तज्जुट्ठिमणाए विवृति, गहणं - परिमज्जतो बीजा जहणं,  
गहि एवमाणकरवट्ठिजयणाए पेद्वति । एतरे नि चउत्ता वलादी, जय नि जयता ॥५८६८॥

इत्याणि एतेयन्तो विनविज्जति एतयमाणं काउ -

एवमाणकए हन्थे, मुद्धमेनु पदमण्य पंचदिणा ।

दस विनिने सानिदिणा, अंगुलिमूलेनु पण्यरस ॥५८६९॥

एतयो एवमाण बीर्य, पडगुहं एतौ भावो, विविज्जता विविज्जतो, एतौमूले तसका,  
काउतेस पडगुहो, पडगुहो पडगुहो, तेमो एतौ । एत एवमाणमण्येसु मुद्धमेनुसु पण्यरसदिवा, विविज्जताकेने  
दसगदीदिवा, एतौमूलेमेनु पण्यरस ॥५८६९॥

वीर्यं तु चाउलोका, अंगुष्ठमूले होनि पण्यरस ।

पमनिमि होनि ममो, चाउम्मानो भवे चउसु ॥५८७०॥

आयुरेहमेतेषु वीसं राईदिया, अंगुष्ठबुधमेतेषु पणुवीसं, पसतीए मासलहुं, चउसु पसतीसु चउलहुं

॥५८७०॥

एसेव गमो णियमा, थूलेसु वि वितियपव्वमारद्वो ।

अंजलि चउक्क लहुगा, ते चिय गुरुगा अणंतेसु ॥५८७१॥

मासमादिषु थूलेसु वितियपव्वमेतेषु पणगं, अंगुलिमूले दस, आयुरेहाए पणगरस, अंगुष्ठमूले वीसा, पसतीए भिण्णमासो, अंजलीए मासलहुं, चउसु अंजलीसु चउलहुं । एते चेव पच्छिता सुहुमथूरेसु अणंतेसु गुरुगा कायव्वा ॥५८७१॥

णिककारणम्मि एते, पच्छित्ता वणिण्या उ वितिएसु ।

णायव्वऽणुपुव्वीए, एसेव य कारणे जयणा ॥५८७२॥

जा एसा पच्छित्तबुद्धो भणिया णिककारणे, कारणे पुण गेहंतस्स सेव जयणा पणगादिगा भवति ।

जइ पुण अहाकडे पढमपव्वप्पमाणा वीया अप्पपरिकम्मं च सुद्धं लब्धमिति ।

एत्य अप्पवहुंचित्ताए कतरं घेतव्वं ? भणति - अहाकडं घेतव्वं, णो अप्पपरिकम्मं । एवं वितियपव्वा-दिषु वि वत्तव्वं ॥५८७२॥ .

जाव -

वोसद्धं पि हु कप्पति, वीयादीणं अहाकडं पायं ।

ण य अप्प सपरिकम्मा, तहेव अप्पं सपरिकम्मा ॥५८७३॥

वोसद्धं ति भरियं, अहाकडं आगंतुगाण भरियं पि कप्पति, ण य अप्पपरिकम्मं बहुपरिकम्मं वा । एवं अप्पपरिकम्मं पि आगंतुगाण भरियं कप्पति ण य बहुपरिकम्मं सुद्धं ॥५८७३॥

इमं जयणाए णिच्छतो छडेति -

थूले वा सुहुमे वा, अवहंते वा असंथरंतम्मि ।

आगंतुग संकामिय, अप्पवहु असंथरंतम्मि ॥५८७४॥

थूलाण वा चणगादियाणं वीयाण सुहुमाण वा सरिसवादियाण भरियं होज्जा तस्स य जति पुव्वभायणं, णवरं-तं ण वहति । “असंथरं” ति अपज्जत्तियं वा भायणं, भायणस्स वा अभावो, ताहे तम्मि असंथरे अप्पवहुअं तुलेत्ता बहुगुणकरे ति काउं अहाकडं, आगंतुगाण वीयाण भरियं ति आगंतुगे संकामेत्ता जयणाए अण्णत्य, अहाकडं चेव गेहति ण दोसो ॥५८७४॥ जयण ति गता ।

इदार्णि “चोदगो” ति -

थूल-सुहुमेसु वोत्तुं, पच्छित्तं तेसु चेव भरितेसु ।

जं कप्पति चि भणियं, ण जुज्जते पुव्वमवरेणं ॥५८७५॥ कंठ्या

आचार्य आह - “असति असिव” ति -

चोदग ! दुविधा असती, संताऽसंता य संत असिवादी ।

इयरो उ आभियादी, कप्पति दोसुं पि जा भरिते ॥५८७६॥



अप्यपरिकम्भं बहुपरिकम्भं च कल्पते चेत्तुं, तेषु पुन छेदनादि करंतो सुदृष्टवत्तो करेति, मा दुवे दोसा भविस्सति,  
आयसंजमविराहणादोसा इत्यर्थः ॥५८७६॥

अस्यैवार्थस्य अपरः कल्पः -

अहवा वि कओ णेणं, उवओगो ण वि य लव्भती पढमं ।

हीणऽधियं वा लव्भइ, पमाणओ तेण दो इयरे ॥५८८०॥

उवओगो त्ति मग्गणजोगे पढमं त्ति अहाकड्यं, अहवा - लव्भई अहाकडं तं पमाणतो हीणं अहियं  
वा लव्भइ, तेण कारणेण "दो इतरे" त्ति, "इतर" त्ति - अप्यपरिकम्भं सुद्धं पमाणजुत्तं गेण्हति, तस्सासति  
हीणप्पमाणाइरेगलंभे वा बहुपरिकम्भं सुद्धं जुत्तप्पमाणं धेप्पति ॥५८८०॥

इमं च अप्यपरिकम्भं पडुच्च भण्णइ -

जह सपरिकम्भलंभे, मग्गंते अहाकडं भवे विपुला ।

णिज्जरमेवमलंभे, वित्तिस्सितरे भवे विपुला ॥५८८१॥

जहा सपरिकम्भे त्ति अप्यपरिकम्भे सुद्धे जुत्तप्पमाणे लव्भमाणे वि अहाकडं मग्गंतस्स णिज्जरा  
विपुला भवति, तथा पढमस्स त्ति अहाकडस्स अलंभे इयरं त्ति - अप्यपरिकम्भं मग्गंतस्स विपुला णिज्जरा  
भवति ।

अहवा - एतीए गाहाए चउत्थं पादं पढंति "वीयस्सितरे भवे विउल" त्ति । वित्तिं अप्यपरिकम्भं,  
तस्स अलाभे इयरं त्ति बहुपरिकम्भं, तं मग्गंतस्स णिज्जरा विउला भवति, पढमवित्तियाण अलंभे संतासंतासतीए  
वा ॥५८८१॥

अहवा - जत्थ ते लव्भंति तत्थिमे कारणा -

असिवे ओमोयरिए, रायदुद्धे भए व गेल्लणे ।

सेहे चरित्त सावय-भए व तत्तिं पि गेण्हेज्जा ॥५८८२॥

जत्थ अहाकडं पादं अप्यपरिकम्भं वा लव्भति तत्थ असिवं, अंतरे वा परिरयगमणं च णत्थि, एवं  
ओमरायदुद्धं बोहिगादीण वा भयं गिलाणपडिवंघेण वा तत्थ न गम्भइ, सेहस्स वा तत्थ सागारियं चारित्तमेदो  
त्ति, तत्थंतरा वा चरित्ताओ उवसग्गंति, सीहादिंसावयभयं तत्थ अंतरा वा, एवमादिकारणेहि अगच्छंती  
तत्तिं । तत्तिं त्ति - बहुपरिकम्भं सत्थाणे चैव गेण्हति ॥५८८२॥

गयमत्थं सीहावलोयणेण भणति -

आगंतुगाणि ताणि य, सपरिकम्भे य सुत्तपरिहाणी ।

एएण कारणेणं, अहाकडे होति गहणं तु ॥५८८३॥

चरिमं परिकम्भंतस्स सुत्तपरिहाणी । शेषं गतार्थम् ॥५८८३॥ पमाण उवओगच्छेयणं त्ति गतं ।

इदानीं "मुहे" त्ति दारं -

वित्ति-तत्तिएसु नियमा मुहकरणं होज्ज तस्सिमं माणं ।

तं पि य तिविहं पादं, करंडयं दीह वडुं च ५८८४॥



अगहणे त्ति अस्य व्याख्या -

मत्तगऽगेहणे गुरूणा, मिच्छत्तं अप्प-परपरिच्चाओ ।

संसत्तगहणम्मि य, संजमदोसा मुणेयव्वा ॥५८८६॥

मत्तगं अगेहणे चउगुहणा पच्छित्तं, गवसद्धादि मिच्छत्तं गच्छे ।

कहं ?, उच्चते - तेण चैव पडिग्गहेण गिल्लेवत्तं दट्ठं दुद्धिद्वयस्मे त्ति, जति पडिग्गहे आयरियातीणं गेहति अप्पा चत्तो, अह अप्पणो गेहति तो आयरियादी पदा चत्ता ।

मत्तगअभावे संमत्तभत्तपाणं कहिं गेहउ ?, अहापडिलेहियं पडिग्गहे चैव गेहति, तो संजम-  
विराहणा सवित्तरा भागियव्वा । 'छक्काय च० गाहा ॥५८८६॥

"वारत्त" त्ति अस्य व्याख्या -

वारत्तग पव्वज्जा, पुत्तो तप्पडिम देवथलि साहू ।

पडिचरणेगपडिग्गह, आयमणुच्चात्तणा छेदो ॥५८८७॥

वारत्तपुरं नगरं तत्त्य य अमगसेणो राया, तस्स अमच्चो वारत्तगो णाम । सो घरसारं पुत्तस्स णिसिउं पव्वइतो । तस्स पुत्तेण पिउभत्तीए देवकुलं करित्तु रयहरणमुहपोत्तियपडिग्गहवारी पिउपडिमा तत्त्य ठाविया । तत्त्य थलीए सत्तागारो पवत्तितो । तत्त्य एगो सावू एगपडिग्गहवारी तत्त्य थलीए पडिग्गहए भिक्खं घेत्तुं, तं भोत्तुं, तत्त्येव पडिग्गहे पुणोपाणनं घेत्तुं सण्णं वोसिरिउं, तेणेव पडिग्गहेण गिल्लेवेति ।

तेसि सत्ताकारणिउत्ताणं चित्ता - कहं गिल्लेवेइ त्ति, पडियरतो दिट्ठो, तेहिं णिच्छूढो । तेहिं य ताणि भायणाणि अगणिकाइयाणि अण्णाणि छड्डियाणि, तस्स अण्णेसि च सावूणं वोच्छेओ तत्त्य जातो, उट्ठाहो य ॥५८८७॥

इमं मत्तगस्स पमाणं -

जो मागहओ पत्थो, सविसेसतरं तु मत्तगपमाणं ।

दोसु वि दव्वग्गहणं, वासावासेसु अहिगारो ॥५८८९॥

मगहाविसए पत्थो त्ति कुलवो । दोसु वि त्ति उडुवढे वासानु य । कारणे असणं पाणगदव्वं वा गेहति ।

अण्णे पुण भणंति, - दोसु वि त्ति - पडिग्गहे भत्तं, मत्तगे पाणनं । इहं पुण मत्तगेण वासावासानु अविहारो । वासानु पडमं चैव जत्त्य घम्मलामोत्ति तत्त्य पाणगस्स जोगो कायव्वो ।

किं कारणं ?, कयाति वग्वारियवासं पडेज्ज, जेण घराओ घरं न सक्केति संचरिउं, ताहे विणा दव्वेग लेवाडो भवति, तम्हा पडमभिक्कातो चैव पाणनं मणियव्वं । अह्वा - वासानु संसज्जति त्ति तेण सोहिउइ त्ति अतो तेण अधिकारो ॥५८८९॥

अयवा इमं पमाणं -

सुक्खोल्ल ओदणस्सा, दुगाउत्तद्वाणमागओ साहू ।

भुंजति एगट्ठाणे, एतं खलु मत्तगपमाणं ॥५८९०॥



एगद्विसेग जत्ति ए वारे मत्तगेग मत्तपाणं आगेति तत्तिया चउलहुगा भवति, दिवसे दिवसे ति वीप्पायां, वित्तियादिदिवसेमु पच्छिन्नबुद्धी दस्सेति - जत्तिववारा आगेति ततो मे वित्तिएग आरोवगा कज्जति, चउलहुस्स अचित्तिव चउगुहं तं वित्तियवारे दिग्गति, एवं उवरिणि जेयव्वं, अट्टमे दिवसे पारुच्चियं पावति ॥५८६७॥ सोही गया ।

इदार्णि अववादे ति -

अण्णाणे गारवे लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।

लहुओ लहुओ गुरुगा, चउत्थो मुद्धो य जाणओ ॥५८६८॥

एरिसा जहा पडिग्गहे मत्तिपा तहेव मनगे वि नागियव्वा ॥५८६९॥

इदार्णि परिभोगो ति दारं ।

मत्तगो णो अप्पणहुा परिमुज्जइ, आयरियादीणहुा परिमुज्जइ -

आयरिय वाल बुद्धा, खमग गिलाणा य सेह आएसा ।

दुत्तलम संसत्त असंथरम्मि अट्टाणकप्पम्मि ॥५८६९॥

आयरियस्स य गिलाणस्स य मत्तगे पाउणं घेप्पइ, नेहवत्तादियान अगहिंताण मत्तगे मत्तं घेप्पइ पाउणं वा । अहुवा - वालादिया पडिग्गहं न भक्केति वट्टावेदं, ताहे मत्तगेग हिंसेति । गच्छट्टा वा दुत्तलमदव्वं वतादियं पटुण्णं मत्तगे गेहेज्जा । तत्थ वा संसज्जति मत्तपाणं तत्थ मत्तगे गेहिज्जति मत्तपाणं, तत्थ मत्तए घेतुं सोहेति, पच्छा पडिग्गहे लुत्तमइ । ओमादि असंथरणे वा, असंथरणे पडिग्गहे मरिए अण्णम्मि य लव्वंते मत्तगे गेहेज्जा । अट्टाणे कप्पो अट्टाणकप्पो अट्टाणे विधित्तिययं । कप्पगहं कारणे विधीए अट्टाणं पडिक्खेति दस्सेति, तत्थ असंथरणे पडिग्गहे वरिए मत्तगे गेहेति ॥५८६९॥ परिभोगि ति गतं ।

"अगहणपदवित्तियपदलक्खणादि मुहं जाव" ति - एतेसि पदानं अरवो जहा पडिग्गहे ।

तहावि अक्खरत्थो भण्णति - गहणे ।

मत्तगं को गेहेति ? वित्तियपदं अस्तिवादिकारणेहि सत्याणे चेव अप्पवहुपरिकम्मा गेहेति । लक्खणादि दारा जहा पडिग्गहे तहा मत्तगे वि वत्तव्वा, मुहकरणं च, अप्पपरिकम्मं सपरिकम्मं च लेवेयव्वं ।

तत्थ लेवग्गहणे इमा विही -

हरिए वीए चले जुत्ते, वत्थे साणे जलडित्ते ।

पुट्ठवीऽसंपातिमा सामा, महावाते महित्ताऽमिते ॥५९००॥

ओहिणिवज्जुत्तिमादीसु अगेगो गतत्था । एस उवही अव्वोक्कडो भणिओ ।

विनागतो पुग उवही दुविहो - ओहिओ उवग्गहितो य । जिणां परिहारविमुद्धियाणं अहालंदियाणं पडिमापडिक्खणाणं, एतेसि ओहितो चेव उवही ।

विज्जकप्पिया दुविहा - पाणिपडिग्गही, पडिग्गहवारी य ।

पाणिपडिग्गही दुविहा - पाउरणवज्जिया, सहिया य ।



पाउरजगज्जिवागं दुविहो - रवहरजं मुहपोनिवा य ।

पाउरजगज्जिवागं निविहं, चउविहं, पंचविहं ।

पडिगजपाशी वि पाउरजगज्जिवागो पाउरजगज्जिवागो वा ।

पाउरजगज्जिवागं नवविहो ।

पाउरजगज्जिवागं दगविहो एवजगज्जिवागो दगजगज्जिवागो य ।

परिहारविमुक्तिपाशी जियमा पडिगजपाशी पाउरजं । पडिगजपाशीपडिगजपाशीविमुक्तिपाशी भवजिवागं ।  
पडिगजपाशी विमुक्तिपाशी गजदे पडिगजपाशी पडिगजपाशी वा होउज ।

उमं धेयकज्जिवागं -

चोदसगं पणुवीसा, ओहोवधुदग्गहो यज्जगज्जिवागो ।

मंधारपट्टमादी, उभयो पक्खे वि नायव्वो ॥५८०१॥

पंथकज्जिवागं ओहोवधो ओहोवधो ।

मंजरीय ओहोवधो पणुवीसागो ।

उभयपक्खे वि नायव्वोपणुवीसागं उभयो मंधारपट्टमादि पट्टमादिगो भवजि ॥५८०१॥

जे भिक्खु अणंतरहिवागं पृथ्वीण जीवपट्टिण नखंडे गपाणे मर्वाण मरणिण,  
मखोस्से मउदण मउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्खट्टागंनानागंनि,  
दुव्वद्वे, दुत्तिगिणे, अनिकपे, चलाचले उन्नावपानवणं परिद्वेद,  
परिद्वेने वा गानिज्जनि ॥५८०१॥

जे भिक्खु सगणिद्धाण पृथ्वीण जीवपट्टिण नखंडे गपाणे मर्वाण मरणिण,  
मखोस्से मउदण मउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्खट्टागंनानागंनि,  
दुव्वद्वे, दुत्तिगिणे, अनिकपे, चलाचले उन्नावपानवणं परिद्वेद,  
परिद्वेने वा गानिज्जनि ॥५८०१॥

जे भिक्खु मगज्जिवागं पृथ्वीण जीवपट्टिण नखंडे गपाणे मर्वाण मरणिण,  
मखोस्से मउदण मउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्खट्टागंनानागंनि,  
दुव्वद्वे, दुत्तिगिणे, अनिकपे, चलाचले उन्नावपानवणं परिद्वेद,  
परिद्वेने वा गानिज्जनि ॥५८०१॥

जे भिक्खु मट्टियोक्काण पृथ्वीण जीवपट्टिण नखंडे गपाणे मर्वाण मरणिण,  
मखोस्से मउदण मउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्खट्टागंनानागंनि,  
दुव्वद्वे, दुत्तिगिणे, अनिकपे, चलाचले उन्नावपानवणं परिद्वेद,  
परिद्वेने वा गानिज्जनि ॥५८०१॥

जे भिक्खु चित्तमंताए पुढवीए जीवपइड्डिए सअंढे सपाणे सवीए सहरिए  
सअओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि  
दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिड्डवेइ,  
परिड्डवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खु सिलाए जीवपइड्डिए सअंढे सपाणे सवीए सहरिए  
सअओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि  
दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिड्डवेइ,  
परिड्डवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खु लेलूए जीवपइड्डिए सअंढे सपाणे सवीए सहरिए  
सअओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि  
दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिड्डवेइ,  
परिड्डवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खु कोलावासंसि वा दारुए जीवपइड्डिए सअंढे सपाणे सवीए सहरिए  
सअओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि  
दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिड्डवेइ,  
परिड्डवेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खु थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा भामवलंसि वा  
दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिड्डवेइ,  
परिड्डवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खु कुलियंसि वा भित्तिसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा  
अंतलिकखजायंसि वा दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले  
उच्चारपासवणं परिड्डवेइ, परिड्डवेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खु खंधंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा  
दुव्वद्वे, दुन्निखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिड्डवेइ,  
परिड्डवेतं वा सातिज्जति ।

तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारद्वाणं उग्वातियं ॥सू०॥५०॥

पुढवीमादी कुलिमादिएसु थूणादिखंधमादीसु ।

तेसुच्चारदीणि; परिड्डवे आणमादीणि ॥५६०२॥

आदिमदानीं समन्वितमन्त्रवशात् त्रै सुखदया भविष्यति तेषु उद्योगवशात् त्रै सुखदया भविष्यति ।  
विशदया भवति, आदिमदानीं यः सोमा । यत्रैव त्रै सुखदया । एतेषु सुखदया यदा यदा वेदमते उद्देश्ये वक्ष्यामि  
यदा भाषिष्यामि । एवम् — यदा यदा भविष्यति, तदा उद्योगवशात् भविष्यति ॥१६०२॥

इतो प्रवचानां —

चित्तिपदमण्यज्जे, श्रीगणपतेश्चरोगद्वाराणि ।

दुश्चलमद्वाराणि गिलाणे, योमिरणं होति जयणात् ॥१६०३॥

अद्यपि योमिरणं, योमिरणं नि विद्यमानं योमिरणं "योमिरणं", योमिरणं नि योमिरणं, योमिरणं  
योमिरणं वा यं योमिरणं, योमिरणं वा योमिरणं, योमिरणं वा योमिरणं, योमिरणं वा योमिरणं, योमिरणं वा योमिरणं,  
एते योमिरणं । ययणात् योमिरणं, यदा यदा योमिरणं वा योमिरणं ॥१६०३॥

"यद्वारां योमिरणं योमिरणं योमिरणं योमिरणं ।

यद्वारां योमिरणं योमिरणं योमिरणं योमिरणं ।

यद्वारां योमिरणं योमिरणं योमिरणं योमिरणं ।

॥ इति निर्माह-विमेनचुणीत् नालममो उद्देश्यो गमनो ॥



## सप्तदश उद्देशकः

उक्तः पौडगमः । एतानीं नान्यदगमोद्देशकः । तस्मिन्मो संवेष्टो -

आतपरे वावची, खंधादीणसु वोनिरेंवस्य ।

मा सविद्य कोतुहला, वंधंताऽऽरंभो सचरमे ॥५६०४॥

संपादिणसु उच्यमानास्येवं कर्तव्यम् आदिमिमांसा पर्वतस्य २५३, उच्यते पर्वतस्य कुंभपादि  
विशदित्वेति, मा सन्नेव संपादयित्वा कोउममादीति नान्यपादिकेष्वन्यम् भविष्यति । एते संपाद-  
गमस्य आरंभो ॥५६०४॥

जे भिक्षु कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तणपाणजायं तणपासण वा मुंजपासण वा  
कट्टपासण वा चम्मपासण वा वेत्तपासण वा रज्जुपासण वा  
मुत्तपासण वा वंधेह, वंधंनं वा मानिज्जति ॥५७०१॥

जे भिक्षु कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तणपाणजायं तणपासण वा मुंजपासण वा  
कट्टपासण वा चम्मपासण वा वेत्तपासण वा रज्जुपासण वा  
मुत्तपासण वा वंधेन्नलं मुयह, मुयंनं वा मानिज्जति ॥५७०२॥

तणपाणतणमादी, कोउहल्लपडियाए जं उ वंधेज्जा ।

तणपाणगमादीति, सो पावति आणमादीणि ॥५६०५॥

तणपाणो वसमादि वेदं, आणो वरुहं च ।

तणग-आणर-वरुणि, -तगोर-हंस-मुगमादणो पवरी ।

गामारुण नउपद, दिट्ठमदिट्ठा न पग्गिणा ॥५६०६॥

तणपाणस्यो ये इमे वि वेषिणो एदिममदिट्ठो विज्जोरो, तणपाणो वीथोरो तणपाणो वीथो  
वेषोरो, आणो वा वि वि विज्जोमदि तणपाण, एतदि वा वरुण दिट्ठपाण वा वरुण वा, तणपाण वा,  
मुगमादिण, तणपाण वा वरुणपाण, तणपाण वंधंनं मुयंनं वा ॥५६०६॥

तणपाणो वा इमं वारुणं -

दिग्गिणि निरं वज्जे, एतत्तादि वेत्तपाणं वसमा ।

गमज्जुत्तादिपुत्तस्य, मुयनि न जे पारमे दाया ॥५६०७॥

वितियपदमणप्पज्झे, वंघ्रे अविक्कोविते व अप्पज्झे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६०८॥

विनियपदमणप्पज्झे, मुंचे अविक्कोविते व अप्पज्झे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६०९॥

उस्मग्गो अववातो व जहा वारसमे उद्देसगे तहा माणियव्वो ।

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालियं वा  
मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा  
संखमालियं वा हड्डमालियं वा कड्डमालियं वा पत्तमालियं वा  
पुप्फमालियं वा फलमालियं वा वीयमालियं वा हरियमालियं वा  
करेइ, करंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालियं वा,  
मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा,  
संखमालियं वा हड्डमालियं वा कड्डमालियं वा पत्तमालियं वा,  
पुप्फमालियं वा फलमालियं वा वीयमालियं वा हरियमालियं वा,  
धरेइ, धरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालियं वा,  
मयणमालियं वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा  
संखमालियं वा हड्डमालियं वा कड्डमालियं वा पत्तमालियं वा,  
पुप्फमालियं वा फलमालियं वा वीयमालियं वा हरियमालियं वा  
पिणद्धइ, पिणद्धंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

तणमादिमालियाओ जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।

ताओ कुत्तहलेणं, धारंतं आणमादीणि ॥५६१०॥

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविक्कोविते व अप्पज्झे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६११॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा,  
सीसलोहाणि वा रुप्लोहाणि वा सुवण्लोहाणि वा,  
करेति, करंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

अयमादी 'आगरा ग्यन्तु, जनियमेचा उ आहिया नुने ।

नाई कृत्तलेणं, 'मालेने आणमादीणि ॥५६१२॥

चिनियपदमणप्यज्जे, कंउज ओविकोविने व अप्यज्जे ।

जाणने वा वि पुणो, कज्जेमु बहूप्यगारेमु ॥५६१३॥

जे भिक्खु कौउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंवल्लोहाणि वा नउयलोहाणि वा

सीसलोहाणि वा रुप्यलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा

धरेद, धरेने वा मानिज्जइ ॥५६॥७॥

जे भिक्खु कौउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंवल्लोहाणि वा नउयलोहाणि वा

सीसलोहाणि वा रुप्यलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा

पिणदइ, पिणदने वा मानिज्जइ ॥५६॥८॥

ॐ

ॐ

ॐ

जे भिक्खु कौउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलि वा मुत्तावलि वा

कणगावलि वा ग्यणावलि वा कण्ठाणि वा तुट्टियाणि वा केउराणि वा

कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउट्टाणि वा पल्लवमुत्ताणि वा सुवण्णमुत्ताणि वा

करेनि, करेने वा मानिज्जति ॥५६॥९॥

जे भिक्खु कौउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलि वा मुत्तावलि वा

कणगावलि वा ग्यणावलि वा कण्ठाणि वा तुट्टियाणि वा केउराणि वा

कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउट्टाणि वा पल्लवमुत्ताणि वा सुवण्णमुत्ताणि वा

धरेद, धरेने वा मानिज्जति ॥५६॥१०॥

जे भिक्खु कौउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलि वा मुत्तावलि वा

कणगावलि वा ग्यणावलि वा कण्ठाणि वा तुट्टियाणि वा केउराणि वा

कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउट्टाणि वा पल्लवमुत्ताणि वा सुवण्णमुत्ताणि वा

पिणदइ, पिणदने वा मानिज्जति ॥५६॥११॥

कटमादी 'आगरा ग्यन्तु, जनियमेचा उ आहिया नुने ।

नाई कृत्तलेणं, 'मालेने आणमादीणि ॥५६१४॥

चिनियपदमणप्यज्जे, माले अविक्कोविने व अप्यज्जे ।

जाणने वा वि पुणो, कज्जेमु बहूप्यगारेमु ॥५६१५॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंवल्लाणि वा  
 कंवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा  
 नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा  
 उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा  
 सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा  
 पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा  
 कणगखंसियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा  
 आभरणविचित्ताणि वा करेइ, करेतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंवल्लाणि वा  
 कंवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा  
 नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा  
 उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा  
 सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा  
 पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा  
 कणगखंसियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा  
 आभरणविचित्ताणि वा धरेइ, धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंवल्लाणि वा  
 कंवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा  
 नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा  
 उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा  
 सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा  
 पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा  
 कणगखंसियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा  
 आभरणविचित्ताणि वा परिभुंजइ, परिभुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू॥१४॥

अजिणादी वत्था खलु, जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।

ताइं कुतूहलेणं, परिहंते आणमादीणि ॥५६१६॥

वित्तिपदमणप्पज्जे, परिहे अविकोविते व अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६१७॥

जे भिक्खु इत्यादि । करेति धरेति पिण्डेति, एयं लोहं सुत्ते आभरणं सुत्तं, अङ्गनादि जाव वत्थसुत्तं ।



एतेन सुत्तानं नाममात्रान य धवो जहा सुत्तमुदेसो जहा सानिधवो, णवरं — एतत्तमात्रमात्रम  
मेदुयवदियाणं वरेति, एतं पुन कोउववदियाणं वरेति । एतं भउवदु पविज्जं । मेत्तं उम्मानवशादेहि सविज्ज  
सुत्तं, णवरं — धववाये वउदेसु यदुपववायेसु नि जहा एमे वत्तमानियाएां दाउवदुदियाणं दाउवदुदियाणं वरेति  
विमकवदु वा कोउ वरेति, वारो वरनिमद्विने वा विमिद्विनि । एत्तं मेवा नि उवउविज्जं मायेववा ॥५६॥३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउन्धियाण वा गारन्धियाण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेत्तं वा पमज्जावेत्तं वा सानिज्जनि ॥५७॥१५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउन्धियाण वा गारन्धियाण वा  
मंवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा  
मंवाहावेत्तं वा पल्लिमहावेत्तं वा सानिज्जनि ॥५८॥१६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउन्धियाण वा गारन्धियाण वा  
नेल्लेण वा धण्ण वा वसाण वा णवणीण वा मक्खवावेज्ज वा  
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खवावेत्तं वा भिल्लिगावेत्तं वा सानिज्जनि ॥५९॥१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउन्धियाण वा गारन्धियाण वा  
लोद्वेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उवद्ववेज्ज वा  
उल्लोलावेत्तं वा उवद्ववेत्तं वा सानिज्जनि ॥६०॥१८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउन्धियाण वा गारन्धियाण वा  
नीलोद्वविज्जं वा उमिनीद्वविज्जं वा उल्लोलावेज्ज वा  
पथोवावेज्ज वा उल्लोलावेत्तं वा पथोवावेत्तं वा सानिज्जनि ॥६१॥१९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

पादे अण्णउन्धियाण वा गारन्धियाण वा  
हमावेज्ज वा गमावेज्ज वा  
हमावेत्तं वा गमावेत्तं वा सानिज्जनि ॥६२॥२०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
संवाहावेज्ज वा पल्लिमद्दावेज्ज वा  
संवाहावेतं वा पल्लिमद्दावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा  
भिल्लिगावेज्ज वा मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा  
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
सीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा  
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

❀

❀

❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

मंवाहावेज्ज वा पलिमहावेज्ज वा  
मंवाहावेतं वा पलिमहावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥२८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि वणं अण्णउत्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा नेन्नेण वा घण्ण वा  
वमाण् वा णवणीण्ण वा मक्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा  
मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥२९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि वणं अण्णउत्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उल्लोलावेज्ज वा  
उल्लोलावेतं वा उल्लोलावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥३०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि वणं अण्णउत्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
नीसोदगवियट्ठेण वा उगिणोदगवियट्ठेण वा उल्लोलावेज्ज वा  
पथोरावेज्ज वा, उल्लोलावेतं वा पथोरावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥३१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि वणं अण्णउत्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा फूमावेज्ज वा  
ग्गावेज्ज वा, फूमावेतं वा ग्गावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥३२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि गट्ठं वा पिल्लं वा अरइयं वा अरियं वा भग्गंत्तं वा  
अण्णउत्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा अल्लवणेणं निदवेणं मन्थज्जाण्णं  
अन्निद्वेदावेज्ज वा अन्निद्वेदावेज्ज वा  
अन्निद्वेदावेतं वा अन्निद्वेदावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥३३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि गट्ठं वा पिल्लं वा अरइयं वा अरियं वा भग्गंत्तं वा  
अण्णउत्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
अल्लवणेणं निदवेणं मन्थज्जाण्णं अन्निद्वेदावेज्ज वा अन्निद्वेदावेज्ज वा  
दुयं वा सोत्थिणं वा नीत्तावेज्ज वा विमोहावेज्ज वा  
नीत्तावेतं वा विमोहावेतं वा सानिज्जति ॥४७॥३४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंनि गट्ठं वा पिल्लं वा अरइयं वा अरियं वा भग्गंत्तं वा,

अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
 अन्नयरंणं तिकखेणं सत्थजाएणं अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता  
 पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता मीओदगवियडेण वा  
 उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पयोयावेज्ज वा  
 उच्छोलावेतं वा पयोयावेतं वा सातिज्जति ॥५०॥३५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा  
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरंणं तिवखेणं सत्थजाएणं  
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता  
 मीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पयोयावेत्ता  
 अन्नयरंणं आलेवणजाएणं आलिंपावेज्ज वा विलिंपावेज्ज वा  
 आलिंपावेतं वा विलिंपावेतं वा सातिज्जति ॥५०॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,  
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरंणं तिकखेणं सत्थजाएणं  
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता  
 मीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पयोयावेत्ता  
 अन्नयरंणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा  
 घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अन्नमंगावेज्ज वा मक्खवावेज्ज वा  
 अन्नमंगावेतं वा मक्खवावेतं वा सातिज्जति ॥५०॥३७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,  
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरंणं तिकखेणं सत्थजाएणं  
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता  
 मीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पयोयावेत्ता  
 अन्नयरंणं आलेवणजाएणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा  
 घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अन्नमंगावेत्ता मक्खवावेत्ता  
 अन्नयरंणं धूवणजाएणं धूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा  
 धूवावेतं वा पधूवावेतं वा सातिज्जति ॥५०॥३८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

पालुक्किमियं वा कुन्दिक्किमियं वा अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
अंगुलीण् निवेणाविय निवेणाविय नीहरावेदं  
नीहरावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

दीहाओ नहमिहाओ अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
कण्णवेज्ज वा मंठवावेज्ज वा  
कण्णवेतं वा मंठवावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥३७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

दीहाइं जंघरीमाइं अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
कण्णवेज्ज वा मंठवावेज्ज वा  
कण्णवेतं वा मंठवावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥३८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

दीहाइं कक्खरीमाइं अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
कण्णवेज्ज वा मंठवावेज्ज वा  
कण्णवेतं वा मंठवावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥३९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

दीहाइं मंगुलीमाइं अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
कण्णवेज्ज वा मंठवावेज्ज वा  
कण्णवेतं वा मंठवावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥४०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

दीहाइं वन्थिरीमाइं अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
कण्णवेज्ज वा मंठवावेज्ज वा  
कण्णवेतं वा मंठवावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥४१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

दीहाइं चक्खुलीमाइं अण्णउन्थिण्ण वा गारन्थिण्ण वा  
कण्णवेज्ज वा मंठवावेज्ज वा  
कण्णवेतं वा मंठवावेतं वा गानिज्जति ॥४७॥४२॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आधंसावेज्ज वा  
पधंसावेज्ज वा, आधंसावेतं वा पधंसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोलावेज्ज वा  
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

❀

❀

❀

जा णिगंथी णिगंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
संवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा  
संवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा वण्ण वा  
वसाए वा णवणीएण वा मक्ख्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा  
मक्ख्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्धेण वा कक्केण वा  
उल्लोलोलावेज्ज वा उच्चट्ठावेज्ज वा  
उल्लोलोलावेतं वा उच्चट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जा णिगंथी णिगंथस्स -

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा  
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा  
उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

उट्ठे अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा कृमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा, कृमावेतं वा रयावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१२॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

दीहाइं उच्चरोद्धाइं अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१३॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

दीहाइं अच्छिन्नाइं अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१४॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

अच्छीणि अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा  
शामज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
शामज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१५॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

अच्छीणि अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा  
मंदाकावेज्ज वा पल्लिमकावेज्ज वा  
मंदाकावेतं वा पल्लिमकावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१६॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

अच्छीणि अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा  
मैत्थेण वा धण्ण वा दग्गा वा धवर्माण्ण वा मारुतावेज्ज वा  
मिनिगावेज्ज वा, मारुतावेतं वा मिनिगावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१७॥

जा णिगंधी णिगंधम्म —

अच्छीणि अण्णउन्धिण्ण वा गारन्धिण्ण वा  
मौट्ठे वा वा कट्ठेण वा उप्पेत्थोत्तावेज्ज वा उप्पेत्थोत्तावेतं वा  
उप्पेत्थोत्तावेतं वा उप्पेत्थोत्तावेतं वा नानिज्जति ॥४८॥१८॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
सीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा  
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा  
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

❀

❀

❀

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा  
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा  
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥





संपातिमादिघातो, विवज्जओ चेव लोगपरिवाओ ।

गिहिएहि पच्छकम्मं, तम्हा समणेहि कायच्चं ॥५६२३॥

पमज्जमाणी संपातिमे अभिघाएज्जा अजयत्तणेण । “विवज्जतो” ति साधुणा विभूसापरिवज्जिएण होयच्चं, भणियं च “विभूसा इत्यिसंगो” सिलोगो, एयस्स विवरीयकरणं विवज्जतो भवति । लोग-परिवादो ति, जारिसं सेवेसग्गहणं एरिसेण अनिवृत्तेन भवितव्यं । एवमादि इत्थीसु दोसा । गिहत्यमुत्तिसेमु वि इत्थिफासादिया मोत्तुं एते चेव दोसा पच्छकम्मं च ॥५६२३॥

इमे य दोसा -

अयते पप्फोडेंते, पाणा उप्पीलणं च संपादी ।

अतिपेत्तलणम्मि आता, फोडण खय अट्ठिभंगादी ॥५६२४॥

संजओ अजयणाए पप्फोडेंतो पाणे अभिहणेज्ज, वट्ठणा वा दवेण धोवंतो पाणे उप्पिलावेज्ज, खिल्लरवंधे वा संगतिमा पहेज्ज । एस संजमविरावणा ।

आयविरावणा इमा - तेण गिहिणा अतीव पेत्तलओ पादो ताहे संघी विकरेज्ज, फोडणं ति गित्थरभल्लेण णहादिणा वा खयं करेज्ज, अट्ठि वा भंजेज्ज ॥५६२४॥

एते चेव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।

गिहिएहि पच्छकम्मं, कुच्छा तम्हा तु समणेहि ॥५६२५॥

गतार्था । किं वि विसेमो - पुच्छद्वेण गिहत्यो भणिता, पच्छद्वेण गिहत्या । दो वि पाए पप्फोडेंतो कुच्छं करेज्ज, कुच्छंतो य पच्छकम्मसंभवो । जम्हा एते दोसा तम्हा समणाण समणेहि कायच्चं, समणीण समणीहि कायच्चं, णो गिहत्या अण्णतित्थिया वा छंदेयच्चा ॥५६२५॥

त्रितियपदमणप्पज्जे, अट्ठाणुच्चाते अप्पणा उ करे ।

मज्जणमादी तु पदे, जयणाए समागरे भिक्खू ॥५६२६॥

अणप्पज्जो कारवेज्जा, अणप्पज्जस्स वा कारविज्जति, अट्ठाणे पडिक्खणो वा अतीव उच्चाओ पमज्जगादिपदे अप्पणो चेव जयणाए करेज्ज, अप्पणो असत्तो सं गतेहि कारवेज्जा ॥५६२६॥

असती य संजयाणं, पच्छाकंडमादिएहि कारेज्जा ।

गिहि-अण्णतित्थिएहि, गिहत्यि-परतित्थितिविहाहि ॥५६२७॥

असति संजयाणं पच्छाकंडेहि कारवेति । तओ साभिग्गहेहि, ततो गिरभिग्गहेहि । ततो अहामहएहि । ततो गियल्लएहि मिच्छदिट्ठीहि । ततो अभिग्गहियमिच्छादिट्ठीहि । ततो अण्णतित्थिएहि मिच्छदिट्ठिमादिएहि । पुच्छं असोयवादीहि, पच्छा सोयवादीहि । ततो पच्छा “गिहत्यिपरतित्थितिविहाहि” ति । ततो गिहत्योहि णालवट्ठाहि अणालवट्ठाहि, तिविवाहि थेरमज्झमतत्तणीहि, एवं परतित्थिणीहि वि संजतीहि वि एवं चेव । ॥५६२७॥

एसो चेव अत्थो वित्थरतो भणति, ततो पच्छा “गिहत्यिपरतित्थितिविहाहि” ति, गिहत्यो दुविहा - णालवट्ठा अणालवट्ठा य ।



जे निगंथे निगंथीए —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
सीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा  
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे निगंथे णिगंथीए —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा  
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

❀

❀

❀

जे निगंथे निगंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
संवाहावेज्ज वा पल्लिमदावेज्ज वा  
संवाहावेतं वा पल्लिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा  
मिल्लिगावेज्ज वा मक्खावेतं वा मिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
लोद्वेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा  
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
सीओदगवियडेण वा उस्सिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा  
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा क्रमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा क्रमावेनें वा रयावेनें वा नानिज्जनि ॥४५॥७२॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यंनि दणं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेनें वा पमज्जावेनें वा नानिज्जनि ॥४५॥७३॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यंनि दणं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा  
संवादावेज्ज वा पलिसदावेज्ज वा  
संवादावेनें वा पलिसदावेनें वा नानिज्जनि ॥४५॥७४॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यंनि दणं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा नेम्मेण वा धम्मेण वा  
वसाण् वा पवणीण् वा मक्यावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा  
मक्यावेनें वा भिल्लिगावेनें वा नानिज्जनि ॥४५॥७५॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यंनि दणं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा  
लोदणे वा कलदेण वा उल्लोलोदणे वा उल्लोलोदणे वा  
उल्लोलोदणे वा उल्लोलोदणे वा नानिज्जनि ॥४५॥७६॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यंनि दणं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा  
मीमेदग्गविण्णं वा उमिमेदग्गविण्णं वा उमिमेदग्गविण्णं वा  
पत्तेमवेज्ज वा, उमिमेदग्गवेनें वा पत्तेमवेनें वा नानिज्जनि ॥ ४५॥७७॥

ॐ निगमंथे निगमंथीण् —

कार्यंनि दणं अण्डन्यिण् वा गारन्यिण् वा क्रमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा, क्रमावेनें वा रयावेनें वा नानिज्जनि ॥ ४५॥७८॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं  
अच्छिंदावेज्ज वा विच्छिंदावेज्ज वा  
अच्छिंदावेतं वा विच्छिंदावेतं वा सातिज्जति ॥मू०॥८६॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता  
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा  
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥मू०॥८७॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता  
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता सीओदगवियडेण वा  
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पथोयावेज्ज वा  
उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥मू०॥८८॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं  
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता  
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पथोयावेत्ता  
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिपावेज्ज वा विलिपावेज्ज वा  
आलिपावेतं वा विलिपावेतं वा सातिज्जति ॥मू०॥८९॥

जे निगंथे निगंथीए —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,  
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं  
अच्छिंदावेत्ता विच्छिंदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता

सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता  
अन्नयरंणं आलेवणजाणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा  
घण वा वसाण वा णवणीण वा अन्नंभावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा  
अन्नंभावेत्तं वा मक्खावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,  
अण्णउत्थिण वा गारत्थिण वा अन्नयरंणं निक्खेणं सत्थजाणं  
अच्छिद्रावेत्ता विच्छिद्रावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता  
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता  
अन्नयरंणं आलेवणजाणं आलिंपावेत्ता विलिंपावेत्ता तेल्लेण वा  
घण वा वसाण वा णवणीण वा अन्नंभावेत्ता मक्खावेत्ता  
अन्नयरंणं भूवणजाणं भूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा  
भूवावेत्तं वा पधूवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अण्णउत्थिण वा गारत्थिण वा  
अंगुलीए निवेसाविय निवेसाविय नीहरावेइ  
नीहरावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

दीहाओ नहसिहाओ अण्णउत्थिण वा गारत्थिण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेत्तं वा संठवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

दीहाइं जंधरोमाइं अण्णउत्थिण वा गारत्थिण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेत्तं वा संठवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

दीहाइं कक्खरोमाइं अण्णउत्थिण वा गारत्थिण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेत्तं वा संठवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं मंसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं चक्खुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आर्धसावेज्ज वा  
पधंसावेज्ज वा, आर्धसावेतं वा पधंसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोल्लावेज्ज वा  
पयोयावेज्ज वा, उच्छोल्लावेतं वा पयोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१००॥

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०१॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा

आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०२॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
संवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा

संवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०३॥



जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेन्लेण वा घएण वा  
चसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिंगावेज्ज वा  
मक्खावेतं वा भिलिंगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०४॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्वेण वा कक्केण वा  
उल्लोलावेज्ज वा उच्चट्टावेज्ज वा  
उल्लोलावेतं वा उच्चट्टावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०५॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा  
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पथोयावेज्ज वा  
उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०६॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा  
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०७॥

जे निगंथे निगंथीस्स —

दीहाइं उत्तरोट्टाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०८॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं अच्छिपत्ताइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०९॥

❀

❀

❀

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा  
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११०॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
संवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा  
संवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१११॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
तेल्लेण वा वण्ण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खवावेज्ज वा  
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खवावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू॥११२॥

❀

❀

❀

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा  
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११३॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा  
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू॥११४॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा  
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११५॥

❀

❀

❀

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११६॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा  
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा  
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११७॥

जे निगंथे निगंथीए -

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा  
अण्णउत्थिण्ण वा गारत्थिण्ण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा  
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११८॥

जे निगंथे निगंथीए -

कायाओ सेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा  
अण्णउत्थिण्ण वा गारत्थिण्ण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा  
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११९॥

जे निगंथे निगंथीए -

गामाणुगामं दृढज्जमाणे अण्णउत्थिण्ण वा गारत्थिण्ण वा  
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२०॥

मुत्ता एवत्तत्तालीमं ततिप्रोद्गमगमेग जाय सीसदुवारेति मुत्तं । प्रत्तो पूर्ववत् ।

एसेव गमो णियमा, णिगंथीणं पि होइ णायव्वो ।

कारावण संजतेहिं, पुब्बे अवरम्मि य पदम्मि ॥५६३१॥

संजतो गारत्थिमादिहि संजतीगं पादामज्जणाती कारवेति, उत्तरोदुमुत्तं ण संभवति, अलवसणाए  
या संभवति ॥५६२६॥

जे निगंथे निगंथस्स सरिसगस्स अंतो ओवासे संते ओवासे

न देइ, न देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२१॥

णिगयगंओ अंतो चसहीए अतसंजमयुगादीहि तुल्लो सरिसो संतमिति विज्जमाणं ओवासो ति -  
अवगासो - स्थानमित्यर्थः । अदेतस्स चउलह ।

इमो सरिसो -

ठितकप्पम्मि दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहमण्णतरे ।

उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिसकप्पो स सरिसो उ ॥५६३२॥

दसविहो ठियकप्पो इमो -

आचेलककुद्देसिय, सेज्जायर रायपिंड किइकम्मे ।

वय जेड्ड पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवणकप्पे ॥५६३३॥

इमस्स वि 'अचेलको धम्मो, इमस्स वि उद्देसियं ण कप्पइ । एवं सेज्जायरपिंडो रायपिंडो य ।

कितिकम्मं दुविधं - अब्बुट्ठाणं वंदणं च । तं दुविधं पि इमोवि जहारुहं करेति, इमो वि जहारुहं ।  
अधवा - कितिकम्मं सव्वाहिं संजतीहिं अज्जदिविलयस्स वि संजतस्स कायव्वं दो वि तुल्लमिच्छंति ।

१ आचेलको, इत्यपि पाठः ।

इमस्स वि पंच महव्वयाणि । जो पढमं पंचमहव्वयाण्डो सो जिहो सामाए वा ठविओ । इमस्स वि इमस्स वि  
अइयारो होउ मा वा, उभयसंभं इमस्स वि इमस्स वि पडिक्कमति । उदुवद्धे मासं मासं एगत्य अच्छंति  
इमस्स वि इमस्स वि । चत्तारि मासा वासानु पज्जोसवणकप्पे ण निहरंति इमस्स वि इमस्स वि । एसो  
दसविहो ठियकप्पो ॥५६३३॥

ठवणाकप्पो दुविहो - अकप्पठवणाकप्पो सेहठवणाकप्पो य -

आहार उवहि सेज्जा, अकप्पिएणं तु जो ण गिणहावे ।

ण य दिक्खेति अणट्ठा, अडयालीसं पि पडिक्कुट्ठे ॥५६३४॥

आहार-उवहि-सेज्जं अकप्पियं ण गिण्हति । एस अकप्पठवणा । सेहठवणाकप्पो - अट्ठारस पुरिसेसुं,  
वीसं इत्थीदु, दस णपुंसेसु, एते अडयालीसं ण दिक्खेइ निक्कारणे ॥५६३४॥

सो वि इमो उत्तरगुणकप्पो -

उग्गमविसुद्धिमादिसु, सीलंगेसुं तु समणधम्मेषु ।

उत्तरगुणसरिसकप्पो, विसरिसधम्मो विसरिसो उ ॥५६३५॥

पिडस्स जा विसोही ॥ गाहा ॥

तत्थ उग्गमसुद्धं गेण्हति, आदिसद्दाओ उप्पायणएसगातो, समितीओ पंच, भावणा वारस, तवो  
दुविहो, पडिमा वारस, अभिगगा दव्वादिया, एते सीलंगगहणेण गहिया । अहवा - सीलंगगहणाओ  
अट्ठारससीलंगसहस्सा । एयम्मि ठितकप्पे उत्तरगुणकप्पे वा जो सरिसकप्पो सो सरिसो भवति, जो पुण एतेसि  
ठागाणं अणायरे वि ठाणे सीदति सो विसरिसधम्मो भवति ।

अहवा - ठियकप्पे दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहे, गियमा सरिसो । उत्तरगुणे पुण केसु विसरिसो  
चेव, जहा तवपडिमानिगहेसु ॥५६३५॥

अहवा सरिसो इमो -

अण्णो वि य आएसो, संविग्गो अहव एस संभोगी ।

दोसु वि य अर्धागारो, कारणे इतरे वि सरिसाओ ॥५६३६॥

जो संविग्गो सो सब्बो चेव सरिसो, अहवा - जो संभोइओ सो सरिसो । अहवा - कारणं पप्प  
इयरे ति - पासत्यअसंभोतिता ते वि सरिसा भवति ॥५६३६॥

जो तस्स सरिसगस्स तु, संतो वा से ण देति ओवासं ।

निक्कारणम्मि लहुया, कारणे गुरुमा य आणादी ॥५६३७॥

संतमोवासं निक्कारणियमागयस्स जइ ण देति तो चटलहुं । संतमोवासं कारणियमागयस्स जइ न  
देइ तो चट्ठुणं, आणादिया य दोसा ॥५६३७॥

इमे कारणा जेहि आगओ -

उदगागणितेणोमे, अट्ठाण गिलाण सावयपड्ठे ।

एतेहिं कारणिओ, निक्कारणिओ य विवरीओ ॥५६३८॥

अप्यगामे गमामो वा अण्यगमभीष्टं नापु टिता, तेमि मा वसती उद्देशेन प्लाविता अगणिता वा दृष्टा ये आगता, तेन-मानवद्वेष्टि मा उवहविज्जमाणा मरणमागमा, पलाणविषणा वा, वेज्जोमहकज्जेनु वा पिलाद्वहमाणमग्ग एवमादिदि पयोपजेहि जो आगतो सो कारणिमो । अतो विवरीमो दण्णतो आगतो विवरीमो ॥५६३८॥

वगहि अभावे वहि वगंतरन इमे दोसा -

रूपरदंसमसोससीता, सावय-वाल-सतक्करमा वा ।

दोस वह वसतो वहितो जे, ते सविसेस उव्वंति अदंते ॥५६३९॥

वृत्ति-पुनरा कुचरा पारदारिकादि तेहि उवहविज्जति, दंसममादीहि वा मज्जति, उग्गादि वा ज्वं गीतं वा पडति, गीतादिमावण मणादिवानेण वा राज्जइ, तक्करे त्ति पोरं तेहि वा मुरसंति हरिज्जति । एवमादि वहि वगंते वहदोसा । जे तस्म नापुन वहि वसतो दोसा ते सव्ये उव्वंति त्ति - भवति भदंतरम । जं तेम पण्डितं सं मयं भदंतरम भवतीत्यर्थः ॥५६३९॥

किं चान्यत् -

एगद्धा संभोगो, जा कारुवकारिता परोप्परओ ।

अविचित्ताऽवच्छन्त्वा, हवन्ति एवं तु छेदो य ॥५६४०॥

अविचित्ताभावा भदंतरस अवच्छन्ता य भवति, संभोगवोच्छिन्तो, साहमिपवच्छन्तवोच्छिन्तो वा, अहवा - पवयज्जुच्छिन्तो वा, तद्वा साहमि साहमि दडगोहिणः होयव्वं ॥५६४०॥

जति एकभाणजिमित्ता, निहिणो वि हु दीहसोहिया ह्वंति ।

जिणवयणवाहिभूया, धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥५६४१॥ कंठवा

किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुजिज्जण समणेणं ।

सक्का हु एकमेक्के, नियमं पि व रक्खितो देहो ॥५६४२॥

आवत्तीए जहा अणं रणंति तद्वा अणो वि आवत्तीए रणितयव्वो ॥५६४२॥

एवं रोते अखेत्ते वा वसधीए वासो दातव्वो । असंयरणे खेत्ते वि अन्नगच्छत्तस अवगासो दातव्वो ।

जतो भण्णति -

अत्थि हु वसभग्गामा, कुदेस-णगरोवमा सुहविहारा ।

वहुगच्छुवग्गहकरा, सीमाल्लेदेण वसियव्वा ॥५६४३॥

अत्थि त्ति-विज्जए वसभग्गामो गाम जत्थ उडुवद्धे आयरिओ अप्पवित्तिओ गणावच्छेओ अप्प-तत्तिओ एरा पंन, एतेण पमाणेणं जत्थ तिणिण गच्छा परिवसंति एयं वसभखेत्तं ।

वासासु आयरिओ अप्पतत्तितो, गणावच्छेत्तितो अप्पचउत्थो एते सत्त, एतेणं पमाणेणं जत्थ तिणिण गच्छा परिवसंति एयं वसभखेत्तं । एते एकवीसं, एयं वसभखेत्तं । कुच्छिओ देसो कुदेसो उवमिज्जति जो गामो कुदेस-णगरोवमो, सो य सुहविहारो सुलभभत्तपाणं वसधी वत्थं णिसवद्दं च नृप्रभृतिवहूत्वं पुव्वभणियं सत्यप्पमाणेण उवग्गहे वट्टति, ते य वहुगच्छा जति समं ठिया तो साधारणं खेत्तं ।

तत्थ सीमल्लेदेण वसियव्वं, इमो सीमल्लेदो -

तुम्हंसचित्तं, अम्ह अचित्तं ।

अहवा—तुम्ह वाहि, अम्ह अंतो । तुम्ह इत्थी, अम्ह पुरिसा ।

अहवा—तुम्ह सगामो अम्ह वाताहडा कलेहि वा वाडगसाहार्हि वा उढभामगेहि ।

अहवा—जं लब्धति तं सर्व्वं सामणं ।

अहवा—जो जं लाही तस्स तं । एवं सीमच्छेदेण वसियव्वं, णो अधिकरणं कायव्वं । परखेत्ते वि  
क्षेत्तियवसेण सीमच्छेदो कायव्वो । वित्तएण वि अमायाविणा भवियव्वं ॥५८४३॥

भवे कारणं ण देजा वि -

वित्तियपदं पारंचिय, असिव गिलाणे य उत्तमड्ढे य ।

अव्वोच्छित्तोवासे, असति णिक्कारणे जतणा ॥५८४४॥

पारंचिय असिवस्स इमा विभासा -

पारंचिओ ण दिज्ज व, दिज्जति व ण तस्सुवस्सए ठाओ ।

दुविहे असिवे वाहिं, ठितपडियरणं च ते वा वी ॥५८४५॥

पारंचिओ अणोसि अप्पणो ठाणं ण देज्जा, पारंचियस्स वा ठाओ न दिज्जति, असिवगहियस्स ण  
दिज्जति, असिवगहियो वा वसहीए ठाणं ण देज्ज, असिवगहियस्स अणवसहिठियस्स वेयावच्चं कायव्वं,  
अणवसहिठितो वा असिवगहियाण वेयावच्चं करेइ । दुविहं पुण असिवं । चउभंगे पच्छिमा जा दो भंगा साहु  
अमदा ॥५८४५॥

इयाणि 'गिलाणउत्तिमट्टाण विभासा -

अतरंतमिगावण्णहि, मिगपरिसा वा तरंतो अणत्थ ।

एमेव उत्तिमड्ढे, समाहि पाणादि उभयम्मि ॥५८४६॥

जेसि अतरंतो अत्थि सो य आगंतुगो मिगो अगीयत्थो होज्ज अपरिणामो वा ताहे सो अणवसहीए  
ठविज्जति, अहवा - गिलाणो आगओ वत्थव्वाण य मिगपरिसा ताहे सो गिलाणो अणत्थ ठविज्जति, एवं  
उत्तिमट्टपडिवण्णे वि समाहिणमित्तं पाणादि दायव्वं । तत्थ "उभयम्मि" ति जति आगंतुगो मिगो तो अण-  
वसहीए ठविज्जति । अह वत्थव्वगपरिसा मिगा तो उत्तिमट्टपडिवण्णे अणवसहीए ठविज्जति ॥५८४६॥

अव्वोच्छित्तिविभासा इमा -

छेदसुतणिसीहादी, अत्थो य गतो य छेदसुत्तादी ।

मंतनिमित्तोसहिपाहुडे, य गाहेति अणत्थ ॥५८४७॥

णिसीहमादियस्स छेदसुत्तस्स जो अत्थो आगतो सुत्तं वा मोक्कलाणि वा पच्छित्तविहाणाणि  
मंताणि वा जोणिपाहुडं वा गाहतो अणत्थ वा गाहेति अणत्थ वा ते मिगा ठविज्जति, जत्थ वसहीए  
वा दिज्जति तत्थ मिगाण ओवासो ण दिज्जति ।

एवं ता णिक्कारणे पारंचियादियाण ओवासो ण दिज्जते ॥५८४७॥

इमो अववादे अववादो - पुणो इमं कारणमविविक्कण असिवादिके पारंचियादीण वि ओवासो  
दिज्जति -

जा निग्गंथी निग्गंथीए सरिसियाए अंते ओवासे संते ओवासे-

न देइ न देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२२॥

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होइ नायच्चो ।

पुब्बे अवरे य पदे, एगं पारंचियं मोत्तुं ॥५६४८॥ कंठ्या

णवरं - अययादपदे मंजरीण पारंचियं णत्ति ।

जे भिक्खू मालोहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२३॥

मालोहडं पि तिविहं, उट्ठमहो उभयओ य णायच्चं ।

एक्केक्कं पि य दुविहं जहणमुक्कोसयं चव ॥५६४९॥

उट्ठमालोहडं विभूमादिनु, महोमालोहडं भूमिपरादिनु, उभयमालोहडं मंचादिनु, समप्रेणिस्थितः,

अहवा - कुट्टिमादिनु भूमिद्विगो षण्णोमिगे जं कटुति । अगतलेहि ठाउं जं उत्तारेइ तं जहणं । पीडगादिनु जं आगेहुं उत्तारेइ तं सव्यं उक्कोसं ॥५६४९॥

भिक्खू जहणयम्मी, गेरुत उक्कोसयम्मि नायच्चो ।

अहिदसण मालपडणे, एवमादी तहिं दोसा ॥५६५०॥

मिक्कताओ उपाविउकामा साहुणा पडिसिद्धा तच्चन्नियट्ठा गिण्हइ अहिणा उक्का मया । मालाओ

उपाविउकामा साहुणा पडिसिद्धा परिच्चायगट्ठा उत्तारेंतो पडिया, जंतलीलेण पोट्टं फाडियं मया ॥५६५०॥

इमे उक्कोसे उदाहरणा -

आसंद पीठ मंचग, जंतोदुक्खलपडंत उभयवहो ।

वोच्छेय-पदोसादी, उट्ठाहमणा णिवातो य ॥५६५१॥

सेसं पिडणिज्जुत्ति-अणुसारेण भाणियच्चं ।

इमा सोही -

सुत्तणिवातो उक्कोसयम्मि तं खंधमादिसु हवेज्जा ।

एतेसामण्णतरं, तं सेवंतम्मि आणादी ॥५६५२॥

उक्कोसे चउलहुं, जहणो मासलहुं, सेसं कंठं ।

इमं वित्तियपदं -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाणरोहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥५६५३॥

अणेगसो गतत्था । णवरं-गीयत्थो पणपपरिहाणीए जयणाए गेण्हइ ॥५६५३॥

जे भिक्खू कोट्टियाउत्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

उक्कुज्जिय निक्कुज्जिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२४॥

पुरिसप्यमाणा हीणाविद्या वा विवस्त्रलमती कोट्टिआ भवति, कलिजो णाम वंसमयो कडवल्लो सट्टनी वि भण्णनि । अण्णे भण्णति - उट्ठियाउवरि हुत्तिकरणं उक्कुज्जियं, उट्ठिए तिरियहुत्तकरणं अक्कुज्जियं, उहरिय ति - पेडियमादिमु आरुभिडं ओआरेति । अथवा - कायं उच्चं करेज्जा उक्कुज्जियडंडायतं तद्धदं गृहाति, कायं उट्ठं कृत्वा गृणाति - उण्णमिय इत्यर्थः ।

कोट्टियमादीएसुं, उभओ मालोहडं तु णायव्वं ।

ते चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति वित्तियपयं ॥५६५४॥

एवं उभयमालोहडं दंसियं क्लृप्तं । ते चेव दोसा वित्तियपयं च ।

जे भिक्खू मट्ठिओलित्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

उब्भिंदिय निब्भिंदिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२५॥

अथपाणिआदिमायणे छूडं तं पिहितं सरावणादिणा मट्ठियाए उल्लित्तं तं उब्भिंदियं दंतस्स जो गेण्हइ तस्स चउलहं ।

पिहितुब्भिण्णकवाडे, फासुग अफासुगे य वोधव्वे ।

अफासु पुढविमादी, फासुगल्लगणादिददरए ॥५६५५॥

उब्भिण्णं दुविचं - पिहुभिण्णं वा कवाडुभिण्णं च ।

पिहुभिण्णं दुविचं-फासुयं अफासुयं च । जं तं फासुयं तं अचित्तं वा मीसं वा । अफासुयं पुढविमादि-छत्तु काएनु जहासंभवं भाणियव्वं । जं फासुयं द्यगणेण अहवा - वत्येण चम्मेण वा दहरियं । दहरपिहि-उब्भिण्णे मासलहं, सेसपिहुभिण्णेनु चउलहं, अणत्तेनु चउगुरं, परित्तमीसेनु मासलहं, अणंतमीसेनु मासगुरं, साह्णिमित्तं उब्भिण्णे कयविकत्तेनु अधिकरणं कवाडपिहितुब्भिण्णे कुंचियवेवे तालए वा आवत्तणपेडियाए वा तसमादिविरावणा । सेसं जहा पिडणिज्जुत्तीए ॥५६५५॥

एतेसामण्णतरं, पिहितुब्भिण्णं तु गेण्हती जो तु ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥५६५६॥ कंठ्या

असिवे ओमोयरिए, रायदुड्डे भए व गेल्लणे ।

अद्दाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थो ॥५६५७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविपत्तिट्ठियं पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२६॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउपत्तिट्ठियं पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२७॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तेउपत्तिट्ठियं पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२८॥



जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सतिकायपत्तिद्धियं पडिग्गाहंति  
पडिग्गाहेंतं वा सातिज्जति ॥५६०॥१२६॥

सच्चित्तमीसएसुं, काएसु य होति दुविहनिक्खित्तं ।

अणंतर-परंपरे वि य, विभासियव्वं जहा सुत्ते ॥५६५॥

पुद्गवादी काया ते दुविधा — सच्चित्ता मीमा वा । सचित्तेषु अणंतरणिवित्तं परंपरणिवित्तं वा ।  
मीमेसु वि अणंतरणिवित्तं परंपरणिवित्तं वा । पिडणिज्जुत्तिगाहासुत्ते जहा तद्वा सवित्थरं भाणियव्वं ।  
आगारवित्थियसुयक्खंथे वा जहा सत्तमे पिडेसणासुत्ते तद्वा भाणियव्वं ॥५६५॥

सुत्तणिघातो सच्चित्तऽणंतरे तं तु गेण्हती जो उ ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराधणं पावे ॥५६५॥

परित्तमनित्तेषु अणंतरणिवित्तं चउत्तहं, एत्थ सुत्तं णिययति । सचित्तपरंपरे मासलहं, मीमअणंतरे  
मासलहं, परंपरे पणमं, अणंते एते चेय गुरुणा पच्छित्ता ॥५६५॥

चोदगाह —

तत्थ भवे णणु एवं, उक्खिप्पंतम्मि तेसि आसासो ।

संजतिणिमित्ते घट्टण, थेरुवमाए ण तं जुत्तं ॥५६६०॥

पुद्गवादिकायाण उवरि ठियं जं तम्मि उक्खिप्पंते णणु तेसि आसासो भवति ?

आचार्याह — तम्मि उक्खिप्पंते जा संघट्टणा सा संजयणिमित्तं, ताण य अप्पमंघयणाण संघट्टणाए  
गहंती वेदणा भवति ॥५६६०॥

एत्थ थेरुवमा —

जरजज्जरो उ थेरो, तरुणेणं जमलपाणिमुद्धहतो ।

जारिसवेदण देहे, एगिंदियघट्टिते तह उ ॥५६६१॥

जहा जरजुण्णदेहो थेरो बलवता तरुणेण जमलपाणिणा मुद्धे आहते जारिसं वेयणं  
वेयति, ततो अधिकतरं ते संघट्टिता वेयणं अणुहवंति, तम्हा ण जुत्तं जं तुमं भणसि ॥५६६१॥

इमं वित्थियपदं —

असिवे ओमोयरिए, रायदुद्धे भए व गेलण्णे ।

अद्धान रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥५६६२॥

पूर्ववत् । गीयत्थो इमाए जयणाए गहणं करेति — पुब्बं मीसे परंपरद्धितो गेण्हति, ततो मीसे  
अणंतरो, ततो सच्चित्ते परंपरे, ततो सच्चित्ते अणंतरे, एवं अणंतकाए वि, एस परित्ताणंतेसु कमो दरिसिओ  
॥५६६२॥

गहणे पुण इमा जयणा —

पुब्बं मीसपरंपर, मीसे तत्तो अणंतरे गहणं ।

सच्चित्त परंपरऽणंतरे य एमेव य अणंते ॥५६६३॥

पुच्छं परित्ते मीसे परंपगट्ठितो गेण्हति, ततो मीसअणंतपरंपरं, ततो सचित्तपरित्तरंपरं, ततो अणंतमीसअणंतपरं, ततो अणंतसचित्तपरंपरं, ततो परित्तसचित्तअणंतपरं, ततो अणंतसचित्तअणंतपरं आहारे भणियं ॥५६६३॥

आहारे जो उ गमो, णियमा सो चेव होइ उवहिम्मि ।

णायव्यो तु मतिमता, पुच्चे अवरम्मि य पदम्मि ॥५६६४॥ कंठ्या

जे भिक्खु अच्चुसिणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सुप्पेण वा विहुणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभंगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमिक्का वीइत्ता आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३०॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उसिणुसिणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३१॥

जे भिक्खु असणादी, उसिणं णिव्ववियसंजयट्ठाए ।

विहुवणमार्इएहिं, पडिच्छए आणमादीणि ॥५६६५॥

“णिव्वविय” ति उत्तवेळ्ळण, सेसं कंठ्यं ।

उसिणे धेप्पंते इमे दोसा —

दायग-गाहगडाहो, परिसडणे काय-लेव-णासो य ।

डज्झति करोति पादस्स छड्डणे हाणि उट्ठाहो ॥५६६६॥

परिसडंते वा भूमिती छक्कायवहो, अच्चुसिणेण वा भाणस्स लेवो डज्झति, उसिणे दिज्जमाणे वा करे डज्जमाणो पायं तं छड्डेज्ज, तम्मि भग्गे असति भायणस्स अप्पणो हाणी, बहु असणादि परिट्ठवियं दट्ठं “वहि फोड” ति उट्ठाहो । जणो वा पुच्छति — “कहं डड्ढो” ? ति । संजयस्स भिक्खं देज्जमाणो जणे फुसंते उट्ठाहो ति ॥५६६६॥

इमो अववाद्दो —

असिन्वे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण रोहए वा, काले वा अतिच्छमाणम्मि ॥५६६७॥ पूर्ववत्

काले अतिच्छमाणे ति जाव तं परिवक्कमेण सीतीभवति ताव आइच्चो उवत्यमं गच्छति । यतो मूरादीहिं तुरियं सीयलिज्जति, ण, दोसो ॥५६६७॥

उसिणे पुण कारणे धेप्पंते इमा जयणा —

गिण्हति णिसीतितुं वा, सज्झाए महीय वा ठवेळ्ळणं ।

पत्तावंधगते वा, धोत्तणगहिते व जतणाए ॥५६६८॥

उपवसिता पदसधियं जहा ण उज्झति तहा गेण्हति । अहवा - मंचगे मंचिकाए वा मञ्जे भूमीए वा पादं ठवेत्ता गेण्हति । पत्तगवंधगतो वा गेण्हति । अचुसिणं च पादद्वितं घोलेइ, मा लेवो उज्झिहति । एयाए जयशाए कारगे गेण्हतो भदोसो ॥५६६८॥

जे भिक्खू उस्सेइमं वा संसेइमं वा चाउलोदगं वा वालोदगं वा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अंवकंजियं वा सुद्धवियडं वा अहुणा धोयं अणंवल्लं अपरिणयं अवक्कंतजीवं अविद्धत्थं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३२॥

उस्सेतिममादीया, पाणा युत्ता उ जत्तिया सुत्ते ।

तेसिं अण्णतरायं, गेण्हते आणमादीणि ॥५६६९॥

उमिणं सीतोदगे छुब्भति तं उस्सेइममाणयं । जं पुण उसिणं चेव उवरि सीतोदगेण चेव सिनियं तं संसेइमं । अहवा-संसेतिगं, तिला उण्णपाणिण सिण्णा जति सीतोदगा धोवंति तो संसेतिमं भण्णति । चाउन्नाग धोवणं चाउलोदगं । अमुणा धोतं अनिरकालघोतं । रसतो अणंवीभूयं । जं जीवेण विष्णुमुक्कं तं वक्कतं, ण वक्कतं अवक्कतं, सचेतनं मिथं वा इत्थयं । जमवण्णसंजातं तं परिणयं, न परिणयं अपरिणयं - स्वभाववणंस्वमित्थयं । जं वण्णगंधरसफामेहिं सव्वेहिं ध्वस्तं तं विध्वस्तं, अणेगघा वा ध्वस्तं विध्वस्तं, ण विद्धत्थं अविद्धत्थं, मयंथा स्वभावस्वमित्थयं । अहवा - एए एगट्टिया । अपरिणयं गेण्हंतस्स चउलहु, आणाइया य दोसा ॥५६६९॥

उस्सेइमस्स इमं वक्खाणं -

सीतोदगम्मि छुब्भति, दीवगमादी उस्सेइमं पिट्ठं ।

संसेइमं पुण तिला, सिण्णा छुब्भति जत्थुदए ॥५६७०॥

मरहदुविसए उस्सेइया दीवगा सीतोदगे । छुब्भति । उस्सेइमे उदाहरणं, जहा-पिट्ठं । अहवा - पिट्ठस्स उस्सेज्जमाणस्स हेट्ठजं पाणियं तं उस्सेइमं । पच्छद्वं गतार्थम् ॥५६७०॥

पढमुस्सेतिममुदयं, अकप्पकप्पं च होति केसिंचि ।

तं तु ण जुज्जति जम्हा, उसिणं मीसं ति जा दंडो ॥५६७१॥

ते दीवगादी उस्सेतिमा, एकम्मि पाणिए दोसु तिसु वा निच्चलिज्जति तत्थ वित्तियतत्तिज्जा य सव्वेसिं चेव अकप्पा, पढमं पाणियं तं पि अकप्पं चेव । केसिं चि आयारियाणं कप्पं, तं ण घडति ।

कम्हा ? जम्हा उसिणोदगमवि अणुवत्ते डंडे मीसं भवति, तं पुण कहिं उस्सेतिमेसु छूडेसु अचित्तं भविप्पतीत्यर्थः ? ॥५६७१॥

इमो चाउलोदे विही -

पढमं वित्तियं तत्तियं, चाउलउदगं तु होति सम्मिस्सं ।

तेण परं तु चउत्थे, सुत्तणिवातो इहं भणितो ॥५६७२॥

पढम-वित्तिय-तत्तिय-चाउलोदगा एते णियमा मिस्सा भवन्ति, तेण परं चउत्थादि सचित्ता । एत्थ सुत्तणिवातो चउलहुगमित्थयं । आदिल्लेसु तिसु वि मासलहुं ।

अण्णे पुण - ततिए वा चाउलसोघणे सुत्तणिवायमिच्छति, जेण तत्थ बहुं आरिणयं, थोवं परिणयमिति ॥५६७२॥

जं उस्सेतिमादि मिस्सं तस्सिमो गहणविही -

कालेणं पुण कप्पति, अंवरसं वण्णगंधपरिणामं ।

वण्णातिविगतसिंगं, णज्जति बुक्कंतजीवं ति ॥५६७३॥

तं उस्सेतिमं चिरकालं अच्छंतं जया रसतो अंवरसं, वण्णतो विवण्णं, गंधओ अण्णगंधं, फासतो चिक्खिल्लं, एवं तं उदगं वण्णादिविगतसिंगं दट्ठं णज्जति जहा विगयजीवं ति तहा धेप्पति ।

चोदगाह - “नेसिं फुडं गमणादिकं जीवसिंगं ते णज्जति, जहा विगयजीवा ति । पुढवादी पुण अव्वत्तजीवल्लिगे कहं णाता, जहा विगतजीवं ?” ति ॥५६७३॥

आचार्याहि -

कामं खलु चेतण्णं, सव्वेसेगिंदियाण अव्वत्तं ।

परिणामो पुण तेसिं, वण्णादि इंधणासज्ज ॥५६७४॥

पुव्वद्वं कंठं । पच्छद्वे इमो अत्यो-बहुमज्झत्यो चिधणेण जहासखं अप्पमज्झ चिरकालोवल्लिखता जहा वण्णादी तहा तेसि अव्वभिचारी अजीवत्ते परिणामो लक्खिज्जति ॥५६७४॥

एमेव चाउलोदे, पढमे विति-ततिय तिणिण आएसा ।

तेण परं चिरधोतं, जहि सुत्तं मीसयं सेसं ॥५६७५॥

चाउलोदगे वि जे पढमवित्तिता चाउलोदगा ते अहुणा धोत्ता मीसा । “तेण परं चिर धोयं जहि सुत्तं” ति तेण परं चउत्थादि चाउलोदगं तं चिरधोयं पि सचित्तं, जहि सुत्तं णिवयति तस्याग्रहणमेव । जं पुण “मीसयं सेसं” ति तम्मि इमे तिणिण अणागमिगा आदेसा -

तत्येगो भणति - चाउला धोवित्ता जत्थ तं चाउलोदगं छुम्भति तत्थ जातो कण्णे फुसिताओ लगाओ ताओ ण जाव सुक्कंति ताव तं मीसं, “तेण परं” ति - तासु सुक्कासु तं अचित्तं भवतीत्यर्थः । १ ।

अवरो भणति - चाउला जाव सिज्झंति ताव त मीसं, तेण परं अचित्तं पूर्ववत् । २ ।

अवरो भणति - तम्मि चाउलोदगे जे वुव्वुआ ते जाव अच्छति ताव मीसं, तेण परं अचित्तं पूर्ववत् । ३ ।

आचार्याहि - “तेण परं चिरधोयं” ति एते अक्खरा पुणो चारिज्जंति, जेण फुसिताओ सि(सी)यकाले चिरं पि अच्छंति । गिम्हकाले लहुं सुसंति, चाउला वि लहुं चिरेण वा सिज्झंति, वुव्वुआ वि चिरं नीवाए अच्छंति, पवाए लहुं विणस्संति, “तेण” ति तेण कारणेण एते अणादेसा । “परं” ति एतेसिं आएसाणं इमं वरं प्रधानं आगमितं आदेसंतरं - “जं जाणेज्ज चिराधोतं” सिलोगो । बहुप्पसण्णं च मतीए दंसणेण य अचित्तं जाणेत्ता गेण्हीति । जत्थ : “३वालधोवणं” ति आलावगो-चमरिवाला धोव्वंति तक्कादीहि, पच्छा ते चमरा सुद्धोदगेण धोव्वंति । तत्थज्ज पढमवित्तियततिया मीसा, जं च पच्छिमं तं सचित्तं, तत्थ सुत्तनिवातो । अहुवा वालधोवणं सुरा गालिज्जति जाए कंवलीए सा पच्छा उदएण धोवइ, तत्थ वि पढमाति धोवणा मीसा,

पश्चिमा सन्निता, तन्मि मृत्तगिवातो । अहवा - नानघोषणं रत्नयोरेकत्वात् वारागागदुगो, सो तत्कवियडादि-  
भावितो घोष्यः । तस्य वि पटमादी मीसा, पश्चिमा सन्निता, तन्मि सुत्तगिवातो । सव्वेसु मीसं कालेण परिणयं  
गेउम्भं ॥५६७५॥

इमं वित्तिपदं -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्टे भए व गेलण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥५६७६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइं वागरंइ

वागरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३३॥

जहा मे करपादेगु तेहा गिव्यमिता, चंदचयंकुसादी दीयंति सुसंठाणे, सुपमाणता य देहस्त, तहा  
मे अवस्तं घागरिएण भवियव्वं, -जो एवं वागरेइ तस्स चउलहुं आणादिया य ।

ते लक्खणा इमे -

माणुम्माणपमाणं, लेहसत्तवपुअंगमंगाइं ।

जे भिक्खू वागरेति, आयरियत्तादि आणादी ॥५६७७॥

माणस्स उम्माणस्स य इमा विभासा -

छड्ढेति तो य दोणं, छूढो दोणीए जो तु पुण्णाए ।

सो माणजुतो पुरिसो, ओमाणे अद्धभारगुरू ॥५६७८॥

माणं नाम पुरिमण्यमाणातो ईगिमित्तिरित्ता उट्टिया कीरइ सा पाणियस्स समणिवद्धा भरिज्जति,  
पच्छा तस्य पुरिसो पावेव्वणति, जति द्रोणो पाणियस्स छड्ढेति तो माणजुतो पुरिसो, अहवा - पुरिसं  
छोहूण पच्छा पाणियस्स भरिज्जति तन्मि पुरिसे ओसित्ते जइ सा कुंडी द्रोणं पाणियस्स पडिच्छइ तो माणजुतो ।  
उम्माणे त्ति जति तुलाए आरोविमो अद्धभारं तुलति तो उम्माणजुतो भवति ॥५६७८॥

अद्धसतमंगुलुच्चो, समुहाइं वा समुस्सितो णवओ ।

सो होति पमाणजुतो, संपुण्णंगो व जो होति ॥५६७९॥ कंठ्या

लेह त्ति अस्य व्याख्या -

मणिवंधाओ पवत्ता, अंगुट्टे जस्स परिगता लेहा ।

सा कुणति धणसमिद्धं, लोगपहाणं च आयरियं ॥५६८०॥ कंठ्या

सत्तवपुअंगमगाणं इमा विभासा -

सत्तं अदीणता खलु, वपुत्तेओ जस्स ऊ भवइ देहे ।

अंगा वा सुपइट्टा, लक्खण सिरिवच्छमा इतरे ॥५६८१॥

सत्त्वं प्रधानं महंतीए वि आवदीए जो अदीणो भवति सो सत्त्वमंतो । वपू णाम तेयो, सो जस्स  
अस्थि देहो सो वपुमंतो । अद्धअंगा ताणि जस्स सुपतिट्ठुमंठाण.गि, अंगान्ति त्ति उवंगाणि ताणि वि जस्स

सुपड्डसुसंठियाणि, अण्णाणि य सिरिवच्छनादीणि लक्खणाणि, “इयरे” ति वंजगा ते य मसतिलगादी ।  
अहवा - सह जायं लक्खणं, पच्छा जायं वंजगं, ॥५६८१॥

अहवा भणेज्ज -

अमुगायरियसरिच्छाईं लक्खणाईं ण पासह महं ति ।

एरिसलक्खणजुत्तो, य होति अचिरेण आयरिओ ॥५६८२॥

अमुगस्स आयरियस्स जारिसा हत्थपादादिनु लक्खणा, जारिसं पि वा देहं, ममं पि तारिसं चेव ।  
पच्छदं कंठं ॥५६८२॥

इमे दोसा -

गारवकारणखेत्ताइणो य सच्चमलियं च होज्जा हि ।

विदरीयं एंति जदो, केति णिमित्ता ण सव्वे उ ॥५६८३॥

अहं आयरिओ भविस्सामि ति गारवकारणे खित्तादिचित्तो भवेज्जा, सायवाहणो डव ।  
अहवा - छउमत्थोवलक्खिया लक्खणा सखा वा हवेज्जा अलिता व होज्ज । पच्छदं कंठं । अहवा - इमो  
आयरिओ होहिइ ति कोइ पडिगीओ जीविताओ ववरोविज्ज ॥५६८३॥

एयस्स इमो अववातो -

व्रित्तिपदमणप्पज्जे, वागरे अविकोविते य अप्पज्जे ।

कज्जे अण्णपभावण, वियाणणट्ठा य जाणमवि ॥५६८४॥

पडिणीयपुच्छणे को, गुरु मे किं सो हं ति पेच्छ मे अंगं ।

गिहि-अण्णतित्थिपुट्ठे, व जुंगिते जो अणोत्तप्ये ॥५६८५॥

खित्तादिगो अण्णप्पज्जो सेहो अजागंतो अप्पणो लक्खणो पणासेज्ज । अप्पज्जो वा “कज्जे” ति कोइ  
पडिणीतो पुच्छेज्जा - कतमो मे गुरु ?

ताहे जो आरोहपरिणाहजुत्तो सो भणति - किं तेण ? अहं सो ।

पडिणीओ भणति - कहं जायं ?

साहू भणति - पिच्छ मे अंगं लक्खणजुत्तं ।

“अण्णपभावणं” ति अस्य व्याख्या - गिहिअण्णतित्थिएण वा पुच्छियं - को मे गुरु ? ति ।

आयरिओ जति सरीरजुंगितो ताहे जो अण्णो साहू अणुत्तस्वेहो अलज्जगिज्जो, आगमेनु य कया-  
गमो, एवं सो अणो पमाविज्जति, अप्पणा वा पमावेति ॥५६८५॥

वियाणणट्ठाए ति अस्य व्याख्या -

अट्ठव्रितगणहरे वा, कालगते गुरुम्मि भणतऽहं जोग्गो ।

देहस्स संपदं मे, आरोहादी पलोएह ॥५६८६॥

अट्टविते गणधरे आयरिया कालगया । तस्य जे वसभा अणं अलवखणजुत्तं ठवितंकामा, ताहे सो लवगणजुत्तो अणोहि भगावेति -

अप्पणो वा भणति - आयरियपदजोगो देहगंधं मे पेच्छद्द । अह आयरियो वि अलवखणजुत्तं ठवेउकामो, तस्य वि एवं चेव अप्पणं पमासेति - ममाममगो जारिमो गुणे भणिमो तारिसं ठवेह, सरोरसंपदाते पारोहादिजुत्तो ठवेय्यो । एवं 'जाणंतो वि भणेज्जा ॥५६८६॥

जे भिक्खू गाएज्ज वा हसेज्ज वा वाएज्ज वा णच्चेज्ज वा अभिणवेज्ज वा  
हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं उक्कट्टसीहनायं वा करेइ  
करेंतं वा सातिज्जति ॥५६८७॥

गरकरणं गरमंवारो या गेयं, मुहं विष्फालिय मविकारकहवकहं हसेणं, संखमादि प्राप्नोज्जं वा वाएज्ज, पाद-जंघा-ऊर-कटि-उदर-बाहु-अगुनि-वदन-गयण-भग्नादिप्रकारकरणं नृत्यं, पुवकारकरणं, उक्कट्टसंधयणसत्ति-संपन्नो रूढो तुट्ठो वा भूमो अप्फालेत्ता गीहसेव णायं करेति, हयसं सरिसं णायं करेइ हयहेसियं । वाणरस्स गरिमं किलिफिनितं करेति, अणं वा गयणजिआदिजीवरतं करेंतरस नउलहुं आणादिया य दोसा ।

जे भिक्खू गाएज्जा, णच्चे वाएज्ज अभिणवेज्जा वा ।  
उक्कट्टहसियं वा, कुज्जा वग्गेज्ज वीणादी ॥५६८७॥

अहिणमो परस्म सिवपावणा, नृत्यविकार एव वलितं टिटिकवत्, जावतिष्ठा मुहं विष्फालेत्ता गीयउक्कट्टिमादिया करेंति ॥५६८७॥

तेसु इमे दोसा -

पुव्वामयप्पकोवो, अभिणवमूलं व अण्णगहणं वा ।  
अस्संपुडणं च भवे, गायणउक्कट्टिमादीसु ॥५६८८॥

आमयो त्ति रोगो सो उवसंतो पकुप्पति, अहिणवं वा मूलं उप्पज्ज, "अन्नगहण" त्ति गलगस्स उभयो 'कण्णवुंघेमु सरणीतो मतातो तासु वातमंभगहितासु य अणायतं मुहजंतं हवेज्ज, अहवा - अण्णगहणं गंधवित्तं त्ति काउं रायादिणा घेप्पेजा, मुहं वा अस्संपुडं वातसिभदोसेण अच्छेज्जा ॥५६८८॥

एते चेव य दोसा, अस्संपुडणं मुइत्तु सेसेसु ।  
अण्णतरइंदियस्स व, विराहणा कायमुट्ठाहो ॥५६८९॥

सेसा जे णच्चणादिता पदा तेसु वि एते चेव दोसा । मुहस्सवि अस्संपुडणं एवकं मोत्तुं अण्णतरं वा हत्यपादादि सोतादि वा उप्फिटेंतो लुसेज्जा, एवमादिया आयविराहणा । गायणादिसु वा पाणजातिमुहप्पवेसे संजमविराहणा । णच्चणादिसु उप्फिटंतो पाणविराहणं करेज्ज अभिहणेज्ज वा । एवं कायविराहणा । एयासु आयसंजमविराहणामु सट्ठाणपच्छित्तं, गेय-णच्चणादिसु सविगारो अणिहुतो वा मंजतो त्ति जणो भणेज्जा, उट्ठाहं वा करेज्जा ॥५६८९॥

वित्थियपदमणप्पज्जे, पसत्थजोगे य अतिसयप्पमत्ते ।

अद्वाण वसण अभियोग वोहिए तेणमादिसु वा ॥५६९०॥

खित्तादिअण्णज्जे सेहो वा अजाणंतो गीतादि करेज्ज ॥५६९०॥



“पसत्थजोए” त्ति अस्य व्याख्या -

एस पसत्थो जोगो, सद्पडिबद्धे वाए गाए वा ।

अण्णो वि य आएसो, धम्मकहं पवत्तयंतो उ ॥५६६१॥

कारणद्विया सद्पडिबद्धाए वसहीए तत्थ गेयं करेति, आओज्जं वा वाएति, मा अण्णो अण्णसि मोहुम्भवेण विसोत्ति हवेज्ज ।

अहवा - समोसरणादिसु पुच्छगवायणं करेत्तो गंववेण कज्जंति ॥५६६१॥

“अतिसय पत्ते” त्ति अस्य व्याख्या -

केवलवज्जेसु तु अतिसएसु हरिसेण सीहणायादी ।

उक्किट्ठ मेलण विहे, पुच्चव्वसणं व गीतादि ॥५६६२॥

वीतरागत्वात् न करोति, तेन केवलातिसउप्यति वज्जेत्ता सेसेसु अवधिलंभादिएसं अतिसएसु उण्णोनु हरिसिउं सीहणायं करेज्ज । अण्णत्थ वा पडिगियत्तेग स वेइयासु मारुडो सीहनायं करिज्जा । \*अद्वानपडिवण्णा मह्लसत्थेग परोप्परं फिडित्ता मिलण्डा उक्किट्ठसद्दं संकरिज्जा । “वसण” त्ति कस्स ति मुव्वं गिहिकाले गीतादिगं आसि, तं स पव्वतितोवि वसणाओ करेजा, रायादिअभिओगेण वा ॥५६६२॥

अहवा -

\*अभिओगे कविलज्जो, उज्जेणीए उ रोधसीसो तु ।

वोहियतेणे महुरा, खमएणं सीहणादादी ॥५६६३॥

सगारअभिओगओ जहा कविलेग कयं तहा करिज्ज । अहवा - जहा रोहसीसेण उज्जेणीए रायपुरोहियमुयाभिओगतो कयं । वोहियतेणे जहा महुराए खमएण सीहणा दो कओ तहा करेज्ज ॥५६६३॥

जे भिक्खू भेरि-सदाणि वा पडह-सदाणि वा मुरय-सदाणि वा मुङ्ग-सदाणि वा  
नंदि-सदाणि वा भल्लरि-सदाणि वा वल्लरि-सदाणि वा  
उमरुग-सदाणि वा मड्डय-सदाणि वा सदुय-सदाणि वा पएस-सदाणि वा  
गोलुङ्ग-सदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सदाणि  
कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारेतं वा सातिज्जति । मू॥१३५॥

जे भिक्खू वीणा-सदाणि वा विवंचि-सदाणि वा तुण-सदाणि वा  
वव्वीसग-सदाणि वा वीणाइय-सदाणि वा तुंववीणा-सदाणि वा  
भोडय-सदाणि वा हंकुण-सदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा  
तयाणि सदाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ  
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥मू०॥१३६॥

१ गा० ५६६० । २ गा० ५६६० । ३ पडिगियत्तेगेण सावयाइसु आरुट्ठो इत्यपि पाठः । ४ गा० ५६६० ।  
५ कुक्कुडिय, इत्यपि पाठः । ६ गा० ५६६० ।



जे भिक्खु ताल-सदाणि वा कंसताल-सदाणि वा लित्ति-सदाणि वा  
गोहिय-सदाणि वा मकरिय-सदाणि वा कच्छभि-सदाणि वा  
महङ्ग-सदाणि वा सणालिया-सदाणि वा वलिया-सदाणि वा  
अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा भुसिराणि कण्णसोयपडियाए  
अभिसंधारेइ, अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३७॥

जे भिक्खु संख-सदाणि वा वंस-सदाणि वा वेणु-सदाणि वा खरमुहि-सदाणि वा  
परिलिस-सदाणि वा वेवा-सदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा  
भुसिराणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,  
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३८॥

संतं शृंगं, वृत्तः शंखः, दीर्घाकृतिः स्यत्वा न संतिगा । खरमुखी काहला, तस्स मुहत्थाणे खरमुहाकारं  
नट्टमयं मुहं कज्जति । पिरिपिरित्ता तनतोणसलागातो मु (भु) सिरामो जमलामो संपा (वा) तिज्जति । मुहभूले  
एगमुडा ना संलागारेण वाइजमाणी जुगयं तिणि सद्दे पिरिपिरिती करेति ।

अण्णे भणंति — गुंजापणवो मंठाण भवति । भंभा मायंगाण भवति । भेरिआगारसंकुडमुही दुदुंभी ।  
महत्प्रमाणो मुरजो । सेसा पसिद्धा ।

ततवितते घणभुसिरे, तच्चिवरीते य बहुविहे सद्दे ।

सद्दपडियाइ पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ॥५६६४॥

आनयिणीयमादि ततं, वीणातिसरिसं बहुतंतीहि विततं । अह्वा-तंतीहि ततं, मुहमउदादि विततं ।  
पणं उज्जललकुडा, भुसिरं वंसादिया । तच्चिवरीया कंसिग-कंसानग-भल-तालजल-यादिना, जीवरुतादयश्च  
बहवो तच्चिवरीया ॥५६६४॥

वित्तिपदमणप्पज्जे, अभिधारऽविकोचिते व अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६६५॥

कज्जेसु बहुप्पगारेसु ति जहा जे असिबोवसमणपयुत्ता संखसदातिया तेसि सवणद्धाते अभिसंधारेज्जा  
गमणःए वारवतीए, जहा भेरिसद्दस ॥५६६५॥

जे भिक्खु वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्फलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा  
निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा सराणि वा  
सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,  
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३९॥

जे भिक्खु कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा  
पव्वयाणि वा पव्वयविदुग्गाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,  
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४०॥

જે મિક્ષુ ગામાણિ વા નગરાણિ વા સેડાણિ વા કચ્વડાણિ વા મડંવાણિ વા  
 દોળમુહાણિ વા પટ્ટણાણિ વા આગરાણિ વા સંવાહાણિ વા  
 સન્નિવેસાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,  
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૧॥

જે મિક્ષુ ગામ-મહાણિ વા નગર-મહાણિ વા સેડ-મહાણિ વા કચ્વડ-મહાણિ વા  
 મડંવ-મહાણિ વા દોળમુહ-મહાણિ વા પટ્ટણ-મહાણિ વા આગાર-મહાણિ વા  
 સંવાહ-મહાણિ વા સન્નિવેસ-મહાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,  
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૨॥

જે મિક્ષુ ગામ-વહાણિ વા નગર-વહાણિ વા સેડ-વહાણિ વા કચ્વડ-વહાણિ વા  
 મડંવ-વહાણિ વા દોળમુહ-વહાણિ વા પટ્ટણ-વહાણિ વા આગાર-વહાણિ વા  
 સંવાહ-વહાણિ વા સન્નિવેસ-વહાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,  
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૩॥

જે મિક્ષુ ગામ-પહાણિ વા નગર-પહાણિ વા સેડ-પહાણિ વા કચ્વડ-પહાણિ વા  
 મડંવ-પહાણિ વા દોળમુહ-પહાણિ વા પટ્ટણ-પહાણિ વા આગાર-પહાણિ વા  
 સંવાહ-પહાણિ વા સન્નિવેસ-પહાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,  
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૪॥

જે મિક્ષુ આસ-કરણાણિ વા હત્થિ-કરણાણિ વા ઉટ્ટ-કરણાણિ વા  
 ગોણ-કરણાણિ વા મહિસ-કરણાણિ વા સુયર-કરણાણિ વા કણ્ણસોય-  
 પડિયાએ અભિસંધારેડ, અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૫॥

જે મિક્ષુ આસ-જુદ્ધાણિ વા હત્થિ-જુદ્ધાણિ વા ઉટ્ટ-જુદ્ધાણિ વા ગોણ-જુદ્ધાણિ વા  
 મહિસ-જુદ્ધાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,  
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૬॥

જે મિક્ષુ ઉજ્જૂહિયઢાણાણિ વા હય-જૂહિયઢાણાણિ વા ગય-જૂહિયઢાણાણિ વા  
 કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ, અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૧૪૭॥

જે મિક્ષુ અભિસેય-ઢાણાણિ વા અક્ખાઇય-ઢાણાણિ વા માણુમ્માણ-ઢાણાણિ વા  
 મહયા હય-નટ્ટ-ગીય-વાઇય-તંતી-તલ-તાલ-તુડિય-પડુપ્પવાઇય-  
 ઢાણાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,  
 અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૮॥

जे भिक्खु डिंवराणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा  
महासंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा कण्णसोयपडियाए  
अभिसंधारेइ, अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥२०॥१४६॥

जे भिक्खु चिरुवरुवेसु महुरसवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा  
मज्झिमाणि वा डहराणि वा अलंक्रियाणि वा सुअलंक्रियाणि वा  
गायंताणि वा वायंताणि वा नच्चंताणि वा हसंताणि वा रमंताणि वा  
मोहंताणि वा विउलं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा  
परिभायंताणि वा परिभुंजंताणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ,  
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥१५०॥

जे भिक्खु इहलोइएसु वा रूवेसु, परलोइएसु वा रूवेसु, दिट्ठेसु वा रूवेसु, अदिट्ठेसु वा  
रूवेसु, सुएसु वा रूवेसु, असुएसु वा रूवेसु, विन्नाएसु वा रूवेसु,  
अविन्नाएसु वा रूवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ सज्जंतं  
रज्जंतं गिज्झंतं अज्झोववज्जंतं वा सातिज्जति ॥२०॥१५१॥

॥ तं सेवमाणे आरज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाडयं ॥

एते चोदससुत्ता जहा वारसमे उद्देसगे भणिता तथा इहं पि सत्तरसमे उद्देसगे भाणियव्वा ।

वप्पादी जा विह लोइयादि सदादि जो तु अभिधारे ।

तं चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति वितियपदं ॥५६६॥

विसेसो तत्थ चवखुदंसणप्रतिज्ञया, इहं पुण कण्णसवणपडियाए गच्छति, वप्पादिएसु ठाणेसु जे  
सदा ते अभिधारेणं गच्छति ॥५६६॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए सत्तरसमो उदेसओ सम्मत्तो ॥



## अष्टादश उद्देशकः

भणिग्रो सत्तरसमो । इदाणि अट्टारसमो इमो भण्णति । तस्सिमो संवंधो —

सदे पुण धारेउं, गच्छति तं पुण जलेण य थलेण ।

जलपगतं अट्टारे तं च अणट्ठा णिवारेति ॥५६६७॥

संखादिसद्दे अभिघारंतो गच्छंतो जलेण वा गच्छति थलेन वा गच्छति । इह जलगमणेण  
अभिगारो, अधवा — जलेण गमणं अणट्ठाए ण गंतव्वं । एयं अट्टारसमे णिवारेति । एस संवंधो ॥५६६७॥

अणेण संवंधेणागयस्स इमं पढमसुत्तं —

जे भिक्खू अणट्ठाए णावं दुरुहइ दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

णो अट्ठाए, अणट्ठाए । दुरुहइ ति विलग्गइ ति आरुमति ति एगहुं । आणादिया दोसा चउलहुं ।

वारसमे उद्देसे, नावासंतारिमम्मि जे दोसा ।

ते चेव अणट्ठाए, अट्टारसमे निरवसेसा ॥५६६८॥

अणट्ठे दंसेति —

अंतो मणे किरिसिया, णावारूढेहिं वच्चइ कहं वा ।

अहवा णाणातिजढं, दुरुहणं होतऽणट्ठाए ॥५६६९॥

केरिति अन्नंतरं ति चक्खुदंसणपडियाए आरुमति, गमणकुतूहलेण वा दुरुहति, अहवा — नाणावि-  
जढं दुरुहंतस्स सेसं सव्वं अणट्ठा ॥५६६९॥

अववादेण आगाढे कारणे दुरुहेज्जा ।

थलपहेण संघट्ठादिजलेण वा जइ इमे दोसा हवेज्ज —

वितियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे च आगाढे ।

कज्जुवहिमगरवुज्झण, णावोदग तं पि जयणाए ॥६०००॥

एस बारसमुद्देसगे जहा, तहां भाणियव्वा । सुत्तं दिट्ठं, कारणेण विलगियव्वं ।

केरिसं पुण णावं विलग्गति ? केरिसं वा ण विलग्गति ?

अतो सुत्तं भण्णति -

जे भिक्खू नावं किणइ किणावेइ, कीयं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ  
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खू नावं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ, पामिच्चं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ  
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू नावं परियट्ठेइ परियट्ठावेइ, परियट्ठं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ  
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू नावं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहणं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ  
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे अण्णो कीणइ, अण्णो वा कीणावेइ, किणंतं अणुमोदेति वा ॥

पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चंतं अणुमोदेति ॥ पामिच्चं णाम उच्छिण्णं । जे णावं परियट्ठेति  
३, ॥ ॥ डहरियणावाए महल्लं णावं परिणावेति — परिवर्तयतीत्यर्थः । महल्लाए वा डहरं परावर्तयति ।

अण्णस्स वा वला अच्छेत्तु साहूण णेति ॥ अणिसट्ठा पडिहारिया गहिता अण्णो कए कज्जे तं  
साधूण समप्पेति साधूण वा णेति ॥

एतेहिं सुत्तपदेहिं सव्वे उग्गम-उप्पादण-एसणादोसा य सूचिता ।

तेण णावणिज्जुत्ति भण्णइ -

नावा उग्गमउप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य ।

इंगालभूमकारण, अट्ठविहा णावणिज्जुत्ती ॥६००१॥

उग्गमदोसेसु जे चउलहू ते जहा संभवं, णावं ण्डुच्च वा ।

उच्चत्तभत्तिए वा, दुविहा किणणा उ होति णावाए ।

हीणाहियणावाए, भंडगुरुए य पामिच्चे ॥६००२॥

साधुअट्ठाए उच्चताए नावं किणाति सर्वथा आत्मीकगेतीत्यर्थः । भत्तीए त्ति - भाडएणं गेण्हति ।  
अण्णो से णावा हीणप्पमाणा अहियप्पमाणा वा । अहवा - भंडगुरु त्ति - जं तत्थ भंडमारो विज्जति तं  
गुरुं साहू य णो खमिहितित्ति, ता एवमादिकज्जेहिं णावं पामिच्चेति । अहवा - सा णावां स्वयमेव गुरुत्वांन  
शीघ्रगामिनीत्यर्थः ॥६००२॥

दोण्ह वि उवट्ठियाए, जत्ताए हीण अहिय सिग्घट्ठा ।

णावापरिणामं पुण, परियट्ठियमाहु आयरिया ॥६००३॥

दो वणिजा जत्ताए णावाहि उवट्ठिता, तत्थ य एगस्स हीणा, एगस्स अहिया, तो परोप्परं णावा-  
परिणामं करेति - नावा नावं परावर्तयतीत्यर्थः । अहवा - मंदगामिनी शीघ्रगामिन्या परावर्तयति । एवं  
साध्वयमपि ॥६००३॥

एमेव सेसएसु वि, उप्पायण-एसणाए दोसेसुं ।

जं जं जुज्जति सुत्ते, विभासियव्वं दुच्चत्ताए ॥६००४॥

कीयगहादीणावामुत्तेसु जं जं जुज्जति तं तं पिण्डणिज्जुत्तिए भाणियव्वं-दुच्चत्ता वायालीसा, सोलस उग्गमदोसा, सोलस उप्पायणदोसा, दस एसणदोसा, एते मिलिया वाताला उग्गमउप्पायणेसणा तिणि दारा गता ।

संजोगादियाण चउण्हं इमा विभासा ।

संजोए रणमादी, जले य णावाए होति माणं तु ।

सुहगमणित्तिगालं, छट्ठीखोभादिसुं धूमो ॥६००५॥

साधुमट्टाए रणमादि किं चि कट्ठं संजोएति, आसणमज्झदूरगमणा जलप्पमाणं साधुप्पमाणाओ य हीणं जुत्तमधियप्पमाणेण वा होज्ज । सुहगमणि ति रागेणं इंगालसरित्थं चरणं करेति, णावागमणे छट्ठी हवइ, दुट्ठा वाह्या वा नावाभएणं सगीरसंखोहो भवति । कंपो, मुच्छा, सिरत्ती य । एवमादी दोसा चरणं धूमिधणेण समं करेति ॥६००५॥

कारणे विलगियव्वं, अकारणे चउल्लहू मुणेयव्वं ।

किं पुण कारण होज्जा, असिवादि थलासती दुरुहे ॥६००६॥

णाणाइकारणेण य दुरुहियव्वं, निवकारणे चउल्लहू, असिवाइकारणे वा गच्छंस्स ॥६००६॥

तं नावातारिमं चउव्विहं—

नावासंतारपहो, चउव्विहो वणिणतो उ जो पुव्विं ।

णिज्जुत्तीए सुविहिय, सो चेव इहं पि णायव्वो ॥६००७॥

निज्जुत्तीपेठं इमस्सेव जहा पेढया आउवकायाधिगारेण भाणिया तथा भाणियव्वा ॥६००७॥

तिरिओ याणुज्जाणे, समुदगामी य चेव नावाए ।

चउल्लहुगा अंतगुरु, जोयणमद्धद्ध जा सपदं ॥६००८॥

तत्र इव ॥६००८॥

वीयपय तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जुवहिमगर वुज्झण, नावोदग तं पि जयणाए ॥६००९॥

बारसमे पूर्ववत् ॥६००९॥

जे भिक्खू थलाओ नावं जले ओकसावेइ ओकसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

थलस्थं जले करेति ।

जे भिक्खू जलाओ नावं थले उक्कसावेइ उक्कसावेतं वा सातिज्जति ॥सू॥७॥

जलस्थं थले करेति ।

जे भिक्खू पुण्णं णावं उस्सिंचइ उस्सिंचंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सण्णं णावं उप्पिलावेइ उप्पिलावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

“सण्ण” ति - कद्दमे खुत्ता, उप्पिलावेइ ति - ततो उक्खणति ।

गाहेइ जलाओ थलं, जो व थलाओ जलं समोगाहे ।

सण्णं व उप्पिलावे, दोसा ते तं च वित्तिपदं ॥६०१०॥

दोसा जे वारसमे भणित्ता ते भवन्ति, वित्तिपदं च जं तत्थेव भणियं तं चेव भाणियव्वं ॥६०१०॥

जे भिक्खू उव्वद्वियं णावं उत्तिगं वा उदगं वा आसिंचमाणिं वा उव्वरुवरि वा

कज्जलावेमाणिं पेहाए हत्थेण वा पाएण वा असिपत्तेण वा

कुसपत्तेण वा मट्ठियाए वा चेलेण वा पडिपिहेइ

पडिपिहंतं वा साइज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू पडिणावियं कट्ठु णावाए दुरुहइ दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू उट्ठुगामिणिं वा नावं अहो गामिणिं वा नावं दुरुहइ

दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू जोयणवेलागामिणिं वा अट्ठजोयणवेलागामिणिं वा नावं दुरुहइ

दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जलनावा बलाए हीरति, दीहरज्जुए तडंसि रुक्खे वा कीलगे वा वट्ठं वा मृत्तित्ता वाहेज्ज,  
धुममाणिं वा वंवेज्ज, उत्तिगेण वा भरितं मरज्जमाणं वा जो उव्वसिंचति, सबलपाणियस्स वा भरेति रित्तं  
वा, विमिती गच्छउ ति पाणियस्स भरेति, । तस्स चउलहुं ।

उव्वद्वपवाहेती, वंधइ बुज्झइ य भरिय उस्सिंचे ।

रित्तं वा पूरति, ते दोसा तं च वित्तिपदं ॥६०११॥ कट्ठा

जे भिक्खू नावं आकसइ आकसावेइ आकसावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू नावं खेवेइ खेवावेइ खेवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू णावं रज्जुणा वा कट्ठेण वा कट्ठइ, कट्ठंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू णावं अलित्तएण वा पण्डिणएण वा वंसेण वा पलेण वा वाहेइ,

वाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू नावाओ उदगं भायणेण वा पडिगाहणेण वा मत्तेण वा

नावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचइ उस्सिंचंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

णावाए उत्तिगं जाव पिहितं सातिज्जति ।



एतेमि सुत्ताणं पदा सुत्तसिद्धा चेव तहावि केइपदे सुत्तफासिया फुसति -

नात्राए खिवण वाहण, उस्सिंचण पिहण साहणं वा वि ।

जे भिक्खु कुज्जा ही, सो पावति आणमादीणि ॥६०१२॥

अण्णावावट्ठितो जलट्ठितो तट्ठितो वा णावं पराहुत्तं खिवति, णावण्णातरणयणप्पगारेण, णयणं वाहणं भण्णति । उत्तिगादिणावाए चिट्ठमुदगं अण्णयरेण कच्चादिणा उस्सिंचणएण उस्सिंचइ । उत्तिगादिणा उदगं पविसमाणं हत्थादिणा पिहेति । एवमप्पणा करेति, अण्णस्स वा कहेति, आणादि चउलहुं च ॥६०१२॥

एतेसु अण्णेसु य सुत्तपदेसु इमं वित्तियपदं -

वित्तियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जोवहिमगरवुज्झण, णावोदग तं पि जयणाए ॥६०१३॥ पूर्ववत्

आकड्डणमाकमणं, उक्कसणं पेल्लणं जअो उदगं ।

उड्डमहतिरियकड्डण, रज्जू कड्डम्मि वा वेत्तुं ॥६०१४॥

अण्णो तेण आकड्डणमागमणं उदगं तेण प्रेरणं उक्कसणं, "उड्ड" ति णदीए समुद्दे वा वेला पाणियस्स प्रतिकूलं उड्डं, "अह" ति तस्सेव उदगस्स श्रोतोऽनुकूलं अहो भण्णति, नो प्रतिकूलं नो अनुकूलं वित्तिरिच्छं तिरियं भण्णति, एयं उड्डं अह तिरियं वा रज्जुए कड्डम्मि वा वेत्तुं कट्ठंति ॥६०१४॥

तणुयमलित्तं आसत्थपत्तसरिसो पिहो हवति रुंदो ।

वंसेण थाहि गम्मति, चलएण वलिज्जती णावा ॥६०१५॥

तणुतरं दीहं अलित्तागिती 'अलित्तं, आसत्थो पिप्पलो तस्स पत्तस्स सरिसो रुंदो पिहो भवति, वंसो वेणू तस्स अवट्ठंभेण पादेहिं पेयिता णावा गच्छति, जेग वामं दक्खिणं वा वलिज्जति सो चलगो रणं पि भण्णति ॥६०१५॥

मूले रुंद अकण्णा, अंते तणुगा हवंति णायव्वा ।

दव्वी तणुगी लहुगी, दोणी वाहिज्जती तीए ॥६०१६॥

पुव्वद्वं कंठं । लहुगी जा दोणी सा तीए दव्वीए वाहिज्जति, णावाउस्सिंचणं च दुगं (उसं चलगं) दव्वगादि वा भवति, उत्तिगं णाम छिद्रं तं हत्थमादीहिं पिहेति ॥६०१६॥

सरतिसिगा वा विप्पिय, होति उ उसुमंत्तिया य तम्मिस्सा ।

मोयतिमाइ दुमाणं, वातो छल्ली कुविंदो उ ॥६०१७॥

अहवा - सरस्स छल्ली ईसिगि ति तस्सेव उवरिं तस्स छल्ली सो य मुंजो दव्वो वा, एते वि विप्पित ति कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जंति एस उसुमट्टिया, कुसुमट्टिया वा, मोदती गुलवंजणी, आदिसद्दाओ वड-पिप्पल-आसत्थयमादियाण वक्को मट्टियाए सह कुट्टिज्जंति सो कुट्टिविंदो भण्णति, अहवा - चेलेण सह मट्टिया कुट्टिया चेलमट्टिया भण्णति ।

एवमाईएहिं तं उत्तिगं पिहेति जो, तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ॥६०१७॥

जे भिक्खु नावं उत्तिगेण उदगं आसवमाणं उवरुवरिं कज्जलमाणं पलोय  
हत्थेण वा पाएण वा आसत्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मड्डियाए वा  
चेलकण्णेण वा पडिपेहेइ पडिपेहेतं वा सातिज्जति ॥६०॥१६॥

उत्तिगेण णावाए उदगं आसवति पेहे त्ति प्रेक्ष्य उवरुवरिं कज्जलमाणं त्ति भरिज्जमाणं पेक्खित्ता  
परस्स दाएन्ति आणादिया चउलहुं च ।

उत्तिगो पुण छिड्डं, तेणासव उवरिण कज्जलणं ।

वितियपदेण दुरुद्धो, णावाए भंडभूतो वा ॥६०॥१८॥

पुव्वद्धं गतार्यं । असिवादिणादिकारणं हि दुरुद्धो णावं जहा भंडं निव्वावारं तद्वा णिवावारमूत्रेण  
नवियव्वं । सव्वसुत्तेनु जाणि [वा] पडिसिद्धाणि ताणि कारणाद्धो सव्वाणि सयं करेज्ज वा कारवेज्ज वा,  
ते तस्य साधुगो णिवावारं दट्ठुं कोइ पडिणीओ जले पक्खिवेज्ज ॥६०॥१८॥

अहवा -

नावादोसे सव्वे, तारेयव्वा गुणेहि वा अधिओ ।

पवयणपभावओ वा, एगे पुण वेन्ति णिग्गथी ॥६०॥१९॥

एवं वच्चंतस्स णावाए संभवो हवेव जहा तेसि मार्कदियदाराणं णावाए दोसो त्ति, मिण्णा सा  
णावा ।

इयदुद्धराति गाढे, आवइवत्तो सवालवुद्धो उ ।

सहसा णिवुद्धमाणो, उद्धरियव्वो समत्थेण ॥

एस जिणाणं आणा, एमुवदेसो उ गणवरारणं च ।

एस पइण्णा तस्स वि, जं उद्धरते दुविहगच्छं ॥

जो अतिसेसवित्सेससंपण्णो तेण सव्वो नित्यारेयव्वो, अतिसेसअभावे सारीखलसमत्थेण वा ते सव्वे  
गित्यारेयव्वो । अह सव्वे ण सक्केति ताहे एक्केक्कं हावत्तेण, जो पवयणपभावगो सो पुव्वं तारेयव्वो ।

अण्णे पुण भणंति जहा - णिग्गथी पुव्वं तारेयव्वो ॥६०॥१९॥

इमा पुरिसेसु केवलेसु जयणा -

आयरिए अभिसेगे, भिक्खु खुड्डे तहेव थेरे य ।

गहणं तेसि इणमो, संजोगकर्म तु वोच्छामि ॥६०॥२०॥

जइ समत्थो एते चेव सव्वे वि तारेत्तं तो सव्वे तारेति ।

अह ण सक्केति ताहे थेरवजा चटरो ।

अह ण तरति ताहे थेरखुट्ठगवजा तिणि ।

अह ण तरति ताहे आयरिय अभिसेगा दोणि ।

अह ण तरति ताहे आयरियं ॥६०॥२०॥

दो आयरिया होज्ज, दो वि नित्यारेत्तु ।

अहं न तरङ्ग ताहे इमं भण्णति—

तरुणे निष्फण परिवारे, सलद्धिए जे य होति अब्भासे ।

अभिसेगम्मी चउरो, सेसाणं पंच चेव गमा ॥६०२१॥

आयरिओ एगो तरुणो, एगो थेरो । जो तरुणो सो नित्यारेयव्वो ।

दोवि तरुण थेरा वा एक्को सुत्तत्थे निष्फणो, एक्को अनिष्फणो । जो निष्फणो सो नित्यारिज्जति ।

दोवि निष्फणो अनिष्फणो वा । एक्को सपरिवारो, एक्को अपरिवारो । जो सपरिवारो सो नित्यारिज्जति ।

दोवि सपरिवारो तो उक्कोमलद्धीतो जो भत्तवत्थसिस्सादिएहि सहितो सो नित्यारिज्जति । दोवि सलद्धिया वा तत्थ जो अब्भासतरो सो नित्यारिज्जति, मा दूरत्थं । समीवं जं तं जाव जाहिति ताव सो हडो । इयरो वि जाव पव्वेहि ताव हडो । दोण्ह वि चुवको तम्हा जो आसणो सो तारेयव्वो ।

अभिसेगे पुण चउरो गमा भवन्ति — तरुणो सपरिवारो सलद्धी आसणो य, जम्हा सो गियमा निष्फणो तम्हा तस्स निष्फणानिष्फणं इति न कर्तव्यं ।

सेसाणि भिक्खूयेरखुहुणं जहा आयरियस्स तरुणादिया पंच गमा तहा कायव्वा ।

अण्णे पंच गमा एवं करेति — तरुणे निष्फण परिवारे सलद्धिए अब्भासे ।

अहंवा पंच गमा — तरुणे निष्फण परिवारे सलद्धीए अब्भासे थलवासी । जो थलविसयवासी तं नित्यारेति; सो अतारगो । जलविसयवासी पुण तारगो भवति, ण सहसा जलस्स वीहेति ॥६०२१॥

इदाणि निग्गंथीण पत्तेयं भण्णति —

पवत्तिणिं अभिसेगपत्त थेरि तह भिक्खुणी य खुड्डी य ।

अभिसेगाए चउरो, जलथलवासीसु संजोगा ॥६०२२॥

जहा साहूण भणियं तहा साहुणीण वि भाणियव्वं ॥६०२२॥ एस पत्तेयाणं विधी ।

इमा मीसाणं —

सव्वत्थ वि आयरिओ, आयरियाओ पवत्तिणी होति ।

तो अभिसेगपत्तो, सेसेसू इत्थिया पढमं ॥६०२३॥

दोसु वि वग्गेसु जुगवं आवइपत्तेसु इमा जयणा — जति समत्थो सव्वाणि वि तारेजं तो सव्वेतारेति । अहं असमत्थो ताहे एगदुगातिपरिहाणीए, जाहे दोण्ह वि असमत्थो ताहे सव्वे अच्चंतु आयरियं पढमं नित्यारेइ, ततो पवत्तिणीं, ततो अभिसेगं, सेसेसु इत्थिया पढमं, ति भिक्खुणिं पढमं ततो भिक्खुं, खुड्ढि ततो खुड्ढं, थेरि ततो थेरं । एत्थप्पवह्वचिता कायव्वा — सुणिपुणो होऊणं लंघेऊणुत्तविहि बहुगुणवेट्टं (वड्डं) करेजा ।

भणियं च —

“बहुवित्थरमुस्सगं, बहुतरभववायवित्थरं णाउं ।

जह जह संजमवुड्डी, तह जयसू णिज्जरा जह य” ॥

आययिवज्जाणं को परिवारो ? भण्णति - मायां पिया पुत्तो माया भगिणी गुण्हा धूया, अण्णे य संवंधिणो मित्ता तदुवसमणिवसन्ता य ।

जे भिक्खू नावाओ नावागयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू नावाओ जलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू नावाओ पंकगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू नावाओ थलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

णावागयस्सेव दायगस्स हत्यातो पडिग्गाहेति तस्स चउलहुं ।

अण्णोसु तिसु भग्गो भिक्खू गावागतो चैव, दायगो जल-पंक-थलगतो । एतेसु चउरो भंगा ।

अण्णोसु चउभग्गो भिक्खू जलगतो, दायगो गावा-जल-पंक-थलगतो ।

अण्णोसु चउसु भिक्खू पंकगयो, दायगो गावा-जल-पंक-थलगयो ।

अण्णोसु चउसु भिक्खू थलगतो, दायगो गावा-जल-पंक-थलगतो ।

एते सव्वे सोलससु वि पत्तेयं चउलहुं । गावागते दायगे पडिसेहो, जेणं सो सचित्तआउकाय-परंपरपत्तिहो जलपंकथला सचित्ता मौसा वा, तो पडिसेहो ।

तत्थ कभं दरिसेइ -

नावजले पंकथले, संजोगा एत्थ होति णायव्वा ।

तत्थ गएणं एक्को गमणागमणेण वित्तिओ उ ॥६०२४॥

एतेसु गाव-जल-पंक-थलपदेसु ठितो भिक्खू दायगस्स सट्ठाण-परट्ठाणसंजोगेण ठियस्स हत्याओ गेण्हतस्स दुगसंजोगामिलावं अमुंच्तेण सोलस भंगा कायव्वा पूर्ववत् ।

“तत्थ गएणं एक्को” ति गावाह्दो गावागयस्स हत्यातो गेण्हति एस पट्टमभंगो, गावागतो जलगयस्स हत्यदायगस्स अच्छमाणस्स जलठियस्स हत्यातो गेण्हति, एवं पंकथलेसु वि गमणागमणेण ततिय-चउत्यं भंगा, एवं नैसभंगा वि वारस उवउज भाणियव्वा ॥६०२४॥

एत्तो एगतरंणं, संजोगेणं तु जो उ पडिगाहे ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विरावणं पावे ॥६०२५॥

कंथ्या । सोलससो भंगो थलगयो, थलगतस्स ममुहस्स अंतरदीवं संभवति, सा पुट्ठी सचित्ता मौसा वा समणिद्धा वा तेण पडिसिज्जति ॥६०२५॥

इमं वितियपदं -

असिचे ओमोयरिए, रायदुडे भए व गेलणो ।

अद्वाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥६०२६॥

जयणा पणगपरिहाणी, भीसपरंपरठितादि वा जयणा भाणिञ्चा ।

जे भिक्खू वत्थं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जसि ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खू वत्थं पामिच्चेति, पामिच्चावेति पामिच्चमाहट्टु दिज्जमाणं  
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू वत्थं परियट्ठेइ, परियट्ठावेइ, परियट्ठियमाहट्टु दिज्जमाणं  
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खू वत्थं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडमाहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू अतिरेग-वत्थं गणिं उद्दिसिय गणिं समुद्दिसिय  
तं गणिं अणापुच्छिय अणामंतिय अणमणस्स वियरइ,  
वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू अइरेगं वत्थं खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा  
अहत्थच्छिण्णस्स अपायच्छिण्णस्स अनासच्छिण्णस्स अकण्णच्छिण्णस्स  
अणोड्डच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ, देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खू अइरेगं वत्थं, खुड्डगस्स वा खुड्डियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा  
हत्थच्छिण्णस्स पायच्छिण्णस्स नासच्छिण्णस्स कण्णच्छिण्णस्स  
ओड्डच्छिण्णस्स असक्कस्स न देइ, न देंतं वा सातिज्जति ॥सू॥३०॥

जे भिक्खू वत्थं अणलं अथिरं अधुवं आधारणिज्जं धरेइ,  
धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू वत्थं अलं धिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ,  
न धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खू वण्णमंतं वत्थं विवण्णं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खू विवण्णं वत्थं वण्णमंतं करेइ, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

જે મિક્ષુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ તેલ્લેણ વા ઘણ વા  
ળવળીણ વા વસાણ વા મક્કલેજ્જ વા મિલ્લિંગેજ્જ વા  
મક્કલેતં વા મિલ્લિંગેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૫॥

જે મિક્ષુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ લોદ્દેણ વા કક્કેણ વા  
ચુળ્લેણ વા વળ્લેણ વા ઉલ્લોલેજ્જ વા ઉવ્વલેજ્જ વા  
ઉલ્લોલેતં વા ઉવ્વલેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૬॥

જે મિક્ષુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ સીઝોદગવિયડેણ વા  
ઉસિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્છોલેજ્જ વા પથોણ્ણ વા,  
ઉચ્છોલેતં વા પથોણ્ણં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૭॥

જે મિક્ષુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ વહુદેવસિણ તેલ્લેણ વા  
ઘણ વા ળવળીણ વા વસાણ વા મક્કલેજ્જ વા મિલ્લિંગેજ્જ વા  
મક્કલેતં વા મિલ્લિંગેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૮॥

જે મિક્ષુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ વહુદેવસિણ લોદ્દેણ વા  
કક્કેણ વા ચુળ્લેણ વા વળ્લેણ વા ઉલ્લોલેજ્જ વા ઉવ્વલેજ્જ વા  
ઉલ્લોલેતં વા ઉવ્વલેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૯॥

જે મિક્ષુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ વહુદેવસિણ સીઝોદગવિય-  
ડેણ વા ઉસિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્છોલેજ્જ વા પથોણ્ણ વા  
ઉચ્છોલેતં વા પથોણ્ણં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૦॥

જે મિક્ષુ “દુઘ્મિગંધે મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ તેલ્લેણ વા ઘણ વા  
નવળીણ વા વસાણ વા મક્કલેજ્જ વા મિલ્લિંગેજ્જ વા  
મક્કલેતં વા મિલ્લિંગેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૧॥

જે મિક્ષુ “દુઘ્મિગંધે મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ લોદ્દેણ વા કક્કેણ વા  
ચુળ્લેણ વા વળ્લેણ વા ઉલ્લોલેજ્જ વા ઉવ્વલેજ્જ વા  
ઉલ્લોલેતં વા ઉવ્વલેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૨॥

જે મિક્ષુ “દુઘ્મિગંધે મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ સીઝોદગવિયડેણ વા  
ઉસિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્છોલેજ્જ વા પથોણ્ણ વા  
ઉચ્છોલેતં વા પથોણ્ણં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૩॥

जे भिक्खू “दुब्भिगंधे मे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बहुदेवसिएण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू “दुब्भिगंधे मे वत्थं लद्धे” त्ति कट्ठु बहुदेवसिएण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू “दुब्भिगंधे मे वत्थं लद्धे” त्ति कट्ठु बहुदेवसिएण सीओदग-  
वियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

❀

❀

❀

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु  
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बहुदेवसिएण  
तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खेतं वा भिलिंगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बहुदेवसिएण  
लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोलेंतं वा उव्वलेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खू “नो नवए मे सुब्भिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बहुदेवसिएण  
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलेंतं वा पधोएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जे भिक्खु अणंतरहियाए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जे भिक्खु ससरक्खाए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जे भिक्खु ससरक्खाए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जे भिक्खु मड्डियाकडाए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

जे भिक्खु चित्तमंताए पुढवीए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जे भिक्खु चित्तमंताए सिलाए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जे भिक्खु चित्तमंताए लेलूए दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले  
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

जे भिक्खु कोलावासंसि वा दारुए जीवपट्टिए सअंडे सपाणे सवीए सहुरिए  
सअोस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि  
दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा  
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे भिक्खु थूणंसि वा गिहेलुर्यंसि वा उसुयालंसि वा कामवलंसि वा दुब्बद्धे  
दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा  
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥



- जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिसि वा सिलंसि वा लेलुंसि वा अंतलिक्ख-  
जायंसि वा दुब्बद्धे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा  
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥
- जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मंचंसि वा मंडवंसि वा मालंसि वा  
पासायंसि वा दुब्बंधे दुन्निखित्ते अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा  
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥
- जे भिक्खू वत्थातो पुढविकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्ठु  
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥
- जे भिक्खू वत्थाओ आउक्कायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्ठु  
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥
- जे भिक्खू वत्थातो तेउकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्ठु  
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥
- जे भिक्खू वत्थातो कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुष्पाणि वा  
फलाणि वा नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्ठु देज्जमाणं  
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥
- जे भिक्खू वत्थातो ओसहि-वीयाणि नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्ठु  
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥
- जे भिक्खू वत्थातो तसपाणजाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्ठु  
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥
- जे भिक्खू वत्थं कोरेइ, कोरावेइ, कोरियं आहट्ठु  
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥
- जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामंतरंसि वा  
गामपहंतरंसि वा वत्थं ओभासिय ओभासिय जायइ  
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥
- जे भिक्खू णायगं वा अणायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा परिसामज्झाओ  
उट्ठवेत्ता वत्थं ओभासिय ओभासिय जायइ  
जायंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥
- जे भिक्खू वत्थनीसाए उडुबद्धं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू वत्थनीसाए वासावासं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ॥

चोद्दसमे उद्देसे, पातम्मि उ जो गमो समक्खआओ ।

सो चेव निरवसेसो, वत्थम्मि वि होति अट्टारे ॥६०२७॥

मुत्ताणि <sup>१</sup>पणुवीसं उच्चारेयव्वाणि जाव समत्तो उद्देसगो । एतेसि अत्यो चोद्दसमे, जहा चोद्दसमे पादं भणितं तहा अट्टारसमे वत्थं भाणियव्वं ।

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए अट्टारसमो उद्देसओ समत्तो ॥

१ चतुर्दशमोद्देशकानुसारेण तु पञ्चचत्वारिंशत्सूत्राणि भवन्ति ।

## एकोनविंशतितम उद्देशकः

भणिओ अट्टारसमो । इदाणि एक्कोणवीसइमो भण्णति । तस्सिमो संवंधो -

वत्थत्था वसमाणो, जयणाजुत्तो वि होति तु पमत्तो ।

अन्नो वि जो पमाओ, पडिसिद्धो एस एकूणे ॥६०२८॥

जो उट्टुवद्धे वासावासे वा वत्थट्ठा वसति, सो जति जयणाजुत्तो तहावि सो पमत्तो लब्धति । एवं अट्टारसमस्स अंतमुत्ते पमातो दिट्ठो । इहावि एगूणवीसईमस्स आदिमुत्ते पमाओ चेव पडिसिज्झति । एस अट्टारसमाओ एगूणवीसइमस्स संवंधो ॥६०२८॥

अहवा चिरं वसंतो, संथवणेहेहि किणति तं वत्थं ।

अक्कीतं पि ण कप्पति, वियडं किमु कीयसंवंधो ॥६०२९॥

चिरं ति वारिसितो चउरो मासे, सेसं कंठं ।

इमं पढममुत्तं -

जे भिक्खु वियडं किणह, किणावेइ, कीयं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

कीय किणाविय अणुमोदितं च वियडं जमाहियं सुत्ते ।

एक्केक्कं तं दुविहं, दब्बे भावे य णायव्वं ॥६०३०॥

अप्पणा किणति, अण्णेण वा किणावेइ, साहुअट्ठा वा कीयं परिभोगओ अणुजाणति, अण्णं वा अणुमोएइ, आणादिया दोसा चउलहुं च । सो कीओ दुविधो - अप्पणा परेण च । एक्केक्को पुणो दुविहो - दब्बे भावे य । शेपं पूर्ववत् । परभावकीए मासलहुं । जं अप्पणा किणति, एस उप्पायणा । जं परेण किणावेइ, एस उग्गमो ॥६०३०॥

एएसामण्णतरं, वियडं कीतं तु जो पडिग्गाहे ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराधणं पावे ॥६०३१॥

कंठा । वियडगहणे परिभोगो वा अक्कप्पगहणं अक्कप्पडिसेवा य संजमविराहणा य ।

जतो भण्णति -

इहरह वि ता न कप्पह, किमु वियडं कीतमादि अविमुद्धं ।

असमितिऽगुत्ति गेही, उट्ठाह महव्वया आता ॥६०३२॥

इहर्हा अकीतं । किं पुण कीयं ? , सगमदोसजुत्तं सुदुत्तरं ण कप्पइ । वियडत्ते पंचसु वि समितीसु असमिती भवति, गुत्तीसु वि अयुत्तो, तम्मि लद्धसायस्स अपरिच्चागो गेहो, जणेण गाते उट्ठाहो, पराधीनो वा महव्वणं भजेज्ज ॥६०३२॥

कहं ? उच्यते -

वियडत्तो छक्काए, विराहए भासती तु सावज्जं ।

अगडागणिउदएमु अ, पडणं वा तेसु वा धेप्पे ॥६०३३॥

पराहीणत्तणप्रो छक्काए विराहेज्ज, मोसं वा भासेज्ज, अदत्तं वा गेहेज्ज, मेहुणं वा सेवेज्ज, हिरणादिपरिगहं वा करेज्ज । आयविराहणा इमा - अगडे ति कूवे पडेज्ज, पलिते वा डज्जिज्ज, उदमेग वा पेरेज्ज, तेगे वा कसाएण वा णिककासति तो वा तेहि धेप्पइ ॥६०३३॥

अहवा - कारणे पत्ते गेहेज्जा -

वितियपदं गेलण्णे, विज्जुवदेसे तहेव सिक्खाए ।

एतेहि कारणेहि, जयणाए कप्पती धेत्तुं ॥६०३४॥

वेज्जोवएसेण गिलाणट्ठा धेप्पेज्ज, कस्सति कोति वाही तेगेव उवसमति ति ण दोसो । गिलाणट्ठा वा वेज्जो आणितो, तस्सट्ठा वा धिप्पेज्ज, पकप्पं वा सिक्खंतो गहणं करेज्ज ॥६०३५॥

कहं ? उच्यते -

संभोइयमणसंभोइयाण असतीति लिंगमादीणि ।

पकप्पं अहिजमाणो, सुद्धासति कीयमादीणि ॥६०३५॥

पकप्पो निक्खियज्जो सुत्ततो अत्यतो वि सगुहस्स पासे, असति सगुहस्स ताहे सगणे, सगणस्स वि असति ताहे संभोतितान् सगासे सिक्खति । असति संभोतितान् ताहे अणसंभोतियाण सगासे, तेसि पि असतीए लिंगत्यादियाण पासे पकप्पं अविज्जति । तस्स य लिंगस्स तं वियडवसणं हवेज्जा, सो अप्पणा चेव उप्पाएड । अह सो उप्पाएडं मुत्तये ण तरति दासं ताहे स सावू उप्पाएडं सुद्धं, जति सुद्धं ण लवमइ ताहे कीयमादि गेहेज्जा ॥६०३५॥

जे भिक्खु वियडं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ पामिच्चं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खु वियडं परियट्ठेति परियट्ठावेइ परियट्ठियं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेति,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खु वियडं अच्छेज्जं अणिसिद्धं अभिहडं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

एतेसि सक्खं पूर्ववत् जहा पिडणिज्जुत्तीए, एतेसु पच्छित्तं चउलह, जं च दुग्गुच्छियपडिग्गाहणे पच्छित्तं भवति, इह ।

एमेव तिविहकरणं, पामिच्चे तह य परियट्ठे ।

अच्छिज्जे अणिसिट्ठे, तिविहं करणं णवरि णत्थि ॥६०३६॥

तिविहं करणं कृतं कारितं अनुमोदितं च, अच्छिज्जअणिसिट्ठेसु तिविहं करणं भवति, सेसं सच्चं वितियपदं च पूर्ववत् ॥६०३६॥

जे भिक्खु गिलाणस्सऽट्ठाए परं तिण्हं वियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ,  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

दत्तीए पमाणं पसती, तिण्हं पसतीणं परेण चउत्था पसती गिलाणकज्जे वि ण घेत्तव्वो, जो गेण्हति तस्म चउलहं ।

जे भिक्खु गिलाणस्सा, परेण तिण्हं तु वियडदत्तीणं ।

गिण्हेज्ज आदिएज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥६०३७॥

तिण्हं दत्तीणं परतो गहणे वि चउलहं । “आदिएज्ज” त्ति पिवंतस्स वि चउलहं ॥६०३७॥

तिण्हं दत्तीणं परतो गहणे आदियणे वा इमे दोसा -

अप्पच्चओ य गरहा, मददोसा गेहिवड्डुणं खिसा ।

तिण्ह परं गेण्हंते, परेण तिण्हाइयंते य ॥६०३८॥

अप्पच्चओ त्ति जहा एस पव्वइओ होउं वियडं गिण्हति आदियति वा तथा एस अण्णं पि करेति मेट्ठणादियं । “गरह” त्ति एस णूणं णियकुलजातितो त्ति । मददोसा-पीते पलवति वगइ वा । पुणो पुणो गहणे वा वियडे गेही वड्ढति । खिसा—धिरत्थु ते एरिसपव्वज्जाए त्ति ॥६०३८॥

दिट्ठं कारणगहणं, तस्स पमाणं तु तिणिण दत्तीओ ।

पातुं व असागरिए, सेहादि असंलवंतो य ॥६०३९॥

तिणिण दत्तीओ तिणिण पसतीओ सकारणिओ ताओ पाउं असागरिओ अच्छति, णिहुतो त्ति णग्गायते पलवति णच्चइ वा । अभावियसेह अपरिणामगेहि सट्ठि उल्लावणं न करेति गिहीहि वा ॥६०३९॥

वियडत्तस्स उ वाहिं, णिग्गंतु ण देंति अह वला णीति ।

जयणाए पत्तवासे, गायणे व लवंते आसमवि ॥६०४०॥

जइ जुत्तमेत्तपीएण अतिरित्तेण वा मत्तो वियडत्तगो जति मत्तो पराधीणओ वाहिं णिग्गच्छेज्ज तो ण देंति से णिग्गंतुं, वला णितो “जयण” त्ति जहा ण पीडिज्जति तथा “पत्तवासे” त्ति-वज्जइ । अह पत्तवासितो मोवकलो वा गाएज्जा पलवेज्ज वा तो “आसमवि” त्ति आसं मुहं तं पि सिविज्जति ॥६०४०॥

अववादतो तिण्हं दत्तीणं अतिरित्तमवि गिण्हेज्ज -

वितियपदं गेलण्णे, विज्जुवदेसे तहेव सिक्खाते ।

गहणं अतिरित्तस्सा, वेज्जुवदेसे य आइयणं ॥६०४१॥

गेलण्णट्ठा वेज्जुवदेसेण सिक्खाए वा एतेहि कारणेहि गहणं अतिरित्तस्स आतियणं पि, अतिरित्तस्स गेलण्णसिक्खाहिं विसेसतो वेज्जुवदेसेण ।

तं पुण इमेसु ठाणेषु कमेण गेहेज्जा -

“गहणं पुराणसावग, सम्म अहाभद दाणसङ्के य ।

भावियकुलेसु ततो, जयणाए तत्तु परलिंगे” ॥१॥

जे भिक्खु वियडं गहाय गामाणुगामं दूइज्जइ, दूइज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

वियडेण हत्थगतेण जो गामाणुगामं दूइज्जइ गच्छइ, तस्स आणादी चउलहुं च ।

कारणओ सग्गामे, सइलामे गंतु जो परग्गामे ।

आणिज्जा ही वियडं, णिज्जा वा आणमादीणि ॥६०४२॥

कारणओ वियडं घेतत्वं, तं पि सग्गामे “सति” त्ति लब्धमाणे जो परगामतो आणति, सग्गामाओ वा परगामं जेज्जा, तस्स आणादिया दोसा ॥६०४२॥

इमे य -

परिगलण पवडणे वा, अणुपंथियगंधमादि उड्डाहो ।

आहारेतरतेणा, किं लद्ध कुतूहले चेव ॥६०४३॥

परिगलंते पुढवातिछक्काया विराहिज्जंति, पडियस्स वा भायणभग्गे य छक्कायविराहणा, अहवा - परिगलंते पडियस्स वा छड्डिते अणुपंथिओ वा पडिपंथिओ वा गंधमाघाएज्ज, सो य उड्डाहं करेज्ज, अंतरा वा आहारतेणा भायणं उग्घाडेज्जति, दट्ठुं आदिएज्ज उड्डाहं वा करेज्ज । इयरे त्ति उवकरण-तेणा ते वा कुतूलहेण भायणं उग्घाडेज्जा, किं लद्धं ति ? ते वा उड्डाहं करेज्ज ॥६०४३॥

जम्हा एवमादिया दोसा -

तम्हा खलु सग्गामे, घेत्तणं बंधणं घणं कुज्जा ।

एत्तो चिय उवउत्तो, गिहीण दूरेण संवरितो ॥६०४४॥

खलुसहो सग्गामावधारणे, स्वग्राम एव गृहीतव्यं, सग्गामासति परगामातो आणियव्वं, कारणे वा परगामं णेयव्वं इमेण विहिणा - संकुडमुहभायणे ओमंथियं सरावं घणचीरवंघणं कुज्जा, पंथं उवउत्तो गच्छति, जहा णो परिगलति पक्खलति वा । गिहीण य एयंतजंताण हेडोवाएण दूरतो गच्छति, तं पि भायणं वास-कप्पादिणा सुसंवृतं करेति ॥६०४४॥

अववादकारणेण परगामे जेति, आणवेति वा -

चितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवण्णसे तहेव सिक्खाए ।

एतेहि कारणेहि, जयण इमा तत्थ कायव्वा ॥६०४५॥ पूर्ववत्

एवमादिकारणेहि गेहंतस्स इमा जयणा -

पुराणेषु सावतेसु, व सण्णि-अहाभद-दाणसङ्केसु ।

मज्झत्यकुलीणेषु, किरियावादीसु गहणं तु ॥६०४६॥

पुत्रं पुराणस्य हत्यातो घेषड, तस्स असति गहिताणुच्चतसावगस्स, ततो अविरयम्मम्हिट्टिस्स,  
ततो अहभट्ठगस्स, ततो दाणसद्वस्स । मज्झत्या जं णो अम्हं सासणं पडिवण्णा णो अणोसि, ते य जातिकुलीणा ।  
एत्थ कुलीणो सभावट्ठितो दिट्ठे य सहसेत्थयं । क्रियां वदति क्रियावादीति वेज्जेत्थयं ॥६०४६॥

खेत्ततो पुण इमेसु गहणं -

गिहि-कुल-पाणागारे, गहणं पुण तस्स दोहि ठाणेहिं ।

सागारियमादीहि उ, आगाढे अन्नलिंगेण ॥६०४७॥

दोहि ठाणेहिं गहणं, गिहेति पुराणादियाण गिहेसु, "पाणागार" ति-कल्लालावणे, गिहासइ पच्छा  
कल्लालावणे । "गिहे" ति पुत्रं सेज्जातरगिहातो आणिज्जति जे दूराणयणे दोसा ते परिहरिया भवन्ति,  
सेज्जातरगिहासति पच्छा णिवेसणतो वाटण-साहि-सगाम-परगामातो य । जत्थ सल्लिगेण उट्ठाहो तत्थ परल्लिगेण  
गहणं करेति ॥६०४७॥

अदिट्ठमस्सुतेसु, परल्लिगेणेतरं सल्लिगेणं ।

आसज्ज वा विदेसं, अदिट्ठपुच्चे वि ल्लिगेणं ॥६०४८॥

जत्थ णगरे गामे वा सो साधू ण केणइ दिट्ठो वण्णागारेइ वा सुतो तत्थ परल्लिगेण ठितो गेण्हइ ।  
"इतरं" ति - जत्थ पुण सो परल्लिगाट्ठितो वि पच्चाभिणज्जति तत्थ सल्लिगेण वा गेण्हति । अहवा -  
"आसज्ज वा वि देसं" - ति जत्थ देसे ण णज्जति किं एतेसि वियडं कप्पं प्रकप्पं ति, ण वा लोगो गरहति,  
तत्थ सल्लिगेण गेण्हति । "अदिट्ठपुच्चे" ति-जत्थ गाम-णगरादिसु ण दिट्ठपुच्चे तत्थ वा सल्लिगेण गेण्हति ॥६०४८॥

जे भिक्खू वियडं गालेइ, गालावेइ, गालियं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेति  
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

परिपूणगादीहि गालेति तस्स चउलहुं आणादीया य दोसा ।

जे भिक्खू वियडं तू, गालिज्जा तिविहकरणजोगेणं ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधणं पावे ॥६०४९॥

अप्पणो गालेइ, अण्णेण वा गालावेइ, गालेतमणुमोदेति एवं तिविहकरणं, सेसं कंठं ।

इमे दोसा -

इहरह वि ताव गंधो, किमु गालेतम्मि जं उज्झिमिया ।

खोलेसु पक्कसम्मिय, -पाणादिविराधणा चेव ॥६०५०॥

"इहरह" ति-अगालिज्जंतस्स वि गंधो, गालिज्जंते पुण सुट्ठुतरं गंधो खोलपक्कसेसु उज्झिज्झ-  
माणेसु उज्झिमिता भवति, मज्झस्स हेट्ठा धोयगिमादिकिट्ठिसंखेलो सुराए किण्णिमादिकिट्ठिसंपक्कसं अण्णं च  
खोलपक्कसेसु छट्ठिज्जमाणेसु मक्खिगपिपीलिगा विराधणा, मधुविदोवक्खाणओ य प्राणिविराहणा ॥६०५०॥

वितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएसे तहेव सिक्खाए ।

एतेहिं कारणेहिं, जयण इमा तत्थ कातव्वा ॥६०५१॥

कारणे इमाए जयणाए गेण्हेज्जा -

पुच्चपरिगालियस्स उ, गवेसणा पढमताए कायव्वा ।

पुच्चपरिगालियस्स व, असतीते अप्पणा गाले ॥६०५२॥

रिद्धु पुच्चपरित्ति कंत्वा ॥६०५२॥

सव्वे वियडसत्ता जहा णिद्दोस-सदोसा भवन्ति तथा आह -

कारणगहणे जयणा, दत्ती दूतिज्जगालणं चेव ।

कीतादी पुण दप्पे, कज्जे वा जोगमकरेत्ता ॥६०५३॥

दत्तीसुत्तं दूट्ठगानुत्तं गालणानुत्तं च एते सुत्ता कारगिया, एतेसु कारणेसु वियडं धेण्ड, गहणे णिद्दोसो जयणं करेत्तोऽजयणं करेतस्स दोसा भवन्ति । कीयगड-पामिच्च-परियट्ठि-अच्छेज्जादिया पुण सुत्ता दप्पतो पडिसिद्धा, दप्पतो गेण्हंनो सदोसो, कज्जे अववादतो गेण्हंतो जति तिण्णि वारा सुद्धस्स जोगं ण पउजति पणगपरिहाणी वा न पउजति तो सदोसो ॥६०५३॥

जे भिक्खु चउहिं संभाहिं सभायं करेइ करेत्तं वा साइज्जइ, तं जहा

पुच्चाए संभाए, पच्छिमाए संज्भाए, अवरण्हे, अद्धरत्ते ॥सू०॥८॥

तासु जो सज्भायं करेइ तस्स चउलहुं आणादिया य दोसा ।

पुच्चावरसंभाए, मज्झण्हे तह य अद्धरत्तम्मि ।

चतुसंभासज्भायं, जो कुणती आणमादीणि ॥६०५४॥

संभासु अपाढे इमं कारणं -

लोए वि होति गरहा, संभासु तु गुज्झगा पवियरन्ति ।

आवासग उवओगो, आसासो चेव खिन्नाणं ॥६०५५॥

लोइयवेइसामादियाणा य संभासु पाढो गरहियो, अन्नं संभासु गुज्झग ति देवा ते विचरन्ति ते पमत्तं छलेज्ज, संभाए सज्भायविणियट्ठचित्तो आवासगो उवउत्तो भवति, सज्भायत्तिणस्स य तं वेलं आसासो भवति, णाणायारो य विराहितो, णाणविराहणं करेत्तेण संजमो विराहितो, जम्हा एत्तिया दोसा उम्हा णो करेज्जा ॥६०५५॥

कारणे वा करेज्ज -

वित्तियाऽज्जाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती कातुं ॥६०५६॥

आगाढजोगो महाकप्पसुयाइउट्ठिं पडिनुणावणमिच्चं संभासु कट्ठिज्जेज्जा, अहवा - आगाढकारणा सागारिणादि ॥६०५६॥

तेसिं इमा विभासा -

जं जस्स जियं सागारियम्मि णिसिमरणे जेणं जग्गन्ति ।

अहिणवगहितम्मि मते, पडिपुच्छं नत्थिं उभयस्स ॥६०५७॥



“सागारिग” ति-सहपडिबद्धाए वसधीए ठिता तत्थ जस्स जं सुयं कालिगं उक्कालिगं वाएइ ति सो तं संभाए परियट्ठेति । “१कालगतो” ति - कोइ साधू निसीए मओ तदद्वा रामो जग्गियव्वं, तत्थ जेण सुत्तेण रसिएण णायमादिणां कडिज्जतेण जग्गति तं संभासु वि कडिज्जति, गिलाणो वा ओसही पीओ जेण जग्गति तं कडिज्जति । “२असति” ति किंचि अज्झयणं कस्सइ गुरुणो समीवाओ गहितं सो गुरू कालगतो, तस्स व अहिणवगहियस्स सुत्तत्थस्स अण्णतो पडिपुच्छं पि णत्थि अतो तं संभासु वि परियट्ठेति ॥६०५७॥

“३वोच्छेदि” ति अस्य व्याख्या -

वोच्छेदे तस्सेव उ, तदत्थि सेसेसु तं समुच्छिण्णे ।

अणुपेहाए अवलिओ, घोससु यं वा वि सद्देणं ॥६०५८॥

कस्स इ आयरियस्स किंचि अज्झयणं अत्थि, अण्णेसु तं वोच्छिण्णं, सो संभासु असंभाकाले वा परियट्ठेति, मा ममं पि वोच्छिज्जिहिति । अहवा - तस्स समीवातो पढंतो लहुं पढामित्ति संभासु वि पढति, मा वोच्छिज्जिहिति ति । संभासु कारणे अणुपेहियव्वं । जो पृण अणुपेहाए ण सक्केति सो सद्देण वि पढेज्जा । अहवा - तं घोससद्देण घोसेयव्वं, तं पि जयणाए, जहा अण्णो अपरिणामगो ण जाणति ॥६०५८॥

जे भिक्खू कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ

पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ

पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

कालियसुयस्स उक्काले संभासु वा असज्भाए वा तिण्हं पुच्छाणं परेण पुच्छइ तस्स चउलहुं । दिट्ठिवायस्स संभासु असज्भाए वा सत्तण्हं परेण पुच्छंतस्स ड्ढ ।

तिण्हुवरि कालियस्सा, सत्तण्ह परेण दिट्ठिवायस्स ।

जे भिक्खू पुच्छाणं, चउसंभं पुच्छ आणादी ॥६०५९॥

चउसु संभासु अण्णयरीए वा तस्स आणादी ॥६०५९॥

पुच्छाते पुण किं पमाणं ?, अतो भण्णति -

पुच्छाणं परिमाणं, जावतियं पुच्छति अपुणरुत्तं ।

पुच्छेज्जा ही भिक्खू, पुच्छ णिसज्भाए चउभंगो ॥६०६०॥

अपुणरुत्तं जावतियं कडिडउं पुच्छंति सा एगा पुच्छा ।

एत्थ चउभंगो -

एक्का णिसेज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ सुद्धो ।

एक्का णिसेज्जा अणेगाओ पुच्छाओ, एत्थ तिण्हं वा सत्तण्हं वा परेण चउलहुगा ।

अणेगा णिसिज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ वि सुद्धो ।

अणेगा णिसिज्जा अणेगा पुच्छा, एत्थ वि तिण्हं सत्तण्हं वा परेण पुच्छंतस्स चउलहुगा ॥६०६०॥

अहवा तिणिण सिलोगा, ते तिसु णव कालिएतरे तिगा सत्त ।

जत्थ य पगयसमत्ती, जावतियं वाचिओ गिण्हे ॥६०६१॥

तिहि सिलोगेहि एगा पुच्छा, तिहि पुच्छाहि णव सिलोगा भवन्ति, एवं कालियनुयस्स एगतरं ।  
दिट्ठिवाए सत्तनु पुच्छानु एगवीसं सिलोगा भवन्ति । अहवा - जत्थ पगतं समप्पति थोवं बहुं वा सा एगा  
पुच्छा । अहवा - जत्तियं आयरिएण तरइ उच्चारितं धेतुं सा एगा पुच्छा ॥६०६१॥

वित्तियागाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहि, तिण्हं सत्तण्ह व परेणं ॥६०६२॥

कम्हा दिट्ठिवाए सत्त पुच्छातो ?, अतो भण्णति -

नयवातसुहुमयाए, गणिते भंगसुहुमे णिमित्ते य ।

गंथस्स य वाहुल्ला, सत्त कया दिट्ठिवातम्मि ॥६०६३॥

जेगमादि सत्तगया, एककेवको य सयविद्धो, तेहि समेदा जाव दव्वपरुवणा दिट्ठिवाए कज्जंति सा  
णयवातसुहुमया भण्णति । तह परिकम्मनुत्तेसु गणितसुहुमया, तथा परमाणुमादीसु वण्णगंवरस्सफास्सेसु एगग्रुण-  
कालगादियज्जवभंगसुहुमया । तथा अट्ठंगमादिगमित्तं, बहुवित्त्यरत्तगतो दिट्ठिवायगंथस्स य बहुअत्तगतो सत्त  
पुच्छाओ कत्ताओ ॥६०६३॥

जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेत्तं वा साइज्जइ, तं जहा -

इंदमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे ॥सू०॥११॥

रंवण-ययण-खाण-पाण-नृत्य-गेय-प्रमोदे च महता महामहा तेसु जो सज्झायं करेइ तस्स चउलहुं ।

जे भिक्खू चउसु महापडिवएसु सज्झायं करेइ करेत्तं वा साइज्जइ, तं जहा -

सुगिम्हयपाडिवए आसादीपाडिवए

आसोयपाडिवए कत्तियपाडिवए वा ॥सू०॥१२॥

एतेसि चैव महामहाणं जे चउरो पडिवयदिवसा, एतेसु वि करेत्तस्स चउलहुं ।

चतुसुं महामहेसुं, चतुपाडिवदे तहेव तेसिं च ।

जो कुज्जा सज्झायं, सो पावति आणमादीणि ॥६०६४॥ कंठ्या

के पुण ते महामहा ?, उच्यन्ते -

आसादी इंदमहो, कत्तिय-सुगिम्हओ य बोधव्वो ।

एते महामहा खलु, एतेसिं चैव पाडिवया ॥६०६५॥

आसादी - आसाडपोण्णिमाए, 'इह लाहेसु सावणपोण्णिमाए भवति इंदमहो, आसोयपुण्णिमाए  
कत्तियपुण्णिमाए चैव, सुगिम्हातो चैतपुण्णिमाए । एते अंतदिवसा गहिया । आदितो पुण. जत्थ विसए

१ 'इह' अनेन ज्ञायते लाट्ठेसीयोअ-चूर्णिकार इति ।

जतो दिवसातो महामहे पवत्तति ततो दिवसातो आरब्ध जाव अंतदिवसो ताव सज्जातो ण कायव्वो । एएसि चैव पुण्णिमाणं अणंतरं जे बह्वपटिवगा चउरो तेवि वज्जेयव्वा ॥६०६५॥

पडिसिद्धकाले करंतस्स इमे दोसा -

अन्नतरपमादजुत्तं, छलेज्ज अप्पिड्डिओ ण पुण जुत्तं ।

अद्दोदहिद्धिती पुण, छलेज्ज जयणोवउत्तं पि ॥६०६६॥

सरागसंजतो सरागत्तणतो इंदियविसयादि अणगतेरे पमादजुत्तो हवेज्ज, विसेसतो महामहेसु तं पमायजुत्तं पडिणोयदेवता अप्पिड्डिद्धया वित्तादि छलणं करेज्ज । जयणाजुत्तं पुण साहुं जो अप्पिड्डितो देवो अद्दोदधीओ ऊगट्टिइत्ति सो ण सबकेत्ति छलेउं - अद्दसागरोवमठित्तितो पुण जयणाजुत्तं पि छलेत्ति, अत्थि से सामत्थं, तं पि पुव्ववेरसंबंधसरणतो कोत्ति छलेज्ज ॥६०६६॥

चोदगाह - "वारसविहम्मिवि तवे, सविभंतर वाहिरे कुसलदिट्ठे ।

ण वि अत्थि ण वि य होही, सज्जायसमो तवोक्कम्मं ॥"

किं महेसु संभासु वा पडिसिज्झति ?, आचार्याह -

कामं सुओवओगो, तवोवहाणं अणुत्तरं भणितं ।

पडिसेहितम्मि काले, तहावि खलु कम्मवंथाय ॥६०६७॥

दिट्ठं महेसु सज्जायस्स पडिसेहकारणं ।

पाडिवएसु किं पडिसिज्झइ ?, उच्यते -

छणियाऽवसेसाएणं, पाडिवएसु वि छणाऽणुसज्जंति ।

मह्वाउलत्तणेणं, असारिताणं च सम्माणो ॥६०६८॥

छणस्स उवसाहियं जं मज्जपाणादिणं तं सत्त्वं णोवभुत्तं, तं पडिवयामु उवभुजंति, अतो पडिवतासु वि छणो अणुसज्जति । अणं च मह्दिणेसु वाउलत्तणतो जे य मित्तादि ण सारिता ते पडिवयामु संभारिज्जंति त्ति छणो बट्ठति, तेसु वि ते चैव दोसा, तम्हा तेसु वि णो करेज्जा ॥६०६८॥

वित्तियागाहे सागारियादि कालगत असंति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती कातुं ॥६०६९॥ कंठ्या

जे भिक्खू पोरिसिं सज्जायं उवाइणावेइ उवाइणावेत्तं वा साइज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू चउकालं सज्जायं न करेइ न करेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

कालियमुत्तस्स चउरो सज्जायकाला, ते य चउपोरिसिणिप्फणा, ते उवातिणावेत्ति त्ति - जो तेसु सज्जायं न करेइ तस्स चउलहुं आणादिणो य दोसा ।

अंतो अहोरत्तस्स उ, चउरो सज्जायपोरिसीओ उ ।

जे भिक्खू उवायणत्ति, सो पावत्ति आणमादीणि ॥६०७०॥

अहोरत्तस्स अंतो अंभंतरे, सेसं कंठ्यं ॥६०७०॥

चाउक्कालं सज्झायं अकरेंतस्स इमे दोसा ।

पुव्वगहितं च नासति, अपुव्वगहणं कओ सि विकहाहिं ।

दिवस-निसि-आदि-चरिमासु चतुसु सेसासु भइयव्वं ॥६०७१॥

सुत्तये मोत्तुं देस-भत्त-राय-इत्यिकहादिसु पमत्तो अच्छति अगुणेंतस्स पुव्वगहितं नासति, विकहा-  
पमत्तस्स य अपुव्वं गहणं णत्थि, तम्हा णो विकहासु रमेज्जा ।

दिवसस्स पढमचरिमासु णिसीए य पढमचरिमासु य-एयासु चउसु वि कालियसुयस्स गहणं गुणणं च  
करेज्ज । सेसासु त्ति दिवसस्स वितियाए उक्कालियसुयस्स गहणं करेति अत्थं वा सुणेति, एसा चेव भयणा ।  
ततियाए वा भिक्खं हिंडइ, अह ण हिंडति तो उक्कालियं पडति, पुव्वगहियमुक्कालियं वा सुणेति, अत्थं वा  
सुणेइ । णिसिस्स विइयाए एसा चेव भयणा सुवइ वा । णिसिस्स ततियाए णिहाविमोक्खं करेइ, उक्कालियं  
गेहति सुणेति वा, कालियं वा सुत्तमत्थं वा करेति । एवं सेसासु भयणा भावेयव्वा ॥६०७१॥

चाउक्कालियसज्झायस्स वा अकरणे इमे कारणा -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्वाण रोहए वा, कालं च पडुच्च नो कुज्जा ॥६०७२॥

अस्य व्याख्या -

सज्झायवज्जमसिवे, रायदुट्ठे भय रोहग असुद्धे ।

इतरमवि रोहमसिवे, भइतं इतरे अलं भयसु ॥६०७३॥

“सज्झायवज्जमसिवे” त्ति - लोके असिवं वा साधू अप्पणा वा गहितो तत्थ सज्झायं ण पटुवेंति  
आवस्सगादि उक्कालियं करेति । रायदुट्ठे बोहिगमए य त्तिहक्का अच्छंति, मा णज्जिहामो, तत्थ कालिग-  
मुक्कालियं वा ण करेति । अहवा - “रायदुट्ठे भय” त्ति-णिव्विसया भत्तपाणे पडिसेहे य ण करेति सज्झायं ।  
उवकरण (सरीर) हरे दुविषभेरेवे य ण करेति, मा णज्जीहामो त्ति । रोषगे असुद्धे काले वा ण करेति ।  
इयरमवि आवस्सगादि उक्कालियं, जत्थ रोषगे अचियत्तं असिवेण य गहिया तत्थ तं पि ण करेति । इयरे  
त्ति - ओमोदरिया तत्थ भयणा - जइ वितियजामादिसु वेलासु ण करेति सज्झायं, अह ण फव्वंति  
पच्चूसियवेलातो आदिच्चोदयाओ आरद्धा ताव हिंडति जाव अवरण्हो त्ति । गेलण्णाट्ठाणेसु ‘अलं भयसु’ त्ति-  
जइ गिलाणो सत्तो अद्वाणिगेण वा न खिण्णो तो करेति, अह असत्ता तो ण करेति । अहवा - गिलाण-  
पडियरगा वा ण करेति, कालं वा पडुच्च णो कुज्जति । असुद्धे वा काले ण करेति । अणुपेहा सव्वत्थ  
अविरुद्धा ॥६०७३॥

जे भिक्खू असज्झाइए सज्झायं करेइ, करेंतं वा सात्तिज्जति ॥सू०॥१५॥

जम्मि जम्मि कारणे सज्झाओ ण कीरति तं सव्वं असज्झाइयं, तं च बहुविहं वक्खमाणं, तत्थ  
जो करेइ तस्स चउलहुं आणाभंगो अणवत्था मिच्छत्तं आयसंजमविराहणा य ।

तस्सिमे भेदा -

असज्झायं च दुविहं, आतसमुत्थं च परसमुत्थं च ।

जं तत्थ परसमुत्थं, तं पंचविहं तु नायव्वं ॥६०७४॥

आयसमुत्थं निवृत्त ताव उवरिं भणिहिति अणंतरमुत्ते, जं परसमुत्थं तं इमं पंचविहं ॥६०७४॥

संजमघाउप्पाते, सा दिव्वे दुग्गहे य सारीरे ।

घोसणयमेच्छरणो, कोइ छलिओ पमाएणं ॥६०७५॥

एयम्मि पंचविहं असज्झाए जो सज्झायं करेति तस्सिमा आयसंजमविराहणा । दिट्ठंतो-घोसणय मेच्छरणो त्ति ॥६०७५॥

अस्य व्याख्या -

मेच्छभयघोसणणिवे, हियसेसा ते तु डंडिया रण्णा ।

एवं दुहओ डंडो, सुर पच्छित्ते इह परे य ॥६०७६॥

खिइपतिट्ठितं णगरं, जियसत्तू राया । तेण सविसए घोसावितं जहा - मेच्छो राया आगच्छति, तं गामणगराणि मोत्तुं समासण्णे दुग्गेसु ठायह, मा विणस्सिहिह । जे ठिया रण्णो वयणेण दुग्गादिसु ते ण विणट्ठा । जे पुण न ठिता ते मेच्छेसु विलुत्ता, ते पुण रण्णा आणाभंगो मम कओ त्ति जं किंचि हियसेसं पि तं पि डंडिता । एवं असज्झाए सज्झायं करेत्तस्स दुहतो डंडो इह भवे "सुर" त्ति देवताए छलिज्जति, परभवं पडुच्च णाणादिविराहणा पच्छित्तं च ॥६०७६॥

इमो दिट्ठंतोवणओ -

राया इव तित्थकरो, जाणवता साधु घोसणं सुत्तं ।

मेच्छो य असज्झाओ, रतणधणाइं च णाणादी ॥६०७७॥

जह राया तहा तित्थकरो, जहा जणपदजणा तहा साधू, जहा आघोसणं तहा सुत्तपोरिसिकरणं, जारिसा मेच्छा तारिसा असज्झाया, जहा रयणधणावहारो तहा णाणदंसणचरणविणासो । तं पि सव्वं उव-संधारेयव्वं ॥६०७७॥

"कोति छलिओ, पमादेणं" त्ति अस्य विभासा -

थोवाउवसेसपोरिसि, अज्झयणं वा वि जो कुणति सोच्चा ।

णाणादिसारहीणस्स तस्स छलणा तु संसारे ॥६०७८॥

सज्झातं करेत्तस्स थोवावसेसगो उद्देसगो अज्झयणं वा, तो पोरिसी आगय त्ति सुता, अहवा - असज्झाइयं कालवेला वा सोच्चा वि जो आउट्टियाए सज्झायं करोति सो णाणादिसारहीणो भवति । घणायास्तथो य देवयाए छलिज्जति, संसारे य दीहकालं परियट्ठेति, पमादेण वि कारेत्तो छलिज्जति चेव, दुक्खं संसारे अणुभवति ॥६०७८॥

जं तं संजमोवघाति तं इमं तिविहं -

महिया य भिण्णवासे, सचित्तरजो य संजमे तिविहे ।

दव्वे खेत्ते काले, जहियं वा जच्चिरं भव्वं ॥६०७९॥

पंचविहसज्जायस्स किं कहं परिहरियव्वमिति तप्पसाहगो इमो दिट्ठतो -

दुग्गादि तोसियणिञ्चो, पंचहं देति इच्छियपयारं ।

गहिए य देति मोल्लं, जणस्स आहारवत्थादी ॥६०८०॥

एगस्स रण्णो पच पुरिसा, ते बहुसमरलद्धविजया । अण्णया तेहि अच्चंतविसमं दुगं गहितं । तेसिं तुट्ठो राया । इच्छियं णगरे पयारं देति, जं ते किंचि असणादिगं वत्थादिगं वा जणस्स नेण्हति तस्स वेणइयं (वेयणियं) सव्वं राया पयच्छति ॥६०८०॥

एगेण तोसिततरो, गिहमगिहे तस्स सव्वहिं पयारो ।

रत्थादीसु चउण्हं, एवं पढमं तु सव्वत्थ ॥६०८१॥

तेसिं पंचहं पुरिसाणं एक्केणं राया तोसिततरो, तस्स गिहाण रत्थासु सव्वत्थ इच्छिय-पयारं पयच्छति । चउण्हं रच्छासु चेव इच्छियपयारं पयच्छइ । जो एते दिण्णप्पयारे आसाएज्ज तस्स राया डंडं करेति । एस दिट्ठतो ।

इमो उवसंधारो - जहा पंच पुरिसा तहा पंचविहमसज्जायं, जहा सो एगो अब्भरहिततरो पुरिसो एवं पढमं संजमोवघातितं सव्वहा णासतिज्जति, तम्मि वट्टमाणे ण सज्जाओ ण पडिलेहुणादिका काइ चिट्ठा कीरइ, इतरेसु चउसु असज्ज इएसु जहा ते चउरो पुरिसा रच्छासु चेव अणासायणिज्जा तहा तेसु सज्जाओ चेव ण कीरइ, सेसा सव्वा चिट्ठा कीरइ, आवस्सगादिउक्कालियं पडिज्जति ॥६०८१॥

१महियादिति विहस्स संजमोवघातिस्स इमं वक्खानं -

महिया तु गव्वमासे, सच्चित्तरयो तु ईसिआयंवो ।

वासे तिणिण पगारा, वुव्वुय तव्वज्ज फुसिता य ॥६०८२॥

महियत्ति धूमिया, सा य कत्तियमग्गसिरादिमु गव्वमासेसु भवति, सा य पडणप्पमकालं चेव सुहुम-त्तण्णो सव्वं आउक्कायभावितं करेति, तत्थ तत्कालसमयं चेव सव्वचेट्ठा णिरुज्जति । ववहारसच्चित्तो पुढविकाओ आरण्णो वा उद्धओ आगतो सच्चित्तरओ भन्नति, तस्स लक्खणं - वण्णतो ईसि आयंवो दिसंतरेसु दीसति, सोवि णिरंतरपाएण तिण्हं दिणाणं परतो सव्वं पुढविकायभावितं करेति, तत्पाताशंकासंभवश्च । भिन्नवासं तिविहं - वुव्वुयाइ, जत्थ वासे पढमाणे उदगवुव्वुया भवति तं वुव्वुयवरिसं, तेहि वज्जितं तव्वज्जियं । सुहुमफुसारोहि पढमाणोहि फुसियं वरिसं, एतेसु जहासंखं तिणिण-पंच-सत्तदिणपरओ सव्वं आउक्कायभावियं भवइ ॥६०८२॥

संजमघायस्स सव्वभेदाणं इमो चउव्विहो परिहारो - “दव्वे खेत्ते” पच्छद्धं अस्य व्याख्या -

दव्वे तं चिय दव्वं, खेत्ते जहि पडति जच्चिरं कालं ।

ठाणभासादिभावे, मोत्तुं उस्सास उम्मेसं ॥६०८३॥

दव्वतो तं चैव दव्वं ति महिया सच्चित्तरयो भिन्नवासं च परिहरिज्जति । “३जहियं व” ति - जहि खेत्ते महियादी पडंति तेहि चेव परिहरिज्जति । “४जच्चिरं” ति - पडणकालातो आरब्ध जच्चिरं

कालं पठति तच्चिरं परिहारो । “भवं” ति — भावतो “ठाणमासादि” ति — काउस्सगं ण करेति, ण य भासंति । आदिसद्वाग्रो गमणागमगं पठित्तेहणसज्झायादि ण करेति । “मोत्तुं उस्सासउम्मेसं” मोत्तुं ति णो पठिसिज्झंति उस्सासादिया अगमयत्वात् जीवितव्याघातकत्वाच्च, शेषा क्रिया सर्वा निषिद्धयते । एस उस्सगपरिहारो । आतिणं पुण सच्चित्तरए तिणिं भिण्णवासे तिणिं पंच सत्त, अतो परं सज्झायादि ण करेति ।

अत्रे भणंति — बुव्वुयावरिमं अहोरत्तं, तव्वज्जे दो अहोरत्ता, फुसियवरिसे सत्त, अतो परं आउवकायभाविते सव्वचेट्ठा णिग्गमति ॥६०८३॥

वासत्ताणाऽऽवरिया, णिक्कारणे ठंति कज्जे जतणाए ।

हत्थऽच्छिंणुलिसण्णा, ‘पोत्तोवरिया व भासंति ॥६०८४॥

णिक्कारणे वा सकप्पकंवलीए पाउया रेणिहुया सव्वढ्मंतरे चिट्ठंति, अवस्सकायव्वे वा कज्जे वत्तव्वे वा इमा जतणा हत्थेण भूमादिअच्छिद्विकारेण वा अंगुलीए वा सण्णेति — “इमं करेहि, मा वा करेहि” ति । अह्वा — एवं णावगच्छति मुहपोत्तिय अंतरिया जयणाए भासंति, गिलाणादिकज्जेसु वा सकप्पपाउया गच्छंति ॥६०८४॥ संजमघाति ति गत्तं ।

इदार्णि — “उप्पाए” ति दारं — अवभादिविकारवत् विश्रसा परिणामतो उत्पातो पांसुमादी भवति ।

पंसू य मंस रुहिर, केस-सिल-वुट्ठि तह रयुग्घाए ।

मंसरुहिरऽहोरत्तं, अवसेसे जच्चिरं सुत्तं ॥६०८५॥

पंसुवरिसं मंसवरिसं रुधिरवरिसं, केसत्ति — वालवरिसं, करगादिं वा सिलावरिसं, रयुग्घायपयढणं च । तेमि इमो परिहारो — मंसरुहिर अहोरत्तं सज्झाग्रो ण कीरइ, अवसेसा पंसुमादिया जच्चिरं-कालं पठंति तत्तियं कालं सुत्तं णदिमादियं ण पठंति ॥६०८५॥

पंसुरउग्घातणे इमं वक्खाणं —

पंसू अचित्तरयो रयुग्घातो धूलिपडणसव्वत्तो ।

तत्थ सवाए णिव्वायए य सुत्तं परिहरंति ॥६०८६॥

धूमागारो आपंडुरो रयो अचित्तो य पंसू भण्णइ, महास्कन्धावारगमनसमुद्धता इव विश्रसा-परिणामतो समंता रेणुपत्तनं रयुग्घातो भण्णइ, अह्वा — एस रयो, उग्घातो पुण पंसुरता भण्णति, एतेसु वातसहितेसु असहितेसु वा सुत्तपोरिसिं ण करेति ॥६०८६॥

किं चान्यत् —

साभाविते तिणिं दिणा, सुगिम्हते निक्खिण्वंति जति जोगं ।

तो तम्मि पडंते वी, कुणंति संवच्छरज्झायं ॥६०८७॥

एते पंसुरयुग्घाता साभाविगा हवेज्ज, असाभाविका वा । तत्थ असाभाविगा जे णिग्घायभूमिकपं चंदोपरागादिदिव्वसहिता, एरिसेसु असाभाविगेसु कते वि उस्सगे ण करेति सज्झायं । “सुगिम्हए” ति —



जइ पुण चेतसुद्धपक्खदसमीए अवरण्हे जोगं णिक्खिवंति तसमीओ परेण जाव पुण्णिमाए एतयंतरे तिण्णि दिणा उवस्वरि अचित्तरउग्वाडावणं काउस्सगं करेति, तेरसिमादिसु वा तिसु दिणेषु तो साभाविके पडंते वि सज्झायं संवत्सरं करेति, अहं तं उस्सगं ण करेति तो साभाविके वि पडंते सज्झायं ण करेति ॥६०८७॥  
उप्पाय त्ति गय ।

इदाणि “सादेव्वे” त्ति - स दिव्वेण सादिव्वं दिव्वकृतमित्यर्थः ।

गंधव्व दिसा विज्जुग, गज्जिते जूव जक्ख आलित्ते ।

एक्केक्कपोरिसी गज्जियं तु दो पोरिसी हणति ॥६०८८॥

गंधव्वणगरविउव्वणं दिसाडाहकरणं विज्जुव्वभणं उक्कापडणं गज्जियकरणं जूवगो वक्खमाणो जक्खालितं जक्खदितं आगासे भवति, तत्थ गंधव्वणगरं जक्खदितं च एते णियमा दिव्वकया, सेसा भयणिज्जा, जतो फुडं ण गज्जति । तेण तेसि परिहारो । एते गंधव्वादिया सव्वे एक्कं पोरिसि उवहणंति, गज्जियं तु पोरिसि दुगं हणइ ॥६०८८॥

दिसिदाहो छिण्णमूलो, उक्क सरेहा पगामजुत्ता वा ।

संभा छेदावरणो, तु जूवओ सुक्के दिण तिण्णि ॥६०८९॥

अन्यतमदिगंतरविभागे महाणगरप्रदीपमित्रोद्योतः किन्तु उवरि प्रकाशमघस्तादंधकार ईदृग् छिण्ण-मूला दिग्दाहाः । उक्कालक्खणं सदेहवणं रेहं करेती जा पडइ सा उक्का, रेहविरहिता वा उज्जोयं करेती पडति सा वि उक्का । “जूवगो” त्ति संभ्रम्यभा य चंदप्पभा जेण जुगवं भवति तेण जूवगो, सा य संभ्रम्यभा चंदप्पभाविरिया फिट्ठती ण गज्जति सुक्कपक्खपडिवयादिसु दिणेषु, संभ्रोच्छेदे य अणज्जमाणे कालवेलं ण भ्रुणंति, अतो तिण्णि दिणे पातोसियं कालं ण गेहंति, तेसु तिसुवि दिणेषु पातोसियसुत्तपोरिसि ण करेति ॥६०८९॥

केसिं चि होतऽमोहा, उ जूयओ ताव हंति आइण्णा ।

जेसिं तु अणाइण्णा, तेसिं दो पोरिसी हणति ॥६०९०॥

जगस्स सुभासुभमत्यणिमित्तुप्पादो अवितथो आदिच्चकिरणविकारजणिओ आइच्चमुदयत्यमे आयंवो किण्ह सामो वा सगडुद्धिसंठितो डंडो अ मोह त्ति एस जूवगो, सेसं कंठयं ॥६०९०॥

किं चान्यत् -

चंदिमसूखरागे, णिग्घाए गुंजिते अहोरत्तं ।

संभाचतुपाडिवए, जं जहि सुगिम्हए नियमा ॥६०९१॥

चंदसूखरागो गहणं भण्णाति, एवं वक्खमाणं साअं निरअं वा व्यंतरकृतो महागजितसमो ध्वनि-निर्घातः, तस्सेव विकारो गुंजमानो महाध्वनिः, गुंजितं सामणतो, एतेसु चउसु वि अहोरत्तं सज्झाओ ण कीरइ । णिग्घाअगुंजितेसु विसेसो - वितियदिणे जाव सा वेला विज्जति, णो अहोरत्तछेदेण छिज्जति, जहा अणोसु असज्झाईगसु ॥६०९१॥

१ गा० ६०७५ । २ तेसिं किर पोरिसी तिप्पि । (आ० नि०) । ३ आताअः ।



सम्भावप्रो त्ति अणुदिते गूरिए, मज्झग्गे, अत्यमाणे, अट्टरत्ते य - एयासु चउसु सज्झायं ण करेति । दोसा पुव्वुत्ता । चउण्हं महामहेसु चउसु पाठिवएगु सज्झायं ण करेति पुव्वुत्तं, एवं अण्णं पि जत्तियं जाणंति "१जं" ति महं जाणेज्जा । "जहिं" ति गामणगरादिसु तं पि तत्थ वज्जेज्ज । सुगिम्हणो पुण सव्वत्थ णियमा भवइ । एत्थ अणागाढजोग णियमा णिविखवति । आगाढं ण णिविखवति णपढंति पुण ॥६०९१॥

२चंदिम-सूरिमग त्ति अस्य व्याख्या -

उक्कोसेण दुवालस, अट्ट जहण्णेण पोरिसी चंदे ।

सूरो जहण्ण वारस, पोरिसि उक्कोस दो अट्टा ॥६०९२॥

चंदोदयकाले चेव गहिप्रो, संदूसियरातीए चउरो, अण्णं च अहोरत्तं एवं दुवालस । अहवा - उप्पायगगहणे सव्वरातीयं गहणं सगगहो चेव णिव्वुडो, संदूसियरातीए चउरो, अण्णं च अहोरत्तं एवं वारस । अहवा - अजाणया अब्भच्छण्णे संकाते ण नजति कि वेलं गहणं ?, परिहरिता राती पभाए दिट्ठं सगगहो निव्वुडो, अण्णं च अहोरत्तं, एवं दुवालस । एवं चंदस्स सूरस्स अत्यमगगहणे सगगहनिव्वुडो उवहयरातीए चउरो, अण्णं च अहोरत्तं परिहरति, एवं वारस ।

अह उदेंतो गहितो तो संदूसियमहोरत्तस्स अट्ट, अण्णं च अहोरत्तं परिहरंति एवं सोलस । अहया - उदयवेलागहिप्रो उप्पादियगहणे सव्वदिणे गहणं होउं सगगहो चेव णिव्वुडो संदूसियअहोरत्तस्स अट्ट, अण्णं च अहोरत्तं एवं सोलस । अहवा - अब्भच्छण्णे ण णज्जति कि वेलं होहिंति गहणं, दिवसतो संकाए ण पढियं, अत्यमणवेलाए दिट्ठं गहणं सगगहो निव्वुडो संदूसियस्स अट्ट, अण्णं च अहोरत्तं, एवं सोलस ॥६०९२॥

सगगहणिव्वुड एवं, सूरादी जेण होंतऽहोरत्ता ।

आइण्णं दिणमुक्के, सोचिय दिवसो य रादी य ॥६०९३॥

सगगहणिव्वुडे तं अहोरत्तं उवहतं । कहं ? उच्यते "सूरादी जेण अहोरत्ता," सूरुदयकालाप्रो जेण अहोरत्तस्स आदो भवति तं परिहरितुं संदूसितं अण्णं पि अहोरत्तं परिहरियव्वं । इमं पुण आदिण्णं चंदो गहितो रातीए चेव मुक्को, तीसे चेव राईए सेसं चेव वज्जणिज्जं, जम्हा आगामिसूरुदए अहोरत्तसमत्ती । सूरस्स वि दिया गहितो दिया चेव मुक्को, तस्सेव दिवसस्स सेसं राती य वज्जणिज्जा । अहवा-सगगहणिव्वुडे विधी भणितो ।

ततो सीसो पुच्छति - "कहं चंदे दुवालस, सूरे सोलस जामा ?"

आचार्याह - "सूराती जेण होंति अहोरत्ता", चंदस्स णियमा अहोरत्तद्वे गते गहणसंभवो अण्णं च अहोरत्तं एवं दुवालस, सूरस्स पुणो अहोरत्तातीए संदूसियअहोरत्तं परिहरियं, अन्नं पि अहोरत्तं परिहरिव्वं, एवं, सोलस ॥६०९३॥ सादेव्वेत्ति गतं ।

इदार्णि ३वुग्गहे त्ति दारं -

वुग्गहडंडियमादी, संखोभे डंडिए व कालगते ।

अणरायए व सभाए, जच्चिर णिदोच्चऽहोरत्तं ॥६०९४॥

"वुग्गहडंडियमादि" त्ति अस्य व्याख्या -

सेणाहिव भोइ महयर, पुंसित्थीणं च मल्लजुद्धे वा ।

लोढादि-भंडणे वा, गुज्जमुड्डाहमचियत्तं ॥६०९५॥

डंडियस्स डंडियस्स य वुग्गहो, आदिसद्दातो सेणाहिवस्स सेणाहिवस्स य । एवं दोण्हं भोइयाणं, दोण्हं महत्तराणं, दोण्हं पुरिसाणं, दोण्हं इत्थीणं, मल्लाण वा जुद्धं पिट्ठायागलोद्धुमंडणेण वा । आदिसद्दातो विसयपसिद्धासु १संसुल्लासु । विग्गहा प्रायो व्यंतरवहुला, तत्थ पमत्तं देवया छलेज्ज । “२उड्डाहो” हा निदुक्ख त्ति, जणो भणेल्ल – अम्हे आवइपत्ताणं इमे सज्झायं करेति त्ति अचियत्तं ह्वेज्ज । विसयसंखोभो परचक्कागमे । डंडिए वा कालगए भवति । “३अणराए” त्ति रण्णो कालगते णिब्भएवि जाव अण्णो राया न ठविज्जति । “४समए” त्ति जीवन्तस्स वि रण्णो बोहिगेहि समन्ततो अभिदुदुयं जच्चिरं सभयं तत्तियं कालं सज्झायं ण करेति । जइवसं सुअं णिदोच्चं तस्स पुरतो अहोरत्तं परिहरंति ॥६०६५॥ एस डंडिए कालगते विधी ।

सेसेसु इमा विधी –

तद्विवसभोयगादी, अंतो सत्तण्ह जाव सज्झाओ ।

अणाहस्स य हत्थसयं, दिट्ठविवित्तम्मि सुद्धं तु ॥६०६६॥

गामभोइए कालगते तद्विवसं त्ति अहोरत्तं परिहरंति ।

आदिसद्दातो –

महतरपगते बहुपक्खिते, व सत्तघर अंतरमते वा ।

णिदुदुक्ख त्ति य गरहा, ण करेति सणीयगं वा वि ॥६०६७॥

गामरट्टमहत्तरे अधिकारणिज्जुतो बहुसम्मतो य पगतो “बहुपक्खिते” त्ति बहुसयणो वाडगसावि-  
अधिवो सेज्जातरो य अण्णम्मि वा अणंतरघरातो आरब्भ जाव सत्तमघर, एतेसु मएसु अहोरत्तं सज्झाओ ण कीरति । अह करेति तो णिदुदुक्ख त्ति काअं जणो गरहति, अक्कोसेज्ज वा णिच्छुमेज्ज वा । अण्णसहेण वा सणियं सणियं करेति अणुपेहंति वा । जो पुण अणाहो मतो तं जति उन्निमणं हत्थसयं वज्जेयव्वं, अणुन्निमणं असज्झायं ण भवति, तह वि कुच्छियं त्ति काअं आयरणओ य दिट्ठं हत्थसयं वज्जिज्जति ॥६०६७॥

जइ तस्स णत्थि कोइ परिदुवेंतो ताहे –

सागारियादिकहणं, अणिच्छे रत्ति वसभा विगिंचंति ।

विक्खिण्णे व समंता, जं दिट्ठं सढेतरे सुद्धा ॥६०६८॥

सागारियस्स आदिसद्दातो पुराणस्स सड्डस्स अहामहस्स वा कहिज्जति – “इमं छड्डेह, अम्हं सज्झाओ ण सुज्झइ ।” जति तेहि छड्डियं तो सुद्धं । अह ते णेच्छंति ताहे अणं वसहि “गम्मति । अह अण्णा वसही ण लम्भति ताहे वसभा अण्णसागारियं परिदुवेंति । एस अभिण्णे विधी ।

अह भिण्णं काकसाणादिएहि समंता विक्खिण्णं तम्मि दिट्ठिविवित्तम्मि सुद्धासुद्धं असढभावं गवेसं-  
तेहि जं दिट्ठं तं सद्धं विवित्तं छड्डियं । “इयरं” त्ति अदिट्ठं तम्मि तत्थत्थे विसुद्धा सज्झायं करेताण वि ण पच्छित्तं । एत्थ एयं पसंगतोऽभिहितं ॥६०६८॥

इयारिणं १सारीरं –

सारीरं पि य दुविहं, माणुस-तेरिच्छगं समासेणं ।

तेरिच्छं पि य तिविहं, जल-थल-खयरं चउद्धा तु ॥६०६९॥

१ संसलासु ( आ० वृ० ) संसुमलामसु इत्यपि पाठः । २ गा० ६०६४ । ३ गा० ६०६४ ।  
४ गा० ६०६४ । ५ मग्गति इत्यपि पाठः । ६ गा० ६०७५ ।

एत्थ माणुसं ताव चिट्ठु, तेरिच्छं ताव भणाभि—तं ति विधं मच्छादियाण जलजं, गवादियाण थलजं, मयूरादियाण खहचरं । एतेसि एक्केक्कं दब्बादि चउव्विहं ॥६०६६॥

एक्केक्कस्स वा दब्बादिओ इमो चउहा परिहारो —

पंचेदियाण दब्बे, खेत्ते सट्ठिहत्थ पोग्गलाइणं ।

तिकुरत्थ महंतेगा, णगरे वाहिं तु गामस्स ॥६१००॥

दब्बतो पंचेदियाण रुहिरादि दब्बं असज्झाइयं । खेत्तओ सट्ठिहत्थज्जंतरे असज्झाइयं, परतो ण भवति । अहवा—खेत्ततो पोग्गलाइणं पोग्गलं मंसं तेण सज्जं आकिणं व्याप्तं तस्सिमो परिहारो, तिहि कुरत्थाहि अंतरियं सुज्झति, आरतो ण सुज्झति । महंतरत्थाए एक्काए वि अंतरियं सुज्झति, अणंतरियं दूरट्ठितं ण सुज्झति । महंतरत्था रायमगो जेण राया बलसमगो गच्छति देवजाणरहो वा विविधा संवहणा गच्छति, सेसा कुरत्था । एसा णगरविधी ।

गामस्स णियमा वाहिं, एत्थ गामो अविमुद्धणेगमणयदरिसणेण सीमापज्जंतो, परग्गामसीमाए सुज्झतीत्यर्थः ॥६१००॥

काले तिपोरिसज्झव, भावे सुत्तं तु नंदिमादीयं ।

सोणिय मंसं चम्मं, अट्ठीणि य होंति चत्तारि ॥६१०१॥

तिरियं च असज्झाइयं संभवकालातो जाव ततिय पोरिसी ताव असज्झाइयं, परतो सुज्झइ । अहवा अट्ठजामा असज्झाइयं, ते जत्थ घायणं तत्थ भवति ।

भावतो पुण परिहरंति सुत्तं, तं च णंदिमणुओगदारं तंदुलवेयालियं चंदगवेज्झमं पोरिसी-मंडलमादी । अहवा — “उत्तुत्ता उ” ति — असज्झाइतं चउव्विहं, मंसं सोणियं चम्मं अट्ठिं च ॥६१०१॥

मंस-सोणिउक्खित्तमंसे इमा विधी —

अंतो बहिं च धोतं, सट्ठी हत्थाण पोरिसी तिणिण ।

महाकाये अहोरत्तं, रद्धे वूढे य सुद्धं तु ॥६१०२॥

साधुवसही सट्ठीहत्थाणं अंतो बहिं च धोवति । भंगदर्शनमेतत् — अंतो धोतं अंतो पक्कं, अंतो धोतं बहिं पक्कं, बहिं धोतं वा अंतो पक्कं । अंतगहणाओ पढमवितिया भंगा, बहिगहणातो ततियभंगो, एतेसु तिसु वि असज्झायं । जम्मि पदेसे धोतं आणेउं वा रद्धं सो पदेसो सट्ठीए हत्थेहिं परिहरियव्वो । कालतो तिणिण पोरिसीओ ॥६१०२॥

बहिधोतरद्ध सुद्धो, अंतो धोयम्मि अवयवा होंति ।

महाकाए बिरालादी, अविभिणं के इ णेच्छंति ॥६१०३॥

एस चउत्थो भंगो । एरिसं जति सट्ठीए हत्थाणं अब्भंतरे आणियं तहावि तं असज्झायं ण भवति, पढम-वितियभंगेसु अंतो धोवित्तु णीए रद्धे वा तम्मि धोतट्ठणे अवयवा पडंति तेण असज्झायं । ततियभंगे बहिं धोवित्तु अंतो व णीए मंसमेव असज्झाइयं ति । तं च उक्खित्तमंसं आइण्णपोग्गलं न भवइ । जं काकसाणादीहि अणिवारियविप्पकिणं णिज्जति तं आतिण्णपोग्गलं भाणियव्वं । महाकातो पंचदिओ जत्थ हतो तं आघायणं

वज्जेय्वं । खेत्यो सट्ठि हत्था, कालतो अहोरत्तं, एत्थ अहोरत्तच्छेदो । सूखदए रद्धं पक्कं मंसं असज्झाइयं ण भवति, जत्थ असज्झाइयं पडितं तेण पदेसेण उदगवाहो 'वूढो, तम्मि पोरिसिकाले अपुण्णे विसुद्धं आघायणं ण सुज्झति । "२महाकाए" त्ति अस्य व्याख्या - महाकाए पच्छद्वं, मूसगादी महाकायो स विरालादिणा हतो, जति तं अभिण्णं चेव गिलिउं घेतुं वा सट्ठीए हत्थाणं वाहिं गच्छति तो के इ आयरियाऽसज्झायं गेच्छति, थितपक्खो पुण असज्झाइयं चेव ॥६१०३॥

ठियपक्खो पलाए सुज्झति, अस्य व्याख्या -

मूसादि महाकायं, मज्जारादी हताऽऽघयण केती ।

अविभिण्णे गेहेतुं, पढंति एगे जति पलाति ॥६१०४॥ गतार्था

तिरियं च असज्झायाधिकार एवं इमं भण्णति -

अंतो वहिं च भिण्णं, अंडयं चिंदू तहा विआता य ।

रायपह वूढ सुद्धे, परवयणं साणमादीणि ॥६१०५॥

अंतो वहिं च भिण्णं अंडयं त्ति अस्य व्याख्या -

अंडयमुज्झिय कप्पे, ण य भूमि खणंति इहरहा तिणिण ।

असज्झाइयप्पमाणं, मच्छियपादो जहिं वुड्डे ॥६१०६॥

साधुवसधीतो सट्ठीहत्थाणं अंतो भिण्णे अंडए असज्झायं, वाहिभिण्णे ण भवति । अहवा - साधुवसहीए अंतो वाहिं वा अंडयं मित्रंति वा उज्झियं त्ति वा एगद्वं, तं च कप्पे वा उज्झितं भूमीए वा, जति कप्पे तो तं कप्पं सट्ठीए हत्थाणं वाहिं गेउं धोवति ततो सुद्धं । अह भूमीए भिण्णं तो भूमीए खणित्तु ण छट्ठिज्जति, ण सुज्झतीत्यर्थः । इहग्ग त्ति तत्थत्ये सट्ठि हत्था तिणिण य पोरिसीओ परिहरिज्जति ।

इदार्णि "विंदु" त्ति असज्झाइयस्स किं विंदुप्पमाणमेतेण हीणेण अधिकतरेण वा असज्झाओ भवति ? त्ति पुच्छा ।

उच्यते - मच्छिताए पादो जहिं वुड्डति तं असज्झाइयप्पमाणं ॥६१०६॥

इदार्णि "विआय" त्ति -

अजरायु तिणिण पोरिसि, जराउगाणं जरे चुते तिणिण ।

रायपह विंदु गलिते, कप्पति अण्णत्थ पुण वूढे ॥६१०७॥

जरा जेसि ण भवति ताणं पसूताणं वग्गुलिमादियाणं तासि पसूइकालाओ आरव्वम तिणिण पोरिसीओ असज्झातो मोत्तुं अहोरत्तच्छेदं आसण्णपसूयाएवि अहोरत्तच्छेदेण सुज्झति । गोमादिजरायुजाणं पुण जाव जरं लंवति ताव असज्झाइयं, जरे चुते तिणिण । जाहे जरं पडितं ततो पडणकालातो आरव्वम तिणिण पह्रा परिहरिज्जति । "रायपह वूढसुद्ध" त्ति अस्य व्याख्या - "रायपह विंदु" पच्छद्वं, साधुवसहीए आसण्णेण गच्छमाणस्स तिरियं चस्स जइ रुहिरावद्ध गलिता ते जइ रायपहंतरिता तो सुद्धो, अह रायपहे चेव विंदु गलिता तहावि कप्पति सज्झाओ काउं । अह अण्णम्मि पहे अण्णत्थ वा पडितं तं जइ उदगवुड्ढिवाहेण वाहरियं तो सुद्धं, पुण त्ति विशेषार्थप्रदर्शने, पलीवणणेण वा दड्डे सुज्झति ॥६१०७॥

१ गा० ६१०२ । २ गा० ६१०२ । ३ जहिं न वुड्डे (आ० नि०) । ४ गा० ६१०५ । ५ गा० ६१०५ । ६ गा० ६१०५ ।

“परवयणं” साणमादीणि त्ति परो त्ति चोदगो, तस्स इमं वयणं, “जइ साणो पोगलं समुद्दिस्सित्ता जाव वसहिंसमीवे चिट्ठइ ताव असज्झाइयं । आदिसद्दातो मज्जारती” ।

आचार्याह -

जति फुसति तहिं तुंडं, जति वा लेच्छारिएण संचिक्खे ।

इहरा ण होति चोदग !, वंतं वा परिणतं जम्हा ॥६१०८॥

साणो भोतुं मंसं लेच्छारिएण तुंडेण वसहिंसासण्णेण गच्छंतो, तस्स गच्छंतस्स जइ तुंडं रुहिरमादी-  
लितं खोडादिगु फुसति, तो असज्झायं । अहवा - लेच्छारियतुंडो वसहि-आसण्णे चिट्ठइ तहवि असज्झाइयं ।

“इहरह” त्ति - आहारिएण हे चोदग ! असज्झातियं ण भवति, जम्हा तं आहारियं वंतं  
अवंतं वा आहारपरिणामेन परिणयं, आहारपरिणयं च असज्झाइयं ण भवति, अण्णं परिणामतो मुत्त-  
पुरिसादि वा ॥६१०८॥ तेरिच्छं गतं ।

इदार्णि <sup>३</sup>माणुस्सयं -

माणुस्सयं चतुद्धा, अट्ठिं मोत्तूण सत्तमहोरत्तं ।

परियावण्णविवण्णे, सेसे तिग सत्त अट्ठेव ॥६१०९॥

तं माणुस्सयं असज्झायं चउव्विहं - चम्मं मंसं रुहिरं अट्ठिं च । अट्ठिं मोत्तुं सेसस्स तिविधस्स इमो  
परिहारो - खेततो हत्थसतं, कालतो अहोरत्तं, जं पुण सरीरातो चेव वणादिमु आगच्छति परियावण्णं  
विवण्णं वा तं असज्झाइयं ण भवइ । ‘परियावण्णं’ जहा रुहिरं चेव पूयपरिणामेन ठियं, विवण्णं खदिर-  
कल्लसमाणं रसगादिगं च, सेसं असज्झाइयं भवति । अहवा - सेसं अगारी रिउसंभवं तिणिण दिणा, वीयायाणे  
वा - जो सावो सो सत्त वा अट्ठ वा दिणे असज्झाइयं भवति ॥६१०९॥

वीयायाणे कहां सत्त अट्ठ वा ?, उच्यते -

रत्तुककडाओ इत्थी, अट्ठदिणे तेण सुक्कऽहिते ।

तिण्ह दिणाण परेणं, अणोउतं तं महारत्तं ॥६११०॥

णिसेगकाले रत्तुकडयाए इत्थियं पसवेइ तेण तस्स अट्ठ दिणा परिहरियव्वा, सुक्काधिगततणतो  
पुरिसं पसवति तेण तस्स सत्त दिणा । जं पुण इत्थीए तिण्हं रिउदिणाणं परेण भवति तं सरोगजोणित्थीए  
महारत्तं भवति । तस्सुस्सगं काउं सज्झायं करेति । एस रुहिरे विही ॥६११०॥

जं वुत्तं <sup>४</sup>अट्ठिं मोत्तूणं ति, तस्स इदार्णि विधी इमो भण्णति -

दंते दिट्ठे विगिंचण, सेसट्ठी वारसेव वरिसाणि ।

भामितसुद्धे सीयाण पाणमादी य रुद्धरे ॥६१११॥

जति दंतो पडितो सो पयत्ततो गवेसियव्वो, जइ दिट्ठो तो हत्थसतातो परं विगिंचयव्वो । अह  
ण दिट्ठो तो उग्घाडकाउस्सगं काउं सज्झायं करेति । सेसट्ठितेसु जीवमुक्कदिणारंभातो हत्थसतज्जभंतरट्ठितेसु  
वारस वरिसे असज्झातियं ॥६०११॥

“‘भामितसुद्धे सीताण’ त्ति अस्य व्याख्या -

सीताणे जं दडुं, ण तं तु मोत्तुं अणाह णिहताइं ।

आडंवरं य रुद्धे, मादिसु हेड्डुड्डिया वारा ॥६११२॥

पुव्वद्धं, “सीयाणि” त्ति सुसाणे जाणि चियगारोविय दड्डाणि ण तं तु अट्टितं असज्झायं करेति, जाणि पुण तत्थ अणत्थ वा अणाहकलेवराणि पण्डित्तियाणि, सणाहाणि वा इंधणादिअ भावे ‘णिहय’ त्ति-णिक्खिया ते असज्झातियं करेति, “पाण” त्ति - मातंगा तेसि आडंवरं जक्खो त्तिरिमिक्को वि मण्णति तस्स हेट्ठा सज्जोमतअट्ठीणि ठविज्जंति, एवं रुद्धरे, मातिघरे । कालतो वारस वरिसा । खेततो हत्थसतं परिहरणिज्जा ॥६११२॥

आवासितं व वूढं, सेसे दिट्ठम्मि मग्गण विवेगो ।

सारीरगामपाडग, साहीउ ण णीणियं जाव ॥६११३॥

एतीए पुव्वद्धस्स इमा विभासा -

असिवोभाघयणेसुं, वारस अविसोहितम्मि ण करेति ।

‘भामियवूढे कीरति, आवासितमग्गिते चेव ॥६११४॥

जं सीयाणट्ठाणं जत्थ वा असिवओममताणि वूढाणि छड्डियाणि । आघयणं त्ति - जत्थ वा मन्नासंगाम-मता वूढ, एतेसु ठाणेषु अविसोधीए कालतो वारस वरिसा, खेततो हत्थसतं परिहरंति सज्झायं ण करेतीत्यर्थः अह एते ठाणा दवणिगमादिणा दड्डा । उदगवाहो वा तेण वूढो, गामणयरे वा आवासतेण अप्पणो घरट्ठाणा सोधिता । ‘सेसं’ त्ति जं गिहीहिं न सोधितं पच्छा तत्थ साधू ठिता अप्पणो वसही समतेण मग्गिता जं दिट्ठं तं विणिचित्ता अदिट्ठे वा तिणिणि दिणे उग्घाड-उत्सगं करेता असडभावा सज्झायं करेइ ॥६११४॥

“‘सारीरगाम’ पच्छद्धं इमा विभासा -

डहरगामम्मि मते, ण करेती जा ण णीणियं होइ ।

पुरगामे व महंते, वाडगसाही परिहरंति ॥६११५॥

“सारीरं” त्ति मयसरीरं तं जाव डहरमाणे ण णिप्फेडियं ताव सज्झायं ण करेति । अह णगरे महंते वा गामे तत्थ वाडगसाधीतो वा जाव ण णिप्फेडितं ताव सज्झायं परिहरंति । मा लोगो निददुवखेत्ति उट्ठाहं करेज्जा ॥६११५॥

चोदगाह - “साहुवसहिसमीवेण मतसरीरस्स जइ पुफवत्थादि किंचि पडति तं असज्झायं ?”

आचार्य आह -

णिज्जंतं मोत्तूणं, परवयणे पुप्फमादिपडिसेहो ।

जम्हा चउप्पगारं, सारीरमओ ण वज्जेति ॥६११६॥

मतसरीरं उमओ वसधीए हत्थसयवमंतरत्थं जाव निज्जइ ताव तं असज्झाडियं, सेसा परवयण-मणिग्या पुप्फाहं पडिसेहेयव्वा ते असज्झाडियं न भवन्ति । जम्हा सारीरमसज्झाडियं चउव्विहं - सोणियं मंसं अट्ठियं चम्मं च । अओ तेसु सज्झाओ न वज्जणिज्जो ॥६११६॥

एसो उ असज्झाओ, तच्चज्जियभातो तत्थिमा मेरा ।

कालपडिलेहणाए, गंडगमरुएण दिट्ठंतो ॥६११७॥

एसो संजमघातादितो पंचविहो असज्झाओ भणितो, तेहि चैव पंचहि वज्जितो सज्झाओ भवति । तत्थ त्ति तम्मि सज्झायकाले इमा वक्खमाणा मेर त्ति समाचारी - पडिवकमित्तु जाव वेला ण भवति ताव कालपडिलेहणाए कयाए गहणकाले पत्ते गंडगदिट्ठंतो भविस्सति । गहिते सुद्धे काले पट्टवणवेलाए मरुगदिट्ठंतो भविस्सति ॥६११७॥

स्याद्बुद्धिः किमर्थं कालग्रहणं ?, अत्रोच्यते -

पंचविहमसज्झायस्स जाणणट्ठाए पेहए कालं ।

चरिमा चउभागवसे, सियाइ भूमिं ततो पेहे ॥६११८॥

पंचविहं संजमघायाइयं १जइ कालं अघेतु सज्झायं करेति तो चउलहुगा, तम्हा कालपडिलेहणाए इमा सामाचारी-दिवसचरिमपोरिसीए चउभागवसेसाते कालग्रहणभूमीओ ततो पडिलेहेय्वा । अहवा - ततो उच्चारपासवणकालभूमी य ॥६११८॥

अहियासिया तु अंतो, आसण्णे मज्झ दूर तिणिण भवे ।

तिण्णेव अणहियासिय, अंतो २छच्छच्च वाहिरतो ॥६११९॥

अंतो णिवेसणस्म तिणिण उच्चारअधियासियथंडिले आसण्ण-मज्झ-दूरे पडिलेहेति, अणधियासिय-थंडिले वि अंतो, एवं चैव तिणिण पडिलेहेति, एवं अंतो थंडिल्ला । बाहि पि णिवेणस्स एवं चैव छ भवन्ति एत्थ अधियासियदूरत्तरे अणधियासिया आसण्णतरे कायव्वा ॥६११९॥

एमेव य पासवणे, वारस चउवीसतिं तु पेहिता ।

कालस्स य तिणिण भवे, अह सूरु अत्थमुवयाति ॥६१२०॥

पासवणे वि एतेणैव कमेणं वारस, एते सव्वे चउवीसं । अतुरियमसंभंतं उवउत्तो पडिलेहिता पच्छा तिणिण कालग्रहणथंडिले पडिलेहेति । जहण्णेणं हत्थंतरिते । "अह" त्ति अणंतरं थंडिलपडिलेहजोगाणंतर-मेव सूरु अत्थमेति, ततो आवस्सगं करेति ॥६१२०॥

तस्सिमो विधी -

अह पुण णिव्वाघायं, आवासंतो करेति सव्वे वि ।

सट्ठादिकहणवाघाततो य पच्छा गुरु ठंति ॥६१२१॥

अहमित्यनंतरं सूरुत्थमणाणंतरमेव आवस्सगं करेति, पुनर्विशेषणे दुविधमावस्सगकरणं विसेसेति-णिव्वाघातिमं, वाघातिमं च । जइ णिव्वाघातं तो सव्वे गुरुसहिता आवस्सयं करेति । अह गुरु सड्ढेसु धम्मं कहेति तो आवस्सगस्स साहहि सह करणिज्जस्स वाघातो भवति, जम्मि वा काले तं करणिज्जं आसितस्स वाघातो भवति, ततो गुरु णिसज्जघरो य पच्छा चरित्ताइयारजाणट्ठा उस्सगं ठायंति ॥६१२१॥

सेसा उ जहासत्ती, आपुच्छित्ताण ठंति सट्ठाणे ।

सुत्तत्थसरणहेतुं, आयरिए ठितम्मि देवसियं ॥६१२२॥



सेसा साधू गुरुं आपुच्छिता गुरुद्वारास्त मग्नतो णासणदूरे अहारातिणि ए जं जस्स ठाणं तत्थ पडिक्कमंताण इमा ठवणा ।

गुरु पच्छा ठायंतो भज्जेण गंतुं सट्ठाणे ठायति ।

जे वामतो ते अणंतरं सव्वेण गंतुं सट्ठाणे ठायंति ।

जे दाहिणतो अणंतरं सव्वेण तं च अणागयं ठायंति ।

मुत्तत्त्वसग्गहेसं तत्थ य पुब्बामेव ठायंता करेमि भंते सामातियमिति सुत्तं करेति ।

जाहे गुरु पच्छा सामाइयं करेता वोसिरामि त्ति भणेता ठिता उस्सग्गं ताहे पुव्वद्विया देवसिया-  
इयारे चित्तेति ।

अण्णे भणंति — जाहे गुरु सामाइयं करेति, ताहे पुव्वद्विता पि तं सामाइयं करेति । सेसं कण्ठ्यं ॥६१२२॥

जो होज्ज उ असमत्थो, बालो बुद्धो गिलाण परितंतो ।

सो विकहाए विरहिओ, ठाएज्जा जा गुरु ठंति ॥६१२३॥

परितंतो पाहुणगादि सो वि सज्जायज्जाणपरो अच्छइ, जाहे गुरु ठंति ताहे ते वि बालादिया-  
ति ॥६१२३॥

एतेण विहिणा —

आवासग कातूणं, जिणोवदिट्ठं गुरुवएसेणं ।

तिणिण थुई पडिलेहा, कालस्स इमो विही तत्थ ॥६१२४॥

जिणेहि गणघराणं उवदिट्ठं, ततो परंपरणेण जाव अमहं गुरुवएसेण आगतं, तं काउं आवस्सगं अंते  
तिणिण थुतीतो करेति । अहवा — एगा एगसिलोइया, वितिया विसिलोइया, ततिया तिसिलोइया, तेसि समत्तीए  
कालपडिलेहणविची इमा कायव्वा ॥६१२४॥

अच्छउ ताव विची, इमो कालभेदो ताव बुच्चति —

दुविहो य होति कालो, बाधातिम एतरो य णायव्वो ।

बाधाओ धंघसालाए घट्टणं सड्ढकहणं वा ॥६१२५॥

पुव्वद्वं कंठं । जो अतिरित्तवसही बहुकप्पपडिसेविता य सा धंघसाला, एत्तो णितअत्तिताणं घट्टणं  
पडणादिबाधातदोसा सड्ढकहणेण वेलातिक्कमदोसा ॥६१२५॥

एवमादि —

बाधाते ततिओ सिं, दिज्जति तस्सेव ते णिवेदेंति ।

णिव्वाधाते दोणिण उ, पुच्छंति उ काल वेच्छामो ॥६१२६॥

तम्मि बाधातिने दोणिण जे कालपडिलेहणा णिगच्छंति तेसि ततिओ उवज्जायादि दिज्जति । ते  
कालगाहिणो आपुच्छग संदिसावग कालपवेयणं च सव्वं तस्सेव करेति, एद्व गंडगदिट्ठतो न भवति । इयरे  
उवउत्ता चिट्ठति । मुद्धे काले तत्थेव उवज्जायस्स पवेयंति, ताहे डंडधरे बाहि कालपडियरगो चिट्ठइ, इयरे —  
दुयगावि अंतो पविसंति, ताहे उवज्जायस्स समीवे सव्वे जुगवं पट्टवेंति, पच्छा एगो डंडधरो अतीति, तेण  
पट्टविते सज्जायं करेति ॥६१२६॥



निन्वाधातो पच्छद्वं अस्त्यार्थः -

आपुच्छण कितिकम्मे, आवासित खलिय पडिय वाघाते ।

इंदिय दिसाए तारा, वासमसज्झाइयं चेव ॥६१२७॥

निन्वाधाए दोण्णि जणा गुरुं पुच्छति - कालं धेच्छामो, गुरुणा अब्भणुणा, कितिकम्मं ति वंदणं दाउं डंडगं धेतुं उवउत्ता आवस्सियमासज्जं करेत्ता पमज्जंता य निगगच्छति । अंतरे य जइ पक्खलंति पडंति वा वत्थादि वा विलगति कितिकम्मादि किंचि वित्तहं करेति, गुरु वा किंचि पडिच्छंतो वित्तहं करेति तो कालवाधातो । इमा कालभूमीए पडियरणविधी - इदिहि उवउत्ता पडियरंता । “दिसं” ति जत्थ चउरोवि दिसाओ दिससंति, उडुम्मि तिण्णि तारा जति दीसंति । जइ पुण अणुवउत्ता अणिट्ठो वा इंदियविसयो । दिस ति दिसामोहो दिसाओ तारागाओ वा ण दीसंति, वासं वा पडति असज्झाइयं च जातं, तो कालवधो ॥६१२७॥

किंच -

जति पुण गच्छंताणं, छीतं जोतिं च तो नियत्तेति ।

निन्वाधाते दोण्णि उ, अच्छंति दिसा निरिक्खंता ॥६१२८॥

तेसिं चेव गुरुसमिवातो कालभूमी गच्छंताणं जं अंतरे जति छीयं जोती वा फुसइ तो नियत्तंति, एवमादि कारणेहि अब्वाहता ते निन्वाधातेण दो वि कालभूमीए गता संडासगादि विधीए पमज्जिता निस्सणा उवट्ठिया वा एक्केक्को दो दिसाओ निरिक्खंता अच्छंति ॥६१२८॥

किं च तत्थ कालभूमीए ठिता -

सज्झायमचितेता, कणगं दट्ठूण तो नियट्ठंति ।

पत्तेय डंडधारी, मा बोलं गंडए उवमा ॥६१२९॥

तत्थ सज्झायं अकरंता अच्छंति, कालवेलं च पडियरंता । जइ गिम्हे तिण्णि, सिसिरे पंच, वासासु सत्त कणगा पिक्खेज्जा तहा वि नियत्तंति । अह निन्वाधाएण पत्ता कालगहणवेलाए ताहे जो डंडधारी सो अंतो पविसित्ता साहुसमीवे भणाति - बहुण्डिपुणा कालवेला, मा बोलं करेह । तत्थ गंडगोवमा पुव्वभणिया कज्जति ॥६१२९॥

गंडघोसिते बहुएहि सुतम्मी सेसगाण दंडो उ ।

अह तं बहूहिं न सुयं, तो डंडो गंडए होति ॥६१३०॥

जहा लोगे गोमादिगंडगेणाघोसिए बहूहिं सुए थेवेसु असुए गोमादि किच्चं अकरंतो सुदंडो भवति, बहूहिं असुए गंडगस्स डंडो भवति । तहा इहं पि उपसंहारेयव्वं ॥६१३०॥

ततो डंडधरे निग्गते कालग्गाही उट्ठेइ, सो कालग्गाही इमेरिसो -

पियधम्मो दढधम्मो, संविग्गो चेव वज्जभीरू य ।

खेयण्णो य अभीरू, कालं पडिलेहए साहू ॥६१३१॥

पियधम्मो दढधम्मो य । एत्थ चउभंगो, तत्थ इमो पढमो भंगो - निच्चं संसारभउविवगचित्तो संविग्गो,

वज्जं-पावं तस्स भीरु वज्जभीरु, जहा तं ण भवति तहा जयति, एत्थ कालविहिजाणगो खेयणो, सत्तमंतो  
अभीरु एरिसो साधू कालं पडिलेहेड, पडिजगति - गृण्हातीत्यर्थः ॥६१३१॥

ते य तं वेलं पडियरेंता इमेरिसं कालं ति -

कालो संभा य तहा, दो वि समप्पेंति जह समं चेव ।

तह तं तुलेति कालं, चरिमदिसिं वा असज्जायं ॥६१३२॥

संभाए धरेंतीए कालगहणमाढत्तं, तं कालगहणं संभाए जं सेसं एते दो वि जहा समं समप्पेंति  
तहा तं कालवेलं तुलेंति, अहवा - तिसु उत्तरादियासु संभं गेण्हति । 'चरिम' ति अवरा तीए ववगय-  
संभाते वि गिण्हति न दोसो ॥६१३२॥

सो कालग्गाही वेलं तुलेत्ता कालभूमीओ संदिसावणनिमित्तं गुरुपादमूलं गच्छति ।

तत्थ इमा विधी -

आउत्तपुण्वमणिते, अणपुच्छा खलिय पडिय वाधाते ।

भासंतमूढसंक्रिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ॥६१३३॥

जहा णिगच्छमाणो आउत्तो णिगतो तहा पविसंतो वि आउत्तो पविसति, पुव्वनिगगतो चेव जइ  
अणापुच्छाए कालं गेण्हति पविसंतो वि जति खलति पडति वा . एत्थ वि कालुवधातो । अहवा "वाधाए" ति  
किरियासु वा मूढो अभिधातो लेटहुइट्टालादिणा । भासंतमूढपच्छद्वं - सांन्यासिकं उवरि वक्ष्यमाणं, अहवा - एत्थ  
वि इमो अत्यो भाणियव्वो - वंदणं देंतो अणं भासंतो देति वंदणं दुओ ण ददाति, किरियासु वा मूढो, आवत्तादिसु  
वा संका - "कया ण कय" ति, वंदणं देंतस्स इंदियविसओ वा अमणुण्णमागओ ॥६१३३॥

णिसीहिया णमोक्कारे, काउस्सग्गे य पंचमंगलए ।

कितिकम्मं च करेत्ता, वित्तिओ कालं च पडियरती ॥६१३४॥

पविसंतो तिणि णिसीहियाओ करेति, णमो स्रमासमणाणं ति णमोक्कारं करेति, इरियावहियाए  
पंच उस्सासकालियं उस्सगं करेति, उस्सारिए णमो अरहंताणं ति पंचमंगलं चेव कड्ढति, ताहे कितिकम्मं  
वारसावत्तं वंदणं देति, भणति थ - संदिसह पादोसियं कालं गेण्हामो, गुरुवयणं गेण्हहति । एवं जाव कालग्गाही  
संदिसावेत्ता आगच्छति । ताव वित्तिउ ति डंडधरो सो कालं पडियरेति ॥६१३४॥

पुणो पुव्वुत्तेण विधिणा णिगतो कालग्गाही -

थोवावसेसियाए, संभाए ठाति उत्तराहुत्तो ।

चउवीसग दुमपुप्फिय, पुव्वि य एक्केक्क य दिसाए ॥६१३५॥

उत्तराहुत्तो उत्तराभिमुखो डंडवारीवि वामपासे रिजु तिरियं डंडवारी पुव्वाभिमुखो ठायति  
कालगहणनिमित्तं च अट्ठुत्तास काउस्सगं करेति, अणो पंचूसासियं करेति, उस्सारिए चउवीसत्य दुमपुप्फियं  
सामणपुव्वयं च, एए तिणि अब्बलिए अणुपेहेत्ता पच्छा पुव्वा एए चेव तिणि अणुपेहेड, एवं दक्खिणाए  
॥६१३५॥

अवराए य गेण्हंतस्स इमे उवधाया जाणियव्वा -

विंदू य छीय परिणय, सगणे वा संकिए भवे तिण्हं ।

भासंत मूढ संक्रिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ॥६१३६॥

गेण्हंतस्स जइ अंगे उदग विदू पडेज, अप्पणा परेण वा जति छीतं, अज्झयणं कड्डंतस्स जति अणो भावो परिणतो अनुपयुवतेत्यर्थः । सगणे सगच्छे तिण्हं साधूणं गज्जिए संका एवं विज्जुतादिसु ॥६१३६॥

‘भासंत पच्छदस्स पूर्वन्यस्तस्य इमस्य च विभासा -

मूढो य दिसज्झयणे, भासंतो वा वि गेण्हति न सुज्झे ।

अण्णं च दिसज्झयणं, संकंतोऽणिट्ठविसए य ॥६१३७॥

दिसामोहो संजातो । अहवा - मूढो दिसं पडुच्च अज्झयणं वा । कहं ?, उच्यते - पढमे उत्तराहु-  
त्तेण ठायव्वं सो पुण पुव्वहुत्तो पढमं ठायति । अज्झयणेसु वि पढमं चउवीसत्थयो सो पुण मूढत्तणओ दुमपुप्फियं  
सामन्नपुव्वियं वा कड्डति, फुडमेवं जणाभिलावेण भासंतो कड्डइ, वुड्डुडेतो वा गेण्हइ, एवं ण सुज्झइ ।  
“संकंतो” ति पुव्वं उत्तराहुत्तेण ठाउं ततो पुव्वाहुत्तेण ठायव्वं, सो पुण उत्तराओ अवराहुत्तो ठायति,  
अज्झयणेसु वि चउवीसत्थयाओ अण्णं चेव खुड्डियायारकहादि अज्झयणं संकमति, अहवा - संकति किं  
अमुगीए दिसाए ठितो “ण व” ति ?, अज्झयणे वि किं कड्डियं ण व ति ? “इंदियविसए य अमणुणे” ति  
अणिट्ठो पत्तो, जहा सोइंदिएण रुदितं वंसरेण वा अट्टहासं कृतं, रूवे विभीसगादिविकृते रूवं दिट्ठं, गंधे कलेव-  
रादिगंधो, रसस्तत्रैव, स्पृशे अग्निज्वालादि, अहवा - इट्ठेसु रागं गच्छइ, अणिट्ठेसु इंदियविसएसु दोसं,  
एवमादि उवघायवज्जियं कालं घेतुं कालणिवेदणाए गुरुसमीवं गच्छंति ॥६१३७॥

तस्स इमं भण्णति -

जो वचंचंतम्मि विधी, आगच्छंतम्मि होति सो चेव ।

जं एत्थं णाणत्तं, तमहं वोच्छं समासेणं ॥६१३८॥

एसा गाहा भद्वाहुकया ।

एईए अतिदेसे कए वि सिद्धसेणखमासमणो पुव्वदस्स भणियं अतिदेसं वक्खाणेति -

आवस्सिया णिसीहिय, अकरण आवडण पडणजोतिक्खे ।

अपमज्जिते य भीते, छीए छिण्णे व कालवहो ॥६१३९॥

जति णितो आवस्सियं ण करेति पविसंतो वा णिसीहियं, अहवा - अकरणमिति आसज्जं न करेति  
कालभूमीतो गुरुसमीवं पट्टियस्स जति अतरेण साणमज्जारादी छिदति, सेसा पदा पुव्वभणिता । एतेसु सव्वेसु  
कालवधो भवति ॥६१३९॥

गोणादिकालभूमी, व होज्ज संसप्पगा व उट्टेज्जा ।

कविहसिय विज्जु गज्जिय, जक्खालित्ते य कालवहो ॥६१४०॥

पढमयाए गुरुं आपुच्छित्ता कालभूमिं गतो, जति कालभूमीए गोणं णिसण्णं संसप्पगा वा उट्टिता  
पेक्खेज्ज तो णियत्तए, जइ कालं पडिलेहंतस्स गेण्हंतस्स वा णिवेदणाए वा गच्छंतस्स कविहसियादी, एएहि  
कालवधो भवति, कविहसितं णाम आगासे विकृतरूपं मुखं वाणरसरिसं हासं करेज्ज, सेसा पदा गयत्था ॥६१४०॥

‘कालग्गाही णिव्वाघाएण गुरुसमीवमागओ -

इरियावहिया हत्थंतरे वि मंगलनिवेदणं दारे ।

सव्वेहि वि पट्ठविए, पच्छा करणं अकरणं वा ॥६१४१॥

जइ वि गुरुस्स हृत्यंतरमित्ते कालो गहितो तद्वावि कालपवेदणाए इरियान्हिया पडिक्कमियव्वा, पंचुत्सासमेत्तं कालं उस्सगं करेइ, उस्सारिए वि पंचमंगलं ठियाण कड्ढइ, ताहे वड्ढं दाउं कालं निवेदेति । सुद्धो पाउसिगकाले ति ताहे डंडधरं मोत्तुं सेसा सव्वे जुगवं पट्टवेंति ॥६१४१॥

कि कारणं ?, उच्यते पुष्पं 'जम्मरुगदिट्ठं' तो ति —

सन्निहिताण वडारो, पट्टवित पमादि णो दए कालं ।

वाहिट्ठिते पडिचरण, पविसति ताहे य दंडधरो ॥६१४२॥

वडो वंटगो विभागो एगट्ठं । आरिओ आगारितो सारितो वा एगट्ठं । वडेण आरितो वडारो, जहा सो वडारो सण्णिहियाण मरुताण लवमति न परोक्खस्स तहा देसकहादिपमादिस्स पच्छा कालं ण देंति ॥६१४२॥

“वाहिट्ठिते” पच्छद्धं कंठं । “सव्वेहि वि” पच्छद्धं, अस्य व्याख्या —

पट्टवित वंदिते ताहे पुच्छति केण किं सुतं भंते ! ।

ते वि य कहंति सव्वं, जं जेण सुतं च दिट्ठं वा ॥६१४३॥

डंडधरेण पट्टविते वंदिए एवं सव्वेहि वि पट्टविते पुच्छा भवति — “अज्जो केण किं सुयं दिट्ठं वा ?” दंडधरो पुच्छति — अण्णो वा । ते वि सव्वं कहेंति, जति सव्वेहि भणियं — “ण किंचि दिट्ठं सुयं वा” तो सुद्धं, करेति सज्जायं । अह एगेण वि फुडं ति विज्जमादि दिट्ठं, गज्जितादि वा सुतं, ततो असुद्धे ण करेति ॥६१४३॥

अह संकितो —

एक्कस्स दोण्ह वा संकितम्मि कीरइ ण कीरई तिण्हं ।

सगणम्मि संकिते पर-गणम्मि गंतुं न पुच्छंति ॥६१४४॥

जति एगेण संदिद्धं सुतं वा तो कीरति सज्जाओ, दोण्ह वि संदिद्धे कीरइ, तिण्हं विज्जुमादिसंदेहे ण कीरइ सज्जातो, तिण्हं अण्णोणसंदेहे कीरइ, सगणसंकिते परगणवयणतो सज्जाओ ण कायव्वो । खेत्तविभागेण तेसिं चैव असज्जाइयसंभवो ॥६१४४॥

“जं अत्थ णाणत्तं तमहं वोच्छं समासेण” ति अस्यार्थः —

कालचउक्के णाणत्तगं तु पादोसियाए सव्वे वि ।

समयं पट्टवयंती, सेसेसु समं व विसमं वा ॥६१४५॥

एयं सव्वं पादोसिकाले भणियं । इदाणि चउसु कालेसु किंचि सामणं, किं चि विसेसियं भणामि-पादोसिए डंडधरं एक्कं मोत्तुं सेसा सव्वे जुगवं पट्टवेंति । सेसेसु तिसु अड्ढरत्त वेरत्तिय पाभाति ए य समं वा विसमं वा पट्टवेंति ॥६१४५॥

कि चान्यत् —

इंदियमाउत्ताणं, हणंति कणगा उ तिणिण उक्कोसं ।

वासासु य तिणिण दिसा, उदुवद्धे तारगा तिणिण ॥६१४६॥

सुदृढ इन्द्रियउवत्तेहि सव्वकाले पडिजागरियव्वा घेतव्वा । कण्णोसु कालसंखाकओ विसेसओ ? भण्णति - तिण्णि १सिग्घमुवहणंति त्ति तेण उवकोसं भण्णति, चिरेण उवघातो त्ति तेण सत्त जहणो, सेसं मज्झिमं ॥६१४६॥

अस्य व्याख्या -

कणगा हणंति कालं, ति पंच सत्तेव धिसिसिरवासे ।

उक्का उ सरेहागा, पगासजुत्ताव नायव्वा ॥६१४७॥

कणगा गिम्हे सिसिरे पंच वासासु सत्त उवहणंति, उक्का एक्का चेव उवहणति कालं कणगो सण्हरेहो पगासविरहितो य, उक्का महंतरेहा पगासकारिणी य, अहवा - रेहविरहितोवि फुलिंगो पहासकारो उक्का चेव ॥६१४७॥

“वासासु य तिण्णि दिसा” अस्य व्याख्या -

वासासु व तिण्णि दिसा, हवन्ति पाभातियम्मि कालम्मि ।

सेसेसु तिसु वि चउरो, उडुम्मि चतुरो चतुदिसिं पि ॥६१४८॥

जत्थ ठितो वासकाले तिण्णि विदिसा पेक्खइ, तत्थ ठितो पभातियं कालं गेण्हति, सेसेसु तिसु वि कालेसु वासासु चेव । जत्थ ठितो चउरो दिसाविभागे पेक्खति तत्थ ठितो गेण्हइ ॥६१४८॥

“उडुवद्धे तारगा तिण्णि” ति अस्य व्याख्या -

तिसु तिण्णि तारगाओ, उडुम्मि पाभाइए अदिट्ठे वि ।

वासासु अतारागा, चउरो छन्ने निविट्ठो वि ॥६१४९॥

तिसु कालेसु पाउसिते अडुरत्तिए य जहण्णेण जति तिण्णि तारगा पेक्खंति तो गेण्हंति, उडुवद्धे चेव अब्भादिसंथडे जति वि एक्कं पि तारं ण पेक्खंति तहा वि पभातियं कालं गेण्हंति, वासाकाले पुण चउरो वि काला अब्भसंथडे तारासु अदीसंतीसु गिण्हंति ॥६१४९॥

“छण्णे निविट्ठो वि” ति अस्य व्याख्या -

ठागासति बिंदूसु व, गेण्हति विट्ठो वि पच्छिमं कालं ।

पडियरति बहिं एक्को, गेण्हति अंतठिओ एक्को ॥६१५०॥

जति वसहिस्स बाहिं कालगाहिस्स ठागो णत्थि ताहे अंतो छण्णे उद्धट्ठितो गेण्हति, अह उद्धट्ठियस्स वि अंतो ठाओ णत्थि, ताहे अंतो छण्णे चेव निविट्ठो गेण्हति । बाहिं ठितो य एक्को पडियरति, वासविट्ठसु पडंतीसु गियमा अंतो ठिओ गिण्हइ, तत्थ वि उद्धट्ठिओ निसण्णो वा, नवरं - पडियरगो वि चेव ठिओ पडियरइ । एस पाभाइए गच्छुवग्गहट्ठा अववायविही, सेसा काला ठागासति न घेतव्वा, आइण्णओ वा जाणियव्वं ॥६१५०॥

कस्स कालस्स कं दिसं अभिमुहेहिं पुव्वं ठायव्वमिति भण्णति -

पादोसिय अडूरत्ते, उत्तरदिसि पुव्वपेहए कालं ।

वेरत्तियम्मि भयणा, पुव्वदिसा पच्छिमे काले ॥६१५१॥

पादोसिए अद्वरत्तिए णियमा उत्तरमुहो ठाति, वेरत्तिए भयणि ति इच्छा, उत्तरमुहो पुव्वमुहो वा, पाभात्तिए पुव्वं - णियमा पुव्वमुहो ॥६१५१॥

इदाणि कालग्गहणं पमाणं भण्णति -

कालचउक्कं उक्कोसएण जहण्णेण तिगं तु बोधव्वं ।

वित्तियपदम्मि दुगं तु, मातिट्ठाणा विमुक्काणं ॥६१५२॥

उत्सग्गे उक्कोसेण चउरो काला धेप्पंति, उत्सग्गे चव - जहण्णेण तिगं भण्णति । “वित्तियपदं” ति - अहवादो, तेण कालदुगं भवति, अमायाविनः कारणे अगृह्णानस्येत्यर्थः । अहवा - उक्कोसेण चउक्कं भण्णति । अहवा - जहण्णे हाणिपदे तिगं भवति, एकम्मि अगहिते इत्यर्थः । वित्तिए हाणिपदे दुगं भवति, द्वयोरग्रहणादित्यर्थः । एवं अमायाविणो तिण्णि वा अगेहंतस्स एक्को भवति । अहवा - मायाविमुक्तस्य कारणे एकमपि कालं अ गृह्णतः न दोषः, प्रायश्चित्तं वा न भवति ॥६१५२॥

कहं पुण कालचउक्कं ?, उच्यते -

फिडितम्मि अद्वरत्ते, कालं धेत्तुं सुवन्ति जागरिता ।

ताहे गुरु गुणंती, चउत्थे सव्वे गुरु सुवन्ति ॥६१५३॥

पादोसियं कालं धेत्तुं पोस्सिं काउं पुण्णपोरिस्सीए सुत्तपाढी सुवन्ति, अत्यन्तितगा उक्कालियपाट्ठिणो य जागरंति जाव अद्वरत्तो । ततो फिडिए अद्वरत्ते कालं धेत्तुं ते जागरिता सुवन्ति, ताहे गुरु उट्ठिता गुणंति जाव चरिमो जामो पत्तो । चरिमे जामे सव्वे उट्ठिता वेरत्तियं धेत्तुं सज्जयं करेन्ति ताहे गुरु सुवन्ति । पत्ते पाभात्तिते काले जो पभात्तियकालं धेच्छिद्दिति सो कालस्स पडिक्कमिउं पाभाइयकालं गेण्हइ, सेसा कालवेलाए कालस्स पडिक्कमन्ति, तयो आवस्सयं करेन्ति । एवं चउरो काला भवन्ति ॥६१५३॥

तिण्णि कहं ?, उच्यते - पाभात्तिते अगहिते सेसा तिण्णि भवे ।

अहवा -

गहितम्मि अद्वरत्ते, वेरत्तिय अगहिते भवे तिण्णि ।

वेरत्तिय अद्वरत्ते, अतिउवओगा भवे दुन्नि ॥६१५४॥

वेरत्तिए अगहिए सेसेसु गहितेसु तिण्णि, अद्वरत्तिए वा अगहिते तिण्णि, पादोसिए वा अगहिते तिण्णि ।

दोण्णि कहं ?, उच्यते ।

पादोसियअद्वरत्तिएसु गहिएसु सेसेसु अगहिएसु दोण्णि भवे ।

अहवा - पादोसिए वेरत्तिए य गहिते दोण्णि ।

अहवा - पादोसितपाभात्तितेसु गहिएसु सेसेसु अगहिएसु दोण्णि, एस कप्पो विक्कप्पे । पादोसिएण चव अणुवह्तेण उवओगतो सुपडिजग्गिएण सव्वकाले पढंति ण दोसो ।

अहवा - अद्वरत्तियवेरत्तियगहिते दोण्णि ।

अववा - अद्वरत्तियपाभात्तिएसु गहितेसु दोण्णि ।

अहवा - वेरत्तियपाभात्तिएसु दोण्णि । जया एक्को ततो अण्णतरो गेण्हति ।

कालचउक्ककारणा इमे - कालचउक्कगहणं उत्सग्गतो विही चव ।

अह्वा - पात्रोसिए गहिए उवहते अडुरत्ति घेतुं सज्झायं करेत्ति, तम्मि वि उवहते वेरत्तियं घेतुं सज्झायं करेत्ति, पाभातितो दिवसट्ठा घेतुवो चेव एवं कालचउक्कं दिट्ठं । अणुवहते पुण पाउसिते सुपडि-जग्गिते सव्वरात्ति पढंति, अडुरत्तिएण वि वेरत्तियं पढंति, वेरत्तिएण अणुवहते सुपडिजग्गितेण पाभातियमसुद्धे दिट्ठं दिवसतो वि पढंति ।

कालचउक्के अगहणकारणा इमे - पादोसियं ण गेण्हति, असिवादिकारणतो ण सुज्झति वा, पादो-सिएण वा सुप्पडिजग्गितेण पढंति त्ति ण गेण्हइ, वेरत्तिय कारणतो ण सुज्झति वा पादोसिय अडुरत्तिएण वा पढति त्ति ण गेण्हति, पाभातितं ण गेण्हति, कारणतो ण सुज्झति वा ॥६१५४॥

इदाणि पाभातितकालगहणे विधिपत्तेयं भणामि -

पाभाइतम्मि काले, संचिक्खे तिणिण्छीयरुणाइं ।

परवयणे खरमादी, पावासिय एवमादीणि ॥६१५५॥

पाभातियम्मि काले गहणविधी य ।

तत्थ गहणविधी इमा -

णवकालवेलसेसे, उवग्गहिय 'अट्ठया पडिक्कमते ।

ण पडिक्कमते वेगो, नववारहते धुवमसज्झाओ ॥६१५६॥

दिवसतो सज्झायविरहियाण देसादिकहासंभवे वज्जणट्ठा, मेहावीतराण य पलिभंगवज्जणट्ठा, एवं सव्वेसिमणुग्गहट्ठा णवकालगहणकाला पाभातिए अज्झणुणाया, अतो णवकालगहवेलाहि पाभातियकालगाही कालस्स पडिक्कमति, सेसा वि तं वेलं उवउत्ता चिट्ठंति कालस्स तं वेलं पडिक्कमंति वा ण वा । एगो णियमा ण पडिक्कमइ, जइ छीयरुयादीहि न सुज्झहिंति तो सो चेव वेरत्तिओ पडिग्गहिओ होहिंति त्ति, सो वि पडिक्कतेसु गुरुस्स कालं वेदिता अणुदिए सूरिए कालस्स पडिक्कमते, जति य वेण्णमाणो णववारा उवहओ कालो तो णजति जहा धुवमसज्झाइयमत्तिय, न करेत्ति सज्झायं ॥६१५६॥

नववारगहणविधी इमो ।

“संचिक्ख तिणिण्छीयरुणाणि” त्ति अस्य व्याख्या -

एक्केक्को तिणिण् वारा, छीतादिहतम्मि गेण्हती कालं ।

चोदेति खरो बारस, अणिट्ठविसए व कालवहो ॥६१५७॥

एक्कस्स गेण्हतो छीयरुयादिहते संचिक्खति त्ति, गहणा विरमतीत्यर्थः, पुणो गेण्हइ, एवं तिणिण् वारा । ततो परं अण्णो अण्णम्मि थंडिले तिणिण् वारा । तस्स वि उवहते अण्णो अण्णम्मि थंडिले तिणिण् वारा । तिण्हं असतीते दोणिण् जणा णववाराओ पूरेत्ति । दोण्ह वि असतीए एक्को चेव णववाराओ पूरेत्ति । थंडिलेसु वि अववातो तिसु दोसु वा एक्कम्मि वा गेण्हति ।

“परवयणे खरमादि” त्ति अस्य व्याख्या - “चोदेति खरो पच्छद्वं ।

चोदगाह -

“जइ रुदितमणिट्ठे कालवहो ततो खरेण रडिते बारस वरिसे उवहम्मउ । अण्णेसु वि अणिट्ठइदिय-विसएसु एवं चेव कालवहो भवति ॥६१५७॥



आचार्याह—

चोदग माणुसणिट्ठे, कालवहो सेसगाण तु पहारे ।

पावासियाए पुव्वं, पण्णवणमणिच्छे उग्घाडे ॥६१५८॥

माणुससरे अणिट्ठे कालवहो, सेसगतिरिया तेसि जति अणिट्ठो पहारसद्दो सुणिजति तो कालवहो ।

“पावासिय” अस्य व्याख्या — पावासिया पच्छद्वं, जति पभातियकालगहणवेलाए पवासिय-भज्जा पतिणो गुणे संभरंती दिणे दिणे रुवेज्जा तो तीए रुवणवेलाए पुव्वतरो कालो धेत्तव्वो । अह सा पि पच्छसे रुवेज्ज ताहे दिवा गंतुं पण्णविज्जनि, पण्णवणमणिच्छाए उग्घाडणकाउत्सगो कीरंति ॥६१५८॥

एवमादीणि त्ति अस्य व्याख्या —

वीसरसदरुवन्ते, अव्वत्तग-डिंभगम्मि मा गिण्हे ।

गोसे दरपट्टवित्ते, तिगुण च्छीयऽण्णहिं पेहे ॥६१५९॥

अच्चायासेण रुवणं तं वीसरस्सरं भण्णति, तं उवहणते । जं पुण महरसदं धोलमाणं च नोवहणइ । जाव अजंपिरं ताव अव्वत्तं, तं अण्णेणवि विस्सरसरेणं उवहणति, महंतउत्संभररोवणेण वि उवहणति । पाभातिगकालगहणविधी गया, इयाणि पाभातियट्टवण विधी —

“गोसे दर” पच्छद्वं, गोसि त्ति उदिते आदिच्चे दिसावल्लोयं करेत्ता पट्टवेंति । दरपट्टवित्ति त्ति अद्द पट्टवित्ते जति छीयादिणा भगं पट्टवणं अण्णो दिसावल्लोयं करेत्ता तत्थेव पट्टवेंति, एवं तित्तियवाराए वि ॥६१५९॥

दिसावल्लोयकरणे इमं कारणं —

आइण्णपिसित महिगा, पेहंता तिणिण तिणिण ठाणाइं ।

णववार खुते कालो, हतो त्ति पढमाए ण करेंति ॥६१६०॥

आइण्णपिसियं आतिण्णपोगलं तं काकमादीहिं आणियं होज्ज, महिया वा पडिउमारद्धा, एवमादि एगट्ठाणे तयो वारा उवहते हत्थसयत्राहिं अण्णं ठाणं गंतुं पेहति पडिलेहंति पट्टवेंति त्ति वुत्तं भवति, तत्थ वि पुव्वुत्तविहाणेण तिणिण वारा पट्टवेंति । एवं वित्तियट्ठाणे वि असुद्धे ततो वि हत्थसयं अण्णं ठाणं गंतुं तिणिण वारा पुव्वुत्तविहाणेण पट्टवेंति, जइ सुद्धं तो करेंति सज्झायं णववारा । खुत्तादिणा हते णियमा हतो कालो, पढमाए पोरिसीए ण करेंति सज्झायं ॥६१६०॥

पट्टवितम्मि सिलोगे, छीते पडिलेह तिणिण अण्णत्थ ।

सोणित मुत्त पुरीसे, घाणालोगं परिहरिज्जा ॥६१६१॥

जया पट्टवणातो तिणिण दु अज्झयणा सम्मत्ता तदा उवरि एगो सिलोगो कडिद्धव्वो, तम्मि समत्ते पट्टवणे समण्यति ॥६१६१॥ “अत्तवज्जो भातो” वित्तियपादो गतत्थो ।

“सोणिय त्ति अस्य व्याख्या —

आलोगम्मि चिलिमिली, गंधे अण्णत्थ गंतुं पकरेंति ।

वाधातिम कालम्मी, गंडगमरुगा णवरि णत्थि ॥६१६२॥



जत्थ मज्झातियं करेतेहि सोणियचिरिका दिस्संति तत्थ ण करेति सज्झायं, कडगं चिलिमिली वा अंतरे दाउं करेति । जत्थ पुण सज्झायं चेव करेताण मुत्तपुरीसकलेवरादियाण य गंधो, अण्णम्मि वा असुभगंधे आगच्छंते तत्थ सज्झायं ण करेति, अण्णत्थ गंतुं करेति । अण्णं पि बंधणसेहणादि आलोगं परिहरिज्जा । एयं सव्वं णिवाघातकाले भणितं । वाघातिमकाले वि एवं चेव । णवरं - गंडगमरुअदिट्ठंता ण भवन्ति ॥६१६२॥

एतेसामण्णतरे, असज्झाते जो करेइ सज्झायं ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त धिराधणं पावे ॥६१६३॥

चितियागाढे सागारियादि कालगत अहव वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती काउं ॥६१६४॥

दो वि कंठाओ ॥६१६३, ६४॥

जे भिक्खू अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेइ,

करेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अप्पणो सरीरसमुत्थे असज्झातिते सज्झाओ अप्पणा ण कायव्वो, परस्स पुण कायव्वो, परस्स पुण वायणा दायव्वा । महंतेसु गच्छेसु अव्वाउलत्तणओ समणीण य णिच्चोउयसंभवो मा सज्झाओ ण भविस्सति, तेण वायणसुत्ते विही भणति ।

आयसमुत्थमसज्झाइयस्स इमे भेदा -

अव्वाउलाण णिच्चोउयाण मा होज्ज निच्चऽसज्झाओ ।

अदिसा भगंदलादिसु, इति वायणसुत्तसंबंधो ॥६१६५॥

आतसमुत्थमसज्झाइयं तु एगविहं होति दुविहं वा ।

एगविहं समणाणं, दुविहं पुण होति समणीणं ॥६१६६॥

एगविहं समणाणं तं च व्रणे भवति, समणीणं दुविहं व्रणे उदुसंभवे च ॥६१६६॥

इमं व्रणे विहाणं -

धोतम्मि य निप्पगले, बंधा तिण्णेव होंति उक्कोसा ।

परिगलमाणे जयणा, दुविहम्मि य होति कायव्वा ॥६१६७॥

पढमं विय व्रणो हत्थसयस्स बाहिरतो धोविउं णिप्पगलो कतो ततो परिगलंते तिणि बंधा उक्कोसेण करेत्तो वाएति । दुविहं व्रणसंभवं उउयं च, दुविहे वि एवं पट्टगजयणा कायव्वा ॥६१६७॥

समणो उ वणे व भगंदले व बंधेक्कका उ वाएति ।

तह वि गलंते छारं, दाउं दो तिणि वा बंधे ॥६१६८॥

“व्रणे धोयणिप्पगले हत्थसयबाहिरतो पट्टगं दाउं वाएइ, परिगलमाणेण मिण्णे तम्मि पट्टगे तस्सेव उवरिं छारं दाउं पुणो पट्टगं देति वातेति य, एवं ततियं पि पट्टगं बंधेज्जा वायणं च देज्ज, ततो परं परिगलमाणे हत्थसयबाहिरं गंतुं व्रणं पट्टगे य धोविउं पुणो एतेणेव क्रमेण वाएति । अहवा - अण्णत्थ गंतुं पढंति ॥६१६८॥

एमेव य समणीणं, वणम्मि इतरम्मि सत्तवंधा उ ।

तह वि य अठायमाणे, धोऊणं अहव अण्णत्थ ॥६१६६॥

इयरंति ऋद्धं एवं चेव, णवरं - सत्तवंधा उवकोसेण कायव्वा, तह वि अट्टंते हृत्यसयवाहिरतो धोविजं पुणो वाएति, अहवा - अण्णत्थ पढंति ॥६१६६॥

एतेसामणत्तरे, असज्झाए अप्पणो व सज्झायं ।

जो कुणति अजयणाए, सो पावति आणमादीणि ॥६१७०॥

आणादिया य दोसा भवंति ।

इमे य -

सुयणाणम्मि य भत्ती, लोगविरुद्धं पमत्तल्लणा य ।

विज्जासाहण वड्डगुण धम्मयाए य मा कुणसु ॥६१७१॥

सुयणाणे अणुवचारतो अभत्ती भवति । अहवा - सुयणाणभत्तिरागेण असज्जातिते सज्झायं मा कुणसु, उवदोसो एस-जं लोगधम्मविरुद्धं च तं ण कायव्वं । अविहीए पमत्तो लब्धमिति तं देवया छलेज्ज । जहा विज्जासाहणवड्डगुणयाए विद्या न सिज्झति तथा इहं पि कम्मल्लओ न भवइ । वैगुण्यं वैधर्मता - विपरीतभावे-त्यर्थः । “धम्मयाए य” सुयधम्मस्त एन धम्मो जं असज्झाइए सज्झायवज्जणं ण करंतो सुयणाणायारं विराहेइ, तम्हा मा कुणसु ॥६१७१॥

चोदकाह - “जति दंतअट्ठिमंससोगियादी असज्झाया, णगु देहो एयमतो चेव, कहं तेण सज्झायं करेह ?”

आचार्याहि -

कामं देहावयवा, दंतादी अवजुता तह विवज्जा ।

अणवजुता उ ण वज्जा, इति लोगे उत्तरे चेवं ॥६१७२॥

कामं चोदनाभिप्पायअणुमयत्थे सच्चं, तम्मयो देहोवि । सरीराओ अवजुत त्ति पृथग्भावा ते वज्जगिज्जा, जे पुण अणवजुया तत्थत्था ते ण वज्जगिज्जा, इति उपप्रदर्शने । एवं लोके दृष्टं, लोकोत्तरेऽप्येवमित्यर्थः ॥६१७२॥

किं चान्यत् -

अब्भंतंरमललित्तो, वि कुणति देवाण अच्चणं लोए ।

वाहिरमललित्तो पुण, ण कुणइ अवणेइ य ततो णं ॥६१७३॥

अब्भंतंरा मूत्रपुरीपादी, तेहिं चेव वाहिरे उवलित्तो कुणइ तो अवणं करेइ ॥६१७३॥

किं चान्यत् -

आउट्टियावराहं, सन्निहिता ण खमए जहा पडिमा ।

इय परलोए दंडो, पमत्तल्लणा य इति आणा ॥६१७४॥

जा य पडिमा सण्हिय त्ति-देवयाअधिठ्ठिता, सा जत्ति कोइ अणाद्धिएण आउट्ठित त्ति जाणंतो वाहिरमललित्तो तं पडिमं छिवति, अच्चणं वा से कुणइ तो ण खमइ, खेत्तादि करेइ, रोगं च जणेइ, मारेइ वा । इय त्ति - एवं जो असज्झाए सज्झायं करेति तस्स णाणायारविराहणाए कम्मबंधो, एस से परलोइओ दंडो, इह लोए पमत्तं देवता छलेज्ज स्यात् । आणादिविराधणा वा धुवा चेव ॥६१७४॥

कोइ इमेहिं अप्पसत्थकारणेहिं असज्झाए सज्झायं करेज्ज -

रागा दोसा मोहा, असज्झाए जो करेज्ज सज्झायं ।

आसायणा तु का से, को वा भणितो अणायारो ॥६१७५॥

रागेण दोसेण वा करेज्ज । अहवा - दरिसणमोहमोहितो भणेज्ज - का अमुत्तस्स णाणस्स आसायणा ? को वा तस्स अणायारो ? - नास्तीत्यर्थः ॥६१७५॥

एतेसिं इमा विभासा -

गणिसदमाइमहितो, रागे दोसेण ण सहती सदं ।

सच्चमसज्झायमयं, एमादी होति मोहाओ ॥६१७६॥

महिओ त्ति हृष्टुष्टनंदितो, परेण गणिवायगो वाहरिज्जंतो भवति, तदभिलासी असज्झातिए एवं सज्झायं करेइ, एवं रागे । दोसेण - किं वा गणी वाहरिज्जति वायगो ? अहं पि अधिज्जामि जेण एयस्स पडिसवत्तिभूतो भवामि, जम्हा जीवसरीरावयवो - असज्झायमयं न श्रद्धघातीत्यर्थः ॥६१७६॥

इमे दोसा -

उम्मायं च लभेज्जा, रोगायकं च पाउणे दीहं ।

तित्थकरभासियाओ, खिप्पं धम्माओ भंसेज्जा ॥६१७७॥

खित्तादिगो उम्मातो, चिरकालिगो रोगो, आसुघाती आयंको - एस वा पावेज्ज, धम्माओ भंसो, मिच्छादिट्ठी वा भवति, चरित्ताओ वा परिवडति ॥६१७७॥

इह लोए फलमेयं, परलोए फलं न देंति विज्जाओ ।

आसायणा सुयस्स य, कुव्वति दीहं तु संसारं ॥६१७८॥

सुयणाणायारविवरीयकारी जो सो णाणावरणिज्जं कम्मं बंधति, तदुदयाओ य विज्जाओ कयोवचाराओ वि फलं ण देंति-ण सिद्धयंतीत्यर्थः, विधीए अकरणं परिभवो एवं सुतासादणा, अविधीए वट्टंतो नियमा अट्ट कम्मपगतीओ बंधइ, हस्सट्ठितियाओ दीहठिईओ करेइ, मंदाणुभावा य तिव्वाणुभावाओ करेइ, अप्पपदेसाओ य बहुपदेसाओ करेति, एवंकारी य नियमा दीहं संसारं णिव्वत्तेति । अहवा - णाणायारविराहणाए दंसणविराहणा, णाणदंसणविराहणाहिं नियमा चरणविराहणा । एवं तिण्हं विराहणाए अमोक्खो, अमोक्खे नियमा संसारो ॥६१७८॥

वित्तियागाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एएहिं कारणेहिं, कप्पति जयणाए काउं जे ॥६१७९॥ पूर्ववत्

सच्चत्थ अणुप्पेहा, अप्रतिसिद्धादित्यर्थः ।

जे भिक्खू हेड्डिल्लाईं समोसरणाईं अवाएत्ता उवरिल्लाईं समोसरणाईं वाएइ,  
वाएंत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

आवासगमादीयं, सुयणाणं जाव विंदुसाराओ ।

उक्कमओ वादेंतो, पावति आणाइणो दोसा ॥६१८०॥

जं जस्स आदीए तं तस्स हिट्ठिल्लं, जं जस्स उवरिल्लं तं तस्स उवरिल्लं, जहा दसवेयालिस्सा-  
वस्सगं हेट्ठिल्लं, उत्तरज्झणण दसवेयालियं हेट्ठिल्लं, एवं णेयं जाव विंदुसारेति ॥६१८०॥

सुत्तत्थ तदुभयाणं, ओसरणं अहव भावमादीणं ।

तं पुण नियमा अंगं, सुयखंधो अहव अज्झयणं ॥६१८१॥

समोसरणं णाम मेलओ, सो य सुत्तत्याणं, अहवा - जीवादि णवपदत्थभावाणं । अहवा -  
द्वव्वेत्तकालभावा, एए जत्थ समोसडा सव्वे अत्थित्तिवुत्तं भवति, तं समोसरणं भण्णति ।

तं पुण किं होज्ज ? उच्चते-अंगं, सुयखंधो, अज्झयणं, उद्देसगो । अंगं जहा आयारो तं अवाएत्ता  
सुयगडंगं वाएति । सुयखंधो-जहा आवस्सयं तं अवाएत्ता दसवेयालियसुयखंधं वाएति । अज्झयणं जहा सामात्तिंतं  
अवाएत्ता चउवीसत्थयं वाएति, अहवा - सत्थपरिणं अवाएत्ता लोगविजयं वाएति । उद्देसगेसु जहा सत्थ-  
परिण्णाए पढमं सामन्नउद्देसियं अवाएत्ता पुढविककाउद्देसियं वितियं वाएति । एवं सुत्तेसु वि दट्ठव्वं । अहवा -  
दोसु सुअखंधेसु जहा वंभचेरे अवाएत्ता आयारग्गे वाएति । सव्वत्थ उक्कमतो । एवं तस्स आणादिया दोसा  
चउलहुगा य, अत्थे चउगुरु भण्णति, पमतं देवया छलेज्ज ॥६१८१॥

इमो य दोसो -

उवरिसुयमसद्दहणं, हेड्डिल्लेहि य अभावितमतिस्स ।

ण य तं भुज्जो गेण्हति, हाणी अण्णेसु वि अवण्णो ॥६१८२॥

हेड्डिल्ला उस्सग्गसुता तेहि अगाविस्स उवरिल्ला अववादसुया ते ण सद्दहति अतिपरिणामगो  
भवति, पच्छा वा उस्सग्गं न रोचेइ अतिक्रामेय ति काउं तं ण गेण्हति । अण्णं उवरि गेण्हति एवं आदिसुत्तस्स  
हाणी नासमित्यर्थः । आदिसुत्तवज्जितो उवरिसु अट्ठाणेण य पयत्तेण वहुस्सुतो भण्णति, पुच्छिज्जमाणो य पुच्छं  
ण णिव्वहति, जारिसो एस अणायगो तारिसा अण्णे वि एवं अण्णेसि पि अवण्णो भवति, जम्हा एवमादी दोसा  
तम्हा परिवाडीए दायव्वं ॥६१८२॥

इमो अववातो -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुजोगे य ।

सुत्तत्थ तदुभए वा, उक्कमओ वा वि वाएज्जा ॥६१८३॥

पियधम्म-दढधम्मस्स, निस्सग्गतो परिणामगस्स, संविग्गसभावस्स, विणीयस्स परममेहाविणो -  
एरिसस्स कालियसुत्ते पुव्वगए च मा वोच्छिज्जउत्ति उक्कमेण वि देज्ज , ॥६१८३॥

जे भिक्खू णववंभचेराईं अवाएत्ता उवरियसुयं वाएइ

वाएंत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

णववंभचेरगहणेणं सव्वो आयारो गहितो, अहवा - सव्वो चरणाणुओगो तं अवाएत्ता उत्तमसुतं वाएति, तस्स आणादिया दोसा चउलहुं च ॥६१८२॥

किं पुण तं उत्तमसुतं ? उच्यते -

छेयसुयमुत्तमसुयं, अहवा वी दिट्ठिवाओ भण्णइ उ ।

जं तहि सुत्ते सुत्ते, वण्णिज्जइ चउह अणुओगो ॥६१८४॥

पुव्वद्धं कंठं । अहवा - वंभचेरादी आयारं अवाएत्ता धम्माणुओगं इसिभासियादि वाएति, अहवा - सूरपण्णत्तियाइगणियाणुओगं वाएति, अहवा - दिट्ठिवातं दवियाणुओगं वाएति, अहवा - जदा चरणाणुओगो वातितो तदा धम्माणुओगं अवाएत्ता गणियाणुओगं वाएति, एवं उक्कमो चारणयाए सव्वो वि भासियव्वो, एवं सुत्ते ।

अत्थे वि चरणाणुओगस्स अत्थं अक्केत्ता धम्मादियाण अत्थं कहेति ० ० । आदेसओ वा चउगुरुं ।

छेदसुयं कम्हा उत्तमसुत्तं ?, भण्णति - जम्हा एत्थ सपायच्छित्तो विधी भण्णति, जम्हा य तेण चरणविमुद्धी करेति, तम्हा तं उत्तमसुत्तं ।

दिट्ठिवाओ कम्हा ?, उच्यते - जम्हा तत्थ सुत्ते चउरो अणुओगा वण्णिज्जंति, सव्वाहि णयविहीहि दव्वा दंसिज्जंति, विविधा य इद्धीओ अतिसत्ता य उप्पज्जंति, तम्हा तं उत्तमसुत्तं । एवं सुत्तस्स उक्कमवायणा वज्जिया ॥६१८३॥

अत्थस्स कहं भाणियव्वं ?, उच्यते -

अपुहुत्ते अणुओगो, चत्तारि दुवार भासई एगो ।

पुहुत्ताणुओगकरणे, ते अत्थ तओ उ बुच्छिन्ना ॥६१८५॥ कंठ्या

अहवा - सुत्तवायणं पडुच्च कमो भण्णति, णो अट्ठं पट्ठवणं ।

कम्हा ?, जम्हा सुत्ते सुत्ते चउरो अणुओगा दंसिज्जंति ।

उक्तं च -

अपुहुत्ते व कहेंते, पुहुत्ते बुक्कमेण वाययंतम्मि ।

पुव्वभणिता उ दोसा, वोच्छेदादी मुणेयव्वा ॥६१८६॥ कंठ्या

णवरं - वोच्छिज्जंति एगसुत्ते चउण्हमणुओगाणां जा कहणविधी सा पुहत्तकरणेण वोच्छिण्णा, ण संपयं पवत्तइ णज्जइ वा, अहवा - तैसि अत्थाण कहणसरूवेण एगसुत्ते ववत्थाणं वोच्छिण्णं पृथक् स्थापित-मित्यर्थः ॥६१८५॥

केण पुहत्तीकयं ?, उच्यते -

बलबुद्धिमेहाधारणाहाणीं णाउं विज्झं दुब्बलियपूसमित्तं च पडुच्च -

देविंदवदिएहिं, महानुभागेहि रक्खि अज्जेहिं ।

जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८७॥ कंठ्या

के पुण ते चउरो अणुओगा ?, उच्यते -

कालियसुयं च इसिभासियाणि तइयाए सूरपण्णत्ती ।

जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८८॥ कंठ्या

अहवा - किं कारणं णयवज्जितो चरणाणुओगो पढमं दारठवियं ?, उच्यते -

णयवज्जिओ वि हु अलं, दुक्खक्खयकारओ सुविहियाणं ।

चरणकरणाणुओगो, तेण कयमिणं पढमदारं ॥६१८६॥ कंठ्या

शिष्याह - “कालियसुयं आयारादि एक्कारस अंगा, तत्थ पक्कणो आयारगतो ।

जे पुण अंगवाहिरा छेयसुयज्झयणा ते कत्थ अणुओगे वत्तव्वा ? उच्यते -

जं च महाकप्पसुयं, जाणि य सेसाइं छेदसुत्ताइं ।

चरणकरणाणुओगो, त्ति कालियछेओवगयाणि य ॥६१८७॥

आवस्सयं दसवेयालियं चरणधम्मगणियदवियाण पुहत्ताणुओगे ।

कमठवे कारण इमं -

अपुहत्ते वि हु चरणं, पढमं वणिज्जते ततो धम्मो ।

गणित दवियाणि वि ततो, सो चेव गमो पुहत्ते वी ॥३१६१॥ कंठ्या

तेसु पुण जुगवं वणिज्जमाणेसु इमा विधी -

एक्केक्कम्मिउ सुत्ते, चउण्ह दाराण आसि तु विभासा ।

दारे दारे य नया, गाहगणेहंतए पप्प ॥६१८८॥

सुत्ते सुत्ते चउरो दार त्ति अणुओगा, पुणो एक्केक्को अणुओगो णएहि चित्तिज्जंति, ते य नया गाहगं पडुच्च गिण्हंतगं वा संखेववित्थरेहि दट्ठव्वा -

जइ गाहगो णातुं समत्थो गिण्हंतगो वि समत्थो तो सव्वणएहि वित्थरेणवि भासियव्वं, वित्थियभंगे गेण्हंतगवसेण वत्तव्वं, तत्थियभंगे जत्थियं वुत्तं तस्स धारणसमत्थो तत्थियं भासति, चरिमे दोण्णि वि जं सुत्ताणुरूवं अपुहत्ते पुहत्ते वा ॥६१८९॥

ते चउरो अणुओगा कहं विभासिज्जंति ?, उच्यते -

समत त्ति होति चरणं, समभावम्मि य ठितस्स धम्मो उ ।

काले त्तिकालविसयं, दविए वि गुणो णु दव्वणू ॥६१९३॥

तुलाचरणं व समभावकरणं । चरणसमभावद्वियस्स णियमा विमुद्धिसरूवो धम्मो भवति । काले णियमा त्तिकालविसयं चरणं, जम्हा समयखेत्ते कालविरहितं न किंचिमत्थि । अहवा - त्तिकालविसयं त्ति पंचत्थिकाया जहा धुवे णित्थिया सासती तहा चरणं भुवि च भवति भविस्सति य । दव्वाणुओगे चरणचित्ता ।

किं दव्वो गुणो त्ति ? दव्वद्विताभिप्पाएण चरणं दव्वं, पज्जवद्विताभिप्पाएण चरणं गुणे, अहवा - पढमतो सामाइयगुणं पडिवत्तीतो पुंक्कमेव चरणं लभति, चरणद्वितस्स धम्माणुओगो लभति, चरणधम्मद्वियस्स गणियाणुओगो दिज्जति, ततो त्तिअणुओगभावित्थिरमत्तिस्स दव्वाणुओगो य णयविधीहि दंसिज्जति ॥६१९३॥

इदं च वण्यते -

एत्थं पुण एक्केक्के, दारम्मि गुणा य होतव्वाया य ।

गुणदोसदिट्ठसारो, णियत्तत्ति सुहं पवत्तत्ति य ॥६१९४॥

एत्य त्ति एतेसि अणुओगाण-अत्थकहणे, पुण विसेसणे ।

किं विसेसेति ?, एककेक्के अणुओगे गुणा दरिसिज्जन्ति ।

आवाय त्ति - दोसा य कहं ?, उच्यते - पडिसिद्धं आयरंतस्स विहिं अकरेतस्स य इहपर-  
लोइयदोसा, पडिसिद्धवज्जेतस्स विहिं करंतस्स इहपरलोइया गुणा । चरणाणुवचयभवणं गुणसारो, चरण-  
विधातो कम्मुवचयभवणं च दोससारो, एवं गुणदोसदिट्ठसारो दोसट्ठाणेषु सुहं णिवत्तति, गुणट्ठाणेषु य सुहं  
पवत्तते । अहवा - णयवादेसु एगंतगाहे दिट्ठदोसो सुहं णिवत्तति, अणेगंतगाहे य दिट्ठगुणो सुहं पवत्तति  
॥६१९४॥

अतो भण्णइ -

अपुहुत्ते य कहेंते, पुहुत्ते उक्कमेण वायरंतम्मि ।

पुव्वभणिता उ दोसा, वोच्छेदादी मुण्येव्वा ॥६१९५॥

अणुओगाणं अपुहुत्तकाले पुहुत्तं विणा कारणे ण कायव्वं, पुहुत्ते णाकारणेण उक्कमकरणं कायव्वं ।  
अहवा - करेति पडिसिद्धं तो इमातो आदिसुत्ते जे वोच्छेदादिया दोसा वुत्ता ते भवन्ति ॥६१९४॥

आयारे अणहीए, चउण्ह दाराण अण्णतरगं तु ।

जे भिक्खू वाएती, सो पावति आणमादीणि ॥६१९६॥

सुयकडादी चरणाणुओगे दट्ठव्वो, सेसं कंठं ।

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

सुत्तत्थनाणएणं, अप्पा बह्नुयं तु णायव्वं ॥६१९७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू पत्तंणं वाएइ वाएतं ण वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

अपात्रं आयोय्यं अभाजनमित्यर्थः, तप्पडिपक्खो पत्तं ।

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू पत्तं ण वाएति ण वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

अप्राप्तकं क्रमानधीतश्रुतमित्यर्थः, पडिपक्खो पत्तं, आणादी चउलहुं वा । एते चउरो वि मुत्ता  
एगट्ठा वक्खाणिज्जन्ति ।

केरिसं अपात्रं ? उच्यते -

तित्तिणिण्ण चल्लचित्ते, गाणंगणिण्ण य दुव्वल्लचरित्ते ।

आयरिय पारिभासी, वामावट्ठे य पिसुणे य ॥६१९८॥

तित्तिणीइ त्ति अस्य व्याख्या - दुविघो तित्तिणो दव्वे भावे य ।

तेंदुरुयदारुयं पिय, अग्गिहितं तिडित्तिडेति दिवसं पि ।

अह दव्वतित्तिणो भावतो य आहारुवहिसेज्जासु ॥६१९९॥



जं अग्नीए द्युडं तिडीतिडेति तं दव्वतित्तिणं । भावतित्तिणो दुविहो वयणे रसे य, वयणे तित्तिणो कयाकएनु किञ्चि भणितो चोदितो वा दिवसं पि तिडितिडेतो अच्चति । रसतित्तिणो तिविहो - आहार उवहि सेज्जामु ॥६१६६॥

तत्थ आहारे इमो—

अंतोवहिसंजोयण, आहारे वाहि खीरदहिमादी ।

अंतो तु होति तिविहा, भायण हत्थे मुहे चेव ॥६२००॥

आहारो दुविहो - वाहि अंतो य । तत्थ वाहि खीरं दधि वा लंभिता हिडंतो चेव तं खीरं कलमसालिग्रोदणं उप्पाएंतो खंडमादि वा संजोएंतो वाहि संजोयणं करेति ।

अंतो ति वसहीए, सा तिविधा - भायणे हत्थे मुहे ति वा । तत्थ भायणे - जत्थ कलमसालिग्रोदणो तत्थ खीरं दधि वा पक्खिवति, हत्थे तलाहणादिणा पिडविगतिमादियं हत्थद्वियं वेढेत्ता मुहे पक्खिवति, पुव्वं मुहे तलाहणादि पक्खिवत्ता पच्छा पिडविगति पक्खिवति ॥६२००॥

एमेव उवहिसेज्जा, गुणोवगारी य जस्स जो होति ।

सो तेण जो अतंतो, तदभावे तित्तिणो णाम ॥६२०१॥

उक्कोसं अंतरकप्पं लद्धं उक्कोसं चेव चोलपट्टकं उप्पाएत्ता तेण सह परिभोगेण संजोएति । एवं सेसोवहि पि, एवं सेज्जं अकवाडं लद्धं कवाडेण सह संजोएति ।

जं जस्स आहारादि तस्स गुणोवगारी अलभंतो तित्तिणो भवति ॥६२०१॥

इदाणि चचलचित्ते ति अस्य व्याख्या -

गति ठाण भास भावे, लहुओ मासो य होति एककेक्के ।

आणाइणो य दोसा विराहणा संजमायाए ॥६२०२॥

चपलो गतिमादितो चउव्विहो, चउसु वि पत्तेयं मासलहुं पच्छित्तं ॥६२०२॥

तत्थ गतिट्ठाणचवलाण इमा विभासा -

दावद्विओ गतिचवलो उ थाणचवलो इमो तिविहो ।

कुड्ढादसइं फुसती, भमति व पादे व णिच्छुभति ॥६२०३॥

गतिचवलो दुयं गच्छति - तुरित्तगामीत्यर्थः । णिसण्णो पट्ठिवाहुळ्ळकरचरणादिएहि कुड्ढयंमादिएहि णेगसो फुसइ, णिसण्णो य हत्थो आसणं अमुंचतो सभंता भ्रमति । हत्थपादान पुणो पुणो य संजोयणं विक्खेवं वा करेति, गायस्स वा कपं ॥६२०३॥

भासाचवलो इमो -

भासचवलो चउद्धा, असत्ति अलियं असोहणं वा वि ।

असभाजोगमसब्भं, अणूहितं तु असमिक्खं ॥६२०४॥



असम्भप्पलावी असमिक्खियप्पलावी अदेसकालप्पलावी । असत्ति, अलियं जहा गो अश्वं ब्रवीति, अथवा - असत्ति असोभणं च असम्भावत्यं, जहा इयामाकतंदुलमात्रोऽयमात्मा । अपंडिता जे ते असम्भा तेसि जं जं जोगं तं तं असम्भं ।

अथवा - जा विदुसभा न भवति सा असम्भा, तीए जं जोगं तं असम्भं, तं च ग्राम्यवचनं कर्कशं कटुकं निष्ठुरं जकारादिकं वा ।

बुद्धीए अणूहियं पुव्वावरं इहपरलोयगुणदोसं वा जो सहसा भणइ, सो असमिक्खियप्पलावी ॥६२०४॥

अदेसकालप्पलावी इमो -

कज्जविवत्तिं दट्ठूण भणति पुवं मते तु विण्णातं ।

एवमिणं ति भविस्सति, अदेसकालप्पलावी तु ॥६२०५॥

अदेसकालप्पलावी-जहा भायणं पडिक्कमियं अट्टकरणं पि से कयं लेवितं रुढं, ततो पमाएण तं भगं ताहे सो अदेसकालप्पलावी - “मए पुवं चेव णायं, जहा एयं भज्जिहिति” ॥६२०५॥

इमो २भावचवलो -

जं जं सुयमत्थो वा, उद्दिट्ठं तस्स पारमप्पत्तो ।

अण्णोणसुतदुमाणं, पल्लवगाही उ भावचलो ॥६२०६॥ कंठ्या

इदार्णि ३गाणंगणितो -

छम्मासे अपूरेत्ता, गुरुगा वारससमा तु चतुलहुगा ।

तेण परं मासो उ, गाणंगणि कारणे भइतो ॥६२०७॥

णिककारणे गणातो अण्णं गणं संकमंतो गाणंगणिओ, सो य उवसंपण्णो छम्मासे अपूरित्ता गच्छति तो चउगुरं, वारसवरिसे अपूरित्ता गच्छइ तो चउलहुगा, वारसण्हं वरिसाणं परतो गच्छंतस्स मासलहुं । एवं णिककारणे गाणंगणितो । कारणे भतितो, अत्र भयणा सेवाए गाणंगणियत्तं कारणिज्जं । दारं ॥६२०७॥

इदार्णि ४दुब्बलचरणो -

मूलगुण उत्तरगुणे, पडिसेवति पणगमादि जा चरिमं ।

थितिवलपरिहीणो खलु, दुब्बलचरणो अणट्ठाए ॥६२०८॥

सव्वजहण्णो चरणावराहो जहन्न पणगं भवति, तदादी जाव चरिमं ति पारंचितावराहं पडिसेवितो अणट्ठा चरणदुब्बले ॥६२०८॥

किं च -

पंचमहव्वयभेदो, छक्कायवहो तु तेणऽणुणातो ।

सुहसीलवियत्ताणं, कहेति जो पवयणरहस्सं ॥६२०९॥

सुहे सीलं व्यक्तं येषां ते सुहसीलवियत्ता, ते पासत्थादी मंदधम्मा । अथवा - मोक्खसुहे सीलं जं तम्मि विगतो आया जेसि ते सुहसीलवियत्ता ॥६२०९॥

१ आयरियपारिभासी इमो—

डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्मंहो दमग मंदवुद्धी य ।

अवि यऽप्यलाभलद्धी, सीसो परिभवति आयरियं ॥६२१०॥

इमे डहरादिपदभावेन बुतं आयरियं कोइ आयवद्धो सूयाए असूयाए वा भणति । तत्थ सूया पर-  
भावं अत्तववदेसेण भणति-जहा अज्ज वि डहरा अम्हे, के आयरियत्तस्स जोगा ? असूया परं हीणभावबुत्तं  
फुडमेव भणति । जहा को वि वयपरिणतो नि पक्कवुद्धी डहरं गुरुं भणाति—अज्ज वि तुमं यणदुद्धगंविममुहो  
त्वंतो भत्तं भगसि, केरिसमायरियत्तं ते ? एवं उत्तमकुलो हीणाहियकुलं, मेहावी मंदमेहं, ईसरो पव्वतिओ  
दरिद्वपव्वतियं, वुद्धिसंपण्णो मंदवुद्धि, लद्धिसंपण्णो मंदलद्धि । दारं ॥६२१०॥

इदाणि २ वामवट्ठो—

एहि भणितो त्ति वच्चति, वच्चसु भणिओ त्ति तो समुल्लियति ।

जं जह भणितो तं तह, अकरंतो वामवट्ठो उ ॥६२११॥

वामं विवट्ठति त्ति वामवट्ठो, विवरीयकारीत्यर्थः । दारं ॥६२११॥

इदाणि ३ पिसुणो—

पीतीसुण्णो पिसुणो, गुरुणादि चउण्ह जाव लहुओ य ।

अहवा संतासंते, लहुओ लहुगा गिहं गुरुगा ॥६२१२॥

अलिएत्तरागि अक्खते पीतिनुणं करेति त्ति पिसुणो, प्रीतिविच्छेदं करेतीत्यर्थः । तत्थ जइ  
आयरिओ पिसुणत्तं करेइ तो चउगुरुं, उवज्झायस्स चउलहुं, मिक्खुस्स मासगुरुं, खुडुस्स मासलहुं । अहवा—  
सामण्यतो जति संजनो संजएनु पिसुणत्तं करेइ तत्थ संतेण करेत्तस्स मासलहुं, असंतेण चउलहुगा । अह संजतो  
गिहत्थेनु पिसुणत्तं करेइ एते चेव पच्छिन्ना गुरुगा भाणियन्वा, मासगुरुं संते, असंते ० ० ॥६२१२॥

अहवा—इमे अपात्रा अप्राप्ताश्च इहं भणंति, किञ्चि अव्वत्तस्स वि एत्थेव भणति—

आदीअदिट्ठभावे, अकडसमायारिए तरुणथम्मे ।

गच्चित पइण्ण णिण्हयि, छेदसुते वज्जिते अत्थं ॥६२१३॥

“४ आदीअदिट्ठभाव” त्ति अस्य व्याख्या—

आवासगमादीया, सूयकडा जाव आदिमा भावा ।

ते जेण हंतऽदिट्ठा, अदिट्ठभावो भवति एसो ॥६२१४॥ कंथ्या

“अकडसमायारि” त्ति अस्य व्याख्या—

दुविहा सामायारी, उवसंपद मंडली य बोधव्वा ।

अणलोइतम्मि गुरुगा, मंडलिसामायारिं अओ बोच्छं ॥६२१५॥

उपसंपदाए तिविधा — णाणोवसंपवा दंसणे य चरणे य । तं अण्णगणातो आगयं अणालोयावेत्ता  
अणुवसंपणं वा जं परिभुंजति वाएइ वा तस्स चउगुरुं । मंडलिसामायारी दुविधा — सुत्तमंडली अत्थमंडली  
य ॥६२१५॥

तेसु इमा विधी -

सुत्तम्मि होति भयणा, पमाणतो या वि होइ भयणाओ ।  
अत्थम्मि तु जावतिया, सुणेंति थोवेसु अन्ने वि ॥६२१६॥  
दो चेव निसिज्जाओ, अक्खाणेक्का वितिज्जिया गुरुणो ।  
दो चेव मत्तया खलु, गुरुणो खेले य पासवणे ॥६२१७॥  
मज्जण निसेज्ज अक्खा, कितिकम्मुस्सग्गवंदणं जेट्ठे ।  
परियागजातिसु य सुणण समत्ते भासती जो तु ॥६२१८॥

सुत्तमंडलीए निसेज्जा कज्जति वा ण वा, वसभाणुगो एगकप्पे चिट्ठितो वाएय त्ति । अहवा -  
भयणा सद्दे कंवलाओ देंति वा न वा । अधवा - पमाणतो भयणा, जाहे गुरु णिसण्णो ताहे तस्स विहिणा  
कितिकम्मं वारसावत्तं देंति, पच्छा अणुओगस्स पाठवण उस्सग्गं करेंति, तं उस्सग्गं पारेत्ता ततो गुरुं विट्ठविहिं  
अरवखेसु करेत्ता पच्छा जेट्ठस्स वंदणयं देति, जहा जेट्ठो परियागजाईसु ण घेतव्वो । सुणेतान जो गहणधारणाजुत्तो  
समत्ते वक्खाणे जो भासती — पडिभणतीत्यर्थः सो जेट्ठो, ततो सुणेतो कालवेलाए अणुओगं विसज्जेत्ता गुरुस्स  
वंदणं देंति, पुणो वंदित्ता कालस्स पडिक्कमंति ॥६२१८॥

अवितहकरणे सुद्धा, वितहकरेंताण मासियं लहुगं ।

अक्खनिसिज्जा लहुगा, सेसेसु वि मासियं लहुगं ॥६२१९॥

जं सदोसं तं वितहकरणं, तत्थ मासलहुं, अक्खणिसिज्जाए विणा अत्थं कहेत्तस्स सुणेंताण चउलहुं,  
सेसेसु वि पमज्जणादि अकरणे मासलहुं चेव, एवं सव्वं अवितहं सामायारिं जो न करइ सो अकडसामायारी ।

इदार्णि “तरुणधम्मो” त्ति -

तिण्हारेण समाणं, होति पक्कप्पम्मि तरुणधम्मो तु ।

पंचण्ह दसाकप्पे, जस्स व जो जत्तिओ कालो ॥६२२०॥

“सम” त्ति वरिसा, पक्कप्पो णिसीहज्जयणं । तरुणो अविपक्वः, जस्स वा सुत्तस्स जो कालो भणितो  
तं अपूरेंतो तरुणधम्मो भवति । दारं ॥६२२०॥

इदार्णि “गन्धर्व” त्ति, अविणीतो णियमा गन्धर्वो त्ति ।

अतो भणति -

पुरिसम्मि दुव्विणीए, विणयविहाणं ण किंचि आइक्खे ।

न वि दिज्जति आभरणं, पलियत्तियक्कणहत्थस्स ॥६२२१॥

विणयविहाणं सुअं, पलियत्ति तं छिण्णं । सेसं कंठयं ।

मद्वचरणं णाणं, तेणेव य जे मदं समुचियंति ।

ऊणगभायणसरिसा, अगदो वि विसायते तेसिं ॥६२२२॥ कंठ्या

इदार्णि “पइण्णो त्ति, सो दुविहो-पइण्णपण्हो पइण्णविज्जो य -

सोतुं अणभिगयाणं, कहेति अमुगं कहिज्जए अत्थं ।

एस तु पइण्णपण्हो, पइण्णविज्जो उ सव्वं पि ॥६२२३॥

गुरुसमीवे सुणेत्ता अणभिगताणं कहेति । अणवीयसुधो अगीतो अपरिणामगो य - एतेसि उद्देसुद्देसं कवितो पइण्णपण्हो भणइ । जो पुण आदिरंतेण सव्वं कहेति सो पइण्णविज्जो ॥६२२३॥

तेसिं कहंतस्स इमे दोसा -

अप्पच्चओ अकित्ती, जिणाणं ओवातमइलणा चेव ।

दुल्लभवोहीयत्तं, पावति पइण्णवागरणा ॥६२२४॥

सो अप्राप्तः अप्राप्तः, अव्यक्तानां च काले अविधीए छेदसुतादि अणरुहस्स तं कहिज्जंतं अप्पच्चयं करेति । कहं ? उच्यते - एते च्चिय पुव्वं उस्सग्गे पडिसेहे कघिता । इह अववादे अणुणं कहेति, एवं अप्पच्चओ अविस्सासो भवति, एते वि घम्मकारिणो ण भवन्तीत्यर्थः । पडिसिद्धसमायरेण व्रतभंगो व्रतभंगकारिणो त्ति अकित्ती । जिणाण आणा ओवातो भणति, तस्स मत्तिलणा पडिसिद्धस्स अणं कहेतेण पुव्वावरविरुद्धं उम्मत्तवयणं च दंसियं । सुयधम्मं च विराहंतो दुल्लभवोधिं णिवत्तेइ पइण्णपण्हो पइण्णविज्जो वा ॥ दारं ॥६२२४॥

इयार्णि २णिण्हयि त्ति -

सुत्तत्थतदुभयाइं, जो वेत्तुं निण्हवे तमायरियं ।

लहु गुरुग सुत्त अत्थे, गेरुयनायं अवोही य ॥६२२५॥

सुत्तस्स वायणायरियं णिण्हवति ० ० । अत्थस्स वायणायरियं निण्हवति ० ० । “गेरुय” त्ति परिव्राजको, जहा तेण सो ण्हाविओ निण्हविओ पडिओ य असण्णातो । एवं इह णिण्हवत्तस्स छलणा, परलोगे अवोविलाभो । एते सव्वे तित्तिणिगादिगा अदिदुभावादिगा य अप्पत्तभूता काठं अवायणिज्जा ॥६२२५॥

किं अकज्जं ?, उच्यते -

उवहम्मति विण्णाणे, न कहेयव्वं सुतं च अत्थं वा ।

न मणी सतसाहस्सो, आवज्जति कोच्छुमासस्स ॥६२२६॥

उवहयं त्ति - सदोषं स्वसमुत्था मति, गुरुवदेतेण जा मती तं विण्णाणं । अहवा - मती चेव विण्णाणं । भासो त्ति - संकुतो । कोच्छुओ मणी सतसाहस्सो कोच्छुमासस्स अयोग्यत्वात् णो विज्जइ, ॥६२२६॥

एवं जम्हा तित्तिणिगादि अजोग्गा -

तम्हा ण कहेयव्वं, आयरिएणं तु पवयणरहस्सं ।

खेत्तं कालं पुरिसं, नाऊण पगासए गुज्झं ॥६२२७॥

पवयणरहस्सं अववादपदं सव्वं वा छेदसुत्तं । अववायतो खेत्तकालपुरिसभावं च णाउं अपात्रं पि वाएज्ज । खेत्तओ अद्धाने लद्धिसंपणो समत्थो गच्छुवग्गहकरोत्ति काउं अपात्रं तं पि वाएज्जति । एवं काले वि ओमादिसु परिणामपुरिसो वा वाइज्जति । भावे गिलाणादियाण उवग्गहकरो गुरुस्स वाऽसहायस्स सहाओ । वोच्छेते वा असइ पत्ते अपत्ते वि वाएज्जा । एवमादिकारणेषु अरत्तदुट्ठो पवयणरहस्सं पवाएज्ज ॥६२२७॥

एते होंति अपत्ता, तच्चिव्वरीता हवन्ति पत्ता उ ।

वाएन्ते य अपत्तं, पत्तमवाएन्ते आणादी ॥६२२८॥

जे एते तित्तिणिगादी अपत्ता, एतेसि पडिपक्खभूता सव्वे पात्राणि भवन्ति । जम्हा अपात्रे बहू दोसा तम्हा ण वाएयव्वं, पात्र वाएयव्वं, अण्णहा करणे आणाइया दोसा ॥६२२८॥

तेसु विसतेसु इमं पच्छित्तं—

अव्वत्ते य अपत्ते, लहुगा लहुगा य होंति अप्पत्ते ।

लहुगा य दव्वर्तित्तिणे, रसर्तित्तिणे होंतऽणुग्घाया ॥६२२९॥

वयसा अव्वत्तं अपात्तं अप्राप्तं उवकरणं तित्तिणि च एते वाएन्तस्स चउलहुगा । रसत्ति आहारर्तित्तिणे चउगुरुगा भवति, मा उस्सगणिच्छित्तं ॥६२२९॥

मरेज्ज सह विज्जाए, कालेणं आगते विदू ।

अप्पत्तं च ण वातेज्जा, पत्तं च ण विमाणए ॥६२३०॥

कालेण आगए त्ति आधानकालादारम्य प्रतिसमयं कालेनागतः यावन्मरणसमयः, अत्रान्तरे अपात्रं न वाचयेत्, पात्र च न विमानयेदिति ॥६२३०॥

अपात्रस्य इमो अववातो—

वित्थियपदं गेलण्णे, अद्धानसहाय असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, वाएज्ज विदू अपत्तं पि ॥६२३१॥

जहा पूर्व तहा वत्तव्यं ।

अह्वा—अपात्रे अण्णं इमं अववादकरणं—

वाएन्तस्स परिजितं, अण्णं पडिपुच्छगं च मे णत्थि ।

मा वोच्छिज्जतु सव्वं, वोच्छेदे पदीवदिट्ठतो ॥६२३२॥

जस्स समीवातो गहियं सो मतो, अण्णओ तस्स पडिपुच्छगं पि णत्थि, अतो परिजयट्ठा अपात्रं पि वाएज्जा । सयं वा मरंतो वत्तस्स अभावे मा सव्वं सव्वहा वोच्छिज्जउत्ति, वोच्छिण्णे पदीवदिट्ठतो ण भवति, तम्हा अपत्तं वाएज्ज । अपत्ताओ पत्तेसु संचरिस्संति पदीवदिट्ठतेण—जह दीवा दीवसयं० कंथ्या ॥६२३२॥

जो पात्रं ण वाएति तस्सिमे दोसा—

अयसो पवयणहाणी, सुत्तत्थाणं तहेव वोच्छेदो ।

पत्तं तु अवाएन्ते, मच्छरिवाते सपक्खे वा ॥६२३३॥

अवाप्तं तस्मै अयसो ति - एस दुद्धादी ईहति वा किंचि, मुहा वा सत्त्वं कितिकम्भं कारवेति,  
भावसंगहेणं वा अकज्जं तेणं गच्छो से सयहा फुट्ठो, एवमादि अयसो । पवयणं वा उव्वणो, तस्मै हाणी । कहं ?,  
आगममुण्णे तित्थे ण पव्वयति कोति । सेसं कंठं ॥६२३३॥

कारणेन पात्रमपि न वाचयेत् -

द्वयं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तथा समासज्ज ।

एतेहि कारणेहि, पत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२३४॥

“द्वे खेत्ते य” ति अस्य व्याख्या -

आहारादीणऽसती, अहवा आयं विलस्स तिविहस्स ।

खेत्ते अट्ठाणादी, जत्थ सज्जाओ ण सुज्जेज्जा ॥६२३५॥

आयं विलस्स आयं विलस्स असति ण वाएति, तिविहं - ओदणकुम्माससत्तुगा वा । खेत्तयो  
अट्ठाणपट्टिवणो ण वाएति, जत्थ वा खेत्ते सज्जाओ ण सुज्जति, जहा वड्ढोसमगवती ण सुज्जति ॥६२३५॥

कालभावपुरिसे य इमा विभासा -

असिवोमाईकाले, असुद्धकाले व भावगेलणो ।

आतगत परगतं वा पुरिसो पुण जोगससमत्थो ॥६२३६॥

असिवकाले ओमकाले य सुद्धे वा काले असज्जहए ण वाएज्जा । भावे अप्पणा गिलाणो “परगयं व”  
ति वाइज्जाणे वा गेलणं गावं, अहवा - परगिलाणवेयावच्चवावडे पुरिसो वा जोगस्स असमत्थो ण वाइज्जइ,  
एवमादिकारणेहि पत्तो वि ण वाइज्जइ ॥६२३६॥

जे भिक्खू अव्यत्तं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वत्तं न वाएइ, न वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२४॥

अव्यज्जणजातो खलु, अव्यत्तो सोलसण्ह वरिसेणं ।

तच्चिवरीतो वत्तो, वातेतियरेण आणादी ॥६२३७॥

जाव कवखादिसु रोमसंभयो न भवति ताव अव्यत्तो, तस्संभवे वत्तो । अहवा - जाव सोलसवरिसो  
ताव अव्यत्तो, परतो वत्तो । जइ अव्यत्तं वाएति, इयरं ति वत्तं न वाएति । तो आणादिया दोसा चउलहुं व  
॥६२३७॥

अव्यत्ते इमो अववादी -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुयोगे य ।

सुत्तत्थ जाणएणं, अप्पावहुयं मुणेयव्वं ॥६२३८॥

अववादे वत्तो इमेहि कारणेहि न वाएज्जा -

द्वयं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तथा समासज्ज ।

एतेहि कारणेहि, वत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२३९॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अपत्तं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खू पत्तं न वाएइ न वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२६॥

अप्राप्तं एयस्स अत्थो अपात्रसूत्रे गत एव, “अदिट्ठ भावे” ति । तथा वि इह असुण्णत्थं भण्णति अव्वत्तसुत्तस्स ।

अप्राप्तसूत्रे चउभंगो भाणियव्वो -

परियाएण सुतेण य, वत्तमवत्ते चउक्क भयणा उ ।

अव्वत्तं वाएंते, वत्तमवाएंति आणादी ॥६२४०॥

परियाओ दुविहो - जम्मणओ पवज्जाए य । जम्मणओ सोलसण्हं वरिसाणं आरतो अव्वत्तो, पवज्जाए तिण्हं वरिसाणं पक्कप्पस्स अव्वत्तो । जो वा जस्स सुत्तस्स कालो वुत्तो तं अपावेत्तो अव्वत्तो, सुएण आवस्सगे अणधीए दसवेयालीए अव्वत्तो, दसवेयालीए अणधीए उत्तरज्झयणाणं अव्वत्तो, एवं सर्वत्र ।

एत्थ परियायसुत्ते चउभंगो कायव्वो । पढमभगो दोसु वि वत्तो, वित्तिओ सुएण अव्वत्तो, तत्तिओ वएण अव्वत्तो, चरिमो दोहिं वि । अव्वत्ते वाएंतस्स पढमभंगिल्लं अवाएंतस्स आणादिया य दोसा चउलहुं च ॥६२४०॥

अप्राप्तो पि वाएयव्वो इमेहिं कारणेहिं -

णारुण य वोच्छेदं, पुव्वगए कालियाणुयोगे य ।

एएहिं कारणेहिं, अव्वत्तमवि पवाएज्जा ॥६२४१॥ पूर्ववत्

प्राप्तं पि न वाएइ, इमेहिं कारणेहिं -

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तथा समासज्ज ।

एएहिं कारणेहिं, पत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२४२॥ पूर्ववत्

अव्वत्ते अप्राप्तछेदसुतं वाएज्जमाणे इदं दोसदंसगं उदाहरणं -

आमे घडे निहितं, जहा जलं तं घडं विणासेति ।

इय सिद्धं तरहस्सं, अप्पाहारं विणासेइ ॥६२४३॥

णिहितं पक्खित्तं, सिद्धं कहियं । अप्पा आहारता जत्थ तं अप्पाहारं, अप्पधारणसामर्थ्यमित्यर्थः ।

जे भिक्खू दोण्हं सरिसगाणं एक्कं संचिक्खावेइ, एक्कं न संचिक्खावेइ,

एक्कं वाएइ, एक्कं न वाएइ, तं करंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

सरिस्स ति तुल्ला, तेस्सि उ तुल्लत्तणं वक्खमाणं । तं सरिस्सं एक्कं वाएइ, एक्कं न संचिक्खावेति, तस्स आणादिया दोसा चउलहुं च ।

एगं संचिक्खाए, एगं तु तहिं पवायए जो उ ।

दोण्हं तु सरिसयाणं, सो पावति आणमादीणि ॥६२४४॥ गतार्थ

सादृश्यं इमेहि—

संविग्गा समणुणा, परिणामग दुविह भूमिपत्ता य ।

सरिस अदाणे रागो, बाहिरयं णिज्जरा लाभो ॥६२४५॥

दो वि संविग्गा सति संविगते समणुणत्ति, दो वि संभोइता सति संविगसमणुणात्ते, दोवि परिणामगा सति संविगसमणुणापरिणामगत्ते । दो वि दुविघभूमिपत्ता । दुविघभूमि — वएण सुएण य । वएण वंजणजातका, सुएण जस्स सुत्तस्स जावइए परियाए वायणा वुत्ता तं दो वि पत्ता, जहा आयारस्स तिणि संवच्छराणि, सुयगडदसाण पंचसंवत्सराणि, एवमादिसरिसाणं एवकं संचिक्खावेइ, एवकं वाएइ सुत्ते ० ० । अत्थे ० ० । सरिसाण चेव एक्कस्स अदाणे दोसो लब्धमति, वित्तियस्स दाणे रागो लब्धमति । जस्स ण दिज्जति सो बाहिरभावं गच्छइ, तप्यच्चयं च णिज्जरं ण लब्धमति, अण्णं च सो पदोसं गच्छति, पटुट्ठो वा जं काहिति तण्णिप्फणं ॥६२४५॥

भवे कारणं जेण एक्कं संचिक्खावेज्ज —

द्व्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तहा समासज्ज ।

एएहि कारणेहिं, संचिक्खाए पवाए वा ॥६२४६॥

द्व्वखेत्तकालभावाण इमा विभासा—

आयंविण्णिवित्तियं, एगस्स सिया ण होज्ज वित्तियस्स ।

एमेव खेत्तकाले, भावेण ण तिण्ण हट्ठेक्को ॥६२४७॥

द्व्वं आयंविण्णं विवित्तियं वा असणादि दोण्ह वि ण पटुप्पति, एवं कक्खहत्ते वि असणादिं ण पटुप्पति, ओमकाले वि दोण्हं ण लब्धमति, भावे एक्को ण तिण्णो त्ति गिलाणो, हट्ठे त्ति अगिलाणो, तं वादेति गिलाणं संचिक्खावेइ ॥६२४८॥

अहवा सयं गिलाणो, असमत्थो दोण्ह वायणं दाउं ।

संविग्गादिगुणजुओ, असहु पुरिसो य रायादी ॥६२४८॥

पुव्वद्वं कंठं । अहवा — भावतो संविग्गादिगुणजुत्ताण वि तत्थेक्को असहु । असहु त्ति सभावतो चेव जोगस्स असमत्थो राया च रायमंती, एवमादी पुरिसो कुत्सुयभावितो जाव भाविज्जति ताव संचिक्खा-विज्जति ॥६२४८॥

जो वरिज्जति, सो इमं वुत्तं धारिज्जति —

अण्णत्थ वा वि णिज्जति, भण्णति समत्ते वि तुज्झ वि दलिस्सं ।

अण्णे ण वि वाइज्जति, परिकम्म सहं तु कारंति ॥६२४९॥

जइ वा असहु तो तं परिकम्मणेण सह करंति जाव, ताव धरंति । इयरं पुण वाएइ, सेसं कंठं ।

जे भिक्खु आयरिय-उवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइयइ,

आइयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥



गिर त्ति वाणी वयणं, तं पुण सुत्ते चरणे वा । जो तं आयरिय-उवज्झाएहि अदत्तं, गेण्हति तत्थ सुत्ते  
ङ्क । अत्थे ङ्का । चरणे मूलुत्तरगुणं सु अणेगविहं पच्छत्तं ॥६२४८॥

दुविहमदत्ता उ गिरा, सुत्त पडुच्चा तहेव य चरित्तम्मि ।

सुत्तत्थेसु सुत्तम्मि, भासादोसे चरित्तम्मि ॥६२५०॥

जा सुत्ते गिरा सा दुविधा - सुत्ते अत्थे वा । चरणे सावज्जदोसजुत्ता भासा ॥६२५०॥

कहं पुण सो अदिण्णं आइयत्ति ?, उच्यते -

रातिणियगारवेणं, बहुस्सुत्तमतेण अन्नतो वा वि ।

गंतुं अपुच्छमाणा, उभयं पण्णावदेसेणं ॥६२५१॥

तस्स किंचि सुयत्थसंदिट्ठं, सो सव्वरातिणिओ हं ति गारवेण ओमे ण पुच्छति, सीसत्तं वा न करेइ,  
सव्ववहुसुओ वा हं भणांमि, कहमण्णं पुच्छिस्सं एवमादिगारवट्ठितो अण्णतो वि ण गच्छति, गतो वा ण  
पुच्छति, ताहे जत्थ सुत्तत्थाणि वाइज्जंति तत्थ चिलिमिलिकुडकडंतरिओ वा ठिओ अण्णावदेसेण वा गतागतं  
करेंतो सुणेति, उभयं पि अण्णावदेसेणं ॥६२५१॥

एसा सुत्त अदत्ता, होति चरित्ते तु जा ससावज्जा ।

गारत्थियभासा वा, ढडूर पलिकुंचिता वा वि ॥६२५२॥

चरित्ते ढडूरसरं करेति, आलोयणकाले पलिउंचेति, कताकते वा अत्थे पलिकुंचति । सेसं कंठं

॥६२५२॥

चित्तिओ वि य आएसो, तवतेणादीणि पंच तु पदाणि ।

जे भिक्खू आतियती, सो पावति आणमादीणि ॥६२५३॥

तवतेणे वतितेणे, रूवतेणे य जे नरे ।

आयारभावतेणे य, कुव्वई देवकिव्विसं ॥ (दश० अ० ५ गा० ४६)

एतेसि इमा विभासा-

खमओ सि ? आम मोणं, करेति को वा वि पुच्छति जतीणं ।

धम्मकहि-वादि-वयणे, रूवे णीयल्लपडिमा वा ॥६२५४॥

सभावदुब्बलो भिक्खागओ अण्णत्थ वा पुच्छिओ "तुमं सो खमओ त्ति भते ?" ताहे सो भणति-  
आमं, मोणेण वा अच्छति । अह्वा भणति - को जतीसु खमणं पुच्छ । वइतेणे त्ति "तुमं सो धम्मकही  
वादी णेमिन्तिओ गणी वायगो वा ?" एत्थ वि भणति - आमं, तुण्हिक्को वा अच्छति त्ति । भणाति रूवे - "तुमं  
अम्हं सयणो सि ?" अह्वा - "तुमं सो पडिमं पडिवणमासी ?" एत्थेव तहेव तुण्हिक्कादी अच्छति ॥६२५४॥

बाहिरठवणावलिओ, परपच्चयकारणाओ आयारे ।

महुराहरणं तु तहिं, भावे गोविंदपव्वज्जा ॥६२५५॥

आयारतेणे मथुरा कोंडयइल्ला उदाहरणं ते भावसुण्णा । परप्पईत्तिणिमित्तं बाहिरकिरियासु  
सुट्ठु उज्जता जे ते आयारतेणा । भावतेणो जहा गोविंदवायगो वादे णिज्जिओ सिद्धं तहरणद्वयाए पव्वज्जम-

भ्रुवगतो, पच्छा सम्मत्तं पडिवण्णो । एवमादि गिराणं अदित्ताणं णो गहणं कायव्वं । एकं ताव गियव्वंसो कतो भवति । मुसावादादिया च चरणव्वंसदोसा ॥६२५५॥

एतेसामण्णतरं, गिरं अदत्तं तु आतिए जो तु ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधणं पावे ॥६२५६॥ कंथा

आवण्णसङ्काण पच्छित्तं च ॥

भवे कारणं ते अदत्तं पि आदिएज्जा -

वितियपदमणप्पज्जे, आतिए अविक्कोविते व अप्पज्जे ।

दुदाइ संजमडा, दुल्लमदव्वे य जाणमयी ॥६२५७॥

वित्तादिचितो वा आइएज्ज, सेहो वा अजाणंतो, 'दुदाइ' त्ति उवसंपन्नाण वि न देइ तस्स, उवसंपण्णो अणुवसंपण्णो वा जत्य गुणेइ वक्खाणेइ वा कस्सति तत्य कुड्डंतरीओ सुणति गयागयं व करेत्तो । 'संजमहेइ व' त्ति अच्छित्तो कइ मिया दिट्ठ त्ति पुच्छिओ, दिट्ठा वि न दिट्ठ त्ति भणेज्ज । जत्य वा संजय-भासाते भासिज्जमाणा सागारिका संजयभासाओ गेण्हेज्जा तत्य अविदिणाते गारत्थिगभासाए भासेज्जा । आयरियस्स गिलाणस्स वा सयपाणेण वा सहस्सपाणेण वा दुल्लमदव्वेणं कज्जं तदट्ठा णिमित्तं पठंजेज्ज, अण्णं वा किंचि संयववयणं भणेज्ज, तदट्ठा चेव तेगादि वा पंचपदे भणेज्ज ॥६२५७॥

जे भिक्खु अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएइ,

वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खु अण्णउत्थियं वा गारत्थियं वा पडिच्छइ

पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खु पासत्थं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खु पासत्थं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खु ओसन्नं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खु ओसन्नं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खु कूसीलं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खु कुसीलं पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खु नितियं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जे भिक्खु नितियं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३८॥

जे भिक्खु संसत्तं वाएइ, वाएंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३९॥

जे भिक्खु संसत्तं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४०॥

तं सेवमाणे आवज्जति चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातियं ।

एतेसि वायणं देति पडिच्छति । भावतेणो वा सव्वेसु अहाच्छंदवज्जिएसु चउलहुं, अहवा - अत्थे  
द्ध । अहाच्छंदे चउगुरुं सुत्ते, अत्थे ऋं ।

अण्णपासंडी य गिही, सुहसीलं वा वि जो पवाएज्जा ।

अहव पडिच्छति तेसिं, चाउम्मासाओ पोरिसिं ॥६२५८॥

पोरिसिं त्ति सुत्तपोरिसिं अत्थपोरिसिं वादेंतस्स, तेसिं वा समीवातो पोरिसिं करेंतस्स, अहवा -  
एक्को पोरिसिं वाएंत्तस्स ।

अणेगासु इमं -

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेदो पहावती ।

छेदेण छिण्णपरियाए, ततो मूलं ततो दुगं ॥६२५९॥

सत्तदिवसे चउलहुं तवो, ततो एकं दिवसं चउलहुच्छेदो, ततो एक्केक्कदिवसं मूलणवट्टुपारंचिया ।  
अहवा - तवो तहेव चउलहुं छेदो सत्तदिवसे । सेसा एक्केक्कदिवसं । अहवा - तवो तहेव छगुरुच्छेदो सत्तदिवसे,  
सेसा एक्केक्कं । अहवा - चउलहु तवो सत्तदिवसे, ततो चउगुरु तवो सत्तदिवसे ?, ततो छल्लहु तवो  
सत्तदिवसे, ततो छगुरु तवो सत्तदिवसे, ततो एते चेव छेदो सत्त सत्त दिवसे, ततो मूलणवट्टुपारंचिया  
एक्केक्कदिणं । अहवा - ते च्चेव चउलहुगादि वा सत्त दिवसिगा, ततो छेदा लहुपणगादिगा सत्त सत्त दिवसिगा  
सत्त दिवसे णेयव्वा जाव छगुरु, ततो मूलणवट्टुपारंचिया एक्केक्कदिवसं ॥६२५९॥

गिहिअण्णतित्थिएसुं इमे दोसा -

मिच्छत्तथिरीकरणं, तित्थस्सोभावणा य गेण्हंते ।

देंते पवंचकरणं, तेणेवअखेवकरणं च ॥६२६०॥

कहं मिच्छत्तं थिरतरं ?, उच्यते - ते तं दट्ठुं तेसिं समीवे गच्छंतं मिच्छद्दिट्ठी चित्तेति - इमे  
चेव पहाणतरा जाता, एते वि एतेसिं समीवे सिक्खंति । लोगो दट्ठुं भणाति - एतेसिं अण्णो आगमो णत्थि,  
परसंतिताणि सिक्खंति । निस्सारं पवयणंति ओभावणा । अह तेसिं देति तो ते सदसत्थादिभावित्ता महाजणमध्ये  
वट्ठं चोरं खुज्जाविलियासणए करीसए पिलुअए त्ति एवमादिपवंचणं करेंति उड्डाहं च । अहवा - तेणेव  
सिक्खिएण अवखेवे त्ति चोयणं करेज्ज दूसेज वा ॥६२६०॥

गिहिअण्णतित्थियाणं, एए दोसा उ देंत गेण्हंते ।

गहण-पडिच्छणदोसा, पासत्थादीण पुव्वुत्ता ॥६२६१॥

कंठ्या । णवरं - पासत्थादिसु गहणपडिच्छणदोसा जे ते पण्णरसमे उद्देशेने वुत्ता ते दट्ठव्वा ।  
वंदण-पसंसणादिया तेरसमे । जम्हा एते दोसा तम्हा गिहिअण्णतित्थिया वा ण वाएयव्वा ॥६२६१॥ परपासं-  
डिलक्खणं - जो अण्णाणं मिच्छत्तं कुव्वंतो कुत्तिथिए वाएति, जिणवयणं च णाभिगच्छति सो परपासंडी ।

जो पुण गिहि-अण्णतित्थिओ वा इमेरिसो -

णाणे चरणे परूवणं, कुणति गिही अहव अण्णपासंडी ।

एएहि संपउत्तो, जिणवयणं सो सपासंडी ॥६२६२॥

णाणदंसणचरित्ताणि परूवेति, जिणवयणं च रोएति सो सपासंडी वेव, सो वाइज्जइ जं तस्स जोगं ।

एएहि संपउत्तो, जिणवयणमएण सोग्गतिं जाति ।

एएहि विप्पमुक्को, गच्छति गति अण्णत्तिथीणं ॥६२६३॥

जो अण्णत्तित्थियाणुरुवागिती तं गच्छति । सेसं कंथं ।

भवे कारणं वाएज्जा वि -

पव्वज्जाए अभिमुहं, वाएति गिही अहव अण्णपासंडी ।

अववायविहारं वा ओसण्णुवगंतुकामं वा ॥६२६४॥

गिहि अण्णपासंडि वा पव्वज्जाभिमुहं सावगं वा छज्जीवणिय त्ति जाव सुत्ततो, अत्थतो जाव पिडेसणा, एस गिहत्थादिमु अववादो । इमो पासत्थादिसु अववादो त्ति उवसपदा उज्जयविहारीणं उवसंपण्णो जो पासत्थादी सो अववादविहारठितो तं वा वाएज्ज । अहवा - पासत्थादिगाण जो संविग्गविहारं उव-  
गंतुकामो - अब्भुट्ठितकाम इत्यर्थः । तं वा पासत्थादिभावरहितं चेव वाएज्जा, जाव अब्भुट्ठेति ॥६२६४॥

एवं वायणा दिट्ठा, तेसि समीवातो गहणं क्हं होज्ज ?, उच्यते -

वित्थियपद समुच्छेदे, देसाहीते तहा पक्कप्पम्मि ।

अण्णस्स व असतीए, पडिक्कमंते व जयणाए ॥६२६५॥

जस्स भिवखुस्स निरुद्धपरियाओ वट्ठति, निरुद्धपरियाओ णाम जस्स तिण्णि वरिसाणि परियायस्स संपुण्णाणि, तस्स य आयारपक्कप्पो अधिज्जियव्वो । आयारिया य कालगता, एसेव समुच्छेदो, अहवा - कस्सइ साहुस्स आयारपक्कप्पस्स देसेण अणवीते समुच्छेदो य जातो, एतेसि सव्वो आयारपक्कप्पो पढमस्स वित्थियस्स देसो अवस्सं अहिज्जियव्वो ॥६२६५॥

सो कस्स पासे अहिज्जियव्वो ?, उच्यते -

संविग्गमसंविग्गे, पच्छाकड सिद्धपुत्त सारुवी ।

पडिक्कंते अब्भुठिते, असती अण्णत्थ तत्थेव ॥६२६६॥

सगच्छे चेव जे गीयत्था, तेसि असति परगच्छे संविग्गमणुत्तसगासे, तस्स असति ताहे अण्णस्स, "अण्णस्स वि असतीए" त्ति अण्णसंभोइयस्स वि असति निआदिउक्कमेण असंविग्गेसु । तेसु वि णित्तियादिट्ठाणाओ आवकहाए पडिक्कमावितो, अणिच्छि जाव अहिज्ज ताव पडिक्कमावित्ता तहावि अणिच्छे तस्स व सगासे अहिज्जइ । सव्वत्थ वंदणादीणि ण हावेइ । एसेव जयणा । तेसि असतीए पच्छाकडो त्ति जेण चारित्तं पच्छाकडं उन्नियत्ततो भिवखं हिडइ वा न वा ।

सारुविगो पुण सुविकल्लवत्थपरिहिओ मुंडमसिहं घरेइ अभज्जो अ पत्तादिसु भिवखं हिडइ ।

अण्णे भण्णंति - पच्छाकडा सिद्धपुत्ता चेव, जे असिहा ते सारुविगा । एएसि सगासे सारुविगाइ पच्छाणुलोमेण अधिज्जति, तेसु सारुविगादिसु पडिक्कंते अब्भुट्ठिए त्ति सामात्थियकडो व्रतारोपिता अब्भुट्ठिओ, अहवा - पच्छाकडादिएसु पडिक्कंतेसु । एते सव्वे पासत्थादिया पच्छाकडादिया य अण्णं खेतं णेउं पडिक्कमावज्जति, अणिच्छेसु तत्थेव त्ति ॥६२६६॥

"देसाहीते" त्ति अस्य व्याख्या -

देसो सुत्तमहीयं, न तु अत्थतो व असमत्ती ।

असति मणुण्णमणुण्णे, इतरेतरपक्खियमपक्खी ॥६२६७॥

पुव्वद्धं कंठं । “असति मणुणमणुणे” त्ति पयं गयत्थं ति । “इतरेतर” त्ति असति णितियाण इतरे संसत्ता, तेसि असति इतरे कुसीला एयं णेयव्वं, एसो वि अत्थो गतो चेव । तेसु वि जे पुव्वं संविग्गपक्खिता पच्छा संविग्गपक्खिएसु इमेरिसा जे पच्छाकडादिया मुंडगा ते । पच्छाकडादिया जावज्जीवाए पडिक्क-माविज्जति, जावज्जीवमणिच्छेसु जाव अहिज्जति ॥६२६७॥

तहवि अणिच्छेसु -

मुंडं च धरेमाणे, सिंहं च फेडंत णिच्छ ससिहे वी ।

लिंणेण असागरिए, ण वंदणादीणि हावेति ॥६२६८॥

जति मुंडं धरेति तो रयोहरणादी दव्वलिगं दिज्जति जाव उद्देसातो करेइ, ससिहस्स वि सिंहं फेडेत्तुं एमेव दव्वलिगं दिज्जति, सिंहं वा णो इच्छति फेडेत्तुं तो ससिहस्सेव पासे अधिज्जति, सलिंणे ठिगो चेव असागरिए पदेसे सुयपूय त्ति काउं वंदणाइ सव्वं ण हावेइ, तेण विचारेयव्वं ॥६२६८॥

पच्छाकडयस्स पासत्थादियस्स वा जस्स पासे अधिज्जति ।

तत्थ वेयावच्चकरणे इमो विही -

आहार उवहि सेज्जा, एसणमादीसु होति जतियव्वं ।

अणुमोयण कारावण, सिक्खति पदम्मि सो सुद्धो ॥६२६९॥

जति तस्स आहारादिया अत्थि तो पहाणं । अह णत्थि ताहे सव्वं अप्पणा एसणिज्जं आहाराति उप्पाएव्वं ॥६२६९॥

अप्पणा असमत्थो -

चोदेति से परिवारं, अकरेमाणे भणाति वा सद्धे ।

अव्वोच्छित्तिकरस्स उ, सुयभत्तीए कुणह पूयं ॥६२७०॥

दुविहासती य तेसिं, आहारादी करेति सव्वं तो ।

पणहाणी य जयंतो, अत्तट्ठाए वि एमेव ॥६२७१॥

जो तस्स परिवारो, पासत्थादियाण वा सीसपरिवारो, सद्धा वि संता ण करेति, असंता वा णत्थि सद्धा, एवं असतीए सो सिक्खगो आहारादी सव्वं पणगपरिहाणीते जयणाते तस्स विसोहिकोडीहिं सयं करेत्तो सुज्झति । अप्पणो वि एमेव पुव्वं सुद्धं गेण्हति, असति सुद्धस्स पच्छा विसोहिकोडीहिं गेण्हंतो सिक्खइ । अववादपदेण विसुज्झइ ॥६२७१॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुणीए एगूणवीसइमो उद्देशओ समत्तो ॥



## विंशतितम उद्देशकः

भणिग्रो एगूणवीसइमो उद्देसग्रो । इंदार्णि वीसइमो भण्णइ । तस्सिमो संवंधो -

हत्थादि-वायणंते, पडिसेहे वितहमायरंतस्स ।

वीसे दाणाऽऽरोवण, मासादी जाव छम्मासा ॥६२७२॥

पगप्पस्स हत्थकम्मसुत्तं जाव वायणंतं सुत्तं, एत्थ वितहमायरंतस्स दिट्ठमेयं एगूणविसाए वि उद्देसेसु  
आवज्जणपच्छित्तं, तेसि आवण्णाणं वीसतिमउद्देसे दाणपच्छित्तेणं ववहारो भण्णति - दाणत्तेण पच्छित्तस्स  
आरोवणा दाणारोवणा । आरोवणत्ति - चडावणा, अहवा - जं दव्वादिपुरिसविमागेण दाणं सा आरोवणा ।  
तं च कस्स ? कहं ? आयरियमुवज्झायाणं कताकतकरणणं, भिवखूण वि गीतमगीताण, थिरकयकरणसंधयण-  
संपण्णाणेराराण य गच्छंगताणं च सव्वेसि तेसि इह दाणपच्छित्तं भण्णइ, तं च इह सुत्ततो मासादी जाव  
छम्मासा, णो पणगादिभिण्णमासंता, ते वि अत्थतो भाणियव्वा ॥६२७२॥

एतेण संवधेणागयस्स इमं पढमसुत्तं -

जे भिवखू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा-

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासियं,

पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासियं ॥सू०॥१॥

जे णिद्देसे, भिदिर् विदारणे, क्षुध इति कर्मणः आख्या, तं भिनत्तीति भिक्षुः, भिक्षणशीलो वा  
भिक्षुः, भिक्षाभोगी वा भिवखू । मासान्निष्फन्नं मासिकं, यथा - कौशिकं, द्रौणिकं । अहवा - माणसणातो वा  
मासो, जम्हा समयादिकालमाणाई असति तम्हा मासे समयावलियमुहुत्ता माणा तत्रान्तर्गतादित्यर्थः । अहवा -  
दव्वखेत्तकालभावमाणा असतीति मासो । दव्वतो जत्तिया दव्वा मासेणं असति, खेत्तग्रो जावत्तियं खेतं मासेण  
असति । कालतो तीसं दिवसा, भावतो जावत्तिया सुत्तत्यादिया भावा मासेणं गेण्हति । परिहरणं - परिहारो  
वज्जणं ति वुत्तं भवति । अहवा - परिहारो वहणं ति वुत्तं भवति, तं प्रायश्चित्तं । ४। गतिनिवृत्तौ, तिष्ठन्त्य-  
स्मिन्निति स्थानं, इह प्रायश्चित्तमेव ठाणं, तं प्रायश्चित्तठाणं अणेगप्पगारं मूलुत्तरदप्पकप्पजयाजय  
भेदप्रभेदभिण्णं भवति । आङ्-मर्यादा वचने, लोक-दर्शने, आलोयणा णाम जहा अप्पणो जाणति तहा  
परस्स पागडं करेइ । परि सव्वतो भावे कुच-कौटिल्ये, तस्स पलिकुंचणे ति ख्वं भवति, रलयोरैक्यम् इति  
कृत्वा, न पलिकुंचणा अपलिकुंचणा, तस्सेवं अपलिकुंचियं आलोएमाणस्स मासियं लहुगं गुरुगं वा पडिसेवणा-  
णिप्फणं दिज्जति । जो पुण पलिकुंचियं आलोएइ तस्स जं दिज्जति पलिउंचणमासो य मायाणिप्फणो गुरुगो  
दिज्जति । एस सुत्तथो ।

इदानीं एसेवत्यो सुत्तफासियणिज्जुत्तीए वित्तयेरेणं भण्णति -

जे त्ति व से त्ति व के त्ति व, णिद्देसा होंति एवमादीया ।

भिक्षुस्स परुवणया, जे त्ति कओ होति णिद्देसो ॥६२७३॥

जे त्ति वा, से त्ति वा, के त्ति वा एवमादी । णिद्देसवायगा भवन्ति । जे-कारस्स णिद्देसदरिसणं - “जे असंतएणं अभक्खाणेणं अभक्खाइ” इत्यादि । से-गारो जहा - “से गामंसि वा” इत्यादि । के-कारो जहा - “कयरे आगच्छति दित्ते रुवे” इत्यादि ।

चोदगाह - कि कारणं सेसणिद्देसे मोत्तुं जेकारेणं निद्देसं करेइ ?

आचार्याह - एत्थ कारणं भण्णइ - सेगारस्स णिद्देसो पुव्वपगतापेक्खी जहा - “भिक्षू वा” इत्यादि । ककारो संसयपुच्छाए वा भवति, जहा - “कि कस्स केण व कहं केवचिर कइविद्दे” इत्यादि । जेगारो पुण अणिद्धिद्ववायपुद्देसे जहा - “जेणेव जं पडुच्च” इत्यादि, अहवा - जहा इमो चेव जेगारो उस्सगववायट्ठिएण पडिसेवियं व त्ति न निद्धिद्वं शुलं लहुं वा जयणाजयणाहिं वा तेण जेगारेण निद्देसो कृतेत्यर्थः अहवा - जेकारेण अनिद्धिद्वभिक्षुस्सट्ठा निद्देसो ॥६२७३॥

सो भिक्षू चउव्विहो इमो -

नामं ठवणा भिक्षू, दव्वभिक्षू य भावभिक्षू य ।

दव्वे सररीरभविओ, भावेण उ संजतो भिक्षू ॥६२७४॥

नाम भिक्षू, जस्स भिव्वुत्ति नामं कयं ।

ठवणा भिक्षू चित्रकर्मलिहितो ।

दव्व भिक्षू दुविधो, आगमतो नो आगमतो य । आगमतो जाणए अणुवओगो दव्वमिति वचनात् । नोआगमओ जाणगादिति विधो, दोणिण वि भासित्ता तव्वतिरित्तो एगभवियादितिविधो, एगभविओ णाम जो णेरइयतिरिए य - मणुयदेवेषु वा अणंतं उच्चित्ता जत्थ भिव्वू भविस्सति तत्थ उव्वज्जिह्वित्ति, वद्धाउओ णाम जत्थ भिव्वू भविस्सइ तत्थ आउयं वद्धं, अभिमुह्णामगतो णाम जत्थ भिव्वू भविस्सति जत्थ उव्वज्जिउकामो समोहतो पदेसा णिच्छूढा । अहवा - सयणवणादिपरिचचइयं पव्वजाभिमुहो गच्छमाणो । गओ दव्वभिक्षू ।

इदानीं भावभिक्षू । सो दुविधो - आगमतो णो आगमतो य । आगमतो जाणए भिक्षुसदोपयुत्ते, णो आगमतो इहलोगणिप्पिवासो संवेगभावित्तमती संजमकरणुजतो भावभिक्षू ॥६२७४॥

चोदगाह - त्वयोक्तम् -

भिक्षुणसीलो भिक्षू, अण्णे वि ण ते अणऽणवित्तित्ता ।

णिप्पिसिएणं णातं, पिसितालंभेण सेसाउ ॥६२७५॥

“भिक्षाहारो वा भिक्षू”, एवमन्ये रक्तपटादयोऽपि - भिक्षवो भवन्ति” ।

आचार्याह - न ते भिक्षवः । कुतः ?, येन तेषां भिक्षावृत्तिरूपवा न भवति । आहूतमपि आघाकर्मदोपयुक्ता च तेषां वृत्तिः प्रलंवादि, अन्यान्यवृत्तयश्च तेन ते भिक्षवो न भवन्ति । तस्मात् साधव एव भिक्षवो भवन्ति, । नामाघाकर्मदिदोषवजिता पवा वृत्तिः । “अणणवित्तित्ता” - अणण-



वृत्तयश्च, भिक्षां भुक्त्वा नास्त्यन्या साधूनां वृत्तिः । एत्थ आयरिंओ णिप्पिसिएण दिट्ठं करेति, सपिसियं जो भुंजति सो सपिसिओ, जो ण भुंजति सो णिप्पिसिओ । “पिसियालंभेण सेसा य” ति - जे पुण भणंति - “णिव्वि (प्पि) सा वयं जाव पिसियस्स अलाभो” ति, एवं भणंता सेसा न निप्पिसिया भवन्तीत्यर्थः ॥६२७५॥

इमे वि एयस्सेव अत्थस्स पसाहगा दिट्ठंता -

अविहिंस वंभचारी, पोसहिय अमज्जमंसियाऽचोरा ।

सति लंभ परिच्चाती, होंति तदक्खा ण पुण सेसा ॥६२७६॥

अहवा कोइ भणेज्जा - अहिसगोऽहं जाव मिए ण पस्सामि ।

अण्णो कोति भणेज्ज - वंभचारी अहं जाव मे इत्थी ण पडुप्पज्जति ।

अहवा एवं भणेज्ज - आहारपोसही हं जाव मे आहारो ण पडुप्पज्जइ ।

अहवा कोति भणेज्ज - अमज्जमंसवृत्ती हं जाव मज्जमंसे ण लहामि ।

अहवा कोति भणेज्ज - अचोरकवृत्ती हं जाव परच्छिद्रं न लभामि ।

एते असतिलंभपरिच्चागिणो वि णो तदक्खा भवन्ति, तेण अत्थेण अक्खा जेसिं भवति ते तदक्खा अहिसगा इत्यर्थः, सेसा अनिवृत्तचित्तास्तदाख्या न भवन्ति, ते उ रक्तपटादयो न भवन्ति भिक्षवः, ससावद्य-भिक्षामतिलंभपरित्यागिनः साधव एव भिक्षवो भवन्ति । “सेसे” ति भिक्षवगहणे वा साधूण चरगादियाण इमो विसेसो ॥६२७६॥

भण्णति -

अहवा एसणासुद्धं, जहा गेण्हंति भिक्खुणो ।

भिक्खं णेवं कुलिंगत्था, भिक्खजीवी वि ते जती ॥६२७७॥

“एसणासुद्धं” ति - उग्गमादिसुद्धं, पच्छाणुपुव्विगहणं वा एयं, सेसं कंठं । अहवा - ते चरगादि-कुलिंगी न केवलं भिक्षुवृत्त्युपजीवी ॥६२७७॥

जाव इमाणि य भुंजति -

दग्गमुद्देसियं चव, कंदमूलफलाणि य ।

सयं गाहा परत्तो य, गेण्हंता कह भिक्खुणो ॥६२७८॥

“दगं ति - उदगं, “उद्देसियं” ति तद्गुद्दिश्य कृतं, “कंद” इति मूल-कंदादी, पद्मिन्यादि मूला, आम्नादि फला, एयाणि स्वयं गेण्हंता कहं भिक्खुणो भवन्ति ? इत्युक्तं भवति ॥६२७८॥

जो पुण सण्णिच्छियभिक्खू इमेरिसी वृत्ती भवति -

अच्चित्ता एसणिज्जा य, मिता काले परिकिखता ।

जहालद्धविसुद्धा य, एसा वित्ती उ भिक्खुणो ॥६२७९॥

अगरहिता अगरहियकुलेसु वा भत्तिवहुमाणपुव्वं वा दिज्जमाणी अत्ति वातालीसदोसविसुद्धा एसणिज्जा भत्तदुप्पमाणजुत्ता मिता । “काले” ति दिवा । अहवा - गामणगरदेसकाले । अहवा ततियापोरिसीए

दायगादिदोसत्रिसुद्धा । परिक्खिता "जहालद्धा" णाम संजोयणादिदोसत्रज्जिता, एरिसवृत्तिणो भिक्खु भवन्ति ॥६२७९॥ "भिक्षणसीले" त्ति गतं ।

इदाणि "भिनत्ति" त्ति भिक्षु — "भिदिर्" विदारणे, "क्षुघ" इति कर्मणः आख्यानं, तं भिनत्तीति भिक्षुः, एष भेदको गृहीतः सो दुविहस्स भवति — दव्वस्स य भावस्स य । भेदकग्रहणान्च तज्जातीय-द्वयं सूचितं — भेदणं भेत्तव्वं च ।

जतो भण्णति — "दव्वे य भाव" गाहा ।

तत्थ —

दव्वे य भाव भेयग, भेदण भेत्तव्वगं च तिविहं तु ।

णाणाति भाव-भेयण, कम्म खुहेगद्धतं भेज्जं ॥६२८०॥

दव्वे तिविहो — दव्वभेदको दव्वभेयणाणि दव्वभेयव्वं । दव्वभेदको रहकारादि, दव्वभेदणाणि परमुमादीणि, दव्वतो भेत्तव्वं कट्टमादियं । भावे भावभेदको भिक्षुः, भावभेदणाणि णाणादीणि, भावभेत्तव्वं कम्मं ति वा, खुहं ति वा, वोण्णं ति वा, कलुसं ति वा, वज्जं ति वा, वेरं ति वा, पंको ति वा, मलो ति वा, एते एगद्धिता । एवं जाव भेज्जं भवति ॥६२८०॥

इमानि भिक्षोरेकार्थिकानि शक्रेन्द्रपुरन्दरवत् भिक्षु त्ति वा जति त्ति वा खमग त्ति वा तवस्सि त्ति वा भवन्ते त्ति वा ।

एतेसि इमा व्याख्या —

भिदंतो वा वि खुथं, भिक्षु जयमाणओ जई होइ ।

तवसंजमे तवस्सी, भवं खवंतो भवंतो त्ति ॥६२८१॥

भिनत्ति भिक्षुः । यती प्रयत्ने । तपः सन्तापे, तप अस्यःस्तीति तपस्वी । अहवा — अविकरणाभिधानादिदं सूचितं — तपसि भवः तापसः । अहवा — तपः संयमासना तवस्सी नारकादिभवाणमंतं करंतो भवंतो । नारकादिभवे वा क्षपयतीति क्षपकः, एत्थ भावभिक्षुणा अविकारो ॥६२८१॥ भिक्षु त्ति गयं ।

इदाणि मासो तस्स णामादिछक्कओ णिक्खेवो —

नामं ठवणा दविण, खेत्ते काले तहेव भावे य ।

मासस्स परूवणया, पगतं पुण कालमासेणं ॥६२८२॥

णामठवणाओ गताओ, दव्वमासो दुविहो — आगमओ णोआगमओ । आगमओ जाणओ अणुवत्तो । णो आगमतो जाणगसरीयं भविगसरीरं, जाणगभवियअइरित्तो इमो —

दव्वे भविओ णिव्वित्तिओ य खेत्तम्मि जम्मि वण्णणया ।

काले जहि वण्णिज्जइ, णक्खत्तादी व पंचविहो ॥६२८३॥

भविओ त्ति एगभविओ बद्धाउ अभियुहणामगोत्तो य । अहवा — जशरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्तः । "णिव्वित्तिओ" त्ति — मूलगुणणिव्वित्तितो उत्तरगुणणिव्वित्तिओ य । तत्थ मूलगुणणिव्वित्ती जेहि जीवेहि तप्पदमतए णामगोत्तस्स कम्मस्स उदएण मासदव्वस्स उदएणं मासदव्वपाउग्गाई दव्वाइं गहियाई ।

उत्तरगुणिव्यवत्तणाव्यवत्तितो चित्रकर्मणि मासत्वं वा लिहितो । जम्मि खेत्ते मासकप्पो कीरइ, जम्मि वा खेत्ते ठविजइ जम्मि वा खेत्ते वणिजइ, सो खेत्तमासो । कालमासो जम्मि वा कालमासो ठविजइ । अह्वा — कालमासो सावणभद्वयादी । अह्वा — सलक्खणणिप्फणो णक्खत्तादी पंचविहो इमो — णक्खत्तो चंदो उडु आइच्चो अभिवड्ढिओ य ॥६२८३॥

तत्थ णक्खत्तचंदा इमे —

अहोरत्ते सत्तवीसं, तिसत्तसत्तट्ठिभाग णक्खत्तो ।

चंदो अउणत्तीसं विसट्ठि भागा य वत्तीसं ॥६२८४॥

णक्खत्तमासो सत्तावीसं अहोरत्तो, “तिसत्त” ति एकवीसं च सत्तसट्ठिभागां — एस लक्खणओ य परिमाणओ य णक्खत्तमासो । चंदमासो अउणत्तीसं अहोरत्ते वत्तीसं च विसट्ठिभागे ॥६२८४॥

उडुमासो तीसदिणो, आइच्चो तीस होइ अद्धं च ।

अभिवड्ढितो य मासो, पगतं पुण कम्ममासेणं ॥६२८५॥

उडुमासो तीसं चेव पुण्णा दिणा । आदिच्चमासो तीसं दिणा दिणद्धं च । अभिवड्ढितो अहिमासगो भण्णति । एतेसि पंचण्हं पदाणं इह पगतं ति अधिकारो कम्ममासेणं, कम्ममासो ति उडुमासो ॥६२८५॥

अभिवड्ढियस्स इमं पमाणं —

एकवत्तीसं च दिणा, दिणभागसयं तहेक्कवीसं च ।

अभिवड्ढिओ उ मासो, चउवीससतेण छेदेणं ॥६२८६॥

एगत्तीसं दिवसा, दिवसस्स चउवीससयखंडियस्स इगवीसुत्तरं ३१३३३ च भागसतं एयं अधिमासगण्यमाणं ति । एतेसि च णक्खत्तादीयाण मासाणं उप्पत्ती इमा भण्णति —

अमीइमादी चंदो चारं चरमाणो जाव उत्तरासाढाण अंतं गओ ताव अट्टारससता तीसुत्तरा सत्तसट्ठी भागाणं भवंति, एतावता सब्बणक्खत्तमंडलं भवति ॥ ३६३० ॥ एतेसि सत्तसड्ढीए चेव भागो, भागलद्धं सत्तावीसं अहोरत्ता अहो रत्तस्स य इगवीसं सत्तसट्ठिभागा २७ ३३ एस णक्खत्तमासो परिमाणलक्खणओ । अह्वा — एयं चेव फुडतरं भण्णति — अभियस्स चंदयोगो इगवीसं सत्तसट्ठिभागा । अवरे छण्णक्खत्ता पण्णरस मुहुत्ता भोगाओ एतेसि छण्हं सतभिसा भरणी अट्टा अस्सेसा, साती जेट्टा य । एतेसि छण्हं तिण्णि अहोरत्ता ।

अण्णे छण्णक्खत्ता पण्णालमुहुत्तभोगी तं जहा — तिण्णि उत्तरा, पुणव्वसु, रोहिणी, विसाहा य । एते णव अहोरत्ता । तिण्हं मज्जे मेलित्ता वारस जाता ।

अण्णे पण्णरस णक्खत्ता तीसमुहुत्तभोगी, तं जहा — अस्सिणी, कित्तिया, मिगसिर, पुस्स, मघा तिन्नि पुव्वा, हत्थ, वित्ता, अणुराहा, मूल, सवण, धणिट्टा, रेवती य, एते पण्णरस अहोरत्ता । वारस मिलित्ता जाया सत्तावीसं सब्बे । रुक्खमंडलपरिभोगकालो णक्खत्तमासो भण्णति ।

इदाणि चंदमासो, तस्स गिरसगं, तं जहा — सावण बहुलपडिवयात्तातो आरव्व जाव सावणपोणिमा समतो — एस परिमाणतो चंदमासो । एवं भद्वतादितो वि सेसा दट्ठव्वा । लक्खणओ पुण आसाढपोणिमाए वतिककंताए सावणबहुलपडिवयाए रुद्धमुहुत्तसमयपढमाओ अभितिस्स भोगो पवत्तति चंदेण सह । इमो णव मुहुत्ते चउवीसं विसट्ठिभागे छावट्ठि सत्तसट्ठि चोणिणयाओ य ।

एते इमेण विहिणा भवन्ति—जे अभीयस्स इगवीसं सत्तसट्ठी भागा ते सह च्छेदेण वासट्ठीए गुणितां जाता तेरससया विउत्तरा, अंसाणं छेदो इगतालीसं सत्ता चउप्पण्णा (३३ + ६२ = ९५) तेण भागे ण देइ त्ति अंसा तीसगुणा कायव्वा, १३०२ + ३० = ३६०६०

४१५४

$$६ \frac{१६७४}{४१५४} + ६२ = \frac{१०३७८८}{४१५४} \quad ६२ = \frac{१६७४}{५७} = २९ \frac{६६}{६७}$$

तेहि भागेहिते लद्धं नव मुहुत्ता, ६ सेसं वासट्ठीए गुणयव्वं, एत्थ उ वट्ठो (छेदो) कज्जति-वासट्ठिभागेणं, एक्कतालीसताणं चउप्पण्णाण वासट्ठिभागेण सत्तसट्ठी ३३ भवन्ति, एक्केण गुणितं एत्तियं ६ चेवं सत्त सट्ठीए ६७ भागे हिते लद्धं चउवीसं वासट्ठिभागा ३३ छावट्ठं च सेसचुण्णीया भागा ३३ । एत्थ अभीति—भोगे सवणादिया सव्वे णक्खत्तभोगा छोटव्वा जाव उत्तरासाढाणं असंपत्तो, तत्थ इमा रासी जाता अट्ठसया एगूणविसुत्तरा ८१६ मुहुत्ताणं, चउव्वीसं च वासट्ठिभागे ३३ छावट्ठं चुण्णीया भागा । ६६ एत्थ पुणो अभीतिभोगो य छोटव्वो, सवणभोगो य सम्मत्तो ३०, घणिट्ठाण य छव्वीसं २६ मुहुत्ता वायालीसं वावट्ठिभागा दो य चुण्णिग्या ४२, ६२, २ भागा, ताहे इमो रासी, एयम्मि ८८४, ६०, ६२, १३२, ६७ भुत्तै । सावणपोणिमा सम्मत्ता ।

एत्थ चउतीसुत्तरसयस्स सत्तसट्ठीए भागो हायव्वो, दो लद्धा, ते उवरिं पक्खत्तां, जाता वाणउतीए वावट्ठिभाग त्ति काउं वावट्ठिए भातिता एक्को लद्धो सो उवरि पक्खत्तो, सेसा तीसं वावट्ठिभागा ठिता ८८५ जे पंचासीया अट्ठसया मुहुत्ताणं तेसि ३० तीसाए भागा लद्धा एगूणतीसं अहोरत्ता, जे सेसा पण्णरसा मुहुत्ता ते ६२ वासट्ठीए गुणिता जाता णवसया तीसुत्तरा, एत्थ जे ते सेसा तीसं वावट्ठिभागा ते पक्खत्ता जाया णवसया सट्ठी ६६० । एयस्स भागो तीसाए, लद्धा वत्तीसं, विसट्ठिभागा एते अउणत्तीसाए अहोरत्ताणं हेट्ठा ठविया विसट्ठित्ता छेदसहिता । एवं एसो चंदमासो अउणत्तीसं दिवसा विसट्ठिभागा य वत्तीसं भवन्ति ।

इदाणि उडुमासो भण्णति—एक्कं अहोरत्तं बुद्धीए वावट्ठि भागे छेत्ता तस्स एक्कसट्ठी भागा चंदगतीए तेहि समत्ती भवति ।

कहं पुण ?, उच्यते—जति अट्ठारसहि अहोत्तसएहि सट्ठेहि अट्ठारसंतीसुत्तरासया लव्वन्ति तो एक्केण अहोरत्तेण कि लव्वामो । एवं तेरासियकम्मे कते आगयं एगसट्ठिहं वावट्ठिभागा ३३ अहो रत्तस्स, एसा एक्कसट्ठी तीसाए तिहीहिं मासो भवति त्ति तीसां गुणयव्वं, ताहे इमो रासी जातो १८३० । एयस्स एगसट्ठीए भागो हायव्वो लद्धा तीसं तिही, एसो एवं उडुमासो णिप्फण्णो, एस चेव कम्ममासो, सहाणमासो य भण्णति । एस चेव रासी वावट्ठिहितो चंदमासो वि लव्वन्ति ।

इदाणि आइच्चमासो भण्णइ । सो इमेण विहिणा आणेयव्वो—आदिच्चो पुस्सभागे चउसु अहोरत्तेसु अट्ठारससु य मुहुत्तेसु दक्षिणायणं पवत्तन्ति, सो य अप्पणो चारेण सव्वणक्खत्त-मंडलचारं चरित्ता जाव पुणो पुस्सस्स अट्ठ अहोरत्ता चउव्वीसं मुहुत्ता भुत्ता ।

एस सव्वो आइच्चस्स णक्खत्तभोगं कालो पिडेयव्वो, इमेण विहिणा—

सयभिसयभरणीओ, अट्ठा अस्सेस सात्ति जेट्ठां य ।

वच्चन्ति मुहुत्ते एक्कवीसन्ति छच्च अहोरत्ते ॥

तिण्णुत्तरा विसाहां, पुणव्वसू रोहिणी य वोव्वंवा ।

गच्छन्ति मुहुत्ते तिण्णि चेवं वीसं च अहोरत्ते ॥

अवसेसा णक्खत्ता, पण्णरस वि सूरसहगया जंति ।  
 वारस चेव मुहुत्ते, तेरसय समे अहोरत्ते ॥  
 अभिति छच्च मुहुत्ते, चत्तारि य केवले अहोरत्ते ।  
 सूरेण समं गच्छइ, एत्तो करणं च वोच्छामि ॥

एयं सव्वं मेलियं इमो अहोरत्तरासी भवति ॥३६६॥

एयं आदिच्चं वरिसं । एयस्स वारसहि भागो भागलद्धं आदिच्चमासो । अहवा - पंचगुणस्स सट्ठीए भागो भागलद्धं तीसं अहोरत्ता, अहोरत्तस्स य अद्धं, एस आदिच्चमासो पमाणओ लक्खणतो य । एत्थ वि सव्वमासा अप्पणो भागहारेहि उप्पज्जंति ।

इदाणि अभिवड्ढिओ -

छच्चेव अतीरित्ता, हवति चंदम्मि वासम्मि ।  
 वारसमासेणेते, अड्ढाइज्जेहि पूरितो मासो ॥  
 एवमभिवड्ढितो खलु, तेरसमासो उ बोधव्वो ॥

वर्षमिति वाक्यशेषः ।

सट्ठीए अतीताए, होति तु अधिमासगो जुगद्धम्मि ।  
 बावीसे पक्खसते, होई वितिओ जुगंतम्मि ॥

अहवा - णक्खत्तादीमासाण दिणाण य णं इमातो पंचविहातो पमाणवरिसदिवसरासीतो अट्ठारस-सत्ततीसुत्तराओ आणज्जति । तेसु पंचप्पमाणा वरिसा इमे - चंदं चंदं अभिवड्ढियं पुणो चंदं अभिवड्ढियं । तेसिमं करणं - चंदमासो एगुणतीसं २९ दिवसे, दिवसस्स य वासट्ठिभागा वत्तीसं ३३, एस चंद मासो ।

वारमासवरिसं ति - एस वारसगुणो कज्जति, ताहे इमं भवति अड्डयाला तिणिसया दिवसाणं, विसट्ठिभागाण य तिणिसया चुलसीया, ते बावट्ठी भइया लद्धा छद्विसा, ते उवरि पक्खत्ता जाता तिणि सत्ता चउप्पणा, ३५४ सेसा वारस, ते ज्ञेयंसा अद्धेण उवट्ठिता जाया एगतीसं भागा ३<sup>६</sup>, एयं चंदवरिसपमाणं । “तिणि चंदवरिस ति तो तिगुणं कज्जति, तिगुणकयं इमं भवति वासट्ठिहियं दिणसहस्सं, एगतीसविभागा य अट्ठारस<sup>१</sup> । एयं तिण्ह चंदवरिसाणं पमाणं । एत्तो अभिवड्ढियकरणं भण्णति सो एकतीसं दिणाति एकवीससयं चउवीससयं भागाणं, एरिस “वारस मासा वरिस” ति काउं वारसहि गुणेयव्वा, गुणिए इमो रासी, तिणि सया बोहत्तरा दिणाणं चउवीससया भागा चोदससया बावणा<sup>२</sup>, छेदेण भातिते लद्धा एक्कारस, ते उवरि छूढा जाता तिणिसया दिवसाणं तेसीया हिट्ठा अट्ठासीति सेसगा, ते सच्छेया चउहि उवट्ठिता जाया एकती-सभागा बावीसं, एयं अभिविड्ढियवरिसप्पमाणं ।

“दो अभिविड्ढियवरिस” ति <sup>३</sup>एस रासी दोहि गुणेयव्वो, दोहि गुणिए इमो रासी सत्तसया छावट्ठा दिवसाण इगतीस भागा य च्चोयाला ए एकतीसभातियालद्धो तत्थेक्को, सो उवरि छूढो, जाया सत्तसया सत्तट्ठा एकतीसतिभागा य तेरसा । ७६७, ३<sup>३</sup> । एस अभिविड्ढियवरिसरासी पुव्वभणियचंदवरिसरासिस्स मेलितो । कंहं ?, उच्चयते - दिवसा दिवसेसु, भागा भागेषु । ताहे पंचवरिसरासी “सरत्तविबुद्धो भवइ उ” अट्ठारससया तीसुत्तरा ॥१८३०॥ एस धुवरासी ठाविज्जति । एयाओ धुवरासीओ सव्वमासा णक्खत्तादिया उप्पाइज्जंति अप्पप्पणो भागहारेहि ।

१-१०६२ ।	२-३१	३७२ ।	३-३८३	२२ ।
१८	१२१	१४५२		३१
३१	१२४	१२४		

जग्नो भणितं—

भा-ससि-रितु-स्रमासा, सत्तट्टि वि एगसट्टि सट्टी य ।

अभिवड्डियस्स तेरस, भागाणं सत्त चोयाला ॥६२८७॥

सत्तट्टिं णक्खत्ते, छेदे वावट्टिमेव चंदम्मि ।

एगट्टि अ उडुम्मि सट्टीं पुण होइ आइच्चं ॥६२८८॥

सत्तसया चोयाला, तेरसभागाणं हंति नायच्चा ।

अभिवड्डियस्स एसो, नियमा छेदो मुण्यच्चो ॥६२८९॥

अट्टारसया तीमुत्तरा उ ते तेरसेसु संगुणिता ।

चोयाल सत्तभइया, छावट्टिनिगिवट्टिया य फलं ॥६२९०॥

भा इति णवसत्तमासो, ससि ति चंदमासो, रितु ति वा कम्ममासो वा एगट्टं, स्रमासो य, एतेसि मासाणं जहासंखं भागदारा इमेरिसा—मत्तसट्टी विसट्टि एगमट्टी सट्टी य अभिवड्डिय मासस्स भागहारो सत्तसया चोयाला तेरसभागेणं । एतेसि इमा उपपत्ती जइ तेरसेहि चंदमासेहि वारस अभिवड्डियमासा लब्धंति तो वावट्टीए चंदमासेहि कति अभिवड्डियमासा लभिस्सामो एवं तेरासिए कते आगतं सत्तःवणमामो मासस्स य तिणि तेरसभागा, एते पुणो सवणिगया जाता सत्तसया चोयाला तेरसभागाणं ति, एतेहि अट्टारसय्हं सयाणं तीमुत्तराणं तेरसगुणिताण २३७९० भागो हायच्चो, लद्धं एकतीसं दिगा, नेसं मत्तसया छव्विसा ते छहि उवट्टिया जाया सयं एकवीसुत्तरं अंसाणं, छेदे वि सयं चउवीसुत्तरं, एस अभिवड्डियवरिसवाग्गसभागे अधिमासगो । जो पुण ससिसूरगतिविसेसणिक्कणो अधिमासगो सो अउणत्तीसं दिगा विसट्टिभागा य वत्तीनं भवति ।

कहं ?, उच्यते — “ससिणो य जो विसेसो आइच्चस्स य हवेज्ज मासस्स तीसाए संगुणितो अधिमासगो चंदो । आइच्चमासो तीसं दिगा तीसा य सट्टिभागा, चंदमासो अउणत्तीनं दिगा विसट्टिभागा य वत्तीसं । एतेसि विसेसे कते सेसमुद्धरितं एकतीसं वासट्टिभागा अण्णे तीसं चैव वासट्टिभागा, एते उवट्टिया परोप्परं छेदगुणकाउं एगस्स सरिसच्छेदो नेट्टो अंसेसु पक्खित्ता तेसु वि च्छेयं सवट्टिएसु एगसट्टि वासट्टि भागा (उ) जाया अहोरत्तस्स, एस एको तिही सोमगतीए सो तीसगुणितो विसट्टिभातिगो चंदमासपरिमाणणिक्कणो अहिमासगो भवति ।

अहवा — इमेण विहिणा कायच्चं — जइ एक्केण आइच्चमासेण एक्का सोमतिही लब्धंति तो तीसाए आदिच्चमासेहि कति तिही लब्धामो, आगतं तीसं सोमतिहीगो, एस आदिच्चचंदवरिसअभिवड्डियय्यमासे य प्रतिदिनं प्रतिमासं च कला बहुमाणी तीसाए मासेसु मासो पूरति ति, एसो अधिमासगो चंदमासप्पमाणी चंदो अधिमासगो भणति, एवं चैव अभिवड्डिं पडुच्च अभिवड्डियवरिसं भणति ।

भणियं च सूरपण्णत्तीए — “तेरस य चंदमासो, एसो अभिवड्डिगो ति णायच्चो” वपंमिति वाक्यशेषः । तस्स वारसभागे अधिमासगो अभिवड्डियवर्षमासेत्यर्थः । अथवा — अधिमासगप्पमाणं इमं एगतीसं दिगा अउणत्तीस मुहुत्ता विसट्टि भागा एस सतरसा, एते कहं भवति ? उच्यते — जं एगवीस-उत्तरसयं अंसाणं तीसगुणं कायच्चं तस्स भागो सयेण चउवीसउत्तरेण भागलद्धं अउणत्तीसं मुहुत्ता, सेसस्स अद्धे ताव दो, तस्य विसट्टि भागा सत्तरस भवति, एवं वा एकतीसदिगसहियं अधिकमासपमाणं । एसो पंचविहो कालमासो भणति ॥६२९०॥



इदार्णि भावमासो सो दुविहो आगमतो णो आगमतो य -

मूलादिवेदओ खलु, भावे जो वा वियाणतो तस्स ।

न हि अग्निगाणओऽग्गी-णाणं भावो ततोऽणणो ॥६२९१॥

जो जीवो धण-मास-मूल-कंद-पत्त-पुष्प-फलादि वेदेति सो भावमासो, जो वा आगमतो उवउत्तो मास इति पदत्थजाणओ ।

चोदगाह - “ण हि अग्निगाणओ अग्नि” ति नत्वग्निज्ञानोपयोगतः आत्मा अन्याख्यो भवति ।

एवमुक्ते चोदकेनाचार्याह - “णाणं भावो ततो णऽणो” ति णाणं ति ज्ञानं, भावः अधिगमः उपयोग इत्यनर्थान्तरमिति कृत्वा अग्निद्रव्योपयुक्त आत्मा तस्मादग्निद्रव्यभावादप्यो न भवति ॥६२९१॥

एत्थ छविहो मासणिकखेवो, कालमासेण अधिकारो, तत्थ वि उडुमासेण, सेसा सीसस्स विकोवणट्ठा भणिया, मासे ति गयं ।

इदार्णि “परिहारे” ति, तस्स इमो णिकखेवो -

१ २ ३ ४ ५ ६ ७  
णामं ठवणा दविए, परिगम परिहरण वज्जणोग्गहे चेव ।

८ ९ १०  
भाववणणे सुद्धे, णव परिहारस्स नामाइं ॥६२९२॥

भावपरिहारो दुविधो कज्जति ( आवणपरिहारो सुद्धो य ) आवणपरिहारितो एस चरित्ताइयारो । अहवा - भावपरिहारितो दुविधो पसत्थो अपसत्थो य । पसत्थे जो अण्णाणमिच्छादि परिहरति, अपसत्थो जो णाणदंसणचरित्ताणि परिहरति । एवं भावे तिविहे कज्जमाणे दसविहो परिहारनिकखेवो भवति २ ॥६२९२॥

एतेसि इमां व्याख्या - णामठवणातो गतातो, वतिरित्तो दव्वपरिहारो ।

कंटगमादी दव्वे, गिरिनदिमादीसु परिओ होति ।

परिहरण धरण भोगे, लोउत्तर वज्ज इत्तरिए ॥६२९३॥

लोगे जह माता ऊ, पुत्तं परिहरति एवमादी उ ।

लोउत्तरपरिहारो, दुविहो परिभोग धरणे य ॥६२९४॥

जो कंटगादीणि परिहरति आदिगहणेणं खानू विससप्पादी । परिगमपरिहारो णाम जो गिरि नदि वा परिहरंतो जाति, आदिगहणातो समुद्धमडवि वा । परिगमो ति वा पज्जहारो ति वा परिओ ति वा एगट्ठं । परिहरणं परिहारो दुविहो लोइओ लोउत्तरो य । तत्थ लोगे इमो - “लोगे जह” पुव्वद्वं कंठं ।

लोउत्तरपरिहारो दुविहो - परिभोगे धरणे य । परिभोगे परिभुंजति पाउणिज्जतीत्यर्थः । धारणपरिहारो नाम जं संगोविज्जति पडिलेहिज्जति य, ण य परिभुंजति ।

१ सू० १ । “२भावपरिहारो दुविहो य पसत्थो । अपसत्थो जो अण्णाणमिच्छादि परिहरति आवणपरिहारितो एवं नवविधोभवति, भावसामान्यतो अट्ठविधो भवति । अहवा - सुद्ध परिहारितो एस अणइयारो, आवण परिहारितो एस चरित्तायारो ।” अयं पाठ स्तावत् टाइपअंकितप्रती टिप्पणीरूपेण सूचितः ।

दुविहो - लोइओ लोउत्तरिओ य । लोइओ इतरितो आवकहिओ य । इतरिओ सूयगमतगादिसदिवसवज्जणं, आवकहितो जहा णड-वसड-छिपग-चम्मर-डुंवादि । लोउत्तरिओ दुविहो - इतरिओ आवकहितो य । तस्य इतरिओ सेज्जायरदाणअभिगमसङ्कादि, आवकहितो रायपिडो । अहवा - 'अट्टारस पुरिसेसु' ।

अणुगहपरिहारो -

खोडादिभंगऽणुगह, भावे आवण्णसुद्धपरिहारो ।

मासादी आवण्णो, तेण तु पगतं न अन्नेहिं ॥६२६५॥

"खोडभंगो" ति वा, "उक्कोडभंगो" ति वा, "अक्खोडभंगो" ति वा एगट्ठं, आइ मर्यादायां । खोडं णाम जं रायकुलस्स हिरणादि दव्वं दायव्वं वेट्टिकरणं परं परिणयणं चोरभडादियाण य चोन्लगादिप्प-दाणं तस्स भंगो खोडभंगो, तं रायणुगहेणं मज्जायाए भंजंतो एवकं दो तिणिण वा सेवति जावतियं अणुगहो से कज्जति तत्तियं कालं सो दव्वादिसु परिहरिज्जति तावत् कालं न दाप्यतेत्यर्थः । एस अणुगह परिहारो । भावपरिहारो दुविहो - आवण्णपरिहारो सुद्धपरिहारो य । तस्य सुद्धपरिहारो जो वि सुच्चा पंचयामं अणुत्तरं घम्मं परिहरइ - करोतीत्यर्थः । विसुद्धपरिहारकप्पो वा घेप्पइ । आवण्णपरिहारो पुण जो मासियं वा जाव छम्मासियं वा पायच्छित्तं आवण्णो तेण सो सपच्छित्ती असुद्धो अ विसुद्धचरणेहिं सार्हीहि परिहरिज्जति । इह तेण अहिकारो ण सेसेहि ( अधिकारो ) १विकोवणट्ठा पुण परुविया ॥६२६६॥

इदार्णि १ठाणं, तस्सिमो चोइसविहो निक्खेवो -

नामं ठवणा दविए, खेत्तद्धा उडुओ विरति वसही ।

संजम पग्गह जोहो, अचल गणण संघणा भावे ॥६२६६॥

णामठवणातो गयाओ, जाणगसरीर भवियवइरित्तं दव्वट्ठाणं इमं -

सच्चित्तादी दव्वे, खेत्ते गामादि अद्धदुविहा उ ।

तिरियनरे कायठित्ती, भवठिति चेवावसेसाण ॥६२६७॥

सच्चित्तदव्वट्ठाणं अचित्तं मीसं । सचित्तदव्वट्ठाणं तिविधं - दुपयं चउप्पयं अपयं । दुपयट्ठाणं दिणे जत्य मणूसा उवविसंति तस्य ठाणं जायति, चउप्पदाणं पि एवं चेव, अपदाणं पि जत्य गरुयं फलं निक्खिप्पइ तस्य ठाणं संजायति । अचित्तं जत्य फलगाणि साहजंतादि णो निक्खिप्पति तस्य ठाणं । एतेसिं चेव दुपदा-दियाण समलंकितानां पूर्ववत् घडस्स वा जलभरियस्स ठाणं ( मीसं ) । खेतं गामणगरादियं तेसिं ठाणं खेत्तट्ठाणं, अहवा - खेतो गामणगरादियाण ठाणं ।

अद्धा काल इत्यर्थः, सो दुविहो उवलक्खितो जीवेसु अजीवेसु य । अजीवेसु जा जस्स ठिई । मंसारिजीवेसु दुविधा ठिई - कायठिई भवठित्ती य, तस्य तिरियनरेसु अणेगभवग्गहणसंभवात्तो कायठिई, सेसाणं ति - देवनारगाणं एगभवसंचिदुणा भवठिई, अहवा - कालट्ठाणं समयावलियादि णेयं ॥६२६८॥



ठाण निसीय तुअट्टण, उट्टाती विरति सव्व देसे य ।

संजमठाणमसंखा, पग्गह लोगीतर दो पणगा ॥६२६८॥

“उट्ट” ति तज्जातीयग्गहणातो निसीयणतुयट्टणा वि गहिता, तेसि उट्टट्टाणं आदि तं पुण काउस्सग्गं णिसीयणं उवविसणं तुअट्टणं संपिहणं उ । “विरति” ठाणं दुविधं—देसे सव्वे य, तत्थ देसे सावयाणं अणुव्वया पंच, सव्वे साधूण महव्वया पंच । २वसहिट्टाणं उवस्सओ जस्स वा जं आवस्सहट्टाणं । “संजमठाणं” ति वा अज्झवसायठाणं ति वा परिणामठाणं ति वा एगट्ठं । एत्थ पढमसंजमट्टाणे पज्जय-परिमाणं सव्वागासपदेसग्गं, सव्वागासपदेसेहि अणंतगुणितं पढमं संजमट्टाणं पज्जवग्गेण भवति । ततो वितियादि-संजमट्टाणा उवस्वरिविसुद्धीए अणंतभागाहिगा णेया, एवं लवखणा सामण्णतो संजमट्टाणा असंखेज्जा । विभागतो सामातियच्छेदसंजमट्टाणा दो वि सरिसा असंखेज्जे ठाणे गच्छंति, ततो परिहारसहिता ते चेव असंखेज्जठाणे गच्छंति, ताहे परिहारितो वोच्छिज्जंति । तदुपरि सामातियच्छेदोवट्टावणिया अण्णे असंखेज्जठाणे गच्छंति, ताहे ते वोच्छिज्जंति । तदुवरि सुहुमसंपरायसंजमट्टाणा केवलकालतो अंतोमुहुत्तिया असंखेज्जा भवति, ततो अणंतगुणं एगं अहक्खायं संजमट्टाणं भवति । इमा ठवणा । “पग्गहठाणं” दुविहं—लोइयं, इतरं लोउत्तरं । “दो पणग” ति लोइयं पंचविहं ॥६२६८॥

तं जहा -

रायाऽमच्च पुरोहिय, सेट्ठी सेणावती य लोगम्मि ।

आयरियादी उत्तरे, पग्गहणं होइ उ निरोहो ॥६२६९॥

राया जुवराया अमच्चो सेट्ठी पुरोहितो । उत्तरे पग्गहे ठाणं पंचविहं—आयरिए उवज्झाए पवत्ति थेरो गणावच्छेइ । प्रकर्षेण ग्रहः, प्रकृष्टो वा ग्रहः, प्रधानस्य वा ग्रहणं प्रग्रह इत्यर्थः ॥६२६९॥

इदाणि जोहट्टाणं पंचविहं इमं—

आलीढ पच्चलीढे, वेसाहे मंडले समपदे य ।

अचले य निरेयकाले, गणणे एंगादि जा कोडी ॥६३००॥

वामुरुअं अगओ काउं दाहिणं पिट्ठतो वामहत्थेण घणं वेत्तूण दाहीणेण अपगच्छइ ति आलीढं । तं चिय विवरीयं पच्चालीढं । आलीढं अंतो पण्हितातो काउं अगगतले वाहि जं रहट्ठिओ वा जुज्झइ तं वइसाहं । जानूरुज्जे य मंडले काउं जं जुज्झइ तं मंडलं । जं पुण तेसु चेव जानूरुसु आयतेसु समपादट्ठितो जुज्झति तं समपादं । अण्णे भणंति—जं एतेसि चेव ठाणाणं जहासंभवं चलियठितो पासतो पिट्ठतो वा जुज्झति तं छट्ठं चलियणाम ठाणं ।

“अचलट्टाणं” णाम जहा—परमाणुपोगलेणं भंते ! निरेए कालतो केवचिरं होति ?, जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्ज कालं, असंखेज्जा उस्सप्पिणि ओसप्पिणीओ । निरेया निश्चल इत्यर्थः । एवं दुपदेसादियाण वि वत्तव्वं । “गणण” ति गणियं, तस्स ठाणा अणेगविहा, जहा एकं दहं सतं सहस्सं दससहस्साइं सयसहस्सं दहशतसहस्साइं कोडी । उवरि पि जहासंभवं भाणियव्वं ॥६२६९॥

१ गा० ६२६५ । २ गा० ६२६५ । ३ गा० ६२६५ । ४ पश्चान्मुखमयसरति । ५ गा० ६२६५ । ६ गा० ६२६५ ।

इदानीं “संवणा” सा दुविहा - दत्त्वे भावे य ।

पुणो एक्केक्का दुविहा - छिण्णसंवाणा अछिण्णसंवाणा य ।

तत्थ दत्त्वे “छिण्णमछिण्णसंवाणा” इमा -

रज्जमादि अछिण्णं, कंचुगमादीण छिण्णसंघणया ।

सेदिदुगं अछिण्णं, अपुण्वगहणं तु भावम्मि ॥६३०१॥

मीसाओ ओदइयं, गयस्स मीसगमणे पुणो छिण्णं ।

अपसत्थं पसत्थं वा भावे पगतं तु छिन्नेणं ॥६३०२॥

जं सूत्रं वा मुंजं वा रज्जुं अछिण्णं संवेति सा अछिण्णसंवाणा । अण्णोणसंवाणं इमा छिण्णसंघणा जहा कंचुगादीणं । भावसंवाणा दुविहा - छिण्णा अछिण्णा य, तत्थ अछिण्णमंवाणाए सेदिदुगं उवसामग-सेदी खवगसेदी य । उवसामगसेदीए पविट्ठो अण्णंताणुवंधिपमिइ आदत्तो उवसामेउं न थक्कइ ताव जाव सव्वं मोहगिज्जं उवसामितं । खवगसेदीए वि एवं चेव अपुण्वभावगहणं करेत्तो न थक्कइ ताव जाव सव्वं मोहं खवियं । एसा अछिण्णसंवाणा । एवं अपसत्याओ वि पसत्यसम्मत्तभावं संकतस्स जं पुणो अपसत्यमिच्छता-दिभावं संकमति । एसा अपसत्यछिण्णभावसंवाणा ।

अहवा - भावद्वारा ओदइय-उवसमिय-खइय-खओवसमिय-परिणामिय-सन्निवाइयाणं अप्पण्णो भाव-संस्वठाणं अण्णइ । एत्थ अधिकारो भावद्वाराण, तत्थ वि छिण्णभावसंवाणाए ।

कहं ? उच्यते - जेण सो पसत्यभावाओ अपसत्थं भावं गओ, तत्थ य मासियाति आवण्णो, पुणो आलोयणारिणओ पसत्थं चेव भावं संधेति ॥६३०२॥

इदानीं पडिसेवणा, सा इमा दुविहा -

मूलुत्तर पडिसेवणा, मूले पंचविह उत्तरे दसहा ।

एक्केक्का वि य दुविहा, दप्पे कप्पे य नायव्वा ॥६३०३॥

मूलगुणातिवारपडिसेवणा उत्तरगुणाइयारपडिसेवणा य । मूलगुणातिवारे पाणातिवायादि पंचविहा । उत्तरगुणेषु दसविहा इमा - पिडस्स जा विसोही, समित्तीतो ६, भावणाओ य ७, तवो दुविहो ८, पडिमा ९, अभिग्गहा १० ।

अहवा - अणागयमतिक्रंतं कोढिसहियं णियट्ठियं चेव सागारमणागारं परिमाणकढं गिरवसेसं सकेयं अट्ठापच्चक्काणं वेति ।

अहवा - उत्तरगुणेषु अणेगविहा पडिसेवणा कोहातिया । मूलुत्तरेषु दुविहा पडिसेवणा । सा पुणो एक्केक्का दुविहा - दप्पेग कप्पेग वा ॥६३०३॥ दप्पकप्पा पुण्वमणिता ।

सीसो पुच्छति -

किह भिक्खु जयमाणो, आवज्जति मासियं तु परिहारं ।

कंटगपहे व छलणा, भिक्खु वि तहा विहरमाणो ॥६३०४॥

पुण्वदं कं आयरियो भणति - कंटगपहे व पच्छदं कं ॥६३०४॥

किं चान्यत् —

तिक्खम्मि उदगवेगे, विसमम्मि वि विञ्जलम्मि वच्चंतो ।

कुणमाणो वि पयत्तं, अवसो जह पावती पडणं ॥६३०५॥ पूर्ववत्  
दृष्टान्तोपसंहार —

तह समणसुविहियाणं, सच्चपयत्तेण वी जयंताणं ।

कम्मोदयपच्चतिया, विराहणा कस्सइ हवेज्जा ॥६३०६॥

अण्णा वि हु पडिसेवा, सा उण कम्मोदएण जा जतणा ।

सा कम्मक्खयकरणी, दप्पाऽजय कम्मजणणी उ ॥६३०७॥ पूर्ववत्

पुणरप्याह चोदक — किमेकान्तेनैव कर्मोदयप्रत्यया प्रतिसेवना उतान्योऽपि कश्चित्प्रतिसेवनाया अस्ति भेदः ? उच्यते, अस्तीति ब्रूमः । यतमानस्य या कलिका प्रतिसेवना सा कर्मोदयप्रत्यया न भवति, न य तत्थ कम्मबंधो, जतो तं पडिसेवंतस्स वि कम्मखमो भवति । जो पुण दप्पेण कप्पेण वा पत्ते अजयणाए पडिसेवणा सा कम्म जणेति — कर्मबंधं करोतीत्यर्थः ।

यतश्चैवं ततः इदं सिद्धं भवति —

पडिसेवणा वि कम्मोदएण कम्ममवि तं निमित्ताणं ।

अण्णोणहेउसिद्धी, तेसिं वीयंकुराणं व ॥६३०८॥

कंठ्या । पडिसेवणाए हेऊ ( कम्मोदयो, कम्मोदयहेऊ ) पडिसेवणा, एवमेपामन्योन्यहेतुत्वं, तस्यापि प्रसाधको दृष्टान्तः — यथा बीजांकुरयोः ॥६३०८॥

दिट्ठा पडिसेवणा कम्महेतु पमादमूला या, सा य खेत्तमो कहं हुज्जा ?, उवस्सये बहि वा वियारादि-  
णिग्गयस्स । कालतो दिया वा रातो वा । भावमो दप्पेण वा कप्पेण वा अजयणाए पडिसेवति । मासातिअति-  
चारपत्तेण संवेगमुवगएण आलोयणा पउंजियव्वा । इमं च चित्तंतेण णज्जति केवलं जीवितघातो भविस्सति,  
ससल्लमरणेण दीहसंसारी भवति त्ति काउं भण्णति —

तं ण खमं खु पमादो, मुहुत्तमवि अच्छित्तुं ससल्लेणं ।

आयरियपादमूले, गंतूणं उद्धरे सल्लं ॥६३०९॥

आलोयणाविहाणेण पच्छित्तकरणेण य अतियारसल्लं उद्धरति विसोधयतीत्यर्थः, ॥६३०९॥

जम्हा ससल्लो न सिज्झति, उद्धरियसल्लो य सिज्झइ ।

तम्हा तेण इमं चित्तियव्वं —

अहयं च सावराही, आसो इव पत्थिओ गुरुसगासं ।

वइत्तग्गामे संखडिपत्ते आलोयणा तिविहा ॥६३१०॥

अप्याणं अतियारसल्लसल्लियं णाउं तस्स विसोहणट्ठं गुरुसमीवे प्रस्थितो । कहं च ?, उच्यते  
अश्ववत् । तं च गुरुसमीवं गच्छंतो वइयाए खट्वादाणियगामे वा संखडीए वा अपडिवज्झंतो गच्छइ, गुरुसमीवं  
पत्तो आलोयणं देति, सा य आलोयणा तिविहा इमा — विहारालोयणा, उवसंपयालोयणा, अवराहालोयणा  
य ॥६३१०॥

आसे इव औपम्ये अस्य व्याख्या -

सिम्धुजुगती आसो, अणुवत्तति सारहिं ण अत्ताणं ।

इय संजममणुवत्तति, वइयाइ अवकिओ साहू ॥६३११॥

सिम्धं मंदं वा उज्जुक्कं वा वक्कं वा सारहिस्स छंदमणुवत्तमाणो गच्छति, णो य अप्पच्छंदेणं चारि पाणिग्रं वा अणुवत्तइ । एवं सावू वि जहा जहा संजमो भवति तहा तहा संजममणुवत्तमाणो गच्छइ, णो वइयादिसु सायासोक्खट्टया पडिवज्जंतो वइयादिसु वा ण वक्केण पहेण गच्छति । आलोयणपरिणओ जति वि अणालोतिए कालं करेति तहावि आराहणो विसुद्धत्वात् ॥६३११॥

तत्थ विहारालोयणा इमा -

आलोयणापरिणओ, सम्मं संपड्डिओ गुरुसगासे ।

जइ अंतरा उ कालं, करेज्ज आराहओ तहऽवि ॥६३१२॥

पक्खिय चउ संवच्छर, उक्कोसं वारसण्ह वरिसाणं ।

समणुण्णा आयरिया, फडुगपतिया वि विगडेंति ॥६३१३॥

संभोतिया आयरिया पक्खिए आलोएति, रायणियस्स ।

राडणितो वि ओमरातिणियस्स आलोएति ।

जति पुण राडणिओ ओमो वाणीयत्यो चाउम्मासिए आलोएति । तत्थ वि असत्तीते संवच्छरिए आलोएति । तत्थ वि असत्तीते जत्थ मिलति गीयत्यस्स उक्कोसेणं वारसहिं वरिसेहिं दूरातो वि गीयत्यसमीवं गंतुं आलोएयव्वं । फडुगवतिया वि आगंतुं पक्खियादिसु मूलायरियस्स आलोएति ॥६३१३॥

तं पुण ओहविभागे, दरमुत्ते ओह जाय मिण्णो उ ।

तेण परेण विभाओ, संभमसत्थादिसुं भइतं ॥६३१४॥

तं विहारालोयणं ओहेण विभागेण वा देंति । तत्थ ओहेण जे सावू समणुण्णा “दरमुत्ते” ति भोत्तुं आढत्ताणं पाहुणता आगता ते आगंतुगा ओहेण आलोएति, जइ य अतियारो पणगं दस पणरस वीस भिण्णमासो य तो ओहालोयणं दाउं भूजति । अह भिण्णमासातो परेण अइयारो मासादितो भवति तो वीसुं समुद्दिसित्ता विभागेण आलोएति । “संभमसत्थादिसु भत्तियं” ति संभमो अगिसंभमादि सत्थेण वा समं गताणं अंतरा सत्थसण्णिवेसे पाहुणया आगया होज्ज, सत्थो य चलिउकामो, ते य मासादिआ, ण्णा, भायणाणि य णट्ठिय जेसु वीसुं समुद्दिसिस्संति, ताहे ओहेण आलोएत्ता एक्कट्ठं समुद्दिसित्ता पच्छा विभागेण आलोयव्वं विस्तारेणेत्यर्थः ॥६३१४॥

इदार्णि आलोयणाए कालनियमो भण्णति -

ओहे एगदिवसिया, विभागतो एगऽणेगदिवसा तु ।

रत्ति पि दिवसओ वा, विभागओ ओहओ दिवसे ॥६३१५॥

ओहालोयणा गियमा एक्कदिवसता, अप्पावराहत्तणओ आसण्णभोयणकालत्तणओ य । विभागा-लोयणा एगदिवसिया वा होज्ज, अणेगदिवसिया वा होज्ज ।

कहं पुण अणेगदिवसिया वा होज ? बहुप्रवराहत्तणओ । बहुं आलोएयव्वं आयरिया वावडा होजा, ण बहुं वेलं पडिच्छंति । आलावगो वा वावडो होज । एवं अणेगदिवसिता भवति । विभागालोयणा नियमा दिवसतो रत्ति वा भवति । ओहालोयणा नियमा दिवसतो, जेण रातो ण भुंजति ॥६३१५॥

ओहालोयणाए इमं विहाणं—

अप्पा मूलगुणेषुं, विराहणा अप्पउत्तरगुणेषुं ।

अप्पा पासत्थाइसु, दाणग्गह संपओगोहा ॥६३१६॥

कंठ्या, एवं आलोएत्ता मंडलीए एक्कट्ठं समुद्दिंसति ॥६३१६॥

विहारविभागालोयणाए इमं कालविहाणं—

भिक्षाति-णिग्गएसुं, रहिते विगडेति फड्डगवती उ ।

सच्चसमक्खं केती, ते वीसरियं तु कहयंति ॥६३१७॥

आदिग्गहणेणं विचारभूमिं विहारभूमिं वा जाहे सीसपडिच्छया णिग्गया ताहे फड्डगवती एगाणियस्स आयरियस्स आलोएति ।

केइ आयरिया भणंति— जह फड्डगवती सेहादियाणं सच्चसमक्खं आलोएति ।

किं कारणं ?, उच्यते— जं किंचि विस्सरियं पदं होज्ज तं ते सारेहिंति— कहयंतीत्यर्थः ।

तं पुण केरिस आलोएति ? काए वा परिवाडोए ? अत उच्यते—

मूलगुण पढमकाया, तेसु वि पढमं तु पंथमादीसु ।

पादप्पमज्जणादी, वितियं उल्लादि पंथे वा ॥६३१८॥

दुविहो अवराहो— मूलगुणावराहो उत्तरगुणावराहो य । एत्थ पढमं मूलगुणा आलोएयव्वा, तेसु वि मूलगुणेषु पढमं पाणातिवातो, तत्थ वि पढमं पुढविककायविराघणे जा पंथे वच्चत्तेण विराहणा कया, थंडिल्लाओ अथंडिल्लं अथंडिल्लाओ वा थंडिल्लं संकमत्तेण पदा ण पमज्जिता, ससरक्खे मट्टियादिहत्थमत्तेहिं वा भिक्खग्गहणं कतं, एवमादि पुढविककायविराहणं आलोएति । ततो आउक्काए उदउल्लेहिं हत्थेहिं मत्तेहिं भिक्खग्गहणं कयं, पंथे वा अजयणाए उदगमुत्तिण्णो, एवमादि आउक्काए ॥६३१८॥

ततिए पतिट्ठियादी, अभिधारणवीयणादि वायुम्मि ।

वीतादिघट्ट पंचमे, इंदिय अणुवातिओ छट्ठे ॥६३१९॥

ततिए त्ति-तेउक्काए परंपरादिपतिट्ठियगहियं सजोतिवसहीए वा ठितो एवमादि तेउक्काए । वाउक्काए जं धम्मत्तेण वाहिं णिग्गंतुं वातो अभिघारेउं भत्तादि सरीरं वा वीयणादिणा वीवियं, एवमादि वाउक्काए । पंचमे वणस्सतिकाए वीयादिसंघट्टणा कया, भिक्षादि वा गहिता, एवमादि वणस्सतिकाए । "छट्ठे" त्ति तसकाए, तत्थ इंदियाणुवाएण आलोए, पुव्वं वेइंदियाइयारं ततो तेइंदि-चउरिदि-पंचेदियाइयारं । एवमादि पाणातिवाओ ॥६३१९॥

दुब्भासियहसितादी, वितिए ततिए अजाइतो गहणे ।

घट्टण-पुव्वरतादी, इंदिय आलोगं मेहुण्णे ॥६३२०॥

विनिए मुसावाए, तत्थ किञ्चि दुग्भासितं भणितं, हासेण मुसावाओ भासिओ, एवमादि मुसावाए । तत्तिए त्ति अदत्तादाणे, तत्थ अयाचियं तण्डगलादि गहियं होज्जा, उग्गहं वा अणणुणवेत्ता कात्तियादि वोसिरितं होज्ज, एवमादि अदिग्गादाणे । मेहुणे, चेतिते महिमादिसु जणसम्मदे इत्थिसंघट्टणफासो सात्तिजिओ होज्ज, पुव्वरयकीलियादि वा अणुसरियं होज्ज, इत्थीण वा वयणाणि मणोहराणि इंदियाणि दट्ठु ईसि त्ति रागं गतो होज्ज, एवमादि मेहुणे ॥६३२०॥

मुच्छातिरित्त पंचमे, छट्ठे लेवाड अगय सुंठादि ।

उत्तरभिक्खऽविसोही, असमित्तं च समितीसु ॥६३२१॥

परिग्गहे उवकरणादिसु मुच्छा कया होज्ज, अतिरित्तोवहो वा गहितो होज्ज । “पंचमे” त्ति परिग्गहे एवमादि । “छट्ठे” त्ति राईभोयणे, तत्थ लेवाडगपरिवासो कयो होज्ज, अगतं किञ्चि सुंठमादि वा सण्णिहियं किञ्चि परिभुत्तं होज्ज, एवमादि रातीभोयणे । एवमादि मूलगुणेषु आलोयणा । उत्तरगुणेषु अविसुद्धभिक्खगहणं कयं होज्ज, समितीसु वा असमितो होज्ज, गुत्तीसु वा अगुत्तो ॥६३२१॥

संतम्मि य वल्लविरिए, तवोवहाणम्मि जं न उज्जमियं ।

एस विहारवियडणा, वोच्छं उवसंपणाणत्तं ॥६३२२॥

कंथ्या । गता विहारालोयणा ।

इदाणि उवसंपदालोयणा भण्णति -

एगमणेगा दिवसेसु होति ओहेण पदविभागो य ।

उवसंपयावराहे, णायमणायं परिच्छंति ॥६३२३॥

सां उवसंपदालोयणा समणुण्णाण वा असमणुण्णाण वा, तत्थ समणुण्णाण सगासे समणुणो उवसंप-ज्जंतो दुग्गणिमित्तं उवसंपज्जति ॥६३२३॥

जतो भण्णति -

समणुण्णदुग्गणिमित्तं, उवसंपज्जंते होइ एमेव ।

अमणुण्णेणं णवरिं, विभागतो कारणे भइत्तं ॥६३२४॥

सुत्तट्ठा दंसणचरित्तट्ठा जेण ते चरणं प्रति सरिसा चेव । “एमेव” त्ति जहा विहारालोयणा तहा उवसंपदालोयणं देतो एगदिवसेण वा अणेगदिवसेसु वा ओहेण वा पदविभागेण वा एवं समणुणो उवसंपदालोयणं देति । “अण्ण” इति अणसंभोइओ अमणुणो वा असंविगो तेसु अण्णत्थ उवसंपज्जंतेसु तिगनिमित्तं उवसंपदा णाणदंसणचरित्तट्ठा, विभागालोयणा य, ण ओहतो । संभमसत्थादिसु वा कारणेसु ओहेण वि देति एस भयणा । अवराहे वि एवं जो विसेसो भणिहिति सो उवसंपज्जमाणो दुविहो - णाओ अणाओ वा, जत्थ जो गज्जति सो ण परिविक्खज्जति, जो ण गज्जति सो आवस्सगाईहि पएहि परिविक्खज्जति । एयं उवरि वक्खमाणं ॥६३२४॥

दियरातो उवसंपय, अवराहे दिवसओ पसत्थम्मि ।

उव्याते तद्विसं, तिण्हं तु वइक्कमे गुरुगा ॥६३२५॥

उवसंपदालोयणा सा (ओहेण) विभागेण वा (ओहेण) सा दिवसतो, न रात्रौ । जा पुण अवराहाऽऽ  
लोयणा सा विभागेण दिवसतो, न रात्रौ । दिवसतो वि विट्ठिवति वातादिदोसवज्जिते “पसत्थे” दन्वातिसु य  
पसत्थेसु, एयं पि वक्खमाणं, अवराहे वि ओहालोयणा अववादकारणे भतियच्चा ॥६३२५॥

“उव्वातो” ति पच्छद्वं अस्य व्याख्या -

पढमदिणे म विफाले, लहुओ वित्तिय गुरु तत्तियए लहुगा ।

तस्स विकहणे ते च्चिय, सुद्धमसुद्धो इमेहिं तु ॥६३२६॥

अमणुणो जो उवसंपज्जणटुपाए आगओ आयरिओ तं जति पढमदिवसे ण विफालेति न पृच्छती-  
त्यर्थः । कुतो आगतो ? कहिं वा गच्छति ? किं निमित्तं वा आगतो ?” एवं अपुच्छमाणस्स तद्विसं मासलहुं,  
वित्तियदिवसे जति ण पुच्छति चउलहुं, “तिण्हं तु वइक्कमे गुरुगा” इति चउत्थदिवसे जति ण पुच्छति च्च ।

सो वि पुच्छिओ भणति - “कहेहामि” मासलहुं, वित्तियदिवसे मासलहुं, तत्तियदिवसे ४ (ल),  
चउत्थदिवसे अकहेतस्स चउगुरुगा । अहवा - “तद्विसे” ति पढमदिवसे “उव्वाते” भान्ता इति कृत्वा ण  
पुच्छितो आयरिओ सुद्धो । अह वित्तियदिवसे ण पुच्छति तो मासंगुरुं । तत्तिए ण पुच्छति चउलहुं, चउत्थे  
दिवसे चउगुरुं । एवं तेण पुच्छिएण वा अक्खायं जेण कज्जेण आगओ । तस्स पुण आगंतुगस्स आगमो सुद्धो  
असुद्धो वां हवेज्ज, एत्थ चत्तारि भंगा । इमेण विहणा भंगा कायच्चा - णिगमणं पि आगमणं पि असुद्धं । एवं  
चउरो भंगा कायच्चा । तत्थ णिगमो इमेहिं कारणेहिं असुद्धो भवति ॥६३२६॥

<sup>१</sup>अहिकरण <sup>२</sup>विगति <sup>३</sup>जोए, <sup>४</sup>पडिणीए <sup>५</sup>थद्ध <sup>६</sup>लुद्ध <sup>७</sup>णिद्धम्मे ।

अलसाणुवद्धवेरो, सच्छंदमती परिहियच्चे ॥६३२७॥

“अहिकरणे” ति अस्य व्याख्या -

गिहिसंजयअहिकरणे, लहुगा गुरुगा तस्स अप्पणो छेदो ।

विगती ण देति घेत्तुं, भोत्तुद्धरितं च गहिते वि ॥६३२८॥

जति गिहत्थेण समं अहिकरणं काउं आगओ तं आयरिओ संगिण्हइ तो चउलहुगा । अह संजएण  
समं अहिकरणं काउं आगतं संगिण्हइ तो चउगुरुगा, तस्स पुण आगंतुगस्स पंचराइदिओ छेदो । अहवा -  
पुट्ठो अपुट्ठो वा इमं भणेज्ज - “विगति” ति “विगती ण” पच्छद्वं ॥६३२८॥

किं च -

ण य वज्जिया य देहो, पगतीए दुव्वलो अहं भंते ! ।

तब्भावितस्स एण्हिं, ण य गहणं धारणं कत्तो ॥६३२९॥

सो य आयरिओ विगतिगिण्हणाए ण देति जोगवाहीणं । “अगहियं” ति अण्णेहिं भुत्तुद्धरियं तं पि  
नाणुजाणइ, किं वा भगवं अम्हे ण पव्वजितवसभस्स तुल्ला, अण्णं च अम्ह सभावेणेव दुव्वला विगतीए बलामो  
अण्णं च अम्हे विगतिभावियदेहा इदाणि तस्स अभावे ण बलामो, ण य सुत्तत्थे घेत्तुं समत्था, पुव्वगहिए वि  
घरितुं समत्था ण भवामो ॥६३२९॥



“जोगे पडिणीए” त्ति दो दारे जुगवं वक्खाणेति -

एगंतरणिच्चिगती, जोगो पच्चत्थिको व तहि साहू ।

चुक्कखलितेसु गेण्हति, छिड्डाणि कहेति तं गुरुणं ॥६३३०॥

पुच्छिग्रो भणाति - तस्स आयरियस्स एगंतरउवासेण जोगो बुज्झइ. एगंतर आयंविसेण वा, जोगवाहिस्स वा ते आयरिया विगतिं ण विसज्जंति, एवमादि कक्खडो जोगो त्ति तेण आगग्रो । पुच्छिग्रो वा भणेज - तम्मि गच्छे एगो साधू मम “पच्चत्थिगो” त्ति - पडिणीग्रो । कहं चि सामायारिजोगे चुक्केति, वीसरिए खलिये वि दुप्पडिलेहादिके गेण्हति, अच्चत्थं खरटेति, चुक्कखलिताणि वा अवराहपदच्छिदाणि गेण्हति, से य गुरुणं कहेति, पच्छा ते गुरुवो मे खरटेति । अहवा - अणामोगा चुक्कखलिताणि भणंति, जं पुण आभोगग्रो असामायारि करेड तं छिद्दं भणति ॥६३३०॥

इदाणि “थद्ध-लुद्ध” दो वि भणति -

चंकमणादी उट्ठण, कडिगहणे भाओ णत्थि थद्धेवं ।

उक्कोस सयं भुंजति, देतऽण्णेसिं तु लुद्धेवं ॥६३३१॥

आयरिया जइ वि चक्रमणं करेति तहावि अब्भुट्ठेयवा, आदिग्गहणातो जइ वि काइयभूमि गच्छंति आगच्छंति वा, एवमादि तत्थ अब्भुट्ठताणं अम्हं कडीग्रो वाएण गहिताग्रो, अब्भुट्ठाणपलिसंयेण य अम्ह सज्जाओ तत्थ ण सरति । अह ण अब्भुट्ठेयो तो पच्छित्तं देति खरटेति वा, एवं थद्धो भणाति ।

जो लुद्धो सो भणाति - जं उक्कसयं किंचि वि सिहरिणिलुगादि लब्धमिति तं अप्पणा भुंजति, अणोसिं वा बाल-बुद्ध-दुक्खल-पाहुण्णगाण वा देति, अम्हे ण लब्धमो, लुद्धो एवं भणाति ॥६३३१॥

“णिद्धम्म अलसे” दो वि जुगवं भणाति -

आवासियमज्जणया, अकरण अति उगडंडं णिद्धम्मे ।

बालादड्ढा दीहा, भिक्खाऽलसिओ य उब्भामं ॥६३३२॥

जो णिद्धमो सो पुच्छिग्रो भणति - जइ कहि चि आवसिता निसीहिया वा ण कज्जति ण पमज्जति वा, णितो पविसंतो वा । डंडगादि वा णिक्खिवंतो ण पमज्जति, तो आयरिया “उगो” - दुट्ठत्ति वुत्तं भवति, पच्छित्तं देति, अहवा - उगं पच्छित्तडंडं देति, गिरणुकंपा इत्यर्थः ।

जो आलस्सिओ सो भणाति - अप्पणो पज्जत्ते वि बालबुद्धाणं अट्ठाए दीहा भिक्खायरिया तम्मि गच्छे हिडिज्जइ, खुड्डलकं कक्खडं वा तं खेतं दिणे दिणे “उब्भामं” ति भिक्खायरियं गम्मइ प्रतिदिनं ग्रामान्तरं गम्यत इत्यर्थः ।

अपज्जत्ते आगया गुरु भणंति - “किमिह वसहीए महाणसो जं अपज्जत्ते आगता ? वच्चह पुणो, हिडह खेतं, कालो भायणं च पटुप्पह,” एवमादि दोहभिक्खायरियाए भत्थितो आगतोमिति ॥६३३२॥

अणुवद्धवेरो य सच्छंदो य दो वि जुगवं भणाति -

पाणसुणगा य भुंजति, एककउ असंखडेवमणुवद्धो ।

एक्कल्लस्स ण लब्भा, चलितुं पेवं तु सच्छंदो ॥६३३३॥



अणुवद्धवेरो भणाति - धेवं वा वहं वा असंखडं काउं जहा सुणगा पाणां वा परोप्परं तवखणादेव -  
एकभायणे भुंजति एवं तत्थ संजया वि, णवरं - मिच्छादुक्कडं दाविज्जंति । अग्हे उ ण सक्केमो हियत्थेणं  
सल्लेणं तेहिं समं समुद्दिंसं । एवं आगमो अणुवद्धवेरो भणाति ।

जो सच्छंदो सो भणाति - सण्णाभूमिं पि एगाणियस्स गंतुं ण देति, णियमा संघाडसहिंएहिं गंतव्वं ।  
तं असहमाणो आगमो हं । एते अधिकरणादि ए पदे आयरितो सोउं परिच्चयइ, न संगृह्णातीत्यर्थः ॥६३३३॥

अधिकरणादि एहिं पदेहिं आगयस्स इमं पच्छित्तं -

समणऽधिकरणे पडिणीय लुद्ध अणुवद्धवेरे चउगुरुगा ।

सेसाण होंति लहुगा, एमेव पडिच्छमाणस्स ॥६३३४॥

जो समणेहिं सममधिकरणं काउं आगतो, जो य भणाति-तत्थ मे पडिणीतो साहू, जो य लुद्धो, जो  
अणुवद्धवेरो, एतेसु चउसु चउगुरुगा, सेसेसु छसु गिहिअहिकरणे य चउलहुगा । जो य आयरिओ एते  
पडिच्छति तस्स वि एवं चेव पच्छित्ता ॥६३३४॥

अहवा - जे एते दोसा बुत्ता एतेसिं एक्केण वि णागमो होज्ज ।

इमेहिं दोसेहिं आगमो होज्ज -

अहवा एगेऽपरिणते, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥६३३५॥

एस सोलसमे व्याख्यातो, तथापि इहोच्यते -

एक्कल्लं मोत्तूणं वत्थादिअकप्पिएहिं सहितं वा ।

सो उ परिसा व थेरा, अहऽण्णसेहादि वट्टावे ॥६३३६॥

आयरियं एगाणि मोत्तुं ण गंतव्वं, असणवत्थादिअकप्पिया सेहसहियं च मोत्तुं ण गंतव्वं ।  
“अप्पाहारो” णाम जो आयरिओ संकियसुत्तत्था, तं चेव पुच्छिउं वायणं देति, तारिसं वि मोत्तुं ण गंतव्वं ।  
“थेरं” ति अजंगमं गुरुं, परिसा वा से थेरा, तेसिं सेहाण थेराण य अहं चेव वट्टावगो आसि ॥६३३६॥

तत्थ गिलाणो एगो, जप्पसरीरो तुं होति बहुरोगी ।

णिद्धम्मा गुरु-आणं, न करेंति ममं पमोत्तूणं ॥६३३७॥

तत्थ वा गच्छे एगो जरादिणा गिलाणो, तस्स अहं चेव वट्टावगो आसी । बहूहिं साहारणरोगेहिं  
जप्पसरीरो भणाति तस्सवि अहं चेव वट्टावगो आसी । मंदधम्मा गुरु आणं न करेंति मम पुण एगस्स करेंति ।  
संजय गिहीहिं वा सह अधिकरणं काउं आगतो, गुरुस्स वा केणइ सह अहिकरणं वट्टति ॥६३३७॥

एतारिसं विउसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।

सीसपडिच्छायरिए, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥६३३८॥

पुव्वद्धं वंठं । एरिसं मोत्तुं जइ सीसो आगमो पडिच्छमो वा, जो य पडिच्छइ आयरिओ तेसिं इमं  
पच्छित्तं ॥६३३८॥

एगो गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुगा उ सीसगादीणं ।

सेसे सीसे गुरुगा, लहुय पडिच्छे गुरु सरिसं ॥६३३९॥

जो एगारिं गुरुं मोत्तुं आगग्रो, गिलाणं वा मोत्तुं, अधिकरणं वा कासं आगग्रो, एतेसु सीसस्स पडिच्छ-  
गस्स पडिच्छमाणस्स य आयरियस्स तिण्हवि चउगुहा । जेण अण्णे सेसा अपरिणय अप्पाहार थेर बहुरोग मंदघम्मा  
य-एतेसु जइ सीसो आगग्रो चउगुहा, अह पडिच्छतो तो चउलहुगा, गुरुस्स भयणा । “सरिसं व” ति जइ सीसं  
गेण्हति तो चउगुहा, पडिच्छगे चउलहुगा ॥६३३६॥

अहवा पाहुडे इमं -

सीसपडिच्छे पाहुड, छेदो राइंदियाणि पंचेव ।

आयरियस्स उ गुरुगा, दो चेव पडिच्छमाणस्स ॥६३४०॥

सीसस्स पडिच्छागस्स वा अधिकरणं कासं अण्णगच्छे संवसंतस्स पंचराइंदिअ छेदो भवति, पुरुस्स  
पडिच्छमाणस्स चउगुहा । एते पढमभंगे णिग्गम-दोसा भणिता, आगमो वि से असुद्धो भवति, वइयादिसु  
पडिवज्जंतो आगतो तस्य वि पच्छित्तं वत्तत्वं ॥६३४०॥ एस पढमभंगो गतो, वित्तिभंगो वि एरिसो  
चेव, णवरं आगमो सुद्धो ।

इमे उक्कमेण ततिय-चउत्यभंगा -

एतदोसविमुक्कं, वतियादी अपडिवद्दमायायं ।

दाऊण व पच्छित्तं, पडिवद्दं वी पडिच्छेज्जा ॥६३४१॥

इमो चउत्यो भंगो । एतेसु जे अधिकरणादी णिग्गमदोसा तेसु वज्जितो आगमणदोसेसु य  
वइयादिसु अपडिवज्जंतमागग्रो जो, एस चउत्यभंगिल्लो सुद्धो ।

ततियभगे णिग्गमदोसेसु सुद्धो आगमणदोसेसु वइयादिसु जो पडिवज्जंतो आगग्रो तं ण पडिच्छति ।  
अववादतो वा तस्स पच्छित्तं दासं पडिच्छति, ण दोपेत्यर्थः ॥६३४१॥

सुद्धं पडिच्छिऊणं, अपरिच्छिण्णे लहुग तिणिण दिवसाइं ।

सीसे आयरिए वा, पारिच्छा तत्थिमा होति ॥६३४२॥

ययोक्तदोपरहितं सुद्धं पडिच्छित्ता तिणिण दिवसाणि परिविअयव्वो-किं घम्मसहितो ण व त्ति, जइ ण  
परिवत्तंति तो चउलहुगा, अण्णायरियामिप्रायेण वा मासलहुं । सा पुण परिकत्ता उभयो पि भवति ॥६३४२॥

एत्य पढमं ताव तस्स परिकत्ता भण्णति -

आवासग सज्झाए, पडिलेहण भुंजणे य भासाए ।

धीयारे गेलन्ते, भिक्खुगहणे परिच्छंति ॥६३४३॥

केइ पुव्वणिसिद्धा, केइ सारेंति तं न सारेंति ।

संविग्गो सिकख मग्गति, मुत्तावलिमो अणाहोइहं ॥६३४४॥

केइ ति साहू अवराहपदा वा संवज्जंति, तस्स उवसंपदकालाग्रो पुव्वणिसिद्धा “अज्जो ! इमं इमं  
च न कायव्व”, जइ जइ पमादेति ते सारिज्जंति त्ति वुत्तं भवति, णो उवसंपज्जमाणं तेसु णिसिद्धपदेसु  
वट्टमाणं सारेंति ॥६३४४॥

तत्थ आवस्सए ताव इमेण विहिणा परिकिखज्जइ -

हीणाहियविवरीए, सति च बले पुव्वगते चोदेति ।

अप्पणए चोदेती, न ममं ति इहं सुहं वसितुं ॥६३४५॥

हीणं णाम काउस्सग्गसुत्ताणि दरकड्ढिताणि करेता अण्णेहिं साधूहिं चिरवोसट्ठेहिं वोसिरइ, अधिकं नाम काउस्सग्गसुत्ताणि अतितुरितं कड्ढेत्ता अणुपेहणट्ठाए पुव्वमेव वोसिरइ, उस्सारिए वि रायणिणं पच्छा उस्सारेति, विवरीए ति पाओसियकाउस्सग्गा पभातिए जहा करेति, पभाइए वि पादोसिए जं करेति ।

अहवा - सूरै अत्यमिते चैव णिवाघाते सह आयरिएण सव्वसाहूहिं पडिक्कमियव्वं, अह आयरियाणं सड्ढातिधम्मकहा वाघातो होज्ज तो बालबुड्ढगिलाणअसहु णिसेज्जधरं च मोत्तुं सेसा सुत्तत्थ-ज्जरणट्ठता काउस्सग्गेण ठायति, जे पुण सति बले पुव्वं काउस्सग्गे णोठ्ठंति थेरा तेसु अप्पणाए चोदेति, जो पुण परिकिखज्जइ सो ण चोइज्जइ पमादेतो । ताहे जइ सो एवं च सति "सुट्ठु जं मे ण पडिचोदेति, सुहं अच्छामि" सो पंजरभग्गो णायव्वो, ण पडिच्छियव्वो ॥६३४५॥

अह पुण मं ते ण पचोदेति त्ति काउं "संविग्गो सिक्खं मग्गति" पच्छद्धं अस्य व्याख्या -

जो पुण चोइज्जंतो, दट्ठुण ततो नियत्तती ठाणा ।

भणति अहं मे चत्तो, चोदेह ममं पि सीदंतं ॥६३४६॥

जति पुण सो भणति जेमुठाणेषु अहं पमादेमि तेसु चैव ठाणेषु अप्पणो सीसा पमादेमाणा पडिचो-इज्जंति, अहं तु ण पडिचोइज्जामि "अणाहोइहं" -- परिचत्तो, ताहे संविग्गविहारं इच्छंतो आसेवणभिवक्खं मग्गंतो अप्पणो चैव ततो ठाणाओ णियत्तति, अहवा - छिण्णमुत्तावलिपगासाणि अंसूणि विणिमुयमाणे आयरियाणं पादेसु पडिओ भणाति - मा मं सरणमुवगयं पडिच्चयह, ममं पि सीदंतं चोएह ॥६३४६॥ एसा ताव आवस्सयं पडुच्च, परिक्खा गता ।

इदाणि सज्झाय-पडिलेहण-भुंजण-भासदारा पडुच्च परिक्खा भणति -

पडिलेहणसज्झाए, एमेव य हीण अहिय विवरीए ।

दोसेहि वा वि भुंजति, गारत्थियढ्ढुरा भासा ॥६३४७॥

पडिलेहणकालतो हीणं अहिय वा करेति, अहवा - खोडगादीहं हीणं अहियं वा करेति, विवरीयं णाम मुहपोत्तियादी पडिलेहेति, अहवा - पए रयहरणं ति पच्छिमं पडिलेहेति, अवरण्हे पढमं अप्पणो - पडिलेहेत्ता सेहगिलाणपरिणि पच्छा आयरियस्स एवं वा विवरीयं । सज्झाए वि हीणं - अणागताए कालवेलाए कालस्स पडिक्कमति, अहियं अतिच्छिताए कालवेलाए कालस्स पडिक्कमति, वंदणातिकिरियं हीणातिरित्तं करेइ, विवरीयं पोरिसिपाढं उग्घाडकालियपोरिसीए परियट्ठेति, वा विवरीयं करेइ, सत्तविह-आलोवगविहीते ण भुंजति, कायसिगालक्खतियादिदोसेहिं वा भुंजति, सुरसरादिदोसेहिं वा भुंजति, सावज्जादि भासा वा भासति, एतेसु चोदणा तहेव भाणियव्वा जहा आवस्सए भणिता ॥६३४७॥

सेसाणि तिणिण दाराणि एगगाहाए वक्खाणेति -

थंडिल्लसमायारी, हावेति अतरंतगं न पडिजग्गे ।

अभणिओ भिक्ख ण हिंडइ, अणेसणादी व पेल्लेति ॥६३४८॥

श्रद्धिते पादपमज्जणा डगलगहणा दिसालोगादिमामायारि परिहावेति, गिलाणं ण पटिजग्गड, गिलाणस्स वा खेलमल्लादि वेयावच्चं ण करेति, भिवसं ण हिउड, दरहिउतो वा मणियट्टड, कोटलेण वा उप्पाएति, अणेसणाए वा गेहति ॥६३४८॥

तस्स पुण इमाओ ठाणाओ आगमो होज्ज -

जयमाणपरिह्वेते, आगमणं तस्स दोहि ठाणेहिं ।

पंजरमग्गअभिमुहे, आवासयमादि आयरिण ॥६३४९॥

सो जयमाणसावुण मूलाओ आगमो होज्ज, परिह्वेताण वा मूलाओ आगमो होज्ज, परिह्विता नाम पासत्यादी, तस्य जो जयमाणमाणं मूलातो आगतो सो णाणदंसणट्टाए वा आगतो, पंजरमग्गो वा आगतो । जो पुण परिह्वेताण मूलातो आगतो सो चरिसट्टाए उज्जमिउकामो । अहवा - अणुज्जमिउकामो विणाणदंसण-ट्टाए । अहवा - जो जयमाणेहितो आगमो सो पंजरमग्गो, जो पुण परिह्वेतेहितो आगतो सो पंजरमभिमुहो । एतेनु दोनु वि आगएनु आयरिण आवस्सवादिपरिच्छा कायव्वा ॥६३४९॥

आह पंजर इति कोऽर्थः ? अतः उच्यते -

पणगादि संगहो होति पंजरो जाय सारणऽणोणं ।

पच्छित्तचमहणादी, णिवारणा सउणिदिट्ठतो ॥६३५०॥

आयरिओ उवज्झातो पवत्ती येरो गणावच्छेत्तितो एतेहि पंचहि परिगहितो गच्छो पंजरो भणति, आदिगहणाओ भिवसु-वसह-बुडु-बुडुगा य वेप्पति । अहवा - जं आयरियादी परोप्परं चोदंति मिनं मधुरं सोत्रालंभं वा खरफरसादीहि वा चमहेत्ता पच्छित्तदाणेण य असामायारीओ णियत्ति ति एगो वा पंजरो । पंजरमग्गो पुण एयं चेव असहंनो गच्छओ गीति । “गच्छम्मि केई पुरिसा कारग गाहा कंठा ।

“जह सउण पंजरे दुक्खं अच्छति तहा” -

एत्य सउणिदिट्ठतो कज्जति - जहा पंजरत्यस्स सउणस्स सलागादीहं सच्छंदगमणं णिवारिज्जति एवं आयरियादि पुरिसगच्छपंजरे सारणसलागादियं सामायारि उम्मग्गमणं णिवारिज्जति । एत्य जे संविग्गाणं मूलाओ णाणदंसणट्टाए आगता, जे य परिह्वेताण मूलाओ आगया चरित्तट्टा एते संगेण्हियव्वा । जे पुण पंजरमग्गा णाणदंसणट्टाए आगता, जे परिह्वेताण मूलाओ णाणदंसणट्टाए आगया, एते न संगिण्हियव्वा ॥६३५०॥

एत्य जे संगिण्हियव्वा ते एगो वा होज्ज, अणेगा वा ।

जतो भणति -

ते ‘पुण एगमणेगाणेगाणं सारणं जहा कप्पे ।

उवसंपद आउट्टे, अविउट्टे अण्णाहिं गच्छे ॥६३५१॥

‘तस्य जे अणेगा तेसि सोदंताणं सारणा जहा कप्पे भणिता “उवदेसो सारणा चेव तत्तिता पडिसारणा” इत्यादि, “घट्टिज्जंतं वत्थं अतिरुज्जणकुंकुमसिली जत्ता” इत्यादि । जो पुण एगो सो असामायारि करेत्तो चोदितो जइ आउट्टितो तस्स उवसंपदा भवति, “अविउट्टे” ति - जति ण आउट्टितो, भणति “अण्णाहिं गच्छे” ति ॥६३५१॥ एसा आगयाणं परिच्छा गता ।

१ ‘जे पुण’ इति चूर्णो ।

अह्वा - एयं पच्छदं - अण्णा भणति - तेण वि आगंतुणा गच्छो परिच्छियव्वो आवस्सगमा-  
दीहि पुव्वभाणियदारेहि । गच्छिल्लगाणं जति किंचि आवस्सगदारेहि सीदंतं पस्सइ तो आयरियातीणं कहेति,  
जति सो कहिए सम्मं आउट्ठति त्ति तं साधुं चोदेति पच्छित्तं च से देति तो तत्थ उवसंपदा । अह् कहिते सो  
आयरिओ तुसिणीओ अच्छति भणति वा - किं तुज्झं, णो सम्मं आउट्ठति ? तो अविउट्ठे आयरिए अण्णाहि गच्छति  
अन्यओपसंनतेत्यर्थः, ॥६३५१॥

ततियभंगिल्ले इमा पडिच्छणविही -

णिग्गमणे परिसुद्धो, आगमणे असुद्धे देति पच्छित्तं ।

णिग्गमण अपरिसुद्धे, इमा उ जयणा तहिं होति ॥६३५२॥

ततियभंगिल्लस्स वड्यादिसु पडिवद्धस्स सुद्धस्स जं आवण्णो तं पच्छित्तं दाउं पडिच्छति । जति  
पुण पढमवित्तिज्जेण वा भण्णेण अहिकरणादीहि एगे अपरिणयादीहि वा आगता, जे य पंजरभग्गा, जे परिहा-  
वेंतेसु णाणदंसणट्ठाते आगता ते ण संगिगिह्यव्वा, न य फुडं पडिसेहिज्जति ॥६३५२॥

तेसि इमा पडिसेहणजयणा -

णत्थि संकियसंघाडमंडली भिक्ख वाहिराणयणे ।

पच्छित्त विओसग्गे, णिग्गयसुत्तस्स छण्णेणं ॥६३५३॥

“णत्थि संकिय” अस्य व्याख्या -

णत्थेयं मे जमिच्छह, सुत्तं मए आम संकियं तं तु ।

न य संकियं तु दिज्जइ, णिस्संकसुते गवेसाहि ॥६३५४॥

जं एतं सुत्तत्थं तुव्वे इच्छहं एयं मम णत्थि । अह् सो भणाति - अण्णसमीवे सुत्तं मए जहा तुव्वं  
एयं अत्थि, अह्वा भणाति - मए चेव तुमं वायणं देता सुत्ता । आयरिओ भणाति - आमं ति सच्चं,  
इदाणि तं मे संकितं जातं, ण य दाणजोगं, ण य संकियसुत्तत्थं दिज्जति, आगमे पडिसिद्धं, गच्छ अण्णतो  
जत्थ णिस्संकं सुत्तं ॥६३५४॥

तं संघाडए त्ति जो संघाडयस्स उव्वयाति सो भणति -

एक्कल्लेण ण लब्भा, वीयारादी वि जयण सच्छंदे ।

भोयणसुत्ते मंडलि, अपढंते वी णिओअंति ॥६३५५॥

अह् एरिसा सामायारी णो संघाडएणं विणा लब्भति सण्णभूमिमादि णिग्गंतुं, एसा सच्छंदेण  
जयणा । “मंडलि” त्ति जो सो अणुवद्धवेरत्तणेण आगतो सो इमाए जयणाए पडिसेहिज्जति । जो य  
सुत्तमंडलीए उव्वियाति, “भोयण” पच्छदं, अह् सामायारी अवस्सं मंडलीते समुदिसियव्वं, सुत्तत्थमंडलीसु  
जति ण पढति ण सुणेति वा तहावि मंडलीए उव्विट्ठो अच्छति, ण सच्छंदेण अच्छित्तं लब्भति ॥६३५५॥

अलसं भणंति वाहिं, जति हिंडसि अह् एत्थ वालाती ।

पच्छित्तं हाडहडं, अवि उस्सगं तहा विगती ॥६३५६॥

“आहिराणयणे” ति जो आलस्सियत्तणेण आगतो सो इमाए पडिमेहिज्जति, अलसितो भणति - अम्हं एत्थ सखेत्ते बाल-गिलाण-बुद्धावि हिडंति, जति दिणे दिणे भिक्खायरियं करेमि तो अत्थ पच्छित्तंति । जो निवम्मो “अइउग्गदंदो आयरिओत्ति” एतेहि कारणहि आगतो सो इमाए जयणाए पडिमेहिज्जति सो अम्हं सामायारी जइ दुप्पमज्जियादीणि करेति तो वि अम्हं हाइहडं पच्छित्तं दिज्जति, हाइहडं णाम तवकालं चैव दिज्जति ण कालहरणं कज्जति । “अविउस्सग्गे” ति जो सो अविगती णाणुजाणति ति आगमो, नो भणति-अम्हं सामायारी जोगवाहिणा विगतिकाउस्सग्गं अकरेत्तेण पट्टियध्वं । “तह” ति -

कि चान्यत् - अम्हं सामायारी जोगव हिगाऽजोगवाहिणा वा विगती न गृहीतव्या इत्यर्थः । अह्वा - “तह” ति जं सो कारणं दीवेति तस्स तहेव प्रतिलोमं उवण्णमिज्जति ॥६३५६॥

एत्थ चोदग आह -

तत्थ भवे मायमोसो, एवं तु भवे अणज्जवजुतस्स ।

वुत्तं च उज्जुभूते, सोही तेलोक्कदंसीहिं ॥६३५७॥

तत्रेति या एपा णिग्गमे अनुद्वे उवाएणं पडिमेहणा भणिता । अत्र कस्यचिन्मतिः स्यात् - एवं पडिमेहंतस्स माया भवति मुसावायं च भासति, जेण विज्जमाणं सुतं णत्थि ति भणति संकियं वा, एवं संघाडगादिमु अणज्जवं अरिजुत्तं करेमाणो मायामुसावाएण य जुत्तो भवति अवज्जवयणजुत्तो वा, उवत्तं च - “सोही उज्जुभूतस्स य” कारणं - सित्तोकोऽयं, तं च अज्जवं अकरेम णस्स संजमसोही ण भवति ।

आचार्याहि - ण मायामुसावाओ य, जत्तो कारणे मायामुसावातो य अणुणायो । इमं च कारणं-णिग्गमणं से अनुद्वं, तेण उवायपडिमेहो क्कमो ॥६३५८॥

कि च -

एसा उ अगीयत्थे, जयणा गीते वि जुज्जती जं तु ।

विदेसकरं इहरा, मच्छरिवादो य फुडरुक्खे ॥६३५९॥

एवं अगीयत्था पडिमेविज्जति, गीयत्था पुण फुडं चैव भणंति, ते सामायारीं जाणंता किह् अप्पत्तियं दोसं वा कहंति, तेसु वि य जं मातामुसावादकारणं जुज्जति तं च कायव्वं । अगीयत्थाणं पुण “इहर” ति फुडं भणंताणं विदेसकरं भवति, चित्तंति य, एते मच्छरभावेण ण दंति सुत्तत्थे । सपक्कजणे य न एवं प्रदाणेण मच्छरभावो भवति । सच्चयदोमुच्चरणं फुडं, णेहवज्जियं रुक्खं, अह्वा - फुडमेव रुक्खं तं च अधिकरणादि रागादिणा वा दोसेण आगतो ति ण पडिच्छामो, एत्थ मच्छरभाव अयसो संपज्जति ॥६३६०॥

एतेसि पडिच्छाण इमो अववातो -

णिग्गमसुद्धमुवाए ण वारितं गेण्हाती समाउडं ।

अहिकरण पडिणिअऽणुवद्वे, एगागि जढं ण संगिण्हे ॥६३६१॥

अत्र अकारलोपो दृष्टव्यः, एवं णिग्गमो अनुद्वो जस्स सो उवाएणं जयणाए वारिओ ण पडिच्छत इत्यर्थः । अह्वा - दोसा जहा वारणाओ ण उप्पज्जंति तहा उवाएण वारितो प्रतिपिद्ध इत्यर्थः । पडिसिद्धो जइ सो भणइ “मिच्छामि दुक्कडं, ण पुणो एव काहं, जं वा भणइ तं करेमि, मुक्को मे पावभावो दुग्गइवट्ठो इहलोए वि गरहिता” एवं आउट्ठो गेण्हियव्वो । तत्थ वि इमो ण गेण्हियव्वो-जो अधिकरणं काउमागतो, जो म पडिणीओ ति भणंती, जो-य अणुवद्वरोसो जेण आयरिओ एगादि भावेण जट्ठो ॥६३६२॥



पडिणीए इमो अववादो -

पडिणीयम्मि वि भयणा, गिहम्मि आयरियमादिदुडुम्मि ।

संजयपडिणीए पुण, ण होति तं खाम भयणा वा ॥६३६०॥

इमा भयणा, कोति गीयत्थो आयरियस्स पदुट्ठो, आदिगहणेण उवज्जाय-पवत्ति-धेर-गणावच्छेदग-भिवखूण, सो उवसामिज्जंते वि णोवसमति, तस्स भएण आगतो सं गिण्हियव्वो । जइ पुण संजतो मे पदुट्ठो पडिणीयं ति भणेज्जा तो ण होइ उवसंपदा, ण पडिच्छिज्जति ति वुत्तं भवति । अहवा सो भण्णति - गच्छ, तं खामेउं आगच्छ । जइ वुत्तो गतुं तं ण खामेति तो ण पडिच्छिज्जति, गयस्स वा सो ण खमति तो पच्छागतो पडिच्छिज्जति । अहवा सो भणेज्ज - मए आगच्छमाणेण खामितो ण खमति तो पडिच्छियव्वो चेव, एसा भयणा ॥६३६०॥

इदाणि जे अविमुद्धणिग्गमा - उवाएण वारिता वि ण गच्छंति, जे य विमुद्धणिग्गमा पडिच्छिता वि सीदंति, तेसि वोसिरणविही इमो ।

“णिग्गयसुत्तस्स छण्णेण” ति वयणा, जया भिवखादिगतो होति तदा छड्ढेत्ता गच्छति । सुत्तस्स वि आयरिया दिवसतो सोऊणं पव्वइए वि रातो पढमपोरिसीए सोवेत्ता तस्स पुण अवखेवणा कहा कहिज्जति ताव जाव णिहावसंगतो ज हे पासुत्तो ताहे संजता उट्ठावेत्ता तं सुत्तं छड्ढेत्ता वच्चंति । छण्णेणं ति अप्पसा-गारियं मंतं मंतेति, नो अपरिणयाणं तप्पविख्याणं । वच्चतो ण य कहेंति जहा णस्सियव्वं, मा रहस्स भेदं काहिति । जति सो चेव पच्छा समाउट्ठो आगतो जो य सुद्धणिग्गमो य एते दंसणाइयाणं ति एगट्ठा आगता पडिच्छियव्वं ।

तत्थ दंसण-णाणेषु पुव्वद्धगहितो इमो विधी -

वत्तणा संघणा चेव, गहणं सुत्तत्थ तदुभए ।

वेयावच्चे खमणे, काले आवकहादि य ॥६३६१॥

एते वत्तणादिपदा सगच्छे असतीए ववखेवेण वा णत्थि परगच्छे पुण जत्थ वत्तणादिया णियमा अत्थि तत्थ उवसंपदा । पुव्वगहियस्स पुणो पुणो अब्भस्सणा वत्तणा, पुव्वगहियविसरियस्स मुक्कसारणा संघणा, अपुव्वस्स गहणं, एते तिणिं विगप्पा सुत्ते, अत्थे वि तिणिं, उभए वि तिणिं, एए णव विगप्पा । उत्तरचरणोवसंपदट्ठा उवसंजतो वेयावच्चकरणखमगकरणट्ठया वा उपसंपज्जति, ते पुण वेयावच्चखमणे बालतो आवकहाते ति जावजीवं करेइ, आदिगहणाओ इत्तरियं वा कालं करेज्ज ॥६३६१॥

तत्थ दंसणणाणा इमे, इमा य तेसु विही -

दंसणणाणे सुत्तत्थ तदुभए वत्तणादि एकैकेके ।

उवसंपदा चरित्ते, वेयावच्चे य खमणे य ॥६३६२॥

दंसणविसोहया जे सुत्ता सत्थाणि वा तेसु सुत्तेसु वत्तणा संघणा गहणं, एवं अत्थे तिगं, तदुभए तिगं, “एकैकेके” ति - एवं दंसणे णवविगप्पा, आयारादिए य णाणे एवं चेव विगप्पा । चरित्तोवसंपदा इमा दुविहा - वेयावच्चट्ठता खमणट्ठा वा ॥६३६२॥

सुद्ध पुण अपडिच्छंतस्स इमं पच्छित्तं -

सुद्धपडिच्छणे लहुगा, अकरेंते सारणा अणापुच्छा ।

तीसु वि मासो लहुओ, वत्तणादीसु ठाणेषु ॥६३६३॥

मील्यते राशे ३४२, रित्यस्य जात ३६६, कारणं तु बुच्छ्यामि त्ति - अत्र करणराशीना मीलनमेवाभिप्रेत, अस्य राशे: ३६६, भागे १२, हूते लब्धं ३०, ततोऽपवर्तनं द्वादशाना पङ्भागे द्विकः, पण्णा पङ्भागे एकक ३, इति दिनार्धे लब्ध, स्था० ३० ३ यद्वा अय ३६६, पञ्चगुणा १८३०, तत पङ्भागे हूते लब्ध ३०, ततः पण्णा तृतीयभागे द्वौ, त्रयाणा च तृतीयभागे एकैक एव, इत्यपवर्त कार्य । एत्थ वि त्ति अत्र एतस्मिन् राशौ १८३०, अपेभिन्नक्रमत्वात् सर्वमासा अपीत्यर्थ, अभिवद्भुत त्ति इत्यादि ऋतुसवत्सरो हि ३६०, एतावद्दिनप्रमाणस्तदापेक्षया चन्द्रादित्यसवत्सरयोऽन्यूनानाधिक्य व्यवस्थापयन्नाह -

**छच्चेव य (२० उ० पृष्ठ २२७)**

आदित्यसवत्सर ३६६, एतावद्दिनप्रमाण, चन्द्रसवत्सर ३५५, ३३ एतावत्प्रमाण, तत्रादित्यसवत्सरे पङ्दिनानि ऋतुसवत्सरापेक्षयाऽधिकानि चन्द्रसवत्सरे ऋतुवर्षापेक्षयैव न्यूनानि, ओमरत्त त्ति अवमराशे पडेव न्यूनानि दिनानीत्यर्थ । बारसवासेण ए त्ति द्वादश दिनानि, एतानि वर्षेणाधिकानि, पङ्मरात्राश्चन्द्रसवत्सरसत्का पङ् वाऽऽदित्यवत्सरसत्का इति द्वादश एकस्मिन् वर्षे दिवसा ग्रधिका भवति, एव द्वितीयवर्षेऽपि द्वादश पङ्भिर्मासैस्त्वृतीयसवत्सरसत्कैः पङ्दिवसा लभ्यते, ततस्त्रिंशद्दिनानि भवति अर्धवृतीयवर्षेरतिक्रान्तै, अत एवोक्त अद्वाइज्जेहि पूरमासो त्ति -

**सट्ठीए ( २० उ० गा० ६२८७ )**

युग हि पञ्चसवत्सरैर्निष्पद्यते, पञ्चसवत्सरेषु च मासा पष्टिसख्या, पक्षद्वयनिष्पन्नत्वाच्च मासस्य पक्षाणा विगत्यधिक शत युगे भवति, युगस्य च मध्ये अन्ते वाधिकमासो भवति । अर्द्धं च मध्यमे व भवति इति मध्ये ग्रधिमासक । पष्टिपक्षाणामतिक्रान्ताना भवति-त्रिंशत्मासैरतिक्रान्तैरित्यर्थ । वादीसे पक्षसप्त ए त्ति युगान्ते हि विंश शत पक्षाणा भवति । परमार्थे युगस्य पक्षद्वय यदतिक्रान्त तत्प्रक्षेपे द्वाविंश शत मुक्त इति द्वितीयाधिकमासक्षेपे युगान्ते - पक्षाणा १२५, भवति । युगान्ते चाधिकमासो भवन् अपाढान्ते भवत्यापाढद्वय भवतीत्यर्थ । अहव त्ति प्रमाणवर्षस्य दिवसराशि १८३०, तस्मान्नक्षत्रादिमासदिनसख्या आनीयते, सेसा वारस त्ति अशा छेदाश्च द्वापष्टि, ते छेदा अशाश्चार्धेनापवर्त्यन्ते द्वापष्टेरर्धे ३१, द्वादशानामर्धे पङ्, ३३ । छेएण भाइए लद्ध त्ति-छेद १२५, इत्येपस्तेन भाजित इत्यय राशि १४५२, लब्धा ११, उद्धरिता ८८, एकादशसु एतस्मिन् ३२७ राशिमध्ये क्षिप्तेषु ३०३, छेदा १२४, अशा ८८, उभयोश्चतुर्भिरपवर्तनेऽष्टाशीते, २२, चतुरधिक विगतिशतस्य च ३१, दिवसा । दिवसेसु त्ति - चन्द्रवर्षत्रयराशि १०६२, अभिवर्धितवर्षद्वयराशिश्च ६६७, ३३ दिवसाना मीलने १८२६ । भागा भागेसु त्ति ३३, एवरूपा मिलिता ३१, एतेपामेक-त्रिंशता भागे हूते लब्ध एकस्तस्मिन् पूर्वराशिमध्ये क्षिप्ते १८३० । ज ए तेरसेहि चदमासेहि इत्यादि स्थापना १३ । १२ । ३१, १२१, १२४, ६२ । द्वादशाभिवर्धितमासा अन्त्ये द्वापष्ट्या गुण्यन्ते जात १४४, त्रयोदशभिश्चादिमे भागे हूते लब्ध मासा ६२, ५७-३३ एए पुणो सवन्निय त्ति त्रयोदशभिरेव गुण्यन्ते सप्तपचाशन्मासा, जात १४१, त्रयोदशभागत्रयप्रक्षेपे १४८, तेरसगुणियाण त्ति लब्ध ३१ ।

३७३३ शेष ७३३ द्वयोरपि पङ्भिरपवर्तनेऽधस्तनराशौ १२४, उपरितने च १२१, दिन । एवप्रमाणो अभिवद्भुयवरिसस्त भागरूवोऽधिकमासक, यद्वाऽनयोराशयो ३७३३ अर्धयोरपि पङ्भिरपवर्तनप्रथमतो विहिते जात ३३३३ अस्याधस्तनराशिभागे हूते लब्धैकत्रिंशद्दिनरूपोऽधिकमासक समागच्छति, एकत्रिंशदुपरि छेदाशयोर्न्यस्यते ।



## ससिणो य गाहा २० -

गशिनश्चन्द्रमासस्यादित्यमासस्य च य कश्चिद्विश्लेष उद्धरित किञ्चित्तस्य त्रिशता गुणने द्विपष्टिभक्तते च यल्लब्ध तच्चन्द्रमासोऽभिवाधितो भवति । एतदेव विवृणोति - एएसि विसेसे एक ति - विश्लेषेऽपसारणे कृते सति तच्चन्द्रमाससज्जितराशेरादित्यराशिमध्ये आदित्यराशेश्च यद्दिनमेक तस्य मध्यात् द्वार्पाष्ठभागा ३२, अपसार्यन्ते त्रिशच्च द्वापष्टिभागा अवतिष्ठन्ते त्रिशच्च स्वगता पष्टिभागा ३३, ३३, एए वट्टिय ति आद्यस्य दशकेनापवर्तने शून्यद्वय गत, द्वितीयस्य चार्धेनापवर्तने जात ३३ ।

परोष्परं छेयगुण ति कोऽर्थ १ एकत्रिशच्छेदा षष्टित्रिशद्भागा स्थाप्या, अपरे वेतरस्यावस्तत इत्थ न्यास ३ ३३, १५ ३३ । एकत्रिशता च गुणने चाद्यराशौ जात ३३ द्वितीयस्य च पडभिगुणने ६० एकत्रिशतश्च पडगुणने १८६, अयं च सदृशच्छेदो नष्ट उत्सार्यो गतार्थत्वात् असा असा ग्रसेसु पक्खित्ता जात १८३, ततो अशा १८३ अशाना त्रिभिरपवर्तने लब्ध ६१, छेदाना त्रिभिरपवर्तने लब्ध ६२, न्यास ६३ । एस तीसगुण ति - एकपष्टिद्वाषष्टिभागरूप एकस्तिथि-स्त्रिगद्गुण १८३०, द्वाषष्टिविभक्त २९३३ चन्द्रमासप्रमाणोऽधिकमासको भवति । अहवे ति - १ । १ । ३० । त्रिशता मध्यभूत एकको गुणितस्त्रिशद् भवति । एककेन वाद्येन त्रिशतो भागेहृते लब्धे त्रिशदेव लभ्यते । एसा आइदुचद ति एसा एकषष्टिभागरूपा सोमतिथिः मासस्यान्ते एका तिथिर्वर्धते, एयं चैव अभिवडिड पडुच्च ति - एता पूवेक्ता - त्रिशत्तिथिरूपा यद्वा २९३३ एतद्रूपा अभिवर्धितवर्ष-मास ३१ ३३३ एतावत्प्रमाण । सेसस्स ति - उद्धरितस्स ३४, एव रूपस्यार्धे भवति चतुर्विंशत्यधि-कगतस्य चार्धे द्वाषष्टि, स्थापना ३१, २९, १७, ६२ । नक्षत्रादिमासपचकव्याख्यानमिदं समाप्तम् ।

तिपरिरयाइजयणाजुत्तस्स जा पडिसेवणा सा कम्मोदयप्रत्यया न भवति, क्रोधादिभावस्थो यतोऽसावशुद्धं न गृहीतवान्, किं च म्हे भयव । न य वज्जीपावसस्सतुल्ल ति न च वर्जका विकृतेर्वयं वृपस्य तुल्यास्सन्त इति भाव । वालामोत्ति वर्तयाम । भिन्नं सत् कुडुसेस भिन्नकुडसेस छक्कायगेसु ति - कायकेषु, अणिच्छिय ति अनिश्वितालोचनया पण्णरसवेत्तुं मासो दिज्जइ ति द्वयोरपि मासयो पचदश पचदश गृह्यन्ते, ततो मास इति उग्घाइमाणुग्घाइमिश्रभगकेषु इत्थ विन्यस्स भगकाश्चारणीया १, २, ३, ४, ५, उग्घा । १, २, ३, ४, ५ । नु ६ ।

पच दश दश पच एकद्वयादिसयोगाना सख्याना -

उभयमुहराशिदुग उवरिल्ल आइमेण गुणिऊण ।

हेट्टिल्लभागलद्धे उवरि ठिए हु ति सजोगा ॥

इत्यनेन करणेनागच्छतस्तत एककादिसयोगत्वेनोद्पातिमाना यानि सयोगस्थानानि पचाइग ति - पचकादी तान्यनुद्वातिमाना एककादिसयोगत्वेन ये पचकादयो गुणकारकास्तैर्गुणनीयानि, ततः पचविंशत्यादिकं सख्यानं जायते । बहुससुत्तेसु वि मीसगसुत्तसजोग ति - उग्घाइयग्रणुग्घाइय-मीलकेन मिश्रत्वं ज्ञेयम् ।

ननु बहुससुत्तावतीसु इत्यादि एकमपि मासिकयोग्यमतिचारजातं यदा बह्वीर्वारा आसेवते तदा वाहुल्यसेवनतो बहुससूत्रविषयता तस्या च बहुवारासेवनलब्धो द्विमासाद्यापत्तिः सम्भवोऽप्यस्तीति भावः ।

सर्वे वि हुंति लहुगा इत्यादि एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धा एकापेक्षया द्वित्र्यादयो मासास्ते च लघवो मासा सर्वेऽपि प्राप्यन्ते, अतो द्वितीयतृतीयपचममासा अनुक्ता अपि सन्तो गुरवोऽपि

द्रष्टव्या । अयमर्थ — सूत्रे किल मासलघु मासगुरु तथा इत्येवमेवोक्तं, द्वाद्यादिमासानां च न चिन्ता कृता, तथाऽपि लघवो मासा पडपि सूचिता सूत्रे, अतो गुरुवोऽपि मासा द्वाद्यादयो द्रष्टव्या, एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् ।

जे भिक्खू मासिए मासियमित्यादि एव सामान्येन चतुर्भंगीय विशेषतश्च चिन्त्यमाना. पचदश भवन्तीत्याह—एव मासस्सेत्यादि चारणिका, यथा मासिए मासिय १ मासिए दोमासिय २ दोमासिए मासिय, दोमासिए दोमासियमित्येका ११, १२, २१, २२ ।

एव शेपा अपि अकतो दश्यन्ते, यथा—११ ११ ११ ११

१३ १४ १५ १६

३१ ४१ ५१ ६१

३३ ४४ ५५ ६६

इत्येव मासस्य द्विकादिमासै सह चतुर्भंगिकापचक लब्ध । एव द्वित्र्यादिमासानामपि स्व-स्थानपरस्थानै सह चारणे चतुर्भंगिका भवति, तत्र द्विकचतुर्भंगिकाया द्विक स्वस्थानम् । त्रिकादिचतुर्भंगिकामु स्वस्वाकरूप स्वस्थानम्, तद्विसदृश तु परस्थानम् । अकत स्थापना चैय—२२ २२ २२ २२

२३ २४ २५ २६

३२ ४२ ५२ ६२

३३ ४४ ५५ ६६

दुमासिए दुमासिय । दुमासिए तिमासियमित्यादि चारणिका कार्या, एव द्विकचतुर्भंगि-कारचतस्र त्रिकभंगिकास्त्रिसः—३३ ३३ ३३

३४ ३५ ३६

४३ ५३ ६३

४४ ५५ ६६

चतुर्भंगिकाद्वितय,

४४ ४४

४५ ४६

५४ ६४

५५ ६६

पचकचतुर्भंगिका ५५, ५६, ६५, ६६ । मिलिता सर्वा १५ ।

जहमन्ने २० उ० गा० ( ६४२३ ) —

“एव” ति—अमुना प्रकारेण बुद्धिहाणिनिष्पत्ता, “च” ति—वाऽर्थ जे सुत्तनिबद्धा मासिय ति—प्रतिपद सूत्रेण यानि प्रायश्चित्तानि निरूपितानि जहा—सेज्जायरपिडे मासो इत्यादि,

तानि सूत्रनिबद्धानि मासिकानि, किमुक्तं भवति ? एकस्मिन् अपि बहुदोषदुष्टत्वेन यका मासिकादिबहुत्वापत्ति, सा न सूत्रनिबद्धे ति न तदाश्रित बहुत्व त्रेधा, किन्तु एकैकदोषदुष्टासेवनेन यद् बहुत्व तत् त्रिविधमिति । तत्थ—जहन्नमित्यादि, अयमर्थ—पडमुद्दे सएअणुग्घाड्यमासपच्छित्ता २५२, । बिड्यतइयचउत्थपचमुद्दे सएसु मासलहुयपच्छित्ता ३३२ । एएसि उग्घाड्याणुग्घाड्यमासाण इक्कथो सखित्ताण ५८४ । एव सति मासिकपायच्छित्ततिगसेवणे जहन्नयो बहुत्व तन्नि मासा तु

प्रतिबहुत्व यत् शेष सुगमम् । अहवा - ठवणासेवणाहीत्यादि इदं व्यापकं लक्षणं । संचयमासं त्ति - प्रायश्चित्तापत्तितो यावन्तो मासाः शिष्येणासेवितास्ते संचयमासा इति तात्पर्यम् ।

च उभगविगणेषु त्ति - मासिए मासिय । मासिए अणेगमासिय ।

अणेगमासिए मासिय । अणेगमासिए अणेगमासिय । उवड्डीइ त्ति अपवृद्ध्या ह्रासेन ।

ठवणा वीसिगपक्खिव २० उ० गा० ( ६४३२ ) -

वीसाए अद्धमासं २० उ० गा० ( ६४३३ ) -

आभ्या गाथाभ्या स्थापनारोपणाभ्या स्थानरचनाभिहिता, साचेय पढमा ठवणारोवण-पतीए ठवणा - २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५ । इत्येव पचकवृद्ध्या स्थानानि तावन्नेयानि यावदन्त्य त्रिशत्सख्यं स्थानं, पचषष्ठ्यधिकं शतमिति १५५, आरोपणास्त्वत्र पचदशाद्याः १५, २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५, ५० ५५ । इत्येवमत्रापि पचकपचकवृद्ध्या तावन्नेयं यावत् त्रिशत्सख्यं स्थानं पष्ठ्यधिकं शतमिति १६० ।

द्वितीयस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा पंचदशाद्याः १५, २०, २५, ३०, ३५ । इत्येव पचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेयं यावत् त्रिशत्सख्यं स्थानं पचसतत्यधिकं शतमिति १७५ । आरोपणास्त्वत्र पचाद्या ५, १०, १५, २०, २५, ३० । इत्येव पचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेयं यावत् त्रयस्त्रिंशत्सख्यं स्थानं पचषष्ठ्यधिकं शतमिति १६५ ।

तृतीयस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा पचकाद्या ५, १०, १५, २०, २५, ३०, ३५ । इत्येव पचकवृद्ध्या तावन्नेयं यावत् पचत्रिशत्सख्यं स्थानं पचसतत्यधिकं शतमिति १७५, अत्रारोपणा अपि पचाद्या ५, १०, १५ इत्यादि पचसतत्यधिकशतानां तां स्थापनास्थानानामधोदृश्या ।

चतुर्थस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा एकाद्या १, २, ३, ४, ५, ६, । इत्येवमेकोत्तरवृद्ध्या तावन्नेयं यावदेकोनाशीत्यधिकशतसख्यं स्थानमेतदेव १७६, अत्रारोपणा अप्येकाद्या १, २, ३, ४, ५ । एकोत्तरवृद्ध्या तावन्नेयं यावदेकोनाशीत्यधिकं शतमिति १७६ । दोहिं वि पक्खे च उ पचं त्ति भाष्यपद द्वयोरपि स्थापनारोपणयोः पचानां प्रक्षेपत उत्कृष्टं ठवणारोवणाठाणं पावेयव्वं । यदुपरि यस्य प्रभवति तदुत्कृष्टं, पच्छिमठवणारोवणा उ त्ति पश्चिमाश्चतस्रोऽपि स्थापनारोपणा उत्कृष्टा-अन्त्या इति यावत्, एव तीसियासु त्ति - ठवणासु इति द्रष्टव्यं वीसिया से जहन्नं त्ति - वीसिया ठवणा से त्ति - पक्खियारोपणयोः जघन्या । एव बीए आरोवणा- ठाणे त्ति - विशतिरूपे अनिल्लं तीसइमं ठाणं "फिट्टइ" त्ति - ठवणायां सत्कमन्य त्रिशत्तमं स्थानं पंचषष्ठ्यधिकशतरूपं न तद्व्योम्यं भवति, अशीत्यधिकशतस्याधिक्यात् ठवणाठाणं उवड्डीए त्ति - अपवृद्ध्या पाश्चात्यगत्या आरोपणस्थानवृद्धौ ठवणास्थानस्य ह्रासं कार्यं । आरोवणावृद्धौ त्ति ठवणास्थानवृद्धौ आरोपणास्थानस्यापवृद्धिं ह्रासः । ठवणारोवणसवेहस्स त्ति - एगम्मि एगम्मि ठवणारोवणाठाणे कइ कइ आरोवणाठाणाणि भवन्ति सवेहो, गणियकरणं व त्ति - सकलितगणितानयनोपायं जम्हा पढमा ठवणा त्ति - १६५, एतद्रूपं पढमारोवणाठाणं १६०, एतद्रूपं इक्कं लब्धं इति । कोर्थं ?

पचकपचकनिष्पन्नं एकैकस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादनयोः तदूर्ध्वं पचकपचकनिष्पन्नस्य स्थानस्याभावाच्चरिमयोरप्यनयोः प्राथम्यं विवक्ष्यते, जम्हा एगुत्तरवृद्धौ त्ति - पचकपचकनिष्पन्नं एकैकस्थानवृद्ध्या द्वितीयादीनि च तानि आरोपणास्थानानि पचदशकापेक्षया विगत्यादीनीति भावः । सव्वे त्ति - उत्तरतः पढमठवणा १६५ उत्तरं पि एक्को चेव त्ति - पचदश-

रूपस्तदूर्ध्व उत्तरस्यापरस्याभावात् पचदशरूपमेव, यत आद्य स्थान पढमठवणाया स्थान-  
वृद्धिस्तथा—

**गच्छुत्तरसंवर्गे उत्तरहीणस्मि ( २० उ० गा० ६४४० ) —**

व्याख्या — गच्छो पढमठवणाठाणे तीस, विईए गच्छो तिच्चीस, तइए ३५, चउत्थे १७६, गच्छस्य उत्तरेण सवर्ग — गुणन कार्य । अत्र चोत्तर एककरूपस्तेन हीन कार्यो राशि, तत आदिः प्रक्षेप्य, स चात्रैककरूप एव, एतच्च यदागत तदन्त्यधन चतसृष्वपि पक्षितेषु प्रथमे प्रथमे ठवणा-  
ठाणे एतावत्सख्यान्यारोपणस्थानानि भवति, तदप्यादियुत प्रस्तुते एककयुक्त कार्य तस्यार्ध कार्य, ततश्च य कश्चिद् गच्छो न्यस्तस्तस्यार्धेनार्धोक्तेन राशिना गुणन्तु त्ति गुणन कार्य । तस्मिन् कृते ठवणारोवणठाणाण सवेहेण सर्वसख्यान भवति । तत्थ पढमे ठवणारोवणठाणे सवेहतो सर्वाग्र ४६५, द्वितीये ५६१, तृतीये ६३०, चतुर्थे १६११० ।

**ठवणारोवणविज्जय ॥ गाहा ॥ २० —**

स्थापनारोपणसख्यानेन विद्युता रहिता विधेया, षण्मासदिनराशि तस्य पचभिर्भागो हार्य, भागे हूते ये लब्धा मासास्ते रूपयुता कार्या । स चैतावान् ठवणारोवणाण गच्छो होइ पचभिर्भागो हार्य इत्येवरूपश्च प्रकार आद्यासु तिसृषु ठवणारोवणासु विन्नेओ । चरिमे ठवणे एककेण भागो हार्य । इत्ययमादेश उपदेश इत्यर्थ ।

अयं भावार्थ — प्रथमतीर्थकरकाले उत्कृष्ट प्रायश्चित्तदान द्वादशमासा, मध्यमतीर्थ-  
कृत्काले चाष्टौ मासा, चरमस्य षण्मासा इति । अतस्तीर्थमाश्रित्य षण्मासा इत्युक्तम्, तत् तिसृ-  
णामपि पचकपचकनिष्पन्नस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादुक्त रूपयुतत्वं यदुक्त तत् सर्वास्यपि स्थापना-  
रोपणास्वाद्यपदस्य पचकादिवृद्ध्याऽनिष्पन्नत्वात् तस्य प्रक्षेपसूचनायम् ।

इयाणि गणियकरणमित्यादि वीसियाए ठवणाए अतधण ति सर्वाग्र आरोपणापदाना  
भवतीत्यर्थ ।

सह आइल्लेहि ति अन्त्यस्यारोपणापदस्य १६०, एतद्रूपस्यापेक्षया आदिमा पचदश-  
प्रभृतय पचपचाशदधिकशतान्ता सख्याविशेषा एकोनत्रिशत्सख्यास्तै सह त्रिशत्सर्वाग्रमारोपणा-  
पदाना विशेष स्थापनापदे भवतीत्यर्थ । वीसियठवणादीना दिवसा इति विग्रह । एव सेसामु त्ति  
पचविसियाइसु ।

**दिवसा पंचहिं भइया ( २० उ० गा० ६४४० ) —**

व्याख्या — यस्या स्थापनायमारोपणाया वा यावतो दिवसास्ते पचभिर्भजनीयास्ततो  
यत्तलब्ध तद् द्विरूपहीन विधेय, स राशि. मासप्रमाण ब्रूते, तस्मिन् ठवणापदे आरोपणापदे च  
अकसिणरूवणाए ओसग ति भोषनिष्पन्ना अकसिणा, भोषरहिता तु कसिणारोवणा ।

**जइ मासा तइएहिं गुण करिज्ज २० —**

व्याख्या — दिवसा पचहिं भइया इत्यादि करणतो द्विरूपहीनत्वेनारोपणाया यावन्तो  
मासा लब्धास्तैर्भागलब्धान् गुणयेत्, तत स्थापनारोपणासु यावन्तो लब्धा मासास्तत्समासा गाहा  
तत्तियभागं करे त्ति तावत्प्रमाणैर्भागैः त पूर्व राशि कुर्यात् । तिपचगुण ति — पचदशगुण कार्य  
आद्यो भागसेस ति — शेषाश्च तद्वचतिरिक्ता द्वितीयाद्या भागा एकत्र सम्मील्य पचगुणा कार्यास्ततो

गुणाकारगुणिता राशीनेकत्र सम्मील्य स्थापनारोपणदिवससमन्विता विधेयास्ततः षण्मासप्रमाणो राशि १८०, भवति। तेहि एवकारस गुणिय त्ति - एवकारसमासाण पन्नरसदिवसमासाओ गिज्झत्ति त्ति काउ एए मासा त्ति दसहि अद्धमासेहि पचमासाए भवति पच भोसो कओ त्ति पचाना प्रक्षिप्ताना भोषउत्सारणं कर्त्तव्यम् ।

जइमि भवे आरुवणा, तइभाग तस्स पन्नरसहि गुणये ।

सेस पचहि गुणिय, ठवणदिणजुया उ छम्मासा ॥ (२० उ० गा० ६४८५ )

एसा गाहा पढमठवणाए पडिसमणाणस्स षण्मासप्रमाणदिनराशेरानयनस्याकारणलक्षणं रूवणाए जइ मासा तइ भाग त करे इत्यादि ।

का च सर्वसामान्येति पाश्चात्यगाथाया व्याख्यानमाह - आरौवणभागलद्धमास त्ति एतस्मात् १८०, राशे पचत्रिंशत् उत्सारणे १४५ पचप्रक्षेपे १५०, आरौपणा १५, अनया भागे हूते लब्धा मासा १०, एते पचदशगुणा कार्या । पुनर्वकरणेण तिदिवसा पच भइया इत्यादिकेन अट्टारसण्ह मासाण सज्झाओ इत्यादि, एवकारो अत्र दृश्यस्ततो दुन्नि ठवणामासा व सोहीय त्ति योज्यम् ।

अन्नेहि सत्तगपु जेहि पचराइदिया गहिय त्ति सर्वे दिवसा ७० । तइयभागलद्ध त्ति तावत्प्रमाणमैसाँभागलब्धान् गुणयेत् । अयं प्राचीन वीसियाए ठवणाए पगारो भणिओ, पुण वीसियाए वि तहेव नेओ । अत एवाह - एव पुण वीसियाए इत्यादि, द्वितीयवृत्तीयेत्यादि, द्वितीय वृत्तीये चतुर्थे च स्थापनारोपणस्थानेऽयं विशेषो, यथा -

जत्थ उ दुरूवहीणा, न होज्ज भाग च पच हि न हुज्जा ।

एक्काओ मासाओ, ते दिवसा तत्थ नायव्वा ॥

व्याख्या - पचिकायामारोपणाया पचभिर्भागे हूते द्विरूपहीनत्व मासस्य न प्राप्यते खड्ग वा भवति । चतुर्थे च ठवणारौवणठाणे एकद्विकादिके आरौपणास्थाने पचभिर्भागो न घटते, ततश्च तत्राप्येको मासो द्रष्टव्यः । कुत इत्याह - यत एकस्मान्मासात् ते ठवणारौवणदिवसा निष्पन्नास्तत्र द्वितीयादिके ठवणारौवणठाणा ज्ञातव्या । अत एवाह - “जत्थ उ दुरूवहीण न होइ” इत्यादि, आगास वा शून्यमित्यर्थः । तथात्राम्नायात् भोष प्रक्षिप्यते यदा तदारोपणराशे भोषो हीन समो वा प्रक्षेपव्यो न त्वधिकः । अत्र सर्वत्र तथा तथा कर्त्तव्यं स्थापनारोपणयोर्मौलिन यथाऽशीत्यधिकं शतमुत्पद्यते, सेस पन्नास सयमित्यादि आरौवणा एक्काउ त्ति मासद्वयोत्सारणे सत्येकमास एवावशिष्यते ।

क प्रत्यय ? इत्यादि एत्थ सव्वत्थे त्ति इत्थं पचदसियाठवणारौवणाए सर्वमासेषु ठवणामासे आरौवणामासे मासदशके पक्ष पक्षो ग्रहीतव्यो न न्यूनमधिक वा । सव्वत्थं जइहि मासेहीत्यादि तत्र ५, १०, १५, एतास्तिन्नो मासनिष्पन्ना यतस्तिस्सृष्वपि मासो लभ्यते । पचभिर्भागे हूते सति विंशतिपचविंशत्यादिकाश्चारौपणा द्विमासत्रिमासनिष्पन्ना अतस्तासु द्विमासादयो लभ्यन्ते ततः आरौपणामासैस्तावद्भिर्भागलब्ध गुणितव्यम् । छ सय तीसुत्तर त्ति ठवणारौवणाण सवेहणमन्वाणमेयं सभोग त्ति, वेयणाउ त्ति स्वाभाविक मास एवेत्यर्थः ।

इयाणि चउत्थमित्यादि इक्कियाए आरौवणाए भागो त्ति एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् आरौपणपदानामत्रैककेन भागो हार्यः । तहेव काउ जावेत्यादि ठवणारौवणदिवसानुत्सार्य एकक भोपक्षेपेऽस्य १७७, राशेस्त्रिभिर्भागे हूते लब्ध ५६, ठवणारौवणमासद्विकप्रक्षेपे ६१ लब्धम् । एव

दुतिगाइठवणासु वि त्रिचतुर्थठवणारोवणपक्त्त्या द्वित्र्यादिस्थापनापदेवप्येकादय आरोपणा ज्ञेया । पुव्वकयविहिण्णं त्ति एकैकारोपणस्थानवृद्ध्या एकैकस्थापनापदस्य ह्रास तथा विहीए आरोवणाठाणे आढत्ते इदं १७८, ठवणाठाणं न भवइ । एव एक्के आरोवणाठाणे उवरि उवरि वड्डिए एक्किक्क ठवणाठाणं उवट्टिए हुसिज्जा इत्येव पूर्वकृते विधि । इह च एगाइसु चउदसत्तेसु एक्को चेव मासो धेत्तव्वो । पन्नरसोवरि विकलत्ति पन्नरस १५ १८ १९ इत्येते विगता कला पचमरूपा यत्र ते विकला ।

इक्काओ मासाओ निप्फन्नं त्ति उद्धरितायामपि कलायामेक एव लभ्यते, न त्वधिक तद्वसेन किञ्चिल्लभत इति भावः । एवमेकविंशत्यादिषु चतुर्विंशत्यन्तेषु केवलं त्ति केवला अनुद्धरितकलाराशयः शुद्धा पचकपचनिष्पन्ना इति यावत्, ते पचकभागविगुद्धा द्विरूपहीनत्वकृता ये मासास्तैः प्रमाणं येषां दिवसानां ते तथा तेभ्यः दिनेभ्यः इति शेषः मासभागा यत्रानेतुमिष्यन्ते यकाभिस्तां स्थापनारोपणा, इयं च पौडशिकाप्रभृत्येवाभवति, नार्वाक् इत्याह इक्कियेन्यादि, ते ठवियं त्ति एकादशस्थाप्यन्ते सकलश्च छेदः तेन सहिता ११, एसिं त्ति मासस्तः पचमो भागो स विन्नेओ । कोऽर्थः ? मासो पचगुणो सो पक्खित्तो त्ति ।

इदार्णि आरोवणाभागलद्धं त्ति आरोपणायां भागस्तेन यल्लब्धः एकादशमासाख्यं वस्तु सेसा सेसं त्ति यदुद्धरितं प्रतिक्रियाजातं आरोपणाभागश्च ते परावर्तिताश्च तैः, कोऽर्थः ? छेदाशयोर्विपर्यासः, कार्यं पट्कोऽधपचकाश्चोपरि अत्र पचकेन गुण्यते द्वासततति, जातं ३६०, पट्केन पचकगुणने ३०, त्रिंशता भागे हूतेऽस्य ३६० राशेर्लब्धा १२, यद्वा छेदाशकयोर्विपर्यये कृते द्वासप्तत्यधोवर्तिनं पचकस्य पट्कोपरिवर्तिनश्चापवर्तनं विधेयं—अपनयनं तयोः कार्यमित्यर्थः । ततः पट्केन द्वासप्ततेर्भागे लब्धा १२ । एव सत्तरसां सु छेदाशरूपयोः पचकयोरुभयोरपि उत्साराणं कृत्वा शेषेण छेदेन इतराशे सचयमासभागाभिधायकस्य भागो हरणीय इति, यद्वा अशानशैर्गुणयित्वा छेदाश्च छेदैर्गुणयित्वा भागो हार्य इति, प्रक्रियाद्वयेऽपि न वस्तुक्षतिरिति ततो लब्धा १२, अत्र स्थानद्वये स्थाप्यन्ते एको द्वादशकः पचदशगुणः १८० । आरोवणाए जइ विगला दिवसं त्ति आरोपणायां पचमिभागे हूते शेषं यदुद्धरितमित्यर्थः । तेन द्वितीयो राशिगुणनीयः, अत्रैको विकलो दिवस उद्धरित इत्यर्थः । एक्केण गुणयित्वा तत्तियं चेव स्थापनादिवसेन युक्तंश्च द्वादशकस्त्रयोदशकीभूतः प्रक्षिप्तः पचदशगुणकृतपूर्वराशौ स च राशिः भोपरहितं सन् अशीत्यधिकं शतं भवति । एगवीसिया वी इत्यादिठवणा १ आरोवणा २१, असीयसयाओ अवणीए १५१, एयस्स एक्कवीसाए भागो, भागं सुद्धं न देइ इति दसं पक्खित्ता १६८, भागे लब्धं ८, ते ठविया सगलच्छेदसहिता, आरोवणाभागे हिंए लद्धं ४ दुरूवहीणत्वे कृते मासं २, मासस्तः य एक्को पचभागो मासदुगे पचगुणे असपक्खेवे कए जाता ११, एक्कियाए वि ठवणाए हेट्ठा पचगो छेओ दिन्नो, तयो आरोवणाभागलब्धं ८, त आरोवणा-मासगुणं कायव्वं त्ति काउ असो असगुणो छेओ छेयगुणो एक्कारसहिं अट्ठं गुणिया पचहिं एक्को गुणियो जाया अट्ठासी पचभागा ८८ ठवणारोवणमाससहियं त्ति कायव्वं, एत्थं एक्को ठवणाभागो फेडियव्वो, एव कृते सत्याह “नवरमित्यादि — ज सेसं त्ति ९९ एतच्चारोपणभागश्च ते परावर्तिताश्च इत्थं तैर्गुणितं कार्यं परं न गुण्यते प्रक्रियात् (?) किन्त्वपवर्तनं पचकयोर्विधेयम्, ततो भागह्रियलद्धं त्ति — एकादशभिर्नवनवतिभागे हूते लब्धं ९, तिसु ठाणेषु स्थाप्यं ततः एकनवकः पचदशगुणः १३५, द्वितीयस्य विकला दिवसस्यात्रैकरूपत्वात् तेन गुणितो नवक एव भवति, तृतीयश्च पचगुणं (पचगुणः) सर्वं मिलिता १८९, ठवणादिणजुया दशकभोपरहिता इदं १८०, भवति ।

एगतीसेत्यादि ठवणा १, आरोवणा ३१, एतयोरेतस्मात् १८०, उस्सारणे जात १४८, सत्तज्भोपपवखेवे १५५, आरोपणाए भागे हिते लब्धा ५, ते ठविया सगलछेयसहिता ५, आरोवणाए पचहि भागे दुरुवहीणे कए जाता ४, उद्धरितपचमासस्स एक्को पचभागो, तयो मासचउक्क पचगुणियं असजुय २१, एक्कियठवणाए हेट्ठा पचको छेयो दिन्नो १, तयो आरोवणाभागलब्ध पचमासक आरोवणामासगुणं कायव्व ति असो असगुणो छेयो छेयगुणो एकवीसाए पच ५, गुणिया पचहि एक्को गुणिय जाय १०५, पचभागण ते उ ठवणामाससहिय ति कायव्वाए छक्को ठवणापचभागो फेडिओ सेस आरोवणा पचभागा पक्खित्ता जाया सचयमासाण सत्तावीस सय पचभागणं १२७ ।

कत्तो कि गहियं ति एक्को ठवणाभागो फेडिओ सेस १२६, तत आरोपणाछेदाशयो. २५ इत्थं परावृत्ति कृत्वा पंचकयोरपवर्तने कृते एकविंशत्या भागे हृतेऽस्य १२६, राशेर्लब्ध ६, एव कृते नवरमित्यादिकस्य चूर्णिकाव्यस्यावसर । एगतीसारोवणा पचहि भागे हृते द्विरूपहीन-कृतमासापेक्षया विगलदिन पचममाससत्क लब्ध वर्तते ततश्च आरोपणाशै परावर्तितैर्यल्लब्ध तत् तावत् स्थानस्थ स्थाप्यमान पचषट्का न्यस्यन्त इति ।

तत्थिक्को रासी पन्नरसगुणो ६० बिइओ विगलदिवसगुणो ठवणदिवससुत्तो ७, तृतीयादय एकत्र मीलता १८, ते पचगुणा ६०, नवतिद्वय अशीत्यधिकशत सत्तज्भोपरहितश्च कार्यं, अत ऊर्ध्वं सामान्यलक्षणमाह आरोवणेत्यादि, ठवणासचयभाग ति सचयमासभागान्तर्वतित्वात् स्थापनामासभागा अपि सचया भागा उच्यन्ते, स्थापनामासभागा अपनेतव्या इत्यर्थ । पक्खिवतेण-मित्यादिना च ठवणादिणजुया य छम्मासा इति यत् क्रिया तदुक्त, तेइसगल ति - परिपूर्णदिन-तया न तु खडरूपतयेति मास चेत्यादिवाक्ये नवमासा दुरुवसहिया पचगुणा ते भवे दिवसा इतीय प्रक्रिया उक्ता, उवउज्ज कायव्वाउ ति - भिन्निय ठवणारोवण इच्छतेण ति शेषः ।

रासि ति हेतुसख्या, ते खंडा सववहारिए इत्यादि, तउ ति तेभ्य व्यावहारिकपरमाणु-मात्रकृतखडेभ्य आनत्यादि निश्चयपरमाणुमात्राणि खडान्येकैकस्मिन् वालग्रेऽनन्तानि भवन्त्यसयम स्थानानामपि तत्प्रमाणत्वात् तावतीष्यन्ते कैश्चिदिति पराभ्युपगमार्थं, सहस्रमाण ति कस्मादपि मासात् पचदशपचकदशकादि-कियद्दिनग्रहणरूपतया शेषमुत्सार्यमाणमित्यर्थ । भिन्नेसु उवड्ढी ति अपवृद्धि, पाश्चात्यगत्या हानिर्द्रष्टव्या, नवमपूर्वकस्यापि स्तोकेनोन अन्यस्य तदपि बहुतरेणेत्यादिना तावद् यावद् नवमपूर्वस्य तृतीयमाचाराख्य वस्तिवति भद्रबाहुकृता नियुक्तिगाथा एव सूत्र, तद्धरतीति विग्रह, निशीथकल्पव्यवहारयोर्ये पीठे ते एव गाथासूत्र, तद्धरन्तीति । अथवा नियुक्ति-धरा सूत्रधरा पीठिकाधराश्चेति त्रितय व्याख्येय । कित्ति या सिद्धं तीत्यत्र सिद्धशब्दो निष्पन्नार्थं, ननु ण एसेवेत्यादि प्रथमस्थापनारोपणपंक्तौ एका जहन्ति उत्कृष्ट स्थापनास्थान ५४(१६५)तत्प्रतीत्य जघन्यारोपणाऽऽ १५ द्वितीयादीना तत्र भावात् । तीसं उक्कोस ति विशतिरूपस्थापनास्थानमाद्य प्रतीत्य त्रिशत् संख्या अप्यारोपणा भवन्तीति, त्रिशत उत्कृष्टत्व अतिल्ला आरोपणा । उक्कोसिय ति जाव ठवणा उद्दिट्ठा छम्मासा ऊणया भवे ताए आरोवणा उक्कोसा तीसे ठवणाए नायव्वा । इत्यनेन लक्षणेन यस्या याऽज्ज्या सा तस्य उत्कृष्टा भवति, एयासि मज्जेति पच पच निष्पन्न त्रिशत् स्थानसख्याना मज्जे ति मध्ये वर्तित्य, तत्र उत्कृष्टात्रिशत् शेषाश्चत्वारिंशदिति सप्तति वीसिय-ठवणाए उ ति भाष्यगाथापद, अस्यार्थ - विशत्या उपलक्षित आदिभूतया यत् स्थापनारोपणस्थान तत्रैता भवन्तीत्यर्थ । अन्नोन्नवेहुओ भवति ति अन्यस्यामन्यस्या वेध सम्बन्धोऽन्योऽन्यवेधस्तस्मात्

पचदशाद्यारोपणा एकैकस्मिन् स्थापने सयुज्यत इत्यर्थः । तथाहि—पंचदशास्त्रिंशत् स्थापनारोपणा विंशतौ सयुज्यन्ते, भूयोऽपि ता एवैकस्थानन्यूना पचविंशत्या सह सयुज्यन्ते इत्येवमन्योऽन्यानुबध सभाव्यते । होणं चि विंसमग्रहणमिति काउ वि मासाओ कथ कय ति दिणाणि गिज्झति पच-पचदशेत्यादिकमित्यर्थः । समग्रहणं नाम सव्वमासेसु विकत्थइ तुल्यान्येव दिनानि गृह्णन्ते इत्येव-रूप एव कम्मं ति एतत् कर्मठवणाठाण पक्तित्रिक प्रतीत्य पचदशाद्यारोपणासु कर्तव्यम् ।

चतुर्थेऽपि विशेषमाह एमा इत्यादि यथा ठवणा १ आरो० १२, आसीयसयाओ तेरस ऊसारिऊण एककभोपप्रक्षेपे - १६८, वारसहि भागहूते लव्वमास १४, ततश्च आरोपणासासेन एकलक्षणेण गुणेन एतदेव, ततो ठवणारोवणामासद्वयप्रक्षेपे १६, एतावन्तं सचया मासा ।

कतो किं गहिय ? ति पट्टवणा माससोहीए १४, तथो आस्वणा जइ मासा तइभाग त कारेइत्ति क्रियते, अत्रारोपणमास १ इति चतुर्दश एवावतिष्ठन्ते, एव कृते प्रस्तुतचूर्णि वाक्यस्यावसरः, एकोऽपि सन्नय भागोनपचदशगुणः क्रियते किन्त्वारोपणाराशिदिनैरिति ततो द्वादशभिर्गुणैः १४ जात १६८, ठवणारोवणदिनत्रयोदशप्रक्षेपे एककभोपोत्सारणे च जात १८०, एवमन्या-स्वप्येकाद्यास्वारोपणासु चतुर्दशान्तासु निजनिजदिनैरेव गुणनमिति ।

जइमि भवे गाहं चि, प्राचीनगाथोक्त एवार्थोऽनया सामान्येनाभिहितः, जइत्थी आरोवणं चि पढमठवणारोवणठाणपतीए इति शेषः । अणेग भागत्य चि द्वित्र्यादिभागस्या इत्यर्थः । ऋचिदेवमिति प्रथमस्थापनारोपणस्थानपक्तावित्यर्थः । अहवा - ठवणादिणसजुत्तं चि अथवा-शब्द होउ चि पद श च त सयोज्य भूयोऽपि त्याद्यन्तं कृत्वा योज्यत इत्याचष्टे, यद्वा शचुत्तं स्वत एव गम्यते, होइऊणं चि क्रियापदमेव कृत्वा योज्यमिति कथयति । ठवणादिणसजुत्तं चि पदं च उभयपक्षेऽपि समानं, तदयं वाक्यार्थः येन गुणकारेणारोपणा गुणिता ठवणादिणयुता सती पण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया ऊनाधिका वा भवति स गुणकारस्तस्या-रोपणपदस्य न भवति । एएसि चि एतयो विंशत्यठवणापचदशकारोवणपदयो एते द्वे आश्रित्येति । कोऽर्थः ? विंशतिं प्रतीत्य पचदशारोपणाया समकरणत्वमाश्रित्य दशकाख्यो गुणकारको न भवति, त्रिशद्वरूपं च ठवणाठाणं प्रतीत्य भवति, इह च दशकगुणकारभणनं पाक्षिकारोपणा प्रतीत्य तस्या अप्येकद्विकादिगुणकारपरिहारेण यदुक्तं तद् दशस्थापना-स्थानानि प्रतीत्य पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना प्राप्यते इति ज्ञापनार्थः । किमपि स्थापनास्थानं प्रतीत्य दशगुणाकारपरिहारेण यं सती पाक्षिकारोवणा कृत्स्नोच्यते, किमपि च नवगुणा तावद् यावदेक-गुणाऽपि सती कुत्रापि कृत्स्नाऽपि भवति, स्थापनास्थानानि - १६५ । १५० । १३५ । १२० । १०५ । ९० । ७५ । ६० । ४५ । ३० । एतेषु एकद्वित्र्यादिगुणा सती यथाक्रमं पण्मासप्रमाणदिनराशिपूर्वक-त्वात् पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना भवति दशकगुणा नवगुणेत्यादि तावद् यावदेकगुणेति, यदा ओमत्यगपरिहाणीए चि पाश्चात्यगत्या योज्यते तदा पूर्वोक्तानि स्थापनास्थानान्यपि पाश्चात्यगत्या योज्यमानानि त्रिंशतादीनि वेदितव्यानि तेन पाक्षिकारोपणा दश कृत्स्ना भवन्ति, नाधिक्या इत्यावेदितं भवति, एव वीसिएत्यादि विंशत्यारोपणा अष्टौ स्थापनास्थानानि प्रतीत्य कृत्स्ना भवति, अन्यानि वाऽऽश्रित्य विंशतेर्गुणकारेण गुणिताया अपि पण्मासराश्यपेक्षया हीनाधिकत्व-सभवान्न कृत्स्नत्वसम्भवः, तानि चाष्टौ यथा - १६० । १४० । १२० । १०० । ८० । ६० । ४० । २० । एतेषु विंशतिरेकद्वयादिगुणासती यथाक्रमं अशीत्यधिकशतपूरकत्वात् कृत्स्ना भवति, वियाले यथा उ चि विचारयितव्या ।



अहवेत्यादि अत्र प्रथमे गाथाव्याख्यानपक्षे प्राधान्य गुणकारगुणितस्य स्थापनापदस्य गौणता गुणकारगुणिते यत् क्षमा तस्य स्थापनास्थापनपदस्य न्यसनात्, द्वितीयव्याख्याने तु प्राधान्य स्थापनापदस्य, गुणकारगुणितस्य च गौणत्व स्थापनापद नियत कृत्वारोपणापदविषये स गुणकार कश्चित् मृग्यो येन गुणिताऽशीत्यधिकशतपूरिका भवतीति कृत्वा तदुपरि माइ त्ति तस्य द्विकस्योपरि त्र्यादयो ये गुणकारास्तै तदुवरि माई इत्यादिवाक्येन तस्मद्वरि जेण गुणा इत्यादि गाथोत्तरार्धं व्याख्यात । जइ गुण त्ति येन गुणन यस्या सा यद्गुणा, प्राचीनो गाथोक्त एवार्थोऽनया भग्यन्तरेणोक्त । जेण गुणा आरोवणेत्यादि पण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया येन गुणकारेण गुणितारोपणास्थापनादिनसयुक्ता विहिता सती यावता ऊना भवत्यधिका वा मा ता व्यवस्थापना प्रतीत्य कृत्स्ना ज्ञातव्या भोषसद्भावात् ।

कियान् पुनस्तत्र भोष ? इत्याह - त चेव तत्तज्भोषण त्ति यावदून यावदधिकं वा तावत् प्रमाण एतत् स्थापनास्थान प्रतीत्य तस्या भोपो भवति । यथा वीसिय ठवण पडुच्च पक्खियारोवणाए पचओ ज्भोसो लब्भइ तओ तेरससचयामासा निष्पन्ना लब्भति । हूति सरिसाभिलावाओ त्ति भाष्यपद । अस्यार्थ - एकद्वित्र्यादिसख्याभिरारोपणा पचदशाद्या गुणिता सत्य. स्थापनादिनयुक्ता यावत्योऽशीत्यधिकशतपूरिका भवति तावत्यस्ता सर्वा सदृशाभिलापा भवति - कृत्स्ना भवतीत्यर्थ ।

किं चेत्यादि जाए ठवणाए त्ति ययास्थापनारोपणयो स्थापनया, अट्टावीसारोवणमासत्ति व त्ति आरोपणाया १५० पचभिर्भागे हूते लब्धा मासा ३० मासद्विकोत्सारणे सत्यष्टाविशतिरिति जइ पुण न सुज्झइत्यादि तत्तज् जावइएण चेव विणा न सुज्झइ त्ति योज्य । ठवणारोवणामासे नाऊणमित्युक्त प्राग् यतोऽत स्थापनारोपणदिनैर्मासोत्पादनकारणमाह - आगास भवतीत्यादि तत्तिया चेव ते इति यत्सख्या पूर्वमासान् तावन्त एव दिवसास्ते इत्यर्थ । तेहि त्ति आरोवणदिणेहि इगाइसभावभेदभिन्नाविति ये स्वभावभिन्ना किल भवन्ति तेषु किल नानारूपमासप्रतिपत्ति प्राप्नोतीत्यभिप्राय । पचदशकादिषु मासत्रय यत प्राप्यते ततो द्विरूपहीनत्वसम्भव ।

कह पुणेत्यादि काओ ठवणमासाओ, कियंतो दिणा गिज्झति, कियंतो वाऽऽरोवणमासाओ सचयमासेहितो वा, कियतो गिज्झति त्ति वितर्कोर्थ । दिवसमाणो समि त्ति सदृश्या स्थापनाया सदृश्या चारोपणायामित्यर्थ । पुव्वकरणेण त्ति ठवणारोवणदिवसमाणाओ विसोहइत्तु इत्यादिकेन जे पुणेत्यादि आरोपणया भागे हूतेऽस्य १६६ राशेयें लब्धा २४ इत्यर्थ । अन्नामु कत्थइ त्ति पूर्वामु तिसृषु स्थापनारोपणपक्तिषु न पुव्वकरण कर्तव्यमित्यर्थ । समदिवसग्राहण न कर्तव्यमित्यर्थ । यथा वीस ठ० २०, वीस आरो० २०, इत्थ ठवणारोवणदिवसे इत्यादिना करणेन तावत् कृत यावत् बरुणोए जइ मासा तइ भागमित्यादि करणेन षोडशसु द्विधाऽष्टाष्टतया व्यवस्थितेषु एक पचदशगुण १२०, अन्यस्य पचगुण ४०, ठवणादिणक्षेपे भवति १८० भवति । अत्र च पढमाणो अट्टमाओ पक्खो पक्खो गहिओ, पन्नरसगुण त्ति काउ विइयाओ अट्टमाओ पच पच राइदिया पचगुणिय त्ति काउ ठवणामासेहि दो दस दस राइदिया इत्येवमत्र समेऽपि ठवणारोवणदिवसमाणेन समदिनग्रहण दृष्ट, तह वि य पडिसेवणाओ णाऊण हीणं वा अहियं व त्ति एक वाक्य यथाप्रतिसेवनमासाश्च ज्ञात्वा हीनत्वेनाधिकत्वेन वा ठवणारोवणामु तथा कथचिद्दिनग्रहण कर्तव्य । यथा - पण्मासा पूर्यन्ते, ते य जे आरोवणाए त्ति अशीत्यधिकशतात् स्थापनारोपणदिनरहितात् ययाऽऽरोपणया तद्वहित कृत तयैव तस्य भागे इत्यर्थ । वीसियठवण

वीसियारोवण च पडुच्च ठवणाए दो मासा आरोवणाए वि दो, तन्नैकस्मिन् ठवणामासे ये दश दिवसा गृह्यन्ते ते पचदशदिनप्रमाणस्थापनामासापेक्षया न्यूना । पचाना दशापेक्षया हीनत्वात्, दशकस्य च पचापेक्षयाधिकत्वाद्, एतदेवाह — कथं इ ठवणाए हीणमित्यादि, आरोवणामासेसु दुहा विभक्तेसु त्ति ग्रष्टाष्टतया द्विधा व्यवस्थापितेषु पत्तरस गहिय त्ति पचदशकेनाष्टकस्य गुणनात् तत्र चारोपणामासो वर्तते । द्वितीयञ्चाष्टक पचभिर्गुण्यते, विशतिस्थापना प्रतीत्य पाक्षिकस्थापनारोपणाया सर्वत्र पक्ष पक्षो मासा गृह्यन्ते, ततः सचयमासा दश, पचदशगुणा १५०, ठवणारोवणदिनयुता १८०, एवमित्यादि पचियठवणारोवणाए ठवणारोवणदिवसे माणाग्रो वि विसोहडुत्तु इत्यादि करणेन पट्ठिगत् सचया मासा लब्धास्ततः स्थापनामासोऽपनीयते ३५, तत प्रतिमासात् पचदिनग्रहणात् पचकेन गुणिते पचत्रिंशति स्थापनादिनयुताया १८० । एक्कियाए वि ठवणारोवणाए असीइसचयमासेहितो ठवणामासे फेडिए मास १७९, इत्येक्केक्काग्रो मासाग्रो एक्केक्को दिणो गहियो । ठवणादिणजुग्रो १८० । एव एगियठवणा पंचियाइ आरोवणासु वि. तद्वा हि — ठवणा १, आरो० ५, असीयसयाग्रो अग्रणीए १७४, एक्को भोसो पचभिर्भागे हूते लब्धा ३५, ठवणारोवणामासयुता ३७, ठवणामासे फेडिए ३६, एक्केक्कमासाग्रो पच पच दिणा गहिय त्ति काउ पचभिर्गुणेन एकभोपापनयने १८० । तद्वा ठवणा २, आरो० २ असीयसयाग्रो अग्रणीए १७६, दुगुणैर्भागे हूते मासा लब्धा ८८, ठवणारोवणामाससहिया सचया मासा ९०, ठवणामासे फेडिए ८९, तग्रो मासेहितो पत्तेय दो दो दिणा गहिय त्ति काउ दुगेण गुणिए ठवणादिणजुए जात १८० ।

विसमा गाहाए पादत्रिकेण एको वाक्यार्थः । द्वितीयश्चतुर्थपादेनेति तानु(?)य मासविसमत्तणग्रो इत्यादि यथा ठव० ३०, आरोव० १५, असियसयाग्रो अग्रणीए १३५, पचदशभिर्भागे हूते लब्धा ९, ठवणाए मास ४, आरोवणा एक्को मिलिया सचया मासा १४, ठवणामासापनयने १०, एव कृते प्रस्तुतचूर्णवाक्यस्यावसरो यथा — स्थापनामासानामत्र विपमदिननिष्पत्तवेन मासवैपम्यम् ।

कोऽर्थो ? न पूर्णदिननिष्पत्ता मासा लभ्यन्ते किन्तु दिनाशयुक्ता इति । तथाहि — मासो दिनसप्तकेन दिनार्धेन चात्र निष्पन्न इति, स्थापनामासेषु वि दिनसप्तकस्यार्धस्य च ग्रहणमत्र शेषमासेभ्यश्च पक्षपक्षो गृह्यते इति पचदशगुणिता दश जात १५० । ठवणादिनप्रक्षेपे १८० । एवमन्यास्वपि विपमदशसु कसिणासु ठवणारोवणासु ठवणामासेसु विपमदिनग्रहण द्रष्टव्य, कृत्स्नास्वपि विपमदिवसासु यदि स्थापनामासेसु न पूर्णदिनग्रहण भवति किन्तु दिनाशयुक्तमपि भवति तथापि तत् तथा गृह्यमान तथा कार्यं यथा भोपविशुद्ध तद्गृहीत भवति, यथा ठव० २५, आरो० १५, असीयसयाग्रो अग्रणीए १४०, भोपदशकक्षेपे कृते दशभिर्भागे हूते लब्धा १०, ठवणारोवणामासयुता सचयमासा १४, ठवणामासोत्सारणे ११, पचदशभिर्गुणेन १६५, ठवणादिनयुते भोपविशुद्धे १८०, अत्र स्थापनामासेष्वष्टौ ग्रष्टौ दिनानि दिनाशयुक्तानि शेषमासेभ्यश्च पक्ष पक्षो गृहीत इति भोपविपमार्थेति भोपात् ३ विपमार्थस्य ठवणामासेषु विपम ग्रहणस्य रूपस्य विशेषप्रदर्शनं भोपविशुद्धदिनग्रहणरूपमर्थोऽस्येति विग्रहः ।

एवं खलु० गाहा ६४६३ ।

ठवणामासैस्तसारिते शुद्धा ये भोपमासा आरोपणाया यावन्तो मासास्तत्समैर्भागे कृता आरोवणादिणेहि व त्ति चतुर्थस्थापनारोपणपक्तिमाश्रित्य उद्धरितविकलदिनैरित्यर्थः । यथा— शतादिप्रक्षेपेण सहस्रं पूर्यते विसेसिज्जतीत्यर्थः । इति आरोपणामासेभ्यः स्थापनामासा विशेष्यन्ते, विशिष्टा क्रियन्ते, पृथक् क्रियन्ते इति यावत्, पणमासदिनराशिपूरकत्वात्तेषामिति भावः ।

एगदुतिमाइयाहि इत्यादि अनेन व्याख्यानेनारोपणाना कृत्स्नाना मध्ये एकस्या आरोपणाया प्रतिनियत सख्यानामाह अहवा - जत्थ सखित्तितरमित्यादि, ते चेव त्ति आलोचकमुखश्रुता यथा- अष्टादशमासा श्रुता तैरशीत्यधिकशताद् भागे हूते लब्धा १० सर्वविशुद्धिसद्भावात् कृत्स्नं चैतत्, अत्रैकैकस्मान्मासाद्दिनदशक गृहीत, अष्टादशमासैर्दशकस्य गुणनेऽशीत्यधिकशतभवनात्, किञ्चि तत्थ विकल भवइ त्ति किञ्चिदुद्धरति, परिपूर्णतया यदि स राशिर्न शुद्धयतीत्यर्थः । तदा तद्भागलब्ध भागहारकस्य यका सख्या तत्प्रमाणे. स्थानैस्तावत्यो वारा न्यसनीयमित्यर्थः । जावइय त्ति विकलयुक्तभागाच्छेपा ये अन्ये भागास्ते यावत् स्थानसख्याकास्तावन्मात्रो राशिर्भाग- हारगुणो त्ति भागहारेण यो लब्धो राशि स भागहार उक्तस्तेन गुण्यते य. स वा गुणो गुणकारो यस्य स तथा यद्वा साध्याहार योज्यते, यथा विकलयुक्तभागाद् येऽन्ये भागास्ते यावन्तः यावत्स्थानसख्याका स गुणकारो दृश्यस्तेन भागहारलब्धो राशिर्भागहारस्तस्य गुणन गुण्यते वाऽसौ तेनेति विग्रहः । यथा - सचया मासा १३ श्रुता, अशीत्यधिकशताद् भागे हूते लब्धा १३, उद्धरिता ११, लब्ध त्रयोदशभि स्थानैर्यस्यते, एकश्च भागो विकलयुक्तः कार्यं, जात २४ । अपरे च द्वादशत्रयोदशभागास्ततो द्वादशसंख्यया त्रयोदशको गुणितः जात १५६, चतुर्विंशतेः प्रक्षेपे जात १८०, तथा सचया मासा २५, श्रुता । असीयसयाओ भागे हिए लब्धं ७, उद्धरिता ५, सतक पचविंशतिस्थानेषु न्यस्यते, एको विकलयुक्त १२, अपरे चतुर्विंशतिस्ततः सतकेन चतुर्विंशतिगुणिता १६८, द्वादशप्रक्षेपे १८० । एवमन्यत्रापि अधुना यदा स्थापनारोपणप्रका- रेणाशीत्यधिकशतमुत्पद्यते तदा अकसिणारोपणाया सत्या भोषप्रक्षेपे कृते भागो हर्तव्य इत्युक्तं प्राक् इति विकलप्रस्तावादेव यस्या यावत्प्रमाणो भोषो भवति तत्परिज्ञानार्थमाह - “नायव्व तहेव भोसो य” त्ति, तथा यस्य मासस्य यदिनप्रमाण गृह्यते इत्येतत् ज्ञातं तथा ...भोषो अपि यस्या यावत्प्रमाणो भोष इत्येतदपि ज्ञातव्यमित्यर्थः ।

कथं ? इत्याह - आरोवणा इत्यादि चूर्णवाक्य, यथा वीसियठवणा पणुवीसा- रोवणा तयोरशीत्यधिकशतादुत्सारणे कृते जात १३५, आरोपण्या भागे हूते लब्धा ५, उद्धरिता १०, एव कृते चूर्णवाक्यस्यावसर असुञ्जमाणो त्ति सवंधा निर्लोपमध्याल्लघुराशौ यच्छेदा- शविशेषः । छेदोऽत्र पचविंशतिरूप उद्धरितदशकस्त्वशस्तयोर्विशेषो यस्मात् पतति स तस्मान् पात्यते इत्येव न्यायेन बृहद्वाशिमध्याल्लघुराशेरुत्सारणे कृते उद्धरितरूपः । अत्र हि दशकपच- विंशत्योर्मध्ये पचविंशतिर् बृहद्वाशि, दशकस्तु लघु, तस्य लघोरुत्सारणे कृते पचविंशतेर्मध्यादुद्धरिता. पचदश, एतावत्प्रमाणो भोषोऽत्रारोपणाया भवति, तथा ठ० २०, आरो० २५, अशीत्यधिक- शतादुत्सारणे १४५, अत्रारोपण्या भागे हूते लब्धा ६, उद्धरिता दश, पचदशभ्यो मध्यादृशाना- मुत्सारणे उद्धरिता. पचकपचकरूपो भोषोऽत्रेत्येवमन्यास्वपि छेदाशयोर्विशेषो भोसो विज्ञेयः । ततो भोषमित्थं प्रथमत एव विज्ञाय ठवणारोवणदिवसरहितराशिमध्ये प्रक्षिप्यारोपणाया भागो हर्तव्यस्ततो यल्लभ्यते तदारोपणमासैर्गुण्यत इत्यादि प्रागदशितप्रकारस्तदूर्ध्वं कार्यं ।

कसिणा० २० गा० ६४१६ ।

तेसु भागत्येसुति यथा ठव० ३०, आरो० १५, असीयसयाओ अवणीए १३५, पचदश- भिर्भागे हूते मास ६, ठवणामास ४, आरो० १ ठवणारोवणमाससहिया संचया मासा १४, ठवणा- मासे फेडिए जाया १०, आरोपणाया एकत्वात् एकभागस्थो दशक पचदशकेन गुणित १५०, अत्र दशस्वपि मासेषु पक्खो पक्खो गहिओ, ठवणादिणजुया १८० ।

ग्रह दुगाइभागत्थ त्ति यथा ठव० ३०, आरो० २५, असीयसयाओ अवणीए १२५, आरोवणया भागे हूते लब्धा ५, आरोवणामासा ३, तैगुणित पचक १५, ठवणामास ४, आरोवणमासयुत २२, ठवणामासोत्सारणे १८, आरोपणया मासत्रयसद्भावात् त्रिभि स्थानै पट् स्थितान् मीलयित्वाऽष्टादश धियन्तेऽत्रैकस्मिन् भागे पचदश दिवसा गृह्यन्ते, अपरयोश्च द्वयोभागयो पच पच इति प्रत्येक भागेषु समदिनग्रहण, ततो भागाना पचदशभि आरोपणामास ३ सहिया सचया मासा पचकेन गुणने ठवणादिनक्षेपे १८० ।

ग्रह कसिणत्ति यथा ठव० २५, आरो० २०, असीयसयाओ अवणीए १३५, पच-दशभोपे कृते १५०, आरोपणया भागे हूते लब्धा ६, आरोपणास्त्रिभि पट् गुणिता १८०, ठवणामास २, आरोपणामास ३०, सहिया सचया मासा ३३ ठवणामासोत्सारणे आरोपणया मासत्रयसद्भावात् त्रय सप्तका न्यसनीया, एक पचदशगुण, अपरौ च पचगुणाविति ७०, भोपस्य पचदशकस्योत्सारणे पचदशभिगुणिते सतके त्रयोदश त्रयोदश दिनानि किञ्चिन् न्यूनानि मासाद् गृह्यन्ते, इत्यायाता त्रयोदशसतका एकनवतिर्यत स्यात्, अत आह- ता नियमा तेसु मासेसु विसमग्राहणमिति ।

### जइ इच्छसि नाऊण० गाहा [ १ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग ]

कस्मात् कियन्ति कियन्ति दिनानि गृह्यन्ते ? इति दिनग्रहणगाथेय, अस्यार्थ - यदीच्छसि ज्ञातुं कि तद् ? इत्याह - किं गहियं मासेहि तो त्ति सम्बन्ध, कस्मान्मासाच्च कियद् गृहीत-मित्यर्थ । तदा ठवणाख्वाणा जहाहि त्ति असीयसयाओ ठवणारोवणदिणा उत्सारेहि, मासेहि त्ति सचयामासेभ्यश्च ठवणामासानारोपणामासाश्चोरय तदूर्ध्वं तु मासेहि त्ति विभक्त्यव्यत्यात् मासै सचयमासै ठवणारोवणामासैश्च भाग हरेदिति योग ।

केभ्य ? इत्याह - तद्विवस त्ति विभक्तिपरिणामात् तेभ्य स्थापनामासै स्थापनादिनेभ्य आरोपणामासैरारोपणादिनेभ्य सचयमासैश्च ठवणारोवणमासरहितै असीयसयाओ ठवणारोवण-दिनरहियाओ भाग हरेदित्यक्षरार्थ । यथा - ठव २०, आरो० १५, असीयसयाओ उत्सारणे १४५, एत्थ ठवणारोवणठाणे सचया मासा १३, ठवणारोवणमासतिगुत्सारणे स्थिता. १०, तैर्भागो हार्यं, अस्या राशेर्लब्धा दिन १४, उद्धरितदिनपचकस्य भागहारकस्य च दशका-ख्यस्यापवर्तना देशाना पचमे भागे १ न्यास ३ इति दिनार्थं लब्ध इति सचया मासेषु मासा ३२, दिन १४, दिनार्थं च गृहीत, अर्थं च दशकेन गुण्यते जाता १०, अधस्तनद्विकेन भागे हूते लब्ध दिनपचकम् ।

क प्रत्यय. ? चउदसगुणिया १४०, पचकप्रक्षेपे इत्येव सचयमासैर्भागे हूते सचयदिनप्रमाण यावद्गृह्यते तावदनया गाथायोक्त अधुना ठवणारोवणमासेहितो यावन्तो दिवसा गृह्यन्ते स्वसमासकैर्भागे हूतं तत्प्रदर्शनाय गाथामाह -

### ठवणारुवणा दिवसा ण० गाहा [ २ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग ]

व्याख्या - ठवणारुवणादिवसाना भागो हार्यं, कै ? सतमासै, स्वकीयस्वकीयमासैरित्यर्थ, तत्र च ठवणारोवणदिवसराशे पचभिर्भागे हूते यल्लब्ध तद्विरूपेन (?) तत्समासतया भवति, भागे च हूते यल्लब्ध तद्विवसान् जानीहि, शेष चोद्धरित दिनभागानेव जानीहि, न पुन पूर्णदिनानि इति, यथा ठव० २५ आरो० १५, अत्र च सचया मासा १०, तैर्भागे हूतेऽस्य १४० राशेर्लब्धदिन १४

मासान् गृह्यते, दशकेन गुणिता जात १४०, आरोपणमासेनैकेन भागे हृते आरोपणदिनराशे लब्धदिन १५, ठवणमासै त्रिभिर्भागे हृतेऽस्य २५ राशेर्लब्धदिना, मासान् गृह्यन्ते इति २४, उद्धरितश्चैकक स चाष्टकेन गुणितो जाता ८, भागे अष्टकेन हृते लब्धदिन १, मिलित सर्व १८०, ठवणारोवणदिवसा ज्ञानसद्भावे इत्यमुक्त, यदा तु ठवणारोवणराशिर्न ज्ञायते तदा कस्मान्मासात् कियद्दिनानि गृह्यन्त इति कथनार्थमाह—

जइ नत्थि० गाहा [ ३ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग ]

व्याख्या—ठवणारोवणराशिर्न ज्ञायते विस्मृतत्वादिकारणतो यदा तदा शिष्यमुखात् श्रुता ये सेविता मासास्तैरशीत्यधिक शत विभजेत्, भागे हृते यल्लब्ध तत ओगहिय ति अवग्रहीतमेकैक स्मान्मासाद्दिनमानमित्यर्थ । इहापि यदुद्धरित तद्दिनभागा अवबोद्धव्यास्ते च लब्धदिनराशिना गुणयित्वा तेनैव लब्धदिनराशिना भाग हत्वा दिनानि कार्याणि ।

क प्रत्यय ? सेवितमासैर्लब्धस्य गुणने तस्य च मध्ये उद्धरितस्य दिनीकृतस्य शत प्रक्षेपे अशीत्यधिकशत वि भवति, यथा श्रुतमासा. १३, एभिस्मात् १८०, राशेर्भागे हृते लब्ध उद्धरितं ११, त्रयोदश-त्रयोदशभिर्गुणिता १६६, एकादश दिनप्रक्षेपे जात ॥१८०॥ इयाणमित्यादि अतिक्रमादेषु यथाक्रम प्रायश्चित्त यथा—तप कालाभ्या लघु, द्वितीये तवगुरु, तृतीये कालगुरु, चतुर्थे ङ्गा उभयगुरु, प्राभृतवदित्यादि, यद्वा प्राभृत अर्थाधिकारस्तथा प्राभृतच्छेदो अपि, तथा सकलवहुससूत्रेषु ये पदविधय पच ताश्च प्रत्येक दर्शयित्वा तयो वि गय ति तत सम्यग् ज्ञानात् ॥छ॥

गुरुय एकक ओहाडण ति लघुप्रायश्चित्ताना स्थगनकारित्वात् तस्य पिधानकल्प तत् बृहन्मध्ये लघूनि प्रतिविशती ति भाव । अह्वा—साहूणमित्यादि गुरूण अणेगानि सिज्ज ति—आलोचकसाधुवहुत्वात् साहूण अणेगालोचनाउ त्ति एपोऽप्यगीताथोऽपि सन् जे सेसा मास त्ति उद्धरितरूप पडिसेवयो चेव हाय त्ति प्रतिसेवनादेवेत्यर्थ ।

असचए तेरस पया सचए एगारस पया तिणिण दिणा छेओ दिज्जइ त्ति दिनत्रय यावदासेवने छेदोऽपि, मास ४, ६ रूपोदय आयतरपरतरपदाभ्या चतुर्भगके चतुर्थगून्य । अन्ये अन्यतरतरं चतुर्थभङ्गक ब्रूवते, उभयोर्मध्येऽन्तर तु किंच न कर्तुं तरति—शक्नोति अन्यतरतरं जइ इच्छिय करेइ त्ति ईप्सित तप प्रभृतिभेयविकम्पोवलभाउ त्ति दोसु वि सामत्थे सतेज्यतरकारत्वात् पुरुषभेदविगण्य सलद्धित्तणउ त्ति गुरुयोग्य भक्ताद्यानय त्ति पच्छित्ते निक्खित्ते कज्जइ त्ति, प्रायश्चित्त तस्य स्थाप्य क्रियत इत्यर्थः, ज वहइ त्ति यत् करोति तत्थ थोवं पणगाइ इत्यादि लघुमासमापन्नत्वात् तस्य, तथाहि लघुमासलक्षणपन्नस्वस्थानापेक्षया यत् तदधोवर्ति य पंचकादिभिन्नमासान्त तत् स्तोक, तदुपरि च लघुद्विमासादिपारचिकान्तं यत् तपस्तत् बहुलघुमासापेक्षया तस्य वृद्धत्वात् एव लघुद्विमासादिष्वपि हिट्ठिल्लठाणा थोव ति पणगादि लघुमासात थोव तिगमासियाइ पारचियतं वह एस अदिसिट्ठो त्ति लघुपणगादिमासादिसकीर्णतया प्राप्त अविशिष्ट लघुपचकच्छेदो लघुमासादि छेद इति प्रतिनियतविशेषविशिष्ट. प्राप्नो विशिष्टच्छेद । अह्वेत्यादि यन्नामकैर्मासैस्तप आपन्न छेदोऽपि तन्नामक मासप्रमाण आपद्यते । तवतिय पि तपस्सिक, तदेव दर्शयति—मासवभतरमित्यादिना मासान्तर्वतिलघुपचकादिभिन्नमास लघुमास इति ज्ञेयमित्येक तप., द्वित्रिमासचतुर्मासरूप तपः सर्वं चतुर्मासान्तर्वतित्वाच्चतुर्मासाभ्यन्तरमिति द्वितीय, पचमास-

पण्मासरूप पण्मासाभ्यन्तर तृतीय, एव छेदोऽपि योज्यमानोऽत्र पक्षे इत्थं योज्य - यथा पंचमासिग्रहो उर्वरि छद्गृह्य एङ्गवारा दिन्न, तत्रो उर्वरि जइ इक्क वार आवज्जइ पुणो वि बीय वार, एव ताव जाव वीसवारा, ताव भिन्नमासछेग्रो पणमाइ पचविंशतिपर्यन्तरूपो दातव्य, भूयोऽपि वीसाग्रो परेण आवज्जमाणे जाव सत्तरसवारा ताव लघुमासछेग्रो कज्जइ, लघुमासप्रमाणपर्यायोऽपनीयत इत्यर्थः । सत्तरसलहुमासियाण उर्वरि पुणो एकैकवारासेवनेन आवन्ने जाव सत्तरस वारा ताव लघुद्विमासद्विक छेदो दातव्य, पुणो वि आवन्ने तदुर्वरि जाव सत्तरसवारा ताव चउलहुच्छेद कर्तव्य । तदुर्वरि आवन्ने जाव पचवारा ताव लहुपचमासिग्रो छेद कार्यः । तदुर्वरि एक वार सेविण् छद्गृह्य छेदो दिज्जइ, एव सति तप समाननामक मासाभ्यन्तरादिरूप छेदत्रिक प्रदर्शितरीत्याऽतिक्रान्त भवति, एतदेवाह - जम्हा एवमित्यादि सुगम, एतच्च प्राचीनग्रन्थानुसारेण ग्रन्थे निगमनवाक्ये भिन्नमासाइ-छम्मासतेसु त्ति भणनाच्च सेवनावारासरूपायनमनुक्तमपि दृश्यमिति सभाव्यते । तत्त्व तु बहुश्रुता विदति । उद्धातानुद्धातयोरापत्तिस्थानानि, तेषा लक्षणम् ।

**अहवा छहिं० गाहा ।**

छण्ह मासाण आरोवियाण छद्दिवसा गया, ताहे अन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे ज तेण अद्रवूढ त सेसिज्जइ, ज पच्छा आवन्न छम्मासिय त वहइ, इत्थंभूतेन पचमासा चउवीस च दिवसा सोसिज्जति. त पि त्ति नूतन, अहं छसु इत्यादि अन्नं छम्मासिय परिपूर्णं यदि वहतीत्यर्थः, आइमते वा नत्थि त्ति मासचउमासलक्षणा अग्रोत्तराभ्या काष्ठाभ्या पातितो जइ तम्मि त्ति अग्नौ, डहिउ त्ति दग्ध, सहिण त्ति श्लक्ष्णानि, अप्पाण न सवारेइ त्ति असमर्थं स्यात् उग्घायाणुग्घाए पट्टविण् त्ति वहत सत नत्थि एगखवाइ त्ति भाष्यपद एकस्कन्धेन कपोतिद्वयमुद्धोढु न शक्नते - यप्पेवेत्यर्थः (?) । अणवट्टुवारचियतवाणि वत्ति अनवस्थाप्य तप पारचिक वाऽतिक्रान्त समात इति, ते यदा ये न विहिते भवत इत्यर्थः । छम्मासिग्रो छेग्रो छम्मासिग्रो वि जस्स परियाग्रो अग्रो तस्स वि मूल दिज्जइ ।

**जहमन्ने० गाहा ।**

पर आह - अह एव मन्ये यथा यदुतमास सेवित्ता मासप्रायश्चित्तेनैव शुद्धयति तथा मास सेवित्वैव द्विमासादि पारचिकान्तप्रायश्चित्तेनाप्यसौ शुद्धयतीति तदप्यहं मन्ये । आचार्योऽप्याह - ग्रामं त्ति एतदभ्युपगम्यत एवास्माभिर्नात्र काचिन्नो बाधाक व्येति (?) । यदुक्तं चूर्णीं तत् पराभिप्रायः सुगम एवेत्यपेक्षया आचार्याभिप्राययोजना तु दर्शयति - एस मासिय पडुच्चेत्यादिना भाष्यगाथया हि मासोपेक्षयैव द्विमासादिपारचिकं ताव सा न शुद्धिरुक्ता, एतेन सेसा वि गमा सुइय त्ति द्विमास सेवित्वा द्विमासादिना शुद्धयतीत्याद्यपि पाप द्विमामादिकदृश्यतम एव चूर्णि-कृता दर्शितः । थोवे वा बहु चेव त्ति अपराधे इति शेषः, आवत्ति सुत्ता नाम शिष्यगतप्रति-सवनाद्वारेणापन्नप्रायश्चित्ताभिधायीनि, आलोचनाविधिसुत्ता नाम गुरुशिष्ययोर्मध्ये शिष्येण गुरोर्निवेदिते गुरुणा प्रायश्चित्तपर्यालोचनविषयाणि प्रायश्चित्तारोपणं गुरुणा यत् क्रियते एतावत् त्वया कर्तव्यमित्येव दानरूपाण्यारोपणासूत्राणि, च उरो सूत्रेणैव भणिय त्ति यथा - प्रत्येकसगल-सुत्त प्रत्येकबहुसमुत्त सगलसजोगमुत्त बहुमसजोगमुत्तमिति, तत्थ जे भिक्खू मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, जे दोमासिय, तेमासिय चाउम्मासिय पचमासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा इति प्रत्येक सूत्र प्रतिसेवनाया सत्या प्रायश्चित्तापत्ति स्यात् इत्यापत्तिसूत्राण्युच्यन्ते ।

जे भिक्खू बहुसो मासिय पडिसेवित्ता आलोइज्जा, बहुसो दोमासिय,० बहुसो तेमासिय०, बहुसो चउम्मासिय,० बहुसो पचमासिय पडिसेवित्ता आलोइज्जा इति प्रत्येकबहुससूत्र, जे मासिय च दोमासिय च तेमासिय च इत्यादि सगलसयोगसूत्र, जे बहुसो मासियं बहुसो दोमासिय तेमासिय-मित्यादि बहुसयोगसूत्र, एतत् सूत्रचतुष्टयमेतावता ग्रथेन सूत्रोपात्त व्याख्यात, इमे अत्यगो त्ति अर्थो व्याख्यान भाष्यादिक, तस्मात् पड् बोद्धव्यानि, तं जहेत्यादि जे भिक्खू मासाइरेग-दोमासियमित्यादि बहुससातिरेगसूत्र ।

जे भिक्खू साइरेगमासिय च साइरेगदोमासियं च एव सातिरेगमासिय सातिरेगमा-साइणा सह धारेयव्वमित्यादि सातिरेगसजोगसूत्र ।

जे बहुसो सातिरेगदोमासिय बहुसो साइरेगदोमासिय चेत्यादि बहुससातिरेकसयोगसूत्र मासिय सातिरेकमासिय ।

जे भिक्खू दुमासिय सातिरेकदुमासिय चेत्यादि सकलस्य सातिरेकस्य च सजोगसूत्र ।

जे भिक्खू बहुसो मासिय बहुसो सातिरेकमासिय च ।

जे भिक्खू बहुसो दुमासिय बहुसो सातिरेगदुमासिय चेत्यादि बहुसस्य सातिरेगस्य सजोगसूत्र, इत्येवमापत्तिसूत्राणि दस कथितानि, आलोचनासूत्राण्यपि इत्थं वास्यानि, इमं नवमे सूत्रे इति इदमिति सूत्रादर्शोपात्त पचम सूत्र, आलोचना नवमसूत्र च, बहुभगसकुलमिति नवमसूत्रस्य चतुष्कसयोगेनान्त्य चतुष्कसजोगरूप पचम सूत्र षष्ठ च सूत्र बहुसरूप सूत्रोपात्तेनालोचनादशमसूत्रेऽप्यचतुष्कसयोगरूप तदनेन त्रिशत्सूत्रेषु मध्येऽष्टादशसूत्रेष्वतिक्रातेष्वेकोनविंशतितमे च सूत्रे षष्ठ सूत्रोपात्त सूत्रमिति कथित, न पुनर्नममात्रेण कथनात् गतार्थममीषा दृश्य, किन्तु पचमषष्ठसूत्रयोरालोचनासूत्राणि व्याख्यास्यति, तद्व्याख्याते च सर्वेषां सदृशत्वात् सर्वाण्यपि व्याख्यातायेव भवति, तत्राप्याद्य आपत्ति-सूत्रचतुष्कभङ्गे नालोचनासूत्रचतुष्क आरोपणासूत्रचतुष्क सूत्रेणैवोक्त व्याख्यात च द्रष्टव्यम् सातिरेकसूत्रादीनि च पड् व्याख्यास्यति, तत्राप्यालोचनाविषयपचमषष्ठसप्तमाष्टमसूत्रव्याख्याने आपत्ति-सूत्रारोपणासूत्रयोरप्येतानि भवति, आलोचना नवमदशमसूत्रयोर्व्याख्याने आपत्त्यारोपणासूत्रयोरपि द्विक व्याख्यान भवतीत्यारोपणासूत्रद्विके च नवमदशमे यथाक्रम सूत्रादर्शोपात्ते सूत्रे मतमाष्टमे भविष्यत इत्यालोचनासूत्राणि पड् व्याख्यास्यति चूर्णिकृतम् । इह चालोचनासूत्रयोर्नवमदशमयोरेते पचमषष्ठे सूत्रोपात्ते सूत्रे इति कुतो लभ्यते इति न वाच्य । भाष्ये हीत्यमेवाऽनयो सूचितत्वात्, इयाणि छट्ठमित्यादि इदं पचमषष्ठसंख्यान सूत्रोपात्तमात्रापेक्षया द्रष्टव्यम्, न तु प्राग् दशितप्रत्येकसगलसूत्रमित्यादि, नामभेदेन सूत्रदशकापेक्षया नवमदशमसूत्रयोर्ये चतुष्कसयोगास्तेष्वन्तचतुष्कसयोगसूत्रे इमे, एसि अथो पूर्ववदिति, पचमषष्ठसूत्रोपात्तसूत्रयोरित्यर्थ । अहवा - त मासादीत्यादि त मासाइपडिसेवियं आलोयणविहीए गुरवो नाउ ज मासाइ-आरोवणाए आरोवर्यति त ति काइय भन्नइ इति योग, आरोवणाए वि आरोप्यमान यन्मासादि हीनाधिकतया यथारुहपरे यदारोप्यते तदित्यर्थ । भावगो वा निष्पन्न त्ति रागद्वेषादिना तत्रो मासियं गुरुपणग वा मुं चतेण लघुदशक चेत्यादि ताव भाणियव्वं जाव गुरु भिण्णमासो त्ति पणगाइयाण सव्वे दुगसजोग त्ति ५॥५॥१०॥१०॥१५॥१५॥२०॥२०॥२५॥२५॥

जाइ कुल० गाहा ॥ सा चेयम् -

जाइकुलदिणयनाणे दंसणचरणे य खंतिदमजुत्ते ।

मायारहिए पच्छा-णुतावि इय दसगुणोगाही ॥

अमुगसुएण त्ति अमुकश्रुतेन कल्पनिशीथादिकेन दसणेण त्ति सम्यवत्वेन मायारहिए इत्यस्य व्याख्यामाह - अपलिउचमाणो इत्यादि अपच्छाणतावीत्यस्यार्थमाह आलोएत्ता नो पच्छेत्यादि केनापि किञ्चिदकथनीयमालोचित, तत् पश्चाद् यो न खेद याति स इत्यर्थः । सुहुमे आलोएइ नो बायरे एव कुर्वंत शिष्यस्य गुरोरेवम्भूत प्रत्ययो जायते, तमेवदर्शयितुमाह - जो य इत्यादिना, इयरठवियव त्ति अणतरठविय, इयाणि एएसि चैव दोण्ह वीत्यादि आलोचनासूत्र-दशकसंख्यानमध्ये ये पचमपष्ठसूत्रे तयोरित्यर्थः । जहा पढमवितियसुत्तेसु त्ति यथाद्यसूत्रचतुष्टयमध्ये आद्यसूत्रपदसयोगैस्तृतीय सकलसयोगसूत्र निष्पद्यते यथा च द्वितीयबहुसूत्रपदसयोगैश्चतुर्थं बहुसस-योगसूत्र निष्पद्यते तथालोचनाविषयसातिरेकपचमसूत्रपदसयोगैः सप्तम सातिरेकसयोगसूत्राणां संख्यानमाह - नवसया एगसट्ट त्ति उद्घातिमानुद्घातिमाभ्या मिथसयोगसूत्रसंख्यानमिदं, इम चेत्थ यथा - उग्घाइयसजोगठाणा ५॥१०॥१०॥५॥१ गुण्या, एते पच त्रि अणुग्घाइयसजोगेण गुणिया, जहासख इमे जाया २५॥५०॥५०॥२५॥५॥ एव उग्घाइयाण एगदुत्तिचउपचसयोगो अणुग्घाइय-दुगसजोगेहि दसहि गुणिए जहासख इमे जाया - ५०॥१००॥१००॥५०॥१०॥ उग्घाइयाण सव्व-सजोगा अणुग्घाइयदुगसजोगेहि मिलिया ३१०, पुणो उग्घाइयाण सव्वसजोगा अणुग्घाइयतिय-सजोगेहि गुणिया जहासख जाया ५०॥१००॥१००॥५०॥१०॥ एए सव्व ३१० पुणो उग्घाइयसव्व-सजोगा अणुग्घाइयचउक्कसजोगेहि पचहि गुणिया जहासख जाया ॥२५॥५०॥५०॥२५॥५॥ एए सव्वे मिलिया १५५, पुणो उग्घाइयसव्वसजोगा अणुग्घाइयपचसजोगेहि एक्केण गुणिया जहासख जाया ५॥१०॥१०॥५॥१॥ एए सव्वे एक्कत्तीस ३१, एव उग्घाइयाणुग्घाइएहि सव्वसजोग-सुत्ताण संखेवो ६६१, सातिरेकाणि सति सगलसूत्राणि तेषा, तानि च त्रिनवतिसंख्यानि, सा च एगतीसत्तिभागेण भवइ, तत्थ एगा एगतीसा य वासातिरेगसगलसुत्ता ॥५॥ उग्घातिमादिविशेष-विकलसामान्यसयोगसूत्राणि २६ । सर्वाणि ३१ । द्वितीया च उद्घातिमसातिरेगसूत्र ५ । अनुद्घा-तिमसातिरेकसयोगसूत्र २६ । षड्विंशतिश्च द्विकसयोगा १० । चतुष्कयो ५ । पचकयो १ । एतन्मीलने निष्पद्यते, इय च त्रिनवति पूर्वराशे सयोगसूत्ररूपस्थेत्यस्य ६६१ । मीलिता सजायते । १०५४ । बहुससुत्ते वि एव तत्रो दुगुणिए जात २१०८, पुणो मूलुत्तरदुगेण जाय ४२१६ । दप्पकप्प-द्विकेन गुणने जात ८४३२ । एव एय सखाण पचमच्छट्टसत्तमअट्टमआलोचनाविषयसुत्तचउक्कस्स आइमसुत्तचउक्के वि प्रत्येकसूत्रादिरूपे एतदेव संख्यानं, तत्रो पुणो वि दुगुणिए जात १६८६४ । एवमालोचना सूत्राष्टके एतावत् सूत्रसंख्यानं जात, अत एवाह - अट्टसु वि सुत्तेसु इत्यादि आलो-चनासूत्राणां प्रस्तुतत्वात् कथमुक्त एत्तिआ आवात्तसुत्त त्ति, सत्थ सदशत्वाद् येन केनापि व्यपदेशो न दोषायेति सभाव्यते, आपत्तिसूत्राष्टके आरोपणासूत्राष्टके च एतावत्येव संख्या इति त्रिगुणित् पूर्वराशौ त्रिशत्सूत्रमध्ये चतुर्विंशतिसूत्राणामेतत् सूत्रसंख्यानं जायते ५५०५६२० । एगाइय त्ति एकादि दशान्ता दशपदा कर्तव्या, तान्येव दशपदान्याह -

त जहेत्यादि एगादेगुत्तरिए इत्यादि, एकाद्या एकोत्तरवृद्ध्या पदसंख्याप्रमाणेन स्थाप-नीया, कोऽर्थः ? यावति पदान्यभिलषितानि तावत्प्रमाणा राशय एकोत्तरवृद्ध्या व्यवस्थाप्या,



गुणकारं त्ति दशकादिभिरेककान्तैरधोवर्तिभिः भागहारे लब्धस्य उपरितनैरेककादिभिर्दशकान्तैर्गुण-  
नात् गुणकारा एते उच्यन्ते, तथा ह्युपरितनपक्षौ व्यवस्थितेन दशकेनापरस्य रूपस्य सकलस्य गुणने  
जाता १०। एककेन भागे हृते भागलब्धा १०। एककसंयोगा इत्यर्थः। तत्र दशकेन रूपस्य  
गुणनाद्दशको गुणकारो जातः, एककश्चाधोवर्तिभागहारकः, तथाय दशको नवकेन गुणनाद्  
गुण्यनवकश्च गुणकारनवकाधोवर्ती द्विको भागहारकः, इत्येवमन्यत्रापि गुण्यगुणकारभागहारकल्पना  
कार्या, तथापि शिष्यहितार्थं सप्रपञ्चं दर्शयते तत्र दशकस्य गुण्यं रूपं जातं ५०। भाग एकेन १  
लब्ध १०, नवकस्य गुण्य १०। जाताऽस्य ६०, भागो द्वाभ्यां २ लब्ध ४५। अष्टकगुण्य ४५, जातं  
३६०, भाग ३ लब्ध १२०, सप्तकस्य गुण्य १२० गुणिते जातं ८४०, भाग ४ लब्ध २१०, षट्कस्य  
गुण्य २१०, गुणिते जातं १२६०, भाग ५ लब्ध २५२, पञ्चकस्य गुण्य २५२ गुणिते १२६०, भाग  
६ लब्ध २१०, चतुष्कस्य गुण्य २१०, गुणिते ८४०, भाग ७ लब्ध १२०, त्रिकस्य गुण्य १२० गुणिते  
३६०, भाग ८ लब्ध ४५, द्विकस्य गुण्य ६५, गुणिते ६० भाग ९ लब्ध १०, एककस्य गुण्य १० दशेव  
च, ते दशानां दशभिर्भागे हृते लब्ध एकक दशयोग एक एव, अत्र चोभयमुखराशिद्वयापेक्षया  
पक्षितरपरा आगतफलानामुत्तिष्ठते यथा १।१०।४५।१२०।२५२।२१०।१२०।४५।१०। तथा च पडिराशिये  
त्ति द्वितीयस्थाने धृत्वा गुणय त्ति यदागतफलं तस्य पाश्चात्याकेन तथा च नवकाद्दशकं पाश्चात्यो  
भवति, तस्माच्च सप्तक इत्यादि, येन गुणितस्तदधस्तनेन भागे हृते यद् लब्धं तत् फलं, आगत-  
फलानां मीलने २०३३, प्रतिसेवनाशब्देन हि नवममापत्तिसूत्रं सूच्यते, आदिग्रहणालोचनारोपणा-  
सूत्रस्यापि नवमस्य भेदा ज्ञातव्या, एष चैवोग्घायेत्यादि तत्रोद्धातिमानुद्धातिमाभ्यां मिश्रयोगे  
यावन्त उद्धातिमाना दशभिरेककयोगैः पञ्चचत्वारिंशदादिद्विकादियोगैश्चानुद्धातिमाना दशापि  
दश पञ्चचत्वारिंशदाद्यराशयो गुणिता यत्सख्या प्रपद्यन्ते तदुत्तरत्र चूर्णिकृत् दर्शयिष्यति, अत्रताव-  
दन्यदपि करणं पाश्चात्यभगकानयनविषयं व्याख्यायते -

उभयमुहं रासिदुगं, हेड्विल्लाणंतरेण भय पढमं ।

लद्ध हरासि विभक्ते तस्सुवरि गुणंतु संयोगा ॥

आद्यपादं प्रतीतं अद्यस्तनादन्त्याद् योऽनतरस्तेन प्रथममधस्तनादुपरिवर्तिनं भज,  
नाम तस्य हारः, अधोराशिना अनतरेण विभक्ते सति उपरितनराशौ यल्लब्धं तेन लब्धेन तस्य  
भागहारकानन्तरराशेरुपरि योऽधस्तदगुणनं कार्यं, गुणिकोऽनतरस्तेन भागे हृते प्रथमस्य  
पञ्चचत्वारिंशदरूपस्य लब्धा १५, तेनाष्टकस्य त्रिकस्योपरिवर्तिनो गुणने जातं १२०, एवमन्यत्रापि  
दृष्टव्यं, द्वितीयं च करणं यथा -

उभयमुहं रासिदुगं, उवरिल्लं आइलेण गुणिरुण ।

हेड्विल्लभायलद्धे उवरि ठिए हुंति संयोगा ॥

व्याख्या - आद्यपादं प्रतीतं, उपरितनमादिमेन गुणयित्वा हिड्विल्लं त्ति आदिमात्  
गुणकाररूपाधोवर्तिकोऽधस्तनस्तेन भागे हृते यल्लब्धं तस्मिन् भागहारकादुपरिस्थिते संयोगमानं  
भवति ३३१, अत्र ह्यकानां वामगत्या नयनाऽऽशकस्यादावपरागो नास्तीत्यादित्वं, तदपेक्षया  
नवकस्य कल्पते, तदपेक्षया चाष्टकस्यादित्वमिति एवं तावद् यावदैककस्यादिमत्वं द्विकापेक्षयति,  
तत्रह्युपरितनो दशकस्य गुण्यते, आदिमे नवके जातं ६०, नवकाधोवर्ती द्विकस्तेन भागे हृते नवत्या  
लब्ध ४५, नवकादुत्सार्य द्विकाद्युपरिन्यस्ता सा एतावन्ते द्विकयोगाः उपरितना पञ्चचत्वारिंशत्तमा-

दिमेनाष्टकेन गुणयेत् जात ३६०, अष्टकादधोवर्ती त्रिकस्तेन भागे हूते लब्ध १२०, अष्टकमुत्सार्य न्यस्यते १२०, इत्येवमन्यत्राप्युपरित्वादिमत्वाधस्तनादिक स्वबुद्ध्या परिभाव्य सर्वं करणीय, अत्र च करणे द्विकादिसंयोगपरिसंख्यानमेवागच्छति, एककसंख्यानं क्वतो दृश्य, सामर्थ्यलब्धत्वात्तस्य वोच्छेददेशकस्य शेष परमेक सकल न्यस्यते, तदपेक्षया दशक आदिमस्तेन तद्गुण्यते जाता, १०, दशकाद्य एककस्तेन भागे हूते लब्ध १०, ते उपरिभागहारका न्यस्यन्ते, एवमन्यत्राप्येकोत्तर-बुद्ध्या बुध्यो पदसंख्याया अष्टपरमेक रूप सर्वत्र न्यसनीय तस्य च पूर्वप्रदर्शितप्रक्रियाविधाने कृते एगसंयोगे संख्यानं लभ्यते । अह्वा - तीसपयाणेणेत्यादि नवमालोचनासूत्रविषयाणामित्यर्थ, न केवलं दशपदेष्टेतेष्वपि करणमिति । उभयमुहं रासिदुर्गमित्यादिक पूर्ववदित्यर्थ, स्थापना कार्या एककादारभ्य एकोत्तरबुद्ध्या अकास्तावद् न्यसनीया यावत् त्रिशत्संख्य - स्थान, नवर त्रिशतोऽष्टे रूप न्यसनीय, त्रिशतोऽधस्तु एककादारभ्य तावद् नेय अका यावदुपरितनैककादारभ्य त्रिशक-तत उवरिल्ल आइमेण गुणिऊण इत्यादिक्रमेण कृते एककयोगा ३०, द्विकयोगा ४३५ इत्याद्यक-स्थानानि भवति, सर्वाणि त्रिशत्पदानां सूत्रसंख्यायाम् १०७३७४१८२३ । नवर - ज्येत्यादि एककादि-संयोगेन निष्पन्नान् आगतफलरूपान् त्रिशत् पचत्रिशदधिकचतु शताद्यान् भागहारकान् विन्यस्या-नुद्धातिमैककद्विकादिसंयोगफल त्रिशदादिक तैर्गुणयेत्, त्रिशतो त्रिशत्स्थानेष्वेकैकस्थानगत फलं गुणयेत्, एव त्रिकयोगादिकलेन च गुणयेत् तावद् यावत् त्रिशद्विगुणलेन त्रिशत्स्थानगत फलमिति । इमं निदरिसणं ति निदर्शनमेतत्, सामान्ये य (?) मिश्रसंयोगफलगुणनताया न तु त्रिशत्पदागतमिश्र-संयोगफलगुणनविषये तत्रोद्धातिमानामेककयोगा दशपचचत्वारिंशदादयश्च द्व्यादिसंयोगविषया, एते गुणकारा, एतेषु च गुणकारेण दशाप्यनुद्धातिमसंयोगफलान्येककबुद्ध्यादिसंयोगविषयाणि गुण्यन्ते, तत्र दशकेन दशादी यथाक्रमगुणे जात १०० । ४५० । १२०० । २१०० । २५२० । २१०० १२०० । ४५० । १०० । १० । एते उग्घाड्य चैककसंयोगैर्दशभिर्दश पणयाला इत्यादिकस्य गुणे सपन्ना, एकत्र मीलने जात १०३३० । अधुना उग्घातिमद्विकसंयोगैः पचचत्वारिंशत्सङ्ख्यैरनुद्धा-तिमानामेकबुद्ध्यादिसंयोगफलानि गुण्यन्ते । जात ४५० । २० । २५ । ५४०० । ६४५० । ११३४० ।

सेसा उवरिमुहुत्तति शेषाणि षट्कसतमाष्टमनवमसंयोगफलानि पाश्चात्यगत्या यथाक्रम पचचत्वारिंशता गुणितानि चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमसंयोगगुणितफलसंख्यानि भवति, दशकसंयोगे चैक-स्मिन् पचचत्वारिंशदेव एककेन गुणेन तदेवेति न्यायात् तदत्र पचकदशकसंयोगफल ११३८५, एतद्रूप पृथगुत्सार्य प्रथमसंयोगादिफलं चतुष्कं सम्मील्यते जात १७३२५, अस्य द्विगुणे ३४६५० । पचकाद्युत्सारितफलमीलने जात ४६०३५ । एवमुद्धातिमत्रिकयोगैः १२० एतावद्भिर्गुणेन दशानां जात १२०० । ५४०० । १४४०० । २५०० । एकत्र मीलने ४६२०० । द्विगुणे ६२४०० । पंचकसंयोगे ३०२४० । दशकयोगश्च १२० । एतद्रूपमुभयो पूर्वराशौ मीलने १२२७६० । उद्धा-तिमचतुष्कयोगफलेन २१० गुणेन दशादीनां जात २१०० । ६४५० । २५२०० । ४४१०० । तृणमिकत्र मीलने जात ८०८५० । द्विराहते १६१७०० । पचकयोगफल ५२६२० । दशकयोगफल १२१० । एतद्रूपमुभयो पूर्वराशौ प्रक्षेपे आगत २१४८३० । अनुद्धातिमपचकसंयोगफलान्यपि दशादीन्युद्धातिमपचकसंयोगफलेन २५२ । एतावद्वरूपेण गुणनीयानि, ततो जात २५२० । ११३४० । ५२६२० । ६३५०४ । अयं पचकयोगो विभिन्न उत्सारणीय । षष्ठसतमाष्टमनवमफलानि च यथाक्रम पचकसंयोगगुणितानि चतुर्थतृतीयद्वितीयप्रथमसंयोगगुणितफलसंख्या प्रपद्यन्ते, तत चतुष्कमीलने ६७०२० । द्विराहते जात १६४०४० । एतस्य मध्ये दशकयोगफल २५२ । पचयोगफल च ६३५०४ । एतद्रूपमिलितं तत पचकयोगसर्वाग्रमिदं २५७७६६ । अमुं विभिन्नमुत्सार्य एकद्विकत्रिकचतु-

ष्कसंयोगसर्वाग्रफलानि १०२३० । ४६०३५ । १२२७६० । २१४८३० । अमीपा मीलने जातं ३६३८५५ । पष्ठसतमाष्टमनवमसंयोगफलं सर्वाग्रमप्येतावदेवातो द्विगुणिते जातं ७८७७१० । पंचकसयोगफलोत्सारितराशे प्रक्षेपे जातं १०४५५०६ । एतच्च सख्यानमेककादीना नवान्ताना सयोगाना दशकसयोगफलानि च दशादीन्येककगुणानि तावन्त्येव मिलितानि च तानि १०२३ । अस्य च पूर्वराशौ प्रक्षेपे जातं १०४६५२६ । एतदेवाह — मीसगमुत्तसमास इत्यादि, एव कएसु त्ति दशसु पदेषु भगकरद्वारेण विस्तारितेषु यदि सा चेवेत्यादि आरोपणासूत्रदशकस्य यद्यप्यत्र सामस्येन पूर्वसूत्रातिदेशो दत्तस्तथाप्युच्चारण अर्थविशेषभंगकसख्यानादिक च प्रतीत्य स द्रष्टव्यो न पुन सर्वथा, तथा चारोपणासूत्रविषयेऽन्यदपि बहु वक्तव्यमस्ति । तथाहि प्रायश्चित्ते आरोपिते गुरुणा तदुद्धृत् आलापसभोगादिना परिह्रियते शेषसाधुभिरिति पारिहारिकत्व, तथा चारोपणा पचविधा भवतीति, तस्या स्वरूप तथा मासाइय पच्छित्तं बर्हतो ज अन्न अंतरा आवज्जइ मासादिकं तत्थ ज जम्मि दिवसगहणप्पमाण कज्जइ इत्यादिकमर्थ, जातमारोपणासूत्रविषय सर्वमित ऊर्ध्व सूत्रेण भाष्येण चूर्ण्यं च भणिष्यते । इयाणि सुत्तत्थानि ति पुच्छा इति शेष ।

दाणे द्वाणे० गाहा १ ॥ ( पृ० ३७६ चतुर्थ भाग )

उपह्रियति सस्तारकादेरुपदौकनेन अन्येनास्यादानमनुपहितविधि जत्तिय चेव भणइ करेइ व त्ति सतसु भगकेषु वक्तव्यव्यवस्थापितपदेषु च विधिर्भवति ततश्चाष्टमभगे सर्वजुत्वादनु-शास्त्यादीना त्रयाणा करणमेव सतसु च मध्ये यस्मिन् यावन्ति वक्राणि तावन्त सर्वे निषेधा. शेषाश्च तदव्यतिरिक्ता ये ऋजवस्तेषु यदाचार्य उपग्रहादिक कुरुते तृतीयादिषूपलभादिक यद्भणति-तत् सर्वं मुत्कलमिति सूचित इत्थं गमनिकामात्रमिदमन्यथा वाऽभ्यूह्य आवकप्पे इत्यादि अपवादपदे छद्दिणज्जोसो कज्जइ इति भाव पूर्वश्च अन्यापेक्षया आद्यश्च अहवेत्यादि अत्र पक्षे पूर्वस्मिन्नाद्ये सति अनु-पश्चादभावी अनुपूर्वद्विकः तत. पूर्व आद्यत्रिकापेक्षया अनुपूर्वी द्विको यस्या परिपाटया ता सार्वानुपूर्वीति विग्रह, यद्वा पूर्वस्मिन् अनु-पूर्व. तत. स एवेति पूर्वक एव स मास कार्यं, यथा पूर्वस्याद्यस्य त्रिकापेक्षया द्विकस्यानुपूर्वद्विको यस्यामिति विग्रह, मत्वर्थीयो वा इन्, नवर तदाक्रम इति इत्थं पुव्वपच्छुत्थरणविकप्पेण चउभंगो कायव्वो त्ति ।

पुव्व पडिसेविय पुव्वं आलोइयं । पुव्व पडिसेवियं पच्छा आलोइय ।

पच्छा पडिसेविय पुव्व आलोइय । पच्छा पडिसेवियं पच्छा आलोइय ।

वितियततियभंगा मायाविणो नरस्स हुंति मायासदभावं च स्वत एवाग्रे भावयिष्यति किमर्थं पुनरसौ प्रथमत एवानुज्ञा याचते यावता यत्रासौ यास्यति स्थास्यति वा तत्रैवासावनुज्ञां लप्स्यते इत्याह — एव तत्थ गीयत्था संभवाउ त्ति तृतीयभंगशून्य इति तथा ह्याचार्यसदभावे सति यथा प्रथमालोचते तथा विकृत्यादिकं गृहीत्वा गत सन् पश्चादपि तदन्तिके आलोचिते मायारहितश्च पश्चात् प्रतिसेवते इति शून्यता, पश्चादप्यालोचनसम्भवात् पूर्वमेवालोचते इत्यवधारणपरस्य पदस्याघटनात्, अप्पलिउचि वा भावे त्ति मायारहितत्वसदभावे इत्यर्थ, द्वितीयतृतीयौ च मायासदभावे स्त, भावशब्दात् पाश्चात्यान्त्यवर्णस्य दीर्घता वाक्यद्वयेऽपि प्राकृतत्वात् ।

अपलिउचिअ अपलिउचिय, अपलिउचिअ पलिउचिय, ।

पलिउचिअ अपलिउचिय, पलिउचिय पलिउचिय चतुर्थभंगः ।

## अपलिउंच० गाहा ॥६६२४॥

भाष्ये यद्यप्यपलिउंचणमिति नोक्त तथापि पलिउचण माया, तन्निपेधपरो निर्देशो द्रष्टव्य, सूत्रे ग्रकारयुक्तपदसद्भावादित्याह, पलिउचणमित्यय प्रतिपेधदर्शनादिति, पलिमत्ताए निउत्त त्ति गोभत्ते नियोजिता क्वचित् सूत्रादर्शो आदिचरिमावेव भगौ निर्दिष्टौ, द्वितीयवृतीयौ चार्थलभ्याविति, यदुक्त प्राक् चूर्णौ, तदधुना सूत्रकार स्पष्टीकुर्वन्नाह - अपलिउचिय इत्यादि, अस्यार्थ इति त असणादिग्राहणेति त सामाचारीभासणाभिग्राहेणातिवामत प्रायश्चित्त भवतीति विशेषयति तथाह्यासन गुरोर्नीचमात्सीयासनसम वा यदि ददाति तदा सामाचार्युल्लघनमेव कृत भवति, एवमित्यादि, वृषभशब्देनेहोपाध्यायो ग्राह्यो, भिक्षुश्च सामान्ययतिरेव, आलोचनाहं इति शेषः । नवर - कोल्हुगाणुगे विशेष इत्यादि आलोचकस्य कोल्हुगाणुगस्याचार्यादिरालोचनाग्रहणकाले आसन प्रतीत्य विशेषो भवति, निपद्या चेहौपग्रहिक्की पादप्रौछनकल्पैव दृश्या, तत्र कोल्हुगाणुगो कोल्हुगाणुगसमीवे उक्कुडुग्रो आलोइतो सुद्धो, पायपु छणणिसिज्जोवविट्ठो पुण आलोएतो असुद्धो, सीहवसभाणुग वाऽऽलोचनाहं प्रतीत्य सो निपद्यापायपु छणोवविट्ठो वि सुद्धो इत्येपा भजना । अथ सिंहाणुगतम् वृषभस्य, सिंहाणुगत्वं वृषभाणुगत्वे भिक्षुश्च कथं घटते अनुचितत्वात् ? इति चेद्, उच्यते, आलोचकेन ह्याचार्येणापि निपद्यादिविनयप्रतिपत्तिं कृत्वैवालोजना ग्राह्या नान्यथेति, भिक्षुवृषभयोरपि सिंहाणुगत्वादिव्यपदेशस्तत्काल प्रतीत्य सगच्छते । अत एवाह - जो होइ सो होउ इत्यादि सिंहाणुगत्वादिका च पारिभाषिकी सज्ञा, वसभस्स वसभाणुगस्स त्ति एक कप्पे उवट्ठितस्येत्यर्थः । भिक्खुस्स कोल्हुगाणुगस्स त्ति पायपु छणे उवविट्ठस्स भिक्षुपादनिपद्यात्वासनग्रहेण द्वाभ्या तप कालाभ्या प्रायश्चित्त गुरुक भवति ।

## दोहि वि० गाहा ॥६६३१॥

एतस्या पूर्वार्धमाचार्यं प्रतीत्य सुगमम् । उत्तरार्धव्याख्यामाह - वसभाणवीत्यादिना । अथ दोहि वीत्यादिगाथाया वृषभमालोचनाहं प्रतीत्य प्रायश्चित्तनिरूपणपरताया भणिताया प्राग् अपर यथा द्वय भाष्ये दृश्यते तत् किमिति नामग्राह न व्याख्यात - यावता तत्परिहारेण दोहि वीत्यादिगाथैव निर्दिष्टा ।

उच्यते - क्वचिद् भाष्ये गाथाद्वय भवति क्वचिच्च नेति ततश्च यत्र तन्न भवति तत्प्रतीत्य तदर्थो मुक्तल एव चूर्णिकृता स्वतन्त्रतया कथित तमभिधाय दोहि वीत्यादि भाष्यदृष्टा गाथापत्तौ यत्र च तदभवति तत्र पाठान्तरत्वान्नामग्राह ता गाथा गृहीत्वा विवरीपुरिदमाह, क्वचित् पाठान्तर एवमेव य गाहेत्यादि, तच्चेद -

एमेव य वसभस्स वि आयरियाईसु नवसु ठाणेसु ।

नवरं पुण चउलहुगा, तस्साई चउलहु अंते ॥६६३२॥

उत्तरार्धव्याख्या यथा - तस्य सिंहाणुगवृषभस्यालोचनाहंस्यालोचके आलोचके आदिभूते सिंहाणुगे आयरिए ४, वसभाणुगवसभस्स मध्यमस्थाने सिंहाणुगपदभूते आचार्ये ४, कोल्हुगाणु-वसभस्स अन्त्यस्थाने आदिभूता सिंहाणुगा आचार्यं ६, द्वितीयागाथा, यथा -

लहु लहुओ सुद्धो, गुरु लहुगो य अंतिमो सुद्धो ।

छल्लहु चउलहु लहुओ, वसभस्स उ नवसु ठाणेसु ॥६६३३॥

भिक्षुमप्यालोचनाहं प्रतीत्य -

एमेव य भिक्खुस्स वि, आलोएंतस्स नवसु ठाणेषु ।

चउगुरुगा पुण आई, छगुरुगा तस्स अंतम्मि ॥६६३४॥

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थम् -

एमेव य भिक्खुस्स वि, आलोईतस्स नवसु ठाणेषु ।

चउगुरुगा पुण आई, छगुरुगा तस्स अंतम्मि ॥६६३५॥

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थमेव मुत्कल चूर्णिकृत् कथितवान्, क्वचित् पुस्तकेऽस्या दर्शनात्, अत एव पाठान्तरत्वेन एतामपि गृहीत्वा व्याख्यातवान् । एव विभागो एवकासीत्यादि, सीहाणुग आयरिय पडुच्च आलोयणागाही आयरिओ तिहा - सी० व० को० ३ ।

वसभाणुग सूरि पडुच्च आयरिओ आलोयगो तिहा - सी० व० को० ३ ।

कोल्हुगाणुग पडुच्च सूरि आलोयणा आयरिओ तिहा सी० व० को० ३ सर्वे ६ । आयरिय आलोचनाहं प्रतीत्य आलोचकवृषभोऽपीत्य नवविधो वाच्यः, ततो भिक्षुरप्येव नवविधो वाच्यः । प्रत्येका सतविशतिर्नवरमाचार्यस्यालोचकस्य प्रायश्चित्त उभयगुरु, वृषभस्यालोचकस्य तपोगुरु, भिक्षोरालोचकस्य कालगुर्विति वाच्यम् । एव वृषभो आलोयणाहं-स्त्रिधा सी० व० को० । एतदधो आलोचनागाही सूरि पूर्ववद् नवधा वाच्यः, वृषभोऽप्यालोचना-गाही नवधा वाच्यः, भिक्षुरपि नवविध इति द्वितीया सतविशतिः, तृतीया तु भिक्षुमालोचनाहं प्रतीत्य आचार्यवृषभभिक्षूणा नव नव पदैः सतविशतिरिति ।

जे त्ति य साहु त्ति जे इति निर्देशः साधुमुच्यते । जाणि य तेरसपयाणि एसा पारचियवज्जिय त्ति पारचिकमेकवारैव दीयते इति तस्यैकविधत्वात् तद्वर्जनं, शेषपदानि वाश्चित्यानेकविधा प्रस्थापना भवति, तेषामनेकवार प्रदानात् । त कसिण त्ति तत् सर्वमारोप्यते । अणुगहेण वि त्ति तत्पाणुगह छण्ह मासाणमारोवियाण छद्विंसा गया, ताहे ग्रन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे ज जेण अद्धवूढ त भोसिज्जइ, ज पच्छा आवन्न छम्मासिय त वहति, एत्थ पचमासा चउवीस च दिवसा जेण भोसिया एय अणुगहकसिण, णिरणुगहेण व त्ति जहा छम्मासिए पडुविए पंचमासा चतुवीस च दिवसा वूढा ताहे ग्रन्नं छम्मासिय आवन्नो तं वहइ, पुव्विल्लस्स छदिणा भोसो ।

मानान्मान्मास इत्यस्य वाक्यस्यान्वर्थमाह - अत्यानीत्यादिना (?) इह श्रुत्यातावित्यस्य निपातान्मास इति, असतीति वाक्यं चूर्णवाक्यत्वात्, यद्वा भौवादिकोऽस गत्यर्थोऽप्यनेकार्थत्वात् व्याप्यर्थस्तस्येदं रूपमिति, मानाद्वेति स्वमानेन द्रव्यादीन् प्राप्नोतीति मासः, तथाहि मासस्त्रिष्वन् द्रव्य मासिकमुच्यते, इति स्वमानेन द्रव्यप्राप्तिः, क्षेत्रे च तास्थ्यात् तद्व्यपदेशो द्रष्टव्यः । परिहार्यत इति चूर्णित्वात्, वाक्यं तु - परिहृत्यत इति ज्ञेयः, निष्पत्त्यन्मित्रिति तपोविशेषे इति - स्थान आदिकर्मण्य च उदीरणचेत्यादि द्वन्द्वः, ग्रन्त आद्यन्तरूप राति गृण्हातीति अनन्तर मध्यमुक्त, प्रतिदानयोः प्रतिसन्निधानयोरिति नावबुध्यते मूलगुणादेः प्रनिसेवनोच्यते, आङ्मर्यादयाऽशुद्धनिजाभिप्रायप्रकटनं सन्दर्शनम् आलोचनम् । प्ररज्यते तमसा व्याप्यते या सा रात्रि निपातनात्, रज्यते वा स्त्र्यादौ प्राण्य-

स्यामिति रात्रि', रात्रिशब्दस्य राग प्रवृत्तिनिमित्त, रागश्च दिवसोऽपि भवतीति रात्रिशब्दोपादानेन तदपि ग्राह्यम्, उभयोऽपीति दिने रात्रौ च इह छम्मासिय परिहारद्वारा पटुविए - अतरा दो मासा पडि वीसइराइया आरोवणा इत्येक वाक्यम् । द्वितीय च आइ मज्जे अवसाणे य सट्ट इत्यादि तावद् यावत् सवीसतिराइया दो मास त्ति तत आदिवाक्येन सामान्यत विशत्यारोपणाऽऽरोप्यते विशेषतश्च प्रायश्चित्तनिमित्तकवस्तुनो विवक्षायामनूनातिरिक्तमारोप्यते यदि तदा द्वौ मासौ विशतिरात्रिन्दिवाभ्याधिकावारोप्यौ, प्रथमासेवनाया तदुपरि वा सेवने त्रिशतिवृद्धिरेव प्रतिपदं कार्यं इति । प्रतिसूत्र सामान्यारोपणा च प्रथमासेवनवारा प्रतीत्य द्रष्टव्या ।

तेण मूल वत्थुणा सहेत्यादि यस्मिन् शय्यातरपिडादावाहतादिदोपदुष्टे द्विमासिकापत्तिस्तन्मूल वस्तु, तथाचोक्त प्राक् सागारियपिडाहडे दोमासिय ति प्रायश्चित्तनिमित्तक वस्तुद्विस्वान्यूनातिरिक्तद्वे नारोपणयो परमाण भवतीत्यस्यैवार्थमाह - न ग्रावत्तिमाणमित्यादि, आपत्तिर्मासिकद्वयरूपतादरूप मान न ।

कोऽर्थ ? मासिकद्वय शुद्ध, न केवला विशत्यारोपणा, किन्तु परमन्यदेवारोप्यते, विशत्यधिकमासद्वयमित्यर्थ । अहुवा - इमो अन्नो वि आदेशो इत्यादि अत्र व्याख्यानेन प्रायश्चित्तनिष्पत्तिकारण वस्तुच्यतेऽर्थशब्देन किन्त्वर्थ प्रयोजन तच्चात्मन परस्य वा वैयावृत्यादिकरणरूप तस्मिन् हि क्रियमाणे न प्रायश्चित्ततप उद्धेदु शक्यते, अत उभयतरगादिक कारण प्रतीत्य प्रथमवारासेवने विशत्यारोपणान्यूनातिरिक्ता रोपणीया, एषा च ठवियगा कज्जइ ।

उभयतरागादिगो त्ति काउ पुणो पडिसेविए शठ इति कृत्वा मासद्वय दीयते, पाश्चात्यया विशत्यया युक्त एगम्मि प्रायश्चित्ते बुज्झमाणे अतरा अन्नमावज्जइ, त मज्झवत्तिथ ठविय कज्जइ ति काउ ठवियसन्न लभइ तत्प्रतिपादका सुत्ता ठवियसुत्ता, त पिय बुज्झमाणे पटुवियसन्न पि लभइ, एव च बुज्झमाणपच्छित्तवत्तव्वयाभिहाइणो सुत्ता पटुवियसुत्ता भन्नति, अतरा आवन्नाण तेसि चेव बुज्झमाणवत्तव्वया प्रतिपादनपरा सुत्ता ठवियसुत्ता । सवीसतिराइया दोमासिय परिहारद्वाराणमित्यारभ्य ठवियसुत्ता तावत् यावद् दसरायपचमासिय परिहारद्वाराण पटुविए अणगारे जाव तेण पर छम्मासा इत्येतदतम् । एतावता च पण्मासिए पटुविए द्विमासापत्तिलक्षणसूत्रमाश्रित्य ठवियसूत्राण्युक्तानि, इत ऊर्ध्वं शेपमासविपये चूणिस्सूत्राणि वाच्यानि, तान्येव भणितुमुपक्रमते ।

इयाणि अत्थवसयो इत्यादिना, एतानि वाच्यत्वादियाणि मासियसजोगसुत्ता लक्षणपत्तेत्यादिवाक्यमिति स्थापनासूत्रादर्शसूत्रसत्कार्यत अत्र च षण्मासिकादिपदमध्ये चूर्णो द्विमासिकपद न भवति । षण्मासिक प्रस्थापित प्रतीत्य द्विमासिकस्य सूत्रैवाभिहितत्वात्, सव्वाग्रो लक्खणाग्रो पत्ताग्रो त्ति सर्वा सयोगसूत्रजातयो लक्षणात् प्राप्ता सामर्थ्याल्लब्धा इत्यर्थ । षण्मासिके प्रस्थापिते द्विमासिकलक्षणसूत्रोक्तद्विकस्थानव्यतिरिक्ता त्रिकादिसयोगा अन्त्या आद्याश्च द्विकान्यास्यान्त्या एकरूपा, तथा एसि पि मव्वासि ति एतासा मासिकादिषण्मासान्ताना सर्वासा सूत्रजातीना स्थापना १ २ ३ ४ ५ ६

१ २ ३ ४ ५ ६

१५, २०, २५, ३०, ३५, ४० ।

आद्य प्रस्थापितपत्ति, द्वितीया आपत्तिपत्ति, तृतीया आरोपणापत्ति । मासिए पटुविए चाउम्मासिए पडिसेविए तीसइमा आरोवणा से अद्दा दिज्जमागा मासचउक्क तीसारोवणाथ मिलिय पचमासा भवति । एतदेव ठविया सुत्तमित्थ पदे भवति । एय ठवियसुत्त पटुवणासुत्त किच्चा भणइ - पचमासियमित्यादि, तेण पर पचूणा चत्तारि मास त्ति जगो आरोवणा पणुवीसिया

सट्टा दिज्जमाणा चत्तारि मासा तहाहि सट्टी इत्यादिन्यायेन मासा ३ आरोवणा २५ पंचदिणा हीणचत्तारिमासा ।

इयाणि मासियं सजोगे सुत्तेत्यादि सूत्रादर्शसूत्राणि छम्मासिय परिहारट्ठाणं पट्टविए अतरा मासिय परिहारट्ठाण सेवित्ता इत्याद्यारभ्य तावद् यावद् अट्ट मासिय जाव तेण पर छम्मासा इत्येतदन्तानि वाच्यानि, एतान्येव चूर्णिकारो व्यलीलिखत् पट्टविया सुत्तं त्ति एतानि प्रदर्शितरूपाणि प्रस्थापितसूत्राण गतानि । अधुना पट्टवियसुत्तेसु जे ठवियसुत्ता आसी ते भन्नति- दिवड्डुमासियमित्यादि, अत्र क्वचित् ठवियसुत्ता इति पाठ क्वचिन् पट्टवियसुत्तं त्ति, तत्राय उत्तरसूत्रपातनाक्षेया योज्य, यत्र त्वितरसूत्रपाश्चात्यनिगमनतायती एव छम्मासाइपट्टविए इत्यादिक पण्मासान्ते यथाक्रम ॥१५॥२०॥२५॥३०॥३५॥४०॥ इत्येवरूपा विकला स्थापिता सती स्वस्थानवृद्ध्या पण्मासावसाना यका भवति, सो उक्केति तथाहि पण्मासे प्रस्थापिते यदारोपणा पाक्षिकी आरोप्यमाण सट्ट इत्यादि न्यायेन दिवड्डो मासो आरोविज्जइ, इतीय विकला परिपूर्ण-मासानामभावात् यद्यपर पक्ष स्यात् तदा परिपूर्णमासद्वय किल भवे, स च नास्त्यतो विकलत्व तथा स्थापिता चेय, तथाहि जो सो दिवड्डो मासो ठवियपट्टविओ यश्च मास प्रतिसेवितः जाया दो मासा । दोमासिए पट्टविए पुणो वि मासिय सेवइ, इत्येव पाक्षिक्यारोपणेन तावद्वाच्य यावदपरे पण्मासा पूर्यन्ते इति स्वस्थानेन मासिकलक्षणेन वृद्धिरिति । यद्यपीहापरा मासासेवनेन द्विमासादि विजातीय जायते तथाप्येकदोषदुष्ट मासिकयोग्य किञ्चिदासेवित येन मास एव भवति, ननु दोषद्वयदुष्ट सेवित शय्यातरपिड सोऽप्यादृतदोषदुष्ट इति, येन युगपदेव स मासिकद्वयमा-पद्यते ततो मासस्य प्रस्थापितत्वाद् मासस्यैव च सेवनात् स्वस्थानवृद्धित्वणापरापरमासेवनेन प्रायश्चित्तवृद्ध्या पण्मासावसाना वृद्धिरुक्ता, अधुना तु परिपूर्णमासाना प्रस्थापनद्वारेण रोपणा स्वस्थानवृद्ध्या परस्थानवृद्ध्या सा प्रोच्यते विकलमासप्रस्थापनाकृत सकलमासप्रस्थापनकृतश्च पातनिकाया विशेष, तत्र मासे प्रस्थापिते परमासाना प्रतिसेवने पक्ष पक्ष आरोपणेन यत्र षण्मासा पूर्यन्ते सा स्वस्थाने वृद्धि । एव द्विमासादिष्वपि योज्यम् । यथा मासिके प्रस्थापिते द्विमासिके वा सेविते विगत्यारोपणेन यत्र षण्मासा पूर्यन्ते सा परस्थाने वृद्धि । एव त्रिमासा दिसेवनेन पण्मासे पूरणमपि परस्थानवृद्धि ।

मासियठविए इत्यादि प्रायश्चित्तमवहृत सत स्वतन्त्र एव शय्यातरपिडादिपरिभोगतो यो मास आपन्न स वैयावृत्त्यकरणादौ साधोर्व्यापृतत्वात् स्थाप्यः कृत आसीत् । तत कार्ये समर्थिते मास उद्वोढुमारब्ध इति स्थापितत्व, एव दोमासियामु वि पट्टविएसु त्ति दोमासिए ठवियपट्टविए दोमासियं पडिसेवइ इत्येव तावद्वाच्य बीयारोवणा तेण पर सवीसइराइया दो मासा सवीस-इरायदोमासिए ठवियपट्टविए दोमासिय बीसियारोवणा इत्येव तावद्वाच्य यावत् षण्मासा इति स्वस्थानवृद्धि ।

दोमासिए पट्टविए तेमासिए पडिसेविए पणुवीसारोवणा दोमासा । पणुवीसतिराय-दोमासिए पट्टविए तेमासिए पडिसेविए पणुवीसारोवणा, तेण पर पणुवीसतिराया दोमासिय पट्टविए तेमासिए सेविए पणुवीसारोवणा, इत्येवं तावद् यावत् पण्मासा इति परस्थानवृद्धि ।

इयाणि दुगसजोगे इत्यादि मासे प्रस्थापिते मास द्विमासयो. सेवनेन षण्मासपूरण विधीयते, एवं मासे प्रस्थापिते मासियतेमासियप्रतिसेवनेनद्विकयोगे षण्मासा : पूरयितव्या इत्येवमन्येष्वपि । कारण त चेवत्यादि छम्मासाइरित्तो तवो न दिज्जइ इत्येव रूप । ताहेत्यादि

दुविह त्ति सट्ठाणपरट्ठाणे हिट्ठे विध्यमित्यर्थः । एव एयस्स वीत्यादि एतस्यापि द्वौ मासिकस्य प्रस्था-  
पितस्य सर्वे द्विकसयोगादयः सयोगा वाच्या, यथा मासद्विमासरूपो द्विकयोगस्तथा मासादिरूपो  
पि वाच्यः, अत्र स्थाने निगोथसूत्रं सर्वं समर्थितम् ।

इत ऊर्ध्वं शे चूर्णिकारो भाष्यकारश्च भणियति । एव तेमासिएत्यादि मासद्विमासा  
दिप्रतिसेवनरूपो द्विकयोगः, मासद्विमासत्रिमासादिरूपस्त्रिकादियोगः, अत्र च यद्यप्येककयोगा ६,  
द्विकयोगा. २०, चतुष्कयोगा १५ पचकयोगा ६, षड्योगश्चैकस्तथापि मासिक एव स्थापिते  
द्विमासिके वा प्रस्थापिते सर्वे ते सगच्छन्ते । त्रैमासिके प्रस्थापिते द्विकयोगात्रिकयोगचतुष्कयोगा  
एव भवन्ति, न परतः पण्मासानामाधिक्यात्, तथाहि - चाउम्मासिए ठवियपट्ठविए मासिए  
पडिसेविए पक्खिया आरोपणा, तेण पर अट्ठपचममासा अट्ठपचममासेसु पट्ठविएसु दोमा  
सिए सेविए वीसियारोवणा, तेण पर सपचराया पचमासा तेसु पट्ठविएसु तेमासिए सेविए  
पणुवीसारोवणा, तेण पर छम्मासा, इत्येव त्रिकयोगमेव यावच्चानुर्मासिकप्रस्थापनानि सगच्छन्ते,  
तदूर्ध्वं चतुष्कयोगानाश्रित्य चतुर्माससेवने आरोपणयास्तत्र त्रिगदरूपत्वात् सप्तमासा जायन्ते,  
पण्मासाधिक्यात् । अत्र चूर्णौ चातुर्मासिकपचमासिकपदे आश्रित्यैककादयः पट्कपर्यवसाना ये अका  
निदिष्टास्ते न सयोगसख्याकथनपरतया किन्तु सयोगोच्चारणार्थं स्थापनामात्रतया दक्षिता ।  
एवमट्ठकानूर्ध्वमवश्च व्यवस्थाप्य द्विकादयः सयोगाश्चार्यन्ते, सयोगसख्यानं तु यत्र पदे यावत्  
तत्प्रदर्शितरूपमेव द्रष्टव्यमित्येव गमनिकामात्रमुक्तं, तत्र तु बहुश्रुता विदन्ति । एव दोतीत्यादि  
इह पण्मासपदनिर्देशे सर्वत्र कारणं पण्मासाविकृतपोऽभावरूपं द्रष्टव्यम् । एयासम्मीत्यादि,  
पढममुत्तस्स त्ति आरोपणासूत्रदशकविस्तरस्य प्रस्तुतत्वात् प्रथमं प्रत्येकसूत्रमारोपणाविषयं तद्विषयं  
सर्वमेतद् द्रष्टव्यम् । द्वितीयं बहुसूत्रं तत्रापि सर्वमिदं द्रष्टव्यं बहुसाभिलाषेन । नवर - ठवणं त्ति  
छम्मासिए पट्ठविए इत्येव निर्देशरूपं ठवणाठाणं मासियं पडिसेवित्ता आलोएज्जा इत्येव निर्देशस्व-  
रूपं पडिसेवणाठाणं कसिणसुत्ते सगले सुत्ते इत्यर्थः । मासियं ठवियपट्ठविए अतरा बहुसो मासियं  
पडिसेवइ इत्यादिकानि ठवियपट्ठवियमुत्ताणि एतेषु द्विकसयोगात्रिकसयोगादयः सयोगा बहुसूत्रे-  
ष्वपि द्रष्टव्या इत्यर्थः । जिणाइयं त्ति जिनकल्पिकादयः हुसियं च त्ति आपत्ताल्लघुतरं । पुणो इयर  
त्ति उत्तरार्धं व्याख्येयम् । ते चेव त्ति ते पुनरित्यर्थः तहारिहं त्ति भाष्यपदान्तस्य व्याख्यातेहि  
आयरिया योगा वूढं त्ति तथा तथा चरिता इत्यर्थः । सावेक्खपुरिमाणं भेदकरणं तत्र तत्थ निर-  
विकखे पारचिए इत्यादि निरपेक्षः - जिनकल्पिकादिस्तस्य पारचिकमापन्नस्यापि पारचिकं न  
दीयते, गच्छनिर्गतत्वादेव, तेषां गच्छान्निष्कासनादिकरणरूपं हि किल पारचिकं भवति, द्वयोः  
प्रायश्चित्तयोर्मध्याद् यत्रैकमग्रेतनपदे याति सार्वेऽपक्रान्तिरुच्यते, अर्धस्यापक्रमणमुत्तरत्र गमनं  
यत्रेति कृत्वा, एव अणवट्ठे वीत्यादि अणवट्ठावत्तीए अणवट्ठो कज्जइ, मूलं वा दीयते, इत्येव-  
मादेशद्वयम् । अतरा बहु त्ति अनवस्थाप्यकरणपक्षे भिक्षोरगीतार्थेऽस्थिरे प्रकृतकरणे इत्येव-  
रूपेऽन्त्यपदे चतुर्लघुर्भवति । मूलदानपक्षे द्वितीयेऽन्त्यपदे मासगुरुर्भवति । इत्थं वि त्ति अनवस्था  
प्रापत्तौ मूलापत्तौ आचार्यादिकं प्रतीत्य मूलं वा दीयते, छेदो वा क्रियते, इत्युत्तरत्र वक्ष्यति -

सञ्चेसिं० गाहा ॥

भाष्यकारेण मूलप्रायश्चित्तमादौ यदुक्तं तत्र सर्वेषां जिनकल्पिनादीनामाचार्यादीनां  
च मूलापत्तौ मूलं दीयते एव इत्येवमाश्रित्योक्तम्, पारचिकानवस्थाप्ये च सापेक्षानामेव  
जिनकल्पिकादेरपीति तच्चिन्ता चूर्णिकृताऽभिहिता, अत्र यन्त्रकमुत्तिष्ठते, यथा जिनकल्पिया  
आयरिओ कयकरणो २, अक. कर ३, उव कय ८, अकय ५, भिक्खु गोओ थिरो कय ६ । भि,



गी. थि. ङक. ७।भि. गी. थि. ङकय. ८।भि. गी. ङथि. कय. ९।भि. ङगी. थि. ङकय. १०।भि. गी. ङथि. ङक. ११।भि. ङगी. ङथि. क. १२। एतेषु यथाक्रम पारचिकापत्तौ प्रायश्चित्तम् ।

द्वितीयपत्तौ निरूप्यते यथा शून्य - ०। पार.। अण.। अण। मू.। मू। । । ६।६।६।६।धी।

तृतीयपत्तौ पारचिकापत्तावाप्यादेशान्तरेणेत्य, यथा-शून्य अण.। मूल। मू। । । दी। दी।६।६।धी।धी।व्व।

चतुर्थपत्तौ सर्वेषा मूलापत्तौ यथाक्रम मू.।मू.। । । दी।दी।६।६।धी।धी।व्व।व्व।०।

पचमपत्तौ सर्वेषा छेदापत्तौ छे।छे.।दी।दी।६।६।धी।धी।व्व।व्व।०।०।०।

षष्ठपत्तौ दी।दी।६।६।धी।धी।व्व।व्व।०।०।०।२५।

सप्तमपत्तौ ६।६।धी।धी।४।व्व।०।०।०।०।२५।२५।२५।

अष्टमपत्तौ धी।धी।व्व।व्व।०।०।०।०।२५।२५।२५।२०।२०।

नवमपत्तौ।व्व।व्व।०।०।०।०।२५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।

दशमपत्तौ०।०।०।०।२५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।

एकादशपत्तौ०।०२५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।१५।

द्वादशपत्तौ २५।२५।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।१५।१५।१५।

त्रयोदशपत्तौ।२५।२५।२०।२०।२०।२०।१५।१५।१५।१५।१०।१०।

चतुर्दशपत्तौ २०।२०।२०।२०।१५।१५।१५।१५।१०।१०।१०।१०।

पचदशपत्तौ २०।२०।१५।१५।१५।१५।१०।१०।५।५।५।

षोडशपत्तौ १५।१५।१५।१५।१०।१०।१०।१०।५।५।५।५।दशमं।

सप्तदशपत्तौ १५।१५।१०।१०।१०।१०।५।५।५।५।दशम।दशम।अट्टम।

अष्टादशपत्तौ।१०।१०।१०।१०।५।५।५।५।दशम।दशम।अट्टम।अट्टम।छट्ठ।

एकोनविंशतिपत्तौ।१०।१०।५।५।५।५।दशम।दशम।दशम।अट्टम।छट्ठ।छट्ठ।छट्ठ।चउत्थ।

विंशतिपत्तौ।५।५।५।५।दशम।दशम।अट्टम।अट्टम।छट्ठ।छट्ठ।चउत्थ।चउत्थ।अविला।

एकविंशतितमपत्तौ । ५ । ५ । दशम । दशम । अट्ट । अट्ट । छट्ट । छट्ट । चउ । चउ ।  
अंवि । अंवि । एकासणा ।

द्वाविंशतितमपत्तौ । दशम । दशम । अट्ट । अट्ट । छ । छ । चउ । चउ । आयाम ।  
आयाम । एगा० । एगा० । पुरिम० ।

त्रयोविंशतितमपत्तौ अट्ट । अट्ट । छ । छ । च । च । आया० । आया । एगा ।  
एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति । एत्थ एक्केत्यादि चरिम पारचिक द्वितीयपक्त्यादौ निर्दिष्ट  
तस्मादारभ्य तृतीयादिप्रायश्चित्तपत्तिक्रमेण तावन्नयन्ति यावत् पञ्चदशीकपत्तिरिति षोडशाद्या  
पत्तौ नेच्छन्ति, अन्ये तु पञ्चकादुपर्यपि दशमादिष्वपि पदेष्ववस्थान मन्यन्ते ।

चतुर्विंशत्यादिकापत्तीराश्रित्य यन्त्रक यथा छ । छ । चउ । चउ । आया । आया ।  
एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति ।

पञ्चविंशतितमपत्तौ चउ । चउ । आ । आ । एगा । आ । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीयति ।

षड्विंशतितमपत्तौ आ । आ । एगा । एगा । पुरि । पुरि० निव्वी० ।

सप्तविंशतिपत्तौ एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वी ।

अष्टाविंशतिपत्तौ पुरि । पुरि । निव्वी ।

एकोनविंशतपत्तौ निर्विकृतकमादिपद एव ।

## पदमस्स० गाहा ॥

जिनकालिकस्य पारचिकापत्तौ मूलापत्तौ वा मूलमेवेत्यर्थ । आचार्यादिस्तु मूलापत्तौ मूल  
वा दीयते छेदो वा विधीयते इत्ययं विकल्पः । जे सेसे त्ति अस्थिरा कृतकरणा दोन्नि अकयकरणत्ती-  
त्यादि सप्तमाष्टमनवमा दशमपदविहारेण एकादशद्वादशत्रयोदशपदवाच्याश्च ये तेपामित्यर्थ,  
द्विकाद्यन्तरितं बहुं तरित चेत्यर्थ । अजयण करेतस्सावणाय त्ति तत्राचार्यस्य ४, उपाधाय व्व भि.  
थिराथिरो न कज्जइ त्ति गीतार्थस्य स्थिरस्यैव भावादित्यर्थ । आयरिय कय १, अकय. २, ठव क ३,  
अकय. व्व, ४ भिक्खु गीओ कय ५, भिक्खु गी अक. ६, भि. गी. थि कय ७, भि. अगी.  
थि. ङ्क. ८, भिङ्गी ङ्थि. क. ९, भि गी. ङ्थि क. १०, एतेषु दशसु पदेषु प्रायश्चित्त  
यथा आयरिए कयकरणे पञ्चराइदिय आवन्ने त चेव ५, अकृतकरणादिषु द्वितीयादिषु यथाक्रम  
अभत्तट्ठो २ । अ ३, अवि व्व. अवि. ५, एगासणा ६, एगा. ७, पुरि ८, पुरि. ९, अत्रे निव्वीय १० ।

द्वितीय प्रायश्चित्तपत्तौ यथाक्रम दसराइदिएसु आढत्त १० । ५ । ५ । अभ व्व अभ.  
५ । अ. ६ । अ. ६ । अ. ७ । एगा ८, एगा ९ । पुरि १० ।

तृतीयपत्तौ पञ्चदशसु आढत्त १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ. । अभ । अ । अ ।  
१ का. ॥ १० ॥

चतुर्थपत्तौ यथाक्रम २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । अभ । अवि ॥ १० ॥

पञ्चमपत्तौ २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । १० ।

षष्ठपत्तौ मासलहुगाओ आढत्त ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० ।

सप्तमपत्तौ द्विमासिकादारद्ध ० । ० । ० । ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ ।

१५ । १० ।

अष्टमपत्तौ त्रिमासिकादारद्ध ०० । ०० । ० । ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ ।  
 नवमपत्तौ चतुर्मासिकादारद्ध ० ० । तेमा० । तेमा० । दोमा० । दोमा० । ० । ० । २५ । २५ ।  
 दशमपत्तौ लघुपंचमादारद्ध १५ । व्व । व्व । ३ । ३ । २ । २ । ० । ० । २५ ।  
 एकादशपत्तौ ६ । ६ । ५ । व्व । व्व । ३ । ३ । २ । २ । ० ।  
 द्वादशपत्तौ छेद ६ । ६ । ५ । ५ । व्व । व्व । ३ । ३ । २ ।  
 त्रयोदशपत्तौ मूलाग्रो आढत्त मू० । छे० । छे० । ६ । ६ । ५ । ५ । व्व । व्व । ३ ।  
 चतुर्दशपत्तौ अणवट्टाग्रो आढत्त अण० । मू० । मू० । छे० । छे० । ६ । ६ । ५ । ५ । व्व ।  
 पचदशपत्तौ पारचिकादारद्ध पार० । अण० । अण० । मू० । मू० । छे० । छे० । ६ ।  
 ६ । लघुपचमासिए ठाइ, अत्र च तपोरूपाणि प्रायश्चित्तानि सर्वाण्यपि लघूनि वाच्यानि, गुरुणि न ।

एसेव गमो० गाहा ॥

अनया गाथयाऽऽरोपणासूत्रदशकविषयमुपयुज्य सर्वं वाच्यमित्याचष्टे तत्र सकलसूत्रविषय उक्त प्राक् शेष तु वाच्यमित्याह एवमित्यादि, एव प्रदर्शितरीत्या उद्धातिममासादिसकलसूत्रारोपणा पुनस्तावद् भणिता । उद्धातिममासाद्यारोपणासु च भणितासु अनुद्धातिमविशेषितास्ताएव भणनीया, उद्धातिमानुद्धातिममिश्रसयोगारोपणा अपि वाच्या, मासद्विमासाद्यापन्ने तदुपयुज्यवाच्यमित्यर्थ । एव सातिरेकमासिकाद्यापत्तौ तदारोपणा वाच्या, लघुपचकसातिरेकमासिकाद्यापत्तौ तदारोपणा वाच्या । इत्यादि एतास्वापत्तिषूपयुज्यमानं दातव्यम् । नवर — परिहारो न इति, सयतीना पारिहारिकतपो न दीयते, शेषसाधुभि साध्वीभिश्च परिहृत इत्युक्तं भवति, तस्सेव पाणाइवायस्सेत्ति नस्स त्ति पढमठाणस्स पढमपोरुसीए इत्यादि करकर्मकरणोत्पन्नाभिलाषापेक्षया प्रथमपोरूपीप्रमाणकालमात्रमध्ये तत्करणे मूल, प्रथमपौरुषीमुत्पन्नापेक्षया प्रतीक्ष्य द्वितीयपौरुष्या करणे छेद इत्यादि वाच्यं, न पुन सूर्योद्गमापेक्षया प्रतीक्ष्य पौरुष्या करणे छेद इत्यादि वाच्यम्, न पुनः सूर्योद्गमापेक्षया प्रथमपौरुष्यादि कालमानं ज्ञेयम् । अर्थं गृण्हन् निपद्या निश्चयेन करोत्येव सूत्रेऽपि करोतीति वाचगाचार्येच्छया वा ।

कोऽर्थः ? न करोतीत्यपि कदा च नेति अर्थे च शृणोति शिष्य उत्कटुक सन् ह्यकच्छत्ति उत्कृतकक्ष विहितसमस्तवसतिप्रमार्जनादिव्यापार सन् अयं च सूत्रार्थग्रहणादिविधिरत्रैव प्रागेकोनविशतितमे उद्देशके “जे भिक्खू अप्पत्तं वाएइ” इत्यत्र सूत्रे विस्तरे णोक्तस्तस्माद् बोद्धव्यं, गणपरिपालक पूर्वगते श्रुते तद्गते अर्थे च लिंगेत्यादि लिंगक्षेत्रकालानाश्रित्यानवस्थाप्यपारचिको य ते अद्यापि प्रवर्तते न तु व्यवच्छिन्न इत्यर्थः । द्रव्यलिङ्ग बाह्य नपुसकाद्याकार दृष्ट्वा पारचिको विधीयते, असौ सयतो न क्रियते परिहृत इत्यर्थः । कृतो वा कारणे गच्छान्निसारणेन परिहृत इति पारचिकता, भावतस्त्वनुपरतमोहोदयभावो परिहार्या, एतेऽनलादयो व्रते नावस्थाप्यन्ते इत्यनवस्थाप्यताऽपि घटते, मलिनविसोहिं व त्ति मलिनत्वविशुद्धिं प्रायश्चित्तदान निमित्तं च पारिहारिकत्वबुद्धनपोदानरूपमिति सभाव्यते ।

देवय० गाहा —

अल्पार्थको देवताविशेषोऽन्यतरप्रमादेऽपि वर्तमान शुद्धचारित्रिण छलयेत् किं पुन सर्वप्रमादस्थानवर्तिनम्, अवश्य तस्य देवतापायः स्यादेव, इति तं मुक्त्वेत्युक्तं, तथा चोक्तम् —

“अन्नयरपमायजुअ, छलिज्ज अप्पिड्ढिओ न उण जुत्तमि” त्ति —

घाडिय त्ति मित्त जइरि त्ति भाष्यपद यदृच्छा सेत्यर्थः । कायणुवाइ त्ति भाष्यपद पृथिव्यादीना यत् काय शरीर तस्यानुपातेन विनाशेन वधकस्य बन्धो भवति, पृथिव्यादीना द्वीन्द्रियादीना च वध्याना यानीन्द्रियाणि तदनुपातेन च वीसइमे उद्देसगे भणिय त्ति प्रभूततरेण्यापत्त णमासतया कृत्वेत्यर्थः । अववायमतरेणेत्यादि अपवादचित्ताव्यतिरेकेणैव यतना ग्रयतनाश्च उक्तः । कहए न य सावए लज्जित्ति भाष्यपद - कथके श्रावके च श्रोतरि कथकश्रोतृभ्या लज्जा न विधेया इत्युक्तं भवति । वप्परूवग इम त्ति वप्पकेदारो जलभृतस्तेन रूप्यते उपमीयत इति वप्परूपण, भाविता सजाता गुणा सत्यादयो यस्य तत सस्यवद्भूमौ सजातगुणे सति को यो वप्पस्तस्मिन्नीवेति अकप्पियाण त्ति अयोग्याना मसारश्चतुरूपो गात चतुष्कभेदात् पचप्रकारश्च एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियादिभेदात् । पट्प्रकारश्च पृथिव्यप्प्रभृतिभिर्भेदात् इति सम्भाव्यते । ( सम्भाव्यन् ) घोर त्ति क्वचित् पाठो भाष्ये क्वचिच्च दीहे त्ति ततो द्वितीयपाठमप्यथेतो व्याख्यातवान्, दीह कालमित्यनेन, अनवदग्नोऽपरिमितः ।

इदानीं चूर्णिकारो यदर्थं मया चूर्णि कृता इत्येतदाविष्करोति -

जो गाहेत्यादि गाथा गन्धेन भाष्यगाथा निबद्धत्वादभिधीयते, ततो गाथा च सूत्र च तयोरर्थः इति विग्रहः । पागडो त्ति प्राकृत प्रगटो वा पदार्थो वस्तुभावो यत्र स, तथा परिभाष्यतेऽर्थोऽनयेति परिभाषा चूर्णिरुच्यते ।

अधुना चूर्णिकार स्वनामकथनार्थं गाथायुग्ममाह -

अतिथिं चेत्यादि वर्गा इह अ,क,च,ट,न,प,य,श, वर्गा इति वचनात् स्वरादयो हकारान्ता ग्राह्याः । तदिह प्रथमगाथया जिणदाम इत्येवरूप नामाभिहितं, द्वितीयागाथया तदेव विशेषयितुमाह - जिणदास महत्तर इति तेन रचिता चूर्णिरियम् ।

सम्यग् तयाऽऽम्नायाभावादत्रोक्तं यदुत्सृज्यम् .. (?) ।

मतिमान्याद्वा किञ्चित्छोद्धच श्रुतधरै कृपाकलिनैः ।

श्रीशालिभद्रसूरीणा, शिष्यै श्रीचन्द्रसूरिभिः ।

विशकोदेशके व्याख्या, दृढ्या स्वपरहेतवे ॥१॥

वेदाश्चरुद्रयुक्ते, विक्रमसंवत्सरे तु मृगशीर्षे ।

माघसिनद्वादश्या समर्थितेय रवौ वारे ॥२॥



परिशिष्टानि



# प्रथमं परिशिष्टम्

निशीथ-भाष्यगाथानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमशिका  
वृहत्कल्पभाष्यस्य समानगाथानामङ्कनिर्देशश्च ।



अ	नि.भा.गा.	वृ.भा.गा		नि.भा.गा.	वृ.भा.गा
अइयाण गिज्जाण	१२८		अग्गहण जेण णिसि	११५६	३५३७
अइयारो वि हु चरणे	५४३१		अग्गहणे कप्पस्म उ	५६८३	३०६२
अइरहस्स धारए पारए	६७०३		अग्गहणे वारत्तग	५८८८	४०६४
अइरेगोवधिगहण	२८४		अग्गिकुमारुववातो	५७४३	३२७४
अइमेस इड्ढि-धम्मकहि	३३		अग्गीतस्स एण कप्पति	५२५१	३३३२
अउणासीत ठवणाण सत	६४५८		”	५३७४	
अकयकरणाय गीया	६६५८		अग्गीतेसु विगिचे	१६६४	
अकयकरणा वि दुविहा	६६५०		अग्गीया खलु साहू	५२५३	
अकरडगम्मि भाणे	५८८५	४०६०	”	५३७६	
अकसिणमट्टारसग	६४२	३८७३	अचित्तमसवद्ध	६१८	
अकसिणमगलग्गहणे	६४०		अचियत्त-कुलपवेसे	२८३४	५५६७
अककतितो य तेणे	३६५०		अचियत्तमतारायं	४५०७	
अक्कुटालिते वा	२७८६	२७१०	अच्चावेदण मरणतराय	३६८१	
अक्खरलभेण समा	४८२५		अच्चित्तसोत तं पुण	६०१	
अक्खरवजणसुद्ध	५४८८	५३७३	अच्चित्ता एसणिज्जा य	६२७६	
अक्खाण चदणस्म वा	५१२	४६०६	अच्चित्ते वि विडसणा	४८४४	६८४
अक्खातिगा उ अक्खाणगाणि	५२११		अच्चीकरण रण्णो	१५६६	
अक्खादी ट्ठाणा खलु	२३०१		अच्चुसिण चिक्कणे वा	४०६५	१८२५
अक्खा सथारो य	१४१६	४०६६	अच्छताण वि गुरुगा	२५७६	
अक्खी वाहू फुरणादि	४२६६		अच्छनु ताव समणा	२०२७	१६७६
अक्खुण्णेषु पहेसु	३१२६	२७३७	अच्छिज्ज पि य तिविह	४५००	
अगडे भातुए तिल	२१५०		अच्छेज्जणिसट्टाण	४५२३	
अगणि गिलाणुच्चारे	४१४३	५२६५	अच्छे ससित्त चन्विय	२६६०	५८५५
अगणि व गणि बूया	२६२०		अजतण कारिस्सेव	४४८	
अगदोसहसजोगो	३२८२		अजरायु तिण्णि पोरिसि	६१०७	
अगमकरणादगार	११४१	३५२२	अजिण सलोम जतिण	३६६६	
अगमेहि कतमगार	१४४०		अजिणादी वत्था खलु	५६१६	
अगुत्ति य वभवेरे	५३२	२५६७	अज्ज अतिथानि णीति व	१२६	
अगघातो हणे मूल	६५३१		अज्जसुहत्थाज्जमरा	५७४६	३२७७
			अज्जसुहत्थिय ममत्तो	५७५१	३२८२



अज्ज जवलाइहुं	१७१०	३७३२	अणायुण्याते लहुगा	६३६७	
अज्जाण तेयजणाय	१ ३६	३७५८	अणत्थगय सकप्पे	२६००	५७६७
अज्जाण पडिकुट्ट	१७०२	३७२४	अणत्थ मोय गुरुगो	१६६५	
अज्जेव पाडिपुच्छ	४५८३		अणपज्ज अगणि आऊ	१७०१	३७२३
अभुसिरमविद्धमफुडित	१०३३		अणभिगयपुण्णपाव	३७५५	
अभुमिरमादीएहि	१२३४		अणभुट्ठाणे गुरुगा	३०३४	१६३५
अज्झयणम्मि पकप्पे	१३८६		अणभोगा अतिरित्त	४०४	
अज्झयण वोच्छिज्जति	५४६८	५४०२	अणभोगे गेलण्णे	३६१	
अज्झाविओमि एतेहि चैव	३६१७	५१८४	"	३६२	
अज्झुमिर-भुसिरे लहुओ	५०३	४६०२	"	४१६	
अज्झुसिराणतरे लहु	५०५	४६०३	"		
अट्टग चउक्क दुग	४७३४	८७४	अणाराय निवमरणे	३३६३	२७६४
अट्टग सत्तग दम	२५२		अणाराया जुगराया	३३६२	२७६३
अट्टु उ अवणोता	६५४८		अणालमपजत्त खलु	४६२६	
अट्टम छट्ट चउत्थ	३२१७		अणवत्थाए पसगो	५१४१	२४६१
अट्टमि दस उक्कोसो	३५४४		अणहार मोय छल्ली	३७६४	६००४
अट्टवित्तगणहरे वा	५६८६		अणहारो वि ण कप्पति	३७६८	६०१०
अट्टविच-राय-पिडे	२५०१	६३८५	अणिकाचिते लहुसओ	३१७	
अट्टविह कम्म-पको	७०		अणिगूहियबलविरिओ	४३	
अट्टमतमगुल्लुच्चो	५६७६		"	५८४३	४०१६
अट्टारस पुरिसेसु	३५०५	४३६५	अणिसट्ट पडिकुट्ट	४५०८	
अट्टारसया तीसुत्तरा	६२६०		"	४५१६	
अट्टारमविहमवभ	५११३	२४६५	अणिसट्ट पुण कप्पति	४५११	
अट्टारसवीसा य	६६०	३८६३	अणिसेज्जा अणुओग	२१२७	
"	६६२	३८६५	अणुअत्तणा गिलाणे	२६६७	
"	६६४	३८६७	अणुओगो पट्टविओ	३२६०	
अट्टावीसा दो वाससया	५६१५		अणुकप भगिणिगेहे	४४६५	
अट्ठि व दाहगादी	१६०५		अणुकपा पडिणीया	४२१२	५६२२
"	१६११		अणुकपिता व चत्ता	६६०२	
अट्ठी विजा कुच्छिय	५०७६	२८२४	अणुग्घाड्यमासाण	६४६६	
अट्ठप्पत्ती विसग्गि	६३६७		अणुग्घातिय वहते	२८६६	
अडवी पविसताण	५४१५		अणुड्डाहो गिहिमत्ते	३४६७	
अड्डाडजा मासा	२८२७	५७५७	अणुणवरण अजयणाए	५२५७	३३३८
अट्ठोणमेत्तात्तो	४२३६	५६४६	अणुणवित्तउग्गहडगण	११४६	३५२७
अट्ठोणो तु ते दो वि	१४०२	४०८६	अणुणविते दोसा	२५७३	
अणच्चवित्त अवलिय	१४३२		अणुदित्तउदियो किह णु	२६१६	५८१६
अणट्ठाडो विरुहा	५१४२	२४६२			
अणायुण्याऽणुण्याते	६३६४				

अणुदितमणमकप्ये	२८६१		अण्ण अभिवारेत्तुं	५७७३
अणुदियमणमकप्ये	२८८६	५७६०	अण्ण च उट्ठिमावे	२७३६
,"	२८९४	५७६१	"	५५७७
अणुपालण-सभोगो	२१३६		अण्ण पि ताव तेण्ण	१३६१
अणुभूता उदगरसा	५२६१	३४२१	अण्णाणो गारवे लुट्ठे	५८४०
अणुमोदण कारावण	५८८		"	५८६८
अणुगत्तणा तु एसा	३०७३	१६७२	अण्णाते तुसिणीता	१७०६
अणुयाणो अणुयाती	५७५४	३२८५	"	५४०६
अणुरगादी जाणो	५६६३	३०७१	अण्णाते परल्लिगे	२३८८
अणुलोमो पडिन्नोमो	३६५०		अण्णालदमणिद्विमु	५७७५
अणुसट्ठी धम्मकहा	२५८६		अण्णा वि अप्पसत्था	२३४५
"	३४४५	२८६८	अण्णा वि हु पडिसेवा	६३०७
अणुसट्ठीय सुभदा	६६०६		अण्णेण अणुण्णविते	१२६८
अणुभासण मजाती	८६४		अण्णेण पडिच्छावे	२७६६
अण्णउवस्सयगमणो	१२८६		"	६३७४
अण्ण-कुल-गोत्त-कहण	१३५१		अण्णेण मल्लिगम्मि य	२२३७
अण्णागणो भिक्खुस्म	२८२३	५७५६	अण्णे दो आयरिया	२८०८
अण्णागहण तु दुविह	४७२५	८६४	अण्णे पाणो भेसज	६६५
अण्णद्ववराट्ट जुण्णा	५०८०		अण्णे वायग लहुगो	२०६५
अण्णतरपमादेण	६६		अण्णे वि अउणतीस	३५१६
अण्णतर तेइच्छ	२३१४		"	३५२०
अण्णतराग धातु	४३१२		अण्णे वि तस्स खीया	१२६२
अण्णत्थ अपसत्था	१७०५		अण्णे वीस सिक्खे	३५२५
अण्णत्थ एरिस दुल्लभ	२५०६		अण्णे वि होति दोसा	१२८४
अण्णत्थ ठवावेउ	५७६४		"	२५०६
अण्णत्थ तत्थ गहणे	४७२४		"	२५१७
अण्णत्थ व चकमती	५३२२		अण्णेणि दिज्जमाणो	४४४१
अण्णत्थ वसीऊण	११४६		अण्णो चमहणदोसो	१६३५
अण्णत्थ वा वि णिज्जति	६२४६		अण्णोण्ण-करण-वजा	२३०६
अण्णत्थ वि जत्थ भवे	४६१०		अण्णोण्णेण विरुद्ध तु	१५८७
अण्णत्थ सल्लिगेण	२२३५		अण्णो वा ओभट्ठो	१२५६
अण्णपडिच्छणो लहुगा	६३६६		अण्णो वि य आएसो	१७२७
अण्णपासडी य गिही	६२५८		"	५६३६
अण्णम्मि व कालम्मि	२७६६		अण्णो वि होइ उज्जू	५५५
अण्णया विहरतेण	१०७२		अतडववातो सोच्चेव य	५३१६
अण्णवमतीए असती	१३२७		अतरत परियराण व	३६४
अण्णस्स व अमतीए	२७०८		अतरतमिगावण्णहि	५६४६
अण्णस्स व दाहामो	४०६४		अतरतस्स अदेते	४५६६

अनरनस्स तु जोगासती	१६६२	१६२०	अद्ध गुला परेण	६८७	
अनवस्सिण तवस्सि	३३४६		"	७०१	
अतस्सि हिरिमय तिपुड	१०३०		"	७१२	
अतिआतरो से दीसति	४६७७		"	७२०	
अतिअकमे वतिअकमे	६४६७		अद्ध तेरस पक्खे	२८३२	
अतिग अमिला जहण्णा	५१८१		अद्धाण ओम असिवे	४६२०	
अतिभणिय अभणिते वा	१८१६		अद्धाण-ओम दुड्ढे	१६०६	
"	२७८८	५७४२	अद्धाण कज्ज सभम	१६२	
अतिभुत्ते जग्गालो	२६५३	५८४७	"	२५३	
अतिरित्ताण ठिताण	५५२		"	१८८	
अतिरेग उवधिअधि	२१७६		अद्धाणणिग्गयट्ठा	३२४२	
अतिरेगदिट्ठ दोसा	४५२६		अद्धाणणिग्गतादी	५२४	३३६३
अतिरेग-दुविह कारण	४५४६		"	१५३२	
अति सि जणम्मि वण्णो	१७३६		"	१६६७	
अतेणाहडाण-णयणे	१२६६	२०४४	"	१६८५	
अत्तट्ट परट्ठा वा	३२३३	४२५८	"	२१६२	
अत्तट्टाए परस्स व	४६००		"	३२३१	४२५६
अत्ताण चोरमेया	३३६५	२७६६	"	५३८८	३३६३
अत्ताणमादिएसु	३३६६	२७६७	अद्धाणणिग्गतादीणमदेते	३२३२	
"	३३६७	२७६८	अद्धाणणिग्गयादी	२२१	
अत्ताणमादियाण	३३६८	२७६९	"	२१६१	
अत्तीकरण रण्णो	१५५६		"	४०८१	
अत्तीकरणादीमु	१८५४		"	५१६४	२५४८
अत्थवरो तु पमाण	२२		"	५१६५	२५५०
अत्थयते अत्थी वा	१५७६		"	५२८५	
अत्थगए वि सिव्वसि	३६८६	४६६१	"	५३४६	२४२३
अत्थगय मरुप्पे	२८६२	५७८७	अद्ध णणिग्गयादीण	४६१२	
"	२८६८		अद्धाणणिग्गया वा	३२५४	
अत्थडिलमेगलरे	११०१		अद्धाण दुक्ख सेज्जा	२४२०	
अत्थि त्ति होइ लहुपो	१८४५		अद्धाण पविसमाणो	४८८३	१०२१
अत्थि मि घरे वि वत्था	५०३७	६३६	अद्धाणवालवुड्ढा	४६१८	
अत्थि य से जोगवाही	२६७८	१८८०	अद्धाण-वाल-वुड्ढे	४५६७	
अत्थि हु वमभग्गामा	५६४३	४८५१	अद्धाणमसथरणो	४५१	
अद्धिदुमस्सुतेमु	६०४८		अद्धाणम्मि विवित्ता	५०००	
अद्धिद्वानो दिट्ठ	५१३४		अद्धाणम्मि व हुज्जतु	३४२५	२८७७
अद्धु अट्टमासा	२८१६		अद्धाणविवित्ता वा	२८८	३४५७
अद्धुमास पक्खे	२८२६	५७५६	"	५४०२	
"	२८३०		अद्धाण-सद्दोसा	२६०५	

सभाष्य चूर्णिन निशीथ सूत्र

अद्वाण पि य दुविह	५६३५	३०४१	अपरिवलउमायवए	४७१
अद्वाणमि विवित्ता	२३४		अपरिगहम्मि वार्हि	१६१५
अद्वाणादी अणले	४६२६		अपरिगहित पलवे	४७८०
अद्वाणादी अतिणिद्ध	२२७		अपरिगहिते वार्हि	१६०८
अद्वाणा सयडिए	२६२५	५८२२	अपरिणामगमरण	५६५१
अद्वाणासथरणे	३४५६	२६११	अपरिमितणेहवुद्धो	४४८८
अद्वाणे उव्वाता	१०५८	२७५५	अपरिमिते आरेण वि	१६५५
अद्वाणे ओमऽसिवे	४५६८		अपरिहरतस्सेते	३८६७
अद्वाणे ओमे वा	३४७३		अपहुच्चत्ते काले	४६०८
अद्वाणे गेलणणे	८६०		अपुहत्ते वि हु चरण	६१६१
"	६३०		अपुहत्ते अणुओमो	६१८५
"	१६६३		अपुहत्ते य कहेते	६१६५
"	४५३३		अपुहत्ते व कहेते	६१८६
अद्वाणे जयणाए	४८८५	१०२३	अप्पग्गय महत्थ च	३६२१
अद्वाणे पलिमथो	३६३०		अप्पच्चओ अकित्ती	१३५७
अद्वाणे वत्थव्वा	२६३८	५८३४	"	६२२४
"	२६४६		अप्पच्चओ अवणणो	३६८८
अद्वाणे सथरणे	३४६१	२६१३	अप्पच्चओ य गरहा	६०३८
अद्धिद्वाभट्टासु थोसु	५७७६		अप्पच्चय वीमत्थत्तरा	२८१५
अद्धितिकरणे पुच्छा	२४४१		अप्पच्छित्ते उ पच्छित्त	२८६४
अद्धिति दिट्ठो पण्हय	१०४३		अप्पडिलेहुऽपमज्जण	२७०
अद्धे समत्त खल्लग	६२१	३८५४	अप्पडिलेहियदूसे	४००१
अधवा गुरुस्स दोसा	२०६५		अप्पतरमच्चियतर	६३
अधवा पायावच्चो	२२३६		अप्पत्तमइवकते	१०७७
अधवा पुरिसाइण्णा	२०६६		अप्पत्त उ सुतेरा	३७५३
अधवा वि समासेण	६६६		अप्पत्ताण णिमित्त	३४४२
अधवा सो तु विगडण	१२५६		अप्पत्तिए असखड	१०५
अधिकरणमताराए	१०८६		अप्पत्तियादि पच य	११३
अधिकरणमारणाणी	१३२४		अप्पत्ते अकहिता	३७५२
अधिकरण रायदुट्ठे	१०५१		अप्पत्ते जो उ गमो	४७७२
अधिकरण कायवहो	४११५		अप्पपरअणायासो	४३३८
अधुवम्मि भिक्खकाले	४६३०		अप्पपर-परिच्चाओ	५८३४
अन्नतरपमादजुत्त	६०६६		अप्प-वित्ति-अप्प-तत्तिआ	१७२२
अन्नाणकुत्तिथिमते	३७०१		अप्पभुणा तु विदिण्णे	११८०
अन्नो पुण पल्लातो	३३२४		अप्पभु लहुओ दियणिंसि	११७८
अपडिक्कमसोहम्मे	३१६६		अप्पमलो होति सुची	६५६४
अपडिहणता सोउ	३०२६		अप्पा असयरतो	५८०८
अपडुप्पणो बालो	३७२८			

अप्पा मूनगुणैसु	६३१६		अभिभूतो पुण भतिनो	३६४४
अप्पाहेति पुराणातिगारा	३२६७		अभिभूतो सम्मुज्झति	३६६८
अप्पिणह त बइल	३१८१		अभिलावमुद्ध पुच्छा	५४६७
अप्पुव्वमतिहिकरणो	१३४२	५६८	अभिहारेत वयतो	२७०५
अप्पुव्व-विचित्त-वहुस्सुता	१०५६	२७५३	अमणुण्णाणञ्जहारं	२३१६
अप्ये सप्तमि य	१५४८		अमणुण्णघण्णारासी	६३८१
अप्पोल मिउपम्ह	५८०१	३६७८	अमिला अभिणवच्छिण्ण	४६६३
अप्फासुएण देसे	२०४६	५८५	अमिलादी उभयसुहा	५१६१
अवलकर चक्खुहत	३३६२		अमुगत्थमुओ वक्कति	५६६६
अवहुस्सुए अनीयत्थे	५४४८		अमुग कालमणागते	५०३१
अवहुस्सुता यमद्धा	२७२३		अमुग च एरिस वा	५००६
अवहुस्सुते च पुरिसे	४६५		अमुगायरियसरिच्छाडि	५६८२
अव्वाल बुद्धाणो	४६१०		अमुगिच्चय रा भुंजे	५०१२
अव्वक्खाराण रिस्सकया	५४४५		अमुगो अमुग काल	४३३७
अवरहियस्स हरणे	३३८६		अम्मा पितुमादी उ	१०७०
अव्व-हिम-वास-महिगा	२६१४	५८११	अम्मापियरो कस्सति	३७३५
अव्वगिय सवाहिय	४३८८		अम्मे ए वि जाणाओ	४२८०
अव्वतरमललित्तो	६१७३		अम्हट्टु समारद्धे	४०८८
अव्वतर च वार्हि	७६४		अम्ह वि करेति अरती	२४४२
अव्वमत्थ गतूण	८६३		अम्हे खमणा रा गणी	२६१६
अव्वभासे व वसेज्जा	१७५८	३७३१	अम्हेदाणी विसेहिमो	५५६
अव्वभुज्जत ओहाणो	५५६५		अम्हे मो अकतमुहा	२६१३
अव्वभुज्जतमेगतर	२४१५		अम्हे मो आएसा	५६०
अव्वभुट्ठाणो आसण	३०३२	१६३३	अम्हे मो आदेसा	५५४
"	२१११		अम्हे मो कुलहीणा	२६११
अव्वभुट्ठाणो गुरुगा	३०३३	१६३४	अम्हे मो जातिहीणा	२६१०
अव्वभुवगता य लोओ	२४२५		अम्हे मो णिज्जरट्ठी	२६८८
अव्वभुवगयवेरा	३२०१		अम्हे मो घणहीणा	२६१५
अभणितो कोइ रा इच्छति	२६८१	१८८३	अम्हे मो रुक्खीणा	२६१२
अभयगणी पेहेतु	४६२७		अम्हे वि एतधम्मा	६६६६
अभिओग्गविसकए वा	४६४६		अम्हेहि तर्हि गएहि	२६८७
अभिओगे कविलज्जो	५६६३		अय-एलि-गावि-महिसी	४००३
अभिगह सभोगो पुण	२१३८		अयते पफोडेते	५६२४
अभिणवपुराणगहित	४६११		अयमणो उ विगप्पो	२२०८
"	४६१६		अयमपरो उ विगप्पो	४३८०
अभिणववोसिट्ठामति	४१६६		अयमाइ पाया खलु	३२७७
अभिण्णो महव्वयपुच्छा	४६०८	१०४५	अयमाइ आगरा खलु	२००६
अभिचारेते पात्तत्वमादिणो	५४७६	५३८१	अयमादी आगरा खलु	५६१२

सभाष्य चूणि निशीथ सूत्र

अयमादो लोहा खलु	२२६२		अविकिट्ठकिलामत	६३६७
अयसो पवणराणी	१६२३		अवि केवलमुष्पाडे	१४२
"	१८७८		अविकोविता तु पुट्ठा	१७७०
"	४६५४		अविणाम होति सुलभो	४४२६
"	५७६२		अवितहकरणे सुद्धा	६२१६
"	६२३३		अविदिण पाडिहारिय	३३१
अयसो य अकित्ती य	३६७६	५१६२	अविदिणोवहि पाणा	३६६८
अयसो य अकित्ती या	३५८६	५१६२	अविधि अणुपालेते	२१४४
"	३६५६	५१६२	अविमाय र पि सद्धि	२३४४
"	३६६८	५१६२	अवि य हु कम्मददण्णा	५१६२
"	३७०४	५१६२	अवि य हु जुत्तो दडो	२१८
अरिसिल्लस्स व अणिसा	६३२	३८६४	अवि य हु वत्तीसाए	४५१८
अलभता पवियार	६५०८	६३६२	अवि य हु विसोहितो ते	६६०८
अलस घसिर सुच्चिर	१६४०	१५६२	अवि य हु सवपलवा	४८५५
अलस भणति वाहि	६३५६		अवि य हु सुत्ते भणिय	६४०३
अवताणगादि णिल्लोम	४०१७	३८३६	अविरुद्धा वाणियणा	३३६४
अवरण्ह गिम्हकरणे	२०३६	१६८८	अविरुद्धा सवपदा	२१०६
अवराहपदा सव्वे	६६८७		अविसिट्ठा आवत्ता	२८७५
अवराहे लहुगतरो	४७८३	६२४	"	६५८६
"	५१३८	२४८८	अविसुद्ध ठाणे काया	१६२६
अवरोप्पर सज्जिलयासजुता	४४६४		अविसुद्धस्स तु गहणे	१८३०
अवरो फल्लगमु डो	१३८	५०२०	अविसुद्ध पलव वा	४४४
अवरो विधाडिनो	१३६	५०२१	अविसेस देवत-णिमित्तमादी	२३५६
अवरो वि य आपसो	५७६२		अविमेसित्तमहिट्ठे	२२२२
अवलक्खणोगगहित	७६२		अविमेसे वि विमेसो	६६६४
अवलक्खणोगगहिते	७६५		अविट्ठिस्स वभचारी	६२७६
अवलक्खणोगवधे	७५६		अव्वत्ते य अपत्ते	६२२६
अवलक्खणोग वध	७५०		अव्वजणजातो खलु	६२३७
अवलक्खणो ज उववी	७६४		अव्वाउलागा णिच्चोउयाण	६१६५
अवस्सगमण दिस्सासू	२६६	६०६७	अव्वोच्छित्ति णिमित्त	१५०४
"	८८३	६०६७	"	१५०६
अवमा वसम्मि कीरति	१५३०		"	१५१३
अवसेसा अणगारा	३६१७		"	४३३४
अवसेसा पुण अणला	३७३६		"	४१६८
अवसी व रायदडो	६६०१		"	४२०३
अवहत गोण मस्ते	३१६३		असज्जभाय च दुविह	६०७४
अवि अवखुज्ज पादेण	६२८	३८६०	असदस्म नत्थि सोही	२७२६
अवि ओसियम्मि लहुगा	२८४३	५५७७	असणादिया चउरो	२५००

अमणादि दव्वमाणे	१६५४	१६१२	"	५४८०
अमणादी वाऽऽहारे	२३४७		असिवादीकारणितो	४५७७
अमणादी वाहारे	२५५८		असिवादी सु कत्थाणि ए सु	४८१२
असणे पाणे वत्थे	११५३		असिवादीहि गया पुण	५५४१
असति गिहि णालियाए	१६८		असिवे अगम्ममाणे	५६५६
"	४२५३	५६६२	असिवे ओमोदरिए	३४२
असति तिगे पुण	५८७८	४०५३	"	४५८
असति वमवीए वीस्	१६६०	१६१८	"	१४५४
"	११५०	३५३१	असिवे ओमोयरिए	७२६
असति विहि-णिग्गता	१६८३		"	७४७
अमति समणाण चोदग	५०७६	२८२१	"	७७३
असनी अवाकडाण	५११	४६०८	"	७७८
अमती एव दास्स तु	१६६३	१६२१	"	८१२
अमती गच्छविसज्जण	३७३		"	८१४
असती ते गम्ममाणे	३४५३		"	८१५
अमती य परिरयस्स	१६४		"	६८४
अमती य भद्दो पुण	४६७६		"	१००७
अमती य भेमणं वा	१३७२	४६३६	"	१०२१
अमती य मत्तगस्सा	५४१		"	१४३७
असती य लिंगकरण	१६६१		"	१४६२
"	५७२२		"	१४८१
अमती य सजयाण	५६२७		"	१४६०
असती विगिचमाणो	४६०६		"	१८४७
असतुणिए खोम-रज्जु	६५३	२३७६	"	१८५३
असवीणे पभुविड	११८४	३५६५	"	२००७
असमाही ठाणा खलु	६४६३		"	२०१२
असरी रतेण भगे	१३५०	५७६	"	२०२४
अमहाओ परिसिल्लत्तण	५४७६	५३८४	"	२०४४
अमयर अजोगावा	३८५१		"	२०६१
असपत्ति अहालदे	५३२६	२४०३	"	२६६०
असिद्धी जति णाएण	४८६७	१००६	"	२६८४
असिबगहित ति काउ	३४४		"	२६६७
असिबगहिता तणादी	३४३		"	२६६८
असिवाइकारणेहि	३१५२	४२८३	"	३१०४
असिवातिकारणेण	५०३२		"	३१२७
असिवादिकारणगता	१२२५		"	३१२६
असिवादिकारणगतो	२४११		"	३१६१
असिवादिकारणेहि	३८४७		"	

असिवे ओमोयरिण

	३२०६			५६६३
"	३२६६	४०५७	"	५८८२
"	३३४२		"	५९५३
"	३३५५	२००२	"	५९५७
"	३४८७		"	५९६२
"	३४९१		"	५९६७
"	३६०५	१०१६	"	५९७६
"	४०५६		"	६०२६
"	४१११		"	६०७२
"	४११८		"	७३४
"	४२०७		असिवोम-दुद्रु-रोषग	१६१२
"	४२८१		असिवोमाईकाले	६२३६
"	४३०५		असिवोमाघयरोसु	६११४
"	४३१७		असिकटकविसमादिसु	१००
"	४३६५		अस्सजतमतरते	१०१
"	४४०३		अस्सजमजोगाण	४४३७
"	४४०६		अस्सजय-लिंमीहिं तु	४७४५
"	४४१७		अस्सजयाण भिक्खु	४३६१
"	४४३१		अह अत्थिपदवियारो	३२५७
"	४४३८		अह उगहणतग	१४००
"	४४४३		अह जारिसओ देसो	४३६०
"	४४५४		अह जे य धोयमइले	२२७८
"	४४६७		अह-तिरिय-उड्डलोगा ण	६५
"	४४८५	४०५७	अह दूर गतव्व	४४१
"	४६१३		अह पुण गिब्वाघाय	६१२१
"	४६३१		अह माणसिगी गरहा	२७२५
"	४६५४		अह वायगोति भण्णति	२६३०
"	४६५८	४०५७	अह सउदगा उ सेज्जा	५२२८
"	४६७१		अह सिक्कयतय पुण	६४५
"	४६८३	४०५७	अह सो विवायपुत्तो	३९६९
"	४६८८		अहग सिव्विस्सामी	६७३
"	४८८१	१०१६	अहभावदरिसणम्मि वि	२२५३
"	४९७८		अहभावमागतेण	४०३२
"	४९९६		अहमेगकुल गच्छ	३१५
"	५४१६		अहय च सावराही	६३१०
"	५६३०		अहव अवभ जत्तो	५११४
"	५६५४	३०६२	अहव जति अत्थि थेरा	२७४४



अहव यदि अस्थि येरा	५५८२		अहवा भिक्खुस्सेव	५३३१
अहव रा कत्ता सत्या	४८१६	६६०	अहवा महानिहिम्मि	६५२६
अहव रा पुट्ठा पुव्वेरा	५०६३	२८०७	अहवा रागसहगतो	६६८
अहव रा मेत्ती पुव्व	२७३४		अहवा वणिमरुएरा य	६५२२
अहव रा सद्धा विभवे	१६५२	१६१०	अहवा वातो तिबिहो	११६
अहव रा हेट्ठज्जतर	८१७		अहवा वि अगीयत्थो	४८००
अहवाऽजत पडिसेवी	६६२३		अहवा वि असिद्धिम्मि य	१२६३
अहवा अभुसिरगहणे	१२३१		अहवा वि कओणेरा	५८८०
अहवाऽणुसट्ठुवालभुवग्गहे	६६१२		अहवा वि णालबद्धे	५७७४
अहवा अवीभूते	३२२६	४२५४	अहवा सचित्तकम्मे	२५६०
अहवा आणादिविराहरणाओ	५१३५	२४८५	अहवासमणाऽसजय	४७४७
अहवा आहारादी	४१५६	५२७८	अहवा सय गिलाणो	६२४८
अहवाऽहारे पूती	८०७		अहवा सावेक्खितरे	६६५१
अहवा उस्मग्गुस्सगिय	८२५		अहवा सिक्खासिक्खे	३५२७
अहवा एग्गहणे	४७०६	८५५	अहवा सुत्तनिबधो	६६७०
अहवा एगेऽपरिणते	६३३५		अहिकरणा भदपता	४३७६
अहवा एसणामुद्ध	६२७७		अहिकरणा महोकरणा	२७७२
अहवा एसेव गमो	३५२२		अहिकरणा मतराए	५३१३
अहवा एसेव तवो	३५२३		अहिकरणा विगति जोए	६३२७
अहवा ओसहहेउ	४०५२	४५५६	अहिकिच्चउ असुभातो	३३२४
अहवा को तस्स गुणो	६६८६		अहिगरणा गिहत्थेहि	२८३५
अहवा गुरुगा गुत्ता	४६०६	१०४२	अहिणवजणणे मूल	२१६
अहवा चिर वसतो	६०२६		अहिमासओ उ काले	६६
अहवा छहि दिवसेहि	६५५१		अहियस्स इमे दोसा	५८६६
अहवा ज वद्धादि	४६६४		अहियासिया तु अतो	६११६
अहवा ज भुक्खत्तो	३७६२	६००२	अहिरण्णागच्छ भगव	३०४३
अहवा ए चव वज्झति	३३३१		अहि-विच्छुग-विसकट	४०१०
अहवा ए मज्ज जुत्त	२६३३		अहुगुट्ठिय च अण-	४३८२
अहवा ततिते दोसो	३६०३	५१७०	अहोरत्ते सतवीस	६२८४
अहवा तिगसालवेरा	३८७१		अकम्मि व भूमीए	१२५७
अहवा निणिण सिलोगा	६०६१		अके पलियके वा	२३१०
अहवा तेमि ततिय	२६३०	५८२७	अगाण उवगाण	५६२
अहवा दुग य रावग	१३६२		अगुट्ठ पोरमेत्ता	१२२७
अहवा पटमे छेदो	३५३०		अगुलिकोसे पणग	६२०
अहवा पटमे दिवसे	२५३७		अछणतवट्ठण वा	१५३१
अहवा पणएणऽहिओ	६५७७		अछणे सम्मदा	१६३१
अहवा पचण्ह सजतीरा	५३३२	२४०६	अजगु-खंजण-कहमलिते	५०८७
अहवा पालयतीति	१६८२	३७०६		
अहवा भिक्खुस्सेय	५१२५	२४७६		

सभाष्य चूणि निशीथ सूत्र

अजराग-दहिमुखारा	५२				६०७
अडयमुज्झिय कप्पे	६१०६				
अतद्धारा असती	१७४३	३७६६		आइण्णे बहुएण	६०५
अतम्मि व मज्झमि व	२३७६	४८१६		आइण्णे रयणाइ	२५१०
अतर रिमतिओ वा	१३४७			आइण्णे लहुसकारण	६०२
अतरपल्लीगहित	४१६३	५३१२		आउवकाए लहुगा	५३४०
अतरपल्ली लहुगा	३२८७			आउग्गह्वेत्ताओ	२१८५
अतररहिताएतर	४२५८			आउ ज्जोवण वणिण	५२२
अत न होइ देय	५८४४	६०२०			५२०७
अतेउर च तिविघ	२५१३			आउट्टु जणो मरुणाण	५३४४
अतो अलब्भमाणेसरणमादीसु	२३६१	४८२८		आउट्टियावराह	६१७४
अतो अहोरत्तस्स उ	६०७०			आउत्तपुव्वभणिते	६१३३
अतो आवराणमादी	४७३१	८७१		आउरपाउग्गम्मी	३११७
अतो गिह खलु गिह	१५३४			आउ वल च वड्ढत्ति	३३६५
अतो गियसणी पुरा	१४०३	४०८७		आऊ अगणी वाऊ	२४०५
अतो पर-सक्खीय	३०४८			आऊ तेऊ वाऊ	३१३०
अतो बहि कच्छ-पुडादि	११६१	३५७२		आएस विसवादे	२६६२
अतो बहि च धोत	६१०२			आकड्ढणमाकसण	६०१४
अतो बहि च भिण्ण	६१०५			आकपिता णिमित्ते ण	२६६४
अतो बहि ण लब्भति	२६६३	१८६५		आकपिया णिमित्ते ण	४४०६
"	२६६५	१८६७		आगम गम कालगते	४५६०
"	२६६६	१८६८		आगमसुयववहारी	६३६३
अतो बहि व दड्ढे	५८५०			आगमिय परिहरता	४७८६
अतो मणे किरिसिया	५६६६			आगरणदी कुडगे	५८५६
अतोवस्सय बाहि	१२३५			आगर पल्लीमादी	५८६०
अतो बहि सजोयण	६२००			आगतागारादिसु	२३१२
अधकारो पदीवेण	४८६८	१००७		आगतागारादी	४६५३
अव केण तिऊण	४७००			आगतागारेसु	१४४६
अवगमादी पवक	४७१२			"	१४५८
आ				आगतागारे	२३४२
आइण्णपिसित महिगा	६१६०			आगतागारादीसु	१४३६
आइण्णमराइण्ण	१४८३			आगतु अहाकडय	५५६२
आइण्णमराइण्णा	८६६			आगतु एतरो वा	१८६२
"	१४७१			आगतुएसु पुव्व	३२४४
"	१४६१			आगतुग तज्जाता	४६५२
आइण्ण लहुसएण	६००			आगतुग तज्जाया	४६५५
"	६०४			आगतुग तु वेज्ज	२४७५
"	६०६			आगतुगाणि ताणि य	५८८३

आगतु तदुत्थेण व	२१५१		आतविसुद्धीए जती	११३२
आगतु पउण जायण	३०६६	१६६५	आतसमुत्थमसज्झाड्य	६१६६
आगाढ फरुसमीसग	४२८३		आतकविप्पमुक्का	१७७८
"	४६६१		आतावण तह चैव उ	५३४२
आगाढमणागाढ	४८८८	१०२६	आतावण साहुस्सा	५३४५
आगाढमणागाढे	४२१		आतियणे मोत्तूण	५६७०
"	१५६४		आदरिसपडिहता	४३२१
"	३१०७		आदाणे चलहत्थो	४८६
आगाढ पि य दुविह	२६०७		आदिग्गहणेण उग्गमो	४३५
अगाढे अण्णालिग	५७२४	३१३६	आदिभयणाण तिण्ह	१६६७
आगाढे अहिगरणे	२७६१	२७१३	आदीअदिट्ठभावे	६२१३
आगारमिदिण	२३३५		आदेसग्ग पच्चगुलादि	५३
आगारिय दिट्ठ तो	६५११		आधाकम्मादी णिकाए	१०८१
आगारेहि सरेहि य	६३६८		आधारोवधि दुविधो	११५२
आघातादी ठाणा	४१३५		आपुच्छण आवस्सग	५२५
आचडाला पढमा	१४७३	३१८५	आपुच्छणकितिकम्मे	६१२७
आचेलक्कुट्ठेसिय	५६३३	६३६४	आपुच्छित उग्गाहित	११५५
आणयणे जा भयणा	१३०६	४६०६	आपुच्छिय आरक्खिय	२३६२
आणद अण्डिहय	२६६०		"	३३८५
आणाइणे य दोसा	२८३६		आभरणपिए जाणसु	५२१०
आणाए जिश्वराण	५४७२	५३७७	आभिग्गहियत्ति कए	१५४६
आणाए ऽ मुक्कधुरा	१०२३		आभिग्गहियस्सासति	१२४६
आणाए वोच्छेदे	६७०		आभोएत्ताण विट्ठ	२५७४
आणादिणो य दोसा	५७४०	३२७१	आभोगिणीय पसिणेण	१३६६
आणादिया य दोसा	२३५८		आमज्जणा पमज्जणा	१५१६
"	२७३५		आमफलाइ न कप्पति	४७५७
आणादि रसपमगा	४६०४	१०३७	आमति अब्भुवगए	५२८८
आणाभगे णाण	६६६३		आमे घडे निहित	६२४३
आणुगदेसे वासेण विणा	४६२४		आयपरउभयदोसा	३७८२
आतनर परतरे वा	६५४०		आयपर-पडिक्कम्म	३८१७
आततरमादियाण	६५५६		"	३६३७
आत-पर-मोहुदीरण	१४६८		आयपर-मोहुदीरण	१२१
"	१५१७		आयपरोभयदोसो	५३०
आतपरे वावत्ती	५६०४		आयरिआ अभिसेओ	८७१
आतपरोभावणता	१४५२		आयरिए अभिसेए	२६८५
आतवय च परवय	१०४२		आयरिए अभिसेगे	६०२०

सभाप्य तूर्णि निशीथ सूत्र

आयरिए उवज्झाए	५५७४	५४७४	आयारे अणहीए	६१६६
आयरिए उवज्झाय	२७४१	५४७६	आयारे चउसु य	७१
आयरिए कह सोही	६६२८		आयारे णिक्खेवो	४
आयरिए कालगते	५५०२	५४०६	आयारो अग्न चिय	३
आयरिए णालत्तो	८६८	६१०७	आयुहे दुणिएसट्टम्मि	४८७०
आयरिए दोणिए आगत	५४८७	५३६२	आरक्खितो विसज्जेति	३३८६
आयरिए भण्णाहि तुम	४५५२		आरभडा सम्महा	१४२८
आयरिए य गिलाणे	३०	५०८७	आरभनियत्ताण	५०६५
"	११२६	"	आराम मोल्लकीते	४७६४
"	११२६		आरिय-आरियसकम	५७३०
"	१६२५	५०८७	आरियमणारिएसु	५७२६
आयरिओ आयरिय	२६२२		आरुवणा जति मासा	६४८४
आयरिओ एण ए भणे	२७६४	५७४८	आरुहणे ओरुहणे	४८३५
आयरिओ केरिसओ	६६१३		आरोवण उद्दिट्ठा	६४३८
आयरिओ चउमासे	२८०३	५७६६	आरोवणा जहणणा	६४३५
आयरिओ वि हु तिहि	५५७१		आरोह परीणाहो	२४५०
आयरितो कु डिपद	३६३२		आलत्ते वाहिते	८६३
आयरितो पवत्तिणीय	४६०७		आलवण पडिपुच्छण	१८८७
आयरिय अभावित	११०८		आलवण तु दुविह	६२२
आयरिय उवज्झाए	३३७६		आलवणे विसुद्धे	२०६२
"	५५७६	५४७६	"	३२६२
आयरिय उवज्झाया	३७३५	२७८०	"	५८१२
आयरियपादमूल	३८५६		आलावण पडिपुच्छण	२८८१
आयरिय बालवुड्डा	१६२४		"	६५६६
"	५८६६		आलावो देवदत्तादि	८६४
आयरिय-वसभ-अभिसेग	४६३३	१०७०	आलिहण-सिच-त्तावण	२४२४
आयरियसाधुवदण	१०५५	२७५२	आलिगणावतासण	५६८
आयरियादीण भया	५४५५		आलिगते हत्यादिभजणे	५१७६
आयरियादी वत्थु	४८१४	६५५	आलीढ पच्चलीढे	६३००
आयरिया भिक्खुण य	३४१७		आलोयम्मि चिलिमिली	६१६२
आय कारणमागाढ	४८१०	६५१	आलोयण तह चेव तु	६३७६
आयविलणिव्वित्थ	६२४७		आलोयण ति य पुणो	६६२७
आयविलस्स-लभे	१६०७		आलोयणाविहाण	६५७८
आया तु हत्य पाद	६३५		आलोयणापरिणओ	६३१२
आया सजम पवयण	१५४१		आवडणमादिएसु	३०२१
आयारपकप्पस्स उ	२		आवणो इ दिएहि	६५५८
आयारविणाय गुरुकप्पमादीवणा	३८६५		आवरितो कम्मेहि	५६१

आवरिसायण उर्वलिपण  
आवस्सिया णिसीहिंय

२३१६

२११

५३८३

६१३६

३६७५

८२१

१२२

६१२४

३५५०

४३०

६१८०

६२१४

४३४६

६३४३

४३४७

२२४

५३६८

५०१६

६११३

६३३२

४१३२

६२५

५२३

६७६

२५५५

११३५

४५५४

१७६६

५२७६

१८२६

१७२३

५६५१

३१४६

६०६५

२६०१

१७४८

३६६५

३४३८

३४३८

६७६

३१६३

३४५४

५३६८

६१६

३८५७

२५८८

३३५५

३७४५

४२८०

३७७१

आसि तदा समणुण्णा

आसित्तो ऊसित्तो

आसेण य दिट्ठ तो

आहच्छुवातिणावित

आह जति ऊणमेव

आहा अवे य कम्मे

आहाकम्म सइ धातो

आहाकम्मिय पाणग

आहाकम्मदेसिय

आहाकम्मे तिविहे

आहातच्च-पदारो

आहारउग्गमेण

आहारउग्गवो पुण

आहार उवहि देह

आहार उवहि देहे

आहार उवहि विभत्ता

आहार उवहि सेज्जा

आहारदीणस्सती

आहारमणाहारस्स

आहारमतभूसा

आहारमतरैणाति

आहारविहारादिसु

आहारादीणज्झा

आहारादुष्पादण

आहारादुवभोगो

आहारे जो उ गमो

आहारे ताव छिदाहि

आहारो व दव वा

आहारोवहिमादी

आहिडण विवित्ते

आहिडति सो णिच्च

आहेण दारगइत्तगाण

इअ अणुलोमण तेसि

इच्छाणुलोमभावे

१८४६

३५७४

६३६६

४१६२

२६५४

२६६६

५६६१

३८३५

३२५०

२६६३

४३००

१८३५

५७२

५७८१

४३५६

२११८

२५७६

५६३४

६२६६

६२३५

१६३५

२२८७

१२४

११

४३५३

२४१२

२४२१

५६६४

३८६८

४१६६

४५०६

२७१५

२७१६

३४८२

इ

इ

५५७

३०२६

सभाष्य चूर्णिनिशीथ सूत्र

इच्छामि कारणेण	१६१३		इस्सरसरिसो उ गुरु	६६२६
इट्टग-छणम्मि परिपिडताण	४४४६		इस्सालुए वि वेदुक्कडयार्	३५६३
इट्ट-कलत्त-विओगे	१६८७	३७११	इह परलोए य फल	४८१६
इतरह वि ताव गरुय	८४०		इहलोइयाण परलोइयाण	३११२
इतरेसि गहणम्मी	२४८५		इहलोए फलमेय	६१७८
इतरेसु होति लहुगा	२१०५		इह लोगादी ठाणा	४१४०
इत्तरोवि य पतावे	४४६६		इह वि गिही अविस्सहणा	२८४४
इत्तरिओ पुरा उवधी	१४३५		इहरह वि ता न कम्पइ	६०३२
इत्तरिय पि आहार	३२१५		इहरह वि ताव अम्ह	५२६८
इति एस अणुणवणा	११८१		इहरह वि ताव गधो	६०५०
इति चोदगदिट्ठ त	१३८०		इहरह वि ताव लोए	३३११
इति दप्पतो अणाइण्ण	४८६३		इहरा कहासु सुणिमो	५२६३
इति दोसा उ अगीते	४८०६		इहरा परिट्ठवणिआ	५०६७
इति सज्जमा तु एसा	५३०६		इहरा वि मरति एसो	५६६६
इति सदसण-सभासणेह	१६८६		इगाल-खार-डाहो	१५३७
इत्थि-परियार-सद्दे	२०१५		इ दमहावीएसु	२४८०
इत्थि पडुच्च सुत्त	२४६६		इदमहावीसु समागएसु	३१३३
इत्थिकह भत्तकह	११		इदियपडिसचारो	३८७८
इत्थिकहाओ कहेति	३५८३	५१५६	इदियमाउत्ताण	६१४६
इत्थी जूय मज्ज	४७६६	६४०	इदिय सलिंग गाते	४३६
इत्थी णपु सको वा	१६१४		इदियाणि कसाये य	३८५८
इत्थी पुरिस नपु सग	५०३८	६३७	इदेण वभवज्झा	४१०१
इत्थीण मज्झम्मी	२४३०		इधणधूमे गधे	८०५
इत्थीणातिसुहीण	२४३३		”	४७१०
इत्थीमादी ठाणा	४१३७		इधणसाला गुरुगा	५३६२
इत्थी सागारिण	५१६६	२५५२		
इत्थीहि णाल-वद्धाहि	१७६४		ईसर-तलवर-माडविएहि	२५०२
इधरध वि ताव सद्दे	१७७२		ईसर भोइयमादी	२५०३
इधरह वि ताव गरुय	८२८		ईसरियत्ता रज्जा	५१६०
इम इति पच्चक्खम्मी	२५८६		ईसि अधोएता वा	३७७१
इय सत्तरी जहण्णा	३१५४	४२८५	ईसि भूमिमपत्त	३४७८
इय विभरिओ उ भयव	१७८०			
इयरह वि ता ण कम्पति	५०६२			
इरिएसण-भासाण	३१७६		उजवद्धपीडफलग	४३४८
इरिय ण सोधयिस्स	४८८		उक्कोसओ जिणाण	१४१०
इरियावहिया हत्थतरे	६१४१		उक्कोसमा तु दुविहा	८०
इरियासमिति भासेसणा	३६३३		उक्कोसतिसामासे	६६०
इस्सरनिक्खतो वा	५८४२		”	५८३८

उक्कोस माउ-भज्जा	५१६७	२५१७	उच्चतभत्ति ए वा	६००२
उक्कोस विगतीओ	३४६०	२६१२	उच्चत्ताए दाण	४४६२
उक्कोसाउ पयाओ	६५४६		उच्चसर-सरोसुत्त	२८१८
उक्कोसेरा दुवालस	६०६२		उच्चारपासवणखेल मत्तए	३१७२
उक्कोसो अट्ठविधो	१४१२	४०६५	उच्चारमायरित्ता	१८७३
उक्कोसो थेराण	१४११	४०६४	"	१८८०
उक्कोसो दट्ठूण	३५१२		उच्चार पासवण	१७३२
"	३५४७		उच्चार वोसरित्ता	१८७७
उक्कोसोवधिफलए	१०१६		उच्चारति अथडिल	३७५१
उक्खिप्पत्तगिलाणो	३०७६	१६७८	उच्चारे पासवणो	१७५४
उगम उप्पादण	२०७३		उच्छवच्छणोसु सभारित	५२७७
उगम उप्पायण	१८३३		उच्छाहितो परेण व	४४४५
"	४६७२		उच्छाहो विसीदते	२६६१
"	२०६७		उच्छुद्धसरीरे वा	४०५१
"	४६६३		उच्छोलणुप्पिलावण	१८८१
उगमदोसादीया	४७१६	८४६	उच्छोल दोसु आघस	४६४१
"	४६७४		उज्जाणट्ठाणादिसु	४६५८
"	४६६५		उज्जाणट्ठालदगे	२४२६
उगमविसुद्धिमादिसु	५६३५		उज्जाणरुक्खमूले	३८७६
उगममादिसु दोसेसु	४११०		उज्जाणा आरेण	४१७०
उगममादी सुद्धो	१२७५		उज्जाणाऽऽउहणूमेण	५७४२
उगायमणुसकणे	२८६६	५७६३	उज्जाणातो परेण	४१८२
उगायमणुगए वा	२६२६	५८२३	उज्जालज्झपणाण	२१६
उगायवित्ती मुत्ती	२८६३	५७८८	उज्जुत्तण से आलोयणाए	२६८०
उगहणतणपट्ठे	१३६८	४०८२	"	२६८१
उगहवारणकुसले	३०१६	१६१६	उज्जोयफुडम्मि तु	४३२०
उग्गातिकुलेसु वि	४४१५		उट्ठ-णिवेसुल्लघण	५६६
उग्गिण्णदिण्ण अमाये	२८४६		उट्ठेज्ज णिसीएज्जा	२८८५
उग्घाताणुग्घाते	६४२१		"	६६००
उग्घातियमासाणं	६५४४		उट्ठेत निवेसते	३५५२
उग्घातिय वहते	२८६८		उड्ढद्विगमेगतर	१२३८
उग्घातिया परित्ते	४७२३	८६२	उड्ढवद्धे रयहरण	७०६
उग्घायमणुग्घातो	३५३४		उड्ढमासो तीसदिणो	६२८५
उग्घायमणुग्घाय	२८६१		उड्ढवास सुहो कालो	८६०
"	३५३३		उड्ढाहरक्खणट्ठा	३२१
"	३५५४		उड्ढाह व करेज्जा	५२६६
उग्घायमणुग्घाया	६६७५		उड्ढाह व कुसीला	४०२
उग्घायमणुग्घायो	६६४५		उड्ढमहे तिरियम्मि य	३१६३

सभाष्य चूर्णिनिशीय सूत्र

उड्ढस्सासो अपरिक्कमो य	३६३१		उद्दावण णिम्बिसए	४७६३
उड्ढ थिर अतुरित	१४३१		"	५१५१
उड्ढे केण कतमिए	१२६६		"	३३७६
उड्ढे वि तदुभए	१६७८		उड्ढिदु तिगेतए	५०१०
उण्णातिरित्तमासा	३१४८		उड्ढिमणुडिडे	४५६३
उण्णियवासाकप्पा	३२०६		उड्ढिदुओ नईओ	४२०८
उण्णिय उड्ढिय वावि	५८०२		उड्ढिसिय पेह अतर	५००८
उण्णोद्वे मियलोमे	७६०		उड्ढेसेस वाहि	३४६३
उण्होद-छगण-मट्टिय	४६३४		उडेसगा समुडेसगा	२०१६
उत्तर-ससावयाणि य	३१३६	२७४७	उडेसम्मि चउत्थे	२३५०
उत्तादिण सेसकाले	६३८८		उडेसियम्मि लहुगो	२०२२
उत्तरकरण एगग्गया	३२१६		उद्ध सित्ता य तेण	१७८१
उत्तरगुणात्तिचारा	६५२६		उद्धसियामो लोगसि	१५६५
उत्तरणम्मि पळुविते	४२२५	५६३५	उद्धियदडो गिहत्थो	६४१७
उत्तरमाणस्स णदि	८४६		उद्धियदडो साहू	६४१७
उत्तरमूले सुद्धे	१६६०	२६६४	उपचारेण तु पगत	५८
उत्तर-साला उत्तर-गिहा	२४८८		उप्पक्कमे गत	२२७२
उत्तिगो पुण छिडु	६०१८		उप्पणकारणे गतु	३२७१
उत्थाणो सहपाणे	१८७६		उप्पणारणुप्पणार	३८६४
उदुल्ल मट्टिया वा	१८४८		उप्पणो अघिकरणो	१७०८
उदुल्लादीएसु	१८५१		उप्पणो उवसगो	३६४५
उदए कप्पूरादी	३७६१	६००१	उप्पणो राणवरे	५७३६
उदए चिक्खल्लपरित्त	४२३१	५६४१	उप्पत्ती रोगण	६५०४
उदएण वातिगस्स	३५८६	५१६५	उप्परिवाडी गुरुगा	५६६०
उदग-णिग्ग-त्तेणसावयभएसु	४६२		उप्पल-पउमाड पुण	४८३८
उदगसरिच्छा पक्खेणजेति	३१८६		उप्पात अणिच्छप्पितु	३५६
उदगतेण चिलिमिणी	५३४८	२४२२	उप्पादगमुप्पणो	१८१६
उदगागणितेणोमे	५६३८		उप्पायरोसणामु वि	२०८४
उदगागणिवतादिमु	३१३२	२७४४	उव्वद्ध पवाहेती	६०११
उदरियमओ चउसु वि	५७४८		उव्वामगणुव्वामग	४०८२
उदाहडा जे हरियाहडीए	५८१६	३६६३	उव्वामग वडसालेण	१४०
उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो	५७५८	३२८६	उभओ वि अद्धजोयण	३१६२
उदुवद्धे मास वा	४६८६		उभयगणी पेहेतु	४६२७
उदहरे वमिन्ता	२६३४	५८३०	उभयट्ठातिणिविदु	२४६६
उदहरे सुभिक्षे	१६६८	१०१८	उभयधरणम्मि दोसा	४३३२
"	३४२६	"	उभयम्मि व आगाडे	१६०१
"	४८८०	"	उभयस्स नित्तिरणट्ठा	१२२६
उद्दाण परिट्ठविया	५४४	२६०६	उभयो पडिबद्धाए	५४८



”	५४६	२६१५	उवरि तु पचभइते	६४६०
उभयो सह-कज्जे वा	६५७	२३८०	उवरि तु मु जयस्ता	८२२
उम्मत्तवायसरिस	५२४७	३३२६	उवरिसते लहुग	१२८२
”	५३७०	३३२६	उवलक्खिया य उदगा	५२६१
उम्मर कोट्टिवेसु य	५७१६		उवलजलेण तु पुव्व	४२३७
उम्मादो खलु दुविधो	३६७०		उवसग-गणित-विभावित	२६७५
उम्माय च लभेज्जा	६१७७		उवसग्गवहिट्ठाण	४३६४
उम्माय पावेज्जा	३३४१		उवसमणद्ध पउट्ठे	११७३
उल्लम्मि य पारिच्छा	३७५६		उवसते वि महाकुले	३५३७
उल्लाव तु असत्तो	२६५५		”	३५५७
उल्लोम लहु दिय णिसि	११६८	३५७८	उवसतो रायमच्चो	३६७७
उल्लोमागुण्णवराणा	११६७	३५७७	उवसपयावराहे	२७६७
उल्लोयरा णिग्गमरो	५३५०		उवसामितो गिहत्थो	२८४६
उवएसो सघ, डग	१६८८	२६६२	उवस्सए य सथारे	१७००
”	१६८६	२६६३	उवस्सग णिवेसरा	३०६८
उवकरणपूतिय पुण	८१८		उवहत उट्ठिय रायरो	३६७३
उवकरणो पडिलेहा	२०८	३४६२	उवहत-उवकराणम्मि	३५७६
”	५३८०	३४३४	उवहम्मति विण्णाराणे	६२२६
उवगराण-गेण्हरो भार	५६४६	३०५७	उवहयउग्गहलभे	४६०७
उवगराण पुव्वभरित्त	५६५७	३०६५	उवहयमरागुवहते वा	४६०५
उवग्गहिता सूयादिया	६६३		उवहिम्मि पडग साडग	३०६८
उवचरग अहिमरे वा	२७६६		उवहि सुत्त भत्त पाणे	२०७१
उवचरति को गिलाण	२६७४		उवही आहाकम्म	२६६४
उवजु जिउ णिमित्ते	३५५६		उवही य पूतिय पुण	८१०
उवदेस-अगुण्वदेसा	२६२८	५८२५	उवेहपूतियपरितावण	३०८५
उवधिममत्ते लहुगा	३६०		उवेहोभासणकरणे	३०८६
उवधी पडिलेहेत्ता	१४३८		उवेहोभासण उवणा	३०८७
उवधी लोभ-भया वा	१३३३		उवेहोभासण परितावण	३०८६
उवधी सरीर चारित्त	२४४६		उवेहोभासण वारण	३०८८
उवधी सरीरमलाघव	११६५		उव्वत्त खेल सथार	२६८४
उवधीहरणे गुरुगा	१११		उव्वत्तणणीहरण	३६०६
उवभुत्त-वेरसद्धि	२२३१		उव्वत्तण परियत्तण	१७५६
उवभुत्तभोगधेरेहि	६११		उव्वत्तणमप्पत्ते	५४६५
उवरिमसिण्हा कप्पो	१६०		उव्वत्तणाइ संधार	३८८४
उवरि सुयमसद्दहण	६१८२		उव्वताए पुव्व	१६४६
उवरि पच अपुण्णे	३२६६	४३००	”	१६५५
उवरि तु अप्पजीवा	१५७		उव्वरगस्स तु असती	३००२
उवारे तु अगुलीओ	६१८	३८५०	उव्वरगे कोणे वा	१३४४

सभाष्य चूर्णानिशीथ सूत्र

उसिरो ससट्टे वा	३०५२	१६५१	एएसामण्णातरं	२७२६
उसुकादिएहि मडेहि	४३८६		"	३७७४
उस्सग्गठिई सुद्ध	५२३६	३३१८	"	४३६३
"	५३५६	"	"	४४८४
उस्सग्गलक्खण खलु	३५७१	५१४८	"	४६५३
उस्सग्गसुत किंची	५३५७	३३१६	"	४६५७
उस्सग्गसुय किंची	५२३४	"	"	६०३१
उस्सग्गाती वितहे	५०२१	६२१	एएसामण्णातरे	४३२५
उस्सग्गा पद्द-कहा य	२१३१		एएसामण्णायर	२६२६
उस्सग्गित-वाधात	८३८		एएसिं तिण्ह पी	५२१२
उस्सग्गियवाधाते	८४१		एएसिं तु पळ्ळवणा	५६२५
उस्सग्गियस्स पुव्वि	८३३		एएहि कारणेहि	३२६१
"	८४७		"	३६०८
उस्सग्गे श्रववाय	६६७२		"	३७६६
उस्सग्गे गोयरम्मी	५२३७	३३१६	"	३७७६
"	५३६०	"	"	४६१४
उस्सग्गेण णिसिद्धाणि	५२४५	३३२७	"	४८८२
"	५३६८	"	"	५६५५
उस्सग्गेण भणितानि	५२४४	३३२६	"	३१३५
"	५३६७	"	"	४०५३
उस्सग्गो वा उ ओहो	६६६८		एएहि तु उववेय	२७३३
उस्सीसग्ग-गहणेण	२१६५		एएहि य अण्णेहि य	२३६२
उस्सुत्तमणुवड्डु	३४६२		एएहि सपउत्तो	६२६३
उस्सेत्तिम पिट्ठादी	४७०६	८४०	एक्कत्तीस च दिणा	६२८६
उस्सेत्तिममादीण	४७१३		एक्कतो हिमवतो	१५७१
उस्सेत्तिममादीया	५६६६		एक्कल्ल मोत्तूण	६३३६
उहाए पण्णात	५६१०		एक्कल्लेण ण लब्भा	६३५५
ऊ			एक्कस्स दोण्ह वा	६१४४
			एक्कस्स व एक्कस व	५०६२
			एक्कहि विदिण्ण रज्जे	२५८१
			एक्क दुग्ग चउक्क	३०१८
		५२१७	एक्क पाउरमाणे	७६५
		४००६	एक्क भरेमि भाण	३४३८
			एक्कार-तेर-सत्तर	२३२५
			एक्कुत्तरिया घडळ्ळक्कएण	६५६३
			एक्कूणवीसति विभासियम्मि	६६४८
			एक्केक्कपदा आणा	१६०३
ए			एक्केक्कम्मि उ सुत्ते	६१६२
एएण सुत्त ण कय	२६५१	५८४६		
एए सव्वे दोसा	३२५२			

एक्केक्कम्मि य ठारो	५१०२	२४५४	एग ठवे रिण्विसए	१२०२
"	५२०५		एग व दो व तिण्ण व	२०७५
एक्केक्क त दुविह	५०४		एग सचिक्खाए	६२४४
"	१८६८		एगणि उण्णाय खलु	८२६
एक्केक्का उ पदाथो	५१०	४६०७	एगगितो उ दुविघो	१२२०
एक्केक्का ते तिविहा	५२१३	२५६६	एगगिय चल थिर	४२३२
एक्केक्का सा तिविघा	७११		एगगियस्स असती	१२७४
"	७१६		एगतरीज्जरा से	३६५२
एक्केक्का सा दुविहा	२६१७		"	३६६३
एक्केक्को तिण्ण वारा	६१५७		एगतरीण्विगतो	६३३०
एक्केक्को वि य तिविघो	२१६६		एगतरीय रिण्विविल्ल	३८२५
एक्केक्को सो दुविहो	५६६७	३०७६	एगारियस्स सुवरो	४५६०
एक्कोसहेण छिज्जति	६५०६		एगापण्णं व सतावीस	५७२६
एगक्खेत्तरिवासी	१०२२		एगा मूलगुरोहिं	२०६३
एगचरि मन्नता	५४४३		एगावराहुडडे	६५१३
एगट्ठा सभोगो	५६४०		एगासति लभे वा	१२६६
			एगाह पराग पक्खे	२७३८
एगतरम्मामि उवस्सयम्मि	२४०७		"	५५७६
एगतरिण्णगतो वा	५००७		एगिदियमादीसु तु	१८०८
एगते जो तु गमो	१४५६		एगिदि-विगल-पच्चिदिएहिं	५००३
एगत्य वसतारा	२३७७	४८१४	एगुरावीस जहण्णो	३५२६
एगत्य रधरो भु जरो य	११८५	३५६६	एगुत्तरिया घड्छक्काएण	६५६६
एगत्य होति भत्त	४१६०	५३०६	एगूरातीस दिवसे	३५१८
एग दुग तिण्ण मासा	२६२१		एगूरातीस वीसा	३५१७
एगपुड सगल कसिण	६१४	३५४७	"	३५४६
एगवतिल्ल भडि	३१८०		एगे अपरिणए या	५४६४
एगमरोगा दिवसेसु होति	६३२३		"	५५३६
एगमरोगे छेदो	५२८२	३३६०	एगे अपरिणते या	५५४५
एगमरण तु लोए	५१४०	२४६०	एगे उ कज्जहाणी	३८४१
एगम्मिज्जोगदारो	६४२६		एगे गिलाणपाहुड	५४६६
एगम्मि दोसु तीसु व	५११२	२२७१	एगे तु पुव्वभरिते	४५७६
एगस्स अरणाराण व	४०३६		एगेण कयमकज्ज	४७८७
एगस्स पुरेकम्म	४०७६	१८३६	एगेण तोसिततरो	६०८१
एगस्स वितियगहरो	४०८५	१८४२	एगेण समारद्धे	४०८६
एगस्स माराजुत्त	४४६८		"	४०८६
एग उदुवद्धम्मि	२१६६		एगेण बघेण	७४३
एग च दोव तिण्ण व	३८३१		एगेरोगो छिज्जति	६५०५
"	३८३८			

सभाष्य चूर्णिनिशीथ सूत्र

एगे तू वच्चते	५४८६	५३६१	"	५६२५
"	५५४६		"	५६८६
एगे महाराणसम्मी	११८२	३५६३	एतेण मज्झ भावो	४४२८
एगेसि ज भणिय	३३१६		एतेण उवातेण	१४६१
एगो इत्थिगमो	५४५६		एते तु दवावेति	१३६६
एगो गिलाणपाहुड	६३३६		एते पदे ण रक्खति	१३३८
एगो णिद्धिसतेग	४५६४		एतेसामण्णतर	६२३
एगो व होज्ज गच्छो	१६५७	१६१५	"	६३३
एगो सघाडो वा	३०३०		"	६४१
एगो सथारगतो	३८४८		"	६४६
एतएतारागाढे	४६३		"	१०७३
एतद्दोसविमुक्कं	१६४२		"	१५०२
"	५०६४		"	१५४०
"	६३४१		"	१५८६
एतविहिमागत तू	५४६३	५४३६	"	१६२१
एत खलु आइण्ण	८६८		"	१८१४
एत चिय पच्छित्त	१६०२		"	२१५७
एत त चेव घर	१४६६		"	२१८३
एत तु परिभाहित	१८६६		"	२२२४
एत सदेसाभिहड	१४८७		"	२४६५
एताइ सोहितो	१८३८		"	२५१४
एताणि वितरति	२५८४		"	२६८३
एतारिसमि देतो	४६६		"	२७१०
एतारिसांमम वासो	५२३२		"	३७४०
एतारिस विउसज्ज	५४६५	५४३८	"	४४६६
"	६३३८	"	"	४६७०
एतारिस विओसज्ज	५५४६	"	"	५६५६
एतारिसे विओसेज्ज	५५३७	"	"	६२५६
एतासि असतीए	१७७५		एतेसामण्णतरे	६०८
एतविहिमागत तू	५५३५		"	६१६३
एते अण्णे य तहि	३८२६		"	६१७०
"	३८३६		"	७७१
एते उ अघेप्पते	५०३०		एतेसामण्णयर	७२७
एतेच्चिय पच्छित्ता	३३७		"	८७३
एते चेव गिहीण	३३८		"	८८४
एते चेव दुवालस	१३६५		"	८८६
एते चेव य दोसा	४२५०		"	१२२१
"	५६२२		एतेसि असणादी	५६२६

एतेसि असतीए	४४६	एत्तो गिक्कायणा	६५७५
एतेसि कारणाणं	३३५०	एत्तो समारुभेज्जा	६६१८
एतेसि च पयाणं	५६७३	३०८२ एत्तो हीणतराग	१८६५
एतेसि तु पदार्णं	२१३५	एत्थ उ अणभिग्गहियं	३१५१
"	४६२७	एत्थ उ पणण पणण	३१५३
एतेसि तु पयाणं	५६७५	३०८२ एत्थ किर सन्नि सावग	५७३८
एतेसि पढमपदा	१४६६	एत्थ पडिसेवणाओ	६४२२
एतेसि परूवणाता	३१०६	"	६५८१
एतेसु उ गेण्हते	४७६५	एत्थ पुण एक्केक्के	६१६४
एतेसु चिअ खमणादिएसु	२८	एमादि अणागय दोसरक्खण्णु	३४४१
एतेह सथरत्तो	२६६८	एमादिकारणेहिं	२४५४
एतेहिं कारणेहिं	८६१	एमेव अगहितम्मि वि	११३३
"	१०६७	एमेव अछिण्णोसु वि	४५५६
"	११२७	एमेव अट्टजात	३६८
"	१२१६	एमेव अतिक्कते	१०७६
"	१३०८	४६०८ एमेव असण्णिहिते	२२२६
"	१५५०	एमेव अहाल्लदे	५५६७
"	१५६८	एमेव इत्थिवग्गे	४५६५
"	१५७५	एमेव उग्गमादी	२६७७
"	१५८२	एमेव उत्तिमट्ठे	३४२४
"	१७४६	एमेव उवहिसेज्जा	६२०१
एत्ते होति अपत्ता	६२२८	एमेव उवज्जाए	२८२१
एत्तो एगत्तरीए	७८३	एमेव कतिवियाए	१३२६
एत्तो एगत्तरेण	१६२	एमेव कागमादिसु	४४२६
"	७३६	एमेव गणायरिए	२८०६
"	६८०	"	२६०७
"	१०८४	एमेव गणावच्छे	५५५०
"	१०६१	एमेव गिलाणे वी	१३३६
"	१०६७	एमेव गिहत्थेसु वि	३४७
"	१३५६	एमेव चरिमभगे	३७८४
"	१४५१	एमेव चरिमभगो	२६३३
"	१५५६	एमेव चाउलोदे	५६७५
"	१५७०	एमेव चारणभडे	१३२२
"	१५७८	एमेव चिण्णुदिसु	५३३७
"	१८५०	एमेव चेइयाण	४५८०
"	२१६०	एमेव एव विकप्पा	१८३६
"	३३४०	एमेव ततियभगे	३७८३
"	६०२५	एमेव ततियभगो	३४२२

सभाष्यचूर्ण निशीथसूत्र

एमेव तिविहकरण	६०३६		एमेव य सच्चित्	४७६७
एमेव तिविहपात	४४६०		एमेव य समशीण	६१६६
एमेव तु सजोगा	४२४१		एमेव विहारम्मी	१०६५
एमेव तेल्ल-गोलिय	५७५०	३२८१	एमेव समणवग्गे	२६७१
एमेव थभकेयण	३१६०		एमेव सजईण वि	४६०१
एमेव दसणम्मि वि	३८७०		एमेव सजतीण	४६३६
एमेव दसणे वी	६३६५		एमेव सजतीण वि	२०७६
एमेव देहवातो	२४२		"	४६४८
एमेव पउत्थे भोइयम्भि	५०५५	२८००	एमेव सेसएसु वि	५०७
एमेव पउलितताऽपलिते	४६४३	१०८०	"	२६१६
एमेव वारसविहो	५२१४		"	२६३६
एमेव वितियभगे	३७८०		"	२७१७
एमेव वितियसुत्ते	५४४२		"	२७६२
एमेव भावतो वि य	४६०३	१०४०	"	३३७७
एमेव भिक्खगहणे	२६०६	५८०६	"	४१४५
एमेव मज्जणादिसु	५०४८	६४७	"	६००४
एमेव मामगस्स वि	५०२६	६२८	एमेव सेसएहि वि	४२३८
एमेव य अणवे वी	४६४०		एमेव सेसगम्मि वि	३२३०
एमेव य अवराहे	६३७७		एमेव सेसगाण वि	२०८२
एमेव य ओममि वि	३४८		एमेव सेसियासु वि	४३८६
एमेव य इत्थीए	२७१२	५०८०	एमेव होइ इत्थी	५२२१
एमेव य उदितो त्ति य	२६१२	५८०६	एमेव होति उवरि	२५७
एमेव य उवगरणे	५०६३		"	३४६८
एमेव य कम्मेण वि	४३६		"	५७०२
एमेव य गेलण्णे	२६२४	५८२१	एमेव होति नियमा	४४८३
एमेव य जतम्मि वि	४५२१		एमेवोवधिसेज्जा	१८३७
एमेव य छेदादी	३५२१		एयगुणविप्पमुक्के	३०१७
एमेव य ण्हाणादिसु	२०३०	१६७६	एयगुणविप्पहण	३१०८
एमेव य णिज्जीवे	४८५६	६६६	एयगुणसमगस्स तु	३११३
एमेव य पडिबिम्ब	४३२४		एयविहिमागय तु	५५४४
एमेव य पप्पडए	१६६		एयस्स एत्थि दोसो	२८३८
एमेव य परिभुत्ते	४१०६	१८६७	"	५१५२
एमेव य पासवणे	६१२०		एयस्स णाम दाहिह	३०३८
एमेव य पुरिस्ताण वि	५०४०	६३६	एव चेव पमाण	५८३६
एमेव य भयणादी	४६३४	१०७१	एय तु भावकसिण	६६६
एमेव य भिक्खुस्स वि	६६३५		एय सुत्त अफल	१५४६
एमेव य वसभस्स वि	८६३२		एयाइ अकुब्बतो	४३७४
एमेव य विज्जाए	३७१५		एयाणि य अण्णाणि य	२७२८

एयाणि सोह्यतो	४६७३		एव जायणवत्थ	५०५०
"	४६६४		एव राम कप्पती	३२४८
एयारिसम्मि वासो	५३५५	३३१४	एव ता असहाए	४७४३
एयारिसे विहारे	३३८१	२७८२	एव ता उडुवद्धे	१२३२
एरवति कुणालाए	४२२६	५६३६	एव ता गिहवासे	३०४६
एरवति जत्थ चक्किय	४२४३	५६५३	एव ता गेण्हते	५०५७
एरवति जम्मि चक्किय	४२२८	५६३८	एव ता जिणकप्पे	४१४८
एरिसओ उवभोगो	५१०५	२४५७	एव ता एीहरण	१२८६
एरिसय वा दुक्ख	४४३५		एव ता पच्छित्त	३१११
एरिससेवी एयारिसा	३५८७		एव ता सचित्ते	१५३
एवइय मे जम्म	१०३६		एव ता सव्वादिसु	३३५८
एवमपि तस्स गियय	२६५८		एव ता सविगारे	५२०६
एवममखडे वी	११०		एव ताव अभिण्णो	४६६८
एवमुवस्सय पुरिमे	२६७३	५३४६	एव ताव दिवसओ	२६३६
एव अड्डोक्कती	३५२६		एव तावऽडुगु छे	४७२८
एव अट्ठाणादिसु	४८७६		एव ताव विहारे	४५८६
एव अलव्भमाणो	१२३७		एवतियाण गहणो	६४५
एव अवायदसी	४१५४	५२७६	एव तु अगीयन्थे	२८०१
एव आम ए कप्पति	४८६७		एव तु अण्णसभोइएसु	१६५६
एव आलोएति	३८७४		एव तु अलव्भते	५०१७
एव उगममदोसा	४१८५		एव तु असढभावो	१८६४
एव उभयविरोधे	११२५		एव तु अहाछदे	३५०१
एव एककेक्क तिग	५२२२	२५६६	एव तु केइ पुरिसा	३५७६
एव एककेक्कदिण	२८०५	५७७१	एव तु गविट्ठेसु	५०४६
"	२८२५	"	एव तु दिया गहण	१६८०
एव एत्ता गमिया	६४५२		एव तु पयतभागस्स	५७५
एव एत्ता गमिया	६४५७		एव तु पाउसम्मी	३१२८
एव एया गमिया	६४४६		एव तु भु जमाण	५७७८
एव एसा जयणा	४६३१	१०६८	एव तुमपि चोदग	६४१४
एव खलु उक्कोसा	३८८६		एव तु समासेण	६४६५
एव खलु गमिताण	६४६२		एव तु सो अवहितो	२७०७
एव खलु जिणकप्पे	१४४४		एव तेसि ठिताण	४६३७
एव खलु ठवणाओ	६४६३		एव दव्वतो छण्ह	४७७३
एव खलु सविग्गे	५५६४	५४६३	एव दिवसे दिवसे	२८००
एव गिलाणलक्खेण	२६८६	१८६१	एव परोप्परस्सा	१७६३
एव च पुणो ठविते	१६३६	१५६१	एव पाओवगम	३६२२
एव च भणितमेत्तम्मि	५२६०	३३६६	एव पाउसकाले	२२६५
एव चिय पिसितेण	४३८		एव पादोवगम	३६७५
एव चेव पमाण	६६१		एव पि अठायते	५५८१

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

एव पि अठायतो	२७४३	५४८१	एसा सुत्त अदत्ता	६२५२
एव पि कीरमाणे	३००७	१६१०	एमेव कमो गियमा	५८७
एव पि परिच्चत्ता	४१८८	५३०७	"	५६०
एव पीतिविबड्डी	४१७५	५२६४	एमेव गमो गियमा	६००
एव पुच्छासुद्धे	५०४४	६४३	"	६१३
एव फासुमफासु	४०६१	१८१८	"	८३५
एव वारसमासा	६५५२	"	"	८४४
एव वारसमासे	७८०४	५७७०	"	६६८
एव भगतो दोसो	२६५०	"	"	१००८
एव वितिगिच्छे वी	७६१८	५८१५	"	१२६७
एव वि मग्गमाणे	७५८	"	"	१३०६
"	७६७	"	"	१४८८
"	८४३	"	"	१७७७
एव सड्डकुलाड	१६३४	१५८६	"	१६६५
एव सण वच्च मु ज चिप्पिते	८२७	"	"	२०२८
एव सण्णित्तराण वि	३५३६	"	"	२३०७
एव सिद्ध गहण	४५४०	"	"	२५२५
एव सुत्तगिववो	१२२३	"	"	२६४०
एव सुत्त अफल	४१७१	५२६०	"	३०६४
"	५२०८	२५६१	"	३२६८
एस गमो वज्जामीसएण	४२८	"	"	४६६४
एस तव पडिवज्जति	१८८६	५५६७	"	४६६७
"	२८८०	"	"	४८६०
"	६५६५	"	"	४८६६
एस तु पलवहारी	४७८२	६२३	"	५१६३
एस पसत्थो जोगो	५६६१	"	"	५२२३
एसमणाइण्णा खलु	१४७८	"	"	५८७१
एस विही तु विसज्जिते	५४६०	५४३४	"	५६३१
एसण दोसे व कते	१६४४	१६०३	"	५६४८
एसणमादी भिण्णो	४३२	"	"	६६६४
एसणमादी रुद्धादि	४४३	"	एमेव गमो नियमा	१७८२
एसा अविही भणित्ता	४०८४	१८४१	"	२८५४
एसा आइण्णा खलु	१४६२	"	"	३३१०
एसा उ अगीयत्थे	६३५८	"	"	५५५१
एसा उ दप्पिया	४६४	"	"	६६६५
एमा खलु ओहेण	५१६७	"	एसेव चतुह पडिसेवणातु	६१
एसा विही विसज्जिते	५५३३	"	एसेव य दिट्ठतो	४८६६
			"	६५०८



एसेव य विवरीओ	४२३
एसो उ असज्भाओ	६११७
एसो उ आमविही	४७१७
एसो वि ताव दमयउ	२७८३
एहि भणितो त्ति वच्चति	६२११

## ओ

ओकच्छिय-वेकच्छिय	१३६६
ओगासे सथारो	३८६
ओगाहरण्ण सासतणगाए	५१
ओदइयादीयाए	३१४१
ओदण-गोरसमादी	२४६३
ओदण मीसे णिम्मीसुवक्कडे	४६३८
ओदरिए पत्थयणा	५६६७
ओधोवधी जिणाए	१३८६
ओवद्धपीढफलय	५७६८
ओभामिओ मि	१५६४
ओभावणा पवयणे	१०८५
ओभासणा य पुच्छा	५८६४
ओभासिय पडिसिद्धो	४४४८
ओमम्मि तोसलीए	४६२३
ओम ति-भागमद्धे	२६६१
ओमथ पाणमादी	५८६५
ओमाणस्स व दोसा	१६८४
ओमादिकारणेहि व	५५१६
ओमे एसण सोही	५७०६
ओमे तिभागमद्धे	४२६
”	३६६५
ओमे वि गम्ममाणे	१७६
ओमे सगमथेरा	४३६३
ओमोयरियागमणे	५७०७
ओमोयरिया य जहि	४७६७
ओयब्भूतो खेत्ते	४८१८
ओरोहवरिसणाए	५७०८
ओलगाणमणुवयण	१४५६
ओलविज्जण समपाइत्त	३८०४
आलोगम्म चिलिमिली	६१६२
ओवट्टिया पदोस	४३८५

ओवासादिसु सेहो	४००
ओवासे सथारे	१०१५
”	१०१७
ओसक्कण अहिसक्कण	१००६
ओसट्टे उज्झिय-धम्मिए	२४६४
ओसवरण अधिकरणे	२११६
ओसण्णमलक्खणसज्जुयाओ	४२६७
ओसण्णाऽपरिमोगा	४६५६
ओसण्णे दट्ठूण	३०८
ओसण्णो वि विहारे	५४३६
ओह अभिग्गह दाण	२०७०
ओहरिणसीह पुण	६६६७
ओहाण ता अज्जो	३६७८
ओहाणाभिमुहीण	१७०४
ओहातिय-कालगते	२७५१
ओहादीया भोगिणि	२५७२
ओहारमगरादीया	४२२३
ओहावता दुविहा	४५७८
ओहावित-उस्सण्णे	५५६२
ओहावित ओसण्णे	२७५५
ओहावित-कालगते	५५८६
ओहिमणा उवउज्जिय	३५६०
ओहीमाती णानु	२५८३
ओहे उवग्गहम्मि य	१३८७
ओहे एगदिवसिया	६३१५
ओहे वत्त अवत्ते	५५२८
ओहे सव्वणिसेहो	५२०२
ओहेण उ सट्ठाण	६६८१
ओहेण विभागेण य	२०१७

## क

कक्खतक्खवेगच्छिताइसु	४६३०
कच्छादी ठाणा खलु	४१२७
कजकारणसवधो	६६७
कज्जमकज्ज जताऽज्जत	६६५४
कज्जविवात्ति दट्ठूण	६२०५
कज्ज णाणादीय	५२४६
”	५३७२

सभाप्यचूर्णि निशीयसूत्र

कञ्जे भत्तपरिण्णा	२७६८		कमडगमादी लङ्गुगो	२४०
"	६३७३		कमरेणु अवहुमाणा	५७८३
कटुकम्मादि ठाणा	४१३६		कम्मचउक्क दब्बे	५००
कट्टेण किलिचेण व	१८७५		कम्मपसगइणवत्था	२०६४
कट्टेण व सुत्तेण व	४६१६	१०५६	कम्मपसत्थपसत्थे	४१२०
कट्टे पोत्ते चित्ते	५११८		कम्ममसखेज्जभव	३६०२
"	५१५४	२४६६	"	३६०३
कडओ व चिलिमिली वा	२२२	३४५१	,	३६०४
"	५३६६	३४५१	"	३६०५
कडगाई आभरणा	२२६५		कम्मस्स भोयणस्स य	४४०
कडगादी आभरणा	५६१४		कम्म कीत पामिच्चिय च	५४१७
कडजोगि एक्कगो वा	१६६३	२६६७	कम्मादीण करण	६६८२
कडजोगि सीहपरिसा	३४४३	२८६६	कम्मे आदेसदुग	४६४७
कडिपट्टण य छिहली	३६१०	५१७७	कम्मे सिप्पे विज्जा	३७१२
कडिपट्टओ अभिणवे	३६११	५१७८	"	३७१३
कणगा हणति काल	६१४७		कयकरणा इतरे या	६६४६
कण्णतेपुरमोलोअणोण	४८५१	६६१	कयम्मि मोहभेसज्जे	३८०६
कण्ण सोधिस्सामि	६८३		कयमुह अकयमुहे वा	४६६८
कतकञ्जे तु मा होज्जा	६२७		कयवर-रेणुच्चार	२३१८
कतगेण सभावेण व	१३३०	५५७	करतुयभत्तमलद्ध	४४४२
कतजत्तगहियमोल्ल	३७२१		करणे भए य सका	४७३
कतर दिस गमिस्ससि	३१४	६०८५	कर पाद डडमादिहि	४७६०
कत्तरि पयोयणापेक्ख	४४१६		कर-मत्ते सजोगो	१४६
कत्तो ति पल्लिगादी	३४४७		कलमत्तातो अदामल	१५८
कत्थइ देसग्गहण	५२३६	३३२१	कलमाददामलगा	१५६
कत्थति देसग्गहण	५३६२	३३२१	"	१८६
कप्पट्ट खल्लण	१३०३	८६०२	कलमेत्त एवर्णि रोम्म	४०३५
कप्पट्ट दिट्ठ लहुओ	४७२६		कलमोदणा वि भणिते	३८५३
कप्पट्टियो अह ते	२८७६		कलमोदणो य पयसा	३८५४
"	६५६४		कलमोयणो य खीर	३०२५
कप्पडियादीहि सम	३४५८		कवडगमादी तवे	३०७०
कप्पति ताहे गारत्थिएण	८०३		कव्वाल उड्डुमादी	३७२०
कप्पति तु गिलाणट्ठा	५६४४	३०५०	कसाय-विकहा-विथडे	१०४
कप्पति ममेसु तह	४०६६		कसिणत्तमोसहीण	१५८३
कप्प-पकप्पा तु सुते	६३६५		कसिण पि गेण्हमाणो	६३६
कप्पम्मि अकप्पम्मि अ	४८६६	१००५	कसिणाए त्वणाए	६४६४
कप्पा आतपमाणा	५७६४	३६६६	कसिणाह्वणा पडमे	६४१८
कप्पासियस्स असती	७६३	३६६८	"	६४१६
			कसिणाउविहिभिण्णम्मि य	४६१५

कसिणो चतुर्विधम्मी	६७२		कामं आउयवज्जा	३३२३
कसिणा कसिणा एता	६४६६		काम उदुविवरीता	२०५८
कस्स घर पुच्छिऊण	४४४६		काम कम्मणिमित्त	५१५
कस्स त्ति पुच्छियम्मी	५०२४		काम कम्म पि सो कप्पो	५६६०
कस्स त्ति पुरेकम्म	४०६४	१८२१	काम खलु अणुगुणो	४८५६
कस्सेते तराफलगा	१२६०	२०३८	काम खलु अलसदो	३५०४
कस्सेयति य पुच्छा	१७८८		काम खलु चेतणा	५६७४
कस्सेय पच्छित्त	४७६५	६३६	काम खलु धम्मकहा	४३५४
कहिता खलु आगारा	२३४१		काम खलु परकरो	१६२३
कहितो तेसि धम्मो	५७५३	३२८४	काम खलु पुरसदो	४०६२
कचणपुर इह सण्णा	३८४६		काम खलु सव्वण्ण	४८२२
कजियआयामासति	२००		काम जिणपच्चक्खो	५४३४
कजिय चाउलउदए	३०५६	१६५८	काम जिणपुव्वधरा	६६७४
कटगमादी दव्वे	६२६३		काम तु सव्वकाल	३१७७
कटगमादीसु जहा	१८८३	५५६६	काम देहावयवा	६१७२
कटगट्टि खाणु विज्जल	४७३६	८८१	काम पमादमूलो	६६६०
कटगट्टि मच्छि विच्छुग	४१७		काम पातधिकारो	४५२२
कटगट्टिमातिएहि	४७४१	८८३	काम ममेत कज्ज	६४०६
कटाइ-साहणट्ठा	२६५३		काम विभूसा खलु लोभ-दोसो	५८१८
कटादी पेहतो	६२६	३८५८	काम विसमा वत्थू	६४०४
कटाहिंसीतरक्खट्ठा	६३१	३८६३	काम सत्तविकप्प	३३१५
कडादि लोअ णिसिरण	१८०७		काम सभावसिद्ध	३१
कहूसग-वधेण	२१७५		काम सव्वपदेसु	३६४
कतार-णिग्गताण	२५२८		कामं सुओवओगो	६०६७
कदप्पा-परवत्थ	३१८		कामी सघरज्जणओ	४६८७
कदादि अभु जते	५६६८	३११३	कामी सघरज्जणतो	४६६५
काइयभूमी सथारए य	३१५६		कयकरणा इतरे या	६६४६
काउस्सग्गमकातु	१५६६		कायल्लीण कातु	२८५
काउ सय ण कप्पति	८३६		काय परिच्चयतो	४७६१
काऊण अकाऊण व	२८५६	५५८६	कायाण वि उवओगो	३६५
काऊण मासकप्प	२०३८	१६८७	काया वया य तच्चिय	३३०८
"	३१४५		कायी सुह्वीसत्था	१६७१
"	३१५६	४२८६	कायेहज्जिसुद्धपहा	१४७६
काएण व वायाए	२२५८		कारण अणुण्णा विहिणा	५८१५
काओवचिओ वलव	३६१०		कारण एग मडवे	२४१०
काकणिवारणे लहुओ	३८४		कारणओ सग्गामे	६०४२
काणच्छि रोमहरिसो	२३३६		कारणगहरो जयणा	६०५३
काणच्छिमाइएहि	५१४५	२४६५	कारणगहिउव्वरिय	३३६६
कातुग य पणाम	५५२६			

सभाष्यचूर्णि निशोथसूत्र

कारणजाए अबहडो	२७०६	५०८४	कालो समयादीयो	३१४३
कारणतो अबधीए	१६६८	३७२०	कालो सभा य तथा	६१३२
कारणपडिसेवा वि य	४५६		कावालि ए थ भिक्खू	५०७७
कारणमकारण वा	६६५३		कावालि ए सरक्खे	३६२२
कारणमकारणो वा	२०८७		कासातिमातिज पुव्वकाले	५०१३
"	३५०६		काहीगा तरुणेषु	५२२५
कारणमणुण-विधिणा	२०८६	३६६२	काहीता तरुणीसु	५२१६
कारणलिगे उड्ढोरगत्तणा	४६६७		"	५२२४
कारणणुपालगण	३२६८		काहीया तरुणेषु	५२१५
कारणिए वि य दुविधे	१०६१		किड्ड तुयट्ट अणाचार	१३११
कारणो उड्डुगहिते	३१७१		कितिकम्म च पडिच्छति	२८८४
कारणो विलगियव्व	६००६		कितिकम्म तु पडिच्छति	६५६६
कारणो सपाहुडि-ठित्ता	१३४३	५६६	कितिकम्मस्स य करणो	२०७२
कारणो हिसित मा	४६३६		किमणाऽऽभव्व गिण्हसि	२७७५
कारावणमभियोगो	५८६		किरियातीय रानु	१७५६
कालग्ग सव्वद्धा	५४		किवणेषु दुव्वलेसु य	४४२४
कालगतम्मि सहाये	४५६२		किह उप्पण्णो गिलाणो	३००५
कालचउवक उवकोसएण	६१५२		किह भिक्खू जयमाणो	६३०४
कालचउवके रणारत्तग	६१४५		किह भूताणुवधातो	६२६
कालदुगातीतादीणि	१०१४		कि आगतऽथ ते विति	३३८०
कालसभवाणुमतो	३८८८		किं उवधातो धोए	४१०७
कालातिक्कमदाणे	१६७५	३६६६	कि उवधातो हत्थे	४१०५
कालादीति काले	३८७		कि कारण चकमण	३८२०
कालियपुव्वगते वा	५५२३	५४२५	कि कारण चमदणा	१६३२
कालियसुय च इसिभासियाणि	६१८८		कि काहामि वराओ	२६८३
कालुट्ठाई कालनिवेसी	५६७४	३०८३	किं काहिं ति ममेते	१७४१
कालुट्ठादीमादिसु	५६६२	३१०२	कि काहिंति मे वेज्जो	३०७६
कालेण अपत्ताण	३२३७	४२६२	कि गीयत्थो केवल	४८२०
कालेण पुण कप्पति	५६७३		कि च मए अट्ठो भे ?	१७८६
कालेणोवतिण	३२३५	४२६०	किं दमओ ह भते	५०३४
काले अपहुप्पते	२३६७	४८०५	कि पत्तो णो भुत्त	३८६०
काले उ अणुण्णते	४१६०	५२८२	किं पुण अणगारसहायएण	३६१३
काले उ सुयमाणो	२६४३		किं पुण जगजीवसुहावहेण	५६४२
काले गिलाणवावड	२६५४		किं पेच्छह ? सारिच्छ	१६८८
काले तिपोरिसड्डु व	६१०१		किं मण्णे णित्तिगमण	५६३८
काले वा पेच्छामो	१२६०		कि वच्चसि वासते	३०२
काले विणये बहुमाने	८		कि वा कहेज्ज द्वारा	४४८२
काले सिहि-णदिकरे	२२६३		किचण अट्ठा एएहि	०४७२
कालो दव्वऽवतरती	१०१२			

कीयकड पि य दुविह	४४७५		केवल-मणोहि-चोद्स	५४२४
कीय किणाविय अणुमोदित	४४७४		केवलवज्जेसु तु अतिसएसु	५६६२
"	६०३०		केवलविण्णे अत्थे	४८२६
कीवस्स गोण्णराम	३५८८	५१६४	केसव-अद्दवल पण्णवेति	१४१
कीवे दुट्ठे तेणे	३७४२		केसि चि अभिग्गहिता	१६४७
कीस ए राहिह तुम्हे	५०२५	६२४	केसि चि एव वाती	३५४६
कुच्छणदोसा उल्लेण	८५०		केसि चि होतऽमोहा	६०६०
कुच्छित्तलिग कुलिगी	६६		को आउरस्स कालो	१०
कुज्जा व पच्छकम्म	४६५०		कोई तत्थ भरोज्जा	३२४७
कुज्जा वा अभियोग	४०२८		कोउग-भूतीकम्म	४२८७
कुट्टिस्स सक्करादीहि	६३३	३८६५	कोउय-भूतीकम्मे	४३४५
कुड्डतरिया असती	१७२८	३७५०	कोउहल च गमण	५६३
कुतित्थ-कुसत्थेसू	३३५३		को गेण्हति गीयत्थो	५८५४
कुत्तीय-सिद्धाणिहण	५८५८	४०३३	को जाणति केरिसओ	५१०३
कुलमादिकज्ज दडिय	६३४	३८६६	कोट्टगमादिसु रन्ने	४७३२
कुलवसम्मि पहीणे	२२४२	४६४८	कोट्टागारा य तथा	२५३४
"	२३५१	५२५४	कोट्टिय छण्णे उविट्ठ	४०४७
कुलसथवो तु तेसि	१०६६		कोट्टियमादीएसु	५६५४
कुलिय तु होइ कुड	४२७३		कोणायमादी भेदो	५०८
कुलियादि ठाणा खलु	४२७२		कोणामेकमरोगा	१२०८
कुवणय पत्थर लेट्ठ	४७७४	६१५	को दोसो को दोसो	३४१६
कुसमादि अभुसिराइ	१२२६		को दोसो दोहिं भिण्णे	४८४६
कुसलविभागसरिसओ	६४०६		कोद्वपलालमादी	४७११
कु चित मल्ले मालागारे	६३६६		कोधम्मि पिता पुत्ता	२६२
कु भार-लोहकारेहि	४०१५	३८३८	को पोरिसीए काले	५८२३
कूयति अदिज्जमारो	३८४३		को भते परियाओ	२८७०
कूयरदसमसोससीता	५६३६		"	६५८४
कूरो एासेइ खुव	३७८६	५६६६	कोमुति गिणा य पवरा	२२६४
केइत्थ भुत्तभोई	५१०४	२४५६	कोयी मज्जरुगविही	३०३७
केइत्थ भुत्तभोगी	२५४७	२४५६	कोला उ घुणा तेसि	४२६०
केई परिसहेहि	३६२३		कोलालियावणा खलु	५३६०
केई पुव्वणिसिद्धा	६३४४		कोल्लतिरे वत्थव्वो	४३६२
केण पुण कारणेण	६४२५		कोल्लपरपरसकलिया	१३४६
केणुवसमिओ सड्ढो	८८०		को वा तथा समत्थो	५४२७
केयि अहाभवेण	१४५०		को वोच्छित्ति गेलण्णे	३०६५
केलासभवणे एते	४४२७		कोसग एाहरक्खट्ठा	३४३३
केवइय आस-हत्थी	२३६६	४८३३	कोसवाऽऽहारकए	५७४४
केवल मणपज्जवराणिणो	६४६७			

सभाष्यचूणि निशीथसूत्र

कोसाऽहि-सल्ल-कटग	३४३७
कोहा गोणादीण	३२८
कोहा वलवागव्भ	४४०८
कोहाई परिणामा	४२६५
कोहातिसमभिभूयो	३५६
कोहादी मच्छरता	३५५
कोहेण ए एस पिया	२६३
कोहेण व मारोण व	३४०
”	३१६
कोहो वलवा-गव्भ	२६६६

ख

खग्गुडेण उवहते	४५८१
खणमारो कायवधो	६२४
खत्तिमादी ठाणा	२५६७
खद्धादाणि य गेहे	३१८६
खमग्रोसि ग्राममोण	६२५४
खमण मोहतिगिच्छा	३३६८
खमणेण खामिय वा	३६६०
खमणे वेयावच्चे	२७
खय उवसम मीस पि य	५४३०
खरए खरिया सुण्हा	४०५०
खर-फरुस-णिट्ठर णो	२६१४
काँल फरुस-णिट्ठुराड	२८१७
कात्तिणभीओ रुट्ठो	६६२५
कालुत्था महिङ्गिगणिया	५१७८
कात्तुगे एक्को वधो	६३८
काल्लाडगम्मि खड्डुगा	६४१३
कडे पत्ते तह् दव्भ	१६८२
कमतादिसिद्धजेते	१३६५
क्वत्तिखम महुविय	३१०५
खते व भूणते वा	१३६२
खधकरणी चउहत्थ विट्थरा	१४०७
खधादी ठाणा खलु	४२७५
खधारभया णासति	१३३२
खधाराती णातु	१३५३
खधे दुवार सजति	१५२५
खधो खलु पायारो	४२७६
खागुगमादी मूल	३१०

खागू कटग-विसमे	५८३०
खामित विउसविताइ	१८१८
खित्तम्मि खेत्तियेस्सा	५४८६
खिप्प मरेज्ज मारेज्ज	४२८६
खिवणो वि अपावतो	४७७५
खिसा खलु ओमम्मि	२६३८
खीर-दधिमादीहि	२२८३
खीर-दहीमादीण य	४१८१
खीर-डुम-हेट्ठ पथे	१५१
खीराहारो रोवति	४३७७
खीरुहोद विलेवी	२३१
खीरोदणो य दव्वे	३८५२
खुज्जाई ठाणा खलु	२६०४
खुड्डग । जणणी ते मता	३०७
खुड्डागसमोसरणेसु	४५७५
खुड्डी थेराणप्पे	१६८४
खेतस्स उ पडिलेहा	२४५१
खेतवहिता व आणे	३००१
खेत्तमहायणजोग्ग	८५६
खेत गतो य अडवि	३४६६
खेत्त ज बालादी	५६६६
खेत्ततो खेत्तवहिया	२६४२
खेत्ततो णिवेसणादी	४७२६
खेत्ता नोयण-उड्डी	२६६२
खेत्तारक्खिनिवेयण	५५३१
खेत्तोऽय कालोऽय	४८१७
खेत्तोवसपयाए	५५०५
खेल-पवात-णिवाते	१२७३
खेवे खेवेलहुगा	४०४०
खोडादिभगऽगुग्गह	६२६५

ग

गग्गरग दडिवलित्तग	७८२
गच्छगहणो गच्छो	३४१३
गच्छपरिरक्खण्डा	४३६६
गच्छम्मि एस कप्पो	१६२७
गच्छम्मि य पट्टविते	२८१६
गच्छसि ण ताव कालो	८५७
गच्छसि ण ताव गच्छ	३१३

गच्छती तु दिवसतो	१६५		गहण तु अघाकडए	७८५
गच्छा अणुगयस्सा	२७९६	५७६२	गहणमि गिण्हिऊणं	६७७
गच्छाणुकंपण्डा	४५३		गहणाईया दोसा	२५३५
गच्छुत्तरस्वगे	६४४०		गहणो पक्खेवमि य	१६०
गच्छे अप्पाणमि य	४३१		गहिए व अगहिए वा	३२०६
गच्छे व करोडादी	३२८३		गहितम्मि अद्धरत्ते	६१५४
गच्छो महाणुभागे	१६२६		गहित च तेहि उदग	५२७८
गच्छो य दोणिण मासे	२८०२	५७६८	गहिते उ पगासमुहे	४५५७
गणचित्तगस्स एत्तो	५०११	३९८८	गहिते व अगहिते वा	३७२४
गणराण पमाणेण य	२१६५		गहितेहि दोहि गुरुणा	४५५८
„	५७८५		गगाती सक्कमया	३३५४
गणराणते पमाणेण व	५८२५	४००२	गठीछेदगयहियजणदव्वहारी	३६५५
गणभत्त समवाओ	२४७९		गडघोसिते बहुएहि	६१३०
गणि आयरिए सपय	२९३५	५८३१	गड च अरतियसि	१५०५
गणिणिसरिसो उ थेरो	५३३६	२४११	गडादिणमु किमिए	१५१०
गणि णिसिरणे परगणे	३८१४		गडी कच्छवि मुट्ठी	४०००
गणि णिसिरम्मि उवही	३८१९		गडी-कोढ-खयादी	४८८६
गणि-वसभ-गीय-	४८९२	१०३०	गतव्वदेसरागी	५६५९
गणिवायते बहुसुते	२६१८	६०९०	गतव्वस्स न कालो	८५५
गणिसद्धमाइमहितो	६१७६		गतव्वोसह-पडिलेह	८५६
गति ठाण भासभावे	६२०२		गतु विज्जामतण	४४५८
गति-भास-ग्रग-कडि-पडि	३५६९		गतूण पडिनियत्ते	४०९३
गती भवे पच्चवलोइय च	३५६८	५१४५	गतूण परविदेस	२२३८
गव्भे कीते अणए	३६७६		गधव्वराट्टाउज्जस्स	३८७५
गमणादि अपडिलेहा	२५२२		गधव्व दिसा विज्जुग	६०८८
गमणादि णत-मुम्मुर	२३२		गधारगिरी देवय	३१८४
गमणादी ख्वमख्वव	४३२६		गभीरविसदफुडमधुरगाहओ	५३६
गमणे जो जुत्तगती	५६६९	३०७८	गभीरे तसपाणा	४०२३
गम्भीरविसदफुडमधुरगाहओ	५३६		गाउय दुगुणादुगुण	१५२
गम्मति कारणाजाने	१६९९	३७२१	„	१७९
गल-कुड-पासमादी	१८०५		„	२१४
गविमण गहिए आलोय	२९०५		„	५३८५
गव्विय कोहे विसएसु	३११०		„	५३८७
गव्वेण ने उट्ठिगगा	५६२८		गादुत्त गृहणकर	२६०८
गव्वो गिम्मट्ठवना	९२४	३८५६	गामपहादी ठाणा	४१३१
गट्ठग गवेमण भोगण	४१३		गामव्भामे वदरी	४१७९
गट्ठग न जामाणग	१२४७		गाममहादी ठाणा	४१२९
गट्ठग न मज्जग्ग	३५८१		गामवहादी ठाणा	४१३०

सभाप्यचूर्णिनिशीथसूत्र

गामाङ्-सण्णिवेसा	२००४	गीयत्थग्गहरोण	४०७०
गामाण दोण्ह वेर	४४०१	"	४१०८
गाम्मादी ठाणा खलु	४१२८	गीयत्थदुल्लभ खलु	३८३२
गामेय कुच्छियमकुच्छित्ते	५३१७	२३६१ गीयत्थमगीयत्थ	३६२४
गारवकारणस्सेत्ताइणो	५६८३	गीयत्थविहारतो	५५५६
गावी उट्ठी महिसी	१०३४	गीयत्थस्स वि एव	५२८३
गावी पीता वासी	६५१४	गीयत्थे आणायण	३०३५
गाह गिह तस्स पती	१०८२	गीयत्थे ण मेलिज्जति	५५६३
गाहेइ जलाओ थल	६०१०	गीयत्थेण सय वा	४८८४
गिण्हति णिसीत्तितु वा	५६६८	गीयत्थेसु वि भयणा	४०६०
गिण्हते चिट्ठ ते	३६६७	गीयत्थो जतणाए	३६६
गिण्हामो अतिरेग	४५५५	गीयमगीओ गीओ	२८७१
गिम्हातिकालपाणग	२४१३	"	६५८५
गिम्हासु चड पडला	५७६८	३६७५ गीयमगीतागीते	५५६०
गिम्हासु तिण्णि पडला	५७६७	३६७४ गीयाण व मीसाण व	५५६१
गिम्हासु पच पडला	५७६६	३६७६ गुज्झग-वयण-कक्खोह	१७५३
गिरिजण्णगमादीसु य	३४०३	२८५५ गुणनिष्फक्ती बहुगी य	४५३८
गिरिजत्तपट्टियाण	२५६५	गुणपरिवुड्डिणिमित्त	१०२४
गिरिजत्ता गयगहणी	२५६६	गुणसयसहस्सकलिय	५४३८
गिरिणादि पुण्णा वाला	४२३६	५६४६ गुणसथरेण पच्छा	१०४८
गिरिपडणादी मरणा	३८०१	गुणसथवेण पुण्वि	१०४६
गिह वच्च पेस्ता	१५३५	गुत्ता गुत्तदुवारा	२४५७
गिहि अण्णतिट्ठिय	३२१६	गुत्तो पुण जो साधू	३६
गिहि-अण्णतिट्ठियएहि व	५७७१	गुरुओ चउलहु चउगुरु	२७०४
गिहि-अण्णतिट्ठिययाण व	४११२	गुरु गणिणिपादमूल	२४१४
"	४२८८	गुरु पाउरण दुवल	५८३२
"	४३०८	गुरुवच्चइया आसायणा	२६४४
गिहिअण्णतिट्ठिययाण	६२६१	गुरुसज्झिलए सज्झतिए	५५१८
गिहि-कुल-पाणागारे	६०४७	गुरुगा आणालोवे	५७१०
गिहिण मूलगुणोसू	३३०५	गुरुगा उ समोसरणे	३३५
गिहिणात्त पिसीय लिगे	४४७	गुरुगा पुण कोडु वे	४७५२
गिहिणिक्खमणपवेसे	४३६२	गुरुगा य गुरु-गिलाणे	५८३३
गिहिणोऽवरज्जमाणे	३८३	गुरुगो जावज्जीव	२६८६
गिहिमत्ते जो उ गमो	४०४६	गुरुगो व अप्पणो वा	३६०७
गिहिसहित्तो वा सका	२४७७	गुण्विणि वालवच्छा य	३५०८
गिहिसजयअहिकरणे	६३२८	गूढसिराग पत्त	४८२७
गीओ विकोवितो खलु	६५२५	गेण्हण कड्डणववहारो	४५२०
गीताणि य पढिताणि अ	५३५	गेण्हणो गुरुगा छम्मासा	३३७५
गीयत्थग्गहरोण	३४५५	१८२७ गेण्हणो गुरुगा छम्मास	४७६२



गेण्हरो गुरुगा छम्मास	५१५०	“	गोवालवच्छवाला	३२७०
गेण्हह वीस पाते	४५५०			
गेण्हति वारएण	१२०४			
गेण्हतेसु य दोसु वि	५२६६	३३७८	घणकुड्डा सकवाडा	२४५५
गेह्य वण्णिय सेडिय	१८४६		घण-मसिए निरुवहत	६४६
गेलण्णातुल्ल गुरुगा	६३७१		घण मूले थिर मज्जे	५८००
गेलण्णाज्झाणो मे	४६२१	१०५८	घट्टण-रेणुविरासो	२६४६
गेलण्णामरणमाती	४७७७		घट्टितसठविताए	७१५
गेलण्णमुत्तमट्टे	१५४७		“	७२३
गेलण्ण रायदुट्टे	१४४५		घट्टितसठविते वा	६६६
“	१५६६		“	७०५
“	१५७४		घट्टेउ सच्चित	१४७५
“	१५८१		घट्टितसठविताण	६७६
“	१८५६		घतसत्तुदिट्ठ तो	४५१५
“	१८६३		घयकुडवो य जिणस्सा	६५०३
गेलण्ण-रोह-असिवे	२३६१	४७६६	घरधूमोसहकण्जे	७६८
गेलण्ण वास सहिता	१६५१		घरसताणग-पणगे	१४३६
गेलण्ण वास सहिया	१६५६		घसणे हत्थुवघातो	४६३६
गेलण्ण सुत्त जोए	४६८६		“	४६४४
गेलण्ण पि य दुविह	४८८७	१०२५	घेतु समयसमत्थो	३७२६
गेलण्ण मे कीरति	५६३१		घेतूणज्जारलिग	४५६५
गेलण्णमणागाढे	१६०४		घेतूण रिणसि पलायण	२६६३
गोच्छयपादद्वरण	५८०६		घेतूण दोण्णि वि दवे	११०५
गोणादि कालभूमी	६१४०		घेतूण भोयणडुग	१११४
गोणादी व अभिहणे	४१६		घेतूण य आगमण	४६०१
गोणादीवाघाते	२३७०	४८०८	घेप्पति च-सट्ठेण	६४६८
गोरो य साणमादी	५२७३	३३५२	घोडेहि व धुत्तेहि व	१७१३
“	५३८६			
“	४६५१			
गोविन्दज्जो णारो	३६५६		चउकण्णम्मि रहस्से	३६६१
गोमडलधन्नादी	४८०२	६४३	चउगुरुग छच्च लहु	६६५
गोमियगहण ग्रणो	६७१		चउ गुरुग छच्च लहु गुरु	२२१०
गोयरमगोयरे वा	४०४८		“	५१२८
गोयरमचित्तभोयण	३७४६		चउ गुरुग मासो या	६६४०
गोरपभावियपोत्ते	३४४०	२८६२	चउगुरुगा छगुरुगा	२२१४
गोवय उच्चेत्तु भति	४५०२		चउगुरु चउलहु सुट्ठो	६६३६
गोमाइतूण वसन्धि	११४३	३५२३	चउत्थपद तु विदिण्ण	५२०
गोवालण य भत्ता	४५०१		चउपादा तेडच्छा	३०३६
			उफल पोत्ति सीसे	१५२७

च

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

चउभगो गहणपक्खेवए	४८४१	६८१	चत्तारि अहकडए	७६६
चउभगो दाणगहणे	२१४३		"	५८५६
चउभगो रात्तिभोयणे	३३६७		चत्तारि उ उक्कोसा	५७८६
चउभागवसेसाए	१४२६		चत्तारि छच्च लहु गुरु	६६१
चउभागसेसाए	१८५८		"	२२०६
चउमूल पच्चमूला	५२८६	३४२६	"	३०६६
चउरगवगुरापरिवुडो	४००५	३८२८	"	५१२७
चउरगुल वितत्थी	५८०५	३६८२	चत्तारि य उग्घाया	५१२०
चउरो मरुग विदेस	४८७४		"	५१२२
चउरो य जु गिया खलु	३७०७		"	५१८२
चउरो लहुगा गुरुगा	३०६३	१६६१	चत्तारि विचित्ताइ	३८२४
"	३०६५	"	चत्तारि समोसरणे	३२३६
"	३०६७	"	चम्मकरग सत्थादी	५६५०
"	५१८४	२५३८	चम्मतिग पट्टुग	१४१५
"	३१२०	१६६१	चम्मम्मि सलोमम्मी	३६६६
चउ लहुगा चउ गुरुगा	२२१६		चम्मादि लोहगहण	३४३०
चउलहुगादी मूल	६०६		चरगादिरियट्टे सु	१०८३
"	२२०३		चरण-करण-परिहीणे	५५६६
चउवग्गो वि हु अच्चउ	४६३५	१०७२	चरितट्ट देस दुविहा	५५३६
चउसट्ठीपगारेण	१०३६		चरित्तम्मि असतम्मि	६६७६
चउसु कसातेसु गती	३१६२		चरिमे वि होइ जयणा	२०४२
चउहा गिणीहकप्पो	६६६६		चरिमो परिणत कड-	८६
चक्काग भज्जमाणस्स	४८२८	६६८	चरु करेमि इहरा	३४६०
चक्की वीसतिभाग	२३५५		चक्रमणमावडणे	१५१६
चड्डग सराव कसिय	३०६०	१६५६	चक्रमण शिल्लेवरण	५३२१
चतुगुरुगा छग्गुरुगा	५१७१	२५२१	चक्रमणादी उट्टण	६३३१
चतुगुरुगादी छेदो	२२०४		चकम्मिय ठिय जपिय	५३३
चतुपाया तेइच्छा	३०७५	१६७४	चदगुत्तपपुत्तो य	५७४५
चतुभगे चतुगुरुगा	१६३७		चदिमसूवरारो	६०६१
चतुरगुलप्पमाण	१६३२		चट्टज्जोए को दोसो	३४०६
चतुरगुलप्पमाणा	१५६		चपा अणगसेणा	३१८२
चतुरेते करणेण	१८१२		चपा महुरा वाणारमी	२५६०
चतुरो य दिव्विया भागा	५०८८	२८३३	चाउम्मासातीत	१०१६
चतुसु महामहेसु	६०६४		चाउम्मासुक्कोसे	६५५
चत्तकलहो वि ण पढति	२७६०		"	१४३४
चत्ताए वीस पणतीस	६४७६		"	४०७३
चत्तारि अघाकडए	७५७	४०३१	"	५००५
"	८४२		चाउल उण्होदग तुवर	५८६२

चाणक्यपुच्छ इटालचुण्ण	४४६५		चोय तु होति हीरो	५४१२
चार भड घोड मेठा	२४६१	२०६६	चोरभया गावीओ	२६५
चारिय-चोराभिमरा	२५११	६३६५	चोरो त्ति कडुं दुव्वोडिओ	५२७१
चारिय-चोराहिमरा	१३०			
चारे वेरज्जे वा	३४६८			
चिक्खल वास असिवातिएसु	३२६१	४२६१	छक्काए ए सदहति	३६७१
चिट्ठणणिसिय तुयट्ठे	५३२५	२३६६	छक्काय-अगड विसमे	३६८२
चित्तो वड्ढादी	५४६०		छक्काय-गहण-कडुण	३३६६
चित्त जीवो भणितो	४२५६		छक्काय चउसु लहुगा	५३४१
चित्ते य विचित्ते य	२००१		"	११७
चिधेहि आगमेत्तु	१३३७	५६३	"	३३७०
चीयत्त कक्कडी कोउ	४६१४	१०५१	"	४७३७
चुण्णखउरादि दाउ	५४१८		छक्कायविराहणता	३६७४
चुल्लुक्खलिय डोए	८०८		छक्कायसमारभो	३६४८
चेइय-सावग पव्वति	२५७८		छक्कायाण विराधण	६११
चेयणमचित्तदव्वे	६३६०		"	१६७४
चेयणमचेयण वा	३३४६		"	१८५७
चोएति रागदोसे	२८३३	५७६१	"	१८६७
चोदग एताएच्चिय	५८७६	४०५४	छक्कायाण विराहण	१८६२
चोदग कण्णसुहेसु	४७०५	८५४	"	३१२५
चोदग दुविघा असती	५८७६	४०५१	"	४३१०
चोदग पुरिसा दुविहा	६५१८		"	५६४८
चोदग मा गद्भत्ति	६४००		छच्च सया चोयाला	६४७१
चोदग माणुसणिट्ठे	६१५८		छट्ठमादिएहि	६६५२
चोदग वयण अप्पाणुकपितो	४१८७	५३०६	छट्ठवत्त-विराधणता	१६४०
चोदावेत्ति गुरुण व	५५५६	५४५५	छट्ठाणविरहियं वा	२७४६
चोदेत्ति अजीवत्ते	४८४६	६८६	"	५५८७
चोदेत्ति धरिज्जते	४१५३	५२७५	छट्ठाणा जा णितिओ	२७५०
चोदेत्ति रागदोसे	६५५३		"	५५८८
चोदेत्ति से परिवार	६२७०		छट्ठो य सत्तमो या	५८२
चोदेत्ता वणकाए	४८३६	६७६	छट्ठणे काउड्डाहो	१३२३
चोद्दसग पणुवीसा	५६०१	४०७६	छट्ठावण पतावण	१५४२
चोद्दसमे उद्देसे	६०२७		छट्ठावित्त-कतदडे	४८५०
चोद्दस वासाणि तया	५६११		छड्डेऊण जति गता	१३२५
चोद्दस सोलस वासा	५६१८		छड्डेत्ति तो य दोण	५६७८
चोद्द दो वाससया	५६१३		छणियाज्वसेसएण	६०६८
चोयग गुरुपण्डित्ठे	५०६८	२८३	छण्ण-वह-णट्ठ-मरणो	६५८
चोयग णिद्वयत्त चिय	४८४३	६८३	छण्णे उड्डो व कतो	१२६५
चोयगपुच्छा गमणे	३०११	१६१४	छण्णोत्तर च लेहो	२२६१

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

छण्ह एक पात	४५३०	छुभण जले थलातो	४२१३
छत्तीसगुणसमण्णागएण	३८६२	छुहमाणे पंचकिरिया	४७६६
छदोसायतणे पुरा	२५३३	छेदणपत्तच्छेज्जे	२५१
छप्पइयपणगरक्खा	७६६	३६६७	छेदणे भेदणे चैव
छप्पति दोसा जग्गण	२६५		५०२
छप्पुरिसा मज्झ पुरे	४७८५	६२६	छेदतिग मूलतिग
छवभागए हत्थे	५८६६	४०४४	६५३६
छवभागकर काउ	४६६२		५६४७
छम्मासकरणजडु	३६३५		२६२१
छम्मासा आयरिओ	३१०३	२००१	२२४१
छम्मासादि वहते	६६४६		३४६२
छम्मासियपारणए	४२६		२२१५
छम्मासे अपूरेतो	५४५३		२२१७
छम्मासे अपूरेत्ता	६२०७		५१७२
छम्मासे आयरियो	३१००	१६६८	५१८५
छम्मासे उवसपद	५४५२		५१८५
छल्लहुगादी चरिम	२२०५		६१८४
छल्लहुगा य शियत्ते	३०६	६०७७	ज
छल्लहुगे ठाति थेरी	५३३५	२४१०	जइ अत्थि पयविहारो
छव्वाससयाइ नवुत्तराइ	५६१७		३१५७
छहि शिप्पज्जति सो ऊ	४८३७	६७७	जइ अतो वाघातो
छहि दिवेसेहि गतेहि	६५४६		२४६३
छदणिरुत्त सह	४३५८		१६३
छद विधी विकप्प	१२५		जइउमलाभे गहण
छदिय गहिय गुरूण	३५८२	५१५८	जइ उस्सगे ए कुणइ
छदिय सइययाण व	३४०४	२८५६	२१०
छदो गम्मागम	१२६		जइ ताव पलवाण
छादेती अणुकुइए	१४०४	४०८८	४६१६
छायस्स पिवासस्स व	५७१		३६१२
छारो तु अपु जकडो	१५३६		१६७२
छिण्णमछिण्णा काले	२०३४	१६८३	४५५३
छिण्णमछिण्णे दुविहे	४५०६		२६७०
छिण्णमछिण्णे व घणे	३७२२		१०३८
छिण्ण परिकम्मित खलु	४०२६		४४४७
छिण्णेण अछिण्णेण व	५६४६	३०५२	३६७
छिण्णेो दिट्ठमदिट्ठो	४५१०		२०२
छिहली तु अणिच्छतो	३६१२	५१७६	३४७१
छिदतमछिदता	३५१३		१६३७
छुभण सिचण बोलण	४२१७		१६३८
			५६३२
			५२६
			४१७६
			४४७१
			७६६
			६४३
			१७११

ज

जति अचछती तुमिणिओ	१८३१	जति रण्णो भज्जाए	५०३५	
जति उस्सगे ए कुणति	५३८२	जति रिक्को तो दवमतगम्मि	४१६१	
जति एक्कभाणजिमित्ता	५६४१	जति वा गिरतीचारा	५४२६	
जति एते एव दोसा	४५३५	जति वा वज्झति सात	३३२६	
जति एयविप्पहूणा	४१८४	५२८०	जति वि ए होज्ज अवाओ	६६८८
जति एव ससट्ठ	४१८६	५३०८	जति वि गिणवधो सुत्ते	४८६१
जति कालगता गणिणी	१७०६	३७३१	जति वि य तुल्लसंभवाणा	६६६१
जति कुसलकप्पियातो	४८७२	१०११	जति वि य पिक्कीलगादी	३४१२
जति गहणा तति मासा	१८७		जति वि य फासुगदव्व	३४११
जति छिड्डा तति मासा	२३६		जति वि य विसोधिकोडी	४४२
जति जग्गति सुविहिता	११४८	३५२६	जति वि य समणुष्णाता	४६०
जति ज पुरतो कीरति	४०६०	१८१७	जति सव्वे गीतत्था	१४६३
जति जीविहिंति जति वा	४५६६		जति सव्वे व य इत्थी	५२००
जति गाम पुव्व सुद्धे	४६७२		जति ससिउ ए कप्पति	३६७६
जति गिण्णिवती दिवसे	१६०३		जति सि कज्जसमत्ती	१३६७
जति रोतु एतुमाणा	५४८४	५३८६	जतिहि-गुणा आरोवणा	६४८७
जति ताव पिहुगमादी	४०४५	१०८२	जत्तियमित्ता वारा	६२२
जति ताव मम्मपरिघट्टियस्स	४२८५		जत्तियमेत्ता वारा	४००८
जति ताव लोत्तियगुरुस्स	४१८६	५३०५		४५४१
जति ता सण्णफत्तीसू	५१६२	२५४६	”	
जति तूण मासिएहि	४६७६		जत्तियमेत्ते दिवसे	१६०२
जति ते जणणे मूल	२१७		जत्तुग्गतरादीण	२५६३
जति तेसि जीवाण	४००७	३८३०	जत्तो चुतो विहारो	५४४६
जति दिट्ठ ता सिद्धी	४८६५	१००४	जत्तो दुस्सीला खलु	२४६०
जति दोण्ह चेव गहण	४५४५		जत्थ अचित्ता पुढवी	४२४०
जति पत्ता तु निसीधे	२४७०		जत्थ उ ए होज्ज सका	४६८५
जति परो पडिसेविज्जा	२७८२	५७३८	जत्थ उ दुरुवहीणा	६४८६
जति पुण गच्छताण	६१२८		जत्थ उ देसग्गहण	५३६६
जति पुण तेण ए दिट्ठा	२७१६	४७३०	जत्थ तु ए वि लग्गति	२७६
जति पुण पव्वावेति	४६२६	१०६३	जत्थ तु देसग्गहण	५२४३
जति पुण पुव्व सुद्ध	४६५६		जत्थ पवातो दीसति	३८०२
जति पुण सव्वो वि ठितो	५१३३	२४८३	जत्थ पुण अहाकडए	४६६१
जति पोरिसिइत्ता त	४१५०	५२७२	जत्थ पुण होति छिन्न	३७२५
जति फुसति तहि तु ड	६१०८		जत्थ वि य गतुकामा	३३८७
जति भागगया मत्ता	५१६४	२५१५	जत्थ विसेस जाणति	३४५७
जतिभि (मि) भवे ग्राच्वणा	६४८५		जत्थाइण्ण सव्व	६०१
जति भोयणमावहती	५८६७	४०७३	जदि एगस्स उ दोसा	४०८३
जति म जागह सामि	५७५५	३२८६	जदि एतविप्पहूणा	४१५८
जति मूलग्गपलवा	४७०४	८५३	जदि तेसि तेण विणा	११३०
जति रज्जातो भट्ठो	५०३६	६३५		

सभाष्यचूर्णिनिशीथसूत्र

जदि दोसा भवतेते	६४१		जह जह पएसिणि	४४६०
जदि सब्व उद्दिसिउ	२६६६	५३४५	जह शाम असीकोसी	३६४६
जध आतरो से दोसइ	१४४२		जह ते गोदुट्टागो	३६७३
जम्मण-णिक्खमरोसु य	५७३५	३२६६	जह पढमपाउसम्मी	३५७८
जम्हा तु हत्थमत्तेहि	४१०६	१८६४	जह पारयो तह गणी	४८७८
जम्हा धरेति सेज्ज	११४२	३५२४	जह वालो जपतो	३८६३
जम्हा पढमे मूल	५१३१	२४८१	"	६३६२
"	५१७३	"	जह भगितो तह उट्ठितो	३५४८
"	५१८६	"	जह भगितो तह चिट्ठइ	३५१६
जयमाणपरिह्वेते	६३४६		जह भगिय चउत्थस्सा	२६५०
जरजज्जरो उ येरो	५६६१		जह भमर-महुयर-गणा	२६७१
जर-साम-कास-डाहे	३६४७		जह मणो एगमामिय	६५६१
जलजायो असपातिम	५३२८	२४०२	जह मणो दसम	६५६७
जल-यल-पहे य रयणा	२६६२	५८५७	जह मणो बहुसो	६४२३
जलदोणमद्धभार	४२६५		"	६५६८
जलमूए एलमूए	३६२६		जह मोहणगडीण	३३२०
जलसभमे यलादिसु	२४०६		जहऽवती सुकुमालो	३६७२
जल्लमलपकिताण	५३४	२५६६	जह सपरिकम्मलभे	५८८१
जल्लो तु होति कमढ	१५२२		जह सरणमुवगयाण	६६१५
जवमज्झ मुरियवसो	५७४७	३२७८	जह सा वत्तीसघडा	३६७४
जस्स मूलस्स भगस्स	४८२६	६६६	जह सुकुसलो वि वेज्जो	३८६०
"	४८३०	६७०	जह सो कालासगवेसिउ	३६७०
जस्स मूलस्स सारातो	४८३१	६७१	जह सो वसिपदेसे	३६७१
"	४८३२	६७२	जह हास-खेडु आकार	५१८६
जस्सेते सभोगा	२१४६		जह हेमो तु कुमारो	३५७५
जह कारणम्मि पुण्णे	४२४५	५६५५	जहि अण्णतरा दोसा	५१६६
जह कारणम्मि पुरिसे	५२१८	२५७३	जहिय एसणदोसा	५५४०
जह कारणे अणाहारा	३७६६	६०११	जहि लहुगा तहि गुरुगा	४७३८
जह कारणे सलोम	४०१६	३८४१	ज अज्जिय चरित्त	२७६३
जह चेव ण्णणगहरो	४७४८	८६०	ज अज्जिय समीखल्लएहि	२७६२
जह चेवज्जुट्टागो	२११७		ज एत्थ सब्व अम्हे	३०३६
जह चेव पुढविमादी	२७५		ज कट्ठकम्मादिसु	५१००
जह चेव य अद्धाणो	१६८		ज किं चि भवे वत्थ	५०६०
जह चेव य आहच्चा	४६६०		ज गहित त गहित	४७५५
जह चेव य इत्थिसु	५२२०	२५७५	ज गधरसोवेत	११०४
जह चेव य कित्तिकम्मे	२११२		जज्जारणगारत्ते	२६४६
जह चेव य पुढवीए	२०३		ज च वीएसु पचाहो	१५८८
जह चेव य पुरिसेसू	५२१७	२५७२	ज च महाकप्पसुय	६१६०

ज चैव परद्वारो	२६२५		ज हिङता काए	४५७१
ज चैव सुन्निभसुत्ते	११२२		ज होज्ज अमोज्ज ज	११२१
ज चोद्दसपुव्वधरा	४८२४	६६५	ज होति अपेज्ज ज	११११
ज छेदेरोगेण	७६८		ज होति अप्पगास	६६
ज जमि होइ काले	६		जगिय-भगिय-सराय	७५६
ज ज सुयमत्थो वा	६२०६	७५५	जघद्धा सघट्टो	१६५
ज जारिमय वत्थ	७६०		„	४२२६
ज जस्स जिय सागारियम्मि	६०५७		जघातारिम कत्थइ	१६१
ज जस्स गत्थि वत्थ	५०१५	६१५	जघाहीरो ओमे	४४६३
ज जह सुत्ते भणिय	५२३३	३३१५	जा इतवत्था दमुए	३२७
„	५३५६	„	जा एगदेसेण दढा उ भडी	४८६३
ज रा मरति पडिबुद्धो	४३०३		जा वामक्कहा सा	२३४३
ज त गिग्वाधात	८२०		जा चिट्ठा सा सव्वा	२६४
„	८२३		जा जेरा व तेरा जघा	२४२३
ज त तु सक्किलिट्ठ	५१४		जा जेरा होति वण्णेरा	४३८४
ज ते असत्थरता	४६१६		जागरह एरा गिच्च	५३०३
ज तेरा कतेरा व	३६६६		जागरतमजीरादी	१५६८
ज पज्जत्त तमल	२१५६		जारिता धम्मीरा	५३०६
ज पुण खुहापसमरो	३७६०	६०००	जाराह जेरा हडो मो	१३७१
ज पुण पढम वत्थ	५०८५	२८३०	जाणति एसण वा	४६०४
ज पुण सच्चित्तादी	५४७७	५३८२	जाणतेरा वि एव	३८६१
ज पुव्वकत्तमुह वा	६८८		जाणतो अणुजाणति	२५७५
ज पुव्व गितिय खलु	४३५२		जागणामि राग एत	१७७१
ज पुव्व पडिसिद्ध	५२४६		जाणति इति तावच्छेरो	२५०४
„	५३६६		जाता अणाहसाला	३६४६
ज बहुधा छिज्जत	७६७		जा ताव ठवेमि वए य	१३५२
ज भिक्खु वत्थादि	४६६०		जाति कुल रूव भासा	२६०६
ज मायति त लुम्भति	६५८८		„	२७३२
ज मायति त लुम्भति	२८७४		„	४२८४
ज लहुसग तु फरस	२६३६		जाति-कुलस्स सरिसय	२६२८
ज वच्चता काए	४६२३		जाती कम्मे सिप्पे	३७०६
ज वत्थ जमि कालम्मि	६५२	३८८५	जाती कह कुलकह	११६
ज वत्थ जमि देसम्मि	६५१	३८८४	जाती-कुलस्स सरिस	२६३१
ज वा असहीरा त	११७१	३५५२	जाती कुलगण कम्मे	४४११
ज वा भुक्खत्तस्स उ	३७६३	६००३	जाती कुले विभासा	४४१२
ज वेल ससज्जति	२७३		जाती य जु गितो खलु	४६२२
ज सगहम्मि कीरइ	६३८६		जाती य जु गितो पुण	४५७०
ज सेवित तु वितिय	४६८		जा तु अकारण सेवा	४८३

सभाप्यत्रिणि निशीयसूत्र

जावे वि य कालगता	१७२१		जीवति मश्रोत्ति वा	२६८६
जा पुव्ववड्ढिता वा	७१३		जीवरहिओ उ देहो	३५४
”	७२१		जीवरहिते व पेहा	३३०७
जामातिपुत्तपतिमारण	४४०२		जीवा पोमालसमया	५६
जामातिय-मडवओ	२०१८		जीहाए विलिहतो	६६१४
जायग्गहरो फासु	३११८		जुग-छिड्ड-णालिया	६०४
जायण-णिमतणाए	५०२३		जुज्जति हु पगासफुडे	४३२२
जायसु ण एरिसो ह	४४५२		जुत्तपमाणास्ससती	५८४५
जायते तु अपत्थ	२६६८	१६०१	जुत्तपमाणा अतिरेग	५५०
जारिसदव्वे इच्छह	३०८१	१६८०	जुत्तमदाणमसीले	४६६१
जारिसय गेलणा	३०२८	१६३२	”	४६८३
जाव ठवणा उद्दिट्ठा	६४३७		जुत्त णाम तुमे वायएण	२६३२
जाव ण मडलिवेला	२०३२	१६८२	जुत्त सय ण दाउ	३०४०
जाव ण मुक्को ताव	३००६		जे आदरिसतत्तो	४३२३
जावतिएणट्ठो भे	१००२		जे कुज्जा वूया वा	२२५१
जावतिय उवयुज्जति	११२३		जे केइ अणाल दोसा	३७३७
जावतिय वा लब्भति	४६४०		जे चेव कारणा सिक्कगस्म	३४३५
जावतिया उवउज्जति	१६७		जे चेव सक्कदाणे	४६१५
जावतिगाए लहुगा	१४७४	३१८६	जे जत्तिया उ—	६४६४
जावतियमुहेसो	२०२०		जे जहि असोयवादी	२३८३
जावति वा पगणिया	१४७२	३१८४	जे जे दोसायतणा	४१०३
जा समणि सजयाण	५६१८		जे जे सरिसा धम्मा	३३५७
जा सजमता जीवेसु	६५३२		जेट्ठा सुदसण जमालि—	५५६७
जाहे पराइया सा	३६६२		जेण ण पावति मूल	४८२
जाहे य माहणेहि	३७११		जेण तु पदेण गुणित्ता	६४८६
जिइदियो घिणी दक्खो	६२६		जेणऽहिय ऊण वा	२८५८
जिणकप्पिया उ दुविधा	१३६०		जे ते भोसियसेसा	६५५०
जिणकप्पे सुत्ते त	५८८७		जे त्ति य खलु गिहसे	४६७
जिण चोदस जातीए	६५०२		जे त्ति व से त्ति व केत्ति व	६२७३
जिणणिस्सेवणकुडए	६५६२		जे पुण ठिता पक्कप्पे	८१
”	६५७०		जे पुण सखडिपेही	२६४७
जिणपण्णत्ते भावे	६५७४		जे पुव्ववड्ढिता वा	७०२
जिणलिगमण्डिहत	२३७२	४८०६	जे पुव्व उवगरणा	५६८८
जिणवयण पडिक्कुट्ठे	३७४५		जे भणित्ता उ पक्कप्पे	६६७१
जिणवयणभासितेण	५४३६		जे भिक्खाऽज्जीवपिड	४४१०
जिणवयणमण्णमेय	३६१४		जे भिक्खु अजोगी तु	१६१०
जिणा बारसरूवाइ	१४०६	३६६५	जे भिक्खु अरोगत्ते	४३३५
जियसत्तु-एरवरिदस्स	२३५२	५२५५	जे भिक्खु असणादी	२३२६
			”	२६५८
			”	३४७२



”	૩૬૬૧
”	૪૬૫૬
”	૫૬૬૫
”	૨૫૪૫
”	૪૨૦૪
”	૪૪૩૬
”	૫૬૫૭
”	૩૧૧૪
”	૬૦૩૭
”	૧૪૬૫
”	૪૦૪૨
”	૪૪૬૨
”	૪૪૬૮
”	૧૫૧૪
”	૪૬૮૧
”	૪૬૭૩
”	૪૪૦૪
”	૪૪૩૨
”	૨૧૬૨
”	૪૦૫૪
”	૧૬૩૦
”	૪૩૬૬
”	૪૩૭૫
”	૪૦૩૩
”	૬૪૨૦
”	૪૪૪૪
”	૨૫૩૬
”	૨૫૨૧
”	૪૪૧૮
”	૪૬૫૦
”	૨૩૩૧
”	૪૬૬૦
”	૬૦૪૬
”	૩૭૭૭
”	૪૦૩૮
”	૨૧૭૩
જે મે જાણતિ જિણા	૩૮૭૩
જે વિજ્જમત દોસા	૪૪૬૬
જે મુત્તગુણા વુત્તા	૩૬૧૬

જે સુત્તે અવરાહા	૪૬૧
જેસિં એસુવદેસો	૪૦૮૦
”	૪૫૩૨
”	૪૫૪૨
જો ડ ઉવેહ કુજ્જા	૩૦૮૪
જો ડ ણિસજ્જો વ ગતો	૨૧૨૮
જોગમકાડમહાકહે	૫૦૦૬
જો ગધો જીવજહો	૮૫૧
જો ગધો જીવજુણ	૬૧૪
જોગે કરણે સરભમાદી	૧૮૧૦
જોગે ગેલણામ્મિ ય	૧૬૦૦
જો ચેવ વલિયગમો	૧૩૩૧
જો ચેવ ય ડવધિમ્મિ	૨૦૬૮
જો જત્તિણ રોગો	૬૪૦૨
જો જત્થ અચિત્તો ખલુ	૬૮૬
જો જત્થ હોઈ કુસલો	૩૬૦૦
જો જત્થ હોઈ ભગ્ગો	૫૪૪૬
જો જસ્સ ડ ડવસમતી	૨૭૭૬
જો જસ્સુવરિ તુ પઘૂ	૬૬૧
જો જં કાડ સમત્થો	૬૬૦૩
જો જારિસચ્ચો કાલો	૩૮૮૫
જો જેણ અકયપુવ્વો	૩૩૩૮
જો જેણ જમ્મિ ઠાણમ્મિ	૨૭૫૬
”	૫૫૬૩
જો જેણ પગારેણ	૩૩૪૫
જોણ્હા-મણી પતીવે	૩૪૦૫
જોણી વીણ ય તર્હિ	૨૨૩૬
જો તસ્સ સરિસગસ્સ તુ	૫૬૩૭
જો ત સવદ્ધ વા	૬૧૫
જો ત તુ સય રોતી	૩૭૩૦
જોતિસનિમિત્તમાદી	૫૨૫૬
જો તુ અમજ્જાઈલ્લે	૪૦૩
જો તુ ગુણો દોસકરો	૫૮૭૭
જો પુણ અપુવ્વગહરો	૪૩૩૬
જો પુણ ડભયાવત્તો	૨૭૪૬
”	૫૫૮૪
જો પુણ કરણે જહ્હો	૩૬૩૬
જો પુણ ચોદ્ધજ્જતો	૬૩૪૬
જો પુણ તદ્દારાઓ	૪૦૮
જો પુણ ત અત્થ વા	૨૬૫૬

सभाप्यचूणि निशीथसूत्र

जो मागह्यो पत्थो	६६२B		ठाण वा ठायती	५२६४
"	५८६१	४०६७	ठाणो नियमा रुव	५२६
जो मुद्दा अभिसित्तो	२४६७		ठितकप्पम्मि दसविहे	५६३२
जोयणसय तु गता	४८३३	६७३	ठितिकप्पम्मि दसविहे	२१४६
जो वच्चतम्मि विधी	६१३८		ठितो जदा खेतर्वाहं सगारो	११८६
जो वा वि पेल्लिओ त	५६७६	३०८८	ठियकप्पे पडिसेहो	४३६५
जो वि दुवत्थ तिवत्थो	५८०७	३६८४		ड
जो वि य अवायसकी	६६६५		डगलग-ससरक्ख कुडमुह	३२३८
जो वि यऽणुवायच्छिणो	४८०५		डगलच्छारे लेवे	३१७५
जो वि य होतऽक्कतो	४२३५	५६४५	डहरगामम्मि मते	६११५
जो सो उवगरणगणो	३४५२	२६०५	डहरस्स एते दोसा	५८६४
जो हट्टस्साहारो	१६३६		डहरो अकुलीणो त्ति य	२७६०
जो होज्ज उ असमत्थो	६१२३		"	६२१०
	भ		डहरो एस तव गुरु	२७६१
भिड्भिरिसुरहिपलवे	४७०३	८५१	डडग विडडए वा	६६६
	ठ		"	६७७
ठवण-कुलाइ ठवेउ	१७०६	३७२८	डडतिग तु पुरतिगे	६४०८
ठवणाए णिवखेवो	३१४०		डडिय खोभादीओ	१३३४
ठवणाकुला तु दुविधा	१६१७			ड
ठवणाकुले व मु चत्ति	२०६६		डडसर पुण्णमुहो	४३६०
ठवणा तू पच्छित्त	१८८५		डिकुण-पिसुमादि तहि	५४७१
ठवणामेत्त आरोवण	६४३१			ण
ठवणारोवणदिवसे	६४८८		ण करेति भु जितूण	१५६७
ठवणा वीसिग पक्खिग	६४३२		ण गिरत्थयमोवसिया	४६६०
ठवणा सचयरासी	६४२७		ण तस्स वत्थादिषु कोइ सगो	५८१६
ठवणा होति जहण्णा	६४३४		ण पमाण गणो एत्थ	११३६
ठागासत्ति अचियत्ते	२२३		ण पमादो कातव्वो	६५
ठागासत्ति विद्वसु व	६१५०		ण य वज्जिया य देहो	६३२६
ठाण-णिसीयण-तुअट्टण	२६३		ण य सव्वो वि पमत्तो	६२
ठाण णिसीयण-तुयट्टण	३६३८		ण वि किं चि अणुण्णाय	५२४८
ठाण-णिसीय-तुअट्टण	६२६८		"	५३७१
ठाण-णिसीय-तुयट्टण	१५५		ण वि कोइ किं चि पुच्छति	२३८६
"	२७४		ण वि खातिय ण वि वयी	४८४८
ठाण पडिसेवणाए	५११६	२४७०	ण वि छ मह्ववता रोव	४६०६
ठाण-वसही-पसत्थे	३८१५		ण वि जाणामो णिमित्त	५०६०
ठाणतिथ मोत्तूण	१६६		ण वि य इह परियग्गा	६३७८
ठाण गमणागमण	१६४५	१६०५	ण वि य समत्थो सव्वो	१७६८

रा वि सिंगपु छवाला	३२११	रायरो दिट्टे सिट्टे	१२६१
रा विवित्ता जत्थ मुणी	१६७६	रायरो पूरे दिट्टे	५३११
रा हु ते दव्वसलेह	३८५५	रायवज्जिओ वि हु अल	६१८६
रा हु होति सोयितव्वो	१७१७	राव भागकए वत्थे	५०८६
राउतीए पक्ख तीसा	६४७६	राव य सया य सहस्स	६४७३
राक्खे छिदिस्सामि त्ति	६८१	रावसोओ खलु पुरिसो	२३२४
राक्खेणावि हु छिज्जति	४८०४	रावकालवेलसेसे	६१५६
राच्चासण्णम्मि ठिओ	२४३५	राववभचेरमइओ	१
राच्चुप्पइत दुक्ख	१५१२	रावमस्स ततियवत्थु	६५८७
राच्चुप्पतित दुक्ख	१५०३	रावमस्स ततियवत्थु	२८७३
"	१५०८	रावसत्तए दसमवित्थरे	३८८७
"	४१६७	रावगसोत्तपडिबोहयाए	३६५६
"	४२०२	रावाणवे विभासा तु	१६३
राच्चुप्पतिय दुक्ख	४३३३	राह-दतादि अणतर	५०६
राज्जतमराज्जते	३५६५	ण्हाणादि कोउकम्म	४२८६
राट्ट होति अगीय	५१०१	रादति जेण तवसज्जमेसु	३४६६
राट्टा पथफिडिता	४३०६	राइण लहुसएण	६०८
राट्टे हित विस्सरिते	६६६	राऊणमराणणवणा	२५७१
"	८१३	राऊण य वोच्छेद	६१८३
"	८३२	"	६२३८
"	८४६	"	६२४१
"	१६४५	राऊण य वोच्छेय	२७३०
"	१६४७	"	२७६३
"	१६५६	"	५४७८
"	४६८८	"	५४६६
राट्टे हिय विस्सरिए	१६५४	"	५५००
रात्थि अगीयत्थो वा	५२३१	"	६१६७
"	५३५४	रागा जलवासीया	२७८५
रात्थि अणिदाणं तो	४६१२	राणट्ट दसराट्टा	१६६६
रात्थि कहालद्धी मे	१३४५	"	३४२७
रात्थि खलु अपच्छित्ती	५१३६	"	५४५८
रात्थि रा मोल्ल उवाधि	१३८२	राणणिमित्त अद्धाणमेति	३८६८
रात्थि सकियसघाडमडली	६३५३	राणणिमित्त आसेविय	३८६७
रात्थेय मे जमिच्छह	६३५४	राणस्स होइ भागी	५४५७
रादिकण्हवेण्णदीवे	४४७०	राणादट्टा दिक्खा	३६२८
रादिकोप्पर चरण वा	४२३३	राणादि तिगकडिल्ल	१८८४
रादिपूरएण वसती	१७१२	राणादितिगस्सट्टा	४८१३
रायरो दिट्टे गहिते	१२६४	राणादिसघण्डा	२२८४

सभाष्यचूर्णिनिशीथसूत्र

शाणादी छत्तीसा	२१३६		शिवकारणमविधीए	१६६६
शाणादी परिवुड्ढी	४६६		शिवकारणम्मि अप्पणा	१६२१
शाणायारे पगत	४५		शिवकारणम्मि एए	४६६५
शाणाविह उवकरणा—	१०३५		शिवकारणम्मि एते	५८७२
शाणी ए विणा शाण	७५		शिवकारणम्मि एव	५२८७
शाणुज्जोया साहू	२२५	३४५३	शिवकारणम्मि गुरुणा	१६६८
शाणे चरणे पळवण	६२६२		शिवकारणम्मि लहुगो	१६२२
शाणे दसण चरणे	४४		शिवकारणिए अणुवएसिए	४५७६
”	२७२७	४७३३	शिवकारणियाऽणुवदेसगा	२६२६
शाणे सुपरिच्छियत्थे	४६		शिवकारणे अमणुण्णे	२०७६
शातग कहण पदोसे	२२५२		शिवकारणे अविधि	२७१
शातगमणातग वा	२४६७		शिवकारणे ए कप्पति	१५०७
शातीवग्ग दुविह	५५०४		शिवकारणे विधीए वि	१६६६
शामण-धोवण-वासण	६		”	१६६७
शामठवण-सिंसीह	६७		शिवकारणे सकारणे	१५११
शाम ठवणा हत्थो	४६६		शिवक्खवणा अप्पाणे	२७५७
शाम ठवणा कप्पो	५६		शिवक्खवणा अप्पाणो	५५६१
शाम ठवणा चूला	६३		शिवग्गच्छति वाहरती	२३५
शाम ठवणा दविए	१७६७		शिवग्गच्छ फूमे हत्थे	२३८
”	६२६२		शिवग्गत पुणरवि गेण्हति	४१०२
शाम ठवणा भिक्खू	४६८		शिवग्गमण तहचेव उ	५६२
शाम ठवणायारो	५		शिवग्गमणादि वहिठिते	११८८
शामुदया सघयण	८५		शिवग्गमणे चउभगो	२६८०
शालस्सेण सम सोक्ख	५३०७	३३८५	शिवग्गमणे परिसुद्धो	६३५२
शालीत पळवणाता	६५०६		शिवग्गमसुद्धमुवाए	६३५६
शाव-थल-लेवहेट्टा	४२४६	५६५६	शिवग्गयवट्ट ता था	६५३६
शावाए उत्तिण्णो	४२५६		शिवग्गथसक्कतावस	४४२०
शावातारिम चतुरो	१८३		शिवग्गथि वत्थगहणे	५०७०
शासण्ण-शाड्ढरे	२४५६	२०६०	शिवग्गथीण गगाधर	२४४८
शासा मुहसिस्सासा	६१६		शिवग्गथीण भिण्ण	४६२२
शासेइ अगीयत्थो	३८२६		शिवग्गधो उग्गालो	२६५५
शासेइ असविग्गो	३८३४		शिवच्चणियसणमज्जण	५०४५
शिउणो खलु सुत्तत्थो	५२५२		शिवच्चणियसणिय ति य	५०४६
”	५३७५	३३३३	शिवच्चपरिगले वहिता	६३१
शिवकारणमणम्मि	१०६८	२७५८	शिवच्चलणिएप्पडिकम्मे	३६४१
शिवकारणणि चमडण	१७६३	३७८६	शिवच्चलणिएप्पडिकम्मो	३८१८
शिवकारणपडिसेवा	४६७		शिवच्च पि दव्वकरण	५१०६
			शिवज्जत मोत्तूण	१२००

"	६११६	गिसिदतो व ठवेज्जा	१७८५
गिज्जुहितादि ठाणा	४१३४	गिसिपढमपोरिसुवभव	५७६
गिण्हयससग्गीए	५५३२	५४३३ गिसिमादीसम्मूढो	८७६
गिण्हवरा अवलावो	१६	गिसिह रावमा पुव्वा	६५००
गिण्हवरो गिण्हवरो	३०१	६०६६ गिसीहिया रामोक्कारे	६१३४
गिता रा पमज्जति	५३६७	३४५२ गिसुढते आउवधो	३२१२
गिता रा पमज्जती	२२३	" गिसेज्जा य वियडरो	६५१२
गिति ए उ अग्गपिडे	६६६	गिसेज्जाऽसति पडिहारिय	६३८६
गिदिट्ठस्स सर्माव	४५७४	गिस्सकिय गिक्कखिय	२३
गिदोस सारवत च	३६२०	२८२ गिस्सचया उ समणा	४१४४
गिद्धमधुरेहि आउ	३५४१	गीरोज्ज पूय-रुधिर	१५०६
गिद्धे दवे पणीए	३७६७	६००७ गीयल्लयदुच्चरितागुक्तिरण	२३३८
गियय च अगियय वा	११८६	३५६७ गीयस्स अम्ह गेहे	१२१४
गिप्पच्चवाय-सबधि	२४६५	२०७० गीयासरणजलीपग्गहादि	१३
गिप्पत्त कटइल्ले	६३८२	गीसको व ऽगुसट्ठो	४५६८
गिप्फणो वि स अट्ठा	१००५	गोगधुणममु चते	१६२४
गिप्फेडरो सेहस्स तु	३७३४	गोगविधा इड्डीओ	२६
गिण्भए गारत्थीण	४२५१	५६६० गोगविह कुसुमपुप्फोवयार	६७०१
"	१६६	" गोगाण उ गारात्त	१२५०
गिण्भए पिट्ठतो गमरा	११०३	गोगासु चोरियासू	६५१५
गियएहि ओसहेहि य	३०२७	१६३१ गोगेसु एगगहरा	५२३५
गियगट्ठितिमतिकंता	१५८५	"	५३५८
गिरुअस्स गदपओगो	४८७१	गोगेसु पिता-पुत्ता	११७५
गिरुवस्सग्गगिमित्त	२८७८	गोहाति एव काह	४८७
गिरुवहत जोरित्थीण	३७०	४६५३ गो कप्पति भिक्खुस्सा	१०८०
गिल्लोम-सलोमऽजियो	४६११	१०४८ "	१०६०
गिवचित्त विकाल पडिच्छणा	३१६५	"	१०६६
गिवत्तरा गिक्खिवरो	१७६८	"	१५४४
गिवदिक्खितादि असहू	४६१	गो कप्पति वाऽभिण्ण	५२३८
गिवपिडो गयभत्त	४५१२	"	५३६१
गिवमरण मूलदेवो	६५१७	गो तरती अभत्तट्ठी	२७६८
गिववल्लभवहुपक्खम्मि	३६२३	५१८८ गोल्लेऊरा रा सक्का	१६७७
गिवित्तिगणिव्वले ओमे	५७४	गोवयणाम दुविह	४७१५
गिव्वत्तरा य दुविधा	१८०१	त	
गिव्वाधातववादी	८२४	तइया गवेसणाए	२८६६
गिव्विगित्तिय पुरिमड्डे	६६६२	तक्कम्मसेवि जो ऊ	३५६५
गिव्विमओत्ति य पढमो	५७०६	३१२१ तक्ककुडेणाहरण	१२
गिव्वीयमायनीए	२५५१	तक्कतपरोप्परओ	५७६६
		तच्चिता तल्लेसा	५१०७

सभाष्य चूर्णि निशीथ सूत्र

तज्जातमतज्जात	६४७	३८७८	तत्थ गिलाणो एगो	६३३७
तज्जातमतज्जाता	२०५५		तत्थऽएत्थ व दिवस	१७३१
तए-कट्ट-पुष्फ-फल	५४१४		तत्थ दसण्ह अवाते	३८१०
तएकट्टहारगादी	५४१३		तत्थ पवेसे लहुगा	५४७०
तए कवल पावारे	३६०७		तत्थ भवे एणु एव	५६६०
तएगहण अग्गिसेवण	४७७६	६२०	तत्थ भवे रा तु सुत्ते	६४६८
तएगहणो भुसिरेतर	४७६१	६०३	तत्थ भवे मायमोसो	६३५७
तए उगलग-छार मल्लग	३३२		तत्थ वि चेप्पति ज	४६४१
तए डगल-छार-मल्लग	११५४	३५३५	तत्थेव अण्णगामे	२६६६
तए विण्ण सजयट्ठा	५०२६	६२५	तत्थेव गतुकामा	२६४०
तए वेत्त-मु ज कट्ठे	२२८६		तत्थेव य णिट्ठवरण	४७७६
तए-सच्चयमादीण	५५		तत्थेव य निम्माए	५५१५
तएणणगम्मि वि दोसा	४००६	३८३२	तत्थेव य पडिवधो	५१५३
तएमादिमालियाओ	५६१०		तद्धिणमण्णदिण वा	११६२
तएमालियादिया उ	२२८८		तद्धिवसकताण तु	२८०
तणुयमलित्त आसत्थ	६०१५		तद्धिवसभोयगादी	६०६६
तण्णग-वाणर-वरहिण	५६०६		तद्धिवस पडिलेहा	१२७६
तण्णवखता केई	५१११		तप्पडिपक्खे दब्बे	६३८७
तण्हाछेदम्मि कते	३८८६		तमतिभिरपडलभूओ	२८४७
तण्हातिओ गिलाणो	५२६५	३४२५	तम्मि असधीणे जेट्ठा	११८३
ततवितते घणभुसिरे	५६६४		तम्मि चेव भवम्मी	३८०६
ततिए पतिट्ठियादी	६३१६		तम्मि तु असधीणे वा	१२६६
ततिए वि होति जयणा	५७२०		तम्मि य अतिगतमेत्ते	१६७३
ततिओ उ गुहसगासे	१२५४		तम्मि य गिट्ठो अण्ण	११०७
ततिओ जावज्जाव	४०७७		तम्मि वि णिव्वाघाते	८३४
ततिओ विति-सपण्णो	८४		तम्हट्ठा जाएज्जा	६७६
ततिओ लक्खणजुत्त	४५५१		तम्हा आलोएज्जा	११३४
ततिओ सजम-अट्ठी	१७४२		”	३१२१
ततियभगासथडिनित्रि-	२६३२		तम्हा उ अपरिकम्म	४६३७
ततियलताए गवेसी	२८६७	५७६४	”	४६४५
ततियव्वयाइयार	३७२७		तम्हा उ णिण्हयव्व	३२३४
ततियस्स जावजाव	४०७५		तम्हा उ जहिं गहिय	४१४७
ततिय भावतो भिण्ण	४७२१		तम्हा उ रा गतव्व	४१८३
ततियाए दो असुद्धा	२८६५		तम्हा खलु अवाले	१३४०
ततियादेस भोत्तूण	३४१५		तम्हा खलु वेत्तव्वो	१२४६
तत्तऽयमिते गधे	२६५२	५८४८	तम्हा खलु पट्टवण	२८३६
तत्थ गतो होज्ज पहू	४१२५		तम्हा खलु मग्गामे	६०४४
तत्थ गहण पि दुविह	४७४६	८६१	तम्हा गवेसियव्वो	१३५८

तम्हा गीयत्येण	३८३३		तस्सवधि सुही वा	२८४०
तम्हा एण कहेयव्व	६२२७	७६०	तह अण्णतित्थियादी	३२२७
तम्हा एण तत्थ गमणं	२४८६		तह इत्थि-गालवद्वाहि	१७६५
तम्हा एण वि भिदिज्जा	२१६३		तह चेवमिहारते	२७१४
तम्हा एण सवसेज्जा	२४७३		तह वि य गु सव्वकाल	४३५५
तम्हा तिपासिय खलु	२१७६		तह समणसुविहियाण	५७७
तम्हा पमाणगहणे	११२४		"	६३०६
तम्हा पमाणधरणे	४५४४		तह से कहेति जह	३०५१
तम्हा पुव्वादाण	१८७६		तहि सिक्कएहि हिडति	३४३४
तम्हा वसवीदाता	१२०७		तहि वच्चते गुरुगा	२८५३
तम्हा विधीए भु जे	१११६		त अइपसग-दोसा	७२
तम्हा सट्ठाणगय	४६७८		त अण्णतित्थिएण	७६६
तम्हा सव्वाणुण्णा	२०६७		त अम्ह सहदेसी	१०३७
तम्हा सविग्गेण	३८४०		त काउ कोति ए तरति	४१५१
तया दूराहड एत	१४६४		त कायपरिच्चयती	२६५६
तरुणा येरा य तहा	२५८२		"	३६६२
तरुणा वेसित्थि विवाह-	२५६२		"	४७६०
तरुणाइणो णिच्च	२३५३	५२५६	त चेव णिदुवेती	५१४६
तरुणीओ पिडियाओ	४०६१	१८४८	त चेव निदुवेती	२८५०
तरुणीण य पक्खेवो	२२४३	४६५०	त चेव पुव्वभणिय	२३८४
तरुणे निप्फण परिवारे	६०२१	४३३८	"	६५५६
तल गालिएरि लउए	४७०२	८५२	त जे उ सजतीण	४०२७
तलिय पुडग वद्धेया	३४३१	२८८३	त जो उ पलोएज्जा	१४७६
तलिया तु रत्तिगमणे	३४३२	२८८४	त एण खम खु पमादो	६३०६
तव कप्पति एण तु अम्ह	३७६२		त तु अण्णट्टियदड	३६६६
तव छेदो लहु गुरुगा	२२११	२४७६	त दट्ठूण सय वा	६७२
तवगेलण्णज्झाणे	२६२०	५८१७	"	६७४
तव छेदो लहु गुरुगो	५१२६	२४७६	"	१२८३
तवतिग छेदतिग	६५३८		त दाखडय पादपु छण	८३१
तवतीयमसद्धए	६५६०		त दुविह गातव्व	५०१
तववलिओ सो जम्हा	६५४२		त पडिसेवेतूण	१४६०
तस-उदग-वरणे घट्टण	४२२२		त पाडिहारिय पायपुंछण	१६४८
तम-पाण-वीयरहिते	३६४३		त पि य दुविह वत्थ	५००१
तस-वीयम्मि वि दिट्ठे	५८६७	४०४२	त पुण ओहविभागे	६३१४
तमपाण तण्णगादी	३६७७		त पुण गमेज्ज दिवा	५६३६
"	५६०५		त पुण गहण दुविध	७८६
तस्सट्ठगतोभासण	३८४२		त पुण पडिच्छमाणो	३७३१
तस्सज्जसति फालितम्मि	७८६		त पुण रूव तिविह	५११५

सभाष्यचूणि निगीयसूत्र

त मूलमुवहिंगहण	४७७८	तिण्ह वि कतरो गुरुओ	५१५६	
त रयणि अण्णत्था	३४८०	"	५१७६	
त वेल सारवेत्ती	२०४१	१६६०	तिण्ह एगेण सम	१६६१
त सच्चित्त दुविह	४७६८	६०८	तिण्ह तु तड्डियाण	७३२
त सारिसग रयण	३६२१		तिण्ह तु वधाण	७४५
ताड तणफलगाड	१२८८	२०३७	तिण्ह तु विकप्पाण	२१८६
ता जेहि पगारेहि	३३२२		तिण्हारेण समाण	६२२०
तालायरे य धारे	३२४३	४२६८	तिण्हुवरि कालियस्सा	६०५६
"	३२५५	"	तिण्हुवरि फालियाण	७८७
तावो भेदो अयसो	१८१५	५७४१	तिण्हुवरि वधाण	२१७८
"	१८२१		तिण्हेगतरे गमण	५७१३
"	२७८७	२७०८	तित्थकर पडिकुटो	११५६
तासेत्तुण अवहिते	५३०८	३६८८	तित्थकर रायाणो	६४१०
ताहे च्चिय जति गतु	४६८०		ति-परिगह-मीस वा	१६००
ताहे पलवभगे	४३४		तिपरिरयमणागाडे	११७०
तिक्खम्मि उदगवेगे	५७६		तिप्पमितिधरा दिट्ठे	४६७६
"	६३०५		तिय मासिय तिग पणए	१८०६
तिक्खुत्तो तिणिण मासा	१८४२		तिरिओ यागुज्जाणे	६००८
तिक्खुत्तो सक्खेत्ते	११७४	३५५५	तिरियनिवारण अभिहणण	५२७५
तिग बाताला अट्ट य	६५३५		तिरियमचेत्तसचेत्ते	२२२३
तिग सवच्छर तिगदुग	३०५५	१६५४	तिरियमगुयदेवीण	६०३
तिगुणगतेहि ण दिट्ठो	१४४७		तिरियमगुस्सिस्थीण	६०२
"	१४५५		तिरियाउ असुभनामस्स	३३२७
तिगुणपयाहिरणपादे	३७५१		तिरियोयागुज्जाणे	१८४
तिट्ठाणे सवेगो	४५८२		तिविधम्मि कालछेदे	५७६६
तिण वइ भुसिरट्ठाणे	२७६		तिविधम्मि वि पादम्मो	७३७
तिणिण उ हत्थे डडो	७००		तिविध वोसिरिओ सो	३८६१
तिणिण कसिणे जहण्णे	५८०६	३६८६	तिविधा य दव्वचूला	६४
तिणिण तिगेगतारिते	१६०५		तिविधे तेइच्छम्मि	६६६१
तिणिण दुवे एक्का वा	३१६५		तिविह परिगह दिव्वे	४७५०
तिणिणे पसती य लहम्म	८६५		तिविह च होइ बहुग	६४२६
तिणिण विहत्थी चउरगुल	६८६	४०१३	तिविह च होति पाद	५८५२
"	५८३७		तिविह पुण दव्वग्ग	५०
तिण्णोव य पच्छागा	१३६४		तिविहाण वि एयांसि	५६२६
"	१३६७	४०८१	तिविहाऽऽमयभेमज्जे	५६८६
"	५७८८	३६६३	तिविहित्थि तत्थ थेरी	५०३६
तिण्हट्टारसवीसा	३२७८		तिविहे पक्खितम्मि	५८५३
तिण्हट्टा सकमण	५५५३		तिविहो उ विसयदुट्ठो	३६६०



तिविहो य पक्पवरो	६६७६		तेगिच्छिगस्स इच्छा	३०६२
तिविहो य होइ जडो	३६२५		ते चेव तत्थ दोसा	५१७५
तिविहो य होइ घातु	४३१३		"	५१८८
तिविहो य होइ बुडो	३५४२		तेणट्टम्मि पसज्जण	३३७८
तिविहो य होति कीवो	३६३७		तेण पर गिहत्थाण	२३८६
तिविहो य होति बालो	३५१०		तेण पर सरितादी	६५६५
तिविहो सरीरजडो	३६२६		तेणभव-सावयभया	३२७३
तिव्वाणुवद्धरोसो	११४		तेणभयोदककज्जे	५६५२
तिसु छल्लहुया छगुरु	२६४५	५८४१	तेणादिसु ज पावे	३२६५
तिसु तिणिण तारणाओ	६१४६		तेणारक्खिध-सावय	१५५३
तिसु लहुओ गुरु एगो	२६४४	५८४०	तेणा व सजयट्ठा	४५१३
तिसु लहुओ तिसु लहुगा	१६४१		तेरो कीवे राया	३७४१
तिहि येरेहि कय ज	३४०८	२८६०	तेरो देव-मरास्से	४७४०
तितिणिण चलचित्ते	६१६८	७६२	तेरो य तेरातेरो	३७२६
तीत्तम्मि य अट्टम्मी	८८१		तेरोव साइया मो	३०८३
तीसदिणे आयरिए	२८११	५७७७	तेरोसु गिसट्ठेसु	५३०२
तीस ठवणाठाणा	६४३६		तेरोहि व अगणीण व	१७२५
तीसुत्तरे पणुवीसा	६४८१		तेत्तीस ठवणपदा	६४४८
तीसु वि दीवितकज्जा	२७५२	५४६२	ते तत्थ सण्णिवट्ठा	५२६०
तीसु वि विज्जतीसु	५५१		ते तत्थ सन्निविट्ठा	५२६३
तुच्छेण वि लोहिज्जति	२४५३	२०५४	"	५३६४
तुम्भट्ठाए कतमिण	५८६१	४०३६	ते दोञ्जुवालभित्ता	५४७४
तुम्भेवि ताव गवेसह	१३८१	४६४५	ते पुण एगमरोगा-	६३५१
तुमए चेव कतमिण	६६०६		तेरस सय अट्ठट्ठा	६४७२
तुमए समग आम	३६२४	५१८६	तेरिच्छ पि य तिविह	५१८०
तुम्हे मम आयरिया	२६३५		तेलुक्कदेवमहिता	१७१५
तुल्लम्मि अदत्तम्मि	३४६४	२६१७	तेलुक्कट्टण ण्हावण	३०५३
तुल्ले मेहुणभावे	५१६३	२५१४	तेल्ले घत रावणीते	१५६२
तुल्ले वि समारभे	४०७२	१८२६	ते वि य पुरिसा बुविहा	५२०६
तुल्लेसु जो सलद्धी	६३६६		तेसि अवारणे लहुगा	५२७४
तुवरे फले य पत्ते	२०१	२६२२	तेसि अण्णा गिज्जर	३३३५
"	३४७०	"	तेसि तत्थ ठियाण	३२४०
"	५७०४	"	तेसि पडिच्छरो आणा	५६२६
तुमिणी अडति णिनि व	२२६		ते सीदिउमारद्धा	५११०
तुमिणीए टु कारे	८६६	६१०५	तेसु अगिण्हतेसु	२५३१
तुह दसण-सज्जिणओ	२२६६		तेसु अगेण्हतेसु	२४८४
तुरपति देति मा ने	५०४२	६४१	तेसु असणवत्थादी	५७६१
तेज-वाउविहणा	४२४२	५६५२	तेसु ठितेसु पत्तथो	५२५८

[illegible]

द्वियपरिणामतो वा	३८६७		"	२६४१
द्व्यखण पतो	१६३६	१५८८	"	३३४३
द्व्यवृणहारे	३१६६		"	३६५१
द्व्य-गिरीह कतगादिः	६८		द्व्येय य भावेय	१०११
द्व्यतो चउरो सुता	४७१८		"	४०६८
द्व्यदिसखेतकाले	३६६४	५२१४	"	६६१०
द्व्यपडिवद्ध एव	२०६८		द्व्ये त चिय द्व्य	६०८३
द्व्यपमाराग्रतिरेग	५८२२	३६६६	द्व्ये पुट्टमपुट्टो	१०२६
द्व्यपमारा गराणा	१६५३	१६११	द्व्ये भविश्रो गिर्वित्तश्रो	६२८३
द्व्यपमारागाराणाइरेग	५७८६		द्व्ये भावेऽविमुत्ती	११६३
द्व्यम्म दाडिमवाडिः	३३४४		द्व्ये य भाव तित्तिरा	४८०
द्व्यम्म वत्थपत्तादिः	८५३		द्व्ये य भाव भेयग	६२८०
"	८७६		द्व्योगगहाराग आएस	४६
द्व्यसिती भावसिती	३८२२		द्व्योवक्खररोहादियाण	३२२५
द्व्य खेत काल	६२३४		दस आउत्तिवागदसा	३५४३
"	६२३६		दस उत्तर सतिपाए	६४८०
"	६२४२		दस एतस्स य मज्झ य	३०५
"	६२४६		दस चेव य पणयाला	६५८२
द्व्य जोग रा लवमति	१०६५		दस ता अणुसज्जती	६६८०
द्व्य तु जाणितव्व	१७५५	३७७९	दसउर-नगरुच्छुधरे	५६०७
द्व्याइ उज्झिय	५०११	६११	दसद्वयए सजोगा	२०६२
द्व्यातिसाहए ता	३७५६		दसमासा पक्खेण	२८३१
द्व्यादि चतुरभिग्गह	६३७६		दससु वि मूलायरिए	३६०१
द्व्यादि तिविहकसिरो	६५६		दसहि य रायहाणी	२५८८
द्व्यादिविवच्चास	३३५१		दडधरो दडारक्खिओ	२५१६
द्व्यादी अपसत्थे	३७५०		दड पडिहार-वज्ज	१६७३
द्व्ये आहारादिः	२६४२		दडसुलभम्मि लोए	६६०७
द्व्ये इक्कड कठिणादिः	८८७		दडारक्खिय दोवारेहि	२५१५
द्व्ये एग पाद	५८८६	४०६१	दतच्छिण्णमलित	३४६४
द्व्ये खेत काले	८५२		दतपुरे आहरण	१२६५
"	८६१		दतामय दतेसु	१५२०
"	८७५		दतिक्क-गोर-तेल्ले	५६६४
"	८८६		दते दिट्ठे विगिचरा	६१११
"	८४८		दसराचरणा मूढस्स	४७६२
"	१०१०		दसरा-राणा-चरित्ताण	२१५६
"	१०२५		दसरा-गाणा-चरित्ते	४८४
"	१०६४		"	३६२७
"	२१८१		"	४३४१
			"	४३४२

मभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

दसण्णाराणे माता	३३८३	२७८४	दिट्ठमदिट्ठे विदेसत्थ	२७१८
दसण्णाराणे सुत्तत्थ	६३६२		दिट्ठ सलोमे दोसा	४०११
दसण्णपक्खे आयरिओवज्जाण	५५३४		दिट्ठ कारणगहण	६०३६
दसण्णभावगाण	४८६		दिट्ठ च परामट्ठ च	१७७६
दसण्णवाये लहुगा	१४७७	३१८६	दिट्ठ त पडिहणित्ता	१३७६
दाऊण अण्णदव्व	४०६७	१८२६	दिट्ठा व भोइएण	२२७१
दाऊण गेह तु सपुत्तदारो	११६३		दिट्ठीपडिसहारो	५७०
दाऊण वा गच्छति	२६७६	१८८१	दिट्ठीमोहे अपससरो य	३४
दाण्णगहणे सवासओ	५६२७		दिट्ठे णिमतरा खलु	४५२६
दाण्णन लवितूण	६६३		दिट्ठे सहस्सकारे	६८
दाण ण होति अफल	४४३०		दिट्ठे सका भोतिय	४७२७
दाणाई ससग्गी	१८४१		दिट्ठो वण्णोणम्ह	१२५५
दाणे अभिगमसद्धे	१६२०	१५८०	दिण्णमदिण्णो दडो	६४१५
"	१६२६	१४८६	दिण्णो भवविघेण व	१३५६
"	१६३०	१५७६	दियदिन्ने वि सच्चित्ते	५६४०
"	१६३१	१५८१	दियभत्तस्स अवण्ण	३३६३
दाणेण तोसितो वा	३७०५		दियराओ गोमतेण	४१६६
दातु वा उदु हस्से	५०२२		दियराओ लहु गुरुगा	२६६१
दायग-गाहग-डाहो	५६६६		दियरातो उवसपय	६३२५
दारदुगस्स तु असती	२३७८	४८१५	दियरातो भोयणस्सा	३३६१
दार न होति एत्तो	५२६६	३३७५	दियरातो लहु-गुरुगा	४७३६
दाराभोगण एगागि	२६६५		दियरातो लेवण	८२००
दाराभोयण एगागि	४४०७		दिवसणिसि पढमचरिमे	१३४
दावह्विओ गतिचवलो	६२०३	७५२	दिवसत्तो अण्ण मेण्हति	२६६५
दासे दुट्ठे य मूढे य	३५०७		दिवसतो ग चव कप्पति	३२२०
दासो दासीवतिओ	३१८५		दिवसभयए य जत्ता	३७१८
दाह ति तेण भणित	४४५०		दिवसभयओ उ विप्पति	३७१६
दाहामि त्ति य भणिते	१००१		दिवसा पचहि भतित्ता	६४४२
दाहामो ण कस्सयि	५०८२	२८२७	दिव्व-मणुय-तेरिच्छ	३३१४
दाहामो त्ति व गुरुगा	३०४१	१६४२	दिव्वमणुयाउ दुगतिगस्स	३६४६
दाहिणकरम्मि गहितो	३५१५		दिव्व अच्चेर विम्हओ	३३३६
दाहिणकरेण कण्णे	५८६६	६६६	दिव्वाइतिग उक्कोसगाइ	३६१
दिक्खेहि अच्छता	२५८५		दिव्वेसु उत्तमो लाभो	५०८६
दिज्जते पडिसेहो	४४७६		दिसि पवण गाम मूरिय	१८७१
दिज्जते वि तदा	१३०४	४६०१	दिसिमूढो पुव्वावर	३६६६
दिज्जतो वि ण गहितो	१३७८	४६४२	दिसिदाहो छिण्णमूलो	६०८६
दिट्ठमणेसियगहणे	१०२		दिस्सिहि त्ति चिर वडो	५६०७
दिट्ठमदिट्ठा य पुणो	२२०१		दितेण तेसि अप्पा	४५३४

दीह छेयण डवको	२३०		दुविधे तेगिच्छम्नी	२२३०
दीह च एीस सेज्जा	५६२१		दुविधो उ भावसथवो	१०४०
दुक्करय खु जहुत्त	५४४४		दुविधो कायम्मि वणो	१५०१
दुक्ख कप्पो वोहुं	३६६		दुविधो खलु पासत्थो	४३४०
दुक्ख खु निरगुक्का	५६३३		दुविधो परिग्गहो पुण	३७७
दुग-तिग-चउक्क पराण	१३६१		दुविधो य मुसावातो	२६०
दुगपुड-तिगपुडादी	६१७		दुविधो य मकमो खलु	६२१
दुगुणो चउगुणो वा	५८०४		दुविह चउव्विह छउव्विह	११५१
दुग्गविसमे वि न खलति	६६६८		दुविह तिविहेण रु भति	४६६४
दुग्गादि तोसियणिवो	६०८०		”	४६८६
दुग्गूढाण छण्णागदसणो	५३१	२५६६	दुविहमदत्ता उ गिरा	६२५०
दुट्ठिय भग्ग पमादे	४०२२		दुविहम्मि भेरवम्मि	५७२३
दुण्णाय दोण्णि विट्ठा	३४८६		दुविहस्यआतुराण	४६२१
दुपदचउप्पदणासे	४६८२		दुविह च दोसु मासेसु	६४२४
दुपद-चतुप्पद-बहुपद	७०३		दुविह चेव पमाण	५४३२
दुपय-चउप्पयमादी	३२६		दुविहा उ होइ वुड्ढी	२६२३
दुपय-चतुप्पदणासे	१४६७		दुविहा तिविहा य तसा	४१२३
दुप्पडिलेहियहूस	४०२०	३८४३	दुविहा दप्पे कप्पे	१४४
दुप्पडिलेहियमादीसु	२७६७	५७६३	दुविहा दुगु छिया खलु	५७५६
दुप्पभित्ति पितापुत्ता	११७७	३५५८	दुविहा पट्टवणा खलु	६६४२
दुव्वलगहणि गिलाणा	४६५७		दुविहा य लक्खणा खलु	४२६२
दुव्वलियत्त साहू	४२०६		दुविहा य होइ दूती	४३६८
दुव्वभासियहसितादी	६३२०		दुविहा य होति जोई	५३५३
दुमपुप्फिपढमसुत्त	२०		दुविहा लोउत्तरिया	१६१६
दुल्लभदव्व दाहिति	३६७		दुविहा सामायारी	६२१५
दुल्लभदव्वेच सिया	११७२	३५५३	दुविहासती य तेसि	६२७१
दुल्लभदव्वे पढमो	४५२		दुविहे गेलण्णम्मी	२५३२
दुल्लभपवेस लज्जालुगो	१५५८		दुविहो अदसणो खलु	३६७२
दुविध तवपरूवणाया	४१		दुविहो जारामजारी	३६०६
दुविध च भावकसिए	६५३	३८८६	दुविहो तस्स अवण्णो	३३०१
दुविध च होई तेण्ण	३२४		दुविहो य अणभित्तो	३६३६
दुविध च होति मज्झ	२४३२		दुविहो य पडत्तो खलु	३५७२
दुविधा छिण्णमच्छिण्णा	४५४६		दुविहो य होइ कु भी	३५६१
दुविधा णायमणाया	३६३५		दुविहो य होइ दुट्ठो	३६८१
दुविधे गेलण्णम्मि	११६६	६३७६	दुविहो य होइ धम्मो	३२६६
”	२५२४	३५५०	दुविहो य होइ पथो	५६४५
”	२५१२	६३६६	दुविहो य होइ कीवो	३६३८
दुविधे तेइच्छम्मी	२२५६		दुविहो य होति कालो	६१२५

सभाष्य चूर्णि निशीथ सूत्र

दुविहो य होति दीवो	५४०४	३४६१	दो चैव निसिज्जाओ	६२१७
दुविहोहावि वसभा	४५८५		दो चैव सया सोला	२१३३
दुव्वणम्मि य पादम्मि	७५५		दोच्चेण आगतो	५७४१
दुस्सिक्खियस्स कम्म	४१२२		दोच्च पि उगगहो त्ति य	५०६६
दुहओ गेलगम्मी	३२८६		दो जोयणाइ गतु	४२४७
दुहतो वाघातो पुण	३७८५		दोण्णि उ पमज्जणाओ	२८२
दुहतो वाघायम्मी	३७८६		"	३१३४
दुइज्जता दुविहा	२६२७		दोण्णि तिहत्थायामा	१४०६
दत्तिं खु गरहित	४४००		दोण्णि वि विसीयमाणे	५५५७
दूमिय धूमिय वासिय	२०४८	५८४	दोण्णि वि सहु भवति	१७४५
दूरगमणे णिंसि वा	५७७०		दोण्णेकतरे खमणे	६३७०
दूरे चिक्खिल्लो	४५३६		दोण्णेगतरे काले	१०६२
दूसपलासतरिए	६१२		दोण्हट्टाए दोण्ह वि	२७५३
दूसियवेदो दूसी	३५७३	५१५०	दोण्ह वि उवट्ठियाए	६००३
देवतपमत्त वज्जा	६६८६		दोण्ह वि कयरो गुरुओ	२६०४
देवा हु रो पसण्णा	३०८२	१६८१	दोण्ह वि चियत्ते गमण	५६७७
देविद्वदिएहि	६१८७		दोण्ह वि समागता	५६७८
देसकहा परिकहणे	२७७८	२६६७	दोण्ह जइ एक्कस्सा	३२२४
देसग्गहणे बीए	५३६३	३३२२	दोण्ह पि गुरुमासो	५६१
"	५२४०	"	दोण्ह पि जुवलयाण	५०४१
देसच्चाई सव्वच्चाई	४८१		दोण्ह वच्च पुव्वचिय तु	६४
देसपदोसादीसु	३३२५		दो थेर खुट्ठु थेरे	३७६६
देसम्मि बायरा ते	२०४३		दो दक्खिणापहा वा	६५६
देस भोच्चा कोई	३८६३		दो पत्त पिपा पुत्ता	३७६७
देसिय वारिय लोभा	५०८१	२८२६	दो पायाऽगुण्णाता	४५२४
देसिल्लग पम्हजुय मग्गुण्ण	५८२१	३६६८	दो मासे एसणाए	५५४२
देसे सव्वुवहिम्मि य	४५४८		दो रासी ठावेज्जा	६४४७
देसो नाम पसती	४६४३		"	६४४१
देसो व सोवमग्गो	४७६६	६३७	दोरेहि व वज्जेहि व	६३७
"	४८०१	६४२	दो लहुया दो गुरुया	३५२८
देसो सुत्तमहीय	६२६७		दो लहुया दोसु लहुओ	१५८६
देहजुतो वि य दुविहो	२१६७		दो वारियपुव्वुत्ता	२५२७
देहविउगा खिप्प	३६०१		दोसविभवारुवो	६६५६
देहविभूसा वभस्स	५०६५		दोसा जेण णिरु भति	५३७३
देहस्स तु दोव्वल्ल	१८६१	५६०४	दोसा जेण निरु भति	५२५०
देहहिको गणणेक्को	६५४		दोसा वा के तस्सा	११३६
दोग्गइ पडगुपधरणा	१५		दोसाभरगा दीविच्चगाज	६५८
दोगच्च वइतो माणे	३७६		दोसु वि अलद्धि कण्णावरेति	५४७

दोसु वि अर्वोच्छिण्णे	११८७	३५६८	न वि रागो न वि दोसो	४६६७
दोहि तिहि वा दिणोहि	२७७०		नडपेच्छ दट्ठुणा	२६७६
दोहि वि गुरुणा एते	६६३१	४४२४	नडमादी ठाणा खलु	२५६८
"	६६३४	"	नदिखेडजणवउल्लुग	५६०१
"	६६३७	"	नयवातसुहुमयाए	६०६३
दोहि वि गणिसज्जणोहि	२१६०		नदिपडिग्गह वि पडिग्गह	४५६३
दोही तिहि वा दिणोहि	६३७५		नदीतूर पुण्णस्स	३०२०
ध				
घणधूयमच्चकारिय-भट्टा	३१६४		नाऊण य वोच्छेद	२७११
घण्णतरितुल्लो जिणो	६५०७		नाणम्मि तिण्णि पक्खा	५४६२
घण्णाइ चउव्वीस	१०२६		नाणाति तिबिहा मग्गो	२८६६
घण्णाइ रतराथावर	१०२८		नाणिव्विट्ठ लभति	४५०४
घम्मकहातोऽहिज्जति	४४८१		नासुज्जोया साहू	५३६६
घम्मकहा पादेति य	३६१५	५१८२	नाणो दसण-चरणे	७
घम्मकहि वादि खमए	४४८०		नाणो महकप्पसुय	५५७२
घातादिपिड अविमुद्ध-	४४७३		नातिक्कमते आणा	२६१७
घातुनिधीण दरिसणो	१५७७		नातो मि त्ति पणासति	३५६६
धारयति धीयते वा	४३७६		नाम ठवणा आण	४७०८
धारेतव्व जात	१७६१		नाम ठवणा दविए	३३५६
धारोदए महासलिलजले	५२६२	३४२२	"	६२८२
धिति-वलजुत्तो वि मुणी	१७६०	३७८३	"	६२६६
धिति सारीरा सत्ती	४८१५	६५६	नाम ठवणा पक्क	४८६८
धीरपुरिसपण्णत्ते	३६११		नाम ठवणा भिक्खू	६२७४
धीरपुरिसपरिहारी	५४२३		नाम ठवणा भिण्ण	४७१६
धीमु डिओ दुरप्पा	४७५६	८६८	नाम ठवणा वत्थ	५००२
धुवणाऽधुवणो दोसा	५८३६	४०१२	नायगमनायग वा	३७४७
धुवलभो वा दव्वे	४०५		नावजले पक्कथले	६०२४
धुवलओओ उ जिण्णाण	३२१३		नावा- उग्गमउप्पायणोसणा	६००१
"	३१७३		नावाए-खिवण ब्राह्मण	६०१२
धूमादी बाहिरितो	३६६५	५२१५	नावादोसे सव्वे	६०१६
धोतम्मि य निप्पगले	६१६७		नावासतारपहो	६००७
धोतस्स व रत्तस्स व	१६७४	२६७८	नाविय-साहुपदोसे	४२१४
न				
न पगासेज्ज लहुत्त	३६३४		निक्कारणम्मि दोसा	५२८४
न वि जोइस न गणित	३६७६		निक्कम-पवेसवज्जण	५२६२
न वि जोतिस न गणिय	५२८६		निग्गथी-गमण-पहे	१७८६
न वि रागो न वि दोसो	४६७६		निम्मल्लगधगुलिया	४४७६
			नियमा तिकालविसए	२६६३
			"	४४०५
			नियमा पच्छाकम्म	४११४

सभाष्य चूर्णि निशीथ सूत्र

निरवस्सग्गनिमित्त	६५६३		पच्छाकड-साभिग्गह	७०८
नीसट्ठे सु उवेह	५३००	३३७६	"	७१७
नीसकमणुदितो अतिच्छित्ता	२६११	५८०८	"	७२५
नीसकिओ वि गतुण	४५६६		"	१६२६
नेच्छति जल्लुग वेज्जे	३१६६		"	४०३१
नोइदियस्स विसओ	४२६८		पच्छाकडादिहि	४६५२
नोवेक्खति अप्पाण	३३१६		पच्छाकडादि जयणा	३०४४
<b>प</b>			पच्छाकडे य सण्णी	३०२३
			पच्छाकम्ममतिते	५४१६
पउणम्मि य पच्छित्ता	३०७२		पच्छाकम्मपवहणे	६८२
पउमप्पल मातुलिगे	१६४२		पच्छा वि होति विगला	३७१०
"	४८६१	१०२६	पच्छा सथवदोसा	१०४४
पउमुप्पले अकुसल	७५४	४०२५	पच्छित्तऽणुपुव्वीए	६६२१
पउमुप्पले अकुसले	५८४६	४०२५	पच्छित्तऽणुवाएण	६७००
पउरऽण्णपाणगमणे	२३६०	४८२७	पच्छित्तपरूवणया	४१४६
पक्के भिण्णाऽभिण्णे	४६००	१०३६	पच्छित्तस्स विवड्डी	२०८१
पक्खिय चउवरिसे वा	२१४२		पच्छित्ता खु बहेज्जह	४८७७
पक्खिय चउ सवच्छर	६३१३		पच्छित्ता दोहि गुरु	२२०७
पक्खिय-मासिय-छम्मासिए	३२१४		"	२२१३
पक्खी-पसुमाईण	२३२३		"	२२२१
पक्खी-पसुमादीण	२३२१		पच्छित्त पण जहण्णे	५८६८
"	२३२७		पच्छित्त बहुपाणा	३२०२
पक्खे-पक्खे भावो	३५६७		पच्छित्तेण विसोही	६६७७
पक्खेवयमादीया	१२१२		पज्जोसवणाए अक्खराइ	३१३८
पगतीए समतो साधु	४१०		पज्जोसवणा कप्प	३२१८
पगती पेलवसत्ता	५०७३	२८१८	पज्जोसवणा काले	३१३७
पच्चक्खाण भिक्खू	३६८६		पज्जोसवणा केसे	३२१०
पच्चक्खाते सते	१६१५		पट्टो वि होति एगो	१४०१
पच्छण्ण असति णिण्हग	२३८१	४८१८	पट्टविओ मे अमुओ	२६८८
पच्छण्ण-पुव्वभणिते	२३८७	४८२४	पट्टवित वदिते ताहे	६१४३
पच्छण्णा सति बहिता	२३६६	४८०४	पट्टवितम्मि सिलोगे	६१६१
पच्छाकड-वत-दसणा	१०६४		पट्टविता ठविता या	६६४३
पच्छाकड-साभिग्गह	६२६		पट्टविया य वहते	६६४४
"	६३८		पट्टीवसो दो धारणाओ	२०४६
"	६४४		पडण अवगुतम्मि	५८६५
"	६४६		पडण तु उप्पतित्ता	३८०३
"	६६१		पडिकारा य बहुविधा	२४१६
"	६६७		पडिकुट्ट देम कारण गता	३४२६
"	६६८			



पडिकुट्टे ललगदिवसे	६३८३		पडिलाभित वच्चता	४४७२
पडिगमण अण्णतिथिय	५३८	२६०३	पडिलेहणऽण्णवणा	८६२
"	२५४८	१०५४	पडिलेहण पप्फोडण	१४१८
"	४६१७	१०५४	"	१४२२
पडिगमणादिपदोसे	३८२८		"	१४३३
पडिगामो पडिवसभो	४६७५		पडिलेहणमाणयणे	१३५५
पडिचरणपदोसेण	४५०३		पडिलेहण-मुहपोत्ती	३४६३
पडिचरती आचरती	३५६६		पडिलेहण-सज्जाए	६३४७
पडिजग्गति गिलाण	३२७२	४३०४	पडिलेहणसथारे	३६०८
पडिजग्गता य खिप्प	१७६२	३७८५	पडिलेहणा तु तस्सा	१४१७
पडिणीयता य केई	३६६७		पडिलेहणा दिसाण	१८७०
पडिणीयता य अण्णे	२२७०		पडिलेहणा पमज्जण	१४२३
पडिणीय पुच्छणे को	५६८५		पडिलेहणा पमज्जणा	१४२०
पडिणीयम्मि वि भयणा	६३६०		पडिलेहणा बहुविहा	४१४६
पडिणीय-मैच्छ-सावत	१७३४	३७५६	पडिलेहणा य पप्फोडणा	१४१६
पडिणीयया य केई	३६६८		पडिलेह दियतुयट्ठण	५५५५
पडिणीय विसक्खेवो	१४८०		पडिलेहपोरिसीओ	३०००
पडित पम्हुट्ठ वा	१७०३		पडिलेहा पलमथो	६४६
पडिपक्खो तु पट्ठो	२२५६		पडिलेहितम्मि पादे	१४२१
पडिपर्हाणयत्तमाणम्मि	५३१५	२३८६	पडिलेहिय च खेत्त	२४६४
पडिपुच्छ-दाण-गहणे	१७८७		पडिलेहोभयमडलि	६५६
पडिपुच्छ अमण्णणे	२०६६		पडिलोमाणुलोमा वा	३८८२
पडिपुण-हत्थ प्ररिम	२१७०		पडिवत्तीइ अकुसलो	१६६
पडिपोगले अपडिपोगले	२५४२		पडिविज्जथभणादी	४४५६
पडिवद्वलदि उग्गह	२१२२		पडिसिद्ध समुद्धारो	४२४
पडिवद्धा सेज्जाए	५१७		पडिसिद्ध तेगिच्छ	४८०६
पडिवद्धा सेज्जा पुण	५१८		पडिसिद्धा खलु लीला	४८४२
पडिमत्तथभणादी	४४६१		पडिसेवे पडिसेहो	१८३६
पडिमाए भामियाए	५३७७	३४६५	पडिसेवे वाघाते	४२५
पडिमाजुत देहजुय	३६२		पडिसेवथो उ साधू	७६
पडिमाजुते वि एव	६०७		पडिसेवणाए एव	५१३२
पडिमाभामण ओरुभण	५४०५	३४६६	"	५१७४
पडिमापडिवण्णाण	३१४७		"	५१८७
पडिमेतर तु दुविह	५११६		पडिसेवणातियारा	३८७२
पडियरिहाभि गिलाण	२६७६		पडिसेवणा तु भावो	७४
पडियाणियाणि तिण्ह	७७६		पडिसेवणा य सच्चय	६६१६
पडिलाभणऽट्ठम्भो	५८१	४६३४	पडिसेवणा वि कम्मोदएण	६३०८
पडिलाभणा तु सड्ढी	५८४	४६३७	पडिसेवती विगतीतो	३८६६
			पडिसेवतो तु पडिसेवणा	७३

पडिमेवतस्म तर्हि	३७५	४६५८	पडमस्स ततियठाणे	५१६६
"	२२४८	"	पडमस्स होति मूल	६६५६
पडिसेवित्ताणि पुव्व	६६६२		पडम तु भडसाला	५३६३
पडिसेहगस्स लहुगा	५४६२	५३६७	पडम वितिय ततिय	५६७२
पडिसेहग गिचुभरण	५६८०	३०८६	पडम राड ठवेते	२६६४
पडिमेहणा खरटग	४७५४	८६६	पडमा ठवणा एक्को	६४५६
पडिमेहे अलभे वा	३४४६	२८६६	"	६४६०
पडिसेहेऽजयणाए	३०४२		"	६४६१
पडिसेहे पडिसेहो	४६७७		पडमा ठवणा पक्खो	६४४६
"	४६६८		"	६४५०
पडिसेहो अक्खवाओ	६६८४		"	६४५१
पडिसेहो जा आगा	६६८५		पडमा ठवणा पच्च य	६४५४
पडिसेहो वा ओहो	६६६६		पडमा ठवणा पच्चा	६४५५
पडिहरिणीओ पडिहारिओ	१३००		"	६४५६
पडिहारिए जो तु गमो	१६५२		पडमा ठवणा वीसा	६४४३
पडिहारिते पवेसो	१७५०	३७७३	"	६४४४
पडिहारिय अदेते	३३४		"	६४४५
पट्टपण्णअणागते वा	२६५७		पडमाए गिण्हउण	४१६१
पडमग-भगो वज्जो	२४६६	६३८३	पडमाए पोरिसीए	५७८
पडमचरमाहि तु	१४२७		पडमाए वितियाए	२६०२
पडम-ततिय-मुक्काण	३३७३	२७७४	पडमालिअ करणे वेला	२४६
पडमदिणवितिय-ततिए	२७६५		पडमासति अमगुण्णो	२३८५
पडमदिणाणापुच्छे	६३७२		पडमासति सेसाण व	२३७१
पडमदिणे म विफाले	६३२६		पडमिल्लुगम्मि ठाणे	५१२६
पडमवितिएसु कप्पे	३८७७		"	५१६८
पडमवितिएहि छड्डे	३८२७		"	५१८३
पडमवितिय दिवा वी	२६५६	५८५१	पडमिल्लुगम्मि तवारिह	५१७०
पडम-वितियदुतो वा	४७६		पडमुस्सेत्तिममुदय	५६७१
पडम-वितियाण करण	६६५		पडमे गिलाणकारण	५३४६
"	७०४		पडमे पच्चविधम्मि वि	७७०
"	७१४		पडमे पच्च सरीरा	१७६६
"	७२२		पडमे वितिए ततिए	११४७
पडमवितियानुरस्म य	३४२३	२८७५	"	२५३६
पडमम्मि जो तु गमो	१४४८		पडमे भगे गहण	४११७
पडमम्मि य चतुलहुगा	१३१५	४६१७	पडमे भगे चउरो	४६२८
पडमम्मि य सधयणे	३६४८		पण्ण च भिण्णामाओ	५४६१
पडमम्मि समोसरणे	३२२२		"	२६४८
"	३२५३		पण्ण तु वीय वट्ठे	२५०

पणगातिमतिक्कतो	१५६७		पदमगसकमालबरो य	६१६
पणगाति मासपत्तो	४६४२	१०७६	पदमगो सोवाणा	६२०
पणगातिरेग जा पण—	६५७६		पप्पडए सच्चित्तो	१५४
पणगाति हरितमुच्छरण	६३६		पप्पायरिय सोधी	८७०
पणगादि असपादिम	५३३४	२४०६	पभु-अणुपभुणो आवेदण	१३४८
पणगादि सगहो होति	६३५०		पमाणाइरेगधरगो	५८२४
पणतीस ठवरणपदा	६४५३		पम्हुट्टु अवहए वा	२५५६
पण दस पणार वीसा	५३३३	२४०८	पम्हुट्टे पडिसारण	६३६४
पणयालदिरो गणिरागो	२८१०	५७७६	पयतो पुण सकलित्ता	४३०२
पणयालीस दिवसे	५८५७	४०३२	पयला उल्ले मरुए	२६८
पणवीसजुत पुण	२१०४		”	८८२
पणहीण तिभागद्धे	२६०८	५८०५	पयला गिह-तुयट्टे	१६६१
पणिधारा जोगजुत्तो	३५		”	१६६२
पणिया य भडसाला	५३८६	३४४४	”	१६६४
पणएत्ति चद-सूर	६२		पयलासि कि दिवा	३००
पणएत्ति जवुद्धीवे	६१		परतिथियउवगरण	३४३६
पणारस दस व पच व	३२६५		परतो सय व राच्चा	३८४४
पणएवणामेत्तमिद	२१६८		परदेसगए गणतु	३२७४
पणएवणिज्जा भावा	४८२३		परपक्खम्मि य जयणा	५२७२
पणएवरो च उवेह	३३५६		परपक्खम्मि वि दार	५२६७
पणएए पणएट्ठी	६४७७		परपक्ख तु सपक्खे	३६६३
पणएसा पाडिज्जति	३१५५		परपक्खे उ सपक्खो	३६८८
पतिदिवसमलम्भते	३४२१		परपक्खो उ सपक्खे	३६८६
पत्तम्मि सो व अन्नो	४५७३		परपक्खो परपक्खे	३६६०
पत्ता पत्तावधो	१३६३	३६६२	परमद्धजोयणाओ	३२८५
”	१३६६	४०८०	”	३२६३
”	५७८७	”	परमद्धजोयणातो	४१६७
पत्ता वा उच्छेदे	३४६		”	४१६८
पत्ताण पुप्फाण	४८४०	६८०	”	४१६५
पत्ताणमससत्ता	२७८		”	४१६५
पत्तावधपमाण	५७६०	३६७१	परवत्तियाण किरिया	२७८१
पत्तोगे साहारण	२५४		परवयणाऽऽउट्टे उ	१३७७
पत्तोयचट्टुगासति	२३६८	४८०६	परसक्खिय गिबंभति	३०४७
पत्तोय समण दिक्खिय	२३८०	४८१७	परिकम्मणमुक्कोस	६८६
पत्तोय पत्तोय	६५०१		परिकम्मणो चउभगो	२०८५
”	६५७१		”	५८१४
पत्थारदोसकारी	५१६१	२५११	परिगलण पवडणो वा	६०४३
पत्थिव-पिडऽधिकारो	२४६६		परिवट्टण गिम्मोयण	६६४
			परिवट्टण तु गिहण	७०६

मभाष्य चूर्णि निशीथ सूत्र

परिष्ठावण-सकामरा	२६६	पलिमथो अग्राङ्गु	१५६०
परिणामथो उ तर्हि	४८७५	पल्वि कोयवि पावारण—	४००२
परिणामतेसु अच्छति	३४८८	पवत्तिणि अभिसेगपत्त	६०२२
परिणिट्टियजीवजट	३४६६	पवडते कायवहो	४२७०
परित्तावणा य पोरिमि	४७५६	पविसते णिवखमते	५७८२
परित्तावमणगुकापा	२८६३	पव्वज्जएगपक्खिय	५५१७
परित्तावमहाडुवखे	३११६	पव्वज्जाए अभिमुह	६२६४
परिपिडितमुल्लावो	४४५७	पव्वज्जाए सुएण य	५५१६
परिभायण तु दाण	८३७	पव्वज्जादी आलोयणा	३८६६
परिभोगविवक्कासो	१५२६	पव्वज्जादी काउ	३८१२
परिमितभत्तगदाणो	४१७४	”	३६४०
परियट्ठणारुयोगो	२१२५	पव्वज्जासिक्खावय	३८१३
परियट्ठिए अभिहडे	३२५१	पव्वयसी ग्राम कस्स त्ति	२७२२
परियट्ठिय पि डुविह	४०६३	पव्वसहित तु खड	५४११
परियाएण सुतेण य	६२४०	पव्वावण गीयत्वे	३५६३
परियाय परिस पुरिस	४३७३	पव्वावणिज्ज-तुलणा	२४१६
परियायपूयहेतु	५४३७	पव्वावणिज्ज-वाहि	२७००
परियार सङ्गयणा	५४३	पव्वाविश्रो सियति य	३७४६
परियासियमाहारस्स	३७८८	पव्वावेति जिणा खलु	३५३५
परिवसणा पज्जुसणा	३१३६	”	३५५५
परिवार-पूयहेउ	५४६१	पसत्थविगतिग्गहण	३१६६
परिवारियमज्जगते	५७७६	पसिडिल-पलव-लोला	१४२६
परिसतो अद्धारो	२४४७	पसिणापसिण सुविरो	४२६०
परिस व रायदुट्ठे	४११	पहरणमगणो छग्गुरु	११२
परिसाए मज्झम्मि पि	४६८४	पको पुण चिवखल्लो	१५३६
परिसाडिमपरिसाडी	१०१३	पच उ भासा पवखे	२८२८
”	१२१८	पच परुवेऊण	७६२
”	१२८१	”	४२१०
”	१३१०	पच व छ सत्त सते	३८३०
”	१२८७	”	३८३७
परिसेसु भोर महिलासु	३५७०	पचविचचिलिमणीए	६५६
परिहरणा वि य डुविहा	४०७४	पचसता चुलसीता	६४७०
परिहार-अणुपरिहारी	६६११	पचगुलपत्तोय	६४४
परिहारतवकिलतो	१८६५	पचण्ह वि अग्रा रा	५७
परिहारिगमठवेते	२७७७	पचण्ह अण्णतरे	७८४
परिहीण त दव्व	३०७८	पचण्ह एगतरे	५५५२
परीसहचमू	३६२५	”	५५६८
पलिउचरा चउभगो	६६२४	पचण्ह गहरोण	४२११

पचण्ह परिवुड्डी	६४३६		पाउभगस्स अलभे	२४४५
पचण्ह वण्णाण	६५४	३८८७	पाउतमपाउता घट्ट मट्ट	५७६६
"	४६३२		पाउ छण्ण दुविध	८१६
पचण्हायरियाइ	२६२४		"	१६४४
पचतिरित्त दव्वे उ	२१८२		"	१६५३
पचमगम्मि वि एव	५१२३	२४७४	पाएण अहातच्च	४३०१
पचम-छ-सत्तमियाए	२६०३	५८००	पाएण देति लोगो	४४२५
पचमहव्वयभेदो	६२०६	७७०	पाएण वीयभोई	४७६३
पचमे अणोसणादी	५६४१	३०४७	पाडेज्ज व भिदेज्ज व	४२०५
पचविधम्मि वि वत्थे	७८१		पाणगजोगाहारे	३८८०
पचविध सज्झाय	२३३३		पाणगादीणि जोगाड	३८५०
पचविहमसज्झायस्स	६११८		पाणट्ठा व पविट्ठो	१६६४
पचविह-वण्ण-कसिणो	६३५	३८६७	पाणदयखमणकरणो	४५३७
पचसतदागगहरो	३०४५	१६४६	पाणसुण्णाय य भु जति	६३३३
पचसमितस्स मुण्णिणो	१०३		पाणातिपातमादी	१६६६
पचसयभोगि अगणी	५१५७	२५०७	पाणादिरहितदेसे	२७२
पचसया चुल्लसीओ	५६२१		पाणा सीतल कु थू	१२४५
पचसया चुलनीया	५६१६		पातणिमिच्च वसिमो	४६८७
पचसया चोयाला	५६१६		पादस्सिच्छ-नास-कर	४६२४
पचसया जातेण	३६६५		पादप्पमज्जणादी	४६४६
पचादिहत्थ पथे	१४७		"	५०६१
पचादी णिक्खित्ते	२०७		पादस्स ज पमाण	६१५
पचादी लहुगुरुणा	२४६		पादादी तु पमज्जण	१८५५
"	३८२		पादे पमज्जणादी	२२८१
पचादी लहु लहुया	३४१		पादेसु जो तु गमो	१५००
पचादी ससण्णिद्धे	१७८		पादोवगम भणिय	३६४२
पचासवपवत्तो	४३५१		पादोसिय अट्ठरत्ते	६१५१
पच्चणे दोमासे	३२६४	४२६५	पाभाइतम्मि काले	६१५५
पच्चेगतरे गीए	५५६६	५४६८	पमाणातिरेगधरणो	४५२७
पच्चेदियाण दव्वे	६१००		पामिच्चित्त पामिच्चावित	४४८६
पडए वातिण कीवे	३५६१	५१६६	पायस्सिच्छ-णास-कर	४५७२
पडुइया मि घरासे	१६८५		पायस्सिच्छते असतम्मि	६६७८
पतसुर-परिगगहिते	१६०१		पायस्सिच्छते पुच्छा	४८४५
पता उ असपत्ती	५१४७	२४६७	पायप्पमज्जणादी	२३०४
पथमहायमसड्ढो	५४८८	५३६३	"	३३१२
पथे ति णवरिण रोम्म	२४४३		पायम्मि य जो उ गमो	११६४
पसू अचित्तरयो	६०८६		पायसहरण छेत्ता	३१८७
पसू य मस-रुहारे	६०८५		पायावच्च कुट्टु विय	२२००

सभाष्यचूर्णि निशेधसूत्र

पायावच्च परिग्रहे	५१२१	२४७२	पासे तण्ण सोहण	५३६५
"	५१२४	"	"	५४०७
"	५१३०	२४८०	पासो त्ति वधण ति य	४३४३
पारणग-पट्ठिता-आणित	१६७६	३७००	पाहिज्जे णाणात्ता	३०४६
पारचिओ ण दिज्ज व	५६४५		पाहुडिय त्ति य एगे	३०१२
पारचि सतमसीत	६६१७		पाहुडिया वि हु दुविधा	२०२५
पारिच्छ-पुच्छमण्णह	२४१७		पाहुण्य च पउत्थे	११७६
पाव अवाउडातो	५३१६		पाहुण्विसेसदारो	४१७७
पावं अवायभीतो	६६६७		पाहुण तेण्णोण व	५०५६
पावते पत्तम्मि य	४७७०	६११	पिप्पलग णहच्छेदण	६७६
पासग-मट्ठिगिसीयण	६६४		पिप्पलग विकरणट्ठा	३४३६
पासत्थ-ग्रहाछिदे	४३५०		पियधम्मे ददधम्मे	२३६५
"	४६७१		"	२४४६
पासत्थमहाछिदे	४६६२		पियधम्मो ददधम्मो	१७५१
पासत्थमादियाण	४०५७		"	६१३१
पासत्थादि-कुसीले	१८४०		पिय-पुत्त खुडु थेरे	३७६४
पासत्थादिगयस्सा	२८२६		पियपुत्तथेरए वा	११७६
पासत्थादिमसत्त	४०६		पिसियासि पुव्व महिसि	१३६
पासत्थादी ढाणा	४६७०		पिहितुम्भणकवाडे	५६५५
पासत्थादी पुरिसा	४६६१		पिडस्स जा विसुद्धी	६५३४
पासत्थादी मु ङिते	५५७०	१२६२	पिडस्स परूवणता	४५७
पासत्थि ग्रण्णसभोइणीण	२०८६		पिडे उगम उप्पादणोसण	४५६
पासत्थि पडरज्जा	३१६८		पिडो खनु भत्तट्ठो	१००६
पासत्थोसण्णकुसीलठाण	३८८३		पीढग-णिस्सज्ज-दडग	१४१३
पासत्थोसण्णणिण	१८२८		पीढगमादी आसण	४०२१
"	१८३२		पीढफलएसु पुव्व	४०२५
"	४६६६		पीतीसुण्णो पिसुणो	६२१२
"	५१६	२५८५	पुच्छ सह-भीयपरिसे	४६२५
पासवण्णट्ठाणसरूवे	१५५५		पुच्छतमणक्खाण	३६८४
पासवण-पडण्णसिकज	५४५	२६११	पुच्छा कताकतेसु	८६५
पासवणमत्ता	१८६६		पुच्छा सुद्धे अट्ठा	३७४८
पासवणुच्चा वा	१८६६		पुच्छाण परिमाण	६०६०
"	१८५६		पुच्छाहीण गहिय	५०५८
पासवणुच्चा रादीण	१८६०		पु जा पासा गहित	१३१२
पासडिणिट्ठि पडे	४७४६	८८८	पुट्ठो जहा अवडो	५६०८
पासडी पुरिसाण	२३८२	४८१६	पुढवि-तण-वत्यमात्तिसु	५७६५
पासदणो पव	५७०५		पुढवि-दण-अगणि-मारुअ	३६११
पासित्ता भासित्ता	१८२३		पुढवि-ससरक्ख-हरिते	२०११

पुढवी-आउक्काए	१४५		पुरिसाण जो तु गमो
पुढवी-आउक्काते	१३७५	४६३६	पुरिसित्थी आगमणे
पुढवी-ओस सजोती	५५८		पुरिसेसु भीरु महिलासु
पुढवीमादीएसु	२३०८		पुरिसेहितो वत्थ
पुढवीमादीएसु	४६४८		पुरिसो आयरियादी
पुढवीमादी ठाणा	४२५७		पुरे कम्मम्मि कयम्मी
पुढवीमादी थूणादिएसु	४६४७		"
पुणरवि दव्वे तिविह	५००४	६०५	"
पुणरवि पडिते वासे	१२४३		पुव्वखतोवर असती
पुणम्मि रिग्गयाण	३२५८	४२८८	पुव्वगते पुरओ वा
पुत्तो पिता व जाइतो	१२६७		पुव्वगयकालियसुए
पुत्तो पिया व भाया	१७१४	३७३६	पुव्वगहित च नासति
"	१७१६	३७४१	पुव्वघर दारुण
पुप्फग गलगड वा	४३२८		पुव्वण्हमपट्टविते
पुयातीणि विमद्द	३०६१		पुव्वण्हे अवरण्हे
पुरकम्मम्मि य पुच्छा	४०५६	१८१६	पुव्वतव-सजमा होति
पुर-पच्छिमवज्जेहि	११६०	३५४१	पुव्वपयावितमुदए
पुरतो दुरुहणमेगते	४२५५	५६६४	पुव्वपरिगालियस्स उ
पुरतो य पासतो पिटुतो	३४४६	२६०२	पुव्वपरिसाडितस्स
पुरतो य वच्चति मिगा	३४४८	२६०१	पुव्वपवत्ते गहरा
पुरतो वच्चति साधू	२४३८		पुव्वपविट्ठे गतरे
पुरतो व मग्गतो वा	२४३७		पुव्वभरिणत्त तु ज एत्थ
पुरतो वि हु ज धोय	४०७१	१८२८	पुव्वभरिणतो व जयरा
पुराण सावग-सम्महिट्ठि	५६७१	३०८०	पुव्वभवियपेम्मेण
पुराणादि पणवेउ	५७१८	३१३०	"
पुराणेषु सावतेसु	६०४६		पुव्वभवियवेरेण
पुरिमच्चरिमाण कप्पो	३२०३		"
पुरिमतरति भूयगिह	५६०२		पुव्वमभिण्णा भिण्णा
पुरिसज्जाग्रो अमुओ	२०३७	१६८६	पुव्व अदत्ता भूतेसु
पुरिस-णपु सा एमेव	८७		पुव्व अपासिऊरा
पुरिसम्मि इत्थिगम्मि य	२७०६		पुव्व गुरूणि पडिसेविऊरा
पुरिसम्मि दुव्विणीए	६२२१	७८२	पुव्व चिय पडिसिद्धा
पुरिससागरिए उवस्सयम्मि	५२०३	२५५६	पुव्व चित्तेयव्व
पुरिसा उक्कोस-मज्झिम	७७		पुव्व तु असभोगी
पुरिसा तिविहा सघयण	७६		पुव्व दुच्चरियाण
पुरिसा य भुत्तभोगी	५३७	२६०२	पुव्व पच्छा कम्मे
पुरिसाण एगस्स वि	२६७२		पुव्व पच्छा सथुय
पुरिसाण जो उ गमो	२२८६		पुव्व पच्छुद्धिद्व

”	५५१०	५४१३	पोग्गल असती समितं
”	५५१२	५४१५	पोग्गल वेदियमादी
”	५५१३	५४१६	पोग्गल-मोयग-दते
पुव्व पच्छुदिट्ठे	५५०७	५४१०	पोडमय वागमय
पुव्व पि धीर सुणिघा	१६३३		पोत्थगजिणदिट्ठ तो
पुव्व भणिता जतणा	५६६३	३०६१	पोरिसिणासण परिताव
पुव्व मीसपरपर	५६६३		पोसगमादी ठाणा
पुव्व व उवक्खडिय	५७१६		पोसग-सपर-ण्ड-लख
पुव्व बुग्गाहिता केती	३७००		पोसिता ताइ कोती
पुव्वाउत्ता उवचुल्लचुल्लि	३०५७	१६५६	
पुव्वाए भत्तपाण	४१४१		फलगादीण अभिक्खण
पुव्वाणुपुव्वि पढमो	६६२०		फासुगमफासुगे वा
पुव्वाणुपुव्वी दुविहा	६६१६		फासुगमफासुगेण य
पुव्वामयप्पकोवा	१८२५		फासुग जोणिपरित्ते
पुव्वामयप्पकोवो	५६८८		”
पुव्वावरदाहिणउत्तरेहि	३६४७		फासुगपरित्तमूले
पुव्वावरसजुत्त	३६१८	५१८५	फासुयजोणिपरित्ते
पुव्वावरसभाए	६०५४		फिडितम्मि अद्धरत्ते
पुव्वाहारोसवण	३१६७		फिडित च दग्गि वा
पुव्वाहीय णासति	३२०७		फेडितमुद्दा तेण
पुव्वि पच्छाकम्मे	४०४४		
पुव्वुदिट्ठ तस्स उ	५५०६	५४१२	वत्तीसलक्खणधरो
”	५५०६	”	वत्तीसा अट्ठसय
पुव्वुदिट्ठ तस्सा	५५११	”	वत्तीसा सामन्ने
पुव्वे अवरे य पदे	१०५३		वत्तीसाई जा एक्कघासो
पुव्वोगहिते खेत्ते	४६३२	१०६६	वत्तीसादि जा लवणो
पुव्वोवट्ठमलट्ठे	६८७		वद्धट्ठिए वि एव
पुहवीमादी कुलिमादिणसु	५६०२		वद्धिय चिप्पिय अविते
पूअलिय सत्तु ओदण	२३६५	४८०३	वम्ही य सुन्दरी या
पूतीकम्म दुविध	८०४		वलवणणरूवहेतु
पेच्छह तु अणाचार	३४१८	२८७०	वलि धम्मकहा किड्ढा
पेज्जाति पातरासे	२४१८		वहि अतऽसन्निसन्निमु
पेसवितम्मि अदेते	३३६०	२७६१	वहि बुद्धी अट्ठजोयण
पेह पमज्जण वासए	२०६	३४३६	वहिता व णिग्गताण
”	५३८१	”	वहिधोतरट्ठ सुद्धो
पेहपमज्जणसणिय	५२६८		वहियण्णगच्छवासी
पेहाऽपेहकता दोसा	५८१३	३६६०	वहिया वि गमेतूण
पेहुण तदुल पच्चय	१३७४	४६३८	



बहिया वि होति दोसा	२५१६		बासत्ताणो पणग
बहुआइणो इतरेसु	२२४५		बाहाए अगुलीए व
बहुएसु एक्कदारे	६४०१		बाहाहि व पाएहि व
बहुएसु एगदारे	६४३०		बाहिठितपट्टितस्स तु
बहुएहि वि मासेहि	६४११		बाहिठिया वसभेहि
बहुएहि जलकुडेहि	६५६६		बाहिरकरणेण सम
बहुपडिसेविय सो या	६४२८		बाहिर खेत्ते छिण्णे
बहुमाणे भत्ति भइता	१४		बाहिरठवणावलिओ
बहुरयपदेस अन्वत्त	५५६६		बाहि आगमणपहे
बहुसो पुच्छिज्जतो	२६८२	१८८४	बाहि तु वसितुकाम
बध वह च घोर	३३८२	२७८३	बाहि दोहणवाडग
बध वहो रोहो वा	३७१६		बाहुल्ला गच्छस्स तु
बभवतीण पुरतो	५५६		विइयपदमणप्पज्जे
बभन्वए विराधण	१७६४		"
बभस्स वतस्स फल	३५३१		विइय पहुणिविसए
बभस्स होतऽगुत्ती	४०४६		बितिए वि समोसरणे
बाडग-साहि-णिवेसण	१४८५		बितिए वि होति जयणा
बादरपूतीय पुण	८०६		बितिएण एतऽकिच्च
बायालीस दोसे	४४५		बितिएणोलोएति
वारग कोदव-कल्लाण	३८७६		बितिओ वि य आएसो
वारस अट्ठग छक्कग	६४६६		"
वारम चोइस पणुवीसओ	१३८८		बितिय गिलाणागारे
वारस दस नव चेव तु	६५४७		बितियततिएसु नियमा
वारस य चउव्वीसा	२१३२		बितियपए एगागी
वारसअगुलदीहा	७१०		बितियपए कालगए
वारसमे उहेसे	५६६८		बितियपदज्झामिते वा
वारसविहमि वि तवे	४२		बितियपद तेण सावय
वालमरणेण य पुणो	३८११		"
वालस्सहु-बुड्ढ-अतरत्त	३२६३	४२६४	बितियपददोणिण वि बहू
वाल पडित उभय	४८		बितियपदमणप्पज्जे
वाला बुड्ढा सेहा	११२८		"
वाला मदा किड्डा	३५४५		"
वालादि परिच्चत्ता	१६४६	१६०४	"
"	१६४८	"	"
वाले बुड्ढे कीवे	३७४४		"
वाले बुड्ढे णपु से य	३५०६		"
वाले सुत्ते सूती	३२०८		"
वावत्तरि पि तह चेव	२१३७		"
वावीसमाणुपुवि	३६७४		"

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

वितियपदमणप्पज्जे	१६६६	वितियपदमणप्पज्जे
"	२००३	"
"	२०१६	"
"	२१५८	"
"	२१७१	"
"	२१७७	"
"	२१८०	"
"	२१८४	"
"	२१८७	"
"	२१६१	"
"	२१६४	"
"	२२२८	"
"	२२५४	"
"	२२६०	"
"	२२६८	"
"	२२७३	"
"	२२७५	"
"	२२७७	"
"	२२८०	"
"	२२८२	"
"	२२८५	"
"	२२६१	"
"	२२६४	"
"	२२६७	"
"	२३००	"
"	२३०२	"
"	२३०५	"
"	२३०६	"
"	२३११	"
"	२३१३	"
"	२३१५	"
"	२३२०	"
"	२३२२	"
"	२३२६	"
"	२३२८	"
"	२३३०	"
"	२३३२	"
"	२३३४	"
"	२३४०	"
"	२३४६	"

वित्तियपदमणपञ्जके	५६८४	वित्तियपद होज्जमण
"	५६९०	वित्तियपद अणवट्ठो
"	५६९५	वित्तियपद अट्ठाणे
"	६२५७	वित्तियपद आयरिए
वित्तियपदमणागाढे	१५६९	वित्तियपद उड्डाहे
वित्तियपदमणाभोगा	१६६२	वित्तियपद गम्ममाणो
"	२५२०	वित्तियपद गेलणो
वित्तियपदमणाभोगे	१०७८	"
"	१२०६	"
"	१४६८	"
"	१६६५	"
"	१७६५	"
वित्तियपदमणिजणे वा	६२८	"
"	६३७	"
"	६४३	"
"	६४८	"
"	६६०	"
"	६६६	"
"	६६७	"
"	७०७	"
"	७१६	"
"	७२४	"
"	१६२८	"
"	४०३०	"
वित्तियपदमधासथड	१३१३	"
वित्तियपदमसति दीहे	२२०	"
वित्तियपदमच्चियगी	१०८८	"
वित्तियपदमसविग्गे	५४६७	५४०१
"	५५३८	"
"	५५४७	वित्तियपद तत्थेव य
वित्तियपदवुज्झणजतरणा	५१३	वित्तियपद तु गिलाणे
वित्तियपद वूढ-ज्झामित	६४२	वित्तियपद तेगिच्छ
वित्तियपद वूढज्झामिय	६४७	वित्तियपद दोच्चे वा
वित्तियपद वुड्डमुड्डोरणे	१६३४	वित्तियपद परलिणे
वित्तियपद समुच्छेदे	६२६५	"
वित्तियपद साहुवदणा	२८८७	वित्तियपद पारच्चिय-
वित्तियपद सेहरोवणा	१८८२	वित्तियपद सबधी
वित्तियपद सेहसाहारणे	५७८०	वित्तियपद सामण्ण
वित्तियपद होज्ज असह	८०२	वित्तियपदे असिवादी
		वित्तियपदे आहारो

स भाष्यचूणि निशीयसूत्र

वितियपदे कालगते	३०६६	१६८८	वीयपय तेण सावय
वितियपदे जावोग्गहो	६७४		वीय जोगागाढे
वितियपदे जो तु पर	४७२		वीय तु अप्परूढ
वितियपदे दोण्णि वि बहू	११२०		वीयादि सुहुम घट्टण
वितियपदे वसधीए	१२८५		वीयारभूमि असती
वितियपदे वाघातो	१६५०		वीसीयठवणाए तू
वितियपदे वासासू	८४८		वीहावेती भिक्खू
वितियपदे सागारे	१५५४		वेटियमाइएसु
वितियपदे सेहादी	२४४		वेरम्गकहा विसयाण-
वितियपय तेण सावय	४२५४	५६६३	वोडिय सिवभूइओ
वितियपयमणाभोगे	३२७५		वोरीए दिट्ठ त
वितियम्मि रयण देवय	५१५८		वोहरण पडिमोद्दायण
"	५३७८		वोहिग-मेच्छादिभए
वितियम्मी दिवसम्मि	५८०	४६३३	
वितिय अपहुप्पते	५४८५	५३६०	भगव ! अणुग्गहता
वितिय उप्पाएतु	२८५६	५५६२	भग्गघरे कुडुंसु य
वितिय गिहि ओसण्णा	३२२१		भणइ य णाह वेज्जो
वितिय गुरूवएसा	२८६७		भणइ य दिट्ठ णियत्ते
वितिय च बुडढमुड्डोरगे य	१६२७		भणति रहे जइ एव
वितिय पढमे ततिए	२६५१		भणमारा भाणवेतो
वितिय पढमे वितिए	४०३७		भणितो य हद गेण्हह
वितिय पभुणिव्विसए	१२४०		भणिया तु अणुग्घाया
"	१२८०		भण्णति सज्जमसज्जम
वितिय पभुणिव्विसए	१२६८		भण्णति जहा तु कोती
वितियाऽऽगाढे सागारियादि	६०५६		भनट्ठणमालोए
"	६०६२		भत्तट्ठितऽपाहाडा
"	६०६६		भत्तपरिण गिलाणे
"	६१६४		"
"	६१७६		भत्तमदारामडते
वितियातो पढमपुब्बा	४१४२	५२६४	भत्तस्स व पाणस्स व
वितियादेसे भिक्खू	३४१४	२८६६	"
विंदू य छिय परिणय	६१३६		भत्त वा पाण वा
विय तिय चउरो	२६०		भत्ताति-सकिलेसो
"	३७७		भत्तामासे लेवे
विले मूल गुग्गा वा	३४०१		भत्ते पाणे धोवण
वीएसु जो उ गमो	४६६७		भत्ते पाणे विस्सामणे
वीएहि कदमादी	५२४२	३३२४	भत्ते पाणे सयणासणे
"	५३६५	"	भत्ते पणवग निगूहणा
			भत्तेण व पाणेण व

भ

भक्तोवधिवोच्छेद	२४८३		भावित करण सहायो
भक्तोवधिसजोए	१८००		भावितकुलाणि पविसति
भक्तोवधिवोच्छेय	२५३०		भावितकुलेसु गहण
भद्गवयरो गमण	५६८१	३०६०	भावे उक्कोस-पणीत
भद्गो तण्णीसाए	२४८२	३५८८	भावे पाउग्गस्सा
भद्देतरसुर-मणुया	४७५३	८६५	भावे पुण कोधादी
भद्देतरा तु दोसा	१४४१		भावेण य दब्बेण य
भद्देसु रायपिंड	२५३८		भावो तु णिग्गए सि
भद्दो उग्गमदोसे	१४५३		भासचवलो चउद्धा
भद्दो तण्णिस्साए	२५२६	३५८८	भासरो सपातिवहो
भद्दो पुण अग्गहण	१३७६	४६४३	भा-ससि-रितु-सूरमासा
भद्दो सव्व वितरति	२५७७		भिक्षचरस्सऽन्नस्स वि
भमुहाओ दत्तसोधण	१५१५		भिक्षणसीलो भिक्षू
भयउत्तरपगडीए	३३२१		भिक्ष-वियार-विहारे
भयगेलणऽद्धारो	४१६४		भिक्षस्स व वसधीय व
भयणपदण चउण्ह	२३४६		भिक्ष चिय हिडता
भयणपदण चतुण्ह	१६३८		भिक्ष पि य परिहायति
”	२४३६		”
भल्लायगमादीसु	२२६६		भिक्षातिगतो रोगी
भवपच्चइया लीणा	४२६६		भिक्षाति-णिग्गएसु
भववीरिय गुणवीरियं	४७		भिक्षातिवियारगते
भवेज्ज जइ वाघातो	३८४६		भिक्षादी वच्चते
भडी वहिलग काए	१४८६		भिक्षुगमादि उवासग
भडी-वहिलग-भरवाहिएसु	५६६६	३१११	भिक्षुणो अतिककमते
भाणप्पमाणगहरो	५८२७	४००४	भिक्षुदगसमारभे
भाणस्स कप्पकरण	११०६		भिक्षुवसहीसु जह चेव
”	२३६६	४८०७	भिक्षुसरक्खे तावस
भायणदेसा एतो	४५६१		भिक्षुसरिसी तु गणिणी
भायणुकम्पपरिण्णा	२३५६	५२५६	भिक्षुस्स ततियगहरो
भारेण वेयणाए	४१६६	५२८८	भिक्षुस्स दोहि लहुगा
भारेण वेयणाते	५८२६		भिक्षूगा जहि देसे
भारो भय परितावण	३२८०	३६००	भिक्षू जहणायम्मी
भारो भय परियावण	६७०		भिक्षे परिहायते
भारो विलवियमेत्त	५६७		भिण्णरहस्से व नरे
भावऽदुव्वार सपद	४७३०	८७०	भिण्णस्स पक्खणाता
भावम्मि उ पडिवद्धे	५३७	२५६२	भिण्ण गणायुत्त
”	५२४	२५६३	”
भावमि ठायमाणो	५४०	२६०५	भिण्ण समतिककतो
भावमि रागदोसा	३८८		भिण्णाणि देह भेत्तूण
भावाम पि य दुविह	४७१४	८४४	

भिण्णासति वेलातिक्कमे	८६२६	१०६६	भोयणमापणमिट्ठ
भिण्णे व ज्झामित वा	७३०		भोयणे वा रुक्खेते
"	७४८		
"	७७६		मडलकुचेलेअम्भगिए
"	६८५		मइल च मडलिय वा
भिण्णे व भामिते वा	७३५		मइले अणुभड्ढेतु
"	४५४७		मवकडमताणा पुण
भित्ता तु होइ अद्ध	४६६६		मगदतियपुष्पाइ
भिन्ने व ज्झामिते वा	७७४		मगहा कोसवीया
भिदतो वा वि खुध	६२८१		मग्गति येरियाओ
भीतावासो रतीधम्मे	५४५४	५७१४	मग्गो खलु मगडपहो
भुत्तभुत्ताण तहि	२५६१		मज्जणग-गधपुष्फोवयार
भुत्तभोगी पुरा जो वि	३८८१		"
भुत्तस्स सनीकरण	४०१२	३८३५	मज्जणगतो मुरु डो
भुत्तेयर दोस-कुच्छित्ते	५३१८	२३६२	मज्जणगादीच्छित्ते
भु जड ण व त्ति सेहो	३२८४		मज्जण-ण्हाणट्ठाणेसु
भु जग-वज्ज-पदाण	२१०२		मज्जण-निसेज्जअक्खा
भु जग वज्जा अण्णे	२११३		मज्जति व सिचति व
भु जसु पच्चनखात	३०३	६०७१	मज्जादाण ठवगा
भु जति चित्तकम्मट्ठिता	४४२१		मज्झ पडो रोस तुह
भु जतु मा व समणा	११३१		मज्झमिणमण्णपाण
भु जामो कमढगादिसु	३२२		मज्झम्मि य तरुणीओ
भु जिंसु मए सद्धि	३७६१		मज्झ दोण्हतगतो
भूतणगादी असणे	३६६३		मज्झा य वितिय-ततिया
भूणगगहिते खत	१३६३	४६२७	मज्झमवोम लहुगो
भूमि-वर-तरुणगादि	१०३३		मज्झेव गेण्हऊण
भूमिसिलाए फलए	३६०६		मज्झे व देउलादी
भूसणभासामदे	५४२	२६०७	मगलग्गमआहारादीया
भूसण-विघट्टणाणि य	२३३६		मण उट्ठियपदभेदे
भेद अडयालसेहे	३८५		मण उट्ठियपयभेदे
भेदो य मासकण्णे	१३१८	५४६	मण एसणाए सुद्धा
भोइत-उत्तर-उत्तर	१३६४	४६२८	मण परमोहिजिण वा
भोइयकुलसेविआओ	२१५२		मण-वयण-कायगुत्तो
भोइय-महयरमादी	२४५८	२०६१	मणिबधाओ पवत्ता
भोइयमाडविरोधे	२४०८		मणुण्ण भोयणज्जाय
भोइयमादीणज्जती	१३७३	४६३७	मत्तम अरोगि दीहाउयो
भोगत्तिणी विगत्ते	५१४८	२४६८	मत्तिलितफात्तितफोमित
भोत्तुग य आगमण	३४०७	२८५६	मत्तगग्गण्ण गुरुगा

मद्वकरण णाणं	६२२२	७८३	मात पिता पुव्वसथवो
मधुरा मगू आगम	३२००		माता पिता य भगिणी
मम सीस कुलिच्च—	३८६		माता भगिणी धूया
मयमातिवच्छग पि व	४४१६		"
मरुएहि य दिट्ठ तो	४८७३	१०१२	माति-समुत्था जाती
मरुगसमाणो उ गुरू	६५१६		मातुग्गाम हियए
"	६५२३		मा भु ज रायपिड
मरेज्ज सह विज्जाए	६२३०		मायामोसमदत्त
मलेण घत्थ बहुणा उ वत्थ	५८१७	३६६४	"
महजणजाणता पुण	४७८१	६२२	"
महतरअणुमहयरए	११६४	३५७४	"
महतरपगते बहुपक्खते	६०६७		"
महद्धरो अप्पधरो व वत्थे	५८२०	३६६७	मायावी चडुयारो
महिलासहावो सरवन्नभेओ	३५६७	५१४४	मालवतेणा पडिता
महिया तु गब्भमासे	६०८२		मालोहड पि तिविह
महिया य भिण्णवासे	६०७६		मा वद एव एककसि
महिसादि छेत्तजाते	३२५		मासचउमासिएहि
महुवोगलम्मि तिण्ण व	१५६३		मास जुयल हरिसुप्पत्ती
मगल-बुद्धिपवत्तण	२००६		मासगुरुगादि छल्लहु
मगलममगलिच्छा	२५६४		"
मगलममगले या	२००५		मासगुरु चउगुरुगा
मगलममगले वा	२०१०		मासगुरु वज्जिता
"	२५६८		मासाइ असचइए
मडलगम्मि वि धरितो	३५१४		मासादी जा गुरुगा
मतणिमित्त पुण रायवल्लभे	१३६०	४६२४	"
मसक्खाया पारद्धिणिग्गया	२५५३		मासादी पटुविते
मसच्छवि भक्खणट्ठा	२५५२		मा सीएज्ज पडिच्छा
मसाई पगरणा खलु	३४७६		मासे पक्खे दसरातए
मसाण व मच्छाण व	३४८१		मासो दोणिण ये सुद्धा
मसोवचया मेदो	५७३		मासो य भिण्णमासो
माउग्गामो तिविहो	२१६६		मासो लहुओ गुरुओ
मा किर पच्छाकम्म	१८५२		"
मा ण परो हरिस्सति	४६३५		"
मा णीह सयं दाह	२३६३		"
माणुम्माणपमाणा	४२६४		मिच्छत्त गच्छेज्जा
माणुम्माणपमाण	५६७७		मिच्छत्तथिरीकरण
माणुस्सण पि तिविह	५१६६	२५१६	"
माणुस्सय चतुद्धा	६१०६		"

सभाष्यचूर्णं निशीथसूत्र

मिच्छत्त-वडुय-चारण	१३१६	५४४	”
मिच्छत्त सोच्च सका	५०५२	२७६७	मूलगुण दइयसगडे
मिच्छत्ता मचत्तिए	३७६५	६००५	मूलगुण पढमकाया
मिच्छत्ते उड्डाहो	५६३७	३०४३	मूलगुणे उत्तरगुणे
”	५६२०	६१७०	मूलगुणे छट्टाणा
मिच्छत्ते सकादी	४७८८	६२६	मूलग्गामे तिण्णि उ
मिच्छापडिवत्तीए	२६४८		मूलतिचारेहिंतो
मिल्लक्खूस्वत्तभासी	५७२८		मूलव्वयातिचारा
मिहिलाए लच्छिघरे	५६००		मूल छेदो छग्गुरु
मीसाओ ओदइय	६३०२		मूल तु पडिक्कते
मुइग-उवयी-मक्कोडगा	२६१		मूल दससु असुद्धेसु
मुइगमादी-णगरग	२८३		मूल सएज्झएसु
मुक्कधुरा सपांगडकिच्चे	४३७१	४५४४	”
मुक्को व मोइओ वा	३६६२		मूलादिवेदओ खलु
मुक्को व मोइतो वा	३७१७		मूलुत्तर पडिसेवण
”	३६६६		मूलुत्तरे चतुभगो
मुक्को व मोतिओ वा	३६८०		मूले रु द अक्कणा
मुच्छातिरित्त पचमे	६३२१		मूसादि महाकाय
मुच्छा विसूइगा वा	१७३३		मेच्छभयघोसणणिवे
मुणिसुव्वयतवासी	३६६४		मेहा धारण इदिय
मुदिते मुद्धभिसित्तो	२४६८	६३८०	मेहाविणीयवत्ती
मुय णिव्विसते एट्ठुट्ठिते	१२४१		मेहुणभावो तव्भावसेवणे
मुरियादी आणाए	५१३७	२४८७	मेहुणसकमसके
मुह-णयण-चलण-दता	८६६		मेहुण पि य तिविध
मुहपोत्तिय-रयहरणे	१४२५		मेहुण पि य तिविह
मुहकोरण समणट्ठा	४६६६		मोक्खपसाहणहेउ
मुहणतगस्स गहणे	३६८५	४६६०	मोत्तु गिलाणकिच्च
मुहपोत्ति-णिसेज्जाए	२१८८		मोत्तु पुराण-भावित—
मुहमादि-वीणिया खलु	२०१३		मोत्तूण एत्थ एक्क
मु ड च धरेमाणे	६२६८		मोत्तूण णावरि वुड्ढ
मूइगमाति-खइते	२१८६		मोत्तूण वेदमूढ
मूगा विसति णित्ति व	५४००	३४५५	मोयगभत्तमलद्धु
मूढेसु सम्महो	२१७४		मोरणिक्कियदीणार
मूढो य दिसज्झयणे	६१३७		मोरी नउली विराली
मूलगिहमसवद्धा	२४६०		मोल्लजुत्त पुण तिविध
मूलगुण उत्तरगुणा	६५३०		मोह-तिगिच्छा खमण
मूलगुण उत्तरगुणे	३३०२		मोहोदय अणुवसमे
”	४३६६		”



रक्खम-पिसाय-तेणाइएसु	३३१७		
रक्खाभूसणहेउ	१७०		
रक्खज्जति वा पथो	३३७४	२७७५	रागेतर गुरुलहुगा
रज्जूमादि अछिण्ण	६३०१		रातिणिओ उस्सारे
रज्जू वेहो वधो	४२६६		रातिणियगारवेण
रज्जे देसे गामे	२८३७	५५७१	रातिणिय सारिअतरण
रण्णा कोकणगामच्चा	३८५६		रातो व दिवसतो वा
रण्णो ओरोहातिसु	३६६३		रायगिहे गुणसिलए
रण्णो उववूहणिया	२५५६		रायदुट्ठ-भए वा
रण्णो दुवारमादी	२५२६		रायदुट्ठभएसू
रण्णो पत्तेग वा	२४८१		”
रण्णो महाभिसेगे	२५६७		रायमरणम्मि कुल-घर
रण्णो य इत्थिया खलु	५१६५	२५१३	राया इव तित्थकरो
रत्तुक्कडाओ इत्थी	६११०		राया उ जहि उसिते
रमणिज्जभिकख गामो	५२५४	३३३५	राया कु थू सप्पे
रय-खोल्लमादिसु मही	४७७१		रायाऽमच्च पुरोहिय
रयणाइ चतुव्वीस	१०३१		रायाऽमच्चे सेट्ठी
रयत्ताणपत्तवधे	२८१		राया रायसुही वा
रयत्ताणपमाण	५७६१	३६७२	”
रयमाइ मच्छि विच्छ य	४१४		”
रयहरणेणोल्लेण	३२२८	४२५३	राया रायाणो वा
रसगधा तहि तुल्ला	४६१३	१०५०	रायादि-गाहणट्ठा
रसगिद्वो य थलीए	५५२६	५४२८	रासित्ति*** गाहा
रसगेहि अधिकखाए	१११६		रोहे उ अट्टमासे
रसगेही पडिवद्धे	४७८६		रिक्खस्म वा वि दोसो
रसालमवि दुग्गधि	१११३		रीयाति अणुवओगो
रहवीरपुर नगर	५६०६		रीयादसोधि रत्ति
रह-हत्थि-जाण-नुरगे	३०१४	१६१६	रक्खविलगो रुधितो
रवण किसि वाणिज्ज	४६६२		रुद्धे वोच्छिण्णे वा
”	४६८४		रूवस्सेव सरिसय
राईण दोण्ह भडण	३३८८	२७८६	रूव आभरणविहि
राईभत्ते चउव्विहे	४१२		”
रागगि सजमिवरा	६०८		रूव आभरणविही
रागदोसविउत्तो	६६६६		रूवे रूवसहगते
रागदोसविमुक्को	५६५८	३०६६	रोगेण व वाहीण व
रागदोसागुगता	३६३	४६४३	रोसेण पडिणिवेसेण वा
रागदोमुप्पत्ती	१२९		रोहे उ अट्टमासे

ल

लक्खणादूंस उवघायपडग	३५८०		लाला तया विसे वा
लज्जाए गोरवेण व	६८१		लिकखत-णिज्जमाणे
लत्तमपहे य खलुते	८२३४	५६४४	लिंगट्ट भिक्ख सीते
लद्धूण अण्णवत्थे	५०१४	६१४	लिंगत्थमादियाण
लद्धूण एवे इतरे	३२४५	४२७०	लिंगत्थस्स तु वज्जो
लद्धूण माणुसत्त	१७१८	३७४०	लिंगत्थेसु अकप्प
लद्धु ए णिवेदेती	३३३		लिंगम्मि य चउभगो
लद्धे तीरित कज्ज	१३८४	४६४८	लिंगेण कालियाए
लहुओ उ उवेहाए	२७८०	२६६६	लिंगेण चेव किडिया
लहुओ गुरुओ मासो	२६४६	५८४४	लिंगेण पिसितगहणे
लहुओ य दोसु दोसु अ	१०६		लिंगेण लिंगिणीए
लहुओ य दोसु य	१०८		लित्थारण दवेण
लहुओ य होइ मासो	३७२	४६५५	लिवि भासा अत्थेण व
लहुओ लहुगा गुरुगा	१८२०	६१२०	लुद्धस्सज्जभतरओ
लहुओ लहुया गुरुगा	६६३	६१२०	लेवकडे वोसट्ठे
लहुओ लहुया दुपडादिएसु	६१६	३८५२	लेवाडमणाभोगा
लहुगा अण्णगहम्मी	४७५८	६०१	लेवाडहत्तच्चिकेण
"	५२६६	३३४८	लेवेहि तीहि पूति
"	५२८०	"	लोइय-लोउत्तरिय
लहुगा तीसु परित्ते	४६०५	१०४१	लोइयववहारेसू
लहुगा य गिरालवे	४७३५	८७७	लोउत्तरम्मि ठविता
लहुगा य दोसु दोसु य	४७२२	८६१	लोए वि होति गरहा
लहु गुरु लहुया गुरुगा	५६४		लोण हवइ दुगु छा
लहुगो गुरुगो गुरुगो	१०७		लोकाणुग्गहकारीसु
लहुगो य होइ मासो	२२४६		लोगच्छेरयभूय
लहुगो लहुगा गुरुगा	३२०		लोगविरुद्ध दुपरिच्चयो
लहुगो वज्जणभेदे	१८		लोगे जह माता ऊ
लहुताल्हादीजणय	६३६१		लोगे वि य परिवाओ
लहुयादी वावारिते	८६६	६१०८	लोण व गिलाणट्ठा
लहुया लहुओ सुद्धो	६६३३		लोभे एसणघातो
लाउयदारुयपात्ते	६८५		"
लाउयदारुयपादे	७२६		लोभे य आभियोगे
"	६७५		लोयस्सऽणुग्गहकरा
लाभालाभपरिच्छा	६७८		लोलति मही य धूली
"	६८४		लोलती छग-मुत्ते
लाभालाभ-सुह-दुक्ख	२६८७		लोवए पवए जोहे
लाभालाभसुहदुह	४२६१		
लाभित नितो पुट्ठो	४५१६		वइगा अयोग-योगी

वङ्गाति भिक्खु भावित

४५५

"

वङ्ग्यासु व पल्लीसु व

२३६४

४८०२

वत्थव्व पउण जायण

वक्कतजोगि तिच्छड

३०५६

१९५५

वत्थ छिदिस्सामि त्ति

वक्कतजोगि थडिल

४८५८

९९८

वत्थ वा पाद वा

वक्केहि य सत्थेहि य

४१२१

वत्थ वा पाय वा

वच्चसि णाह वच्चे

३०४

६०७२

वत्थ सिव्विस्सामी

वच्चह एग दव्व

३१६

वत्थादिमपस्सतो

वच्चतस्स य भेदा

४७३३

६०८७

वत्थिणिरोहे अभिवड्डमारो

वच्चतो वि य दुविहो

५४८१

५३८६

वत्थु वियाणिऊणं

वच्चामि वच्चमारो

२८४८

वत्थेण व पाएण व

वच्छल्ले असितमु डो

४९०

वप्पाई ठाणा खलु

वट्टति तु समुद्देशो

३०६

६०७४

वप्पादी जा विह लोइयादि

वट्टति अपरितती

३८९९

वमण-विरेगादीहि

वट्ट समचउरस

६९३

४०२२

वमण-विरेयणमाणी

"

५८४६

"

वमण विरेयण वा

वडपादवउम्मूलण

५६५

"

वणगयपाटण कु डिय

२९६

वय-गड-थुल्ल-तणुय

वणणड्ढ-वणणकसिण

९१६

३८५१

वयसथवसतेण

वणसडसरे जल थल

२७८६

२७०७

वरतर मए सि भणितो

वणिउव्व साहु रयणा

२९६४

वरिसधरट्टाणादी

वणिय महिलामूढ

३६९९

वरिसा णिसासु रीयति

वणिया ण सचरती

३२२६

४२५१

वरिसेज्ज मा हु छणो

वणमविणवणकरो

४६३८

वलय वलयायममारो

वणविवच्चास पुण

४६३३

वसधी ण एरिसा खलु

वण-सर-रूव मेहा

४३३१

वसधी य असज्झाए

वणोण य गघेण य

१११२

वसधी य असंबद्धा

वतियादि मखमादी

४४७७

वसधीपूतिय पुण

वत्तणा सधणा चेव

६३६१

वसभा सीहेसु मिगेसु

वत्तम्मि जो गमो खलु

२७५४

५४९४

वसभे छगुणाई

"

५५९०

"

वसही आधाकम्म

वत्तवओ उ अगीओ

५५८३

५४८३

वसहीए दोसेण

"

२७४५

"

वसही दुल्लभताए

वत्तस्स वि दायव्वो

५४८३

५३८८

वसहीरक्खणवग्गा

वत्ते खलु गीयत्थे

२७३७

५४७५

वसिकरण-सुत्तगस्सा

"

५५७५

"

वसुम ति व वसिम ति व

वत्थत्था वसमारो

६०२८

वहण तु गिलाणस्सा

वत्थम्मि णीणित्तम्मी

५०५४

२७९८

वहवंधण उद्दण

वत्थव्वजयणपत्ता

२९३९

"

"

मभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

वका उ ण साहती	२६८२	५३५८	वासावासविहारे
वजणमभिदमाणो	१६		वासासु अपडिसाडी
वदिय पणमिय अजलि	२१०३		वासासु व तिणिण दिसा
वसग कडणोक्कपण	२०४७	५८३	वासासु वि गेण्हती
वाउल्लादीकरणो	१६१		वासासू दगवीणिय
वाए पराजिओ सो	५६०६		वासेण एदीपूरेण
वाएतस्स परिजित	६२३२		वाहि-णिदाण-विकारे
वाओदएहि राई	३१८८		विउसग्ग जोग सघाडए
वाघाते असिवाती	१०६३		विउसग्गो जाणणट्टा
वाघाते तत्तिओ सि	६१२६		”
वाघातो सज्झाए	२५०७		विकडुभमग्गो दीह
वाणतरिय जहण्ण	५११७	२४६८	विगतिमणट्टा भु जति
वात खलु वात कटग	५६४७	३०५५	विगति विगतिवभीओ
वातातवपरितावण	३०१५	१६१८	विगति विगतीभीतो
वादपरायणकुविया	५५२७		विगतीए गहणम्मि वि
वाद जप्प वितड	२१३०		विगतीकयाणुवधो
वादो जप्प वितडा	२१२६		विगयम्मि कोउहल्ले
वायण पडिपुच्छण	२०६४		विग्गहगते य सिद्धे
वायाए णमोक्कारो	४३७२	४५४५	विग्गहमणुप्पवेसिय
वायाए हत्थेहि	२७८४	२७०५	विच्चाभेलण सुत्ते
वायामवग्गणादी	४६४		विच्छु य सप्पे मूसग
वायायवेहि सूसति	३३६४		विज्ज-दवियट्टाए
वारगसारणि अण्णावएस	३२६		विज्जस्स य पुप्फादी
ारत्तग पव्वज्जा	५८६०	४०६६	विज्जा-ओरस्सवली
ारस य चउव्वीसा	२१३४		विज्जा-तवप्पभाव
ारेइ एस एय	२७६५	२७१७	विज्जा-मत-णिमित्ते
ाले तेरो तह सावए	५६४३	३०४६	विज्जाए मतेण व
ावारे काल धरो	३७२३		विज्जादसती भोयादि
ास उडु अहालदे	२१२०		विज्जादीहि गवेसग
”	२१२१		विज्जा मत-परुवण
ास-सिसिरेसु वातो	२४१		”
वासत्ताणास्सवरिया	६०८४		विणिउत्तभड भडग
वास न उवरमती	३१६०		वितिगिच्छ अद्भसथड
वासाखेत्तालभे	३१४६		वित्थारायामेण
वासाण एगतर	१२७८		”
वासाण एस कप्पो	३२४१	४२६६	विदु कुच्छत्ति व मण्णति
वासादिसु वा ठाओसि	३७६३		विद्धसण छावरण ेग्गो य
वासा पयरणगहणे	११६७		विविपरिहरणे

विधुवण णत कुसादी	५०६		वीयारे वहि गुरुगा
विपुलकुले अत्थि वालो	३५३८		वीरल्लसउणि वित्तामिय
विपुल च अण्णपाण	१८६०		वीरवरस्स भगवतो
विप्परिणतम्मि भावे	१२५७		वीसज्जिता य तेण
विप्परिणमेव सण्णी	३७३३		वीसऽट्टारस लहु गुरु
विप्परिणामणसेहे	२७१३		वीसत्थादी दोसा
विमलीकतस्मह चक्खु	१०४६		वीसत्था य गिलाणा
विम्हावणा तु दुविधा	३३३७		वीसरसद्वरुते
वियडत्तो छक्काए	६०३३		वीस तु आउलेहा
वियडत्तस्स उ वाहि	६०४०		
वियड गिण्हइ वियरति	१३१		”
वियणऽभिधारण वाते	३७५८		वीस वीस भडी
विरए य अविरए वा	४०५५		वीसाए अद्धमास
विरतिसहाव चरण	४७६४	६३४	वीसाए तू वीस
विरहालभे सुल—	३५८		वीसा दो वाससया
विरहे उ मठायत	२६५७		वीसा य सय पणयालीसा
विरुवरुवादि ठाणा	४१३६		वीसु उवस्सते वा
विलउलए य जायइ	३४६५	२६१५	वीसु दिण्णे पुच्छा
विलियति आरुभते	४६४६		वीसु भूओ राया
विवरीय दव्वकहणे	२६१		वुग्गहडडियमादी
विसकु भ सेय मते	२०४		वुग्गहवक्कताण
विसगरमादी लोए	१८०६		वुत्त दव्वावात
विसमा आरोवणाए	६४६२		वुत्त वत्थग्गहण
विसय कलहेतर वा	२२५७		वुसिरातियागणातो
विसुआवणसुक्कवण	८४५		वुसि सविग्गो भणितो
विहमद्धान भणित	५६३४		वेउव्वियलद्धी वा
विहरण वायण आवामगाण	४३३६		वेकच्छिता तु पट्टो
विहि-अविहीभिण्णम्मी	४६०२	१०३६	वेज्जस्स पुव्वभणिय
विहिणिग्गतादि	५४०१		वेज्जस्स व दव्वस्स व
विहिणिग्गतो तु जतितु	५३६		वेज्ज ण चेव पुच्छह
विहिवधो वि ण कप्पति	७४०		वेज्जेट्ठग एगदुगादि
विहिभिण्णम्मि ण कप्पति	४६२०	१०५७	वेज्जे पुच्छण जयणा
विहिसुत्ते जो उ गमो	३१२३		वेण्टियगहणिक्खेवे
वीमसा पडिणीता	५१४६	२४६६	वेयावच्चस्सट्ठा
वीमसा पडिणीयट्ठया	५१४४	२४६४	वेयावच्चे अणलो
वीयरग समीवाराम	५०७४		वेयावच्चे तिविहे
वीयार-गोयरे येरसजुओ	३६१३	५१८०	वेरग्गकर ज वा वि
वीयारभूमि असती	५६१३		वेरग्गकहा विसयाण
वीयारभूमि-वेण	५६१३		वेरग्गतो विवित्तो य

सभाष्यवर्णि निशीयसूत्र

वेर जत्य उ रज्जे	३३६०	२७६०	सगणम्मि पच राइदियाइ
वेलातिक्कमपत्ता	१०६०		"
वेलुमओ वेत्तामओ	८३०		सगणिच्चया स-सिस्सिणि
वेलुमयी लोहमयी	७१८		सगदेस परदेस विदेसे
वेवग्गि पगु वडभ	३६४६		सग-पायम्मि य रातो
वेहाणस ओहाणे	३०६०	१६८८	सगला-ऽसगलाइन्ने
वेहारुणाण मण्णे	४५३१		सगुरुकुल सदेसे वा
वोच्चत्थे चउलहुया	३०१०	१६१३	सग्गहणिव्वुड एव
वोच्छिण्णमडवे	४२२		सग्गाम-परग्गामे
वोच्छिण्णम्मि मडवे	३८००		"
वोच्छेदे तस्सेव उ	६०५८		"
वोसट्ठकायअसिवे	४२६६		"
"	४२७१		सग्गामे सउवस्सए
"	४२७४		सच्चित्त-णतर-परपरे य
"	४२७७		सच्चित्तेण उ धुवणे
वोसट्ठ पि हु कप्पति	४६६६		सच्चित्ते लहुमादी
"	५८७३		सच्चित्तखट्ठकारग

स

सइ लाभम्मि अणियता	१३४१		सच्चित्तामीसएसु
सउणग-पाय-सरिच्छा	१६३३		सच्चित्तामीमगे वा
सउणी उक्कडवेदो	३५६४		सच्चित्ता-खखमूल
सयरीए पणपण्णा	६४७८		सच्चित्ता-खखमूले
सकडक्खपेहण बाल—	२३३७		"
सकड द्ह समभोम्मे	४८५७		"
सकल-प्पमाण-वण्ण	६१३		"
स किमवि कातूणऽथवा	२०८३		सच्चित्ता अच्चित्ता
मकि भजणम्मि लहुओ	३६८७		"
सक्कमहादीएसु	१६०८		सच्चित्तावफलेहि
सक्कयमत्ताविदू	१७		"
सक्कर-घय-गुलमीसा	५६८४	३०६३	सच्चित्ता वा अथ
सक्का अपसत्थाण	३३२८		सच्चित्तादि हरति ए
सक्खेते जइ ए लब्भति	४१७२		सच्चित्तादी तिविध
सक्खेत्ते परखेत्ते	३२६०	४२६०	सच्चित्तादी दव्वे
सक्खेत्ते सउवस्सए	१२०५		"
सग-जवणादि विरूवा	५७२७		सच्चित्ते अच्चित्ते
सगणम्मि एत्थि पुच्छा	६५८६		"
"	२८७२		सच्छदमणिद्विट्ठे

सच्छद परिणता	४५५६		सण्णी सण्णाता वा
सच्छदेण उ एक्क	५७१४		सण्णीसु असण्णीसु
सच्छदेण य गमण	५७११	३१२३	सण्णीसु पढमवग्गे
सच्छदेण सय वा	५७१२		सण्णे करेति थुल्ल
सजियपतिट्ठिए लहुओ	४७६६	६०६	सति कालद्ध एणानु
सज्जग्गहणातीत	३३६१	२७६१	सति कालफेडरो
सज्जाएण गु खिण्णो	१६६३	३७१६	सति कोउएण दोण्ह वि
सज्जाए पलमथो	१२२२		सति दो तिसिय अमादी
सज्जाए वाघाओ	१६७६	३७०३	सतुसा सचेतणा वि य
सज्जायट्ठा दप्पेण	३२५६	४२७६	सत्तचउक्का उग्घाइयाण
सज्जायमचितेता	६१२६		"
सज्जायमातिएहि	२८१३	५७७६	सत्त तु वासासु भवे
सज्जायवज्जमसिवे	६०७३		सत्त दिवसे ठवेत्ता
सज्जाय कारुण	१२७१		"
सज्जा-लेवण-सिब्बण	४१६३	५२८४	सत्त य मासा उग्घाइयाण
सट्ठाणागुग केई	६६२६		सत्तट्ठगमुक्कोसो
सट्ठाणो अगुक्का	१६७५	२६७६	सत्तट्ठि एक्खत्ते
सडित-पडिताण करण	२०२१		सत्तण्ह वसणाण
"	२०५४		सत्तरत्त तवो होइ
सडिढ गिही अण्णतित्थी	१४४३		सत्तरत्त तवो होति
सड्ढी गिहि अण्णतित्थी	१०७४		"
सड्ढेहि वा वि भण्णिता	१२०३	३५८३	सत्तसया चोयाला
सणमाई वागविही	७६१		सत्त अदीणता खलु
सणसत्तरसा धण्णा	४६५६		सत्तारस पण्णारस
सणिसेज्जो व गतो पुण	२१२६		सत्तोया दिट्ठीओ
सण्णातगा वि उज्जुत्तरोण	२६७८	५३५४	सत्थपणए य सुद्धे
सण्णातगिहे अण्णो	१२६३		सत्थपरिण्णा उक्कमे
सण्णातगे वि तथ चेव	१२६१		सत्थपरिण्णा उक्कमो
सण्णाततेहि णीते	१३३६		सत्थवाहादि ठाणा
सण्णातपल्लि रोहिण	५८५		सत्थहताऽऽसति
सण्णातसखडीसू	१२१३		सत्थ च सत्थवाह
सण्णायग आगमरो	३४१०		सत्थाए अइमुत्तो
सण्णा सिंगममादी	२४७		सत्थाए पुव्वपिता
सण्णिविसण्णिचयातो	२४६२		सत्थाहऽट्ठगगुणिता
सण्णिहित जह स-जिय	२२०६		सत्थे त्ति पचभेदा
सण्णिहिय-भट्ठियासु	२२२५		सत्थे वि वच्चमारो
सण्णिहिय जह सजिय	२२१२		सद्धम्म हत्थवत्थादिए
"	२२२०		सद्धणा खलु मूल

मद् च हेउमत्य	५५३०	५४३१	समगुणोमु विदेम
मद् वा मोऊण	५१६		समणोण समणि सावण
मद्वाड डदियत्योवग्रोण-	२५१८		ममणोहि य अमणतो
मद्दे पुण धारेउ	५६६७		समणो उ वणो व भगदले
मद्देसे सिस्सिणि सज्झ	२२३३		समत त्ति होति चरण
सन्नातिगतो अद्वाणिग्रो	२७०१		समवायाई तु पदा
मन्नामुत्ता मागारिय	५०६६		समवायादि ठाणा
सन्नि खरकम्मिग्रो वा	३६१६	५१८३	ममाणे बुड्ढवासी
सन्निहिताण वटारो	६१४२		ममि-चिचिणिवादीण
मपरक्कमे जो उ गमो	३६३६		समितीण य गुत्तीण य
मपरिकम्मा सेज्जा	२०४५		समिती पयाररूवा
मपरिग्गह अपरिग्गह	१८६७		समितीसु य गुत्तीसु य
मपरिग्गहेतरो वि य	४३१४		समितो नियमा गुत्तो
मपरिपक्खो विसयदुट्ठो	३६६२		समुच्छति तर्हि वा
सप्पडियरो परिणी	४०६		समुदाण पारियाण व
सविनिज्जाण व मु चति	५७१५	३१२७	समुदाण पथो वा
सवीयम्मि ग्रतो मूल	२२४०		समुदाणि ओयणो
सवेटप्पमुहे वा	३४७७		सम्मज्जण वरिसीयण
सभमादुज्जाणगिहा	२४२७		सम्ममसम्मा किरिया
सभए सरभेदादी	५६८७	३०६७	सम्मेयर मम्म दुहा
समग तु अणोणोसू	३७७०		सम्मेलो घडा भोज्ज
समणगुणविदुज्जयजणो	५७३४	३२६६	सयकरणे चउलहुग्रा
समणोधिकरणे पडिणीय	६३३४		सयगुणसहस्सपाग
समणभडभावितेसु	५७५७	३२८८	सयणो तस्म सरिसओ
समणाण सजतीहि	५६१६		सयमेव कोइ साहति
समणाण इत्थीसु	५१६८		सयमेव छेदणम्मी
समणाण जो उ गमो	३७८७		सयमेव दिट्ठपाद्दी
समण समणि सपक्खो	५६६८	३०७७	सयमेव य अवहारो
समणि मणुणो छेदो	२१००		मयसिच्चणम्मि विद्धे
समणी उ देति उभय	२१०६		सय चेव चिर वासो
समणी जणो पविट्ठे	१७३०		सरतिमिगा वा विप्पिय
समणुणदुमणिमित्ता	६३२४		सरिक्खे सरिच्छेदे
समणुणमणुणो वा	२१२४		सरिक्खे सरिच्छेदे
समणुण-सजतीण	२०८८		सरिसावराहदो
समणुणस्स विधीए	२१०१		मरीरमुज्झय जेण
समणुणा परिसकी	४१०४	१८६२	सरीरे उवकरणम्मि य
समणुणोण मणुणो	२०७४		मविकारो मोहुदीरणा
समणुणोत्तर गिहि-	१६७६	२६८३	सविगार अमज्झत्ये



सविगारो मोहुदीरणा	२२६३		सव्वेसि तेसि आणा
"	२२६६		सव्वेसि सजयाण
"	२२६६		सव्वेसि अविसिट्ठा
सव्वत्थ पुच्छणिज्जो	११६५	३५७५	सव्वेसु वि गहिएसु
सव्वत्थ वि आयरिओ	६०२३	४३४६	सस-एलासाइ
सव्वत्थ वि सट्ठाण	६६३८		ससणिद्ध दुहाकम्मे
"	६६३६		ससणिद्ध वीयघट्टे
सव्वपदाणाभोगा	३६३		ससणिद्ध-सुहुम
सव्वमसव्वरत्तणिओ	२०६		ससणिद्धे उदउल्ले
सव्वम्मि उ चउलहुगा	२०३३	१६८०	ससरक्खाइहत्थ पथे
सव्वम्मि तु सुयणाणे	३३०४		ससहायअवत्तोण
सव्वस्स छड्डुण विगिचणा	२६१६	५८१३	ससिणिद्धमादि अहिय
सव्वस्स पुच्छणिज्जा	२४२२		ससिणिद्धमादि सिण्हो-
सव्वस्स वि कातव्व	५५२०	५४२४	सहजेणागतूण व
सव्वसहण्णभावातो	३६१६		सहसा व पमादेण
सव्व नेय चउहा	४८२१	६६२	सहसुण्णइयम्मि जरे
सव्व पि य त दुविह	४७०७		सहिणादी वत्था खलु
सव्व भोच्चा कोई	३८६५		सकप्पुट्टियपदभिदणे
सव्व भोच्चा कोती	३८६४		सकप्पे पदभिदण
सव्वगिया उ सेज्जा	१२१७		सकप्पो सरभो
सव्वाओ अज्जातो	३६१८		संकम-करणे य तहा
सव्वाणमाइयाण	३४८६		सकम जूवे अचले
सव्वाणि पचमो तद्धिण	४०७८	१८३५	सकमथले य णो थले
सव्वासि ठवणाण	६४७४		सकमतो अण्णागण
"	६४८३		सकलदीवे वत्ती
सव्वाहि व लद्धीहि	३६१६		सका सागारद्दे
सव्वे णाणपदोसादिएसु	३३२६		सकुचित तरुण आतप्पमाण
सव्वे वा गीयत्था	५०१८	६१८	सख-तिणिसागुलुचंदणाइ
सव्वे वि खलु गिहत्था	४६६०		सखडिगमणे वितितो
"	४६८२		सखडिमभिधारेता
सव्वे वि तत्थ रु भति	१३८३		संखुण्णातो तवस्सी
सव्वे वि दिट्ठुल्ले	१२७०		सखेज्जजीविता खलु
सव्वे वि पदे सेहो	२४५		सखे सिगे करतल
सव्वे वि य पच्छित्ता	६४६६		सगामदुगपल्लवण
सव्वे वि लोहपादा	४०४३		सगामे साहसितो
सव्वे समणा समणी	२६७४	५३५०	सघट्टणा तु वाते
सव्वे सव्वद्धाते	३६१५		सघट्टणा य घट्टण
सव्वेसि एगचरण	५४२८		सघट्टणा य सिचण

सघट्टणादिएसु	२१५		सजमठाणाण कडगाण
सघट्टे मासादी	१८५		सजमतो छक्काया
सघयणाधित्तुत्तो	३६३६		सजमदेहविरुद्ध
सघयण जह सगड	६५१६		सजम-महातलागस्स
सघयणेण तु जुत्तो	८३		सजमविग्घकरे वा
सघयणे सपण्णा	७८		"
सघस्स पुरिम-पच्छिम	२६६७	५३४३	"
सघस्सायरियस्स	४८५		सजम-विराहणाए
सघ समुद्दिसित्ता	२६६८	५३४४	सजयगरो गिहिगरो
सघाडए पविट्टे	५०६१	२८१०	सजय-गिहि-तदुभयभद्गा
सघाडगा उ जाव तु	६५६७		सजयगुरु तदहिवो
"	६५६८		सजयपदोसगहवति
सघाडगा उ जाव	१८८८		सजयपरे गिहिपरे
सघाडगा उ जो वा	२८८३		सजयभद्गमुक्के
सघाडगाओ जाव उ	२८८२	५५६६	सजयभद्गा तेणा
सघाडगाणुवद्धा	३६४३		सजोए रणमादी
सघाडणा य परिसाडणा	१८०४		सजोगदिट्ठपाठी
सघाडमादिकधरो	५८३	४६३६	सजोय-विधि-विभागे
सघाड दाऊण	२०८०		सभागतम्मि कलहो
सघाडिओ चउरो	४०२६		सभागतम्मि रविगत
सघाडेगो ठवणा	४१७३	५२६२	सभा राती भणित्ता
सघातणा य पडिसाडणा	१८०२		सठावणा लिपणत्ता
सघातिएतरो वा	१४०८	४०६२	सठियम्मि भवे लाभो
सचइयमसचइते	१६५१	१६०६	सडासछिड्डेण हिमाइ एति
सचरित्ते वि हु दोसा	३७८१		सणिहिमादी पढमो
सचालणा तु तस्सा	५६५		सतगुणणासणा खलु
सजतगतीए गमण	१०६६		सतविभवा जति तव
सजतरिणए गिहिणिणए	६७८		सतम्मि य बलविरिए
सजत-भद्गा गिहि-भद्गा	१६७१		सतासतसतीए
सजतिगमरो गुरुगा	२४५२		"
सजतिवग्गे गुरुगा	२०६१		"
सजतिवग्गे चेव	२०७८		"
सजमअभिमुहस्स वि	१६८१	३७०५	"
सजमआतविराधणा	११५		"
सजमखेत्तचुयाण	३२०५		"
सजमखेत्तचुया वा	८२६		"
सजमघाउप्पाते	६०७५		"
सजम-चरित्तजोगा	४८६६	१०३५	"
सजमजीवियहेउ	३६५	४६४५	"

	७४६		मभोइयमण्णसभोइयाण
"	७७५		सभोगपरूवणता
"	७७७		सभोगमण्णसभोइए
"	७८०		सभोगा अवि हु तिहि
"	७८८		सरभ मणेण तू
"	६८३		सलवमाणी वि अह
"	६६०		सलिहित पि य तिविध
"	६६२		सलेह पच भागे
"	६६७		सवच्छर गणो वा
सती कु थू य अरो	२५६१		सवच्छर च रुट्ठ
सथडमसथडे वा	२८८८	५७८५	सवच्छराणि तिण्णि उ
सथडिओ सथरंतो	२६१०	५८०७	सवच्छरा तिन्नि उ
सथरणम्मि असुद्ध	१६५०	१६०८	सवट्ठणिग्गयाण
सथरमाणमजाणत	१०७६		सवट्ठम्मि तु जतरा
सथारएहि य तहि	५२५६	३३४०	सवालादगुरागो
सथार कुसघाडी	१७४४	३७६७	सवासे जे दोसा
सथारगगिलाणे	४०१४	३८३७	सवासे सभोगो
सथारविप्पणासे	१३१४		सवाहणमब्भगण
सथारविप्पणासो	१३५४	४६२०	सविग्ग णितियवासी
सथार देहत	१२५३		सविग्ग-भाविताण
सथारुत्तरपट्ठो	५८०३	३६८०	सविग्ग-भावितेसु
"	१२३०		सविग्गमसविग्गा
सथारेगमणेगे	१३०५	४६०५	सविग्गदुल्लभ खलु
सथारो दिट्ठो ण य	१२५२		सविग्गमगीयत्थ
संदिसह य पाउग्ग	२५८०		सविग्गमगीयत्थ
सपत्ति-रणुप्पती	२१५४		सविग्गमणुण्णाते
सपत्तीइ वि असती	४१००	१८५७	सविग्गमण्णसभोइएहि
सपत्ती व विवत्ती	४८०८	६४६	सविग्गमण्णसभोगिएहि
सपाइमे असपाइमे य	५३२७	२४०१	सविग्गमसविग्गे
सपातिमादिघातो	२४३		"
"	५६२३		"
सपातिमे वि एव	५३३०	२४०४	"
सफाणितस्स गहण	१६४३		सविग्गमसविग्गो
सफासमणुप्पत्तो	३६४०		सविग्गसजतीओ
सवधभाविणसु	३२४६	४२७४	सविग्गा गीयत्था
सवधवज्जियत्ती	१७६६		सविग्गा समणुण्णा
सवाहणा पथोवरण	१४६५		सविग्गाण सगासे
सभिच्चेण व अच्छह	१३२०	५४८	सविग्गादणुसट्ठो

सभाष्यचूर्ण निशेधसूत्र

सविग्गासविग्गे	३००८		सागारियादि पलियक—
सविग्गेतरभाविय	१६८६	२६६०	सागारिसज्जाण
सविग्गेहसुसट्ठो	४५६१		साड्डभगण उच्चलण
सविग्गो सेज्जायर	३०६६	१६६४	सागादीभक्खणता
ससज्जिमेसु छुम्भति	४१५२	५२७४	सागुण्यगभक्खट्ठा
ससट्ठमसमट्ठे	४११६	१८६८	सातिज्जसु रज्जसिरि
ससत्तपथ-भत्तो	२५८		सादू जिणपडिकुट्ठो
ससत्तपोगलादी	२८६		सावम्मत्त वेधम्मत्त
ससत्ताति न सुज्झति	३४०६	२८५७	सावम्मियत्यलीसु
मसत्तेऽपरिभोगो	२६६		साधम्मिया य तिविधा
समत्तोसु तु भत्तादिगसु	२६७		माधारण-पत्तेगो
ससयकरण सका	२४		साधारणो विरेग
ससारगडुपडितो	४६५		साधु उवासमाणो
ससाहगस्स सोतु	५४६३	५३६८	"
समोहण ससमण	४४३६		सा पुण जहण उक्कोम
साण्ठा गाऽग्रोजभा	३३८७		साभावि गितिय कप्पति
सागवतादावावो	१२३		साभावित च उच्चिय
सागगिण गिक्खित्ते	२०५		साभाविते तिण्णि दिग्गा
सागगिया तू सेज्जा	५३५२		साभावियणिस्साए
सागारिअदिण्णोसु व	४०१		सा मग्गति सावम्मी
सागारिउ त्ति को पुण	११३८		सामणो जे पुर्वि
सागारिपुत्त-भाउग	११६६	३५४७	सामत्थ गिव अपुत्तो
सागारिय-अधिकरणो	२४७१		सामाइय पारेतूण
सागारिय तुरियमणभोगतो	१६४		"
सागारिय-सज्झाए	६५५		सामाइयमाईय
सागारिय-सतिय त	१६५७		सामा तु दिवा छाया
सागारियणिक्खेवो	५०६८	२४५०	सामायारि वितह
सागारियणिस्साए	१२११		सामित्त-करण-अधिकरण
"	३५६०		सामित्तो करणम्मि य
सागारियमखल्लदण	४४७८		सामी चार भडा वा
सागारियसण्णातग	१२१०		सारीर पि य दुविह
सागारियसदिट्ठे	११४५	३५२६	सारुवि-सावग-गिहिगे
सागारियस्स गध	३५६८		साट्ठवि सिद्धपुत्तेण वा
सागारियस्स णामा	११४०	३५२१	सारेऊण य कवय
सागारिय अपुच्छिय	१२०६		सारेहिति सीयत
सागारिय गिरक्खति	३५८४	५१६०	सालत्ति एववि रोम
सागारिया उ सेज्जा	५०६७		सालवो सावज्ज
सागारियादिकट्ठण	६०६८		माता तु अहे वियडा

सालितणादि ज्भुसिरो	१२१६		सिप्पाई सिक्खतो
साली-धय-गुल-गोरस	२६६२	५३४१	सिरिगुत्तेण छलुगो
सावगसणिण्ढाणे	२३६६	३८३६	सिहिरिणि लभाऽऽलोयण
सावततेणा दुविधा	३२६४		सिचण वीयी पुट्ठा
सावत्थी उसभपुर	५६२२		सिचति ते उवहि वा
सावय अण्णट्टकडे	५६६४		सीओदगभोईण
सावय-तेण-परद्धे	५६६५	३१०४	सीत पर्उरिधणता
सावय तेणभया वा	२५५		सीताणे ज दड्ढ
सावय-भय आणेति वा	२२६	३४५८	सीतितरफासु चउहा
सावयतेणे उभय	४२२४	५६३४	सीतेण व उसिणेण व
सावयभए आणिति व	५४०३	३४५८	सीतोदगभावित अविगते
सावेक्खो त्ति व काउ	६६५७		सीतोदगम्मि छुब्भति
सासवणाले छदण	३६८३	४६८८	सीतोदगवियडेण
सासवणाले मुहणतए	३६८२		सीतोदे उसिणेदे
साहम्मि अण्णहम्मि य	३६४२		सीतोदे जो उ गमो
साहम्मि य उद्देसो	४५२५		सीसगणम्मि विसेसो
साहम्मि य वच्छल्लं	२६		सीसगता वि ए दुक्ख
साहम्मियत्थलासति	३४६		सीसपडिच्छे पाहुड
साहारणस्स भावा	५७०३		सीस उरो य उदर
साहारण तु पढमे	५५०३	५४०७	सीसोकपण हत्थे
साहारणे वि एव	४६४६		सीसोकपिय गरहा
साहिकरणो य दुविहो	२७७३		सीहगुह वग्घगुह
साहिंति य पियधम्मा	१६४३		सीहाऽऽसीविस अग्गी
साहु उवासमाणो	४६७४		सुअ अव्वत्तो अग्गीओ
साहूण देह एयं	५७४६	३२८०	सुक्खोदणो समितिमा
साहूण वसहीए	५३०१	३३८०	सुक्खोल्ल ओदणस्सा
सिक्कगकरण दुविध	६३६		सुट्ठु कय आभरण
सिग्घयर आगमण	४१८०	५२६६	सुट्ठु कया अह पडिमा
सिग्घुज्जुगती आसो	६३११		सुट्ठुल्लसिते भीते
सिज्जादिएसु उभय	४०७		”
सिट्ठम्मि ए सग्गिज्झइ	२८४५	५५७६	सुणमाणे वि ए सुणिमो
सिणेहो पलवी होइ	३८२१		सुण्ण दुट्ठं वड्डगा
सिण्हा मीसग हेट्ठोवरि	१८०		सुण्णे एत पडिच्छए
सितिअवरण पडिलाभण	४४५३		सुण्णो चउत्थभगो
सिद्धत्थगजालेण व	४००६	३८२६	सुतसुह दुक्खे खेत्ते
सिद्धत्थग पुप्फे वा	३४४४	२८६७	सुत्ताट्ठि णक्खत्ते
सिप्पसिलोगादीहि	४२७८		सुत्ताणिवाओ इत्थं
सिप्पसिलोगे अट्ठावए	४२७६		सुत्ताणिवाओ एत्थ
			सुत्ताणिवातो सच्चित्त—

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

सुत्तरिवातो उक्कोमयम्मि	५६५२		सुद्धतवो अज्जाण
सुत्तरिवातो एत्थ	१८८६		सुद्धपडिच्छणो लहुगा
" "	१६६८		सुद्धमसुद्ध चरण
" "	२२२७		सुद्ध एसित्तु ठावेति
" "	३७४३		सुद्ध पडिच्छिऊण
" ओहे	२०२३		सुद्धालभे अगीते
" कसिणे	६६६		सुद्धे सङ्गी इच्छकार
" णितिए	१०२०		सुद्धो लहुगा तिसु दुसु
" णियमा	१०५०		सुप्पे य तालवेटे
" तणेसु	१२२४		सुवहूहि वि मासेहि
" वितिए	६१०		"
" सगलकमिण	६२३		सुव्भी दढग्गजीहो
सुत्तत्थ अपडिबद्ध	३१०६		सुयअभिगमणायविही
सुत्तत्थतदुभयविसारयम्मि	३३८४	२७८५	सुय-चरणो दुहा धम्मो
सुत्तत्थतदुभयाइ	६२२५	७८६	सुयधम्मो खलु दुविहो
सुत्तत्थतदुभयाण	६१८१		सुयनाणम्मि य भत्तो
"	६६७३		सुयवत्तो वयावत्तो
सुत्तत्थावस्सणिसीधियासु	५२१		सुलसा अमूढदिट्ठि
सुत्तत्थे अकहेत्ता	३७५४		सुवइ य अजगर भूतो
सुत्तत्थे पलिमथो	१६६६		सुवति सुवतस्स सुय
"	४२१६	५६२६	सुहपडिवोहा णिदा
सुत्तनिवातो सम्गामा	१४८६		"
सुत्तमयी रज्जुमयी	६५१	२३७४	सुहमवि आवेदतो
सुत्तम्मि णालवद्धा	५५२२		सुहविण्णप्पा सुहम्वेइया
सुत्तम्मि होति भयणा	६२१६	७७८	"
सुत्तवत्तो वयवत्तो	५५७८		"
सुत्तसुहदुक्खे खेत्ते	५५२१		सुहसाहग पि कज्ज
सुत्तस्स व अत्थस्स व	५४५६		सुहसीलतेणगहिते
सुत्तस्स विसवादो	५७३६		सुहिणो व तस्स वीरिय-
सुत्त कड्ढति वेट्ठो	२११५		सुहियामो त्ति य भणती
सुत्त तु कारणिय	४८६२		सुहुमं च वादर वा
सुत्त पडुच्च गहिते	२६१५		सुहुमो य वादरो य
सुत्त व अत्थ च दुवे वि काउ	१२३६		सुहुमो य वादरो वा
सुत्तमि एते लहुगा	२१		सूतिज्जति अणुरागो
सुत्तायामसिरोणत	२११४		"
सुत्ते ज हा णिवधो	३२०४		सूतीमादीयाण
सुद्धतवे परिहारिय	६६०४		"
सुद्धतवो अज्जाण	२८७६		सुभगद्वभग्गकरा

सूयग-मतग-कुलाइ

१६१८

सेहादी पडि कुट्टो

५७६०

सेहुवभामगभिच्छुणि

"

सो आणा अणवत्थ

सूयिमणट्टाए तु

६६८

"

सूयि अविधीए तु

६७५

"

सूरत्थमणम्मि तु णिग्गताण

११५७

३५३८

"

सूरुगते जिणाण

१४२४

१६६१

"

सूरे अणुग्गयम्मि उ

२८६०

५७८६

"

सूवोदणस्स भरिउ'

६६२ग

"

सेएण कक्खमाती

३६३२

"

सेज्जा-कप्प-विहिण्णू

१२४८

"

सेज्जा-सथारदुग

१६६०

"

सेज्जातर-रातपिडे

३४६६

"

सेज्जातराण धम्म

१७२६

३७४८

"

सेज्जातरो पभू वा

११४४

३५२५

"

सेज्जायरकप्पट्ठी

५५४८

५४४६

"

सेज्जायरकुलनिस्सित

४३४४

"

सेज्जायरमादि सएज्जिभया

५५४३

"

सेज्जायरस्स पिडो

३४८५

"

सेज्जासथारो ऊ

१३०१

"

सेज्जोवहि आहारे

२१०७

"

"

२११०

"

सेडगुलि वग्गडावे

४४५१

"

मेडुग रुते पिजिय

१६६२

२६६६

सोआती एव सोत्ता

मेणादी गम्मिहिती

२,३५७

४७६६

सोउ हिडण-कधण

मेणाहि व भोइ महयर

६०६५

सोऊण जो गिलाण

मेयविपोलासाडे

५५६६

सोऊण य घोसणयं

सेय वा जल्ल वा

१५२१

सोऊण व पासित्ता

सेलज्जि-यभदारुपलया

३१६१

सोऊण वा गिलाण

सेवतो तु अकिच्च

४७०

"

सेसा उ जहासत्ती

६१२२

"

सेसेसु तु सवभाव

२७२०

४७३१

सोऊण च गिलाणि

सेसेसु फासुएण

२०५०

सो एसो जस्स गुणा

सेह-गिहिणा व दिट्ठे

३७६६

६००६

सोगधिए य आसित्ते

सेहज्वहारो दुविहो

२६६६

सोच्चा गत त्ति लहुगा

सेहस्स विसीदणता

२१२

३४३६

सोच्चाण परसमीवे

सेहस्स विसीयणता

५३८४

सोच्चा पत्तिमपत्तिय

सेहादीण अवण्णा

२६४७

सोच्चा व सोवसग्ग

मेहादीण दुगु छा

१५४५

मो णिच्छुभति' साधू

सो णिज्जति गिलाणो

सो णिज्जराए वट्टति	१७६१	३७८४	हयगयलचिक्काइं
मोणितपूयालित्ते	४०१८	३८४०	हयजुद्धादी ठाणा
मो त ताए अण्णाए	४०६८	१८२३	हयमादी साता खलु
सोतु अणभिययाण	६२२३		हरिए वीए चले जुत्ते
मोत्थियवधो दुविधो	७३८		हरियाल मणोसिल
सो परिणामविहिण्णू	१७५२	३७७५	हविपूयो कम्मगरे
सोपारयम्मि णयरे	५१५६	२५०६	हाणी जा एगट्ठा
सो पुण आलेवो वा	४८६४	१०३१	हा दुट्ठु कय
सो पुण पडिच्छगो वा	४५६२		हास दप्प च रत्ति
मो पुण लेवो चउहा	४२०१		हित सेसगाण असती
मो मग्गति साधम्मि	१७७४	३७६३	हिड्डितो वहिले काये
मो रायाऽवतिवती	५७५२	३२८३	हीणप्पमाणधरयो
मोलस वासाणि तया	५६१२		”
मो समणसुविहितेहिं	३५८५	५१६१	हीणाऽतिरेगदोसे
मो समणसुविहियाण	५७६७		हीणाधि ए य पोरा
सो होती पडिणीतो	५४४०		हीणाहियविवरीए
			हीरो कज्जविवती
			हीरत णिज्जतं
हत्तविहत्तविप्परद्धे	२३५४	५२५८	हुंड सवल वाताइद्ध
हत्थद्धमत्तदारुय	३०५८	१६५७	हुडादि एगबधे
हत्थ-पराण तु दीहा	६५२	२३७५	हुंडे चरित्तभेदो
हत्थ वा मत्त वा	४०६३	१८२०	”
हत्थाइ-जाव-सोत	२२५०		हुंडे सवले सब्बण
हत्थादि पायघट्टण	१६१०		हेट्ठ उवासणहेउ
हत्थादिपादघट्टण	१६०४		हेमन्तकडा गिम्हे
हत्थादिवातणत	४६२		होऊण सन्नि सिद्धो
हत्थादि-वायणते	६२७२		होज्ज गुरुओ गिलाणो
हत्थादिवायणत-	६६८३		होज्ज हु वसणप्पत्तो
हत्थेण ग्रदेसिते	१४८२		होति समे समगहण
हत्थेण अपावेतो	८००		होमातिवितहकरयो
हत्थेण व मत्तेण व	४०५८		होहिति जुगप्पहाणो
हत्थे पाए कण्णो	३७०६		होहिति वि णियसणिय
हय-गय-रहसम्मइ	२५६४		होति उवगा कण्णा

ह



# द्वितीयं परिशिष्टम्

निशीथचूर्णौ चूर्णिकारेणोद्धृतानि गाथादिप्रमाणानि



	विभाग	पृष्ठ	
अकाले चरसि भिवल्लु	१	७	अभिति छच्च मुहुत्ते
[दश० अ० ५, उ० २, गा० ५]			[
अचिरुगए य सूरिये	१	२१	अरसं विरस वा वि
[			[दश० अ० ५, उ०
अणुग्धातियाण गुणिया	४	३६७	अरहा अत्थं भासति
[			[वृहत्कल्पभ
अट्ठविहं कम्मरयं	१	५	अवसेसा एक्खत्ता
[			[
अट्ठारसपयसहस्सिओ वेदो	१	२	अ (आ) वती केयावंती लोगसि
[			[आचा० श्रु० १,
अट्ठारसपुरिसेसुं	१	१३२	अससत्त
[निशीथभाष्य, गा० ३५०५, तुलना]			[
अत्थिण भन्ते लवसत्तमा	४	४००	असिवे ओमोयरिए
[			[
अन्न भंडेहि वरं	२	१७७	अहयं दुक्खं पत्तो
[कल्पवृहद्भाष्य]			[
अपत्थ अवगं भोच्चा	३	२५०	अहाकडोह रंधंति
[उत्त० अ० ७, गा० ११]			[
अपि कद् मपिडाना	१	६५	आगपइत्ता अणुमाणइत्ता
[			[
अप्पे सिया भोयणजाए	३	५४७	आचेलुकुद्दे सिय
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७४]			[
अप्पोवही कलहविवज्जणा य	४	१५७	"
[दश० चू० २, गा० ५]			[
अभतरगा खुभिया	१	२१	आदिमसुत्ते भणिते
[			[
अभुवगते खलु वासावासे	३	१२२	आणाएच्चिय चरणं
[आचा० श्रु० २, अ० ३, उ० १, सू० १११]			[

आयारव आहारव	४	३६३	एगेण कयमकज्जं	१
[ ]			[वृहत्कल्पभाष्य,	
इयदुद्धरातिगाढे	४	२१०	एतेसि ए भते । वालाण	३
[ ]			[भग० श० १२, उ०	
इह खलु निग्गथाण	२	१८५	एस जिण्णाण आणा	४
[ वृहत्कल्प, उ० ३ ]			[ ]	
उक्कोस गण्णागग	१	२८	कडते य ते कु डलए य ते	१
[ ]			[ ]	
उग्गमउप्पायण	१	१५५	कण्णसोक्खोह सद्देहि	३
[ ]			[दश० अ० ८	
उग्घातित्तदुग्गएहि	४	३६६	कत्ति ए भते । कण्हराईओ	१
[ ]			[भग० श०	
उग्घातियदुग्गएहि	४	३६७	कप्पत्ति णिग्गथाण पक्के-	३
[ ]			[वृहत्कल्प, उ०	
उच्चालयम्मि पादे	३	५००	कप्पत्ति णिग्गथाण वा-	४
[ओघनियुक्ति, गा० ७४६]			[वृहत्कल्प, उ०	
उच्चालियम्मि पादे	१	४२	कप्पत्ति णिग्गथाण वा	४
[ओघनियुक्ति, गा० ७४६]			[वृह० उ०	
उच्छ्ल बोलति वइ	२	१३४	कप्पत्ति णिग्गथाण सलोमाइ	४
[वृह० उ० १, भा० गा० १५३६]			[वृहत्कल्प, उ०	
[ओघनियुक्ति, गा० १७०]			कप्पत्ति णिग्गथीण अलोमाइ-	४
उद्देसे णिद्देसे	२	२	[ ]	
[आवश्यकनियुक्ति, गा० १४०]			कप्पत्ति णिग्गथीण पक्के	४
उवज्झावयेयावच्च करेमाणे	४	२६६	[वृहत्कल्प, उ०	
[ ]			कप्पत्ति से सागारकड	३
उवेहेत्ता सजमो वुत्तो	३	४०	[वृह०, उ० १	
[ओघनियुक्ति]			कम्ममसखेज्जभव	३
उस्सण्ण सव्वसुय	१	५	[व्यवहारभाष्य, उ० १०, :	
[ ]			कयरे आगच्छति दित्तरूवे	४
एवके चउसतपण्णा	४	३६६	[उत्तराध्ययन, अ० १	
[ ]			कागसियालअखइय-	२
एग दुग तिण्णि मासा	४	३१६	[ ]	
[ ]			काम जानामि ते मूल	२
एगमेगस्स ए भते । जीवस्स	१	१०८	[ ]	
[भग० श० १२, उ० ७]			किं कत्तिविहं कस्स	२
एगादि अणुघाता	४	३६७	[आवश्यकनियुक्ति,	
[ ]			किं मे कडं, किं च मे किञ्चसेसं	२
एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवकरण-	४	१५७	[दश० सू० २,	
[ओघपातिक, तपोवर्णन सू० ४०]			कुणतु व सपद उ वद्धो	३
[स्थाना० स्या० ३, उ० ३]			[ ]	

कोडिसयं सत्तऽहियं	४	३६६	जाव वुत्थं सुहं वुत्थं	१	२१
[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
को राजा यो न रक्षति	१	७	जीवेणं भंते ! ओरालियसरीर	२	२८१
[ ]	[ ]	[ ]	[ भग० श० १६, उ० १, तुलना ]	[ ]	[ ]
को राया जो न रक्खइ	१	१२२	जीवेणं भते सता सभित	२	३२०
[ ]	[ ]	[ ]	[ भग० श० ३, उ० ३ ]	[ ]	[ ]
कोहो य माणो य अण्णिग्गहीया	४	३३	जे असत्तएणं अब्भक्खारोण	४	२७२
[ दश० अ० ८, गा० ४० ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
कृत्स्नकर्मक्षयात् मोक्ष	१	१५७	जेट्टामूलंमि मासमि	१	२१
[ तत्त्वा० अ० १०, सू० ३, तुलना ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
गच्छन्मि केई पुरिसा	४	२६२	जेण रोहति वीयाइं	१	२०
[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
गज्जित्ता णामेगे णो वासित्ता	४	३०७	जे भिक्खू असणं वा पाण वा	४	३२
[ स्थाना० स्था० ४ ]	[ ]	[ ]	[ वृह०, उ० ४, सू० ११, तुलना ]	[ ]	[ ]
गवाशनाना स गिर शृणोति	३	५६२	जे भिक्खू उग्घातियं	३	२८
[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
गहणं पुराणसावग	४	२२२	जे भिक्खू तरणे बलवं	४	१५७
[ ]	[ ]	[ ]	[ आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२ ]	[ ]	[ ]
गोयरग्गपविट्ठो उ	४	३१	जे मे जाणति जिणा	३	२६६
[ दशवै० अ० ५, उ० २, गा० ८ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
बंदगुत्तपपुत्तो उ	२	३६२	जो जेण पगारेणं	१	४
[ बृहत्कल्पभाष्य, गा० २६४ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
ध्वच्चेव अतीरित्ता	४	२७७	जो य एण दुक्खं पत्तो	३	४०५
[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
जइ इच्छसि नाऊण	४	३३७	जं अज्जियं समीखल्लएहि	३	४३
[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
जति एत्थि ठवणआरोवणा	४	३३७	जं जाणेज्ज विराधोत	४	१६६
[ ]	[ ]	[ ]	[ दश० अ० ५, उ० १, गा० ७६ ]	[ ]	[ ]
जतिमि भवे आरुवणा	४	३२४	जं जुज्जति उवकारे	१	६३
[ निशीथभाष्य, गा० ६४८६ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
जत्तो भिक्खं वल्लिं देमि	१	२०	ठवणाववणादिवसाण	४	३३७
[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]	[ ]
जत्थ राया सय चोरो	१	२१	ए चरेज्ज वासे वासते	१	१०६
[ ]	[ ]	[ ]	[ दश० अ० ५, उ० १, गा० ८ ]	[ ]	[ ]
जमह दिया य राओ य	१	२०	ए मतो सुयं तप्पुव्वियं	३	५१४
[ ]	[ ]	[ ]	[ नन्दीसूत्र, तुलना ]	[ ]	[ ]
बह वीवा दीवसय	१	५	ए य तस्स तण्णिमित्तो	१	४२
[ ]	[ ]	[ ]	[ ओघनियुंक्ति, गा० ७४६ ]	[ ]	[ ]

एवमासाकुच्छिधालिए	१	२१	तहेवासजत धीरो	१	१६३
[			[		
ए वि लोए लोएज्जति	२	१७७	त एच्छइय एयमए	१	२६
[कत्पवृहद्भाष्य]			[		
ए ह वीरियपरिहीणो	१	२७	तावदेव चलत्थयो	३	५२६
[			[		
एणएस्स दंसएस्स	१	५	तिगजोगेज्जुघाता	४	३६७
[			[		
एिदा विगहा परिवज्जिएहि	१	६	तिण्णुत्तरा विसाहा	४	२७६
[			[		
एो कप्पइ एिग्गथाए इत्थिसागारिए	४	२३	तिण्हमण्णतरागस्स	४	३०
[वृह०, उ० १, सू० २७-३०]			[दशवै०, अ० ६, गा० ६०]		
एो कप्पइ एिग्गथाए वेरेज्ज—	३	२२७	तेगिच्छ एाभिणदेज्ज	३	५०६
[वृहत्० उ० १, सू० ३५]			[उत्त० अ० २, गा० ३३]		
एो कप्पति निग्गथाए अलोमाइ	४	३२	तेजो वायू द्वीन्द्रियादयश्च	३	३१५
[			[तत्त्वा०, अ० २, सू० १४]		
एो कप्पति एिग्गथाए वा	४	३२	तेरस य चदमासो	४	२७८
[वृह० उ० ३, सू० ५]			[सूर्यप्रज्ञति]		
एो कप्पति एिग्गथाए	३	१५४	तेपा कटतटभ्रष्टं	१	१०३
[कल्पसूत्र]			[		
एो कप्पति एिग्गथाए वा	४	३१	त्रय शल्या महाराज ।	२	१२०
[वृह० उ० ३, सू० २२]			[श्रोत्रनिर्धुक्ति, गा० ६२३ समा]		
एो कप्पति एिग्गथाए वा एिग्गथोए वा	४	३२	दत्त्वा दानमनीश्वर	३	५८१
[वृह०, उ० १, सू० ४२-४४]			[		
एो कप्पति एिग्गथोए सलोमाइ	४	३२	दडक ससत्थ	१	१८
[वृह० उ० ३, सू० ३]			[		
तश्चो अणवहुप्पा पण्णत्ता	१	११२	दव्व लेत्त काल	३	५३५
[स्थाना० स्था० ३]			[		
“ “	१	११६	वाए दवावण कारावणो य	४	३७६
[स्थाना० स्था० ३]			[		
तण्णुगतिकिरियसमिती	१	२३	दत्तपुर दत्तवक्के	४	३६१
[			[		
तमुक्काए ए भते । कहि	१	३३	दत्ताना मजन श्रेष्ठ	२	६०
[भग० श० ६ उ० ५]			[		
तरुणो एग पाद गेण्हेज्जा	३	२२६	धमे-धमे एातिधमे	१	८
[आचा० शु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]			[		
तव प्रसादाद्भुत्तुश्च	१	१०४	धम्मियाए किं सुत्तया	८	८६
[धूर्तास्त्यानप्रकरण]			[भग० अ० १०, उ० २]		

धम्मो मंगलमुक्कटुं	१	१३	सूढनइअं सुयं कालिय तु	१	४
[दश० अ० १, गा० १]			[		
पञ्जोसवरणकप्पस्स	३	१५८	रण्णो भत्तं सिरणो जत्थ	१	१३
[			[		
पञ्च वद्धन्ति कौन्तेय ।	१	५४	रस-रुधिर-मांस-मेदोऽस्थि-	१	२६
[			[		
पणुवीससहस्साइ	४	३६७	लघण-पवण-समत्थो	१	२०
[			[		
परमाणु पोगलेण भंते !	४	२८१	वग्घस्स मए भीतेण	१	२०
[भग० श० २५, उ० ४]			[		
परिताव महादुक्खो	२	४१८	वयल्लक्क कायल्लक्कं	२	३५६
[वृहत्कल्पभाष्य, गा० १८६६]			[दश० अ० ६, गा० ८]		
पिंडस्स जा विसोही	१	३२	वरं प्रवेष्टुं ज्वलितं हुताशन	१	१२७
[			[		
पुरेकस्मे पच्छाकभ्मे	१	५८	वसहि कह णिसेज्जिदि य	१	५०
[			[		
पुव्वभणियं तु ज एत्थ	१	३	वसही दुल्लभताए	२	३७
[			[		
बहुअट्ठिथं पोगलं	४	३२	विभूसा इत्थीसंसग्गी	४	१४३
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७३]			[दश०, अ० ८, गा० ५७]		
बहुदोसे माणुस्से	१	१८	वीतरागो हि सर्वज्ञः	४	३०६
[			[		
बहुमोहो वि य ण पुव्व	४	७२	वैरूप्यं व्याधिपिंडः	१	५३
[			[		
बहुवित्थरमुत्सग्ग	४	२११	सट्ठीए अतीताए	४	२७७
[			[		
वारसविहम्मि वि तवे	४	२२७	सत्तसया सट्ठहिंया	४	३६७
[			[		
भद्दक भद्दक भोच्चा	२	१२५	समणो य सि संजतो य सि	१	२१
[दश०, अ० ५, उ० २, गा० ३३]			[		
मद्य नाम प्रचुरकलह	१	५३	सम्प्राप्तिश्च विपत्तिश्च	३	५०८
[			[		
माणुसत्तं सुई सद्धा	३	२६४	समितो नियमा गुत्तो	१	२३
[उत्त० अ० ३, गा० १]			[		
माताप्येका पिताप्येको	३	५६१	सयभिसयभरणीओ	४	२७६
[			[		
मीसगमुत्तसमासे	४	३६७	सयमेव उ अमए लवे	१	२१
[			[		
मुत्तणिरोहे चक्खुं	२	२६७			
[					

सव्वत्थ सजम सजमाओ	१	१५३	सेसा उवरिमुहुत्ता	४	३६७
[ओवनिथुंक्ति, गा० ४६]			[		]
सव्वामगध परिणाय	३	४८५	सोलसमुग्गमदोसा	१	१३२
[आचा० श्रु० १, अ० २, उ० ५]			[		]
सव्वोस पि	४	४१०	सोही उज्जुअभूतस्स	४	२६४
[		]	[उत्त० अ० ३, गा० १२]		
साहम्मिय वच्छल्लमि	१	२२	सकप्पकिरियगोवण	१	२३
[		]	[		]
सिरीए मत्तिम तुस्से	१	८	सत्त पि तमण्णारा	१	२६
[		]	[		]
सूतीपदप्पमाणाणि	१	८	सहिता य पद चेव	२	२
[		]	[		]
से गामसि वा	४	२७२	हा दुट्ठु कय	१	१५६
[दश० अ० ४]			[निशीथभाष्य, गा० ६५७३]		

# तृतीयं परिशिष्टम्

चूर्णैः प्रमाणत्वेन निर्दिष्टानां ग्रन्थानां नामानि

				विभाग	पृष्ठ					विभाग	पृष्ठ
अर्घकण्ड	(अर्घकाण्ड)	३	४००	उपधानश्रुत	(आचाराग १-६)	१	२				
अर्थसत्थ	(अर्थशास्त्र)	३	३६६	ओहणिज्जुति	(ओधनियुक्ति)	२	४३६				
अष्टुओगदार	(अनुयोगद्वार)	४	२३५	"	"	३	४०, ४४६,				
आचारप्रकल्प	(निशीथ-सूत्र)	१	२६	"	"	"	४५०,				
आचारप्राभृत		१	३०	"	"	"	४६१				
आचारांग		३	१२२	"	"	४	६४, १०६,				
आयारग (आचाराग्र=निशीथ)		४	२५२	"	"	"	१२०				
आयारपकप्प	(आचारप्रकल्प)	१	२, ५, ३१	कप्प	(कल्प)	१	३५				
आयारपगप्प	(,,)	४	७३	"	"	३	३६८,				
आयारवत्थु	(आचारवस्तु)	३	६३	"	"	"	५३२				
आयार	(आचार)	१	२, ३, ५, ३५	"	"	"	५८३				
"		३	२१२	"	"	४	३०४				
"		४	१६३	कप्पसुत्त	(कल्पसूत्र)	३	५२३				
"		"	२५३	"	"	४	२३				
"		"	२५४	कप्पपेढ	(कल्पपीठ)	१	१३२				
"		"	२६४	कप्प-पेढिआ	(कल्पपीठिका)	१	१५५				
आवश्यक		२	३३	खुडियायारकहा		४	२४३				
आवस्सअ	(आवश्यक)	४	२५४	(क्षुल्लकाचारकथा, दश० अ० ३)							
आवस्सग	(आवश्यक)	१	१४६	गोविंदणिज्जुति		३	२१२				
"		४	७३, १०३,		(गोविन्दनियुक्ति)	"	२६०				
"		"	२४०	"	"	४	६६				
इसिभासिय	(ऋषिभाषित)	४	२५३	चदगवेज्झग	(चन्द्रकवेध्यक)	४	२३५				
उगहपडिमा		१	२	चेडगकहा	(चेडककथा)	४	२६				
(अवग्रहप्रतिमा, आचा० २-७)				चदपण्णत्ति	(चन्द्रप्रज्ञप्ति)	१	३१				
उत्तराभ्यरण	(उत्तराध्ययन)	२	२३८	छज्जीवणिग्या	(षड्जीवनिका)	३	२८०				
"		४	२५२		दशवै० अ० ४	४	२६८				

छेदमुत्त (छेदसूत्र)	४	८८	पण्णत्ति (प्रज्ञप्ति)	२	२३८
जव्वदीवपण्णत्ति (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति)	१	३१	पण्हवाकरण (प्रश्नव्याकरण)	३	३८३
जोगसंगह (योगसंग्रह)	३	२६६	पिडण्णिज्जुत्ति (पिण्डनिर्युक्ति)	१	१३२
जोण्णिपाहुड (योनिप्राभृत)	२	२८१		"	१५५
"	३	१११	"	"	२४६
"	४	१६०	"	"	६७,
णमोक्कारणिज्जुत्ति [नमस्कारनिर्युक्ति]	२	२८५	"	"	१६१
"	३	३६६	"	"	१६२
णरवाहरणदत्तकथा [नरवाहनदन्तकथा]	२	४१५	"	"	१६३
णदी [नन्दी]	४	२३५	"	"	२०७,
णिस्सोह [निशीथ]	४	१६०	"	"	२२०
तरगवती	२	४१५	पिडसणा [पिण्डैपणा आचा० २।१]	१	२
"	४	२६	"	"	१६३
तन्दुलवेयालिय [तदुलवैचारिक]	४	२३५	"	"	२६८
दसवेयालिअ [दशवैकालिक]	१	२,१८	पोरिसोमडल [पोरुपीमण्डल]	४	२३५
"	२	८०	विन्दुसार	४	२५२
"	३	२८०	वभचेर	४	२५२
"	४	२५२	[ब्रह्मचर्य, आचा० श्रु० १]		
"	"	२५४	भगवती सुत्त [भगवती सूत्र]	१	३३,७६
"	"	२६३	"	२	२३८
दसा [दशाश्रुतस्कन्ध]	३	७	भारह [भारत]	१	१०३
"	४	३०४	भावणा	१	२
"	४	२६४	[भावना, आचा० २-२३]		
दिट्ठिवाय [हट्टिवाद]	१	४	मगधसेना	२	४१५
दिट्ठिवात	१	२६	सरणविभक्ति	३	२६८
"	३	६३	मलयवती	०	४१५
"	४	७३,	महाकप्पसुत्त [महाकल्पसूत्र]	२	२३८
"	"	२२६,	"	४	६६,२२४
"	"	२५३	"	४	३०४
दीवसागरपण्णत्ति [द्वीपसागरप्रज्ञप्ति]	१	३१	महाणिस्सोह णिज्जुत्ति		
दुमपुण्णिय [दुमपुण्णिका, दश० अ० १]	१	२४	[महानिशीथनिर्युक्ति]		
दुवालसग [द्वादशाग]	१	१५	रइवक्का	३	४५०
"	"	१६५	[रतिवाक्या, दश० श्रु० १]		
धुत्तक्खारण [धुत्तख्यानक]	१	१०५	रामायण	१	१०३
"	४	२६	रोगविधि	३	१०१
नदी [नदी]	४	२३५	लोगविजग्र [गोत्रविजग्र, आचा० १।२]	४	२५२
पकप्प [प्रकल्प]	१	३३	वक्कसुद्धि	२	८०
"	४	२५६,	[वाक्यसुद्धि, दश० अ० ७]		
"	"	३०४	ववहार	१	३५
"	"	३३८	"	४	३०४



वसुदेवचरिय	[वसुदेवचरित]	४	२६	सामाज्य गिणजुत्ति	४	१०३
विमोत्ति		१	२	[सामायिकनिर्युक्ति]		
	[विमुक्ति, आचा० २-२४]			सिद्धिविणिच्छय	१	१६२
विवाहपडल	[विवाहपटल]	३	४००	[सिद्धिविनिश्चय]		
वेज्जसत्थ	[वैद्यशास्त्र]	३	१०१,	सुति	१	१०३
"		"	४१७	सूयकड	१	३५
वेदरहस्स	[वेदरहस्य]	३	५२७	"	४	२५२, २६४
शस्त्र-परीक्षा		१	२	सूरपण्णत्ति	१	३१
(आचा० श्रु० १, अ० १)				"	४	२५३
सत्थपरिण्णा		४	३३, २५२	"	"	२७८
[शस्त्रपरीक्षा, आचा० १-१]				सेतु	३	३६६
सद्द	[शब्दव्याकरण]	४	८८	"	४	२६
सम्मति	[सन्मति]	१	१६२	हेतुसत्थ	४	८८, ८६
सम्मदि	"	३	२०२			

# चतुर्थ परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गता दृष्टान्ताः



## प्रथम भाग

विषय	दृष्टान्त	पृष्ठ सख्या
अप्रशस्त भावोपक्रम	गणिका, ब्राह्मणी और अमात्य	३
अकाल स्वाध्याय	तक्र वेचने वाली अहीरी	८
"	शृ ग बजानेवाला किसान	८
"	शख बजाने वाला	८
"	दो छाणहारिका वृद्धाएँ	८-९
विनय	श्रेणिक राजा और विद्यातिशयो चाण्डाल	९
भक्ति और बहुमान	शिवपूजक ब्राह्मण और भोल	१०
उपधान-तप	असगड पिता आभीर	११
निह्वन = अपलाप	विद्यातिशयो नापित	१२
शका और अशका	दो बालक	१५
काक्षा और अकाक्षा	राजा और अमात्य	१५
विचिकित्सा और निर्विचिकित्सा	विद्यासाधक आचक और चोर	१६
विदुग छा = साधुओं के प्रति कुत्सा	एक आचक-कन्या (श्रेणिक पत्नी)	१७
अमूढदृष्टि	सुलसा आचिका और अम्मड परिव्राजक	२०
उपवृ हण	श्रेणिक राजा	२०
स्थिरीकरण	आचार्य आपादभूति	२०-२१
वात्सल्य	वज्रस्वामी द्वारा सघरक्षा	२१-२२
"	नन्दीषेण	२२
विद्यासिद्ध	ग्रज्ज खउड	२२
लब्धिवीर्य	महावीर द्वारा गर्भ में माता त्रिशला की कुक्षि का चालन	२७
स्त्यानद्धि निद्रा	पुद्गल-भक्षी श्रमण	५५
"	मोदकभक्षी श्रमण	५५
"	शिरश्छेदक कुम्भकार श्रमण	५५
"	गजदन्तोत्पाटक श्रमण	५६
"	चटशाखा-भञ्जक श्रमण	५६

प्राणातिपात-कल्पिका प्रतिसेवना  
लौकिक मृषावाद  
भयनिमित्तक अकृत्यसेवना

सिंहमारक कोकणभिक्षु १००  
अवन्ती के शशकादि धूर्त १०२-१०५  
पुत्रार्थी राजा और भीत तरुण भिक्षु १२७

### द्वितीय भाग

प्रणीत आहार  
निरन्तर कार्यसलग्नता  
अग्नादान का सचालनादि  
अखण्ड वस्त्र-ग्रहण की सदोषता  
कलुप-परिष्ठापन  
रस-भोजन सम्बन्धी लुब्धता-अलुब्धता  
माधुगुण का चिन्ह रजोहरण  
अविमुक्ति अर्थात् मृद्धि  
यथावसर स्थापना-कुलो मे अप्रवेश से हानि  
”  
निष्कारण सयती-वसति मे गमन  
निर्वर्तनाधिकरण = जीवोत्पादन  
”  
असवृत हास्य  
”  
प्रसवण-भूमि का अप्रतिलेखन  
असभोग-सम्बन्धी पृच्छा  
विसभोग का प्रारम्भ  
”  
अभियोग-प्रतिसेवना  
लोक-कथाओं का अनुपदेश  
मोपमर्ग-स्थिति मे सयनी के साथ विहार

ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का भोजन और पुरोहित २१  
कुलवधू का कामोपशमन २२  
सिंह, सर्प आदि सात उदाहरण २८  
कम्बलरत्नग्राही आचार्य और चोर ६७  
मक्खी, छिपकली आदि १२३  
आर्यमगु और आर्यसमुद्र १२५  
मरहट्ट देश मे रसापण (मद्य की दूकान) पर  
ध्वजा १३६  
वीरल्लशकुनि (श्येन पक्षी) १३७  
यथावसर गो-दोहन न करने वाला गृहस्थ २४८  
यथावसर फूल न तोड़ने वाला माली २४८  
वीरल्ल शकुनि (श्येन पक्षी) २६०  
आचार्य सिद्धसेन द्वारा अश्वनिर्माण २८१  
महिष और दृष्टिविष सर्प का निर्माण २८१  
श्रेष्ठी, पाँच सौ तापस २८५  
भिक्षु का मृतक-हास्य २८६  
चेला (चेल्लग) और ऊँट २८८  
अगड आदि के ६ उदाहरण ३५६  
आर्य सुहस्ती और आर्य महागिरि ३६०  
सम्प्रति राजा का जन्म ३६०  
पुत्रार्थी राजा और तरुण भिक्षु ३८१  
भल्लीगृहोत्पत्ति कथा कहने वाला भिक्षु ४१६  
दो यादव श्रमण-बन्धु और भगिनी ४१७  
सुकुमालिका साध्वी

### तृतीय भाग

अधिकरण का अनुपशम  
”  
सम सपराध मे विषम दण्ड  
स्वगण तथा परगण मे दण्ड की अल्पाधिकता  
दुष्ट राजा को शिक्षार्थ अनुशासन  
”  
”  
”  
”

कलहरत सरटो द्वारा जलचर-नाश ४१  
क्रोधी द्रमक और कनकरस ४३  
राजा द्वारा तीन पुत्रों को विभिन्न दण्ड ४८  
पति द्वारा चार भार्याओं को विभिन्न दण्ड ५२  
आर्य खड्ड ५८  
बाहुवली ५८  
सभूत (ब्रह्मदत्तचक्रवर्ती का भ्राता) ५८  
हरिकेश वल ५८

”  
परिहार तप से भीत को ग्राह्यवान  
अतिप्रमाण भोजन  
अवम भोजन  
वान्त भोजन का अपवाद  
ग्लानसेवा और तदर्थ अभ्यर्थना  
धर्म की आपरा (दुकान)

”  
पर्युपगमा-काल मे परिवर्तन  
पर्युपगमा मे कलह-व्युपशमन

”  
क्रोध  
मान  
माया  
लोभ

भाव वैर  
अतिप्रमाण-भक्तग्रहण

”  
ग्रहाच्छद द्वारा समानता का दावा  
वेदोपघात पण्डक  
उपकरणोपहत पण्डक  
वातिक क्लीब  
स्त्री-पुरुष के परस्पर सवास-सम्बन्धी दोष

”  
ज्ञान-स्तेन  
चारित्र स्तेन  
”  
मकारण प्रव्रज्या

”  
स्वपक्ष की स्वपक्ष मे कषाय-दुष्टता  
”  
”  
”  
परपक्ष की स्वपक्ष मे कषाय-दुष्टता  
द्रव्य-मूढ  
काल-मूढ

कालकाचार्य और उज्जयिनी-नरेश गर्दभिल्ल ५८  
अगड, नदी आदि ६४  
अतिभोजो दरिद्र बटुक और अमात्य ८१  
बटलोई ८५  
रत्नवणिक द्वारा चौराकुल अटवी की यात्रा ८७  
दानार्थी, साथ ही अभिमानी मरुक ८२  
सुवर्णादि का क्रय १०६  
गान्धिक आपरा मे मद्य-क्रय ११०  
कालकाचार्य और महाराष्ट्र-नरेश सातवाहन १३१  
खलिहान जलाने वाला कुम्भकार १३८  
उदायन और चण्डप्रद्योत १४०  
दरिद्र कृषक और चौर-सेनापति १४७  
गोघातक मरुक १५०  
अच्चकारिय भट्टा १५०  
पडरज्जा साधवी १५१  
रस-लोभ से आर्य मगु का यक्ष-जन्म, लुद्धनदी १५२  
ग्राम महत्तर और चौर सेनापति १६७  
मधुविन्दु २०६  
” २२१  
पैतृक सम्पत्ति के समानाधिकारी चार कृषक पुत्र २२७  
राजकुमार हेम २४३  
दुराचारी कपिल क्षुल्लक २४३  
दुराचारी तच्चनिय भिक्षु २४६  
आम्र खाने वाला राजा २५०  
मातृदर्शन से वत्स को स्तनाभिलाषा २५०  
आम्र-दर्शन से लाला-स्त्राव २५०  
आर्य गोविन्द २६०  
उदायी नृपमारक भट्ट २६०  
मधुर कौण्डिल २६०  
प्रभव २६१  
मेतार्य-ऋषि-घातक २६१  
मृत गुरु के दाँत तोड़ने वाला भिक्षु २६४  
मुहर्णतक के लिए गुरुघातक भिक्षु २६५  
गुरु की आँख निकालने वाला भिक्षु २६५  
गुरु को पत्थर मारने वाला भिक्षु २६५  
मथुरा का जडण (यवन) राजा २६६  
डु शील भार्या और अध्यापक पति २६७  
एक सहियोपालक पिंडार २६७

गणना-मूढ	एक ऊँटवाला	२६७
सादृश्य-मूढ	ग्राममहत्तर और चौर-सेनापति	२६८
वेद-मूढ	मातृ-गामी राजकुमार अनंग	२६८
व्युद्ग्राहण-मूढ	मातृ-गामी वणिक्-पुत्र	२६९
"	पचशैल जाने वाला अनंग सेन	२६९
"	अन्वपुरुष और धूर्त	२६९
"	पशुपालक और स्वर्णकार	२६९
हस्त-पादादि-विवर्जित विम्ब	मृगावती-पुत्र	२७६
अज्ञात भाव से गर्भवती की प्रव्रज्या	करकण्डुमाता पद्मावती	२७७
प्रत्यनीक द्वारा साध्वी का गर्भवती होना	पेढाल के द्वारा गर्भवती ज्येष्ठा	२७७
पुण्यपापादि से अनभिज्ञ के महाव्रत	स्थाणु पर पुष्पमालारोहण	२८०
स्थविर से पूर्व क्षुल्लक की उपस्थापना	राजा के द्वारा पुत्र को राजसिंहासन	२८३
भाव-सलेखना	अमात्य और कोंकणक	२८६
"	क्रोध में अपनी उंगली तोड़ देने वाला भिक्षु	२८६
उत्तमार्थ प्रतिपन्न का आहार	सहस्रयोधी का कवच	२८८
प्रत्यास्थान-कालीन आभोग (उपयोग)	कंचनपुर मे क्षमक का पारणक	३०२
पादोगमन मे धैर्य	स्कन्दक	३१२
"	चाणक्य	३१२
"	पिपीलिकाग्रो का उपसर्ग	३१२
"	कालासग वेसिय	३१२
"	अवन्ति सुकुमाल	३१२
"	जल-प्रवाह का उपसर्ग	३१२
"	बत्तीस घड़ा	३१३
पुस्तक से होने वाली जीव-हिंसा	चतुरंगिणो सेना से आवेष्टित मृग	३२१
"	दुग्ध-पतित मक्षिका	३२२
"	मछली पकड़ने का जाल	३२२
"	तिलपीलक चक्र (घाणो)	३२२
पूर्वस्थापित आसन को सदोपता	जैन श्रमण और बौद्ध भिक्षु	३२५
पुर कर्मकृत कर्मवन्ध का अधिकारी ?	इन्द्र को ब्रह्महत्या का शाप	३४०
भिक्षार्थ क्षेत्रवृद्धि करने के गुण	कृपण वणिक् की गृहचिन्तिका पत्नी	३५७
"	गाँव के समीप कुबड़ी बदरी (बेरी)	३५८
नौका-नयन सम्बन्धी अनुकम्पा	मुहँड राजा	३६५
नौका-नयन सम्बन्धी द्वेष	कम्बल सबल नागकुमार और	
एकेन्द्रिय जीवो की वेदना	नौकारूढ़ भगवान् महावीर	३६६
एकेन्द्रिय जीवो का उपयोग	जरा-जीर्ण स्थविर	३७७
"	रुक्ष भोजनगत स्नेह-गुण	३७७
	पृथ्वीगत स्नेह-गुण	३७७

निधानदर्शन	मयूरनृपाकित दीनारो का निधान	३८८
अनागत रोग का परिकर्म	अकुर तथा वद्धमूल वृक्ष का अन्तर	३९४
"	अवर्द्धित तथा विवर्द्धित ऋण	३९४
लौकिक व्यवहारो का निर्णय	दो नारी और एक पुत्र	३९६
"	पटक	३९६
धातु-पिण्ड	रोता हुआ बालक और भिक्षु	४०४
"	आचार्य सगमस्थविर और दत्त शिष्य	४०८
निमित्त पिण्ड	भविष्यकथन से सगर्भा घोड़ी की हत्या	४११
चिकित्सा पिण्ड	दुर्बल व्याघ्र की चिकित्सा	४१८
कोप-पिण्ड	मासोपवासी धर्मरुचि भिक्षु	४१८
मान पिण्ड	इष्टगा-भोजनार्थी क्षुल्लक, श्वेतागुलि आदि पुरुष	४१९
विद्या-पिण्ड	विद्या द्वारा उपासक का वशीकरण	४२२
मन्त्र-पिण्ड	पादलिप्ताचार्य द्वारा मुरुड राजा की मन्त्र- चिकित्सा	४२३
अन्तर्धान पिण्ड	चन्द्रगुप्त सौर्य के यहाँ क्षुल्लक-द्वय का अन्तर्धान-प्रयोग	४२३
योग-पिण्ड	वज्रस्वामी के मातुल समिताचार्य और	
क्रीतकृत	५०० तापस	४२५
पामिच्च	शय्यातर मख	४२८
परिवर्तन	तैल पामिच्च के कारण बहन का दासीत्व	४३०
आच्छेद्य	कोद्रव कूर के बदले में शालि कूर	४३२
"	दुग्ध-आच्छेद्य से रुष्ट गोपाल	४३३
"	सत्तुओ में स्तेनाच्छेद्य घृत	४३६
अग्नि सृष्ट	बत्तीस मोदक वाला भिक्षु	४३७
आज्ञा-भग	राजा द्वारा प्रजा को दण्ड	५०३
ज्ञानादिलाभार्थ प्रलम्ब-प्रतिमेवना	लाभार्थ वाणिज्य-कर्म	५१०
प्रलम्ब-विदशना	दो अजघातक स्लेच्छ	५१८
अनवस्था प्रसंग का निवारण	कृषक के इक्षु-क्षेत्र की हानि	५१९
"	राजा की कन्याओ का अन्त पुर	५२०
"	भोलो द्वारा देवद्रोणी (गौ) की हत्या	५२१
प्रलम्ब-रस की आसक्ति	मद्यपान से मासाहार की आसक्ति	५२१
प्रलम्ब-भक्षण में आत्मविराधना	मूँग की फच्ची फलो खाने से स्त्री की मृत्यु	५२२
अनाचीर्ण	अचित्त तिलो से भरी गाडी और भगवान्	
"	महावीर	५२३
"	अचित्त जल से भरा हृद और भगवान् महावीर	५२३
यतना और अयतना	विष, शस्त्र, वेताल और ओषध	५२५
परिणामक, अपरिणामक और अतिपरिणामक	चार मरुत और इव-मास	५२६
अकल्प-सेवन की भूमिका	अशत भग्न गाडी की मरम्मत	५३१

अभिन्न प्रलम्ब से सयती को मोहोदय  
समर्ग का महत्त्व  
दत्त वस्तु का पुनरादान  
सयती पर कार्मण-प्रयोग  
वस्त्र-विभूषा से हानि

स्त्रीयुक्त वसति से चारित्रहानि  
आज्ञा-भग पर गुस्तर दंड  
सुख-विज्ञप्प, सुख-मोच्य आदि स्त्री

”

”

”

”

व्युदग्रह अपक्रान्त  
अनार्य देशो मे मुनि-विहार से आत्म-विराधना  
अन्ध-द्रविडादि देशो मे मुनि-विहार  
मात्रक की आवश्यकता  
अस्वाध्याय मे स्वाध्याय से हानि  
पचविध अस्वाध्याय  
आचार्यादि-परिशुहीत गच्छ  
परिकु चित आलोचना  
तीन बार आलोचना

द्विमासादि परिकु चित (शल्यसगोपन)

”

”

”

विषम प्रतिसेवना की समसुद्धि  
अनवस्था-प्रसंग का निवारण  
जानबूझकर बहु प्रतिसेवना  
अनेक अपराधो का एक दण्ड  
अपरिकु चितता की दृष्टि से एक दण्ड  
दुर्वलता की दृष्टि से एक दण्ड  
आचार्य की दृष्टि से एक दण्ड  
गीतार्थ और अगीत परिणामको को प्रायश्चित्त  
अगीत अपरिणामक और अतिपरिणामको को  
प्रायश्चित्त  
यतना और अयतना सम्बन्धी प्रायश्चित्त

महादेवी की कर्कटी से विकारोत्पत्ति ५३६  
दो शुक-बन्धु ५६१  
विक्रीत वृक्ष का पुनर्ग्रहण ५८१  
विद्याभिमन्त्रित पुष्प ५८४  
रत्न-कम्बल के कारण तस्करोपद्रव ५८४

### चतुर्थ भाग

अग्नितप्त जनु ४  
चन्द्रगुप्त मौर्य १०  
पांच सौ व्यन्तर देवी १४  
रत्न देवता १४  
अर्हन्नक २१  
सिंही (शेरनी) २२  
मानुषी की कुक्कुर-रति २२  
बहुरत आदि निह्व १०१  
पालक द्वारा स्कन्दक का यन्त्र-पीलन १२७  
मौर्य नरेश संप्रति १२८  
वारत्तग मन्त्रीपुत्र का सत्रागार १५८  
म्लेच्छाक्रमण पर नृप-घोषणा २२६  
पाँच राजपुरुष २३०  
पक्षी और पिंजरा २६२  
अव्यक्त शल्य से अश्व-मृत्यु ३०४  
न्यायाधीश के सम्मुख बयान को तीन बार  
आवृत्ति ३०५  
मत्स्य-भक्षो तापस ३०६  
सशल्य सैनिक ३०६  
दो मालाकार ३०६  
चार प्रकार के मेघ ३०७  
पाँच वणिगो मे १५ गधो का बंटवारा ३०६  
धान्य-ग्रहण पर विजेता सेनापतियो को दण्ड ३११  
गंजा तम्बोली और सिपाही ३१२  
रथकार की भार्या ३४२  
चोर ३४२  
बैल और गाड़ी ३४३  
मूल देव ३४३  
चतुर वणिक का शुल्क ३४४

सूर्य ब्राह्मण का शुल्क ३४४  
निधि पाने वाले वणिक् और ब्राह्मण ३४५

सभी आलोचनाओं मे समान विनयोपचार  
मूलोत्तर गुणो की प्रति सेवना से अन्योन्यविनाश  
मूल गुण-प्रतिसेवना से चारित्र-नाश  
उत्तर गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश  
प्रायश्चित्त वहन करते हुए वैयावृत्य  
सानुग्रह और निरनुग्रह प्रायश्चित्त दान

”

प्रायश्चित्त-वृद्धि का रहस्य  
आलोचनाहर्ह की गम्भीरता  
परिहार तपस्वी को आश्वासन  
दोष-शुद्धि न करने से चारित्र-नाश

”

”

”

शुद्ध तप और परिहार तप  
शुद्ध आलोचक के प्रति आचार्य का सद्ब्यवहार

”

”

निषद्या का महत्त्व  
अकल्पित चाहने वाले को उद्बोधन

निधि-उत्खनन

३४६

ताल वृक्ष

३४७

हति और शकट

३४८

एरण्ड-मण्डप

३४८

पुरस्कृत राजसेवक

३५०

अग्नि

३५४

दारक

३५४

जल-घट, सरितादि

३५८

दन्तपुरवासी दन्तवर्णिक का हृद मित्र

३६१

अगड, नदी आदि

३७३

नाली मे तृण

३७४

मण्डप पर सर्षप

३७४

गाडी मे पाषाण

३७४

वस्त्र पर कज्जल-विन्दु

३७४

छोटी-बड़ी गाडियाँ

३७४

व्याध

३८०

गाय

३८१

भिक्षु-गो

३८१

श्मश्रु-हित राजा और नापित

३८२

भडी-पोत

४००



# पंचमं परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गतानां विशेषनाम्नां विभागशोऽनुक्रमणिका

	भागक	पत्राक		भागक	पत्राक
			"	"	४४१
१			अञ्जरक्खिय-पिया	१	१६४
तीर्थकर	२	४६६	अञ्ज वडर	१	१६३
अर	३	१५३	अञ्ज सुहत्थी	२	३६१, ३६२
उसभ	२	४६६	"	४	१२८
कु थु	३	१४२, ३६३	अण्णिय-पुत्त	२	२३१
महावीर वर्द्धमानसामी	३	५२३	अतिमुत्तकुमार	३	२३५
महावीर	२	१३६	अवंती सोमाल	२	६०
रिसभ	२	१३६, ३६०	"	३	३१२
वद्धमाण	३	१४२, १५३	आसाढ भूति	१	१६, २०, २१
"		१६८, ३६३	उदाइ-मारक	१	२
"	४	४६	"	३	३७
सती	२	४६६	"	४	६८, ७०
			करकट्ट	२	२३१, ४४५
२			"	३	२७७
गराधर	१	१०	"	१	१२४
गोयम	३	३६३, ५२२	"	३	२४३
"	३	१५३	कपिलार्य	४	२००
सुधम्म	४	१०६	कालगज्ज	३	५८, १३१
"	२	३६०	खदग	३	३१२
सोहम्म			"	४	१२७
३			"	३	२६०
जेंनाचार्य और जेंन श्रमण	१	२२	गोविदज्ज	३	३७
अञ्ज खउड	२	४६५	गोविदवाचक	४	२६५
"	२	३६१	"	४	३७७
अञ्ज महागिरी	४	१२८	चडरुद्धाचार्य	२	३६०
"	२	१२५	जसभट्ट	४	४४३
अञ्ज मगू	३	१५२	जिणदास	२	३६०
"	३	१२३, २३६,	जवू	३	२३६, ५२२
अञ्जरक्खिय			"		



८  
अध्वकल्प

अगन्धिम  
खज्जुर  
खीरपट्ट  
घतमहु  
तडुलचूर्ण  
दतिक्क  
पिण्णाअ  
भेसज्ज  
सत्तुअ  
समितिम  
सुक्खोदण  
सुक्खमडग

४ ११५,११६  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "  
" "

कापालिका  
गेरुअ  
"  
गोव्वय  
चरक  
"  
"  
चरिका  
तच्चन्निय  
तच्चण्णागी  
तडिय  
तावस  
"  
तिदडी परिव्वायग  
दिसापोक्खय  
परिव्वाय, परिव्वाजक

४ ६०  
२ ३३२  
३ ४१४  
३ १६५  
२ ११८,२००  
३ २०७,३३१  
४ ३६  
४ ६०  
३ २५३,३२५  
४ ६०  
२ २०७,४५६  
२ ३,३३२  
३ ४१४  
१ १२  
३ १६५  
२ ११८,२००  
३ ४१४

९  
अन्यतीर्थिक देव

केसव  
पसुवति  
वभा  
"  
महादेव  
रुद्ध  
विण्हु  
"  
सिव

१ १०५  
१ १०४  
१ १०४  
३ १४२  
१ १४६,१४७  
१ १४६,१४७  
१ १०३,१०४  
३ १४२  
१ १०

"  
परिव्वाजिका  
पच्चगव्वासणिय  
पच्चग्गितावय  
पंडरंग  
पंडर भिक्खु  
रत्तपड  
"  
"  
रत्तपडा

४ ६०  
३ १६५  
३ १६५  
२ ११६  
३ ४१४  
१ ११३,१२१  
२ ११६  
३ ४१४,४२२  
१ १२३

## १०

## अन्यतीर्थिक श्रमण और श्रमणी

आजीवक  
"  
कप्पडिय  
"  
कव्वडिय  
कावालिय  
कावाल  
"

२ ११८,२००  
३ ३३२  
३ ४१४  
२ २०७,४५६  
४ १०  
३ १६८  
२ ३८  
४ १२५  
३ २५३

वणवासी  
भगवी  
वृद्ध श्रावक  
सक्क-शावय  
"  
सरक्ख  
समण  
हड्ड सरक्ख  
अक्खपाद

३ ४१४  
४ ६०  
२ ११८  
२ ३,११८,  
२००,३३२  
३ ४१४  
३ २५३  
२ ३३२  
२ २०७  
४ ८८

११  
परिव्वाजक

प्रम्मड	१	२०	इद	१	२४
उडक रिसी	३	३४०	कवल-सवल	३	३६६
१२					
दर्शन और दार्शनिक					
आजीविग	१	१५	"	३	१४४
ईसरमत	३	१६५	खेत्तदेवया	३	४०८
उलूग	१	१५	गोरी	४	१५
कपिलमत	३	१६५	गवारी	४	१५
कविल	१	१५	चद	३	१४४, २०८
कावाल	४	१२५	जक्ख	१	२१
कावालय	३	५८५	"	३	१४१
चरग	१	२	जोइसिय	४	५
"	४	१२५	डागिणी	२	४१
जइण-सासण	१	१७	गाइलदेव	३	१४१
जैनतत्र	३	३६०	गाग-कुमार	३	१४४, ३६६
तच्चन्निय	३	२४६, २५३	देविद	१	२०
तावस	१	१५	पतदेवया	१	८
"	४	१२५	पिसाय	३	१८६
परिक्वायग	१	१७	पुण्णभद	३	२२४
पडरग	३	१२३	पुरदर	२	१३०
बोडित	१	१५	पूयणा	३	४०८
भिच्छुग	१	११३	वहस्सति	३	१४४
भिवखू	३	५८५	भवणवासी	२	१२५
"	४	१२५	"	४	५
रत्तपड	१	१७, ११३	भूत	१	६
वेद	१	१५	माणिभद	३	२२४
सक्क	१	१५	रक्खस	३	१८६
"	३	१६५	रयणदेवता	४	१४
सरक्ख	४	१२५	वणदेवता	४	११८
"	३	२५३	वाणमत	१	८, ६
सुत्तिवादी	३	५८५	"	४	५
सेयवड	१	७८	वाणमतरी	४	१३
सेयभिवखु	४	८७	विज्जुमाली	३	१४०
"	३	४२२	वेमाणिय	"	"
शाक्यमत	३	१६५	शक्र	"	"
हडुसरक्ख	३	५८५	सम्मदिट्ठी देवया	"	"
१३					
देव और देवी					
प्रचुय देव	३	१४१	सामाणिग	"	"
			सुदाढ	"	"
				"	"

हास पहासा	३	१४०	पञ्जोत	३	१४६, १४७
हिरिमिक्क (चाण्डाल-यक्ष)	४	२३८	चदगुत्त	२	३६१, ३६२

## १४

## चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव

अर	२	४६६	चाणक्य	२	३३
कुथु	२	४६६	"	३	४२४
केसव	१	५६	जउण राया	३	२६६
"	२	४६६	जरकुमार	२	४१६, ४१७
बलदेव	३	३८३	जराकुमार	२	२३१
ब्रह्मदत्त	२	२१	जितारि	३	२६८
भरह	२	४४६, ४६५	जियसत्तू	२	४१७
"	४	६८	"	३	१५०
राम	१	१०४	"	४	२२६
वासुदेव	१	४३	डडगि	४	१२७
"	२	४१६, ४१७	दडति	३	३१२
"	३	३८३	दतवक्क	२	१६६
सती	२	४६६	"	४	३६१
			धम्मसुत्त	१	१०५
			पड्डु	१	१०५
			पालग	१	१०

## १५

## राजा, राजकुमार और अमात्य

अर्जुन	१	४३	पालय	३	५६
अरणकुमार	३	२६८	बलभानु	३	१३१
अण्ण राजा	३	२६६	बलमित्त	३	१३१
अभगसेन	४	१५८	विदुसार	२	३६१, ३६२
अभयकुमार	१	६, १०, १७	"	४	१२६
"	२	२३१	भसअ	२	४१७
"	४	१०६	भाणुमित्त	३	१३१
असोग	२	३६१	भीम	१	४३, १०५
असोगसिरी	४	१२६	मयूरक	३	३८८
उदायन	३	१४६, ५२३	महिडिद्ध	३	५२०
कुणाल	२	३६१	मुह ड	३	४२३
"	४	१२८	मूलदेव	४	३४३
कौन्तेय	१	५४	"	१	१०४
"	२	२३१	मेच्छ (म्लेच्छ)	४	२२६
कव्वडिय	४	१२७	वसुदेव	२	२३१
कावालिय	४	१२७, १२८	वारत्तग	४	१५८
कावाल	३	५८	ससअ	२	४१७
"	२	२८	सताणित्त	४	४६
	१	१०५	सपत्ति	४	१२६
			सव	१	१०

मातवाहन	४	१६८	अम्भगावय	२	४६६
"	३	१३१	उव्वट्टावय	"	"
साहि	३	५६	कच्चुइज्ज	"	"
सुग्गीअ	१	१०४	कोतग्गह	"	"
सुवुद्धी	३	१५०	चामरग्गह	"	"
सेणिए	१	६, २०, १७	छत्तग्गह	"	"
हग्गुमत	१	१०४, १०५	डडारक्खिय	"	"
हेमकुमार	३	२४३	दीवियग्गह	"	"
हेमकूड	३	२४३	दोवारिय	"	"

१६

राज्याधिकारी

अमच्च	२	४४६	मज्जावय	"	"
ईश्वर	२	४५०	मडावय	"	"
कुराया	२	४६७	वरिसधर	"	"
कोत्तु विय	४	१५	सवाहावय	"	"
खत्तिय	२	४६७	हुडुग्गप्पह	"	"
गामउड	"	२६७			
गामभोत्तिय	२	४५०			
जुवराया	४	२८१	मल्ल	३	१६५
डडिय	४	१५	सारस्सय	"	"
तलवर	२	४५०	कूयसभ	"	"
पुरोहिय	२	४४६			
माडवी	२	४५०			
मुद्धाभिसिन्त	२	४४६	आसवल	२	४५५
रट्टउड	२	२६७	पाइवकवल	"	"
राया	२	४६७	रहवल	"	"
सत्थवाह	२	४४६	हत्थिवल	"	"
सेट्ठी	२	४४६, ४५०			
मेणावई	२	४४६			

१६

गणवर्ग

२०

बल (सेना)

२१

अभिषेक-राजधानी

१७

राज्याहं

खग्ग	२	२६८	कपिल्ल	२	४६६
छत्त	"	"	कोसवी	"	"
चामर	"	"	चपा	"	"
पाउया	"	"	महुरा	"	"
रायहत्थी	"	"	मिहिला	"	"
	"	"	रायगिह	"	"
	"	"	वासाारसी	"	"
	"	"	साएय	"	"
	"	"	सावत्थी	"	"
	"	"	हत्थिगापुर	"	"

१८

राजसेवक

असिग्गह	२	४६६			
---------	---	-----	--	--	--

२२  
जनपद

अवंती  
अध  
"  
आभीर  
उत्तरावह (उत्तरापथ)  
"  
"  
उत्तरापथ  
कच्छ  
काय  
कुडुक्क  
कुणाल  
कुणाला  
"  
कुरुक्षेत्र  
कीरडुक  
कोणाल  
कोसल  
कोकण  
गंधार  
गोल्लय  
चिलाइय  
चीण  
जवण  
टक्क  
तोसलि  
"  
"  
थूणा  
दक्खिणावह  
दक्खिणापह  
दमिल  
"  
दविड

१ १३  
२ ३६२  
४ १२५  
३ ४२५  
१ २१,५२,६७,  
८७,१५४  
२ ६५  
३ ७६  
४ १२७  
१ १३३  
२ ३६६  
३ १६१  
४ १२५  
३ ३६८  
४ १२६  
२ १०८,११०,  
३ १६१  
३ ३६८  
१ ५१,७४  
१ ५२, १००  
१०१,१४५  
३ १४४  
३ १६१  
२ ४७०  
२ ३६८,३६६  
४ १२५  
२ ७६  
२ ३६६  
३ ८१  
४ ४३,६१  
४ १२५  
३ ३६,१११  
२ ४१५  
४ १२५  
२ ३६२  
२ ३८५

पारस  
गुड्वदेस

"  
बब्बर  
ब्रह्मद्वीप  
मयल (मलय)  
मरहट्ट  
मरहट्ट  
"  
"  
"  
मरु  
"  
मगध  
मगह  
"  
मालव  
"  
रिणकठ  
रोम  
लाड, (लाट)  
"  
"  
वच्छ  
सिधु  
"  
"  
"  
सैधव  
"  
सग  
सुरट्ट (सोरट्ट)  
"  
"  
हिडुदेस

३ ५६  
१ १११  
२ ६४  
२ ४७०  
३ ४२५  
२ ३६६  
२ १३६  
१ ५२  
२ ११,३७१  
३ १३१,१४६  
४ ११५,१६५  
३ १३१,१४६  
४ १०६  
३ ५२३  
३ १६३  
४ १६५  
२ ७६,१०६  
३ १६३  
२ १५०  
२ ३६६  
२ ६४,२२३  
३ ३६,५६६  
४ २२६  
४ ४५  
१ १३३  
४ ६०  
२ ७६,१५०  
४ ६०  
१ १४५  
३ १६१  
४ १२५  
१ ५८,१३३  
२ ३५७,३६२  
३ ३६  
३ ५६

२३

ग्राम, नगर, नगरी आदि

अवकथली

३ १६२

अयोजभा	३	१६३	दारवती		
अवती	१	१३, १०२	पतिद्वाराण	२	४१६
अघपुर	३	२६६	पाडलिपुत्त	३	१३१
आणदपुर	२	३२८, ३५७	"	१	१०४
"	३	१५८, १६२,	"	२	६५
		३४६	पुलिदपल्ली	४	१२८, १२६
आमलकप्पा	४	१०१	पोड्वर्धन	३	५२०
उज्जेणी	१	१०२, १०४	वारवइ	४	१४४
"	३	५६, १३१,	वीतिभय एगार	१	६६
		१४५	भरुकच्छ	३	१४४, ५२३
"	४	२००	भिल्लपल्ली	२	४१५, ४३६
उत्तर महुरा	२	२३१, २६६	भिल्लमाल	४	१५१
उसभपुर	४	१०३	मथुरा	३	१११
कचणपुर	३	३०२	"	२	१२५
कचिपुरी	२	६५	"	३	२६६
कपिल्लपुर	२	२१, ४६६	मधुरा	४	२६५
कुसुमपुर (पाडलिपुत्त)	२	६५	महुरा	३	१५२, ३६६
कु भकारकड	३	३१२	"	१	८
कु भाकारकड	४	१२७	माहण कु डग्गाम	२	३५७, ४६६
कुणाला	३	३६८	मिहिला	३	२३६
कोट्टग (पुलिदपल्ली)	३	५२१	"	२	४६६
कोल्लइर	३	४०८	मेहुणपल्ली	४	१०२, १०३
कोसला	३	७६	रहवीरपुर	२	२३
कोसम्बाहार	२	३६१	रायगिह	४	१०२, १०३
कोसवी	२	४६६	"	१	६, २०
"	४	४६, १२५,	"	२	४६६
		१२८		४	४३, १०१,
खितिपतिट्टिय	३	१५०	लका		१०६
"	४	२२६	वाणारसी	१	१०४, १०५
गिरफुल्लिगा	३	४१६	वेण्णातड एगार	२	४१७, ४६६
चपा एगारी	१	२०	सविसयपुर	४	४२५
"	२	४६६	साएअ (साकेत्त)	३	५०३
"	४	१२७, ३७५	"	२	४६६
तुरुमिणिएगरी	२	४१७	सावत्थी	३	१६३
तेयालग पट्टण	१	६६	"	२	४६६
दसपुर	३	१४७, ४४१	सेअविआ	४	१०३
"	४	१०३	सोपारय	४	१०३
दत्तपुर	२	१६६	हत्थिएणापुर	४	१४
"	४	३६१	हेमपुरिस नगर	२	४६६
				३	२४३



	२४		कलाद	३	२६६
			कल्लाल	४	१३२
	उद्यान		कम्मकार	२	२८०
अग्गुज्जाण	४	१२७	कव्वडिय	३	१६८
असोगवणिया	३	१४०	कुक्कुडपोसग	३	२७१
गुणसिल	४	१०१	कु भकार	१	६०, १३६
जिण्णुज्जाण	१	१०२	"	२	३, २२५
तिट्ठुग	४	१०१	"	३	१६६
दीवग	४	१०२	कोलिग	३	२७०
	२५		कोसेज्जग	३	२७१
	अरण्य		खट्टिक	२	६
कोसवारण	२	४१६	"	३	२७१
डडगारण	४	१२८	खत्तिय	१	१०४
	२६		"	२	४६७
			"	४	१३४
	कुल		गोवाल	३	१६६
प्राभीर	१	११	चम्मकार	३	२७१
ज्जम्भ (महाकुल)	२	४३३	"	४	१३२
गाहावड	२	४०८	चारण	३	१६३
दिवाभोजि	१	१५४	चेड	३	१६३
भट्ठग	२	२०६	चंडाल	३	५२७
भोत्तिय	२	३६१	जल्ल	२	४६८
राज	४	३०५	डोव	२	२४३, २८४
वणिय	३	४१८	"	३	२७०
सामत	२	३६१	णट्ट	२	४६८
सावग	२	४३५	णड	३	१६३, १६३,
सेज्जातर	२	२४३, ४३५			२७१
सेट्ठि	१	६	ण्हाविय	१	१२
	२७		"	३	२७१
	वंश		"	२	२४३
मोरपोसग (चन्द्रगुप्तवश)	४	१०	णिल्लेव	२	२४३
मोरिय	२	३६१	णोक्कार	३	२७०
सग	३	५६	तत्तिवरत्त	३	२७०
	२८		तंतुकार	२	३
	ज्ञाति और शिल्पी		"	३	१६६
आहीर	१	८, १७	तालायर	३	१६३
कच्छुय	२	४६८	तुन्नकार	३	२७२
			घरणिपुत्र	२	३५

तेरिमा	२	२४३	मालिय	१	१०
धिज्जाति	१	११३, ११३	माहन (ब्राह्मण)	३	२७१
		१६२, १६३	"	२	११६
धीयार (धीचार)	१	१८	मुट्टिय	२	४६८
"	२	८१	मेय	३	१६८, २७०
धीर	२	२४६	मोरत्तिय	२	२४३
पदकार	३	२७१	रजक	१	१०४
परीपह	३	२७१	रयग	२	२७१
पयकर	२	२४३	रहकार	२	३, ३५
पवग	२	४६८	"	३	१६६
पाण	२	२४३	"	४	३४२
"	३	२७०	लख	३	२७१
"	४	२३७	लाउलिंग	३	१६३
पारसीय	२	३६६	लासग	२	४६८
पुरोहित	१	१६४	लोद्धया	३	१६८
"	२	२६७, ४४८	लोहार (लोहकार)	१	७६, १३६
"	४	१२७	"	२	३, ६, २८०
पुलिन्द	१	११, १४४	"	३	१६६, २७०
"	३	२१६, ५२१	वरिण्य	१	१३६, १५३
"	४	४६	"	३	१४७, २६६,
पोसग	३	२७१			५१०
बभण	१	१०, ११	वरुड	३	२७०
"	३	४१३	वरुड	४	१३२
बोहिग	१	१००	वागुरिय	३	२७१
भड	३	१६३	वाणिग	३	५८५
भिल्ल	१	१४४	वालजुय	३	१६३
भोइग	२	४५४	वाह (व्याध)	३	२७१
मच्छिक	३	२७१	विप्प	१	१०४
मणियार	२	५	वेलवग	२	४६८
मधूरपोसग	३	२७१	सवर	३	८७
मरुअ	१	१०५	सत्यवाह	२	२६७, ४६८
"	२	११८, २०८	"	३	२८४
मल्ल	२	४६८	सपर	३	२७१
महायण (महाजन)	३	२७१	सुवण्णगार	१	५०
मायग, (मातग)	१	६, २१	"	३	२६८, २६६
"	३	५२७	"	४	१२
मालाकार	२	६	सूद्र	२	११६
"	४	३६०	सोगरिग (शौकरिक)	३	२७१
			सोणहिय	३	१६८

५६२

सोबाग	३	५२७	
सोहक	२	२४३	
सोधग	३	२७१	दढमित्त
हरिएस	१	१०	धणमित्त
"	३	२७०	माकदियदारग
हेट्टण्हावित	२	२४३	सागरदत्त

३१  
सार्थवाह

४	३६१
४	३६१
४	२१०
३	८७

२६

पशु-पक्षि आदि-पोषक

अय- पोसय	२	४६८	इ ददत्त
आस "	"	४६८	
इत्थी "	३	२७१	"
कुक्कुड "	२	४६८	इंदसम्म
चीरल्ल "	"	"	उसभदत्त
तित्तिर "	"	"	जण्णदत्त
पोय "	"	"	देवदत्त
मयूर "	"	"	"
महिस "	"	"	पेढाल
मिग "	"	"	विण्हुदत्त
मेढ "	"	"	सत्यकि
मोर "	२	२४३	सोमदेव
लावय "	२	४६८	सोमसम्मा
वग्घ "	"	"	सोमिल
वट्टय "	"	"	
वसह "	"	"	
सीह "	"	"	
सुण्ह "	"	"	अच्चकारियभट्टा
सुय "	"	"	असगडा
सूयर "	"	"	उमा
हत्थि "	"	"	कविला
हस "	"	"	किण्हगुलिया

३२  
सामान्य व्यक्ति

२	१५, १४७,
	२४५, ३३४
२	४२०
२	१७६
३	२३६
१	३१
१	२, ३१
४	३०५
३	२७७
१	३१
३	२३६
३	२३६
२	१५
३	२३६

३३  
नारी

३	१४६
१	११
१	१०४
१	१०
३	१४२
१	१०४
४	४६
३	२७७
१	२७
१	१०३
४	३६१
३	१५०
४	३६१

३०

दमक, मेढ और आरोह

आस-दमग	२	४६८	जयती
हत्थि-दमग	"	"	जेट्टा
आस-मिठ	"	४६६	तिसला
हत्थि-मिठ	"	"	देवती
आम-रोह	"	"	धणसिरी
हत्थि-रोह	"	"	धारिणी
	"	"	पडमसिरी

सभाष्यचूणि निशीथसूत्र

पञ्चमावती	२	२३१	अट्टाहिमहिम	५६३
"	३	२७७	आगर	१४१
पञ्चमावती	३	१४२	इष्टगा	४४३
पुरंदरजसा	३	३१२	इद	४१६
"	४	१२७	"	२३६, ४४३
भट्टा	३	१५०	"	१२३, २४३
भट्टा	३	१५०	कौमुदी	२२६
भानुसिरी	३	१३१	खद	३०६
मृगावती	३	२७६	"	४४३
मियावती	४	३७६	गिरि	२२६
वीसत्था	३	२६८	चेइय	४४३
सच्चवती	४	३६१	जक्ख	"
सीता	१	१०४	"	"
सुकुमालिया	२	४१७, ४१८	एदी	२२६
सुभट्टा	४	३७५	एग	४४३
सुलसा	१	१६, २०	तडाग	"
सुवर्णागुलिया	३	१४५	तलागजण्णग	"
हेमसभवा	३	२४३	धूम	१४३
			दरी	४४३
			दह	४४३
			देवउलजण्णग	४४३
			भूत	१४३
			"	४४३
			मुगु द	२२६
			रुक्ख	४४३
			खद	"
			लेपग	"
			विवाह	१४५
			"	१७
			सक्क	३६६
			सर	२४१
			सागर	४४३
			"	"
			गिरिजिता	"
			राइ "	४६०
			भडीर "	"
			रह "	३६६
			"	१३७, ३३४

	३७		सिंग	३	१७१
	पूजा		सिप्पी	१	५१
पृथ्वी—	२	१३७, ३३४	सुवर्णा	३	१७१
समरा—	३	१३१		४०	
सुय—	४	२-६		पानक	
	३८		उदग	३	२८७
	नाणक (मुद्रा)		कजिग	२	२५३
उत्तरापहक	२	६५	खीर	३	२८७
कवडुग	३	१११	खड	२	१२३
कागणी	"	"	गुल	२	"
कुसुमपुरग	२	६५	चिचा	२	"
केवडिए	३	१११	तक्क	३	२८७
केतरात	"	"	द्राक्षापानक	२	२२३
चम्मलाल	"	"	दालिम	२	१२३
गोलथ (रूपक)	२	६५	परिसित्तग	२	२५३
तव	३	१११	मज्ज	३	२८७
दक्खिणापहग	२	६५	मुद्दिता	२	१२३
दीविच्चिक	"	"	सक्करा	२	"
दीणार (सुवर्णा)	३	१११, ३८८		४१	
पाडलीपुत्तग	२	६५		विशिष्ट भोज्य पदार्थ	
पीय (सुवर्णा)	३	१११	इट्टगा	३	४१६
हप्प	"	"	खड	२	२८२
साहरक (रूपक)	२	६५	धयपुण्णा	२	२८०
	३९		मण्डग	२	२८२
	पात्र		सत्तागल	३	४१६
अय	३	१७१	हविष्य	२	२८०
कणग	"	"		४२	
कट्टोरग	१	५१		वस्त्र	
करोडग	"	"	असुय	२	३६६
कस	३	१७१	आईण	२	३६६
चम्म	"	"	आभरण विचित्त	२	३६६
चेल	"	"	उट्टिय	२	५७
जायह्व	"	"	उण्णाय	२	"
तडय	"	"	कणग-कत	२	३६६
तव	"	"	कणग-खचिय	"	"
दन्त	"	"	कणग-चित्त	"	"
भकुय	१	५१	कप्पासिय	"	"
हप्प	३	१७१	किट्ट	"	"
वडर	"	"	कुत	"	"

कोयर	२	३६८	उवक्खडगा	२	४५५
कोसियार	"	५७	कम्मत	"	४३३
कवल	"	३६८	कम्म	४	६२
खोम्म	"	३६६	कुंभकार	२	२५५
चीण	"	३६६	"	३	१६०
चीणसुय	"	"	"	४	६१
जगिय	"	५६	कुविय	२	४३२
तिरीडपत्त	"	५६	कोट्टागार	२	४५५
दुगुल्ल	"	३६६	खीर	२	४५५, ४५६
पट्ट	"	५७	गय	२	४४६
पोत्त	"	५६	गज	२	४५५, ४५६
पोड	"	३६६	गुज्झ	२	४४६
भगिय	"	५६	गुलजत	४	१५१
मियलोमिय	"	५७	गो	२	४३३
वाग	"	५७	गोण	२	"
सराय	"	५६	घघ	२	२१०
			"	४	२४०
	४३		छुस	२	४३२
	विद्या		जत	४	१५१
अभियोग	१	१२१	जाण	२	४३२
अजण	"	"	जुग्ग	२	"
अतद्धाण	३	४२३	जोति	४	६१
आभोगिणी	२	४६३	तरण	२	४३३
इ द जाल	३	१६१, १६३	तुस	२	४३२
उण्णामिणी	१	६	निज्जाण	२	४३१
ऊसोवणी	१	१२१	परिणय	२	४३२, ४३४
ओणामिणी	१	६	पयण	४	६२
गद्दी	३	५६	परिया	२	४३२
तालुग्घाटिणी	१	१२१	पाण	२	४५५
थभणी	१	१६४	पोसह	३	५५८
पडिसाहरण	३	४२२	भिन्न	२	४३२
माणसी	१	१३६	भडागार	२	४५५, ४५६
मातग	४	१५	भडसाला	४	६१, ६२
			महाणस	२	४५५, ४५६
	४४		मत	२	४४६
	शाला		मेहुण	"	"
इ धण- साला	४	६१	रहस्त	"	"
उज्जाण	२	४३१	खख	१	१०३
उत्तर	२	४४५			

५६६

लेह  
वग्धरणा  
वेज्ज  
सुण्णा  
हय

४५

मास

आसाढ

"

"

आसोय

"

कत्तिय

"

"

चेत्त

जेट्ट

पोस

भद्दवय

मग्गसिर

"

"

वैसाह

सावणा

"

४६

पर्वत

अजणग

इ दपय

कु डल

कैलास

गयगग

गोरगिरि

चुल्लि हिमवन्त

दहिमुख

१ १५ मदर, मेरु  
४ ६१, ६२ " ,  
१ ८४ मालवग  
२ ४३२ रुयग  
२ ४४६ विमोगल्ल  
वेयड्डु  
"  
हिमवन्त

२ ४७, ३३३

३ १२१, १२६

१३२, १६२

४ २२६, २७५

३ १२८

४ २२६

१ १३८

३ ६२, १२८

४ २२६, २३०

४ २२६

२ ४७, ३३३

३ १२८

३ १३०, १३१

१ ३२, १६३

१ १३८

३ १२६, १३२

४ २३०

२ ३३४

३ १२१, १२६

१ ३३२

४ २२६, २७५

अड्ड भरह

अरुणवर दीव

उत्तर कुरु

एरवत

जमुदीव

"

गादीसर दीव

"

दीविच्चिक दीव

देवकुरु

पचसेल दीव

धाततिसड

बभहीव

भरह

"

"

महाविदेह

हिमवय

हेमवय

अरुणोदय समुद्र

लवण-समुद्र

उल्लुगा

एरवती

एरावती

कण्हवेणा

गंगा

१ २७, ३२  
३ १५१, ४१६  
२ १७५  
१ २७  
३ ३१२  
१ २७  
३ १४४  
१ १२

४७

द्वीप और क्षेत्र

२ ४१७

१ ३३

३ २३६, ३११

३ ३०५

१ २७, ३१, ३३

३ १४०

१ १६

२ ६५

३ १४१

३ २३६, ३११

३ १४०

१ ३१

३ ४२५

१ १०५

३ ३०५

४ ६८

२ १३६

१ १०५

१ १०५

४८

समुद्र

१ ३३

" ३१, १६२

४९

नदी

४ १०३

३ ३६८, ३७१

३ ३६४

३ ४२५

१ ११, १०४

जउणा	३	१६५, ३६४	फल		
मही	३	३६४	वीय	"	"
वेण्णा	३	३६४	भिड	"	"
सरऊ	३	४२५	मयण	"	"
सिंधु	३	३६४	मुज	"	"
	४	३८	मोरग	"	"
५०			रुदक्ख	"	"
उदक			वेत	"	"
तालोदग	४	४३	सख	"	"
तावोदग	४	४३	सिंग	"	"
बारोदग (सत्तधारा)	४	३८	हड्ड	"	"
			हरिय	"	"
५१					
लौकिक तीर्थ					
अवक्खड	३	१६५		५४	
केयार	"	"	अड्डहार	२	३६८
गगा	"	"	उलवा	"	"
पहास	"	"	एगावली	"	"
प्रयाग	"	"	कडग	"	"
पुक्खर	३	१४७	कडीमुत्तय	"	"
सिरिमाय (ल)	"	१६५	कणागावली	"	"
५२			कु डल	"	"
जल सतरण-साधन			केयूर	"	"
उडुप	१	७४	गलोलइया	"	"
णावा	१	७४	तिसरिय	"	"
तुंब	१	७४	तुडिय	"	"
दत्ति	१	७४	पट्ट	"	"
५३			पलव	"	"
माला			मजड, मुकुट	"	"
कट्ट	२	३२६	मुत्तावली	"	"
कवडग	"	"	रयणावली	"	"
गुजा	"	"	वालभा	"	"
तगरपत्त	"	"	सुवण्ण सु	"	"
दत्त	"	"	हार	"	"
पत्त	"	"			
पिच्छ	"	"		५५	
पुत्तजीवग	"	"		गन्धद्रव्य	
पुप्फ	"	"	अगर	२	४६७
पोडिय	"	"	कुंकुम	"	"
	"	"	कपूर	"	"



६८  
मंगल

			पडह		
चामर	३	१०१	पुण्णकलस	१	८८
छत्त	॥	॥	॥	३	१०१
गादावत्त	१	८८	भिगार	३	१०१
गादीमुख	३	१०१	सख	३	१०१
दधि	॥	॥	सीहासण	॥	॥

## सुभाषित—सुधासार

ज जन्म होइ काले, आयरियव्व स कालमायारो ।  
वतिरित्तो हु अकालो, लहुगा उ अकालकारिस्स ॥

—गाथा, ६

पडिसेवणा तु भावो, सो पुण कुसलो व होज्ज अकुसलो वा ।  
कुसलेण होति कप्पो, अकुसलेण पडिसेवणा दप्पो ॥

—गाथा, ७४

ए य सब्बो वि पमत्तो, प्रावज्जति तथ वि सो भवे वधओ ।  
जह अप्पमादमहिओ, आवरणो वी अवहओ उ ॥

—गाथा, ९२

पचसमितस्स मुण्णिणो, आसज्ज विराहणा जदि हवेज्जा ।  
रीयतस्स गुणवओ, सुव्वत्तमवन्धओ सो उ ॥

—गाथा, १०३

रागद्वोसाणुगता तु, दप्पिया कप्पिया तु तदभावा ।  
आराधतो तु कप्पे, विराधतो होति दप्पेण ॥

—गाथा, ३६३

काम सब्बपदेसु, विउस्सग्गव्ववातधम्मता जुत्ता ।  
मोत्तु मेहुण-धम्म, ए विणा सो रागदोसेहि ॥

—गाथा, ३६४

ससारगड्डपडितो, णाणादवलवितुं समारुहति ।  
मोक्खतड जध पुरिसो, वल्लिवितारोण विसमा उ ॥

—गाथा, ४६५

एच्चुप्पतित दुक्ख, अभिभूतो वेयणाए तिच्चाए ।  
अदीणो अव्वहितो, त दुक्खऽहियासए सम्म ॥

—गाथा, १५०३

सोऊण च गिलाणि, पथे गामे य भिक्खचरियाए ।  
जति तुरित णागच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥

—गाथा, १७४६

रूवस्सेव सरिसय, करेहि ए हु कोद्वो भवे साली ।  
आसललिय वराओ, चाएति न गद्दो काउ ॥

—गाथा, २६२६

ज अज्जिय चरित्त, देसूणाए वि पुव्वकोडीए ।  
त पि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेण ॥

—गाथा, २७६३

मपत्ती व विवत्ती व, होज्ज कज्जेसु कारग पप्पं ।  
अणुपायओ विवत्ती, सपत्ती कालुवाएहि ॥

—गाथा, ४८०८

—भाष्यकार, आचार्य सिद्धसेन क्षमाश्रमण

एणा पि काले अहिज्जमाणे एणज्जराहेऊ भवति, अकाले पुण  
उवघायकर कम्मबन्धाय भवति, तम्हा काले पढियव्वं

—भाग १, पृ० ७

मोक्खत्थ आहारविहारइसु अहिगारो कीरति ।

—भाग १ पृ० ७

कुलगासधसमितीसु सामायारी - परूवणेसु य ।

सुत्तधराओ अत्थधरो पमाण भवति ।

—भाग १, पृ० १४

उपयोगपूर्वकरणक्रियालक्खणो अप्रमादः ।

—भाग १, पृ० ४२

हिसादिअकज्जकम्मकारिणो अणायरिया ।

—भाग ४, पृ० १२४

आवत्तीए जहा अप्प रक्खंति,

तहा अणोवि आवत्तीए रक्खियव्वो । —भाग ४, १८६

अज्जव अकरेमाणस्स सजमसोही एण भवति ।

—भाग ४, पृ० २६४

पमाया दप्पो भवति, अप्पमाया कप्पो ।

—भाग १, पृ० ४२

कम्मबधो य एण दव्वपडिसेवणाणुरूवो, रागदोसाणुरूवो भवति ।

—भाग ४, पृ० ३५६

जहा जउ अग्गिणा गलति

एवं जहुत्तसंजमजोगस्स अकरणातो चरित्तं गलति ।

—भाग ४, पृ० ४

जारिसी रागभागमात्रा मदा मध्या तीव्रा

वा, तारिसी मात्रा कर्मबंधो भवति ।

—भाग ४, पृ० १६

जो जो साधुस्स दोसनरोधकम्मखवणो किरियाजोगो

सो सो मोक्खोवातो ।

—भाग ४ पृ० ३५

—चूर्णिकार आचार्य जिनदास महत्तर



सभास्य युगि निरीत मुद्र

[illegible]

असणादि दव्वमाणे	१६५४	१६१२	"	५४८०	
असणादी वाऽऽहारे	२३४७		असिवादीकारणितो	४५७७	
असणादी वाहारे	२५५८		असिवादी सुंकत्याणिएसू	४८१२	६५३
असणे पाणे वत्थे	११५३		असिवादीहि गया पुण	५५४१	५४४२
असति गिहि णालियाए	१६८		असिवे अगम्ममाणे	५६५६	३०६४
"	४२५३	५६६२	असिवे ओमोदरिए	३४२	
असति तिगे पुण	५८७८	४०५३	"	४५८	
असति वसघीए बीस्	१६६०	१६१८	"	१४५४	
"	११५०	३५३१	असिवे ओमोयरिए	७२६	४०५७
असति विहि-णिग्गता	१६८३		"	७४७	
असति समणाए चोइग	५०७६	२८२१	"	७७३	४०५७
असती अघाकडाण	५११	४६०८	"	७७८	
असती एव दवस्स तु	१६६३	१६२१	"	८१२	
असती गच्छविसज्जण	३७३		"	८१४	
असती ते गम्ममाणे	३४५३		"	८१५	
असती य परिरयस्स	१६४		"	६८४	
असती य भद्दो पुण	४६७६		"	१००७	
असती य भेमाणं वा	१३७२	४६३६	"	१०२१	१०१६
असती य मत्तगस्सा	५४१		"	१४३७	
असती य लिगकरणं	१६६१		"	१४६२	
"	५७२२		"	१४८१	
असती य संजयाण	५६२७		"	१४६०	
असती विगिच्चमाणो	४६०६		"	१८४७	
असतुण्णि-त्तोम-रज्जू	६५३	२३७६	"	१८५३	
असघीणे पभुपिंडं	११८४	३५६५	"	२००७	
असमाही ठाणा खलु	६४६३		"	२०१२	
असरीरतेणभंगे	१६५०	५७६	"	२०२४	
असहाओ परिसिल्लत्तणं	५४७६	५३८४	"	२०४४	
असंथर अजोगावा	३८५१		"	२०६१	१०१६
असंपत्ति अहालदे	५३२६	२४०३	"	२६६०	
असिद्धी जति णाएणं	४८६७	१००६	"	२६८४	
असिवगहितं ति काउ	३४४		"	२६६७	
असिवगहिता तणादी	३४३		"	२६६८	
असिवाइकारणेहि	३१५२	४२८३	"	३१०४	२००२
असिवातिकारणेणं	५०३२		"	३१२७	२७४१
असिवादिकारणगता	१२२५		"	३१२६	
असिवादिकारणगतो	२४११		"	३१६१	
असिवादिकारणेहि	३८४७		"		

समिति संमेलन	सं.सं.	सं.सं.	सं.सं.	सं.सं.
१	१९९९	१९९९	१	१९९९
२	१९९९	१९९९	२	१९९९
३	१९९९	१९९९	३	१९९९
४	१९९९	१९९९	४	१९९९
५	१९९९	१९९९	५	१९९९
६	१९९९	१९९९	६	१९९९
७	१९९९	१९९९	७	१९९९
८	१९९९	१९९९	८	१९९९
९	१९९९	१९९९	९	१९९९
१०	१९९९	१९९९	१०	१९९९
११	१९९९	१९९९	११	१९९९
१२	१९९९	१९९९	१२	१९९९
१३	१९९९	१९९९	१३	१९९९
१४	१९९९	१९९९	१४	१९९९
१५	१९९९	१९९९	१५	१९९९
१६	१९९९	१९९९	१६	१९९९
१७	१९९९	१९९९	१७	१९९९
१८	१९९९	१९९९	१८	१९९९
१९	१९९९	१९९९	१९	१९९९
२०	१९९९	१९९९	२०	१९९९
२१	१९९९	१९९९	२१	१९९९
२२	१९९९	१९९९	२२	१९९९
२३	१९९९	१९९९	२३	१९९९
२४	१९९९	१९९९	२४	१९९९
२५	१९९९	१९९९	२५	१९९९
२६	१९९९	१९९९	२६	१९९९
२७	१९९९	१९९९	२७	१९९९
२८	१९९९	१९९९	२८	१९९९
२९	१९९९	१९९९	२९	१९९९
३०	१९९९	१९९९	३०	१९९९

अहव जदि अत्थि थेरा	५५८२		अहवा भिक्खुस्सेवं	५३३१	२४०५
अहव एण कत्ता सत्था	४८१६	६६०	अहवा महानिहिम्मि	६५२६	
अहव एण पुट्ठा पुन्वेण	५०६३	२८०७	अहवा रागसहगतो	६६८	३८६६
अहव एण मेत्ती पुवं	२७३४		अहवा वणिमरुएण य	६५२२	
अहव एण सद्धा विभवे	१६५२	१६१०	अहवा वातो तिबिहो	११६	
अहव एण हेट्ठुणंतर	८१७		अहवा वि अगीयत्थो	४८००	६४१
अहवाऽजत पडिसेवी	६६२३		अहवा वि असिट्ठम्मि य	१२६३	२०४०
अहवा अमुसिरगहणे	१२३१		अहवा वि कओणेणं	५८८०	४०५५
अहवाऽणुसट्ठुवालंभुवग्गहे	६६१२		अहवा वि एणालवद्धे	५७७४	
अहवा अंबीभूते	३२२६	४२५४	अहवा सचित्तकम्मे	२५६०	
अहवा आणादिविराहणाओ	५१३५	२४८५	अहवासमणाऽसंजय	४७४७	८८६
अहवा आहारादी	४१५६	५२७८	अहवा सयं गिलाणो	६२४८	
अहवाऽहारे पूती	८०७		अहवा सावेक्खित्तरे	६६५१	
अहवा उस्सग्गुस्सगियं	८२५		अहवा सिक्खासिक्खे	३५२७	
अहवा एग्गहणे	४७०६	८५५	अहवा सुत्तनिबंघो	६६७०	
अहवा एगेऽपरिएते	६३३५		अहिकरण भट्ठपत्ता	४३७६	
अहवा एसणामुद्धं	६२७७		अहिकरणमहोकरणं	२७७२	
अहवा एसेव गमो	३५२२		अहिकरणमंतःराए	५३१३	२३८७
अहवा एसेव तवो	३५२३		अहिकरण विगति जोए	६३२७	
अहवा ओसहहेउं	४०५२	४५५६	अहिकिच्चउ असुभातो	३३२४	
अहवा को तस्स गुणो	६६८६		अहिकरण गिहत्थेहि	२८३५	५५६६
अहवा गुरुणा गुरुणा	४६०६	१०४२	अहिएणवजणणे मूलं	२१६	
अहवा चिरं वसंतो	६०२६		अहिभासओ उ काले	६६	
अहवा छहि दिवसेहि	६५५१		अहियस्स इमे दोसा	५८६६	४०७२
अहवा जं वद्धट्ठि	४६६४		अहियासिया तु अंतो	६११६	
अहवा जं भुक्खत्तो	३७६२	६००२	अहिएणलगच्छ भगवं	३०४३	१६४४
अहवा एण चव वज्झति	३३३१		अहि-विच्छुग-विसकंट	४०१०	३८३३
अहवा एण मज्ज जुत्त	२६३३		अहुगुद्वियं च अण-	४३८२	
अहवा ततिते दोसो	३६०३	५१७०	अहोरत्ते सतवीसं	६२८४	
अहवा तिगसालंवेण	३८७१		अंकम्मि व भूमीए	१२५७	
अहवा तिण्णि सिलोगा	६०६१		अंके पलियंके वा	२३१०	
अहवा तेसि ततियं	२६३०	५८२७	अंगाण उवंगाणं	५६२	
अहवा दुगं य एणवगं	१३६२		अंगुट्ट पोरेमेत्ता	१२२७	
अहवा पढमे छेदो	३५३०		अंगुलिकोसे पणणं	६२०	३८५३
अहवा पढमे दिवसे	२५३७		अंछणतवट्ठणं वा	१५३१	
अहवा पणएणऽहिओ	६५७७	२४०६	अंछणे सम्महा	१६३१	
अहवा पंचण्ह संजतीण	५३३२	३७०६	अंजगा-वज्जगा-कहमलिते	५०८७	२८३२
अहवा पालयतीति	१६८२				
अहवा भिक्खुस्सेयं	५१२५	२४७६			



अंजगम-दहिमुस्तागं	५२				
अंजगमुज्जिम कणे	६१०६				६०५
अंतदाणा अनवी	१७४३	३७६६			६०५
अंतग्मि य मज्जमि य	२३७६	४८१६			६०५
अंतर निमंतिप्रो वा	१३४७				५३४०
अंतरपल्लीगहितं	४१६३	५३१०			५३४५
अंतरपल्ली नहुगा	३२८७				५३५
अंतररहितामांतर	४२५८				५३०३
अंतं न होइ देवं	५८४४	६०००			५३४४
अंतोडं य निधियं	२५१३				६३७४
अंतो अन्वभमागेनगमादीमु	०३६१	१८८८			६३३३
अंतो अहोरत्तम्य उ	६०७०				३३३३
अंतो आरगमादी	४७३१	८७१			३३६५
अंतो गितं मनु गितं	१५३४				३४०४
अंतो गितंमगी पुग	१४०३	६००३			३३३०
अंतो पर-मगगीयं	३०४८				३६६६
अंतो यदि कन्ध-मुताः	३३६३	३५७०			६०३६
अंतो यदि य पोतं	६३००				३६६६
अंतो यदि य भिन्नं	६३०४				६६०६
अंतो हीन म मन्त्राति	२३६३	३८६४			६३६०
"	२३६४	३८६५			६३६३
"	२३६६	३८६८			६३६६
अंतो हीन न दृष्टे	५८५०				३८३६
अंतो मगी विरिमिमा	४६६३				३८६०
अंतोममम गति	३३३३				३३३३
अंतो गति मजीमम	४३००				६६३३
अंतोमगी मजीमम	४८६८	३४०३			३४३३
अंत मेल विमम	६७००				३६३३
अंतमगी मजी	६३३३				३३३३
<b>पा</b>					
पादम विमि म विमि	४३६०				३३६३
पादममममममम	३६६३				३६६३
पादममममममम	६६६३				३६६३
"	३६६३				३६६३
"	३६६३				३६६३
पादममममममम	३६६३				३६६३
"	३६६३				३६६३
"	३६६३				३६६३
पादममममममम	३६६३				३६६३
"	३६६३				३६६३
"	३६६३				३६६३

आगंतु तदुत्वेण व	२१५१		आतविसुद्धीए जती	११३२	
आगंतु पञ्चण जायण	३०६६	१६६५	आतसमुत्पमसज्भाइयं	६१६६	
आगाढ फरसमीसग	४२८३		आतंकविप्पमुक्का	१७७८	
"	४६६१		आतावण तह चैव उ	५३४२	
आगाढमणागाढं	४८८८	१०२६	आतावण साहुस्सा	५३४५	
आगाढमणागाढे	४२१		आतिथणे मोत्तूणं	५६७०	
"	१५६४		आदरिसपडिहता	४३२१	
"	३१०७		आदाणे चलहत्थो	४८६	
आगाढं पि य दुविहं	२६०७		आदिग्गहणेणं उग्गमो	४३५	
आगाढे अण्णालिगं	५७२४	३१३६	आदिभयणाण तिण्हं	१६६७	३६६१
आगाढे अहिगरणे	२७६१	२७१३	आदीअदिट्ठभावे	६२१३	७६३
आगारमिदिणं	२३३५		आदेसगं पंचंगुलादि	५३	
आगारिय दिट्ठतो	६५११		आवाकम्मादी णिकाए	१०८१	
आगारेहि सरेहि य	६३६८		आवारोवधि दुविघो	११५२	
आघातादी ठाणा	४१३५		आपुच्छण आवस्सग	५२५	२५६०
आचंडाला पढमा	१४७३	३१८५	आपुच्छणकितिकम्मे	६१२७	
आचेलक्कुद्धेत्तिय	५६३३	६३६४	आपुच्छित उग्गाहित	११५५	३५३६
आण्ययो जा भयणा	१३०६	४६०६	आपुच्छिय आरक्खिय	२३६२	४८२६
आणंदं अपडिहयं	२६६०		"	३३८५	२७८६
आणाइणो य दोसा	२८३६		आभरणपिए जाणसु	५२१०	२५६३
आणाए जिण्वराणं	५४७२	५३७७	आभिग्गहियत्ति कए	१५४६	
आणाए ऽ मुक्कधुरा	१०२३		आभिग्गहियस्सासति	१२४६	
आणाए वोच्छेदे	६७०		आभोएत्ताण विट्ठ	२५७४	
आणादिणो य दोसा	५७४०	३२७१	आभोगिणीय पसिणेण	१३६६	४६३३
आणादिया य दोसा	२३५८		आमज्जणा पमज्जणा	१५१६	
"	२७३५		आमफलाइ न कप्पंति	४७५७	८६६
आणादि रसपसंगा	४६०४	१०३७	आमंति अब्भुवगए	५२८८	३४११
आणानंगे णाणं	६६६३		आमे घडे निहितं	६२४३	
आणुगदेसे वासेण विणा	४६२४		आयपरउभयदोसा	३७८२	
आतनर परतरे वा	६५४०		आयपर-पडिक्कम्मं	३८१७	
आततरमादियाणं	६५५६		"	३६३७	
आत-पर-मोहुदीरण	१४६८		आयपर-मोहुदीरण	१२१	
"	१५१७		आयपरोभयदोसो	५३०	२५६५
आतपरे वावत्ती	५६०४		आयरिआ अभिसेओ	८७१	६११०
आतपरोभावणता	१४५२		आयरिए अभिसेए	२६८५	६३७७
आतवयं च परवयं	१०४२		आयरिए अभिसेगे	६०२०	४३३६

[illegible]

आवरिसायण उर्वलिपणं	२३१६		आसि तदा समगुण्णा	१८४६	
आवस्सिया णिसीहिय	२११	३४३८	आसित्तो ऊसित्तो	३५७४	५१५१
"	५३८३	३४३८	आसेण य दिट्ठं तो	६३६६	
"	६१३६		आहच्छुवातिणावित	४१६२	५२८५
आवहति महादोसं	३६७५		आह जति ऊणमेवं	२६५४	
आवातं तव चैव य	८२१		आहा अवे य कम्मे	२६६६	६३७५
आवायं णिग्वावं	१२२		आहाकम्मं सइं घातो	५६६१	
आवासग कातूणं	६१२४		आहाकम्मिय पाण्ण	३८३५	
आवासग छक्काया	३५५०		आहाकम्ममुद्देसिय	३२५०	४२७५
आवासग परिहाणी	४३०		आहाकम्मे तिविहे	२६६३	
आवासगमादीयं	६१८०		आहातच्च-पदार्णे	४३००	
आवासगमादीया	६२१४	६७६	आहारउग्गमेणं	१८३५	
आवासग सज्जाए	४३४६	३१६३	आहारउन्भवो पुण्ण	५७२	
"	६३४३		आहार उवहि देहं	५७८१	
आवासगं अणियतं	४३४७		आहार उवहि देहे	४३५६	
आवास वाहि असती	२२४	३४५४	आहार उवहि विभत्ता	२११८	
"	५३६८		आहार उवहि सेज्जा	२५७६	
आवास-सोहि अखलंत	५०१६	६१६	"	५६३४	
आवासितं व ब्रह्मं	६११३		"	६२६६	
आवासियमज्जणया	६३३२		आहारदीणज्जती	६२३५	
आसकरणादि ठाणा	४१३२		आहारमणाहारस्स	१६३५	
आसगतो हत्थिगतो	६२५	३८५७	आहारमंतभूसा	२२८७	
आसज्जणिसीहियावस्सियं	५२३	२५८८	आहारमंतरेणाति	१२४	
आसण्णतरो भयमायती	६७६		आहारविहारादिसु	११	
आसण्णमुक्का उट्ठिय	२५५५		आहारादीणज्जु	४३५३	
आसण्णुवस्सए मोत्तु	११३५		आहारादुप्पादण	२४१२	
आसण्णे परभणितो	४५५४		आहारादुवभोगो	२४२१	
आसण्णे साहंति	१७६६		आहारे जो उ गमो	५६६४	
आसण्णे य छण्णसवो	५२७६	३३५५	आहारे ताव छिद्दाहि	३८६८	
आसंक-वेरजण्णं	१८२६		आहारो व दवं वा	४१६६	
आसंदग-कट्टमओ	१७२३	३७४५	आहारोवहिमादी	४५०६	
आसंद पीड मंचग	५६५१		आहिडए विवित्ते	२७१५	
आसाढ-पुण्णिमाए	३१४६	४२८०	आहिडति सो णिच्चं	२७१६	
आसाढी इंदमहो	६०६५		आहेणं दारगइत्तगाण	३४८२	
आसाण य हत्थीण य	२६०१				
आसासो वोत्तानो	१७४८	३७७१	इअ अणुलोमण तेसि	५५७	
आसा हत्थो खरिणाति	३६६५		इच्छाणुलोमभावे	३०२६	१६२६

सभाष्य चूर्णिनिशीथ सूत्र

इच्छामि कारणेणं	१६१३		इस्सरसरिसो उ गुरु	६६२६
इट्टग-ट्टगम्मि परिपिडताण	४४४६		इस्साखुए वि वेदुक्कडयार	३५६३
इट्ट-कलत्त-विओगे	१६८७	३७११	इह परलोए य फलं	४८१६
इतरह वि ताव गरुयं	८४०		इहलोइयाण परलोइयाण	३११२
इतरेसिं गहणग्ग्मी	२४८५		इहलोए फलमेयं	६१७८
इतरेसु होंति लहुगा	२१०५		इह लोगादी ठाणा	४१४०
इत्तरोवि य पंतावे	४४६६		इह वि गिही अविस्सहणा	२८४४
इत्तरिओ पुण उवधी	१४३५		इहरह वि ता न कप्पइ	६०३२
इत्तरियं पि आहारं	३२१५		इहरह वि ताव अम्हं	५२६८
इति एस अगुण्णवणा	११८१		इहरहं वि ताव गंधो	६०५०
इति चोदगदिट्ठं	१३८०		इहरह वि ताव लोए	३३११
इति दप्पतो अणाइण्णं	४८६३		इहरा कहासु सुणिमो	५२६३
इति दोसा उ अगीते	४८०६		इहरा परिट्ठवणिया	५०६७
इति सज्जगा तु एसा	५३०६		इहरा वि मरति एसो	५६६६
इति संदंसण-संभासणेहि	१६८६		इंगाल-खार-डाहो	१५३७
इत्थि-परियार-सद्दे	२०१५		इंदमहादीएसु	२४८०
इत्थि पट्टच्च सुत्तं	२४६६		इंदमहादीसु समागएसु	३१३३
इत्थिकहं भत्तकहं	११		इंदियपडिसंचारो	३८७८
इत्थिकहाओ कहेति	३५८३	५१५६	इंदियमाउत्ताणं	६१४६
इत्थी जूयं मज्जं	४७६६	६४०	इंदिय सलिंग एते	४३६
इत्थी रापुंसको वा	१६१४		इंदियाणि कसाये य	३८५८
इत्थी पुरिस नपुंसग	५०३८	६३७	इंदेण वंभवज्झा	४१०१
इत्थीणं मज्झग्ग्मी	२४३०		इंधणधूमे गंधे	८०५
इत्थीणातिसुहीणं	२४३३		"	४७१०
इत्थीमादी ठाणा	४१३७		इंधणसाला गुरुगा	५३६२
इत्थी सागारिए	५१६६	२५५२		ई
इत्थीहि णाल-वद्धाहि	१७६४		ईसर-तलवर-माडंविएहि	२५०२
इधरव वि ताव सद्दे	१७७२		ईसर भोइयमादी	२५०३
इधरह वि ताव गरुयं	८२८		ईसरियत्ता रज्जा	५१६०
इम इति पच्चक्खग्ग्मी	२५८६		ईसि अघोणता वा	३७७१
इय सत्तरी जहण्णा	३१५४	४२८५	ईसि भूमिमपत्तं	३४७८
इय विभणिओ उ भयवं	१७८०			उ
इयरह वि ता ए कप्पति	५०६२		उउवट्ठपीढफलं	४३४८
इरिएसण-भासाणं	३१७६		उक्कोसओ जिण्णाणं	१४१०
इरियं ए सोवयिस्सं	४८८		उक्कोसगा तु दुविहा	८०
इरियावहिया हत्थंतरे	६१४१		उक्कोसतिसामासे	६६०
इरियासमिति भासेसणा	३६३३		"	५८३८
इस्सरनिवर्त्ततो वा	५८४२			

उक्कोस मार-भज्जा	५१६७	२५१७	उच्चतमत्ति ए वा	६००२	
उक्कोसं विगतीओ	३४६०	२६१२	उच्चत्ताए दाणं	४४६२	
उक्कोसाउ पयाओ	६५४६		उच्चसर-सरोमुत्तं	२८१८	
उक्कोसेण दुवालस	६०६२		उच्चारपासवणखेल मत्तए	३१७२	
उक्कोसो अट्टविघो	१४१२	४०६५	उच्चारमायरित्ता	१८७३	
उक्कोसो घेराणं	१४११	४०६४	"	१८८०	
उक्कोसो दट्टूणं	३५१२		उच्चारं पासवणं	१७३२	३७५३
"	३५४७		उच्चारं वोसिरित्ता	१८७७	
उक्कं.सोवविफलए	१०१६		उच्चारति अयंठिल	३७५५	
उक्कित्तप्पत्तगिलाणो	३०७६	१६७८	उच्चारे पासवणे	१७५४	३७७७
उग्गम उप्पादण	२०७३		उच्छवद्यणेषु संभारितं	५२७७	
उग्गम उप्पायण	१८३३		उच्छाहितो परेण व	४४४५	
"	४६७२		उच्छाहो विसीदंते	२६६१	
"	२०६७		उच्छुदसरीरे वा	४०५१	
"	४६६३		उच्छोलरुप्पितावण	१८८१	
उग्गमदोसादीया	४७१६	८४६	उच्छोल दोसु आधंस	४६४१	
"	४६७४		उज्जाणद्वाणादिसु	४६५८	
"	४६६५		उज्जाणज्जटालदगे	२४२६	
उग्गमविसुद्धिमादिसु	५६३५		उज्जाणरुक्कमूले	३८७६	
उग्गममादिसु दोसेसु	४११०		उज्जाणा आरेणं	४१७०	५२८६
उग्गममादी सुद्धो	१२७५		उज्जाणाऽऽउहणूमेण	५७४२	३२७३
उग्गयमणसंकणे	२८६६	५७६३	उज्जाणातो परेणं	४१८२	५३०२
उग्गयमणुग्गए वा	२६२६	५८२३	उज्जालज्जम्पगाणं	२१६	
उग्गयवित्ती मुत्ती	२८६३	५७८८	उज्जुत्तणं से आलोयणाए	२६८०	५३५६
उग्गहणंतगपट्टे	१३६८	४०८२	"	२६८१	५३५७
उग्गहवारणकुसले	३०१६	१६१६	उज्जोयफुडम्मि तु	४३२०	
उग्गातिकुलेसु वि	४४१५		उट्ट-णिवेसुल्लंघण	५६६	
उग्गिण्णदिण्ण अमाये	२८४६		उट्टेज्ज णिसीएज्जा	२८८५	५६०८
उग्घाताणुग्घाते	६४२१		"	६६००	"
उग्घातियमासाणं	६५४४		उट्टे तं निवेसंते	३५५२	
उग्घातियं वहंते	२८६८		उट्टुवदिगमेगतरं	१२३८	
उग्घातिया परित्ते	४७२३	८६२	उट्टुवद्धे रयहरणं	७०६	
उग्घायमणुग्घातो	३५३४		उट्टुमासो तीसदिणो	६२८५	
उग्घायमणुग्घायं	२८६१		उट्टुवास सुहो कालो	८६०	
"	३५३३		उट्टाहरक्खणट्ठा	३२१	
"	३५५४		उट्टाहं च करेज्जा	५२६६	३३४५
उग्घायमणुग्घाया	६६७५		उट्टाहं व कुसीला	४०२	
उग्घायमणुग्घायो	६६४५		उट्टमहे तिरियम्मि य	३१६३	४८४१

सभाष्य चूर्णनिशीथ सूत्र

उड्डस्सासो अपरिक्कमो य	३६३१		उद्वावण णिण्विसण	४७६३
उड्डं थिरं अतुरितं	१४३१		"	५१५१
उड्डे केण कतमिणं	१२६६		"	३३७६
उड्डे वि तदुभए	१६७८		उद्दिट्ठ तिगेगतरं	५०१०
उण्णातिरित्तमासा	३१४८		उद्दिट्ठमणुद्दिट्ठे	४५६३
उण्णयवासाकप्पा	३२०६		उद्दिट्ठाओ नईओ	४२०८
उण्णयं उट्ठियं वावि	५८०२		उट्ठिसिय पेह अंतर	५००८
उण्णोट्टे मियलोमे	७६०		उट्ठूढसेस वाहि	३४६३
उण्होद-छगण-मट्ठिय	४६३४		उट्ठेसगा समुट्ठेसगा	२०१६
उत्तरा-ससावयाणि य	३१३६	२७४७	उट्ठेसम्मि चउत्ये	२३५०
उत्तादिण सेसकाले	६३८८		उट्ठेसियम्मि लहुगो	२०२२
उत्तरकरणं एगगया	३२१६		उट्ठं सित्ता य तेणं	१७८१
उत्तरगुणातिचारा	६५२६		उट्ठंसियामो लोगंसि	१५६५
उत्तरणम्मि परूविते	४२२५	५६३५	उट्ठियदंडो गिहत्थो	६४१७
उत्तरमाणस्स णदि	८४६		उट्ठियदंडो साहू	६४१७
उत्तरमूले सुद्धे	१६६०	२६६४	उपचारेण तु पगतं	५८
उत्तर-साला उत्तर-गिहा	२४८८		उप्पक्कमे गत्तं	२२७२
उत्तिगो पुण छिड्डं	६०१८		उप्पणकारणे गंतु	३२७१
उत्थाणो सहपाणे	१८७६		उप्पण्णाणुप्पण्णा	३८६४
उदुल्ल मट्ठिया वा	१८४८		उप्पणो अधिकरणो	१७०८
उदुल्लादीएसु	१८५१		उप्पणो उवसग्गे	३६४५
उदए कप्पूरादी	३७६१	६००१	उप्पणो णाणवरे	५७३६
उदए चिक्खल्लपरित्त	४२३१	५६४१	उप्पत्ती रोगाणं	६५०४
उदएण वातिगस्स	३५८६	५१६५	उप्परिवाडी गुरुगा	५६६०
उदग-ग्गि-त्तेणसावयभएसु	४६२		उप्पल-पउमाइं पुण	४८३८
उदगसरिच्छा पक्खेणज्वेति	३१८६		उप्पात अणिच्छप्पित्तु	३५६
उदगतेण चिलिमिणी	५३४८	२४२२	उप्पादगमुप्पणो	१८१६
उदगागणितेणोमे	५६३८		उप्पायणोसणासु वि	२०८४
उदगागणिवातादिसु	३१३२	२७४४	उब्बद्ध पवाहेती	६०११
उदरियमओ चउसु वि	५७४८		उब्भामगज्जुब्भामग	४०८२
उदाहडा जे हरियाहडीए	५८१६	३६६३	उब्भामग वडसालेण	१४०
उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो	५७५८	३२८६	उभओ वि अद्धजोयण	३१६२
उदुवद्धे मासं वा	४६८६		उभयगणी पेहेतुं	४६२७
उद्दरे वमिन्ता	२६३४	५८३०	उभयट्ठातिणिविट्ठं	२४६६
उद्दरे सुभिक्षे	१६६८	१०१८	उभयघरणम्मि दोसा	४३३२
"	३४२६	"	उभयम्मि व आगाढे	१६०१
"	४८८०	"	उभयस्स निसिरणट्ठा	१२२६
उद्वाण परिट्ठविया	५४४	२६०६	उभयो पडिबद्धाए	५४८

"	५४६	२६१५	उवरि नु पंचमईने	६४६०	
उमयो महकजे वा	६५३	२६५०	उवरि नु मुंजयस्मा	५२२	
उम्भनदायमरिसं	५०४३	३३२६	उवरिमंत महुगं	१०५२	
"	५३३०	३३०६	उवलकिन्धया य उदगा	५२६१	
उम्भर कोट्टिंसेमु य	५३१६		उवमजनेगु नु पुव्वं	४०३३	५६४३
उम्भारां ननु दुविशो	३६३०		उवमग-गगिन-विभावित	२६३५	
उम्भायं च नमेज्जा	३१३३		उवमगावहिट्टागं	४३६४	
उम्भायं पादेज्जा	३३४१		उवममगाट्ट पउहुं	११३३	३५५४
उम्भाम्मि य पारिच्छा	३३५६		उवमने वि महाकुले	३५३३	
उम्भायं नु अमनां	२६५५		"	३५५३	
उम्भायं नहु टिग गिमि	११६५	३५३५	उवसंतां रायमञ्जां	३६३३	
उम्भोसागुगुदग्गा	११६३	३५३३	उवसंपयावराहं	२३६३	
उम्भोप्रगु गिगमग्गे	५३५०		उवसामितां गिहत्थो	२५४६	५५५०
उवग्गमां संयाउग	१६५५	२६६२	उवस्सागं य संयाने	१३००	३३२२
"	१६५६	२६६३	उवस्सगं गिबेसगं	३०६५	१६६६
उवक्कगुह्मनियं पुग्गा	५१५		उवहत्त उट्ठिय गायणे	३६३३	
उवक्कग्गे पांउलेहा	२००	३४६२	उवहत्त-उवक्कगुम्मि	३५३६	५१५४
"	५३५०	३४३४	उवहम्मति विष्णागं	६२२६	
उवगग्गन्नेहग्गे भाग	५६४६	३०५३	उवह्यउगह्मने	४६०३	
उवगग्गं पुव्वमग्गुत्तं	५६५३	३०६५	उवह्यमग्गुवह्मे वा	४६०५	
उवगहिता मूयादिश	६६३		उवहिम्मि पडग भाडग	३०६५	१६६३
उववरग अहिमरे वा	२३६६		उवहि मुत्त भत्त पागे	२०३१	
उववरदि को गिलागं	२६३४		उवहा आहाकम्मं	२६६४	
उवहुं जिउं गिमिने	३५५६		उवहा य पृथियं पुग्ग	५१०	
उवदेम-अग्गुवदेमा	२६२५	५५२५	उवेह्मजत्तियपरितावगं	३०५५	१६५४
उवधिमसत्तं महुगा	३६०		उवेह्माभासगुक्कग्गे	३०५६	१६५३
उवधां पांउलेह्मा	१४३५		उवेह्माभासग उवग्गा	३०५३	१६५६
उवधां पोम-भया वा	१३३३		उवेह्माभासग परितावगं	३०५६	१६५५
उवधां सर्गर चारिन	२४४६		उवेह्माभासगं वारगं	३०५५	
उवधां सरारमयावव	११६५		उव्वत्तं खेद संयार	२६५४	१५५६
उवधांहरग्गे गुग्गा	१११		उव्वत्तगुग्गाहरग्गे	३६०६	
उवट्टन-वेग्गदि	२२३१		उव्वत्तगं परियत्तगं	१३५६	३३५२
उवट्टनमोगवेग्गेहि	६११		उव्वत्तगमयत्तं	५४६५	५३३०
उवग्गिमिग्गहा कयां	१६०		उव्वत्तगगइ संयार	३५५४	
उवरि मुयमग्गह्मगं	६१५२		उव्वत्तागं पुव्वं	१६४६	
उवरि पंच अमुज्जे	३२६६	४३००	"	१६५५	
उवरि नु अणजीवा	१५३		उव्वरगस्स नु असत्ता	३००२	१६०५
उवरि नु अणुलोयो	६१५	३५५०	उव्वरगे कोणे वा	१३४४	५३०



सभाष्य चूर्णानिशीथ सूत्र

उसिणे संसट्टे वा	३०५२	१६५१	एएसामण्णतरं	२७२६
उसुकादिएहि मंडेहि	४३८६		"	३७७४
उस्सग्गाठिई सुद्धं	५२३६	३३१८	"	४३६३
"	५३५६	"	"	४४८४
उस्सग्गलक्खणं खलु	३५७१	५१४८	"	४६५३
उस्सग्गसुतं किची	५३५७	३३१६	"	४६५७
उस्सग्गसुयं किची	५२३४	"	"	६०३१
उस्सग्गाती वितहे	५०२१	६२१	एएसामण्णतरे	४३२५
उस्सग्गा पइन्न-कहा य	२१३१		एएसामण्णायरं	२६२६
उस्सग्गित-वाघातं	८३८		एएसि तिण्हं पी	५२१२
उस्सग्गियवाघाते	८४१		एएसि तु परूवरण	५६२५
उस्सग्गियस्स पुर्व्वि	८३३		एएहि कारणेहि	३२६१
"	८४७		"	३६०८
उस्सग्गे श्रववायं	६६७२		"	३७६६
उस्सग्गे गोयरम्मी	५२३७	३३१६	"	३७७६
"	५३६०	"	"	४६१४
उस्सग्गेण णिसिद्धाणि	५२४५	३३२७	"	४८८२
"	५३६८	"	"	५६५५
उस्सग्गेण भणितानि	५२४४	३३२६	"	३१३५
"	५३६७	"	"	४०५३
उस्सग्गो वा उ ओहो	६६६८		एएहि तु उववेयं	२७३३
उस्सीसग-गहणेणं	२१६५		एएहि य अण्णेहि य	२३६२
उस्सुत्तमणुवइट्ठं	३४६२		एएहि संपउत्तो	६२६३
उस्सेतिम पिट्ठादी	४७०६	८४०	एकत्तीसं च दिणा	६२८६
उस्सेतिममादीणं	४७१३		एकतो हिमवंतो	१५७१
उस्सेतिममादीया	५६६६		एककल्लं मोत्तूणं	६३३६
उहाए पण्णातं	५६१०		एककल्लेण ण लब्भा	६३५५
ऊ			एकस्स दोण्ह वा	६१४४
			एकस्स व एकस व	५०६२
			एकहि विदिण्ण रज्जे	२५८१
			एकं दुगं चउवकं	३०१८
			एकं पाउरमाणे	७६५
			एकं भरेभि भाणं	३४३८
			एकार-तेर-सत्तर	२३२५
			एककुत्तरिया घडछक्कएण	६५६३
			एक्कूणवीसति विभासियम्मि	६६४८
			एक्केक्कपदा आणा	१६०३
ए			एक्केक्कम्मि उ सुत्ते	६१६२
ऊणट्टे णत्थि चरणं	३५३२			
ऊणहिय दुव्वलं वा	४४६७			
ऊणातिरित्तमासे	३१४४			
ऊणाहिय मण्णंतो	३६६७	५२१७		
ऊणेण न पूरिस्सं	५८२६	४००६		
ऊसत्थाणे गाओ	१५३८			
एएण सुत्त ण कयं	२६५१	५८४६		
एए सव्वे दोसा	३२५२			

एकैककम्मि य ठाणे	५१०२	२४५४	एगं ठवे गिण्विसए	१२०२	३५८२
"	५२०५		एगं व दो व तिण्णि व	२०७५	
एकैककं तं दुविहं	५०४		एगं संचिकन्नाए	६२४४	
"	१८६८		एगंगि उण्णियं खलु	८२६	
एकैकका उ पदाओ	५१०	४६०७	एगंगितो उ दुविओ	१२२०	
एकैकका ते तिविहा	५२१३	२५६६	एगंगिय चल थिर	४२३२	५६४२
एकैकका सा तिविवा	७११		एगंगियस्स असती	१२७४	
"	७१६		एगंतरिण्णज्जरा से	३६५२	
एकैकका सा दुविहा	२६१७		"	३६६३	
एकैकको तिण्णि वारा	६१५७		एगंतरिण्णिविगती	६३३०	
एकैकको वि य तिविओ	२१६६		एगंतरियं गिण्विविल्लं	३८२५	
एकैकको सो दुविहो	५६६७	३०७६	एगाणियस्स सुवणे	४५६०	
एककोसहेणं छिज्जति	६५०६		एगापण्णां व नत्तावीसं	५७२६	३१३८
एगक्खेत्तणिवान्नी	१०२२		एगा मूलगुणोहि	२०६३	
एगच्चरि मल्लंता	५४४३		एगावराहडंढे	६५१३	
एगट्ठा संभोगो	५६४०		एगासति लंभे वा	१२६६	
			एगाह पण्ण पक्खे	२७३८	५४७६
एगतरम्मामि उवस्सयम्मि	२४०७		"	५५७६	"
एगतरिण्णगतो वा	५००७		एगिदियमादीसु तु	१८०८	
एगते जो तु गयो	१४५६		एगिदि-विगल-पंचिदिएहि	५००३	
एगत्य वसंताणं	२३७७	४८१४	एगुणवीस जहण्णे	३५२६	
एगत्य रंवरणे भुंजणे य	११८५	३५६६	एगुत्तरिया यड्ढक्कएणं	६५६६	
एगत्य होति नत्तं	४१६०	५३०६	एगुणतीस दिवसे	३५१८	
एग दुग तिण्णिं मासा	२६२१		एगुणतीस वीसा	३५१७	
एगपुड मगल कम्मिणं	६१४	३५४७	"	३५४६	
एगवतिल्लं भंडि	३१८०		एगे अपरिणए वा	५४६४	१४३७
एगमणेगा द्विवसेसुं होति	६३२३		"	५५३६	"
एगमणेगे छेदो	५२८२	३३६०	"	५५४५	"
एगमरणं तु लोए	५१४०	२४६०	एगे अपरिणते वा	३८४१	
एगम्मिज्जेणदारो	६४२६		एगे उ कज्जहाणी	५४६६	
एगम्मि दोसुं तीसु व	५११२	२२७१	एगे गिलाणंपाहुड	४५७६	
एगस्स अणेगाण व	४०३६		एगे तु पुच्चमणिते	४७८७	६२८
एगस्स पुरेक्कम्मं	४०७६	१८३६	एगेण कयमकज्जं	६०८१	
एगस्स वित्तियगहणे	४०८५	१८४२	एगेण तोसित्तरो	४०८६	१८४३
एगस्स माणकुत्तं	४४६८		एगेण समारद्धे	४०८६	
एगं उदुवद्धम्मि	२१६६		"	७४३	
एगं च दोव तिण्णि व	३८३१		एगेणं बंवेजं	६५०३	
"	३८३८		एगेणेगो छिज्जति		

एगो तू वच्चंते	५४८६	५३६१	"	५६२५
"	५५४६		"	५६८६
एगो महाराणसम्मी	११८२	३५६३	एतेण मज्झ भावो	४४२८
एगोसि जं भणियं	३३१६		एतेण उवातेणं	१४६१
एगो इत्थिगमो	५४५६		एते तु दवावेति	१३६६
एगो गिलाणपाहुड	६३३६		एते पदे ण रक्खति	१३३८
एगो णिद्दिस्तेगं	४५६४		एतेसामण्णतरं	६२३
एगो व होज्ज गच्छो	१६५७	१६१५	"	६३३
एगो संघाडो वा	३०३०		"	६४१
एगो संथारगतो	३८४८		"	६४६
एतणंतरागादे	४६३		"	१०७३
एतद्दोसविमुक्कं	१६४२		"	१५०२
"	५०६४		"	१५४०
"	६३४१		"	१५८६
एतविहिभागतं तू	५४६३	५४३६	"	१६२१
एतं खलु आइणं	८६८		"	१८१४
एतं चिय पच्छित्तं	१६०२		"	२१५७
एतं तं चेव घरं	१४६६		"	२१८३
एतं तु परिग्गहितं	१८६६		"	२२२४
एतं सदेसाभिहडं	१४८७		"	२४६५
एताइं सोहितो	१८३८		"	२५१४
एताणि वितरति	२५८४		"	२६८३
एतारिसंमि दंतो	४६६		"	२७१०
एतारिसांम वासो	५२३२		"	३७४०
एतारिसं विउसज्ज	५४६५	५४३८	"	४४६६
"	६३३८	"	"	४६७०
एतारिसं विओसज्ज	५५४६	"	"	५६५६
एतारिसे विओसेज्ज	५५३७	"	"	६२५६
एतासि असतीए	१७७५		एतेसामण्णतरे	६०८
एतविहिभागतं तू	५५३५		"	६१६३
एते अण्णे य त्तिहि	३८२६		"	६१७०
"	३८३६		"	७७१
एते उ अघेण्यंते	५०३०		एतेसामण्णयरं	७२७
एतेच्चिय पच्छित्ता	३३७		"	८७३
एते चेव गिहीणं	३३८		"	८८४
एते चेव दुवालस	१३६५		"	८८६
एते चेव य दोसा	४२५०		"	१२२१
"	५६२२		एतेसि असणादी	५६२६

एतेसि असतीए	४४६		एतो गिङ्गायणा	६५७५	
एतेसि कारणाणं	३३५०		एतो समारभेज्जा	६६१८	
एतेसि च पयाणं	५६७३	३०८२	एतो हीणतराणं	१८६५	
एतेसि तु पदाणं	२१३५		एत्य उ अणभिग्गहियं	३१५१	
"	४६२७		एत्य उ पण्णं पण्णं	३१५३	४२८४
एतेसि तु पयाणं	५६७५	३०८२	एत्य किर सन्नि ज्ञावण	५७३८	३२७०
एतेसि पट्ठपदा	१४६६		एत्य पडिसेवणाओ	६४२२	
एतेसि पल्लवगता	३१०६		"	६५८१	
एतेसु उ गेह्वे	४७६५		एत्यं पुण्ण एक्केक्के	६१६४	
एतेसु चिअ लमणादिअसु	२८		एमादि अणागय दोसरक्खण्डा	३४४१	२८६४
एतेह संवरत्तो	२६६८		एमादिकारणेहि	२४५४	
एतेहि कारणेहि	८६१		एमेव अगहितम्मि वि	११३३	
"	१०६७		एमेव अछिण्णोसु वि	४५५६	
"	११२७		एमेव अट्टजातं	३६८	
"	१२१६		एमेव अतिक्कंते	१०७६	
"	१३०८	४६०८	एमेव असण्णिगहिते	२२२६	
"	१४५०		एमेव अहाय्यं	५५६७	५४६६
"	१५६८		एमेव इत्थिवग्गे	४५६५	
"	१५७५		एमेव उग्गमादी	२६७७	५३५३
"	१५८२		एमेव उत्तिमट्ठे	३४२४	२८७६
"	१७४६		एमेव उवहिसेज्जा	६२०१	७६६
एते हींसि अपत्ता	६२२८		एमेव उवज्ज्जाए	२८२१	
एतो एगत्तरीए	७८३		एमेव कतिवियाए	१३२६	
एतो एगत्तरेणं	१६२		एमेव कागमादिसु	४४२६	
"	७३६		एमेव गणावरिए	२८०६	५७७५
"	६८०		"	२८०७	५८०४
"	१०८४		एमेव गणावच्छे	५५५०	
"	१०६१		एमेव गिलाणे वी	१३३६	५६५
"	१०६७		एमेव गिहत्थेसु वि	३४७	
"	१३५६		एमेव चरिमभंगे	३७८४	
"	१४५१		एमेव चरिमभंगो	२६३३	
"	१५५६		एमेव चाडलोदे	५६७५	
"	१५७०		एमेव चारणभडे	१३२२	
"	१५७८		एमेव चिण्णटादिसु	५३३७	
"	१८५०		एमेव चेड्याणं	४५८०	
"	२१६०		एमेव एव विकप्पा	१८३६	
"	३३४०		एमेव तत्तियभंगे	३७८३	
"	६०२५		एमेव तत्तियभंगो	३४२२	२८७४

एमेव तिविहकरणं	६०३६		एमेव य सच्चित्ते	४७६७
एमेव तिविहपातं	४४६०		एमेव य समणीणं	६१६६
एमेव तु संजोगा	४२४१		एमेव विहारम्मी	१०६५
एमेव तेल्ल-गोलिय	५७५०	३२८१	एमेव समणवग्गे	२६७१
एमेव थंभकेयरा	३१६०		एमेव संजईण वि	४६०१
एमेव दंसणम्मि वि	३८७०		एमेव संजतीणं	४६३६
एमेव दंसणे वी	६३६५		एमेव संजतीण वि	२०७६
एमेव देहवातो	२४२		"	४६४८
एमेव पउत्थे भोइयम्मि	५०५५	२८००	एमेव सेसएसु वि	५०७
एमेव पउलिताऽपलिते	४६४३	१०८०	"	२६१६
एमेव वारसविहो	५२१४		"	२६३६
एमेव वितियभंगे	३७८०		"	२७१७
एमेव वितियसुत्ते	५४४२		"	२७६२
एमेव भावतो वि य	४६०३	१०४०	"	३३७७
एमेव भिक्खगहणे	२६०६	५८०६	"	४१४५
एमेव मज्जणादिसु	५०४८	६४७	"	६००४
एमेव मामगस्स वि	५०२६	६२८	एमेव सेसएहि वि	४२३८
एमेव य अणवे वी	४६४०		एमेव सेसगम्मि वि	३२३०
एमेव य अवराहे	६३७७		एमेव सेसगाण वि	२०८२
एमेव य ओमंमि वि	३४८		एमेव सेसियासु वि	४३८६
एमेव य इत्थीए	२७१२	५०८०	एमेव होइ इत्थी	५२२१
एमेव य उदितो त्ति य	२६१२	५८०६	एमेव होति उवरि	२५७
एमेव य उवगरणे	५०६३		"	३४६८
एमेव य कम्मेण वि	४३६		"	५७०२
एमेव य गेलणो	२६२४	५८२१	एमेव होति नियमा	४४८३
एमेव य जंतम्मि वि	४५२१		एमेवोवधिसेज्जा	१८३७
एमेव य छेदादी	३५२१		एयगुणविप्पमुक्के	३०१७
एमेव य ण्हाणादिसु	२०३०	१६७६	एयगुणविप्पहूणं	३१०८
एमेव य णिज्जीवे	४८५६	६६६	एयगुणसमग्गस्स तु	३११३
एमेव य पडिविम्बं	४३२४		एयविहिमागयं तु	५५४४
एमेव य पप्पडए	१६६		एयस्स एत्थि दोसो	२८३८
एमेव य परिभुत्ते	४१०६	१८६७	"	५१५२
एमेव य पासवरो	६१२०		एयस्स णाम दाहिह	३०३८
एमेव य पुरिसाण वि	५०४०	६३६	एवं चेव पमाणं	५८३६
एमेव य भयणादी	४६३४	१०७१	एयं तु भावकसिणं	६६६
एमेव य भिक्खुस्स वि	६६३५		एयं सुत्तं अफलं	१५४६
एमेव य वसभस्स वि	६६३२		एयाइ अकुब्बंतो	४३७४
एमेव य विज्जाए	३७१५		एयाणि य अण्णाणि य	२७२८

एयाणि सोहयंतो	४६७३		एवं जायगुवत्थं	५०५०	
"	४६६४		एवं ग्रामं कप्पती	३२४८	
एयारिसम्मि वासो	५३५५	३३१४	एवं ता असहाए	४७४३	८८५
एयारिसे विहारे	३३८१	२७८२	एवं ता उडुवद्धे	१२३२	
एरवति कुणालाए	४२२६	५६३६	एवं ता गिहवासे	३०४६	१६४७
एरवति जत्थ चक्किय	४२४३	५६५३	एवं ता गेण्हंते	५०५७	२८०२
एरवति जम्मि चक्किय	४२२८	५६३८	एवं ता जिगुक्कप्पे	४१४८	५२७०
एरिसओ उवभोगो	५१०५	२४५७	एवं ता गीहरणं	१२८६	
एरिसयं वा दुक्खं	४४३५		एवं ता पच्छित्तं	३१११	
एरिससेवी एयारिसा	३५८७		एवं ता सचित्ते	१५३	
एवइयं मे जम्मं	१०३६		एवं ता सव्वादिसु	३३५८	
एवमपि तस्स गिययं	२६५८		एवं ता सविगारे	५२०६	२५५६
एवमसंखडे वी	११०		एवं ताव अभिण्णे	४६६८	
एवमुवस्सय पुरिमे	२६७३	५३४६	एवं ताव दिवसओ	२६३६	५८३२
एवं अट्ठावक्कंती	३५२६		एवं ताव ऽडुगुं छे	४७२८	
एवं अट्ठाणादिसु	४८७६		एवं ताव विहारे	४५८६	
एवं अलव्वममाणे	१२३७		एवंतियाणु गहणे	६४५	
एवं अवायदंसी	४१५४	५२७६	एवं तु अगीयत्थे	२८०१	५७६७
एवं आमं ए कप्पति	४८६७		एवं तु अण्णसंभोइएमु	१६५६	१६१७
एवं आलोएति	३८७४		एवं तु अलव्वंते	५०१७	
एवं उगमदोसा	४१८५		एवं तु असदभावो	१८६४	५६१०
एवं उभयविरोधे	११२५		एवं तु अहाय्यंते	३५०१	
एवं एक्केक्क तिगं	५२२२	२५६६	एवं तु केइ पुरिसा	३५७६	५१५६
एवं एक्केक्कदिणं	२८०५	५७७१	एवं तु गविट्टं सुं	५०४६	६४८
"	२८२५	"	एवं तु दिया गहणं	१६८०	२६८४
एवं एत्ता गमिया	६४५२		एवं तु पयतमाणस्स	५७५	
एवं एत्ता गमिया	६४५७		एवं तु पाउसम्मी	३१२८	
एवं एया गमिया	६४४६		एवं तु भुंजमाणं	५७७८	
एवं एया जयणा	४६३१	१०६८	एवं तुमपि चोदग	६४१४	
एवं खलु उवकोसा	३८८६		एवं तु समासेणं	६४६५	
एवं खलु गमिताणं	६४६२		एवं तु सो अवहितो	२७०७	५०८१
एवं खलु जिगुक्कप्पे	१४४४		एवं तेसि ठिताणं	४६३७	१०७४
एवं खलु ठवणाओ	६४६३		एवं दव्वतो अण्हं	४७७३	६१४
एवं खलु मंविग्गे	५५६४	५४६३	एवं दिवसे दिवसे	२८००	५७६६
एवं गिलाणान्नव्वेग	२६८६	१८६१	एवं परोप्परस्सा	१७६३	
एवं च पृणो ठविते	१६३६	१५६१	एवं पाओवगमं	३६२२	
एवं च भणितमेत्तम्मि	५२६०	३३६६	एवं पाउसकाले	२२६५	
एवं चिय पिसितेगं	४३८		एवं पादोवगमं	३६७५	
एवं चैव पमाणं	६६१		एवं पि अठायंते	५५८१	५४८१

संभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

एवं पि अठायंतो	२७४३	५४८१	एसा सुत्त अदत्ता	६२५२
एवं पि कीरमारो	३००७	१६१०	एसेव कमो गियमा	५८७
एवं पि परिच्चत्ता	४१८८	५३०७	"	५६०
एवं पीतिविबड्ढी	४१७५	५२६४	एसेव गमो गियमा	६००
एवं पुच्छासुद्धे	५०४४	६४३	"	६१३
एवं फासुमफासुं	४०६१	१८१८	"	८३५
एवं वारसमासा	६५५२		"	८४४
एवं वारसमासे	२८०४	५७७०	"	६६८
एवं भणतो दोसो	२६५०		"	१००८
एवं वित्तिगिच्छे वी	२६१८	५८१५	"	१२६७
एवं वि मग्गमारो	७५८		"	१३०६
"	७६७		"	१४८८
"	८४३		"	१७७७
एवं सड्ढकुलाई	१६३४	१५८६	"	१६६५
एवं सण वच्च मुंज चिप्पिते	८२७		"	२०२८
एवं सण्णित्तराण वि	३५३६		"	२३०७
एवं सिद्धं गहणं	४५४०		"	२५२५
एवं सुत्तगिवंधो	१२२३		"	२६४०
एवं सुत्तं अफलं	४१७१	५२६०	"	३०६४
"	५२०८	२५६१	"	३२६८
एस गमो वंजणमीसएगा	४२८		"	४६६४
एस तवं पडिवज्जति	१८८६	५५६७	"	४६६७
"	२८८०	"	"	४८६०
"	६५६५	"	"	४८६६
एस तु पलंवहारी	४७८२	६२३	"	५१६३
एस पसत्थो जोगो	५६६१		"	५२२३
एसमगाइण्णा खलु	१४७८		"	५८७१
एस विही तु विसज्जिते	५४६०	५४३४	"	५६३१
एसण दोसे व कते	१६४४	१६०३	"	५६४८
एसणमादी भिण्णो	४३२		"	६६६४
एसणमादी रुद्धादि	४४३		एसेव गमो नियमा	१७८२
एसा अविही भणित्ता	४०८४	१८४१	"	२८५४
एसा आइण्णा खलु	१४६२		"	३३१०
एसा उ अगीयत्ये	६३५८		"	५५५१
एसा उ दप्पिया	४६४		"	६६६५
एसा खलु ओहेणं	५१६७		एसेव चतुह पडिसेवणातु	६१
एसा विही विसज्जिते	५५३३		एसेव य दिट्ठंतो	४८६६
			"	६५०८

एसुव य विवरीओ	४२३
एसो उ असञ्जाओ	६११७
एसो उ आमविही	८७१७
एसो वि ताव दमयउ	२७८३
एहि सगितां ति वञ्चनि	६२११

## ओ

ओकच्छिय-वेकच्छिय	१३६६
ओगासे संयारो	३८६
ओगाहगुग आसतगुगाग	५१
ओदइयादीयागुं	३१४१
ओदगु-नोरसमादी	२४६३
ओदगु भीसे गिम्मीसुवक्कडे	४६३८
ओदरिए पत्ययणा	५६६७
ओधोवधी जिगुगुं	१३८६
ओधदपीडफलयं	५७६८
ओनामिओ मि	१५६४
ओनावगा पवयणे	१०८५
ओनासगा य पुच्छा	५८६४
ओनासिय पडिदिदो	४४४८
ओमम्मि तोसनीए	८६२३
ओमं ति-भागमदं	२६६१
ओमंय पाणमादी	५८६५
ओमाणुस्य व दोसा	१६८४
ओमादिकारुणेहि व	५५१६
ओमे एसगु नोही	५७०६
ओमे तिभागमदं	४२३
"	३६६५
ओमे वि गम्ममाणे	१७६
ओमे संगमथेरा	४३६३
ओमोयरियागमणे	५७०७
ओमोयरिया य जाहि	४७६७
ओधम्मूतो खेत	४८१८
ओरोहधरियगाग	५७०८
ओल्लगगुमगुवयगुं	१४५६
ओल्लविज्जु ममपाइत्तं	३८०४
ओलोमम्मि चिनिमिनी	६१६३
ओवट्टिया पदोसं	४३८५

ओवानादिसु मेहो	४००
ओवाने संयारे	१०१५
"	१०१७
ओमक्कगु अहिमक्कगु	१००६
ओसट्टे उज्झिय-अम्मिए	२४६४
ओसवगुं अधिकरणे	२११६
ओसण्णमनक्कगुसंयुयाओ	४२६७
ओसण्णाअरिमोणा	४६५६
ओसण्णे दट्टुगुं	३०८
ओसण्णो वि विहारे	५४३६
ओह अभिगह दागुं	२०७०
ओहगिगुमाहं पुग	६६६७
ओहागुं ता अज्जो	३६७८
ओहागानिसुहीगुं	१७०४
ओहातिय-कालगतं	२७५१
ओहादीया नागिणि	२५७२
ओहाग्मगतदीया	४२२३
ओहावता डुविहा	४५७८
ओहावित्त-उस्सण्णे	५५६२
ओहावित्त ओमण्णे	२७५५
ओहावित्त-कालगतं	५५८६
ओहिमगा उवउज्झिय	३५६०
ओहीमानी गानुं	२५८३
ओहि उवगहम्मि य	१३८७
ओहि एगदिवनिया	६३१५
ओहि वत्त अवत्तं	५५२८
ओहि मुच्चगिमेहो	५२०२
ओहिगु उ सट्टागुं	६६८१
ओहिगु विभागोरा य	२०१७

## क

कक्कत्तयक्कवंगच्छिताइसुं	४६३०
कच्छादी ठागा खलु	४१२७
कज्जकारुगुसंवंधो	६६७
कज्जमकज्ज जताज्जत	६६५४
कज्जविवात्ति दट्टुगु	६२०५
कज्ज गागादीयं	५२४६
"	५३७२

६०७६

३७२६

५४८६

५६३३

६६०

१०६०

६६५

३७०८

५४१६

३११८

२५५५

१०६७

७५४



कज्जे भत्तपरिण्णा	२७६८		कमढगमादी लहुगो	२४०
"	६३७३		कमरेणु अवहुमाणो	५७८३
कट्टकम्मादि ठाणा	४१३६		कम्मचउक्कं दव्वे	५००
कट्टेण किलिचेण व	१८७५		कम्मपसंगऽणवत्था	२०६४
कट्टेण व सुत्तेण व	४६१६	१०५६	कम्मपसत्थपसत्थे	४१२०
कट्टे पोत्ते चित्ते	५११८		कम्ममसंखेज्जभवं	३६०२
"	५१५४	२४६६	"	३६०३
कडग्रो व चिलिमिली वा	२२२	३४५१	,	३६०४
"	५३६६	३४५१	"	३६०५
कडगाई आभरणा	२२६५		कम्मस्स भोयणस्स य	४४०
कडगादी आभरणा	५६१४		कम्मं कीतं पामिच्चियं च	५४१७
कडजोगि एक्कगो वा	१६६३	२६६७	कम्मादीणं करणं	६६८२
कडजोगि सीहपरिसा	३४४३	२८६६	कम्मे आदेसदुगं	४६४७
कडिपट्टे य छिहली	३६१०	५१७७	कम्मे सिप्पे विज्जा	३७१२
कडिपट्टग्रो अभिणवे	३६११	५१७८	"	३७१३
कणगा हणंति कालं	६१४७		कयकरणा इतरे या	६६४६
कण्णतेपुरमोलोअणोण	४८५१	६६१	कयम्मि मोहमेसज्जे	३८०६
कण्णं सोधिस्सामि	६८३		कयमुह अकयमुहे वा	४६६८
कतकज्जे तु मा होज्जा	६२७		कयवर-रेणुच्चारं	२३१८
कतगेण सभावेण व	१३३०	५५७	करहुयभत्तमलदं	४४४२
कतजत्तगहियमोल्लं	३७२१		करणे भंए य संका	४७३
कतरं दिसं गमिस्ससि	३१४	६०८५	कर पाद डंडमादिहि	४७६०
कत्तरि पयोयणापेक्ख	४४१६		कर-मत्ते संजोगो	१४६
कत्तो ति पल्लिगादी	३४४७		कलमत्तातो अद्दामल	१५८
कत्थइ देसग्गहणं	५२३६	३३२१	कलमादद्दामलगा	१५६
कत्थति देसग्गहणं	५३६२	३३२१	"	१८६
कप्पट्टु खेल्लण	१३०३	४६०२	कलमेत्त एवर्णि रोम्मं	४०३५
कप्पट्टु दिट्ठ लहुग्रो	४७२६		कलमोदणा वि भणिते	३८५३
कप्पट्टिग्रो अहं ते	२८७६		कलमोदणो य पयसा	३८५४
"	६५६४		कलमोयणो य खीरं	३०२५
कप्पडियादीहि समं	३४५८		कवडगमादी तंवे	३०७०
कप्पति ताहे गारत्थिएण	८०३		कव्वाल उड्डमादी	३७२०
कप्पति तु गिलाणट्ठा	५६४४	३०५०	कसाय-विकहा-वियडे	१०४
कप्पति समेसु तह	४०६६		कसिएत्तमोसहीणं	१५८३
कप्प-पकप्पा तु सुते	६३६५		कसिएणं पि गेण्हमाणो	६३६
कप्पम्मि अकप्पम्मि अ	४८६६	१००५	कसिएण ए ख्वणाए	६४६४
कप्पा आतपमाणा	५७६४	३६६६	कसिएण ख्वणा पढमे	६४१८
कप्पासियस्स असत्ती	७६३	३६६८	"	६४१६
			कसिएणऽविहिभिण्णम्मि य	४६१५

कसिणो चतुर्विधम्मी	६७२		कामं आउयवज्जा	३३२३	
कसिणा कसिणा एता	६४६६		कामं उदुविवरीता	२०५८	
कस्स घरं पुच्छिऊणं	४४४६		कामं कम्मणिमित्तं	५१५	
कस्स त्ति पुच्छियम्मी	५०२४		कामं कम्मं पि सो कप्पो	५६६०	३१००
कस्स त्ति पुरेकम्मं	४०६४	१८२१	कामं खलु अणुगुणो	४८५६	६६६
कस्सेते तरणफलगा	१२६०	२०३८	कामं खलु अलसदो	३५०४	
कस्सेयंति य पुच्छा	१७८८		कामं खलु चेतणं	५६७४	
कस्सेयं पच्छित्तं	४७६५	६३६	कामं खलु धम्मकहा	४३५४	
कहिता खलु आगारा	२३४१		कामं खलु परकरणे	१६२३	
कहितो तेसि धम्मो	५७५३	३२८४	कामं खलु पुरसदो	४०६२	१८१६
कंचरणपुर इह सण्णा	३८४६		कामं खलु सव्वणू	४८२२	६६३
कंजियआयामासति	२००		कामं जिणपच्चक्खो	५४३४	
कंजिय चाउलउदए	३०५६	१६५८	कामं जिणपुव्वघरा	६६७४	
कंटगमादी दव्वे	६२६३		कामं तु सव्वकालं	३१७७	
कंटगमादीसु जहा	१८८३	५५६६	कामं देहावयवा	६१७२	
कंटड्ढि खारु विज्जल	४७३६	८८१	कामं पमादमूलो	६६६०	
कंटड्ढि मच्छि विच्छुग	४१७		कामं पातधिकारो	४५२२	
कंटड्ढिमातिएहि	४७४१	८८३	कामं ममेत्तं कज्जं	६४०६	
कंटाइ-साहणट्ठा	२६५३		कामं विभूसा खलु लोभ-दोमो	५८१८	३६६५
कंटादी पेहंतो	६२६	३८५८	कामं विसमा वत्थू	६४०४	
कंटाइहिसीतरक्खट्ठा	६३१	३८६३	कामं सत्तविकप्पं	३३१५	
कंटादि लोअ णिसिरण	१८०७		कामं सभावसिद्धं	३१	
कंहुसग-वंधेणं	२१७५		कामं सव्वपदेसु	३६४	४६४४
कंतार-णिग्गताणं	२५२८		कामं सुओवओगो	६०६७	
कंदप्पा-परवत्थं	३१८		कामी सघरंजणओ	४६८७	
कंदादि अमुं जंते	५६६८	३११३	कामी सघरंजणतो	४६६५	
काइयभूमी संथारए य	३१५६		कयकरणा इतरे या	६६४६	
काउस्सगमकातुं	१५६६		कायल्लीणं कातुं	२८५	
काउं सयं ण कप्पति	८३६		कायं परिच्चयंतो	४७६१	६३१
काऊण अकाऊण व	२८५६	५५८६	कायाण वि उवओगो	३६५	
काऊण मासकप्पं	२०३८	१६८७	काया वया य तच्चिय	३३०८	४६७६
"	३१४५		कायी सुहवीसत्या	१६७१	
"	३१५६	४२=६	कायेहइविसुद्धपहा	१४७६	
काएण व वायाए	२२५८		कारण अणुणं विहिणा	५८१५	३६६२
काओवचिओ वलवं	३६१०		कारण एग मड्वे	२४१०	
काकणिवारणे लहुओ	३८४		कारणओ सगामे	६०४२	
काणंछि रोमहरिसो	२३३६		कारणगहणे जयणा	६०५३	
काणंछिमाइएहि	५१४५	२४६५	कारणगहिउव्वरियं	३३६६	२८५१
कातूणं य पणामं	५५२६				

सभाष्यचूणि निशीथसूत्र

कारणजाए अवहडो	२७०६	५०८४	कालो समयादीयो	३१४३
कारणतो अविधीए	१६६८	३७२०	कालो संभा य तथा	६१३२
कारणपडिसेवा वि य	४५६		कावालि एंथ भिक्खु	५०७७
कारणमकारणं वा	६६५३		कावालि ए सरक्खे	३६२२
कारणमकारणो वा	२०८७		कासातिमातिजं पुव्वकाले	५०१३
"	३५०६		काहीगा तरुणोसुं	५२२५
कारणमगुण्ण-विधिणा	२०८६	३६६२	काहीता तरुणीसुं	५२१६
कारणलिगे उड्ढोरगत्तरा	४६६७		"	५२२४
कारणगुणपालगणं	३२६८		काहीया तरुणोसुं	५२१५
कारणए वि य दुविधे	१०६१		किड्ड तुयट्ट अणाचार	१३११
कारणो उड्डुगहिते	३१७१		कितिकम्मं च पडिच्छति	२८८४
कारणो विलग्गियव्वं	६००६		कितिकम्मं तु पडिच्छति	६५६६
कारणो सपाहुडि-ठित्ता	१३४३	५६६	कितिकम्मस्स य करणो	२०७२
कारणो हिसित मा	४६३६		किमणाऽऽभव्वं गिण्हसि	२७७५
कारावणमभियोगो	५८६		किरियातीयं णातुं	१७५६
कालगं सव्वद्धा	५४		किवणोसु दुव्वलेसु य	४४२४
कालगतम्मि सहाये	४५६२		किह उप्पण्णो गिलाणो	३००५
कालचउक्कं उक्कोसएण	६१५२		किह भिक्खु जयमाणो	६३०४
कालचउक्के णारत्तणं	६१४५		किह भूतागुवघातो	६२६
कालदुगातीतादीणि	१०१४		कि आगतऽस्थ ते विति	३३८०
कालसभावाणुमतो	३८८८		कि उवघातो धोए	४१०७
कालातिक्कमदारो	१६७५	३६६६	कि उवघातो हत्थे	४१०५
कालादीते काले	३८७		कि कारण चंकमणं	३८२०
कालियपुव्वगते वा	५५२३	५४२५	कि कारणं चमढणा	१६३२
कालियसुयं च इसिभासियाणि	६१८८		कि काहामि वराओ	२६८३
कालुट्ठाई कालनिवेसी	५६७४	३०८३	कि काहिं ति ममेते	१७४१
कालुट्ठादीमादिसु	५६६२	३१०२	कि काहिति मे वेज्जो	३०७६
कालेण अपत्ताणं	३२३७	४२६२	कि गीयत्थो केवलि	४८२०
कालेणं पुण कप्पति	५६७३		कि च मए अट्ठो भे ?	१७८६
कालेणोवतिणं	३२३५	४२६०	कि दमओ हं भंते	५०३४
काले अपहुप्पते	२३६७	४८०५	कि पत्तो णो भुत्तं	३८६०
काले उ अणुण्णाते	४१६०	५२८२	कि पुण अणगारसहायएण	३६१३
काले उ सुयमाणे	२६४३		कि पुण जगजीवसुहावहेण	५६४२
काले गिलाणवावड	२६५४		कि पेच्छह ? सारिच्छं	१६८८
काले तिपोरिसट्ठ व	६१०१		कि मण्णे णिसिगमणं	५६३८
काले वा पेच्छामो	१२६०		कि वच्चसि वासंते	३०२
काले विणये बहुमाने	८		कि वा कहेज्ज द्वारा	४४८२
काले सिहि-णंदिकरे	२२६३		किचण अट्ठा एएहि	२४७२
कालो दव्वऽवत्तरती	१०१२			

कीयकदं पि य दुविहं	४४७५	केवल-मगोहि-चोदम	५४२४	
कीय किग्गाविय अगुमोदिनं	४४७४	केवलवज्जेनु तु अनिमगु	५६६२	
"	६०३०	केवलविष्णो अत्ये	४८२६	६६६
कीवस्स गोण्णगुगामं	३५८८	केसव-अद्वलं पयगुवेति	१४१	५०२३
कीवे दृष्टे तेणे	३७४२	केसि चि अभिगहिता	१६४७	१६०६
कीम गु गाहिहं तुमे	५०२५	केसि चि एवं वानी	३५४६	
कुच्छगुदोमा उल्लेगु	८५०	केसि चि होतज्जा	६०६०	
कुच्छित्तल्लिग कुत्तिगी	६६	को आउरस्स कानो	१०	
कुज्जा व पच्छकम्मं	४६५०	कोई नत्य मगोज्जा	३०४७	४२७२
कुज्जा वा अभियानं	४०२८	कोउग-भूतीकम्मं	४२८७	
कुट्टिस्स मक्करादीहि	६३३	कोउय-भूतीकम्मं	४३४५	
कुट्टित्तिया असती	१७२८	कोउहलं च गमगं	५६३	
कुत्तित्त-कुम्भेसु	३३५३	को गण्ढति गीयत्यो	५८५४	४०२६
कुत्तीय-सिदाणिपहग	५८५८	को जागुति केम्मिओ	५१०३	२४५५
कुलमादिकज्ज दंडिय	६३४	कोट्टगमादिमु रत्ने	४७३२	८७२
कुलवंमम्मि पहांगे	२२४२	कोट्टागारा य तहा	२५३४	
"	२३५१	कोट्टिय अण्णे उदिट्ट	४०४७	
कुलसंभवो तु तैमि	१०६६	कोट्टियमादीणसुं	५६५४	
कुत्तियं तु हांड कुडं	४२७३	कोण्यमादी भेदो	५०८	
कुत्तियादि ठाणा वल्लु	४२७२	कोण्णामेकमणेगा	१२०८	
कुवण्य पत्थर नेट्ट	४७७४	को दोसो को दोमो	३४१६	२८७१
कुममादि अभुत्तिराइ-	१२२६	को दोमो दोहि भिण्णे	४८४६	६८६
कुम्भविभागमरिसओ	६४०६	कोद्वपणालमादी	४७११	८४२
कुचित्त मल्ले मालागारे	६३६६	कोवम्मि पिता पुत्ता	२६२	
कुंभार-नोहकारेहि	४०१५	को पोत्तिणी काले	५८२३	४८८०
कृयति अदिज्जमाणे	३८४३	को भने परियाओ	२८७०	
कृयरदंसमसोमनीता	५६३६	"	६५८४	
कुरो गासेइ च्चुधं	३७८६	कोमुनि गुत्ता य पवरा	२२६४	
केइत्थ भुत्तभाई	५१०४	कोयी मज्जगुगविही	३०३७	१६३
केइत्थ भुत्तभांगी	२५४७	कोला उ पुणा तेमि	४२६०	
केई परिमहोहि	३६२३	कोलानियावणा वल्लु	५३६०	३४८५
केई पुच्चणिमिद्धा	६३४४	कोल्लतिरे वत्थव्वो	४३६२	
केग पुगु कारणेगं	६४२५	कोल्लपरंपरसंकलिया	१३४६	५७५
केगुवममिओ सुद्धो	८८०	को वा तहा समत्यो	५४२७	
केयि अहामवेगुं	१४५०	को वोच्छित्ति गेलण्णे	३०६५	१६६४
केनामभवणे एत्ते	४४२७	कोसग गह्वरक्खट्टा	३४३३	२८८५
केवडय ग्राम-हत्थी	२३६६	कोसंवाज्जहारका	५७४४	३२७५
केवल मगण्णज्जवणाणिगो	६४६७			

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

कोसाऽहि-सल्ल-कंटग	३४३७	खाणू कंटग-विसमे	५८३०
कोहा गोणादीणं	३२८	खामित विजसविताइं	१८१८
कोहा बलवागव्भं	४४०८	खित्तम्मि खेत्तियेस्सा	५४८६
कोहाई परिणामा	४२६५	खिप्पं मरेज्ज मारेज्ज	४२८६
कोहातिसमभिभूओ	३५६	खिवणो वि अपावंतो	४७७५
कोहादी मच्छरता	३५५	खिसा खलु ओमम्मो	२६३८
कोहेण ए एस पिया	२६३	खीर-दधिमादीहिं	२२८३
कोहेण व माणेण व	३४०	खीर-दहीमादीण य	४१८१
"	३१६	खीर-दुम-हेट्ट पंथे	१५१
कोहो बलवा-गव्भं	२६६६	खीराहारो रोवति	४३७७
ख		खीरुण्होद विलेवी	२३१
		खीरोदणो य दब्बे	३८५२
खगूडेण उवहते	४५८१	खुज्जाई ठाणा खलु	२६०४
खणमारो कायवधो	६२४	खुड्डग ! जणणी ते मता	३०७
खत्तियमादी ठाणा	२५६७	खुड्डागसमोसरणेषु	४५७५
खद्धादाणि य गेहे	३१८६	खुड्डी थेराणप्पे	१६८४
खमओसि आममोणं	६२५४	खेतस्स उ पडिलेहा	२४५१
खमणं मोहतिगिच्छा	३३६८	२८५०	खेतवहिता व आणे
खमणेण खामियं वा	३६६०	खेतमहायणजोगं	३००१
खमणो वेयावच्चे	२७	खेत्तं गतो य अडवि	८५६
खय उवसम मीसं पि य	५४३०	खेत्तं जं बालादी	३४६६
खरए खरिया सुण्हा	४०५०	४५५७	खेत्तंतो खेतवहिया
खर-फस्स-णिट्ठरं णो	२६१४	५७५०	खेत्तंतो णिवेसणादी
खर-फस्स-णिट्ठुराईं	२८१७	५७५०	खेत्ता जोयण-बुड्डी
खरट्ठणभीओ रुट्ठो	६६२५	२५२८	खेत्तारक्खिनिवेयण
खरिया महिड्डिगणिया	५१७८	२५२८	खेत्तोऽयं कालोऽयं
खलुगे एवको-वंधो	६३८	४८१७	खेत्तोवसंपयाए
खल्लाडगम्मि खड्डगा	६४१३	५५०५	खेल-पवात-णिवाते
खंडे पत्ते तह दब्भ	१६८२	२६८६	१२७३
खंतादिसिद्धंते	१३६५	४६२६	४०४०
खंतिखमं मद्दवियं	३१०५	४६२६	६२६५
खंते व भूणते वा	१३६२	४६२६	ग
खंधकरणी चउहत्थ वित्थरा	१४०७	४०६१	गग्गरग दंडिवलित्तग
खंधादी ठाणा खलु	४२७५	४०६१	गच्छग्गहणो गच्छो
खंधारभया णासति	१३३२	५५६	गच्छपरिरक्खणाट्ठा
खंधाराती णातुं	१३५३	५७६	गच्छम्मि एस कप्पो
खंधे दुवार संजति	१५२५	६३७३	गच्छम्मि य पट्टवित्ते
खंधो खलु पायारो	४२७६	६३७३	गच्छसि ए ताव कालो
खाणुगमादी मूलं	३१०	६३७३	गच्छसि ए ताव गच्छं

गच्छन्ती तु दिवसतो	१६४		गह्वं तु अथाकडाए	३८४	
गच्छा अगिगयस्मा	२३६६	४३६२	गह्वंमि निष्टिऊणं	६३३	
गच्छागुक्कंपगुद्धा	४४३		गह्वार्दिया दोला	२४३४	
गच्छुत्तरसंवग्गे	६४४०		गह्वो पक्खेवंमि य	१६०	
गच्छे अप्याणंमि य	४३१		गह्वे व अगह्वे वा	३२=६	४२६१
गच्छे व करोडादी	३२=३		गह्विम्मि अदरत्तं	६१४४	
गच्छो महागुयागो	१६२६		गह्विं च तेहि उदगं	४२३=	३४२३
गच्छो-य दोग्गु मामे	२=०२	४३६=	गह्विं उ पगाममुहे	४४४३	
गग्गुच्चनगस्स एत्तो	४०११	३६=	गह्विं व अगह्विं वा	३३२४	
गग्गुणाण पमागोणु य	२१६४		गह्विंहेहि दोहि गुरुणा	४४४=	
"	४३=४		गंगार्ता मक्कमया	३३४४	
गग्गुणांते पमागोणु व	४=२४	४००२	गंठीछेदगह्वियजगुदव्वहारी	३६४४	
गग्गुनत्तं ममदाओ	२४३६		गंडवांसित्तं बहुगुहि	६१३०	
गग्गि अयसिण मयय	२६३४	४=३१	गंडं च अरत्तिंयंसि	१४०४	
गग्गिमिस्सरिस्सो उ वेरो	४३३६	२४११	गंडादिएसु किमिण	१४१०	
गग्गि एमिग्गे परगणे	३=१४		गंडो कच्छवि मुट्ठी	४०००	३=२२
गग्गि एमिग्गिम्म उदहो	३=१६		गंडो-कोट-न्यादी	४=८६	१०२४
गग्गि-वसम-नीय-	४=६२	१०३०	गंतव्वदेसगणी	४६४६	३०६३
गग्गिवायने दहुमुते	२६१=	६०६०	गंतव्वत्तं न कालो	=४४	
गग्गिसद्धमाडमदिनो	६१३६		गंतव्वोमह-गडिलेह	=४६	
गग्गि ठाण मम्ममात्रे	६२०२		गंतुं विज्जामंतण	४४४=	
गग्गि-माम-अंग-कडि-मट्ठि	३४६६		गंतुण पडिनिदत्ते	४०६३	१=४०
गग्गो महे पच्चवयोडयं च	३४६=	४१४४	गंतुण परविदेसं	२२३=	
गग्गे कीते अग्गु	३६३६		गंवव्वगुद्धाउज्जस्स	३=३४	
गग्गुवादि अगडिनेडा	२४२२		गंवव्व दिमा विज्जुग	६०=	
गग्गुवादि गंतु-मुम्मुर	०३२		गंववारिगिरी देवय	३१=४	
गग्गुवादी म्ममच्चव्वं	४३०६		गंभीरविस्सदुद्धमवुरगाह्मो	४३६	२६०१
गग्गुो डो हुनगनी	४६६६	३०३८	गंभीरे तससाग्गु	४०२३	
गग्गो-विस्सदुद्धमवुरगाह्मो	४३६		गादय दुग्गुगदुग्गु	१४०	३४६६
गग्गि काग्गुवाते	१६६६	३३२१	"	१३६	"
गग्ग-कडि-माममादी	१=०४		"	२१४	
गग्गिग्ग गग्गि अग्गोय	२६०४		"	४३=४	३४४०
गग्गिग्ग कीहे विमग्गु	३११०		"	४३=३	"
गग्गेण ते उद्दिग्ग	४६२=		गाहुनं गृह्णकरं	२६०=	
गग्गो गिग्गमद्वत्ता	६२४	३=४६	गामपद्दादी ठाग्ग	४१३१	
गग्गो गग्गम भोयण	४१३		गाममामे वडणी	४१३६	४२६=
गग्गं च इत्ताग्गं	१०४३		गाममहादी ठाग्ग	४१२६	
गग्गं च संवत्त	३४=१		गामवहादी ठाग्ग	४१३०	

सभाष्यचूर्ण निशीथसूत्र

गामाइ-सण्णवेसा	२००४		गीयत्थग्गहरोणं	४०७०
गामाण दोण्ह वेरं	४४०१		"	४१०८
गामादी ठाणा खलु	४१२८		गीयत्थदुल्लभं खलु	३८३२
गामेय कुच्छियमकुच्छित्ते	५३१७	२३६१	गीयत्थमगीयत्थं	३६२४
गारवकारणखेत्ताइणो	५६८३		गीयत्थविहारातो	५५५६
गावी उट्ठी महिसी	१०३४		गीयत्थस्स वि एवं	५२८३
गावी पीता वासी	६५१४		गीयत्थे आणयणं	३०३५
गाह गिहं तस्स पती	१०८२		गीयत्थे ण मेलिज्जति	५५६३
गाहेइ जलाओ थलं	६०१०		गीयत्थेण सयं वा	४८८४
गिण्हति णिसीतित्तुं वा	५६६८		गीयत्थेसु वि भयणा	४०६०
गिण्हंते चिट्ठंते	३६६७		गीयत्थो जत्तणाए	३६६
गिण्हामो अतिरेगं	४५५५		गीयमगीओ गीओ	२८७१
गिम्हातिकालपाणग	२४१३		"	६५८५
गिम्हासु चउ पडला	५७६८	३६७५	गीयमगीतागीते	५५६०
गिम्हासु तिण्णि पडला	५७६७	३६७४	गीयाण व मीसाण व	५५६१
गिम्हासु पंच पडला	५७६६	३६७६	गुज्झंग-वयण-कक्खोरु	१७५३
गिरिजण्णगमादीसु य	३४०३	२८५५	गुणनिप्फत्ती बहुगी य	४५३८
गिरिजत्तपट्ठियाणं	२५६५		गुणपरिवुद्धिणिमित्तं	१०२४
गिरिजत्ता गयगहणी	२५६६		गुणसयसहस्सकलियं	५४३८
गिरिणदि पुण्णा वाला	४२३६	५६४६	गुणसंथरेण पच्छा	१०४८
गिरिपडणादी मरणा	३८०१		गुणसंथवेण पुब्बि	१०४६
गिह वच्चं पेस्ता	१५३५		गुत्ता गुत्तदुवारा	२४५७
गिहि अण्णतित्थि	३२१६		गुत्तो पुण जो साधू	३६
गिहि-अण्णतित्थिएहि व	५७७१		गुरुओ चउलहु चउगुरु	२७०४
गिहि-अण्णतित्थियाण व	४११२		गुरु गरिणिपादमूलं	२४१४
"	४२८८		गुरु पाउणाए दुवल	५८३२
"	४३०८		गुरुवच्चइया आसायणा	२६४४
गिहिअण्णतित्थियाणं	६२६१		गुरुसज्झिलए सज्झंतिए	५५१८
गिहि-कुल-पाणागारे	६०४७		गुरुगा आणालोवे	५७१०
गिहिणं मूलगुरोसु	३३०५		गुरुगा उ समोसरणे	३३५
गिहिणात पितीय लिंगे	४४७		गुरुगा पुण कोड्डुवे	४७५२
गिहिणिक्खमणपवेसे	४३६२		गुरुगा य गुरु-गिलाणे	५८३३
गिहिणोऽवरज्झमारो	३८३		गुरुगो जावज्जीवं	२६८६
गिहिमत्ते जो उ गमो	४०४६		गुरुणो वं अण्णणो वा	३६०७
गिहिसहितो वा संका	२४७७		गुब्बिणि वालवच्छा य	३५०८
गिहिसंजयअहिकरणे	६३२८		गूढसिरागं पत्तं	४८२७
गीओ विकोवितो खलु	६५२५		गेण्हण कट्ठणववहारो	४५२०
गीताणि य पढिताणि अ	५३५		गेण्हणे गुरुगा छम्मासा	३३७५
गीयत्थग्गहरोणं	३४५५	१८२७	गेण्हणे गुरुगा छम्मास	४७६२

गेण्हणे गुरुणा छम्मास	५१५०	"	गोवालवच्छवाला	३२७०	४३०१
गेण्हह वीसं पाते	४५५०		घ		
गेण्हंति वारणं	१२०४		घणकुड्डा सकवाडा	२४५५	२०५६
गेण्हंतेसु य दोसु वि	५२६६	३३७८	घण-मसिणं निरुवहतं	६४६	३८८२
गेरुय वणिणय सेडिय	१८४६		घणं मूले थिरं मज्जे	५८००	३६७७
गेलणतुल्ल गुरुणा	६३७१		घट्टण-रेणुविणासो	२६४६	
गेलणज्झाणो मे	४६२१	१०५८	घट्टितसंठविताए	७१५	
गेलणमरणमाती	४७७७		"	७२३	
गेलणमुत्तमट्टे	१५४७		घट्टितसंठविते वा	६६६	
गेलण रायदुट्टे	१४४५		"	७०५	
"	१५६६		घट्टे उं सच्चित्तं	५४७५	५३८०
"	१५७४		घट्टितसंठविताणं	६७६	
"	१५८१		घत्तसत्तूदिट्ठं तो	४५१५	
"	१८५६		घयकुडवो य जिणस्सा	६५०३	
"	१८६३		घरघूमोसहकज्जे	७६८	
गेलण-रोह-असिवे	२३६१	४७६६	घरसंताणग-पणगे	१४३६	
गेलण वास सहिता	१६५१		घंसणे हत्थुवघातो	४६३६	
गेलण वास महिया	१६५६		"	४६४४	
गेलण सुत्त जोण	४६८६		वेत्तुं समयसमत्यो	३७२६	
गेलणं पि य दुविहं	४८८७	१०२५	वेत्तूणज्जारलिंगं	४५६५	
गेलणं मे कीरति	५६३१		वेत्तूण णिसि पलायण	२६६३	५८५८
गेलणमरणगाढे	१६०४		वेत्तूण दोण्णि वि दवे	११०५	
गोच्छयपादद्वरणं	५८०६		वेत्तूण भोयणदुगं	१११४	
गोणादि कालभूमी	६१४०		वेत्तूण य आगमणं	४६०१	
गोणादी व अभिहणे	४१६		वेप्पंति च-सहेणं	६४६८	
गोणादीवाघाते	२३७०	४८०८	घोडेहि व भुत्तेहि व	१७१३	३७३५
गोणे य माणमादी	५२७३	३३५२	च		
"	५३८६		चउकण्णम्मि रहस्से	३६६१	
"	४६५१		चउगुरुग छच्च लहु	६६५	३८६८
गोविन्दज्जो गाणे	३६५६		चउ गुरुग छच्च लहु गुरु	२२१०	२४७८
गोमंडलघन्नादी	४८०२	६४३	"	५१२८	"
गोमियगहणं अण्णे	६७१		चउ गुरुगं मासो या	६६४०	
गोयरमगोयरे वा	४०४८		चउगुरुगा छगुरुगा	२२१४	२५२१
गोयरमचित्तभोयण	३७४६		चउगुरु चउलहु सुद्धो	६६३६	
गोरज्जमावियपोत्ते	३४४०	२८६२	चउत्थपदं तु विदिणं	५२०	२५८६
गोवय उच्छेत्तं भनि	४५०२		चउपादा तेइच्छा	३०३६	१६३७
गोवाडनूणं वग्धि	११४३	३५२३	उफल पोत्ति सीसे	१५२७	
गोवालण य भत्तण	४५०१				



सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

चउभंगो गहणपक्खेवए	४८४१	६८१	चत्तारि अहाकडए	७६६
चउभंगो दाणगहणे	२१४३		"	५८५६
चउभंगो रातिभोयणे	३३६७		चत्तारि उ उक्कोसा	५७८६
चउभागवसेसाए	१४२६		चत्तारि छच्च लहु गुरु	६६१
चउभागसेसाए	१८५८		"	२२०६
चउमूल पंचमूला	५२८६	३४२६	"	३०६६
चउरंगवग्गुरापरिवुद्धो	४००५	३८२८	"	५१२७
चउरंगुलं वितत्थी	५८०५	३६८२	चत्तारि य उग्घाया	५१२०
चउरो मरुग विदेसं	४८७४		"	५१२२
चउरो य जुं गिया खलु	३७०७		"	५१८२
चउरो लहुगा गुरुगा	३०६३	१६६१	चत्तारि विचित्ताइ	३८२४
"	३०६५	"	चत्तारि समोसरणे	३२३६
"	३०६७	"	चम्मकरग सत्थादी	५६५०
"	५१८४	२५३८	चम्मतिगं पट्टुगं	१४१५
"	३१२०	१६६१	चम्मम्मि सलोमम्मी	३६६६
चउ लहुगा चउ गुरुगा	२२१६		चम्मादि लोहगहणं	३४३०
चउलहुगादी मूलं	६०६		चरगादिणियट्टे सुं	१०८३
"	२२०३		चरण-करण-परिहीणे	५५६६
चउवग्गो वि हु अच्छउ	४६३५	१०७२	चरितट्ठ देस दुविहा	५५३६
चउसट्ठीपगारेणं	१०३६		चरित्तम्मि असंतम्मि	६६७६
चउसु कसातेसु गती	३१६२		चरिमे वि होइ जयणा	२०४२
चउहा णिसीहकप्पो	६६६६		चरिमो परिणत कड-	८६
चक्कागं भज्जमाणस्स	४८२८	६६८	चरुगं करेमि इहरा	३४६०
चक्की वीसतिभागं	२३५५		चंकमणमावडणे	१५१६
चहुग सराव कंसिय	३०६०	१६५६	चंकमणं णिल्लेवण	५३२१
चतुगुरुगा छगुरुगा	५१७१	२५२१	चंकमणादी उट्टण	६३३१
चतुगुरुगादी छेदो	२२०४		चंकम्मियं ठियं जंपियं	५३३
चतुपाया तेइच्छां	३०७५	१६७४	चंदगुत्तपपुत्तो य	५७४५
चतुभंगे चतुगुरुगा	१६३७		चंदिमसूखरागे	६०६१
चतुरंगुलप्पमाणं	१६३२		चंदुज्जोए को दोसो	३४०६
चतुरंगुलप्पमाणा	१५६		चंपा अणंगसेणो	३१८२
चतुरेते करणेणं	१८१२		चंपा महुरा वाणारसी	२५६०
चतुरो य दिव्विया भागा	५०८८	२८३३	चाउम्मासातीतं	१०१६
चतुसुं महामहेसुं	६०६४		चाउम्मासुक्कोसे	६५५
चत्तकलहो वि ण पढति	२७६०		"	१४३४
चत्ताए वीस पणतीस	६४७६		"	४०७३
चत्तारि अघाकडए	७५७	४०३१	"	५००५
"	८४२		चाउल उण्होदग तुवर	५८६२

चाणक्यपुच्छ इट्टालचुण्ण	४४६५		चोयं तु होति हीरो	५४१२	
चार भड घोड मंठा	२४६१	२०६६	चोरभया गावीओ	२६५	
चारिय-चोराभिमरा	२५११	६३६५	चोरो त्ति कट्टुं दुव्वोहिओ	५२७१	३३५०
चारिय-चोराहिमरा	१३०				
चारे वेरज्जे वा	३४६८				
चिक्खल वास अग्निवातिएसु	३२६१	४२६१	छक्काए गु सट्ठति	३६७१	
चिट्ठगुणिसिय तुयट्ठे	५३२५	२३६६	छक्काय-अगढ विममे	३६८२	
चित्तो वडगादी	५४६०		छक्काय-गहण-कट्टुग	३३६६	२७७०
चित्तं जीवो भगितो	४२५६		छक्काय चउसु लहुगा	५३४१	२७७१
चित्तं य विचित्तं य	२००१		"	११७	४६१
चिवेहि आगमेत्तुं	१३३७	५६३	"	३३७०	"
चीयत्त कक्कडी कोर	४६१४	१०५१	"	४७३७	२७७१
चुण्णन्नउरादि दाउं	५४१८		छक्कायविराहणता	३६७४	
चुल्लुक्कलियं डोए	८०८		छक्कायसमारंभो	३६४८	
चेइय-सावग पक्वति	२५७८		छक्कायाण विरावण	६११	
चेयणमचित्तदब्बे	६३६०		"	१६७४	३६६८
चेयणमचेयणं वा	३३४६		"	१८५७	
चोएति रागदोसे	२८३३	५७६१	"	१८६७	
चोदग एताएच्चिय	५८७६	४०५४	छक्कायाण विराहण	१८६२	
चोदग कण्णमुहेसु	४७०५	८५४	"	३१२५	२७३६
चोदग दुविधा असती	५८७६	४०५१	"	४३१०	
चोदग पुरिसा दुविहा	६५१८		"	५६४८	३०५६
चोदग मा गट्ठमत्ति	६४००		छच्च सया चोयाला	६४७१	
चोदग मागुसणिट्ठे	६१५८		छट्ठमादिण्हि	६६५२	
चोदग वयणं अण्णागुर्कपितो	४१८७	५३०६	छट्ठवत्त-विरावणता	१६४०	
चोदावेति गुरुग व	५५५६	५४५५	छट्ठाणविरहियं वा	२७४६	५४८७
चोदेति अजीवत्ते	४८४६	६८६	"	५५८७	"
चोदेति वरिज्जंते	४१५३	५२७५	छट्ठाणा जा गित्तिओ	२७५०	५४८८
चोदेति रागदोसे	६५५३		"	५५८८	"
चोदेति मे परिवारं	६२७०		छट्ठो य सत्तमो या	५८२	४६३५
चोदेता वगुकाए	४८३६	६७६	छट्ठणे काउट्ठाहो	१३२३	
चोदसगं पणुवीसा	५६०१	४०७६	छट्ठावण पंतावण	१५४२	
चोदसमे उट्ठे	६०२७		छट्ठावित्त-कत्तदंटे	४८५०	६६०
चोदस वानाणि तथा	५६११		छट्ठेकण जति गता	१३२५	
चोदस मोदस वाना	५६१८		छट्ठेति तो य दोगं	५६७८	
चोदा दो वानसया	५६१३		छगियाज्वसेणं	६०६८	
चोदग गुरुपडिनिट्ठे	५०६८	२८३	छण्ण-वह-गट्ठ-मरणे	६५८	
चोयग गिहयत्तं चिय	४८४३	६८३	छण्णे उट्ठो व कत्तो	१२६५	
चोयगपुच्छा गमणे	३०११	१६१४	छण्णेतरं च तहां	२२६१	

सभाष्यचूणि निशीथसूत्र

छहं एकं पातं	४५३०		छुभणं जले यलातो	४२१३
छत्तीसगुणसमणागएण	३८६२		छुहमारो पंचकिरिया	४७६६
छद्दोसायतरो पुरा	२५३३		छेदणपत्तच्छेज्जे	२५१
छप्पइयपणगरक्खा	७६६	३६६७	छेदरो भेदरो चेव	५०२
छप्पति दोसा जग्गण	२६५		छेदतिगं मूलतिगं	६५३६
छप्पुरिसा मज्झ पुरे	४७८५	६२६	छेदसुतरिणीसीहादी	५६४७
छब्भागकए हत्थे	५८६६	४०४४	छेदादी आरोवण	२६२१
छब्भागकरं काउं	४६६२		छेदो छग्गुरु अहवा	२२४१
छम्मासकरणजहुं	३६३५		छेदो छग्गुरु छल्लहु	३४६२
छम्मासा आयरिओ	३१०३	२००१	छेदो मूलं च तहा	२२१५
छम्मासादि वहंते	६६४६		"	२२१७
छम्मासियपारणए	४२६		"	५१७२
छम्मासे अपुरेतो	५४५३		"	५१८५
छम्मासे अपुरेत्ता	६२०७		छेयसुयमुत्तमसुयं	६१८४
छम्मासे आयरियो	३१००	१६६८		
छम्मासे उवसंपद	५४५२			
छल्लहुगादी चरिमं	२२०५		जइ अत्थि पयविहारो	३१५७
छल्लहुगा य णियत्ते	३०६	६०७७	जइ अंतो वाघातो	२४६३
छल्लहुगे ठाति थेरी	५३३५	२४१०	जइउमलाभे गहणं	१६३
छव्वाससयाइं नवुत्तराइं	५६१७		जइ उस्सग्गे ए कुराइ	२१०
छहि णिप्पज्जति सो ऊ	४८३७	६७७	जइ ताव पलंवाणं	४६१६
छहि दिवेसेहि गतेहि	६५४६		जइ ताव सावताकुल	३६१२
छंदणिरुत्तं सद्दं	४३५८		जइ दैत्तजाइया जा	१६७२
छंदं विधी विकप्पं	१२५		जइ पुरा आयरिणिहि	४५५३
छंदिय गहिय गुरूणं	३५८२	५१५८	जइ पुरा पुरिमं संघं	२६७०
छंदिय सइंगयारा व	३४०४	२८५६	जइ भणति लोइयं तु	१०३८
छंदो गम्मागंमं	१२६		जइ वि य ता पज्जत्ता	४४४७
छादेती अग्गुकुइए	१४०४	४०८८	जइ सव्वसो अभावो	३६७
छायस्स पिवासस्स व	५७१		जइ खग्गे महिसे	२०२
छारो तु अपुंजकडो	१५३६		"	३४७१
छिण्णमछिण्णा काले	२०३४	१६८३	जइडे महिसे चारी	१६३७
छिण्णमछिण्णे दुविहे	४५०६		जइडो जं वा तं वा	१६३८
छिण्णमछिण्णे व धरो	३७२२		जणपुरतो फासुएणं	५६३२
छिण्णं परिकम्मितं खलु	४०२६		जण रहिते वुज्जारो	५२६
छिण्णोण अछिण्णोण व	५६४६	३०५२	जणालावो परग्गामे	४१७६
छिण्णो दिट्ठमदिट्ठो	४५१०		जण सावगाण खिसण	४४७१
छिहली तु अगिच्छंतो	३६१२	५१७६	जणोव छिंदियव्वं	७६६
छिदंतमछिदंता	३५१३		जति अकसिणस्स गहणं	६४३
छुभण सिचण वोलण	४२१७		जति अगणिणा तु दड्ढा	१७११

जति अञ्जली तुमिगिओ	१८३१	जति रण्णो मज्जाए	५०३५	६३४	
जति उस्सगे गु कृणति	५३८२	जति रिक्को तो इवमतगम्मि	४१६१	५३१०	
जति एक्कमागुजिमिस्ता	५६४१	जति वा गिरतीचारा	५४२६		
जति एने एव दोसा	४५३५	जति वा वज्जति मातं	३३२६		
जति एयविष्णुहृणा	४१८४	५२८०	जति वि गु होज्ज अवाओ	६६८८	
जति एवं संसटुं	४१८६	५३०८	जति वि ग्गिबंधो मुत्ते	४८६१	१००१
जति कानगता गग्गिणी	१३०६	३७३१	जति वि य तुल्लजमवाणा	६६६१	
जति कुमलकण्डियातो	४८७२	१०११	जति वि य पिबोलगादी	३४१२	२८६४
जति गह्णा नति मात्ता	१८७		जति वि य फानुगदव्वं	३४११	२८६३
जति छिद्वा नति मात्ता	२३६		जति वि य विमोविकोडी	४४२	
जति जगति नुविहिता	११४८	३५२६	जति वि य समगुण्णाता	४६०	
जति जं पुरतो कीरति	४०६०	१८१७	जति मज्जे गीतया	१४६३	२६३७
जति जीविहिति जति वा	४५६६		जति मज्जे व य इत्थी	५२००	
जति गाम पुच्छ मुद्धे	४६७२		जति संसिद्धं ए कप्पति	३६७६	
जति गिक्खिक्खती दिक्खे	१६०३		जति सि कज्जसमती	१३६७	४६३१
जति ऐते एनुमाणा	५४८४	५३८६	जतिहिगुणा आरोवणा	६४८७	
जति ताव पिह्णमादी	४६४५	१०८२	जत्तियमिस्ता वारा	६२२	३८५५
जति ताव मम्मपरिवट्टियस्स	४२८५		जत्तियमेत्ता वारा	४००८	३८३१
जति ताव ओतियगुल्ल	४१८६	५३०५		४५४१	
जति ता मणुप्पलीमु	५१६२	२५४६	”		
जति तूण मासिगुहि	४६७६		जत्तियमेत्ते दिक्खे	१६०२	
जति ते जग्गणे मूलं	२१७		जत्तुगंतरादीणं	२५६३	
जति नेमि जीवाणं	४००७	३८३०	जतो कुतो विहारो	५४४६	
जति दिट्ठं ता सिद्धी	४८६५	१००४	जतो दुस्सीला खलु	२४६०	२०६५
जति दोह् चैव गह्णं	४५४५		जत्य अन्तिता पुट्ठी	४२४०	५६५०
जति पत्ता तु निनीवे	२४३०		जत्य उ ए होज्ज संका	४६८५	
जति परो पडिमैवज्जा	२७८२	५७३८	जत्य उ दुल्लवहीणा	६४८६	
जति पुण गच्छंताणं	६१२८		जत्य उ देसगहणं	५३६६	३३२५
जति पुण तेण गु दिट्ठा	२७१६	४७३०	जत्य तु गु वि जगति	२७६	
जति पुण पब्बावेति	४६२६	१०६३	जत्य तु देसगहणं	५२४३	३३२५
जति पुण पुवं मुद्धं	४६५६		जत्य पवातो दीप्पति	३८०२	
जति पुण मज्जे वि जितो	५१३३	२४८३	जत्य पुण अहाकडए	४६६१	
जति पोरिसिद्धता तं	४१५०	५२७२	जत्य पुण होति छिन्नं	३७२५	
जति पुमति तहि तुंढं	६१०८		जत्य वि य गंतुकामा	३३८७	२७८८
जति भागवया मत्ता	५१६४	२५१५	जत्य विसेसं जायति	३४५७	२६१०
जतिनि (मि) भवे आगवणा	६४८५		जत्याइणं सव्वं	६०१	
जति मोयगमावहता	५८६७	४०७३	जदि एगल्ल उ दोसा	४०८३	१८४०
जति मं जागुह मांमि	५७५५	३२८६	जदि एतविष्णुहृणा	४१५८	
जति मूलगपयवा	४७०४	८५३	जदि तेत्ति तेण विणा	११३०	
जति रज्जानां नट्टो	५०३६	६३५			

जदि दोसा भवतेते	६४१		जह जह पएसिणि	४४६०
जदि सच्चं उद्दिंसिउं	२६६६	५३४५	जह गाम असीकोसी	३६४६
जघ आतरो से दीसइ	१४४२		जह ते गोठुठारो	३६७३
जम्मण-णिक्खमणोसु य	५७३५	३२६६	जह पढमपाउसम्मी	३५७८
जम्हा तु हत्थमत्तेहि	४१०६	१८६४	जह पारओ तह गणी	४८७८
जम्हा घरेति सेज्जं	११४२	३५२४	जह बालो जंपतो	३८६३
जम्हा पढमे मूलं	५१३१	२४८१	"	६३६२
"	५१७३	"	जह भणितो तह उद्धितो	३५४८
"	५१८६	"	जह भणितो तह चिट्ठ	३५१६
जयमाणपरिह्वेते	६३४६		जह भणिय चउत्थस्सा	२६५०
जरजज्जरो उ थेरो	५६६१		जह भमर-महुयर-गणा	२६७१
जर-सास-कास-डाहे	३६४७		जह मण्णे एगमासियं	६५६१
जलजाओ असंपातिम	५३२८	२४०२	जह मण्णे दसमं	६५६७
जल-थल-पहे य रयणा	२६६२	५८५७	जह मण्णे बहुसो	६४२३
जलदोगमद्वभारं	४२६५		"	६५६८
जलमूए एलमूए	३६२६		जह मोहप्पगडीणं	३३२०
जलसंभमे थलादिसु	२४०६		जहज्वंती सुकुमालो	३६७२
जल्लमलपंकितारु	५३४	२५६६	जह सपरिकम्मलंभे	५८८१
जल्लो तु होति कमढं	१५२२		जह सरणमुवगयाणं	६६१५
जवमज्झ मुरियवंसो	५७४७	३२७८	जह सा वत्तीसघडा	३६७४
जस्स मूलस्स भगस्स	४८२६	६६६	जह सुकुसलो वि वेज्जो	३८६०
"	४८३०	६७०	जह सो कालासगवेसिउ	३६७०
जस्स मूलस्स सारातो	४८३१	६७१	जह सो वंसिपदेमे	३६७१
"	४८३२	६७२	जह हास-खेडु आकार	५१८६
जस्सेते संभोगा	२१४६		जह हेमो तु कुमारो	३५७५
जह कारणम्मि पुण्णे	४२४५	५६५५	जहि अप्पतरा दोसा	५१६६
जह कारणम्मि पुरिसे	५२१८	२५७३	जहियं एसणदोसा	५५४०
जह कारणे अणाहारो	३७६६	६०११	जहि लहुगा तहि गुरुगा	४७३८
जह कारणे सलोमं	४०१६	३८४१	जं अज्जियं चरित्तं	२७६३
जह चेव अण्णगहणे	४७४८	८६०	जं अज्जियं समीखल्लएहि	२७६२
जह चेवज्जुठारो	२११७		जं एत्थ सच्च अम्हे	३०३६
जह चेव पुढविमादी	२७५		जं कट्टकम्मादिसु	५१००
जह चेव य अद्धारो	१६८		जं किं चि भवे वत्थं	५०६०
जह चेव य आहच्चा	४६६०		जं गहितं तं गहितं	४७५५
जह चेव य इत्थीसु	५२२०	२५७५	जं गंधरसोवेतं	११०४
जह चेव य कितिकम्मे	२११२		जंजगारुगारत्ते	२६४६
जह चेव य पुढवीए	२०३		जं च वीएसु पंचाहो	१५८८
जह चेव य पुरिसेसू	५२१७	२५७२	जं च महाकप्पसुयं	६१६०

जं चैव परद्वारो	२६२५		ज हिंता काए	४५७१	
जं चैव सुद्धिसुत्ते	११२२		जं होज्ज अनोज्जं जं	११२१	
जं चोद्धसपुव्ववरा	४८२४	६६५	जं होति अपेज्जं जं	११११	
जं छेदेणेगेणं	७६८		जं होति अप्पगासं	६६	
जं जंमि होइ काले	६		जंगिय-मंगिय-सणयं	७५६	
जं जं सुयमत्थो वा	६२०६	७५५	जंघट्टा सघट्टो	१६५	
जं जारिसयं वत्थं	७६०		"	४२२६	
जं जस्स जियं सागारियम्मि	६०५७		जंघातारिम कत्थइ	१६१	
जं जस्स गालिय वत्थं	५०१५	६१५	जंघाहीणे ओमे	४४६३	
जं जह सुत्ते भणियं	५२३३	३३१५	जा इतवत्था दमुए	३२७	
"	५२५६	"	जा एगदेसेण दढा उ भंडी	४८६३	
जं गु सरति पडिबुद्धो	४३०३		जा कामकहा सा	२३४३	
ज तं गिच्चाघातं	८२०		जा चिट्ठा सा सव्वा	२६४	
"	८२३		जा जेण व तेण जघा	२४२३	
जं तं तु संकिलिट्ठं	५१४		जा जेण होति वण्णेण	४३८४	
जं ते असंथरता	४६१६		जागरह गारा गिच्चं	५३०३	३३८२
जं तेण कतेण व	३६६६		जागरंतमजीरादी	१५६८	
जं पज्जत्तं तमलं	२१५६		जारिता धम्मीणं	५३०६	३३८६
जं पुण गृहापसमणे	३७६०	६०००	जारुह जेण हडो सो	१३७१	४६३५
जं पुण पडमं वत्थं	५०८५	२८३०	जारुंति एन्नणं वा	४६०४	
जं पुण सच्चित्तादी	५४७७	५३८२	जारुंतेण वि एवं	३८६१	
जं पुव्वकतमुहं वा	६८८		जारुंतो अणुजारुति	२५७५	
जं पुव्वं गितियं खलु	४३५२		जारुणामि रागम एतं	१७७१	
जं पुव्वं पडिसिद्धं	५२४६		जारुणति इति तावञ्छणे	२५०४	
"	५३६६		जाता अणाहत्ताला	३६४६	
जं बहुवा छिज्जंतं	७६७		जा ताव ठवेमि वए य	१३५२	५७८
जं भिक्खू वत्थादि	४६६०		जाति कुल ख्व भासा	२६०६	
जं मायति तं छुम्भति	६५८८		"	२७३२	
जं मायति तं छुम्भति	२८७४		"	४२८४	
जं लहसगं तु फलं	२६३६		जाति-कुलस्स सरिसयं	२६२८	
जं वच्चंता काए	४६२३		जाती कम्मे सिप्पे	३७०६	
जं वत्थं जंमि कालम्मि	६५२	३८८५	जाती कहं कुलकहं	११६	
जं वत्थं जंमि देसम्मि	६५१	३८८४	जाती-कुलस्स सरिसं	२६३१	
जं वा असहीणं तं	११७१	३५५२	जाती कुलगण कम्मे	४४११	
जं वा भुक्खत्तस्स उ	३७६३	६००३	जाती कुले विभासा	४४१२	
जं वेलं संसज्जति	२७३		जाती य जुंगितो खलु	४६२२	
जं सगगहम्मि कीरइ	६३८६		जाती य जुंगितो पुण	४५७०	
जं सेवितं तु वितियं	४६८		जा तु अकारण सेवा	४८३	

जाघे वि य कालगता	१७२१		जीवति मओत्ति वा	२६८६
जा पुव्ववडिढता वा	७१३		जीवरहिओ उ देहो	३५४
"	७२१		जीवरहिते व पेहा	३३०७
जामातिपुत्तपतिमारणं	४४०२		जीवा पोगलसमया	५६
जामातिय-मंडवओ	२०१८		जीहाए विलिहंतो	६६१४
जायग्गहणो फासु	३११८		जुग-छिड्ड-णालिया	६०४
जायण-णिमंतणाए	५०२३		जुज्जति हु पगासफुडे	४३२२
जायसु ण एरिसो हं	४४५२		जुत्तपमाणस्ससती	५८४५
जायंते तु अपत्थं	२६६८	१६०१	जुत्तप्पमाण अतिरेग	५५०
जारिसदव्वे इच्छह	३०८१	१६८०	जुत्तमदारणमसीले	४६६१
जारिसयं गेलणं	३०२८	१६३२	"	४६८३
जाव ठवण उदिदट्ठा	६४३७		जुत्तं णाम तुमे वायएण	२६३२
जाव ण मंडलिवेला	२०३२	१६८२	जुत्तं सयं ण दाउ	३०४०
जाव ण मुक्को ताव	३००६		जे आदरिसंतत्तो	४३२३
जावतिएणट्ठो भें	१००२		जे कुज्जा वूया वा	२२५१
जावतियं उवयुज्जति	११२३		जे केइ अणल दोसा	३७३७
जावतियं वा लब्भति	४६४०		जे चेव कारणा सिक्कगस्स	३४३५
जावतिया उवउज्जति	१६७		जे चेव सक्कदारो	४६१५
जावंतिगाए लहुगा	१४७४	३१८६	जे जत्तिया उ—	६४६४
जावंतियमुद्देसो	२०२०		जे जहि असोयवादी	२३८३
जावंति वा पगणिया	१४७२	३१८४	जे जे दोसायतणा	४१०३
जा समणि संजयाणं	५६१८		जे जे सरिसा धम्मा	३३५७
जा संजमता जीवेषु	६५३२		जेट्ठा सुदंसण जमालि—	५५६७
जाहे पराइया सा	३६६२		जेण ण पावति मूलं	४८२
जाहे य माहणेहि	३७११		जेण तु पदेण गुणिता	६४८६
जिइंदियो घिणी दक्खो	६२६		जेणऽहियं ऊणं वा	२८५८
जिणकप्पिया उ दुविधा	१३६०		जे ते भोसियसेसा	६५५०
जिणकप्पे सुत्ते तं	५८८७		जे त्ति य खलु णिहेसे	४६७
जिण चोइस जातीए	६५०२		जे त्ति व से त्ति व केत्ति व	६२७३
जिणणिग्लेवणकुडए	६५६२		जे पुण ठिता पकप्पे	८१
"	६५७०		जे पुण संखडिपेही	२६४७
जिणपण्णत्ते भावे	६५७४		जे पुव्ववडिढता वा	७०२
जिणलिगमप्पडिहतं	२३७२	४८०६	जे पुव्वं उवगरणा	५६८८
जिणवयण पडिक्कुट्ठे	३७४५		जे भणिता उ पकप्पे	६६७१
जिणवयणभासितेणं	५४३६		जे भिक्खाऽऽजीवपिंडं	४४१०
जिणवयणमप्पमेयं	३६१४		जे भिक्खु अजोगी तु	१६१०
जिणा वारसरूवाइ	१४०६	३६६५	जे भिक्खु अरोगत्ते	४३३५
जियसत्तु-णारवरिदस्स	२३५२	५२५५	जे भिक्खू असणादी	२३२६
			"	२६५८
			"	३४७२





जो मागह्यो पत्थो	६६२B		ठाणं वा ठायंती	५२६४
"	५८६१	४०६७	ठाणो नियमा रूवं	५२६
जो मुद्धा अभिसित्तो	२४६७		ठितकप्पम्मि दसविहे	५६३२
जोयणसयं तु गंता	४८३३	६७३	ठितिकप्पम्मि दसविहे	२१४६
जो वच्चंतम्मि विधी	६१३८		ठितो जदा खेत्तवाहि सगारो	११८६
जो वा वि पेल्लिओ तं	५६७६	३०८८	ठियकप्पे पडिसेहो	४३६५
जो वि दुवत्थ तिवत्थो	५८०७	३६८४		ड
जो वि य अवायसंकी	६६६५		डगलग-ससरक्ख कुडमुह	३२३८
जो वि यऽणुवायाछिण्णो	४८०५		डगलच्छारे लेवे	३१७५
जो वि य होतऽक्कंतो	४२३५	५६४५	डहरगामम्मि मते	६११५
जो सो उवगरणगणो	३४५२	२६०५	डहरस्स एते दोसा	५८६४
जो हट्ठसाहारो	१६३६		डहरो अकुलीणो त्ति य	२७६०
जो होज्ज उ असमत्थो	६१२३		"	६२१०
	भ		डहरो एस तव गुरू	२७६१
भिज्झिरिसुरहिपलंवे	४७०३	८५१	डंडग विडंडए वा	६६६
	ठ		"	६७७
ठवण-कुलाइ ठवेउं	१७०६	३७२८	डंडतिगं तु पुरतिगे	६४०८
ठवणाए णिक्खेवो	३१४०		डंडिय खोभादीओ	१३३४
ठवणाकुला तु दुविधा	१६१७			ढ
ठवणाकुले व मुंचति	२०६६		ढड्ढसर पुण्णमुहो	४३६०
ठवणा तू पच्छित्तं	१८८५		ढिकुरा-पिसुगादि तहिं	५४७१
ठवणामेत्तं आरोवण	६४३१			ण
ठवणारोवणदिवसे	६४८८		ण करेति भुंजितूणं	१५६७
ठवणा वीसिग पक्खिग	६४३२		ण णिरत्थयमोवसिया	४६६०
ठवणा संचयरासी	६४२७		ण तस्स वत्थादिसु कोइ संगो	५८१६
ठवणा होति जहण्णा	६४३४		ण पमाणं गणो एत्थं	११३६
ठागासति अचियत्ते	२२३		ण पमादो कातव्वो	६५
ठागासति विदूसु व	६१५०		ण य वज्जिया य देहो	६३२६
ठाण-णिसीयण-नुअट्टण	२६३		ण य सव्वो वि पमत्तो	६२
ठाण णिसीयण-नुयट्टण	३६३८		ण वि किं चि अणुण्णायं	५२४८
ठाण-णिसीय-नुअट्टण	६२६८		"	५३७१
ठाण-णिसीय-नुयट्टण	१५५		ण वि कोइ किं चि पुच्छति	२३८६
"	२७४		ण वि खातियं ण वि वयी	४८४८
ठाण पडिसेवणाए	५११६	२४७०	ण वि छ महव्वता रोव	४६०६
ठाण-वसही-पसत्थे	३८१५		ण वि जाणामो णिमित्तं	५०६०
ठाणतियं मोत्तूण	१६६		ण वि य इहं परियग्गा	६३७८
ठाणं गमणागमणं	१६४५	१६०५	ण वि य समत्थो सव्वो	१७६८

ए वि सिगपुंछवाला	३२११	एयरो दिट्टे निट्टे	१२६१
ए विविता जत्य मुणी	१६७६	एयरो पूरे दिट्टे	५३११
ए हु ते दन्वसंलेहं	३८५५	एयवज्जिओ वि हु अलं	६१८६
ए हु होति सोयितव्वो	१७१७	एव भागकए वत्ये	५०८६
एउतीए पक्ख तीसा	६४७६	एव य सया य सहस्सं	६४७३
एक्खे छिदिस्सामि ति	६८१	एवसोओ खलु पुरिसो	२३२४
एक्खेएगवि हु छिज्जति	४८०४	एवकालवेलसेसे	६१५६
एच्चासण्णम्मि ठिओ	२४३५	एववंमचेरमइओ	?
एच्चुप्पइत्तं दुक्खं	१५१२	एवमस्स ततियवत्थुं	६५८७
एच्चुप्पित्तं दुक्खं	१५०३	एवमस्स ततियवत्थू	२८७३
"	१५०८	एवसत्तए दसमवित्तरे	३८८७
"	४१६७	एवंगसोत्तपडिबोहयाए	३६५६
"	४२०२	एवाएवे विभासा तु	१६३
एच्चुप्पतियं दुक्खं	४३३३	एहदंतादि अणांतरं	५०६
एज्जंतमराज्जंतं	३५६५	एहागादि कोउकम्मं	४२८६
एट्टं होति अगीयं	५१०१	एदंति जेण तवसंनमेसु	३४६६ २६२०
एट्ठा पंथफिडिता	४३०६	एइण लहुसएणं	६०८
एट्ठे हित विस्सरिते	६६६	एऊणमराणुणवरा	२५७१
"	८१३	एऊण य वोच्छेदं	६१८३
"	८३२	"	६२३८
"	८४६	"	६२४१
"	१६४५	एऊण य वोच्छेयं	२७३०
"	१६४७	"	२७६३
"	१६५६	"	५४७८
"	४६८८	"	५४६६
एट्टे हिय विस्सरिए	१६५४	"	५५००
एत्थि अगीयत्यो वा	५२३१	"	६१६७
"	५३५४	एगा जलवासीया	२७८५ ५७३६
एत्थि अणिदाणं तो	४६१२	एगाट्ट दंसगाट्टा	१६६६ २८७६
एत्थि कहालद्धी मे	१३४५	"	३४२७ २६७३
एत्थि खलु अपच्छित्ती	५१३६	"	५४५८
एत्थि ए मोल्लं उर्ववि	१३८२	एगाणिमित्तं अट्ठाणमेति	३८६८
एत्थि संकियसंवाडमंडली	६३५३	एगाणिमित्तं आसेविद्यं	३८६७
एत्थेयं मे जमिच्छह	६३५४	एगास्स होइ भागी	५४५७
एदिकण्हवेण्णदीवे	४४७०	एगावट्ठा दिक्खा	३६२८
एदिकोप्पर चरणं वा	४२३३	एगादि तिगकडिल्लं	१८८४
एदिपूरएण वसती	१७१२	एगादिदिगस्सट्ठा	४८१३ ६५४
एयरो दिट्टे गहिते	१२६४	एगादिसंघगाट्टा	२२८४

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

शाणादी छत्तीसा	२१३६		शिवकारणमविधीए	१६६६
शाणादी परिवुड्डी	४६६		शिवकारणम्मि अप्पणा	१६२१
शाणायारे पगतं	४५		शिवकारणम्मि एए	४६६५
शाणाविहं उवकरण—	१०३५		शिवकारणम्मि एते	५८७२
शाणी ए विणा शाणं	७५		शिवकारणम्मि एवं	५२८७
शाणुज्जोया साहू	२२५	३४५३	शिवकारणम्मि गुरुगा	१६६८
शाणे चरणे परुवणं	६२६२		शिवकारणम्मि लहुगो	१६२२
शाणे दंसण चरणे	४४		शिवकारणिए अणुवएसिए	४५७६
"	२७२७	४७३३	शिवकारणियाऽणुवदेसगा	२६२६
शाणे सुपरिच्छित्तये	४६		शिवकारणे अमणुणो	२०७६
शातग कहण पदोसे	२२५२		शिवकारणे अविधि	२७१
शातगमशातगं वा	२४६७		शिवकारणे ए कप्पति	१५०७
शातीवगं दुविहं	५५०४		शिवकारणे विधीए वि	१६६६
शामण-धोवण-वासण	६		"	१६६७
शामंठवण-शिशीहं	६७		शिवकारणे सकारणे	१५११
शामं ठवणा हत्थो	४६६		शिवक्खवणा अप्पाणे	२७५७
शामं ठवणा कप्पो	५६		शिवक्खवणा अप्पाणो	५५६१
शामं ठवणा चूला	६३		शिवगच्छति वाहरती	२३५
शामं ठवणा दविए	१७६७		शिवगच्छ फूमे हत्थे	२३८
"	६२६२		शिवगत पुणरवि गेण्हति	४१०२
शामं ठवणा भिक्खू	४६८		शिवगमणं तहचेव उ	५६२
शामं ठवणायारो	५		शिवगमणादि वहिठिते	११८८
शामुदया संघयणं	८५		शिवगमणे चउभंगो	२६८०
शालस्सेण समं सोक्खं	५३०७	३३८५	शिवगमणे परिसुद्धो	६३५२
शालीत परुवणता	६५०६		शिवगमसुद्धमुवाए	६३५६
शाव-थल-लेवहेट्टा	४२४६	५६५६	शिवगयवट्टं ता या	६५३६
शावाए उत्तिण्णो	४२५६		शिवगंथसक्कतावस	४४२०
शावातारिम चतुरो	१८३		शिवगंथि वत्थगहरो	५०७०
शासण्ण-शाइदुरे	२४५६	२०६०	शिवगंथीणं गणधर	२४४८
शासा मुहणिस्सासा	६१६		शिवगंथीणं भिण्णं	४६२२
शासेइ अगीयत्थो	३८२६		शिवगंधो उग्गालो	२६५५
शासेइ असंविग्गो	३८३४		शिवच्चणियंसणमज्जण	५०४५
शिउणो खलु सुत्तत्थो	५२५२		शिवच्चणियंसणियं ति य	५०४६
"	५३७५	३३३३	शिवच्चपरिगले वहिता	६३१
शिवकारणमणंमि	१०६८	२७५८	शिवच्चलणिप्पडिकम्मे	३६४१
शिवकारणं चमढण	१७६३	३७८६	शिवच्चलणिप्पडिकम्मो	३८१८
शिवकारणपडिसेवा	४६७		शिवच्चं पि दन्वकरणं	५१०६
			शिवज्जंतं मोत्तूणं	१२००

"	६११६		गिसिदंतो व ठवेज्जा	१७८५	
गिञ्जहितादि ठागा	४१३४		गिसिपढमपोरिसुम्भव	५७६	४६३२
गिण्हयसंसग्गीए	५५३२	५४३३	गिसिमादीसम्भूतो	८७६	
गिण्हवणं अवलावो	१६		गिसिह एवमा पुव्वा	६५००	
गिण्हवणे गिण्हवणे	३०१	६०६६	गिसीहिया रामांकारे	६१३४	
गिता ग पमज्जंति	५३६७	३४५२	गिसुडंते आउववो	३२१२	
गिता रा पमज्जंती	२२३	"	गिसेज्जा य विवडणे	६५१२	
गितिए उ अग्गपिडे	६६६		गिसेज्जाज्जति पडिहारिय	६३८६	
गिदिद्वस्स ममांवं	४५७४		गिस्संकिय गिक्कखिय	२३	
गिद्दोसं सारवंतं च	३६२०	२८२	गिस्संचया उ समणा	४१४४	५२६६
गिद्धमधुरेहि आउं	३५४१		गीरोज्ज पूय-खिरं	१५०६	
गिद्धे दवे पगीए	३७६७	६००७	गीयल्लयदुच्चरितागुक्तिगं	२३३८	
गिदयं च अगिययं वा	११८६	३५६७	गीयस्स अम्ह नेहे	१२१४	
गिण्णच्चवाय-संववि	२४६५	२०७०	गीयासगंजलीपग्गहादि	१३	
गिण्णत्त कंटडल्ले	६३८२		गीसंको व ण्णुसट्ठो	४५६८	
गिण्णगो वि स अट्ठा	१००५		गेगवुणममु चंते	१६२४	
गिण्णेडणे सेहस्स तु	३७३४		गेगविधा इट्ठीओ	२६	
गिण्णए गारत्थीणं	४२५१	५६६०	गेगविह कुमुमपुण्णोवयार	६७०१	
"	१६६	"	गेगाण उ गाणत्तं	१२५०	
गिण्णए पिट्ठो गमणं	११०३		गेगामु चोरियासू	६५१५	
गियएहि ओसहेहि य	३०२७	१६३१	गेगेसु एगगहणं	५२३५	३३१७
गियगद्धितिमत्तिकंता	१५८५		"	५३५८	
गिरुअस्स गदपओगो	४८७१		गेगेसु पिता-पुत्ता	११७५	३५५६
गिरवस्सगगिमित्तं	२८७८		गेहाति एवं काहं	४८७	
गिरवहत्त जोगित्थीणं	३७०	४६५३	गो कप्पति भिक्खुस्सा	१०८०	
गिल्लोम-मल्लोमज्जिणे	४६११	१०४८	"	१०६६	
गिवचित्त विकाल पडिच्छग्गा	३१६५		"	१५४४	
गिवत्तण गिविस्सवणे	१७६८		गो कप्पति वाजमिण्णं	५२३८	३३२०
गिवदिकिक्कतादि असह	४६१		"	५३६१	
गिवपिटो गयमत्तं	४५१२		गो तरती अमत्तट्ठो	२७६८	५७६४
गिवमरणं मूलदेवो	६५१७		गोल्लेकण ए सक्का	१६७७	३७०१
गिववल्लभवहृपक्कम्मि	३६२३	५१८८	गोवयणामं दुविहं	४७१५	८४५
गिविनिगिण्णद्वने ओमि	५७४				
गिव्वत्तणा य दुविधा	१८०१		तइया गवेसणाए	२८६६	
गिष्वाधानववादी	८२४		तक्कम्मसेत्रि जो क	३५६५	
गिष्विगितिय पुरिमट्ठं	६६६२		तक्कंकुट्टेणाहरणं	१२	
गिष्विमओत्ति य पढमां	५७०६	३१३१	तक्कंतपरोणरओ	५७६६	
गिष्वीयमायतीए	२५५१		तच्चित्ता तल्लेसा	५१०७	२४५६

त

तज्जातमतज्जातं	६४७	३८७८	तत्थ गिलाणो एगो	६३३७
तज्जातमतज्जाता	२०५५		तत्थऽणत्थ व दिवसं	१७३१
तण-कट्ट-पुप्फ-फल	५४१४		तत्थ दसण्ह अवाते	३८१०
तणकट्टहारगादी	५४१३		तत्थ पवेसे लहुगा	५४७०
तण कंवल पावारे	३६०७		तत्थ भवे णणु एवं	५६६०
तणगहण अग्गिसेवणं	४७७६	६२०	तत्थ भवे ण तु सुत्ते	६४६८
तणगहणे भुसिरेतर	४७६१	६०३	तत्थ भवे मायमोसो	६३५७
तण डगलग-छार मल्लग	३३२		तत्थ वि धेप्पति जं	४६४१
तण डगल-छार-मल्लग	११५४	३५३५	तत्थेव अण्णगामे	२६६६
तण विण्णुण संजयट्ठा	५०२६	६२५	तत्थेव गंतुकामा	२६४०
तण वेत्त-मुंज कट्टे	२२८६		तत्थेव य णिट्ठवरणं	४७७६
तण-संचयमादीणं	५५		तत्थेव य निम्माए	५५१५
तणपणगग्गि वि दोसा	४००६	३८३२	तत्थेव य पडिबंघो	५१५३
तणमादिमालियाओ	५६१०		तद्विणमण्णदिणं वा	११६२
तणमालियादिया उ	२२८८		तद्विवसकताण तु	२८०
तणुयमलितं आसत्थ	६०१५		तद्विवसभोयगादी	६०६६
तण्णग-वाणर-वरहिण	५६०६		तद्विवसं पडिलेहा	१२७६
तण्णवखंता केई	५१११		तप्पडिपक्खे दब्बे	६३८७
तण्हाछेदम्मि कते	३८८६		तमतिमिरपडलभूओ	२८४७
तण्हातिओ गिलाणो	५२६५	३४२५	तम्मि असधीरो जेट्ठा	११८३
ततवितते घणभुसिरे	५६६४		तम्मि चेव भवम्मी	३८०६
ततिए पतिट्ठियादी	६३१६		तम्मि तु असधीरो वां	१२६६
ततिए वि होति जयणा	५७२०		तम्मि य अतिगतमेत्ते	१६७३
ततिओ उ गुरुसगासे	१२५४		तम्मि य गिद्धो अण्णं	११०७
ततिओ जावज्जीवं	४०७७		तम्मि वि णिव्वाघाते	८३४
ततिओ धिति-संपण्णो	८४		तम्हट्ठा जाएज्जा	६७६
ततिओ लवखणजुत्तं	४५५१		तम्हा आलोएज्जा	११३४
ततिओ संजम-अट्ठी	१७४२		”	३१२१
ततियभंगासंथडिनिवि-	२६३०		तम्हा उ अपरिकम्मं	४६३७
ततियलताए गवेसी	२८६७	५७६४	”	४६४५
ततियव्वयाइयारे	३७२७		तम्हा उ गिण्हियव्वं	३२३४
ततियस्स जावजीवं	४०७५		तम्हा उ जहिं गहियं	४१४७
ततियं भावतो भिण्णं	४७२१		तम्हा उ ण गंतव्वं	४१८३
ततियाए दो असुद्धा	२८६५		तम्हा खलु अवाले	१३४०
ततियादेसं भोत्तूण	३४१५		तम्हा खलु घेत्तव्वो	१२४६
तत्तऽत्थमित्तं गंधे	२६५२	५८४८	तम्हा खलु पट्टवणं	२८३६
तत्थ गतो होज्ज पट्ट	४१२५		तम्हा खलु सग्गामे	६०४४
तत्थ गहणं पि दुविहं	४७४६	८६१	तम्हा गवेसियव्वो	१३५८

तम्हा गीयत्येणं	३८३३		तस्मिंश्चि मुर्हा वा	२८४०	४५७४
तम्हा गु कहेयव्वं	६२२७	७६०	तह अण्णतिस्सियादी	३२२७	४२५२
तम्हा गु तस्य गमनं	२४८६		तह इत्थि-आलवद्वाहि	१७६५	
तम्हा गु वि मिदिज्जा	२१६३		तह चैवमिद्धारते	२७१४	
तम्हा गु संवसेज्जा	२४७३		तह वि य गु मच्चकानं	४३५५	
तम्हा तिपानियं खलु	२१७६		तह समग्गमुविहियाणं	५७७	४६३०
तम्हा पमाणागहणे	११२४		"	६३०६	"
तम्हा पमाणावरणे	४५५४		तह से कहेति जह	३०५१	१६५०
तम्हा पुच्चादानं	१८७६		तहि सिक्कागहि हिंसेति	३४३४	२८८६
तम्हा वसुधीदाता	१२०७		तहि वच्चने गुदगा	२८५३	४५८६
तम्हा विधीए मुजे	१११६		तं अइयसंग-दोमा	७२	
तम्हा सट्ठाण्णयं	४६७८		तं अण्णतिस्सिएणं	७६६	
तम्हा मच्चाण्णया	२०६७		तं अम्ह महदेसी	१०३७	
तम्हा संविणेणं	३८४०		तं काटं कोति गु तरनि	४१५१	४२७३
तया हूराहं एवं	१४६४		तं कायपरिच्चयती	२६५६	
तल्ला येरा य तहा	२५८२		"	३६६२	
तल्ला वेत्तिस्सि विवाह-	२५६२		"	४७६०	६३०
तल्लाइणो गिच्चं	२३५३	४२५६	तं चैव गिद्धवेती	४१४६	४५८३
तल्लाओ पिडियाओ	४०६१	१८४८	तं चैव निद्धवेती	२८५०	"
तल्लाण य पक्खेवो	२२४३	४६५०	तं चैव पुच्चमणियं	२३८४	४८२१
तल्लो निष्कण्ण परिवारे	६०२१	४३३८	"	६५५६	
तल गालिएरि तल्ल	४७०२	८५२	तं जे उ संजतीणं	४०२७	
तल्लिय पुडग वट्ठेया	३४३१	२८८३	तं जो उ पलोण्णजा	१४७६	
तल्लिया तु रत्तगमणे	३४३२	२८८४	तं गु त्वमं तु पमादो	६३०६	
तव कप्पति गु तु अम्हं	३७६२		तं तु अण्णुट्ठियदं	३६६६	
तव छेदो तह गुल्ला	२२११	२४७६	तं दट्ठुगु मयं वा	६७२	
तवगल्लण्णज्जाणे	२६२०	४८१७	"	६७४	
तव छेदो तह गुल्लो	४१२६	२४७६	"	१२८३	
तवनिगं छेदनिगं	६५३८		तं दान्दंइयं पादपुंछं	८३१	
तवनीयमसद्धए	६५६०		तं दुविहं गान्धर्वं	४०१	
तवदनिओ सो जम्हा	६५४२		तं पडिसेवेदुणं	१४६०	
तस-उदग-वणे वट्ठुगु	४२२२		तं पाडिहारियं पादपुंछं	१६४८	
तस-वाण्ण-वीयरहिं	३६४३		तं पि य दुविहं वत्थं	४००१	
तस-वीयम्मि वि दिट्ठं	४८६७	४०४२	तं पुण्ण ओहविमाने	६३१४	
तसराण्ण तप्पागादी	३६७७		तं पुण्ण गमेज्ज दिवा	४६३६	३०४२
"	४६०५		तं पुण्ण गहणं दुविहं	७८६	
तस्सट्ठुगतांमासण्ण	३८४२		तं पुण्ण पडिच्छमाणा	३७३१	
तस्सज्जनि कारितम्मि	७८६		तं पुण्ण त्वं त्रिविहं	४११५	

तं मूलमुवहिगहणं	४७७८		तिण्ह वि कतरो गुरुओ	५१५६
तं रयणि अण्णत्था	३४८०		"	५१७६
तं वेलं सारवेत्ती	२०४१	१६६०	तिण्हं एगेण समं	१६६१
तं सच्चित्तं दुविहं	४७६८	६०८	तिण्हं तु तड्ढियाणं	७३२
तं सारिसणं रयणं	३६२१		तिण्हं तु बंधाणं	७४५
ताइं तण्णफलगाइं	१२८८	२०३७	तिण्हं तु विकप्पाणं	२१८६
ता जेहि पगारेहि	३३२२		तिण्हारेण समानं	६२२०
तालायरे य धारे	३२४३	४२६८	तिण्हुवरि कालियस्सा	६०५६
"	३२५५	"	तिण्हुवरि फालियाणं	७८७
तावो भेदो अयसो	१८१५	५७४१	तिण्हुवरि बंधाणं	२१७८
"	१८२१		तिण्हेगतरे गमणं	५७१३
"	२७८७	२७०८	तित्थंकर पडिक्कुटो	११५८
तासेत्तूण अवहिते	५३०८	३६८८	तित्थंकर रायाणो	६४१०
ताहे च्चिय जति गंतुं	४६८०		ति-परिग्गह-मीसं वा	१६००
ताहे पलंबभंगे	४३४		तिपरिरयमणागाढे	११७०
तिक्खम्मि उदगवेगे	५७६		तिप्पमितिघरा दिट्ठे	४६७६
"	६३०५		तिय मासिय तिग पणए	१८०६
तिक्खुत्तो तिणिण मासा	१८४२		तिरिओ याणुज्जाओ	६००८
तिक्खुत्तो सक्खेत्ते	११७४	३५५५	तिरियनिवारण अभिहरण	५२७५
तिग बाताला अट्ट य	६५३५		तिरियमचेतसचेते	२२२३
तिग संवच्छर तिगदुग	३०५५	१६५४	तिरियमणुयदेवीणं	६०३
तिगुणगतेहिं ण दिट्ठो	१४४७		तिरियमणुस्सिस्थीणं	६०२
"	१४५५		तिरियाउ असुभनामस्स	३३२७
तिगुणपयाहिरापादे	३७५१		तिरियोयाणुज्जाओ	१८४
तिट्ठाओ संवेगे	४५८२		तिविधम्मि कालच्छेदे	५७६६
तिण वइ भुसिरट्ठाओ	२७६		तिविधम्मि वि पादम्मो	७३७
तिणिण उ हत्थे डंडो	७००		तिविधं वोसिरिओ सो	३८६१
तिणिण कसिओ जहणो	५८०६	३६८६	तिविधा य दव्वचूला	६४
तिणिण तिगेगंतरिते	१६०५		तिविधे तेइच्छम्मि	६६६१
तिणिण दुवे एक्का वा	३१६५		तिविह परिग्गह दिव्वे	४७५०
तिणिणे पसती य लहुसं	८६५		तिविहं च होइ बहुगं	६४२६
तिणिण विहत्थी चउरंगुलं	६८६	४०१३	तिविहं च होति पादं	५८५२
"	५८३७		तिविहं पुण दव्वग्गं	५०
तिण्णेव य पच्छागा	१३६४		तिविहाण वि एयांसि	५६२६
"	१३६७	४०८१	तिविहाऽऽमयभेसज्जे	५६८६
"	५७८८	३६६३	तिविहित्थि तत्थ थेरी	५०३६
तिण्हट्ठारसवीसा	३२७८		तिविहे परुवित्तम्मि	५८५३
तिण्हट्ठा संकमणं	५५५३		तिविहो उ विसयदुट्ठो	३६६०

तिविहो य पक्ष्मधरो	६६७६		तेगिच्छिगस्म इच्छा	३०६२	
तिविहो य होइ जडां	३६२५		ते चैव नत्य दोसा	५१७५	२५२५
तिविहो य होइ धानू	४३१३		"	५१८८	"
तिविहो य होइ बुद्धो	३५४२		तेगुट्टम्मि पसज्जण	३३७८	
तिविहो य होति कीवां	३६३७		तेगु पर गिहत्थणं	२३८६	
तिविहो य होति वालो	३५१०		तेगु परं सरितादी	३५६५	
तिविहो सरीरजडो	३६२६		तेगामय-मावयमया	३२७३	४३०५
तिव्वागुवदरोमो	११४		तेगामयोदककज्जे	५६५२	३०६०
तिमु छल्लहुया छगुरु	२६४५	५८४१	तेगादिमु जं पावे	३२६५	
तिमु तिण्णि तारगाओ	६१४६		तेगारक्खिय-मावय	१५५३	३२०६
तिमु लहुओ गुरु एगो	२६४४	५८४०	तेगा व संजयट्ठा	४४१३	
तिमु लहुओ तिमु लहुगा	१६४१		तेगो कीवे राया	३७४१	
तिहि थेरेहि कयं जं	३४०८	२८६०	तेगो देव-मग्गुस्से	४७४०	८८२
तित्तिगिण चलचित्ते	६१६८	७६२	तेगो य तेगतेगो	३७२६	
तीतम्मि य अट्टम्मी	८८१		तेगेव माडया मो	३०८३	१६८२
तीमदिणे आयरिण	२८११	५७७७	तेगेमु गिस्सट्ठेमुं	५३०२	३३८१
तीसं ठवग्गाठाग्गा	६४३६		तेगेहि व अगणीण व	१७२५	३७४७
तीमुत्तरे पग्गुवीसा	६४८१		तेत्तामं ठवग्गपदा	६४४८	
तीमु वि दीवितकज्जा	२७४२	५४६२	ते तत्य मण्णिविट्ठा	५२६०	३३४१
तीमु वि विज्जंतीमुं	५४१		ते तत्य मल्लिविट्ठा	५२६३	३३७२
तुच्छेण वि लोहिज्जनि	२४५३	२०५४	"	५३६४	
तुम्मट्ठाए कतमिणं	५८६१	४०३६	ते दोज्जुवालमिता	५४७४	५३७६
तुम्मेवि ताव गवेषह	१३८१	४६४५	ते पुग्ग एगमगेगा-	६३५१	
तुमए चैव कतमिणं	६६०६		तेस्स मय अट्ठट्ठा	६४७२	
तुमए समगं आमं	३६२४	५१८६	तेस्सिच्छं पि य निविहं	५१८०	२५३४
तुम्हे मम आयरिया	२६३५		तेल्लुकदेवमहिता	१७१५	६२००
तुल्लम्मि अदल्लम्मि	३४६४	२६१७	तेल्लुव्वट्ठणं प्पावणं	३०५३	१६५२
तुल्ले मेहुण्णमावे	५१६३	२५१४	तेल्ले वन गवणीते	१४६२	
तुल्ले वि समारंभे	४०७२	१८२६	ते वि य पुग्गिमा दुविहा	५२०६	२५६२
तुल्लेमु ओ मल्लदी	६३६६		तेमि अवारणे लहुगा	५२७४	३३५३
तुवरे फले य पत्ते	२०१	२६२२	तेमि अया गिज्जर	३३३५	
"	३४७०		तेमि तत्य ठियाणं	३२४०	४२६५
"	५७०४		तेमि पडिच्छणे आग्गा	५६२६	
तुमिणी अइति गिति व	२२६		ते सीदिउमारट्ठा	५११०	२४६२
तुमिणीए हंकारे	८६६	६१०५	तेमु अगिह्वेतुं	२५३१	३५८८
तुहं दंसण-मंजुगिओ	२२६६		तेमु अगिह्वेतुं	२४८४	"
तुरपति देति मा ते	५०४२	६४१	तेमु असणवत्थादी	५७६१	
तेज्जवाडविहृगा	४२४२	५६५२	तेमु ठित्तु पउत्थो	५२५८	३३३६



तेसु तमगुण्णात्	३५०				
तेसु असहीरोसु	३६८५				
तेसु दिट्ठिमबंधतो	४१२६				
तेदुस्यदारुयं पि व	६१६६				
नो कइ धित्तव्वा ज	४५२८				
तो पच्छा संशुएहि	१७६७				
तोसलिए वगधरण	५३६१	३४४६			
		थ			
थणजीवि तन्नगं खलु	३६८०				
थल-देउलियट्ठाणं	११६८	३५४६			
थल-संकमरो जयणा	४२४८	५६५८			
थलि गोणि सयं मत	४८५३	६६३			
थंडिल-तिविहुवधाति	१५३३				
थंडिल्ल असति अद्धाण	१८६८				
"	१६१८				
थंडिल्लसमायारी	६३४८				
थंडिल्लं न वि पासति	३५५१				
थावरणिप्फणं पुण	६४०				
थी-पुरिसअणायारे	५३२०	२३७४			
थी पुरिसा जह उदयं	३६०२	५१६६			
थी पुरिसा पत्तेयं	३६०४	५१७१			
थीसुं ते च्चिय गुरुगा	५७७३				
थुल्लाए विगडपादो	४३६१				
थूणाओ होति वियली	४२६८				
थूणादी ठाणा खलु	४२६७				
थूल-सुहुमेसु वोत्तुं	५८७५				
थूले वा सुहमे वा	५८७४				
थेरवहिड्डा खुड्डा	२४०४				
थेराणोस वि दिन्नो	४५३६				
थेरातितिविह अघवा	५२२६	२५८१			
थेरिय दुण्णिखित्ते	३४००				
थेरी दुव्वलखीरा	४३८३				
थेरुवमा अक्कंते	४२६३				
थेरेण अरुण्णाए	३७६५				
थोवं जति आवण्णो	२८५७	५५६०			
थोवावसेसपोरिणि	६०७८				
थोवावसेसियाए	६१३५				
थोवा वि हणंति खुहं	५३८५	३०६४			
		द			
			दगकक्कादीह नवे		४६४२
			दगघट्ट तिणिण सत्त व		३१६५
			दग-णिग्गमो पुब्बुत्तो		२०५६
			दगतीरे ता चिट्ठे		१६७
			"		४२५२
			दगभाणूरो दट्ठुं		५२७६
			दगमुद्देसियं चैव		६२७८
			दग-मेहुणसंकाए		५३२३
			दगवाय संधिकम्मे		२०५७
			दगवारवद्धणिया		४११३
			दगवीणिय दगवाहो		६३४
			दगतीरचिट्ठणादी		५३१०
			दट्ठुं पि रो ण लज्जा (व्भामो)		१३४६
			दट्ठूण दुण्णिखिट्ठुं		३६४१
			दट्ठूण य राइड्डि		१७४०
			"		२५४३
			"		२५६६
			दट्ठूण व सतिकरणं		५३३६
			दट्ठूण व हिड्ढेण वा		१२५१
			दट्ठूण वा णियत्तरा		५३१४
			दड्ढे मुत्ते छगणो		१७१
			दत्थी हामि व णीए		१०५७
			दधितक्कंवलमादी		२६२
			दप्प-अकप्प-णिरालं व		४६३
			दप्पण मणि आभरणो		४३१८
			दप्पपमादाणाभोगा		४७७
			"		४७८
			दप्पादी पडिसेवणा		१४३
			दप्पे कप्प-पमत्ताणाभोगा		६०
			दप्पे सकारणमि य		८८
			दप्पेण होति लहुया		४७६
			दमए हभगे भट्ठे		५०६३
			दमए पमाणपुरिसे		४०६६
			दमगादी ठाणा खलु		२६००
			दरहिड्ढिते व भाणं		४१६४

द्विचयपरिणामतो वा	३८६७		"	२६४१	
द्वन्मन्त्राणं पंतो	१६३६	१५८८	"	३३४३	
द्वन्द्ववृत्ताहारै	३१६६		"	३६५१	
द्वन्-गुणीकृतं कृतगादिगुम्	६८		द्वन्-गु य भावगु य	१०११	
द्वन्तो चउगे मुना	४३१८		"	४०६८	
द्वन्द्वसिद्धेस्तकाले	३६६४	५२१४	"	६६१०	१८५४
द्वन्द्वपडिबद्ध एवं	२०६८		द्वन्ने तं त्रिय द्वन्	६०८३	
द्वन्द्व्यमागुअतिरेग	५८२२	३६६६	द्वन्ने पुट्टमपुट्टो	१०२६	
द्वन्द्व्यमागु गगुणा	१६५३	१६११	द्वन्ने भविशो गिविचिन्तिशो	६२८३	११७३
द्वन्द्व्यमागुगगुणाइरेग	५७८६		द्वन्ने भावेजविमुत्ता	११६३	३५४४
द्वन्मि दाडिमंदाडिगुम्	३३४४		द्वन्ने य भाव त्रितिगु	४८०	
द्वन्मि वत्यपत्तादिगुम्	८५३		द्वन्ने य भाव भेयग	६२८०	
"	८७६		द्वन्नेगहृत्तुग आगुम्	४८	
द्वन्मिर्ता भावमिर्ता	३८२२		द्वन्नेवक्त्ररगुहादियागु	३२२५	४२५०
द्वन् वेत्तं कालं	६२३४		दन् आउविवागदसा	३५४३	
"	६२३६		दन् उत्तर नतियागु	६४८०	
"	६२४२		दन् गतस्म य मज्ज य	३०५	६०३३
"	६२४६		दन् चैव य पगुयान्ता	६५८२	
द्वन् जोगं गु नन्मनि	१०६५		दन् ता अगुमज्जन्ता	६६८०	
द्वन् तु जागित्वं	१७५५	३७७३	दसउर-नगरच्छुधरे	५६०७	
द्वन्नाइ उज्जियं	५०११	६११	दसदुयए संजोगा	२०६२	
द्वन्नातिमाहृत् ता	३७५६		दसमासा पक्कणं	२८३१	
द्वन्नादि चतुरभिगह	६३७६		दसमु वि मूनायरिण	३६०१	५१६८
द्वन्नादि निविहकसिरो	६५६		दसहि य रायहागु	२५८८	
द्वन्नादिविचन्नामं	३३५१		दंडधरो दंडारक्किश्रो	२५१६	
द्वन्नादी अपसत्ये	३७५०		दंड पडिहार-वज्जं	१६७३	२६७७
द्वन्ने आहारादिमु	२६४२		दंडमुलमम्मि तोए	६६०७	
द्वन्ने इक्कड कटिगादिगुम्	८८७		दंडारक्किय दोवारोहि	२५१५	
द्वन्ने एणं पादं	५८८६	४०६१	दंतच्छिन्नमलितं	३४६४	
द्वन्ने वेत्तं काले	८५२		दंतपुरे आहरणं	१२६५	२०४३
"	८६१		दंतमय दंतमु	१५२०	
"	८७५		दंतिकक-गोर-तेल्ले	५६६४	३०७२
"	८८६		दंतं दिट्ठे विणिचगु	६१११	
"	९४८		दंसगुचरणा मूदस्स	४७६२	६३२
"	१०१०		दंसगु-गुण-वरिस्तागु	२१५६	
"	१०२५		दंसगु-गुण-वरिस्तं	४८४	
"	१०६४		"	३६२७	
"	२१८१		"	४३४१	
"			"	४३४२	

दंसगणगणो माता	३३८३	२७८४	दिट्टमदिट्टे विदेसत्थ	२७१८
दंसगणगणो सुत्तत्थ	६३६२		दिट्ट सलोमे दोसा	४०११
दंसगणपक्खे आयरिओवज्जाग	५५३४		दिट्टं कारणगहणं	६०३६
दंसगणपभावगणं	४८६		दिट्टं च परामट्टं च	१७७६
दंसगणवाये लहुगा	१४७७	३१८६	दिट्टं त पडिहणिता	१३७६
दाऊण अण्णदब्बं	४०६७	१८२६	दिट्टा व भोइएणं	२२७१
दाऊण गेहं तु सपुत्तदारो	११६३		दिट्टीपडिसंहारो	५७०
दाऊणं वा गच्छति	२६७६	१८८१	दिट्टीमोहे अपसंसरो य	३४
दागणगहणे संवासओ	५६२७		दिट्टे गिमतणा खलु	४५२६
दागणफलं लवित्तुणं	६६३		दिट्टे सहस्सकारे	६८
दाणं एा होति अफलं	४४३०		दिट्टे संका भोतिय	४७२७
दाणाई-संसग्गी	१८४१		दिट्टो वण्णोणम्हं	१२५५
दाणे अभिगमसड्डे	१६२०	१५८०	दिण्णमदिण्णो दंडो	६४१५
"	१६२६	१४८६	दिण्णो भवविघेरा व	१३५६
"	१६३०	१५७६	दियदिन्ने वि सचित्ते	५६४०
"	१६३१	१५८१	दियभत्तस्स अवरणं	३३६३
दाणेण तोसितो वा	३७०५		दियराओ गोमतेरां	४१६६
दातुं वा उट्ठु रुस्से	५०२२		दियराओ लहु गुरुगा	२६६१
दायग-गाहग-डाहो	५६६६		दियरातो उवसंपय	६३२५
दारदुगस्स तु असतो	२३७८	४८१५	दियरातो भोयरास्सा	३३६१
दारं न होति एत्तो	५२६६	३३७५	दियरातो लहु-गुरुगा	४७३६
दाराभोगण एगाणि	२६६५		दियरातो लेवणं	४२००
दाराभोयण एगाणि	४४०७		दिवसणिसि पढमचरिमे	१३४
दावद्दविओ गतिचवलो	६२०३	७५२	दिवसत्तो अण्णं गेण्हति	२६६५
दासे दुट्ठे य मूढे य	३५०७		दिवसतो एा चव कप्पति	३२२०
दासो दासीवतिओ	३१८५		दिवसभयए य जत्ता	३७१८
दाहं ति तेण भणितं	४४५०		दिवसभयओ उ चिप्पति	३७१६
दाहामि त्ति य भणिते	१००१		दिवसा पंचहि भतिता	६४४२
दाहामो णं कस्सयि	५०८२	२८२७	दिव्व-मरुगुय-त्तेरिच्छं	३३१४
दाहामो त्ति व गुरुगा	३०४१	१६४२	दिव्वमरुगुयाउ दुगतिगस्स	३६४६
दाहिएकरम्मि गहितो	३५१५		दिव्वं अच्चेरं विम्हओ	३३३६
दाहिएकरेण कण्णो	५८६६	६६६	दिवाइतिग उक्कोसगाइ	३६१
दिक्खेहि अच्छंता	२५८५		दिव्वेसु उत्तमो लाभो	५०८६
दिज्जंते पडिसेहो	४४७६		दिसि पवण गाम सूरिय	१८७१
दिज्जंते वि तदा	१३०४	४६०१	दिसिमूढो पुव्वावर	३६६६
दिज्जंतो वि एा गहितो	१३७८	४६४२	दिसिदाहो छिण्णमूलो	६०८६
दिट्टमणोसियगहणे	१०२		दिस्सिहिति चिरं बद्धो	५६०७
दिट्टमदिट्टा य पुणो	२२०१		दितेण तेसि अप्पा	४५३४

दीह छेयण डक्को	२३०		दुविधे तेगिच्छम्मी	२२३०	
दीहं च गीस सेज्जा	५६२१		दुविधो उ भावसंयवो	१०४०	
दुक्करयं खु जहत्तं	५४४४		दुविधो कायम्मि वणो	१५०१	
दुक्खं कप्पो वोढुं	३६६		दुविधो खलु पासत्थो	४३४०	
दुक्खं खु निरगुक्का	५६३३		दुविधो परिग्गहो पुग्ग	३७७	
दुग्-तिग्-चउक्क परागं	१३६१		दुविधो य मुसावातो	२६०	
दुग्गपुड-तिग्गपुडादी	६१७		दुविधो य संकमो खलु	६२१	
दुग्गुगो चउग्गुगो वा	५८०४		दुविह चउव्विह छउव्विह	११५१	३५३२
दुग्गविसमे वि न खलति	६६६८		दुविह तिविहंग रंभति	४६६४	
दुग्गादि तोमियणिवो	६०८०		”	४६८६	
दुग्गुहाणं छग्गुगदंसगो	५३१	२५६६	दुविहमदत्ता उ गिरा	६२५०	
दुद्विय भग्ग पमादे	४०२२		दुविहम्मि भेरवम्मि	५७२३	३१३५
दुग्गिय दोण्णि विट्ठा	३४८६		दुविहत्थआतुराणं	४६२१	
दुपदचउपदरासे	४६८२		दुविहं च दासु मात्तेसु	६४२४	
दुपद-चउपद-वट्ठपद	७०३		दुविहं चैव पमाणं	५४३२	
दुपय-चउपयमादी	३२६		दुविहा उ होइ बुद्धी	२६२३	५८१६
दुपय-चउपदरासे	१४६७		दुविहा तिविहा य तसा	४१२३	
दुप्पडिलेहियद्दसं	४०२०	३८४३	दुविहा दप्पे कप्पे	१४४	
दुप्पडिलेहियमादीसु	२७६७	५७६३	दुविहा दुग्गुछिया खलु	५७५६	
दुप्पमिति पितापुत्ता	११७७	३५५८	दुविहा पट्टवणा खलु	६६४२	
दुब्बलगहणि गिलाणा	४६५७		दुविहा य लक्खणा खलु	४२६२	
दुब्बनियत्तं साहू	४२०६		दुविहा य होइ दूती	४३६८	
दुब्बमासियहसितादी	६३२०		दुविहा य होति जोई	५३५३	
दुमपुप्फिपट्टममुत्तं	२०		दुविहा लोउत्तरिया	१६१६	
दुल्लभदब्बं दाहिति	३६७		दुविहा सामावारी	६२१५	७७७
दुल्लभदब्बेच सिया	११७२	३५५३	दुविहासती य तेसि	६२७१	
दुल्लभदब्बे पट्टमो	४५२		दुविहे गेलणम्मो	२५३२	३५५०
दुल्लभपवेस लज्जालुगो	१५५८		दुविहो अदंसगो खलु	३६७२	
दुविध तवपट्टवराया	४१		दुविहो जाणमजारी	३६०६	
दुविधं च भावकस्मिणं	६५३	३८८६	दुविहो तस्स अवण्णो	३६०१	
दुविधं च होई तेण्णं	३२४		दुविहो य अणभिभूतो	३६३६	
दुविधं च होति मज्झं	२४३२		दुविहो य पंडता खलु	३५७२	५१४६
दुविधा छिण्णमच्छिण्णा	४५४६		दुविहो य होइ कुंभी	३५६१	
दुविधा रायमराया	३६३५		दुविहो य होइ दुट्ठो	३६८१	४६८६
दुविधे गेलणम्मि	११६६	६३७६	दुविहो य होइ धम्मो	३२६६	
”	२५२४	३५५०	दुविहो य होइ पंथो	५६४५	३०५१
”	२५१२	६३६६	दुविहो य होइ कीवो	३६३८	
दुविधे तेदच्छम्मी	२२५६		दुविहो य होति कालो	६१२५	

दुविहो य होति दीवो	५४०४	३४६१	दो चेव निसिज्जाओ	६२१७
दुविहोहावि वसभा	४५८५		दो चेव सया सोला	२१३३
दुव्वणम्मि य पादम्मि	७५५		दोच्चेण आगतो	५७४१
दुस्सिक्खियस्स कम्मं	४१२२		दोच्चं पि उग्गहो त्ति य	५०६६
दुहओ गेलणम्मी	३२८६		दो जोयणाइं गंतु	४२४७
दुहतो वाघातो पुण	३७८५		दोण्णि उ पमज्जणाओ	२८२
दुहतो वाघायम्मी	३७८६		"	३१३४
दुइज्जंता दुविहा	२६२७		दोण्णि तिहत्थायामा	१४०६
दत्तित्तं खु गरहितं	४४००		दोण्णि वि विसीयमाणे	५५५७
दूमिय धूमिय वासिय	२०४८	५८४	दोण्णि वि सहू भवंति	१७४५
दूरगमणे णिंसि वा	५७७०		दोण्णेकतरे खमणे	६३७०
दूरे चिक्खिल्लो	४५३६		दोण्णेगतरे काले	१०६२
दूसपलासंतरिए	६१२		दोण्हट्टाए दोण्ह वि	२७५३
दूसियवेदो दूसी	३५७३	५१५०	दोण्ह वि उवट्ठियाए	६००३
देवतपमत्तवज्जा	६६८६		दोण्ह वि कयरो गुरुओ	२६०४
देवा हु रो पसण्णा	३०८२	१६८१	दोण्ह वि चियत्ते गमणं	५६७७
देविदवंदिएहि	६१८७		दोण्ह वि समागता	५६७८
देसकहा परिकहणे	२७७८	२६६७	दोण्हं जइ एक्कस्सा	३२२४
देसग्गहणे वीए	५३६३	३३२२	दोण्हं पि गुरुमासो	५६१
"	५२४०	"	दोण्हं पि जुवलयाणं	५०४१
देसच्चाई सव्वच्चाइ	४८१		दोण्हं वच्चं पुव्वचियं तु	६४
देसपदोसादीसुं	३३२५		दो थेर खुहु थेरे	३७६६
देसम्मि बायरा ते	२०४३		दो दक्खिणापहा वा	६५६
देसं भोच्चा कोई	३८६३		दो पत्त पिया पुत्ता	३७६७
देसिय वाणिय लोभा	५०८१	२८२६	दो पायाऽणुण्णाता	४५२४
देसिल्लगं पम्हजुयं मणुण्णं	५८२१	३६६८	दो मासे एसणाए	५५४२
देसे सव्वुवहिम्मि य	४५४८		दो रासी ठावेज्जा	६४४७
देसो नामं पसती	४६४३		"	६४४१
देसो व सोवसग्गो	४७६६	६३७	दोरेहि व वज्जेहि व	६३७
"	४८०१	६४२	दो लहुया दो गुरुया	३५२८
देसो सुत्तमहीयं	६२६७		दो लहुया दोसु लहुओ	१५८६
देहजुतो वि य दुविहो	२१६७		दो वारियपुव्वुत्ता	२५२७
देहविउगा खिप्पं	३६०१		दोसविभवारुवो	६६५६
देहविभूसा वंभस्स	५०६५		दोसा जेण णिरुं भंति	५३७३
देहस्स तु दोव्वल्लं	१८६१	५६०४	दोसा जेण निरुं भंति	५२५०
देहहिको गणणेक्को	६५४		दोसा वा के तस्सा	११३६
दोग्गइ पडणुपधरणा	१५		दोसाभरगा दीविच्चगाउ	६५८
दोगच्च वइतो माणे	३७६		दोसु वि अलद्धि कण्णावरेंति	५४७

दोसु वि अक्वोच्छिण्णो	११८७	३५६८	न वि रागो न वि दोसो	४२६७	
दोहि तिहि वा दिणोहि	२७७०		नडपेच्छं ददूणं	२६७६	५३५२
दोहि वि गुणा एते	६६३१	४४२४	नटमादी ठाणा खलु	२५६८	
"	६६३४	"	नदिखेडजणवडल्लुग	५६०१	
"	६६३७	"	नयवातमुहुमयाए	६०६३	
दोहि वि गिणिसिज्जणोहि	२१६०		नंदिपडिग्गह वि पडिग्गह	४५६३	
दोही तिहि वा दिणेहि	६३७५		नंदीतूरं पुण्णस्स	३०२०	१५४६
ध			नाळण य वोच्छेदं	२७११	
			नाणम्मि तिण्णि पक्खा	५४६२	५३६७
घणघुयमच्चंकारिय-भट्टा	३१६४		नाणाति तिविहा मग्गो	२८६६	
घण्णंतरितुल्लो जिणो	६५०७		नाणिंविट्ठं लमति	४५०४	
घण्णाइ चट्ठवीसं	१०२६		नाणुज्जोया साहू	५३६६	३४५३
घण्णाइ रतणथावर	१०२८		नाणे दंसण-चरणे	७	
घम्मकहातोऽहिज्जति	४४८१		नाणे महकप्पसुयं	५५७२	५४७२
घम्मकहा पाटेंति य	३६१५	५१८२	नातिक्कमते आणं	२६१७	५८१४
घम्मकहि वादि त्तमए	४४८०		नातो मि त्ति पणासति	३५६६	
घातादिपिड अविमुद्ध-	४४७३		नामं ठवणा आणं	४७०८	८३६
घातुनिधीण दरिणो	१५७७		नामं ठवणा दविए	३३५६	
घारयति धीयते वा	४३७६		"	६२८२	११२६
घारेत्तव्वं जातं	१७६१		"	६२६६	
घारोदए महासल्लजले	५२६२	३४२२	नामं ठवणा पक्कं	४८६८	१०३४
घिति-वल्लुत्तो वि मुग्गी	१७६०	३७८३	नामं ठवणा भिक्खू	६२७४	
घिति सारोरा सत्तो	४८१५	६५६	नामं ठवणा भिण्णं	४७१६	८५८
धीरपुरिसपण्णत्ते	३६११		नामं ठवणा वर्यं	५००२	६०३
धीरपुरिसपरिहाणी	५४२३		नायगमनायगं वा	३७४७	
धीमु'डिओ दुरणा	४७५६	८६८	नावजले पंकथले	६०२४	
धुवणाऽधुवणे दोसा	५८३६	४०१२	नावा- डग्गमटप्पायरोसणा	६००१	
धुवल्लो वा दव्वे	४०५		नावाए-ग्निवणु वाहण	६०१२	
धुवल्लोओ उ जिणाणं	३२१३		नावादोमे सव्वे	६०१६	
"	३१७३		नावासंतारपहो	६००७	
धूमादी वाहिरितो	३६६५	५२१५	नाविय-साहुपदोसे	४२१४	५६२४
धोतम्मि य निष्पण्णे	६१६७		निककारणम्मि दोसा	५२८४	३३६२
धोतस्स व रत्तस्स व	१६७४	२६७८	निक्खम-पवेसवज्जण	५२६२	३३७१
न			निगंथी-गमण-पहे	१७८६	
			निम्मल्लगंधगुलिया	४४७६	
न पणासेज्ज लट्ठत्तं	३६३४		नियमा तिकालविसए	२६६३	
न वि जोइसं न गणितं	३६७६		"	४४०५	
न वि जीतिधं न गणियं	५२८६		नियमा पच्छाकम्मं	४११४	
न वि रागो न वि दोसो	४६७६				

निर्वस्वसग्ननिमित्तं	६५६३		पच्छाकड-साभिगह	७०८
नीसट्टे सु उवेहं	५३००	३३७६	"	७१७
नीसंकमणुदितो अतिच्छित्ता	२६११	५८०८	"	७२५
नीसंकिओ वि गंतूग	४५६६		"	१६२६
नेच्छति जलूग वेज्जे	३१६६		"	४०३१
नोइंदियस्स विसओ	४२६८		पच्छाकडादिण्हि	४६५२
नोवेकव्रति अप्पाणं	३३१६		पच्छाकडादि जयग्गा	३०४४
प			पच्छाकडे य सण्णी	३०२३
			पच्छाकम्ममत्तिते	५४१६
पउग्गम्मि य पच्छित्तं	३०७२		पच्छाकम्मपवहणे	६८२
पउमण्यल मातुल्लिगे	१६४२		पच्छा वि होंति विगला	३७१०
"	४८६१	१०२६	पच्छा संथवदोसा	१०४४
पउमुण्यले अकुसलं	७५४	४०२५	पच्छित्तऽगुपुब्बीए	६६२१
पउमुण्यले अकुसले	५८४६	४०२५	पच्छित्तऽगुवाएणं	६७००
पउरऽण्णपाणगमणे	२३६०	४८२७	पच्छित्तपस्वग्गाया	४१४६
पक्के भिण्णाऽभिण्णे	४६००	१०३६	पच्छित्तस्स विवट्ठी	२०८१
पक्खिय चउवरिसे वा	२१४२		पच्छित्तं खु वहेज्जह	४८७७
पक्खिय चउ संवच्छर	६३१३		पच्छित्तं दोहि गुहं	२२०७
पक्खिय-मासिय-दम्मासिण	३२१४		"	२२१३
पक्खी-पसुमाईणं	२३२३		"	२२२१
पक्खी-पसुमादीणं	२३२१		पच्छित्तं पण जहण्णे	५८६८
"	२३२७		पच्छित्तं बहुपाणा	३२०२
पक्खे-पक्खे भावो	३५६७		पच्छित्तेण विसोही	६६७७
पक्खेवयमादीया	१२१२		पज्जोसवणाए अक्खराइ	३१३८
पगतीए संमतो साधु	४१०		पज्जोसवणा कप्पं	३२१८
पगती पेलवसत्ता	५०७३	२८१८	पज्जोसवणा काले	३१३७
पच्चक्खाणं भिक्खु	३६८६		पज्जोसवणा केसे	३२१०
पच्चक्खाते संते	१६१५		पट्टो वि होति एगो	१४०१
पच्छण्णा असति गिण्हग	२३८१	४८१८	पट्टविओ मे अमुओ	२६८८
पच्छण्णा-पुव्वभगिते	२३८७	४८२४	पट्टवित वंदिते ताहे	६१४३
पच्छण्णा सति वहिता	२३६६	४८०४	पट्टवितम्मि सिलोगे	६१६१
पच्छाकड-व्रत-दंसण	१०६४		पट्टविता ठविता या	६६४३
पच्छाकड-साभिगह	६२६		पट्टविया य वहंते	६६४४
"	६३८		पट्टीवंसो दो धारणाओ	२०४६
"	६४४		पडणं अवंगुतम्मि	५८६५
"	६४६		पडणं तु उप्पत्तित्ता	३८०३
"	६६१		पडिकारा य वहुविधा	२४१६
"	६६७		पडिकुट्ट देस कारण गता	३४२६
"	६६८			

पडिकुट्टे ललगदिवसे	६३८३		पडिलाभित वच्चता	४४७२	
पडिगमण अणुतिविय	५३८	२६०३	पडिलेहणअणुणवणा	८६२	
"	२५४८	१०५४	पडिलेहण पप्फोडण	१४१८	
"	४८१७	१०५४	"	१४२२	
पडिगमणादिपदोसे	३८२८		"	१४३३	
पडिगामो पडिवसभो	४६७५		पडिलेहणमाणयणे	१३५५	
पडिचरणपदोसेणं	४५०३		पडिलेहण-मुहपोत्ती	३४६३	
पडिचरती आचरती	३५६६		पडिलेहण-सज्जाए	६३४७	
पडिजगति गिलाणं	३२७२	४३०४	पडिलेहणसंथारे	३६०८	
पडिजगिता य विप्पं	१७६२	३७८५	पडिलेहणा तु तस्सा	१४१७	
पडिणीयता य केई	३६६७		पडिलेहणा दिसाणं	१८७०	
पडिणीयता य अणो	२२७०		पडिलेहणा पमज्जण	१४२३	
पडिणीय पुच्छणे को	५६८५		पडिलेहणा पमज्जणा	१४२०	
पडिणीयम्मि वि भयणा	६३६०		पडिलेहणा बहुविहा	४१४६	
पडिणीय-मेच्छ-सावत	१७३४	३७५६	पडिलेहणा य पप्फोडणा	१४१६	
पडिणीयया य केई	३६६८		पडिलेह दियतुयट्टण	५५५५	५४५४
पडिणीय विसक्खेवो	१४८०		पडिलेहपोरिसीओ	३०००	१६०३
पडितं पम्हुट्ठं वा	१७०३		पडिलेहा पलिमंथो	६४६	३८७७
पडिपक्खो तु पटुट्ठो	२२५६		पडिलेहितम्मि पादे	१४२१	
पडिपहाणियत्तमाणम्मि	५३१५	२३८६	पडिलेहियं च खेतं	२४६४	२०६६
पडिपुच्छ-दाण-गहणे	१७८७		पडिलेहोभयमंडलि	६५६	२३७६
पडिपुच्छं अमणुणो	२०६६		पडिलोमाणुलोमा वा	३८८२	
पडिपुण-हत्य पूरिम	२१७०		पडिवत्तीइ अकुसलो	१६६	
पडिपोगले अपडिपोगले	२५४२		पडिविज्जथंभणादी	४४५६	
पडिवद्धलंदि उगह	२१२२		पडिसिद्ध समुद्धारो	४२४	
पडिवद्धा सेज्जाए	५१७		पडिसिद्धं तेगिच्छं	४८०६	
पडिवद्धा सेज्जा पुण	५१८		पडिसिद्धा खलु लीला	४८४२	६८२
पडिमंतथंभणादी	४४६१		पडिसेवे पडिसेहो	१८३६	
पडिमाए भामियाए	५३७७	३४६५	पडिसेवे वाघाते	४२५	
पडिमाजुत देहजुयं	३६२		पडिसेवओ उ साधू	७६	
पडिमाजुते वि एवं	६०७		पडिसेवणाए एवं	५१३२	२४८२
पडिमान्नामण ओरुमणं	५४०५	३४६६	"	५१७४	"
पडिमापडिवण्णाराणं	३१४७		"	५१८७	"
पडिमेतरं तु दुविहं	५११६		पडिसेवणातियारा	३८७२	
पडियरिहामि गिलाणं	२६७६		पडिसेवणा तु भावो	७४	
पडियाणियाणि तिण्हं	७७६		पडिसेवणा य संचय	६६१६	
पडिन्नामणज्ठम्मो	५८१	४६३४	पडिसेवणा वि कम्मोदण	६३०८	
पडिलाभणा तु नद्धी	५८४	४६३७	पडिसेवती विगतीतो	३८६६	
			पडिसेवती तु पडिसेवणा	७३	



पडिसेवंतस्स तहिं	३७५	४६५८	पढमस्स ततियठाणे	५१६६
"	२२४८	"	पढमस्स होति मूलं	६६५६
पडिसेविताणि पुव्वं	६६६२		पढमं तु भंडसाला	५३६३
पडिसेहगस्स लहुगा	५४६२	५३६७	पढमं वितियं ततियं	५६७२
पडिसेहण णिच्छुभणं	५६८०	३०८६	पढमं राइं ठवेत्ते	२६६४
पडिसेहणा खरंटणा	४७५४	८६६	पढमा ठवणा एक्को	६४५६
पडिसेहे अलंभे वा	३४४६	२८६६	"	६४६०
पडिसेहेऽजयणाए	३०४२		"	६४६१
पडिसेहे पडिसेहो	४६७७		पढमा ठवणा पक्खो	६४४६
"	४६६८		"	६४५०
पडिसेहो अववाओ	६६८४		"	६४५१
पडिसेहो जा आणा	६६८५		पढमा ठवणा पंच य	६४५४
पडिसेहो वा ओहो	६६६६		पढमा ठवणा पंचा	६४५५
पडिहरिणीओ पडिहारिओ	१३००		"	६४५६
पडिहारिए जो तु गमो	१६५२		पढमा ठवणा बीसा	६४४३
पडिहारिते पवेसो	१७५०	३७७३	"	६४४४
पडिहारियं अदेत्ते	३३४		"	६४४५
पडुपण्णऽणागते वा	२६५७		पढमाए गिण्हिऊणं	४१६१
पढमग-भंगो वज्जो	२४६६	६३८३	पढमाए पोरिसीए	५७८
पढमचरमाहि तु	१४२७		पढमाए वितियाए	२६०२
पढम-ततिय-मुक्काणं	३३७३	२७७४	पढमालिअ करणे वेला	२४६
पढमदिणवितिय-ततिए	२७६५		पढमासति अमणुण्णो	२३८५
पढमदिणाणापुच्छे	६३७२		पढमासति सेसाण व	२३७१
पढमदिणे म विफाले	६३२६		पढमित्तुगम्मि ठाणे	५१२६
पढमवितिएसु कप्पे	३८७७		"	५१६८
पढमवितिएहि छड्डे	३८२७		"	५१८३
पढमवितिय दिवा वी	२६५६	५८५१	पढमित्तुगम्मि तवारिह	५१७०
पढम-वितियदुतो वा	४७६		पढमुस्सेतिममुदयं	५६७१
पढम-वितियाण करणं	६६५		पढमे गिलाणकारण	५३४६
"	७०४		पढमे पंचविधम्मि वि	७७०
"	७१४		पढमे पंच सरीरा	१७६६
"	७२२		पढमे वितिए ततिए	११४७
पढमवितियातुरस्स य	३४२३	२८७५	"	२५३६
पढमम्मि जो तु गमो	१४४८		पढमे भंगे गहणं	४११७
पढमम्मि य चतुलहुगा	१३१५	४६१७	पढमे भंगे चउरो	४६२८
पढमम्मि य संघयणे	३६४८		पणगं च भिण्णमासो	५४६१
पढमम्मि समोसरणे	३२२२		"	२६४८
"	३२५३		पणगं तु वीय घट्टे	२५०

पणगातिमतिक्कंतो	१५६७		पदमग्गसंकमालंवरो य	६१६	
पणगाति मासपत्तां	४६४२	१०७६	पदमग्गो सोवाग्गा	६२०	
पणगातिरेग जा पण—	६५७६		पप्पडए सच्चित्तो	१५४	
पणगाति हरितमुच्छग्ग	६३६		पप्पायरियं सोवी	८७०	
पणगादि असंपादिमं	५३३४	२४०६	पमु-अग्गुपमुग्गो आवेदणं	१३४८	५७४
पणगादि संगहो होति	६३५०		पमाग्गाइरेगवरणे	५८२४	४००१
पणतीसं ठवरणपदा	६४५३		पम्हूठ्ठ अवहए वा	२५५६	
पण दस पण्णर वीसा	५३३३	२४०८	पम्हूठ्ठे पडिसारग्ग	६३६४	
पणयालदिग्गे गणिग्गो	२८१०	५७७६	पयतो पुग्ग संकलिता	४३०२	
पणयालीसं दिवसे	५८५७	४०३२	पयला उल्ले मए	२६८	६०६६
पणवीसजुतं पुग्ग	२१०४		"	८८२	"
पणहीण तिभागद्धे	२६०८	५८०५	पयला गिग्ग-नुयट्ठे	१६६१	३७१४
पणिग्गवाण जोगजुत्तो	३५		"	१६६२	
पणिग्गा य भंडसाला	५३८६	३४४४	"	१६६४	३७१५
पण्णत्ति चंद-सूर	६२		पयलासि किं दिवा	३००	६०६८
पण्णत्ति जंवुद्दीवे	६१		परतित्थियउवगरणं	३४३६	२८६१
पण्णरस दस व पंच व	३२६५		परतो सयं व राग्गच्चा	३८४४	
पण्णवग्गामेत्तमिदं	२१६८		परदेसगए ग्गातुं	३२७४	४३०६
पण्णवग्गिज्जा भावा	४८२३		परपक्खम्मि य जयग्गा	५२७२	३३५१
पण्णवग्गे च उवेहं	३३५६		परपक्खम्मि वि दारं	५२६७	३३७६
पण्णाए पण्णट्ठी	६४७७		परपक्खं तु सपक्खे	३६६३	
पण्णासा पाडिज्जति	३१५५		परपक्खे उ सपक्खो	३६८८	
पत्तिदिवसमलभंते	३४२१		परपक्खो उ सपक्खे	३६८६	
पत्तम्मि सो व अत्तो	४५७३		परपक्खो परपक्खे	३६६०	
पत्तां पत्तावंधो	१३६३	३६६२	परमद्वजोयग्गाओ	३२८५	
"	१३६६	४०८०	"	३२६३	
"	५७८७	"	परमद्वजोयग्गातो	४१६७	
पत्तां वा उच्छेदे	३४६		"	४१६८	५२८७
पत्ताणं पुष्पाणं	४८४०	६८०	"	४१६५	५३१४
पत्ताग्गमसंसत्तां	२७८		परवत्तियाग्ग किरिया	२७८१	
पत्तावंधपमाणं	५७६०	३६७१	परवयग्गाऽऽउट्ठेउं	१३७७	४६४१
पत्तेगं साहारग्ग	२५४		परसक्खियं गिग्गं वति	३०४७	
पत्तेयचट्ठगासति	२३६८	४८०६	परिकम्मग्गमुक्कोसं	६८६	
पत्तेय समग्ग दिक्खिय	२३८०	४८१७	परिकम्मणे चउभंगो	२०८५	३६६१
पत्तेयं पत्तेयं	६५०१		"	५८१४	"
"	६५७१		परिगलग्ग पवट्ठो वा	६०४३	
पत्थारदोमकारी	५१६१	२५११	परिघट्ठग्ग गिग्गमोयग्ग	६६४	
पत्थिव-पिडडधिकारी	२४६६		परिघट्ठणं तु गिग्गणं	७०६	

परिट्टावण-संकामण	२६६		पलिमंथो अणाइणं	१५६०
परिणामओ उ तहि	४८७५		पल्लवि कोयवि पावारण—	४००२
परिणामतेसु अच्छति	३४८८		पवत्तिणि अभिसेगपत्त	६०२२
परिणिट्ठियजीवजडं	३४६६	२६२१	पवडंते कायवहो	४२७०
परितावणा य पोरिसि	४७५६	६०२	पविसंते णिक्खमंते	५७८२
परितावमणणुकंपा	२८६३		पव्वज्जएगपक्खिय	५५१७
परितावमहादुवखे	३११६	१८६६	पव्वज्जाए अभिमुहं	६२६४
परिपिडित्तमुल्लावो	४४५७		पव्वज्जाए सुएण य	५५१६
परिभायणं तु दाणं	८३७		पव्वज्जादी आलोयणा	३८६६
परिभोगविबच्चासो	१५२६		पव्वज्जादी काउ	३८१२
परिमितभत्तगदाणे	४१७४	५२६३	”	३६४०
परियट्ठणाणुओगो	२१२५		पव्वज्जासिक्खावय	३८१३
परियट्ठिए अभिहडे	३२५१	२७६	पव्वयसी ग्रामं कस्स त्ति	२७२२
परियट्ठियं पि दुविहं	४४६३		पव्वसहितं तु खंडं	५४११
परियाएण सुतेणं य	६२४०		पव्वावणं गीयत्थे	३५६३
परियाय परिस पुरिसं	४३७३		पव्वावणिज्ज-तुलणा	२४१६
परियायपूयहेतुं	५४३७		पव्वावणिज्ज-त्राहि	२७००
परियार सद्दजयणा	५४३	२६०८	पव्वाविओ सियत्ति य	३७४६
परियासियमाहारस्स	३७८८		पव्वावेति जिणा खलु	३५३५
परिवसणा पज्जुसणा	३१३६		”	३५५५
परिवार-पूयहेउं	५४६१	५३६६	पसत्थविगतिग्गहणं	३१६६
परिवारियमज्झगते	५७७६		पसिडिल-पलंव-लोला	१४२६
परिसंतो अट्ठाणे	२४४७		पसिणापसिणं सुविणे	४२६०
परिसं व रायदुट्ठे	४११		पहरणमग्गणे छग्गुरु	११२
परिसाए मज्झम्मि पि	४६८४		पंको पुरा चिक्खल्लो	१५३६
परिसाडिमपरिसाडी	१०१३		पंच उ मासा पक्खे	२८२८
”	१२१८		पंच परूवेऊणं	७६२
”	१२८१		”	४२१०
”	१३१०		पंच व छ सत्त सते	३८३०
”	१२८७		”	३८३७
परिसेसु भीरु महिलासु	३५७०		पंचविधचिलिमिणीए	६५६
परिहरणा वि य दुविहा	४०७४	१८३१	पंचसता चुलसीता	६४७०
परिहार-शुपरिहारी	६६११		पंचंगुलपतोयं	६४४
परिहारतवकिलंतो	१८६५		पंचण्ह वि अग्गा रां	५७
परिहारिगमठवेंते	२७७७	२६६६	पंचण्हं अण्णतरे	७८४
परिहीणं तं दव्वं	३०७८	१६७७	पंचण्हं एगतरे	५५५२
परीसहचमू	३६२५		”	५५६८
पलिउंचण चउभंगो	६६२४		पंचण्हं गहरोणं	४२११

पंचशृङ्गं पञ्चदश	६४३६		पाउगस्स अल्ले	२४४५	
पंचशृङ्गं वण्णुगुणं	६४४	३८८३	पाउतमपाउता घट्टु मट्टु	५४६६	
"	४६३२		पाउच्छगुणं दुविक्कं	८१६	
पंचशायरियाइ	२६२४		"	१६४४	
पंचतिरिन्नं दब्बे उ	२१८२		"	१६४३	
पंचमगम्मि वि एवं	५१२३	२४३४	पागुगु अहातच्चं	४३०१	
पंचमच्छन्नमियागु	२६०३	५८००	पागुगु देति लोणां	४४२५	
पंचमहच्चयनेदी	६२०६	३३०	पागुगु वीयमोई	४३६३	६३३
पंचमे अणुमग्गादी	५६४१	३०४३	पाडेज्ज व भिदेज्ज व	४२०५	
पंचविधम्मि वि वत्थे	३८१		पागुगुजोगाहारे	३८८०	
पंचविक्कं मज्झायं	२३३३		पागुगादीणि जोगाई	३८५०	
पंचविहम्ममज्झायस्स	६११८		पागुट्टा व पविट्टो	१६६४	१६२२
पंचविह्वण्ण-कम्मिणे	६३५	३८६३	पागुदयम्ममगुकरणे	४५३३	
पंचसत्तदागगहणे	३०४५	१६४६	पागुसुगुणा य पुंजति	६३३३	
पंचसमितस्स सुणिग्गो	१०३		पागुतिपातमादी	१६६६	३६६३
पंचसयमोणि अगणी	५१५३	२५०३	पागुदिरहिन्दे	२३२	
पंचसया वृत्तमीओ	५६२१		पागुा सीत्त कुंथु	१८४५	
पंचसया वृत्तमीया	५६१६		पातणिमिन्नं वमिन्नां	४६८३	
पंचसया चोयाला	५६१६		पादच्छिन्नाम-कर.	४६२४	
पंचसया जतिगुं	३६६५		पादप्पमज्जगादी	४६४६	
पंचादिहत्थ पंथे	१४३		"	५०६१	
पंचादी गिक्किन्ने	२०३		पादस्स जं पमाणं	६१५	३८४८
पंचादी नट्टुगुला	२४६		पादादी तु पमज्जगु	१८५५	
"	३८२		पादे पमज्जगादी	२२८१	
पंचादी नट्टु नट्टुया	३४१		पादेसुं जो तु गमो	१५००	
पंचादी मसगिद्धे	१३८		पादोवगमं मगियं	३६४०	
पंचामवण्णवत्तो	४३५१		पादोसिय अट्टरत्ते	६१५१	
पंचगुं दोपामे	३२६४	४०६५	पामाद्धम्मि काने	६१५५	
पंचगतरे गीगु	५५६६	५४६८	पमाग्गातिरेगयरणे	४५२३	
पंचेदियागा दब्बे	६१००		पामिच्चिन्न पामिच्चिन्नं	४४८६	
पंचगुं दान्तिगुं कीदे	३५६१	५१६६	पायच्छिन्नाम-कर	४५७२	
पंचुइया मि वरामे	१६८५		पायच्छिन्नं अमंनम्मि	६६७८	
पंचमुर-परिग्गाद्धे	१६०१		पायच्छिन्नो पुच्छा	४८४५	६८५
पंचा उ अमंनन्ती	५१४३	२४६३	पायप्पमज्जगादी	२३०४	
पंचमहायमसट्टो	५४८८	५३६३	"	३३१२	
पंचे ति गवदि गेम्भं	२४४३		पायम्मि य जो उ गमो	११६४	
पंच अचिन्नरयो	६०८६		पायसहग्गुं छेत्ता	३१८३	
पंच य पंच-अहिरे	६०८५		पायावच्च वृद्धं विय	२२००	

पायावच्च परिगहे	५१२१	२४७२	पासे तणाण सोहरा	५३६५
"	५१२४	"	"	५४०७
"	५१३०	२४८०	पासो त्ति वंघणं ति य	४३४३
पारणग-पट्टिता-आणितं	१६७६	३७००	पाहिज्जे णाणत्तं	३०४६
पारंचिओ ण दिज्ज व	५६४५		पाहुडिय त्ति य एगे	३०१२
पारंचि सतमसीतं	६६१७		पाहुडिया वि हु दुविधा	२०२५
पारिच्छ-पुच्छमणह	२४१७		पाहुणयं च पउत्थे	११७६
पावं अवाउडातो	५३१६		पाहुणविसेसदारो	४१७७
पावं अवायभीतो	६६६७		पाहुण तेणण्णोण व	५०५६
पावंते पत्तम्मि य	४७७०	६११	पिप्पलग णहच्छेदण	६७६
पासग-मट्टिणिसीयण	६६४		पिप्पलग विकरणट्ठा	३४३६
पासत्थ-अहाछंदे	४३५०		पियधम्मे दढधम्मे	२३६५
"	४६७१		"	२४४६
पासत्थमहाछंदे	४६६२		पियधम्मो दढधम्मो	१७५१
पासत्थमादियाणं	४०५७		"	६१३१
पासत्थादि-कुसीले	१८४०		पिय-पुत्त खुडु थेरे	३७६४
पासत्थादिगयस्सा	२८२६		पियपुत्तथेरए वा	११७६
पासत्थादिममत्तं	४०६		पिसियासि पुव्व महिसि	१३६
पासत्थादी ठाणा	४६७०		पिहितुन्निभणकवाडे	५६५५
पासत्थादी पुरिसा	४६६१		पिंडस्स जा विसुद्धी	६५३४
पासत्थादी मुंडिते	५५७०	१२६२	पिंडस्स परूवणता	४५७
पासत्थि अण्णसंभोइणीण	२०८६		पिंडे उगम उप्पादणोसण	४५६
पासत्थि पंडरज्जा	३१६८		पिंडो खलु भत्तट्ठो	१००६
पासत्थोसण्णकुसीलठाण	३८८३		पीढग-णिसज्ज-दंडग	१४१३
पासत्थोसण्णाराणं	१८२८		पीढगमादी आसण	४०२१
"	१८३२		पीढफलएसु पुव्वं	४०२५
"	४६६६		पीतीसुण्णो पिसुणो	६२१२
पासवणट्ठाणसरूवे	५१६	२५८५	पुच्छ सह-भीयपरिसे	४६२५
पासवण-पडणणिसिकज	१५५५		पुच्छंतमणक्खाए	३६८४
पासवणमत्ताएगं	५४५	२६११	पुच्छा कताकतेसुं	८६५
पासवणुच्चारं वा	१८६६		पुच्छा सुद्धे अट्ठा	३७४८
"	१८६६		पुच्छाणं परिमाणं	६०६०
पासवणुच्चाराणं	१८५६		पुच्छाहीणं गहियं	५०५८
पासवणुच्चारादीण	१८६०		पुंजा पासा गहितं	१३१२
पासंडिणित्थि पंडे	४७४६	८८८	पुट्ठो जहा अवद्धो	५६०८
पासंडी पुरिसाणं	२३८२	४८१६	पुढवि-तण-वत्थमातिसु	५७६५
पासंदणे पवाते	५७०५		पुढवि-दग-अगणि-मारुअ	३६५१
पासित्ता भासित्ता	१८२३		पुढवि-ससरक्ख-हरिते	२०११

पुढवी-आउक्काए	१४५		पुरिसाणं जो तु गमो	१४५७	
पुढवी-आउक्काते	१३७५	४६३६	पुरिसित्थी आगमणे	५५३	
पुढवी-ओस सजोती	५५८		पुरिसेसु भीरु महिलासु	३५७०	५१४७
पुढवीमादीएसु	२३०८		पुरिसेहिं तो वत्थं	५०७१	२८१६
पुढवीमादीएसू	४६४८		पुरिसो आयरियादी	१०६६	
पुढवीमादी ठाणा	४२५७		पुरे कम्मम्मि कयम्मी	४०६२	
पुढवीमादी थूणादिएसु	४६४७		"	४०६५	
पुणरवि दव्वे तिबिहं	५००४	६०५	"	४०६७	
पुणरवि पडिते वासे	१२४३		पुव्वखंतोवर असती	१७३	
पुणम्मि शिम्भयाणं	३२५८	४२८८	पुव्वगते पुरओ वा	१०८६	
पुत्तो पिता व जाइतो	१२६७		पुव्वगयकालियसुए	५४४७	
पुत्तो पिया व भाया	१७१४	३७३६	पुव्वगहितं च नासति	६०७१	
"	१७१६	३७४१	पुव्वघरं दाऊणं	२०२६	१६७८
पुप्फग गलगंडं वा	४३२८		पुव्वण्हमपट्टविते	२०४०	१६८६
पुयातीणि विमद्द	३०६१		पुव्वण्हे अवरण्हे	२०३६	१६८५
पुरकम्मम्मि य पुच्छा	४०५६	१८१६	पुव्वतव-संजमा होंति	३३३२	
पुर-पच्छिमवज्जेहि	११६०	३५४१	पुव्वपयावितमुदए	१०७५	
पुरतो दुरुहणमेगते	४२५५	५६६४	पुव्वपरिगालियस्म उ	६०५२	
पुरतो य पासतो पिट्ठतो	३४४६	२६०२	पुव्वपरिसाडितस्म	८०१	
पुरतो य वच्चंति मिगा	३४४८	२६०१	पुव्वपवत्ते गहणां	२००८	
पुरतो वच्चति साधू	२४३८		पुव्वपविट्ठे गतरे	२४०६	
पुरतो व मगगतो वा	२४३७		पुव्वभणितां तु जं एत्थ	५२०१	२५५४
पुरतो वि हु जं बोयं	४०७१	१८२८	पुव्वभणितो व जयणा	५६८२	
पुराण सावग-सम्मदिट्ठि	५६७१	३०८०	पुव्वभवियपेम्भेणां	३६५४	
पुराणादि पण्णवेत्तं	५७१८	३१३०	"	३६५५	
पुराणेषु सावतेसु	६०४६		पुव्वभवियवेरेणां	३६४४	
पुरिमच्चरिमाण कप्पो	३२०३		"	३६५६	
पुरिमंतरंति भूयगिह	५६०२		पुव्वमभिण्णा भिण्णा	४८६४	१००३
पुरिसज्जाओ अमुओ	२०३७	१६८६	पुव्वं अदता भूतेसु	६२७	
पुरिस-रापुंसा एमेव	८७		पुव्वं अपासिक्कां	६७	
पुरिसम्मि इत्थिगम्मि य	२७०६		पुव्वं गुरुणि पडिसेविक्का	६६२२	
पुरिसम्मि दुव्विणीए	६२२१	७८२	पुव्वं चिय पडिसिद्धा	३७७२	
पुरिससागरिए उवत्सयम्मि	५२०३	२५५६	पुव्वं चित्तेयव्वं	५४६४	
पुरिसा उक्कोस-मज्झिम	७७		पुव्वं तु असंभोगी	४६१७	
पुरिसा तिबिहा संघयणा	७६		पुव्वं दुच्चरियाणां	३५७७	
पुरिसा य भुत्तभोगी	५३७	२६०२	पुव्वं पच्छा कम्मे	५७७७	
पुरिसाणं एगस्स वि	२६७२		पुव्वं पच्छा संश्रुय	५७७२	
पुरिसाणं जो उ गमो	२२८६		पुव्वं पच्छुद्धिद्वं	५५०८	५४११

"	५५१०	५४१३	पोग्गल असती समितं	२८८
"	५५१२	५४१५	पोग्गल वेंदियमादी	३४५६
"	५५१३	५४१६	पोग्गल-मोयग-दंते	१३५
पुव्वं पच्छुदिट्ठे	५५०७	५४१०	पोंडमयं वागमयं	१६६५
पुव्वं पि धीर सुगिया	१६३३		पोत्थगजिणविट्ठंतो	४००४
पुव्वं भणिता जतणा	५६६३	३०६१	पोरिसिणासण परिताव	४७४२
पुव्वं मीसपरंपर	५६६३		पोसगमादी ठाणा	२५६६
पुव्वं व उवक्खडियं	५७१६		पोसग-संपर-णड-लंख	३७०८
पुव्वं वुग्गाहिता केती	३७००		पोसिता ताइं कोती	३८६२
पुव्वाउत्ता उवच्चुल्लुल्लि	३०५७	१६५६		फ
पुव्वाए भत्तपाणं	४१४१		फलगादीण अभिक्खण	२८६
पुव्वाणुपुव्वि पढमो	६६२०		फासुगमफासुगे वा	२६६०
पुव्वाणुपुव्वी दुविहा	६६१६		फासुगमफासुगेण य	३००३
पुव्वामयप्पकोवा	१८२५		फासुग जोणिपरित्ते	३४६७
पुव्वामयप्पकोवो	५६८८		"	५७००
पुव्वावरदाहिणउत्तरेहि	३६४७		फासुगपरित्तमूले	४५०
पुव्वावरसंजुत्तं	३६१८	५१८५	फासुयजोणिपरित्ते	२५६
पुव्वावरसंभाए	६०५४		फिडितम्मि अद्धरत्ते	६१५३
पुव्वाहारोसवणं	३१६७		फिडितं च दग्गि वा	५२६५
पुव्वाहीयं णासति	३२०७		फेडितमुद्दा तेणं	५२६७
पुव्वि पच्छाकम्मे	४०४४			ब
पुव्वुदिट्ठं तस्स उ	५५०६	५४१२	वत्तीसलक्खणधरो	३६५७
"	५५०६	"	वत्तीसां अट्ठसयं	४२६३
पुव्वुदिट्ठं तस्सा	५५११	"	वत्तीसा सामन्ने	४५१७
पुव्वे अवरे य पदे	१०५३		वत्तीसाई जा एक्कघासो	४६३६
पुव्वोगहिते खेत्ते	४६३२	१०६६	वत्तीसादि जा लंवणो	४२७
पुव्वोवट्ठमलद्धे	६८७		वद्धट्ठिए वि एवं	५७०१
पुहवीमादी कुलिमादिणसु	५६०२		वद्धिय चिप्पिय अविते	३६००
पूअलिय सत्तु ओदण	२३६५	४८०३	वम्ही य सुन्दरीं या	१७१६
पूतीकम्मं दुविधं	८०४		वलवण्णरुवहेतुं	४६६
पेच्छह तु अणाचारं	३४१८	२८७०	वलि धम्मकहा किड्डा	१३२६
पेजाति पातरासे	२४१८		वहि अंतऽसन्निसन्निसु	३२४६
पेसवितम्मि अदंते	३३६०	२७६१	वहि वुट्ठी अद्धजोयण	१४७५
पेह पमज्जण वासए	२०६	३४३६	वहिता व णिग्गताणं	५०६६
"	५३८१	"	वहिधोतरद्ध मुद्धो	६१०३
पेहपमज्जणसणियं	५२६८		वहियऽण्णगच्छवासी	२७६४
पेहाऽपेहकता दोसा	५८१३	३६६०	वहिया वि गमेतूणं	२३६४
पेहुण तंदुल पच्चय	१३७४	४६३८		

५१२

बहिषा वि ह्येति दौसा	२५१६		ब्रामन्ताग्रे पगगं	१४१४	
बहुआइणो इतरेमु	२२४५		बाह्याग्रे अंगुलीए व	१३२४	३३४६
बहुगमु गक्कदाणे	६४०१		बाह्याहि व पागहि व	४२०६	
बहुगमु गगदाणे	६४३०		बाहिउतिपट्टितस्स तु	११६०	३५३१
बहुगहि वि मावेहि	६४११		बाहिउट्टिया वसवेहि	३१५०	४२८१
बहुगहि जलकुडोहि	६५६६		बाहिरकारणेणु ममं	५४२५	
बहुपडिमेविय मो या	६४२८		बाहिर वेने छिणो	१२०१	३५८१
बहुभागे भन्ति भन्ता	१४		बाहिरउक्कणावलिआं	६२५५	
बहुयपदेस अन्नन	५५६६		बाहि आगमगुपहे	४३३०	४५४३
बहुतो पृच्छिज्जतां	२६८२	१८८४	बाहि तु वमिनुकामं	२४०२	४८३६
बंधं बद्धं च धोरं	३३८२	२३८३	बाहि डोहगुवाडग	११६६	३५३६
बंधं बद्धो रोहो वा	३३१६		बाहुल्या गच्छस्स तु	११६२	३५४३
बंधवतीगुं पुरतां	५५६		विइयपदमगुण्यज्जे	३६८३	
बंधवण विराधण	१३६४		"	३६८६	
बंधस्स वनस्स फलं	३५३१		विइयं पट्टागुलिआ	४३११	
बंधस्स होनभुत्तां	४०४६		विइयं पट्टागुलिआ	१३८५	
बाह्य-बाहि-गिबंमग	१४८५		विइयं वि समोसरणे	३२६६	४२६३
बादरपूनीयं पुग	८०६		विइयं वि ह्येति जयगा	५३१३	
बायालीयं दोमं	४४५		विइयं एतत्तकिच्च	४८३६	
बारस कोदव-कल्याण	३८३६		विइयं गंगांलोपि	४८५२	६६२
बारस अट्टग उट्टग	६४६६		विइयां वि य आगमां	६५०	
बारस बोद्धं पणुवोमशो	१३८८		"	६२५३	
बारस दस नव चैव तु	६५४३		वित्तिय गिलागागारं	१६१६	
बारस य चउव्वीमा	२१३२		वित्तियवत्तिगमु नियमा	५८८४	४०५६
बारसअंगुलदीहा	३१०		वित्तियपण गगानी	३३३५	
बारसमे उट्टेमे	५६६८		वित्तियपण कालगण	३०३१	
बारसाविहंमि वि नवे	४२		वित्तियपदज्जामिने वा	१३०३	४६०३
बायमरणेण य पुगो	३८११		वित्तियपद तेण सावय	६०००	५६६३
बायमरु-वृद्ध-अतरं	३२६३	४२६४	"	६०१३	
बायं पंडित उभयं	४८		वित्तियपददोमिण वि बद्ध	१११०	
बाया वृद्धा मेहा	११२८		वित्तियपदमगुण्यज्जे	५६६	
बाया मेहा किट्टा	३५४५		"	६१३	
बायादि परिचिन्ना	१६४६	१६०४	"	७६१	
"	१६४८	"	"	८३४	
बायि वृद्धे बीवि	३३४४		"	१४६४	
बायि वृद्धे गुपुंम य	३५०६		"	१५२३	
बायि मुने मुनी	३२०८		"	१५४३	
बायिनां वि नद्धं चैव	२१३३		"	१७८४	
बायांलमागुगुंय	३६३४		"	१८१७	
			"	१८२२	
			"	१८२३	



संभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

वितियपदमणप्पज्जे

१६६६

"

२००३

"

२०१६

"

२१५८

"

२१७१

"

२१७७

"

२१८०

"

२१८४

"

२१८७

"

२१९१

"

२१९४

"

२२२८

"

२२५४

"

२२६०

"

२२६८

"

२२७३

"

२२७५

"

२२७७

"

२२८०

"

२२८२

"

२२८५

"

२२९१

"

२२९४

"

२२९७

"

२३००

"

२३०२

"

२३०५

"

२३०९

"

२३११

"

२३१३

"

२३१५

"

२३२०

"

२३२२

"

२३२६

"

२३२८

"

२३३०

"

२३३२

"

२३३४

"

२३४०

२३४६

वितियपदमणप्पज्जे

२४३४

"

२४४४

"

२५४४

"

२५५०

"

२५६२

"

२५७०

"

२६२७

"

२७७१

"

३३०९

"

३३१३

"

३३३६

"

३३९६

"

३५०२

"

३७७९

"

३८०८

"

३९८४

"

४०२४

"

४०४१

"

४१२४

"

४३२७

"

४३६७

"

४३६८

"

४६२५

"

४६५०

"

४६९५

"

४६९६

"

४९५१

"

४९५५

"

५०९४

"

५४४१

"

५४५०

"

५७८४

"

५९०३

"

५९०८

"

५९०९

"

५९११

"

५९१३

"

५९१५

"

५९१७

५९२६

विनियमदमगुण्डने	५६८४	विनियमदं हांजमनं	११३७
"	५६६०	विनियमदं अण्वद्वे	३११६
"	५६६५	विनियमदं अदाणे	११०२
"	६२५७	विनियमदं आयरिए	२७३६
विनियमदमगुणादे	१५६६	विनियमदं उडुहं	८८५
विनियमदमगुणोणा	१६६२	विनियमदं गम्भनाणे	५६५३
"	२५२०	विनियमदं गेदन्ने	६१२
विनियमदमगुणोणे	१०७८	"	१४६६
"	१२०६	"	१५२८
"	१४६८	"	१५६१
"	१६६५	"	१६०६
"	१७६५	"	१६४१
विनियमदमगुण्डणे वा	६२८	"	२४७४
"	६३७	"	२४८७
"	६४३	"	३२८३
"	६४८	"	३२८१
"	६६०	"	३२८८
"	६६६	"	३३५२
"	६६७	"	३४२०
"	७०७	"	३४७६
"	७१६	"	३६६४
"	७२४	"	४०४५
"	१२२८	"	५७६६
"	४०३०	"	६०३४
विनियमदमवामयड	१३१३	"	६०४१
विनियमदमसति डीहं	२२०	"	६०४५
विनियमदमचियंगी	१०८८	"	६०५१
विनियमदमचिदिगे	५४६७	"	६२३१
"	५५३८	विनियमदं तल्लेदं य	४१६२
"	५५४७	विनियमदं तु गिलाणे	४०१३
विनियमददुम्भगुजतगा	५१३	विनियमदं तेगिच्छं	६१०
विनियमदं दूड-ज्जामिन	६४२	विनियमदं दोच्चे वा	३१२२
विनियमदं दूडज्जामिन	६४७	विनियमदं पर्यल्ले	४६६६
विनियमदं दूडमुट्टोणे	१६३४	"	४६८६
विनियमदं ममुच्छेदे	६२६५	विनियमदं पारंचिय	५६४४
विनियमदं माहृदंण	२८८७	विनियमदं संवेदी	३७६०
विनियमदं मेहृदीवण	१८८२	विनियमदं सान्ण	१५१८
विनियमदं मेहृदाहारे	५७८०	विनियमदं अत्तिवादी	२५६५
विनियमदं हांज अमहं	८०२	विनियमदं आहारो	१६१४

वित्तियपदे कालगते	३०६६	१६६८	वीथपय तेण सावय	६००६
वित्तियपदे जावोगहो	६७४		वीयं जोगागाढे	१६२०
वित्तियपदे जो तु परं	४७२		वीयं तु अप्परूढं	४२६१
वित्तियपदे दोण्णि वि व्हू	११२०		वीयादि सुहुम षट्ठण	२४८
वित्तियपदे वसधीए	१२८५		वीयारभूमि असती	१०६३
वित्तियपदे वाघातो	१६५०		वीसीयठवणाए तू	६४८२
वित्तियपदे वासासू	८४८		वीहावेती भिक्खू	३३१८
वित्तियपदे सागारे	१५५४		वैटियमाइएसु	२८७
वित्तियपदे सेहादी	२४४		वेरग्गकहा विसयाण-	३६१४
वित्तियपय तेण सावय	४२५४	५६६३	बोडिय सिवभूइओ	५६२०
वित्तियपयमणाभोगे	३२७५		वोरीए दिट्ठं तं	४१७८
वित्तियम्मि रयण देवय	५१५८		वोहण पडिमोद्दायण	३१८३
"	५३७८		वोहिग-मेच्छादिभए	५७२५
वित्तियम्मी दिवसम्मि	५८०	४६३३	भ	
वित्तियं अपहुप्पंते	५४८५	५३६०	भगवं ! अणुगहंता	१०००
वित्तियं उप्पाएतुं	२८५६	५५६२	भगघरे कुड्डे सु य	६३८०
वित्तियं गिहि ओसण्णा	३२२१		भणइ य गाहं वेज्जो	४४३३
वित्तियं गुरूवएसा	२८६७		भणइ य दिट्ठ गियत्ते	३११
वित्तियं च वुड्डमुद्धोरगे य	१६२७		भणति रहे जइ एवं	२६५६
वित्तियं पढमे ततिए	२६५१		भणमाण भाणवेंतो	५५५८
वित्तियं पढमे वित्तिए	४०३७		भणितो य हंढ गेण्हह	१७६०
वित्तियं पभुणिव्विसए	१२४०		भणिया तु अणुग्घाया	८१६
"	१२८०		भणति सज्जमसज्जं	४१५७
वित्तियं पभुणिव्विसए	१२६८		भणति जहा तु कोती	३३३३
वित्तियाऽऽगाढे सागारियादि	६०५६		भनट्ठणमालोए	२३६८
"	६०६२		भत्तट्ठित्ताहाडा	२४००
"	६०६६		भत्तपरिण गिलारो	४०१६
"	६१६४		"	१२२८
"	६१७६		भत्तमदाणमडंते	५१३६
वित्तियातो पढमपुव्वा	४१४२	५२६४	भत्तस्स व पाणस्स व	६६२
वित्तियादेसे भिक्खू	३४१४	२८६६	"	५८६३
विद्धू य छिय परिणय	६१३६		भत्तं वा पाणं वा	१८६३
विय तिय चउरो	२६०		भत्ताति-संकिलेसो	२६८६
"	३७७		भत्तामासे लेवे	८६७
विले मूलं गुरुगा वा	३४०१		भत्ते पाणो धोवण	३५४०
वीएसु जो उ गमो	४६६७		भत्ते पाणो विस्सामणे	३४५१
वीएहि कंदमादी	५२४२	३३२४	भत्ते पाणो सयणासणे	३५५८
"	५३६५	३	भत्ते पण्णवग निगूहणा	२७०३
			भत्तेण व पाणेण व	३४५४

भक्तोवधिवोच्छेदं	२४८३		भावित करण सहायो	५३५१	
भक्तोवधिसंजोए	१८००		भावितकुलाणि पविसति	१४७०	
भक्तोवधिवोच्छेदं	२५३०		भावितकुलेसु गहणं	४८६५	१०३२
भद्गवयणो गमणं	५६८१	३०६०	भावे उक्कोस-पणीत	११६४	३५४५
भद्गो तण्णीसाए	२४८२	३५८८	भावे पाउगगस्सा	८८८	
भद्देतरसुर-मणुया	४७५३	८६५	भावे पुण कोधादी	८६२	
भद्देतरा तु दोसा	१४४१		भावेण य दब्बेण य	४७२०	८५६
भद्देसु रायपिडं	२५३८		भावो तु णिगाए सि	३२६२	४२६२
भद्दो उगमदोसे	१४५३		भासचवलो चउद्धा	६२०४	७५३
भद्दो तण्णिस्साए	२५२६	३५८८	भासरो संपातिवहो	३१७८	
भद्दो पुण अगगहणं	१३७६	४६४३	भा-ससि-रितु-सूरमासा	६२८७	
भद्दो सव्वं वितरति	२५७७		भिक्षचरस्सऽन्नस्स वि	४०६६	१८५२
भमुहाओ दंतसोवण	१५१५		भिक्षणसीलो भिक्षू	६२७५	
भयउत्तरपगडीए	३३२१		भिक्ष-वियार-विहारे	१५२४	
भयगेलणऽद्धारो	४१६४		भिक्षस्स व वसघीय व	२३७६	४८१३
भयणपदाण चउण्हं	२३४६		भिक्षं चिय हिडंता	५०१६	६१६
भयणपदाण चउण्हं	१६३८		भिक्षं पि य परिहायति	३७४	४६५७
"	२४३६		"	२२४७	"
भल्लायगमादीसु	२२६६		भिक्षातिगतो रोगी	४४३४	
भवपच्चइया लीणा	४२६६		भिक्षाति-णिग्गएसु	६३१७	
भववीरियं गुणवीरियं	४७		भिक्षातिवियारगते	४१५५	५२७७
भवेज्ज जइ वाधातो	३८४६		भिक्षादी वच्चंते	४३६६	
भंडी वहिलग काए	१४८६		भिक्षुगमादि उवासग	३२३	
भंडी-वहिलग-भरवाहिणसु	५६६६	३१११	भिक्षुणो अतिक्कमंते	३४१६	
भागुप्पमाणगहणे	५८२७	४००४	भिक्षुदगसमारंभे	४४८६	
भागस्स कण्णकरणं	११०६		भिक्षुवसहीसु जह चेव	३२८६	
"	२३६६	४००७	भिक्षुसरक्खे तावस	५७३२	
भायणदेसा एंतो	४५६१		भिक्षुसरिसी तु गणिणी	८७२	६१११
भायणुकम्पपरिण्णा	२३५६	५२५६	भिक्षुस्स ततियगहणे	२६२२	५८२०
भारेण वेयणाए	४१६६	५२८८	भिक्षुस्स दोहि लहुगा	२८५५	५५८८
भारेण वेयणाते	५८२६		भिक्षुगा जहि देसे	५५२४	५४२६
भारो भय परितावण	३२८०	३६००	भिक्षू जहणायम्मी	५६५०	
भारो भय परियावण	६७०		भिक्षे परिहायंते	४४६४	
भारो विलवियमेत्तं	५६७		भिण्णरहस्से व नरे	६७०२	
भावऽट्टवार सपदं	४७३०	८७०	भिण्णस्स पव्वणता	४६१८	१०५५
भावम्मि उ पंडिवद्धे	५२७	२५६२	भिण्णं गण्णगजुत्तं	६७३	
"	५२८	२५६३	"	५८१०	
भावंमि ठायमाणो	५४०	२६०५	भिण्णं समतिक्कंतो	१४४६	
भावंमि रागदोसा	३८८		भिण्णाणि देह भेत्तूण	४६२८	१०६५
भावामं पि य दुविहं	४७१४	८४४			

भिण्णासति वेलातिक्कमे	४६२६	१०६६	भोयणमाप्पणमिट्ठं	११६६
भिण्णे व ज्झामिते वा	७३०		भोयणे वा खखेते	४२६४
"	७४८			म
"	७७६		मइलकुचेलेअम्भंगिए	३०१६
"	६८५		मइलं च मइलियं वा	४६८१
भिण्णे व झामिते वा	७३५		मइले अणुभडहेतुं	२२७६
"	४५४७		मक्कडसंताणा पुण	४२६२
भित्तं तु होइ अद्धं	४६६६		मगदंतियपुप्फाइं	४८३६
भिन्ने व ज्झामिते वा	७७४		मगहा कोसंवीया	५७३३
भित्तंतो वा वि खुधं	६२८१		मगंति थेरियाओ	५०८३
भीतावासो रतीधम्मे	५४५४	५७१४	मग्गो खलु सगडपहो	४३०७
भुत्तभुत्ताण तहिं	२५६१		मज्जणग-गंधपुप्फोवयार	३६५८
भुत्तभोगी पुरा जो वि	३८८१		"	३६५३
भुत्तस्स सतीकरणं	४०१२	३८३५	मज्जणगतो मुहं डो	४२१५
भुत्तेयर दोस-कुच्छित्ते	५३१८	२३६२	मज्जणगादीच्छंते	३०५०
भुंजइ ए व त्ति सेहो	३२८४		मज्जण-ण्हाणट्ठाणेषु	५३२४
भुंजग-वज्ज-पदाणं	२१०२		मज्जण-निसेज्जअक्खा	६२१८
भुंजण वज्जा अणो	२११३		मज्जंति व सिचंति व	५३४३
भुंजसु पच्चक्खातं	३०३	६०७१	मज्जादाणं ठवगा	१६२८
भुंजंति चित्तकम्मट्ठिता	४४२१		मज्झ पडो णेस तुहं	८७७
भुंजंतु मा व समग्गा	११३१		मज्झमिगमणपाणं	२७०२
भुंजामो कमढगादिसु	३२२		मज्झम्मि य तरुणीओ	२४०३
भुंजिसु मए सद्धि	३७६१		मज्झं दोण्हंतगतो	२४३१
भूतणगादी असणे	३६६३		मज्झा य वितिय-ततिया	८२
भूणगगहिते खंतं	१३६३	४६२७	मज्झिमवीसं लहुगो	३५२४
भूमि-घर-तरुणगादि	१०३३		मज्झेव गेण्हऊण	६८२
भूमिसिलाए फलए	३६०६		मज्झे व देउलादी	५४०८
भूसणभासासदे	५४२	२६०७	मणउग्गमआहारादीया	१८३४
भूसण-विषट्ठणाणि य	२३३६		मण उट्ठियपदभेदे	२५४१
भेद अडयालसेहे	३८५		मण उट्ठियपयभेदे	२५४६
भेदो य मासक्कप्पे	१३१८	५४६	मण एसणाए सुद्धा	२६०१
भोइत-उत्तर-उत्तर	१३६४	४६२८	मण परमोहिजिणं वा	६५७२
भोइयकुलसेविआओ	२१५२		मण-वयण-कायगुत्तो	३१७६
भोइय-महयरमादी	२४५८	२०६१	मणिवंधाओ पवत्ता	५६८०
भोइयमाइविरोधे	२४०८		मणुणं भोयणज्जायं	१११८
भोइयमादीणज्जती	१३७३	४६३७	मतिमं अरोगि दीहाउओ	४३७८
भोगतियणो विगते	५१४८	२४६८	मतिलितफालितओमित	४४६१
भोत्तूण य आगमणं	३४०७	२८५६	मत्तगणेहण गुरुगा	५८८६

मद्वकरणं राणं	६२२२	७८३	मात पिता पुत्रसंयवो	१०४१	
मधुरा मंगू आगम	३२००		माता पिता य भगिणी	५०७८	२८२३
मम सीस कुलिच्च—	३८६		माता भगिणी धूया	५६२८	
मयमातिवच्छगं पि व	४४१६		"	५६३०	
मरुएहि य दिदुं तो	४८७३	१०१२	माति-समुत्था जाती	१२०	
मरुसमाणो उ गुरु	६५१६		मातुग्गामं हियए	२२४६	
"	६५२३		मा भुंज रायपिडं	२६०६	
मरेज्ज सह विज्जाए	६२३०		मायामोसमदत्तं	१२३६	
मलेण घत्थं बहुणा उ वत्थं	५८१७	३६६४	"	१२७६	
महजणजाणता पुण	४७८१	६२२	"	१६४६	
महतरअणुमहयरए	११६४	३५७४	"	१६५८	
महतरपगते बहुपक्खिते	६०६७		"	१६६१	
महद्वरणे अप्पवणे व वत्थे	५८२०	३६६७	मायावी चडुयारो	१०४५	
महिलासहावो सरवन्नभेओ	३५६७	५१४४	मालवतेणा पडिता	१३३५	५६१
महिया तु गन्धमासे	६०८२		मालोहडं पि तिबिहं	५६४६	
महिया य भिण्णवासे	६०७६		मा वद एवं एकसि	६४१२	
महिसादि छेत्तजाते	३२५		मासचउमासिएहि	६५१०	
महुपोगलम्मि तिण्ण व	१५६३		मास जुयल हरिसुप्पत्तो	६५४१	
मंगल-बुद्धिपवत्तण	२००६		मासगुग्गादि छल्लहु	६०५	
मंगलममंगलिच्छा	२५६४		"	२२०२	
मंगलममंगले या	२००५		मासगुरुं चउगुग्गा	२२१६	
मंगलममंगले वा	२०१०		मासगुरुं वज्जिता	१२६२	
"	२५६८		मानाइ असंज्जए	६५३७	
मंडलगम्मि वि वरितो	३५१४		मासादी जा गुरुगा	१०६८	
मंतणिमित्तं पुण रायवल्लभे	१३६०	४६२४	"	११००	
मंसक्खाया पारडिणिग्गया	२५५३		मासादी पट्टविते	६६४१	
मंसछवि भक्खण्टा	२५५२		मा सीएज्ज पडिच्छा	३७१	४६५४
मंसाई पगरणा खलु	३४७६		मामे पक्खे दसरातए	२०३५	१६८४
मंसाण व मच्छाण व	३४८१		मासो दोण्णिं य सुद्धा	६६३०	
मंसोवचया मेदो	५७३		मासो य भिण्णमासो	१४३०	
माउग्गामो तिबिहो	२१६६		मानो लहुओ गुरुओ	३१२	१५५६
मा किर पच्छाकम्मं	१८५२		"	८६७	"
मा एं परो हरिस्सति	४६३५		"	३२७६	"
मा एहि सयं दाहं	२३६३		"	६६६३	"
माणुम्माणपमाणा	४२६४		मिच्छत्तं गच्छेज्जा	५०५३	२७६६
माणुम्माणपमाणं	५६७७		मिच्छत्तथिरीकरणं	३८०७	
माणुस्सगं पि तिबिहं	५१६६	२५१६	"	४४२२	
माणुस्सयं चतुद्धा	६१०६		"	६२६०	

मिच्छत्त-बहुय-चारण	१३१६	५४४	"	६२०८
मिच्छत्त सोच्च संका	५०५२	२७६७	मूलगुण दइयसगडे	६५३३
मिच्छता संचतिए	३७६५	६००५	मूलगुण पढमकाया	६३१८
मिच्छते उड्डाहो	५६३७	३०४३	मूलगुणे उत्तरगुणे	३३०६
"	५६२०	६१७०	मूलगुणे छट्टाणा	८६
मिच्छते संकादी	४७८८	६२६	मूलगामे तिण्णि उ	३१३१
मिच्छापडिवत्तीए	२६४८		मूलतिचारेहितो	६५२७
मिल्लक्खुज्ज्वत्तभासी	५७२८		मूलव्वयातिचारा	६५२८
मिहिलाए लच्छिघरे	५६००		मूलं छेदो छग्गु	३६६१
मीसाओ ओदइयं	६३०२		मूलं तु पडिक्कंते	२८०६
मुङ्ग-उवयी-मक्कोडगा	२६१		मूलं दससु असुद्धेसु	४७४
मुङ्गमादी-णगरण	२८३		मूलं सएज्झएसुं	५२७०
मुक्कधुरा संपागडकिच्चे	४३७१	४५४४	"	५२८१
मुक्को व मोइओ वा	३६६२		मूलादिवेदओ खलु	६२६१
मुक्को व मोइतो वा	३७१७		मूलुत्तर पडिसेवण	६३०३
"	३६६६		मूलुत्तरे चतुभंगो	२०५१
मुक्को व मोतिओ वा	३६८०		मूले रुंद अकण्णा	६०१६
मुच्छातिरित्त पंचमे	६३२१		मूसादि महाकायं	६१०४
मुच्छा विसूइगा वा	१७३३		मेच्छभयघोसणणिवे	६०७६
मुणिसुव्वयंतवासी	३६६४		मेहा धारण इंदिय	२५५४
मुदिते मुद्धभिसित्तो	२४६८	६३८२	मेहावि णीयवत्ती	४३६४
मुय णिव्विसते एट्ठुट्टिते	१२४१		मेहुणभावो तव्भावसेवणे	२२१८
मुरियादी आणए	५१३७	२४८७	मेहुणसंकमसंके	५०५६
मुह-णयण-चलण-दंतां	८६६		मेहुणं पि य तिविधं	३५२
मुहपोत्ति-यहरणे	१४२५		मेहुणं पि य तिविहं	३६०
मुहकोरण समणट्ठा	४६६६		मोक्खपसाहणहेउं	४१५६
मुहणंतगस्स गहणे	३६८५	४६६०	मोत्तुं गिलाणकिच्चं	३६३४
मुहपोत्ति-णिसेज्जाए	२१८८		मोत्तुं पुराण-भावित—	३१७४
मुहमादि-वीणिया खलु	२०१३		मोत्तूण एत्थ एक्कं	५६२४
मुंढं च धरेमारो	६२६८		मोत्तूण एवरि बुद्धं	३७३८
मूङ्गमाति-खइते	२१८६		मोत्तूण वेदमूढं	३७०२
मूगा विसंति णिति व	५४००	३४५५	मोयगभत्तमलद्धुं	१३७
मूढेसुं सम्महो	२१७४		मोरणिवंकियदीणार	४३१६
मूढो य दिसज्झयणे	६१३७		मोरी नउली विराली	५६०४
मूलगिहमसंबद्धा	२४६०		मोल्लजुतं पुण तिविधं	६५७
मूलगुण उत्तरगुणा	६५३०		मोह-तिगिच्छा खमणं	१६८३
मूलगुण उत्तरगुणे	३३०२		मोहोदय अणुवसमे	२२२६
"	४३६६		"	२२५५

२

रक्षस-विमाय-नेगाडगमु	३३१३		रागा दोमा मंदा	६१३५	
रक्षस-सुमगाहं	१३०		रागेग व दोमेग व	२३३१	
रक्षिज्जनि वा पंथो	३३३४	२३३५	"	२३५६	
रक्षमादि अष्टिमा	६३०१		रागेग गुन्दहगा	१३०	
रक्ष वेहो वंथो	४२६६		रातिगिओ उस्सारे	५०००	६००
रक्षे देसे गामे	२२३३	५५३१	रातिगियगारदेण	६२५१	
रगगा कौकगुगामन्ना	३२५६		रातिगिय मारिअत्तण	२११६	
रगगा ओंगेहाडिमु	३६६३		रातो व द्विमत्तो वा	२६३३	५२३३
रगगा उवहुगिया	२५५६		रायगिहे गुगामिण	५५६२	
रगगा दुवारमादी	२५२६		रायहुहु-मा वा	१६१३	
रगगा पत्तं वा	२४२१		रायहुहु-मामु	१६०३	
रगगा महामिसेगे	२५६३		"	३६०६	
रगगा य इरियया वणु	५१६५	२५१३	रायमरगामि कुल-वर	१५५३	
रत्तुक्कदाओ इत्था	६११०		राया इव तित्थकरो	६०३३	
रत्तगिज्जमिक्क गामो	५२५४	३३३५	राया उ जहि उमिने	२५५३	
रय-डोल्लमादिमु मही	४३३१		राया कुंय मजे	३१५२	
रयगाइ वणुव्वाणं	१०३१		रायामन्त्र पुरोहित	६२६६	
रयत्तागुपनद्वे	२२१		रायामन्त्रे मेट्टी	१३३५	३३५३
रयत्तागुपमाय	५३६१	३६३२	राया रायमुही वा	१५६०	
रयमाइ मच्छि विच्छि य	४१४		"	१५३२	
रयहरगेगोल्लेण	३२२२	४२५३	"	१५३६	
रसगंवा नहि तुल्या	४६१३	१०५०	राया रायाणो वा	३३६२	
रसगिद्धो य अत्ताग	५५२६	५५२२	रायादि-गाहगुद्धा	२५६६	
रसगेहि अविक्कग	१११६		रामिनि.....गाहा	६४६५	
रसगेही पडिबद्धे	४३२६		राहे उ अट्टमामे	२३३५	
रसायमवि दुगंवि	१११३		रिक्कम्म वा वि दोमा	१६२६	३३१०
रह्वीरपुणं नगरं	५६०६		रायानि अणुदयोणो	२५४६	
रह्वीर-आगु-गुग्गे	३०१४	१६१६	रायावमोय रत्ति	५६४२	३०४२
रंथगु किमि वागिज्ज	४६६२		रक्कविज्जणो रायिओ	३६२६	
"	४६२४		रद्धे वोज्जिणो वा	२४०१	४२३३
राडेग दोम्ह मंडग	३३२२	२३२६	रद्धमेव मरिमय	२६२६	
राईमत्तो वज्जिह्व	४१२		रद्धं आपरगुविहि	२५६३	
रागणि मंजमियगु	६०२		"	५२०४	२५५३
रागदोमविउत्तो	६६६६		रद्धं आपरगुविही	५०६६	२५५१
रागदोमविमुक्को	५६५२	३०६६	रद्धे रद्धसहगं	३५३	
रागदोमागुगवा	३६३	४६४३	रागेगु व बाहीगु व	३६४५	
रागदोमुयत्ता	१२३		रागेगु पडिगिदेसेगु वा	५४२२	
			राहे उ अट्टमामे	२३३५	४२१२



ल

लक्षणादसि उवघायपंडगं	३५८०
लज्जाए गोरवेण व	६८१
लत्तगपहे य खलुते	४२३४
लद्धूण अण्णवत्थे	५०१४
लद्धूण एवे इतरे	३२४५
लद्धूण माणुसत्तं	१७१८
लद्धुं ण णिवेदेती	३३३
लद्धे तीरित कज्जं	१३८४
लहुओ उ उवेहाए	२७८०
लहुओ गुरुओ मासो	२६४६
लहुओ य दोसु दोसु अ	१०६
लहुओ य दोसु य	१०८
लहुओ य होइ मासो	३७२
लहुओ लहुगा गुरुगा	१८२०
लहुओ लहुया गुरुगा	६६३
लहुओ लहुया दुपडादिएसु	६१६
लहुगा अण्णगहम्मी	४७५८
"	५२६६
"	५२८०
लहुगा तीसु परित्तो	४६०५
लहुगा य गिरालंवे	४७३५
लहुगा य दोसु दोसु य	४७२२
लहु गुरु लहुया गुरुगा	५६४
लहुगो गुरुगो गुरुगो	१०७
लहुगो य होइ मासो	२२४६
लहुगो लहुगा गुरुगा	३२०
लहुगो वंजणभेदे	१८
लहुताल्लादीजणयं	६३६१
लहुयादी वावारिते	८६६
लहुया लहुओ सुद्धो	६६३३
लाउयदारुयपाते	६८५
लाउयदारुयपादे	७२६
"	६७५
लाभालाभपरिच्छा	६७८
"	६८४
लाभालाभ-सुह-दुक्ख	२६८७
लाभालाभसुहदुहं	४२६१
लाभित नितो पुट्ठो	४५१६

लाला तथा विसे वा	३४७५
लिकखंत-णिज्जमाणो	२२६७
लिंगट्ट भिक्ख सीते	१६७७
लिंगत्थमादियाणं	३०१३
लिंगत्थस्स तु वज्जो	११५८
लिंगत्थेसु अकप्पं	५०२८
लिंगम्मि य चउभंगो	२२३४
लिंगेण कालियाए	४४६
लिंगेण चव किडिया	२२३२
लिंगेण पिसितगहणे	४३७
लिंगेण लिंगिणीए	१६६०
लित्थारणं दवेणं	१८७४
लिवि भासा अत्थेण व	२२६२
लुद्धस्सज्जभंतरओ	२६६१
लेवकडे वोसट्टे	५८३५
लेवाडमणाभोगा	४२०
लेवाडहत्यच्छिकेण	४६०६
लेवेहि तीहि पूति	८०६
लोइय-लोउत्तरियं	६६४
लोइयववहारेसु	४३५६
लोउत्तरम्मि ठवित्ता	१६२२
लोए वि होति गरहा	६०५५
लोए हवइ दुगुंछा	४५४३
लोकारणुगहकारीसु	४४२३
लोगच्छेरयभूयं	५७३७
लोगविरुद्धं दुपरिच्चयो	३०६३
लोगे जह माता ऊ	६२६४
लोगे वि य परिवाओ	५५२५
लोणं व गिलाणुट्ठा	१७४
लोभे एसणघातो	२५०५
"	२५२३
लोभे य आभियोगे	५०७२
लोयस्सज्जगुगहकरा	३५५३
लोलंति मही य धूली	४३८७
लोलंती छग-मुत्ते	१७४७
लोवए पवए जोहे	३६२७
व	
वइगा अयोग-योगी	१६०६

वङ्गाति निक्खु भाविन	४४४		"	२६४३	४८३६
वङ्ग्यासु व पल्लीसु व	२३६४	४८०२	वत्यव्व पडगु जायग	३०६७	१६६६
वक्कंतजोगि तिच्छड	३०४६	१६४४	वत्यं छिदिस्सामि ति	६८०	
वक्कंतजोगि थंडिय	४८४८	६६८	वत्यं वा पादं वा	८७८	
वक्केहि य सत्थेहि य	४१२१		वत्यं वा पायं वा	८४८	
वच्चसि गाहं वच्चं	३०४	६०७२	वत्यं मिच्चिस्सामी	६७१	
वच्चह्णं दच्चं	३१६		वत्यादिमपस्संतो	८४४	
वच्चंतस्स य भेदा	४७३३	६०८७	वत्थिगिरोहं अभिवट्टमारो	३४६२	
वच्चंतो वि य दुविहो	४४८१	४३८६	वत्थुं विद्यागिठगं	२६३७	
वच्चामि वच्चमारो	२८४८		वत्थेगु व पाण्णु व	१६८१	२६८४
वच्चल्लं अमितमुं हां	४६०		वप्पाई टागा खलु	४११६	
वट्ठनि तु समुद्देसो	३०६	६०७४	वप्पादी जा विह लोइयादि	४६६६	
वट्ठंति अपरित्तो	३८६६		वमगु-विरेगादीहि	२३१७	
वट्ठं समचउरंमं	६६३	४०२२	वमगु-विरेयगमार्गा	६४६०	
"	४८४६	"	वमगुं विरेयगं वा	४३२६	
वड्ढादवउम्मूलग	४६४		"	४३३०	
वग्गयपाटगु कुंठिय	२६६		वय-नांड-थुल्ल-तगुय	४३८१	
वग्गुइह-वग्गुकमिगुं	६१६	३८४१	वयमंयवसतिणं	१०४२	
वग्गुसंडमरे जल थय	२७८६	२७०७	वत्तन मए मि भगिनां	२६३४	
वग्गिउच्च साहु रयगा	२६६४		वत्तिववट्टागादी	२६०३	
वग्गियं महिलामूढं	३६६६		वरिमा गिनासु रीयति	३३४८	
वग्गिया गु मंचरंती	३२२६	४२४१	वरिमेज्ज मा ह्ठ छणो	१२६४	
वग्गुमविदग्गुकरो	४६३८		वत्थं वलयायममारो	३८०४	
वग्गुविचच्चारं पुग	४६३३		वसवी गु एरिसा खलु	१०१८	
वग्गु-सर-रुव-मेहा	४३३१		वसवी य असज्जाग	१७०७	३७२६
वग्गेग य गंधेग य	१११२		वसवी य असंवद्धा	६३२	
वत्तियादि मंन्वमादी	४४७७		वसवीपूतियं पुग	८११	
वत्तगा मंन्वगा चव	६३६१		वसमा माहंमु मिगंमु	३४४०	२६०३
वत्तम्मि लो गमो खलु	२७४४	४४६४	वसमे छगुलगाई	२६२३	
"	४४६०	"	वसही आवाकम्मं	२६६४	
वत्तवओ उ अगाओ	४४८३	४४८३	वसहीए दोसेणं	३७६	४६४६
"	२७४४	"	वसही दुल्लभताए	६२४	
वत्तस्स वि दायव्वो	४४८३	४३८८	वसहीरक्खगुवग्गा	४२४४	३३३६
वत्ते खलु गीयत्थे	२७३७	४४७४	वसिकरगु-मुत्तगस्सा	१४२६	
"	४४७४	"	वत्तुमं ति व वत्तिमं ति व	४४२०	
वत्थय्या वसमारो	६०२८		वहगं तु गिलागस्सा	२०००	
वत्थम्मि गीगितम्मो	४०४४	२७६८	वहव्वगु उट्ठणं	३६४८	
वत्थव्वजयगुपत्ता	२६३६		"	३६७८	
			"	३६६७	

वका उ ए साहंती	२६८२	५३५८	वासावासविहारे	३१२४
वज्रगुर्भदमारो	१६		वासासु अपडिसाडी	१२४४
वदिय पणमिय अंजलि	२१०३		वासासु व तिण्णि दिसा	६१४८
वसग कडलोक्कंपण	२०४७	५८३	वासासु वि गेण्हंती	३२५६
वाउल्लादीकरणे	१६१		वासासु दगवीणिय	६३०
वाए पराजिओ सो	५६०६		वासेण एदीपूरेण	५६६५
वाएंतस्स परिजितं	६२३२		वाहि-णिदाण-विकारे	३०२४
वाओदएहि राई	३१८८		विउसग जोग संघाडए	५०५१
वाघाते असिवाती	१०६३		विउसगो जाणणट्टा	२८७७
वाघाते ततिओ सि	६१२६		"	६५६२
वाघातो सज्जाए	२५०७		विकडुभमगरो दीहं	४८५४
वाणंतरिय जहणं	५११७	२४६८	विगतिमणट्टा भुंजति	१५६५
वात खलु वात कंटग	५६४७	३०५५	विगति विगतिओओ	१६१२
वातातवपरितावण	३०१५	१६१८	विगति विगतीभीतो	३१६८
वादपरायणकुविया	५५२७		विगतीए गहणम्मि वि	३१७०
वादं जप्प वितंडं	२१३०		विगतीकयाणुबंधो	३८६६
वादो जप्प वितंडा	२१२६		विगयम्मि कोउहल्ले	५२६४
वायण पडिपुच्छण	२०६४		विगगहगते य सिद्धे	३६२०
वायाए गुमोक्कारो	४३७२	४५४५	विगगहमणुप्पवेसिय	३५६६
वायाए हल्लेहि	२७८४	२७०५	विच्चाभेलण सुत्ते	२७७६
वायामवग्गणादी	४६४		विच्छु य सप्पे मूसग	५६०३
वायायवेहि मूसति	३३६४		विज्ज-दवियट्टाए	५३४७
वारगसारणि अण्णावएस	३२६		विज्जस्स य पुप्फादी	३०३१
वारत्तग पव्वज्जा	५८६०	४०६६	विज्जा-ओरस्सवली	२८६०
वारस्स य चउव्वीसा	२१३४		विज्जा-तवप्पभावं	४४४०
वारेइ एस एयं	२७६५	२७१७	विज्जा-मंत-णिमित्ते	५५७३
वाले तेणे तह सावण	५६४३	३०४६	विज्जाए मंतेण व	४४५५
वावारे काल धरो	३७२३		विज्जादसती भोयादि	१३७०
वास उडु अहालंदे	२१२०		विज्जादीहि गवेसण	१३६८
"	२१२१		विज्जा मंत-परुवण	४३०४
वास-सिसिरेसु वातो	२४१		"	४४५६
वासत्ताणाऽऽवरिया	६०८४		विणिउत्तभंड भंडण	६४०५
वासं न उवरमती	३१६०		वित्तिगिच्छ अरुभसंथड	२६३१
वासाखेत्तालंभे	३१४६		वित्थारायामेणं	६५०
वासाणं एगतं	१२७८		"	१८६४
वासाण एस कप्पो	३२४१	४२६६	विदु कुच्छत्ति व भण्णति	२५
वासादिमु वा ठाओसि	३७६३		विद्धंसण छावण णो य	२०२६
वासा पयरणगहणे	११६७		विधिपरिहरणे	२०६०

विबुधराणं गंत कुसादी	५०६		वीयारे वहि गुरुणा	२४५६	२०६४
विपुलकुले अस्थि वालो	३५३८		वीरल्लसउणि विन्नानियं	१६७२	३६६६
विपुलं च अण्णपाणं	१८६०		वीरवरस्स भगवतो	४२१८	५६०८
विप्परिणतम्मि भावे	१२५७		वीसज्जिता य तेषं	५७५६	३२८७
विप्परिणमेव सण्णी	३७३३		वीसज्जारस लहं गुरु	६५४३	
विप्परिणामणसेहे	२७१३		वीसत्यादी दोसा	३७७८	
विमलीकतम्मह चक्खु	१०४६		वीसत्या य गिलागा	१६७०	३६६४
विम्हावणा तु दुविवा	३३३७		वीसरसहरवन्ते	६१५६	
वियडत्तो छक्काए	६०३३		वीसं तु आउलेहा	४६६३	४०४५
वियडत्तस्स उ वाहि	६०४०		"	५८७०	,
वियडं गिण्हइ वियरति	१३१		वीसं वीसं भंडी	६५२१	
वियण्णमिवारण वाते	३७५८		वीसाए अट्टमानं	६४३३	
विरणं य अविरणं वा	४०५५		वीसाए तू वीसं	६४७५	
विरतिसहावं चरणं	४७६४	६३४	वीसा दो वानसया	५६१४	
विरहालंभे मूल—	३५८		वीसा य सयं पगयालीना	६५८३	
विरहे उ मठावत्तं	२६५७		वीसुं उवस्सते वा	२८४२	५५७६
विस्वववादि ठाणा	४१३६		वीसुं दिण्णे पुच्छा	६४०७	
विलडणं य जायइ	३४६५	२६१५	वीसुं भूयो राया	१७३८	३६६०
विलियंति आरुमते	४६४६		वुग्गहडंडियमादी	६०६४	
विवरीय दव्वकहणे	२६१		वुग्गहवक्कताणं	५४६४	
विसकुं भ मेय मत्ते	२०४		वुत्तं दव्वावात्तं	३६६	
विसगरमादी लोए	१८०६		वुत्तं वत्थगहणं	३२७६	
विसमा आरोवणाए	६४६२		वुत्तिरातियागणात्तो	५४५१	
विसय कलहेतरं वा	२२५७		वुत्ति संविगो भणितो	५४२१	
विमुआवगमुक्कवरणं	८४५		वेत्तच्चियलदी वा	२५८७	
विहमट्ठाणं भणितं	५६३४		वेत्तच्छिता तु पट्टो	१४०५	४०८६
विहरण वायरण आवानगाण	४३३६		वेत्तस्स पुच्चभणियं	४६६८	
विहि-अविहीभिण्णम्मो	४६०२	१०३६	वेत्तस्स व दव्वस्स व	३०७४	
विहिणिग्गतादि	५४०१		वेत्तं रा चेव पुच्छह	३००४	
विहिणिग्गतो तु जतितुं	५३६		वेत्तेट्ठा एगट्ठादि	४८६०	१०२६
विहिवंघो वि ए कप्पति	७४०		वेत्ते पुच्छरा जयणा	४८८६	
विहिभिण्णम्मि ए कप्पति	४६२०	१०५७	वेण्टियगहणिकखेवे	२६८	
विहिमुत्ते जो उ गमो	३१२३		वेयावच्चस्सट्ठा	५६६	
वीमंसा पडिणीता	५१४६	२४६६	वेयावच्चे अणुलो	३७७३	
वीमंसा पडिणीयट्ठया	५१४४	२४६४	वेयावच्चे तिविहे	६६०५	
वीयरण समीवाराम	५०७४		वेरगकरं जं वा वि	५४६	२६१२
वीयार-गोयरे थेरसंजुआं	३६१३	५१००	वेरगकहा विसयाग	३६१४	५१०१
वीयारभूमि अत्तती	३६१३		वेरगितो विवित्तो य	३५००	
वीयारभूमि-दोसा	३६१३				

सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

वेरं जत्य उ रज्जे	३३६०	२७६०	सगणम्मि पंच राइंदियाइं	२८२०
वेलातिक्कमपत्ता	१०६०		"	२८२२
वेलुमओ वेत्तामओ	८३०		सगणिच्चया स-सिस्सिणि	२४३६
वेलुमयी लोहमयी	७१८		सगदेस परदेस विदेसे	३६५३
वेवग्गि पंगु वडभं	३६४६		सग-पायम्मि य रातो	१५५१
वेहारेणस ओहारे	३०६०	१६८८	सगला-ज्जगलाइन्ने	४६४४
वेहारुगाण मण्णे	४५३१		सगुरुकुल सदेसे वा	३४२८
वोच्चत्थे चउलहुया	३०१०	१६१३	सगहणिण्वुड एवं	६०६३
वोच्छिण्णमडंवे	४२२		सगगाम-परगामे	१४८४
वोच्छिण्णम्मि मडंवे	३८००		"	३६६०
वोच्छेदे तस्सेव उ	६०५८		"	४३६७
वोसट्ठकायअसिवे	४२६६		"	५०४३
"	४२७१		सगगामे सउवस्सए	२६६६
"	४२७४		सच्चित्त-णंतर-परंपरे य	१५०
"	४२७७		सच्चित्तोण उ ध्रुवणे	१८२
वोसट्ठं पि हु कप्पति	४६६६		सच्चित्तो लहुमादी	१८१
"	५८७३		सच्चित्तखट्ठकारण	२६४५
			सच्चित्तज्जित्तमीसो	२७७४
			सच्चित्तमीस अगणी	२१३
			सच्चित्तमीसएसुं	५६५८
			सच्चित्तमीसणे वा	१६६६
			सच्चित्त-स्वखमूलं	१८६६
			सच्चित्त-स्वखमूले	१६०६
			"	१६१६
			"	१६१७
			"	१६१६
			सच्चित्तं अच्चित्तं	३६५७
			"	४६६२
			सच्चित्तंवफलोहिं	५४१०
			"	४७०१
			सच्चित्तं वा अंवं	४६६२
		३०६३	सच्चित्ताति हरंति गा	२७४२
			सच्चित्तादि हरति गो	५५८०
			सच्चित्तादी तिविधं	३३६
		४२६०	सच्चित्तादी दब्बे	३७८
			"	६२६७
			सच्चित्तो अच्चित्ते	३६६४
			"	३६५२
			सच्छंदमणिदिट्ठे	४५६६

स

सइ लाभम्मि अणियता	१३४१
सउण्ण-पाय-सरिच्छा	१६३३
सउणी उक्कडवेदो	३५६४
सयरीए पणपण्णा	६४७८
सकडक्खपेहणं वाल—	२३३७
सकड इह समभोम्मे	४८५७
सकल-प्पमाण-वण्णं	६१३
स किमवि कातूणज्जवा	२०८३
सकि भंजणम्मि लहुओ	३६८७
सक्कमहादीएसु	१६०८
सक्कयमत्ताविट्ठ	१७
सक्कर-धय-गुलमीसा	५६८४
सक्का अपसत्थाणं	३३२८
सक्खेते जइ ए लव्भति	४१७२
सक्खेत्ते परखेत्ते	३२६०
सक्खेत्ते सउवस्सए	१२०५
सग-जवणादि विरूवा	५७२७
सगणम्मि एण्णिय पुच्छा	६५८६
"	२८७२

सच्छन्द परिष्णुता	४५५६		सण्णी नण्णाता वा	१६६४	
सच्छन्देण उ एकं	५७१४		सण्णीमु असण्णीमु	५२२३	
सच्छन्देण य गमणं	५७११	३१२३	सण्णीमु पढमवग्गे	५२१६	
सच्छन्देण सयं वा	५७१२		सण्णे कण्ठेति शुल्लं	२१३२	
सज्जियपतिट्ठिए लहुआं	४७६६	६०६	सति कायदं गावुं	१६५६	१६१४
सज्जगगहणातीतं	३३६१	२७६१	सति कायफेडगं	१६३८	
सज्जमाएण गु विण्णो	१६६३	३७१६	सति कांटाएण दोण्ह वि	५१०६	२४५८
सज्जमाए पल्लिमथो	१२२२		सति दो निमित्तं अमादा	१८४३	
सज्जमाए वायाओ	१६३६	३७०३	सनुमा सचेतणा वि य	१५८४	
सज्जमायट्ठा दप्पेण	३२५६	४२७६	सत्तचन्दक्का उग्घाड्याग	६५४५	
सज्जमायमचित्ता	६१२६		"	६५५८	
सज्जमायमात्तिएहि	२८१३	५७३६	सत्त तु वासासु भवं	४२४४	५६५४
सज्जमायवज्जमसिक्खे	६०७३		सत्त दिक्खे ठवेत्ता	५०७५	२८२०
सज्जमाय काळणं	१२७१		"	५०८४	२८२६
सज्जमा-लेवण-सिक्खण	४१६३	५२८४	सत्त य मात्ता उग्घाड्याग	६५५३	
सट्ठाणागुण केई	६६२६		सत्तदुग्गमुक्कमानो	३५११	
सट्ठाणे अणुकंपा	१६७५	२६७६	सत्तट्ठि गक्कत्तं	६२८८	
सट्ठित-पडित्ताण करणं	२०२१		सत्तहं वनगाणं	४७६८	६३६
"	२०५४		सत्तरत्तं तवो होइ	२७४८	४६८०
सट्ठि गिही अण्णत्तिर्या	१४४३		सत्तरत्तं तवो होति	५५८६	"
सट्ठो गिहि अण्णत्तिर्या	१०७४		"	६२५६	"
सट्ठोहि वा वि भग्गिवा	१२०३	३५८३	सत्तसया चांयाला	६२८६	
सग्गमाई वागविही	७६१		सत्ता अदीगता न्वत्तु	५६८१	
सग्गसत्तरसा वण्णा	४६५६		सत्तारस पण्णारस	६५५५	
सग्गिसेज्जो व गता पुग्ग	२१२६		सत्तोया-दिट्ठोओ	५६२३	
सण्णातगा वि उज्जुत्तणेण	२६७८	५३५४	सत्थपण्णं य सुट्ठे	५६७२	३०८१
सण्णातगिहे अण्णो	१२६३		सत्थपरिण्णा उक्कमं	५३६४	३३२३
सण्णातगं वि तथ चेव	१२६१		सत्थपरिण्णा उक्कमां	५२४१	"
सण्णाततेहि एति	१३३६		सत्थवाहादि ठागा	२६०२	
सण्णातपल्लि रोहिण	५८५		सत्थहताऽऽप्पति	१७२	
सण्णातसंनद्धीमु	१२१३		सत्थं च सत्थवाहं	५६६१	३०६६
सण्णायग आगमणे	३४१०		सत्थाए अइमुत्तो	३५३६	
सण्णा सिगमादी	२४७		सत्थाए पुच्चपिता	३५५६	
सण्णिविसण्णिवयानां	२४६२		सत्थाइ-दुग्गगुणिता	५६७६	३०८५
सण्णिहितं जहं सज्जियं	२२०६		सत्थे ति पंचमेदा	५६६२	३०७०
सण्णिहित्य-भट्ठियासु	२२२५		सत्थे वि वच्चमारे	१६७०	२६७४
सण्णिहित्यं जहं सज्जियं	२२१२		सट्ठिमि हत्थवत्थादिएहि	१७७६	३७६५
"	२२२०		सट्ठहणा खलु मूलं	२१५५	

सद् च हेउसत्थं	५५३०	५४३१	समगुण्णोसु विदेसं	१८४४
सद् वा सोऊणं	५१६		समरोण समणि सावग	५०२७
सद्वाइ इदियत्थोवओग-	२५१८		समरोहि य अभणंतो	४०८७
सद्दे पुण धारेउं	५६६७		समरो उ वरो व भगंदले	६१६८
सद्दे से सिस्सिणि सज्झं	२२३३		समतं ति होति चरणं	६१६३
सद्वातिगतो अद्वाणिओ	२७०१		समवायाई तु पदा	२४७८
सद्वासुत्तं सागारियं	५०६६		समवायादि ठाणा	४१३८
सन्नि खरकम्मिओ वा	३६१६	५१८३	समारो बुड्ढवासी	१०५४
सन्निहिताण वडारो	६१४२		समि-चिचिणिआदीणं	२६१३
सपरक्कमे जो उ गमो	३६३६		समितीण य गुत्तीण य	३६
सपरिकम्मा सेज्जा	२०४५		समिती पयाररूवा	३८
सपरिगहं अपरिगहं	१८६७		समितीसु य गुत्तीसु य	४०
सपरिगहेतरो वि य	४३१४		समितो नियमा गुत्तो	३७
सपरिपक्खो विसयदुट्ठो	३६६२		समुच्छंति तर्हि वा	३४७४
सप्पडियरो परिणी	४०६		समुदाणं पारियाण व	४५६७
सवित्तिज्जा व भुं चति	५७१५	३१२७	समुदाणं पंथो वा	४२४६
सवीयम्मि अंतो मूलं	२२४०		समुदाणि ओयणो	३०५४
सर्वेटप्पमुहे वा	३४७७		सम्मज्जण वरिसीयण	२०३१
सभमाहुज्जाणगिहा	२४२७		सम्ममसम्मा किरिया	४४१४
सभए सरभेदादी	५६८७	३०६७	सम्मेयर सम्म दुहा	४७५१
समगं तु अरोगेसू	३७७०		सम्मेलो घडा भोज्जं	३४८३
समगुगुणविदुस्त्यजणो	५७३४	३२६६	सयकरणो चउलहुआ	६३६
समगुगधिकरणो पडिणीय	६३३४		सयगुणसहस्सपागं	३१६७
समगुगभडभावितेसु	५७५७	३२८८	सयरो तस्स सरिसओ	१०२७
समणाण संजतीहि	५६१६		सयमेव कोइ साहति	३५६४
समणाणं इत्थीसु	५१६८		सयमेव छेदणम्मी	१६६७
समणाणं जो उ गमो	३७८७		सयमेव दिट्ठपादी	१७५७
समण समणि सपक्खो	५६६८	३०७७	सयमेव य अवहारो	२७५८
समणि मगुण्णी छेदो	२१००		सयसिन्धवणम्मि विट्ठे	१६२५
समणी उ देति उभयं	२१०६		सयं चेव चिरं वासो	३८४५
समणी जरो पविट्ठे	१७३०		सरतिसिणा वा विप्पिय	६०१७
समगुण्णदुगणिमित्तं	६३२४		सरिकण्णे सरिच्छंदे	२१४७
समगुण्णमगुण्णो वा	२१२४		सरिकण्णे सरिच्छंदे	२१४८
समगुण्ण-संजतीणं	२०८८		सरिसावराहदंडो	२८१४
समगुण्णस्स विधीए	२१०१		सरीरमुज्झयं जेण	३६३०
समगुण्णा परिसंकी	४१०४	१८६२	सरीरे उवकरणम्मि य	३६३३
समगुण्णोण मगुण्णो	२०७४		सविकारो मोहुदीरणा	२२६०
समगुण्णोतर गिहि-	१६७६	२६८३	सविगार अमज्झये	२०१४

सविगारो मोहुदीरणा	२२६३		सर्व्वेसि तेसि आगुा	११६१	३५४२
"	२२६६		सर्व्वेसि संजयागुं	२६७६	
"	२२६९		सर्व्वेसि अविमिद्धा	६६५५	
सर्व्वत्य पुच्छणिज्जो	११६५	३५७५	सर्व्वेमु वि गहिणसु	१२७२	
सर्व्वत्य वि आयरिओ	६०२३	४३४६	सस-एलासाद्	२६४	
सर्व्वत्य वि सट्टाणं	६६३८		ससणिद्ध दुहाकम्मे	१४८	
"	६६३९		ससणिद्ध वीयघट्टे	६५७६	
सर्व्वपदाणाभोगा	३६३		ससणिद्ध-मुहुम	४३३	
सर्व्वमसर्व्वरतणिओ	२०६		ससणिद्धे उदउल्ले	१८६	
सर्व्वम्मि उ चउलहुगा	२०३३	१६८०	ससरक्काइहत्थ पंथे	१४६	
सर्व्वम्मि तु सुयणाणे	३३०४		ससहायअवत्तेण	५५०१	५४०५
सर्व्वस्स छट्ठण विणिचणा	२६१६	५८१३	ससिणिद्धमादि अहियं	६५८०	
सर्व्वस्स पुच्छणिज्जा	२४२२		ससिणिद्धमादि सिण्हो-	१७७	
सर्व्वस्स वि कातव्वं	५५२०	५४२४	सहजेणागंतूण व	२००२	
सर्व्वसहण्यभावातो	३६१६		सहसा व पमादेणं	१०६	
सर्व्वं नेयं चउहा	४८२१	६६२	सहमुण्डयम्मि जरे	४८०७	६४८
सर्व्वं पि य तं दुविहं	४७०७		सहिणादी वत्था खनु	२२६८	
सर्व्वं भोच्चा कोई	३८६५		संकपुट्टियपदभिदणे	२५४०	
सर्व्वं भोच्चा कोती	३८६४		संकप्ये पदभिदण	२५६	५८६७
सर्व्वंगिया उ सेज्जा	१२१७		संकप्यो संरंभो	१८१३	
सर्व्व्याओ अज्जातो	३६१८		संकम-करणे य तथा	२०५३	
सर्व्व्याणमाइयाणं	३४८६		संकम जूवे अचने	५३३८	२४१३
सर्व्व्याणि पंचमो तट्ठिणं	४०७८	१८३५	संकमयने य गुो थने	४२३०	५६४०
सर्व्व्यासि ठवणाणं	६४७४		संकमतो अण्णगणं	२८१२	
"	६४८३		संकलदीवे वत्ती	५४०६	३४७०
सर्व्व्याहि व सद्धीहि	३६१६		संका सागारहे	१८७२	
सर्व्वे गाणपदोसादिणु	३३२६		संकुचित तरुण आतण्यमाण	५७६५	३६७०
सर्व्वे वा गीयत्था	५०१८	६१८	संख-तिगिसागुलुचंदणाइ	१०३२	
सर्व्वे वि खलु गिहत्था	४६६०		संखडिगमणे वितितो	३४०२	२८५४
"	४६८२		संखडिमिधारिता	२६४१	५८३७
सर्व्वे वि तत्थ रंभति	१६८३		संखुण्णतो तवस्सी	४१६५	
सर्व्वे वि दिट्ठुवे	१२७०		संखेज्जजीविता खलु	४०३६	
सर्व्वे वि पदे सेहो	२४५		संखे सिगे करतल	२३७	
सर्व्वे वि य पच्छित्ता	६४६६		संगामदुगपहवण	३६२६	
सर्व्वे वि लोहपादा	४०४३		संगामे साहसितो	३६२८	
सर्व्वे समणा समणी	२६७४	५३५०	संघट्टणा तु वाते	१४६३	
सर्व्वे सर्व्वद्वाते	३६१५		संघट्टणा य घट्टण	४२२१	५६३१
सर्व्वेसि एगचरणं	५४२८		संघट्टणा य सिचण	४२२७	५६३७



संघट्टणादिएसुं	२१५		संजमठाणाणं कंडगाण	३८२३
संघट्टे मासादी	१८५		संजमतो छक्काया	१०५६
संघयणाधितीजुत्तो	३६३६		संजमदेहविरुद्धं	४१८
संघयणं जह सगडं	६५१६		संजम-महातलागस्स	१६८०
संघयणो तु जुत्तो	८३		संजमविग्घकरे वा	१५६१
संघयणो संपण्णा	७८		"	१५७३
संघस्स पुरिम-पच्छिम	२६६७	५३४३	"	१५८०
संघस्सायरियस्स	४८५		संजम-विराहणाए	५६३६
संघं समुद्दिस्सिता	२६६८	५३४४	संजयगणो गिहिगणो	२८५१
संघाडए पविट्टे	५०६१	२८१०	संजय-गिहि-तदुभयभद्गा	३३७१
संघाडगा उ जाव तु	६५६७		संजयगुरु तदहिवो	२८५२
"	६५६८		संजयपदोसगहवति	१०८७
संघाडगा उ जावं	१८८८		संजयपरे गिहिपरे	६८८
संघाडगा उ जो वा	२८८३		संजयभद्गमुक्के	३३७२
संघाडगाओ जाव उ	२८८२	५५६६	संजयभद्गा तेणा	४५१४
संघाडगाणुवद्धा	३६४३		संजोए रणमादी	६००५
संघाडणा य परिसाडणा	१८०४		संजोगदिट्ठपाढी	२६७७
संघाडमादिकघणो	५८३	४६३६	संजोय-विधि-विभागे	२०६३
संघाडं दाळणं	२०८०		संभागतम्मि कलहो	६३८५
संघाडिओ चउरो	४०२६		संभागतम्मि रविगतं	६३८४
संघाडेगो ठवणा	४१७३	५२६२	संभा राती भणिता	२४२६
संघातणा य पडिसाडणा	१८०२		संठावण लिपणता	२०५२
संघातिएतरो वा	१४०८	४०६२	संठियम्मि भवे लाभो	५८४७
संचइयमसंचइते	१६५१	१६०६	संढासच्छिड्डेण हिमाइ एति	५७६३
संचरिते वि हु दोसा	३७८१		संणिहिमादी पढमो	४५४
संचालणा तु तस्सा	५६५		संतगुणणासणा खलु	५४२६
संजतगतीए गमणं	१०६६		संतविभवा जति तवं	१७३७
संजतरिए गिहिगिए	६७८		संतम्मि य बलविरिए	६३२२
संजत-भद्गा गिहि-भद्गा	१६७१		संतासंतसतीए	७३३
संजतिगमणो गुरुगा	२४५२		"	७७२
संजतिवग्गे गुरुगा	२०६१		"	६८६
संजतिवग्गे चेवं	२०७८		"	७२८
संजमअभिमुहस्स वि	१६८१	३७०५	"	७३१
संजमआतविराघणा	११५		"	७३६
संजमखेत्तचुयाणं	३२०५		"	७४१
संजमखेत्तचुया वा	८२६		"	७४२
संजमघाउप्पाते	६०७५		"	७४४
संजम-चरित्तजोगा	४८६६	१०३५	"	७४६
संजमजीवियहेउ	३६५	४६४५	"	

"	७४६		संभोदयमण्णसंभोदयाण	६०३५	
"	७७५		संभोगपरुवग्गता	२०६६	
"	७७७		संभोगमण्णसंभोदए	२१४५	
"	७८०		संभोगा अवि हु तिहि	५५५४	५४५३
"	७८८		संरंभ मण्णं तु	१८११	
"	८८३		संलवमाणी वि अहं	१७७३	३७६२
"	८८०		संलिहितं पि य तिविवं	१७२०	३७४२
"	८८२		संलेह पंच भागे	२६०६	
"	८८७		संवच्छरं गणो वा	३१०२	२०००
संती कुंघू य अरो	२५६१		संवच्छरं च रुट्ठं	२८०७	५७७३
संथडमसंथडे वा	२८८८	५७८५	संवच्छराणि तिणिण उ	५५१४	५४१७
संथडिओ संथरंतो	२६१०	५८०७	संवच्छरा तिन्नि उ	३१०१	१६६६
संथरणम्मि असुद्धं	१६५०	१६०८	संवट्टणिगयाणं	२३७३	४८१०
संथरमाणमजाणंत	१०७६		संवट्टम्मि तु जतणा	२३६३	४८०१
संथारएहि य तहि	५२५६	३३४०	संवालादगुरागो	१७६२	
संथार कुसंधाडी	१७४४	३७६७	संवासे जे दोसा	२४७६	
संथारगगिलाणे	४०१४	३८३७	संवासे संभोगो	२१४१	
संथारविप्पणासे	१३१४		संवाहणमच्चंगण	५६७	
संथारविप्पणासो	१३५४	४६२०	संविग्ग णितियवात्ती	३०६४	१६६२
संथारं देहंतं	१२५३		संविग्ग-भावितारणं	१६४६	१६०७
संथारुत्तरपट्टो	५८०३	३६८०	संविग्ग-भावितेसुं	१६८७	
"	१२३०		संविग्गमसंविग्गा	४७४४	८८६
संथारेगमणेगे	१३०५	४६०५	संविग्गदुल्लभं खलु	३८३६	
संथारो दिट्ठो ए य	१२५२		संविग्गमगीतत्थं	५५८५	५४८५
संदिसह य पाउगं	२५८०		संविग्गमगीयत्थं	२७४७	"
संपत्ति-रणुप्पती	२१५४		संविग्गमसुण्णाते	१६५८	१६१६
संपत्तीइ वि असती	४१००	१८५७	संविग्गमण्णसंभोदएहि	२८२४	
संपत्ती व विवत्ती	४८०८	६४६	संविग्गमण्णसंभोगिएहि	२०७७	
संपाइमे असंपाइमे य	५३२७	२४०१	संविग्गमसंविग्गे	४५८७	
संपातिमादिधातो	२४३		"	४५६४	
"	५६२३		"	३००६	१६११
संपातिमे वि एवं	५३३०	२४०४	"	६२६६	
संफाणितस्स गहणं	१६४३		संविग्गमसंविग्गो	४२८२	
संफासमणुप्पत्तो	३६४०		संविग्गसंजतीओ	३०६२	१६६०
संबंधभाविणसुं	३२४६	४२७४	संविग्गा गीयत्था	३०६१	१६८६
संबंधवज्जियत्ती	१७६६		संविग्गा समणुण्णा	६२४५	
संवाहणा पवोवग्ग	१४६५		संविग्गाण सणासे	४५८८	
संमिच्चैणं व अच्छह	१३२०	५४८	संविग्गादणुसट्ठो	४५८६	

संविग्गासंविग्गे	३००८		सागारियादि पलियंक—	३४६५
संविग्गेतरभाविद्य	१६८६	२६६०	सागारिसंजताणं	१३२१
संविग्गेहङ्गुसट्ठो	४५६१		साडङ्गभंगण उव्वलग्ग	३०२२
संविग्गो सेज्जायर	३०६६	१६६४	साणादीभक्खणता	४१५
संसज्जिमेसु छुम्भति	४१५२	५२७४	साणुप्पगभिव्वट्ठा	३०७७
संसट्ठमसंसट्ठे	४११६	१८६८	सातिज्जसु रज्जसिर्	१५६२
संसत्तपंथ-भत्तो	२५८		सादू जिणपडिकुट्ठो	४८४७
संसत्तपोगलादी	२८६		साधम्मत्त वेधम्मत्त	२१५३
संसत्ताति न सुज्झति	३४०६	२८५७	साधम्मियत्यलीसुं	३४५
संसत्तेऽपरिभोगो	२६६		साधम्मिया य तिविधा	३३६
संसत्तेसु तु भत्तादिगसु	२६७		साधारण-पत्तेगो	२१२३
संसयकरणं संका	२४		साधारणे विरेगं	४३५७
संसारगट्ठपडितो	४६५		साधुं उवासमाणो	३५०३
संसाहगस्स सोतुं	५४६३	५३६८	"	२४६८
संसोहण संसमणं	४४३६		सा पुण जहण्ण उक्कोस	६६४७
साएता गाऽओज्झा	३३४७		साभावि गितिय कप्पति	१००४
सागघतादावावो	१२३		साभावितं च उच्चियं	१००३
सागणिए गिक्खित्ते	२०५		साभाविते तिण्णि दिग्गा	६०८७
सागणिया तू सेज्जा	५३५२		साभावियणिस्साए	१३२८
सागारिअदिण्णेसु व	४०१		सा मग्गति साधम्मो	१७८३
सागारिउ त्ति को पुण	११३८		सामण्णे जे पुव्वि	१०७१
सागारिपुत्त-भाउग	११६६	३५४७	सामत्य गिव अपुत्ते	३६८
सागारिय-अधिकरणे	२४७१		सामाड्य पारेतूण	४६६३
सागारिय तुरियमणभोगतो	१६४		"	४६८५
सागारिय-सज्झाए	६५५		सामाड्यमाड्य	३३०३
सागारिय-संतियं तं	१६५७		सामा तु दिवा छाया	४३१६
सागारियगिक्खेवो	५०६८	२४५०	सामायारि वितहं	४३४६
सागारियगिस्साए	१२११		सामित्त-करण-अधिकरण	६०
"	३५६०		सामित्ते करणम्मि य	३१४२
सागारियमंखच्छंदण	४४७८		सामी चार भडा वा	४५०५
सागारियसण्णातग	१२१०		सारीरं पि य दुविहं	६०६६
सागारियसंदिट्ठे	११४५	३५२६	सारुवि-सावग-गिहिगे	५८६
सागारियस्स गंधं	३५६८		सारुवि सिद्धपुत्तेण वा	४६०२
सागारियस्स णामा	११४०	३५२१	सारेऊण य कवयं	३८१६
सागारियं अपुच्छिय	१२०६		सारेहिंति सीयंतं	४५८४
सागारियं गिरक्खति	३५८४	५१६०	सालत्ति गुवरि रोमं	२४८६
सागारिया उ सेज्जा	५०६७		सालंबो सावज्जं	४७५
सागारियादिकहणं	६०६८		साला तु अहे वियटा	२४२८

सालितणादि ङ्मुसिरो	१२१६		सिप्पाई सिकखंतो	३७१४	
साली-धय-गुल-गोरस	२६६२	५३४१	सिरिगुत्तेणं छलुगो	५६०५	
सावगसणिण्टाणे	२३६६	३८३६	सिहिरिणि लंभाऽऽलोयण	३६८७	४६६२
सावततेणा दुविघा	३२६४		सिचण वीयी पुट्टा	५३१२	२३८६
सावथी उसभपुर	५६२२		सिचति ते उवहि वा	४२२०	५६३०
सावय अण्णट्टकडे	५६६४		सीओदगभोईणं	४११५	
सावय-तेण-परद्धे	५६६५	३१०४	सीतं पर्जरिबणता	१७५	
सावय तेणभया वा	२५५		सीताणे जं दड्डं	६११२	
सावय-भय आण्णंति वा	२२६	३४५८	सीतितरफासु चउहा	५२३०	
सावयतेणे उभयं	४२२४	५६३४	सीतेण व उसिणेण व	१६३६	
सावयभए आण्णिति व	५४०३	३४५८	सीतोदगभावितं अविगते	५८६३	
सावेक्खो त्ति व काउं	६६५७		सीतोदगम्मि द्धुम्मति	५६७०	
सासवणाले छंदणं	३६८३	४६८८	सीतोदगवियडेणं	२२७४	
सासवणाले मुहणंतए	३६८२		सीतोदे उसिणेदे	५२२६	३४२०
साहम्मि अण्णहम्मि य	३६४२		सीतोदे जो उ गमो	२२७६	
साहम्मि य उद्देसो	४५२५		सीसगणम्मि विसेसो	२१०८	
साहम्मि य वच्छत्तं	२६		सीसगता वि ण दुक्खं	४२१६	५६२६
साहम्मियत्यलासति	३४६		सीसपडिच्छे पाहुड	६३४०	
साहारणस्स भावा	५७०३		सीसं उरो य उदरं	५६३	
साहारणं तु पढमे	५५०३	५४०७	सीसोकंपण हत्थे	२७२४	४७३६
साहारणे वि एवं	४६४६		सीसोकंपिय गरहा	२७२१	४७३२
साहिकरणो य दुविहो	२७७३		सीहगुहं वग्घगुहं	५५६५	५४६४
साहिति य पियवम्मा	१६४३		सीहाऽऽसीविस अग्गी	५६८	
साहुं उवासमाणो	४६७४		सुअ अक्खत्तो अग्गीओ	५४८२	५३८७
साहूण देह एयं	५७४६	३२८०	सुक्खोदणो समितिमा	५६८६	३०६६
साहूणं वसहीए	५३०१	३३८०	सुक्खोल्ल ओदणस्सा	५८६२	४०६८
सिक्कगकरणं दुविघं	६३६		सुट्ठु कयं आभरणं	५१०८	२४६०
सिग्घयरं आगमणं	४१८०	५२६६	सुट्ठु कया अह पडिमा	५१४३	२४६३
सिग्घुज्जुगती आसो	६३११		सुट्ठु लसिते भीते	३६६	
सिज्जादिएसु उभयं	४०७		"	२२४४	
सिट्ठम्मि ण संगिज्झइ	२८४५	५५७६	सुणमाणे वि ण सुणिमो	२३६७	४८३४
सिणेहो पलवी होइ	३८२१		सुणं द्दुट्ठु वड्डगा	१३१६	
सिण्हा मीसग हेट्ठोवरि	१८०		सुणो एतं पडिच्छए	१२४२	
सितिअवणण पडिलाभण	४४५३		सुणो चउत्थमंगो	४०६६	
सिद्धत्यगजालेण व	४००६	३८२६	सुतमुह दुक्खे खेत्ते	२१४०	
सिद्धत्यग पुष्के वा	३४४४	२८६७	सुत्तद्वि एक्खत्ते	६२८८	
सिप्पसिलोगादीहि	४२७८		सुत्तणिवाओ इत्थं	२८८६	
सिप्पसिलोगे अट्ठावए	४२७६		सुत्तणिवाओ एत्थं	२०६०	
			सुत्तणिवातो सच्चित्त—	५६५६	

सभाष्यचूणि निश्रीथसूत्र

मुत्तगिवातो उक्कोसयम्मि	५६५२		मुद्धतवो अज्जाणं	६५६१
मुत्तगिवातो एत्थं	१८८६		मुद्धपडिच्छणो लहुगा	६३६३
" "	१६६८		मुद्धममुद्धं चरणं	५४३३
" "	२२२७		मुद्धं एसित्तु ठवेंति	३६३१
" "	३७४३		मुद्धं पडिच्छिऊणं	६३४२
" ओहे	२०२३		मुद्धालंभे अगीते	६६६०
" कसिणो	६६६		मुद्धे सङ्गी इच्छकार	२८७२
" गितिए	१०२०		मुद्धो लहुगा तिसु दुसु	६०६
" गियमा	१०५०		मुप्पे य तालवेंटे	२३६
" तणोसु	१२२४		मुवहहि वि मासेहि	६५२०
" वितिए	६१०		"	६५२४
" सगलकसिणं	६२३		मुग्घी दढगजीहो	१११७
मुत्तत्थ अपडिवद्धं	३१०६		सुयअभिगमणायविही	४४८७
मुत्तत्थतदुभयविसारयम्मि	३३८४	२७८५	सुय-चरणो दुहा घम्मो	२८६५
मुत्तत्थतदुभयाइं	६२२५	७८६	सुयघम्मो खलु दुविहो	३३००
मुत्तत्थतदुभयाणं	६१८१		सुयनाणम्मि य भत्ती	६१७१
"	६६७३		सुयवत्तो वयावत्तो	२७४०
मुत्तत्थावस्सगिणीधियासु	५२१		सुलसा अमूढदिट्ठि	३२
मुत्तत्थे अकहेत्ता	३७५४		सुवइ य अजगर भूतो	५३०५
मुत्तत्थे पलिमंथो	१६६६		सुवति सुवंतस्स सुयं	५३०४
"	४२१६	५६२६	सुहपडिवोहा णिदा	१३३
मुत्तनिवातो सग्गामा	१४८६		"	५३२६
मुत्तमयी रज्जुमयी	६५१	२३७४	सुहमवि आवेदंतो	३३३०
मुत्तम्मि णालवद्धा	५५२२		सुहविण्णप्पा सुहम्मोइया	५१५५
मुत्तम्मि होति भयणा	६२१६	७७८	"	५१७७
मुत्तवत्तो वयवत्तो	५५७८		"	५१६०
मुत्तसुहदुवखे खेत्ते	५५२१		सुहसाहणं पि कज्जं	४८०३
मुत्तस्स व अत्थस्स व	५४५६		सुहसीलतेणगहिते	३५१
मुत्तस्स विसंवादो	५७३६		सुहिणो व तस्स वीरिय-	१५६३
मुत्तं कड्ढति वेट्ठो	२११५		सुहियामो त्ति य भएत्ती	२६८५
मुत्तं तु कारणियं	४८६२		सुहुमं च वादरं वा	३३०
मुत्तं पटुच्च गहिते	२६१५		सुहुमो य वादरो य	३८०
मुत्तं व अत्थं च दुवे वि काडं	१२३६		सुहुमो य वादरो वा	२६७
मुत्तंमि एते लहुगा	२१		सूतिज्जति अणुरागो	४६७५
मुत्तायामसिरोणत	२११४		"	४६६६
मुत्ते ज हा णिवंधो	३२०४		सूतीमादीयाणं	६६२
मुद्धतवे परिहारिय	६६०४		"	६६५
मुद्धतवो अज्जाणं	२८७६		सूभगदूभगकरा	४४६६

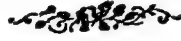
मूयग-मतग-कुवाइं	१६१८		मेहादी पडिकुटो	३८१	
"	५७६०		मेहुन्नामगभिच्छुणि	३५७	
मूयिमगुट्टाए तु	६६८		सो आगा अगुवत्थं	७५१	
मूयि अविधीए तु	६७५		"	७६३	
मूरत्थमगुम्मि तु गिगुत्तागु	११५७	३५३८	"	८३६	
मूरुगते जिगुत्तागुं	१४२४	१६६१	"	११०६	
मूरे अगुगुयम्मि उ	२८६०	५७८६	"	१११५	
मूवोदगस्स भरिउं	६६२८		"	१४६६	
सेएगु कक्कमाती	३६३२		"	१४६७	
सेज्जा-कप्प-विहिण्णू	१२४८		"	१५५०	
सेज्जा-संयारदुगं	१६६०		"	१६११	
सेज्जातर-रात्तापिडे	३४६६		"	१८२४	
सेज्जातरागु धम्मं	१७२६	३७४८	"	१८२६	
सेज्जातरो पभू वा	११४४	३५२५	"	१८६१	
सेज्जायरकण्ठो	५५४८	५४४६	"	२१६६	
सेज्जायरकुलनिस्सित	४३४४		"	२१६३	
सेज्जायरमादि सएज्जिया	५५४३		"	२३४८	
सेज्जायरस्स पिटो	३४८५		"	२४४०	
सेज्जासंयारो ऊ	१३०१		"	२८६२	
सेज्जोवहि आहारे	२१०७		"	३११५	
"	२११०		"	४०३४	
सेडंगुलि वगुदावे	४४५१		"	४३०६	
मेहुग रुत्ते पिजिय	१६६२	२६६६	सोआनी एव सोत्ता	३६६०	
मेगादी गम्मिहिती	२३५७	४७६६	सोउं हिडगु-कधगं	१२५८	
मेगाहिव भोइ महयर	६०६५		सोऊगु जो गिलागं	२६६६	१८७१
मेयविपोलासादे	५५६६		सोऊगु य धोसगुयं	४७८४	६२५
मेयं वा अल्लं वा	१५२१		सोऊगु व पासित्ता	१७६६	३७८८
मेलज्जि-यंभदारुणया	३१६१		सोऊगु वा गिलाणं	२६७०	१८७१
मेवंतो तु अकिच्चं	४७०		"	२६७३	१८७५
मेमा उ जहासत्ती	६१२२		"	२६७५	१८७७
मेमेसु तु सत्तावं	२७२०	४७३१	सोऊगं च गिलागि	१७४६	१८७२
मेमेसु फामुएणं	२०५०		सो एमो जस्स गुणा	१०४७	
मेह-गिहिणा व दिट्ठे	३७६६	६००६	सोरांविणं य आसित्ते	३५६२	५१६७
मेहज्वहारो द्रुविट्ठो	२६६६		सोच्चा गतं त्ति लहुणा	१३०२	४६००
मेहस्स विसीदणत्ता	२१२	३४३६	सोच्चाणं परसमीवे	२६६७	
मेहस्स विनीयणत्ता	५३८४	"	सोच्चा पत्तिमपत्तिय	१३१७	५४५
मेहादीगु अवण्णा	२६४७		सोच्चा व भोवसगं	२३६०	
मेहादीगु दुगुंछा	१५४५		सो गिच्छुमतिं साधू	२८४१	५५७५
			सो गिज्जति गिलाणां	३०८०	१६७६

सभाष्यचूणि निशीथसूत्र

सो रिणज्जराए वट्टति	१७६१	३७८४	हयगयलंचिक्काइं	३६५४
सोणितपूयालित्ते	४०१८	३८४०	हयजुद्धादी ठाणा	४१३३
मो तं ताए अण्णाए	४०६८	१८२३	हयमादी साला खलु	२४६१
सोतुं अण्णभिमयाणं	६२२३		हरिए वीए चले जुत्ते	५६००
सोत्थियबंधो दुविधो	७३८		हरियाल मणोसिलं	४८३४
सो परिणामविहिण्णू	१७५२	३७७५	हविपूयो कम्मगरे	१८०३
सोपारयम्मि रायरे	५१५६	२५०६	हाणी जा एगद्धा	२३७४
सो पुणं आलेवो वा	४८६४	१०३१	हा दुट्ठु कयं	६५७३
सो पुणं पडिच्छगो वा	४५६२		हासं दप्पं च रति	५६६
सो पुणं लेवो चउहा	४२०१		हित सेसगाण असती	५७२१
सो मग्गति साधम्मि	१७७४	३७६३	हिंडितो वहिले काये	३८५७
मो रायाऽवन्तिवती	५७५२	३२८३	हीणप्पमाणघरयो	५८२८
सोलस वासाणि तया	५६१२		"	५८३१
सो समग्गसुविहितेहि	३५८५	५१६१	हीणाऽतिरेगदोसे	५८४१
सो समग्गसुविहियाणं	५७६७		हीणाधिण य पोरा	२१६८
सो होती पडिणीतो	५४४०		हीणाहियविवरीए	६३४५
			हीरो कज्जविवत्ती	२१६७
			हीरंतं रिणज्जंतं	३४८४
			हुंडं सबलं वाताइद्धं	७५२
हतविहतविप्परद्धे	२३५४	५२५८	हुंडादि एगबंधे	५८५५
हत्यद्धमत्तदास्य	३०५८	१६५७	हुंडे चरित्तभेदो	७५३
हत्य-पण्णं तु दीहा	६५२	२३७५	"	५८४८
हत्यं वा मत्तं वा	४०६३	१८२०	हुंडे सबले सव्वण	५८५१
हत्थाइ-जाव-सोतं	२२५०		हेट्ट उवासणहेउं	२४६२
हत्थादि पायघट्टण	१६१०		हेमन्तकडा गिम्हे	२०५६
हत्थादिपादघट्टण	१६०४		होऊण सन्नि सिद्धो	४६०३
हत्थादिवातणंतं	४६२		होज्ज गुरुओ गिलाणो	२६५२
हत्थादि-वायणंतं	६२७२		होज्ज हु वसणप्पत्तो	५४३५
हत्थादिवायणंत-	६६८३		होति सभे समगहणं	६४६१
हत्थेण अदेसिते	१४८२		होमातिवितहकरणो	४४१३
हत्थेण अपावेंतो	८००		होहिति जुगप्पहाणो	३७३६
हत्थेण व मत्तेण व	४०५८		होहिति धि णियंसणियं	५०४७
हत्थे पाए कण्णे	३७०६		होति उवंगा कण्णा	५६४
हय-गय-रहसम्मदे	२५६४			

## द्वितीयं परिशिष्टम्

निशीथचूर्णां चूर्णकारेणोद्धृतानि गाथादिप्रमाणानि



	विभाग	पृष्ठ		विभाग	पृष्ठ
अकाले चरसि भिक्खू	१	७	अभिति द्यच्च मुहुत्ते	४	२७७
[दश० अ० ५, उ० २, गा० ५]			[		]
अचिह्माए य सूरिये	१	२१	अरसं विरसं वा वि	२	१२६
[		]	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ६८]		
अशुग्धातियाए गुणिया	४	३६७	अरहा अत्यं भासति	१	१४
[		]	[वृहत्कल्पभाष्य, गा० १६३]		
अद्धविहं कम्मरयं	१	५	अवसेसा एक्खत्ता	४	२७७
[		]	[		]
अद्धारसपयसहस्सिओ वेदो	१	२	अ (आ) वंती केयावंती लोगंसि	१	१३
[		]	[आचा० श्रु० १, अ० ५, उ० १]		
अट्टारसपुरिसेसु	१	१३२	असंसत्त	२	४१६
[निशीथभाष्य, गा० ३५०५, तुलना]			[		]
अत्थिणं भन्ते लवसत्तमा	४	४००	असिवे ओमोयरिए	१	८०
[		]	[		]
अन्नं भंडेहि वणं	२	१७७	अहयं दुक्खं पत्तो	३	४०५
[कल्पवृहद्भाष्य]			[		]
अपत्यं अंवगं भोच्चा	३	२५०	अहाकडोहि रंधंति	१	१३
[उत्त० अ० ७, गा० ११]			[		]
अपि कट्ठं मपिडानां	१	६५	आगंपइत्ता अशुमाएइत्ता	४	३६३
[		]	[		]
अप्पे सिया भोगएजाए	३	५४७	आचेत्तुकुट्टे सिय	३	४०१
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७४]			[		]
अप्पोवही कलहविवज्जणा य	४	१५७	" "	२	३५६
[दश० अ० २, गा० ५]			[		]
अवभंतरगा छुभिया	१	-	आदिमसुत्ते भणिते	४	३१३
			[		]
			आणाएच्चिय चरणं	१	५४
			[		]



आयारवं आहारवं	४	३६३	एगेण कयमकज्जं	१	५४
[			[वृहत्कल्पभाष्य, गा० ६२८]		
इयदुद्धरातिगाढे	४	२१०	एतेसि एं भंते ! वालाणं	३	३६३
[			[भग० श० १२, उ० २, तुलना]		
इह खलु निग्गंथाण	२	१८५	एस जिण्णाणं आणा	४	२१०
[ वृहत्कल्प, उ० ३ ]			[		
उक्कोसं गणणग्गं	१	२८	कडते य ते कुंडलए य ते	१	२१
[			[		
उग्गमंउप्पायण	१	१५५	कण्णसोक्खोहि सद्देहि	३	४८३
[			[दश० श्र० ८, गा० २६]		
उग्घातितदुगएहि	४	३६६	कति एं भंते ! कण्हराईओ	१	३३
[			[भग० श० ६, उ० ५]		
उग्घातियदुअएहि	४	३६७	कप्पति णिग्गंथाणं पक्के-	३	५३२
[			[वृहत्कल्प, उ० १, सू० ३]		
उच्चालयम्मि पादे	३	५००	कप्पति णिग्गंथाण वा-	४	३२
[ओघनियुक्ति, गा० ७४६]			[वृहत्कल्प, उ० १, सू० २]		
उच्चालियम्मि पादे	१	४२	कप्पति णिग्गंथाण वा	४	३२
[ओघनियुक्ति, गा० ७४६]			[वृह० उ० ३, सू० ६]		
उच्छ्ल वोलंति वइ	२	१३४	कप्पति णिग्गंथाणं सलोमाइ	४	३२
[वृह० उ० १, भा० गा० १५३६]			[वृहत्कल्प, उ० ३, सू० ४]		
[ओघनियुक्ति, गा० १७०]			कप्पति णिग्गंथीणं अलोमाइ-	४	३२
उद्देसे णिद्देसे	२	२	[		
[आवश्यकनियुक्ति, गा० १४०]			कप्पति णिग्गंथीणं पक्के	४	३१
उवज्झायवेयावच्चं करेमाणे	४	२६६	[वृहत्कल्प, उ० १, सू० ५]		
[			कप्पति से सागारकडं	३	५८३
उवेहेत्ता संजमो वुत्तो	३	४०	[वृह०, उ० १, सू० ३६]		
[ओघनियुक्ति]			कम्ममसंखेज्जभवं	३	२६८
उत्सण्णं सच्चसुयं	१	५	[व्यवहारभाष्य, उ० १०, गा० ५१०]		
[			कयरे आगच्छति दित्तरुवे	४	२७२
एक्के चउसतपण्णा	४	३६६	[उत्तराध्ययन, श्र० १२, गा० ६]		
[			कागसियालअखइयं-	२	१२५
एग दुग तिण्णि मासा	४	३१६	[		
[			काम जानामि ते मूलं	२	२२
एगमेगस्स एं भंते ! जीवस्स	१	१०८	[महाभारत]		
[भग० श० १२, उ० ७]			किं कतिविहं कस्स	२	०
एगावि अणुग्घाता	४	३६७	[आवश्यकनियुक्ति, गा० १४१]		
[			किं मे कटं, किं च मे किण्णसेसं	२	३६३
एगे बत्थे एगे पाए चियत्तोयकरण-	४	१५७	[दश० सू० २, गा० १२]		
[ओपपातिक, तपोवर्णन सू० ४०]			कुण्णतु य संपदं उ चट्ठो	३	१५८
[स्याना० स्या० ३, उ० ३]			[		

कोदिसयं सत्तर्हिर्ह्य	४	३६६	जाव वुत्थं सुहं वुत्थं	१	२१
[ ]			[ ]		
को राजा यो न रजति	१	७	जीवे एं भंते ! ओरालिघसरीरं	२	२८१
[ ]			[मग० घ० १६, उ० १, तुलना]		
को राया जो न रक्खइ	१	१२२	जीवेणं भंते सता समितं	२	३००
[ ]			[मग० घ० ३, उ० ३]		
कोहो य माणो य अणिग्गहीया	४	३३	जे असंतएणं अब्भक्खारोणं	४	२७२
[दश० अ० ८, गा० ४०]			[ ]		
कृत्स्नकर्मक्षयात् मोक्षः	१	१५७	जेट्ठामूलंमि मासंमि	१	२१
[तत्त्वा० अ० १०, सू० ३, तुलना]			[ ]		
गच्छम्मि केइ पुरिसा	४	२६२	जेण रोहंति दीयाइं	१	२०
[ ]			[ ]		
गज्जित्ता एणमेणे एो वासित्ता	४	३०७	जे भिक्खू असणं वा पाणं वा	४	३२
[स्थाना० स्था० ४]			[वृह०, उ० ४, सू० ११, तुलना]		
गवाशनानां स गिरः शृणोति	३	५६२	जे भिक्खू उग्घातियं	३	२८
[ ]			[ ]		
गहणं पुराणसावग	४	२२२	जे भिक्खू तरुणे बलवं	४	१५७
[ ]			[आत्रा० थू० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]		
गोयरणपविट्ठो उ	४	३१	जे मे जाणंति जिण्णा	३	२६६
[दशव० अ० ५, उ० २, गा० ८]			[ ]		
बंदगुत्तपपुत्तो उ	२	३६२	जो जेण पगारेणं	१	४
[वृहत्कल्पभाष्य, गा० २६४]			[ ]		
धच्चेव अतो रिस्ता	४	२७७	जो य एण दुक्खं पत्तो	३	४०५
[ ]			[ ]		
नइ इच्छसि नाळणं	४	३३७	जं अज्जियं समीखल्लएहिं	३	४३
[ ]			[ ]		
नति एत्थि ठवरणारोवणा	४	३३७	जं जाणेज्ज त्रिराधोत्तं	४	१६६
[ ]			[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७६]		
नतिमि नवे आरवणा	४	३२४	जं चुक्कति उवकारे	१	६३
[निशोयभाष्य, गा० ६४८६]			[ ]		
जत्तो निक्खं वल्लि देमि	१	२०	ठवरणाववणादिवसाण	४	३३७
[ ]			[ ]		
जत्थ राया सयं चोरो	१	२१	एण चरेज्ज वासे वासंते	१	१०६
[ ]			[दश० अ० ५, उ० १, गा० ८]		
जमहं दिया य राओ य	१	२०	एण मत्तो सुयं तप्पुच्चियं	३	५१४
[ ]			[नन्दीसूत्र, तुलना]		
जह दीवा दीवसयं	१	५	एण य तत्स तप्पिमित्तो	१	४२
[ ]			[ओषनिष्ठं, गा० ७४६]		

एवमासाकुच्छिघालिए	१	२१	तहेवासंजतं धीरो	१	१६३
[			[दश० अ० ७ गा० ४७]		
ए वि लोणं लोणिज्जति	२	१७७	तं शेच्छइय एयमए	१	२६
[कल्पवृहद्भाष्य]			[		
ए ह्व वीरियपरिहीणो	१	२७	तावदेव चलत्यर्थो	३	५२६
[			[		
एणएस्स दंसएस्स	१	५	तिगजोगेऽणुगघाता	४	३६७
[			[		
णिद्दा विगहा परिवज्जिएहि	१	६	तिण्णुत्तरा विसाहा	४	२७६
[			[		
एणो कप्पइ णिग्गंथाणं इत्थिसागारिए	४	२३	तिण्हमण्णतरागस्स	४	३२
[वृह०, उ० १, सू० २७-३०]			[दशवै०, अ० ६, गा० ६०]		
एणो कप्पइ णिग्गंथाणं वेरेज्ज—	३	२२७	तेगिच्छं णाभिणंदेज्ज	३	५०६
[वृह० उ० १, सू० ३८]			[उत्त० अ० २, गा० ३३]		
एणो कप्पति निग्गंथाणं अलोमाइं	४	३२	तेजो वायू द्वीन्द्रियादयश्च	३	३१५
[			[तत्त्वा०, अ० २, सू० १४]		
एणो कप्पति णिग्गंथाण वा	४	३२	तेरस य चंदमासो	४	२७८
[वृह० उ० ३, सू० ५]			[सूर्यप्रज्ञति]		
एणो कप्पति णिग्गंथाण	३	१५४	तेपां फटतटभ्रष्टं:	१	१०३
[कल्पसूत्र]			[		
एणो कप्पति णिग्गंथाण वा	४	३१	त्रयः शल्या महाराज !	२	१२०
[वृह० उ० ३, सू० २२]			[ओघनिर्युक्ति, गा० ६२३ समा]		
एणो कप्पति णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा	४	३२	दत्त्वा दानमनीश्वरः	३	५८१
[वृह०, उ० १, सू० ४२-४४]			[		
एणो कप्पति णिग्गंथीणं सलोमाइं	४	३२	दंडक ससत्य	१	१८
[वृह० उ० ३, सू० ३]			[		
तओ अणवट्टप्पा पणएत्ता	१	११२	दव्वं खेतं कालं	३	५३५
[स्थाना० स्था० ३]			[		
" "	१	११६	दाण दवावण कारावणे य	४	३७६
[स्थाना० स्था० ३]			[		
तणुगतिफिरियसमिती	१	२३	दंतपुरं दंतवक्के	४	३६१
[			[		
तमुयकाए एं भंते ! कंहि	१	३३	दंतानां मंजनं श्रेष्ठं	२	६०
[भग० श० ६ उ० ५]			[		
तरुणो एगं पादं गेण्हेज्जा	३	२२६	धमे-धमे णातिधमे	१	८
[आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]			[		
तव प्रसादाद्भुतुंश्च	१	१०४	धम्मियाणं किं सुत्तया	४	४६
[धृतीर्यानप्रकरण]			[भग० श० १२, उ० २]		

घम्मो मंगलमुक्कट्टं	१	१३	मूढनइअं सुयं कालियं तु	१	४
[दश० अ० १, गा० १]			[		
पज्जोसवरणकप्पस्स	३	१५८	रण्णो भत्तं सिण्णो जत्थ	१	१३
[			[		
पञ्च वट्ठंति कौन्तेय !	१	५४	रस-रुधिर-मांस-मेदोऽस्थि-	१	२६
[			[		
पणुवीससहस्साइं	४	३६७	लंघण-पवण-समत्थो	१	२०
[			[		
परमाणु पोग्गलेणं भंते !	४	२८१	वग्घस्स मए भीतेण	१	२०
[भग० अ० २५, उ० ४]			[		
परिताव महादुक्खो	२	४१८	वयद्यक्क कायद्यक्कं	२	३५६
[वृहत्कल्पभाष्य, गा० १८६६]			[दश० अ० ६, गा० ८]		
पिडस्स जा विसोही	१	३२	वरं प्रवेण्डुं ज्वलितं हुताशनं	१	१२७
[			[		
पुरेकस्मे पच्छाकस्मे	१	५८	वसहि कह णिसेज्जिदि य	१	५०
[			[		
पुव्वभणियं तु जं एत्थ	१	३	वसही दुल्लभताए	२	३७
[			[		
वहुअदिठ्यं पोग्गलं	४	३२	विभूसा इत्थोसंसग्गी	४	१४३
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७३]			[दश०, अ० ८, गा० ५७]		
वहुदोसे माणुस्से	१	१८	वीतरागो हि सर्वज्ञः	४	३०६
[			[		
वहुमोहो वि य रां पुव्वं	४	७२	वैरूप्यं व्याधिपिडः	१	५३
[			[		
वहुवित्थरमुत्तसगं	४	२११	सट्ठीए अतीताए	४	२७७
[			[		
वारसविहम्मि वि तवे	४	२२७	सत्तसया सट्ठहिया	४	३६७
[			[		
भद्दकं भद्दकं भोच्चा	२	१२५	समणो य सि संजतो य सि	१	२१
[दश०, अ० ५, उ० २, गा० ३३]			[		
मद्यं नाम प्रचुरकलहं	१	५३	सम्प्राप्तिश्च विपत्तिश्च	३	५०८
[			[		
माणुसत्तं सुई सट्ठा	३	२६४	समितो नियमा गुत्तो	१	२३
[उत्त० अ० ३, गा० १]			[		
माताप्येका पिताप्येको	३	५६१	सयभिसयभरणीओ	४	२७६
[			[		
मीसगसुत्तसमासे	४	३६७	सयमेव उ अमए तवे	१	२१
[			[		
मुत्तणिरोहे चक्खुं	२	२६७			
[					

सव्वत्थ संजमं संजमाओ	१	१५३
	[ओवनिगुंक्ति, गा० ४६]	
सव्वामगंधं परिणाय	३	४८५
	[आचा० श्रु० १, अ० २, उ० ५]	
सव्वेसि पि	४	४१०
	[	
साहम्मिय वच्छल्लंमि	१	२२
	[	
सिरीए मत्तिमं तुस्से	१	८
	[	
सूतीपदप्पमाणाणि	१	८
	[	
से गामंसि वा	४	२७२
	[दश० अ० ४]	

सेसा उवरिमुहुत्ता	४	३६७
	[	
सोलसमुगमदोसा	१	१३२
	[	
सोही उज्जुअभूतस्स	४	२६४
	[उत्त० अ० ३, गा० १२]	
संकप्पकिरियगोवण	१	२३
	[	
संतं पि तमण्णाणं	१	२६
	[	
संहिता य पदं चैव	२	२
	[	
हा दुट्ठु कयं	१	१५६
	[निशीथभाष्य, गा० ६५७३]	

## तृतीयं परिशिष्टम्

वृत्तानां प्रमाणत्वेन निर्दिष्टानां ग्रन्थानां नामानि

		विभाग	पृष्ठ			विभाग	पृष्ठ
अर्थकण्ड	(अर्थकण्ड)	३	४००	उपधानश्रुत	(आचारांग १-६)	१	२
अर्थसत्य	(अर्थमास्त्र)	३	३६६	ओहगिञ्जुत्ति	(ओधनियुक्ति)	२	४३६
अनुयोगदार	(अनुयोगद्वार)	४	२३५	"	"	३	४०, ४४६,
आचारप्रकल्प	(निर्माथ-मूत्र)	१	२६	"	"	"	४५०,
आचारप्राभृत		१	३०	"	"	"	४६१
आचारांग		३	१२२	"	"	४	६४, १०६,
आधारंग (आचारांग=निर्माथ)		४	२५२	"	"	"	१२०
आधारपकल्प	(आचारप्रकल्प)	१	२, ५, ३१	कल्प	(कल्प)	१	३५
आधारपगण्य	( " )	४	७३	"	"	३	३६८,
आधारवस्तु	(आचारवस्तु)	३	६३	"	"	"	५३२
आधार	(आचार)	१ २, ३, ५, ३५		"	"	"	५८३
"		३	२१०	"	"	४	३०४
"		४	१६३	कल्पमुत्त	(कल्पमूत्र)	३	५२३
"		"	२५३	"	"	४	२३
"		"	२५४	कल्पपेट	(कल्पपीठ)	१	१३२
"		"	२६४	कल्प-पेटिया	(कल्पपीठिका)	१	१५५
आवश्यक		२	३३	छुट्टियाधारकहा		४	२४३
आवस्सअ	(आवश्यक)	४	२५४	(कुल्लिकाचारकथा, दश० अ० ३)			
आवस्सग	(आवश्यक)	१	१४६	गोविंदगिञ्जुत्ति		३	२१२
"		४	७३, १०६,	"	(गोविन्दनियुक्ति)	"	२६०
"		"	२४०	"	"	४	६६
इतिमासिप्र	(ऋषिमापिन)	४	२५३	चंदगवेचक्रग	(चन्द्रकव्यव्यक)	४	२३५
उगहृष्टिमा		१	२	चेदगकहा	(चेदककथा)	४	२६
(अवग्रहप्रतिमा, आचा० २-७)				चंदपण्णत्ति	(चन्द्रप्रज्ञप्ति)	१	३१
उत्तरज्जप्रण	(उत्तराध्ययन)	२	२३८	छग्जीवगिया	(पड्जीवनिका)	३	२८०
"		४	२५२	"	दशवै० अ० ४	४	२६८

छेदसुत्त (छेदसूत्र)	४	८८	पण्णत्ति (प्रज्ञप्ति)	२	२३८
जं वृद्धीवपण्णत्ति (जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति)	१	३१	पण्णवाकरण (प्रश्नव्याकरणा)	३	३८३
जोगसंगह (योगसंग्रह)	३	२६६	पिण्डणिज्जुत्ति (पिण्डनिर्युक्ति)	१	१३२
जोणिपाहुड (योनिप्राभृत)	२	२८१		"	१५५
"	३	१११	"	"	२४६
"	४	१६०	"	"	६७,
णमोक्कारणिज्जुत्ति [नमस्कारनिर्युक्ति]	२	२८५	"	"	१६१
"	३	३६६	"	"	१६२
णरवाहणदंतकथा [नरवाहनदन्तकथा]	२	४१५	"	"	१६३
णंदी [नन्दी]	४	२३५	"	"	२०७,
णितीह [निशीथ]	४	१६०	"	"	२२०
तरंगवती	२	४१५	पिण्डेसणा [पिण्डेवणा आचा० २।१]	१	२
"	४	२६	"	"	१६३
तन्दुलवेयालिय [तंदुलवैचारिक]	४	२३५	"	"	२६८
दसवेयालिअ [दशवैकालिक]	१	२,१८	पोरिसीमंडल [पोरुपीमण्डल]	४	२३५
"	२	८०	विटुसार विन्दुमार	४	२५२
"	३	२८०	वंभचेर	४	२५२
"	४	२५२	[ब्रह्मचर्य, आचा० श्रु० १]		
"	"	२५४	भगवती सुत्त [भगवती सूत्र]	१	३३,७६
"	"	२६३	"	"	२३८
दसा [दशाश्रुतस्कन्ध]	३	७	भारह [भारत]	१	१०३
"	४	३०४	भावणा	१	२
"	४	२६४	[भावना, आचा० २-२३]		
दिट्ठिवाय [दृष्टिवाद]	१	४	मगधसेना	२	४१५
दिट्ठिवात	१	२६	मरणविभक्ति	३	२६८
"	३	६३	मलयवती	०	४१५
"	४	७३,	महाकप्पसुत्त [महाकल्पसूत्र]	२	२३८
"	"	२२६,	"	"	६६,२२४
"	"	२५३	महाणितीह णिज्जुत्ति	४	३०४
दीवसागरपण्णत्ति [द्वीपसागरप्रज्ञप्ति]	१	३१	[महानिशीथनिर्युक्ति]		
दुमपुप्फिय [दुमपुष्पिका, दश० अ० १]	१	२४	रइयवका	३	४५०
दुवालसंग [द्वादशांग]	१	१५	[रतिवाक्या, दश० चू० १]		
"	"	१६५	रामायण	१	१०३
धुत्तक्खारण [धूतस्थानक]	१	१०५	रोगविधि	३	१०१
"	४	२६	लोगविजय [लोकविजय, आचा० १।२]	४	२५२
नंदी [नन्दी]	४	२३५	वक्कमुद्धि	२	८०
पक्क [प्रकरूप]	१	३३	[वाक्यमुद्धि, दश० अ० ७]		
"	४	२५६,	ववहार [व्यवहार]	१	३५
"	"	३०४	"	४	३०४
"	"	३३८	"		

वसुदेवचरित्य	[वसुदेवचरित]	४	२६	सामादय रिञ्जुक्ति	४	१०३
विमोक्ति		१	२	[नामायिकनिर्युक्ति]		
	[विमुक्ति, आचा० २-२४]			सिद्धिविणिच्छ्रय	१	१६२
विवाहपटल	[विवाहपटल]	३	४००	[सिद्धिविनिश्चय]		
वेज्जसत्य	[वेद्यमान्]	३	१०१,	सुति	१	१०३
"		"	४१७	सूयकट	१	३५
वेदरहस्त	[वेदरहस्य]	३	५२७	"	४	२५२, २६४
शस्त्र-परीक्षा		१	२	सूर्यप्रणति	१	३१
(आचा० श्रु० १, अ० १)				"	४	२५३
सत्यपरिष्ठा		४	३३, २५२	"	"	२७०
	[शस्त्रपरीक्षा, आचा० १-१]			सेतु	३	३२२
सद्	[शब्दव्याकरण]	४	८८	"	४	२६
सम्मति	[सन्मति]	१	१६२	हेतुसत्य	४	८८, ८६
सम्मदि	"	३	२०२			



# चतुर्थ परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गता दृष्टान्ताः



## प्रथम भाग

विषय	दृष्टान्त	पृष्ठ संख्या
अप्रशस्त भावोपक्रम	गरिका, ब्राह्मणों और अमात्य	३
अकाल स्वाध्याय	तक्र बेचने वाली अहीरी	८
"	शृंग बजानेवाला किसान	८
"	शंख बजाने वाला	८
"	दो छाणहारिका वृद्धाएँ	८-९
विनय	श्रेणिक राजा और विद्यातिशयी चाण्डाल	९
भक्ति और बहुमान	शिवपूजक ब्राह्मण और भील	१०
उपधान-तप	असगड पिता आभीर	११
निह्वन=अपलाप	विद्यातिशयी नापित	१२
शंका और अशंका	दो बालक	१५
कांक्षा और अकांक्षा	राजा और अमात्य	१५
विचिकित्सा और निर्विचिकित्सा	विद्यासाधक श्रावक और चोर	१६
विदुगुच्छा=साधुओं के प्रति कुत्सा	एक श्रावक-कन्या (श्रेणिक पत्नी)	१७
अमूढदृष्टि	सुलसा श्राविका और अम्मड परिव्राजक	२०
उपवृंहण	श्रेणिक राजा	२०
स्थिरीकरण	आचार्य आषाढभूति	२०-२१
वात्सल्य	वज्रस्वामी द्वारा संघरक्षा	२१-२२
"	नन्दीपेश	२२
विद्यासिद्धि	अज्ज खड्ड	२२
लब्धिवीर्यं	महावीर द्वारा गर्भ में माता त्रिशला की कुक्षि का चालन	२७
स्त्यानद्धि निद्रा	पुद्गल-भक्षी श्रमण	५५
"	मोदकभक्षी श्रमण	५५
"	शिरश्छेदक कुम्भकार श्रमण	५५
"	गजदन्तोत्पाटक श्रमण	५६
"	चटशाखा-भञ्जक श्रमण	५६

प्राग्यातिपात-कल्पिका प्रतिमेवना  
लौकिक मृषावाद  
मयनिमित्तक अकृत्यमेवना

सिंहमारक कोंकणभिक्षु १००  
अवन्ती के शशकाटि धूर्त १०२-१०५  
पुत्रार्थी राजा और भीत नरुण भिक्षु १२७

### द्वितीय भाग

प्रणीत आहार  
निरन्तर कार्यसंगमना  
अंगादान का मंचलनादि  
अन्नपट्ट वस्त्र-ग्रहण की मदीयना  
कनुष-परिष्ठापन  
रत्न-भोजन मन्वन्वी लुब्धता-अलुब्धता  
माधुगुण का चिन्ह रत्नोद्धारण

अविमुक्ति अर्थात् गृद्धि  
यथावसर स्थापना-कुलों में अप्रवेश ने हानि

”

निष्कारण संयती-वसति में गमन  
निर्वर्तनाधिकरण = जीवोत्पादन

”

असंवृत हास्य

”

प्रसन्नवर्ण-भूमि का अप्रतिनिधन  
असंभोग-मन्वन्वी पृच्छा  
द्विसंभोग का प्रारम्भ

”

अभियोग-प्रतिमेवना  
चौक-कथाओं का अनुपदेश  
सोपमर्ग-स्थिति में संयती के साथ विहार

ब्रह्मवत्त चक्रवर्ती का भोजन और पुरोहित २१  
कुलव्यू का कामोपगमन २२  
सिंह, सर्प आदि सात उदाहरण २८  
कम्बलरत्नग्राही आचार्य और चोर ६७  
मन्वन्वी, छिपकली आदि १२३  
आर्यसंगु और आर्यसमुद्र १२५  
मरहट्ट देश में रत्नापण (मद्य की दूकान) पर  
ध्वजा १३६  
वीरल्लशकुनि (इयेन पक्षी) १३७  
यथावसर गो-दोहन न करने वाला गृहस्थ २४८  
यथावसर फूल न तोड़ने वाला माली २४८  
वीरल्ल शकुनि (इयेन पक्षी) २६०  
आचार्य सिद्धसेन द्वारा अवनिर्माण २८१  
महिष और दृष्टिविष सर्प का निर्माण २८१  
अच्छी, पांच सौ तापस २८५  
भिक्षु का मृतक-हास्य २८६  
चैला (चैल्लग) और ऊँट २८८  
अगड आदि के ६ उदाहरण ३५६  
आर्य मुहस्तो और आर्य महागिरि ३६०  
सम्प्रति राजा का जन्म ३६०  
पुत्रार्थी राजा और तरुण भिक्षु ३८१  
मल्लोद्गृहोत्पत्ति क्या कहने वाला भिक्षु ४१६  
दो यादव श्रमण-बन्धु और भगिनी ४१७  
सुकुमालिका साध्वी

### तृतीय भाग

अधिकरण का अनुपशय

”

सम सपराध में विषम दण्ड  
स्वर्गण तथा परगण में दण्ड की अत्याधिकता  
दुष्ट राजा की शिक्षाएं अनुशासन

”

”

”

कलहरत सरटों द्वारा जलचर-नाश ४१  
औषधीय द्रव्य और कनकरस ४३  
राजा द्वारा तीन पुत्रों को विभिन्न दण्ड ४८  
पति द्वारा चार भार्याओं को विभिन्न दण्ड ५२  
आर्य दण्ड ५८  
बाहुबली ५८  
संभूत (ब्रह्मवत्तचक्रवर्ती का भ्राता) ५८  
हरिकेश बल ५८

परिहार-तप से भीत को आश्वासन  
अतिप्रमाण भोजन  
अवम भोजन  
वान्त भोजन का अपवाद  
ग्लानसेवा और तदर्थ अभ्यर्थना  
धर्म की आपण (दुकान)

पर्युपणा-काल में परिवर्तन  
पर्युपणा में कलह-व्युपशमन

क्रोध  
मान  
माया  
लोभ

भाव वैर  
अतिप्रमाण-भक्तग्रहण

अहाच्छंद द्वारा समानता का दावा  
वेदोपघात पण्डक  
उपकरणोपहत पण्डक  
त्रातिक क्लीब  
स्त्री-पुरुष के परस्पर संवास-सम्बन्धी दोष

ज्ञान-स्तेन  
चारित्र स्तेन

सकारण प्रव्रज्या

स्वपक्ष की स्वपक्ष में कषाय-दुष्टता

परपक्ष की स्वपक्ष में कषाय-दुष्टता  
द्रव्य-भूद  
काल-भूद

कालकाचार्य और उज्जयिनी-नरेश गर्दभिल्ल  
अगड, नदी आदि  
अतिभोजी दरिद्र बटुक और अमात्य  
बटलोई  
रत्नवणिक द्वारा चौराकुल अठवी की यात्रा  
दानार्थी, साथ ही अभिमानी मरुक  
सुवर्णादि का क्रय  
गान्धिक आपण में मद्य-क्रय  
कालकाचार्य और महाराष्ट्र-नरेश सातवाहन  
खलिहान जलाने वाला कुम्भकार  
उदायन और चण्डप्रद्योत  
दरिद्र कृषक और चौर-सेनापति  
गोघातक मरुक  
अच्चंकारिय भट्टा  
पंडरज्जा साध्वी  
रस-लोभ से आर्य मंगु का यक्ष-जन्म, बुद्धनंदी  
ग्राम महत्तर और चौर सेनापति  
मधुविन्दु

पैतृक सम्पत्ति के समानाधिकारी चार कृषक पुत्र  
राजकुमार हेम  
दुराचारी कपिल क्षुल्लक  
दुराचारी तच्चनिय भिक्षु  
आम्र खाने वाला राजा  
मातृदर्शन से वत्स को स्तनाभिलाषा  
आम्र-दर्शन से लाला-ल्लाव  
आर्य गोविन्द  
उदायी नृपमारक भट्ट  
मधुर कीण्डइल  
प्रभव  
मेतार्य-ऋषि-घातक  
मृत गुरु के दांत तोड़ने वाला भिक्षु  
मुहुरांतक के लिए गुरुघातक भिक्षु  
गुरु की आंख निकालने वाला भिक्षु  
गुरु को पत्थर मारने वाला भिक्षु  
मधुरा का जडण (यवन) राजा  
दुःशील भार्या और अध्यापक पति  
एक महिषोपातक पिडार

गङ्गा-मूड  
माद्व्य-मूड  
वेद-मूड  
व्युद्ग्राह्य-मूड

"

"

"

हस्त-मादादि-विबर्जित विन्ध  
अज्ञान नाव मे गर्भवती की प्रव्रज्या  
प्रत्यनीक द्वारा माद्वी का गर्भवती होना  
पुष्पमादादि मे अनमिन के महाव्रत  
स्यविर मे पूर्व कृत्यक की उपस्थापना  
माद्व-मेलना

"

उत्तमार्थ प्रतिपन्न का आहार  
प्रत्याख्यान-कालीन आभोग (उपयोग)  
पादोगमन में वैयं

"

"

"

"

"

"

पुस्तक मे होने वाली जोड़-टिप्पणी

"

"

"

पूर्वस्थापित आभन का सदोपना  
पुरः कर्मकृत कर्मवच का अधिकारी ?  
निर्वायं श्रेष्ठवृद्धि करने के गुण

"

नीला-नयन मन्दग्री अनुकम्पा  
नीला-नयन मन्दग्री द्वेय

एकेन्द्रिय जीवों की वेदना  
एकेन्द्रिय जीवों का उपयोग

"

एक ऊँटवात	२६३
ग्राममहत्तर और चौर-मेनापति	२६८
मान-गामी राजकुमार अनंग	२६८
मान-गामी वशिष्-पुत्र	२६९
पंचमूल जाने वाला अनंग सेन	२६९
अन्धपुत्र और धूर्त	२६९
पशुपालक और स्वर्णकार	२६९
मृगावती-पुत्र	२७६
करकण्डमाता पद्मावती	२७७
पेढाल के द्वारा गर्भवती ज्येष्ठा	२७७
स्थाणु पर पुष्पमालारोहण	२८०
राजा के द्वारा पुत्र को राजासिंहासन	२८२
अमात्य और कौकलक	२८६
क्रोध में अपनी उंगली तोड़ देने वाला मिश्र	२८६
सहजयोधों का कवच	२८८
कंचनपुर में कमक का पारणक	३०२
स्कन्दक	३१२
चरणव्य	३१२
पिपीलिकाग्रों का उपसर्ग	३१२
कालासग वेसिय	३१२
अवन्ति मुकुमाल	३१२
जल-श्रवाह का उपसर्ग	३१२
वतीस घड़ा	३१३
चतुरंगिणी सेना से आविष्टित मृग	३२१
दुग्ध-पतित मक्षिका	३२२
मद्यली पकड़ने का जाल	३२२
तिलपोलक चक्र (वाणी)	३२२
जैन श्रमण और बौद्ध मिश्र	३२५
इन्द्र को ब्रह्महत्या का दाय	३४०
कृपण वणिक् की गृहचिन्तिका पत्नी	३५७
गाँव के समीप कुबड़ी बदरी (वेरी)	३५८
मुहंड राजा	३६५
कम्बल सबल नागकुमार और	
नौकावट भगवान् महावीर	३६६
जरा-जीर्ण स्यविर	३७७
रत्न भोजनगत स्नेह-गुण	३७७
पृथ्वीगत स्नेह-गुण	३७७

निधानदर्शन	मयूरनृपांकित दीनारों का निधान	३८८
अनागत रोग का परिकर्म	अंकुर तथा बद्धमूल वृक्ष का अन्तर	३९४
"	अवद्वित तथा विवद्वित ऋण	३९४
लौकिक व्यवहारों का निर्णय	दो नारी और एक पुत्र	३९६
"	पटक	३९६
धातु-पिण्ड	रोता हुआ बालक और भिक्षु	४०४
"	आचार्य संगमस्थविर और दत्त शिष्य	४०८
निमित्त पिण्ड	भविष्यकथन से सगर्भा घोड़ी की हत्या	४११
चिकित्सा पिण्ड	दुर्बल व्याघ्र की चिकित्सा	४१८
कोप-पिण्ड	मासोपवासी धर्मरुचि भिक्षु	४१८
मान-पिण्ड	इष्टगा-भोजनार्थी क्षुल्लक ; इवेतांगुलि आदि पुरुष	४१६
विद्या-पिण्ड	विद्या द्वारा उपासक का वशीकरण	४२२
मन्त्र-पिण्ड	पादलिप्ताचार्य द्वारा मुरुंड राजा की मंत्र-चिकित्सा	४२३
अन्तर्धान पिण्ड	चन्द्रगुप्त मौर्य के यहाँ क्षुल्लक-द्वय का अन्तर्धान-प्रयोग	४२३
योग-पिण्ड	वज्रस्वामी के मातुल समिताचार्य और ५०० तापस	४२५
क्रीतकृत	शय्यातर मंख	४२८
पामिच्च	तैल पामिच्च के कारण बहन का दासीत्व	४३०
परिवर्तन	कोद्रव क्रूर के बदले में शालि क्रूर	४३२
आच्छेद्य	दुग्ध-आच्छेद्य से रुष्ट गोपाल	४३३
"	सत्पुत्रों में स्तेनाच्छेद्य मृत	४३६
अनिःसृष्ट	वत्सीस मोदक वाला भिक्षु	४३७
आज्ञा-भंग	राजा द्वारा प्रजा को दण्ड	४०३
ज्ञानादिलाभार्थ प्रलम्ब-प्रतिमेवना	लाभार्थ वाणिज्य-कर्म	४१०
प्रलम्ब-विदशना	दो अजघातक स्लेच्छ	४१८
अनवस्था प्रमंग का निवारण	कृषक के इक्षु-क्षेत्र की हानि	४१६
"	राजा की कन्याश्री का अन्तःपुर	४२०
"	भोलों द्वारा देवद्रोणी (गो) की हत्या	४२१
प्रलम्ब-रस की आसक्ति	मद्यपान से मांसाहार की आसक्ति	४२१
प्रलम्ब-भक्षण मे आत्मविराधना	मूँग की कच्ची फली खाने से स्त्री की मृत्यु	४२२
अनाचीर्ण	अचित्त तिलों से भरी गाड़ी और भगवान् महावीर	४२३
"	अचित्त जल से भरा हृद और भगवान् महावीर	४२३
यतना और अयतना	विष, शस्त्र, वेताल और श्लेष	४२५
परिणामक, अपरिणामक और अतिपरिणामक	चार मरक और द्य-मांस	४२६
अकल्प-मेवना की भूमिका	अंशतः भग्न गाड़ी की मरम्मत	४३१

अभिन्न प्रलम्ब से संयती को मोहोदय  
मंनगं का महत्त्व  
दत्त वस्तु का पुनरादान  
संयती पर कामंग-प्रयोग  
वस्त्र-विमूषा से हानि

स्त्रीयुक्त वसति से चारित्रहानि  
आज्ञा-भंग पर गुप्तर दंड  
मुक्त-विजय, मुक्त-मोक्ष आदि स्त्री

”

”

”

”

व्युद्ग्रह अपक्रान्त  
अनायं देशों में मुनि-विहार से आत्म-विराधना  
अन्य-त्रिविधादि देशों में मुनि-विहार  
मात्रक की आवश्यकता  
अस्त्राध्याय में स्वाध्याय से हानि  
पंचविध अस्त्राध्याय  
आचार्यादि-परिगृहीत गच्छ  
परिकुचित आलोचना  
तीन बार आलोचना

द्विमासादि परिकुचित (अन्यसंगोपन)

”

”

”

विषम प्रतिसेवना की सममुद्रि  
अनवस्था-प्रमंग का निवारण  
ज्ञानवृद्धकर बहु प्रतिसेवना  
अनेक अपराधों का एक दण्ड  
अपरिकुचितता की दृष्टि में एक दण्ड  
दुर्बलता की दृष्टि में एक दण्ड  
आचार्य की दृष्टि में एक दण्ड  
गोनायं और अगीत परिणामकों को प्रायश्चित्त  
अगीत अपरिणामक और अतिपरिणामकों को  
प्रायश्चित्त  
यतना और अयतना मन्त्रन्त्री प्रायश्चित्त

महादेवी की कर्कटी से विकारोत्पत्ति  
दो शुक्र-वन्धु  
विक्रीत वृक्ष का पुनर्ग्रहण  
विद्याभिमन्त्रित पुष्प  
रत्न-कम्बल के कारण तत्करोपद्रव

चतुर्थ भाग

अग्नितप्त जतु ४  
चन्द्रगुप्त मौर्य १०  
पांच सौ व्यन्तर देवी १४  
रत्न देवता १४  
अहंनक २१  
सिंही (शेरनी) २२  
मानुषी को कुक्कुर-रति २२  
बहुरत आदि निह्व १०१  
पालक द्वारा स्कन्दक का यन्त्र-पीलन १२७  
मौर्य नरेश संप्रति १२८  
वारत्तग मंत्रीपुत्र का सत्रागार १५८  
भ्लेच्छाक्रमण पर नृप-धोषणा २२६  
पांच राजपुरुष २३०  
पक्षी और पिंजरा २६२  
अव्यक्त शल्य से अश्व-मृत्यु ३०४  
न्यायाधीश के सम्मुख बयान की तीन बार  
आवृत्ति ३०५  
मत्स्य-भक्षी तापस ३०६  
अशल्य सैनिक ३०६  
दो मालाकार ३०६  
चार प्रकार के मेघ ३०७  
पांच वणिकों में १५ गधों का वंटवारा ३०८  
धान्य-ग्रहण पर विजेता सेनापतियों को दण्ड ३११  
गंजा तम्बोली और सिपाही ३१२  
रथकार की भार्या ३४२  
चोर ३४२  
बैल और गाड़ी ३४३  
मूल देव ३४३  
चतुर वणिक का शुल्क ३४४  
मूर्ख ब्राह्मण का शुल्क ३४४  
निधि पाने वाले वणिक और ब्राह्मण ३४५

सभी आलोचनाओं में समान विनयोपचार  
मूलोत्तर गुणों की प्रति सेवना से अन्योन्यविनाश  
मूल गुण-प्रतिसेवना से चारित्र-नाश  
उत्तर गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश  
प्रायश्चित्त वहन करते हुए वैयावृत्य  
सानुग्रह और निरनुग्रह प्रायश्चित्त दान

”

प्रायश्चित्त-वृद्धि का रहस्य  
आलोचनार्ह की गम्भीरता  
परिहार तपस्वी को आश्वासन  
दोष-शुद्धि न करने से चारित्र-नाश

”

”

”

शुद्ध तप और परिहार तप  
शुद्ध आलोचक के प्रति आचार्य का सद्ब्यवहार

”

”

निपद्या का महत्त्व  
अकल्पित चाहने वाले को उद्बोधन

निधि-उत्खनन

ताल वृक्ष

दृति और शकट

एरण्ड-मण्डप

पुरस्कृत राजसेवक

अग्नि

दारक

जल-घट, सरितादि

दन्तपुरवासी दन्तवर्णिक का दृढ़ मित्र

अगड, नदी आदि

नाली में तृण

मण्डप पर सर्प

गाड़ी में पाषाण

वस्त्र पर कज्जल-विन्दु

छोटी-बड़ी गाड़ियाँ

व्याध

गाय

भिक्षुणी

अश्वरहित राजा और नापित

भंडी-पोत

३४६

३४७

३४८

३४८

३५०

३५४

३५४

३५८

३६१

३७३

३७४

३७४

३७४

३७४

३७४

३८०

३८१

३८१

३८२

४००

# पंचमं परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गतानां विशेषनाम्नां विभागशोऽनुक्रमणिका

	भागंक	पत्रांक		भागंक	पत्रांक
	१			४४१	
तीर्थकर			अञ्जरकित्तय-पिया	१	१६४
अर	२	४६६	अञ्ज बडर	१	१६३
उत्तम	३	१५३	अञ्ज मुहूर्था	२	३६१, ३६२
कुंथु	२	४६६	"	४	१२८
महावीर वद्धमानसामी	३	१४२, ३६३	अण्णय-गुत्त	२	२३१
महावीर	३	५२३	अतिमृत्कुमार	३	२३५
रिसभ	२	१३६	अवंती सोमाल	२	६०
वद्धमाण	२	१३६, ३६०	"	३	३१२
"	३	१४२, १५३	आसाढ भूति	१	१६, २०, २१
"	३	१६८, ३६३	उदाइ-भारक	१	२
"	४	४६	"	३	३७
संती	२	४६६	"	४	६८, ७०
	२		करकट्ट	२	२३१, ४४५
गणघर			"	३	२७७
गोयम	१	१०	कविल	१	१२४
"	३	३६३, ५२२	"	३	२४३
मुघम्म	३	१५३	कपिलायं	४	२००
"	४	१०६	कालगञ्ज	३	५८, १३१
मोहम्म	२	३६०	खंदग	३	३१२
	३		"	४	१२७
लैनाचायं और जैन अमण			गोविदज्ज	३	२६०
अञ्ज नन्द	१	२२	गोविदवाचक	३	३७
"	२	४६५	"	४	२६५
अञ्ज महागिरी	२	३६१	चंडरुद्राचायं	४	३७७
"	४	१२८	जसमहं	२	३६०
अञ्ज मंगू	२	१२५	जिणदास	४	४४३
"	३	१५२	जंघ	२	३६०
अञ्जरकित्तय	३	१२३, २३६,	"	३	२३६, ५२२





८  
अध्वकल्प

	४	११५,११६	कापालिका गेन्द्र
अग्नियम	"	"	"
खज्जूर	"	"	गोव्यय
खीरपट्ट	"	"	चरक
घतमट्ट	"	"	"
तंडुलचूर्ण	"	"	"
दंतिकक	"	"	चरिका
पिण्णुआ	"	"	तच्चन्निय
भेसज्ज	"	"	तच्चण्णुगी
सत्तुअ	"	"	तडिय
समितिम	"	"	तावम
मुक्करोदण	"	"	"
मुक्कमंडग	"	"	तिदंडी परिव्वायग

४	६०
२	३३२
३	४१४
३	१६५
२	११८,२००
३	२०७,३३१
४	३६
४	६०
३	२५३,३२५
४	६०
२	२०७,४५६
२	३,३३२
३	४१४
१	१२
३	१६५
२	११८,२००
३	४१४

९  
अन्यतीर्थिक देव

	१	१०५	परिव्राजिका
केसव	१	१०४	पंचगव्वासगिय
पमुवति	१	१०४	पंचगितावय
चंभा	३	१४२	पंडरंग
"	१	१४६,१४७	पंडर भिक्कु
महादेव	१	१४६,१४७	रत्तपड
रुद्र	१	१०३,१०४	"
विष्णु	३	१४२	"
"	१	१०	रत्तपडा
मिव			ब्रह्मवाम्नी

४	६०
३	१६५
३	१६५
२	११६
३	४१४
१	११३,१२१
२	११६
३	४१४,४२२
१	१२३
३	४१४
४	६०
२	११८
२	३,११८,२००,३३२
३	४१४
२	२०७,४५६
४	१०
३	१६८
२	३३२
२	२०७

१०  
अन्यतीर्थिक अमरा और अमराणी

	२	११८,२००	वृद्ध आवक
आर्जावक		३३२	सक्क-आवक
"	३	४१४	"
कप्पडिय	२	२०७,४५६	सरक्क
"	४	१०	समरा
कव्वडिय	३	१६८	हड्ड सरक्क
कावालिय	२	३८	
कावाल	४	१२५	
"	३	२५३	अक्खपाद

११  
परिव्रालक

४	८८
---	----

अम्मद	१	२०	इंद	१	२४
उडंक रिसी	३	३४०	कंवल-सवल	३	३६६
१२ दर्शन और दार्शनिक			कामदेव	१	६
			"	३	१४४
आजीविग	१	१५	खेतदेवया	३	४०८
ईसरमत	३	१६५	गोरी	४	१५
उलूग	१	१५	गंधारी	४	१५
कपिलमत	३	१६५	चंद	३	१४४, २०८
कविल	१	१५	जकल	१	२१
कावाल	४	१२५	"	३	१४१
कावालिय	३	५८५	जोद्धसिय	४	५
चरग	१	२	डागिणी	२	४१
"	४	१२५	गाइलदेव	३	१४१
जइगु-सासग	१	१७	गाग-कुमार	३	१४४, ३६६
जैनतंत्र	३	३६०	देविद	१	२०
तच्चधिय	३	२४६, २५३	पंतदेवया	१	८
तावस	१	१५	पिसाय	३	१८६
"	४	१२५	पुण्णभद	३	२२४
परिव्वायग	१	१७	पुरंदर	२	१३०
पंडरंग	३	१२३	पूयणा	३	४०८
वोडित	१	१५	वहस्सति	३	१४४
भिच्छुग	१	११३	भवगुवासी	२	१२५
भिकखू	३	५८५	"	४	५
"	४	१२५	भूत	१	६
रत्तपड	१	१७, ११३	मागिभद	३	२२४
वेद	१	१५	रक्खस	३	१८६
सक्क	१	१५	रयणदेवता	४	१४
"	३	१६५	वणदेवता	४	११८
मरक्ख	४	१२५	वाणमंतर	१	८, ६
"	३	२५३	"	४	५
सुतिवादी	३	५८५	वाणमंतरी	४	१३
सेयवड	१	७८	विज्जुमाली	३	१४०
सेयभिकखु	४	८७	वेमाणिय	४	५
"	३	४२२	शक	१	११३
शाक्यमत	३	१६५	सम्मदिट्ठी देवया	१	८
हइसरक्ख	३	५८५	"	४	११८
१३ देव और देवी			सामाणिय	१	२४
			सुदाढ	३	३६६
अच्चुय देव	३	१४१			

हान पहासा  
हिरिमिक (चाण्डाल-यज्ञ)

१४

चक्रवर्ती, बलदेव और बामुदेव

अर	२	४६६
कुंथु	२	४६६
केसव	१	५६
"	२	४६६
बलदेव	३	३८३
ब्रह्मदत्त	२	२१
नरह	२	४४६, ४६५
"	४	६८
राम	१	१०४
बामुदेव	१	४३
"	२	४१६, ४१७
"	३	३८३
सती	२	४६६

१५

राजा, राजकुमार और अमात्य

अर्जुन	१	४३
अरांगकुमार	३	२६८
अरांग राजा	३	२६६
अमगसेन	४	१५८
अमयकुमार	१	६, १०, १७
"	२	२३१
"	४	१०६
असोग	२	३६१
असोगसिरी	४	१२६
उदायन	३	१४६, ५२३
कुणाल	२	३६१
"	४	१२८
कान्तेय	१	५४
कुङ्कुमार	२	२३१
"	४	१२७
सदग	४	१२७, १२८
गङ्गानिल	३	५८
गङ्गाप्रिय कुमार	२	२८
गङ्गार	१	१०५

पञ्जोत

चंदगुप्त

"

"

चाणक्य

"

जराण राया

जरकुमार

जराकुमार

जितारि

जियसत्तू

"

"

डंडगि

डंडति

दंतवक्त्र

"

धम्मसुत

पट्ट

पालग

पालय

बलभानु

बलमित्त

विदुसार

"

मसअ

भागुमित्त

भीम

मयूरक

महिडिडन

मुखंड

मूलदेव

"

मेच्छ (मेच्छ)

बसुदेव

वारत्तग

ससअ

संतागित्त

संपति

संव

१४६, १४७

३६१, ३६२

४२४

१२६

३३

४२४

२६६

४१६, ४१७

२३१

२६८

४१७

१५०

२२६

१२७

३१२

१६६

३६१

१०५

१०५

१०

५६

१३१

१३१

३६१, ३६२

१२६

४१७

१३१

४३, १०५

३८८

५२०

४२३

३४३

१०४

२२६

२३१

१५८

४१७

४६

१२६

१०

सातवाहन	४	१६८	अभंगावय	२	४६६
"	३	१३१	उव्वट्टावय	"	"
साहि	३	५६	कंचुइज्ज	"	"
सुग्गीअ	१	१०४	कोत्तगह	"	"
सुवुद्धी	३	१५०	चामरगह	"	"
सेणिए	१	६, २०, १७	छत्तगह	"	"
हणुमंत	१	१०४, १०५	डंडारक्खिय	"	"
हेमकुमार	३	२४३	दीवियगह	"	"
हेमकूड	३	२४३	दोवारिय	"	"

१६

राज्याधिकारी

अमच्च	२	४४६	मज्जावय	"	"
ईश्वर	२	४५०	मंडावय	"	"
कुराया	२	४६७	वरिसधर	"	"
कोट्टु विय	४	१५	संवाहावय	"	"
खत्तिय	२	४६७	हड्डगप्पह	"	"
गामउड	"	२६७		"	"
गामभोत्तिय	२	४५०		"	"
जुवराया	४	२८१	मल्ल	३	१६५
डंडिय	४	१५	सारस्सय	"	"
तलवर	२	४५०	कूयसभ	"	"
पुरोहिय	२	४४६		"	"
माडंवी	२	४५०		"	"
मुद्धाभिसित्त	२	४४६	आसवल	२	४५५
रट्टउड	२	२६७	पाइक्कवल	"	"
राया	२	४६७	रहवल	"	"
सत्थवाह	२	४४६	हत्थिवल	"	"
सेट्ठी	२	४४६, ४५०		"	"
मेणावई	२	४४६		"	"

१६

गणधर्म

२०

बल (सेना)

२१

अभिषेक-राजधानी

१७

राज्याह

खग्ग	२	२६८	कंपिल्ल	२	४६६
छत्त	"	"	कोसंबी	"	"
चामर	"	"	चंपा	"	"
पाउया	"	"	महुरा	"	"
रायहत्थी	"	"	मिहिला	"	"
	"	"	रायगिह	"	"
	"	"	वाणारसी	"	"
	"	"	साएय	"	"
	"	"	सावत्थी	"	"
असिगह	२	४६६	हत्थिणपुर	"	"

१८

राजसेवक

२२	जनपद	पारस	३	५६
		पुष्पदेस	३	१११
		"	२	६४
अवंती	१	१३	२	४७०
अंध	२	३६२	३	४२५
"	४	१२५	२	३६६
आमीर	३	४२५	२	१३६
उत्तरावह (उत्तरापथ)	१	२१,५२,६७, ८७,१५४	१	५२
"	२	६५	२	११,३७१
"	३	७६	३	१३१,१४६
उत्तरापथ	४	१२७	४	११५,१६५
कच्छ	१	१३३	३	१३१,१४६
काय	२	३६६	४	१०६
कुटुक्क	३	१६१	३	५२३
कुणाल	४	१२५	३	१६३
कुणाला	३	३६८	४	१२५
"	४	१२६	२	७६,१०६
कुल्लेय	२	१०८,११०,	३	१६३
कीरकुक्क	३	१६१	२	१५०
कोणाला	३	३६८	२	३६६
कोमल	१	५१,७४	२	६४,२२३
कोंकण	१	५२, १००	३	३६,५६६
		१०१,१४५	४	२२६
यंवार	३	१४४	४	४५
गोल्लय	३	१६१	१	१३३
चिलाइय	२	४७०	४	६०
चीण	२	३६८, ३६६	२	७६,१५०
जवण	४	१२५	४	६०
टक्क	२	७६	१	१४५
तोसमि	२	३६६	३	१६१
"	३	८१	४	१२५
"	४	४३,६१	१	५८,१३३
यूणा	४	१२५	२	३५७, ३६२
दक्षिणगावह	३	३६,१११	३	३६
दक्षिणगावह	२	४१५	३	५६
दमिल	४	१२५		
"	२	३६२		
दविड	२	३८५		
		अक्कयली		

२३

ग्राम, नगर, नगरी आदि

३ १६२

अयोजका	३	१६३	दारवती	२	४१६
अवंती	१	१३,१०२	पतिट्टाण	३	१३१
अंधपुर	३	२६६	पाडलिपुत्त	१	१०४
आणंदपुर	२	३२८,३५७	"	२	६५
"	३	१५८,१६२,	"	४	१२८,१२६
		३४६	पुलिदपल्ली	३	५२०
आमलकप्पा	४	१०१	पोंड्रवर्धन	४	१४४
उज्जेणी	१	१०२,१०४	वारवइ	१	६६
"	३	५६,१३१,	वीतिभय एगगर	३	१४४,५२३
		१४५	भरुकच्छ	२	४१५,४३६
"	४	२००	भिल्लपल्ली	४	१५१
उत्तर महुरा	२	२३१,२६६	भिल्लमाल	३	१११
उसभपुर	४	१०३	मथुरा	२	१२५
कंचणपुर	३	३०२	"	३	२६६
कंचिपुरी	२	६५	"	४	२६५
कंपिल्लपुर	२	२१,४६६	मधुरा	३	१५२,३६६
कुसुमपुर (पाडलिपुत्त)	२	६५	महुरा	१	८
कुंभकारकड	३	३१२	"	२	३५७,४६६
कुंभकारकड	४	१२७	माहण कुंडगाम	३	२३६
कुणाला	३	३६८	मिहिला	२	४६६
कोट्टग (पुलिदपल्ली)	३	५२१	"	४	१०२,१०३
कोल्लइर	३	४०८	मेहुणपल्ली	२	२३
कोसला	३	७६	रहवीरपुर	४	१०२,१०३
कोसम्बाहार	२	३६१	रायगिह	१	६,२०
कोसंबी	२	४६६	"	२	४६६
"	४	४६,१२५,	"	४	४३,१०१,
		१२८			१०६
खितिपतिट्टिय	३	१५०	लंका	१	१०४,१०५
"	४	२२६	वाणारसी	२	४१७,४६६
गिरफुल्लिगा	३	४१६	वेण्णातड एगगर	४	४२५
चंपा एगरी	१	२०	सविसयपुर	३	५०३
"	२	४६६	साएअ (साकेत)	२	४६६
"	४	१२७,३७५	"	३	१६३
तुरुमिणिगगरी	२	४१७	सावत्थी	२	४६६
तेयालग पट्टण	१	६६	"	४	१०३
दसपुर	३	१४७,४४१	सेअंविआ	४	१०३
"	४	१०३	सोपारय	४	१४
दंतपुर	२	१६६	हत्थिणापुर	२	४६६
"	४	३६१	हेमपुरिस नगर	३	२४३

२४		कलाद	३	२६८
उद्यान		कल्लाल	४	१३२
अग्गुज्जाण	४	१२७	२	२८०
असोगवगिया	३	१४०	३	१६८
गुणसिल	४	१०१	३	२७१
जिण्णुज्जाण	१	१०२	१	६०, १३८
तिट्ठग	४	१०१	२	३, २२५
दीवग	४	१०२	३	१६८
२५		कोलिग	३	२७०
अरण्य		कोसेज्जग	३	२७१
कोसंवारण	२	४१६	२	६
हंढगारण	४	१२८	३	२७१
२६		क्षत्तिय	१	१०४
कुल		"	२	४६७
पाभीर	१	११	४	१३४
इन्द (महाकुल)	२	४३३	३	१६८
गाहावइ	२	४०८	३	२७१
दिवाभोजि	१	१५४	४	१३२
मद्ग	२	२०६	३	१६३
भोतिय	२	३६१	३	१६३
राज	४	३०५	३	५२७
वणिय	३	४१८	२	४६८
सामंत	२	३६१	२	२४३, २८४
सावग	२	४३५	३	२७०
सेज्जातर	२	२४३, ४३५	२	४६८
सेट्टि	१	६	३	१६३, १८३,
२७		पहाविय	३	२७१
वंश		"	२	२४३
मोरपोन्नग (चन्द्रगुप्तवंश)	४	१०	२	२४३
मोरिय	२	३६१	३	२७०
सग	३	५६	३	२७०
२८		तंतुकार	२	३
ज्ञाति और शिल्पी		"	३	१६८
आहीर	१	८, १७	३	१६३
कच्छुय	२	४६८	३	२७२
		घरणिपुत्र	२	३५



तेरिमा	२	२४३	मालिय		
धिज्जाति	१	११३,११३	माहन (ब्राह्मण)	१	१०
		१६२,१६३	"	३	२७१
धीयार (धीचार)	१	१८	मुट्टिय	२	११६
"	२	८१	मेय	२	४६८
धीर	२	२४६	मोरत्तिय	३	१६८,२७०
पदकार	३	२७१	रजक	२	२४३
परीषह	३	२७१	रयग	१	१०४
पयकर	२	२४३	रहकार	३	२७१
पवग	२	४६८	"	२	३,३५
पाण	२	२४३	"	३	१६६
"	३	२७०	लंख	४	३४२
"	४	२३७	लाउलिग	३	२७१
पारसीय	२	३६६	लासग	३	१६३
पु. हित	१	१६४	लोद्धया	२	४६८
"	२	२६७,४४८	लोहार (लोहकार)	३	१६८
"	४	१२७	"	१	८६,१३६
पुलिन्द	१	११,१४४	"	२	३,६,२८०
"	३	२१६,५२१	वरिय	३	१६६,२७०
"	४	४६	"	१	१३६,१५३
पोसग	३	२७१	वरुड	३	१४२,२६६,
वंभण	१	१०,११	वरुड	५१०	
"	३	४१३	वागुरिय	३	२७०
वोहिग	१	१००	वाणियग	४	१३२
भंड	३	१६३	वालंजुय	३	२७१
भिल्ल	१	१४४	वाह (व्याध)	३	५८५
भोइग	२	४५४	विष्ण	३	१६३
मच्छिक	३	२७१	वेलंबग	३	२७१
मणियार	२	५	सवर	१	१०४
मयूरपोसग	३	२७१	सत्थवाह	२	४६८
मरुअ	१	१०५	"	३	८७
"	२	११८,२०८	संपर	२	२६७,४६८
मल्ल	२	४६८	सुवणगार	३	२८४
महायण (महाजन)	३	२७१	"	३	२७१
मायंग, (मातंग)	१	६,२१	"	१	५०
"	३	५२७	सूद्र	३	२६८,२६६
मालाकार	२	६	सोगरिग (शौकरिक)	४	१२
"	४	३६०	सोणहिय	२	११६
				३	२७१
				३	१६८

सोवाग	३	५२७	
सोहक	२	२४३	
सोघग	३	२७१	ददमित्त
हरिएस	१	१०	घणमित्त
"	३	२७०	माकंदियदारग
हेट्टण्हावित	२	२४३	सागरदत्त

२६

पशु-पक्षि आदि-पोषक

अय- पोसय	२	४६८	इंददत्त
आस "	"	४६८	"
इत्थी "	३	२७१	"
कुक्कुड़ "	२	४६८	इंदसम्म
चीरल्ल "	"	"	उसमदत्त
तित्तिर "	"	"	जण्णदत्त
पोय "	"	"	देवदत्त
मयूर "	"	"	"
महिस् "	"	"	पेढाल
मिग "	"	"	विण्णुदत्त
मेंढ "	"	"	सत्यकि
मोर "	२	२४३	सोमदेव
लावय "	२	४६८	सोमसम्मा
वंग्घ "	"	"	सोमिल
वट्टय "	"	"	
वसह "	"	"	
सीह "	"	"	
सुण्ह "	"	"	
सुय "	"	"	अच्चंकारियभट्टा
सूयर "	"	"	असगडा
हत्थिय "	"	"	उमा
हंस "	"	"	कविला
	"	"	किण्हगुलिया
			खंडपाणा
			जयंती
			जेट्टा
			तिसला
			देवती
			घणसिरी
			घारिणी
			पउमसिरी

३०

दमक, मेंढ और आरोह

आस-दमग	२	४६८	
हत्थिय-दमग	"	"	
आस-मिठ	"	४६९	
हत्थिय-मिठ	"	"	
आस-रोह	"	"	
हत्थिय-रोह	"	"	

३१

सार्थवाह

४	३६१
४	३६१
४	२१०
३	८७

३२

सामान्य व्यक्ति

२	१५, १४७,
	२४५, ३३४
२	४२०
२	१७६
३	२३६
१	३१
१	२, ३१
४	३०५
३	२७७
१	३१
३	२३६
३	२३६
२	१५
७	२३६

३३

नारी

३	१४६
१	११
१	१०४
१	१०
३	१४२
१	१०४
४	४६
३	२७७
१	२७
१	१०३
४	३६१
३	१५०
४	३६१

## सभाष्यचूर्णि निशीथसूत्र

५६३

पउमावती	२	२३१	अट्टाहिमहिम	३	१४१
"	३	२७७	आगर	२	४४३
पभावती	३	१४२	इट्टगा	३	४१६
पुरंदरजसा	३	३१२	इंद	२	२३६, ४४३
"	४	१२७	"	३	१२३, २४३
भट्टा	३	१५०	"	४	२२६
भट्टा	३	१५०	कौमुदी	४	३०६
भानुसिरी	३	१३१	खंद	२	४४३
मृगावती	३	२७६	"	४	२२६
मियावती	४	३७६	गिरि	२	४४३
वीसत्था	३	२६८	चेइय	"	"
सच्चवती	४	३६१	जक्ख	"	"
सीता	१	१०४	"	४	२२६
सुकुमालिया	२	४१७, ४१८	एदी	२	४४३
सुभट्टा	४	३७५	एग	"	"
सुलसा	१	१६, २०	तडाग	"	"
सुवण्णगुलिया	३	१४५	तलागजण्णग	२	१४३
हेमसंभवा	३	२४३	थुभ	"	४४३
			दरी	२	४४३
			दह	२	४४३
आलवी	२	४७०	देवउलजण्णग	२	१४३
ईसणी	"	"	भूत	"	४४३
खुज्जा	"	"	"	४	२२६
थारुगिणी	"	"	मुगुंद	२	४४३
पडभी	"	"	खक्ख	"	"
परिसणी	"	"	खद्द	"	"
पल्हवी	२	४७०	लेपग	३	१४५
पाउसी	"	"	विवाह	१	१७
पुलिनवी	"	"	"	२	३६६
वव्वरी	"	"	सक्क	२	२४१
लउसी	"	"	सर	२	४४३
लासी	"	"	सागर	"	"
वामणी	"	"			
सवरी	"	"			
सिहली	"	"	गिरिजत्ता	२	४६२
			एइ	"	"
			भंडीर	३	३६६
अगड	२	४४३	रह	२	१३७, ३३४

३४  
दासी३६  
यात्रा३५  
उत्सव

	३७		निग	३	१३१
	पूजा		मिणी	१	५१
पद्मग—	२	१३३, ३३४	मुक्कण	३	१३१
समग—	३	१३१		४०	
सुय—	४	२-६		पानक	
	३८		उदग	३	२८३
	नायक (मुद्रा)		कंजिग	२	२५३
उत्तरायहृक	२	६५	नीर	३	२८३
कवडुग	३	१११	नंद	२	१२३
कागगी	"	"	गुल	२	"
कुमुमपुरग	२	६५	चिचा	२	"
केवडिग	२	१११	तक्क	३	२८३
केतरात	"	"	द्राक्षापानक	२	२२३
चम्मनान	"	"	दालिम	२	१२३
गुलम (रूपक)	२	६५	परिमिनग	२	२५३
नंद	३	१११	मज्ज	३	२८३
दक्षिणापहग	२	६५	मुद्दिता	२	१२३
दीविचिक	"	"	मक्कग	२	"
दीगार (मुक्कण)	३	१११, ३३८		४१	
पाडनीपूतग	२	६५		विशिष्ट भोज्य पदार्थ	
पीय (मुक्कण)	३	१११	इट्टगा	३	४१६
रय	"	"	नंद	२	२८२
पादक (रूपक)	२	६५	पयपूणग	२	२८०
	३९		मण्डग	२	२८२
	पाय		मत्तागन	३	४१६
प्रय	३	१३१	हविपूय	२	२८०
कगग	"	"		४२	
कट्टोरा	१	५१		वस्त्र	
करोडग	"	"	अंसुय	२	३६६
कंस	३	१३१	आइंग	२	३६६
चम्म	"	"	आमरण विचित्र	२	३६६
केल	"	"	उट्टिय	२	५७
नायक	"	"	उण्णिय	२	"
नय	"	"	कगग-कंस	२	३६६
नंद	"	"	कगग-द्विचिय	"	"
रन्त	"	"	कगग-विचित्र	"	"
मंहुय	१	५१	कप्पामिय	"	"
रय	३	१३१	किट्ट	"	"
वट्ट	"	"	कुत्त	"	"

कोयर	२	३६८	उवक्खडण	२	४५५
कोसियार	"	५७	कम्मंत	"	४३३
कंवल	"	३६८	कम्म	४	६२
खोम्म	"	३६६	कुंभकार	२	२५५
चीरा	"	३६६	"	३	१६०
चीरांसुय	"	"	"	४	६१
जंगिय	"	५६	कुविय	२	४३२
तिरीडपत्त	"	५६	कोट्टागार	२	४५५
दुगुल्ल	"	३६६	खीर	२	४५५, ४५६
पट्ट	"	५७	गय	२	४४६
पोत्त	"	५६	गंज	२	४५५, ४५६
पोंड	"	३६६	गुज्झ	२	४४६
भंगिय	"	५६	गुलजंत	४	१५१
मियलोमिय	"	५७	गो	२	४३३
वाग	"	५७	गोण	२	"
सराय	"	५६	घंघ	२	२१०
			"	४	२४०
			छुस	२	४३२
			जंत	४	१५१
			जाण	२	४३२
			जुग	२	"
			जोति	४	६१
			तरण	२	४३३
			तुस	२	४३२
			निज्जाण	२	४३१
			परिय	२	४३२, ४३४
			पयण	४	६२
			परिया	२	४३२
			पाण	२	४५५
			पोसह	३	५५८
			भिन्न	२	४३२
			भंडागार	२	४५५, ४५६
			भंडसाला	४	६१, ६२
			महाणस	२	४५५, ४५६
			मंत	२	४४६
			मेहुण	"	"
			रहस्स	"	"
			रुक्ख	१	१०३

४३

विद्या

अभियोग	१	१२१
अंजण	"	"
अंतद्धाण	३	४२३
आभोगिणी	२	४६३
इंद जाल	३	१६१, १६३
उण्णामिणी	१	६
ऊसोवणी	१	१२१
ओणामिणी	१	६
गद्दी	३	५६
तालुग्घाडिणी	१	१२१
थंभणी	१	१६४
पडिसाहरण	३	४२२
माणसी	१	१३६
मातंग	४	१५

४४

शाला

इंधण- साला	४	६१
उज्जाण	२	४३१
उत्तर	२	४४५

लेह	"	१	१५	मंदर, मेरु	१	२७,३२
वग्धरग	"	४	६१,६२	" "	३	१५१,४१६
वेज्ज	"	१	८४	मालवग	२	१७५
मुण्ण	"	२	४३२	रुयग	१	२७
हय	"	२	४४६	विमोगल्ल	३	३१२

४५

मास

आसाह	२	४७,३३३
"	३	१२१,१२६
"	४	१३२,१६२
आसोय	४	२२६,२७५
"	३	१२८
कत्तिय	४	२२६
"	१	१३८
"	३	६२,१२८
"	४	२२६,२३०
चेत्त	४	२२६
जेट्ट	२	४७,३३३
पोस	३	१२८
महवय	३	१३०,१३१
"	३	१३२,१६३
मगासिर	१	१३८
"	३	१२६,१३२
"	४	२३०
वैसाह	२	३३४
नावण	३	१२१,१२६
"	४	१३२
"	४	२२६,२७५

४६

पर्वत

अंजगग	१	२७
इंदपय	३	१३३
कुंडल	१	२७
कैलास	३	४१६
गयग	३	१३३
गोरगिरि	१	१०
तुल्लि हिमवन्त	३	१४१
दहिमुन्त	१	२७

मंदर, मेरु  
" "  
मालवग  
रुयग  
विमोगल्ल  
वेयड्ड  
" "  
हिमवन्त

अड्ड भरह  
अरुणवर दीव  
उत्तर कुरु  
एरवत  
जंबुद्वीव  
" "  
गंदीसर दीव  
" "  
दीवचिचिक दीव  
देवकुरु  
पंचसेल दीव  
वाततिसंड  
वंमदीव  
भरह  
" "  
" "  
महाविदेह  
हिमवय  
हेमवय

४७

द्वीप और क्षेत्र

अड्ड भरह	२	४१७
अरुणवर दीव	१	३३
उत्तर कुरु	३	२३६,३११
एरवत	३	३०५
जंबुद्वीव	१	२७,३१,३३
" "	३	१४०
गंदीसर दीव	१	१६
" "	२	६५
दीवचिचिक दीव	३	१४१
देवकुरु	३	२३६,३११
पंचसेल दीव	३	१४०
वाततिसंड	१	३१
वंमदीव	३	४२५
भरह	१	१०५
" "	३	३०५
" "	४	६८
महाविदेह	२	१३६
हिमवय	१	१०५
हेमवय	१	१०५

४८

समुद्र

अरुणोदय समुद्र	१	३३
लवण-समुद्र	"	३१,१६२

४९

नदी

उल्लुगा	४	१०३
एरवती	३	३६८,३७१
एरावती	३	३६४
कण्हवेणा	३	४२५
गंगा	१	११,१०४



चंदण	"	"	सट्टिया	"	"
तुल्लव	"	"	सरिसव	४	१५३
मिगंड	"	"	सालि	२	१०६, २३७
	५६		हिरिमंथ	२	१०६
	धान्य			५७	
अणाय	२	१०६		वाद्य	
अतसि	"	"			
अलिसिद	"	"	कच्छभी	४	२०१
कल	"	"	कंसताल	"	"
"	३	३२७	कंसालग	"	"
"	४	१५३	काहला	"	"
कलमसालि	२	२३३	खर मुही	"	"
कलाय	३	३२७	गुंजापगव	"	"
कुलत्य	२	१०६	गोलुई	४	२००
कंगू	२	१०६, २३७	गोहिय	४	२०१
कोद्व	२	१०६, २१३	भल्लरी	४	२००
"	३	५	भोडय	"	"
गोवूम	२	१०६, २३७	डमरुण	"	"
चणाय	२	२३७, २४१	डंकुण	४	२००
"	३	३२७	णालिया	१	८४
"	४	३३, १५३	ताल	४	२०१
चवलग	२	२३७	तुण	४	२००
जव	२	१०६	तुंववीणा	४	२००
गिण्फाव	२	१०६	डुंडुभी	४	२०१
"	४	३३	नंदी	४	२००
तंदुल	२	२३६	पएस	"	"
तिल	२	१०६, २३७	पडह	४	२००
तुवरी	"	१०६	परिलिस	४	२०१
त्रिपुड	"	"	पिरिपिरिता	४	२०१
वाणग	"	"	वव्वीसग	४	२००
पलाल	"	"	भल	४	२०१
ममूर	"	"	भंभा	४	२०१
मांस	"	१०६, २३७	भेरी	४	२००
		२४१	मकरिय	४	२०१
मुग्ग	२	१०६, २३७	मड्डय	४	२००
		२४१	महई	४	२०१
रालक	२	१०६	मुईंग	४	२००
वल्ल	२	२४१	मुरज	४	२०१
वीहि	२	१०६	मुरली	१	८४



मुरव	४	२००	पञ्चराग	३	३८६
लित्तिथ	४	२०१	सूर्यमणी	३	३६८
वल्लरी	४	२००	सूरकान्त	२	१०६
वलिया	४	२०१	स्फटिक	२	१०६
विवंची	४	२००	"	३	३८६
वीणा	४	२००			
वेणु	४	२०१		६१	
वेवा	"	"	एलासाढ	१	१०२
वस	४	२०१	खंडपाणा	"	"
सणालिया	४	२०१	मूलदेव	"	"
सदुय	४	२००	ससग	"	"
संख	४	२०१		६२	
संखिगा	४	२०१		आषण	
शृंग	३	२०१	कल्लालावण	४	२२३
	५८		कुत्तियावण	४	१५१, १०२
	आकर		मज्जावण	२	१३६
अय	२	३२६	रसावण	२	१३६
तवु	"	"		६३	
तंव	"	"		भाषा	
रयण	"	"	अट्टारसदेसी भासा	३	२५३
वइर	"	"	अद्धमागहं	"	"
सीसग	"	"	पायय	"	"
सुवण्ण	"	"		६४	
हिरण्ण	"	"		पुरोहित	
	५९		पालग	४	१२७
	लोह			६५	
अय	२	३६७		सुवण्णगार	
घंटा	१	६			
तउय	२	२६७	अणंगसेण	३	१४०
तंव	"	"	"	४	१२
रुप्प	"	"		६६	
सीसग	"	"		शौकरिक	
सुवण्ण	"	"	काल	१	१०
	६०			६७	
	मणि और रत्न			चंद्र	
इंद्रनील	३	३८६	घनंतरी	३	५१२
चंद्रकान्त	२	१०६	"	४	३४०

६८  
मंगल

चामर	३	१०१	पडह	"	"
छत्त	"	"	पुण्णकलस	१	८८
गुंदावत्त	१	८८	"	३	१०१
गुंदीमुख	३	१०१	मिगार	३	१०१
दवि	"	"	संग्र	३	१०१
			सीहासण	"	"

## सुभाषित—सुधासार

जं जम्मि होइ काले, आयरियव्वं स कालमायारो ।  
वतिरित्तो हु अकालो, लहुगा उ अकालकारिस्स ॥

—गाथा, ६

पडिसेवणा तु भावो, सो पुण कुसलो व होज्ज अकुसलो वा ।  
कुसलेण होति कप्पो, अकुसलेण पडिसेवणा दप्पो ॥

—गाथा, ७४

णं य सव्वो वि पमत्तो, आवज्जति तव वि सो भवे वधओ ।  
जह अप्पमादसहिओ, आवरणो वी अवहओ उ ॥

—गाथा, ६२

पंचसमितस्स मुण्णिणो, आसज्ज विराहणा जदि हवेज्जा ।  
रीयंतस्स गुणवओ, सुव्वत्तमवन्धओ सो उ ॥

—गाथा, १०३

रागदोसाणुगता तु, दप्पियां कप्पिया तु तदभावा ।  
अराधतो तु कप्पे, विराधतो होति दप्पेणं ॥

—गाथा, ३६३

कामं सव्वपदेसु, विउस्सग्गज्जवातधम्मता जुत्ता ।  
मोत्तुं मेहुण-धम्मं, ए विणा सो रागदोसेहि ॥

—गाथा, ३६४

संसारगड्डपडितो, णाणादवलंबितुं समारुहति ।  
मोक्खतडं जव पुरिसो, वल्लिवित्तारोण विसमा उ ॥

—गाथा, ४६५

एच्चुप्पतितं दुक्खं, अभिभूतो वेयणाए तिन्वाए ।  
अदीणो अव्वहितो, तं दुक्खं हिंसाए सम्मं ॥

—गाथा, १५०३

सोऊणं च गिलारिण, पंथे गामे य भिक्खचरियाए ।  
जति तुरितं णागच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥

—गाथा, १७४६

रू व सरिसयं, करेहि ए हु कोद्वो भवे साली ।  
आसललियं वराओ, चाएति न गद्दो काउं ॥

—गाथा, २६२६

संपत्ती व विवत्ती व, होज्ज कज्जेसु कारगं पप्पं ।

अणुपायओ विवत्ती, संपत्ती कालुवाएहि ॥

—गाथा, ४८०८

—भाष्यकार, आचार्य सिद्धसेन क्षमाश्रमण

णाणं पि काले अहिज्जमाणं गिज्जराहेऊ भवति, अकाले पुण

उवघायकरं कम्मवन्धाय भवति, तम्हा काले पढियव्वं

—भाग १, पृ० ७

मोक्खत्थं आहारविहाराइसु अहिगारो कीरति ।

—भाग १, पृ० ७

कुलगणसंघसमितीसु सामायारी - परूवणेसु य ।

सुत्तघराओ अत्यवरो पमाणं भवति ।

—भाग १, पृ० १४

उपयोगपूर्वकरणक्रियालक्खणो अप्रमादः ।

—भाग १, पृ० ४२

हिसादिअकज्जकम्मकारिणो अणायरिया ।

—भाग ४, पृ० १२४

आवत्तीए जहा अप्पं रक्खंति,

तहा अणोवि आवत्तीए रक्खियव्वो । —भाग ४, १८६

अज्जवं अकरेमाणस्स संजमसीही ण भवति ।

—भाग ४, पृ० २६४

पमाया दप्पो भवति, अप्पमाया कप्पो ।

—भाग १, पृ० ४२

कम्मबंधो य ण दव्वपडिसेवणाणुरुवो, रागदोसाणुरुवो भवति ।

—भाग ४, पृ० ३५६

जहा जउ अगिणा गलति

एवं जहुत्तसंजमजोगस्स अकरणातो चरित्तं गलति ।

—भाग ४, पृ० ४

जारिसी रागभागमात्रा मंदा मव्या तीव्रा

वा, तारिसी मात्रां कर्मबंधो भवति ।

—भाग ४, पृ० १६

जो जो साधुस्स दोसनरोधकम्मखवणो किरियाजोगो

सो सो मोक्खोवातो ।

—भाग ४, पृ० ३५

—चूर्णिकार आचार्य जिनदास महत्तर

